उत्तर प्रदेश

सम्पादक

रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

मूल्य ५)

गुरगांव जिले को
रोहतक को, मुजफ्फर नगर

भूमिका

संयुक्त प्रान्त का प्रथम प्रकाशन 'भूगोल' के विशेषांक के रूप में हुआ था। इस बार फिर यह उत्तर-प्रदेश नाम से पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके प्रथम खंड में समस्त उत्तर-प्रदेश की भूरचना, उपज, इतिहास आदि का वर्णन है। द्वितीय खंड में जिलों का संक्षिप्त वर्णन है। आशा है उत्तर-प्रदेश का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने में पाठकों को इस से सहायता मिलेगी।

सम्पादक
१-५-५३

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ	विषय	
१—स्थिति, सीमा और विस्तार	...	१	३४—शाहजहाँपुर	...
२—भू रचना	...	४	३५—हमीरपुर	...
३—नदियां	...	८	३६—झाँसी	...
४—जल शक्ति	...	१६	३७—जालौन	...
५—जलवायु	...	२२	३८—बाँदा	...
६ वन	...	२५	३९ मथुरा	...
७—आने जाने के साधन	...	२८	४०—एटा	...
८—खनिज	..	३३	४१—मैनपुरी	...
९—नहरें	...	३६	४२ बदायूँ	...
१० कृषि	...	४२	४३—आगरा	...
११—कला-कौशल	....	४३	४४—इटावा	...
१२—व्यापार	...	४६	४५—कानपुर	...
१३—शिक्षा	...	४७	४६—फतेहपुर	...
१४—इतिहास	...	४९	४७ इलाहाबाद	...
१५ बाजार और मेले	...	५२	४८ मिर्जापुर	...
१६—उत्तर प्रदेश के जिलों का संक्षिप्त परिचय			४९—बनारस	...
१७—गढ़वाल और टेहरी राज्य	...	६३	५०—जौनपुर	...
१८—अल्मोड़ा	...	६५	५१—गाजीपुर	...
१९—नैनीताल	...	६९	५२—बलिया	...
२०—बिजनौर	...	७३	५३—प्रतापगढ़	...
२१—मुरादाबाद	...	७६	५४—सुलतानपुर	...
२२—बरेली	...	८१	५५—रायबरेली	...
२३—सहारनपुर	...	८४	५६—उन्नाव	...
२४—पीलीभीत	...	९४	५७—लखनऊ	...
२५—मुजफ्फरनगर	...	९७	५८—बाराबंकी	...
२६—मेरठ	...	९९	५९—फैजाबाद	...
२७—बुलन्दशहर	...	१०५	६०—गोंडा	...
२८—अलीगढ	...	११३	६१—बहरायच	...
	...	११८	६२—बस्ती	...
	...	१२३	६३—गोरखपुर-देवरिया	...
		१२९	६४—आजमगढ़	...
			६५—रामपुर	...
			६६ मानचित्र	...

भूगोल

वर्ष २०] आषाढ़ सं० २०००, जुलाई १९४३ [सं० १-३
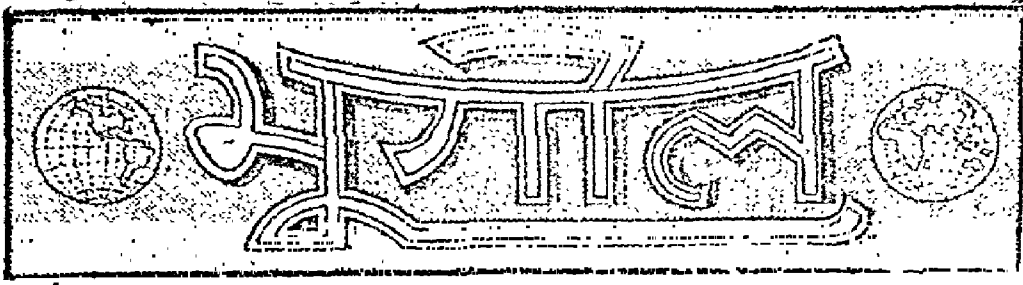
स्थिति, सीमा और विस्तार

उत्तर प्रदेश नाम नया है। लेकिन इसका इतिहास बड़ा पुराना है। इसकी स्थिति भारतवर्ष में आने जाने के मार्गों की सुविधा की दृष्टि से बड़ी केन्द्रवर्ती है। इसका पूर्वी भाग बङ्गाल की खाड़ी से प्रायः उतनी ही दूर है जितनी दूर दक्षिणी भाग अरब सागर से है। पश्चिमी सिरे से खैबर दर्रा भी प्रायः इतनी ही दूर रह जाता है। गङ्गा की उपजाऊ मध्य वर्ती घाटी में स्थित होने से उत्तर प्रदेश वास्तव में भारत का हृदय है। यह प्रान्त ३१-८ उत्तरी (टेहरी-गढ़वाल) और २३-५२ उत्तरी (मिर्जापुर) अक्षांशों और ७४-५ मुजफ्फर नगर और ८४-४० (बलिया) पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। जो उत्तरी अक्षांश उत्तर प्रदेश के गढ़वाल और देहरादून जिलों को छूता है। वही अक्षांश उत्तरी अफ्रीका के मरक्को अल्जीरिया, ट्यूनिस, लिब्या और मिश्र के उत्तरी भाग को काटता है। यही अक्षांश आगे चलकर पेलेस्टाइन, इराक, दक्षिणी ईरान और अफगानिस्तान को काटता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का दक्षिणी भाग कर्क रेखा से कुछ ही दूर रह जाता है।

उत्तर प्रदेश के उत्तर में तिब्बत और उत्तर पूर्व में नैपाल का स्वाधीन राज्य है। पूर्व और दक्षिण-पूर्व में बिहार के चम्पारन (मोतिहारी) सारन (छपरा) और शाहाबाद (आरा) जिले हैं। दक्षिण में हजारी बाग (छोटानागपुर) रीवा राज्य, बुन्देलखण्ड के पन्ना ओरछा आदि छोटे छोटे राज्य और मध्य प्रान्त का सागर जिला है।

पश्चिम की ओर ग्वालियर, धौलापुर, भरतपुर के देशी राज्य और गुरगांव, दिल्ली, कर्नाल और अम्बाला के जिले हैं। इसके आगे पञ्जाब के सिरमौर जावाल छोटे पहाड़ी राज्य उत्तर प्रदेश की पश्चिमी सीमा बनाते हैं। इस प्रकार यदि हम गढ़वाल से अधिक उत्तर की ओर हिमालय को पार करें तो तिब्बत के ऊंचे पहाड़ी देश में पहुँच जायंगे। अलमोड़ा और नैनीताल के पहाड़ी भाग नैपाल राज्य के पहाड़ी भागों को छूते हैं। पीलीभीत, शाहजहांपुर, लखीमपुर, (खीरी) बहरायच, गोंडा, बस्ती और गोरखपुर की तराई नैपाल की तराई से मिली हुई है। पूर्व की ओर गोरखपुर और बलिया का मैदानी भाग चम्पारन और सारन के मैदानी भाग को छूते हैं। दक्षिण की ओर मिर्जापुर जिले का पठारी भाग एक ओर हजारी बाग (छोटा नागपुर) से और दूसरी ओर रीवा राज्य के पठारी प्रदेश से मिले हैं। इलाहाबाद जिले के दक्षिणी पठारी भाग से चलकर हम रीवा और पन्ना राज्य के पठारी प्रदेश में पहुँच सकते हैं। बांदा जिला पन्ना और छतरपुर को, हमीरपुर का जिला चरखारी को छूता है। झांसी जिला ओरछा, दतिया और ग्वालियर के देशी राज्यों और मध्य प्रान्त के सागर जिले को छूता है। पश्चिम की ओर इटावा जिला ग्वालियर राज्य से आगरा धौलपुर से और मथुरा का जिला भरतपुर राज्य से मिला हुआ है। बुलन्द शहर पञ्जाब के गुरगांव जिले को, मेरठ, दिल्ली और रोहतक को, मुजफ्फर नगर
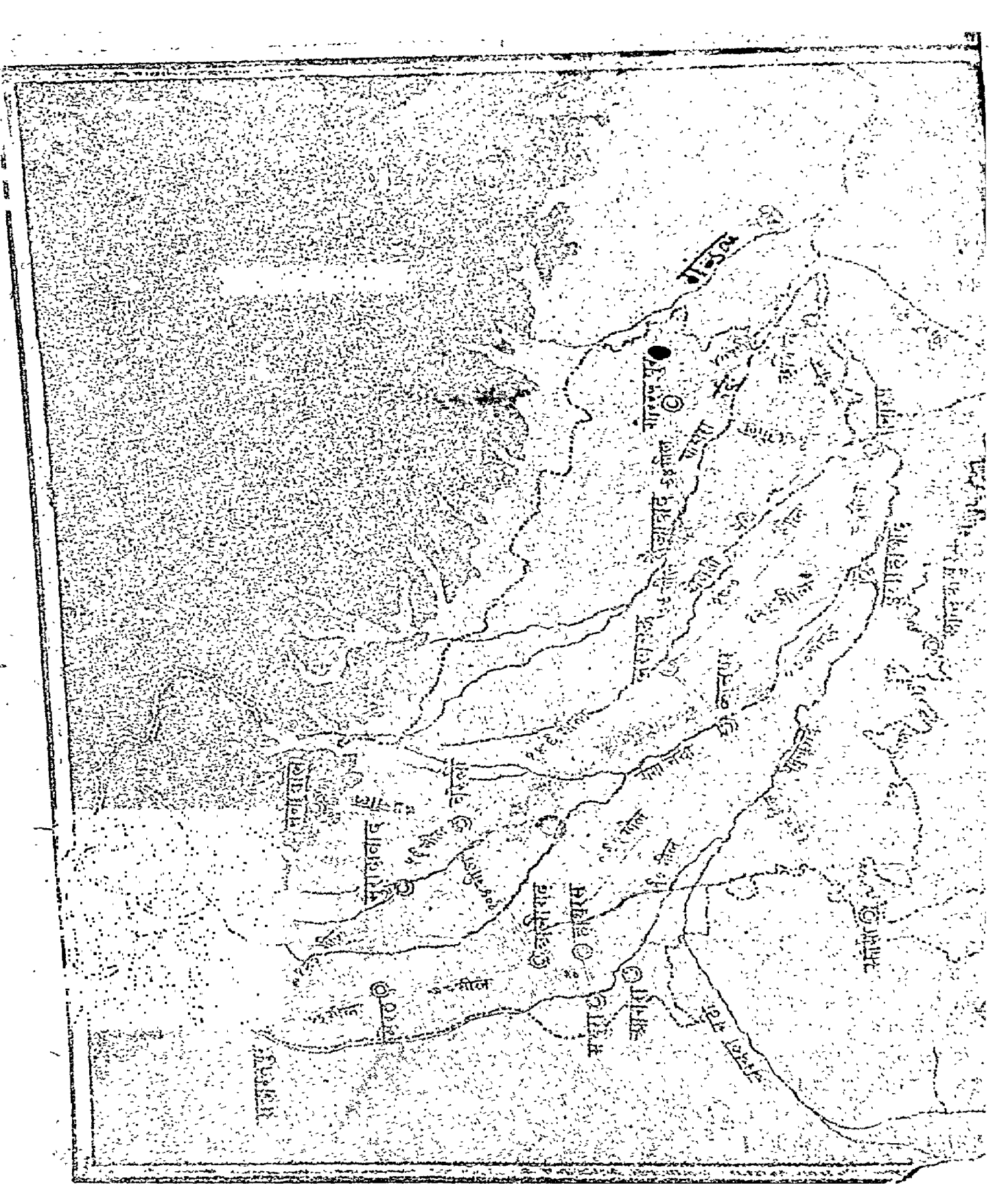
कर्नाल को और सहरनपुर अम्बाला जिले को छूते हैं। देहरादून का जिला पश्चिम की ओर शिमला के छोटे पहाड़ी राज्यों से घिरा हुआ है।

हिमालय के बर्फीले ढाल उत्तर की ओर काली नदी कुछ दूर पूर्व की ओर और यमुना नदी काफी दूर तक पश्चिमी की ओर प्राकृतिक सीमा बनाती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बहुत थोड़ी दूर तक घाघरा और गङ्गा भी प्राकृतिक सीमायें बनाती हैं। शेष बड़े भागों की सीमा प्राकृतिक नहीं है। इस सीमा के भीतर उत्तर प्रदेश की अधिक से अधिक लम्बाई ५०० मील और चौड़ाई लगभग ३०० मील है। इसका क्षेत्रफल १,१२, १६-१ वर्ग मील है। इसमें टेहरी, रामपुर और बनारस (काशी) के देशी राज्यों का क्षेत्रफल ५६४३ वर्ग मील है। शेप (१०६,२४८ व० मी०) क्षेत्रफल सीधे ब्रिटिश शासन वाले ४८ जिलों का है। समस्त प्रान्त की जनसंख्या प्राय: पांच करोड़ हैं।

अगर हम उत्तर प्रदेश की तुलना संसार के कुछ दूसरे देशों से करें तो इस प्रान्त का महत्व एक दम स्पष्ट हो जाता है। उत्तर प्रदेश क्षेत्रफल में वेल्जियम से दस गुना, (स्विजरलैंड) से ८ गुना डेन्मार्क से ७ गुना, आयरलैंड से ४ गुना, आस्ट्रिया, पुर्चगाल, हंगारा बल्गेरिया में से प्रत्येक से प्राय: तिगुना, चेकास्लोवेकिया से ढाई गुना और ग्रेट ब्रिटेन (जिसमें इङ्गलैंड वेलस, स्काटलैंड और उत्तरी आयरलैंड शामिल हैं) से सवाया है। उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल इटली के प्राय: बराबर, जर्मनी का दो तिहाई और जापान तथा फ्रांस का प्रायः आधा है।

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या समस्त आस्ट्रेलिया से ८ गुनी, आस्ट्रेलिया से ६ गुनी, यूनान से १० गुनी, डेन्मार्क से पन्द्रहगुनी, टर्की से चौगुनी, नार्वे से १६ गुनी ईरान से पँचगुनी, वेल्जियमसे ७ गुनी, पुर्चगाल से ८ गुनी, वेल्गेरिया से नौगुनी मेक्सिको से तिगुनी दक्षिणअफ्रीका से ६ गुनी रूमानिया से ढाई गुनी, अरब से बारह गुनी स्विजरलैंड से बारहगुनी, अफगानिस्तान से पँच गुनी, स्पेन से दुगुनी, ब्रिटेन से प्राय: सवाई फ्रांस से सवाई इटली से सवाई, कनाडा से पँचगुनी, जर्मनी की ४/५ जापान की ६/९ रूस की १/३ और संयुक्तराष्ट्र अमरीका की ३/८ है।

उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल आसाम से प्राय: दुगुना, उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रान्त से तिगुना, बङ्गाल से डेढ़गुना और मध्य प्रान्त से कुछ छोटा और बिहार के बराबर है। पञ्जाब, मद्रास, वम्बई प्रान्त और बरमा से क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश में बहुत छोटा है। लेकिन उत्तर प्रदेश की जनसंख्या बंगाल को छोड़ कर शेप प्रन्तों में हर प्रान्त से अधिक है।

भूरचना

उत्तर प्रदेश चार प्रधान प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है। (१) हिमालय का ऊँचा पहाड़ी भाग धुर उत्तर में स्थित है और प्रान्त के प्रायः ½ भाग को घेरे हुये है। उत्तर प्रदेश में हिमालय पर्वत सिवालिक की वनाच्छादित पहाड़ियों के आगे तेजी के साथ ऊंचे उठकर ८००० फुट ऊंचे हो गये हैं। हिमालय की यह बाहरी श्रेणी वन से ढकी है। इसी में मंसूरी,

चकराता, लैन्स डाउन रानीखेत और नैनीताल के पहाड़ी स्थान बसे हैं। जहां धनी लोग गरमियों में सैर करने के लिये जाते हैं। इसके आगे वाली हिमालय की भीतरी श्रेणी है जो बाहरी श्रेणी की समानान्तर है। भीतरी श्रेणी अधिक ऊँची है। यह प्रायः सब कहीं बरफ से ढकी है। केवल नुकीली चोटियों पर बरफ ठहरने नहीं पाती है। इस लिये वे नंगी दिखाई देती हैं। साधारण चोटियां २०,००० फुट ऊँची हैं। त्रिसूल (२३३८२ फुट) नन्दा कोट (२२५३८ फुट) और नन्दादेवी (२५६४५ फुट) अधिक ऊँची चोटियां हैं। यह चोटियां हिमालय की प्रधान श्रेणी के दक्षिण में स्थित हैं। प्रधान श्रेणी की औसत ऊंचाई २०,००० फुट है। ऊँचे भाग सदा गरमियों में भी बरफ से ढके रहते हैं। सरदी की ऋतु में ऊँचे नीचे सभी भाग बरफ से ढक जाते हैं। इसी से सरदी की ऋतु में इधर की यात्रा एकदम बन्द हो जाती है। इसी से बद्रीनाथ और केदारनाथ के पुजारी और पंडे सरदी की ऋतु में नीचे उतर आते हैं। सरदी की ऋतु में वहां कोई जीवधारी नहीं रहता है। गरमी की ऋतु में बरफ के पिघलने पर पुजारी, पंडे, यात्री और व्यापारी फिर वहां पहुँचते हैं मैदान की अपेक्षा पहाड़ पर ऊँचाई के कारण प्रायः सब कहीं अधिक वर्षा होती है। अधिक ऊँचे भाग अधिक ठंडे हैं। यहां सरदी सह लेने वाले देवदारु, बांझ आदि के पेड़ हैं। निचले ढालों पर साल, तून, कत्था आदि के पेड़ हैं। अच्छी और समतल भूमि न होने से खेती बहुत कम होती है। खेत पहाड़ी ढालों पर जीनेदार होते हैं। इधर के लोगो का प्रधान पेशा लकड़ी काटना और पशु पालना है। इन देशों में अधिक घनी आबादी का निर्वाह नहीं हो सकता। आने जाने के मार्ग भी अत्यन्त दुर्गम हैं। अच्छी सड़कें बाहरी ढालों पर ही समाप्त हो जाती हैं। भीतरी श्रेणी के लिये पहाड़ी पगडंडियाँ हैं जिनमें केवल पैदल यात्री, बोझा ढोने वाली बकरियां और टट्टूओं की गुजर हो सकती है। इसी से उत्तर प्रदेश के पहाड़ी भाग में अधिक लोग नहीं बसे हैं। अधिक ऊंचे भागों में हवा इतनी पतली है कि वहां मनुष्य भली प्रकार सांस नहीं ले सकता। निचले

संकेत
५००० फुट से अधिक
३००० - ५०००
१००० - ३०००
५०० - १०००
० - ५००

फ़ैजाबाद
जौनपुर

भाग की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यकर है। इसी से यहाँ रहने वाले छोटे क़द के होने पर भी बड़े हट्टे कट्टे और बलवान होते हैं। हिमालय में बद्रीनाथ केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि तीर्थ होने के कारण यहां प्रति वर्ष हजारों यात्री दर्शन करने के लिये आते हैं। जलवायु इतना स्वास्थ्यवर्द्धक और दृश्य इतना मनोहर है कि इधर तीर्थों की स्थापना करने वालों ने बड़ी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। यदि इधर तीर्थ न भी होते तो भी इस ओर के दृश्य और जलवायु से लाभ उठाने के लिये सैकड़ों यात्री आया करते। प्रान्त के इस भाग में जड़ी, बूटी, धातु, लकड़ी, ऊन के अतिरिक्त अपार जलशक्ति भरी पड़ी है।

२) हिमालय का भावर और तराई प्रदेश। हिमालय की तलहटी में भावर प्रदेश है। इसकी चौड़ाई कुछ ही मील है। कंकड़ पत्थरों से ढके हुये भावर प्रदेश से ऊपर आने वाली छोटी धारायें धरातल पर नहीं बह पातीं। इनका जल कंकड़-पत्थरों की तह के नीचे बैठ जाता है। केवल वर्षा ऋतु में ऊपर बहता है।

बहुत बड़ी नदियों का पानी सदा ऊपर बहने पाता है। पानी इतनी अधिक गहराई पर है कि सिंचाई के लिये कुछ भी नहीं खोदा जा सकता। इसी से गहरी जड़ों वाले पेड़ ही यहां मिलते हैं। खेती में सिंचाई पहाड़ी नालियों से होती है। भावर के आगे तराई की गीली और दलदली भूमि है। यहां नदियों का जल फिर ऊपर प्रगट होकर धरातल पर बहता है। तराई, जंगल अधिकतर ऊंची घास से ढका है। तराई का प्रदेश भी अधिक चौड़ा नहीं है। तराई और भावर दोनों ही प्रदेश बड़े अस्वास्थ्यकर हैं। तराई का प्रदेश न केवल प्रान्त के पहाड़ी भाग के दक्षिण में है, वरन पूर्व की ओर नैपाल के दक्षिण में भी तराई की भूमि कई जिलों में चली गई है। जिन किसानों को मैदान में खेत न मिल सका उन्होंने बीमारी की परवाह न करके तराई की भूमि में खेती आरम्भ कर ली। इसी लिये इधर जनसंख्या बढ़ गई है। घाघरा नदी ने तराई प्रदेश को दो भागों में बांट दिया है। घाघरा के पश्चिम में सहारनपुर, बिजनौर, बरेली, पीलीभीत और खीरी (लखीनपुर) की तराई है। इस पश्चिमी तराई का क्षेत्रफल ६८२२ वर्ग मील है। पूर्वी भाग में गोंडा बहरायच, बस्ती और गोरखपुर की तराई है। इस पूर्वी तराई का क्षेत्रफल १२८३४ वर्ग मील है। इन सब जिलों के केवल उत्तरी भाग में तराई है। दक्षिणी भाग में मैदानी भूमि है। तराई की औसत चौड़ाई १० मील है। इसका ढाल प्रति वर्ग मील में केवल तीन चार इंच है। तराई प्रदेश को पहाड़ से अलग करने वाला भावर प्रदेश है। भावर की चौड़ाई भी दस ग्यारह मील है। लेकिन यह अधिक ऊंचा है। इसका उतार एक वर्ग मील में १६ से लेकर ५० फुट तक है। भावर में अच्छी मिट्टी का प्रायः अभाव है। इस लिये घर घास फूस और लकड़ी के बने हैं। पहाड़ी भाग में तराई के दक्षिण में सिवालिक की पर्वत श्रेणी है। सिवालिक पर्वत दो तीन हजार फुट ऊंचा है, मैदान की ओर यह एकदम ढालू हो गया है। वास्तव में यह मैदान और पहाड़ को जोड़ने वाली एक कड़ी है। इसके ऊंचे भाग मैदान के समान प्राय मिट्टी और कंकड़ के बने हैं। ११ मील चौड़ी और ४५ मील लम्बी दून की घाटी सिवालिक को हिमालय से अलग करती है।

सिवालिक श्रेणी यमुना की नद-कन्दरा से लेकर, दक्षिण पूर्व में गंगा तट के हरद्वार नगर तक फैली हुई है। इसकी लम्बाई यहां प्रायः ४६ मील है। यह श्रेणी ६ मील से लेकर १० मील तक चौड़ी है। इसकी कई चोटीयां समुद्र तल से ३००० फुट ऊँची हैं। इस श्रेणी के तिमली दर्रे में होकर सहारनपुर से चकराता को सड़क गई है। मोहन्द दर्रे में होकर सहारनपुर से देहरादून का सड़क गई है। दूसरे दर्रे तो बहुत हैं पर वे अत्यन्त तंग हैं। यह सब का सब प्रदेश वन से ढका है। सिवालिक के बाहरी भाग में चिकनी मिट्टी, बालू और मटियार है, बीच के भाग में बालू की चट्टानें हैं। निचले भाग में बलुआ पत्थर है। इस भाग में बहुत से स्तनधार पुराने जानवरों की हड्डियाँ मिलती हैं। सिवालिक का ढाल मैदान की ओर एकदम सपाट है पर हिमालय की ओर यह ढाल क्रमशः है।

(३) गंगा का मैदान—प्रान्त का दो तिहाई भाग गङ्गा के मैदान से बना है। इस मैदान को गङ्गा और उसकी सहायक नदियों ने बाढ़ के साथ बारीक और उपजाऊ मिट्टी लाकर बनाया है। यह मैदान उत्तर में हिमालय पश्चिम में राजपूताना के उच्च प्रदेश से घिरा है। यहीं अर्वली पर्वत की अन्तिम घिसी हुई पहाड़ियां हैं और सतपुड़ा की पहाड़ियों से दक्षिण में विन्ध्या का पठार घिरा है। पूर्व की ओर यह मैदान बंगाल और विहार के मैदान का अंग है।

यह मैदान प्रायः समतल सा मालूम होता है। केवल नदियों की धारा के पास कुछ नीची भूमि है। अत्यन्त उपजाऊ होने से यह मैदान बहुत घना बसा है। यहीं प्राचीन ऐतिहासिक और नवीन कारबारी नगर हैं। आने जाने की सब कहीं सुविधा है। यह कछारी मैदान प्रान्त के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला हुआ है। इसकी लम्बाई ५०० मील औसत चौड़ाई १०० मील है। इस मैदान का जो भाग गङ्गा और यमुना के बीच में स्थित है वह द्वाबा कहलाता है यह द्वाबा बड़ा उपजाऊ है। द्वाबा का ऊपरी भाग (जिसमें सहारनपुर, मुजफ़्फ़र नगर, मेरठ, बुलंदशहर मथुरा जिले का कुछ भाग और अलीगढ़ के जिले शामिल हैं। और भी अधिक उपजाऊ है इसमें नहरों का जाल सा बिछा हुआ है। गन्ना गेहूँ और कपास यहां की प्रधान फसलें हैं। मध्य द्वाबा कुछ कम उपजाऊ है। पर फसलें यहां भी अच्छी होती हैं। मध्य द्वाबा अलीगढ़ से कानपुर तक फैला हुआ है। इसमें आगरा, एटा, मैनपुरी, इटावा और फर्रुखाबाद के जिले शामिल हैं। और निचला द्वाबा कानपुर से इलाहाबाद तक फैला हुआ है। इसमें कानपुर, फतेहपुर और अधिकांश इलाहाबाद के जिले शामिल हैं। इस भाग की ज़मीन इतना अच्छी नहीं हैं। कहीं कहीं बलुई मिट्टी मिलती हैं। गङ्गा के उत्तर में कमायूं की पहाड़ी कमिश्नरी और अवध के बीच में रुहेलखण्ड का त्रिभुजाकार मैदान स्थित है। यह भाग द्वाबा से कुछ ही कम उपजाऊ है। नदियों के ऊंचे किनारों के बीच में प्रायः बलुई मिट्टी मिलती है। ऊंचे किनारों के आगे ज़मीन अच्छी है। केवल कहीं कहीं भूड़ हैं। यहां अधिकतर सिंचाई कुओं से होती है कुछ भाग नहर (सारदा) से सींचे जाते हैं।

गंगा के उत्तर में नेपाल की सीमा तक मैदान का मध्यवर्ती भाग अवध के नाम से प्रसिद्ध है। अवध के उत्तरी सिरे पर तराई मलेरिया ग्रस्त प्रदेश हैं। शेष भाग में उपजाऊ मैदान है। गोमती, घाघरा, और राप्ती प्रदेश की प्रधान नदियां हैं। यह प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। केवल नदियों के भाग में कहीं कहीं बालू मिलती है। यहां कुओं और झीलों से सिंचाई होती है। कुछ भाग में नहर से भूमि सींची जाती है।

घाघरा पार वाला मैदान का पूर्वी प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। यह प्रदेश गङ्गा के उत्तर में घिरा हुआ एक त्रिभुज सा बनाता है। इसकी भूमि बड़ी उपजाऊ है। यहां प्रबल वर्षा होती है। धान यहां की प्रधान फसल है। जितनी घनी जनसंख्या मैदान के इस पूर्वी भाग में बसी हुई है उतनी घनी जनसंख्या और कहीं नहीं मिलती है। कहीं कहीं इस भाग में एक वर्ग मील में ७०० मनुष्य रहते हैं।

(४) विंध्याचल का पठार यमुना नदी के पश्चिम में मथुरा, आगरा और इटावा जिलों में द्वाबा के समान उपजाऊ भूमि है। लेकिन अधिक दक्षिण की ओर यमुना के पश्चिम में विन्ध्याचल की पठारी भूमि है। इसी में झांसी कमिश्नरी है जिसमें झांसी जालौन बांदा और हमीरपुर के जिले शामिल हैं। यह प्रदेश गङ्गा के मैदान की अपेक्षा सब कहीं अधिक ऊँचा है। लेकिन हिमालय के पर्वतीय प्रदेश के सामने इसकी ऊँचाई कुछ भी नहीं है। इसमें जगह जगह पर विन्ध्याचल की घिस हुई चट्टानें और पहाड़ियां मिलती हैं। इधर की भूमि उपजाऊ नहीं है। इसमें मोटे कण रहते हैं। कहीं कहीं काली मिट्टी मिलती है जो अधिक उपजाऊ है। पहाड़ी भागों में छोटे क़द वाले पेड़ों के जंगल हैं।

अधिक पूर्व में यमुना के दक्षिण में इलाहाबाद और गङ्गा के दक्षिण में मिर्ज़ापुर जिले का अधिकांश भाग पठारी है। यहां विन्ध्या और पूर्वी सतपुड़ा की पहाड़ियां हैं। इस ओर की मिट्टी भी उपजाऊ नहीं है। अधिकतर प्रदेश में जंगल है। मिर्ज़ापुर से अधिक आगे (गाज़ीपुर जिले में, गङ्गा के दक्षिण में उप कछारी भूमि है जो मैदान का ही अंग है।

नदियां

उत्तर प्रदेश की ढाल क्रमशः दक्षिण पूर्व की ओर है। इसी से इस प्रान्त की प्रायः सभी नदियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर बहती हैं। इस प्रान्त की प्रधान नदी गङ्गा है। प्रान्त की दूसरी नदियां सीधे अथवा और नदियों से मिलकर अपना पानी गङ्गा में गिराती हैं। इनमें कुछ नदियां इस प्रान्त में गङ्गा से मिलती हैं कुछ आगे चलकर विहार में गङ्गा से मिलती हैं। उत्तर प्रदेश की प्रधान नदियां गङ्गा, यमुना, घाघरा, गोमती और राम गङ्गा हैं।

गढ़वालजिले में जो वर्षा होती है अथवा हिम पिघलती है उसका सब पानी गङ्गा और गङ्गा की सहायक नदियों में बहकर आता है। गङ्गा नदी वास्तव में भागीरथी और अलकनन्दा के मिलने से बनती है। ये दोनों देवप्रयाग के पास मिलती हैं। भागीरथी गंगोत्री (टेहरी राज्य में) से निकलती है और अधिक पवित्र मानी जाती है। अलकनन्दा विष्णु प्रयाग के पास विष्णु गङ्गा और धौली गङ्गा के मिलने से बहती है। विष्णु गङ्गा वद्रीनाथ में विष्णु जी के मन्दिर के पास से निकलती है। इसी से इसका नाम विष्णु गङ्गा पड़ा। धौली गङ्गा नीति दर्रे (घाट) के पास से निकलती है। अलकनन्दा दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। नन्द प्रयाग के पास नन्दाकिनी इसमें मिलती है। नन्दाकिनी त्रिशूल के पश्चिम ढाल के हिमागारों से निकलती है। अलकनन्दा की दूसरी बड़ी सहायक नदी पिंडर पिंडर नदी पिंडरी ग्लेशियर (हिमागार) से निकलती है जो अल्मोड़ा जिले के नन्दा कोट के पश्चिमी ढालों पर स्थित है। ग्वाल्दम के पास पिंडर नदी गढ़वाल जिले में प्रवेश करती है और कर्णप्रयाग में अलकनन्दा में मिल जाती है। कर्ण प्रयाग से रुद्र-प्रयाग तक अलकनन्दा पश्चिम की ओर मुड़ती है। रुद्र प्रयाग में ही केदारनाथ से आनेवाली मन्दाकिनी नदी अलकनन्दा में मिलती है। रुद्र प्रयाग से अलक नन्दा दक्षिण की ओर मुड़ती है। टेहरी राज्य का श्री नगर इसी के किनारे बसा है। देव प्रयाग के पास अलकनन्दा और भागीरथी का संगम है। व्यासघाट के पास नायर नदी मिलती है। नायर नदी गढ़वाल के मध्यवर्ती भाग का पानी बहा लाती है। आरम्भ में पश्चिमी और पूर्वी दो नायर नदियां हैं। दोनों दूदा टोली पर्वत से निकलती हैं और भाटकोली के पास दोनों मिल जाती हैं। व्यासघाट से लक्ष्मण झूला तक गङ्गानदी पश्चिम की ओर बहती है। फुलारी के पास हुइंल नदी मिलती है। लक्ष्मणझूला से प्रायः हरिद्वार के पास तक गङ्गा देहरादून और गढ़वाल के बीच में सीमा बनाती है।

अलकनन्दा नाम कुवेरी की अलका पुरी से सम्बन्ध रखता है। कहा जाता है कि यह नदी आरम्भ में अलका पुरी से ही आई थी। अलकनन्दा वद्रीनाथ के उत्तर में निकलती है। माना गांव के नीचे इसमें सरस्वती नदी मिलती है। विष्णु प्रयाग के पास नदी

में एक पवित्र (विष्णु कुंड) होने से इसके कुछ भाग को विष्णु गङ्गा कहते हैं। सङ्गम के पास धौली की चौड़ाई ३० या ३५ गज है। अलकनन्दा की चौड़ाई २५ या तीस गज है। लेकिन दोनों नदियां बड़ी वेगवती हैं। सङ्गम समुद्र तल से ४७४३ फुट ऊंचा है सङ्गम का दृश्य बड़ा मनोहर है। संयुक्तधारा दक्षिण-पश्चिम की ओर चमोली को वहती है। मार्ग में रुद्र गङ्गा, गरुड़ गङ्गा, वाताल गंगा और विरेही गंगा मिलती हैं। चमोली से अलकनन्दा दक्षिण की ओर मुड़ती है। नन्द प्रयाग में समुद्र-तल से २४६४ फुट की ऊंचाई पर मन्दाकिनी गंगा मिलती है। कर्ण प्रयाग (२,३०० फुट) में पिंडर नदी अलकनन्दा से मिलती है। यह स्थान विष्णु प्रयाग से ४१ मील दूर है। कर्ण प्रयाग से १६ मील की दूरी पर रुद्र प्रयाग (१६१२ फुट) में मन्दाकिनी का सङ्गम है। यहां से आगे यह दक्षिण पश्चिम की ओर श्रीनगर होती हुई देव प्रयाग (१४८३ फुट) को जाती है। यहीं भागीरथी का संगम है। पुनार चट्टी से चार मील की दूरी पर अलकनन्दा ३०० फुट ऊंची सपाट पहाड़ियों से इस प्रकार घिर जाती है कि यहां पर इसकी चौड़ाई केवल २५ फुट रह जाती है। सङ्गम के पास संयुक्त-धारा की चौड़ाई २४० फुट हो जाती है। हिम के पिघलने पर इसमें धारा की चौड़ाई ४० फुट बाढ़ आती है। रुद्र प्रयाग से पीपल कोटी तक इसके उत्तरी किनारे पर बांझ के वृक्ष हैं। इसके नीचे नन्द प्रयाग तक देवदारु के वृक्ष मिलते हैं। अलकनन्दा में मछलियां बहुत हैं। मछलियां प्रायः डेढ़ दो गज लम्बी रहती हैं। कोई कोई महसीर मछली १ मन भारी होती है। अलकनन्दा की वालू को धोकर लोग सोने के कण निकालते हैं।

सुन्दर स्वच्छ घाटों और हरे भरे मनोहर पर्वतों से घिरी हुई गंगा का दृश्य हरिद्वार में बड़ा सुन्दर है। हरि की पैड़ी पर सर्वोत्तम दृश्य है। कुछ ही दूर दक्षिण में मायापुर से गंगा नहर निकलती है। मायापुर से १ मील दक्षिण की ओर कनखल से ४ मील नीचे गंगा से वान गंगा नाम की उपशाखा निकलती है। सम्भव है पहले यहीं होकर गंगा बहती रही हो। बिजनौर जिले में गढ़वाल से निकल कर आने वाली पैली राव और फिर रावली के पास मालिन नदी गंगा में मिलती है। कहा जाता है कि मालिन नदी के किनारे ही कण्व ऋषि का आश्रम था जहां शकुन्तला और दुष्यन्त की भेंट हुई थी। इसी पर कालिदास ने जगत्प्रसिद्ध शकुन्तला नाटक लिखा है।

मुजफ्फर नगर जिले में गंगा के किनारे शुक्र-ताल एक अति प्राचीन और सुन्दर स्थान है। कहते हैं यहीं शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को कथा सुनाई थी। शुक देव जी की पादुकाओं का मन्दिर ऊंचे टीले पर बना है। मेरठ जिले में गंगा के किनारे पर गढ़ मुक्तेश्वर प्रसिद्ध स्थान है। कहते हैं गढ़ मुक्तेश्वर पुराने समय में हस्तिनापुर का एक मुहल्ला था। इस समय हस्तिनापुर गंगा से बहुत दूर पड़ गया है। बूढ़ गंगा कुछ झीलों की सहायता से हस्तिनापुर के पास एक द्वीप सी बनाती है। महाभारत के समय में हस्तिनापुर भारतवर्ष का एक अति प्रसिद्ध नगर था।

बुलन्द शहर जिले में गंगा के ऊंचे और कड़े किनारे पर अहार, अनूप शहर (राजघाट) और राम घाट बसे हैं। कहा जाता है कि महाराज जन्मेजय ने नागयज्ञ अहार में ही किया था। राज घाट से तीन चार मील दक्षिण की ओर भारोरा ग्राम है। यहीं से निचली गंगा-नहर निकलती है। राम घाट सुप्रसिद्ध तीर्थ है।

बदायूं जिले में कछला नामक स्थान पर गंगा स्नान का बड़ा मेला लगता है। यहां से ३ मील दूर ककोरा में भी मेला लगता है। एटा जिले में गंगा से ४ मील दूर बूढ़ गंगा के किनारे सोरों एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। कहते हैं कि विष्णु जी ने बा ११ अवतार लेकर यहीं हिरण्यकश्यप का वध किया था। तभी से इसका नाम सूकर क्षेत्र हुआ। इसी से बिगड़ कर सोरों नाम पड़ गया।

शाहजहांपुर जिले में भरतपुर गाँव के पास कार्तिक की पूर्णिमा को ढाई घाट का मेला लगता है।

फर्रुखाबाद जिले में बूढ़ गंगा के किनारे पहला स्थान काम्पिल पड़ता है। यहां राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी का स्वयम्बर हुआ था। गंगा के किनारे फर्रुखाबाद की विश्रान्ते (विसरांते) बड़ी सुन्दर है। तीन मील
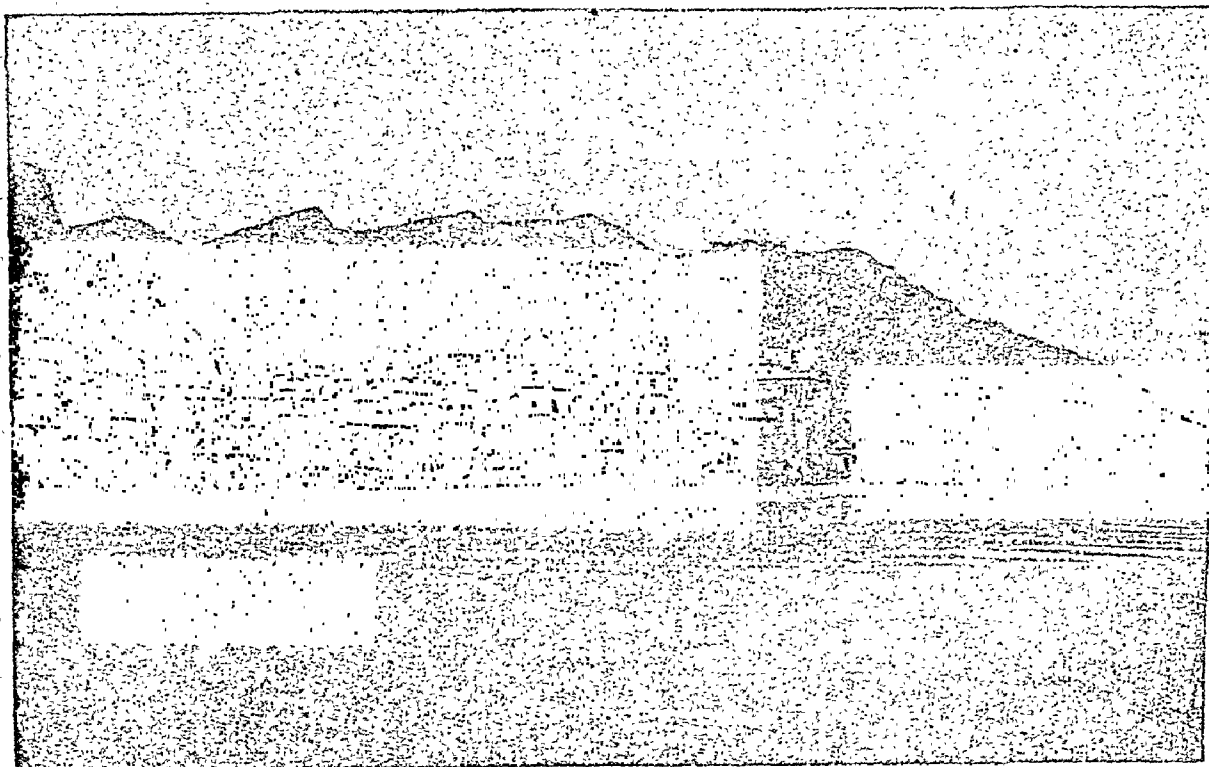
हरद्वार का एक दृश्य
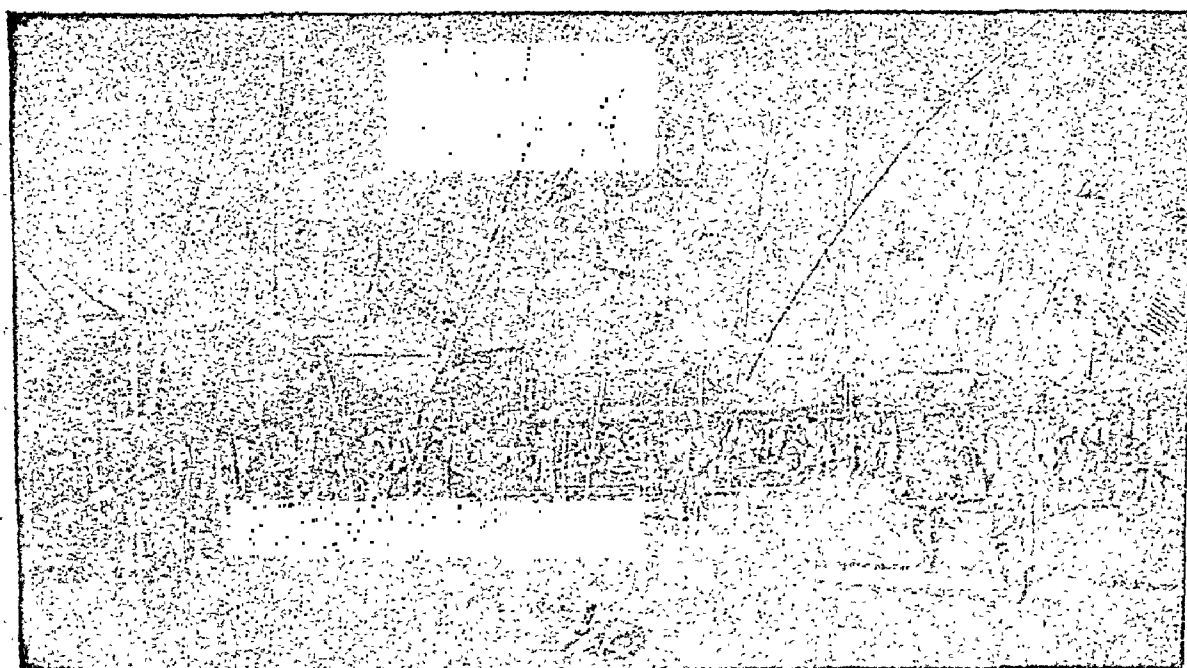
प्रयाग में कुम्भ मेला का एक दृश्य

की दूरी पर गंगा के ठीक किनारे फतेहगढ़ का किला है। फतेहगढ़ से ११ मील की दूरी पर सिंगीरामपुर है। कन्नौज के पास ही गंगा और रामगंगा का संगम है। यहीं राजा जयचन्द के किले के खंडहर हैं। गजनी के समय में कन्नौज भारत का एक प्रतिभाशाली नगर था। यहां हजारों संगमरमर के मन्दिर और महल थे।

अलीगढ़ जिले से निकलने वाली ईसन नदी एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद होकर बिल्हौर (मढ़ गांव) के पास कानपुर जिले में गंगा में मिल जाती है

गंगा के किनारे बिठूर एक प्रसिद्ध तीर्थ है। कानपुर का कारबारी शहर भी गंगा के किनारे बसा है। किनारे पर कई घाट बने हैं। यहीं गंगा के ऊपर लखनऊ को जानेवाली लाइन का पुल बना है। उन्नाव जिले में डौंडिया खेरा और बकसर दो बड़े गांव गंगा के किनारे हैं। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण जी ने कंस नामक राक्षस का वध यहीं किया था। छोत्र और लोनी दो छोटी सहायक नदियां इस जिले में गंगा में मिलती हैं। फतेहपुर जिले में गंगातट पर शिवराजपुर एक अच्छा स्थान है।

इलाहाबाद जिले में गंगा के किनारे सिंगरौर (शृंगवेरपुर) एक पुराना स्थान है। पास ही एक पुराना खम्भा है जिसके ऊपर से शायद पुराने समय में नगाड़े और झंडी द्वारा इलाहाबाद को सन्देश भेजे जाते थे। यहां के मरघट घाट में मगर बहुत हैं। लेकिन वे घाट पर स्नान करने वालों को नहीं छेड़ते हैं। फाफामऊ के पास गंगा के ऊपर रेल और सड़क का पुल है। इसके आगे दारागंज में छोटी लाइन का पुल है। यहां से थोड़ी दूर पर किला के सामने गङ्गा और यमुना का संगम है। गङ्गा का सफेद मटीला और यमुना का नीला जल अलग स्पष्ट दिखाई देता है। सङ्गम प्रायः प्रतिवर्ष किले से कुछ दूर हटता जा रहा है। दूसरे ऊँचे किनारे परइलाहाबादसे भीअधिक पुराना झूसी (प्रतिष्ठानपुर) स्थान है। प्रति १२ वर्ष के बाद होनेवाला प्रयाग का कुम्भ और ६ वर्ष के बाद अर्द्ध कुम्भ मेला भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है। यात्री दूर दूर से आते हैं। संक्रान्ति में स्नान करने वालों की संख्या ५ लाख से ऊपर हो जाती है। टॉस के सङ्गम के पास सिरसा नगर बसा है। दूसरी ओर लच्छागिरि का पुराना स्थान है। मिर्जापुर जिले में गँगा नदी करौंदिया गांव के पास चक्कर खाकर एक प्रायः द्वीप सा बनाती है। फिर यह विन्ध्याचल होती हुई मिर्जापुर को घूम जाती है। यहाँ ऊँचे किनारे पर बसे हुये मिर्जापुर शहर का दृश्य बड़ा सुन्दर है। घाटों से किनारे की सुन्दरता और भी अधिक बढ़ गई है। चुनार के पास विन्ध्याचल पहाड़ी का सिरा गङ्गा को प्रायः छूता है। इसी से इसका नाम चरणाद्रित या चुनार पड़ा। इसी सिरे पर गङ्गा तट पर भर्तृहरि के समय का पुराना किला बना है जो पहले बंगाल से आनेवाले मार्ग की रखवाली करता था। इस समय बालक कैदियों के सुधारने के लिये यहां जेल है। पठार की ओर से आकर गंगा में मिलने वाले नालों मे जिरगो सर्व प्रसिद्ध है।

मिर्जापुर जिले और इससे आगे गंगा बहुत से मोड़ बनाकर बहती है। एक सिरे से दूसरे तक मिर्जापुर जिले में गंगा के प्रवाह मार्ग की लम्बाई सीधी रेखा में ५६ मील है। लेकिन मोड़ों के कारण इसकी लम्बाई ८४ मील हो जाती है।

बनारस जिले में इन्हीं मोड़ों की अधिकता से गंगा का कभी बांया और कभी दाहिना किनारा ऊंचा हो जाता है। बनारस या काशी शहर इसी ऊंचे बांये अर्द्ध चन्द्राकार किनारे पर बसा है। बनारस के घाट अत्यन्त सुन्दर हैं। यहाँ स्नान करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। दूसरी ओर गंगा तट पर काशी नरेश का महल और किला बना है। बनारस से लगभग चार मील की दूरी पर गंगा तट पर विशाल हिन्दू विश्वविद्यालय बना है। बनारस जिले में गोमती असी और बरना नदियां गंगा में मिलती है। बरना और असी का सँगम होने के कारण ही काशी का दूसरा नाम वाराणसी या बनारस पड़ा।

गाजीपुर जिले में गंगा अधिक चौड़ी और गहरी हो जाती है। एक दो स्थानों पर धारा के बीच में टापू बन गये हैं। गाजीपुर गंगा के कुछ ऊंचे किनारे पर बसा है। मिर्जापुर की तुलना में इसकी ऊंचाई बहुत कम है। गाजीपुर घाट में गंगा के

मथुरा का विश्राम घाट
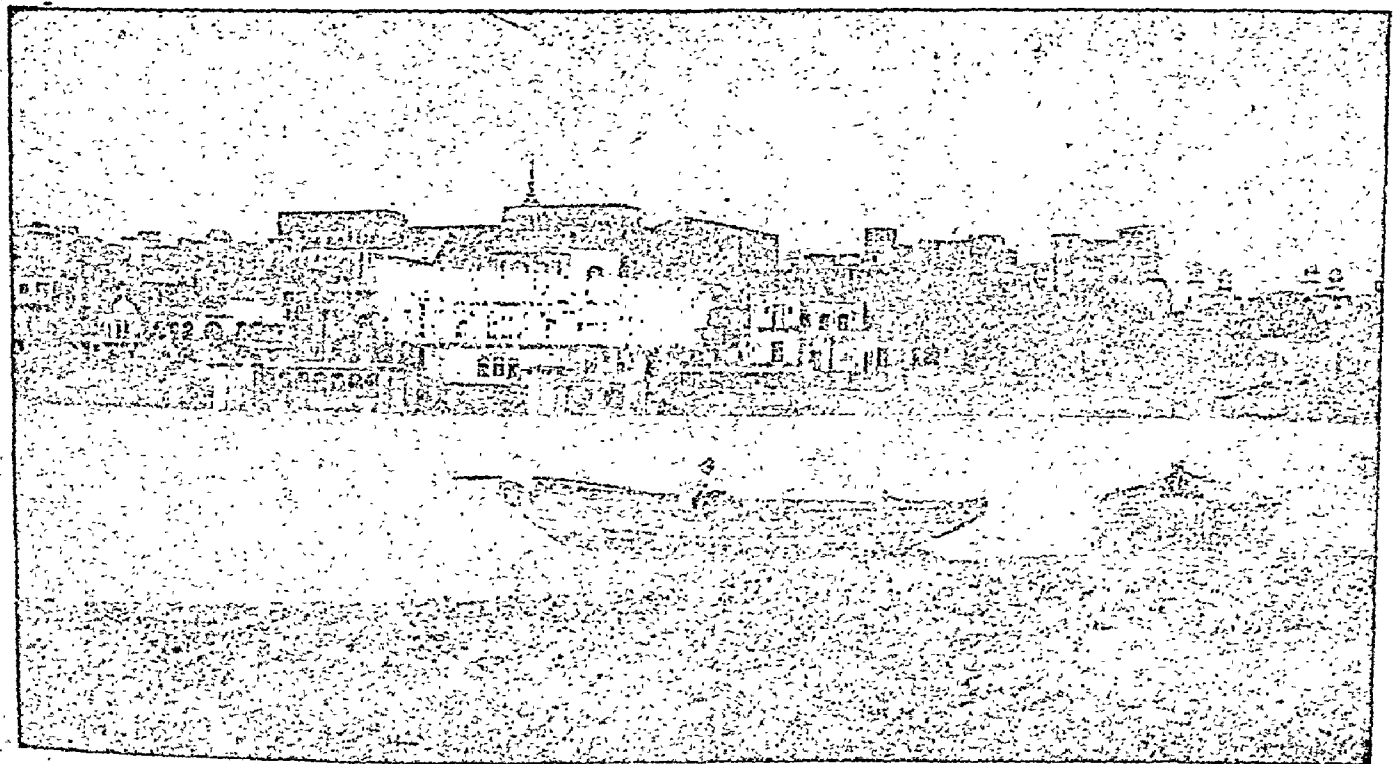
मथुरा में यमुना का एक दृश्य

एक किनारे से दूसरे किनारे के लिये स्टीमर चला करते हैं।

बलिया जिले में गंगा के किनारे बहुत कम ऊँचे रह गये हैं। बाढ़ के दिनों में किनारे के गांव अक्सर कट जाते हैं। बलिया शहर गंगा के किनारे बसा है। बाढ़ के दिनों में इसे भी डर रहता है। बलिया जिले को छोड़ कर गङ्गा शाहाबाद या आरा जिले में प्रवेश करती है जो बिहार प्रान्त में स्थित है।

यमुना—यमुना नदी गढ़वाल में समुद्र तट से १०८४९ फुट की ऊँचाई पर यमुनोत्री हिमागार से (प्रायः ५ मील उत्तर) निकलती है। बन्दर पांच पर्वत (जो २०,७३१ फुट ऊंचा है) से यमुना का उद्गम ८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। उद्गम से ७ मील दक्षिण की ओर बहने के बाद यमुना २२ मील तक उत्तर-पश्चिम की ओर (कोटनूर तक) बड़े वेग से बहती है। केवल १६ मील बहने पर ही यह ५००० फुट से अधिक नीचे उतर आती है। इसी बीच में बदियर और कमलाद दो छोटी पहाड़ी नदियां यमुना में दाहिने किनारे पर आ मिलती हैं। इसके आगे यमुना फिर २६ मील तक ठीक दक्षिण की ओर बहती है। इस मार्ग में बदरी और अस्लौर सहायक नदियां यमुना में आ मिलती हैं। अस्लौर के संगम के आगे यमुना अचानक पश्चिम की ओर मुड़ती है। १४ मील (संगम) तक यह इसी दिशा में बहती है। यहीं टोंस नदी यमुना में मिलती है। टोंस अधिक बड़ी नदी है। इस संगम के आगे यमुना हिमालय को पीछे छोड़कर दून-घाटी में प्रवेश करती है। यहां यमुना का बहाव दक्षिण-पश्चिम की ओर हो जाता है। इस ओर गिरि और सरमौर नदियां पश्चिम की ओर से और आसनदी पूर्व की ओर से यमुना में मिलती हैं।

अपने मार्ग के ६५ वे मील पर यमुना शिवालिक को पीछे छोड़कर सहारनपुर जिले में फैजाबाद गांव के पास मैदान में प्रवेश करती है। यहां समुद्र तल से यमुना की ऊंचाई १२७६ फुट है। मैदान में ६५ मील तक यमुना दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और पंजाब के अम्बाला और कर्नाल जिलों को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर और मुजफ्फर नगर जिलों से अलग करती है। मैदान में पहुँचते पहुँचते यमुना एक बड़ी नदी बन जाती है। यहीं फैजाबाद गांव के पास यमुना नदी से पूर्वी यमुना और पश्चिमी यमुना नहरें निकलती हैं। राजघाट के पास पूर्व की ओर से आकर मस्करा नदी यमुना में मिलती है। (मुजफ्फर नगर जिले में) बिधौली के पास यमुना ठीक दक्षिण की ओर मुड़ती है और ८० मील (दिल्ली के पास) तक इसी दिशा में बहती है। दिल्ली से दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़कर (७ मील) दनकौर के आगे यमुना फिर दक्षिण की ओर बहने लगती है। इसी मार्ग में कठ नदी और हिंडन पूर्व की ओर से सबी, नदी पश्चिम की ओर से यमुना में आ मिलती हैं। दनकौर से मथुरा के पास महावन (१८० मील) तक यमुना में कई सहायक नदी नहीं मिलती है। यमुना नदी बुलन्द शहर और अलीगढ़ जिलों को तो पंजाब के गुरुगांव जिले से अलग करती है। लेकिन इसके आगे होदा के पास से यह उत्तर प्रदेश के भीतर होकर बहती है। पहले यह मथुरा जिले के बीच में बहती है। महावन के पास यह आगरा जिले में प्रवेश करती है। महावन के पास से यमुना पूर्व की ओर मुड़ती है और २०० मील तक दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। इस मार्ग में आगरा और इटावा के कटे फटे ऊंचे किनारों के पड़ोस में यमुना विलक्षण मोड़ बनाती है। यमुना के जितने ऊँचे किनारे आगरा और इटावा जिलों में हैं उतने ऊंचे किनारे मैदान के ऊपरी भागों में भी नहीं हैं। आगरे के पास करवा नदी यमुना में बाईं ओर से आकर मिलती है। दक्षिण की ओर दाहिने किनारे पर उतांगन नदी यमुना में मिलती है। आगरा, फीरोजाबाद, बटेश्वर और इटावा यमुना के ऊंचे किनारे पर बसे हैं। बटेश्वर के पास यमुना मुड़कर एक प्रायः द्वीप सा बनाती है। यहीं कार्तिक के महीने में भारी मेला लगता है। इटावा के आगे यमुना १४० मील (हमीरपुर) अधिक दक्षिण की ओर मुड़ती है।

इटावा के दक्षिण प्रदेश को पार करके यमुना इटावा और कानपुर जिलों को जालौन और हमीरपुर जिलों से अलग करती है। कालपी के नीचे यमुना के उत्तरी किनारे पर सेंगर नदी मिलती है। इटावा शहर से ४०

मील नीचे की ओर विशाल चम्बल नदी मध्य भारत का पानी यमुना में उंडेल देती है। इटावा और जालौन की सीमा पर यमुना में दक्षिण की छोटी सिन्ध नदी मिलती है। हमीरपुर के पास यमुना और बेतवा का संगम है। हमीरपुर से इलाहाबाद (गंगा के संगम) तक यमुना ठीक पूर्व की ओर बहती है। इस मार्ग में यह फतेहपुर जिले को बांदा से अलग करती है। कुछ दूर तक इलाहाबाद और बांदा के बीच में सीमा बनाती है। इसी मार्ग में केन नदी यमुना में मिलती है। अन्त में यह इलाहाबाद शहर से प्रायः दो मील नीचे किले के पूर्व में गंगा से मिल जाती है। किले से एक मील पश्चिम की ओर यमुना के ऊपर प्रान्त भर में सबसे अधिक मजबूत और विशाल पुल बना है। पुल के ऊपरी भाग में ईस्ट-इंडियन रेलवे की दुहरी लाइन है। बांई ओर वाली (पूर्वी) लाइन से गाड़ियां कलकत्ते की ओर जाती है। दाहिनी (पश्चिमी) ओर की लाइन पर कलकत्ते से इलाहाबाद के लिये रेलगाड़ियां आया करती हैं। निचले खंड के दुहरी पक्की सड़कें हैं। एक से मोटर चलते हैं। दूसरी बैल गाड़ियों और पैदल जाने वालों के लिये है। पुल से २ मील पश्चिम की ओर सी ड्रोम है जहां पानी में उतरने वाले हवाई जहाज यमुना में उतरा करते हैं। नहरों के निकलने से आगरे के पास तक यमुना में बहुत कम पानी रहता है। लेकिन चम्बल आदि दक्षिण से मध्य भारत की नदियों का पानी आ जाने से इलाहाबाद में यमुना बड़ी शानदार और गम्भीर होती है। पुल के ऊपर से यमुना का दृश्य सूर्योदय और सूर्यास्त के समय बड़ा मनोहर लगता है। जहां तक गहरा जल है वहां तक यमुना में छोटी बड़ी नावें बराबर चला करती हैं। उद्गम से गंगा संगम [इलाहाबाद] तक यमुना की समस्त लम्बाई ८६० मील है। इस भाग में इटावा तक यमुना गंगा के समानान्तर बहती है इसके आगे यमुना और गंगा के बीच का अन्तर कम होता जाता है अन्त में इलाहाबाद में वह गंगा से मिल जाती है। सगम के पास यमुना का हरा नीला जल एकदम स्पष्ट दिखलाई देता है कालिदास और तुलसीदास ने संगम का बड़ा रोचक वर्णन किया है।

उद्गम से ४० मील की दूरी पर नाक स्टेशन के पास बम्बई बड़ौदा सेण्ट्रल इंडिया रेलवे का पुल चम्बल के ऊपर बना है।

चम्बल — [प्राचीन चर्मणावती] यमुना की एक प्रधान सहायक नदी है। यह इन्दौर राज्य में म्हो छावनी से ६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर जनपाओ पहाड़ी से २०१६ फुट की उंचाई से निकलती है। विन्ध्याचल के उत्तरी ढालों से उतर कर उत्तर की ओर यह ग्वालियर, इन्दौर और सीतामऊ राज्यों में बहती है। झालावार राज्य को छूती हुई चम्बल नदी अपने उद्गम से १६५ मील की दूरी पर चौरासी गढ़ गाँव के पास राजस्थान में प्रवेश करती है। मध्य भारत की सहायक नदियों में चंबला और सिप्रा [क्षिप्रा] प्रधान है। राजस्थान में पठार के कड़े किनारे को काटने में चम्बल का मार्ग बड़ा संकुचित और मोड़दार हो जाता है। यहीं भैंसरोगढ़ के पास भाभनी नदी चम्बल में मिलती है। इससे तीन मील ऊपर चम्बल में सुन्दर चूलीं या प्रपात हैं। एक प्रपात की उंचाई ६० फुट है। यहां चम्बल में गुफाओं के भीतर तीस चालीस फुट गहरे भंवर बन गये हैं। आगे उत्तर-पूर्व की ओर बह कर चम्बल नदी बूंदी और कोटा के बीच में सीमा बनाती है। कोटा शहर के पास चम्बल एक चौड़ी और मन्दवाहिनी नदी बन गई है। पानी के ऊपर वृक्षों और लताओं के ऊपर एक दम ऊंचे उठे हुये किनारे बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। कोटा से आगे चम्बल में मेज और काली सिन्ध नदियां आ मिलती हैं। जैपुर, कोटा और ग्वालियर की सीमा के पास इसमें पार्वती नदी मिलती है। इसके आगे चम्बल जैपुर, करौली और धौलपुर राज्यों के बीच में सीमा बनाती है। जैपुर राज्य की बनास नदी चम्बल में मिलती है। धौलपुर नगर के पास पहुँच कर चम्बल नदी ३०० गज चौड़ी हो जाती है। इसका पानी ऊचे किनारों से ५०० फुट नीचे बहता है। वर्षा ऋतु में इसमें ७० फुट और कभी कभी १०० फुट ऊची बाढ़ आती है। उस समय इसकी चौड़ाई १ मील हो जाती है। इसके किनारे भूल-भुलैयों की तरह गहरे [६०] फुट और चक्करदार नालों से कटे हैं। धौलपुर से ३ मील दक्षिण की ओर

चम्बल के ऊपर जी० आई० पी० रेलवे का बड़ा और सुन्दर पुल बना है। पास ही राजघाट में पीपों का [पांटून] पुल है। आगरे से बम्बई को सड़क इसी पुल से जाती है। वर्षाऋतु में पुल टूट जाता है। ग्वालियर राज्य और झांसी-इटावा के बीच में सीमा बनाने के बाद चम्बल नदी इटावा जिले में प्रवेश करती है और इटावा शहर से २५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर यमुना में मिल जाती है। संगम के पास चम्बल का शुद्ध नीला जल कुछ दूर तक स्पष्ट दिखाई देता है। वर्षाऋतु में यमुना की अपेक्षा चम्बल नदी कहीं अधिक जल अपने साथ लाती है। चम्बल के समस्त मार्ग की लम्बाई ६५० मील है। लेकिन सीधी रेखा में इसका उद्गम इसके मुहाने (संगम) से केवल ३३० मील दूर है। पठारी प्रदेश में चक्कर काटने से चम्बल का मार्ग इतना अधिक लम्बा हो गया है।

बेतवा—(प्राचीन वेत्रावती) भोपाल राज्य के कुमारी गाँव के पास निकलती है। भोपाल राज्य में ५० मील बहने के बाद यह भिलसा के पास ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। ललितपुर (झांसी) परगने में यह उत्तर प्रदेश में पहुँचती है। उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर बह कर यह ग्वालियर राज्य की सीमा बनाती है। इसके बाद झांसी जिले को काटकर ओरछा राज्य में पहुँचती है। कुछ दूर तक यह उत्तर में जालौन और दक्षिण में झांसी तथा हमीरपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। १६० मील उत्तर प्रदेश में बहने के बाद हमीरपुर के पास बेतवा नदी यमुना में मिल जाती है। बेतवा नदी का प्राय: समस्त मार्ग पहाड़ी है और नावों के चलने योग्य नहीं है। देवगढ़ के पास यह एक विचित्र मोड़ बनाती है। यहीं एक जर्जर किला है। झांसी के आगे १६ मील तक पथरीली तली में बहने के बाद बेतवा कछारी (कांप की बनी हुई) घाटी में पहुँचती है। झांसी से १५ मील की दूरी पर परीछा गांव के पास बेतवा में एक बांध बनाया गया है। बेतवा नहर यहीं से निकलती है और झांसी, जालौन और हमीरपुर जिलों में सिंचाई के काम आती है। बेस, जमनी, धसान और पावन बेतवा की सहायक नदियां हैं। धसान नदी भोपालराज्य में विन्ध्याचल पहाड़ियों के बीच में निकलती है। ६० मील तक मध्यप्रान्त के सागर जिले में बहकर झांसी जिले की ललितपुर तहसील को छूती है। २८ मील तक यह झांसी और सागर के बीच में सीमा बनाती है। इसके बाद बुन्देलखंड के कई छोटे छोटे राज्यों को पार करके अपने अन्तिम भाग में ७० मील तक झांसी और हमीरपुर के बीच में सीमा बनाती है। जालौन जिले की सीमा के पास चंदवारी गांव में यह बेतवा में मिल जाती है। इसका अधिकतर भाग पथरीला है। कहीं कहीं रेतीला है और खड्डों और नालों से कटा फटा है। वर्षाऋतु में यह भयानक हो जाती है और ऋतुओं में इसमें बहुत पानी रहता है।

केन (प्राचीन कर्णावती) नदी विन्ध्याचल के उत्तरी पश्चिमी ढालों से भोपालराज्य में निकलती है। इसका उद्गम समुद्र-तल से १७०० फुट ऊंचा है। ३५ मील उत्तर की ओर बहने के बाद बन्देर श्रेणी पार करते समय पियरिया घाट में यह एक छोटा प्रपात बनाती है। इसके आगे यह पश्चिम की ओर मुड़ती है। यह पहाड़ को रगड़ती और तलहटी को छूती हुई बहती है। पटना और सुनार नदियां इसके बायें किनारे पर आ मिलती हैं। पन्ना राज्य को पार करके यह बांदा जिले में प्रवेश करती है। यहां इसमें कोइल, कवादन और चन्द्रावल नदियां मिलती हैं। बांदा शहर इसी के किनारे पर बसा है। पास ही इस पर रेल का पुल है। २३० मील बहने के बाद केन नदी चिल्ला घाट के पास यमुना में गिर जाती है। केन नदी की तली काफी गहरी और स्थिर हो गई है। लेकिन इसमें स्थान स्थान पर पत्थर और चट्टानें भरी पड़ी हैं। इसलिये इसमें नावें नहीं चल सकती हैं। केवल वर्षाऋतु में हलका बोझ लेकर छोटी छोटी नावें चिल्लाघाट से बांदा (३२ मील) तक जाती हैं।

सिन्धनदी १७८० फुट की ऊंचाई पर टोंक राज्य के नैनवास गांव के एक ताल से निकलती है। पहले २० मील में यह टोंक राज्य में बहती है। इसके बाद यह ग्वालियर राज्य में पहुँचती है। कुछ दूर तक यह ग्वालियर और दतिया राज्य के बीच में सीमा बनाती है। १३० मील तक यह एक साधारण नदी

मालूम पड़ती है। नरवर के पास इसकी चौड़ाई और इसकी तेजी एक बड़ी नदी की तरह हो जाती है। पार्वती, महुअार, नून आदि छोटी छोटी पहाड़ी नदियां इसमें गिर कर इसका जल बढ़ाती रहती हैं। इसके किनारे बहुत ऊँचे और पथरीले हैं। इसलिये यह सिंचाई के लिये अनुकूल नहीं है। लेकिन पेड़ों से ढकी हुई पहाड़ियों के बीच में इसका दृश्य बड़ा मनोहर है। सिन्ध नदी २५० मील लम्बी है। इसका अन्तिम भाग उत्तर प्रदेश में है। यहीं यह यमुना में गिर जाती है।

टौंस (तमसा) नदी मैहर राज्य में कैमूर पर्वत श्रेणी से २००० फुट की ऊँचाई से निकलती है। १२० मील मैहर राज्य के विषम पहाड़ी प्रदेश को पार करने के बाद टौंस नदी रीवा राज्य के उपजाऊ प्रदेश में पहुँचती है। यहां इसमें सतना नदी मिलती है। चालीस मील और नीचे पठार के सिरे पर चुरवा के पास बिहार और चचैया सहायक नदियां मिलती हैं। यहीं यह सुन्दर चचाई-प्रपात बनाती है। बिहार नदी की घाटी ६०० फुट चौड़ी और ३७० फुट ऊँची है। टौंस प्रपात २०० फुट ऊँचा है। इसके बाद टौंस नदी चौड़ी होकर समतल भूमि के ऊपर बहती है। देउरा गांव के पास यह इलाहाबाद जिले में प्रवेश करती है। ४४ मील उत्तर-पूर्व की ओर बहने के बाद टौंस नदी सरसा के पास (गंगा यमुना के सङ्गम से ६ मील नीचे) गङ्गा में मिल जाती है। टौंस नदी १६५ मील लम्बी है। इसका दृश्य बड़ा मनोहर है। बेलन नदी टौंस की प्रधान सहायक नदी है। बेलन मिर्जापुर जिले के पठार से निकलती है और उस ओर भी बहुत सा जल बहा लाती है। ६५ मील सुन्दर प्रदेश में बहने और १०० फुट ऊँचा प्रपात बनाने के बाद बेलन नदी इलाहाबाद जिले को पार करके ४० मील तक रीवां राज्य में बहती है। रीवां राज्य और इला-हाबाद जिले की सीमा के पास यह टौंस में मिल जाती है। जहां टौंस नदी गंगा से मिलती है, उसके पास ही इस पर ईस्ट इण्डियन रेलवे का पुल बना है। टौंस में अचानक भयानक बाढ़ आ जाती है। २५ फुट की बाढ़ साधारण है। एक वर्ष इसमें ६५ फुट ऊँची बाढ़ आ गई।

कर्मनासा नदी कैमूर पहाड़ी के पूर्वी सिरे से निकलती है और उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। दर-थार के पास यह शाहाबाद (आरा) और मिर्जापुर जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे १५ मील तक यह मिर्जापुर जिले के भीतर बहती है। उत्तर-पूर्व की ओर मुड़कर फिर यह कुछ दूर तक उत्तर प्रदेश और शाहाबाद के बीच में सीमा बनाती है। चौसा के पास यह गङ्गा में मिल जाती है। कर्मनासा १४६ मील लम्बी है। दुर्गावती और धर्मावती इसकी दो सहायक नदियां हैं। पहाड़ी भागों में इसकी तली पथरीली और किनारे सपाट हैं। यहां इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है। इसकी धारा तेज है। जगह जगह पर तली में गड्ढे हैं। लेकिन पानी निर्मल है। इसमें मछलियां बहुत पाई जाती हैं। मैदान में प्रवेश करने पर यह १५० गज चौड़ी हो जाती है। चिकनी मिट्टी से इसकी तली गहरी धंस जाती है। गर्मी की ऋतु में इसमें बहुत कम पानी रह जाता है। वर्षा ऋतु में यह पचास साठ मन बोझा ढोने वाली नावों के चलने योग्य गहरी हो जाती है। मिर्जापुर जिले में छनपठार के पास यह १०० फुट ऊँचा प्रपात बनाती है। चौसा के पास इसके ऊपर ईस्ट इण्डियन रेलवे का पुल बना है। कर्मनासा के तट पर रहने वाले हिन्दू इसके जल में स्नान नहीं करते हैं। कहते हैं कि राजा त्रिशंकु ने ब्रह्म हत्या की थी। इस पाप से छुड़ाने के लिये एक ऋषि ने एक कुंड में सब तीर्थों का जल एकत्रित किया। इसी में उसने राजा त्रिशंकु को स्नान करा के उसे पाप से मुक्त किया। इसी अपवित्र जल से भरे हुये कुंड से निकलने के कारण हिन्दू लोग इससे बचते हैं। लेकिन तट पर बसे हुये लोग कर्मनासा का जल सभी कामों में लाते हैं। अति प्रचीन समय में कर्मनासा आर्य उपनिवेशों की सीमा बनाती थी इसके दूसरे किनारे पर अनार्य लोग बसे थे।

रामगङ्गा गढ़वाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। इसके निकास के पास विशाल वन है। मेल चौरी तक रामगङ्गा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। मेलचौरी से अलमोड़ा की सीमा तक यह ठीक पूर्व की ओर बहती है। यहाँ यह गिवार की उपजाऊ घाटी को सींचती है। माचूला के पास राम-गङ्गा फिर गढ़वाल जिले में प्रवेश करती है। इस भाग में राम गङ्गा की प्रधान सहायक नदी मंडल है जो

लैन्स डाउन के दक्षिण और पूर्व की पट्टियों का पानी बहा लाती है।

१००मील तक गढ़वाल और कमायूं के पर्वतीय प्रदेश में प्रबल वेग से बहने के पश्चात रामगङ्गा बिजनौर जिले के कालिया गढ़ के पास मैदान में प्रवेश करती है। १५ मील मैदान में बहने के बाद इसमें कोह नदी मिलती है। इसके आगे यह मुरादाबाद जिले में पहुँचती है और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। मुरादाबाद शहर इसके ऊंचे दाहिने किनारे पर बसा है। इसके आगे टेढ़े मार्ग से बह कर यह रामपुर रियासत में पहुँचती है। बरेली जिले में पहुँच कर यह वर्षा ऋतु में देशी नावों के चलने योग्य हो जाती है। इसके ऊपर यह बांस और लकड़ी के बेड़े बहाने के काम आती है। गरमी की ऋतु में इसमें पांज हो जाती है। बरेली शहर इसके किनारे के पास ही बसा है। बरेली छोड़कर यह बदायूं जिले में पहुँचती है। शाहजहांपुर जिले में जलालाबाद के पड़ोस में यह इतनी गहरी हो जाती है कि इसमें बड़ी नावें चल सकती हैं यहां से यह हरदोई जिले में पहुँचती है और ३७३ मील बहने के बाद कन्नौज के सामने यह गङ्गा में मिल जाती है। कुसी. संका, बहगुल और गर्रा (देउहर) इसकी सहायक नदियां हैं। रामगङ्गा अक्सर अपना मार्ग बदलती रहती है। बाढ़ के दिनों में यह बड़ी भयानक हो जाती है। पड़ोस के कुछ गांवों को यह काट कर बहा देती है। कुछ को डुबा देती है। इसी से बड़े गांव नदी तट से दूर बसे हैं। छोटे गांव भाऊ और फूस के हैं। बाढ़ के घटने पर कहीं यह उपजाऊ मिट्टी और कहीं यह बालू की तह बिछा देती है।

नीचे इसकी धारा चौड़ी (१०० फुट से २०० फुट तक) होने लगती है। इसके किनारे भी ऊँचे हो जाते हैं। उद्गम से १०८ मील दूर लखनऊ शहर के पास कहीं कहीं इसके किनारे पानी के ऊपर ६० फुट ऊंचे हैं। सीतापुर जिले में कथना या सरायान नदियां गोमती में मिलती हैं। लखनऊ शहर में गोमती के ऊपर दो लोहे के रेलवे पुल और एक सड़क का (पत्थर का) पुल बना है। लखनऊ के आगे गोमती फिर टेढ़ी चाल से बाराबंकी। सुल्तानपुर और जौनपुर में बहती है। सीधे मार्ग की अपेक्षा नदी का मार्ग लखनऊ से जौनपुर तक दुगुना बड़ा है। आगे बढ़ने पर नदी की चौड़ाई ६०० फुट हो जाती है। इसके ऊपर सुन्दर ६५४ फुट लम्बा पुराना मजबूत पुल बना है। जौनपुर के नीचे इसमें सई नदी मिलती है। इसके आगे गोमती बनारस जिले में पहुँचती है और ५०० मील बहने के बाद सैदपुर के पास गाजीपुर जिले में गंगा में मिल जाती है। (शेष वर्णन पीलीभीत जिले के साथ दिया गया है)।

सारदा नदी १०००० फुट की ऊँचाई पर हिमालय की उस हिमाच्छादित उच्च श्रेणी से निकलती है। जो कमायूं को तिब्बत से अलग करती है। पर्वतीय प्रदेश में १४५ मील बहने के बाद सारदा नदी बरमदेऊ (ब्रह्मदेश) के पास प्रबल वेग से मैदान में प्रवेश करती है। इस स्थान की ऊँचाई समुद्र तल से ८४७ फुट है। यहां पर नदी ४५० फुट चौड़ी है। सारदा नहर यहीं से निकलती है। बरमदेउ के पास सारदा नदी कई धाराओं में बट जाती है।

के पास यह हिमालय को पार करती है। यहीं से पूर्व की ओर यह गिना नाम की एक शाखा नदी फेंक देती है। कौरियाली खीरी और बहरायच जिलों के बीच में सीमा बनाती है और कुछ मील आगे इसमें मिल जाती है। फिर सुहेली नदी आकर मिलती है। सुहेली सारदा की तीन शाखाओं में से एक है। सारदा की प्रधान शाखा दहावर मल्लानपुर के पास मिलती है। पास ही सरयू का सङ्गम है। पहले सरयू गोंडा जिले में मिलती थी। बहराम घाट के पास सारदा की तीसरी शाखा चौका मिलती है। यहां से सयुंक्त धारा को घाघरा या सरयू नाम से पुकारते हैं। इसके आगे घाघरा पूर्व की ओर मुड़ कर गोंडा जिले को बाराबंकी और फैजाबाद से अलग करती है। आजमगढ़ में इससे छोटी सरयू नाम की शाखा फूट निकलती है। यह शाखा आजमगढ़, गाजीपुर बलिया में बहने के बाद गङ्गा में मिल जाती है।

घाघरा और उसकी सहायक नदियों में नाव चलती हैं। नैपाल से बहुत सा चावल लकड़ी आदि माल इसी के मार्ग से आता है। टांडा (फैजाबाद) और बरहज (गोरखपुर) घाघरा तट के प्रधान व्यापारीक केन्द्र हैं। ऐतिहासक दृष्टि से सर्व प्रधान अयोध्या है।

इसे सब कहीं घाघरा के नाम से पुकारते हैं। बहराम घाट के आगे यह बाराबंकी और फैजाबाद जिले को गोंडा और बस्ती से अलग करती है। अयोध्या के पास इसे कुछ दूर गोरखपुर की सीमा (बलघाट) तक सरजू कहते है। वर्षा ऋतु में इसमें बहुत सा पानी रहता है और उस समय यह गङ्गा से अधिक बड़ी मालूम पड़ती है। बाढ़ के बाद इसमें रेतीले टीले या संभा निकल आते हैं। किनारे के जिलों की सीमा प्रधान गहरी धारा से निश्चित होती है। धारा के इधर उधर हो जाने से इसके समीपवर्ती जिलों का क्षेत्रफल भी कुछ घटता बढ़ता रहता है।

राप्ती नदी नैपाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। पहले ४० मील तक पर्वतीय प्रदेश में यह दक्षिण की ओर बहती है। फिर ४५ मील तक उत्तरी-पश्चिम दिशा में बहने के बाद बहरायच और गोंडा जिले में ६० मील बहने के बाद यह बस्ती जिले में पहुंचती है। यहां कांप की बलुई औरचिकनी मिट्टी में इसका मार्ग बहुत टेढ़ा हो जाता है। इस ओर इसकी दो धारायें हो जाती हैं। उत्तरी धारा अधिक पुरानी है। इसमें वर्षा ऋतु में पानी रहता है। और ऋतुओं में यह प्राय: सूखी पड़ी रहती है। यह अपना मार्ग अक्सर बदलती रहती है। बस्ती जिले में असंख्य झीलों (तालों) का पानी इसमें पहुँचता है। बस्ती जिले के बाद यह गोरखपुर जिले में पहुँचती है। यहीं बूढ़ी राप्ती नदी नावों के चलने योग्य हो जाती है। गोरखपुर शहर इसी के किनारे पर बसा है। ४०० मील बहने के बाद यह घाघरा नदी में मिल जाती है।

बड़ी गंडक को नारायणी या सालग्रामी भी कहते हैं। यह नैपाल में हिमालय की पर्वतश्रेणी से निकलती है। दक्षिण-पश्चिम की दिशा में बहने के बाद यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है। २० मील तक गोरखपुर जिले के बीच में सीमा बनाने के बाद यह बिहार प्रान्त में प्रवेश करती है। छोटी गंडक भी नैपाल में हिमालय से निकलती है और ८ मील पश्चिम की ओर बड़ी गंडक की समानान्तर बहने के बाद सारन जिले में घाघरा से मिल जाती है।

उत्तर प्रदेश की जल-शक्ति

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय और पठारी भाग में बिजली तयार करने की अपार जल शक्ति भरी पड़ी है। संसार के बहुत कम देशों में समतल मैदान के पड़ोस में इतने प्रपात मिलेंगे। इनके प्राकृतिक सौन्दर्य से आनन्द उठाने के अतिरिक्त इनसे उत्पन्न की गई बिजली प्रान्त के कला-कौशल और आने जाने के साधनों में क्रान्ति पैदा कर सकती है। कुछ प्रपातों का परिचय यहाँ दिया जाता है।

यमुना की सहायक बार्घे या बाघी नदी में कानपुर से ११५ मील और पन्ना से २१ मील की दूरी पर दो प्रपात हैं। यह नदी अप्रैल मास में सूख जाती है। अत: प्रपात के ऊपर ३ मील लम्बा ६० फुट ऊंचा बांध बना कर जलाशय तयार किया जा सकता है। इससे आध मील लम्बी पाइप लाइन से पानी नीचे छोड़ा जा सकता है। पावर हाउस ऊपरी (४८० फुट) प्रपात के पास बन सकता है।

छोड़ा हुआ जल सिंचाई के काम आ सकता है। मिर्जापुर जिले में बखेर नदी वेलन (गङ्गा की सहायक) सरा गांव के पास (राबर्ट्स गंज) बांध बनाने के लिये अनुकूल हैं। नदी में मार्च अप्रैल में कम पानी रहता है। मई में बिल्कुल सूख जाती है। लेकिन प्रपात से १ फर्लांग ऊपर १ मील लम्बा और १०१ फुट ऊंचा कच्चा बांध बनाकर जल रोका जा सकता है। पहना नाला (बाघैं की सहायक) पन्ना के पास ११० फुट ऊँचा है। यहाँ १½ मील लम्बा और ८० फुट ऊँचा कच्चा बांध बनाकर जलाशय तयार किया जा सकता है। कर्मनासा की सहायक चन्द्रप्रभा नदी में बनारस से ३६ मील की दूरी पर २३८ फुट ऊंचे दो प्राकृतिक प्रपात हैं। यहां ५,००० फुट लम्बा ८० फुट ऊँचा कच्चा बांध बनाकर जलाशय तयार किया जा सकता है।

चप्रेर नाला केन की सहायक नदी है। पन्ना शहर से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर इसमें २१६ फुट ऊँचा प्रपात है। यहाँ १ मील लम्बा और ५० फुट ऊँचा प्रपात तयार किया जा सकता है।

कर्मनासा में दो प्रपात हैं। ऊपरी देवदारी प्रपात १७६ फुट ऊँचा है। यहां कच्चा बांध १५६०० फुट लम्बा और ६६ फुट ऊँचा होगा। निचला प्रपात १४३ फुट ऊँचा है।

कर्णावती नदी अ'भता (गङ्गा) की सहायक है। इसमें १३३ फुट ऊँचा प्रपात है। इसके ऊपर ४२ फुट ऊँचा और ८४६० फुट लम्बा बांध बनाना पड़ेगा। यह टांडा प्रपात मिर्जापुर शहर से केवल १० मील दूर है। कमासिन नाला केन नदी की सहायक है। यह पन्ना राज्य में है। इसका प्रपात २४२ फुट ऊँचा होगा।

केन नदी का प्रपात ५५ फुट ऊँचा है। यह १५० फुट ऊँचा किया जा सकता है। इसका बांध ६ मील लम्बा और १५० फुट ऊंचा बनाना पड़ेगा। इससे इसके पड़ोस में अच्छी भूमि है। इसलिये इसके जल से सिंचाई भी हो सकेगी।

कोरई प्रपात केन नहर के बांध (बरियार पुरगांव) से ३ मील नीचे की ओर है। यह १२५ फुट ऊंचा है।

कुरिया (किलकिया नाला केन नदी का सहायक है। इसका प्रपात ३१० फुट ऊँचा है। इसका बांध १½ मील लम्बा और १०० फुट ऊँचा होगा।

टोंस की एक सहायक नदी महा है। महा का क्योंटी प्रपात २७५ फुट ऊँचा है। और ३५० फुट ऊँचा किया जा सकता है। नदी एक गहरे केनियन (आखात) में होकर बहती है। इस पर साठ-सत्तर फुट ऊचा बांध बनाना पड़ेगा।

ओड नदी बेलन की सहायक है। इसका बहूटी प्रपात ४६५ फुट ऊँचा है और ६०५ फुट ऊँचा किया जा सकता है। इस योजना में कंजस नदी के प्रपात से भी सहायता ली जा सकती है। संयुक्त योजना से ६००० किलोवैट बिजली तयार हो सकती है। इसकी स्थिति इलाहाबाद से ८० मील, कानपुर से ५० मील और रीवा से ४० मील है। इसलिये यह बड़े काम की होगी।

पयस्वनी (पैसुनी) नदी यमुना में गिरती है। पयस्वनी का प्रपात १३६ फुट ऊँचा है और १८० फुट ऊंचा किया जा सकता है। इसकी सहायक सरभंगा नदी में संगम के पास जलागार बनाया जा सकता है। इसमें १ मील लम्बा और ३० फुट ऊँचा कच्चा बांध बनाना पड़ेगा।

पठार या समुआ नाला केन नदी में गिरता है। बरौर के पास इसका प्रपात २१० फुट ऊँचा है। इसके पास १ मील लम्बा और ४० फुट ऊंचा बांध बनाना पड़ेगा।

रंज नदी बाघैं की सहायक है इसमें २४४ फुट ऊँचा प्रपात है। प्रपात से १ फर्लांग ऊपर २ मील लम्बा और ७० फुट ऊँचा बांध बनाना पड़ेगा। एक मील ऊपर इसकी एक सहायक नदी में २०५ फुट ऊंचा प्रपात है।

बेलन की सहायक गूर्भा नदी में ४०२ फुट ऊँचा प्रपात है। यह ६५० फुट ऊँचा किया जा सकता है। इसके पास २ मील लम्बा और ६२ फुट ऊँचा प्रपात बनाना पड़ेगा। इससे ३५००० किलोवैट बिजली लगातार मिल सकेगी। यह स्थान कानपुर से १६० मील दूर है।

हिमालय प्रदेश में गङ्गा और उसकी सहायक भागीरथी, अलकनन्दा, विष्णु गङ्गा और धौली गङ्गा में अपार जलशक्ति है। लेकिन इस समय इसके विकास में कई कठिनाइयां हैं। बहुत सा प्रदेश दुर्गम है। जलागार बनाने के लिये समतल और टिकाऊ भूमि का अभाव है। जलागार बनने से

अकाल पीड़ित गढ़वाल जिले की खेती के योग्य काफी जमीन जलमग्न हो जायगी। फिर भी कुछ स्थानों में सुविधा पूर्वक बिजली तयार की जा सकती है।

देव प्रयाग में अलकनन्दा और भागीरथी का संगम है। अलक नन्दा का मार्ग जोशीमठ के पास विष्णु गंगा और धौली गंगा का संगम है जिनके मिलने से अलक नन्दा बनती है। विष्णु गंगा बद्री-नाथ से और धौली गंगा नीति दर्रे से आती है। कर्णं प्रयाग तक गंगा का उतार प्रतिमील में १० फुट से २० फुट तक है बद्रीनाथ के पास एक मील में गंगा का उतार ३०० फुट हो जाता है नदी की तली में जल सदा खलबली मचाता रहता है। तली काफी कड़ी चट्टान की बनी है। देव प्रयाग के पास वर्तमान धारा में ४० फुट की ऊंचाई पर पुरानी धारा की तली है। दोनों के बीच में ८० फुट ऊंची भूमि है। बांध संगम से काफी दूर ऊपर की ओर बन सकता है।

हरिद्वार से ऊपर कोटलीभेल में भी गंगा के पास बिजली तयार करने के लिये कड़ी भूमि में जलागार बन सकता है। इससे १,६०००० हार्स पावर की बिजली तयार हो सकती है। यह स्थान रुद्र प्रयाग से ३ मील ऊपर है। कोटेश्वर के पास नदी संकुचित होकर एक नन्द कन्दरा बना लेती है। कड़े चूने के पत्थर की पहाड़ियां एकदम पानी के ऊपर खड़ी हैं। यहीं नदी अचानक मोड़ खाती है। सरदी की ऋतु में जब उद्गम के पास बरफ जम जाती है, और इस ओर कम पानी रह जाता है तभी पहाड़ को काटकर सुरंग के दीर्घ मार्ग से पानी बहाया जा सकता है। और ऊपर ३०० फुट ऊंचा बांध बन सकता है। इससे ४५००० हार्स पावर की बिजली तयार हो सकती है।

यमुना नदी से बिजली तयार करने का अधिकार कुछ समय के लिये एक यूनाइटेड प्राविंसेज पावर एशोसियेशन कम्पनी को दे दिया गया। इस कम्पनी ने कुछ नहीं किया। अत. सरकार ने स्वतंत्र सर्वे कराया। जालन्ता में यमुना का दुहरा मोड़ है। यहां एक छोटा सुरंग काटा जा सकता है। बिनाहार में इकहरा मोड़ है। यहां दो मील लम्बा सुरंग बनाना पड़ेगा। इस योजना की कुछ भूमि टेहरी राज्य में है। इनके अतिरिक्त और भी कुछ स्थानों से बिजली तयार की जा सकती है।

सिंचाई की नहरों के मार्ग में बने हुए झील बिजली तयार करने के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध हुये हैं। भोला झाल से मेरठ शहर, गाजियाबाद और हापड़ को बिजली मिलती है। मेरा झाल अलीगढ़ के पास काली नदी का जल गंगा में डालने के लिये बड़ा उपयोगी है। शक्ति पलरा झील से मिलेगी।

बहादुराबाद झाल से बिजनौर मुरादाबाद शहरों और कई गांवों को बिजली मिलती है।

पूर्वी यमुना नहर के धुत्रा और सरकारी झालों से सुखम को बिजली मिलेगी।

गंगा की सहायक रामगंगा शाश्वत हिमागार से नहीं निकलती है। इसलिये इसमें हिमालय की दूसरी बड़ी नदियों की अपेक्षा कम जल रहता है। इसके मार्ग में कुछ स्थानों से ही बिजली तयार हो सकती है। माचूला के पास रामगंगा का पानी पनिया सोत के मार्ग से कोसी नदी की घाटी में गिराया जा सकता है। यह स्थान रामनगर स्टेशन से १४ मील दूर है। पानी बहाने का काम पहाड़ में सुरंग काटने से हो सकता है।

रामगंगा की सहायक कोसी नदी में सोमेश्वर के पास बांध बनाया जा सकता है। रानी खेत की सड़क के पास कोसी १० मील का तेज मोड़ बनाती है। यहां सुरंग बनाने से और भी अधिक बिजली तयार हो सकती है।

सारदा—घाघरा की सहायक सारदा नदी तिब्बत से निकलती है और नैपाल राज्य और भारतवर्ष के बीच में कुछ दूर तक सीमा बनाती है। यह लोधिया और काली नदियों के मिलने से बनती है। संगम से ऊपर इसका प्रदेश दुर्गम है। काली नदी हिमा-गार का पिघला हुआ पानी लाती है। संगम के पास इसका दुहरा मोड़ है। यहां बिजली तयार करने के लिये इसके मार्ग में सुरंग और बांध बन सकते हैं। इसके नैपाल सरकार की अनुमति आवश्यक है। ऊपर कोटि के पास (टनकपुर स्टेशन से ११ मील की दूरी पर) यह एक प्रपात बनाती है। यहां भी बिजली तयार की जा सकती है।

सारदा की सहायक सरजू नदी में बागेश्वर के पास एक अच्छा आखात है। वहीं लाहोर नदी आती है। यहां एक साधारण बांध बन सकता है।

जलवायु

उत्तर प्रदेश में तीन प्रधान ऋतु होती हैं। शीतकाल कार्तिक (अक्टूबर) से आरम्भ होता है। फाल्गुन (मार्च) में दिन कुछ गरम होने लगते हैं। जून (ज्येष्ट) में सब से अधिक गरमी पड़ती है। इसके बाद जुलाई (आषाढ़) में वर्षा आरम्भ हो जाती है और वर्षा ऋतु कुँआर या आश्विन (सितम्बर) के अन्त तक रहती है।

उत्तर प्रदेश के भिन्न भिन्न प्राकृतिक विभागों में ऊँचाई अक्षांश और समुद्र की दूरी का अन्तर होने से जलवायु में भी अन्तर पड़ता है। उत्तर प्रदेश के मैदान, में सरदी की ऋतु पंजाब की अपेक्षा कम ठंडी बंगाल की अपेक्षा अधिक ठंडी रहती है। गंगा का मैदान उत्तर प्रदेश में प्राय: ५०० मील लम्बा है। इस मैदान के पूर्वी भाग की जलवायु शीतकाल में इतनी विकराल नहीं होती जितनी पश्चिमी भाग में होती है। समुद्र की समीपता और हवा की नमी के कारण पूर्वी भाग का शीतकाल अधिक मृदुल रहता है। अधिक पश्चिम की ओर बढ़ने से सरदी अधिक बढ़ जाती है। लेकिन वर्षा की मात्रा ५ इंच से अधिक नहीं होती।

ग्रीष्म काल में मैदान का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग की अपेक्षा अधिक गरम रहता है। मार्च के अन्त में ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में दिन गरम और रातें ठंडी होती हैं। आगे चल कर दिन और रात दोनों ही गरम और खुश्क हवा दोपहर होने से एक दो घंटे पहले ही चलती है और सूर्यास्त तक चलती रहती है। कभी कभी यह गरम लू में बदल जाती है। इसके लगने से पेड़ झुलस जाते हैं और मनुष्य बीमार पड़ जाते हैं। इन दिनों उत्तर प्रदेश के आगरा आदि कुछ स्थानों का तापक्रम पंजाब और सिन्ध से टक्कर लेने लगता है। छाया का तापक्रम ८६ अंश फारेन हाइट से ११५ अंश तक रहता है। कभी कभी इससे भी अधिक हो जाता है। ग्रीष्म के अन्त में धूल भरी आंधियां आती हैं। इनसे कुछ देर के लिये ठंडक हो जाती है। कभी कभी वर्षा हो जाने के पहिले एक दो दिन बादल मंडराते हैं। वर्षा आरम्भ हो जाने पर तापक्रम घट जाता है। औसत तापक्रम ८६ अंश फारेन हाइट रहता है। पर बदली की गरमी हवा के न चलने पर असह्य हो जाती है। वर्षा लगातार नहीं होती है कभी प्रबल वर्षा होती है। कभी हलकी वर्षा होती है। कभी केवल बादल घिरे रहते हैं। कभी आकाश एक दम निर्मल रहता है। मैदान में वर्षा की मात्रा सब कहीं बराबर नहीं है। पूर्व की ओर ४० इंच वर्षा होती है। पश्चिम की ओर घटते घटते पचीस या तीस इंच रह जाती है।

वर्षा ऋतु में हवा बड़ी नम रहती है। सितम्बर मास में पानी का बरसना बन्द हो जाता है। जब पश्चिमी भाग में वर्षा समाप्त हो जाती है। उसके एक सप्ताह के पश्चात पूर्वी भाग में वर्षा समाप्त होती है। पूर्वी भाग में वर्षा प्राय: एक सप्ताह पहले ही आरम्भ होती है। अधिकतर वर्षा बंगाल की खाड़ी की ओर से आने वाली मानसूनी हवाओं द्वारा होती है। यह हवायें प्रान्त के पूर्वी भाग में पहले पहुँचती हैं और पीछे लौटती हैं। कुछ वर्षा अरब सागर की ओर से आने वाली हवाओं से भी होती है। इनके मार्ग में उत्तरी भागों की अपेक्षा मैदान के दक्षिणी भाग में कुछ अधिक वर्षा होती है। हिमालय के पड़ोस वाले स्थानों का उल्टा हाल है। वहां उत्तरी भाग में दक्षिणी भाग की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है वर्षा के समाप्त होने पर पश्चिम की ओर से मन्द और ठंडी हवा चलने लगती है। कुछ समय में यह अधिक वेगवती हो जाती है।

यमुना और गंगा के दक्षिण में संयुक्त प्रान्त का पठार-प्रदेश स्थित है। इसमें झांसी, जालौन और हमीरपुर के जिले, इलाहाबाद और मिर्जापुर के दक्षिणी भाग शामिल हैं। इसमें पथरीली और कड़ी चट्टानें हैं। यह भाग मैदान से सब कहीं ऊंचा है और दक्षिण से उत्तर की ओर ढाल है। मैदान की अपेक्षा यह अधिक खुश्क रहता है। इसके ऊँचे भाग मैदान में कुछ अधिक शीतल रहते हैं। अप्रैल से जून

जनवरी मास की वर्षा
२०" से ३०"
१०" से २०"
५" से १०"
५" से कम
प्रचलित हवायें
सिंचाई
कर्क रेखा
अंग्रेजी मील

पाकी सघनता

जून मास का तापक्रम
समताप रेखा
शिमला
झाँसी
बनारस
कर्क रेखा
अंग्रेजी मील

जून मास की वर्षा
प्रचलित हवायें
अंग्रेजी मील
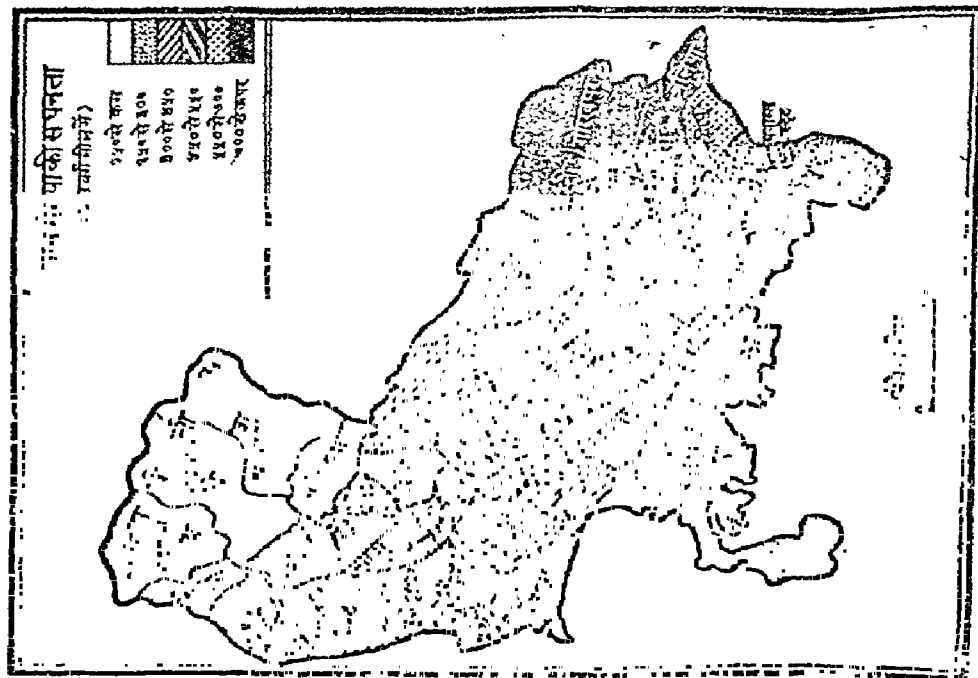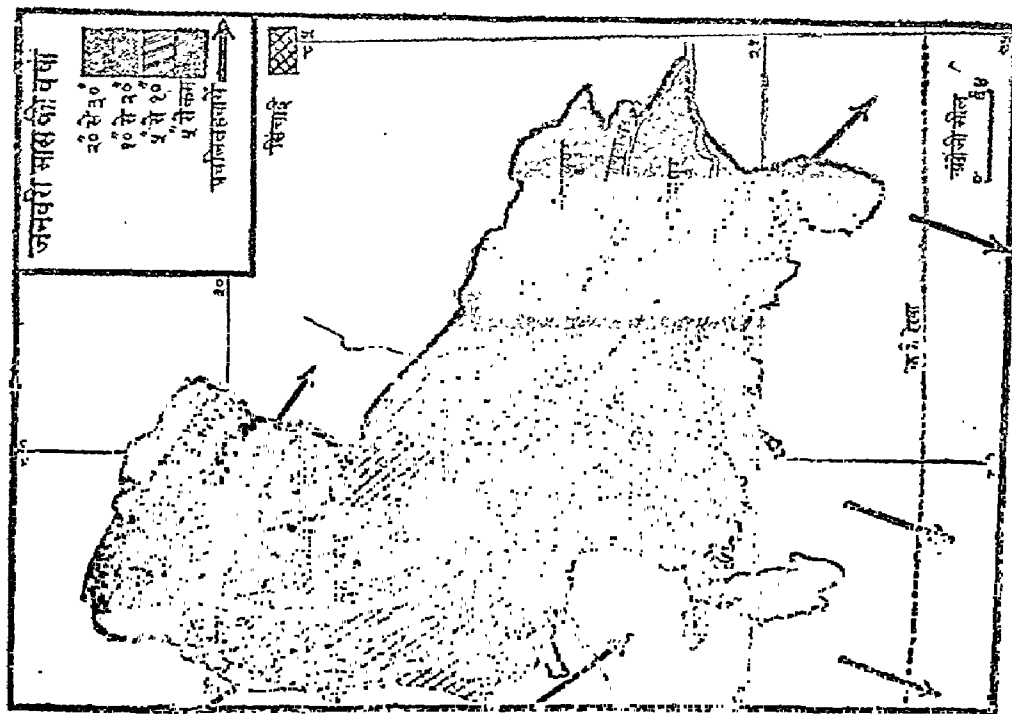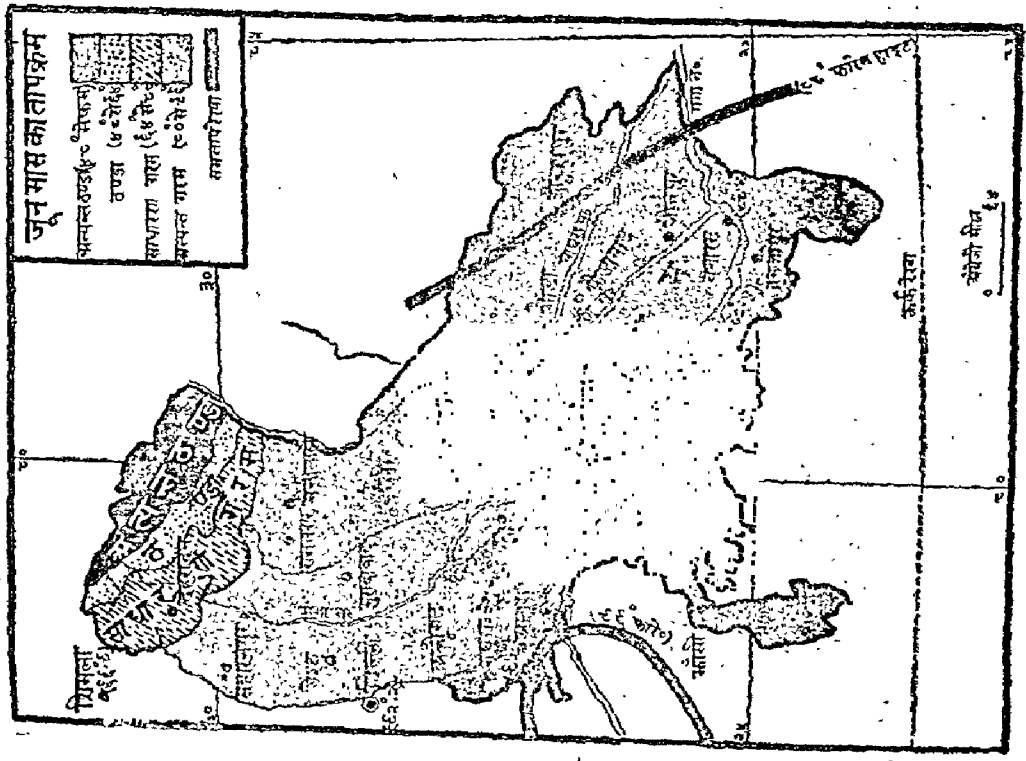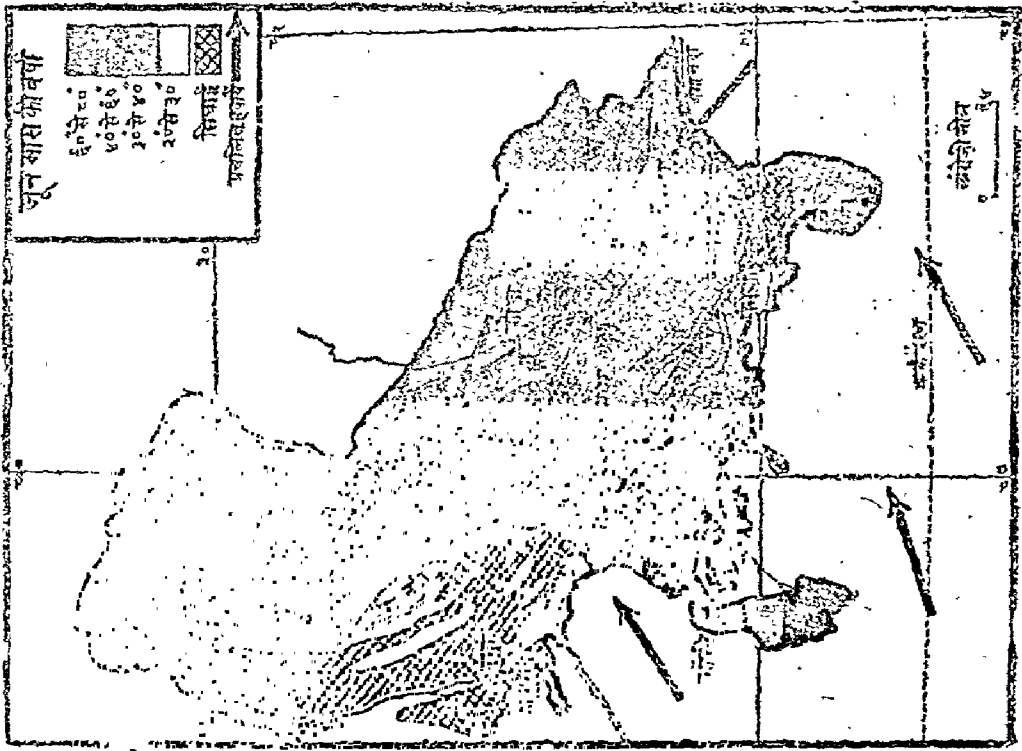
तक गरम और खुश्क हवायें चलती हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ का तापक्रम गिर जाता है। मैदान की अपेक्षा हवा अधिक खुश्क रहती है इसलिये यह अधिक असह्य नहीं होती है। वर्षा प्रायः ४० इंच से ५० इंच तक होती है। झांसी की उंचाई अधिक नहीं (८५० फुट) है। यह पहाड़ी चट्टानों से घिरा है। वे धूप में एक दम गरम हो जाती हैं। फिर भी गरमी में इसका अल्पतापक्रम ८१ अंश और परमतापक्रम १०७ अंश रहता है।

उत्तर प्रदेश में भावर प्रदेश ५ मील से २० मील तक चौड़ा है। यह खुश्क रहता है। पानी कंकड़ पत्थर के नीचे भिद जाता है। इसके नीचे तराई की तंग पेटी है। बड़ी दलदली है। यहां की जलवायु शीतकाल के दो तीन महीनों को छोड़ कर सदा उष्णाद्र रहती है। मलेरिया बहुत फैलता है। तापक्रम बहुत अधिक नहीं होता है। लेकिन नमी के कारण यह गरमी असह्य हो जाती है। दलदली भूमि और नमी के कारण यहां मलेरिया ज्वार बहुत फैलता है।

हिमालय प्रदेश में उंचाई के अनुसार भिन्न भिन्न भागों की वर्षा और तापक्रम में बड़ा अन्तर है। साधारणतया मैदान की अपेक्षा यहां का तामक्रम बहुत कम और वर्षा बहुत अधिक होती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां के बाहरी भागों का तापक्रम बहुत कम और वर्षा बहुत अधिक होती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां की बाहरी भागों का तापक्रम बड़ा मनोहर होता है। यहीं मंसूरी नैनीताल अल्मोड़ा, रानी खेत आदि पहाड़ी स्थानों पर धनी लोग और बड़े बड़े सरकारी अफसर गरमियों में सैर करने के लिये जाते हैं यहां का औसत तापक्रम ६० अंश रहता है। शीतकाल में यहां का तापक्रम २६ अंश हो जाता है और बरफ गिरती है। गरमी में यहां का तापक्रम ६० अंश से ८० अंश तक रहता है। शीतकाल में ५००० फुट की उंचाई तक बरफ गिरती है। कभी कभी २५० फुट की उँचाई तक शीतकाल में बरफ गिर जाती है। हिमालय के कुछ भाग इनसे अधिक ऊँचे हैं। यहां ध्रुव प्रदेश की तरह गरमी में भी बहुत कम तापक्रम रहता है कुछ भागों में सदा बरफ रहती है। सरदी की वर्षा आरम्भ होने पर हिमालय के इन बाहरी दक्षिणी ढालों पर मैदान की अपेक्षा कहीं अधिक वर्षा होती है। हिमालय के जो भाग वर्षा लाने वाली हवाओं के मार्ग से दूसरी ओर आड़ में पड़ जाते हैं वे प्रायः खुश्क रहते हैं। अधिक ऊँचे भागों में पानी बरसने के बदले बरफ गिरती है। कुछ भाग सदा बरफ से ढके रहते हैं। गरमी में बरफ पिघल जाती है और मुलायम घास उग आती है।

हिमालय के दक्षिण में शिवालिक की जलवायु समशीतोष्ण रहती है। समुद्रतल से २००० फुट की ऊँचाई पर देहरादून का तापक्रम ७१ अँश रहता है। गरमी में यहां का तापक्रम ८४ अंश और सरदी में दिसम्बर से फरवरी तक दिन का तापक्रम ५५ या ५६ अंश फारेन हाइट रहता है। प्रान्त के कुछ स्थानों का तापक्रम और वर्षाचक्र अलग दिया गया है। इनकी तुलना करने पर प्रान्त की जलवायु अधिक स्पष्ट हो जायगी।

★ ★ ★

वन

उत्तर प्रदेश में वन प्रदेश (मैदान में) कुछ ही सौ फुट की उँचाई से लेकर (हिमालय में वृक्ष सीमा) १२००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। १२००० फुट के आगे अधिक ऊंचाई पर इतनी बरफ गिरती है और ऐसा जाड़ा पड़ता है कि वहाँ पेड़ नहीं उग सकते। भिन्न भिन्न उंचाई पर पेड़ों के उगने से कहीं वन समतल भूमि पर स्थित हैं, कहीं वह विषम और सपाट पर्वतीय ढालों पर पाया जाता है। तराई और मैदान का वन समतल भूमि पर स्थित है। गंगा और यमुना के निकास के निकट का वन बहुत ही ऊँचे और सपाट ढालों पर स्थित है। पूर्वी मण्डल का सब का सब वन नैपाल के दक्षिण में तराई और मैदान में फैला हुआ है। पश्चिमी मण्डल का वन कुछ शिवालिक की पहाड़ियों

और कुछ मैदान और तराई में स्थित है। यह काली नदी से यमुना तक फैला हुआ है। कमायूँ मंडल का वन नैनीताल, अल्मोड़ा और गढ़वाल के पहाड़ी भागों में पाया जाता है। बुन्देलखण्ड मंडल का वन कहीं समतल और कहीं विषम भूमि में है।

वन विभाग के अधीन उत्तर प्रदेश में ६२०१ वर्ग मील वन है। इसमें पूर्वी मंडल के पीलीभीत जिले में २०६ वर्ग मील, उत्तरी खीरी में २६४ वर्ग मील दक्षिणी खीरी में १६४ वर्ग मील, बहरायच में २७६ वर्ग मील, गोंडा में २१२ वर्ग मील, गोरखपुर में १७५ वर्ग मील, वन हैं। बुन्देलखंड में १७५ वर्ग मील वन है। पश्चिमी मंडल के अन्तर्गत हलद्वानी में ३६७ वर्ग मील, रामनगर में ३४५ वर्ग मील, कालागढ़ में ३८५, लैन्सडाउन में ३१४ सहारनपुर में ३०१ वर्ग मील, देहरादून में २७६ वर्ग मील और चकराता में १४१ वर्ग मील वन हैं।

कमायूँ मंडल के नैनीताल जिले में २०६ वर्ग मील, गढ़वाल में ४४२, पश्चिमी अल्मोड़ा में २५०, और पूर्वी अल्मोड़ा में ५१२ वर्ग मील वन है। इस प्रकार प्रान्त में ५२५३ वर्ग मील (रिजर्व्ड) ५२६ वर्ग मील प्रोटेक्टेड (सुरक्षित) और ५८१ वर्ग मील अवर्गीकृत वन है। १ वर्ग मील पट्टे पर दिया गया है। कुछ वन नहरों के किनारे किनारे लगा है। इसका प्रबन्ध नहर-विभाग के हाथ में है। वन से इमारती लकड़ी, ईंधन, बांस, घास, टर्पेण्टाइन आदि कई प्रकार से खर्च घटाने पर वन से सरकार को ६० लाख रुपये से अधिक वार्षिक लाभ होता है।

लड़ाई के कारण लकड़ी का दाम महंगा हो गया है। लेकिन सेना को नियत मूल्य पर लकड़ी मिलती है। अल्मोड़ा डिवीजन के चीड़ के वन से टर्पेंटाइन निकालने के लिये तीन वर्ष का ठेका दिया गया है। प्लाइवुड प्राडक्ट्स कम्पनी, सीतापुर की सुविधा के लिये सेमल और कंजू के पेड़ काटे गये। सेमल का पेड़ पत्ती झाड़ता है। जनवरी से मार्च तक इसमें लाल या नारंगी रंग के फूल आते हैं। अप्रैल से मई तक इसमें फल आते हैं। ४००० फुट की ऊंचाई तक यह सब कहीं होता है। तराई के साल के पेड़ रेलवे स्लीपर तयार करने के लिये काटे जाते हैं।

गोंडा, बहराइच, दक्षिणी खीरी और पीलीभीत के वन से घास काटने का ठेका १८०००) रु० वार्षिक पर तीन वर्ष के लिये अपर इण्डिया कूपर पेपर मिल्स (लखनऊ) को दिया गया। कत्था बनाने के लिये भी ठेका दिया गया। वन का प्रधान पेड़ साल है।

यह ४०० फुट की उंचाई तक उगता है। अधिक उंचाई पर ठंड के कारण यह नहीं होता है। पहाड़ी भागों का साल अधिक अच्छा नहीं होता है और प्रायः घर बनाने के काम आता है। हल्दू, धौरी, तून, सई और खटिक के पेड़ भी इसी उंचाई पर होते हैं। भिंडल का पेड़ घाटी में होता है। इसकी पत्तियां गाय बैल को खिलाई जाती हैं। नये किल्लों के रेशों से रस्सी बनाई जाती हैं। इसके फल सफेद या हरे होते हैं। अप्रैल से जून तक फूल आते हैं। अक्तूबर से दिसम्बर तक फल आते हैं। यह ४००० फुट की ऊँचाई तक उगता है और प्रायः खेतों की मेड़ों पर लगाया जाता है। ३००० फुट की उंचाई तक आम, पीपल, बरगद, शीशम के पेड़ बहुत मिलते हैं।

चीड़ का पेड़ कुछ अधिक उँचाई पर होता है और ६००० फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। यह १६०० फुट से कम और ७२००० फुट से अधिक उंचाई पर नहीं होता है। इससे रेलवे स्लीपर बनते हैं। इसकी पत्तियां सदा हरी भरी रहती हैं। जहां यह होता है वहां प्रायः दूसरे पेड़ नहीं हो पाते हैं। बांज का पेड़ ४००० फुट से ८००० फुट की ऊँचाई तक होता है। यह अधिक ऊँचा नहीं होता है। लेकिन इसकी लकड़ी अधिक मजबूत और गंठी हुई होती है। पहाड़ी डंडे प्रायः बांज के होते हैं। ८००० फुट के आगे १०००० फुट तक बांज के स्थान पर करशू और तिलोज के पेड़ होते हैं। इनकी लकड़ी भी मजबूत होती है। ७५०० फुट से ११००० फुट तक देवदारू का शानदार ऊँचा पेड़ होता है। इसकी टहनियां छोटी और घनी होती हैं। यह १५० फुट ऊँचा और १२ फुट मोटा होता है।

तून का पेड़ पत्ती गिराने वाला होता है। इसकी पत्ती १ फुट से २ फुट तक लम्बी होती है। फूल सफेद होते हैं और मार्च अप्रैल में आते हैं। फल मई से जुलाई तक आते हैं।

खैर का पेड़ पत्ती झाड़ने वाला होता है। इसमें कुछ पीले और सफेद फूल मई से जुलाई तक आते हैं। फल जनवरी से मार्च तक आते हैं।

हल्दू का पेड़ मध्य अल्मोड़ा और नैनीताल को छोड़कर १००० से ३००० फुट की ऊंचाई तक दक्षिणी गढ़वाल और भावर में प्रायः सब कहीं होता है। जून जुलाई में पीले फूल आते हैं।

कंजा का पेड़ गढवाल में १५०० से १२,००० फुट की ऊंचाई तक होता है। अगस्त से अक्टूबर तक इसमें पीले फूल आते हैं।

ढाक, टेसू या पलास में जनवरी से अप्रैल तक नारंगी रंग के फूल आते हैं। इसकी पत्तियां पत्तल, दोना और छाया करने के काम आती हैं। फूलों से रंग बनता है। यह समस्त मैदान और तराई में होता है। अप्रैल से जून तक बीज लगता है। इसका कद नाटा होता है।

झाऊ समस्त कछार और तराई में होती है। यह जलाने, टोकरी बनाने और देहाती घर छाने के काम आती है। यह सदा हरी भरी रहती है।

साखू का पेड़ झांसी को छोड़ कर और सब कहीं होता है। इसकी लकड़ी बड़ी मजबूत होती है।

अमलतास का पेड़ साधारण ऊँचा होता है। इसमें फूल अप्रैल से अगस्त तक आते हैं। फल जनवरी, फरवरी में आते हैं। लम्बी फली लटकती रहती हैं।

इमली का पेड़ बहुत बड़ा होता है। इसकी पत्तियां बहुत छोटी और फूल लाल धारी लिये हुये हलके पीले होते हैं। फल खटमिट्ठे होते हैं। पेड़ मैदान में प्रायः सब कहीं होता है।

सिरस, बेर, बबूल, नीम, पीपल, कैथा, बरगद, पाकर, बेल, जामुन, महुआ, आंवला, आम भी मैदान में सब कहीं होते हैं।

आने जाने के साधन

भारतवर्ष में रेलवे लाइनें आरम्भ में परीक्षार्थ खुलीं। ५२०,००,००० पौंड की लागत से ५००० मील रेलवे लाइन खोलने के लिये ८ कम्पनियों (१—ईस्ट इंडियन २—ग्रेटइंडियन पेनिसुला रेलवे ३—मद्रास रेलवे ४ बाम्बे, बड़ौदा और सेण्ट्रल इंडिया रेलवे, ५—ईस्टर्न बंगाल ६—अवध रुहेल खंड रेलवे, ७—सिन्ध, पंजाब और दिल्ली रेलवे और ८-साउथ इंडिया रेलवे का श्रीगणेश इंगलैंड में हुआ। ईस्टइंडिया कम्पनी की सरकार की ओर से इन्हें भरोसा दिया गया कि कम्पनी को घाटे की दशा में सरकार की ओर से क्षति पूर्ति की जायगी और प्रचलित (दर) ४½ से ५ फीसदी सूद मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त लाइन खोलने के लिये मुफ्त जमीन दी गई। ९९ वर्ष के बाद लाइन को पूरे दाम में मोल लेने का अधिकार सरकार ने अपने हाथ में रक्खा। अकाल में सहायता और व्यापार के लिये तो रेलवे उपयोगी थी ही गदर की गड़बड़ी में सैनिक कार्य के रेलवे सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हुई। अतः रेलवे लाइनों का जाल सारे भारतवर्ष में तेजी के साथ फैल गया। कई और नई कम्पनियां बनीं।

इस समय उत्तर प्रदेश में ४६५२ मील रेलवे लाइन है। ३१९२ मील बड़ी लाइन १५८७ मील मीटरगंज लाइन और ९२ मील बहुत छोटी लाइन है। इस प्रान्त में ईस्ट इंडियन रेलवे सब प्रधान है। इसकी दो बड़ी लाइनें हैं। एक लाइन मुगल सराय से सहारनपुर की जाती है। पहले यह अवध रुहेल खंड कहलाती थी। यह बनारस, प्रतापगढ़, जौनपुर, बाराबंकी, फैजाबाद, लखनऊ, हरदोई, शाहजहांपुर, बरेली, मुरादाबाद और सहारनपुर जिलों में चलती है। इसकी कई शाखायें हैं। जो इलाहाबाद से फैजाबाद इलाहाबाद से जौनपुर, इलाहाबाद से लखनऊ, इलाहाबाद से ऊंचाहार होकर रायबरेली, ऊंचाहार से उन्नाव और कानपुर, कानपुर से लखनऊ, रायबरेली से सुल्तानपुर, राय बरेली से कानपुर, उन्नाव और माधोगंज होकर बालामऊ को, बालामऊ से नीमसार होकर सीतापुर को, सीतापुर से शाहजहांपुर को, बरेली से चन्दौसी और अलीगढ़ को, चन्दौसी से मुरादाबाद, मुरादाबाद से सम्भल, मुरादाबाद से हापुड़ और गाजियाबाद को, हापुड़ से मेरठ, मुरादाबाद से चांदपुर, बिजनौर से नजीबाबाद नजीबाबाद से कोटद्वारा और लक्सर से हरद्वार और देहरादून को शाखा लाइनें गई हैं। हरद्वार से एक शाखा ऋषि केश गई है।

ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन उत्तर प्रदेश में मुगल सराय से गाजियाबाद, दिल्ली को जाती है। बनारस, मिर्जापुर, इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, इटावा, अलीगढ़, और खुर्जा होकर जाती है। शिकोहाबाद से फरुखाबाद, टूंडला से आगरा, हाथरस जंकशन से हाथरस शहर, और अलीगढ़ से बरेली को इसकी शाखा लाइनें गई हैं।

ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे उत्तर प्रदेश से मथुरा, आगरा, कानपुर इलाहाबाद, बांदा, हमीरपुर, जालोन, और झांसी शहरों में आती हैं।

बम्बई बड़ौदा और सेण्ट्रल इण्डिया की बड़ी लाइन उत्तर प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी भाग को छूती है और मथुरा—आगरा शहरों में पहुँचती है। इसकी मीटरगेज शाखा आगरे से कासगंज होकर कानपुर को जाती है।

नार्थवेस्टर्न रेलवे प्रान्त के उत्तरी भाग में दिल्ली से सहारनपुर को जाती है। इसी के समानान्तर एक छोटी लाइन शाहदरा से सहारनपुर को जाती है।

रुहेलखंड कमायूँ रेलवे की प्रधान शाखा लखनऊ से बरेली होती हुई कासगंज को जाती है। यहां यह बाम्बे-बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे से मिल जाती है। लखनऊ के आगे यह सीतापुर, लखीमपुर, खीरी, शाहजहांपुर, पीलीभीत, बरेली और बदायूँ जिलों को पार करती है। बरेली से एक शाखा काठगोदाम को जाती है जो नैनीताल और अल्मोड़ा पहुँचने के लिये बड़े काम की है।

बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, गोंडा, बस्ती और गोरखपुर जिलों को पार करती है। एक शाखा इलाहाबाद से बनारस होती हुई गाजीपुर और बलिया को चली गई है।

इन बड़ी बड़ी रेलवे लाइनों के अतिरिक्त छोटी छोटी लाइनें बनबसा से सारदा नहर के निकास और जगबूरा तक गई हैं। हल्द्वानी के बनैले भाग और गोरखपुर कमिश्नरी में भी छोटी ट्राम्वे लाइने हैं।

सड़कें

भारतवर्ष में सड़कों की लम्बाई ३ लाख मील है। इनमें ७०,००० मील पक्की सड़कें हैं। इन पर एक करोड़ बैलगाड़ियां धीमी चाल से और २ लाख मोटर गाड़ियां तेज चाल से चला करती हैं। दूसरे प्रान्तों की अपेक्षा उत्तर प्रदेश में सड़कें अधिक हैं। इनमें १०,००० मील पक्की और २५,००० मील कच्ची सड़कें हैं। इन सड़कों को बनाने और अच्छी दशा में रखने के लिये केन्द्रीय, प्रान्तीय अथवा स्थानीय सरकारसे धन मिलता है। सड़कों पर प्रायः २० लाख रुपया खर्च होता है। कुछ सड़कें बड़ी अच्छी दशा में हैं। इन पर अस्फाल्ट (चूने) की दुरेसी है। कुछ सीमेन्ट और कंकरीट की बनी हैं। बहुतों पर कंकड़ बिछा है। कच्ची सड़कें वर्षा ऋतु में प्रायः बिगड़ जाती हैं। वर्षा के बाद उनका ढाल ठीक कर दिया जाता है। गड्ढे भर दिये जाते हैं और उनमें नालियां बना दी जाती हैं।

भारतवर्ष की सर्व प्रसिद्ध ग्रांडट्रंक रोड उत्तर प्रदेश के बनारस, इलाहाबाद, फतेपुर, कानपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, एटा, अलीगढ़, बुलन्दशहर और मेरठ (गाजियाबाद) में होकर जाती है। उत्तरप्रदेश में इसकी लम्बाई लगभग ५० मील है। कलकत्ते से ४१८ वें मील पर यह सड़क राज घाट (काशी) में गंगा को पांटून [नावों के] पुल से पार करती है। इलाहाबाद में कलकत्ते से ६५ वें मील पर फिर यह गङ्गा को पांटून पुल से पार करती है। लखनऊ से बनारस सड़क १९६ मील लम्बी है। राय बरेली और जौनपुर शहर इस सड़क पर पड़ते हैं। प्रतापगढ़ इससे ६ मील दूर छूट जाता है।

लखनऊ बरेली सड़क १५१ मील लम्बी है। यह सड़क सीधे हरदोई न जाकर कुछ चक्करदार मार्ग से सीतापुर और शाहजहांपुर होकर जाती है।

लखनऊ से झांसी को जाने वाली सड़क १८८ मील लम्बी है। यह उन्नाव, कानपुर और उरई होकर जाती है। काल्पी में यमुना के पार करने के लिये पांटून पुल बना है।

मेरठ-बरेली सड़क १२८ मील लम्बी है। यह मुरादाबाद और रामपुर होकर जाती है। गढ़मुक्तेश्वर में गंगा को पार करने के लिये नावों का पुल बना है। वर्षा ऋतु में पुल टूट जाता है और नाव द्वारा गंगा को पार करना पड़ता है। मेरठ से ११३ वें मील पर वक्रा नदी को वक्रा घाट पर नावों के पुल से पार करना पड़ता है। ११५ वें मील पर १०० फुट लम्बे पाँटून-पुल से बहगुल (बैगुल) नदी पार की जाती है।

सहारनपुर-देहरादून सड़क ४२ मील लम्बी है। १५ वें मील पर यह दिल्ली राजपुर सड़क से मिल जाती है। २७ वें और ३६ वें मील के बीच में यह पहाड़ी सड़क बन जाती है। सहारनपुर-चकराता सड़क ७८ मील लम्बी है। यह केवल १५ मील संयुक्त प्रान्त में चलती है। इसके आगे यह पंजाब प्रान्त में प्रवेश करती है।

आगरा दिल्ली सड़क १२७ मील लम्बी है। वास्तव में यह दिल्ली-बम्बई सड़क का अङ्ग है। ३६ वें मील पर यह मथुरा में पहुँचती है। ३८ वें मील पर यह चम्बल नदी को पार करती है।

मथुरा—डीग सड़क २३ मील लम्बी है। १३ वें मील पर यह भरतपुर राज्य की सीमा बनाती है।

कानपुर-हमीरपुर-सागर सड़क २२५ मील लम्बी है। हमीरपुर में यमुना और बेतवा नदियों के ऊपर पांटून पुल बन जाता है। हमीरपुर और महोबा नगर मार्ग में पड़ते हैं। फतेहगढ़—कानपुर सड़क ८४ मील लम्बी है। बीसवें मील पर गुरसहाय गंज के पास यह ग्रांड ट्रंक रोड से मिल कर उसी का अङ्ग बन जाती है।

फतेपुर-महोबा-सड़क ७६ मील लम्बी है। कबरई (७० वें मील) से आगे यह कानपुर से सागर को जाने वाली सड़क से मिल कर एक हो जाती है। बांदा शहर इसी सड़क पर पड़ता है। बांदा से २५ वें मील पर चिल्ला घाट में यह यमुना को और २ मील की दूरी पर भूड़ागढ़ में केन नदी को पार करती है।

झांसी—आगरा सड़क १२६ मील लम्बी है

यह दिल्ली-बम्बई सड़क का अङ्ग है। दतिया और ग्वालियर इसके मार्ग में पड़ते हैं।

झाँसी—सागर सड़क १२८ मील लम्बी है। ललितपुर इसी सड़क पर पड़ता है। झाँसी-शिवपुर सड़क ६२ मील लम्बी है।

देहरादून—चकराता सड़क ५६ मील लम्बी है। फतेहपुर के पास यह सहारनपुर-चकराता सड़क में मिल जाती है।

दिल्ली-राजपुर सड़क १५४ मील लम्बी है। गाजियाबाद, मेरठ, मुजफ्फर नगर, रुड़की, देहरादून इस सड़क के प्रधान नगर हैं। १५४ वें मील पर मोहन्द दर्रे के पास यह एक सुरंग द्वारा शिवालिक पर्वत को पार करती है। सड़क की चौड़ाई सब कहीं १२ फुट है।

फैजाबाद—बहराइच सड़क ७४ मील लम्बी है। नवाबगंज गोंडा इसी सड़क पर पड़ते हैं।

गोरखपुर—गाजीपुर सड़क ८५ मील लम्बी है। गोरखपुर से दोहरी घाट (३७ मील) तक इस सड़क और गोरखपुर-इलाहाबाद सड़क का मार्ग एक है। बढ़ालगंज, दोहर, बेत और मऊ नगर इस सड़क पर पड़ते हैं।

मिर्जापुर—जौनपुर सड़क ५४ मील लम्बी है। मिर्जापुर-रीवा सड़क १०४ मील लम्बी है और ग्रेट डेकन सड़क का अङ्ग है।

आगरा—अलीगढ़ सड़क ५१ मील लम्बी है। हाथरस बीच में पड़ता है।

आगरा इटावा औरैय्या सड़क १५५ मील लम्बी है। इटावा इस सड़क पर पड़ता है।

इलाहाबाद—फैजाबाद सड़क ६६ मील लम्बी है। परतापगढ़ और सुल्तानपुर नगर मार्ग में पड़ते हैं। इलाहाबाद-गोरखपुर सड़क १६६ मील लम्बी है। बादशाहपुर, जौनपुर, आजमगढ़ और दोहरी घाट इस सड़क पर पड़ते हैं। इलाहाबाद से १३५ वें मील पर दोहरी घाट में घाघरा नदी को पार कराने के लिये स्टीमर चला करते हैं। बरेली इटावा सड़क १३६ मील लम्बी है। फर्रुखाबाद बीच में पड़ता है। यह फतेहगढ़ से ११ मील की दूरी पर बिचपुरी घाट में रामगङ्गा को और २ मील की दूरी पर गङ्गा को पार करती है।

बरेली-मथुरा सड़क १२० मील लम्बी है। बदायूं, उझानी, सोरों, कासगंज, सिकन्दराबाद और हाथरस इस सड़क के प्रधान नगर हैं।

बरेली से ४६ वें मील पार कछला घाट में यह नावों के पुल से गङ्गा को पार करती है बरेली-रानी-खेत सड़क ११२ मील लम्बी है। हलद्वानी, काठ-गोदाम, भवाली और खैराना इस सड़क पर पड़ने वाले नगर हैं। इटावा-ग्वालियर सड़क ६७ मील लम्बी है।

पहाड़ी सड़कें

काठगोदाम—नैनीताल सड़क २२ मील लम्बी है इसकी चौड़ाई १२ फुट है। काठगोदाम से सड़क लगातार ऊँचाई पर चढ़ती जाती है। कई जगह भयानक मोड़ है। मार्ग में पानी बराबर मिलता रहता है। वर्षा काल में चट्टानों के फिसल आनेसे इस सड़क के बन्द हो जाने का डर रहता है।

अल्मोड़ा—रानी खेत सड़क ३१ मील लम्बी है। अल्मोड़ा से कोसी नदी के पक्के पुल (७ मील दूर) तक लगातार उतार है। पानी पहले दूसरे छठे आठवें नवें चौदहवें, उन्नीसवें इक्कीसवें उनतीसवें और इक्तीसवें मील पर मिलता है। वर्षा ऋतु में चट्टानों के फिसलने से सड़क के बन्द हो जाने का डर रहता है।

काठगोदाम—रानीखेत सड़क ४६ मील लम्बी है। सड़क की चौड़ाई सब कहीं १२ फुट से कुछ अधिक ही है। सैनी तक पानी बहुत है। वर्षा काल में चट्टानों के खिसक आने से सड़क के बन्द हो जाने का डर रहता है।

रानीखेत - लैन्सडाउन की सड़क ३५ मील लम्बी है। यह ईस्ट इण्डियन की कोट द्वारा स्टेशन को भीतरी भागों से जोड़ती है। इसमें पानी प्रायः सब कहीं मिलता है।

राजपुर—मसूरी सड़क १४½ मील लम्बी है। इसमें पानी की बड़ी कमी है।

जल-मार्ग

उत्तर प्रदेश की पुरानी चार नहरें ऊपरी गङ्गा नहर, निचली गङ्गा नहर, पूर्वी यमुना-नहर और आगरा नहर प्रधान रूप से सिंचाई के लिये बनाई गई थी। इनके कुछ भागों में नाव चलाने या लकड़ी

के बेड़े ढोने की सुविधा न थी। लेकिन उनमें सदा और सब भागों में नाव चलाने की सुविधा न न थी। उनमें ऊंचे झाल और प्रपात थे। जिससे नाव चलाने के लिये पड़ोस में अलग धारा निकालनी पड़ी। जहां नहरों के ऊपर ऊँचे पुल बनाने पड़े। यदि पुल अधिक ऊंचे न किये जाते तो उनके नीचे से बड़ी नावें नहीं निकल सकती थीं। लेकिन पुलों को अधिक ऊँचा करने में सड़क पर चलने वाली गाड़ियों को असुविधा होती थी। नहरों में केवल उन्हीं दिनों में अधिक पानी रहता है जब खेतों के सींचने की आवश्यकता पड़ती है। शेष दिनों में उनमें इतना कम पानी रहता है कि उनमें नावें नहीं चल सकतीं। नाव चलने योग्य व्यापारिक नहरें बड़े बड़े शहरों में होकर बहती हैं। उत्तर प्रदेश की बड़ी बड़ी नहरें प्रायः शहर से कुछ दूरी पर बहती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जिन खेतों को सींचने के लिये पानी की आवश्यकता पड़ती है वे प्रायः शहर के बाहर स्थित होते हैं। रेलों के खुलने से पूर्व उत्तर प्रदेश की नहरों में कई सौ नावें चला करती थीं। रेलों के खुल जाने पर नावें प्रतिस्पर्धा में न टिक सकीं। उन्हें लगातार घाटा होने लगा। इधर नहर विभाग ने नावों का महसूल भी बढ़ा दिया। इस समय नहरों के बहुत कम भागों में नावें चला करती हैं। वन विभाग की लकड़ी के बेड़े और लट्ठे बह कर नीचे आ लगते हैं। गङ्गा नहर में सिरे से लेकर ८७ मील तक नावें चल सकती हैं। निचली गङ्गा नहर में ३४ मील और कानपुर शाखा में ७० मील तक नावें चल सकती हैं।

सारदा नहर—एक दम सिंचाई की नहर है। इस पर नावों के चलाने का प्रबन्ध नहीं है।

उत्तर प्रदेश की नाव चलने योग्य ४ बड़ी बड़ी नदियां गङ्गा, यमुना, गोमती और घाघरा हैं। सारदा घाघरा की ही सहायक है। अक्तूबर से अप्रैल तक गङ्गा और यमुना का अधिकांश जल सिंचाई की नहरों में चला जाता है। इसलिये इनमें नावों के चलने के लिये इन महीनों में बहुत कम पानी रहता है। गोमती नदी पीलीभीत जिले से निकलती है। इसमें साधारणतया अधिक जल नहीं रहता है। घाघरा में जल की कमी नहीं है। लेकिन यह गङ्गा और यमुना के समान कारबारी और सघन आबादी के प्रदेश में होकर नहीं बहती है। घाघरा नदी अधिकतर तराई के जंगली भाग में होकर बहती है। जहां कारबार की कमी है। इसके अतिरिक्त बड़ी-बड़ी नदियों का खादिर (कछार) अधिक चौड़ा है। इसके बीच में इनकी धारा बदलती रहती है। अगर इनके ऊँचे किनारे पर सामान उतारने के लिये घाट बनाये जांय तो भी कुछ ही महीनों के बाद इनके पास सूखी भूमि निकल आवे।

प्रान्त की छोटी नदियों में रामगंगा कुछ बड़ी है। इसमें भी शीतकाल और ग्रीष्म काल में कम पानी रहता है। वर्षा ऋतु में प्रायः बाढ़ आती है। बुन्देलखंड की कुछ नदियां शीत काल में सूख जाती हैं। कुछ नदियों का पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। धसान पहाड़ी, लचूरी का बहुत सा पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। बेतवा नदी में परीछा और दुखवन में और केन नदी में गंगाओ और बेयापुर के पास सिंचाई के बांध हैं।

निम्न जिलों में नावों के चलने की कथा बड़ी मनोरंजक है।

आगरा जिले में पुराने समय में अधिकतर व्यापार यमुना द्वारा होता था। पत्थर, कपास, घी और दूसरा सामान नावों पर लद कर नीचे की ओर जाता था। इस समय भी वर्षा ऋतु में नावें बहुत सा सामान लाद कर आगरे और मथुरा के बीच में ले जाती हैं। अलीगढ़ जिले में गङ्गा और यमुना नदियां नाव चलने योग्य हैं लेकिन व्यापार बहुत कम होता है। कुछ छोटी नावें गङ्गा-नहर के मार्ग से कानपुर से हरिद्वार को ले जाती हैं। इस समय कुछ शक्कर, कपास, लकड़ी और बांस कानपुर को पहुँचता है। बरोथा (हरदुआगञ्ज के पास) सिकन्दराराव और कुछ दूसरे घाटों से कानपुर को माल जाता है। सिकन्दराराव से गोपालपुर को गेहूँ जाता है और वहां से गेहूँ पिस कर आता है। बुलन्दशहर जिले में यमुना के इस किनारे से कुछ सामान पंजाब को जाता है। गंगा के इस पार से उस पार को भी सामान जाता है। अहार फरीदा, बसी, करनवास, नारोरा, बहारिया, डिफफर प्रधान घाट हैं मेरठ जिले में गंगा और यमुना नहरों की सुविधा है।

३०० मन बोझा लादकर नावें हरद्वार से रुड़की होती हुई कानपुर तक जा सकती हैं। मेरठ जिले में सरधना, सजावा, नगौना, जारी, सिवारी, और मोला स्थानों पर घाट बने हैं। मकान बनाने का सामान, शक्कर और गेहूँ यहां से बाहर को जाता है। ईंधन, लकड़ी, घास, गेहूँ और दूसरे अन्न यहां आते हैं।

मुजफ्फर नगर के समस्त जिले के गङ्गा-नहर में नावें चल सकती हैं। हरद्वार और मेरठ के बीच में अनाज और दूसरा सामान यहां होकर जाता है। खतौली नगर नहर के व्यापार का प्रधान केन्द्र है। पूर्वी यमुना नहर में लकड़ी बहने के अतिरिक्त कुछ छोटी नावें भी कहीं कहीं चलती हैं। पर अधिक व्यापार नहीं होता है।

सहारनपुर जिले में गङ्गा नदी नावों के चलने योग्य नहीं है। केवल जंगलों की कुछ लकड़ी का बेड़ा बहकर आता है। यही हाल यमुना का है। पुराने समय में यमुना में इस ओर से लकड़ी, भांग और चूना नीचे की ओर जाता था। आगरे से पत्थर, लोहा और दवाइयां इधर आती थीं।

देहरादून जिले में जलमार्गों का अभाव है। गंगा को पार करने के लिये गोहरी घाट से नावें गढ़वाल के लिये छूटा करती हैं। रामपुर मंडी में यमुना को पार करने के लिये नावें चला करती हैं। बड़ी नदियों पर पुल बने हैं। छोटी नदियां यात्री के लिये विशेष बाधा नहीं डालती हैं।

बिजनौर जिले में इस समय गङ्गा और रामगङ्गा लट्ठों के ढोने के काम आती हैं। पहले यहां से नावों अधिक सामान आता था। नारोरा में निचली गंगा नहर का बांध बन जाने से नहर द्वारा भी निचले मार्ग से इस ओर ऊपर सामान का आना रुक गया।

बरेली जिले में पहले बहगुल नदी में छोटी छोटी नावें बहुत चला करती थीं। सिंचाई में अधिक पानी खर्च हो जाने से नावों का चलना प्रायः बन्द होगया है। रामगङ्गा नावों के चलने योग्य है। लेकिन इसमें आजकल केवल बांस के बेड़ा बहाकर नीचे की ओर पहुँचाये जाते हैं।

मथुरा जिले में यमुना के इस पार से उस पार जाने के लिये १४ घाट बने हैं। वृन्दावन का घाट अधिक प्रसिद्ध है। मथुरा शहर में यमुना के ऊपर पुल बना है। इटावा जिले में पहले नावें बहुत चलती थीं। नावें २ गज लम्बी और ६ गज चौड़ी होती थीं। नाव एक बार में ४०० मन से १००० मन तक बोझा ढोती थीं। नावें इटावा से मिर्जापुर और पटना तक जाती थीं। इलाहाबाद में यमुना को छोड़ कर गङ्गा के मार्ग अनुसरण करती थीं। रेलों की प्रतिस्पर्धा और नहरों के खुल जाने से यह व्यापार प्रायः बन्द सा हो गया है। आजकल कुछ नावें घर बनाने का पत्थर और बांस ढोया करती हैं।

बाराबंकी के रेलों के खुल जाने पर भी जल-व्यापार बहुत होता है। घाघरा नदी में खीरी और बहराइच के वनों के लट्ठे बहा कर लाये जाते हैं। एक बेड़े में पचीस-तीस लट्ठे रहते हैं। इनके दोनों सिरों पर नावें बँधी रहती हैं। मार्ग में ६ या ८ दिन लगते हैं। पानी में डूबे रहने से लकड़ी अधिक अच्छी हो जाती है। लट्ठे बहराम घाट में उतारे जाते हैं। गोमती नदी में नावें लखनऊ के लिये मूंज और ईंधन ढोया करती हैं।

हवाई मार्ग

१९११ ईस्वी में जब प्रयाग में उत्तर प्रदेश की प्रदर्शिनी हुई तब प्रथम बार हवाई जहाज प्रयाग से उड़ कर नैनी को गया। इस पर ढाई तीन मन चिट्ठियां लदी थीं। अप्रैल १९२९ में इम्पीरियल एअरवेज ने इंगलैंड से भारतवर्ष को हवाई जहाजों का उड़ाना आरम्भ किया। १९३० में डच हवाई जहाज इंगलैंड से बटेविया को और फ्रांसीसी हवाई जहाज फ्रांस से सैगोन (इण्डोचीन) को भारत होकर चलने लगे। १९३२ में टाटाएण्डसन्स लिमिटेड कम्पनी कराची से मद्रास को सरकारी डाक लेजाने लगी। १९३३ में हवाई जहाज कराची से कलकत्ते को जाने लगे। १९३७ में बम्बई से दिल्ली को सप्ताह में दो बार हवाई जहाज आने जाने लगा। सप्ताह में एक बार हवाई जहाज इलाहाबाद और कानपुर होकर दिल्ली और कलकत्ते को आने जाने लगे। गत १५ वर्षों में हवाई जहाजों की भूमि सुधारने में लगभग तीन करोड़ रुपया खर्च किया।

उत्तर प्रदेश की खनिजें

ले० निरंजनलाल शर्मा एम० एस-एससी० (बनारस और लिवर पूल)

कृषि-सम्पत्ति में उत्तर प्रदेश जितना धनवान है खनिज सम्पत्ति में वह उतना ही निर्धन है। उपयोगी खनिजें इस प्रान्त के उत्तरीय तथा दक्षिणीय चट्टानी भागों में ही प्रायः मिलती हैं। अधिक खनिजें उत्तर के पर्वतीय भाग में ही पाई जाती हैं। परन्तु इस भाग में आयात के आधुनिक साधनों-रेल तथा सड़कों इत्यादि—का नितान्त अभाव है जिसके कारण कई खनिजें जो वहां मिली भी हैं उनको निकालने के प्रयत्न बहुत कम हुए हैं। इस प्रान्त में अब तक निम्नलिखित खनिजों के मिलने का पता चला है:—

(१) धातुओं की खनिज—सोना, सीसा, चांदी, तांबा, लोहा, मैंगनीज, जस्ता, टाइटेनियम, संखिय।

(२) इमारत के उपयुक्त पत्थर—बालू तथा चूना के पत्थर, स्लेठ, कंकड़, ग्रेनाइट इत्यादि।

(३) उपयोगी बालू तथा मिट्टियां
(४) कोयला तथा ग्रेफाइट
(५) शोरा, नमक, रेह
(६) रंग कारक गेरु
(७) हरसोठ या गोदन्ती
(८) संग रेशा
(९) डोलोमाइट
(१०) सेल खरी
(११) गंधक
(१२) फिटकिरी

---

(१) सोना—अल्मोड़ा और गढ़वाल में निम्नलिखित नदियों की बालू में सोने के कण मिलते हैं:—

अलक नन्दा नदी में चितवा पीपल (३०° १६': ७९°१४') नामक गांव के पास।

गंगा नदी में लक्ष्मण झूला के पास।

गोमती नदी में ग्वाल द्रम (३०°०' :७ °३८') से नीचे।

पिंडर नदी में कर्ण प्रयाग से ऊपर।

राम गंगा की सोना तथा कोह नामक शाखाओं में और पूर्व की बहुत सी शाखाओं में।

पानर नदी में देवी धूरा (२९°२५° :७९°५५' "३०") के पास।

सीसा-चांदी—अल्मोड़ा और गढ़वाल जिलों में सीसा की खनिज गैलेना (galena)—सीसा और गंधक का योग अथवा उसकी पुरानी खानें अनेक स्थानों पर पाई जाती हैं। कुछ स्थानों की गैलेना में चांदी का भी कुछ अंश मिला है। स्थानों के कुछ नाम ये हैं।

राई (२९°४३' :८०°५'), चन्दक, पाटल, धनपुर (३०°१३' :७९°१०'), झाक (३०°९'३०":७९°२६" ३०') गृथी नदी की घाटी (३०°४०' : :८०°७') रालम (३०°१८'३०' : ८०°२०'३०"), बेंस्कल (२९° ५५३०" :८०°१३') इत्यादि।

देहरादून जिले में टौंस नदी की घाटी में कल्सी (३०°३२' :७७°५४') से लगभग २५ मील की दूरी पर, तथा चुरेला (३०°२४' : ७७°५.१'), मयूर, कूमा (३०°४१'३०" : ७८°६'), कोनेन (३०°४७'३०" : ७७°५.७'),गढ़ौल (३०°५६' : ७७°२१'३०") इत्यादि स्थानों पर सीसा की पुरानी खदानें मिलती हैं। लहैटा (३०°३५' : ७७°४८') के पास की पहाड़ी के पास के नीले में सीसा की खनिज के पत्थर कुछ वर्ष पहले मिले थे।

तांबा—अल्मोड़ा और गढ़वाल जिलों में गोरखा राज्य तक पर्याप्त परिमाण में तांबा निकाला जाता था। तांबे की खानों के विषय में निम्नलिखित स्थानों का नाम मिलता है:—

धनपुर (३०°१३':७९°१०'), नागपुर (३०-१६ : ७९°१६') गंगोली (२९°३९'३०" :८०°६') सीरा (२९°४८° : ८०°१८'), राई (२९°४३': ८०°५' पोकरी (३०°२१':७९°:१५'३०"), पीठा-गोरा (२९°३५':८०°१६'), अलअगार (३०°०': ७९°४०') तथा अलकनन्दा नी की घाटी में पिपुली

प्रंग्ला पानी और मवू गेटी नामक स्थान। धनपुर की खनिज में २० से ५० प्रतिशत अंश तावे का वताया गया है और इस स्थान की खान से लगभग २½ टन खनिज प्रतिवर्ष निकाली जाती थी।

लोहा--लोहे की खनिज-लालगेरु (Dematite) कुछ चुम्बक खनिज (Magnetite) के साथ अथवा कुछ भूरे गेरु (Limonite) के साथ-संयुक्त प्रान्त के हिमालीय भाग में कई स्थानों में मिलती हैं और १८ वीं तथा १९ वीं शताब्दी में पहाड़ी लोग उन खनिजों में से पर्याप्त लोहा निकालते भी थे। उन स्थानों में से निम्नलिखित स्थान उल्लेखनीय हैं:-

अल्मोड़ा में द्वारकानाथ-सीमल खेत (२९°४७': ७९°२६') क्षेत्र तथा पोनार घाटी (२९°३१':७९°५७')

गढ़वाल में नागपुर परगना (३०°३०':७९°१५')

नैनीताल जिले में धनियाकोट (२९°३०': ७९°३१'), रामगढ़ (२९°२६':७९°२७"), हलद्वानी (२९°१३': ७९° ३५') के पास वीजापुर तथा भाम, देचौरी २९°२२'३०":७९°२२३०") और कालाढूंगी (२९°१७':७९°२४'३०") के पास लोहा भाव्रर नामक स्थान। रामगढ़ की खनिज में करीब ४३ से ६१ प्रतिशत लोहे का अंश मिला था और कालढूंगी और देचौरी की खनिजों में क्रम से ३९ और ५५ प्रतिशत सन् १८५७ ई० में देचौरी और खुर्पाताल (२९°२२': ७९°२८' में दो लोहे की कारखाने स्थापित हुए जिनकी १८६२ में एक ही कम्पनी मालिक हो गई परन्तु बाद को यह कारखाने कई कारणों से असफल हो गये।

मिर्जापुर जिले में कोरची (२४°९':८३°२०') नामक स्थान के उत्तर में लोहे की चुम्बक खनिज (Magnetite) मिलती है।

मैङ्गनीज़—मिर्जापुर के दक्षिणीय भाग में मैङ्गनीज की खनिज रोडनाइट (Rhodenite) मैङ्गनीज के सिलीकेट का नमूना मिला हैं।

जस्ता--देहरादून जिले में टोंस नदी की घाटी में कलसी (३०°३२':७७°५४') नामक स्थान से २५ मील की दूरी पर स्थित सीसे की पुरानी खान में सीसे की खनिज के साथ जस्ता की खनिज (जस्ता-गंधक कोपो (Zincbeende) भी मिलती है।

टाइटेनियम—मिर्जापुर जिले के दक्षिणीय भाग की कुछ नदियों के बालू में टाइटेनियम की खनिज (Ilmenite-लोहे व टाइटेनियम ऑक्सीजन का योग) के कण मिलते हैं।

संखिया--संखिया की खनिज पीलीहरताल (Orpiment—संखिया और गंधक का योग) अल्मोड़ा जिले में धर्मा और जुहार या नीती नामक पहाड़ी घाटों में और मनस्यारी (३०°६': ८०°१६') नामक स्थान में मिलती है। शंकिला हि-नदी से लाये हुये पत्थरों में पीली हरताल और लाल हरताल (Realgar) के पत्थर मिले हैं। परन्तु उन टुकड़ों का मूल-स्थान का पता अभी नहीं चला।

बालू के पत्थर—इमारत के लिये बालू का पत्थर (Sand stone) आगरा, इलाहाबाद, बांदा और मिर्जापुर जिलों में बहुत पुराने समय से निकाला जा रहा है। यह पत्थर विन्ध्याचल कालीन शिलाओं में एक मुख्य शिला है और उत्तरी भारत की अनेक ऐतिहासिक इमारतें इसी पत्थर की बनी हैं। इलाहाबाद जिले में प्रतापपुर (२५°१७':८१°:३७') और शिवराजपुर २५°१२': ८१°४०', नामक स्थानों की तथा मिर्जापुर जिले में चुनार और मिर्जापुर की बालू के पत्थर की खानें बहुत समय से प्रसिद्ध हैं।

बालू की परिवर्तित शिलाएं—Quartzites अल्मोड़ा के पास मिलती हैं और उनका इमारतों के बनाने में प्रयोग किया जाता है

चूने के पत्थर अल्मोड़ा, गढ़वाल तथा प्रान्त के शेष उत्तरीय भाग में और दक्षिण में सोन नदी की घाटी में अनेक स्थानों पर मिलते हैं। कंकड़ की चौड़ी चौड़ी पट्टियां (२ से ४ फीट तक लम्बी और १ से २ फुट तक चौड़ी) जालौनमें भदौरा (२६°२३' ३०":-९०') के पास करीम खां नामक गांव में जमुना नदी के किनारे आध मील तक मिलती हैं

कंकड़—के जमाव उत्तर प्रदेश के गङ्गा यमुना नदी के मैदान के अनेक जिलों में बालू मिट्टी में सतह से कुछ नीचे मिलते हैं। इन बालुओं और मिट्टियों जो चूना का अंश था वह कालान्तर में जल द्वारा घुल कर इन स्थानों पर पिण्डाकार रूप में जमा हो

स्लेट—अल्मोड़ा में चितैली (२६°४६': ७६°-२८'३०") और लोहूघाट (२६°' २४° ८०°६' नामक स्थानों पर बहुत निकाली जाती हैं। मंसूरी के उत्तर में आगलर नदी (३०°३०' : ७८°६') की घाटी में भी बढ़िया स्लेट मिलती है।

ग्रेनाइट—मिर्जापुरके दक्षिणीय भाग की ग्रेनाइट नामक आग्नेय शिला भी कभी कभी मकान बनाने के काम में आती है।

संगमरमर—मिर्जापुर जिले में रेर नदी की शाखा, बिची नदी (२४°८' : ८३°०') के मुहाने पर हरे रंग का संगमरमर मिलता है।

(३) कांच के लियेबालू का पत्थर—इलाहाबाद जिले में लोहगरा (२५°१२' : ८१°४०'३०") नामक स्थान का तथा बांदा जिले में बरगढ़ (२५°६' : ८१°२१' नामक स्थान का सफेद रंग के बालू का परवर्तित पत्थर (Quartzite) पीसकर कांच बनाने के काम में आता है। उत्तर प्रदेश के प्रायः सब कांच के कारखानों में इस बालू का प्रयोग होता है। देहरादून के पास लछमन सीढ़ी (३०°१५' : ७८°५') नामक स्थान में भी सफेद बालू का पत्थर मिला है।

उपयोगी मिट्टी—यह मिर्जापुर जिले के दक्षिणीय भाग में कोयले के साथ, तथा चुनार में, बांदा जिले में लखनपुर इत्यादि दो एक स्थानों पर हमीरपुर जिले में और इलाहाबाद जिले के दक्षिणीय भाग में मिलती है। चुनार में मिट्टी की सुन्दर वस्तुएँ बनाई जाती है वे बहुत प्रसिद्ध है और दूर दूर बिकने के लिये भेजी जाती हैं।

(४) कोयला—रीवां राज्य के सिंगरौली नामक क्षेत्र का कुछ भाग मिर्जापुर जिले के दक्षिणी भाग में सम्मलित है। जिसको 'कोटा क्षेत्र भी कहते हैं। इस क्षेत्र में कोटा (२४°६' : ८२°६५'), उज्जैनी (२४°१०' : ८२°२५', बांदा २४°५' : ८२°२५'), मन्हारी (२४°१०' : ८२°२८'), नौनगर (२४°७': ८२°३६), सोहिरा (२५°२ : ८२°२६') और आमलिया (२४°२' : ८२°२८') इत्यादि स्थानों पर कोयले की तहें मिलती हैं। इनमें नौनगर का कोयला और स्थानों के कोयले से अच्छा है यद्यपि वह भी दूसरी या तीसरी श्रेणी का है।

लिगनाइट—(भूरा कोयला) की पतली तहें भीम ताल से नीचे बलिया नदी में तथा देहरादून को जाने वाले तीमली (३०°२१' : ७७°४६') और कलावाला (३०°१६'३०" : ७७°५२) नामक पहाड़ी घाटों में पाई गई हैं। मुरादाबाद के उत्तरीय भाग से निकलने वाल ढेला (२६°२५' : ७६°४') और अन्य नदियों में भी लिगनाइट मिला है। कोट द्वारा (२६°४५' : ७८°३६' तथा राजपुर (३०°२४" : ७८°६") के पास भी लिगनाइट की पतली पतली तहे मिली हैं।

ग्रेफाइट—खनिज अल्मोड़ा में कालीमाटी, वाल्द (२६°३८" : ७६°४५') के पास गारगोली तथा पुलसीमी (२६°३५' ३०"७६°४५) नामक स्थानों में पाई जाती है। डोल (२६°२६°३०": ७६°४६'३०") नामक स्थान के पास तथा लाधर नदी (२६°५३' : ७६°५०') जहां कपकोट—बागेसर सड़क को पार करती है, उस स्थान पर भी ग्रेफाइट मिलता है।

(५) शोरा—उत्तर प्रदेश के कानपुर, इलाहाबाद बनारस गाजीपुर इत्यादि जिलों की मिट्टी में से निकाला जाता है। उत्तर प्रदेश व विहार में मिट्टी में शोरा बनाने का कारण इन प्रान्तों में मवेशियों की बहुतायत जिनके गोबर से शोरा बनाने के लिये उपयुक्त नाइट्रोजन प्राप्त होता है और लकड़ी के ईंधन का प्रयोग जिसकी राख से शोरा बनाने के लिये उपयुक्त पोटाश का अंश प्राप्त होता है तथा इन प्रान्तों की उपयुक्त आबहवा है। शोरा का धन्धा इन प्रान्तों में अनेक शताब्दियों से होता आया है।

नमक—कुछ वर्षों पहले नमक गाजीपुर जिले में कई स्थानों की मिट्टी से निकाला जाता था। यमुना नदी के गीले बालू में से जालोन में मदापुर (२६°२४' ७६°३३') नामक स्थान पर भी नमक निकाला जाता था।

रेह—गङ्गा यमुना नदियों के मैदान में अलीग इत्यादि जिलों की मिट्टी के ऊपर नमक की सफेद पतली तह जम जाती है जिसमें प्रायः नमक के अतिरिक्त सोडा व सोडा का सल्फेट भी होता है। ये नमक उस स्थान की भूमि को ऊसर बना देते हैं।

यह रेह घटिया कांच के बनाने में बहुत समय से प्रयोग में आता रहा है। सज्जी मिट्टी भी रेह से ही बनाई जाती है। कपड़ा धोने के काम भी यह रेह लिया जाता है।

(६) गेरू—उत्तर प्रदेश के उत्तरीय पर्वतीय भाग में बहुत सी रंगीन मिट्टियां मिलती हैं, तथा पर्वतीय भाग में प्राचीन शिलाओं में रंगकारक लाल व पीला गेरु मिलता है।

हरसोठ या गोदन्ती (Gyfcem)— देहरादून के उत्तर की पहाड़ियों में हरसोठ चूने या मिट्टी के पत्थरों के साथ मिलती है। सहस्त्र धारा (३०°२३:" ७८°१०'३०") और जेरी पानी (३०°२५'३०": ७८°८'३०") नामक स्थानों पर हरसोठ के बड़े जमाव हैं। गढ़वाल में लक्ष्मण झूला (३०°७' : ७८°२०') के पास कई हरसोठ के जमाव हैं। जिनमें से कई हजार टन खनिज सरलता से निकाली जा सकती है। टेहरी—गढ़वाल रियासत में सीरा (३०'१८': (३०°१८': ७८°१४') के पास सोंग नदी के उत्तरीय किनारे पर भी हरसोठ मिली है।

नैनीताल और कालाढूंगी के बीच में निहाल नदी के किनारे हरसोठ के बड़े जमाव मिलते हैं। सन के मुख्य जमाव धापिला (२९°१९' : ७९°७८') नामक स्थान के उत्तर में है।

हमीरपुर जिले में पुरानी (२५°४५' : ७९°५०') स्थान पर और झांसी जिले में गोन्टी (२५°४७' : ७९°१३') व गोखल (२५°४६' : ७९°२०'३०") नामक स्थानों पर पुराने बालू व मिट्टी में हरसोठ के क्रिस्टल मिलते हैं।

संगरेशा (Asbestes)—गढ़वाल जिले में परकंडी (३०२९': ७९°६') के पास तथा ऊखीमठ (३०°३१'३०"), : ७९°६') के उत्तर की पहाड़ियों में संगरेशा मिलता है। यह खनिज पिथोरागढ़ (२९°३५' : ८०°१२'३०"), जोशीमठ (३०°३३' : ७९°३८') तथा बधानगढ़ पहाड़ (३०°१': ७९°३५') पर भी मिलती है।

(९) डोलोमाइट Dolomite- उत्तर प्रदेश की उत्तरीय पर्वतीय भाग की शिलाओं में चूने के पत्थर के साथ डोलोमाइट भी कहीं कहीं मिलता है। मिर्जापुर के त्रिची नदी का सङ्गमरमर भी डोलोमाइट-दार है। डोलोमाइट का प्रयोग अग्नि प्रतिरोधक ईंटे (भट्टी के लिये) बनाने में अधिक होता है।

(१०) सेलखरी (Steatite)—अल्मोड़ा जिले में बागेसर (२९°५०'३०" : ७९°५०') के दक्षिण में सेलखरी की पुरानी खान है। ठाकिल पहाड़ी (२९°५०'३०" : ७९°१०') दक्षिण में सेलखरी की पुरानी खान है। ठाकिल पहाड़ी (२९°३०'३०" : ८०°१६') पर भी सेलखरी मिलती है। गढ़वाल, हमीरपुर व झाँसी जिलों में भी सेलखरी कई स्थानों पर मिलती है।

(११) गंधक—देहरादून में टोंसनदी पर स्थावर नामक स्थान की सीसे की पुरानी खान में गंधक पाया गया है। कुमाऊं के जिले में अनेक स्थानों पर गरम सोतों के जलद्वारा गंधक जमा हो गया है जिनमें निम्नलिखित स्थान उल्लेखनीय हैं:—

राम गङ्गा और गर्राजिया नदी के किनारे, जवार या नीती पहाड़ी घाटी में, नन्द प्रयाग (३०°२०' : ७९°२३', मनस्यारी (३०°६': ८०°१४'), मुल्ला दसौली तथा मुल्ला नागपुर।

(१२) फिटकिरी—अल्मोड़ा के पास ही कौशिल नदी (२९°३३' : ७९°४०') में तथा नैनीताल-खेरना की सड़क पर जाख (२९°२६' :७९°३१') नामक गांव के पास फिटकिरी रूपामाखी (Pyrite) दार मिट्टी के पत्थर के ऊपर जमी हुई पाई जाती हैं।

नोट—इस लेख में उत्तर प्रदेश की खनिजों के मिलने के स्थानों के केवल नाम दिये गये हैं और अधिक विवरण नहीं दिया गया। इस लेख को लिखने में लेखक को ज्यालोजीकल सर्वे की पुस्तक Latonche Bibliogrophy of Indian Ceology Pt-I B से बहुत सहायता मिली है।

उत्तर प्रदेश की भौगर्भिक रचना और शिलाएँ

ले० निरंजन लाल शर्मा एम० एस०-सी० (बनारस और लिवरपूल)

भूगोल और भौगर्भिक दोनों दृष्टियों से उत्तर प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :—(१) उत्तरीय चट्टानी भाग (२) बीच का मैदान तथा (३) दक्षिणीय चट्टानी भाग। उपरोक्त तीनों भागों की भौगर्भिक रचना भिन्न भिन्न तथा इनका भौगर्भिक इतिहास भी एक दूसरे से भिन्न रहा है। तीसरा भाग सबसे पुराना है और बीच का सब से नया।

उत्तर प्रदेश का दक्षिणीय चट्टानी भाग त्रिभुजाकार, अति प्राचीन और अचल भारत का एक अंश है और वह विन्ध्याचल पर्वतीय तथा और पुरानी शिलाओं से बना है। जब पृथ्वी पर जीवन का नितान्त अभाव था उसी समय से आज तक यह भाग समुद्रतल से ऊपर भूमि रहा है। इस प्रान्त का उत्तरीय चट्टानी भाग, भौगर्भिक दृष्टि से नये हिमालय पर्वत समूह का एक अंश है। पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति के आरम्भ काल से मनुष्य के पृथ्वी पर आने के समय से कुछ समय पहले तक इस विशाल हिमालय पर्वत के स्थान पर एक लम्बा समुद्र हिलोरें मारता था जिसका नाम भूगर्भ वेत्ताओं ने आज "टेथिस सागर" रखा है। इस सारे दीर्घ काल में शेष भारत की दक्षिणीय भूमि (जिसकी सतह आज से कहीं अधिक ऊँची होगी टेथिस सागर के दक्षिणीय तट पर पर्वतीय चिन्हाकार खड़ी थी। दक्षिण की इस ऊँची भूमि से तथा तिब्बत की ओर की उत्तरीय ऊँची भूमि से नदियां पत्थर के टुकड़े, बालू और मिट्टी लाकर इस सागर में डालने लगीं और धीरे धीरे वह सागर इन तलछटों से तथा स्वयं जल के भीतर बने चूने के पत्थर से भरा जाने लगा। परन्तु साथ साथ उस समुद्र का तल भी नीचे धंसता रहा जिसके कारण उस (अधिकतः उथले) समुद्रों में हजारों फीट मोटी तहदार शिलाओं के बनाने की सामग्री एकत्रित हो सकी। धीरे धीरे उस समुद्र का तट पृथ्वी की आन्तरिक हलचलों के कारण ऊपर उठने लगा और तीन भिन्न कालों में उस समुद्र के स्थान पर उसमें एकत्रित पदार्थों से बना हुआ विशाल हिमालय पर्वत खड़ा हो गया। इस प्रकार हिमालय पर्वत में अनेक भौगर्भिक कालो की समुद्रीय शिलाये मिलती हैं।

हिमालय और आल्पूस जैसे पर्वतों के अध्ययन से पता चलता है कि जिस समय समुद्र में एकत्रित शिलाएँ ऊपर उठती हैं उस समय उनका ऊपर उठाने वाली आन्तरिक शक्ति में अतिरिक्त एक और अन्तरिक शक्ति कार्य करती है जो इन शिलाओं को समुद्र की ओर से उसके किनारों की ओर ढकेलती है। समुद्र के किनारे की ठोस चट्टानी भूमि इन शिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती है। और जिस प्रकार एक मोटे कागज या कपड़े के एक सिरे को एक हाथ से दबाने पर और दूसरी ओर से उसे दूसरे हाथ से पहले हाथ की ओर ढकेलने से उस कागज या कपड़े में सिकुड़न पड़ जायेंगी और वह ऊपर उठ जायेगा और पहले हाथ के ऊपर चढ़ जायगा तथा वहां उस हाथ के पास एक गड्ढा भी पड़ जायेगा यही दशा टेथिस सागर में बनी शिलाओं की हुई है। हिमालय पर्वत की नई शिलाएं भारत के ठोस भाग की प्राचीन शिलाओं के पिंड के उत्तरीय किनारे से टकराकर आगे दक्षिण की ओर बढ़ने से रोक दी गई थी और यही कारण है कि हिमालय के दक्षिणीय किनारे किनारे एक बड़ स्तर-भ्रंश की रेखा (fault line) है जिसके पास की भूमि अभी तक अस्थिर है और वह अनेक भारतीय भूकम्प की उत्पत्ति स्थान है। भारत के ठोस भाग की शिलाओं और हिमालय की शिलाओं के एक दूसरे से मिलने के सब स्थान सिन्धु तथा गङ्गा यमुना की घाटियों के तलछटों से ढक गया।

उत्तर प्रदेश के बीच के मैदान के क्षेत्र का इतिहास बड़े महत्व का है परन्तु भारत के भौगर्भिक इतिहास में इस क्षेत्र ने बहुत कम भाग लिया है। इस क्षेत्र की शिलाएं भारत की सब शिलाओं से नई हैं। इतने पिछले भौगर्भिक कालों में इसका क्या इतिहास रहा इसका पता चलाना कठिन है कारण कि इस स्थान पर गंगा-यमुना इत्यादि

उत्तर प्रदेश की भौगर्भिक शिलाओं की सूची

कल्प	काल	शिला-समूह और-श्रेणियां	मुख्य शिलाएँ	उपयोगी खनिजया शिलाएँ
चतुर्थ	आधुनिक	नये तलछट	गंगा यमुना के 'खादर' और 'भूड़' तथा हिमालय पर्वत की नदियों के पत्थर और वालू के नये जमाव ऊसर का रेह।	नदी के पत्थरों की वटियां और बालू रेह।
	प्लेस्टोसीन	पुराने तलछट	'भंगर' और गंगा यमुना इत्यादि नदियों के किनारे से दूर के वालू और मिट्टी के जमाव, कंकड़	वालू, मिट्टी, कंकड़, हरसोठ।
तृतीय	प्लाओ सीन माओ सीन	{ शिवालिक समूह { दाग शाई-कसौली श्रेणियां	वालू और मिट्टी तथा उनके ठोस पत्थर, वड़े वड़े हाथी गैंडा इत्यादि की फासिल।	वालू और मिट्टी।
	ईओसीन	सुबाथू श्रेणी	लाल मिट्टियां, वालू के पत्थर, हरसोठदार मिट्टी की शिलाएँ चूने का पत्थर (न्यूमी लाइट (फासिलदार)	मिट्टी। चूने का पत्थर व हरसोठ।
द्वितीय	क्रीटेशस जूरासिक ट्रायसिक	{ ताल श्रेणी	वालू के पत्थर, काली मिट्टी के पत्थर और चूने का पत्थर।	
प्रथम	परमियन	{ कोल श्रेणी — वराकर श्रेणी (दक्षिण में)	नीला चूने का पत्थर, क्रोल में, सफेद वालू का पत्थर और कोयला वराकर में।	चूने और वालू के पत्थर। चूने का पत्थर, वालू का पत्थर और कोयला।
	कार्वोनी फेरस	{ ब्लेनी श्रेणी — ताल चीर श्रेणी (दक्षिण में)	हिम-नदी द्वारा लाये हुए पत्थरों की शिला की तह, स्लेट व वालू का पत्थर। ब्लेनी में चूने का पत्थर भी।	चूने का पत्थर, स्लेट।
	डेवोनियन साइलूरियन	{ जान्सर श्रेणी	वालू के पत्थर और मिट्टी के पत्थर।	वालू के पत्थर।
	केम्ब्रयन केम्ब्रयन से पहले	{ शिमला श्रेणी { चैल श्रेणी — विन्ध्या समूह (दक्षिण में) विजावर श्रेणी (दक्षिण में)	प्रान्त के उत्तरीय भाग में स्लेट और चूने का पत्थर, दक्षिणीय भाग विन्ध्याचल में वालू का पत्थर व चूने का पत्थर। वालू मिट्टी व चूने की परिवर्तित शिलाएँ। बीजावर श्रेणी में लोहेदार शिलाएँ भी मिलती हैं।	स्लेट, चूने का पत्थर, वालू का पत्थर। चूने और वालू के पत्थर, लोहे का गेरु।
प्राचीन	आर्कियन	— — धारवाड़ समूह (दक्षिण में)	ग्रेनाइट नाइस तथा अन्य परिवर्तित शिलाएँ।	रेल सड़क की वजरी के व इमारत के कुछ पत्थर।

आग्नेय शिलाएँ—डोलेराइट-तृतीयकाल, विन्ध्यन काल तथा पुराने समय का।
ग्रेनाइट, अभ्रकदार-पेग्मेटाइट तथा स्फटिक की धारी का पत्थर-प्राचीनकाल का अथवा तृतीय काल का।

नदियों ने आधुनिक समय में लाये हुये तलछटों— बालू मिट्टी इत्यादि से इस भाग की पुरानी शिलाओं को कई हजार फीट नीचे तक ढक दिया है। यह अनुमान किया जाता है कि हिमालय पर्वत के उठने के समय सिन्धु, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल के मैदान के स्थान पर पर्वत के सामने उतना ही लम्बा और बहुत गहरा (हिमालय पर्वत और अचल भारत भूमि के मिलने के स्थान के पास कई हजार फीट गहरा) गड्ढा बन गया था। इस गड्ढे को शीघ्र ही नदियां नयी बनी हुई पर्वत श्रेणियों से निकल कर और उनको काट काटकर लाये हुये तलछटों—पत्थर के टुकड़े, बालू और मिट्टी—से भरने लगीं। ज्यों ज्यों हिमालय पर्वत ऊपर उठता गया होगा इन नदियों का वेग भी बढ़ता गया होगा और इन तलछटों के जमाव की मात्रा भी बढ़ती गई होगी जिससे हिमालय के किनारे का यह विशाल गड्ढा हिमालय पर्वत के बनने के पश्चात् के और आधुनिक काल से पहले के भौगर्भिक कालों के तलछटों से शीघ्र ही नदियों द्वारा भर दिया गया।

उत्तर प्रदेश की भौगर्भिक शिलाओं की सूची सामने के पृष्ठ पर है। इस सूची में शिला-समूहों की अन्तर्राष्ट्रीय भौगर्भिक आयु (कल्प तथा काल) और उनके भारतीय नाम दिये गये हैं। शिला-समूहों के नाम प्रायः उन स्थानों के नाम पर रखे जाते हैं जहां पर वे समूह प्रथम बार मिलते हैं अथवा जहां पर उन शिलाओं का जमाव अधिक होता है। उन शिला-समूहों में किस किस प्रकार के पत्थर मिलते हैं। अथवा उन समूहों में उपयोगी पत्थर और खनिजें क्या क्या मिलती है। यह भी इस सूची में बताया गया है।

☆ ☆ ☆

पूर्वी यमुना नहर

पूर्वी यमुना नहर का आरम्भ शाहजहां के समय में किया गया था। १८२३ ई० में इसकी फिर से खुदाई आरम्भ हुई। १८३० में ४, ३७,६६६ रुपया की लागत से नहर खुदकर तयार हो गई। नया शहर के पास एक बांध और पुल बना। दलपुर से आगे नहर ने शामली नाले के मार्ग का अनुसरण किया। नहर का प्रवाह ठीक रखने के लिये रेरी और कई स्थानों पर नहर में प्रपात (झाल) बना दिये गये। रायपुर के पास बाढ़ का पानी बूढ़ी यमुना में डालने के लिये नहर का किनारा ठीक किया गया। नौगांव और जातों वाला नाला पार कराने के लिये नौगांव बांध बनाया गया। कुछ नीचे की ओर मरकरा बांध बनाया गया।

इसके बाद पड़ोस के गांवों को सींचने के लिये प्रधान नहर से दाईं और बाईं ओर से रजवाहे (अशाखायें) निकाली गई। औरंगाबाद गांव के पास ५६ वें मील पर पूर्वी यमुना नहर मुजफ्फर नगर जिले में प्रवेश करती है शामली और कांधला परगने को सींचती हुई यह मेरठ जिले में पहुँचती है। इस-जिले में नहर को पार करने के लिये कई पुल हैं। प्रवाह ठीक रखने के लिये झाल (प्रपात) बनाये गये हैं। पड़ोस के खेतों को सींचने के लिये दोनों ओर रजवाहे बने हैं।

८३ वें मील पर यमुना नदी मेरठ जिले में प्रवेश करती है। और दिल्ली शहर के सामने यमुना नदी में गिर जाती है। पूर्वी यमुना नहर मेरठ जिले ४६ मील बहती है और छपरौली, बड़ौत बागपत और लोनी परगनों को सींचती है। पड़ोस की भूमि को सींचने के लिये इससे बहुत से रजवाहे निकाले गये हैं।

गंगा—नहर जो सफलता यमुना नहर में हुई उससे बड़ा उत्साह बढ़ा। १८३६ में हरिद्वार से ऊपर और नीचे की भूमि की पैमायश की गई। १८३७ के दुर्भिक्ष से यह योजना और दृढ़ बनाई गई। १८४१ में गंगा नहर निकालने के लिये २ लाख रुपया प्रतिवर्ष स्वीकृत कर लिया गया। १८४२ में कनखल और हरिद्वार के बीच में काम आरम्भ हुआ। १८५४ में नहर खुद कर तयार हो गई।

हरद्वार के पास गंगा प्रायः एक मील चौड़ी है। कई द्वीपों ने गंगा को अलग अलग धाराओं में बांट दिया है। इनमें से एक धारा हरद्वार से दो मील ऊपर

से अलग होती है। यह हरद्वार के पास होकर बहती है। इसमें समस्त गङ्गा का एक तिहाई पानी रहता है। इसी धारा से मायापुर या गणेश घाट में बांध बनाकर गङ्गा-नहर निकाली गई है। बांध में लोहे के बड़े बड़े फाटक लगे हैं। यहां से गङ्गा नहर ज्वाला-पुर होती हुई पूर्व की ओर बहती है। नहर के मार्ग में कई छोटी छोटी नदियां और नाले पड़ते हैं। यह पांचवें मील पर रानीपुर नदी, नवें मील पर पथरी राऊ को पार करती है। किनारों को मजबूत बनाकर ये नाले ऊपर से निकाल दिये गये हैं।

धनौरी के पास बारहवें मील पर रानमऊ राऊ (नाला) प्रायः १ मील चौड़ा है। इसको पार कराने के लिये बायें किनारे पर पक्का बांध और पक्के दरवाजे बनाने पड़े। धनौरी से आगे रुड़की तक नहर दक्षिण-पश्चिम की ओर सीधी रेखा में बहती है। पीरन कलियर के पास रास्ते में ऊँची जमीन पड़ती है। यहां ३१ फुट गहरा काटकर नहर निकाली गई है। अठारहवें मील पर सोलानी नदी पड़ती है। सोलानी को पार करने के लिये ५० फुट लम्बे १५ महराब बने हैं। सोलानी के पानी के ऊपर ये २४ फुट ऊँचे हैं। इन्हीं महरावों के ६३२ फुट लम्बे पुल के ऊपर गङ्गा-नहर बहती है समस्त सिरों को मिलाकर समस्त भाग लगभग तीन मील लम्बा है। इस स्थान पर नहर का तल हरि-द्वार की अपेक्षा ८० फुट नीचा है। फिर भी नहर का तल ऊँचा रहने से पड़ोस की नीची जमीन को सींचने में सुविधा रहती है। रुड़की से मॅगलौपुर तक गङ्गा-नहर दक्षिण की ओर बहती है। समस्त सहारनपुर जिले में गङ्गा नहर की लम्बाई ३० मील है। बाईसवें मील पर गङ्गा-नहर के दाहिने किनारे पर देवबन्द शाखा नहर निकलती है। देवबन्द शाखा दक्षिण-पश्चिम की ओर देवबन्द को जाती है। रास्ते में यह सिला नदी और पश्चिमी काली नदी को पार करती है। सहारनपुर जिले में देवबन्द शाखा-नहर २६ मील लम्बी है। पड़ोस की भूमि सींचने के लिये दोनों किनारों से कई रजबाहे निकाले गये हैं।

गङ्गा-नहर ३२वें मील पर मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश करके गङ्गा के ऊँचे किनारे के पास पास दक्षिण की ओर बहती है। इसके पूर्व में लगभग ४ मील की दूरी पर पूर्वी काली नदी बहती है। पश्चिम की ओर थोड़ी थोड़ी दूरी पर रेतीले टीले मिलते हैं। नहर की तली में भी यहां सब कहीं रेत है। यहां नहर का ढाल प्रति मील में डेढ़ फुट है। ४६ वें मील पर भोपा के पास नहर पर पुल बना है। दो मील और आगे जौला में भी पुल और प्रपात है। दो मील और आगे ५० वें मील पर बायें किनारे से गङ्गा-नहर की अनूप शहर शाखा निकलती है। इसके आगे नहर दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। ५४वें मील पर नगला-मुबारक के पास नहर के ऊपर पुल बना है। यहां होकर मुजफ्फर-नगर से जनसठ को सड़क जाती है। डेढ़ मील और आगे झाल और प्रपात हैं। ५८ वें मील पर रसूलपुर सराय के पास पुल है। २ मील और आगे रेल का पुल है। कुछ दूर आगे खतौली का पुल है। यहां एक कटान से नहर का फालतू पानी पश्चिमी काली नदी में गिरा दिया जाता है। यह कटान ६० फुट चौड़ी है। इसमें छः छः फुट चौड़े १० द्वार हैं। यह स्थान नदी से साढ़े तीन मील दूर है। यहां पर नहर का तल नदी तल से सवाउन्तीस फुट ऊँचा है। मुजफ्फर नगर जिले का अन्तिम पुल सथेरी में है। इस पर होकर खतौली से बुढ़ाना क सड़क जाती है।

अनूप शहर शाखा को पहले फतेहगढ़ शाखा कहते थे। पहले इस नहर को फतेहगढ़ तक ले जाने का विचार था। लेकिन अनूप शहर के आगे इसमें पानी ही नहीं बचता था। इस लिये इसका नाम बदल कर अनूप शहर शाखा रख दिया गया। मुजफ्फरपुर जिले में गङ्गा-नहर की अनूप शहर शाखा में इतना नीचे पानी रहता है कि यह इस जिले के बहुत कम (केवल दक्षिण) भाग को सींचती है। निकास से एक मील नीचे खेड़ी फीरोजाबाद में इस पर पुल है। दूसरा पुल दो मील आगे कम्हेरा में है। पांचवें मील पर धांसरी का पुल है। इसके डेढ़ मील आगे सलारपुर का पुल है। दसवें मील पर मुजफ्फर नगर से मीरन पुर जाने वाली सड़क का पुल है। पुल के पास ही प्रपात है। यहां से दो मील आगे भूमा का पुल है। यही मुजफ्फरनगर जिले में अन्तिम पुल पड़ता है।

अनूप शहर शाखा के अतिरिक्त गङ्गा नहर के दाहिने किनारे से २१ वें मील पर एक शाखा रुड़की

के पास निकलती है। वायें किनारे से एक शाखा २२ वें मील पर निकलती है और गङ्गा के ऊँचे किनारे के पास वहती है अन्त में यह अनूप शहर शाखा से मिल जाती है। मुहम्मद पुर के पास उसी नाम की दूसरी शाखा निकलती है और भैसेनी के पास दूसरी प्रधान शाखा से मिल जाती है। इसके अतिरिक्त नहरों से स्थान स्थान पर सींचने के लिये बहुत से रजवाहे निकलते है। चितौना और निर्गजनी में आटा पीसने की पनचक्कियां हैं जो नहर के पानी के जोर से चलती हैं। सहारनपुर जिले में ६ स्थानों (वेल्का, नगला, रन्दौल, बबैल, घुना और सलेमपुर। पर पन चक्कियाँ चलती हैं।

६६ वें मील पर गंगा-नहर मेरठ जिले में प्रवेश करती है। यहां यह हिंडन और काली नदी के बीच वाले प्रदेश को सींचती है। इस प्रदेश के सरधना, मेरठ, जलालावाद और डासना परगनों को सींचने के बाद यह मेरठ जिले को छोड़कर बुलन्दशहर में पहुँचती है। मेरठ जिले में नहर का ढाल प्रति मील पौने दो फुट है। सलावा, भोला और डास्ना में झाल और प्रपात हैं। इनसे नहर का प्रवाह और कम हो गया है। डास्ना परगने के डेहरा स्थान से गंगा-नहर की माट शाखा निकलती है। मेरठ जिले में गंगा नहर को कई उपशाखायें हैं। दाहिनो ओर प्रधान शाखा, सलावा शाखा, भोलाशाखा, टीकरी शाखा और अनेक उपशाखायें हैं। कई स्थानों (सलावा, अटनी. सरधना, नानुन जटपुरा, पूठ, भोला, जानी, नगला, निवाड़ी सोंधा, अबूपुरा, मुराद नगर, जलालावाद, नूरपुर, डास्ना, पीपल खेड़ा, रौली, डेहरा और निधौली) पर पुल हैं। भोला और डास्ना में आटा पीसने की पनचक्कियां हैं। भोला से गंगा-नहर का पानी मेरठ शहर और छावनी में पीने के लिये पहुँचता है। गंगा नहर की प्रधान नहर के किनारे किनारे तार लगा है। भोला से मेरठ को भी तार आता है। स्थान-स्थान पर इन्सपेक्शन बंगले बने हैं;

गंगा नहर की —अनूप शहर शाखा मुजफ्फर नगर के जौली स्थान से आरम्भ होकर हस्तिनापुर परगने के मीरपुर गांव के पास चौदहवें मील पर मेरठ जिले में प्रवेश करती है। अनूप शहर नहर मेरठ, बुलन्द शहर और अलीगढ़ जिलों की भूमि सींचने के वाद लोअर गङ्गा-नहर में मिल जाती हैं। मेरठ जिले में इस नहर की लम्बाई ३६ मील है। इसकी उपशाखाओं और राजवाहों का यहां जाल विछा हुआ है। इस नहर पर कई स्थानों में पुल बने हैं।

ऊपरी गङ्गा नहर ११५ वें मील पर जर्चा गांव के पास मेरठ से बुलन्द शहर जिले में बहने के बाद ११६ मील पर गेसूपुर गांव के पास बुलन्द शहर जिले में आती है। दादरी, सिकन्दराबाद, बरन, खुरजा और पहासू परगनों को सींचने के बाद १५४वें मील पर यह बुलन्द शहर जिले को छोड़ देती है। बुलन्द शहर जिले में इस नहर की लम्बाई ३८ मील है। यहां इस नहर की अनेक उपशाखायें है। पुल कई बने हैं। यहीं नहर के पानी के जोर से आटा पीसने की पनचक्कियां चलती हैं।

गङ्गा नहर की अनूप शहर शाखा पूरे अनूप शहर परगने को सींचने के वाद अलीगढ़ जिले में प्रवेश करती है। इस पर कई पुल बने हैं। सखेना के पास इसमें पनचक्की चलती है।

माटशाखा ११०वें मील पर दबरा गांव के पास प्रधान गङ्गा-नहर से निकलती है। दुर्भिक्ष पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिये यह नहर १८३० ई० में खोली गई। ग्यारहवें मील पर ग्रांड्ट्रंक रोड के कोट गांव के पास यह दो शाखाओं में बंट जाती है। इस पर कई पुल बने हैं।

लोअर गङ्गा-नहर गङ्गा के दाहिने किनारे से नरोरा के गांव पास से १८७८ में निकाली गई। यह गङ्गा के ऊंचे किनारे के पास-पास वह कर अलीगढ़ जिले में जाती है। नरोरा और रामघाट के पास इस पर पुल वना है।

सारदा नहर सारदा और गङ्गा के बीच वाले द्वाबा को सींचती है। पीलीभीत से ४३ मील उत्तर-पूर्व की ओर वन वसा के पास सारदा नदी में बांध बनाया गया है। नदी के दाहिने किनारे से नहर निकलती है। ७ मील २ फर्लांग के बाद इस नहर की दो शाखायें हो जाती हैं। एक शाखा सारदा किच्छा फीडर (पोषक) नहर और दूसरी सारदा अवध

नहर कहलाती है। सारदा किच्छा पोषक नहर पश्चिम की ओर जाती है। तराई को पार करके यह नहर अपनी उपशाखाओं के साथ दक्षिण की ओर मुड़ती है। और रुहेलखंड में सिंचाई का काम देती है। सारदा अवध नहर दक्षिण की ओर चलती है। २३ मील ६ फर्लांग पर इससे पीलीभीत शाखा निकलती है। २७ मील ५ फर्लांग पर इसमें से हरदोई और खीरी शाखा नहरें निकलती हैं। यह तीनों नहरें पीलीभीत, शाहजहांपुर, हरदोई, खीरी, सुल्तानपुर लखनऊ, उन्नाव, राय बरेली और बाराबंकी जिलों की भूमि को सींचती हैं। यह नहर केवल सिंचाई की नहर है। इसमें नाव चलाने की सुविधा नहीं है। इसके बनाने में लगभग १० करोड़ रुपया खर्च हुआ। शाखाओं और उपशाखाओं को मिलाकर यह भारतवर्ष की सबसे लम्बी नहर है। यह १७,५०,००२ एकड़ भूमि को सींचती है। इससे गन्ना की खेती को बड़ा लाभ हुआ है।

नहरों के होते हुये भी उत्तर प्रदेश के अधिकतर भाग में कुएँ अधिक उपयोगी हैं। दक्षिणी भाग में कड़ी चट्टानों के कुएँ हैं इनमें प्रायः कम पानी रहता है। पूर्वी भाग, अवध और रुहेलखंड में पानी पास मिल जाता है। कुएँ अक्सर कच्चे होते हैं निचले भाग की मिट्टी को रोकने के लिये झाऊ अरहर आदि का घेरा पानी में बना दिया जाता है। बहुत से कुओं में कुछ नहीं रहता है। शहर के पास वाले कुयें पक्के होते हैं। इस भाग के अधिकतर कुओं में ढेंकली से पानी ऊपर खींचा जाता है। पश्चिमी भाग में पानी अधिक गहराई पर मिलता है। कुएँ प्रायः पक्के बनाये जाते हैं। बैलों की सहायता से मोट द्वारा पानी खींचा जाता है। कहीं कहीं बिजली की शक्ति से पम्प द्वारा पानी ऊपर निकाला जाता है।

बड़ी बड़ी नदियों का पानी प्रायः इतना नीचा रहता है। कि यह एकदम सीधे ऊपर के खेतों को सींचने के काम नहीं आ सकता। छोटी नदियों में बांध बना दिये जाते हैं। शीतकाल भर इनसे सिंचाई होती है। अवध और पूर्वी जिलों में चौड़े उथले ताल बहुत हैं। जब तक इनमें पानी रहता है तब तक इनसे सिंचाई होती है। बुन्देलखंड में तालाबों का पानी रोकने के लिये अक्सर इनके अनुकूल स्थानों पर बांध बना दिये गये हैं।

कृषि

हिमालय प्रदेश में खेती के योग्य भूमि बहुत कम है। खेती कुछ पहाड़ियों की चोटी और ढालों पर होती है। नदियों की घाटियों में भी छोटे छोटे खेत होते हैं। पहाड़ी ढालों के खेत जीनेदार होते हैं और बड़ी मेहनत से तैयार किये जाते हैं।

हिमालय की कांप (बारीक मिट्टी) गङ्गा और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाकर मैदान में बिछाई गई है। यह प्रायः यमुना और प्रयाग के संगम के आगे गंगा के उत्तर में मिलती है। अधिक आगे यह गंगा के दक्षिण में भी बिछी हुई है। दक्षिण-पठार की कांप यमुना और गंगा के दक्षिण में है। कहीं कहीं यह उत्तर में भी पहुँच गई है। गंगा की कांप में कहीं बालू कहीं चिकनी मिट्टी और कहीं दोनों का मिश्रण (दुमट) है। मैदान के धुर उत्तर-पूर्व में गोरखपुर के जिले में भाट मिट्टी मिलती है। इस मिट्टी में जल-ग्राही शक्ति, बहुत अधिक होती है। इसमें चूने की मात्रा अधिक होती है।

यमुना के दक्षिण में मैदान की जो मिट्टी है वह मध्य भारत से आई है। इस ओर समतल भूमि की मिट्टी कुछ काली है। जिसे माल कहते हैं। जब यह गीली होती है तब इसे जोतना कठिन हो जाता है। सूखने पर इसके भीतर अधिक समय तक नमी रहती है। नदियों की घाटी के पास वाली भूमि फटी फटी है। इसमें कुछ दूर तक माल से मिलती जुलती काली मिट्टी मिलती है। जिसे काबर कहते हैं। अधिक आगे उजाड़ खण्ड हैं। काली मिट्टी के आगे कुछ लाल (गेरुआ) मिट्टी है। इसकी तहें अधिक गहरी नहीं होती हैं। यह बलुआ पत्थर की चट्टानों के घिसने से बनती है। इसके कण मोटे होते हैं। यह अधिक उपजाऊ नहीं होती है। जहां सिंचाई

और खाद की सुविधा है वहाँ फसल उग जाती है। कहीं कहीं कई वर्ष तक यह खाली रहती है।

उत्तर प्रदेश के भिन्न भिन्न भागों में मिट्टी और जलवायु में भेद है। इसी से फसलें भी भिन्न हैं। धान को कड़ी चिकनी मिट्टी और प्रचुर जल की आवश्यकता होती है। इसी से यह उत्तरी पूर्वी भागों में वर्षा ऋतु में उगाया जाता है। दक्षिण-पश्चिम के खुश्क के भागों में इसकी खेती बहुत कम होती है। धान के साथ साथ कुछ लोग कोदों, मड़ुआ, सावां और मकई उगाते हैं। कुछ आगे चल कर वर्षा ऋतु में प्रान्त के प्रायः सभी भागों में ज्वार, बाजरा, उर्द, मूंग और मोठ बोते हैं।

इन फसलों के कटने के पहले और शीतकाल के आरम्भ होने से पहले रबी की फसल बोई जाती है। इसमें गेहूँ प्रधान है। गेहूँ को उपजाऊ मिट्टी और कुछ खुश्क जलवायु की आवश्यकता होती है। इसी के साथ कम उपजाऊ खेतों में चना, जौ, मटर, सरसों आदि बोते हैं। अरहर खरीफ की फसल के साथ बोई जाती है और रबी के साथ काटी जाती है।

गन्ने की फसल बसन्त ऋतु में होली के बाद बोई जाती है। इसको कटने में प्रायः एक वर्ष लग जाता है। इसके रस से गुड़ और शक्कर बनाते हैं।

कपास की फसल वर्षा के आरम्भ होने पर बोई जाती है और शीतकाल में अक्टूबर और दिसम्बर तक चुनी जाती है। इस कपास का रेशा बहुत छोटा होता है। इसी से यह सस्ती बिकती है।

सरकारी आज्ञा से कहीं कहीं पोस्ता या अफीम की खेती होती है। यह सब अफीम सरकारी फैक्टरी को नियत मूल्य में बेच दी जाती है।

कला कौशल

गंगा के विशाल उपजाऊ मैदान ने उत्तर प्रदेश को कृषि प्रधान प्रान्त बना दिया है। फिर भी यह प्राचीन समय से कला-कौशल के लिये विख्यात रहा है। पुराने समय में कलाकौशल को राजाओं से बड़ा प्रोत्साहन मिला। दूर दूर से चतुर कारीगर आकर उनकी राजधानियों में रहने लगे। पुराने राज्यों के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर भी उत्तर प्रदेश में कई स्थान अपनी पुरानी कारीगरी के लिये विख्यात हैं। फिर भी यह प्रान्त बड़े बड़े कारखानों की संख्या में पिछड़ा हुआ है। नये ढंग के कारखानों का विकास अधिकतर कानपुर में हुआ। कानपुर की स्थिति मैदान के प्रायः मध्य में, कच्चे माल को मंगाने और बने हुये सामान को दूर दूर भेजने के लिये बड़ी अच्छी है। इसी से यह उत्तरी भारत का लंकाशायर बन गया है। समस्त प्रान्त के $\frac{1}{6}$ कारखाने और मिल अकेले कानपुर में हैं। कानपुर में रजिस्टर्ड मिलों और कारखानों की संख्या ६४ है।

उत्तर प्रदेश में प्रायः ५ लाख एकड़ भूमि कपास उगाने के काम आती है। इसमें औसत से २ लाख टन कपास पैदा होती है। प्रति एकड़ भूमि में जितनी कपास उत्तर प्रदेश में पैदा होती है उतनी किसी दूसरे प्रान्त में पैदा नहीं होती है। लेकिन प्रान्त में जितनी रुई की खपत है उतनी पैदा नहीं होती है। लगभग १२ करोड़ पौंड सूत कातने और २४ करोड़ गज कपड़ा बुनने में उत्तर प्रदेश रुई के ४ लाख गट्ठे खर्च करता है। इसमें कुछ रुई यहाँ पैदा होती है कुछ पंजाब और दूसरे प्रान्तों से आती है। उत्तर प्रदेश की कपास छोटे रेशे की होती है। इसलिये बड़े रेशे की रुई प्रायः बाहर से ही आती है। कच्चा माल मंगाने की दृष्टि से कानपुर नगर की स्थिति बम्बई और अहमदाबाद से कहीं अधिक बुरी है। कलकत्ते से कुछ अच्छी अवश्य है।

उत्तर प्रदेश की मिलों में अधिकतर धोती, तम्बू बनाने का कपड़ा, शर्ट, ड्रिल, लंकलाट, जीन, छींट और दूसरे कपड़े बुने जाते हैं।

चीनी का कारबार इस प्रान्त में बहुत पुराने समय से होता आ रहा है। भारतवर्ष में जितनी ईख होती है उसकी ९० फीसदी उत्तर प्रदेश, बिहार बंगाल और पंजाब में होती है। इनमें उत्तर प्रदेश प्रथम है। उत्तर प्रदेश में प्रतिवर्ष प्रायः ३२ लाख टन चीनी पैदा होती है। पंजाब में साढ़े तीन लाख

टन और प्रायः इतनी ही बिहार में पैदा होती है। उत्तर प्रदेश के एक एकड़ में ४० मन से अधिक चीनी पैदा की जाती है। बिहार और पंजाब में इसकी प्रायः आधी होती है। १९३२ में विदेशी शक्कर के संघर्ष से देशी शक्कर की रक्षा की गई। इससे मिलों की संख्या और शक्कर की उपज बहुत बढ़ गई। १९३७ से भारतीय सरकार ने मिल की शक्कर पर चुंगी १।-) से बढ़ाकर २) प्रतिमन और खँडसारी शक्कर पर ।।=) से बढ़ा कर १) रु० मन कर दी। इससे चीनी के कारबार को बड़ा धक्का पहुँचा। कुछ समय तक शक्कर पर सरकारी कन्ट्रोल (नियन्त्रण) था। और सरकार की ओर से शक्कर का दाम नियत कर दिया गया।

चमड़े के बने हुये जूते जीन आदि सामान के अतिरिक्त कारखानों में भी चमड़े की बनी हुई चीजों का प्रयोग होता है। कानपुर में चमड़े के कई कारखानें हैं। एलन कूपर कम्पिनी में कई प्रकार का चमड़ा तैयार किया जाता है। क्रोम चमड़े में विशेष उन्नति हुई है। उत्तर प्रदेश से ६० लाख वर्ग फुट कमाया हुआ चमड़ा इंगलैंड को जाने लगा है। पहले सबका सब कच्चा चमड़ा जाता था। फौजी सिपाहियों के लिये जूता और दूसरा सामान बनाने के लिये भारतवर्ष में चमड़े का सबसे बड़ा कारखाना कानपुर में स्थित है। चमड़े के सभी प्रकार के कारबार के लिये कानपुर प्रथम है। जूते बनाने का काम आगरा में भी बहुत होता है। औसत से साढ़े तीन लाख जानवरों की खालें प्रतिदिन कमाई जाती हैं। इस कारबार में लगभग ५ हजार मजदूर काम करते हैं। और साल भर में ७५ लाख रुपये का सामान तैयार किया जाता है। कच्चे चमड़े के लिये कानपुर उत्तरी भारत में सबसे बड़ी मंडी है। यहां से प्रतिवर्ष बड़े जानवरों से ३ लाख मन चमड़ा और बकरी आदि की १ लाख मन खाल बाहर भेजी जाती है। १८,००० टन कमाया हुआ चमड़ा बाहर भेजा जाता है। उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत कलकत्ता और बिहार से चमड़ा कानपुर को आता है। चमड़ा कमाने के लिये बबूल की छाल और कुछ दूसरी छालों का प्रयोग होता है। क्रिपो और क्रोमियम आदि रसायनिक पदार्थ विदेशों से आते हैं। लम्बे बूट, जूते, जीन सूटकेस आदि कई प्रकार का सामान तैयार किया जाता है। यहां का बना हुआ चमड़े का सामान भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में जाता है।

शीशा—बालू और सोडा को मिलाकर शीशा बनाने का काम भारतवर्ष में बहुत पुराने समय में होता था। लेकिन बड़े बड़े कारखानों का निर्माण १९ वीं शताब्दी में आरम्भ हुआ। कुछ बड़े बड़े कारखाने बीसवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुये।

रसायनिक पदार्थों के कारखाने गाजियाबाद, आगरे और कानपुर में हैं। गंधक इटली और अमरीका से आती है। बाक्साइट अलवर और मध्य प्रदेश से आता है। नमक सांभर झील से आता है और शोरा पड़ोस में ही तैयार किया जाता है। इन कारखानों में सल्फयूरिक एसिड आदि चीजें तैयार की जाती हैं।

तेल और साबुन—उत्तर प्रदेश में २० लाख मन से अधिक तिलहन पैदा होता है। तेल पेरने का काम कई स्थानों में होता है। कानपुर के एक कारखाने में बाइल्ड आयल (तेल) तैयार होता है। बेगमाबाद में बिनौले का घी और मेरठ आदि कई स्थानों में साबुन तैयार किया जाता है। कन्नौज, गाजीपुर और जौनपुर में सुगंधित तेल बनता है।

कागज—प्राचीन समय में भोजपत्र (वृक्ष की छाल) पर ग्रन्थ लिखे जाते थे। कई स्थानों में सन से कागज बनाने का काम आरम्भ हुआ। लखनऊ में अपर इण्डिया कूपर मिल ने १८७९ से बैब घास से कागज बनाना आरम्भ किया। दूसरा कारखाना जगाधरी (सहारनपुर) में बना है। १९३८ में सहारनपुर में स्टार पेपर मिल की स्थापना हुई। कच्चा माल पंजाब और नैपाल से आता है। इसमें प्रतिवर्ष लगभग ४००० टन कागज तयार होता है। सहारनपुर में एक मिल धान के प्याल से बोर्ड तयार करती है। क्लटर बकरगंज में बाबिन, बरेली में टर्पेन्टाइन शिकोहाबाद में बिजली के बल्ब बनाये जाते हैं।

शराब बनाने का काम कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, सहारनपुर, फैजाबाद और फर्रुखाबाद में होता है। बरेली में एक कारखाना कथा [खैर] तैयार करता है।

शीशे का काम—उत्तर प्रदेश में लगभग १ करोड़ का शीशे का सामान तैयार किया जाता है। एक (बहजोई) कारखाने में शीशे के चपटे टुकड़े, छः कारखानों में बोतलें और ३१ कारखानों में चूड़ियां तैयार की जाती हैं। नैनी (इलाहाबाद) माखनपुर, हरगांव सास्नी, हाथरस, बालाबाली शीशेके कारखाने के प्रधान केन्द्र हैं। चूड़ियों का प्रधान केन्द्र फीरोजाबाद है। बोतल, शीशी, पानी के बर्तन, गोले चिमनी, तश्तरी, लोटा गिलास, बल्ब आदि सामान शीशे के कारखानों में तैयार किया जाता है। उत्तर प्रदेश का बना हुआ शीशे का सामान भारत के दूसरे प्रान्तों में पहुँचता है।

बड़े बड़े कारखानों के अतिरिक्त प्रान्त में कई प्रकार के घरेलू धंधे फैले हुये हैं। मेरठ, बुलन्द शहर, मुजफ्फर नगर, बिजनौर जिलों में जुलाहे सादा गाढ़ा और खद्दर बुनते हैं। चौतही (बिस्तरपर बिछाने वाला कपड़ा) और खेस देवबन्द (सहारनपुर) सिकन्दराराव (अलीगढ़) अमरोहा (मुरादाबाद) आदि स्थानों में बुना जाता है।

मालिन, जामदानी आदि बढ़िया कपड़ा सिकन्दराबाद (बुलन्द शहर) और टांडा (फैजाबाद) में बुना जाता है।

लहँगे का कपड़ा मऊऐमा रानीपुर और धामपुर में बुना जाता है।

रेशम और साटिन कपड़ा मुबारकपुर और मऊ में बुना जाता है। कामदार रेशमी कपड़ा बनारस में तैयार होता है। सादा रेशमी कपड़ा इटावा, शाहजहांपुर और हरदोई में बुना जाता है।

ऊनी कम्बल —मुजफ्फर नगर, मेरठ और नजीबाबाद में बनते हैं।

अलमोड़ा का थुलमा अच्छा होता है। दरी आगरा अलीगढ़, बरेली, मेरठ और सीतापुर में सस्ती और अच्छी बनती हैं। ऊनी कालीनों के लिये मिर्जापुर, शाहजहांपुर और आगरा प्रसिद्ध हैं। कपड़े की सुन्दर छपाई के लिये फर्रुखाबाद, लखनऊ पिलखुवा (मेरठ) जहांगीराबाद (बुलन्द शहर) प्रसिद्ध हैं।

चमड़े के घरेलू धन्धे में लगभग सवा लाख मोची लगे हुये हैं। इनमें ७५ हजार चमड़ा कमाते हैं। ५० हजार जूता आदि चमड़े का सामान बनाते हैं। आगरा, कानपुर, लखनऊ, सहारनपुर प्रधान केन्द्र हैं।

धातु के काम में तांबे और पीतल के बर्तन मुख्य हैं। पीतल और तांबे के बर्तन शामली [मुजफ्फर-नगर] बड़ौत [मेरठ], मुरादाबाद, फर्रुखाबाद, ओयल (खीरी] अलमोड़ा और हाथरस में बनते हैं। बढ़िया कामदार बर्तन मुरादाबाद और बनारस में बनते हैं। ताले सिटकनी अलीगढ़ में तयार होते हैं। कैंची मेरठ में अच्छी बनती है। चाकू-सरौते, हाथरस, शाहजहांपुर और कायमगंज [फर्रुखाबाद] में बनते हैं। लोहे की ढलाई का काम और हल, खुरपा आदि आगरा, बरेली, हरदोई और दनकौर [बुलन्द-शहर] में होता है। अलीगढ़ के ताले भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध हैं। धातु के कारबार का कच्चा माल लोहा, पीतल और तांबा बाहर से आता है। इस कारीगरी में १५०,००० मनुष्य लगे हैं।

लकड़ी का काम प्रायः प्रत्येक गांव में होता है। लड्डू, बैलगाड़ी, चारपाई हल आदि बनाने का काम बहुत स्थानों में होता है। मेरठ, अमरोहा, पीलीभीत, बरेली, आगरा इसके प्रधान केन्द्र हैं। मेज कुरसी टांगे बरेली में अच्छे बनते हैं। बढ़िया कारीगरी का काम सराहनपुर में होता है। नगीना में आबनूस (काली लकड़ी) का काम बड़ा सुन्दर होता है। लकड़ी के काम में भारत भर में लगभग २५०,००० बढ़ई लगे हुये हैं। बरेली में ८ लाख, सहारनपुरमें १ लाख और नगीना में तीस हजार रुपये का समान प्रति वर्ष तयार होता है। मिट्टी के बर्तन बनाने का काम बहुत पुराना है। घड़ा, हांडी आदि मिट्टी के बर्तन प्रायः सभी गांवों में बनते हैं। शहरों के होशियार कुम्हार सुराही, प्याले, खिलौने आदि बहुत सी चीजें बनाते हैं। लखनऊ, चुनार, अमरोहा और खुरजा में मिट्टी के बढ़िया चिकने बर्तन बनते हैं।

रस्सी और बान बटने का काम गांव वाले अधिकतर गांवों में करते हैं। पूर्वी जिलों में मल्लाह लोग बेचने के लिये भी बाध बटते हैं। बाध सन मूंज और बैत्र से बनाये जाते हैं। जौनपुर परतापगढ़ सुल्तानपुर, राय बरेली आदि जिलों में टाट पट्टी सब सन से बनाई जाती है। बाध बटने में लगभग

४,०६० और टाट पट्टी बनाने में १०,००० मनुष्य लगे हुये हैं।

मोढ़ा और टोकरी बनाने में लगभग ७२,००० मनुष्य लगे हैं। मोढ़ा सरकंडे से और टोकरी अरहर, भाऊ, बांस आदि से बनाई जाती है।

तम्बाकू पीने, खाने और सूंघने की बुरी आदत बहुत से लोगों में है। गांव के लोग हुक्का और चिलम से तम्बाकू पीते हैं। शहर के लोग प्रायः सिगरट या बीड़ी पीते हैं। सिगरट बनाने का एक कारखाना सहारनपुर में हैं। बीड़ी इलाहाबाद आदि कई शहरों में बनाई जाती है। खाने वाली तम्बाकू के प्रधान केन्द्र लखनऊ, बनारस और बरेली हैं। सूंघने वाली तम्बाकू (नास) बनारस में अधिक अच्छी होती है।

इत्र और सुगन्ध के लिये कन्नौज और लखनऊ प्रसिद्ध हैं। जौनपुर में चमेली और बेला का तेल अच्छा होता है। अलीगढ़ और एटा जिलों में बहुत से भागों में सुगन्धित फूल होते हैं। इन्हें कन्नौज और लखनऊ के गन्धी व्यापारी मोल ले आते हैं। उत्तर प्रदेश में ढाई लाख रुपये का सुगन्धित तेल और इत्र तैयार होता है।

रुहेलखण्ड के बहुत से स्थानों में ईख से राब, गुड़ और खन्ड सारी चीनी बनाते हैं।

प्रतिवर्ष हाथ से प्रायः दो ढाई लाख टन चीनी तैयार की जाती है।

सोने चांदी के जेवर बनाने का काम बहुत से नगरों में होता है। सोने चांदी के तार के कामके लिये बनारस प्रसिद्ध है।

इन्जीनियरिंग फाउन्टेन पेन (कलम) आदि नये ढङ्ग के कारबार अभी बहुत कम स्थानों में होते हैं।

कलाकौशल का उल्लेख प्रत्येक जिले के पाठ के साथ भी किया गया है। इसी से यहां संक्षेप में ही वर्णन किया गया है।

व्यापार

उत्तर प्रदेश के समस्त व्यापार के ठीक ठीक आंकड़े उपलब्ध नही हैं। जिन कारखानों में कच्चा माल आता है उनके अंक उपलब्ध हैं। कारखानों में जो माल तैयार होता है उसका पता भी ठीक ठीक चलता है। इनके अतिरिक्त प्रान्त में दूसरे प्रान्तों और बाहर से खाद्य पदार्थ और पक्का माल भी बाहर से आता है। बाहर जाने वाले खाद्य पदार्थों में गेहूँ, गेहूँ का आटा, चना, शक्कर, गुड़, ज्वार, बाजरा वनस्पति तेल, घी, चाय, चावल, धान, दाल आदि अन्न प्रधान हैं। बाहर से आने वाले खाद्य पदार्थों में धान चावल, सूखे फल, गेहूँ का आटा और नमक प्रधान है।

चावल अधिकतर बङ्गाल, बिहार और मध्य प्रदेशसे आता हैं। सूखे फल बिलोचिस्तान, सीमाप्रान्त और मैसूर राज्य से आते हैं। गेहूँ या गेहूँ का आटा पञ्जाब से आता है। सांभर नमक राजस्थान से आता है। विदेशी चाय दिल्ली या कलकत्ता के मार्ग से आता है। प्रतिवर्ष प्रायः ५८ लाख मन चावल ४ लाख मन सूखे फल, ६ लाख मन गेहूँ और आटा और ६६ लाख मन नमक उत्तर प्रदेश में बाहर से आता है।

उत्तर प्रदेश से गेहूँ और गेहूँ का आटा (२६ लाख मन) बङ्गाल और बिहार को जाता था। बङ्गाल से यह विदेशों को जाता था। ३३ लाख मन चना मद्रास बम्बई, कलकत्ता और बिहार को जाता है। ४० लाख मन ज्वार-बाजरा पञ्जाब और बम्बई को जाता है। ७० लाख मन दूसरे अन्न और दाल बङ्गाल और बिहार को भेजी जाती है। ७० लाख मन शक्कर ७३ लाख मन गुड़ उत्तर प्रदेश से पञ्जाब, राजस्थान मध्य प्रदेश और बङ्गाल को जाती है। १० लाख मन तेल और २ लाख मन घी प्रायः कलकत्ते को जाता है २० हजार मन चाय अधिकतर पञ्जाब को जाती है।

कारखानों के काम की कई चीजें बाहर से आती हैं। इनमें ६८ लाख मन कोयला और कोक बङ्गाल और बिहार से आता है। ३ लाख मन डोरा बाहरसे सवा लाख मन दूसरे प्रान्तों से आता है। ५ लाख मन जूट बङ्गाल और बिहार से आता है। मध्य

प्रदेश, मध्य भारत और बंगाल से सवा लाख मन जूट बंगाल और विहार से आता है मध्य प्रदेश, मध्य भारत और बंगाल से सवा लाख मन लाख आती है ४ लाख मन तम्बाकू विहार से आती है। १ लाख मन टीक और ५६ हजार मन ऊन कलकत्ते के मार्ग से विदेशों से आता है।

कारखानों के काम का जो कच्चा माल बाहर भेजा जाता है वह इस प्रकार है। ७ लाख मन सन, कलकत्ते को बाहर भेजने के लिये ६ लाख मन हड्डी, डेढ़ लाख मन डोरा विहार को ४ लाख मन खाल और चमड़ा बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के मार्ग से बाहर जाता है। २६ लाख मन लकड़ी पञ्जाब और राजस्थान को जाती है।

बने हुये पक्के माल में ४८ लाख मन सीमेन्ट मध्य प्रदेश (कटनी) और विहार (डालमिया नगर) से आता है। १३ लाख मन सूती कपड़ा अधिकतर बम्बई से आता है। ५ लाख मन बोरे और २६ लाख मन लोहे और फौलाद का सामान विहार और बंगाल से आता है। इसमें से कुछ माल पञ्जाव और दूसरे भागों में पहुँचता है। उत्तर प्रदेश का बना हुआ साढ़े तीन लाख मन सीसे का सामान पञ्जाब, दिल्ली दूसरे भागों को जाता है। ५१००० मन लाख कलकत्ते के मार्ग से विदेशों को जाती है। इनके अतिरिक्त जूते, पीतल के बर्तन, लकड़ी की बनी हुई चीजें और सूती कपड़े इस प्रान्त से दूसरे प्रान्तों को जाते हैं।

उत्तर प्रदेश में प्रति वर्ष लाखों रुपये की मशीनें और मशीनों के अंग (पुरजे) बाहर से आता है।

सीने का डोरा, वाटर प्रूफ (पानी न भिदने वाला कपड़ा) कम्बल, पाइप, तार, टाइप, तार, तार की जाली, कांटे दार तार टाइपराइटर, डुप्लीकेटर, छापने की स्याही सड़क बनाने का सामान, वैज्ञानिक यन्त्र, कागज, कलम और दूसरा बहुत सा सामान बाहरसे आता है।

शिक्षा

१७९१ ईस्वी में हिन्दू धर्म शास्त्र और हिन्दू सभ्यता का अध्ययन करने के लिये काशी में कालेज खोला गया। इसका प्रधान उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी न्यायाधीशों को हिन्दू न्याय के सम्बन्ध में सम्मति देने वाले मिला सकें। १८२३ ईस्वी में पंडित गंगाधर ने एक बड़ा कोष आगरा कालेज चलाने के लिये छोड़ा। १८२३ और १८२७ के बीच में पूर्वीय ज्ञान के प्रचार के लिये ८ स्कूल खोले गये। आगे चल कर लार्ड मेकाले ने पूर्वीय ज्ञान की बड़ी निन्दा की और अंग्रेजी विद्या की बड़ी प्रशंसा की। फल यह हुआ विलियम बेंटिक के आदेशानुसार १८३६ ईस्वी में उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी विद्या का श्री गणेश हुआ।

१८४८ में प्रान्त की शिक्षा का नियन्त्रण स्थानीय सरकार के हाथ में आ गया। पाठ्य पुस्तकें तैयार की गई। शिक्षा का माध्यम देशी भाषाओं द्वारा आरम्भ हुआ। देशी स्कूलों को सहायता दी गई। १८४६ में एक योजना तयार की गई। इसके अनुसार बरेली, शाहजहाँपुर, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, फर्रुखाबाद और इटावा के आठ जिलों की प्रत्येक तहसील के केन्द्र स्थान में एक आदर्श स्कूल खोलने का निश्चय हुआ। प्रत्येक जिले के लिये एक दर्शक (विजिटर) दो या तीन परगना विजिटर और एक प्रधान विजिटर या विजिटर जनरल नियुक्त किया गया। १८५१ में मथुरा के कलक्टर मिस्टर एलेग्जेंडर ने एक योजना तैयार की जिसके अनुसार प्राइमरी स्कूल स्थापित किये गये। इनका खर्च चौथरानी ढंग से जमीदार लोग देते थे। शीघ्र ही दूसरे जिलों ने इस प्रथा का अनुकरण किया और बहुत से जिलों में प्राइमरी स्कूल खुल गये। इसी समय सार्वजनिक शिक्षा विभाग का निर्माण हुआ। इस समय सरकार की ओर से दो कालेज और एक हाई स्कूल था। अंग्रेजी शिक्षा अधिकतर मिशनरियों के हाथ में थी। इनके तीन कालेज और दस स्कूल थे। १८६७ ईस्वी में जिला स्कूल स्थापित किये गये। अवध में प्राइवेट स्कूल आरम्भ किये गये। यह चन्दे से खोले गये थे। लेकिन इनको सरकारी सहायता मिलती थी। तहसीली स्कूल १८६१ से १८६५ के बीच में खोले

गये। १८६४ में अवध का शिक्षा विभाग खुला। १८७० में इस प्रान्त के कालेज कलकत्ता विश्व विद्यालय से सम्बद्ध कर दिये गये। इस प्रकार यहां विश्वविद्यालय की शिक्षा का आरम्भ हुआ।

१८७२ ईस्वी में इलाहाबाद में म्यूर सेण्ट्रल कालेज स्थापित हुआ। यह उन्नत और उच्च शिक्षा का केन्द्र बना। इसी वर्ष अलीगढ़ में एंग्लो मुहम्मडन कालेज स्थापित करने पर विचार किया गया। १८७७ ई० में यह सिद्धान्त मान लिया गया कि स्थानीय स्कूलों पर स्थानीय समितियों या बोर्डों का कुछ नियन्त्रण हो।

१८८२ में कमीशन ने इस बात पर जोर दिया कि प्राइवेट स्कूलों को सहायता दी जावे। डिस्ट्रिक्ट और म्यूनिसिपल बोर्डों का प्राइमरी और सेकंडरी स्कूलों पर नियन्त्रण हो गया। स्कूलों का निरीक्षण करने वाले अफसर बहुत वर्षों तक इन बोर्डों के अधीन रहे।

१८८७ ईस्वी में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्थापित की गई। प्राइमरी स्कूलों को पैसे की बड़ी कमी थी। इन स्कूलों की संख्या १०,००० से कम थी। इनमें पांच लाख से भी कम विद्यार्थी थे। १९१२ ईस्वी तक केवल १६ लाख रुपये के अन्दर इन पर खर्च होता था। १९०७ ईस्वी में एक कमिटी सेकंडरी (माध्यमिक शिक्षा) पर विचार करने के लिये बुलाई गई। जिला हाई स्कूल इस समय तक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अधीन थे। इस से प्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी पड़ती थी। एक हाई स्कूल से दूसरे हाई स्कूल को अध्यापकों के बदलने में सब से बड़ी कठिनाई थी। अतः हाई स्कूलों का प्रबन्ध प्रान्तीय विभाग बना दिया गया। अध्यापकों के वेतन में भी कुछ वृद्धि हुई। स्कूलों के साथ होस्टल बना दिये गये और इन्स्पेक्टरों की संख्या बढ़ा दी गई। अन्त में स्कूल लीविंग सर्टीफिकेट परीक्षा आरम्भ कर दी गई। लड़कियों की शिक्षा की ओर भी ध्यान दिया गया। लखनऊ में लड़कियों के लिये नार्मल स्कूल खोला गया। इलाहाबाद में एक चीफ इन्स्पेक्टर आफ गर्ल्स स्कूल्स की नियुक्ति हुई। लड़कियों के लिये कुछ ट्रेनिंग क्लास भी खोले गये। मुसलमानों में शिक्षा फैलाने का विशेष ध्यान दिया गया।

जहाँ कहीं इनकी संख्या २० तक थी वहाँ डिस्ट्रिक्टबोर्ड इनके लिये स्कूल खोलने के लिये बाध्य था। मुसलमानी स्कूलों में एक विशेष इन्स्पेक्टर और एक डिप्टी इन्स्पेक्टर नियुक्त किया गया। एक प्रान्तीय मकतब कमेटी और जिला मकतब कमेटियां बनीं। मकतबों के लिये विशेष पाठ्यक्रम बनाया गया।

प्राइमरी और हाई स्कूलों की संख्या भी कुछ बढ़ी। इण्टरमीजियेट क्लास विश्व विद्यालय से अलग कर दिये गये। इनको और हाई स्कूल की परीक्षा का प्रबन्ध भी नव निर्मित हाई स्कूल और इण्टर मीजियेट बोर्ड को सौंप दिया गया। १९१६ में बनारस में हिन्दू विश्व विद्यालय और १९२० में अलीगढ़ में मुस्लिम यूनीवर्सिटी स्थापित हुई। आगे चलकर आगरा यूनिवर्सिटी और लखनऊ यूनिवर्सिटी प्रथक बनीं। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्थानीय होस्टलों में रहने वाले विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा देने और उनकी परीक्षा लेने का कार्य करने लगी। बाहर के डिग्री कालेज इसके क्षेत्र से अलग हो गये। जब कांग्रेस मन्त्रिमंडल बना तब बेसिक (बुनियादी) शिक्षा की ओर विशेष जोर दिया गया। एक बेसिक ट्रेनिंग कालेज प्रयाग में खुला। कई बेसिक ट्रेनिंग केन्द्र अन्य शहरों (लखनऊ और बनारस) में खोले गये। बेसिक स्कूलों की संख्या बढ़ने लगी। पुस्तकालयों और वाचनालयों आदि द्वारा शिक्षा का विशेष प्रसार करने के लिये एक योग्य शिक्षा-प्रसार अफसर नियुक्त किया गया।

इतिहास

उत्तर प्रदेश का इतिहास वास्तव में भारतवर्ष का इतिहास है। जो ऐतिहासिक घटनायें इस प्रान्त में घटीं उनका प्रभाव सारे भारत वर्ष पर पड़ा। मथुरा, बिजनौर, कानपुर और उन्नाव में पाषाण काल के कुछ पत्थर के औजार और चित्र मिले हैं। वैदिक काल में अयोध्या कोई साधारण नगर न था। श्री रामचन्द्र जी ने जिस अयोध्या में जन्म लिया था उसका प्रभाव भारत के सुदूर प्रान्तों पर पड़ रहा था। चित्रकूट, प्रयाग आदि रामायण कालीन घटना स्थल अधिकतर इसी प्रांत में हैं। कौरवों और पांडवों के बीच जो में महाभारत हुआ उससे सम्बन्ध रखने वाले हस्तिनापुर, पांचाल आदि अधिकतर स्थान इसी प्रान्त में हैं।

ईसा से ५७० वर्ष पूर्व महात्मा गौतम बुद्ध के जीवनसे इस प्रान्त का लिखित इतिहास आरम्भ होता है। चौथी सदी ईस्वी तक बौद्धमत का जोर रहा। आगे चलकर यह प्रान्त चन्द्र गुप्त मौर्य के साम्राज्य में शामिल हो गया। सम्राट अशोक के शिला लेख या स्तम्भ लेख इलाहाबाद, सारनाथ (बनारस के पास) और कलसी (देहरादून) में मिले हैं। पुराणों के अनुसार ईस से १७८ वर्ष पूर्व मौर्यवंश का अन्त हो गया।

आगे चल कर इस प्रान्त में चार राज्य हो गये। उत्तर-पाँचाल वर्तमान रुहेलखंड) सौर-सेन (मथुरा) कौशल [अयोध्या] और कौशाम्बी या इलाहाबाद का राज्य था। सिक्कों से पता चलता है कि मथुरा और अयोध्या में हिन्दू राज्य उत्तर पांचाल था। अयोध्या और कौशाम्बी में बौद्ध राज्य था।

ईसा से १५० वर्ष पूर्व शक लोग भारत वर्ष में मथुरा के पड़ोस तक फैल गये। इन्हें कु. न वंश के लोगों ने भगाया था। कुशान वंश के प्र... राजा कनिष्क और हुविष्क के सिक्के मथुरा के पास ... गये हैं।

१५० वर्ष तक रहा। इस बीच में संस्कृत भाषा और हिन्दू संस्कृति की बड़ी उन्नति हुई। चीनी यात्री फाहियान ने मुक्तकंठ से इस राज्य की प्रशंसा की है।

श्वेत हूणों के आक्रमण से गुप्त साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया।

कुछ समय तक गड़बड़ी रही। देश छोटे छोटे टुकड़ों में बट गया। अंत में थानेश्वर के राजा हर्ष वर्द्धन ने अपना साम्राज्य शक्तिशाली कर लिया। गङ्गा और राम गङ्गा के सङ्गम के पास कन्नौज नगर में उसने राजधानी बनाई। हर्ष वर्द्धन के समय में सब कहीं सुख और शान्ति फैली। वह एक प्रकार का सन्यासी राजा था।

पांच वर्ष में जो कुछ धन इकट्ठा हो जाता था उसे वह प्रयाग जाकर दान पुण्य में बाँट देता था। पर हर्षवर्द्धन का साम्राज्य अधिक समय तक न रहा।

नवीं सदी में कन्नौज में रघुवंशी राजा और बुन्देलखंड में चौहान और पञ्जाब में तोमर राजपूत राज्य करते थे। ग्यारहवीं सदी के अन्तमें मुसलमानों का आक्रमण आरम्भ हुआ। १ .१० ई. में मुहम्मद ने बुलन्दशहर, मथुरा और कन्नौज को जीत लिया। इसी बीच में दिल्ली के चौहानों का राज्य बुन्देलखंड तक फैल गया ११९२ में मुहम्मद गोरी ने पृथिवी राज के राज्यको नष्ट कर दिया। अपने गुलाम सेना पति कुतुबुद्दीन की सहायता से गोरी ने दिल्ली, कालिंजर, महोबा और कोयल पर अधिकार कर लिया। ११९४ ईस्वी में कन्नौज के राजा जयचन्द के हार जाने से एक बड़े हिन्दू राज्य का अन्त हो गया। दक्षिणी अवध के भर राजा १२४७ ई० में नष्ट कर दिये गये। गुलाम वंश के राजाओं ने मुसलमानी राज्य को कुछ अवश्य बढ़ाया। लेकिन खिल्जी वंश के शासन में यह बहुत फैल गया।

राजा बहलोल लोदी ने इन पर चढ़ाई की और इन्हें नष्ट कर दिया।

१३९८ में तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण किया। इस आक्रमण का कोई स्थायी फल न हुआ। १५२६ में बाबर ने चढ़ाई की। और पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी को हराकर मुगल राज्य की नींव डाली। उसने पूर्व में अफगानों और फतेहपुर सीकरी के पास राज पूतों को हराया। लेकिन उसका बेटा हुमायूँ अपना राज्य न जमा सका। शेरशाह ने उसे कन्नौज के पास हराया और देश से बाहर भगा दिया। १५-५५ में ईरान से नई सेना लेकर हुमायूँ फिर लौटा और उसने दिल्ली और आगरे को फिर से जीत लिया १५५६ ईस्वी में वह मर गया। मुगल राज्य का जमाने और बढाने का श्रेय उसके बेटे अकबर को है। अकबर ने जजिया और दूसरे टैक्स हटा दिये। उसने हिन्दुओं से बड़ा अच्छा व्यवहार किया। उसने आगरे और इलाहाबाद में किले बनवाये और फतेहपुर सीकरी में नया शहर बसाया। १६०५ में वह मर गया। उसके बेटे जहांगीर ने १६२७ ईस्वी तक राज्य किया। इसी समय डच और अङ्गरेज हिन्दुस्तान में व्यापार करने के लिये आये।।१६२७ इस्वी में शाह जहां गद्दी पर बैठा। उसने आगरे में ताजमहल बनवाया। १६५७ ईस्वी में उसके लड़कों ने विद्रोह मचाया और औरंजेब ने उसे कैद कर लिया। १६५८ में औरंजेब बादशाह हुआ। उसने हिन्दुओं को साथ बुरा बर्ताव किया। मथुरा और काशी के पवित्र मन्दिरों को तुड़वाकर उनके स्थान पर उसने मस्जिदें बनवाई। जजिया टैक्स फिर से लगाया गया। १७०७ में औरंगजेब के मरने पर मुगल राज्य छिन्न भिन्न होने लगा। जाट, सिक्ख और मराठे अपना अपना राज्य स्थापित करने लगे। १७-२९ में मरहठोंने बुन्देल खंड जीत लिया। १७३८ ई०. में नादिरशाह ने हमला किया और दिल्ली को लूटा इससे मुगलों की शान और भी मिट्टी में मिल गई मुगलों के पुराने सूबेदार स्वाधीन होकर अलग अलग राज्य बनाने लगे। १७२१ में अवध का राज्य स्वाधीन हो गया। एक बङ्गश पठान ने फर्रुखाबाद में नवाबी राज्य स्थापित किया। १७४० में रुहेलों ने रुहेलखंड में अपना राज्य बना लिया। १७५७ में आलमगीर द्वितीय नाम मात्र को दिल्ली का बादशाह था। वह अपने वजीर के हाथ में कठपुतली के समान था। नजीब खाँ नामी एक पठान मेरठ और बरेली पर अपना अधिकार जमाये था। द्वाबा के मध्यवर्ती भाग पर फर्रुखाबाद के नवाब का अधिकार था। बुन्देलखंड मरहठों के हाथ में था शेष भाग पर अवध के नवाब का राज्य था। राजपूत और जाट मरहठों से मिल गये थे।

१७६० में अहमदशाह दुर्रानी ने हमला किया। रुहेलों और अवध के नवाब की सहायता से पानी पत के मैदान में १७६१ में उसकी जीत हुई। शाह आलम द्वितीय दिल्ली का दूसरा नाममात्र का सम्राट था। १७६१ में बिहार प्रान्त में वह अंग्रेजों के सम्पर्क में आया। उसने बङ्गाल की दीवानी एक वार्षिक रकम के बदले में अङ्गरेजो को दे दी। इलाहाबाद, फतेपुर और कानपुर के जिले जो उस समय इलाहाबाद, और कड़ा के नाम से प्रसिद्ध थे, शाह आलम को मिल गये। उसे २६ लाख रुपये की वार्षिक पेन्शन भी दी गई सुजाउद्दौला ने ५० लाख रुपये अङ्गरेजोंको दिये। यह बक्सर की लड़ाई का परिणाम था। दूसरी लड़ाई जाजमऊ (कानपुर) के पास हुई थी। इसमें मरहठों की भी एक फौज शामिल थी।

इसी समय प्रान्त के उत्तरी भाग में सिक्खों के हमले हो रहे थे। जाटों ने आगरे पर अधिकार कर लिया। मरहठे दिल्ली में आ डटे। मरहठे रुहेल खंड पर भी छापा मार रहे थे। शाहआलम ने इलाहाबाद मरहठों के लिये दिया था। इससे नाराज होकर ईस्ट इण्डियन कम्पनी ने इलाहाबाद शाहआलम से छीन कर अवध के नवाब को दे दिया। अवध की उत्तरी सीमा की रक्षा करने के लिये कम्पनी ने एक फौज वहां भेज दी। फतेगढ़ छावनी का आरम्भ इसी समय (१७७३) से होता है। १७७५ ईस्वी में बनारस कमिश्नरी का अधिकतर भाग अवध के नवाब आसफुद्दौला से ब्रिटेन कम्पनी ने ले लिया। इस भाग का शासन बनारस के राजा चेतसिंह के हाथ में था। १७८० ईस्वी में चेतसिंह ने जब हेस्टिङ्गस का मनमाना जुर्माना अदा करने से इनकार कर दिया तब चेतसिंह को यहां से भागना पड़ा और ईस्ट

इन्डिया कम्पिनी ने इस समस्त प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया।

मरहठों की शक्ति फिर बढ़ गई थी उन्होंने मथुरा, आगरा, दिल्ली और उत्तरी द्वाबा पर अपना अधिकार कर लिया था। फर्रुखाबाद का नवाब अवध के अधीन था। जब से नवाब ने इलाहाबाद का किला अंग्रेजों को दे दिया और वार्षिक कर देना आरम्भ कर दिया तब से अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ गया।

इसके बाद अंग्रेजी राज्य इस प्रान्त में तेजी के साथ बढ़ा। १८०१ ईस्वी में अवध के नवाब ने बाहरी आक्रमण से रक्षा के बदले में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को गोरखपुर, रुहेलखंड की कमश्नरियां और इलाहाबाद, फतेहपुर, कानपुर, इटावा, मैनपुरी, एटा, दक्षिणी मिर्जापुर और नैनीताल की तराई भेंट कर दी। १८०२ में फर्रुखाबाद के नवाब ने कम्पनी को अधिकार दे दिये। १८०३ में मरहटों के विरुद्ध लार्ड लेक को जो सफलता मिली उसके फलस्वरूप मेरठ और आगरा की कमिश्नरियां, और बांदा, हमीरपुर जिलों के अधिकतर भाग और जालौन जिले का कुछ भाग मिल गया। १८१६ में नैपाल की गोरखा की लड़ाई के बाद ईस्टइण्डिया कम्पनी को कमायूं और देहरादून के जिले मिल गये। १८१७ में झांसी और अधिकांश जालौन को छोड़ कर प्रायः समस्त बुन्देलखंड पेशवा कम्पिनी को मिल गया। १८३८ में आगरा प्रान्त बंगाल से अलग कर दिया गया। १८१८ में सागर और नर्मदा के जिले भी इसी प्रान्त में मिला दिये गये थे। १८४० और ५३ के बीच में झांसी, हमीरपुर और शेष जालौन भी कम्पनी ने ले लिया। १८५६ ई० में अवध का राज्य मिला लिया गया गदर के बाद नैपालियों को सहायता के बदले अवध की तराई दे दी गई। रामपुर के नवाब को बरेली और मुरादाबाद के कुछ गांव मिल गये। बुन्देलखंड में पहले झांसी का किला और कुछ गांव सिन्धिया महाराज को दे दिये गये और बदले में झांसी और कुछ गांव कम्पनी के राज्य में मिल गये। सागर और नर्मदा जिले मध्यप्रान्त में मिल गये। दिल्ली जिला पंजाब में मिला दिया गया १६११ ईस्वी में चकिया और कोंढ के परगने मिर्जापुर जिलों से अलग कर बनारस राज्य में शामिल कर दिये गये। १६१६ में इसी राज्य को रामनगर का किला और कुछ गांव भी दे दिये गये।

१८५७ के विद्रोह ने इस प्रान्त में भीषण रूप धारण कर लिया था। दिल्ली, बांदा, बरेली कानपुर और झांसी इसके प्रधान केन्द्र थे। एक समय आगरा इलाहाबाद के किलों और लखनऊ रेजीडेन्सी को छोड़कर प्रान्त में कहीं अंग्रेजी राज्य शेष नहीं रह गया था। लेकिन गदर में संगठन का अभाव था कुछ बदमाश स्वार्थ के लिये भी लूट मार मचा रहे थे अराजकता में लोगों को बड़ा कष्ट हो रहा था। इस लिये सिक्खों, गुरखों और राजभक्तों की सहायता से इस प्रान्त में फिर से अंग्रेजी, राज्य स्थापित करने में अंग्रेजों को कोई बड़ी कठिनाई न हुई।

गदर के अन्त में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का तो अन्त हो गया। लेकिन अंग्रेजी राज्य ज्यों का त्यों बना रहा।

पहले यह प्रान्त उत्तरी पश्चिमी प्रान्त कहलाता था। १६०२ से यह आगरा और अवध कहलाने लगा। आज कल इसे उत्तर प्रदेश कहते हैं।

बाजार और मेले

उत्तर प्रदेश का अधिकतर व्यापार बाजारों और मेलों द्वारा होता है। मेले बहुत पुराने समय से होते आ रहे हैं। केवल कुछ मेले नये हैं। बाजार कुछ हाल में लगने लगे हैं। प्रान्त में ५ हजार से ऊपर हाट पैंठ और बाजार लगते हैं। बाजार प्रायः दोपहर के बाद २ से बजे ६ बजे शाम तक लगता है। बाजार केन्द्रवर्ती स्थान में लगता है। पैंठ का क्षेत्रफल औसत से १० वर्ग मील और हाट का क्षेत्रफल ५० वर्ग-मील होता है। हाट में कुछ अधिक दूर के गांववाले अपना सामान बेचने और दूसरा सामान मोल लेने के लिये आते हैं। कुछ (लगभग एक तिहाई) स्थानों में बाजार सप्ताह में एक बार लगता है। शेष दो तिहाई बाजार सप्ताह में दो बार लगा करते हैं। कुछ बाजार डिस्ट्रिक्टबोर्ड और कुछ बाजार म्यूनिसिपिल बोर्ड की देख भाल में लगते हैं। अधिकतर बाजार जमींदारों के द्वारा लगवाये गये हैं।

देवबन्द, जानसठ (मुजफ्फर नगर) गाजियाबाद अनूप शहर, मुर्सान (अलीगढ़) कोसीकलां (मथुरा) शमशाबाद (आगरा) कासगंज, शिकोहाबाद ललितपुर, औरैया, कायमगंज, खागा (फतेहपुर) हँडिया देवरिया, सुल्तानपुर (नैनीताल) बवेरी (बरेली ठाकुरद्वारा) (मुरादाबाद) नगीना, गन्नौर (बदायूं) तिलहर, (शाहजहांपुर), पूरनपुर (पीलीभीत), संडीला (हरदोई) बिस्वां (सीतापुर), लखीमपुर खीरी, टांडा (फैजाबाद) ताराहगंज (गोंडा), नानपारा (बहराइच), नवाबगंज (बाराबंकी) कुन्डा (परतापगढ़) प्रान्त के बड़े बड़े और प्रसिद्ध बाजार हैं।

कुछ बाजार खास खास चीजों के लिये प्रसिद्ध हैं। देहरादून आलू, सहारनपुर अंडा दूध, कपास, फल, तम्बाकू, मुजफ्फर नगर कपास, पशु, अनाज, मेरठ, तम्बाकू, कपास, अनाज, हापुड़ अनाज, बा? चमड़ा, पशु, अनाज, खुर्जा तम्बाकू, घी, कपास, आगरा चमड़ा, जूता, कपास, घी, आटा, मथुरा, और कोसीकलां पशु और कपास, कासगंज, पेल्ट कपास, तम्बाकू, घी अनाज, शिकोहाबाद तम्बाकू घी कपास अलीगढ़ घी, पशु कपास, तम्बाकू, दूध हाथरस घी, कपास, कन्नौज तम्बाकू आलू, कपास, छिबरामऊ तम्बाकू, कायमगंज तम्बाकू आलू इटावा तम्बाकू घी कपास, औरैया कपास अनाज, ऊन, घी, कानपुर तम्बाकू, चमड़ा, कपास, मूंगफली, फतेहपुर अनाज पान, इलाहाबाद तम्बाकू, अमरूद, अल्सी, चमड़ा, घी, फल, नजीबाबाद फल, अंडा, नगीना अनाज, धामपुर अनाज कपास, बदायूं कपास, बिसौली अनाज तम्बाकू मुरादाबाद तम्बाकू, फल, अंडा, अनाज, घी चंदौसी कपास, अनाज, शाहजहांपुर अनाज, घी, पीलीभीत अनाज तम्बाकू, पूरनपुर अनाज, बनारस अनाज फल, तम्बाकू, मिर्जापुर ऊन, ऊनी कालीन गाजीपुर अल्सी, बलिया अल्सी, अनाज लखनऊ, मलीहाबाद, मोहनलाल गंज, काकोरी फल, उन्नाव फल अनाज, तम्बाकू, रायबरेली फल, तम्बाकू, सीतापुर फल अनाज, सिधौली तम्बाकू अनाज, हरदोई अनाज संडीला—अनाज तम्बाकू, खीरी अनाज, भूड़ (खीरी) पशु फैजाबाद अनाज, गोंडा अतरैली, और तुरावगंज (गोंडा) अल्सी बहरायच अनाज, अल्सी, तम्बाकू कैसरगंज (बहरायच) और नानपारा (बहरायच) अल्सी, तम्बाकू, अनाज, सुल्तानपुर अल्सी, तम्बाकू, कुन्डा (परतापगढ़) अनाज, नवाबगंज (बाराबंकी) अनाज, अल्सी गोरखपुर पड़रौना महराजगंज, दावानगर अल्सी अनाज बस्ती अनाज, अल्सी, बांसी अनाज अल्सी, आजमगढ़ अनाज अल्सी, ललितपुर (झांसी) कपास घी, अल्सी, ऊन कालपी (जालौन) घी, मूंगफली ऊन, जालौन अल्सी मूंगफली, राठ, हमीरपुर अल्सी अनाज, महोबा (हमीरपुर अल्सी, मऊ (बांदा) अल्सी, कपास मूंगफली भौसाली (नैनीताल) और नैनीताल फल, रामनगर नैनीताल फल, मिर्चा हल्दी, हलद्वानी आलू, फल, ऊन टनकपुर (नैनीताल) फल, घी, आलू मिर्च ऊन की मंडी है। रानीखेत (अल्मोड़ा) हल्दी, फल लोहाघाट (अल्मोड़ा) फल और दोगड्डा (अल्मोड़ा लाल मिर्च की प्रसिद्ध मंडी है।

उत्तर प्रदेश के अधिकतर मेलों की उत्पत्ति

धार्मिक कारणों से हुई है। आगे चल कर वहां व्यापार का सामान भी बिकने लगा।

कुछ मेले पशुओं की बिक्री के लिये प्रसिद्ध हैं। समस्त मेलों (जिनमें छोटे मेले भी शामिल हैं) की संख्या ३३३० है।

प्रधान मेले निम्न हैं:—

उत्तर प्रदेश के मेले

अयोध्या—अवध के फैजाबाद जिले में एक बड़ा पुराना शहर है। यह शहर घाघरा नदी के किनारे पर जिसको पहिले सरयू कहते थे बसा है। पुराना शहर नष्ट हो गया है किन्तु खण्डहर है जिससे अब भी वहां की नक्काशी तथा कारीगरी को देख कर चित्त चकित होता है। कहते हैं कि पहिले जमाने में अयोध्या बड़ा भारी शहर था। इसका घेरा १२ योजन यानी ९६ मील था। यहां रामनौमी का मेला हर साल लगता है जिसमें लगभग ५ लाख मनुष्य इकट्ठे होते हैं। इस मेले में हर प्रकार की वस्तुएँ तथा पहाड़ी लकड़ियां जो हिमालय की तलहटी से आती हैं पाई जाती है।

अनूप शहर—यह बुलन्द शहर में एक कसबा है देहली से ७५ मील और गङ्गा जी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। यात्री गङ्गा स्नान के लिये वहां जाते हैं। और कार्तिक (नवम्बर-दिसम्बर) के महीने में बहुत दूर दूर से पचास हजार के लगभग गङ्गा स्नान के लिये जमा हो जाते हैं।

इलाहाबाद या प्रयाग—यह यमुना नदी और गङ्गा नदी के संगम पर बसा है यह जी० आई० पी० और ई० आई० रेलवे का जंकशन है। संगम के पास किला बना हुआ है। उसके भीतर भी हिन्दुओं की मूर्तियां हैं। यहां बहुत सी वाटिकायें हैं। यहां कुम्भ मेला बड़े जोरों के साथ लगता है। जहां कई लाख लोग इकट्ठे होते हैं। हर साल अमावस्या को तथा स्नान के पर्व में मेला लगता है।

काकोरा—यह बदायूं जिले में तथा बदायूं तहसील के निकट है और गङ्गा जी के किनारे बदायूं से लगभग १२ मील की दूरी पर बसा है। कार्तिक के महीने में यहां बड़ा भारी मेला होता है। इस मेले में दिल्ली, कानपुर, फर्रुखाबाद और रुहेल खण्ड से वस्तुयें बिकने के लिये तथा लोग गङ्गा स्नान के लिये आते हैं।

काशीपुर—जिला नैनीताल में एक नगर है यहां कुम्भ बारहवें वर्ष, अर्द्ध-कुम्भ हर छठे वर्ष होता है। साधारण कुम्भ मेला प्रति वर्ष लगता है। नैनीताल का सबसे बड़ा मेला मार्च के अन्त में काशीपुर के ३ मील के फासले पर बलसुन्दरी देवी का होता है और १५ दिन तक रहता है। लगभग यहां सत्तर हजार मनुष्य इकट्ठे होते हैं और पशुओं, गाड़ियां, किसानों के औजार तथा और भी अनेक पहाड़ी वस्तुयें बिक्री के लिये आती हैं। काशीपुर में एक किला भी है जिसमें चारों ओर तालाब हैं जिनमें सबसे बड़ा तथा दर्शनीय द्रोणसागर है। कहते हैं कि इसे पांडवों ने अपने गुरु द्रोणाचार्य के लिये बनाया था।

केदारनाथ—यह प्रसिद्ध तीर्थ स्थान गढ़वाल रियासत में है यह हिमालय पर्वत की एक बर्फ की चोटी के ढाल पर जो (लगभग तेइस हजार फुट की ऊँचाई पर) मन्दिर है। केदारनाथ के पास चार मन्दिर और हैं। जो सब मिल कर पांच केदार कहलाते हैं। इन सब के यात्री दर्शन करते हैं। केदारनाथ मन्दिर में शिव जी की मूर्ति है। यहां धर्मशालायें भी हैं। शीतकाल को छोड़ कर शेष ऋतुओं में यात्री यहां आते हैं। यहां सदैव मेला लगता है।

कर्णवास—यह तीर्थ स्थान बुलंदशहर में अनूप शहर से ८ मील के फासले पर है। यहां एक बड़ा मेला लगता है। जो तीन दिन रहता है। इसमें हजारों आदमी गङ्गा जी के स्नान करने को आते हैं। हर सोमवार को औरतें मन्दिर में पूजा के लिये आती हैं।

कम्पिल—यह नगर फर्रुखाबाद प्रांत में कायमगंज तहसील में गंगा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। यह नगर पाडुवों की धर्म पत्नी द्रोपदी के बाप की राजधानी थी। कहते हैं कि पुराना नगर कम्पिला ऋषि एक वनवासी ने बसाया था। यहां साल में दो मेले लगते हैं। आस पास के व्यापारी आते हैं। यहाँ जैनी मन्दिर भी हैं। यहां चाकू सरौते, बनते हैं तथा बिकते भी हैं।

कर्णप्रयाग—यह गढ़वाल में एक गांव है और पिंडर और अलकनन्दा के संगम पर स्थित है

लगभग ऊँचा है। इसकी एक चोटी पर विष्णु का एक मन्दिर है। यह बड़ा प्राचीन मन्दिर शंकर स्वामी का बनवाया हुआ है। हिन्दू लोग इसे बड़ा पवित्र मानते हैं। और इनकी गणना बड़े बड़े तीर्थ स्थानों में होती है। यहां यात्री आकर दर्शन किया करते हैं। मन्दिर के नीचे पहाड़ की ओर एक पवित्र कुंड है जिनमें पानी गरम है और एक टोंटी वाले सोते से नालियों के रास्ते से आता है। यहां दूर दूर से यात्री आते हैं।

बनारस (काशी)—यह पवित्र तथा तीर्थ स्थान गंगा नदी के उत्तरी किनारे पर बसा हुआ है। यहां असंख्या मन्दिर हैं। उनमें से विशेश्वर, भैरवनाथ और दुर्गा के मन्दिर बहुत नामी हैं। अन्नपूर्णा का भी मन्दिर विशेश्वर नाथ के मन्दिर के सामने है। और यहां यात्री बहुत आते हैं। दुर्गा का मन्दिर और उनका सुन्दर ताल काशी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। यहां बड़े घाट, ताल, कुएं, भी हैं। बड़े घाट पांच हैं असी संगम, दशास्वमेध, मनिकर्णिका, पांच गंगा घाट, वर्नासङ्गम काशी के पवित्र ताल—मनिकर्णिका, पिशाच मोचन, अगस्त्य का कुण्ड। काशी के कुएं। गपाणकूप, अमृतकुण्ड, नागकुण्ड और यहां छावनी भी है। यहां सदैव बड़ी भीड़ गंगा किनारे रहती है और दूर से यात्री आते रहते हैं।

बहरायच—यह बड़ा शहर है। यहां मार्च में एक प्रसिद्ध मेला लगता है। यहां सबसे बढ़कर दर्शनीय ससरूद का मजार है। यहां के मेले में लगभग डेढ़ लाख आदमी इकट्ठे होते हैं। जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों आते हैं।

मेरठ—यह एक बड़ा शहर है। यहां मार्च के अन्त में नौचन्दी मेला लगता है। जहां ५० हजार मनुष्य एकत्रित होते हैं। यहां देखने योग्य स्थान सूरजकुण्ड, बालेश्वरनाथ का मन्दिर है। वहां चने, चीनी, घी का बहुत व्यापार होता हैं।

मिर्जापुर और विन्ध्याचल—यहां लाख बनती है। कालीन भी अच्छे तैयार होते हैं। मिर्जापुर के पास विन्ध्याचल पहाड़ पर एक देवी हैं जिनके दर्शन के लिये दूर दूर से लोग आते हैं। और कजलियों में मेला भी लगता है।

मथुरा—यह यमुना नदी के दाहिने किनारे पर बहुत प्राचीन और हिन्दुओं का तीर्थ नगर है। हिन्दू लोग खास कर ब्रजमण्डल को (जहां कृष्ण जी रहते थे) पवित्र मानते हैं और बड़ा आदर करते हैं। मथुरा से ६ मील दक्षिण महावन भी तीर्थ स्थान है जहां कृष्ण जी पले थे। यहां बहुत से मन्दिर हैं। सब से प्रसिद्ध गोविन्द देव, गोपीनाथ, वृंदावन, हरिद्वार, पुरी आदि के बराबर तीर्थ स्थान समझा जाता है।

हरिद्वार—यह प्रान्त का अति प्राचीन नगर है जो गङ्गा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। इसके कई नाम हो चुके हैं हरिद्वार या विष्णु का द्वार बहुत पुराना नहीं है। इसका प्राचीन नाम माया पुर है और कहीं कहीं कपिला या गपिला भी कहते हैं। हरिद्वार में अनेक मंदिर है और उनमें से विशेष कर चंडी पहाड़, माया देवी का मंदिर, सरवनाथ का मंदिर, इसके बाहर बुद्ध की मूर्ति है। यहां बारहवें वर्ष कुम्भ का मेला होता है। इसके अतिरिक्त बैशाख में बड़ा मेला लगता है। यहां होली, विजया दशमी तथा कार्तिक में पूर्णि को भी मेला लगता है।

कनखल—एक गांव यहां से २ मील के लगभग दक्खिन पूर्व की ओर है जहां राजा दक्षपति का मंदिर, सीताकुण्ड, राजा लंधौरा का मंदिर और दक्ष स्थान देखने योग्य हैं। यहां के दर्शन को दूर दूर से यात्री जाया करते हैं।

देवा—यह बाराबंकी जिले में में स्थित हैं। यहां अक्तूबर महीने में उर्स का मेला लगता है और सात दिन तक रहता है। यहां लगभग १५००० पशु बिकने आते हैं।

ददरी—बलिया जिले में स्थित है। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को बड़ा मेला लगता है लगभग १५००० पशु बिकने आते हैं।

मकनपुर—कानपुर जिले में बिल्हौर स्टेशन से ७ मील दूर है। यहां होली के अवसर पर १० दिन तक मेला लगता है। लगभग २०,००० पशु बिकने आते हैं।

उत्तर प्रदेश के जिलों का क्षेत्रफल, जनसंख्या, सघनता और वार्षिक वर्षा

नाम	क्षेत्र फल	जन संख्या	सघनता	वर्षा
आगरा	१८४९	१०,४८,३ ६	५६७	२६
अलीगढ़	१९४७	११,७१,७४५	६०२	२६
इलाहाबाद	३८५२	१४,९१,९१३	५०४	३८
अल्मोड़ा	५५ ०	५,८३,३०२	१०२	८०
आजमगढ़	२१४७	१५,७१,५७	७१०	४१
बहराइच	२७३०	११,३६३४८७	४३१	४५
बलिया	१२३२	९,१३,०९०	७४२	४२
बांदा	२८००	६,२५,७७१	२१८	४०
बाराबंकी	१७६०	१०,६३,७७९	६०६	४०
बरेली	११६४	१०,७२,३७०	६७९	४४
बस्ती	२७५२	२०,७८,०२४	७३६	४८
बनारस	१००८	१०,१६,३७८	९३०	४०
बिजनौर	१८:७	८,३५,४६९	४६६	४५
बदायूं	''०१०	१०,१०,१८०	५०३	३६
बुलन्द शहर	१९१४	११,३६,६८५	४९५	२६
कानपुर	२३७०	१२,१२.२५३	५१२	३४
देहरादून	११९३	२,३६,२४७	१०९	९०
एटा	१७८३	८,६०,४७८	५०१	३०
इटावा	१८६१	७,४६,००५	४४२	
फरुखाबाद	१७१९	८,७७,३०२	५२४	३४
फतेहपुर	१५८२	६,८८,७८९	४१९	३४
फैजाबाद	१६८९	१२,०४,१८९	६९९	४२
गढ़वाल	५२६९	५,३३,८८५	१०८	५०
गाजीपुर	१९०२	८,२४,९७१	६३०	४०
गोंडा	२८७५	१५,७६,००८	५४५	४५
गोरखपुर देवरिया	४५१४	३५,६७,५६१	७८७	४५
हमीरपुर	२४३९	५,०२,६८९	२०६	३६
हरदोई	२३१७	११,२७,६२६	५८५	
जालौन	१४६९	४,२६,०२२	२७५	३२
जौनपुर	१५५४	१२,३६ ०७१	७९७	४२
झांसी	३६००	६,९०,४१३	१९१	३२
खीरी(लखीमपुर)	२९७६	९,४४,४७०	३१८	
लखनऊ	१९६७	७,८७,४७२	८१४	
मैनपुरी	१६९७	७,४९,६२३	४४८	३६
मेरठ	२३७९	१६,०१,९१८	६९९	
मिर्जापुर	५२१३	७,८९,४०९	१८०	३०
मुरादाबाद	२२९१	१२,८४,१०८	५६१	४२
मथुरा	१४५३	६,६८,०७४	४६१	४०
मुजफ्फर नगर	२६६६	८,९४,६६२	५४१	२६
नैनीलाल	२६७०	२,७७,२८६	१९४	३४
परतापगढ़	१४५८	९,२६,२२३	६०६	६५
पीलीभीत	१३७८	४,५४.८३८	३३३	३८
रायबरेली	१७४५	९,७४,१२७	५५७	५०
सहारनपुर	२,३३	१०,४:,९२०	४८९	४०
शाहजहांपुर	१७४४	९,०५'२३१	५१३	३८
सीतापुर	२२५३	११'६७,१९९	५२०	३७
सुल्तानपुर	१७०७	१०,५१,२८४	६१४	३९
			५ ८	४४

द्वितीय खण्ड

उत्तर प्रदेश के जिलों का संक्षिप्त-परिचय

गढ़वाल

गढ़वाल का जिला सब का सब हिमालय में स्थित है। यहां हिमालय पर्वत की श्रेणियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर चली गई हैं। गढ़वाल का जिला कुछ आयताकर है। इसकी अधिकतम ल्बाई १२१ मील है औसत चौड़ाई ६० मील है। इसका क्षेत्र-फल ५६२६ वर्ग मील और जनसंख्या ५,४०,००० है। उत्तर की ओर हिमालय की हिमाच्छादित श्रेणी इसे तिब्बत से अलग करती है। दक्षिण की ओर पहाड़ की तलहटी के पास वाली सड़क बिजनौर जिले और गढ़वाल के बीच में सीमा बनाती है। उत्तर और उत्तर-पश्चिम की ओर देव प्रयाग तक गंगा, रुद्र प्रयाग अलकनन्दा और अगस्त मुनि तक मन्दाकिनी गढ़वाल को देहरादून जिले और टेहरी राज्य से अलग करती हैं। अगस्त मुनि के ऊपर कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। पूर्व की ओर अल्मोड़ा और गढ़वाल के बीच में कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है।

गढ़वाल शब्द का अर्थ है गढ़ो या किलों का जिला। यहां पहले ५२ किले थे। कुछ लोगों का अनुमान है कि गढ़ों या गडढों और आखातों की अधिकता होने से यह नाम पड़ा। सचमुच गढ़वाल जिला नदियों और नालों से बहुत कट फट गया है।

गढ़वाल में हिमालय की नन्दादेवी और बद्रीनाथ दो मुख्य पर्वत श्रेणियां हैं। ये दोनों बर्फ से घिरे हैं। ये दोनों २५ मील तक पूर्व से पश्चिम को चली गई हैं। नन्दादेवी के पार्श्व में नन्दाकोट और त्रिशूल हैं। बद्रीनाथ श्रेणी की प्रधान चोटियां बद्री-नाथ या चौखम्बा और केदारनाथ हैं। हिमाच्छादित त्रिशूल के पीछे नन्दादेवी की अकेली चोटी उठी हुई है। इसका दक्षिणी ढाल इतना सपाट है कि इस पर बर्फ नहीं ठहर सकती। पीपल कोटि के पास अलक नन्दा के किनारे दोनों श्रेणियां एक दूसरे के पास आ जाती हैं। पहाड़ियों के सिरे प्रायः एक मील ऊँचे हैं। नदी के किनारों के पास ढाल क्रमशः हो गया है। इसी से पीपल कोटि गढ़वाल का द्वार माना जाता।

एक विशाल पहाड़ी धौली गङ्गा और विष्णु गङ्गा के बीच में जलविभाजक बनाती है। इसकी प्रधान चोटी कामट है जो २५,४४३ फुट ऊँची है। जल विभा-जक की औसत ऊँचाई १८,००० फुट है। गढ़वाल में हिमालय की विशाल हिमाच्छादित चोटियां नीति और माना दर्रों के दक्षिण में स्थित हैं। दो प्रधान श्रेणियों की कई छोटी छोटी उपश्रेणियां हैं। एक श्रेणी बद्री-नाथ के पश्चिमी पार्श्व से तुंगनाथ होती हुई अलक-नन्दा के किनारे रुद्र प्रयाग का चली गई है। यही श्रेणी अलकनन्दा को मन्दाकिनी से अलग करती है। केदार नाथ से दक्षिण की ओर आने वाली दूसरी उपश्रेणी भागीरथी को अलकनन्दा और मन्दाकिनी से अलग करती है। नन्दादेवी की एक श्रेणी पश्चिम की ओर त्रिशूल से अलकनन्दा को गई है और मन्दाकिनी को विरेही में पृथक करती है। एक दूसरी श्रेणी नन्दाकिनी को कैलगङ्गा और पिंडरसे अलग करती है। इस श्रेणी-की खैमिल चोटी १३३५६ फुट ऊंची है। एक श्रेणी पिंडर नदी को कैलगङ्गा से अलग करती है। लेकिन मध्यवर्ती गढ़वाल की सब से विख्यात वह श्रेणी है जो पिंडर के बांये किनारे पर नन्दा कोट से दूदाटोली श्रेणी तक जाती है। यही श्रेणी हरिद्वार महादेव के बीच में जल विभाजक बनाती है और राम गङ्गा को गङ्गा से पृथक करती है।

दूदाटोली श्रेणी के ढाल सपाट नहीं है। यह चुम्बक और बालू की बनी है। इसका रंग कुछ सफेद

है। इसके घिसने से हलकी बलुई मिट्टी बनती है। ग्वालडम श्रेणी कड़े काले चूने के पत्थर की बनी है। इसके घिसने से उपजाऊ चिकनी मिट्टी बनती है। लोभा पट्टी में राम गङ्गा के पूर्व की ओर उत्तम खेती का उपजाऊ प्रदेश है। पश्चिम की ओर मिट्टी बलुई और प्रायः निकम्मी है। दूदा-टोली चोटी की ऊँचाई १०१८८ फुट है। कमायूँ प्रान्त भरमें विख्यात हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर ननपुर श्रेणी है। पहले यहां तांबा निकाला जाता था। बोधन गढ़ की काली पहाड़ी एकदम सपाट है। अधिक छोटी पहाड़ियां दक्षिणकी ओर हैं। इनमें कालोंगढ़ी (लेन्सडाउन) और लंगूर गढ़ी विशेष उल्लेखनीय हैं। गढ़वाल जिले में कई झीलें हैं। पहाड़ियों से घिरे हुये बनीताल सुरवताल आदि जिन आखातोंमें केवल वर्षा का पानी आता है वे अधिक विस्तृत झीलें भीतर की ओर हैं। जिनमें हिमागारों की बरफ पिघलने से पर्याप्त पानी भर जाता है। सतो, पानी लोपाल का कुंड देवताल और दिउरी (उखीमठ के पास) अधिक प्रसिद्ध है। गोहना या दुर्मी झील १८६४ ईस्वी में बनी। यह झील २ मील लम्बी और आध मील चौड़ी है। यह कमायूँ प्रान्त में सबसे बड़ी है और नैनी ताल से तिगुनी बड़ी है।

गढ़वाल में कई गरम सोते हैं। गौरीकुंड, केदार नाथ के मार्ग में मन्दाकिनी के दाहिने किनारे पर स्थित है। तप्तकुण्ड बद्रीनाथ के मन्दिर के पास है। यहां गंगा का पानी इतना ठंडा है कि मई या जून मास में भी बहुत कम यात्री उसमें स्नान करने का साहस करते हैं। इन कुंडों का पानी इतना गरम है कि ठंडा पानी डालने पर स्नान करने योग्य होता है। तपोवन के पास ४ गरम सोते हैं। ये चारो नीति दर्रे के मार्ग में स्थित हैं। भोरी सोता अलमोड़ा गांव के पास है। इसका पानी कुछ खारा है। इसमें पत्थर छोड़ने से उनका रंग बदल जाता है। लगभग ४००० फुट की ऊँचाई पर यह सालवन के बीच में स्थित है। कुजसरी का सोता मामूली गरम है और पिंडरी नदी के बांये किनारे पर स्थित है। दूसरा सोता पलेन नदी के पास है।

गढ़वाल का जिला प्राचीन समय से खनिज पदार्थों के लिये प्रसिद्ध रहा है। तांबा पोखरी, दोबो और धनपुर (रानीगढ़) में पाया जाता है। लोहा हाट, जैनाल चोरपनना, और मोरन में पाया जाता है। यह लोहा बहुत अच्छा होता है। पहले यह मैदान को भी भेजा जाता था। कहा जाता है कि यहाँ के लुहारों ने पाण्डवोंके अस्त्र शस्त्र बनाये थे। कुछ सीसा भी पाया जाता है। अलकनन्दा की बालू में सोने के कण मिले हैं। गन्धक, ग्रेफायट (पेन्सिल का मसाला) फिटकिरी, सिलाजीत आदि कई प्रकार के खनिज यहां साधारण मात्रा में मिलते हैं। घर बनाने का पत्थर प्रायः सब कहीं पाया जाता है। लोहबामें पतली नीली स्लेट मिलती है। पत्थर और लकड़ी की अधिकता होने से गढ़वाल में घर बनाने के लिये ईंटे कहीं नहीं तैयार की जाती हैं।

जलवायु

गढ़वाल के कुछ भाग मैदान के समान नीचे हैं। कुछ भाग समुद्र तल से २४००७ फुट से भी अधिक ऊंचे हैं। भिन्न भिन्न भागों की ऊँचाई में अन्तर होने से जलवायु भी भिन्न है। कुछ भागों की जलवायु उष्ण कटिबन्ध के समान गरम है। कुछ भाग ध्रुव प्रदेश की भांति ठंडे हैं। भावर प्रदेश की जलवायु तलहटी की तरह गरम है। नदियां की घाटियों की जलवायु कभी अच्छी नहीं रहती है। गरमी की ऋतु में यहां का तापक्रम ८० अंश फारेनहाइट से कम नहीं होता है। कहीं कहीं छाया में भी इस ऋतु में तापक्रम १०० अंश फारेनहाइट से अधिक हो जाता है। सरदी की ऋतु में रात्रि और प्रातःकाल में कुहरा छाया रहता है और बहुत जाड़ा पड़ता है। दोपहर के बाद खूब धूप रहती है। इससे अक्सर लोगोंको ज्वर आ जाता है। उत्तरी भाग में ४०००० फुट की ऊँचाई तक बरफ गिर जाती है। दक्षिणी भाग में ५००० फुट से नीचे कभी बरफ नहीं गिरती है। सरदी की ऋतु में ६००० फुट की ऊंचाई पर लगातार बरफ रहती है। गरमी की ऋतु में हिम-रेखा की ऊंचाई १८००० फुट हो जाती है। दक्षिण में ७००० फुट और उत्तर में ६००० फुट से अधिक ऊंचे भागों में सदा जाड़ा रहता है।

यहां वर्ष में तीन ऋतु माने जाते हैं। आधे अक्तूबर से आधी फरवरी तक (कार्तिक मार्गशीर्ष पौष और माघ मास में) शीतकाल होता है। फाल्गुन चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ महीने (आधी फरवरी से

आधे जून तक) रूखी या ग्रीष्म काल रहता है । शेष चार (आषाढ़, श्रावण, भाद्र और आश्विन) महीनों में चौमासा या वर्षा ऋतु रहती है । गरमी की ऋतु में कभी कभी तेज आंधी चलती है और प्रबल वर्षा हो जाती है ।

गढ़वाल के भिन्न भिन्न भागों की वर्षा भी भिन्न है । कुछ भागों (जैसे श्रीनगर) में साल भर में ३५ इंच वर्षा होती है । कुछ भागों जैसे कोट द्वारा में ७० इञ्च वर्षा होती है । वर्षा की मात्रा स्थिति के ऊपर निर्भर है । सब से अधिक वर्षा पहाड़ की तलहटी में होती है जहां पहाड़ ऊंचे होने लगते हैं । इसके बाद वर्षा की मात्रा कुछ कम हो जाती है । लेकिन जहां हिमरेखा आरम्भ होती है वहां भी प्रबल वर्षा होती है । इस प्रकार पहाड़ की तलहटी और हिमरेखा तलहटी की दो पेटियों में सब से अधिक वर्षा होती है । पहाड़ की तलहटी में बसे हुये कोट द्वारा और हिमरेखा के नीचे बसे उखीमठ (दोनों ही स्थानों) में ६० इञ्च से ऊपर वर्षा होती है । उंचाई प्राय: समान होने पर भी जिन स्थानों के पास एकदम पहाड़ियां हैं वहां उन स्थानों से अधिक वर्षा होती है जहां पहाड़ियां कुछ दूर हैं । श्रीनगर के पास पांच छ: मील तक पहाड़ियां नहीं हैं । वहां २८ इञ्च वर्षा होती है। कर्णप्रयाग की उंचाई भी इतनी ही है । लेकिन यह एक गहरे गोज (नद कन्दरा, की तली में बसा है और सब ओर ऊंची पहाड़ियों से घिरा है । इसलिये यहां ५० इञ्च वर्षा होती है । पावड़ी में भी पहाड़ियों की समीपता होने के कारण ५० इंच वर्षा होती है । हिमरेखा के पड़ोस वाले स्थानों में ग्रीष्म काल में वर्षा कम होती है लेकिन शीतकाल की वर्षा अधिक होती है । वर्षा के अतिरिक्त यहां हिमपात भी होता है । जोशीमठ में वर्षा के अतिरिक्त बरफ भी काफी गिरती है । नीति दर्रे में पानी तो केवल ५१½ इञ्च बरसता है लेकिन सर्दी में यहां बरफ इतनी गिरती है कि समस्त घाटी बरफ से घिर जाती है । यहाँ के लोगों का अनुमान है कि ग्रीष्म काल की वर्षा समुद्र की ओर से आती है लेकिन शीतकाल की वर्षा पर्वत की ओर से आती है । शीत काल में जो स्थान ऊंचे पर्वतों की हिम से दूर होते जाते हैं-वर्षा भी कम होती जाती है । इस प्रकार शीत-काल में उखीमठ में कर्णप्रयाग से और श्री नगर में कोट द्वारा से अधिक वर्षा होती है । ग्रीष्म काल में उल्टा हाल होता है ।

नवम्बर यहाँ का खुश्क महीना है । यहां आध इञ्च से कम वर्षा होती है । दिसम्बर में औसत से पौन इञ्च या १ इञ्च वर्षा होती है । अप्रैल में भी प्राय: १ इञ्च ही पानी बरसता है । यहां वर्षा प्राय: उसी समय आरम्भ होती है जब बम्बई में होती है । यह वर्षा स्थानीय होती है और उत्तर-पश्चिम की ओर से आने वाली हवाओं के द्वारा होती है । पहली वर्षा से बहुत मिट्टी कट कर बह आती है । पहाड़ी भाग में पानी शीघ्र बह जाता है । इसलिये एक बार वर्षा होने के बाद बीच में जब वर्षा कुछ समय के लिये रुक जाती है तो अकाल पड़ता है और धूल उड़ने लगती है ।

पशु—गढ़वाल के भावर के वन में पहले जङ्गली हाथी बहुत थे । बहुत से हाथी पालने के लिये पकड़ लिये गये । कुछ मार डाले गये । इस समय बहुत कम शेष रह गये हैं । भावर में चीता इस समय भी बहुत है और १०,००० फुट की उंचाई तक पाया जाता है । तेन्दुआ भी सब कहीं है और बहुत हानि पहुँचाता है । हिमाचल का काला भालू ऊँचे भागों से लेकर ३००० फुट की उंचाई तक रहता है । सरदी की ऋतु में वह भावर में भी उतर आता है । वह पेड़ों पर चढ़ने में बड़ा कुशल होता है और शहद की मक्खियों के छत्तों को खा जाता है । उसका साधारण भोजन मंडुआ और जङ्गली फल है । वह गाय बैल और भेड़ बकरियों पर अक्सर चोट करता है । कभी कभी वह मनुष्यों को भी घायल कर डालता है । गढ़वाल में बन बिलाव बहुत हैं । गीदड़ सब कहीं पाया जाता है । पहाड़ी लोमड़ी के ऊपर मोटा नमदा होता है । चुटरैला (मार्टेन) छोटे जानवरों को खाता है । ओड के चमड़े से भाटिया लोग टोपी बनाते हैं । यहां लगूर और बन्दर भी बहुत हैं । सम्भर भावर और पहाड़ (१०,००० फुट की उंचाई) दोनों प्रदेश में पाया जाता है । पहाड़ी सम्भर बहुत बड़ा होता है । इसके सींग भारी होते हैं । वह घने जङ्गल में रहता इसलिये कम दिखाई देता है । चीतल (चकत्तेदार हिरण) पचास साठ के झुंड में रहता है । वह तलहटी के बन में रहता है और पहाड़ पर नहीं जाता । गोन (दलदल के हिरण) और पार्थ आदि नदियों के किनारे पर

मिलते हैं। ककर बाहर सिंह के समान होता है। कस्तूरी हिरण ८००० फुट से कम उंचाई पर नहीं मिलता है। इसके बाल बहुत खुरदरे होते हैं और शीघ्र टूट जाते हैं। इसकी पिछली टांगें अगली टांगों से बड़ी होती हैं। कस्तूरी हिरण की नाभि वाली थैली में रहती है। गुरल (chemois) तीन चार के दल में खुले जङ्गलों में रहते हैं। सराओ गुरल से बड़ा होता है और सपाट पहाड़ियों और घने जङ्गलों में रहता है। थार ७००० और १२००० फुट के बीच वाले सपाट भागों में रहता है। नर थार के प्रायः १ फुट लम्बे सींग होते हैं। बढ़ाल नीति दर्रे के पास पाया जाता है। दूसरे भागों में यह १०,००० से १६००० फुट की उंचाई पर रहता है। गढ़वाल में चील्ह, बाज, गिद्ध, खंजन, कोकल, मुर्गा, कबूतर, तीतर आदि कई प्रकार के पक्षी पाये जाते हैं। रेंगने वाले पशुओं में छिपकली और मेंढक बहुत हैं सांप कम पाये जाते हैं।

गढ़वाल की नदियों और भीलों में मछलियां बहुत हैं। इन्हें लोग कांटे और जाल से पकड़ते हैं। कुछ तालाबों में जहरीला रस डालकर मछलियों को मार डालते हैं कहीं कहीं राक्षस (ढङ्ग) से मछलियों को पकड़ते हैं। इस रस्सी में जालदार कांटे लगे रहते हैं। रस्सी पानी में डूबी रहती है। जब मछलियां रस्सी के ऊपर दिखलाई देती हैं तब रस्सी को झटक दिया जाता है। इससे बहुत सी मछलियां फंस जाती हैं। कुछ चोट खाकर भाग जाती हैं।

गढ़वाल की गायें बहुत छोटी और दुबली पतली होती हैं। वे बहुत कम (प्रायः १ सेर) दूध देती हैं। लेकिन पहाड़ी ढालों पर चढ़ने में वे बहुत कुशल होती हैं। कभी कभी वे घास चरते चरते ऐसी ऊंचाई पर चढ़ जाती हैं कि देखने वाले दंग रह जाते हैं। दिन के समय में वे चरने के लिये छोड़ दी जाती हैं। रात्रि में पहाड़ी घर के नीचे बने हुये गोठ अथवा अलग बाड़े में बांध ली जाती हैं। इनके बाड़े में सिन्दूर (ओक) की पत्तियां बिछी रहती हैं। इन्हें नमक शायद ही कभी मिलता है। हरी पत्तियों और घास खाने से इनका दूध बहुत पतला रहता है। इसमें बहुत कम मक्खन रहता है। कटे हुये खेतों में भी गायें चरने के लिये छोड़ दी जाती हैं। उनके लिये कुछ घास स्त्रियां ऊंचे ढालों पर चढ़ कर और काट कर पीठ की झोली में भर लाती हैं।

गायों के चरने के लिये बुग्याल या पयर सर्वोत्तम होते हैं। ये बहुत ऊंचे होते हैं। वहां वन का अन्त हो जाता है। सरदी में इन पर बरफ रहती है। गरमी में यहां घास उग आती है। बद्रीनाथ के पास इसी तरह के चारागाह हैं। वर्षा आरम्भ होने पर गाय भैंस ऊपर चरने के लिये हांक दी जाती हैं और गांव के पास वाली घास सरदी के दिनों के लिये सुरक्षित रख ली जाती है। सरदी की ऋतु में अधिक ऊंचे भागों में बर्फीली आंधियां आती हैं और गायें बाहर चरने के लिये नहीं जा सकतीं।

१०,००० फुट से अधिक ऊंचे भागों में याक या सुरा गाय पाली जाती है। १०,००० फुट से नीचे की गरमी को यह सहन नहीं कर सकती। देशी सांड़ और सुरा गाय के मेल से गरजो और सुरा सांड़ और देशी गाय के मेल से जुबू पैदा होता है। दोनों कुछ अधिक नीचे आ सकते हैं। सुरा गाय दो तीन मन बोझा ढो सकती है। पहाड़ी ढालों पर चढ़ने में इसका पैर नहीं फिसलता है। इसलिये कुछ लोग सुरा बैल पर सवार होकर पहाड़ी यात्रा किया करते हैं।

गढ़वाल में भेड़ बकरी भी बहुत पाली जाती हैं। लोग इनका दूध पीते हैं और मांस भी खाते हैं। वे इनकी पीठ पर बोझा भी लादते हैं। एक भेड़ १० सेर और बकरी १२ सेर बोझा ढोती है। बोझा पांचा (थैलों) में भर कर लादा जाता है। यह सुतली से बनाये जाते हैं मजबूती के लिये इन पर चमड़ा भी लगा लिया जाता है। पश्चिमी हिमालय से आने वाली छोटी बकरी के बाल बहुत लम्बे होते हैं। सवारी और बोझा ढोने के लिये टट्टू भी पाले जाते हैं।

वन—रामगंगा से लेकर गंगा तक हिमालय के बाहरी ढालों पर वन की चौड़ी पेटी है। तलहटी में स्थित दून भी सब कहीं पेड़ों से ढके हैं। वनों में साल, तून, जामुन, खैर, धौरा, बांज, करद, तिलोंज, सन्दल, शीशम, तेन्दू और चीर के पेड़ों की अधिकता है। निचले भागों में ३५०० फुट की ऊंचाई तक बांस बहुत हैं। यह स्थानीय लोगों के बड़े काम का है। लेकिन अच्छे मार्गों का प्रायः अभाव होने से गढ़वाल

की लकड़ी बहुत कम दूसरे भागों में पहुँचती है। इससे फिर भी सरकार को बड़ी आमदनी होती है। गढ़वाल फलों के लिये भी बहुत प्रसिद्ध है। जामुन ३००० फुट की ऊँचाई तक उगता है। इसके ऊपर जंगली सेव बहुत उगता है। नाशपाती, खुबानी, नारंगी, नींबू, केला, अनार सब कहीं उगता है। अखरोट जंगली भी उगता है और उगाया भी जाता है। पाउड़ी और दूसरे स्थानों में अंग्रेजी फल भी लगाये गये हैं।

अल्मोड़ा के भावर में साल और शीशम के पेड़ प्रधान हैं। खैर के पेड़ पुरानी मिट्टी में होते हैं। पहाड़ी भाग में ३००० फुट की ऊँचाई तक साल के पेड़ मिलते हैं। इनके बीच बीच में सैन, हल्दू और दूसरे पेड़ होते हैं। अधिक ऊँचाई पर चीड़, देवदार और ओक बाँज के पेड़ होते हैं। अल्मोड़ा जिले में १८६ वर्ग मील जमीन जङ्गलों से ढकी हुई है। चीड़ का पेड़ १६०० फुट से लेकर ७५०० फुट की ऊँचाई तक होता है। बांज (ओक) का पेड़ ४००० फुट से लेकर ८००० फुट तक होता है। देवदारु ११००० फुट की ऊँचाई तक होता है।

कृषि—गढ़वाल में समतल भूमि का प्रायः अभाव है। पहाड़ों का ढाल भी सपाट है। इस लिये खेत को तैयार करना पड़ता है। खेत तैयार करने के लिये ढाल के निचले भाग में पत्थरों को इकट्ठा करके किसान एक दीवार बनाता है। अक्सर किनारों पर भी पत्थर की दीवार बनाने के बाद वह ऊँची भूमि को खोदता है। अन्त में सब खेत प्रायः बराबर हो जाता है। अधिकतर खेतों में मिट्टी का अभाव होता है अथवा मिट्टी की बहुत ही पतली तह होती है। खेत को एक बार ही अधिक खोदने से मिट्टी की पतली तह पत्थरों के नीचे हो जाती है। इस लिये खेत एक साथ तैयार नहीं हो पाता है। पहले वर्ष खेत का कुछ भाग होता है। धीरे धीरे कुछ वर्षों में पूरा खेत तैयार हो जाता है। जिस ढाल पर खेती होती है, उसके प्रायः बीच में गांव बसाया जाता है। इस तरह कुछ खेत गांव के ऊपर और कुछ खेत गांव के नीचे होते हैं। कहीं कहीं किसान को भाग्य से प्रायः समतल भूमि मिल जाती है। वहां वह जंगली, कटीली झाड़ियों को जलाकर साफ कर लेता है। इस तरह की खेती लगातार अधिक समय तक नहीं हो सकती। इनमें खाद केवल जली हुई झाड़ियों की राख होती है। वर्षा होने पर यह राख अक्सर बह जाती है। जीनेदार खेतों में सड़ी हुई पत्तियों और गोबर की खाद दी जाती है।

पहाड़ों पर सिंचाई की सुविधा बड़े महत्व की है। सिंचा हुआ निकम्मा खेत भी अच्छे से अच्छे बिना सिंचे हुये खेत से कहीं अधिक मूल्यवान होता है। जो खेत सींचे जा सकते हैं उन्हें तलाउ कहते हैं। जो खेत नहीं सींचे जा सकते उन्हें उपराउँ कहते हैं। सिंचाई पहाड़ी नालियों द्वारा होती है। इनमें बरफ का पिघला हुआ पानी रहता है। यह पानी पहाड़ के अधिक उपरी भाग से तेज बहकर आता है। अतः यह अपने साथ मिट्टी के बारीक उपजाऊ कण भी ले आता है। इसी से सिंचे हुये खेत लगातार बढ़िया होते जाते हैं। जो खेत सम-तल होते हैं जिनमें कछारी उपजाऊ मिट्टी अधिक होती है और जिनमें सदा सिचाई हो सकती है उनमें धान उगाया जाता है।

गढ़वाल की पैनों और दूदातली-घाटियों में उत्तम कछारी मिट्टी है। दक्षिण की ओर बलुई मिट्टी है। खेती प्रायः ६५०० फुट की ऊँचाई तक होती है। कुछ अन्न ८००० फुट तक होते हैं। गेहूँ ६००० फुट की ऊँचाई तक उगाया जाता है।

पहाड़ का उत्तरी ढाल दक्षिणी ढाल की अपेक्षा कम सपाट होता है। वहां वर्षा का प्रकोप कम होता है। वहां उपजाऊ मिट्टी की तह अधिक मोटी होती है। इसीलिये पहाड़ों के उत्तरी ढालों पर खेत तैयार करना अधिक सुगम है। खरीफ की फसल बोने के लिये खेत एक बार जोते जाते हैं। ककुनी, चीना, झंगोरन, धान खरीफ की प्रधान फसलें हैं। तूर या अरहर पहाड़ के निचले ढाल पर बोई जाती है।

गेहूँ, जौ और सरसों रबी की फसल में बोये जाते हैं। ऊँचाई के अनुसार इनके पकने में अधिक या कम समय लगता है।

गढ़वाल में भिन्न भिन्न घाटियों की मिट्टी भिन्न है। अलकनन्दा के पड़ोस में बलुई मिट्टी है। पिंडर, रामगङ्गा और मन्दाकिनी की घाटी की मिट्टी कुछ कुछ लाल चिकनी है। नायर की घाटी में कंकड़ मिली हुई चिकनी मिट्टी है। जो छोटी छोटी नदियों से धुल कर आई है।

भावर के ऊपर वाली पहाड़ियों से निकलने वाली

नदियां बहुत छोटी हैं। लगभग २० मील बहने के बाद वे भावर में लुप्त हो जाती हैं। इनमें प्रधान नदी खोह है। जो द्वारी खाल के पास निकलती है। दोगड्डा के पास इसमें लैंस डाउन का नाला मिलता है। दोगड्डा शब्द का अर्थ है। दो नदियों का संगम। कोट द्वार के पास यह मैदान में प्रवेश करती है।

अधिक ऊंचे भागों में रवी की फसल जून अथवा जुलाई में तैयार होती है। निचले भागों में अप्रैल में ही तैयार हो जाती है। रस्सी बनाने के लिये पहाड़ी लोग सन या सनई उगाते है। योरुपीय लोगों के प्रयत्न से देहरादून और कमायूं के कई भागों में चाय उगाने का भी सफल प्रयत्न किया गया है।

भैरों घाटी का मन्दिर और दर्रा टेहरी राज्य में भागीरथी और अलकनन्दा के संगम के पास स्थित है। दोनों नदियां गहरी घाटी में होकर बहती हैं। उनके ऊपर दानेदार पत्थरों का सपाट पहाड़ी दीवारें खड़ी हुई हैं। जान्हवी को पार करने के लिये फौलादी रस्सों का झूलने वाला पुल पानी के तल से ३५० फुट की ऊँचाई पर बना है। भैरों या शिव जी का दर्शन करने के लिये यहां दूर दूर से यात्री आते हैं।

देव प्रयाग टेहरी राज्य का एक प्रसिद्ध नगर है और भागीरथी और अलकनन्दा के सगम पर बसा है। यह स्थान समुद्र-तल से १५५० फुट ऊँचा है। पानी के तल से १५५० फुट ऊँचा है। पानी के तल से नगर १०० फुट ऊंचा पहाड़ की टीले पर स्थित है। इसके पीछे की ओर पहाड़ी ८०० फुट ऊँची हो गई है। यहीं रघुनाथ जी का मन्दिर विशाल पत्थरों से बना है। मन्दिर के सफेद गुम्बद के ऊपर सुनहला कलश है। यहां के ब्राह्मण इसे १०,००० वर्ष का पुराना बतलाते हैं। १८०३ के भीषण भूचाल से मन्दिर को भारी धक्का पहुँचा। लेकिन सिन्धिया महाराज की उदारता से इसकी मरम्मत हो गई। देव प्रयाग में अधिकतर पंडे रहते हैं, जो यात्रियों को उत्तराखण्ड के तीर्थों का दर्शन कराने के लिये ले जाते हैं। कुछ दुकाने हैं।

गंगोत्री का पहाड़ी मन्दिर भागीरथी के दाहिने किनारे पर १०,३१६ फुट ऊँचाई पर बना है। यहां से इसका स्रोत जो गोमुख है ८ मील दूर है। मन्दिर वर्गाकार है और २० फुट ऊँचा है। इसमें गङ्गा, भागीरथी और दूसरे देवताओं की मूर्तियां बनी हैं। इसको गुरखाओं के प्रधान सेनापति अमरसिंह ठापाने १० वीं सदी के आरम्भ में बनवाया था। यहां दूर दूर से यात्री आते हैं और गंगोत्री का जल भर ले जाते हैं। यात्रियों के ठहरने के लिये यहां कई धर्मशालयें बनी हैं। शीतकाल में मन्दिर के पट बन्द हो जाते हैं।

यमुनोत्री मन्दिर यमुना के स्रोत (यमुनोत्री हिमागार) से ४ मील नीचे १०,८०० फुट की ऊंचाई पर बना है। मन्दिर छोटा है और लकड़ी का बना है। इसमें यमुना देवी की मूर्ति है। उसके पास ही गरम चश्मे हैं जिनका पानी (१४३ अंश फारेनहाइट गरम) प्रायः खौलता रहता है। प्रति वर्ष यहां बहुत से यात्री दर्शन करने आते हैं।

टेहरी नगर १७५० फुट की ऊँचाई पर भागीरथी और भीलांग नदियों के संगम पर बसा है। ग्रीष्म ऋतु में यहां अधिक गरमी पड़ती है। उस समय यहाँ के महाराज प्रताप नगर को चले जाते हैं जो टेहरी नगर से ६ मील की दूरी पर समुद्र तल से ८००० फुट की ऊंचाई पर बसा है। १८१५ में टेहरी एक छोटा गांव था। पर जब से यह टेहरी राज्य की राजधानी बना, तब से यहां बड़ी उन्नति हो गई। यह मैदान और पहाड़ की उपज के विनिमय (अदलबदल) के लिये एक प्रधान केन्द्र है। पुराना भाग संगम के पास है। राजमहल सब से ऊचे भाग में बसा है। यहां बहुत से मन्दिर हैं। यात्रियों के ठहरने के लिये यहां कई धर्मशालायें बनी हैं।

टेहरी राज्य

(गढ़वाल) ३०,३ 'और ३१,१८, उत्तरी अक्षांशों और ७७,४६ 'और ७६,२४' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ४२०० वर्ग मील है। इसके उत्तर में पंजाब के रवाइन और बशहर राज्य तथा तिब्बत है। पूर्व और दक्षिण की ओर गढ़वाल का जिला है। इसके पश्चिम में देहरादून का जिला है। यह पूरा राज्य हिमालय की श्रेणियों और चोटियों के बीच में स्थित है। पर्वत श्रेणियां उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम को गई हैं। तिब्बत की सीमा के पास १०,००० से २३००० फुट ऊँची कई चोटियां हैं। टेहरी राज्य में गङ्गा और यमुना का स्रोत है। इन्हीं दोनों में राज्य का समस्त वर्षा-जल तथा हिम-जल बह आता है। गङ्गा नदी २३५७० फुट की ऊँचाई पर गोमुख हिमागार से निकलती है और आरम्भ में भागीरथी कहलाती है 'भैरों घाटी में जढ़ गङ्गा या जान्हवी तिब्बत से निकल कर इसमें आ मिलती है। दक्षिण-पश्चिम और फिर दक्षिण-पूर्व की ओर बहने के बाद देव प्रयाग में भागीरथी अलकनन्दा से मिल जाती है। कुछ दूर तक गङ्गा नदी टेहरी राज्य और गढ़वाल के बीच में सीमा बनाती है।

यमुना नदी बन्दर पूंच की ऊंची चोटी के पश्चिम में यमुनोत्री से निकलती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर बहने के बाद यमुना नदी टेहरी राज्य की पश्चिमी सीमा बनाती है। इसी पड़ोस में रूपिन और सूपिन दो नदियां निकलती हैं। इन दोनों के मिलने से टोंस नदी बनती है जो यमुना में ही मिल जाती है।

इतिहास

गढ़वाल को प्राचीन समय में केदारखंड नाम से पुकारते थे। केदारखंड का उल्लेख संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में आया है। विष्णुपुराण, महाभारत और वाराह संहिता में कुछ ऐसी जातियों के नाम आते हैं जो भारत की सीमा पर रहती थीं। इनमें शक, नाग खस, हूण और किरात कमायूँ-हिमालय में रहते थे। किरात प्रायः लुप्त हो गये हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि इस समय के राजी लोग ही प्राचीन समय के किरात थे। ऐसे लोग अस्कोट और पूर्वी कमायूं में रहते हैं। शक लोग और भी अधिक पुराने हैं। गढ़वाल, दोती और अस्कोट के राजघराने इन्हीं शकों के वंशज हैं। नाग लोग सर्प के पुजारी थे। नाग लोग अलकन्दा की घाटी में रहते थे। इस समय पांडकेश्वर में शेष नाग, रत गांव में अकेल नाग, तालोर में सेंगल नाग, मार गांव में घनपुर नाग नीति घाटी में जेलम में लोहण्डिया नाग और नागपुर के नागनाथ में पुष्कर नाग की प्रतिष्ठा होती है। पाण्डुी के पास नाग देव में सर्प की पूजा होती है। वर्तमान उर्गम और नागपुर नाम इसी नाग वंश की स्मृति दिलाते हैं। खसिया या खस लोग क्षत्रिय हैं। इनकी संख्या इस समय भी पहाड़ियों में अधिक है। कहा जाता है कि कस (खास) से बिगड़ कर कमायूं बना है।

पहले गढ़वाल में बहुत से छोटे छोटे राजा राज्य करते थे। आगे चल कर ५२ राजाओं का संघ बावनी कहलाने लगा। चीनी यात्री ह्वानसांग ने यहां के ब्रह्मपुर राज्य का उल्लेख किया है। सम्भव है यह इस समय के टेहरी राज्य का राजा ब्राह्मण रहा हो।

बारहवीं सदी में जोशेश्वर और उसके समीपवर्ती भागों पर जैमाल के मल्ल राजाओं का राज्य हो गया। कट चूर लोग भी बहुत दिनों तक राज्य करते रहे। अलमोड़ा की कच्चूर घाटी उन्हीं का स्मरण दिलाती है। प्रथम राजधानी जोशीमठ में बनी। इसे पहले ज्योतिर्धाम कहते थे।

आगे चलकर यहां पाल राजाओं का राज्य हुआ। अजय पाल (१३५८ से १३७०) ने खसिया राजाओं को मिलाकर राज्य का विस्तार बहुत बढ़ा लिया। उसके पहले यहां के राजा इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान दिल्ली) की क्षत्रछाया में रहते थे। अजय पाल ने अपनी राजधानी चांदपुर से हटाकर देवगढ़ में बना ली। बलभद्र शाह ने प्रथम बार पाल नाम छोड़ कर अन्त में शाह नाम धारण किया उस समय से गढ़वाल के राजाओं के नाम के अन्त में पाल के स्थान पर शाह प्रचलित हो गया। १५६५ में कमायूं के राजा रुद्रचन्द ने गढ़वाल पर चढ़ाई की। उसका सेनापति कटचूर घाटी के मार्ग से पिंडर की घाटी में पहुँचा। लेकिन ग्वाल-

दम के पास उसकी हार हुई और गढ़वाल बच गया। फिर भी गढ़वाल और कमायूं में वर्षों तक लड़ाई चलती रही। गढ़वाल के राजा महीपति साह ने अपनी राजधानी देवगढ़ से बदल कर श्रीनगर में करली। मैदान के मुसलमान राजाओं ने पहाड़ पर चढ़ाई करने की कोशिश नहीं की। १६५४-५५ खलीलुल्ला खां देहरादून पर चढ़ाई करने के लिये भेजा गया। कमायूं के राजा ने भी खलीलउल्ला की सहायता की। फिर भी पहाड़ी भाग में मुसलमानी राज्य स्थापित न हो सका। गढ़वाल के राजा पृथिवीसाह ने बड़ी वीरता दिखलाई। पृथिवीसाह के उत्तराधिकारी के समय में फिर कमायूं और गढ़वाल में दो वर्ष तक भीषण लड़ाई चली। कमायूं ने डंगरी और द्वार पर अधिकार कर लिया। लेकिन फतेहशाह ने एक ओर तिब्बत की ओर अपना राज्य बढ़ा लिया। दूसरी ओर १६६२ में देहरादून से सहारनपुर पर चढ़ाई की। मुगल सेनापति ने बड़ी कठिनाई से गढ़वाली सेनाओं को रोक पाया।

१६६८ में कमायूं के राजा ज्ञानचंद ने राज सिंहासन पर बैठते ही अपनी पुरानी प्रथा के अनुसार गढ़वाल पर चढ़ाई की। पहले हरी भरा पिंडर घाटी उजाड़ी गई फिर उसने रामगंगा को पार करके सबली, खतली और सैंधर को लूटा। १७०१ में गढ़वालियों ने चौकोट और गिवार को उजाड़ दिया। इसके बाद दोनों राज्यों के बीच में सीमा प्रान्तीय आक्रमण और प्रत्याक्रमण लगातार होते रहे। सीमा के पास खेत बोने वाले किसान को भरोसा नहीं होता था कि वह अपने खेत को काट सकेगा। सीमा के पास वाले परिश्रमी लोगों ने अपने उपजाऊ खेत छोड़ दिये। उनके स्थान में जङ्गल उग आया।

१७०७ में भीषण संग्राम हुआ। कमायू की सेना ने जूनिया गढ़ ले लिया। पांडवखाल और देवली खाल दर्रों में घुस कर कमायूं के राजा ने लोहबा को लूटा। दूसरे वर्ष लोहबागढ़ी के किले में अपनी सेना भर दी। दूसरे वर्ष बाढन और लोहबा के मार्गों से जो सेनायें भेजी गई वे विजयी होकर सिमली के पास एक दूसरे से मिल गई। सिमली के पास ही पिंडर और अलकनन्दा की घाटियां मिलती हैं। यहां से कमायूं की सेनायें अलकनन्दा के बहाव की ओर चलकर श्रीनगर पहुँची और गढ़वाल की राजधानी पर अपना अधिकार कर लिया। गढ़वाली राजा भागकर देहरादून पहुँचा। श्रीनगर एक ब्राह्मण को दे दिया गया। लूट का धन सरदारों और निर्धनों को बांट दिया गया। लेकिन १७१० में गढ़वाल का राजा फिर लौट आया। प्रदीपशाह के समय में कुछ शान्ति रही। इससे गढ़वाल और देहरादून समृद्धिशाली हो गये। इसकी समृद्धि से आकर्पित होकर रुहेला सरदार नजीब खां ने १७५७ ईस्वी में देहरादून पर अपना अधिकार कर लिया। १७७० तक वहां उसका अधिकार बना रहा। १७४५ में रुहेला सेनापति हफीज खां ने १०,००० सेना लेकर कमायूं पर चढ़ाई की और अलमोड़ा पर अधिकार कर लिया। इसी समय कमायूं के राजा ने गढ़वाल से सहायता मांगी। गढ़वाल ने कुछ संकोच के बाद कमायूं की सहायता के लिये दूनागिरि और द्वारा में अपनी सेना दी। यहां गढ़वाल और कमायूं की सेनायें एक दूसरे से मिल गई। लेकिन रुहेलों ने संयुक्त सेनाओं को हटा दिया। पर किसी तरह सन्धि हो गई और रुहेले लोग ३ लाख रुपया लेकर लौट आये।

कुछ वर्ष बाद गढ़वाल और कमायूं में फिर युद्ध छिड़ा। इस पर गढ़वाली राजा की जीत हुई। १७७२ में उसके अपने बेटे प्रधमन को प्रधमन चन्द नाम से कमायूं की गद्दी पर बिठाया। देहरादून में कुछ मुसलमान किसान बस गये। इधर गड़बड़ी फैली और वहां सिक्खों और गूजर लुटेरों का प्रभाव बढ़ने लगा। गढ़वाली राजा इस ओर भली भांति अपनी प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ था।

गढ़वाल और कमायूं की गद्दी पर भाई भाई राजा राज्य करते थे। फिर भी दोनों में युद्ध छिड़ गया। इसी गड़बड़ी के समय गुरखाओं ने आक्रमण किया और १७९० में अलमोड़ा पर अधिकार कर लिया। दूसरे गुरखाओं की सेनायें गढ़वाल में लंगूर गढ़ी तक घुस गई लंगूर गढ़ी में १ वर्ष तक गुरखा लोग घेरा डाले रहे। इसी समय समाचार मिला कि चीनी सेनायें नेपाल पर चढ़ाई कर रही हैं। इसलिये गुरखा लोग गढ़वाल छोड़कर नेपाल को लौट गये।

१८०३ ई० में गुरखा लोगों ने पूरी तैयारी के साथ गढ़वाल पर चढ़ाई की। गढ़वाली राजा भाग कर देह-

देहरादून आया। लन्धौरा के गूजर राजा रामदयाल सिंह ने १२,००० सिपाहियों से उसकी सहायता की। लेकिन गढ़वाली राजा अपने साथियों के साथ मारा गया। उसका बड़ा लड़का सुदर्शन शाह ने भाग कर ब्रिटिश भारत में शरण ली। उसका भाई कांगड़ा भाग गया। १८०४ में कमायूं और गढ़वाल के बड़े प्रदेश को नैपाल के राज्य में मिला लिया गया। गुरखों के सैनिक शासन से गढ़वाल में घोर असन्तोष फैला। मन्दिरों के पास की भूमि भली प्रकार जोती बोई जाती थी। शेष भागों में जन संख्या घट गई। १८१४ ई० में गुरखों और अंग्रेजों से मुठभेड़ हो गई। अंग्रेजी सेना कई मार्गों से नैपाल पर चढ़ाई करने गई। ३५०० सिपाहियों की एक सेना गढ़वाल और कमायूं से गुरखों को निकालने में लग गई। देहरादून से ३ मील की दूरी पर कालंगा का किला घेर लिया गया। गुरखा वीरता से लड़े। लड़ाई में एक अंग्रेजी सेनापति मारा गया। लेकिन किले में पानी न रहा। जो गुरखा सिपाही पास वाले सोते से पानी लेने गये वे लौटने न पाये। विवश होकर गुरखा सरदार बचे हुये अपने ७० साथियों को लेकर घेरने-वाली अंग्रेजी सेना को चीरता हुआ पास की पहाड़ियों में चला गया। मार्ग में उसे कुछ और गुरखा साथी मिल गये। इन्हें लेकर वह जौतगढ़ (किले) में चला गया। नाहन जैथक और मलाऊं किलों पर भी चढ़ाई की गई। गोरखपुर और बिहपुर से चढ़ाई करने वाली अंग्रेजी सेना को हार खानी पड़ी थी। देहरादून में कोई निर्णय नहीं हो पाया था। लेकिन यहां गुरखों के सिपाही बहुत कम रह गये थे। वे पूर्व और पश्चिम के युद्ध क्षेत्रों में भेज दिये गये थे। इससे लाभ उठाने के लिये १८१५ में अंग्रेजों ने एक नई फौज कमायूं को भेजी। २७ अप्रैल को इस सेना ने अलमोड़ा ले लिया गुरखों ने कमायूं खाली कर दिया। जब गुरखा सेनापति अमर सिंह के पास २०० से कम सिपाही रह गये तो उसने मलाऊं और जैथक के किले खाली कर दिये। लोहवा का किला गढ़वालियों ने खाली करवा लिया था।

लड़ाई के समाप्त होने पर गुरखालियों की दशा बड़ी सोचनीय हो गई। कुछ वर्ष पहले जो शासक थे। वे अन्न दाने दाने को तरसने लगे। उनकी सब जायदाद छिन गई। कुछ गुरखाली जंगलों में भाग गये। इस प्रकार इस प्रदेश में गुरखालियों के राज्य का अन्त हो गया। गढ़वाल का बहुत छोटा भाग जो टेहरी के नाम से प्रसिद्ध है गढ़वाल का राजवंशज महाराज सुदर्शन साह को कई शर्तों के साथ सौंपा गया। शेष बड़ा भाग अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। १८३९ में यह गढ़वाल और कमायूं जिलों में बांट लिया गया। गदर के समय के गढ़वाल के राजा ने अंग्रेजों को बड़ी सहायता की। उसके बाद गढ़वाल की दशा ब्रिटिश भारत के और जिलों के समान रही।

अल्मोड़ा

अलमोड़ा के उत्तर में तिब्बत दक्षिण में नैनीताल, पश्चिम में गढ़वाल और पूर्व में नैपाल राज्य है। टनकपुर भावर को छोड़ कर अल्मोड़ा जिले का भाग हिमालय के पहाड़ी प्रदेश में स्थित है। जिले का एक तिहाई भाग पांचाचूली, नन्दा कोट आदि हिमालय की बर्फीली चोटियों के और आगे उस पार स्थित है। इस जिले के हिमागारों बर्फाच्छादित पर्वतों और नदकन्दराओं का ठीक ठीक क्षेत्रफल निकालना कठिन है। फिर भी इसका क्षेत्रफल ५६ वर्ग मील नापा गया है। जनसंख्या ५,८८,८०२ है। अल्मोड़ा जिले में सब से ऊंची हिमाच्छादित चोटियाँ तिब्बत के जल विभाजक पर नहीं हैं। यह इस विभाजक के दक्षिण में २७ से लेकर ३० मील की दूरी पर हिमाच्छादित श्रेणी के धुर दक्षिण सिरे पर स्थित है। गहरी नदी-कन्दरायें चोटियों को एक दूसरे से अलग करती हैं। सब से ऊंची (२५६८९ फुट नन्दा देवी चोटी तो गढ़वाल में स्थित है। पूर्व की ओर इसके पास वाली २४३७९ फुट ऊंची चोटी गढ़वाल और अलमोड़ा जिले की सीमा पर स्थित है। अधिक पूर्व २२३६० फुट ऊंची त्रिशूल चोटी भी सीमा पर स्थित है। २१००० फुट ऊंची एक

पहाड़ी की पीठ इस नन्दा देवी से जोड़ती है। इस पहाड़ी पीठ से एक सिरा दक्षिण पश्चिम की ओर आता है। यह पिंडरी ग्लेशियर के ऊपर उठा हुआ है और २०७४० फुट ऊंचा है। नन्दाकोट ऊंचाई २२-५३० फुट है। नन्दादेवी समूह की उत्तर की ओर उन्ताधुरा से जुड़ा हुआ है। इस ओर की चोटियां २२ ६४० फुट ऊंची हैं। नन्दादेवी समूह गङ्गा को काली नदीसे अलग करता है। पांचा चूली और दूसरी छोटी चोटियां काली जी सहायक नदियों को एक दूसरे से अलग करती है।

तिब्बत की ओर बहने वाले जल को भारत की ओर बहने वाले जल से एक पर्वत श्रेणी अलग करती है। इसकी औसत ऊंचाई समुद्र तल से १८००० फुट है। साधारण दर्रे १७००० फुट ऊंचे हैं। किसी भी स्थान पर बिना १६८०० फुट ऊंचा चढ़े तिब्बत की ओर पहुँचना सम्भव नहीं है। उन्ताधुरा और नीति दर्रोंके पास जल विभाजक श्रेणी कुछ टूट गई है। यहीं होकर गिरथी और तपथल नदियां दक्षिण की ओर बहती हैं और मलारी के पास धौली से मिलती हैं। यहां जल विभाजक १७ मील पीछे की ओर हटकर उस श्रेणी के पास हो जाता है जो बल्छा, शलशल, मड़ी, और तिंग जुंगला दर्रों को नीति दर्रे से जोड़ती है।

तिब्बत के जल विभाजक से दक्षिण की ओर नन्दाकोट पहुँचने वाली श्रेणी दक्षिण पश्चिम की ओर गढ़वाल की सीमा के पास पहुँचती है और काली और गङ्गा के बीच में जल विभाजक बनाती है। सीमा से कुछ दूर पश्चिम की ओर मुड़कर यह सरयू को सहायक) गोमती के निकास को घेर लेती है। यहां से दक्षिण पूर्व की ओर मुड़कर वह रामगङ्गा और गोमती (सरयू की सहायक) के बीच में जल विभाजक बनाती है। इसके पूर्व का पानी काली और इसकी सहायक नदियों में पहुँचता है। पश्चिम का पानी पिंडर पश्चिमी रामगङ्गा और कासी में पहुँच कर अन्त में गङ्गा में मिलती है। काली नदी कुठी-यांक्ती से बनती है। और कालापानी नदी के संगम के बाद यह काली कहलाने लगती है। इसके बाद धौली या धर्मा और गोरी नदियां दक्षिण-पूर्व की ओर बह कर काली में मिलती हैं। अन्त में सरयू नदी बागेश्वर के पास मुड़कर आती है।

काली और कमायूं पहाड़ियों की तलहटी में समतल भूमि की तङ्ग पेटी टनकपुर भाबर के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें केवल दो तीन सदा बहने वाली धारायें हैं। शेष भाग में पानी का नाम नहीं है। इसमें कंकड़ और पत्थर बिछे हुये हैं। छोटी छोटी धाराओं का पानी इनके नीचे बैठ जाता है। इससे यह बहुत खुश्क और उजाड़ मालूम होता है। केवल कहीं कहीं पेड़ हैं।

पहाड़ी प्रदेश में समतल भूमि का प्रायः अभाव है। खेत जीनेदार होते हैं। साधारण तलाओं भूमि (जिसकी सिंचाई हो सकती है) उपराओं (खुश्क) भूमि से अधिक मूल्यवान होती है। पहाड़ी भाग में सिंचाई हो जाने से निकम्मी भूमि से भी कुछ न कुछ पैदा हो जाता है। सिंचाई न हो सकने से उत्तम उपजाऊ भूमिमें भी कुछ नहीं पैदा होता है। पानी छोटी छोटी नालियों से खेतों में पहुँचाया जाता है। कोई कोई नाली एक मीलसे अधिक लम्बी होती है। काकुन मड़वा, उर्द, अरहर, चावल, गेहूँ, जौ अलमोड़ा जिले की प्रधान फसलें हैं। हल्दी, मिर्च, अदरख भी उगाई जाती है। कुछ भागों में सन चाय और महुआ होता है।

अलमोड़ा में अनाज, नमक, शक्कर ऊन और कपड़ा बाहर से आता है। ऊन और फल बाहर भेजे जाते हैं। लगभग ३०,००० मन ऊन तिब्बत से आती है, १०,००० मन अलमोड़ा जिले में होती है। प्रायः सब की सब यह बाहर भेज दी जाती है।

बांस की टोकरी और कंडी, तांबे और पीतल बनाने का काम कई स्थानों में होता है। तांबा पुराने ढङ्ग से खानों से निकाला जाता है। हाथ से कम्बल और दूसरा ऊनी कपड़ा बुनने का कुछ काम होता है। यहां जलशक्ति अपार है। यदि बिजली तैयार की जावे तो सस्ती बिजली से ऊन और दूसरे कारखाने लाभ से चल सकते हैं।

पहले भोटिया लोग ऊन और दूसरा सामान बागेश्वर और थाल तक लाते थे। यहां वे ऊन के बदले में अनाज और दूसरा सामान लेकर लौट जाते थे। इस समय भी इन दो स्थानों में तिब्बत का

व्यापार होता है। लेकिन अब भोटिया लोग अधिक दक्षिण में पहुँचने लगे हैं और सीधा लेन देन बनियों से करते हैं।

अल्मोड़ा शहर जीन के समान आकार वाली ५५०० फुट ऊंची पहाड़ी पर बसा है। पूर्व से पश्चिम तक यह पहाड़ी २ मील लम्बी है। पहाड़ी एक ओर ६४१४ फुट ऊंची कीलीमाट और दूसरी ओर ६०६६ फुट ऊंची सिमटोल पहाड़ी से जुड़ी हुई है। हीरा डुंगरी से एक पहाड़ी कोसी नदी की ओर चली गई है। अल्मोड़ा पहाड़ी के दक्षिण और पूर्व में स्वाल (शाल्मली) नदी है पश्चिम की ओर कोसी (कौशिकी) नदी है। दक्षिण के ओर इन दोनों नदियों का संगम है। दक्षिण को जाने वाली एक सड़क अल्मोड़ा पहाड़ी को दो भागों में बांट देती है। एक ओर बाजार का पश्चिमी सिरा है। दूसरी ओर परेड है। इसके पश्चिम में छावनी है। यहीं बंगलों में सिविल और फौजी अफसर रहते हैं। फोर्ट मायरा या लाल मंडी- सब से शानदार इमारत है। अल्मोड़ा के घर पत्थर और लकड़ी के बने हैं।

रेमजे कालेज, अस्पताल, गवर्नमेंट इण्टर कालेज यहां प्रसिद्ध इमारतें हैं।

बागेश्वर सरजू के दोनों किनारों पर बसा है। यहां सरजू पर पुल बना है। इसके नीचे गोमती (गुमती नदी इसमें मिलती है। प्रधान बाजार सरजू के दाहिने किनारे पर स्थित है। जनवरी मासमें संक्रान्ति का यहां बड़ा मेला होता है। इस अवसर पर भोटिया लोग यहां मुस्क, सुरागाय (यहम) की पूंछ (चंवर) नेमदा ऊन लकड़ी के बर्तन, टट्टू, भेड़ बकरी बेचने के लिये लाते हैं। अल्मोड़ा के व्यापारी सूती कपड़े, लोहे, तांबे और पीतल के बर्तन लाते हैं। पड़ोस के पहाड़ी लोग टोकरी, खाद्य पदार्थ और दूसरा सामान लाते हैं। तिब्बत के कुछ लोग यहां विचित्र सामान लाते हैं।

बागेश्वर का मन्दिर बहुत पुराना है। इसकी नींव और भी अधिक पुरानी है। कुछ लोग इसे व्याघ्रेश्वर नाम से पुकारते हैं। कहा जाता है कि एक ऋषि ने अपने तप के बल से सरयू नदी का बहाव रोक दिया। इससे लोगों को कष्ट होने लगा। शिव जी ने व्याघ्र का और पार्वती जी ने गाय का रूप धारण किया। जब व्याघ्र ने गाय पर आक्रमण किया तो ऋषि ने उसे बचाने के लिये अपना तप भंग कर दिया। और सरजू पूर्ववत बहने लगी। बागेश्वर नगर से दक्षिण में अल्मोड़ा को पश्चिम में सोमेश्वर को उत्तर पश्चिम में बैजनाथ और गढ़वाल को उत्तर में पिंडरी ग्लेशियर, मिलम घाटी (तिब्बत के लिये) और पूर्व में थाल को सड़कें जाती हैं।

बैजनाथ ३५४५ फुट की ऊंचाई पर गोमती के किनारे कत्यूर की उपजाऊ घाटी में बागेश्वर १० मील की दूरी पर बसा है। यहां काली का मन्दिर है। दूसरे भी और कई मन्दिर है।

चम्पावत ५५५६ फुट की ऊंचाई पर अल्मोड़ा से ५४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। यहीं काली कमायूं का तहसीलदार एक पुराने किले में रहता है। पहले कमायूं (कूर्मांचल) के राजा यहीं रहते थे। इस समय उसका महल खंडहर हो गया है।

द्वारहाट का बड़ा और प्रसिद्ध गांव अल्मोड़ा से २६ मील दूर है। यह अल्मोड़ा से पावड़ी (गढ़वाल) जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पहले यहां कटयुर राजाओं का निवास स्थान था। पड़ोस के खेतों में प्राचीन मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। रुहेलों ने इधर आक्रमण करके इन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। यहां अस्पताल अंग्रेजी मिडिल स्कूल और अमरीकन मिशन का अड्डा है।

गर्ब्यांगा गांव १०,००० फुट की ऊंचाई पर काली नदी के किनारे बसा है। यहां दोकपा लोग अपने तिब्बत के व्यापार का सामान इकट्ठा करते हैं। वे अपने याक (सुरा गाय) और बड़ी भेड़ों को १०,००० फुट से अधिक नीचे नहीं उतारते हैं। वे डरते हैं कि नीचे गरमी में ये कहीं मर न जावें। पहले यहां डिप्टी कलेक्टर रहता था। अब उसका दफ्तर पिथौरागढ़ चला गया है। यहां एक स्कूल है।

कोतलगढ़ (फोर्ट हेस्टिंग्स लोहा घाट में ४ मील पश्चिम में ६३२६ फुट की ऊँचाई पर स्थित है यहां एक पुराना किला बना है। कहते हैं बाणासुर यहीं रहता था।

लिपूलेख दर्रा १६७८० फुट ऊँचा है और अल्मोड़ा के धुर उत्तर-पूर्व में स्थित है; ऊपरी भाग में बरफ के ऊपर चलना पड़ता है।

लोहाघाट देवदार के वृक्षों के बीच में नैपाल की सीमा से १५ मील और अल्मोड़ा से ५३ मील की दूरी पर ५५१० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। पहले यहां छावनी थी। पर जब नैपाल की सीमा के पास फौज रखने की आवश्यकता न रही तब छावनी तोड़ दी गई। कहते हैं किसी अपराध में एक राजा ने कुछ ब्राह्मणों को हथकड़ी पहना कर यहां रक्खा था लेकिन जब ब्राह्मणों ने पास की धारा में स्नान किया तब उनकी लोहे की बेड़ी छूट गई। इसी से इसका नाम लोहा घाट पड़ गया। मसीगांव राम-गङ्गा के बायें किनारे पर द्वाराहाट से १३ मील दूर है। रामगङ्गा पर पुल बना है। यहां एक स्कूल है मिलम गांव गौरी और गुनका नदियों के संगम पर अल्मोड़ा से उन्ताधुरा होकर तिब्बत को जाने वाले मार्ग पर दर्रे से ११ मील दूर ११,४०० फुट की ऊँचाई पर बसा है। गांव के नीचे की ओर उपजाऊ कछारी भूमि है। ग्रीष्म में कुछ जई हो जाती है। यहां की जलवायु खुश्क और ठंडी है। यहां अत्यन्त ठंडी हवायें चला करती हैं। पड़ोस में कई प्रपात हैं। दर्रे की ओर चढ़ाई कठिन और सपाट है। पिननाथ का मन्दिर और गांव अल्मोड़ा से ३२ मील और द्वाराहाट से ७ मील दूर है। मन्दिर काली नदी की घाटी के ऊपर भटकोट चोटी पर बना है। यहां गुसाईं रहते हैं। पास ही उनके महन्तों की समाधि है। सम्वत् १६६१ (१६१३ ईसवी) में कमायूं के राजा उद्योतचन्द ने धातुपत्र पर लिखकर मन्दिर की जमीन शिवजी के लिये गुसाइयों को दी थी। पिनकेश्वर के अतिरिक्त यहां भैरों आदि के कई मन्दिर हैं।

यहां इस समय पेशकारी है। छावनी के बंगले अमरीकन मिशन को दे दिये गये। शोरघाटी के पड़ोस में लन्दन कोर्ट और दिल्ली कोर्ट (किला) का दृश्य बड़ा सुन्दर है। पूर्व की ओर दुर्गा श्रेणी ७००० फुट ऊँची है। पिथौरागढ़ में अमरीकन मिशन का स्कूल, अस्पताल और कोढ़ी खाना है। पुनियागिरि सारदा और नैपाल के पड़ोस में ३००० फुट ऊँचा है यहां देवी का मन्दिर है। यह महादेव से अधिक ठंडा है। यहां साल और बांस का वन है। यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर है। रानीखेत की छावनी ५९८३ फुट ऊँची है। इसके पास ही चौबटिया छावनी ६७४२ फुट ऊँची है। दोनों ही हरे भरे देवदारु और बांज के पेड़ों से घिरे हैं। पहाड़ी के ऊंचे समतल भागों पर फौजी अफसरों के बंगले बने हैं बचारकों के नीचे बाजार है। पानी पूर्व की ओर १००० फुट नीचे सोतों से आता है। मैला इकट्ठा करके देवदारु की पत्तियों से जला दिया जाता है। रानीखेत मैदान से ४६ मील की दूरी पर नैनीताल-भवाली से आनेवाली सड़क पर स्थित है। काठगोदाम से पगडंडी के मार्ग से भीमताल होकर रानी खेत केवल ४० मील दूर है।

सोमेश्वर ४७५२ फुट की ऊँचाई पर अल्मोड़ा से १८ मील की दूरी पर स्थित है। यहां एक छोटा बाजार लगता है। सोमेश्वर का मंदिर बड़ा प्राचीन है।

टनकपुर भावर सारदा नदी के किनारे पर बरमदेउ से ४ मील नीचे की ओर स्थित है। १८८० में जब बरमदेउ बाढ़ से नष्ट हो गया तब टनकपुर बसाया गया। टनकपुर का बाजार पक्का बना है। भोटिया लोग सुहागा और ऊन लाते हैं। बदले में हल्दी, मिर्च, गुड़ और कपड़ा ले जाते हैं। ऊन कानपुर की लाल इमली का एजेण्ट मोल ले लेता है। सुहागा पीलीभीत के सौदागर मोल ले आते हैं।

नैनीताल

नैनीताल का जिला कमायूं का दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में अलमोड़ा और गढ़वाल का कुछ भाग, पूर्व में नेपाल और अलमोड़ा का कुछ भाग, पश्चिम में गढ़वाल और बिजनौर के जिले, दक्षिण में पीली भीत, बरेली, रामपुर रियासत और मुरादाबाद है। कुछ दूर तक उत्तर में कोसी और पूर्व में सारदा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। क्षेत्रफल २६७७ वर्ग मील है।

नैनीताल का जिला चार भागों में बटा हुआ है :—

(१) उत्तर में पहाड़ी प्रदेश है। (२) बीच में भावर है, (३) दक्षिण में तराई है। (४) दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर मैदान है।

नैनीताल जिले के पहाड़ों की साधारण ऊँचाई ६००० फुट है। अधिक से अधिक ऊँचाई ८००० फुट है। यहां हिमालय की बाहरी और दक्षिणी श्रेणी है। गगर या गगराचल श्रेणी प्रधान है। यह कोसी नदी के दक्षिण में है। इसकी चौड़ाई आठ-दस मील है। इसकी सौंचलिया चोटी ८५०४ फुट ऊँची है। बधान टोला की ऊँचाई ८६०० फुट है। रामगढ़ के पूर्व में गगर श्रेणी लोहकोट में मिल जाती है। यहां इसकी ऊँचाई ७५३५ फुट रह जाती है। काठगोदाम के पूर्व में जो पहाड़ियां हैं उनमें सब से ऊँची चोटी देवगुरु है। सात ताल, भीम ताल, नौकुछिया ताल और मालव ताल के पड़ोस की पहाड़ियां बड़ी विषम हैं।

हिमालय की बाहरी श्रेणी के दक्षिण में सिवालिक पहाड़ियों के शेष भाग हैं। कोटा भावर की तलहटी में वे स्पष्ट दिखाई देते हैं। यहां यह छोटी छोटी पहाड़ियां एकदम मैदान के ऊपर कुछ ही सौ फुट उठी हुई हैं। यह अधिकतर बलुआ पत्थर की बनी हैं। इनके उत्तर में कोटादून की उथली घाटी है। इस प्रदेश का अधिकतर भाग वन से ढका है।

(२) भावर—पहाड़ी प्रदेश के ठीक नीचे भावर है। इसमें कहीं कहीं साल का वन है। लेकिन इसमें पानी का अभाव है। केवल बड़ी नदियों में पानी रहता है। यहां कंकड़ और पत्थर के टुकड़ों से ढका है। इसी निर्जन प्रदेश को भावर कहते हैं। इसकी चौड़ाई ८ मील से १२ मील तक है।

(३) भावर के दक्षिण में तराई है। यह दक्षिण की ओर रुहेलखंड के कृषि प्रदेश तक फैली हुई है। यह पूर्व में सारदा नदी के किनारे से पश्चिम में काशीपुर तक फैली हुई है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी औसत चौड़ाई केवल ११ मील है। यह देखने में एक निचले मैदान के समान है। यह वन और दलदल का प्रदेश है। इसके बीच बीच में कहीं कहीं खेत हैं। दक्षिण की ओर अधिक बड़े खेत हैं। उत्तर की ओर घास का जंगल है। इस ओर यह प्रदेश चरवाहों के लिये अधिक अनुकूल है। भावर के सिरे पर तराई में पानी के सोते हैं।

(४) मैदान—दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर मैदान का एक छोटा भाग है। यहीं काशीपुर की तहसील है। यह रुहेल खंड के मैदान के समान है।

भिन्न भिन्न भागों की जलवायु भिन्न है। नैनीताल का ८५ अंश फारेनहाइट से अधिक तापक्रम कभी नहीं हुआ। न यहां का तापक्रम २५ अंश फारेनहाइट से कम हुआ है। औसत वर्षा ६७ इंच है। एक वर्ष यहां १५४ इंच पानी बरसा। १८८७ में केवल ६७ इंच वर्षा हुई।

पहाड़ी लोग भावर के साधारण खेतों को पहाड़ी भाग के उपजाऊ खेतों से अधिक अच्छा समझते हैं। इसलिये पहाड़ी भाग में साधारण खेत पड़े रह जाते हैं। अक्सर पहाड़ी लोग एक एक साथ ऊँचे और नीचे भागों में खेती करते हैं। भावर के खेत जोतने के लिए शीतकाल में पहाड़ी लोग नीचे उतर आते हैं। जब भावर की फसल कट जाती है तब किसान ऊंचे पहाड़ों पर बने हुये जीनेदार खेतों को काटने के लिये जाते हैं। पहाड़ी खेत स्थायी होते हैं। लेकिन इनमें ठीक ठीक खाद नहीं डाली जाती है। न इनकी निराई (निकाई, जंगली पौधों को उखाड़ डालने का काम) होती है। निचले भागों में अप्रैल में फसल काटी जाती है। ऊंचे भागों में मई महीने में फसल कटती है। कंकड़-पत्थरों से भरी हुई भावर

की भूमि पर बहुत पतली काया (कछारी मिट्टी) की तह मिलती है। यहां खेत पास पास एक साथ नहीं हैं। ऊपर जमीन में दूर दूर बिखरे हुये मिलते हैं। जहां नहरों द्वारा सिंचाई की सुविधा है वहीं खेती हो सकती है। भावर के खेतों को जंगली जानवरों से बड़ी हानि पहुँचती है। तराई की खेती करने का ढंग बहुत कुछ मैदान की खेती की तरह है। तराई की जमीन बड़ी उपजाऊ है। सिंचाई की सब कहीं सुविधा है। थोड़े परिश्रम से ही अच्छी फसलें पैदा होती हैं। जमीन का लगान भी कम है। इसलिये तराई में खेती दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। पानी की अधिकता होने से तराई की प्रधान फसल धान है। पहाड़ी भाग में भी धान कई प्रकार का होता है। मडुआ, दाल, मक्का शाक, हल्दी, अदरख और आलू यहां की प्रधान फसलें हैं। भावर में गेहूँ सब कहीं होता है। कुछ भागों में तम्बाकू होती है। तराई में ईख अच्छी होती है। कई भागों में भांग के जंगली पौधे उगाते हैं।

नैनीताल का जिला कलाकौशल में पिछड़ा हुआ है। काशीपुर में कुछ गाढ़ा बुना जाता है। जसपुर में फर्रुखाबाद के ढङ्ग पर यह रंगा जाता है। कई रङ्ग इस जिले में हल्दी, कत्था और जङ्गली फूलों से तैयार किये जाते हैं। जेउली कोट (काठगोदाम) से नैनीताल को जाने वाली सड़क पर जौ की शराब बनाई जाती है। बाजपुर गांव घूघा नदी के बायें किनारे पर तराई की सड़क के उत्तर में स्थित है। कुछ दूर पर सड़क पर हर सोमवार को बाजार लगता है। यह काशीपुर से १२ मील और मुरादाबाद से ३२ मील दूर है।

भीमताल इस जिले की सब से बड़ी झीलों में से एक है। यह काठगोदाम और रानीबाग से रामगढ़ और अल्मोड़ा को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यह मार्ग बरखेरी घाटी में स्थित है। यह छोटी नदी भीमताल का बचा हुआ पानी गोला नदी में पहुँचाती है। भीमताल से एक सड़क भोवाली को जाती है। रामगढ़ की सड़क गागर दर्रे को जाती है। इस दर्रे की चोटी से कमायूं का सर्वोत्तम दृश्य दिखाई देता है। भीमताल समुद्र-तल से ४८०० फुट की उंचाई पर स्थित है। इसकी लम्बाई लगभग १ मील (५५८७ फुट) चौड़ाई १४६० फुट है। इसके ऊपरी भाग से आखात को सूर्य ताल कहते हैं। इसके जल का रङ्ग गहरा नीला है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसमें बस्ती का गन्दा पानी नहीं आता है। इसलिये यह पीने के लिये अच्छा है। उत्तर-पूर्व की ओर एक छोटा द्वीप है। पूर्व की ओर ही मन्दिर है। एक ओर ५० फुट लम्बा ४८ फुट ऊँचा बांध भावर की सिंचाई के लिये बनाया गया था।

बांध के दक्षिण में कमायूं के राजा का बनवाया हुआ १७ वीं सदी का पुराना मन्दिर है। यहां धर्मशाला, स्कूल और डाकखाना है।

चोर गलिया गांव में पहले डाकू आकर छिप जाते थे। इसी से इसका यह नाम पड़ा। यह उस दर्रे के पास बसा है जहाँ नन्धौर नदी पहाड़ों को छोड़ कर भावर में गिरती है। यह हल्द्वानी से २२ मील और टनकपुर से २० मील दूर है। यहां स्कूल, डाकखाना, पुलिस चौकी और वन- विभाग का बंगला है। यहां सिंचाई की छोटी छोटी नहरों का आरम्भ होता है। उत्तर की ओर मार्ग दुर्गम है।

धनपुर की छोटी जागीर पर रामपुर के नवाब का अधिकार है। इसमें धनपुर बिजैपुर का छोटा गांव और साल का वन है। गांव से कुछ दूरी पर नवाब का बंगला है। यह गांव किछा तहसील के गदरपुर परगने में प्रायः मध्य में स्थित है।

ढिकुली गांव कोसी नदी के दाहिने किनारे पर रामनगर से ६ मील और मुरादाबाद से ५० मील दूर स्थित है। यह समुद्र तल से १३८० फुट ऊँचा है और पहाड़ी ढाल पर बसा है। गांव की भूमि कोसी नदी की एक छोटी नहर से सींची जाती है। इसके पड़ोस में एक चौरस पर पुराने खंडहर हैं। पठार पर एक पुराना कुआं है। कहते हैं पुराना वैराट पाटन यहीं था। कुछ लोगों का कहना है कि काशीपुर ही वैराट पाटन रहा होगा।

हल्द्वानी नगर समुद्र तल से १४३४ फुट की उंचाई पर बरेली से नैनीताल को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह नैनीताल से १६ मील दूर है। कहते हैं कि समीप में हल्द वृक्षों की अधिकता होने से इसका नाम हल्द्वानी पड़ा। १८३४ में पहाड़ी लोगों को व्यापारिक सुविधा पहुँचाने के लिये हल्द्वानी नगर बसाया गया। पहले घर घास फूस के बने

थे। आगे चल कर पक्के घर बन गये। भावर प्रदेश में हल्द्वानी की स्थिति अत्यन्त केन्द्रवर्ती है। यहां तक रेलवे के खुल जाने से इसका महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। शीतकाल में हल्द्वानी की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यकर रहती है। यहां स्कूल, अस्पताल, तहसील, थाना और डाकखाना है। पड़ोस में देशी शराब बनती।

जसपुर कस्बा काशीपुर से ८ मील और नैनीताल से ५३ मील दूर है। कैलाश, पहाड़ी ५८८६ फुट ऊँची है। यह मल्वोताल के नीचे स्थित है। यह चोटी नुकीली है। इसी से इसे अक्सर महादेव का लिंग कहते हैं। चोटी पर पुराना मन्दिर है अक्तूबर के अन्त में यहां मेला लगता है। काला दुगरी कस्बा पहाड़ की तलहटी में भावर का एक नगर है। यह नैनी ताल से १६ मील दूर है। यह समुद्रतल से १३०० फुट ऊँचा है। पश्चिम की ओर निहाल नदी ने अपनी कांप की मिट्टी बिछा दी है। शेष ओर कंकड़ पत्थर हैं।

काशीपुर ढेला नदी के बायें किनारे पर नैनीताल से ४५ मील दूर है। पूर्व की ओर मुरादाबाद से रामनगर को सड़क जाती है। एक सड़क ठाकुरद्वारा को जाती है। काशीपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां तहसील, थाना, अस्पताल और बाजार है। एक मील पूर्व की ओर ऊँची भूमि पर राजा का महल भी सुन्दर बना है। इसके पड़ोस में उज्जैन की स्थिति बड़ी पुरानी है। यहां कई प्राचीन हिन्दू और बौद्ध भग्नावशेष हैं।

काठगोदाम पहाड़ियों की तलहटी में गोला नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां होकर बरेली से नैनीताल को सड़क जाती है। यह रुहेलखंड कमायूं रेलवे स्टेशन का अन्तिम स्टेशन है। रेल के आ जाने से यहां का व्यापार बढ़ गया है।

किच्छा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बरेली से ३८ मील और हल्द्वानी से २१ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और अस्पताल है। वैसे यह बहुत छोटा गांव है। कोटा हल्द्वानी तहसील का एक छोटा गांव है। इसके पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं। यह दक्का दर्रे के पास स्थित है। यह रामनगर को जाने वाली सड़क के मार्ग में पड़ता है।

लालकुआ रुहेलखंड कमायूं रेलवे का एक स्टेशन है। गांव भावर के धुर दक्षिण में तराई के जङ्गल में हल्द्वानी और किच्छा के बीच में बसा है। मल्वाताल भीमताल से ६ मील और नैनीताल से २१ मील दूर है। यह समुद्रतल से २३०० फुट ऊँचा है। भीमताल कुछ दूर उत्तर की ओर पहाड़ी चढ़ाई है। फिर एक दम मल्वाताल के लिये उतार है। मल्वाताल ४४८० फुट लम्बा और ८३३ फुट चौड़ा है। इसकी अधिक से अधिक गहराई १२८ फुट है। इसके चारों ओर पानी के तल से सपाट ऊँचे पहाड़ उठे हुये हैं। इसमें उत्तर-पश्चिम की ओर कल्सा गाड़ नदी पानी लाती है। इसकी घाटी लम्बी और तंग है। यह अपने साथ कंकड़-पत्थर भी बहुत लाती है। दूसरी ओर से गोला नदी की एक छोटी सहायक निकलती है। वर्षा ऋतु में इसके पानी मटीला हो जाता है। और ऋतुओं में यह गहरा नीला रहता है। इसमें मछलियां बहुत हैं। लेकिन पानी पीने के लिये अच्छा नहीं है। मुक्तेश्वर को स्थानीय लोग मोटेश्वर कहते हैं। यह ७५०० फुट ऊँची एक पहाड़ी की चोटी पर बसा है। यह नैनीताल से २३ मील और अलमोड़ा से १५ मील दूर है। यहां महादेव का पुराना मन्दिर है। पड़ोस में विचित्र चिन्ह हैं।

पशु चिकित्सा की १८६८ ईस्वी में यहां एक प्रयोग शाला खोली गई। प्रयोगशाला का क्षेत्रफल ३००० एकड़ है। यहां सुन्दर चीड़ और सिन्दूर (बांज) वृक्ष हैं। यहीं पंजाब, और उत्तरप्रदेश के पशुओं के डाक्टरों को शिक्षा दी जाती है।

नैनीताल शहर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह गागर श्रेणी की एक घाटी में स्थित है। इसके उत्तर में चीना पहाड़ी की चोटी ८५६८ फुट है। पश्चिम की ओर देउपठा पहाड़ी ७६८७ फुट ऊँची है। दक्षिण में अयपठा पहाड़ी ७४६१ फुट ऊँची है। नैनीताल के पूर्वी भाग में नैनीताल या झील है जिससे शहर का यह नाम पड़ा। झील का धरातल समुद्रतल से ६३५० फुट ऊँचा है। इसकी लम्बाई १५६७ गज और चौड़ाई ५०६ गज है। इसका घेरा २ मील से

ऊपर है। इसकी अधिक से अधिक गहराई ९३ फुट है। एक स्थान पर झील में गंधक का सोता है। एक सोता तल्ली ताल बाजार के पास है। उत्तर की ओर झील से सवा मील की दूरी पर चीना पहाड़ी है। दक्षिणी ढाल पर साइप्रस के पेड़ हैं। चोटी पर चूने पत्थर हैं। बीच बीच में चिकनी मिट्टी की कड़ी चट्टाने हैं पूर्व की ओर चीना खाल (दर्रा) है।

नैनीताल काठगोदाम से १६ मील और अल्मोड़ा से ३२ मील दूर है। पहले इसे त्रिऋषि सरोवर या तीन (अत्रि, पुलस्त्य, पुलस) ऋषियों का सरोवर कहते थे। वर्तमान नाम नैनी देवी के मन्दिर के कारण पड़ा है। १८८० में यहां गुरुवार से रविवार तक लगातार वर्षा हुई। एक दिन ३३ इञ्च पानी बरसा। पहाड़ियों के निचले भाग घुल कर खिसक पड़े। विक्टोरिया होटल और कुछ घर एकदम नष्ट हो गये। तभी यह मन्दिर भी नष्ट हो गया। फिर वहीं दूसरा नया मन्दिर बना है। पहले यहां ऐसा जङ्गल था कि केवल ढोर चराने वाले आते थे। यहां चीते और दूसरे जङ्गली जानवर बहुत थे। चलने वाले नियत दिन को एकत्रित हो जाते थे। फिर भी उनके बहुत से पशु नष्ट हो जाते थे। देवी को शान्ति करने के लिये यहां मन्दिर बनाया गया।

१८४२ में यहाँ कुछ बंगले और किराये के लिये घर बनाये गये। जहाँ इस समय ऊपरी बाजार है, वहां १८४५ तक जंगल था जिसमें चीते रहते थे। गदर में यहां बरेली और पीली भीत से भागकर आये हुए लोगों को शरण मिली। आगे चलकर उत्तर प्रदेश की सरकार गवर्नर और दूसरे पदाधिकारी प्रति वर्ष ग्रीष्म काल में आने लगे। दुकानों, घरों होटलों और स्कूलों की संख्या बढ़ गई। तल्ली ताल बाजार के नीचे गुरखा सिपाहियों के लिये बारकें बनीं। इस प्रकार नैनीताल एक शहर बन गया। पहले बरेली से सड़क बनी। १८८२ में काठगोदाम तक रेल खुल गई।

नौकुछिया ताल में ९ कोण हैं। इसी से यह नाम पड़ा। यह भीमताल से ढाई मील दूर है। यह १००० गज लम्बी और ७५० गज चौड़ी है। वनाच्छादित ऊंची पहाड़ियों से घिरे होने के कारण इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है। एक भाग में कमल खिलते हैं। इसके किनारे एक पुराना मन्दिर है।

रामगढ़ गांव नैनीताल से अल्मोड़ा को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यह गागर श्रेणी के ढाल पर स्थित है। यह नैनीताल से १२ मील दूर है। यहां धमशाला और डाकखाना है, यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर है।

रामनगर कस्बा कोटा भावर की प्रसिद्ध मंडी है। यह पहाड़ की तलहटी में कोसी नदी के किनारे बसा है। अल्मोड़ा से ५६ मील दूर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। यहां गढ़वाल से लाल मिर्च और मकई और तिब्बत से भोटिया लोगों के द्वारा सुहागा और ऊन बिकने आता है। यहां कई मार्ग मिलते हैं।

रानीबाग गांव काठगोदाम से ३ मील दूर है। यह बल्लिया नदी के किनारे बसा है। नदी के ऊपर लोहे का पुल है जहां से भीमताल को मार्ग गया है। यहां एक छोटा बाजार है मकर संक्रान्ति को मेला लगता है।

रुद्रपुर गांव तराई की प्रधान सड़क पर हल्द्वानी से २० मील दूर है। यहां पुलिस की चौकी और डाकखाना है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। कमायूं के राजा रुद्र चन्द्र ने इसे १५८८ ईस्वी में बसाया था। उस समय से यह तराई की राजधानी रहा। इसके पड़ोस में एक पुराने कच्चे किले के खंडहर, मन्दिर, कुंए और सती स्मारक हैं।

सात ताल के पड़ोस में कई सुन्दर ताल हैं इसी से यह नाम पड़ा। यह नैनीताल से ९ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है कहते हैं जमीन के फिसलने से इन तालों का निर्माण हुआ। एक ताल अधिक गहरा होने के कारण दूर से काला दिखाई देता है। और अभ्यन्तर मार्ग से चौथे ताल से मिला हुआ है। १८६९ में यहां २४ फुट चौड़ा बांध बनाया गया था।

सितार गंज तराई का एक व्यापारी गांव है। यहां थाना, डाकखाना और अस्पताल है।

सुल्तानपुर दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर कोसी नदी से कुछ दूर पूर्व की ओर किछा से काशीपुर को जाने वाली तराई की सड़क पर स्थित है। यह तराई का सब से बड़ा गांव है। बुधवार को बाजार लगता है।

बिजनौर

बिजनौर का कुछ त्रिभुजाकार जिला रुहेलखंड में उत्तरी-पश्चिमी कोने पर स्थित है। इसके पश्चिम में गङ्गा नदी इसे देहरादून, सहारनपुर, मुजफ्फर नगर और मेरठ जिलों से अलग करती है। उत्तर और उत्तर पूर्व में पहाड़ की तलहटी में हरद्वार से रामनगर, हलद्वानी और टनकपुर को जाने वाली कंडी सड़क इसे गढ़वाल के पहाड़ी प्रदेश से अलग करती है। पूर्व की ओर राम गङ्गा के संगम तक फीका नदी बिजनौर जिले को नैनीताल और मुरादाबाद से अलग करती है। दक्षिण की ओर कृत्रिम सीमा पर मुरादाबाद जिले की ठाकुरद्वारा, अमरोहा और हसनपुर तहसीलें स्थित हैं। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६२ मील और चौड़ाई ५६ मील है। इसका क्षेत्रफल १७६० वर्ग मील है।

बिजनौर जिले का अधिकतर भाग खुला हुआ उपजाऊ मैदान है। इसे बड़ी बड़ी नदियों और उनका सहायक नदियों ने कई भागों में बांट दिया है। उत्तरी पूर्वी भाग में वन की पतली पेटी है। धुर उत्तरी सिरे पर हिमालय की नीची पहाड़ियां हैं। वास्तव में यह पहाड़ियां सिवालिक और भावर का मिश्रण हैं। यहां तराई का अभाव है। लेकिन उत्तरी भाग में छोटे पेड़ों के वन और घास के जंगल प्रायः जाते हैं। बिजनौर जिले के प्राकृतिक प्रदेशों में वन प्रदेश सब से छोटा है। इसका क्षेत्रफल केवल २५ वर्ग मील है। यह सब का सब सरकारी रक्षित वन है। उत्तरी सिरे पर सब से ऊँची चंडी देवी का मन्दिर है। चंडी पहाड़ी की तलहटी में मैदान की उंचाई ९५० फुट है। पूर्व की ओर रामगङ्गा के आगे की भूमि समुद्रतल से केवल ७७० फुट ऊँची है। घाटियों में गीली और उपजाऊ मिट्टी है।

दक्षिण की ओर खुला हुआ प्रदेश है। यह भाग उत्तर से दक्षिण की ओर नीचा होता गया है। नदियों के एक दम किनारे ऊंचे रेतीले टीले हैं। किनारों से आगे प्रायः समतल भूमि है। नदी के पेंदे के अन्दर पानी की धारा और ऊँचे किनारों के बीच में नीची जमीन है।

पश्चिमी ऊँचा मैदान गङ्गा के प्रवाह प्रदेश को दूसरी नदियों के प्रवाह प्रदेश से अलग करता है। यह उत्तर में वन प्रदेश से लेकर धुर दक्षिणी सीमा तक चला गया है। इसके उत्तरी भाग में नागल कपास भूमि की उचाई ८५८ फुट है। दक्षिण की ओर चांदपुर के पास वाली भूमि समुद्र-तल से ७४१ फुट ऊँची है। इधर की भूमि अधिक अच्छी नहीं है। साधारण खेती होती है। जनसंख्या कम है।

मध्यवर्ती प्रदेश एक चौड़ा और कुछ नीचा भाग है। इसका वर्षा जल वान गांगन और करुला नदियां बहा ले जाती हैं। ये सब नदियां उत्तरी भाग से निकल कर दक्षिण की ओर बहती हैं। यह भाग पश्चिमी प्रदेश से कहीं अधिक अच्छा है। यहां की मिट्टी मुलायम (कुछ बालू मिली हुई) और उपजाऊ है। केवल कुछ (मील) भागों में कड़ी चिकनी मिट्टी है। सिंचाई की सब कहीं सुविधा है अच्छी खेती होने से इस भाग की जनसंख्या घनी है। प्रबल वर्षा की साल में वान नदी के पास वाली भूमि बाढ़ से डूब जाती है।

करुला नदी के पूर्व में खोह और राम गङ्गा के पास तक पूर्वी प्रदेश की तंग पेटी है। इधर अच्छा मटियार है। यहां भी अच्छी खेती होती है और जनसंख्या घनी है।

खोह पार का प्रदेश-खोह के ऊँचे किनारे के पास उच्च प्रदेश का अन्त हो जाता है। इसके आगे पूर्वी सीमा तक नीचा कछारी मैदान है। राम गङ्गा और खोह की घाटियों में उपजाऊ मिट्टी में अधिकतर भाग में खेती होती है। कुछ भाग बाढ़ से डूब जाते हैं सब नदियों के खादर प्रायः एक समान हैं।

गङ्गा खादर-पश्चिमी की ओर पश्चिमी उच्च प्रदेश के किनारे पर गङ्गा के खादर की पतली पेटी है। पहले यहां चीता आदि जङ्गली जानवर बहुत थे। इस समय भी यहां साधारण खेती होती है। ऊपर बांगर है जहां भूड़ और मटियार मिट्टी मिलती है।

गङ्गा नदी नागल के पास बिजनौर जिले को छूती है और इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है। बाला

वाली के पास गङ्गा के तट पर एक प्रसिद्ध गांव है। दारानगर पल्ली राव, रावासन कोटा वाली, लहपी गङ्गा की छोटी छोटी सहायक नदियां हैं जो इस जिले में गङ्गा से मिलती हैं।

मालिन नदी गढ़वाल में निकलती है और नजीबाबाद के पास इस जिले में प्रवेश करती है। हल्दूखता के पास इसकी कई धारायें हो जाती हैं। कुछ मील वन में बहने के बाद वे सब एक दूसरे से मिल जाती हैं। लखरहन, कटरा नाला इसकी सहायक नदियां हैं। रावली के पास मालिन गङ्गा में मिल जाती है। कहा जाता है कि मालिनी के किनारे कण्व ऋषि का आश्रम था जहां दुष्यन्त और शकुन्तला की भेंट हुई थी।

मालिन के सङ्गम के आगे छोइया नदी गङ्गा में मिलती है। इसके पड़ोस की जमीन बड़ी उपजाऊ है।

बिजनौर जिले की शेष नदियां राम गङ्गा में मिलती हैं। बान नदी अकबराबाद परगने से निकलती है। और पश्चिमी भाग में बहती है। इसके किनारे नीचे हैं। बाढ़ के दिनों में दोनों ओर की भूमि डूब जाती है। कई जगह पर इसमें सिंचाई के बांध बने हैं। जहाँ बड़ी सड़कें इसे पार करती हैं वहां पुल बने हैं।

गांगन नदी बिजनौर जिले के मध्यवर्ती भाग में बहती है। उत्तर में नजीबाबाद के वन से निकल कर दक्षिण की ओर बहती है। बिजनौर जिले में ६५ मील टेढ़ी चाल से बहने के बाद यह मुरादाबाद जिले में पहुँचती है। इसकी तली गहरी है। इस लिये बाढ़ के दिनों में भी इसका पानी किनारों के ऊपर नहीं पहुँचता है। बिजनौर जिले में गांगन की सहायक नदियां कथेली और पिलखत है।

खोह नदी गढ़वाल की पहाड़ियों से निकलती है। इस जिले में ३५ मील बहने के बाद रफतपुर के पास राम गङ्गा में मिल जाती है। इसमें सुखराव सांच, सोत आदि कई कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। इससे यह एक बड़ी नदी हो जाती है। लेकिन इसका बहुत सा पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। इसलिये यह प्रायः पांज रहती है।

राम गङ्गा गढ़वाल की ऊपरी श्रेणी से निकलती है। पहाड़ी प्रदेश में बहुत दूर बहने के बाद कालागढ़ गांव के पास यह बिजनौर जिले में प्रवेश करती है। यहां यह काफी बड़ी नदी दिखाई देती है और वर्षा की बाढ़ से पड़ोस के गांवों को बड़ी हानि पहुँचाती है। इसकी धारा गहरी और चौड़ी है। गरमी की ऋतु में भी कुछ ही स्थानों में पांज होती है। फिर भी यह नाव चलाने योग्य नहीं है। लकड़ी के बेड़े अवश्य बहाये जाते हैं। शेखपुर खादर के पास यह मुरादाबाद जिले में पहुँचती है। खोह, डुंगरैया नाला, धारा, बनैल, पीली, और फीका रामगङ्गा की सहायक नदियां हैं।

देहरादून, गढ़वाल, नैनीताल और अलमोड़ा को छोड़ कर बिजनौर जिले की जलवायु और सब जिलों से अच्छी और शीतल है। अधिक ऊंचाई और कुछ वन प्रदेश होने से इसका तापक्रम मैदान के दूसरे जिलों से कुछ कम रहता है। वार्षिक वर्षा ४३ इञ्च होती है। फिर भी ४२ फीसदी जमीन ऐसी है जिसमें खेती नहीं होती है। धान, गेहूँ, जौ, बाजरा, ईख, कपास और तिलहन यहां की प्रधान फसलें हैं।

यहां गुड़ और शक्कर बनाने का काम बहुत होता है। इसमें यहां लगभग ७०,००० जुलाहे रहते हैं जो गाढ़ा, गजी, चौथाई, लमगजा और दूसरा कपड़ा बुनते हैं। आबनूस (काली लकड़ी) की बढ़िया नक्कासी का काम नगीना में होता है। चामपुर में लोहे का काम होता है। बालावाली नजीबाबाद और नगीना में कुछ शीशे का काम भी होता है।

बिजनौर शहर कुछ ऊंची नीची भूमि पर गङ्गा के बायें किनारे से ३ मील की दूरी पर बसा है। यहां से नगीना को पक्की सड़क गई है। गङ्गा के दूसरे किनारे से पक्की सड़कें मुजफ्फर नगर और मेरठ को गई हैं। यहां का बाजार यहां के एक कलक्टर की स्मृति में पामरगंज कहलाता है। बिजनौर एक छोटा शहर है। इसकी जनसंख्या २०,००० से कुछ कम है। यहां एक हाई स्कूल और जिले का केन्द्र है। जेबी चाकू और जनेऊ यहां से बाहर भेजे जाते हैं, कहते हैं बिजनौर को राजा वेणु ने बसाया था। राजा अपनी प्रजा से किसी प्रकार कर नहीं लेता था और बिजना (पंखा) बनाकर और बेच कर अपना निर्वाह करता था। से इस नगर का यह नाम पड़ा।

चांदपुर यह बिजनौर से २१ मील दक्षिण

ओर एक पुराना कस्बा है। यहां गाढ़ा गजी और मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। दारानगर गङ्गा के ऊंचे किनारे पर बिजनौर से ६ मील दक्षिण की ओर बसा है। गंज या बाजार आध मील दक्षिण की ओर है। यहां कार्तिक में गङ्गा-स्नान का एक बड़ा मेला लगता है। धामपुर बिजनौर से २४ मील पूर्व-दक्षिण की ओर है। यह खोह नदी के ऊंचे दाहिने पर बसा है। पड़ोस में कई बाग और ताल हैं। रेलवे स्टेशन आध मील दूर है। तहसील उत्तर की ओर है।

कीरतपुर मालिन नदी से दो मील दूर एक ऊंचे किनारे पर बसा है। यह एक पुराना नगर है। पड़ोस में कई पुराने भग्नावशेष हैं। बजार सड़क पर लगता है।

मन्दावर मालिन के ऊंचे किनारे पर बिजनौर से ८ मील की दूरी पर स्थित है। इसके पड़ोस में कई प्राचीन खेरे और भग्नावशेष हैं।

अफजलगढ़ राम गङ्गा से दो मील की दूरी पर बसा है। इसके उत्तर में धारा और बीच में नचना (छोटी नदियां) बहती हैं। १७४८ ईस्वी में अफजल खां नामी रुहेला सरदार ने इसे बसाया था। उत्तर की ओर उसने यहां ईंटों का किला भी बनवाया था जो गदर के बाद तोड़ दिया गया। इस समय इसके खंडहरों में जंगल उग आया है।

मोरध्वज एक पुराना टूटा फूटा किला नजीबाबाद से कोट द्वारा को जाने वाली सड़क पर नजीबाबाद से ६ मील दूर है। पहले इसके पड़ोस में एक बड़ा शहर था। इसके भग्नावशेष मीलों तक फैले हुये हैं। इस किले और शहर से इसका नाम मयूरध्वज या मोरध्वज पड़ा।

नगीना जिले का प्रधान नगर है। मुरादाबाद से हरद्वार और नजीबाबाद को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। रेलवे स्टेशन आध मील दूर है। अकबर और रुहेलों के समय में यह एक विख्यात नगर था। रुहेलों ने यहां एक किला बनवाया था। गदर के समय में यहां कई लड़ाईयां हुई। इस समय पुराने किले में तहसील है। यहां आबनूस के बढ़िया कामदार कलमदान सन्दूक और छड़ी बनती हैं। शीशेकी बोतलें कपड़ा और मेज पोश भी अच्छा बनता है।

नजीबाबाद समुद्रतलसे ८७५ फुट की ऊंचाई पर बिजनौर से २१ मील उत्तर-पूर्व की ओर बसा है। रेलवे स्टेशन आध मील दक्षिण की ओर है। यहां से बिजनौर, नगीना, नहटौर और हरद्वार को सड़कें जाती हैं। इसके उत्तर-पूर्व की ओर मालिन नदी बहती है। यह कपड़ा, नमक, शहद, अनाज, बांस, लकड़ी और बन की उपज की एक बड़ी मंडी है। यहां पीतल के बर्तन, सूती कपड़ा, हुक्का, देशी-जूते और कम्बल अच्छे बनते हैं।

नहटौर गांगन नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। यह बिजनौर से १६ मील दूर है। पास ही गांगन का पुल बना है। कुछ ही दूरी पर यहां से सिंचाई की एक नहर निकलती है जो पूर्वी भाग को सींचती है। यहां कपड़ा अच्छा बुना और रंगा जाताहै।

सबलगढ़ नजीबाबाद से ८ मील की दूरी पर हरद्वार को जाने वाली सड़क पर एक पुराना कस्बा है। इसके पड़ोस में पुराने किले के लिये यह स्थान बड़ा उपयुक्त था, इसके दक्षिण और पूर्व में बन है। उत्तर की ओर गङ्गा का ऊंचा किनारा और पश्चिम की ओर कोतवाली नदी के खड्ड हैं। स्योहरा कस्बा राम गंगा के ऊंचे किनारे पर बसा है। यह धामपुरसे ८ मील और बिजनौर से ३४ मील दूर है।

शेरकोट खोहनदी के (४५ फुट ऊंचे बांये किनारे पर धामपुर से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर बसा है। यहाँ से नगीना धामपुर और काशीपुर को सड़कें गई हैं। यहां गदर के समय और इससे पहले कई लड़ाइयां हुई।

मुरादाबाद

मुरादाबाद का जिला रुहेल खंड में शामिल है। इसके उत्तर में बिजनौर और नैनीताल, पूर्व में रामपुर का नया प्रदेश दक्षिण में बदायूं का जिला है। इसके पश्चिम में गङ्गा नदी बहती है जो इसे बुलन्दशहर और मेरठ जिलों से अलग करती है। मुरादाबाद का जिला कुछ कुछ आयताकार है। लेकिन इसका थोड़ा सा भाग उत्तर में बिजनौर नैनीताल के बीच में और दक्षिण की ओर बदायूं जिले के भीतर घुसा हुआ है। एक छोटा भाग चारों ओर से रामपुर रियासत से घिरा हुआ है। गङ्गा के इधर उधर बहने से मुरादाबाद का क्षेत्रफल भी घटता बढ़ता रहता है। इसका साधारण क्षेत्र फल २२९३ वर्ग मील है। जन संख्या १२,९५,००० है। इस जिले की औसत ऊंचाई समुद्र-तल से ६७० फुट है। भूमि प्रायः समतल है केवल कहीं कहीं रेतीले टीलों, नदी-तटों और उथले आखातों ने इसे विषम बना दिया है। ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। धुर उत्तर में भूमि की ऊंचाई ७६७ फुट है। दक्षिणी-पूर्वी कोने पर इसकी ऊंचाई ५८१ फुट है। पश्चिम से पूर्व की ओर भी कुछ ढाल है।

मुरादाबादके पश्चिम में गङ्गा-खादर की तङ्ग पेटी है। यह नीचा खादर ४० मील लम्बा और २ मील (उत्तर में) से ८ मील तक चौड़ा है। गंगा की धारा के एक दम पास नई कांप की मिट्टी रहती है। इसके आगे बलुई भूमि में झाऊ रहती है। अधिक आगे खुला हुआ भाग है जिसमें गंगा की बरसाती धाराओं का भाग है। प्रबल बाढ़ में यह सब प्रदेश पानी में डूब जाता है। कुछ भाग बाढ़के बाद भी पानीसे भीगे रहते हैं। इनमें अक्सर रेह हो जाता है। जिससे वहां खेती नहीं हो पाती है। साधारणतया खेती कम होती है। सरपत और बबूल बहुत हैं। इससे यहां जंगली सुअर हिरण और दूसरे जंगली जानवर बहुत हैं। जन संख्या कम है। अधिक पूर्व में जमीन कुछ अधिक ऊंची और कड़ी है। यहां ढाक होता है। बाढ़ के डर से खादर में खरीफ की फसल का कोई भरोसा नहीं रहता है। जानवरों के चरने के लिये घास अच्छी होती है। रबी की फसल में गेहूं, जौ और चना भी होता है। खादर के आगे और खादर के धरातल से दस या पन्द्रह फुट ऊंचा भूड़ का प्रदेश है। यह आठ-दस मील चौड़ा है। इसमें अधिकतर बलुई भूमि है। हवा के चलनेसे जगह जगह पर रेतीले टीले बन गये हैं। निचले भागों में कुछ अच्छी जमीन है। यहां कोई नदी भी नहीं बहती है। कुछ गांव आधे भूड़ और आधे खादर में बसे हैं। इन्हें अधेक कहते हैं।

भूड़ के आगे ऊंचा प्रदेश है। यहां की भूमि कड़ी है। अधिक वर्षा में फसलें अच्छी नहीं होती हैं। वैसे यह भाग भूड़ से कहीं अधिक अच्छा है।

कटहर—भूड़ के आगे कटहर का ऊंचा प्रदेश है। इसमें सम्भल तहसील का पूर्वी भाग और रामपुर के पड़ोस का प्रदेश शामिल है। इसकी जमीन बड़ी उपजाऊ है। कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। फसलें अच्छी होती हैं।

उत्तर और मध्य भाग के प्रदेश और भी अधिक उपजाऊ हैं। इसमें अमरोहा हसनपुर और मुरादाबाद तहसीलों के भाग शामिल हैं।

रामगंगा का खादर उपजाऊ है। जहां नदी अपनी वार्षिक बाढ़ में बालू बिछा देती है वहीं फसलें नहीं होती हैं। यह नैनीताल की तराई का अंग है। यहां कहीं बलुई और कहीं चिकनी मिट्टी है। यहां नमी अधिक है। फसलें मामूली होती हैं। इस प्रदेश को कई छोटी छोटी नदियों ने काट दिया है। मुरादाबाद जिले में केवल ८ फीसदी (१८० वर्ग मील) भूमि वीरान है। इसमें झाऊ का जंगल शामिल है। इसमें रेहवाले भाग शामिल हैं। कुछ भागों में जंगल है।

मेखस और दूसरी घास होती है। आबादी के पड़ोस में फलों के बगीचे हैं। शेष भागों में ज्वार, बाजरा, अरहर मूंग, मोठ, गन्ना, धान, गेहूँ, जौ चना और दूसरी फसलें, होती हैं।

कारबार

कलाबत्तू और सल्मा की कामदार टोपियां अमरोहा में बनती हैं। सूती, रेशमी या मखमली कपड़े पर सूत या रेशम के धागे से यह काम होता है। सल्मा लखनऊ या सूरत से आता है। कलाबत्तू दिल्ली से आता है।

साड़ी की किनारी पर भी इस तरह का काम होता है।

चूना तैयार करने के लिये हर साल ५०,००० मन चूने का पत्थर मुरादाबाद से आता है। पिंडोल और कंकड़ पड़ोस में ही मिल जाता है।

गङ्गा के खादर में लूनिया मिट्टी बहुत है। हसन-पुर में इससे शोरा बनता है। साल में दो बार शोरा खरीदने वाले फर्रुखाबाद से आते हैं। बहजोई के शीशे के कारखाने में भी इसकी मांग है।

रेह कई गांवों में अधिकता से मिलता है लगभग एक लाख मन रेह रामपुर रियासत और बिजनौर को भेज दिया जाता है। कुछ रेह चमड़ा कमाने, तम्बाकू में मिलाने और कपड़ा धोने के काम आता है।

इस जिले में लगभग सवा लाख मन अरहर उर्द और मूँग की पैदावार होती है। घरेलू काम के लिये सब कहीं दाल दली जाती है पर बाहर भेजने के लिये चन्दौसी के आठ कारखानों में दाल तैयार की जाती है। यह दाल पंजाब (फौज के लिये) रंगून और गुजरात को भेजी जाती है।

यहां १५ लाख मन धान होता है। धान कूटने का काम औरतें करती हैं। एक औरत एक दिन में धान कूट कर २८ सेर साफ चावल तैयार कर लेती है। अधिकतर यह घरेलू धन्धा है पर मुरादाबाद में चावल तैयार करने का एक बड़ा कारखाना है। यहां का चावल नैनीताल और आस पास के भागों को भेजा जाता है।

सभल में सींगों का रद्दी हिस्सा खाद के लिये बहुत मिल जाता है। इसी से यहां १ लाख मन आलू पैदा होते हैं। बीज का आलू फर्रुखाबाद देहरादून और पटना से आता है।
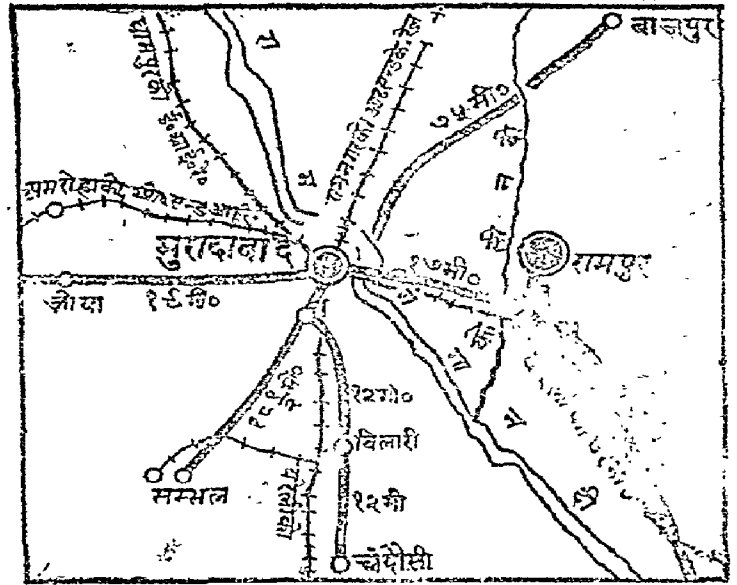
मुगलपुर, रेहरी और नगली में चूड़ियां बनती हैं। चूड़ी बनाने के लिये कच्चा शीशा छबीला सराय (जि० बुलन्द शहर) और अकराबाद (जि० अलीगढ़ से मंगाया जाता है। झाऊ की सस्ती लकड़ी खादर से भट्ठी जलाने के लिये मिलती है।

बहजोई में बहुत बड़ा कारखाना है। इसमें दो बहुत बड़ी भट्टियां हैं। एक एक भट्ठी में ८ क्रूसिबिल हैं। हरएक क्रूसिबिल में ५ मन की जगह है। रोजाना ५० मन कच्चे माल की जरूरत पड़ती है और ७००) का पक्का माल तैयार होता है। दिल्ली अजमेर बनारस, इलाहाबाद और मेरठ में इसे बेचने के लिये एजेंसियां हैं। शीशे की चिमनी, और तरह तरह के बर्तन बनते हैं। सम्भल में कंघी बनाने के ८० कारखाने हैं। देशी और विलायती दोनों तर्ज की कंघियां तैयार होती हैं। इनमें पीतल आदि की सजावट भी होती है। कुछ कारखाने सींगों को सिर्फ काटते हैं और सीधा करके चिकना कर देते हैं। दूसरे कारखाने उनमें दांत बनाते हैं और कंघों पर पालिश करते हैं। कंघियां भैंस के सींग से बनती हैं। हर रोज आठ दस मन सींगों की जरूरत पड़ती है। ये सींग आगरा और पंजाब से आते हैं आठ दस हजार कंघियां रोजाना तैयार होती हैं और हिन्दुस्तान के सभी भागों को भेजी जाती हैं। सींगों

बिलारी इसी नाम की तहसील का केन्द्र है। यह मुरादाबाद से १५ मील दक्षिण की ओर है। बिलारी रेलवे स्टेशन को १½ मील पक्की सड़क जाती है। यहां गाढ़ा बुना जाता है और बाजार में साधारण व्यापार होता है।

चन्दौसी मुरादाबाद से २७ मील दक्षिण की ओर रेल का एक बड़ा स्टेशन और अनाज की प्रसिद्ध मंडी है। व्यापार बढ़ने से ही यहां शिक्षा को प्रोत्साहन मिला और यहां एक इण्टर कालेज होगया।

ढ़ियल कस्बा मुरादाबाद जिले में शामिल होते हुये भी चारों ओर से रामपुर रियासत से घिरा है। यह मुरादाबाद से नैनीताल को जाने वाली सड़क पर मुरादाबाद से २२ मील दूर है। यहां तराई की लकड़ी, चावल और दूसरा सामान बहुत आता है। नगर के आगे कोसी नदी बहती है और नगर की ओर कटाव करती आ रही है।

धनौरा कस्बा मुरादाबाद से ४३ मील और हसनपुर से १६ मील उत्तर की ओर है। यहां से गजरौला रेलवे स्टेशन के लिये पक्की सड़क जाती है। यह व्यापार की एक बड़ी मन्डी है। हर बृहस्पतिवार को बड़ा बाजार लगता है। कहा जाता है कि अवध की नवाबी सरकार के नाबे खां नामी एक कर्मचारी ने इसे बसाया था। दिलारी ठाकुर द्वारा तहसील का एक बड़ा गांव है।

गजरौला गांव और रेलवे स्टेशन है। यह मुरादाबाद से २३ मील दूर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। अमरोहा, हसनपुर और धनौरा का कुछ व्यापार यहां आने लगा है।

हसनपुर कस्बा तहसील का केन्द्र स्थान है। यह मुरादाबाद से ४२ मील और गजरौला रेलवे स्टेशन से ६ मील दक्षिण की ओर है। यहां सम्भल, अमरोहा, रेहरा (गंगा-घाट) आदि कई स्थानों को सड़कें जाती हैं। हसनपुर गंगा की घाटी के ऊपर एक भूड़ के ऊंचे टीले पर बसा है। इससे यहां का पानी खादर की ओर जाने वाले गहरे नालों में तेजी से बह जाता है। यहां दशहरा को मेला लगता है। पीर मजीद के मकबरे के पास हर साल मुसलमान एक बार इकट्ठा होते हैं। यहां दुसूती कपड़ा अच्छा बुना जाता है। १६३४ में हसन खां नामी एक पठान ने गुसाइयों को भगाकर यहां अपना अधिकार कर लिया तभी से इसका नाम हसनपुर पड़ गया। कैथल का पुराना गांव चंदौसी से २ मील दक्षिण और मुरादाबाद से २७ मील दूर है। यहां राजपूतों की बड़ी बस्ती थी। दिल्ली के सुल्तान फीरोजशाह ने इसे नष्ट कर दिया। आगे चल कर राजपूत फिर यहां बस गये। लेकिन उनका जोर न रहा।

कांठ का प्रसिद्ध कस्बा मुरादाबाद से १८ मील की दूरी पर रामगङ्गा के ऊंचे किनारे पर बसा है। मुरादाबाद से सहारनपुर को जाने वाली रेलवे का स्टेशन पास ही है। यहां होकर एक सड़क हरद्वार को जाती है। गेहूँ, चना चावल और सूती कपड़े का यहाँ बहुत व्यापार होता है यहाँ सूती कपड़ा अच्छा बुना जाता है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। यहाँ एक स्कूल और एक जूनियर हाई स्कूल है। पहले कांठ को मान नगर नाम से पुकारते थे।

कुंदरखी कस्बा मुरादाबाद से १? मील पश्चिम की ओर चन्दौसी को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पास ही पूर्व की ओर रेलवे स्टेशन है। इसे कुन्दन गिरि नामी एक गुसाईं ने बसाया था। इसका पुराना नाम कुन्दनगढ़ था। इसी से बिगड़ कर इसका नाम कुन्दरखी पड़ गया।

संभौला का पुराना गांव बहजोई से ४ मील पूर्व की ओर है। पहले यह बड़गूजरों के एक छोटे राज्य की राजधानी था। इस समय भी यहां बड़गूजर अधिक रहते हैं।

मुरादाबाद रामगंगा के दाहिने किनारे पर बरेली से ५६ मील की दूरी पर स्थित है। अवध रूहेलखंड (वर्तमान ईस्ट इण्डियन रेलवे) रामगंगा के एक पुल के ऊपर से पार करती है और कटघर मुहल्ले का चक्कर लगाकर मुरादाबाद जंकशन पर पहुँचती है। प्रधान लाइन उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है। इसकी एक शाखा गढ़मुक्तेश्वर और गाजियाबाद को और दूसरी शाखा चन्दौसी को जाती है। यहीं से रुहेलखंडकमायूं रेलवे की मीटर गेज लाइन काशीपुर को जाती है। यहां से एक पक्की सड़क बरेली को जाती है। रामगंगा के ऊपर सड़क और रेल का पुल एक है। पुल से दो मील आगे एक सड़क नैनीताल को जाती है। पश्चिम की ओर एक सड़क मेरठ को जाती है।

दक्षिण की ओर एक सड़क सम्भल को जाती है। गांगन को पार करने के बाद इस सड़क से एक शाखा बिलारी और चन्दौसी को जाती है। एक सड़क उत्तर पश्चिम की ओर बिजनौर को जाती है। इससे एक शाखा रामगंगा को पार करके दिलारी और ठाकुरद्वारा को जाती है।

पहले मुरादाबाद चौपला कहलाता था। यहां रामगंगा के ऊंचे किनारे के ऊपर काठेरिया राजपूतों ने एक मजबूत कच्चा किला बनवाया था। शाहजहां के के समय में सम्भल के सूबेदार ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। इसने रामगंगा के किनारे पर पक्का किला बनवाया। इसके खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। पहले इसका नाम रुस्तम नगर रक्खा गया। फिर शाहजहां को प्रसन्न करने के लिये उसके लड़के मुरादबख्श के नाम से मुरादाबाद रक्खा गया। इसी समय यहां जामा मस्जिद बनाई गई। इस के बाद सम्भल के स्थान पर मुरादाबाद राजधानी बना। चांदी और तांबे के सिक्के बनाने के लिये यहां एक टक्साल स्थापित की गई। यहां लोकोमोटिव सुपरिंटेण्डेण्ट, ट्राफिक सुपरिंटेण्डेण्ट और इक्जेक्यूटिव इंजीनियर का दफ्तर है। मुरादाबाद बहुत पुराने समय से पीतल और कलई के बर्तनों के लिये प्रसिद्ध है। यहां दो इण्टर कालेज और एक हाई स्कूल है। यहीं पुलिस ट्रेनिंग स्कूल है।

मुगलपुर पहले हिन्दुओं की बस्ती थी। फिर यहां अफगानों का अधिकार हुआ। और उन्होंने इसका नाम अफगानपुर रक्खा जो अग्वानपुर कहलाने लगा। फिर यहां मुगलों का राज्य हुआ और इसका नाम मुगलपुर पड़ गया। यह मुरादाबाद से ७ मील की दूरी पर रामगंगा के ऊंचे दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां होकर हरद्वार को सड़क जाती है। एक सड़क मुगलपुर स्टेशन और दूसरी दिलारी होकर ठाकुरद्वारा को जाती है। पुराने किले के खंडहर नगर के बाहर मिलते हैं।

सलेमपुर रामगंगा की ऊंची घाटी के ऊपर मुरादाबाद और अमरोहा से समान (२० मील) दूरी पर स्थित है शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह की स्मृति में यह नाम पड़ा। इसके पड़ोस में गढ़ी उस स्थान पर है जहां कटहर राजपूतों का किला था। पड़ोस में पुराने खंडहर हैं।

सम्भल का प्राचीन नगर मुरादाबाद से २५ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यहां से ४ मील की दूरी पर मुरादाबाद को जाने वाली सड़क सोत नदी को पार करती है। वहीं पर फीरोजपुर का पुराना किला है। इसके भीतर का महल गिरा दिया गया है केवल टूटी फूटी दीवारें शेष हैं। सम्भल कस्बा दूर दूर बसा है। सब से पुराना और मध्यवर्ती भाग कोट कहलाता है। कोट के पास ही यहां का प्राचीन हरिमन्दिर था। इस समय मन्दिर के स्थान पर मस्जिद है। बीच बीच में कई पुराने खेड़े हैं। यहां बर्छे बहुत हैं। नारंगिया जिले भर में प्रसिद्ध हैं। कहते हैं पृथिवीराज की लड़की बेला अपने पति महोबा के भरमाल के मरने पर यहां सती हुई थी। सम्भल एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां कई सराय, बाजार एक हाई स्कूल, एक जूनियर हाई स्कूल और तहसील हैं।

सिरसी कस्बा मुरादाबाद से १७ मील और सम्भल से ६ मील दूर है। बाजार सप्ताह में एक बार लगता है।

सुरजननगर फीका नदी के बायें किनारे पर मुरादाबाद से ३१ मील और ठाकुरद्वारा से दस मील दूर है। कुछ वर्ष पहले फीका नदी यहीं पर रामगंगा से मिलती थी। इस समय संगम यहां से ५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इस गांव को सुरजन सिंह नामी एक कटहरिया राजपूत सरदार ने बसाया था। इसी से इसका नाम सुरजन नगर पड़ा।

ठाकुरद्वारा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह नैनीताल की सीमा से २ मील और मुरादाबाद से २७ मील दूर है। कहते हैं कि इसे कटहरिया राजा महेन्द्र सिंह ने बसाया था। रुहेलों ने उन्हें भगा दिया। १८०५ अमीर खां पिंडारी ने इसे लूट लिया। यहां कपड़ा बुनने और छापने का काम होता है।

तिग्री गांव गंगा के किनारे मुरादाबाद से ३८ मील दूर है। दूसरे किनारे पर गढ़मुक्तेश्वर है। कार्तिक में यहां गंगा स्नान का मेला लगता है।

बरेली

बरेली का जिला रुहेलखंड के मध्य में स्थित है। इसके उत्तर में नैनीताल, पूर्व में पीलीभीत, दक्षिणपूर्व में शाहजहांपुर, दक्षिण पश्चिम में बदायूँ और पश्चिममें रामपुर का नवाबी राज्य है। रामगङ्गा के इधर उधर हो जाने से इसका क्षेत्रफल घटता बढ़ता है। इस समय इसका क्षेत्रफल ११६४ वर्ग मील है जनसंख्या १०,७२,३७६ है। १९११ में इसका क्षेत्रफल १५८० मील था। बरेली जिला एक खुला हुआ मैदान है। भूमि का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। नदियों ने मैदान को कुछ विषम और लहरदार बना दिया है। नैनीताल की सीमा के पास भूमि की ऊंचाई ६५६ फुट है। दक्षिण-पूर्व में फतेहगंज के पास ऊंचाई ५२० फुट रह गई है। उत्तरी आधे भाग में पूर्व से पश्चिम की ओर तक भूमि में कोई विशेष अन्तर नहीं है। नदियों की घाटियां भी उथली हैं। वे दोनों किनारों पर सिंचाई के काम आती हैं। अधिक दक्षिण में नदियों की घाटियां अधिक गहरी हैं उनके जल विभाजक अधिक ऊंचे है। जगह जगह पर ऊंचे रेतीले टीले हैं। फिर बरेली जिला अत्यन्त उपजाऊ है। ऊसर जमीन बहुत कम हैं। कुआं खोदने से पास ही पानी मिल जाता है। सब कहीं हरा भरा है। जनसंख्या घनी है।

बरेली जिले का उत्तरी भाग तराई का अंग है। यहां की जमीन उपजाऊ है। लेकिन जलवायु अस्वास्थ्यकर है। इस भाग को यहां भार कहते हैं। इधर के कुओं का पानी कुछ कुछ तेल की तरह और लाली लिये रहता है। इसका स्वाद अच्छा नहीं होता है।

भार के दक्षिण में खुला मैदान या देश है। ऊंची भूमि बांगर कहलाती है। नदियों में बीच बीच में बांगर की कई पेटियां हैं। इसकी मिट्टी और उर्वरता में बड़ा भेद है। उत्तर की ओर कुछ चिकनी मिट्टी है। चिकनी मिट्टी अच्छी होती है। लेकिन खपट या चपट (जिसमें लोहे का अंश रहता है) उपजाऊ नहीं होती है। बीच वाले भाग में दुमट है। दक्षिण की ओर कुछ हलकी भूड़ मिट्टी है। भूड़ा में ७५ फीसदी बालू होती है। भिन्न भिन्न बांगरों की भूमि में इतना अन्तर नहीं है। जितना बांगर और (कछार में है। नदी ऊंचे किनारे और पानी की धार के बीच की भूमि कछार कहलाती है। यह नई होती है। इसमें कहीं बालू और कहीं चिकनी मिट्टी की तहें पड़ जाती हैं। राम गङ्गा की कांप (कछारी मिट्टी) की तह ऊपर
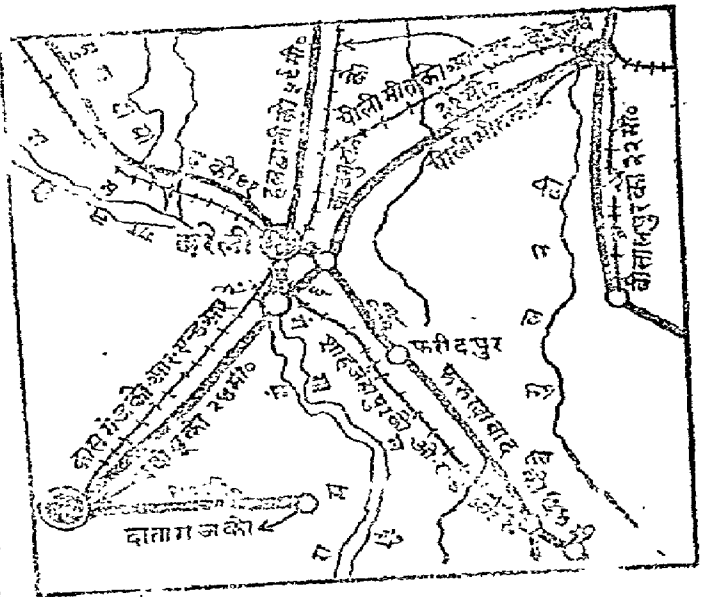
उठते उठते इतनी ऊंची हो जाती है कि इस तक बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता है। खादर (निचली भूमि) की कछारी मिट्टी प्रायः हर साल बदलती रहती है। जहां इस वर्ष बालू है वहां दूसरे वर्ष चिकनी मिट्टी की तह बिछ जाती है। इसी तरह चिकनी मिट्टी के स्थान पर बालू बिछ जाती है। कछार के धरातल कहीं १० फुट और कहीं २५ फुट ऊंचा है।

बरेली जिले की प्रधान नदी रामगंगा है। यह जिले के दक्षिणी आधे भाग में पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर बहती है। यह गढ़वाल की हिमाच्छादित श्रेणी से निकल कर बिजनौर मुरादाबाद और रामपुर (राज्य) को पार करके शाहपुर के पास बरेली जिले में आती है। सरौली, शिवपुरी और बरेली इसके

किनारे पर बसे हैं। दक्षिणी सिरे पर मनपुर गांव के आगे यह बदायूं और शाहजहांपुर के बीच में सीमा बनाती है। अन्त में शाहजहांपुर जिले को पार करके हरदोई जिले में गंगा से मिल जाती है। बरेली जिले में इसमें कई छोटी नदियां मिलती हैं। वर्षा ऋतु में फैल कर अपने मुलायम किनारों को काट कर इधर उधर बहने लगती है। रामगङ्गा का खादर चौड़ा है। इसकी धारा बांगर की ऊंची भूमि से बहुत नीची है। इसलिये यह सिंचाई के काम की नहीं है। इसके किनारे प्रायः सीधे सपाट हैं। नदी का तेज पानी निचले भाग को काट कर पोला कर देते हैं। इससे किनारा अपने बोझ से ही नीचे पानी में गिर पड़ता है। फिर पानी इसे काट कर बहा ले जाता है। नदी की तली में बालू है। इसी से रामगङ्गा अपना मार्ग बड़ी तेजी से बदलती है। बरेली शहर के पश्चिम में रामगंगा की दो धारायें हैं। इनके बीच में कई मील का अन्तर है। लेकिन रामगंगा अक्सर एक धारा को छोड़ कर दूसरी में पहुँच जाती है। गरमी की ऋतु में रामगंगा सूख कर कई स्थानों में पांज (पैदल पार करने योग्य) हो जाती है। बरेली जिले में रामगंगा में सिद्ध नदी सब से पहले मिलती है। यह छोटी नदी रामपुर राज्य से निकलती है और सिंचाई के लिये बड़ी उपयोगी है। दो जोड़ा नदी में एक जोड़ा किछा और पश्चिमी बहगुल के मिलने से बनती है दूसरा जोड़ा पश्चिम की ओर से आने वाली ठकरा और भकरा नदियों से बनता है। मीरनपुर के पास यह रामगंगा में मिल जाती है। नदी के किनारे ऊंचे हैं। केवल अत्यन्त खुश्क वर्षों में इससे कुछ सिंचाई होती है। ढोरद नदी तराई से निकलती है। इसकी तली और किनारे चिकनी मिट्टी के बने हैं। इसका पानी हल्दी और तरकारी के लिये बड़ा उपयोगी होता है। इसी से इसके किनारों पर हल्दी और शाग भाजी की खेती होती है। जगह जगह पर इसके पानी से सिंचाई होती है। संखा, धोरियानिया, नकटियां, पूर्वी बहगुल कैलास, धोहा, अरिल आदि कुछ दूसरी नदियां हैं। इनमें बहगुल और दचोई अधिक प्रसिद्ध हैं। बहगुल तराई से निकलती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बह कर वह शाहजहांपुर जिले में पहुँचती है और कीलहापुर के (तहसील जलालाबाद) पास रामगंगा में मिल जाती है।

धोहा को पहले नन्धौर कहते हैं चोरगलियां के पास यह नैनीताल की पहाड़ियों को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती है। शाहजहांपुर जिले में इसे गर्रा कहते हैं। केवल दस मील तक यह बरेली जिले को छूती है। है। शाहजहांपुर शहर (रौदा) के पास इसमें खन्नौत नदी मिल जाती है। इसका चौड़ा कछार कहीं कहीं बड़ा उपजाऊ है। लेकिन पड़ोस की बांगर जमीन अधिक उपजाऊ है। इस लिये यह नदी सिंचाई के लिये अच्छी नहीं है।

बरेली जिला बड़ा उपजाऊ है। केवल कुछ भाग में रेह है। कुछ भाग में कड़ी खपट मिट्टी खेती के योग्य नहीं है। कुछ भाग में जंगल है जहां ऊंची घास और सेमल आदि जंगली पेड़ उगते हैं। गांवों के पड़ोस में आम जामुन आदि के बगीचे हैं। गेहूँ, धान, गन्ना की फसलें प्रधान हैं। बरेली मेज, कुरसी तांगा आदि लकड़ी के सामान के लिये प्रान्त भर में प्रसिद्ध है। यह सामान शीशम और कोरां की लकड़ी से बनता है। बरेली का सुरमा सवा सौ वर्ष से प्रसिद्ध है। यहां दरी और गाढ़ा भी अच्छा बुना जाता है। कपड़ा छापने का भी काम होता है। बरेली से चना, दाल, शक्कर, चमड़ा, तिलहन, लकड़ी का सामान, दरी, सुरमा, बाहर भेजा जाता है। नमक, कपड़ा, धातु, पत्थर, चूना बाहर से आता है।

बरेली शहर इलाहाबाद के २६० मील की दूरी पर रामगंगा के किनारे ऊंची भूमि पर बसा है। शहर से पूर्व की ओर नकटिया और पश्चिम की ओर धोरानियां रामगंगा में मिलती है। यहां कई रेलवे लाइनों का जंकशन है। प्रधान लाइन (पुरानी अवधरुहेलखंड रेलवे लखनऊ से सहारनपुर को जाती है। शाखा लाइन बरेली से अलीगढ़ को जाती है। रुहेल कमायूं रेलवे यहां से कासगंज और पीलीभीत होती हुई लखनऊ को गई है। इसकी एक शाखा लाइन हल्द्वानी को जाती है। कासगंज की ओर जानेवाली रेलवे एक पुल के द्वारा रामगंगा को पार करती है। बरेली से पक्की सड़क दक्षिण-पश्चिम में बदायूं को, दक्षिण पूर्व में शाहजहांपुर को उत्तर-पूर्व में पीलीभीत को उत्तर में नैनीताल को और उत्तर-पश्चिम में मुरादाबाद को

गई है। बरेली रूहेलखंड का सब से बड़ा शहर है। इसकी जन संख्या १,९२,८८८ है।

कहते हैं १५३७ ईस्वी में बरेली को एक राजपूत ने बसाया था। १६५७ में राजा मकरन्द राय (एक खत्री) यहां का सूबेदार नियुक्त किया गया। उसने नया शहर, नया किला, शाहदाना का मकबरा और सुन्नियों की जामा मस्जिद बनवाई। उसके भाइयों ने मकरन्दपुर, आलामगरी गंज, मुलुकपुर, कुअंरपुर और विहारीपुर बसाये। १८१६, १८३७ और १८५७ में यहां पर बलवे हुये। गदर के बाद यहां छावनी बनी। पुराने शहर और छावनी के बीच में सिविल स्टेशन है। इस प्रकार बरेली शहर पश्चिम में रामगङ्गा से पूर्व में नकटिया तक फैला हुआ है। पुराना शहर वासुदेव के कोट के चारों ओर बसा है। नया शहर प्रधान सड़क के दोनों ओर बसा है जो गोलगंज से पश्चिम की ओर जाती है। इसी के दोनों ओर सुन्दर पक्की दूकानें हैं। चौक बीच में है। इसके एक ओर कोतवाली और दक्षिण की ओर तहसील है। बरेली रूहेलखंड कमिश्नरी का केन्द्र स्थान है। यहां बरेली कालेज और कई हाई स्कूल हैं। बढ़ई का काम सिखाने के लिए यहां एक विशेष स्कूल है। आइजत नगर में रुहेलखंड कमायूं रेलवे का कारखाना है। क्लटरबकगंज में टर्पेन्टाइन और वार्निश बनाने का काम होता है। आंवला कस्बा बरेली से १७ मील दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। रेलवे स्टेशन उत्तर की ओर डेढ़ मील दूर है। चौदहवीं सदी तक यह कटहरियों का प्रधान अड्डा था। कुछ समय तक यह रुहेलों की राजधानी रहा। बरेली राजधानी हो जाने पर आंवला क्षीण होने लगा। १८१३ में यह तहसील का केन्द्र बना। तब से इसकी कुछ वृद्धि हुई। आंवला दूर दूर बसा है। बीच बीच में कब्रिस्तान और पुरानी मस्जिदें हैं। कस्बे का प्रधान भाग किला या गंज कहलाता है। यहां रुहेले सरदार अपना दरबार करते थे। दूसरा भाग पक्का कटरा कहलाता है। पहले आंवला में नील का कारखाना था।

पुराना किला था। पास ही मुसलमानी किले के खंडहर हैं। यहां अरिल नदी में बांध बना है इससे पड़ोस के गांवों में सिंचाई होती है।

बहेरी कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र है और बरेली से ३१ मील दूर नैनीताल को जानेवाली सड़क पर स्थित है। रुहेलखंड कमायूं रेलवे (जो सड़क की समानान्तर चलती है) का स्टेशन कस्बे से उत्तर की ओर है। एक मील पश्चिम की ओर किछा नदी बहती है। रेलवे से पूर्व की ओर किछा नहर है। यह बहेरी, शेपुर और टांडा के मिलने से बना है। टांडा बंजारों की बस्ती है। यहां के बाजार में चावल और तराई की दूसरी उपज बिकती है। सप्ताह में तीन दिन लगता है। यहां तहसील, अस्पताल, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

देवरानियां गांव इसी नाम की नदी के किनारे बरेली से काठगोदाम जाने वाली पक्की सड़क और रुहेलखंड कमायूं रेलवे पर बरेली से १८ मील की दूरी पर स्थित है। फरीदपुर इसी नाम की तहसील और परगने का केन्द्र है। यह बरेली से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। स्टेशन पीतम्बरपुर कहलाता है। पहले फरीदपुर को पुरा कहते थे। इसे कटहरिया राजपूतों ने बसाया था। १६५७ और १६७६ के बीच में वे यहां से भगा दिये गये। यहां गाढ़ा, गुड़ और अनाज का व्यापार होता है। बाजार सप्ताह में तीन बार लगता है। महीने में एक बार देवी का मेला होता है। वसी मेला मुसलमानों का होता है।

मीर गंज गांव इसी नाम की तहसील का केन्द्र है और बरेली से २१ मील की दूरी पर मुरादाबाद को जाने वाली सड़क पर बसा है। पास स्टेशन नगरिया सादात कहलाती है। बाजार सप्ताह में दो दिन लगता है। जब से तहसील दुन्का से उठकर यहां आई तब से गांव बढ़ गया है।

रामनगर गांव बरेली से २० मील की दूरी पर आंवला से सरौली को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। चैत्र में पारसनाथ का मेला लगता है। रामनगर से उत्तर पूर्व में प्राचीन अहिछत्र के भग्नावशेष हैं। यह उत्तर पांचाल की राजधानी थी। यहां से द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद को भगा दिया था यहां अशोक ने एक स्तूप बनवाया था। यहां अग्निमित्र, भूमि मित्र, विष्णु मित्र नाम के प्राचीन सिक्के मिले हैं। प्राचीन नगर एक चार दीवारी से घिरा था। इसका घेरा ३½ मील था। चीनी यात्री ह्वान सांग ने इसका वर्णन किया है। यहां दस बौद्ध मठ थे जिनमें १००० भिक्षु रहते थे। ६ शिवाले थे। नगर के बाहर एक नागह्रद (सर्प सरोवर) था। यहीं बुद्ध भगवान ने ७ दिन तक नाग राजा को उपदेश दिया था। वहीं सम्राट अशोक ने एक स्तूप बनवाया। मुसलमानों के समय में यह उजड़ गया। प्राचीन भग्नावशेष, पड़ोस की भूमि से ८ या दस गज ऊँचे हैं। रिछा इसी नाम के परगने का केन्द्र है। नैनीताल सड़क से जो शाखा पीली भीत को जाती है वह यहीं होकर जाती है। यही सड़क रिछा रेलवे स्टेशन को मिलाती है जो काठगोदाम के मार्ग में है। इस गांव को एक राजपूत सरदार ने बसाया था।

सरौली कस्बा रामगङ्गा के दक्षिणी किनारे पर बरेली से २८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। बाजार सप्ताह में दो दिन लगता है। कार्तिक-पूर्णिमा और ज्येष्ठ दशहरा को रामगंगा स्नान का मेला लगता है।

सरदार नगर बरेली से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर बदायूँ को जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। गांव से १ मील की दूरी पर नावों के पुल के ऊपर सड़क रामगंगा को पार करती है। सरदार नगर स्टेशन उत्तर की ओर है।

सेंथल का छोटा कस्बा बरेली से १६ मील की दूरी पर नबाव गंज से ४ मील पश्चिम की ओर स्थित है। पश्चिम की ओर पुराना खेड़ा है। यहां कई बंजारे रहते हैं। बाजार सप्ताह में तीन बार लगता है।

शाही गांव पश्चिमी बहगुल के बांये किनारे पर बरेली से १७ मील की दूरी पर स्थित है। शाही कहा-रिया राजपूतों का एक प्रबल अड्डा था। १८१३ से १८८४ तक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

शिवपुर कस्बा रामगंगा के ऊँचे दाहिने किनारे पर बसा है। इसे एक चौहान राजपूत ने बसाया था। शेरगढ़ का पुराना नाम कावर है। यह बरेली से २१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। इसके पास ही किछा नहर की शाखा बहती है। कावर खेड़े का व्यास ३०० गज है। यह २५ फुट ऊँचा है। यह ५० से १०० फुट चौड़ी एक गहरी खाई से घिरा है। १६ वीं सदी में शेरशाह ने कावर के पश्चिम में शेर गढ़ (किला) बनवाया था। कहते हैं कावर राजा वेणु की राजधानी था।

सहारनपुर

सहारनपुर गंगा और यमुना के मध्य में द्वाबा का सब से अधिक उत्तरी जिला है। यमुना नदी पश्चिम में सहारनपुर को अम्बाला और करनाल जिलों से अलग करती है। गंगा नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है। इसे बिजनौर जिले से अलग करती है। उत्तर में शिवालिक श्रेणियों का जल विभाजक इसे देहरादून जिले से पृथक करता है। दक्षिण में मुजफ्फर नगर का जिला है। गङ्गा और यमुना के मार्ग में परिवर्तन के अनुसार सहारनपुर जिले का क्षेत्रफल कुछ घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल २१४२ वर्ग मील है।

सहारनपुर जिले का अधिकतर भाग ऊंचे बांगर प्रदेश है। इसका ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर है। पूर्व की ओर गंगा और पश्चिम की ओर यमुना की निचली और चौड़ी घाटियां दलदल, झील, घास और झाऊ की झाड़ियों से भरी पड़ी हैं। उत्तर की ओर शिवालिक की सपाट पहाड़ियां यमुना की घाटी से गंगा की घाटी तक चली गई हैं। पहाड़ियों के नीचे

भावर और तराई के प्रदेश हैं।

शिवालिक श्रेणी पश्चिम में यमुना की नद कन्दरा से पूर्व में गंगा के किनारे हरिद्वार तक ४६ मील लम्बी है। इसकी चौड़ाई छः मील से १० मील तक है। पहाड़ियां अलग अलग बिखरी हुई हैं। वर्षा और नालों से वे लगातार कटती जाती हैं। उत्तर-पश्चिम में यमुना से ५ मील पूर्व की ओर इसकी सबसे अधिक ऊंचाई (अमसोत चोटी) ३१४० फुट है। कई चोटियाँ ३००० फुट से अधिक ऊँची हैं। मोहन्द दर्रे के पास पहाड़ की ऊंचाई २६४६ फुट है। मोहन्द दर्रा सहारनपुर से देहरादून जाने वाली सड़क पर सहारनपुर से २८ मील की दूरी पर पड़ता है। सोलानी नदी सहायक मोहन्दराव नाम की छोटी नदी ने इस दर्रे को बनाया है। सड़क की चढ़ाई दर्रे और सुरंग तक सपाट है। रेलों का मार्ग अधिक चक्करदार होने पर भी अधिकतर लोग सहारनपुर से देहरादून को रेल मार्ग से ही जाया करते हैं। सिवालिक में और भी कई दर्रे हैं। इन सब का दक्षिणी ढाल अधिक सपाट और हिमालयों की ओर वाला उत्तरी ढाल क्रमशः है। सिवालिक और बाहरी हिमालय के बीच में प्रस्तर अंश है। सिवालिक को भूरचना की दृष्टि से तीन भागों में बांट सकते हैं। ऊपरी सिवालिक में बालू और चिकनी मिट्टी अथवा दोनों का मिश्रण है। मध्यवत सिवालिक में बलुई चट्टानें हैं। इसी में पुराने समय के स्तनधारी पशुओं के ढांचे मिले हैं। सिवालिक के नीचे वाले भाग बलुआ पत्थर के बने हैं। सिवालिक की पहाड़ियां वन से ढकी हैं। ऊंचे भाग में देवदारु और निचले भाग में साल के पेड़ अधिक हैं।

सिवालिक से एकदम नीचे वाला भाग घाट कहलाता है। पूर्वी जिलों में इसे भावर कहते हैं। इसकी चौड़ाई सब कहीं एक सी नहीं है। इधर बहने वाली सभी छोटी नदियां गरमियों में सूख जाती हैं। पश्चिम की ओर वाली नदियां यमुना में मिलती हैं। मध्य और पूर्वी भाग की नदियां गङ्गा में मिलती हैं। पहले यहां जंगल बहुत था लेकिन अब यमुना से बीस पचीस मील पूर्व की ओर सभी प्रदेश साफ कर लिया गया है और यहां खेती होने लगी है। घाट का प्रदेश एक कटे फटे पठार के समान मालूम होता है। अन्त में यह मैदान से मिल जाता है। पश्चिम और धुर पूर्व की ओर भूमि कुछ समतल है। लेकिन इधर सब कहीं भूमि छोटी छोटी नदियों और नालों से कटी फटी है। कंकड़ पत्थर की प्रधानता है। मिट्टी बहुत कम है। भावर की तरह धार प्रदेश में भी पहाड़ी नदियों का पानी तली के नीचे गहराई में बट जाता है। इसी से कुओं का खोदना प्रायः असम्भव सा है। सिंचाई का नाम नहीं है। कहीं कहीं पानी एकदम दुर्लभ है। जन संख्या बहुत कम है। घरों को बनाने के लिये अच्छी मिट्टी का अभाव है इसलिये घर घास फूस के बने हैं। गरमी की ऋतु
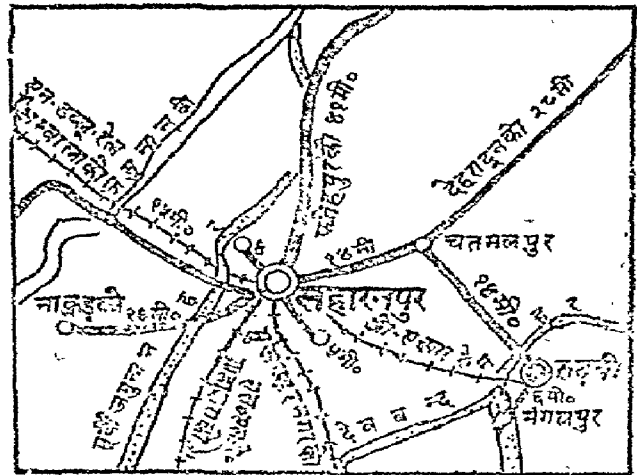
में इनमें प्रायः आग लग जाती है। फिर भी धरती उपजाऊ है। वर्षा प्रबल होती है। इसी से सिंचाई की सुविधा न होने पर भी गेहूँ कपास और दूसरी फसलें हो जाती हैं। तराई का प्रदेश निचला है। यहां नदियां फिर धरातल पर प्रगट होकर एक दूसरे से मिलती हैं। यह प्रदेश बहुत नम है। इसी से यहां मलेरिया बहुत फैलता है।

तराई का प्रदेश मैदानी भाग से मिल गया है। मैदान ही जिले का सब से बड़ा भाग है। मैदान का ऊंचा पुराना भाग बांगर कहलाता है। निचला कछारी भाग खादर कहलाता है। इसी निचले कछारी भाग में गंगा और यमुना की चौड़ी घाटियां हैं। बांगर की ऊँची भूमि ऊपर से देखने पर चपटी दिखाई देती

है। जहां नदियां या नाले हैं वहीं जमीन कुछ अधिक नीची हो गई है। ऊंचे भाग की मिट्टी चिकनी अथवा दुमट है। मैदानी भाग की भूमि प्रायः समतल होने पर भी पश्चिम की ओर अधिक ऊँची है। फैजाबाद १०६५ फुट, ज्वालापुर ६४८ फुट, धनौरा ८६१ फुट, सहारनपुर ९०० फुट और देवबन्द ८७३ फुट ऊँचा है। पूर्व की ओर उन्हीं अक्षांशों में स्थित स्थानों की ऊँचाई सब कहीं कम है। रुड़की की उँचाई ८७५ फुट है।

यमुना-खादर-इस निचले भाग की चौड़ाई दो मील तक है। ऊपरी भाग में इसकी कोई स्पष्ट सीमा नहीं मालूम होती है। फैजाबाद परगने में यमुना का ऊँचा किनारा खादर को बांगर से अलग करता है। इसी ऊंचे किनारे पर सुल्तानपुर, सरसवा, नकुड़ गङ्गोह और लखनौटी नगर बसे हैं। कई स्थानों पर ऊंचा किनारा दुहरा है। दोनों किनारों के बीच में अक्सर झीलें बन गई हैं। ऊंचे किनारे के पास सब कहीं चिकनी मिट्टी है। इसमें बढ़िया धान पैदा होता है। यमुना की धारा और दलदलों के बीच में कड़ी मिट्टी है। यहीं पुरानी धाराओं के सूखे मार्ग हैं। खादर के कुछ भागों में हलका दुमट और बालू है। कहीं कहीं मिट्टी में लगातार पानी रहने से धरती में रेह जमा हो गया है। यमुना-खादर के उत्तरी भाग में सब कहीं खेती है। दक्षिणी भाग में इस समय भी खेती के योग्य कुछ भाग उजाड़ पड़े हैं।

गङ्गा-खादर—यमुना के खादर से गङ्गा का खादर अधिक बड़ा है। वास्तव में सोलानी नदी के पूर्व में समस्त प्रदेश खादर है। लेकिन गङ्गा का खादर बहुत कम उपजाऊ है। इसके कुछ भागों में एकदम बालू है। कुछ भागों में जंगल है। बहुत कम भागों में खेती होती है। इसी से इस ओर बसी हुई जन संख्या भी कम है।

सहारनपुर जिले के अधिकतर भाग में उपजाऊ रौसली मिट्टी है। यह बालू और मुलायम चिकनी मिट्टी के मिश्रण से बनी है। निचले भागों में भारी चिकनी मिट्टी है जिसे डकर या मटियार कहते हैं। इसमें अधिकतर धान की खेती होती है। कुछ ऊंचे भागों की हलकी मिट्टी में ७५ फीसदी बालू होती है। इसे भूड़ कहते हैं। यह बहुत कम उपजाऊ होती है। सिंचाई हो जाने पर भी इसमें मामूली फसल होती है। पहाड़ी भागों की कुछ काली मिट्टी बड़ी उपजाऊ होती है। इसमें कई प्रकार की फसलें होती हैं।

सिवालिक

सोलानी नदी मोहन्द दर्रे के पूर्वी भाग का पानी बहा लाती है। यह चिलावाला, कानिया, सुख और मोहन्द राऊ के मिलने से बनती है। थप्पल इस्माइल पुर के पास इसमें रजवा और खण्डूर राऊ नाले आकर मिलती हैं। खण्डूर राऊ अधिक बड़ा है। इसमें खज-नावर, शहजहांपुर राऊ, हटनी सोत और दूसरी धारायें मिलती हैं। सोलानी नदी इन सब का पानी लेकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। सोलानी नदी बांगर या ऊंचे मैदान की पूर्वी सीमा बनाती है। इसके आगे पूर्व में खादर है। रुड़की के ऊपर सोलानी में सिपिया नदी मिलती है। सिपिया कई बरसाती नालों का पानी बहा लाती है। रुड़की के पास ही सोलानी नदी के ऊपर एक विचित्र पुल बना है। इस पुल के ऊपर गङ्गा नहर बहती है। नीचे सोलानी बहती है। यहां से सोलानी दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। मंगलपुर परगने की उत्तरी सीमा के पास इस में रातयऊ आकर मिलती है। यहां से आगे यह ऊंचे किनारे के एकदम पास होकर बहती है और इसी रूप में मुजफ्फर पुर जिले में प्रवेश करती है। अब से १०० वर्ष पहले यह सहारनपुर जिले में ही गङ्गा में मिल जाती थी। आजकल यह दल-दल डेल्टा बनाकर मुजफ़फरपुर जिले में गङ्गा से मिलती है। सरदी की ऋतु में इसमें बहुत थोड़ा पानी रहता है। अगर गंगा नहर का पानी नीचे नीचे छन-कर सोलानी में न आवे तो गरमी में यह एक दम सूख जावे, लेकिन वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। बाढ़ के घटने पर भी इसके भाग में अनेक झीलें और दलदल बन जाते हैं। सोहन दर्रे से संगम तक सोलानी नदी प्रायः ५५ मील लम्बी है।

हिंडन—सहारनपुर जिले में सोलानी के ऊंचे किनारे के अधिक आगे जमीन पश्चिम की ओर कुछ बालू होती जाती है। इधर का पानी गंगा की न पहुँच कर कई नालों के द्वारा यमुना की सहायक नदियों में पहुँचता है। बांगर की यह नदियां अपना पानी हिंडन में गिराती हैं। हिंडन नदी सिवालिक श्रेणी से एक पहाड़ी धारा के रूप में निकलती है। इसके किनारे

बहुत ऊंचे हैं। कई गांवों के पास इसकी जमीन बड़ी उपजाऊ है। कई स्थानों पर इसके पास की भूमि बलुई है जहां तरबूज को छोड़कर और कुछ नहीं उगाया जा सकता। वर्षा ऋतु में हिंडन में अक्सर बाढ़ आती है। लेकिन बाढ़ से बहुत कम हानि होती है। हिंडन नदी कुछ दूर तक हासैरा और नागल परगनों को सहारनपुर और रामपुर परगनों से अलग करती है। दक्षिण की ओर देवबन्द होकर हिंडन मुजफ़्फ़रनगर जिले में प्रवेश करती है। देवबन्द में हिंडन का पाट काफी चौड़ा है। धारा के दोनों ओर कुछ दूर तक खादर छूटा हुआ है।

हिंडन की प्रधान सहायक काली नदी है। आरम्भ में इसकी दो धारायें हैं जो हासैरा परगने में निकलती हैं और नागल परगने में एक दूसरे से मिल जाती हैं। संगम के पास ही पुल है जिसमें ऊपर से देवबन्द नहर काली नदी को पार करती है। संगम के आगे काली नदी की गहराई और चौड़ाई बढ़ जाती है। खाला, सिला और इमलियां नदियां हैं। नागदेव नदी अधिक बड़ी है। यह सिवालिक से निकलती है और सहारनपुर के दक्षिण-पूर्व में घाघ्रेकी के पास हिंडन से मिलती है। धमोला नाला सहारनपुर शहर होता हुआ पन्धोई का पानी लेकर फीरोजपुर नन्दी के पास हिंडन से मिलता है। कृष्णी या किर्सनी अधिक बड़ी नदी है। यह सहारनपुर परगने के दक्षिण भाग में निकलती है और मुजफ़्फ़रनगर जिले में हिंडन से मिलती जाती है।

जलवायु

सहारनपुर मैदान का सब से अधिक उत्तरी और सब से अधिक ऊँचा जिला है। यह पर्वतों के निकट भी है। इसलिये यहां सरदी की ऋतु मैदान के दूसरे जिलों की अपेक्षा अधिक लम्बी होती है। मई और जून के महीनों में यहां खूब गरमी पड़ती है। लेकिन यहां का तापक्रम दक्षिणी पूर्वी जिलों की अपेक्षा कम रहता है। रुड़की का औसत वार्षिक ताप-क्रम ७५ अंश फारेनहाइट रहता है। जनवरी का तापक्रम ५६ अंश और जून का तापक्रम ८६ अंश रहता है। वर्षा आरम्भ होने पर तापक्रम फिर कम होने लगता है।

सहारनपुर जिले की औसत वार्षिक वर्षा ३७ इंच है शिवालिक के समीप अधिक उंचाई और वनों के कारण और भागों की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है। हरिद्वार में ४६ इंच वर्षा होती है लेकिन जिले के दक्षिणी सिरे पर ३० इंच वर्षा होती है। यमुना की अपेक्षा गंगा के प्रदेश में अधिक वर्षा होती है।

वन

सरकारी वन २६५ वर्ग मील है। यह प्रायः सिवालिक के पहाड़ी प्रदेश में हैं। इधर की भूमि बड़ी टूटी फूटी है। सभी ओर गहरे खड्ड और सपाट ढाल हैं। कहीं कहीं पहाड़ी धाराओं के पास कुछ समतल भूमि मिलती है। मिट्टी यहां भी बड़ी निकम्मी है। इसमें कंकड़, पत्थर के टुकड़े चट्टानों के ऊपर बिछे हुये हैं। केवल कुछ घाटियों में कुछ अच्छी मिट्टी है। पहाड़ की तलहटी में भूमि अधिक अच्छी है। यहां ढाल क्रमशः है। यहां नदियों के किनारे साल और दूसरे वृक्ष हैं। कुछ भूमि खुले हुये जंगल से ढकी है। घास के मैदान और दलदल हैं। सिवालिक की पूर्वी श्रेणी रानीपुर श्रेणी है। यहां ऊँचे भागों में चीड़ और निचले भागों में खैर शीशम, ढाक, बेर और सेमल के वन हैं। कहीं कहीं साल और बांस मिलता है। धोरा खंड सिवालिक की मध्यवर्त्ती श्रेणी है। यहां पहाड़ियों पर चीड़ और निचले भागों में बकली, सईं, खैर, साल और दूसरे पेड़ हैं। सिवालिक की उत्तरी पश्चिमी श्रेणी चकौता कहलाती है। यह यमुना नदी तक चली गई है। इधर ऊँचे भागों में अच्छे वन हैं। निचले भागों में तरह तरह के पेड़ों की खिचड़ी है।

वन-प्रदेश के अतिरिक्त खादर के कई भागों में ढाक के जंगल हैं। गावों के पड़ोस में मैदान के प्रायः सभी भागों में गूलर, पाकर, बरगद, आम, नीम और वन, ऊसर, जंगल और दलदल होने पर भी सहारनपुर जिले के बड़े भाग में खेती होती है। जहां सिंचाई की सुविधा है वहां बहुत अच्छी खेती होती है रबी की प्रधान फसल गेहूँ है। प्रायः ६० फीसदी खेतों में गेहूँ होता है। नकुड़ और देवबन्द परगनों में सब से अधिक और रुड़की-ज्वालापुर परगनों में सब से कम गेहूँ होता है

पूर्व की अधिक अच्छी मिट्टी न होने से जौ और चना अधिक होता है। खरीफ की प्रधान फसल धान है। २५ फीसदी भूमि धान उगाने के काम आती है। धान के अतिरिक्त खरीफ की फसलों में ज्वार, बाजरा और अरहर की फसलें भी उगाई जाती हैं।

गंगा-नहर के किनारे रुड़की से हरद्वार

रुड़की से नहर के दोनों ओर सड़क है बाएं किनारे की सड़क कच्ची होने पर भी साइकिल और पैदल चलने वालों के लिये बड़ी अच्छी है।

पीरान कलिया गाँव बहुत छोटा है कच्चे मकान और फूस के झोपड़े हैं पर यहां मेला के दिनों में बड़ी भीड़ लगती है मजार पक्की बनी है। और सफेद पुती है। मेला के लिये नहर के दोनों ओर मैदान भी अच्छा और चौड़ा है।

धनौरी बाँध—२६ सितम्बर १६२४ ई० की बाढ़ में यह बांध टूट गया। नवम्बर १६२४ से मार्च १६२५ तक इसकी विशेष मरम्मत हुई। धार की ऊपर की ओर का एप्रान (Apron) ५० फुट चौड़ा है। धार के नीचे का एप्रान ३०० फुट चौड़ा है। इसमें ४. ५, और ४, के तीन प्रपात हैं। प्रपातों के नीचे १५३ नीव के कुए हैं।

वलांकों का टेलस ६० फुट चौड़ा है। पुल की सड़क को चौड़ा करने और पुल की मरम्मत करने में ५,२५,००० रु० व्यय हुआ।

नौ लकड़ी के फाटक और एक लोहे का फाटक है। लकड़ी के फाटकों को खोलने और बन्द करने के लिये दो दो लट्ठे लगे हैं इन्हीं में काले मोटे तार की रस्सी लपटी है। लट्ठों को घुमाने के लिये लगभग डेढ़ गज के हत्थे लट्ठों में ठुके हुए हैं।

सहारनपुर का बाटेनीकल गार्डन यह बगीचा सहारनपुर रेलवे स्टेशन से १ मील उत्तर की ओर चकराता रोड और जेल के बीच में स्थित है। यहां वृक्षों की पंक्तियां, झाड़ियां, फूलों की क्यारियां और तालाब बहुत सुन्दर ढंग से सजाये गये हैं। इधर भिन्न भिन्न जलवायु के फलों के वृक्ष लगाये गये हैं जिससे यहां के पौधे (बिहिन) न केवल भारत वर्ष के भिन्न भिन्न भागों वरन मिस्र, दक्षिणी अफ्रीका और बरमा में भी जाते हैं। १२५ एकड़ में बगीचा है। यहां पौधों के गमले (नर्सरी) हैं। कोमल पौधों को तेज धूप और पाले से बचाने के लिये शीशे और परदे लगे हैं इनके अतिरिक्त ३८ एकड़ में तरह तरह की तरकारियों की क्यारियां हैं। यहां कुछ ऐसी वनस्पतियां हैं। जिनसे अस्पतालों के लिये औषधियां तैयार की जाती हैं। कहा जाता है कि फरहबख्श नाम से यह बगीचा रुहेला सरदारों के समय (१७५०) से चला आता है। मरहठों के समय में भी इसे सहायता मिलती रही। अंग्रेजी राज्य में यह सहायता और भी अधिक बढ़ा दी गई।

इतिहास

सहारनपुर जिले का सर्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान हरिद्वार है। इसको पहले मायापुर और गङ्गाद्वार भी कहते थे। यह नगर हिमालय प्रदेश के लिये प्रधान दरवाजा है इसलिये यह सदा से प्रसिद्ध रहा है। अब से प्रायः ढाई हजार वर्ष पहले यह नगर कौशल राज्य में शामिल था। फिर यहां चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य हुआ। यहां (कलसी) सम्राट अशोक के शिला लेख मिले हैं। एक स्वर्ण स्तम्भ को फीरोज शाह यहां से दिल्ली ले गया। कहा जाता है कि यह स्वर्ण स्तम्भ जगाधारी से ७ मील दक्षिण-पश्चिम में तोवरा गांव में मिला था। बेहट के पास १७ फुट गहरा खोदने पर सुन्दर महल और बौद्ध काल के सिक्के मिले। देवबन्द भी पुराना नगर है कहा जाता है कि पांडवों ने अपने बनवास का कुछ समय यहीं बिताया था। नकुड़ की नीव भी पांडवों ने ही डाली थी। सरसवा भी पुराना नगर है। यहीं गोगा पीर पैदा हुआ था। इसके बाद यह प्रदेश मथुरा के साका शासकों के हाथ में आया। फिर यहां कुशान वंश का राज्य हुआ। गुप्तवंश के राज्य में हरिद्वार एक बड़ा नगर हो गया। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग ने हरिद्वार (मायापुर) नगर का घेरा ३½ मील बतलाया है। इसी समय से दिल्ली के तोमर वंशियों के समय तक यहां कोई प्रसिद्ध घटना नहीं हुई।

अलबरूनी ने सरसवां का जिकर शरशरह नाम से किया है। कहा जाता है। महमूद ने भी सरसवां पर हमला किया था। १२२३ ई० में नसीरुद्दीन ने राजघाट में यमुना को पार करके इस जिले पर अधिकार जमाया। १३०८ ई० में ४००० मुग़लों ने यहां

हमला किया पर अमरोहा के पास अलाउद्दीन की फौज ने उन्हें नष्ट कर दिया।

मुहम्मद तुग़लक ने शाह हारून चिश्ती की यादगार में सहारनपुर शहर बसाया। मुग़लों के हमलों से बचने के लिये यमुना के किनारे जगह जगह पर फौजी चौकियां बनाई गई। एक दौरे में फीरोजशाह को खिज़राबाद में अशोक का स्तम्भ मिला। जिसे वह दिल्ली ले गया। इसी समय सिरमौर के राजा ने मुसलमानों को कर देना स्वीकार कर लिया। एक समय शाह ने सिवालिक की पहाड़ियों में गैंडे का शिकार किया।

१३९८ ई० में तैमूर ने यहां हमला किया। उसने एक सेनापति को यमुना के बायें किनारे पर भेजा वह स्वयं गङ्गा के किनारे किनारे बढ़ा। बालाकाली घाट के पास तुगलकपुर में उसने गङ्गा को पार किया। इस जिले में उसने कई लड़ाइयां लड़ीं। पर उसने देश को बड़ी गड़बड़ी में छोड़ा। कुछ समय तक यह जिला सैय्यदों की जागीर बना रहा। फिर यहां लोदी वंश का राज्य हुआ। अन्त में बाबर ने अपने पांचवें हमले में सरहिन्द के मार्ग का अनुसरण किया और यमुना को पार करके सरसवा पहुँचा। अधिक आगे बढ़ने पर गंगोह में इब्राहिम की एक फौज से मुठभेड़ हुई।

मुग़लों ने यमुना को फिर पार किया और पानीपत की लड़ाई में पूरी विजय प्राप्त की। इस प्रकार यह जिला मुग़लों के हाथ में चला गया। हुमायूं के भागने पर कुछ समय यहां सूरशाही रही। अकबर के समय में सहारनपुर एक सरकार बन गया। देवबन्द एक दस्तूर या जिला था। सहारनपुर में ईंटों का किला बनाया गया। रुड़की में उस समय जंगल था॥। लोग ज्वालापुर को भोगपुर कहते थे। ईंटों का एक किला देवबन्द में भी था। तांबे के सिक्के सहारनपुर और हरिद्वार की टकसालों में बनते थे।

जहांगीर हरिद्वार तक आया पर उसको यहां की जलवायु अनुकूल न पड़ी इसलिये वह यहां से लौट गया। लेकिन दिल्ली के अमीर यहां अक्सर शिकार करने के लिये आया करते थे। बादशाही बाग़ में शिकार करने वालों के ठहरने के लिये एक शाही भवन बनाया गया। यमुना नहर के सिरे पर इस मकान के कुछ भाग अब तक मिलते हैं। औरंगज़ेब केसाथ में शेख मुहम्मद बका यहां का हाकिम हुआ। इसी ने "मीराते आलम" की रचना की। उसी के नाम से एक मुहल्ला बकापुरा कहलाता है।

औरंगजेब के मरते ही सिक्ख लोग उठ खड़े हुए। उन्होंने सरहिन्द को जीत लिया और द्वाबा पर हमला किया। पर इधर उनको साधारण लूट मार के सिवा कोई विशेष सफलता नहीं हुई। पर यहां दूसरी ओर से भी हमले होने लगे। रोहिल्ला लोगों ने गङ्गा को पार करना शुरू कर दिया। १७३८ ई० में नादिर शाह का हमला हुआ। इससे सारे जिले में गड़बड़ी फैल गई। इसी समय लन्धौरा के गूजर लोगों ने अपनी बहादुरी से बड़ा नाम पैदा किया। इसी समय द्वाबा में शान्ति स्थापित करने के लिये सेंधिया ने एक फौज भेजी। शुक ताल इस समय एक बड़ा दुर्ग था। मरहठा सेनापति झानकू ने यहां चढ़ाई की और गोविन्द पंडित के साथ एक टुकड़ी हरिद्वार में गङ्गा पार करने और बिजनोर से रुहेलों को भगाने के लिये भेजी। पर १७६० ई० में झानकू की अहमदशाह अब्दाली से मुठभेड़ हुई और मरहठों को पानीपत में मोरचा लेना पड़ा। पानीपत में मरहठों की हार हुई लेकिन इस लड़ाई से पंजाब में सिक्खों की तूती बोलने लगी। १७६३ ई० में उन्होने एक भारी फौज के साथ यमुना को पार किया और सहारनपुर को लूटा। दूसरे वर्ष बुड़ादल या सिक्ख फौज ने सिवालिक से लेकर मेरठ तक सारे प्रदेश पर हमला किया। १७६७ ई० में कांधला और ननौटा में सिक्खों की मुठभेड़ शाही फौज से हुई। पर शाही फौज के लौटते ही वे फिर प्रबल हो गये। शाहआलम ने मरहठों से फिर सहायता मांगी। मरहठे लोग नजब खां के कुटुम्ब से पहले ही से जलते थे क्योंकि नजब ने ही अहमदशाह अब्दाली को मदद दी थी। नजीबुद्दौला नजीबाबाद में मर चुका था। पर इस समय नजब का बेटा जाबिता खां सहारनपुर का हाकिम था। १७७१ ई० मरहठे लोग द्वाबा पर टूट पड़े। रुहेलों में ऐसा डर घुसा कि गौसगढ़ को छोड़कर वे सहारनपुर जिले को खाली कर गये, कुछ पहाड़ियों में जा छिपे। मरहठों ने हरिद्वार के पास गङ्गा को पार करके उनका पीछा किया।

॥ पर सारे जिलों में अब से कहीं अधिक

१७७२ ई० में सन्धि हो गई। महरठे लोग भी अपने देश को लौटने के लिये आतुर हो रहे थे। इसलिये जाबिता खां को फिर सहारनपुर का इलाका लौटा दिया गया। १७७४ ई० में उसने ५००००) रुपये देकर सिक्खों को भी खुश कर लिया। पर बीच में उसके विश्वासघात के लिये जाबिता खां को दंड देने के लिये १७८३ ई० में सिक्ख लोग फिर लौटे। इस बार उन्होंने केवल गङ्गा के किनारे के प्रदेश पर ही नहीं वरन् देहरादून पर भी हमला किया। जाबता खां ने अपने को गौसगढ़ में बन्द कर लिया। वहीं वह १७८५ ई० में मर गया। उसका लड़का गुलाम कादिर बड़ा बेरहम था। जब सेन्धिया जैपुर के राजा से लड़ रहा था। गुलाम कादिर ने चालाकी और रिश्वत से दिल्ली में प्रवेश किया। उसने शाह आलम की आँखें निकलवा लीं और महल की औरतों को तंग किया। मरहठों के लौटने पर वह सहारनपुर के लिये भागा। लेकिन वह रास्ते में ही पकड़ लिया गया और बुरी तरह से मार डाला गया। इस प्रकार रुहेलों के अन्त होने पर सहारनपुर में मरहठों का अधिकार हो गया।

बांदा का गनीबहादुर यहां का पहला हाकिम हुआ। उसने सिक्खों से भी समझौता कर लिया। इस प्रकार १७९० ई० में जगाधारी के रायसिंह और बुड़िया के शेर सिंह को मंगलौर, चौरासी और ज्वालापुर के कुछ भाग मिले। पर दूसरे वर्ष भैरों पन्त तांतिया ने ये भाग छीन लिये। नकुड़ पर सिक्खों का ही अधिकार रहा।

पर जब १७९७ ई० में महादाजी शिन्दे (सेन्धिया) का स्वर्ग वास हो गया तब फिर सिक्खों के हमले होने लगे। १७९६ ई० में बापू सेंधिया सहारनपुर का हाकिम हुआ। पर गड़बड़ी होने के कारण शामली और लखनौटी पर उसे फौजी शासन करना पड़ा। अन्त में करनाल के सिक्खों को हरा कर १७९७ में वह हरियाना की ओर बढ़ गया। सहारनपुर में शिम्भूनाथ (वैश्य और इमाम बख्श मरहठों के कारिन्दे प्रबन्ध करते थे।

१८०३ ई० में मरहठों और अंग्रेजों से जो नई सन्धि हुई उसके अनुसार सारा द्वाबा ईस्ट इंडिया कंपनी को मिल गया इस प्रकार सहारनपुर का जिला भी अंग्रेजों के हाथ में आगया। हरनाथ होलकर और सिक्खों के हमले कुछ वर्ष तक अवश्य होते रहे अन्त में यहां शान्ति स्थापित हो गई। १८१५ ई० में गुरखों से सन्धि होने पर देहरादून का जिला भी सहारनपुर में शामिल होगया। पर १८२५ ई० में देहरादून का जिला कमायूं कमिश्नरी में मिला दिया गया।

गदर के समय में यहां के अधिकांश निवासी शान्त रहे। पर मुसलमान और गूजर लोगों ने कई जगह मोरचा लिया। लेकिन सिक्खों और गुरखों की तुरन्त मदद मिलती रही इसलिये यहां पर गदर में कोई भयानक बात न हुई। गदर के बाद फिर यहां कोई उल्लेखनीय घटना न हुई।

बादशाही बाग एक प्रसिद्ध गांव है और सहारनपुर से चकराता जाने वाली सड़क पर स्थित है। बादशाही बाग इसी नाम की पहाड़ी धारा के किनारे तिमली दर्रे के नीचे बसा है। यहीं से सिवालिक की चढ़ाई आरम्भ होती है। कहा जाता है कि शाहजहां बादशाह ने शिकार के अवसर पर ठहरने के लिये यहां से तीन मील की दूरी पर पश्चिम की ओर फैजाबाद के पास एक आखेट महल बनवाया था। इस गांव के ऊपर कुछ ऊँचाई पर पुराने खंडहर हैं।

बेहट सहारनपुर से चकराता जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह स्थान सहारनपुर से १६ मील दूर है। इसके पश्चिम में नौगांव राव नाम का पहाड़ी नाला है। इसके पूर्व में पूर्वी यमुना नहर है। बांध बनाकर नाले को नहर के उस पार निकाल दिया गया है।

यह स्थान बहुत पुराना है। नहर खोदते समय वर्तमान तल से १७ फुट की गहराई पर एक पुराने बौद्ध उपनिवेश का पता लगा। कुछ पुराने सिक्के भी निकले। इस गांव में लगभग २००० हिन्दू और ३००० मुसलमान हैं। कहा जाता है कि मुसलमानों की बस्ती बहलोल लोदी के समय में बसाई गई थी। भगवन्तपुर इसी नाम के परगने का प्रधान नगर है। १०६१ ई० में इसे ब्राह्मणों और राजपूतों ने बसाया था। यह सोलानी नदी के ऊंचे और दाहिने किनारे पर बसा है। यहां होकर रुड़की से मोहन्द को पक्की सड़क जाती है। रुड़की यहां से ७ मील दूर है।

देवबन्द यह सहारनपुर से २२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। सहारनपुर से मुजफ्फर नगर को जानेवाली पक्की सड़क यहीं होकर जाती है। यहां से

एक सड़क रुड़की को और दूसरी बिजनौर जिले को जाती है।

देववन्द (२२,०००) बड़ा पुराना नगर है। कहा जाता है कि पांडव लोग अपने प्रथम वनवास के समय यहां रहने लगे थे। यह नाम देवी वन से बिगड़ कर बना है। यहीं एक स्थान पर देवी का पुराना मन्दिर है चैत मास में यहां मेला लगता है। दक्षिण-पूर्व की ओर देवी कुण्ड है। इसका पानी काली नदी में जाता है जो यहां से तीन मील दूर है। १५०७ ई० में सिकन्दर लोदी ने यहां एक मस्जिद बनवाई थी। औरंगजेब ने जो ४१ मस्जिदें बनवाई थी उनमें एक यहां बनवाई गई थी।

देववन्द में गाढ़ा और कम्बल अच्छे बुने जाते हैं। यहां अनाज, शक्कर और तिलहन की भी मंडी है। देववन्द के अरबी स्कूल में दूर दूर के विद्यार्थी पढ़ने के लिये आते हैं। इसे निजाम हैदराबाद और भूपाल के नवाब से सहायता मिलती है। यहां एक हाई स्कूल भी है। देववन्द के पड़ोस में जमीन नीची है। वर्षा ऋतु में यहां दलदल हो जाते हैं। नहर और रेलवे के खुलने से दलदली भूमि और भी अधिक बढ़ गई है। वर्षाऋतु में कुओं में पानी बहुत पास मिलता है। लेकिन पानी कुछ खारा रहता है।

फैजाबाद एक छोटा गांव है और बूढ़ी यमुना के बायें किनारे पर सहारनपुर से २८ मील दूर है। इसके पास ही बादशाही महल है इसे शाह ने बनवाया था और अलीमर्दान ने इसकी मरम्मत करवाई थी। गंगोह सहारनपुर से कर्नाल जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित हैं। यह बहुत पुराना नगर है। इसका पुराना भाग अधिक पुराना है। कहते हैं इसे राजा गङ्ग ने बसाया था। पश्चिमी भाग सराय कहलाता है। इस मुहल्ले में तीन बड़े और कई छोटे मकबरे हैं। अब्दुल कुद्दस का मकबरा १५२७ में बना था। जामा मस्जिद अकबर के समय में बनी थी। गदर के दिनों में यहां पर गूजरों ने कई बार आक्रमण किया।

लखनौती यमुना की सहायक सेन्दली के ऊंचे किनारे पर बसा है। यहां होकर एक पक्की सड़क सहारनपुर से कर्नाल को जाती है। कहा जाता है कि बाबर के साथ आये हुये तुर्कमान लोगों ने इस नगर को बसाया था। पूर्व की ओर पुराना तुर्कमानी किला है। ७६७ में सहारनपुर के मराहठा सूबेदार ने इस पर हमला करके अपना अधिकार किया था। बाहरी दीवार पर मराहठा तोपों के छोड़े हुये गोलों के निशान हैं। मंगलौर नगर को राजा विक्रमादित्य के राजपूत सरदार मंगलसेन ने बसाया था। नगर रुङ्गा नहर के बायें किनारे पर स्थित है। एक पक्की सड़क यहां होकर रुड़की से मुजफ्फर नगर को जाती है रुड़की यहां से ६ मील दूर है। १३२२ ई० के बलवन ने यहां एक मस्जिद बनवाई थी। यहां के मुसलमान अधिकतर जुलाहे हैं। और गाढ़ा बुनते हैं। बढ़ई का काम भी अच्छा होता है। बाजार में प्रायः पड़ोस के गांवों की चीजें बिकती हैं। नकुड़ यमुना खादर के ऊंचे किनारे पर बसा है। यमुना की धारा यहां से ५ मील दूर है। ऊंचे किनारे के नीचे एक झील है। यहां पहले यमुना की धारा रही होगी लेकिन इस समय इसमें धान उगाया जाता है। इसका पुराना नाम नकुल है। इसे पांडवों के भाई नकुल ने बसाया था। अठारहवीं सदी में यह सिक्ख सरदारों का एक केन्द्र बना। गदर में नकुड़ बुरी तरह से लूटा गया।

हरिद्वार (४०,०००) का प्राचीन नगर गंगा के दाहिने किनारे पर उस सुन्दर स्थान पर स्थित है जहां गंगा ने सिवालिक पर्वत को काटकर मैदान में प्रवेश करने के लिये द्वार बनाया है। ईस्ट इण्डियन (भूतपूर्व अवध रुहेलखंड) रेलवे की एक शाखा लक्सर से हरद्वार को आती है। १६०० ई० में वह यहां से देहरादून को पहुँचा दी गई। देहरादूनसे आने वाली पक्की सड़क रेल की समानान्तर चलती है। यहां से यह सड़क ज्वालापुर होती हुई बहादुराबाद को गई है। वहां से एक सड़क रुड़की को (जो हरद्वार से १७ मील है) और दूसरी सहारनपुर (३६ मील) को चली गई है। हरिद्वार के कई प्राचीन नाम हैं। कपिल मुनि की स्मृति में इसे आरम्भ में कपिल कहते थे। मुसलमान इतिहासकार इसे गंगाद्वार नाम से पुकारते रहे हैं। इसे मायापुर भी कहते हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग ने मायापुर को बिगाड़ कर मोयूलो कहा है। शैव लोग इसे हरद्वार और वैष्णव हरिद्वार नाम से पुकारते हैं। अकबर के समय में तांबे के सिक्के बनाने के लिये यहां एक टकसाल थी।

गंगा की कन्दरा १ मील चौड़ी है। यहां इसकी कई धारायें हो गई हैं। सब से अधिक पश्चिमी धारा हरिद्वारसे २ मील फटती है और कनखलके पास फिर गंगा में मिल जाती है। हरिद्वार इसी धारा के किनारे बसा है। इसके किनारे बने हुये घाट और मन्दिरों का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। नीम गोडा उत्तर की ओर स्थित है। कहा जाता है कि भीमसेन के घोड़े के लात मारने से आरम्भ में यह गड्ढा बन गया था। हरिद्वार में ब्रह्मकुण्ड प्रधान है। इससे मिला हुआ दक्षिण की ओर स्नान करने का घाट है। एक दीवार पर विष्णु-पाद का चिन्ह है। इसी से इसे हरि की पैढ़ी कहते हैं। यही हरिद्वार का परम पवित्र स्थान है। नीचे उतरने के लिये १०० फुट चौड़ी ६० सीढ़ियां बनी हैं। नीचे पक्का फर्श बना दिया गया है। गंगा की धारा को इस प्रकार मोड़ दिया गया है कि यहां धारा सदा किनारेके पास रहती है। स्नान करने वालों की सुविधा के लिये यहां किनारे पर लोहे की पटरी लगा दी गई है जिसे पकड़ कर वे स्नान कर सकते हैं। कुम्भ और अर्द्ध कुम्भ के अवसर पर यहां बड़ी भीड़ रहती है। साधारण भीड़ यहां प्राय: सदा रहती है।

गंगा द्वार के दक्षिण में कई मन्दिर और मठ हैं। सर्वनाश का मठ उस स्थान पर बना है। जहां ललताराव और गङ्गा का संगम है। इसके दक्षिण में मायापुर है जहां अस्पताल और थाना है। गणेश घाट के नीचे गंगा-नहर का उद्गम और पुल है। ह्वानसांग ने मायापुर का घेरा ३½ मील बतलाया है। नहर के पुल के सामने भैरों और माया देवी के मन्दिर हैं। नहर के पश्चिमी किनारे पर नारायणवलि का प्राचीन मन्दिर है। इसके पास ही राजा वेणु के दुर्ग के खंडहर हैं। मायापुर से एक मील दक्षिण की ओर नहर के पूर्वी किनारे और गंगा के बीच में कनखल है। यहां सड़क पर बड़े बड़े पत्थर जड़े हैं। यहाँ के बड़े जमींदार उदासी महन्त हैं। निर्मल, निर्वाण, और निरंजनी दूसरे बड़े अखाड़े हैं।

कनखल के दक्षिणी सिरे पर दक्षेश्वर का मन्दिर है। यहीं उमा जी के पिता राजादक्ष ने यज्ञ किया था पहले गंगा जी मन्दिर के पास होकर बहती थी। लेकिन कई बार बाढ़ आने से धारा दूर हट गई और कनखल के कई बगीचे भी नष्ट हो गये। कनखल से पश्चिम की ओर एक सड़क नहर के दूसरे पुल के ऊपर होकर ज्वाला पुर को जाती है। ज्वालापुर रेलवे स्टेशन नगरके दक्षिण ओर है। यहां नहर पर तीसरा पुल है।

हरिद्वार शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र है। यहीं गुरुकुल ऋषिकुल, ज्वालापुर महाविद्यालय और अनेक संस्कृत-पाठशालायें हैं। इनके अतिरिक्त यहां म्यूनिसिपल स्कूल हैं। एक हाई स्कूल भी है।

रामपुर शहदरा—सहारनपुर छोटी लाइन का स्टेशन है। सहारनपुर से शामली को पक्की सड़क भी यहीं होकर जाती है। पूर्वी यमुना नहर रामपुर से डेढ़ मील पश्चिम की ओर बहती है। रामपुर के मनिहार अच्छी चूड़ियां बनाते हैं। गांव में बाजार लगता है और शेख इब्राहीम पीर की दरगाह का मेला हर साल होता है।

रुड़की नगर (२०,०००) और छावनी, सोलानी नदी के दक्षिणी या दाहिने किनारे और गंगा-नहर के भी दाहिने किनारे पर बसा है। नगर के ऊपर पुल बना है। यहां से मेरठ, मुजफ्फर नगर, मोहन्द और देहरा को पक्की सड़क जाती है। नहर के पूर्व की ओर सिविल लाइन है और इसके दक्षिण में छावनी है। कच्ची सड़क ज्वालापुर और हरद्वार को गई है। रुड़की के पास ही सोलानी नदी पर एक विचित्र पुल बना है जिस पर होकर गंगानहर बहती है।

रुड़की नगर कुछ पुराना है। कहा जाता है कि एक राजपूत सरदार की धर्म पत्नी रूरी की स्मृति में इस नगर का नाम पड़ा। ब्रिटिश अधिकार होने के समय यह एक बहुत छोटा गांव था। नहर बनाने के सम्बन्ध में यहां एक लोहे की ढलाई और दूसरे कारबार का एक कार्यालय खुला। नहर बन जाने पर इसी बचे हुये सामान से रुड़की इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना हुई। छावनी का आरम्भ १८५२ में हुआ। १८६० से अंग्रेजी फौज रहने लगी। छावनी के बीच में तोपखाने की बारकें हैं। रुड़की नगर के बीच में चौक है। इधर उधर सुन्दर पक्की सड़कें हैं। यहीं तहसीली कचहरी, अस्पताल, आर्य समाज और हाई स्कूल है।

सहारनपुर शहर मेरठ से ७० मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां दिल्ली से अम्बाला जाने वाली प्रधान नार्थ वेस्टर्न रेलवे और अवध रुहेलखंड (वर्तमान ईस्ट इंडियन) रेलवे का मेल होता है। यहीं शाहदारों से आने वाली छोटी रेलवे लाइन का मेल होता है। सहारनपुर से पक्की सड़कें उत्तर की ओर चकराता, उत्तर-पूर्व की ओर देहरादून, दक्षिण पूर्व की ओर देवबन्द और मुजफ्फरपुर नगर को और दक्षिण-पश्चिम में कर्नाल और उत्तर-पश्चिम में अम्बाला को गई हैं।

कहा जाता है कि मुहम्मद तुगलक के समय में शाह ईरान चिश्ती नामी एक फकीर ने सहारनपुर की नींव डाली। इस फकीर का मकबरा देखने के लिये इस समय भी बहुत से यात्री आया करते हैं। अकबर के समय में यह एक बड़ा नगर था। रुहेला नवाबों ने भी इसे अपना केन्द्र बनाया। अंग्रेजी शासन में यह एक जिले का प्रधान नगर बना। मार्गों का केन्द्र बनजाने से यह पंजाब और द्वाबा के बीच में एक बड़ी व्यापारी मंडी बन गया है।

शहर अम्बाला जाने वाली रेलवे के उत्तर में बसा है। यह धमोला (नदी) के पश्चिम की ओर ऐसे स्थान पर बसा है जहां इसमें पन्धोई धारा मिलती है। पन्धोई में शहर के पूर्व भाग का पानी बह आता है। क्रोगी नाला दक्षिणी-पश्चिमी भाग का पानी बहाता है। धमोला के पुल के पास प्रधान सड़क में दूसरी सड़कें मिलती हैं। धमोला और सड़क के बीच में बोटेनीकल गार्डन है। कुछ दूरी पर नवाबगंज में रुहेला किला है। इसे राजा इन्द्र गिर गुसाई ने बनवाया था। यहीं कुछ समय तक मरहठों की सेना रही थी। चकराता रोड और पन्धोई के बीच में खालापार, नवाबगंज जगियान, चारजत आदि कई मुहल्ले हैं। शहर का प्रधान भाग पन्धोई के पश्चिम में है। जहां नवाबगंज सड़क पन्धोई को पार करती है वहीं अमरीकन मिशन की इमारतें हैं। धुर उत्तर की ओर भूतेश्वर महादेव का मन्दिर है। जामामस्जिद सब्जीमंडी के सामने शहर के बीच में है। इसके मीनार दूर से दिखाई देते हैं। पुरानी जामा मस्जिद १५३० में हुमायूं के समय में बनी थी।

रेलवे स्टेशनके पूर्व में सिविल लाइन और दक्षिण में कचहरी है। सहारनपुर में कपड़ा बुनने, चमड़े का सामान बनाने और लकड़ी पर नक्काशी करने का काम अच्छा होता है। यहां पड़ोसमें कत्था बनाने और बीसन और घास से कागज और बोर्ड बनाने का काम होता है। यहां एक गवर्नमेन्ट हाई स्कूल और कई छोटे स्कूल हैं।

सहारनपुर जिले का कारबार

खेड़ा, बहलोलपुर, सलेमपुर और दतौली में कंकड़ बहुत हैं।

आटा पीसने की चार मिलें सहारनपुर में हैं। गंगा और यमुना की नहरों में ६ पनचक्कियां हैं। यमुना नहर में (बेल्का, नगला, रन्दौल, बबोइल गलुमना और सलेमपुर में) और गंगा नहर में बहादुराबाद, रुड़की और आसफनगरमें पनचक्कियां हैं। ६ धान कूटने की मिलें हैं।

सहारनपुर, रामपुर और बेहट में मनिहार चूड़ियां बनाते हैं। काला शीशा फीरोजाबाद से आता है।

ज्वालापुर में कच्ची शीशियां बनती हैं।

कालाशीशा अलीगढ़ और नगीना से आता है। रुड़की में टोप बनाये जाते हैं। उनके भीतर करबी का भुआ भरा जाता है।

सहारनपुर और रुड़की में पम्प, गार्डर लोहे के फाटक, तौलने की मशीने और तौलने के बाट बनते हैं।

चमड़ा—बबूल की छाल से चड़ा कमाया जाता है। जूते के सिवा सहारनपुर में बन्दूक रखने का ढकना और गोली रखने की पेटी बनाई जाती हैं।

तेल—सरसों, तिल और अलसी का तेल पेरा जाता है।

यहां लगभग ८० मन कपास पैदा होती है। उसको घोटने के लिये सहारनपुर में ६ कारखाने हैं। बहुत सी रुई लिहाफ और रजाई में भर ली जाती है। शेष बुनने और कातने के काम आती है।

सहारनपुर में शीशम, तून, धूपी आदि की लकड़ी से मेज कुरसी बनाने का काम अच्छा होता है। लकड़ी पर तार जड़ने का काम और भी अधिक प्रसिद्ध है।

हल्दू की लकड़ी से कंघे बनाये जाते हैं।

सहारनपुर में ज्वालापुर कागज बनाने के लिये अनुकूल है।

खैर के पेड़ों से कत्था तयार हो सकता है।

पीलीभीत

पीलीभीत रुहेलखंड के छः जिलों में सबसे छोटा है इसका आकार विषम है। यह बरेली की सीमा से लेकर पूर्व में खीरी और उत्तर-पूर्व में नैपाल तक फैला हुआ है। इसके उत्तर में नैनीताल की तराई और दक्षिण में शाहजहांपुर का जिला है। इसका क्षेत्रफल १३७८ वर्ग मील और जनसंख्या ४,५०,००० है।

पीलीभीत जिले के उत्तरी-पश्चिमी तहसील अपने पड़ोस के शाहजहांपुर और बरेली जिलों की तरह मैदान का अंग है। पूर्व की ओर पूरनपुर तहसील में अधिकतर जङ्गल है। इधर खेती धीरे धीरे बढ़ रही है। यह जिला एक लहरदार प्रायः समतल मैदान है। उत्तर से दक्षिण की ओर बहने वाली नदियों ने इसे काट दिया है। नदियों की धारा के दोनों ओर खादर की नई और नीची भूमि है। ऊँचे किनारों से आगे बांगर की पुरानी और ऊँची भूमि है। औसत से बांगर कछार से २५ फुट अधिक ऊँचा है। लेकिन खनौत के पश्चिम में किनारे इतने ऊँचे हैं कि पहाड़ी टीले से मालूम पड़ते हैं। सारदा घाटी का पश्चिमी किनारा भी ऊँचा है। पीलीभीत जिले के धुर उत्तरी सिरे पर जहानाबाद परगने की उंचाई समुद्र-तल से ६६१ फुट, बीसलपुर की उंचाई ५५० फुट है। शाहजहांपुर की सीमा के पास पीलीभीत जिले की भूमि समुद्र तल से केवल ५३० फुट ऊँची है।

पीलीभीत जिले के उत्तरी-पूर्वी सिरे की भूमि गोली और कछारी है यहां ऊँची घास और झाऊ बहुत होती है। यह भाग बड़ा रोगग्रस्त है। जो लोग इधर खेती करते हैं। वे यहां स्थायी रूप से रहना पसन्द नहीं करते हैं। वे खेती के काम से छुट्टी पाते ही अपने निवास स्थानों को चले जाते हैं। धान बहुत होता है। इस भाग को वन ने दूसरे भागों से अलग कर दिया है। यह वन चौका नदी के पड़ोस और पूरन पुर के उत्तरी-पश्चिमी भागों में फैला हुआ है। इधर का पानी ठीक ठीक नहीं बहने पाता है। जङ्गल के भीतरी किनारों से कई छोटी छोटी नदियां निकलती हैं। दक्षिणी भाग की भूमि अधिक अच्छी है। फसलें खूब होती हैं। जन संख्या भी घनी है। बीच के भाग और उत्तरी भाग में बलुई जमीन बहुत है। बड़े पेड़ कम हैं। गांव दूर हैं। वन की पश्चिमी पेटी बीसलपुर और पीलीभीत की तहसीलों में माला नदी चली गई है। माला नदी को पार करने पर वन के गांव मिलते हैं। यहां की जलवायु अच्छी नहीं है। हिरण जङ्गली सुअर और दूसरे जङ्गली जानवर फसल को लगातार हानि पहुँचाते रहते हैं। इसके आगे खुला हुआ प्रदेश है। प्रायः मटियार या चिकनी मिट्टी मिलती है। यहां खेती बहुत होती है। उत्तरी भाग में धान और घास बहुत है। बीसलपुर परगना शाहजहांपुर और बदायूँ की तरह मैदान का अंग है।

इस जिले में ६८ फीसदी दमट, २१ फीसदी चिकनी और ७ फीसदी भूड़ (बलुई) मिट्टी है। यहां की जलवायु अस्वास्थ्यकर है। औसत से वर्ष में ५० इंच वर्षा होती है। धान गेहूँ, चना, जौ, बाजरा,

तिलहन और गन्ना यहां की प्रधान फसल है। गेहूँ चावल, सन शक्कर बाहर भेजी जाती है। यहां उला घास कागज बनाने के लिये बड़ी अनुकूल है। शक्कर बनाने की कई मिलें हैं। लकड़ी का सामान भी तयार किया जाता है।

इस जिले के उत्तरी सिरे का पानी वहकर सारदा नदी में पहुँचता है। पहाड़ी भाग में यह काली कहलाती है। इसी में सरजू, गोरी, पूर्वी राम गंगा और धौली नदियाँ मिलती हैं। पीलीभीत के आगे इसे चौका कहते हैं। कौरियाला के मिलने पर यह घाघरा कहलाती।

पूरनपुर के मध्यवर्ती भाग का पानी गोमती में वह आता है। गोमती नदी का निकास तराई प्रदेश में है जहां भावर का लुप्त जल फिर धरातल पर प्रगट हो जाता है। जहां आखात में इस प्रकार के जल ने काले दलदल और भीलें बना दी हैं वहीं मैनाकोट के पास गोमती एक दलदल से निकलती है। कुछ दूर तक इसके मार्ग में केवल छोटी छोटी भीलों की लड़ी है। दक्षिण की ओर गचई या गोचई, और दूसरी सहायक नदियों का पानी मिल जाने से यह बड़ी होकर शाहजहांपुर जिले में प्रवेश करती है।

खन्नौत नदी जमनिया के जंगल से निकलती है। हल्लिया का पानी लेकर यह शेरगढ़ पहुँचती है। इसके आगे बीसलपुर परगने को पार करके यह शाहजहांपुर जिले में पहुँचती है और रौसा के पास गर्रा में मिल जाती है। इसके किनारे ऊंचे हैं इसमें डबल बांढ़ भी आती है। इस लिये खन्नौता सिंचाई के काम नहीं आती है।

माला नदी उत्तरी सिरे के दलदलों से निकलती है। यह बन प्रदेश में दक्षिण की ओर बहती है। इसकी मन्द धारा घास और पौधों से और भी कम हो जाती है। इस पर स्थान स्थान पर सिंचाई के बांध बने हैं। बीसलपुर परगने में इसे कटना कहते हैं। यहां इसकी तली रेतीली और किनारे ऊँचे हो जाते हैं। कुछ दूर तक यह पीलीभीत और शाहजहां पुर जिले के बीच में सीमा बनाती है और अन्त में यह शाहजहांपुर जिले में गर्रा से मिल जाती है। माला में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं।

दिउहा नैनीताल जिले की निचली पहाड़ियों से निकलती है। पहले इसे नन्धौर कहते हैं। चोरगलियां के पास यह पहाड़ी प्रदेश को छोड़ कर मैदान में प्रवेश करती है। तभी यह देउहा कहलाने लगती है। भावर, तराई और पीलीभीत में इसे देउहा कहते हैं। शाहजहांपुर जिले में इसे गर्रा कहते हैं हरदोई जिले में यह रामगङ्गा से मिल जाती है। इसकी तली चौड़ी है। ऊँचे किनारों के बीच में इसकी चौड़ाई १ मील है। लेकिन पानी की धारा की चौड़ाई तीन चार सौ फुट से अधिक नहीं है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। ग्रीष्म में यह पांज हो जाती है। रेतीली तली वाली लोहिया नदी टेढ़ी चाल से चलकर देउहा के बायें किनारे पर मिलती है। खकरा अधिक बड़ी नदी है। इसकी तली में चिकनी मिट्टी है। दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर यह देउहा में मिलती है।

न्यूरिरिया हसेनपुर के पास जंगल में बहुत पुराने भग्नावशेष हैं। मुड़ियाघाट के मार्ग में महोफ के पास ईंटों का एक बहुत पुराना किला है। खज के पास एक पक्का ताल और कई ८ भुजा वाले कुएँ हैं। सिमरिया घासू के पास एक कच्चा किला है। जहानाबाद के पास एक बहुत पुराना खेड़ा है। सुआ पारा (पूरनपुर) के पास पुरानी ईंटों का खेड़ा है। इलाहाबाद देवल के पत्थर में पुरानी संस्कृत का लेख है।

अमरिया एक बड़ा गांव अवसारा नदी से एक मील पूर्व में स्थित है। पीलीभीत से सितार गंज (तराई) को सड़क यहां होकर जाती है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

बड़खेड़ा एक पुराना गांव है और एक ऊँचे खेड़े पर पीलीभीत से ११ मील दूर बसा है। प्रधान सड़क पर होने से यहां कुछ व्यापार होता है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

बीसलपुर पीलीभीत से २३ मील दक्षिण की ओर स्थित है। यहां से बरेली, देवरिया पूरनपुर शाहजहांपुर आदि कई स्थानों को सड़कें जाती हैं। यहां रुहेलों ने एक पुराना किला बनाया था। बीसलपुर ऊँची भूमि पर बसा है। यह देउहा और कटना नदियों के बीच में जल विभाजक बनाता है। १८७० में यहां एक बड़ा बाजार ऐसे स्थान पर बसाया गया

जहां चार सड़कें मिलती थीं। यहां अनाज, गुड़, शक्कर और जानवरों की बिक्री होती है। यह रुहेलखंड कमायूँ रेलवे का एक स्टेशन और नैपाल के व्यापार की एक मंडी है। बाहर भेजने के लिये यहां सबोई घास भी बहुत आती है। यहां गाड़ियां और चारपाई बहुत बनती हैं और बाहर भेजी जाती हैं।

देवरिया गांव बीसलपुर से पूरनपुर को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। गांव के पूर्व में खावा नदी बहती है जो खन्नौत नदी को माला से मिलाती है। इसके पास कई प्राचीन (देवल शिला आदि) भग्नावशेष हैं जहानाबाद कस्बा पीलीभीत से : मील पश्चिम की ओर है जहानाबाद अस्वारा नदी से १ मील पश्चिम की ओर ऊँची भूमि पर बसा है। कहते हैं कि यह कस्बा शाहजहां के समय में बसाया गया था। बलई पुराना स्थान है। बलई में पुराने समय की बड़ी बड़ी कलापूर्ण इंटें मिलती हैं। कहते हैं कि बलई नाम राजा बलि से बिगड़ कर बना है। पूर्व की ओर एक पुराने मन्दिर का खेड़ा है। पीलीभीत के बसने से जहानाबाद के व्यापारी वहां चले गये १८६३ में यहां की तहसील भी तोड़ दी गई। यहां एक मिडिल स्कूल और थाना है।

कबीरपुर (कस गंजा) पीलीभीत से ३५ मील और पूरनपुर से १० मील दूर है। शाहजहां पुर की सीमा पर कहते हैं कि पूरनपुर के विजेता शेख कबीर नामी रुहेला सरदार ने इसे बसाया था।

खमरिया दलेल गंज पीलीभीत से पांच मील उत्तर पश्चिम की ओर स्थित है। गांव के पूर्व में देवहा नदी बहती है। पहले यहां का व्यापार बहुत उन्नत था। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

माधो टांडा एक बड़ा गांव है। यह पीलीभीत से ३४ मील पूर्व की ओर है। यहां से उत्तर की ओर मुंडियाघाट को और दक्षिण-पश्चिम में शाहगढ़ रेलवे स्टेशन को सड़क जाती है। उत्तर और पूर्व की ओर वन पास होने से यहाँ की जलवायु अच्छी नहीं है। यहां डाकखाना थाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। न्यूरिया हुसेनपुर पीलीभीत से ६ मील उत्तर-पूर्व में कटना और खकरा नदियों के बीच में जल-विभाजक बनाने वाले ऊँची भूमि पर स्थित है। यहां कुछ बंजारे रहते हैं। यह तराई का एक छोटा कस्बा है।

पीलीभीत—बरेली से ३० मील उत्तर-पूर्व की ओर ६००० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह लखनऊ-सीतापुर बरेली लाइन (रुहेलखंड कमायूं रेलवे) का एक बड़ा स्टेशन है। बरेली में कई सड़कें मिलती हैं। शहर नया है। पीलीभीत नाम का पुराना गांव खकरा नदी के बांये किनारे पर साहै। पीलीभीत शहर देवहा के ऊंचे बायें किनारे बसा है। नदी और शहर के बीच में उजाड़ नीची भूमि है। खकरा नदी इसके उत्तरी किनारे पर बहती है। पहले इन दोनों नदियों को जोड़ने वाली एक गहरी खाई शहर के एक द्वीप बना देती थी। पीलीभीत इमारती लड़की के व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। यहां शक्कर बनाने के कारखाने हैं। लकड़ी की नक्काशी भी अच्छी होती है गुड़यांवल, शक्कर और लकड़ी तथा लकड़ी का सामान बाहर जाती है।

पूरनपुर पीलीभीत से दक्षिण-पूर्व में २४ मील दूर है। यहां से पीलीभीत को सड़क और रेल गई है। यहां का पानी बरुआ नामी छोटी नदी में बह जाता है। पुरनपुर कस्बा पुराना नहीं है। लेकिन इसके पड़ोस में धनारा घाट, शाहगढ़ आदि स्थानों में पुराने भग्नावशेष हैं। सुआपाराकोट ४०० फुट लम्बा और ४०० फुट चौड़ा है। इसके चारों ओर ४० फुट चौड़ी खाई है। इस किले के भीतर एक मन्दिर था। यहां बहुत ही सुन्दर कामदार पुरानी ईंटे मिलती हैं। रेल के खुल जाने से पूरन पुर का व्यापार बढ़ गया है। पूरनपुर के बैल (जो पड़ोस के काली नगर, माधो टाँडा आदि गावों से आते हैं प्रान्त भर में अपनी शक्ति और सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं।

शाहगढ़ एक छोटा गांव माला वन के पूर्व किनारे पर है पीलीभीत से १५ मील दूर है। गांव से उत्तर की ओर रेलवे जाती है। इसके पड़ोस में एक पुराना किला था। इसका घेरा ३ मील था। दीवारे २५ फुट ऊंची थीं। यहाँ इससे १०० वर्ष पूर्व के सिक्के मिले हैं। सिक्के नैपाल के वर्मा वंश के हैं। पड़ोस में एक और पुराना उजड़ा हुआ किला है।

शेरपुर कलां पीलीभीत से २६ मील की दूरी पर एक बड़ा गांव है। यहां सप्ताह में ३ दिन बाजार लगता है।

मुजफ्फरनगर

गंगा यमुना के द्वाबा में मुजफ्फर नगर का जिला उत्तर में सहारनपुर और दक्षिण में मेरठ जिलों से घिरा हुआ है। पश्चिम की ओर यमुना नदी इस जिले को कर्नाल की पानीपत और थानेश्वर तहसीलों से अलग करती है। पूर्व की ओर गंगा नदी मुजफ्फर नगर और बिजनौर के बीच में सीमा बनाती है। पूर्व से पश्चिम तक जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ६१ मील और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई ३६ मील है। इसका क्षेत्रफल १६६६ वर्गमील और जनसंख्या ८,६४,००० है। नक्शे में देखने से यह आयताकार मालूम होता है।

मुजफ्फर नगर जिले में चार प्राकृतिक प्रदेश हैं। (१) पूर्व की ओर गंगा का कछार है। (२) इसके पश्चिम में गंगा और काली नदी का द्वाबा है। जिसके बीच में होकर गंगा नहर बहती है। (३) इसके पश्चिम में काली और हिंडन का द्वाबा है। (४) इसके आगे हिंडन और यमुना का द्वाबा है। इसमें होकर पूर्वी यमुना नहर आती है।

गंगा के खादर में होकर पहले गंगा नदी विस्तृत धारा थी। इस समय यह गंगा का कछार है। इसकी पश्चिमी सीमा गंगा के पुराने और ऊँचे किनारों से बनती है। छोटे छोटे नालों ने इन नालों को काट दिया है। टीले कछार के ऊपर प्रायः १०० फुट ऊंचे खड़े हैं। उत्तर की ओर गंगा खादर की चौड़ाई १२ मील है। दक्षिण की ओर १ मील रह जाती है। इसी खादर में ऊंचे किनारे के पास सोलानी नदी बहती है। इस ओर गंगा ने कई बार अपना मार्ग बदला है। नूरनगर के आगे इस समय भद्दे दलदल फैले हुये हैं। लेकिन नूरजहां के समय में जब गंगा जी इसके पास होकर बहती थी इसका दृश्य बड़ा मनोरम रहा होगा। इसीलिये जहांगीर की महारानी नूरजहां ने इसे यहां बसाया था। सोलानी नदी की बाढ़ और गंगा-नहर ने इस खादर को और भी अधिक दलदली बना दिया। नहर का ऊपरी तल अधिक ऊंचा है। लेकिन भीतर भीतर नहर का पानी निचली भूमि तक पहुँचता है और उसको सदा नम रखती है। इससे इसके ऊपर कहीं सफेद रेह बन जाता है और कहीं दलदल तयार हो जाता है। ये दलदली भाग ऊंचे टीलों के पड़ोस वाली निचली भूमि में अधिक है। गंगा की धारा की ओर बढ़ने पर सूखी जमीन मिलती है। इस खादर में कहीं कहीं खेती होती है। शेष भागों में दलदल है अथवा सरपत घास और झाड़ है। यहां जंगली सुअर बहुत हैं घास वाले भाग में गाय-बैल और भैंस चरा करती हैं। ऊँचे किनारे को बरसाती नालों ने ऐसा काट दिया है कि यहां चरने योग्य घास भी नहीं उग पाती है। इसके आगे ऊँची भूमि का ढाल पूर्व से पश्चिम की ओर है। लेकिन उत्तर से दक्षिण की ओर भूमि और भी अधिक ढालू है। गंगा नहर का प्रवाह ठीक रखने के लिये इस ओर कई नहर में कई झील बनाने पड़े। नहर के पश्चिम में काली नदी की ओर भूमि क्रमशः ढालू होती जाती है।

मुजफ्फरनगर परगने के दक्षिण-पूर्व की ओर रेतीली पेटी आरम्भ होती है। यह मेरठ जिले तक चली गई है। गंगा नहर की अनूप शहर शाखा जो जौली से आरम्भ होती है। प्रायः इसी रेतीली पेटी में होकर जाती है। रेतीली पेटी के आगे काली नदी के पड़ोस में उपजाऊ मटियार है। काली नदी के पश्चिम में काली और हिंडन नदियों के बीच में मुजफ्फरनगर जिले का मध्यवर्ती भाग है। यह प्रदेश सब कहीं उपजाऊ और ऊँचा है। इसमें पानी अधिक गहराई पर मिलता है। इसमें गंगा नहर की देवबन्द शाखा से सिंचाई होती है। यह शाखा चरथावल के पास मुजफ्फर नगर जिले में प्रवेश करती है और बुढ़ाना के पास हिंडन के एक नाले में समाप्त हो जाती है। इस प्रदेश के पूर्वी और पश्चिमी ओर की भूमि का ढाल पड़ोस की नदियों की ओर है। इधर भी भूमि कटी फटी है। काली नदी का खादर कहीं कहीं खेती के योग्य नहीं है। लेकिन हिंडन का खादर अधिक अच्छा है।

हिंडन के पश्चिम की ओर वाले प्रदेश में कृष्णी और काठा नदियाँ बहती हैं। इधर ढालू न होने से

भूमि अच्छी है। नदियों के एक दम पास की भूमि इतनी अच्छी नहीं है। नीची भूमि में बाढ़ का पानी आ जाने से धान की खेती होती है। ऊंची भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। ऊंची भूमि में यमुना-नहर की एक शाखा से सिंचाई होती है।

कृष्णी के आगे भूमि अधिक अच्छी है। इधर पूर्वी यमुना नहर से सिंचाई होती है। शामली के दक्षिण में गांव अधिक अच्छे हैं। उत्तर की ओर खेती कम होती है। ढाक के वन बहुत हैं। नहर के पास पास सफेद रेह बिछ गया है। उत्तर की ओर राजपूत किसान बसते हैं। दक्षिण की ओर अधिक मेहनती जाट हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर गूजर रहते हैं।

काठा नदी की ओर भूमि और अधिक निकम्मी है और ढाक के जंगलों से घिरी हुई है। कई भागों में रेह के कारण खेती नहीं हो सकती। कई स्थानों पर काठा में नहर का बचा हुआ पानी गिरा दिया जाता है।

यमुना नदी उत्तर की ओर अपना मार्ग नहीं बदलती है। दक्षिण की ओर भी यमुना ऊँचे करारों को छूती हुई बहती है। यहीं एक ऊंचे टीले पर मरहठों (सदाशिव भाऊ) के समय का एक किला बना हुआ है। इस (दक्षिण) ओर यमुना नदी कहीं कहीं इधर उधर मुड़ गई है।

मुजफ्फर नगर

बुढ़ाना नगर हिंडन नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। मुजफ्फर नगर से यह १६ मील दूर है। यहां तहसील थाना और मिडिल स्कूल है।

चरथावल एक बड़ा गांव और थाना है। इससे तीन मील की दूरी पर हिंडन नदी बहती है। गंगा-नहर का देवबन्द-रजबाहा इसके पास होकर बहता है। पास में कई ताल और बगीचे हैं। यहां का पानी बहकर काली नदी में पहुँचता है।

जलालाबाद एक पुराना गांव है। यह मुजफ्फर नगर से २७ मील दूर है। यह कृष्णी नदी के दाहिने किनारे पर बसा है और चारदीवारी से घिरा है। इसके उत्तर की ओर एक झील है जिसमें गांव का पानी इकट्ठा होता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

जानसठ एक बड़ा तहसीली नगर है। यह नगर मुजफ्फरनगर से १४ मील दूर एक पक्की सड़क पर बसा है। नगर की स्थिति कुछ नीची है। पड़ोस में प्रायः बलुई जमीन है लेकिन सब कहीं गंगा-नहर की अनूपशहर शाखा के रजबाहे इसे सींचते हैं। इससे वर्षा में पड़ोस का पानी ठीक नहीं बहने पाता है और बाढ़ आ जाती है। जानसठ का दक्षिणी भाग एक ऊंची पक्की दीवार से घिरा है और गढ़ी कहलाता है। यहां तहसीली कचहरी मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। साल में कई मेले लगते हैं। यहां जरदई और हरे रंग का बढ़िया कपड़ा रंगा जाता है।

झिंझाना काठा नदी के बायें किनारे पर एक पुराने किले पर बसा है। मेरठ से शामली जानेवा कैराना इसी नाम की तहसील का केन्द्र है। मुजफ्फर नगर से शामली और पानीपत जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। तीन मील पश्चिम की ओर यमुना नदी बहती है। शाहजहां ने यह गांव अपने हकीम मुकरावखां को दान में दिया था। यहां कई मस्जिदें और मकबरे हैं। यहां कचहरी, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। यहां चाकू और कैंची अच्छी बनती हैं। कुछ लोग शीरो के दाने के परदे बनाते हैं।

कांधला-पूर्वी यमुना नहर से कुछ दूर पश्चिम की ओर स्थित है यहां थाना डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बाजार शनिवार को लगता है। यहां अनाज, रुई और स्थानीय जुलाहों का बना हुआ कपड़ा बिकता है।

मुजफ्फर नगर काली नदी के बायें किनारे के पास मेरठ से ३२ मील की दूरी पर स्थित है। नार्थ वेस्टर्न रेलवे शहर के पूर्व की ओर से जाती है। रेलवे स्टेशन बिजनौर जाने वाली पक्की सड़क के दक्षिण में है। एक पक्की सड़क दक्षिण की ओर मेरठ, को उत्तर की ओर सहारनपुर को उत्तर-पूर्व में रुड़की को और पश्चिम की ओर शामली को गई है। कच्ची सड़कें जान साठ, जौली (गंगा नहर पर) को गई हैं। शहर ऊंची भूमि पर बसा है। शहर का पानी बह कर काली नदी में पहुँचता है। बाजार नया है। यहां से गेहूं, गुड़, तिलहन बाहर बहुत जाता है। यहां

के कम्बल बहुत प्रसिद्ध हैं और दूर तक जाते हैं। यहां कई हाई स्कूल और एक इन्टर कालेज है। यहां जिले की कचहरी और अस्पताल है।

इस नगर को १६३३ में शाहजहां के समय में मुजफ्फर खां के लड़के ने बसाया था। इसके पहले यहां सरवत नगर था। शहर के उत्तर पूर्व में सरवत के खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। यहां कई मेले लगते हैं। मार्च के मेले में यहां अच्छे घोड़े बिकने के लिये आते हैं।

शामली एक बड़ा कस्बा है। यह मुजफ्फर नगर से २४ मील दूर है। यहां से मेरठ, बागपत, दिल्ली और कनोल को पक्की सड़कें गई हैं। यह सहारनपुर शाहदरा रेलवे (छोटी लाइन) का एक स्टेशन है। पूर्वी यमुना नहर यहां से कुछ मील पूर्व की ओर है। यहां का बाजार अच्छा है और कुछ व्यापार पंजाब से होता है। थान भवन का पुराना नाम थान भीम है। वहां भवानी देवी का एक पुराना मन्दिर है। यहां भादों के महीने में मेला लगता है। यह स्थान कृष्णी नदी के दाहिने किनारे पर शामली से ११ मील की दूरी पर स्थित है। गदर के समय में यहां के लोगों ने घोर विद्रोह मचाया और शामली की तहसील पर अपना अधिकार कर लिया था।

मुजफ्फर नगर का कारबार

मुजफ्फर नगर का जिला द्वाबा का एक बड़ा उपजाऊ भाग है। यह जिला उत्तर में सहारनपुर से और दक्षिणमें मेरठसे घिरा हुआ है। पर पूर्वमें गंगा और पश्चिम में यमुना नदी इस जिले की स्वाभाविक सीमा बनाती हैं। गंगा नहर और पूर्वी यमुना नहर इसके मध्यभाग को सींचती हैं। सिंचाई की सुविधा होने से यहां ईख और गेहूँ आदि की फसलें बहुत अच्छी होती हैं। आटा पीसने और तेल पेरने की मिलों को छोड़कर यहां और मिलें नहीं हैं। पर इस जिले में कम्बल बहुत अच्छे बुने जाते हैं। कम्बल के लिये हरसाल ३००० मन ऊन की जरूरत पड़ती है। पर इस जिले में केवल ५०० मन ऊन पैदा होती है। शेष ऊन पंजाब से आती है। बाहर से आने वाली अधिकतर ऊन अलीगढ़ जिले में धुनी और काती जाती है।

गंगा नहर में नीरगंज और चितौरा में और यमुना नहर में यारपुर में आटा पीसने की पनचक्कियां हैं। तेल पेरने की छोटी छोटी छः मिलें मुजफ्फरपुर और शामली में हैं। शामली और मीरनपुर में पीतल के बरतन और हुक्के अच्छे बनते हैं। कैराना में चाकू, सरौते और अस्तुरे बनते हैं। ईख पेरने के कोल्हू और कड़ाहे नाहन रियासत से आते हैं। पर उनकी मरम्मत मुजफ्फर नगर और खतौली में होती है। कुछ वहां बनाये भी जाते हैं।

मेरठ

मेरठ जिले का क्षेत्रफल २३७६ वर्गमील और जनसंख्या १६,०२,००० है। मेरठ के उत्तर में मुजफ्फर नगर और दक्षिण में बुलन्दशहर का जिला है। पूर्व की ओर गंगा नदी मेरठ को मुरादाबाद और बिजनौर जिलों से अलग करती है। पश्चिम की ओर यमुना नदी से कनील (पञ्जाब) और दिल्ली से अलग करती है। मेरठ जिला कुछ आयताकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ५८ मील और चौड़ाई ४८ मील है। उत्तर और दक्षिण की ओर प्राकृतिक सीमा नहीं है। उत्तर की ओर केवल ११ मील तक हिंडन नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है और मेरठ की सरधना तहसील को मुजफ्फर नगर की बुढ़ाना तहसील से अलग करती है।

मेरठ जिला द्वाबा का अंग है। भूमि उत्तर से दक्षिण की ओर क्रमशः ढाल होती गई है। उत्तरी सीमा के पास समुद्र तल से भूमि की ऊंचाई ७७२ फुट है। दक्षिण की ओर हापुड़ के पास भूमि ६६३ फुट ऊंचा है। मेरठ शहर समुन्द्र तल से ७४० फुट ऊंचा है। नदियों के पड़ोस के ऊंचे नीचे टीलों

और कुछ पुराने खेड़ों को छोड़ कर मेरठ में प्रायः सब कहीं समतल भूमि मिलती है। यमुना नदी मुजफ्फर नगर से मेरठ जिले में प्रवेश करके ,दक्षिण और-पश्चिम की ओर बहती है। मेरठ जिले के दक्षिण पश्चिमी कोने के पास पूर्वी यमुना नहर का बचा हुआ पानी इसमें छोड़ दिया जाता है। उत्तर की ओर यमुना के किनारे बहुत ऊंचे हैं। दक्षिण की ओर वे कम ऊंचे रह गये हैं। बड़े बड़े कस्बे इसी के ऊँचे किनारे पर बसे हैं। बाढ़ के दिनों में भी इन ऊंचे किनारों की चोटी तक यमुना का पानी कभी पहुँचने नहीं पाता है। सरदी की ऋतु के समाप्त होने पर यमुना का पानी सिंचाई की नहरों में इतना अधिक चला जाता है कि यह नदी सब कहीं पांज हो जाती है। इसमें दो तीन फुट से अधिक गहरा पानी कहीं नहीं रहता है। मई मास में जब पहाड़ों पर बरफ पिघलती है तभी यमुना की धारा भी गहरी और तेज हो जाती है। यमुना खादर दक्षिण की ओर अधिक चौड़ा है। दक्षिण की ओर बागपत के दक्षिण में यमुना का ऊंचा किनारा लुप्त हो जाता है और हिंडन की ओर मुड़ जाता है। यहां ऊंची नीची बलुई जमीन है जिसमें अभय कांस (सरपत) के अतिरिक्त और कुछ नहीं उग सकता है। हिंडन कट से हिंडन नदी का पानी यमुना नदी में डाल दिया जाता। वहां से यह पानी आगरा नहर में पहुँचता है। यहीं यमुना के रेल पुल के पास से ओखल बांध बना दिया गया है।

यमुना और हिंडन के बीच वाले भाग का पानी कृष्णी और बान गंगा नदियों में जाता है। कृष्णी नदी टीकरी के पास मेरठ जिले में प्रवेश करती है। और मेरठ जिले में १२ मील बहने के बाद बरनावा के नीचे हिंडन में मिल जाती है। कृष्णी के किनारे टूटे फूटे और रेतीले हैं। इसीसे इसके किनारे कोई बड़ा नगर नहीं है। न इसका पानी सिंचाई के काम आता है।

बानगङ्गा बहुत छोटी नदी है धनौरा गांव के पास वह मुजफ्फर नगर से मेरठ जिले में प्रवेश करती है मेरठ जिले में ८ मील बहने के बाद बन गङ्गा शाहपुर गांव के पास हिंडन में मिल जाती है। गरमी में यह सूख जाती है। वर्षा ऋतु में इसमें चार-पांच फुट पानी रहता है। इसका फांट (पेटा) ५० फुट चौड़ा है। इसके किनारे छोटे छोटे नालों से बहुत कट गये हैं। इसीसे यह अपने समीप का पानी बहा ले जाने के अतिरिक्त और किसी काम नहीं आती है।

हिंडन नदी मेरठ जिले के उत्तरी-पश्चिमी भाग के पूर्व में बहती है। पितलोखा गांव के पास यह मुजफ्फरनगर से मेरठ में प्रवेश करती है। यहीं पश्चिमी काली नदी इसमें मिलती है। बरनावा के पास इसमें बानगंगा और कृष्णी नदियां मिलती हैं। इसका खादर कहीं दो मील और कहीं आध मील चौड़ा है। जो खादर इसकी बाढ़ से डूब जाता है उसमें रबी (गेहूँ की फसल अच्छी होती है। कहीं कहीं इसके पड़ोस में रेह पड़ गया है। वहां बहुत वर्षों से खेती नहीं हो सकी है। गाजियाबाद के नीचे रेलवे-पुल के पास हिंडन का पानी एक कृत्रिम धारा के द्वारा यमुना में छोड़ दिया गया है। इस प्रकार हिंडन नदी (देवबन्द नहर का बचा हुआ पानी लेकर गंगा के पानी को यमुना में पहुँचा देती है। ओखला के पास यमुना में बांध बना है। इसके द्वारा हिंडन का पानी आगरा नहर में पहुँचता है। अधिक आगे हिंडन नदी अपना टेढ़ा मार्ग बनाती हुई डनकौर (बुलन्दशहर) में पहुँचती है। हिंडन के पड़ोस में कुछ जमीन रेतीली है। लेकिन अधिक आगे गंगा-नहर की ओर भूमि बड़ी उपजाऊ है। हिंडन के पूर्व में मेरठ जिले के मध्यवर्ती भाग में कुछ नीची जमीन है। यह नीचा प्रदेश सरधना के पास आरम्भ होता है और बुलन्दशहर तक चला गया है। गंगा नहर का प्रदेश उत्तर में भोला से आरम्भ होकर दक्षिण में नाहल तक चला गया है। यहां गंगा-नहर के रजवाहों की अधिकता है। इस प्रदेश के कई भागों में नीची जमीन है। वहां धान की खेती होती है। अधिक दक्षिण में डासना परगना भी बड़ा उपजाऊ है। इसके निचले भाग में मसूरी झील है।

अधिक आगे पूर्व में काली नदी बहती है। इधर भूड़ (कुछ बलुई भूमि) कहीं कहीं रेतीले टीले मिलते हैं। इस ओर गंगा नहर की अनूप शहर शाखा से सिंचाई होती है। काली नदी मुजफ्फर

नगर जिले से निकलती है और मेरठ होती हुई दक्षिण की ओर बुलन्दशहर में पहुँचती है। अन्त में वह फतेहपुर जिले में गंगा में मिल जाती है। इसे कालिन्दी या नागिन भी कहते हैं। नदी को पार करने वाली सड़कों के लिये काली नदी पर पुल बने हुए हैं। लेकिन काली नदी के किनारे कोई बड़े नगर नहीं बसे हैं। मेरठ से मवाना, परीक्षतगढ़ और गढ़मुक्तेश्वर जाने के लिये काली नदी के पुल पार करने पड़ते हैं। काली नदी में बहुत कम पानी रहता है। इसकी प्रधान सहायक चोइया है। चोइया नदी हस्तिनापुर परगने में निहोला के पास निकलती है और हापुड़ के पास (नौ मील की दूरी पर) काली नदी में मिल जाती है। आबूनाला मेरठ परगने को सींचकर काली नदी में मिल जाता है।
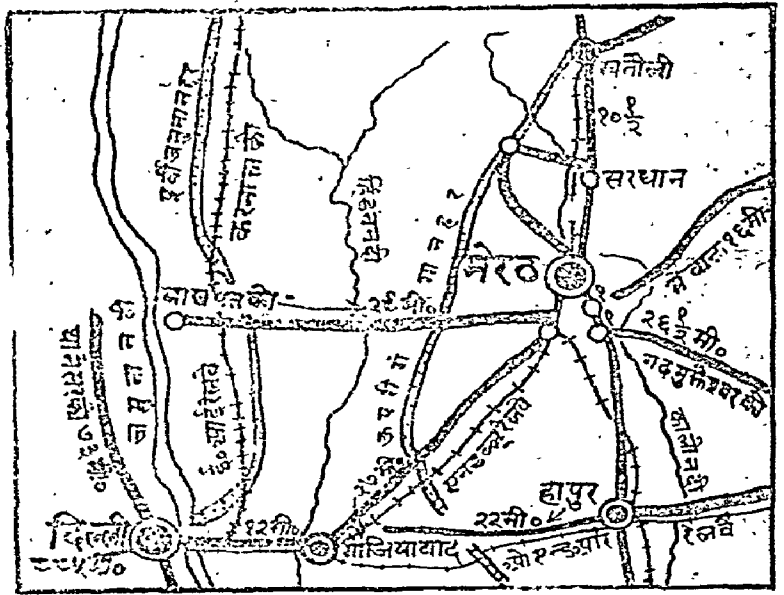
काली नदी और गङ्गा के बीच में मेरठ जिले का पूर्वी भाग स्थित है। इसमें मवाना तहसील के हस्तिनापुर और किटोर परगने और हापुड़ के गढ़मुक्तेश्वर और पूठ परगने शामिल हैं।

इस प्रदेश में कहीं अच्छे खेत हैं कहीं रेतीले टीले हैं। अत्यन्त पूर्वी भाग में गंगा का खादर है। इसमें कहीं कहीं खेती होती है। बहुत से भाग जंगली घास से ढके हैं। जिसमें जंगली सुअर और दूसरे जंगली जानवर रहते हैं। इसी खादिर में बूढ़ी गंगा मन्द गति से बहती।

गंगा नदी के किनारे प्रायः ऊँचे और स्थिर हैं। केवल कहीं कहीं वे कट गये हैं। अधिकतर पानी नहरों में पहुँच जाने से गङ्गा में इतना थोड़ा पानी बचता है कि इसमें साल भर नावें नहीं चल सकतीं। गङ्गा की धारा का पानी किनारे के खेतों से इतनी दूर है कि यह पानी खेतों के सींचने के काम नहीं आ सकता बाढ़ के दिनों में गंगा की धारा बहुत तेज हो जाती है। इस जिले में केवल गढ़मुक्तेश्वर एक बड़ा नगर है जो गंगा के किनारे बसा है। यहीं गाजियाबाद से मुरादाबाद जानेवाली रेलवे गंगा को एक पुल के ऊपर से पार करती है।

बाबूगढ़—यह बड़ा गांव हापुड़ से गढ़मुक्तेश्वर जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यहां होकर ईस्ट-इण्डियन रेलवे (भूतपूर्व अवध रुहेलखंड रेलवे) की एक शाखा गाजियाबाद से मुरादाबाद को गई है। वहां सरकारी घोड़े पाले जाते हैं।

बागपत—यह नगर यमुना के बायें किनारे पर मेरठ से ३० मील दूर है। यहां से शाहदरा, मेरठ और बड़ौत को सड़कें गई हैं। यमुना को पार करने के लिये नावों का पुल बना है। बागपत-कस्बा में अधिकतर किसान रहते हैं। मंडी में बनिये व्यापारी रहते हैं। इसका प्राचीन नाम व्याघ्र प्रस्थ (चीतों का स्थान) है। इसका उल्लेख महाभारत में आया है। पहले यहां तहसीली कचहरी और मिडिल स्कूल थे। बड़ौत नगर पूर्वी यमुना नहर के किनारे मेरठ से २७ मील दूर है। यहां दो इण्टर कालेज हैं। (एक जाट और दूसरा जैन) खेतिहर प्रदेश के बीच में स्थित होने से यह एक व्यापारी मण्डी बन गया है। शाहदरा सहारनपुर रेलवे छोटी लाइन का यह एक बड़ा स्टेशन है। गदर के समय जिन जाटों ने विद्रोह में भाग लिया था उनकी भूमि छीन ली गई। इस समय यहां खद्दर बनाने का काम होता है। बरनावा गांव हिंडन के दाहिने किनारे पर बसा है। इसके पास ही कृष्णी नदी हिंडन में मिलती है। यहां होकर बड़ौत को सड़क जाती है। यह सरधना से ११ मील और मेरठ से १६ मील दूर है। यहां कई पक्के कुयें

हैं। लेकिन उनका पानी खारा है। कहा जाता है कि महाभारत के समय का यह बरनावत था। एक खेड़े पर लक्षा मण्डप है जहां कौरवों ने पांडवों को जलाने का प्रयत्न किया था। इस समय खेड़े पर एक मुसलमानी दरगाह है। इसका पुराना संस्कृत लेख मिटा दिया गया है। यहीं बेगम समरू ने भी अपना एक किला बनवाया था।

बेगमाबाद—मेरठ से दिल्ली जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। जाटों की जमींदारी शाही घराने की एक बेगम के पास चली गई। इसके बाद इसका नाम बेगमाबाद पड़ गया। यहाँ ग्वालियर की रानी बाला बाई का बनवाया हुआ एक मन्दिर है। इस समय मोदी के शक्कर का कारखाना बड़ी उन्नति पर है।

डासाना—यह कस्बा गाजियाबाद से हापुड़ और गढ़मुक्तेश्वर को जाने वाली पक्की सड़क पर गाजियाबाद से ६ मील की दूरी पर बसा है। पूर्व की ओर दो मील की दूरी पर गंगा नहर बहती है। इसी के डासना राजबाहे से पड़ोस की भूमि सींची जाती है। कहा जाता है कि महमूद गजनवी के समय में राजपूत राजा सलारसी ने इसे बसाया था। १७६० में अहमदशाह अब्दाली ने यहां के किले को गिरा दिया। साल में दो बार देवी का मेला होता है। एक मेला मुहर्रम का होता है। इसके पड़ोस में नील का कारखाना खुला था।

हापुड़

हापुड़ ऐसे स्थान पर बसा है जहां मेरठ से बुलन्द शहर जाने वाली पक्की सड़क गाजियाबाद से गढ़मुक्तेश्वर जाने वाली पक्की सड़क को पार करती है। यह मेरठ से १६ मील दूर है। यहीं मेरठ और गाजियाबाद से आने वाली रेलवे लाइनें भी मिलती हैं। ६८३ में हापुड़ को हरदत्त नामी एक सरदार ने बसाया था। इसका पहला नाम हरपुर था। इसी से बिगड़ कर हापुड़ बना। पहले हापुड़ में प्रवेश करने के लिये पांच द्वार या दरवाजे थे जो दिल्ली, मेरठ, गढ़मुक्तेश्वर, कोठी और सिकन्दरा दरवाजे कहलाते थे। यहां की जामा मस्जिद औरंगजेब के समय में बनी थी।

हापुड़ मेरठ जिले का प्रसिद्ध व्यापारी नगर है। यहां अनाज, तिलहन और कपास का व्यापार होता है। यहाँ कई बाजार हैं। सब से अधिक प्रसिद्ध पुराना बाजार कहलाता है और मेरठ दरवाजे से दिल्ली दरवाजे तक चला गया है। तहसीली कचहरी और हाई स्कूल नगर के बाहर स्थित हैं।

हस्तिनापुर बूढ़ी गंगा के ऊँचे किनारे पर मवाना से ६ मील और मेरठ से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। इसका उत्तरी भाग पट्टी कौरवां और दक्षिणी भाग पट्टी पांडवा कहलाती है। दोनों भाग प्रायः निर्जन हैं। यहां हाल में सरावगियों के बनवाये हुये कुछ मन्दिर हैं। पड़ोस में पुराने किले और कुछ मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। लेकिन प्राचीन हस्तिनापुर को गङ्गा ने काट कर बहा दिया। इसे राजा भरत के वंशज और पांडवों के पूर्वज राजा हस्तिन ने बसाया था। पांडवों ने पहले यमुना-तट पर इन्द्रप्रस्थ बसाया था। हस्तिनापुर के कौरवों को हराकर उन्होंने युधिष्ठिर को हस्तिनापुर का राजा बनाया। महाभारत के समाप्त होने पर जब पांडव उत्तराखंड (हिमालय) में गलने चले गये तो अर्जुन के पौत्र राजा परीक्षित यहां की गद्दी पर बैठे। चार पीढ़ी राज्य करने के बाद हस्तिनापुर नष्ट हो गया और कौसाम्बी राजधानी बनी। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां एक बड़ा मेला लगता है।

खेकड़ा यमुना के ऊंचे बायें किनारे पर बागपत से ८ मील और मेरठ से २६ मील दूर बसा है। यहां एक सुन्दर जैन मन्दिर है। अधिकतर लोग जाट हैं जिन्होंने अब से १००० वर्ष पहले अहीरों को भगा कर अपना राज्य कर लिया। इस समय खेकड़ा गुड़ और अनाज की प्रधान मंडी है।

किठोर गढ़मुक्तेश्वर से मेरठ जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह मेरठ से १६मील दूर है। किठोर के पूर्व में गङ्गा-नहर की अनूपशहर बहती है। इसके पास ही गूजरराजा नैनसिंह के किले के खण्डहर हैं।

कुटाना यमुना के ऊंचे किनारे पर बागपत से ११ मील और मेरठ से ३४ मील की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि यह पांडवों के समय में बसाया गया था। इस समय यहां लकड़ी, बांस और अनाज का व्यापार होता है।

लोनी गांव शाहदरा से ६ मील उत्तर की ओर स्थित है। लोनी नाम लवण (लाण) से बिगड़ कर बना है क्योंकि इसके पड़ोस में नमकीन प्रदेश है। कहा जाता है कि शहाबुद्दीन गोरी ने यहां के राजपूतों को भगाकर उनके स्थान पर मुगलों, पठानों और शेखों को बसा दिया। जो जमीन पहले पृथ्वीराज के राज्य में शामिल थी वह अब इन लोगों की जमींदारी में आगई। यहां राजा सत्रकरन का एक किला था। १७८६ में मुहम्मद शाह ने तोड़ दिया और इसकी ईंटों से एक तालाब बनाया गया।

मवाना कस्बा गङ्गा-नहर की फतेहगढ़ शाखा के किनारे पर बसा है। यह मेरठ से ७ मील दूर है। यहां मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। नगर के बाहर तहसीली की इमारतें हैं। इसी ताल के किनारे लगभग ३०० वर्ष का पुराना मन्दिर है। कहा जाता है कि कौरवों के एक नौकर मान। ने इसे बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा।

मेरठ शहर (१,३६,०००) नार्थवेस्टर्न रेलवे स्टेशन के पूर्व और छावनी के दक्षिण में स्थित है। पहले शहर एक चारदीवारी और खाईं से घिरा था। भीतर जाने के लिये ६ दरवाजे थे। इनके नाम दिल्ली, चमार, लिसारी, शोराब, शाहपीर, बुढ़ान, खैरनगर, कम्बोह और बागपत दरवाजा हैं। चमार दरवाजा चमारों की बस्ती के पास है। लिसारी दरवाजा लिसारी गांव के सामने दक्षिण की ओर है। शाहपीर दरवाजा शाहपीर मकबरे के पास है। इस मकबरे को जहांगीर की रानी नूरजहां ने लाल बलुवा पत्थरों से १६२८ ईस्वी में शाहपीर नामी फकीर की स्मृति में बनवाया था। खैरनगर दरवाजे को नवाब खैरन्देश खां ने और कम्बोह दरवाजे को अबूमुहम्मद खां कम्बोह ने बनवाया था। प्रायः अलग अलग जातियों के नाम से शहर में ३८ मुहल्ले हैं। यहां कई बाजार और सराय हैं। जहां प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर था वहां पर मेरठ की जामा मस्जिद बनाई गई। इसे महमूद गजनवी के वजीर ने बनवाया था। हुमायूं ने इसकी मरम्मत करवाई। मखदूमशाह विलायत की दरगाह कलक्टरी के सामने है इसे शहाबुद्दीन गोरी ने बनवाया था। सालार मसूद आलम का मकबरा कुतुबुद्दीन ऐबक ने ११९४ में बनवाया था। इसी कुतुबुद्दीन ने नौचन्दी देवी का मन्दिर तुड़वा कर एक दरगाह बनवायी। यह मन्दिर शहर से १ मील पूर्व की ओर था जहां इस समय हापुड़ और गढ़मुक्तेश्वर जानेवाली सड़कों के बीच में हरसाल ७ दिन तक एक बड़ा मेला लगता है इस मेले में दूर दूर से घोड़े बिकने के लिये आते हैं।

सूरजकुंड के पास तिलेंडी का मेला लगता है। सूरजकुंड १७१४ ईस्वी में बनवाया गया था इसके पड़ोस में कई छोटे छोटे मन्दिर हैं। पहले यहां आबू नाला का पानी आता था। इसके सूख जाने पर सूरजकुंड में गङ्गा नहर से पानी आने लगा। मेला चैत में लगता है। मेरठ में साबुन कैंची और खद्दर बनाने का काम बहुत अच्छा होता है। खद्दर की कताई बुनाई के साथ साथ रंगाई का काम भी होता है। यह अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ का एक प्रधान उत्पत्ति केन्द्र है। मेरठ में कई कालेज और हाई स्कूल हैं। घंटाघर के आगे टाउन हाल और लायल लाइब्रेरी है। शहर के उत्तर की ओर बड़ी छावनी है। मेरठ शहर में पीने का पानी ६ मील की दूरी (गङ्गा-नहर के भोलाझाल) से आता है।

यहां कई कुएँ भी हैं जिनमें अधिकतर मरहठों के शासन काल में बने थे। कुओं का पानी अच्छा है और दस-पन्द्रह फुट की गहराई पर मिलता है।

मेरठ शहर से पक्की सड़कें दिल्ली, सहारनपुर, गढ़मुक्तेश्वर और हापुड़ को गई हैं। नार्थ वेस्टर्न रेलवे की दो स्टेशने हैं। एक मेरठ छावनी और दूसरी मेरठ सिटी स्टेशन है। सिटी स्टेशन से एक शाखा लाइन हापुड़ को जाती है। मेरठ शहर बहुत पुराना है। इसका पुराना नाम महिराष्ट्र है। कहा जाता है कि महाराज युधिष्ठिर के जिस (महि) कारीगर ने इन्द्रप्रस्थ बनाया था उसी ने मेरठ को भी बसाया। अन्दर कोट के पुराने भाग में प्राचीन समय के कुछ भग्नावशेष हैं। यहीं ईसा से ३०० वर्ष पूर्व महाराज अशोक ने एक स्तम्भ खड़ा किया था। १२०६ ईस्वी में फीरोजशाह इसे मेरठ से दिल्ली ले गया। शहर के भीतर बौद्ध भग्नावशेषों के मिलने से सिद्ध होता है कि अशोक के समय में मेरठ बौद्ध धर्म का केन्द्र था। मेरठ का किला भारतवर्ष के प्रसिद्ध किलों में गिना जाता था। ११९१ में कुतुबुद्दीन ने मेरठ के किले पर

अपना अधिकार कर लिया और हिन्दू मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदें बनवा लीं। १३९९ में तैमूर ने इसे पूरी तरह से लूटा।

अकबर के समय में यहां तांबे के सिक्के बनाने की टकसाल थी।

गुलाम कादिर की फौज को हराकर १७८८ में मरहठों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया।

मुराद नगर दिल्ली से मेरठ जाने वाली सड़क पर मेरठ से १८ मील की दूरी पर स्थित है। यह नार्थ वेस्टर्न रेलवे का एक स्टेशन है। इसे अब से प्रायः ३५० वर्ष पहले मिरजा मुहम्मद मुराद ने बसाया था। यहां स्कूल, थाना और बाजार है। परीक्षित गढ़ गंगा-नहर की फतेहपुर शाखा के पास कच्ची सड़क पर बसा है। इसके बीच में एक पुराना किला है। कहा जाता है कि इसे राजा परीक्षित ने बनवाया था। गूजर राजा नैनसिंह ने इसकी मरम्मत करवाई। गदर में किला तोड़ दिया गया। इस समय किले में थाना और राजमहल में स्कूल है। बनिये लोग पश्चिम की ओर और चमार पूर्व की ओर रहते हैं। गांव में नवलदेव नाम का प्रसिद्ध कुआं है। कहा जाता है कि इसे पांडवों ने बनवाया था कहते हैं कि इसका पानी पीने से कोढ़ अच्छा हो जाता है।

फलौदा मेरठ से १७ मील की दूरी पर बसा है। यहीं मेरठ और मवाना से आने वाली कच्ची सड़कें मिलती हैं। इसे फल्गू नामी एक तोमर सरदार ने बसाया था। कहा जाता है कि कार्तिकी पूर्णिमा को जब तोमर लोग गंगा स्नान कर रहे थे उसी समय पालकियों में छिपकर आये हुये मुसलमान सिपाहियों ने अचानक हमला किया और तोमरों को मार डाला। फलौदा में कुतुबशाह की दरगाह है जहां हर साल मेला लगता है।

पिलखुआ मेरठ से १९ मील की दूरी पर गाजियाबाद से हापुड़ जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। इसके पास कई ताल हैं। पड़ोस में बँधा हुआ पानी रहने से यहां मलेरिया बुखार फैला करता है। यहां खद्दर बनाया जाता है और चुनरी रंगी जाती है। चुनरी रंगने के लिये सादे सफेद कपड़े में गांठ बांधकर रंग में डुबोते हैं। गांठ खोलने पर कपड़े के बीच बीच में गोले घेरे सफेद रहते हैं। शेष भाग लाल रंग जाते हैं। यह चुनरी स्त्रियां बड़े चाव से पहनती हैं। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और सराय है। बाजार हर शुक्रवार को लगता है।

पूठ गङ्गा के ऊंचे किनारे पर गढ़मुक्तेश्वर से ८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर मेरठ से ३४ मील की दूरी पर स्थित है। यहां हस्तिनापुर के राजाओं के बगीचे लगे थे। इसीसे इसका (पुराना) नाम पुष्पवती था। इसी को बिगाड़ कर मुसलमानों ने इसका नाम पूठ रख दिया। गङ्गा पार करने के लिये यहां नाव का घाट है।

सरसवा मेरठ से १४ मील की दूरी पर काली नदी की एक सहायक नदी के किनारे बसा है। यह मेरठ से १४ मील दूर है। हापुड़ से बेगमाबाद जाने वाली सड़क के पास पड़ता है। इसका पहला नाम फतेहगढ़ था यह दिल्ली के गोरी बादशाहों के समय में बसाया गया था। तगा लोगों ने इसका नाम बदलकर सरसवा रख दिया।

सरधना मेरठ से १२ मील की दूरी पर गङ्गा-नहर के पास स्थित है। नहर के ऊपर पुल बना है। यहां होकर सरधना स्टेशन (नार्थ वेस्टर्न रेलवे) को पक्की सड़क जाती है। नगर के उत्तर की ओर की लश्कर गंज और बेगम समरू के पुराने किले के खंडहर हैं। जहां इस समय कालेज है वहीं यह बेगम समरू का महल था। एक ओर ईसाई बस्ती है। सरधना में ४ जैन मन्दिर हैं।

शाहदरा दिल्ली से गाजियाबाद जानेवाली पक्की सड़क पर यमुना के बायें किनारे के पास स्थित है। यह ईस्ट इंडियन और नार्थ वेस्टर्न रेलवे का स्टेशन है। यहीं से बड़ौत-शामली होकर छोटी लाइन सहारनपुर को जाती है। यह दिल्ली से ५ मील और मेरठ से ३१ मील दूर है। शाहदरा से तीन मील की दूरी पर पूर्वी यमुना-नहर यमुना में मिल जाती है। शाहदरा का अर्थ है शाही द्वार या शाही दरवाजा। इसे शाहजहां ने बसाया था। पानीपत की अन्तिम लड़ाई के अवसर पर अहमदशाह दुर्रानी ने इसे लूटा और भरतपुर के सूरजमल जाट ने यहां के हलवाई मुहल्ले को नष्ट कर दिया। शाहदरा में अनाज और दाल का व्यापार होता है और जूते बनाये जाते हैं। यहां

का पानी मीठा नहीं है। मीठा पानी गांव के बाहर से आता है।

सुराना-हिंडन के बायें किनारे पर मेरठ से १७ मील की दूरी पर स्थित है। यह अहीरों का गाँव है। यहां कई मन्दिर हैं और हर साल देवी का मेला लगता है।

फरीदनगर गाजियाबाद तहसील में पिलखुआ से पांच मील और मेरठ से १३ मील की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि अकबर के समय में फरीदुद्दीन खां ने जंगल के बीच में बसाया था। यहां डाकखाना, स्कूल और बाजार है। गढ़मुक्तेश्वर गंगा के दाहिने किनारे पर मेरठ से २८ मील की दूरी पर स्थित है। दिल्ली से मुरादाबाद जाने वाली रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहां हस्तिनापुर का एक किला था। मरहठा सरदार मीर भावन ने इसकी मरम्मत करवाई थी। यहां मुक्तेश्वर महादेव और गंगादेवी का मन्दिर है। कार्तिक में यहां गंगा स्नान का मेला लगता है और ८ दिन तक रहता है।

मेरठ जिले का कारबार

यहां पर कसीदा काढ़ने के काम में कई लाख परदानशीन औरतें लगी हुई हैं।

यहां कई हजार सुनार सोने चांदी का जेवर बनाते हैं। मकान बनाने के लिये मेरठ शहर में ३५ चूने के कारखाने और ३० ईंटों के भट्टे हैं। हापुड़ के पास थाली कटोरा और हुक्का की कली पीतल से बनाई जाती हैं।

हापुड़ और मेरठ में अच्छे ताले बनते हैं।

तवा, कढ़ाई, कोल्हू और डोल लोहे से बनाये जाते हैं कैंची बड़ी अच्छी बनती हैं शहर में ट्रंक बनते हैं। लोहा दिल्ली से आता है।

जूते के अलावा यहां चमड़े से हाकी और क्रिकेट की गेंदें बनती हैं। हाल में यहां ब्रुश बनाने का कारखाना खुला है। तेल पेरने और साबुन बनाने का काम अच्छा होता है।

खादी, दुसूती, निवाड़ और मोजे बुनने का काम बहुत होता है।

निरपुड़ा, लवार, ज्वालगढ़, रोहसा, भोटा और सलावा में अच्छे कम्बल बुने जाते हैं। सरधना तहसील में लगभग २०,००० भेड़ें हैं जिनकी ऊन आश्विन (सितम्बर) और चैत में काटी जाती है। कुछ ऊन पंजाब और दिल्ली में बिकने जाते हैं।

हापुड़ और मेरठ में बहुत अच्छी और सस्ती खादी तयार होती है।

बुलन्द शहर

बुलन्द शहर का जिला गंगा-यमुना द्वाबा के ऊपरी भाग में स्थित है। पश्चिम की ओर यमुना नदी इसे पंजाब के गुरगांव जिले और दिल्ली से अलग करती है। पूर्व की ओर गंगा नदी बुलन्द शहर जिले को मुरादाबाद और बदायूं जिलों से अलग करती है। बुलन्दशहर के उत्तर में मेरठ और दक्षिण में अलीगढ़ का जिला है। इसकी औसत लम्बाई ५५ मील और चौड़ाई ३५ मील है। इसका क्षेत्रफल १९१४ वर्ग मील और जन संख्या ११,३७००० है। बुलन्द शहर का जिला सब कहीं प्रायः समतल दिखाई देता है। इसका ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसी ओर गंगा, काली और यमुना नदियों का बहाव है। उत्तर में गुलाउठी के पास की ऊँचाई समुद्र तल से ६८० फुट है। मध्य में बुलन्द शहर कस्बा समुद्र-तल से ७२७ फुट ऊंचा है। अलीगढ़ की सीमा के पास दक्षिण में भूमि की ऊँचाई ६३६ फुट है।

यमुना नदी पहले पहल बुलन्द शहर जिले को दिल्ली के सामने छूती है और पचास मील तक पश्चिमी सीमा पर बहती है। सरदी की ऋतु में पानी बहुत साफ और उथला रहता है। वर्षा ऋतु में यह बहुत

रसीला हो जाता है। यमुना से इस जिले में सिंचाई नहीं होती है। छोटी नावों में अनाज और कपास ढोने और लकड़ी के बेड़े बहाने का काम होता है। बुलन्द शहर के नयाबास गांव और दिल्ली के ओखला के बीच में यमुना में जो बांध बना है वहां से आगरा नहर आरम्भ होती है। १८७१ में यमुना में ऐसी बाढ़ आई कि ५ गांव एकदम नष्ट हो गये, ७५ गांव आधे बह गये और २९ गांवों के कुछ भाग कट गये। खरीफ की फसल नष्ट हो गई। इसके बाद और भी कई बार यमुना में भयानक बाढ़ आई लेकिन इतनी हानि नहीं हुई।

यमुना का खादर उत्तर में नौ मील और दक्षिण में पांच मील चौड़ा है। यमुना के एक ऊंचे किनारे से दूसरे ऊंचे किनारे तक एक स्थान पर खादर १० मील चौड़ा है। आज कल यमुना का अधिकतर पानी नहरों में चला जाता है इसलिये यमुना अपना मार्ग अधिक नहीं बदलती है। लेकिन पुराने समय में खादर के बीच में यह अपना मार्ग अक्सर बदलती रही है। लोकसीर और दनकौर में बदले हुये मार्ग के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस समय खादर में लोग बसे हुए हैं। केवल यमुना की धारा के एकदम पास खेती करने में कभी कभी बाधा पड़ती है। यमुना का रुख आरम्भ में पूर्व की ओर है। लेकिन बल्लभनगर के पास चिकनी मिट्टी और कंकड़ के बड़े कगारों ने इसे फिर पश्चिम की ओर मोड़ दिया है। इससे खादर में तीन चार मील चौड़ा उपजाऊ प्रदेश बन गया है। जो दलदल और रेह दनकौर में है उसका यहां नाम नहीं है।

यमुना खादर के मध्यवर्ती भाग का पानी हिंडन नदी बहा लाती है। हिंडन नदी मेरठ से बुलन्द शहर जिले के दादरी परगने में प्रवेश करती है और १३ मील बहने के बाद यमुना में मिल जाती है। यहां हिंडन की घाटी अलग नहीं है। यमुना-खादर में बहने के कारण यह अक्सर अपनी धारा इधर उधर बदल कर बहती है। वर्षाऋतु में हिंडन में काफी बाढ़ आती है। बाढ़ के पानी में उपजाऊ मिट्टी के कण मिले रहते हैं। बाढ़ के बाद जो नई उपजाऊ मिट्टी बैठ जाती है उसे यहां चुक कहते हैं। इसमें रबी की फसल बहुत अच्छी होती है।

हिंडन से दो तीन मील पूर्व की ओर भुरिया नदी बहती है. कभी कभी दोनों मुड़कर एक दूसरे के पास पास आ जाती हैं। बुलन्द शहर जिले में आते के समय यह बहुत छोटी मालूम पड़ती है। लेकिन २ मील बहने के बाद जब यह यमुना में मिलती है तब यह काफी बड़ी हो जाती है। इसमें बहुत सा पानी नीचे नीचे छनकर आता है। इसकी बाढ़ में भी उपजाऊ मिट्टी मिली रहती है। भुरिया और ऊंचे किनारे के बीच में जमीन अच्छी नहीं है। साधारणतया खादर के बीच बीच में निचले गड्ढे तो अच्छे हैं। अधिकतर भाग में प्रायः बलुई भूमि है जहां झाऊ और कांस उगता है। ऊंचे ढाल के पास रेह होगया है।

यमुना खादर के आगे जिले का मध्यवर्ती ऊंचा भाग है। यह पूर्व में गंगा तट तक चला गया है। यह चौड़ा और प्रायः समतल है। कहीं कहीं इधर बहने वाली धाराओं ने इसे काट दिया है। बहुत थोड़े स्थानों पर कुछ ऊंचे टीले हैं। जिनके ऊपर बालू बिछी है। अधिकतर भाग में उपजाऊ भूमि है। कुओं और नहरों से सिंचाई हो जाने से यहां अच्छी फसलें होती हैं। बीच में रेतीली पतली पेटी के आगे मध्यवर्ती मैदान में दुमट या चिकनी मिट्टी है। इस प्रदेश को काली नदी जो प्रायः समान भागों में बांट देती है। पूर्व में काली नदी और पश्चिम में माट नहर के बीच में कर्वन या खारान नदी बहती है। यह मेरठ जिले की सीमा के पास से निकलती है और खुर्जा और सिकन्दराबाद परगनों में बहती है। वर्षा ऋतु में भी इसमें अधिक गहरा पानी नहीं रहता है। उसकी अधिक से अधिक गहराई १ फुट चौड़ाई २५० फुट हो जाती है। सरदी में यह सूख जाती है। ६० मील बहने के बाद आगरा जिले के शाहदरा गांव के पास यह यमुना में मिल जाती है।

कर्वन से पूर्व की ओर गंगा-नहर तक भूमि समतल और उपजाऊ है। अधिक आगे भूमि नीची होने लगती है। और काली नदी का खादर आरम्भ हो जाता है। काली नदी गुलावठी के पास मेरठ ज़िले से बुलन्दशहर में आती है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई यह अलीगढ़ जिले में पहुँचती है। इसकी घाटी प्रायः आध मील चौड़ी है। कभी यह एक

किनारे दूसरे किनारे के पास बहती है। घाटी के ठीक बीच में यह बहुत कम बहती है। काली का खादर पड़ोस की भूमि से बहुत नीचा है और वर्षा ऋतु में प्रबल बाढ़ से डूब जाता है। १८८५ में काली नदी में ऐसी बाढ़ आई कि इसने पुल तोड़ दिये और एटा जिले के नदरई बांध को नष्ट कर दिया। नहर खुलने से पहले गरमी में इसमें केवल कहीं कहीं पानी रहता था। आजकल इसमें भीतर ही भीतर छन छन कर पानी आता है। इससे काली नदी में साल भर पानी बना रहता है। नहर का बचा हुआ पानी भी इसमें छोड़ दिया जाता है। लगातार नमी रहने से उपजाऊ भागों में रेह पड़ गया। वास्तव में काली नदी बहुत धीमी चाल से बहती है और सिवार और घास में इसका पानी फँस जाता है। काली नदी और गंगा नहर के बीच में चोइया बहती है। यह सियाना परगने में चितसौना के पास झीलों से निकलती है। और अलीगढ़ जिले की अतरौली तहसील में पहुँचने पर नदी बन जाती है। डिबाई के पास इसमें नीम नदी मिलती है। चोइया के पास अच्छी कड़ी दुमट मिट्टी है। अधिक आगे मिट्टी अच्छी नहीं है। इसी तरह की मिट्टी गंगा के ऊँचे किनारे तक चली गई है।

गंगा नदी बुलन्दशहर में सियाना, अहार, अनूपशहर और डिबाई परगनों की पूर्वी सीमा के पास बहती है। गंगा नदी की तली में बालू है। यह बालू पानी के नीचे ३० फुट तक चली गई है। इसके नीचे १२ फुट मोटी कंकड़ और चिकनी मिट्टी की तह है। अन्त में पीली बालू की तह मिलती है। गंगा का दक्षिणी-पश्चिमी किनारा चिकनी मिट्टी और कंकड़ का बना है। यह इतना ऊँचा है कि प्रबल बाढ़ में भी पानी ऊपर तक नहीं पहुँचता है। अहार, अनूपशहर, राजघाट और रामघाट में इसी तरह के ऊँचे किनारे हैं। इन ऊँचे किनारों के पास गहरा पानी रहता है। वर्षा ऋतु में गंगा में कहीं पांज नहीं रहती है। नाव से पार करने में भी कभी कभी भय रहता है। मुरादाबाद की ओर वाला किनारा नीचा है। इसलिये बाढ़ का पानी दूर तक पहुँचता है। गंगा का पानी इतना अच्छा है कि बाढ़ के दिनों में मिट्टी मिले रहने पर भी गंगा के पानी को पीते हैं। शीत काल में गङ्गा जल अत्यन्त शुद्ध रहता है। गङ्गा में साल भर नावें चला करती हैं। नारोरा के पास गंगा में बांध बन जाने से यहां नावों के चलने में बाधा पड़ती है।

ऊँचे किनारे के पास गङ्गा का खादर कुछ तंग है। अधिकतर भूमि बलुई है। स्थायी खेती नहीं हो सकती। कहीं कहीं तरबूज खरबूजा उगाये जाते हैं। जहां (जैसे मुबारकपुर और राम घाट के पास) गंगा ने उपजाऊ मिट्टी बिछा दी है वहां अच्छी फसलें होती हैं। उजाड़ भागों में कांस और झाऊ उगती है। यहां जंगली सुअर विचरते हैं और फसलों को हानि पहुँचाते हैं।

बुलन्दशहर जिले में अधिक झीलें नहीं हैं। और गाबाद और कुचेसर की झीलें कुछ बड़ी हैं। इनमें सिंचाई नहीं होती। गरमी के दिनों में वे सूख जाती हैं। सरदी में उनमें सिंघाड़े उगाये जाते हैं। जन संख्या के बढ़ने से जिले के वन साफ कर लिये गये और उनमें खेती होने लगी है। परगना जेवर, शिकारपुर के कुछ भागों में इस समय भी ढाक के जंगल हैं। इस का गोंद कई कामों में आता है और टेसू फूल से लाल रङ्ग बनाया जाता है। कई भागों में ऊसर भूमि है जहां जानवर भी नहीं चराये जा सकते। जहां रेह है वहां उसे इकट्ठा करके सज्जी, सोडा या खारी और शोरा बनाते हैं। खारी मिट्टी अधिकतर (३०,००० एकड़) यमुना-तट के पास कुछ काली नदी के पास है।

कंकड़ कई भागों में मिलता है। यह अक्सर चिकनी मिट्टी या कभी कभी बालू में मिले हुये पाये जाते हैं। ये सड़क बनाने और चूना तयार करने के काम में आते हैं।

अहार इस समय एक छोटा गांव है। यह गंगा के किनारे अनूप शहर से ७ मील और बुलन्दशहर से २१ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। सबसे अधिक प्रसिद्ध महादेव का मन्दिर है। यहां शिवरात्रि और जेष्ठ दशमी को मेला लगता है। अहार नाम अहिहर से बिगड़ कर बना है। अहिहर का अर्थ है सर्पों का नाश। कहा जाता है कि यहीं जन्मेजय ने सर्प यज्ञ किया था और नागर ब्राह्मणों को पड़ोस की भूमि दान में दी थी। कहते

हैं यहीं रुक्मिणी का निवास था और अम्बिका देवी के मन्दिर (जो इस समय पास के मुहम्मदपुर गांव में स्थित है।) से श्री कृष्ण ने रुक्मिणी का हरण किया था। मुसलमानों के पहले यहां हिन्दू राजाओं की राजधानी थी। पड़ोस के बेड़ों में कई पुरानी चीजें मिली हैं। एक गड़े हुये स्तम्भ में गढ़ कर एक सर्प बनाया गया था। अकबर के समय तक यहां ब्राह्मणों की अधिकता थी। औरंगजेब के समय में ये मुसलमान हो गये और इन्हीं के हाथ में भूमि बनी रही। गदर में इनसे जमीन छीन ली गई। इस समय यहां साधारण व्यापार होता है। बाजार हर मंगलवार को लगता है। गंगापार करने के लिये नावों का घाट है। लेकिन नारोरा के पास गङ्गा में बांध बन जाने से उधर की नावों का यहां आना बन्द हो गया इससे यहां के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा।

अनूप शहर गङ्गा के ऊंचे दाहिने किनारे पर बुलन्दशहर से २५ मील की दूरी पर पूर्व की ओर स्थित है। यहां से बुलन्दशहर और अलीगढ़ को पक्की सड़क गई है। गङ्गा के ऊपर नावों का पुल है जो बाढ़ के दिनों में तोड़ दिया जाता है। इस पुल के ऊपर से मुरादाबाद, चन्दौसी और बदायूँ को सड़कें जाती हैं। यहां से छिबाई और राजघाट को भी सड़क गई है सरदी की ऋतु में गङ्गा की धारा बदायूँ की ओर हो जाती है। यहाँ तहसील, थाना बाजार, अस्पताल और हाई स्कूल है। मानिक चौक और मदार दरवाजा दो प्रधान भाग हैं। नालों के गङ्गा में गिरने से पानी शीघ्र ही बह जाता है। यहां कार्तिकी को बड़ा मेला लगता है। पहले अनूप शहर एक बड़ा व्यापारी नगर था। यहां से नावें लदकर मिर्जापुर तक जाती थीं। यहां कम्बल जूता और शक्कर बनाने का काम होता है।

अनूप शहर को बरगूजर राजा अनूपराय ने जहांगीर के समय में एक पुराने खेड़े में बसाया था। आपस के झगड़ों में यहां की एक रानी ने किले को उड़ा दिया अपने आप को भी उसने नष्ट कर लिया १७५७ में अहमदशाह दुर्रानी ने अपना पड़ाव डाला। १७५९ में उसने मरहठों और जाटों के विरुद्ध लड़ने के लिये उत्तरी हिन्दुस्तान के मुसलमानों को अपनी ओर मिला लिया और दूसरी बार यहां पड़ाव डाला। १७७३ में मरहठों का रुहेल खंड पर आक्रमण रोकने के लिये अवध के नवाब और ईस्ट इंडिया कम्पिनी की फौजें यहां आ गईं। इसके बाद काफी समय तक अंग्रेजी फौजें अनूप शहर में रहीं। यहीं इनका एक कब्रिस्तान है। गदर में खुशीराम और उसके जाट साथियों ने गोरों को बचाने में बड़ी सहायता की।

औरंगाबाद चन्दोख बुलन्द शहर से १५ मील पूर्व की ओर स्थित है। अनूप शहर से बुलन्द शहर जाने वाली पक्की सड़क इसके उत्तर में २ मील दूर है। पूर्व की ओर कुछ दूर पर नीम नदी बहती है। १ मील लम्बी झील गांव से मिली हुई है। पहले यहीं हिन्दू राजा चन्द की राजधानी थी। उस समय इसका नाम आभा नगरी या चन्दोख था। पुराने किले के चिन्ह इस समय भी दिखाई देते हैं। यहीं चन्द्राणी का पुराना मन्दिर है। औरंगजेब के समय में उसकी आज्ञा से यहां बड़गूजरों का अधिकार हो गया। इसी से सम्राट के सम्मानार्थ इसका नाम औरंगाबाद रख दिया गया।

औरंगाबाद सैय्यद धुर उत्तरी सिरे पर बुलन्द शहर से ६ मील दूर है। बुखार के सैय्यद जलालुद्दीन के एक वंशज ने पड़ोस के जारोलिया लोगों को दबाकर १७०४ में इसे बसाया और अपने संरक्षक औरंगजेब की स्मृति में इसका नाम औरंगाबाद रक्खा। यह नीची जगह पर है और तीन ओर तालाबों से घिरा है। हर शुक्रवार को बाजार लगता है।

बगरासी बुलन्द शहर से २२ मील दूर है। इसे बाजूराय (एक तगा ब्राह्मण) ने बसाया था। लोदी बादशाहों के समय में अफगानों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। कुछ लोग अपने आप को बादशाह शेरशाह सूरी के सम्बन्धी बतलाते हैं।

बराल गांव बुलन्द शहर से ७ मील उत्तर की ओर है। मेरठ से गुलाउठी जाने वाली पक्की सड़क इससे १ मील पश्चिम की ओर है। सड़क से कुछ आगे काली नदी बहती है। यहां होकर गङ्गा नहर की सनौढा और डासना शाखायें बहती हैं। पहले यह तोमर राजपूतों का गांव था। गदर के बाद यहीं

उनसे छीनकर, हाथरस के राजा गोविन्दसिंह को राज भक्ति के पुरस्कार में दे दिया गया।

बेलन गांव डिवाई से ६ मील दक्षिण पूर्व की ओर है इसके पूर्व की ओर १ मील गङ्गा-नहर की अनूप शहर शाखा बहती है। दो मील और आगे लोअर गङ्गा-नहर नारोरा गांव के पास गङ्गा से निकलती है। अब से प्राय: २०० वर्ष पहले बड़गूजर राजा भूपसिंह ने इस गांव को बसाया बेल के वृक्षों के बीच में बेला-देवी का मन्दिर बनवाया। यहीं सनाढ्य ब्राह्मणों की बस्ती बस गई। इन्हें प्रति वर्ष मन्दिर के चढ़ावे से १०,००० रु० मिलता है। चैत और कुआर में देवी का मेला लगता है। प्रति मंगलवार को बाजार लगता है।

विलासपुर कस्बा बुलन्दशहर से १७ मील की दूरी पर सिकन्दराबाद से दनकौर जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। १ मील पूर्व क ओर गङ्गा नहर की माट शाखा बहती है। इस पर पुल बना है। पुल से १ मील और आगे सिकन्दराबाद रेलवे स्टेशन है। पक्की सड़क बाजार में होकर जाती है। १ फर्लांग की दूरी पर कच्चा किला बना है। इसमें कर्नल स्किनर के वंशज रहते हैं पहले जो २४ गांव दिल्ली के राजा के निजी खर्च के लिये नियत थे वे १८३५ ईस्वी में कर्नल स्किनर को ६,-०००) रु० वार्षिक लगान पर दे दिये। गदर के बाद बागी जमीदारों की जमीन भी इसी ताल्लुकेदारी में मिला दी गई। १८६४ से सरकार की ओर से १० फीसदी ताल्लुकेदारी भी दी जाने लगी। १८८८ में स्किनर का अन्तिम लड़का मर गया। इसके बाद यह जायदाद कई टुकड़ों में बंट गई। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

बुलन्दशहर—काली नदी के दाहिने किनारे पर समुद्रतल से ७४० फुट की ऊंचाई पर बसा है। पुराना बारन कस्बा काली नदी के खादिर में बसा था नया शहर कुछ ऊंची भूमि पर और कुछ नदी के पास समतल भूमि पर बसा है। उत्तर की ओर काली नदी पर पुल बना है। पुल के पास स्नान करने के घाट बने हैं। पुल से एक सड़क सीधी शहर को आती है। दूसरा सड़क बलई (बाला-ए) कोट (ऊंचे भाग) को जाती है।

अनूप शहर से सिकन्दराबाद जानेवाला सड़क माउसगंज और डिप्टीगंज मुहल्लों में होकर जाती है। एक सड़क निचले भाग (जेर कोट) को जाती है। चौक में दोनों सड़कें मिल जाती हैं। चौक के पास सुन्दर घर बने हैं।

बुलन्दशहर या बरण बहुत पुराना नगर है। यहां गुप्त राजाओं और दूसरे राजाओं के सिक्के मिलते हैं। पहले अहार के परमल नामी तोमर राजा ने बन-(बन को छांट कर बसाया गया) नाम का नगर बसाया था। इसके बाद इसका नाम अहिबरण (सर्प-कोट) पड़ा। ४०० से, ६०० ईस्वी तक यहां बौद्धों का प्रधान केन्द्र था। आगे चलकर लोग इसे हिन्दी में ऊंचा नगर और फारसी में बलन्द शहर कहने लगे। महमूद गजनी के समय में यहां राजा हरदत्त राज्य करते थे। उन्होंने यहां एक सुन्दर सरोवर बनवाया। एक मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे बहुत पुराने छोटे स्तम्भ गड़े मिले। यहां का अन्तिम हिन्दू राजा चन्द्रसेन था जो अपने किले की रक्षा के लिये आक्रमणकारी कुतुबुद्दीन की फौजसे लड़ता हुआ मारा गया। पास ही ईदगाह है जो अधिक पुराने भवनों के सामान से बनाई गई। जामा मस्जिद वाला कोट में में है यह १७३० में बननी आरम्भ हुई और १८३० में बनकर तैयार हुई। बुलन्द शहर में कपड़ा बुनने और लकड़ी पर नक्काशी करने का काम अच्छा होता है। यहां के कुम्हार मिट्टी के बढ़िया बर्तन बनाते हैं।

छतारी कस्बा अलीगढ़ से अनूप शहर जाने वाली पक्की सड़क से १ मील की दूरी पर स्थित है। खुरजा से छतारी २१ मील दूर है। पहले छत्रधारी मेवाती वंश का यहां अधिकार था। छत्रधारी से ही बिगड़कर छतारी नाम पड़ा। पूर्व की ओर कच्चा किला है। काली नदी २ मील पूर्व की ओर बहती है। छतारी कस्बे में एक स्कूल और डाकखाना है। बाजार मंगल और शुक्रवार को लगता है। ब्राह्मण, ठाकुर और चमार काश्तकार हैं। गङ्गा नहर की पहसू शाखा से सिंचाई होती है।

दादरी कस्बा ग्रांड ट्रंक रोड पर सिकन्दराबाद से ११ मील और बुलन्द शहर से २२ मील दूर है। एक पक्की सड़क डेढ़ मील की दूरी पर दादरी रेलवेस्टेशन को जाती है। अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले यह भट्टी

गूजरों का गांव था। मुगल साम्राज्य के अन्तिम दिनों में बदेहरा के गूजर-सरदार दरगाही सिंह ने यहां गढ़ी बनवाई और बाजार लगवाया। उसने लूट मार करके १३३ गांवों पर अपना अधिकार कर लिया। लेकिन वजीर नजीबुद्दौला बुद्धिमान था। उसे चोरमार (चोरों को मारने वाले) की उपाधि दी और २९८०० रु० के वार्षिक लगान पर ये सब गांव दे दिये। जब मरहठों का यहां अधिकार हुआ तब यह जागीर बनी रही। गदर में भाग लेने के कारण यह जायदाद जब्त कर ली गई। दो भाइयों को फांसी दी गई और गांव जला दिया गया।

दनकौर यमुना के किनारे पर सिकन्दराबाद से ११ मील और बुलन्दशहर से २० मील की दूरी पर स्थित है। अली गढ़ से दिल्ली को पुरानी सड़क यहीं होकर जाती है। यहां और भी कई सड़कें मिलती हैं। यमुना को पार करने लिये नावों का घाट है। दनकौर का एक भाग ऊंचे किनारे के ऊपर और दूसरा भाग नीचे बसा है। लोगों का विश्वास है कि ऊँचा भाग अशुभ है। इसलिये अधिकतर लोग ऊंचे भाग को खाली करके निचले भाग में बसते जा रहे हैं। यहां घी, शक्कर और अन्न का व्यापार होता है। बाजार रविवार को द्रोणाचार्य ताल के किनारे लगता है। बाजार मन्दिर और थाने को आने वाली सड़क पक्की है। दनकौर का पुराना नाम द्रोणचार है। कहते हैं कि आचार्य द्रोण ने इसे बसाया था। उन्हीं की स्मृति में यहां द्रोणाचार्य-मन्दिर बना है। यहीं भील राजकुमार ने द्रोण की मूर्ति बनाकर धनुर्विद्या में कुशलता प्राप्त की थी। डिबाई कस्बा चोईया के किनारे अनूप शहरसे ११ मील दक्षिण की ओर बुलन्दशहर से २६ मील की दूरी पर बसा है। यहां से डिबाई स्टेशन को पक्की सड़क गई है। यहां रुई (गाढ़ा), घी और तेल का बड़ा व्यापार होता है। डिबाई पुराना नगर है और उस स्थान पर बसा है जहां पहले धुन्ध गढ़ था। इसीसे कुछ समय तक इसका नाम धुंधरा था। फिर बिगड़ कर दिबाई पड़ गया। मुसलमानों के समय में यहां से ठकरा राजपूत भगा दिये गये जब मरहठों का अधिकार हुआ तो उनका आमिल एक पुराने किले में रहता था। अंग्रेजी राज्य होने पर १८४२ में किले में नील का कारखाना बना लिया गया।

गुलाउठी पुराना नगर है और बुलन्दशहर से १२ मील उत्तरी की ओर हापुड़-मेरठ की पक्की सड़क पर स्थित है। दक्षिण पश्चिम की ओर सिकन्दराबाद को और पूर्व की ओर सयाना को सड़क गई है। काली नदी डेढ़ मील पूर्व की ओर बहती है। नदी के ऊपर पुल बना है। सड़क के पास फौजी पड़ाव है। गङ्गा नहर की गुलाउठी शाखा से पड़ोस की जमीन सींची जाती है। जाट, बनिये और सैयद यहां के प्रधान निवासी हैं। कहा जाता है कि मुहम्मद तुगलक के समय में तुर्किस्तान के सब्जवार से सैयद लोग यहां आकर बस गये थे।

जहांगीराबाद अनूपशहर के बुलन्द शहर जाने वाली पक्की सड़क से २ मील उत्तर की ओर है। यह पक्की सड़क से अनूपशहर से ११ मील और बुलन्दशहर से १५ मील दूर है। जहांगीराबाद कुछ नीची भूमि पर बसा है। ईट पाथने वालों ने इसे और भी नीचा बना दिया है। पहले यह एक कच्ची चारदीवारी से घिरा था इसके पास खाई में बंधा हुआ पानी भरा रहता था। मलेरिया ज्वर बहुत फैलता था। आगे चलकर यह नाली में बदल दी गई और इसका पानी नीम नदी में गिरा दिया गया। निचली भूमि में बाग लगा दिये गये यहां कपड़े की और परदों की छपाई का काम अच्छा होता है। यह अनाज की भी एक मंडी है। जहांगीराबाद और अनूपशहर साथ साथ बसाये गये थे। आगे चलकर बरगूजर राजा के सम्बन्धियों ने अपनी यह जमींदारी एक बेगश अफगान के हाथ बेच डाली।

जेवार कस्बा खड्डों और कटी फटी भूमि के ऊपर यमुनाके ऊँचे किनारे पर बसा हुआ है। यह खुरजा से २० मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यमुना पार करने के लिये पहलादपुर में (नावों का) घाट है। मंडी में पक्की दुकानें हैं। बोइन सराय नाम मरहठों के के फ्रांसीसी सेनापति की स्मृति में रक्खा गया है। बाजार हर शुक्रवार को लगता है। बल्देवजी के मन्दिर में भादो के महीने में और शीतलादेवी के मन्दिर में चैत के महीने में मेला लगता है। सावन के महीने में शकरवरास की दरगाह पर मुसलमानों का मेला

लगता है। जवार का पुराना नाम जावाली है। इसे एक ब्राह्मण ने बसाया था। सम्वत १२०० में यहां के ब्राह्मणों ने मेवाती आक्रमणकारियों को भगाने के लिये भरतपुर जाटों से सहायता तो मिली लेकिन यहां उनका अधिकार होगया। बदले में उन्होंने ब्राह्मणों को ५ मेवाती दे दिये।

झाझर कस्बा बुलन्दशहर से मकनपुर घाट (यमुना तट) को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। झाझर चोला रेलवे स्टेशन तक सड़क पक्की है। हर मंगलवार को बाजार लगता है। कहते हैं कि इस कस्बे को एक बलूची ने बसाया था जिसने हुमायूं का साथ दिया था। अकबर ने उसे गालिब जंग की उपाधि दी थी।

करनवास गांव गंगा के किनारे अनूपशहर से ८ मील दक्षिण पूर्व की ओर स्थित है। कहते हैं इसे पांडवों के भाई राजा कर्ण ने बसाया था। जेष्ठ दशहरा को यहां १ लाख यात्री स्नान करने आते हैं। यहां शीतलादेवी का पुराना मन्दिर है। यहां हर सोम वार को मेला लगता है। पड़ोस के खेत गंगा-नहर की करनवास शाखा से सींचे जाते हैं। कास्ना कस्बा यमुना खादर में एक धारा के किनारे बसा है। इसके पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां इकराम खां का मकबरा है जिसे शाहजहां ने दिल्ली का किला बनाने का काम सौंपा था। इस गांव को जैसलमेर के एक भट्टी राजपूत राव कंसल ने बसाया था। तैमूर के आक्रमण के समय चुनार के एक शेख ने राजपूतों से यह गांव छीन लिया।

खालौर अनूपशहर से ७ मील पश्चिम की ओर स्थित है। पूर्व की ओर गंगा नहर की अनूपशहर शाखा बहती है। कहा जाता है कि अब से ३५० वर्ष पहले राजा जैसिंह ने इसे बसाया था। इसका पुराना नाम जैसिंहपुर था। इस समय यहां खालें रंगी जाती हैं। इसलिये इसका नाम खालौर पड़ गया।

खानपुर अनूपशहर तहसील में स्थित है। जहांगीर के समय में इसका नाम थाटी नसीराबाद से बदलकर खानपुर रख दिया गया और इसकी जागीर खुरजा के अफगान अल्लखां को सौंप दी गई। गदर में यह जागीर जब्त कर ली गई और सरकार के खैरख्वाहों में बांट दी गई। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है।

खुर्जा नगर (३१,०००) बुलन्दशहर में सबसे बड़ा नगर है। यह ग्रांड ट्रंक रोड पर बुलन्दशहर से १० मील दक्षिण की ओर अलीगढ़ से ३० मील उत्तर की ओर स्थित है। जंक्शन स्टेशन शहर से लगभग ५ मील दूर है। पश्चिम में करवन नदी और पूर्व की ओर नहर से घिरा होने से पहले शहर का पानी ठीक ठीक नहीं बहने पाता था। इसमें सुधार कर लिया गया। खुर्जा घी, तेल और अनाज की बड़ी मण्डी है। यहां का घी कलकत्ते में बहुत बिकता है। खुर्जा के बने हुये मिट्टी के बर्तन दूर दूर तक बिकते हैं। हाल में कनाडा के लोग भी यहां के बने हुये मिट्टी के बर्तन पसन्द करने लगे हैं। खुर्जा की अजवाइन पटना, मुंगेर और भागलपुर में बहुत बिकती है। खुर्जा शिक्षा का भी केन्द्र बन रहा है। यहां एक इण्टर कालेज, एक हाई स्कूल और मिडिल स्कूल है। यहां प्राचीन स्मारक कम हैं। ग्रांड ट्रंक रोड के पास ४०० वर्ष का पुराना मखदूमशाह का मकबरा है।

कुचेसर गांव उत्तर में मेरठ की सीमा के पास बुलन्दशहर से २१ मील दूर है। यहां पुराना कच्चा किला है जो खाई से घिरा है। यह दलाल जाटों की एक जागीर है। इसमें ५५ गांव शामिल हैं। इस राजा के वंशज प्राय २५० वर्ष पहले हरियाना से आये थे। गदर के समय सरकार को सहायता देने के उपलक्ष में यहां के राजा को कई गांव दे दिये गये।

मलगढ़ बुलन्दशहर के धुर दक्षिण में काली नदी के पास स्थित है। यह अनाज की मंडी है। रविवार को बाजार लगता है। पहले इसे राठौरा कहते थे। यह गौरवा राजपूतों का गांव था। मरहठों के आने के पहले इसे एक खटिक पठान ने लिया और यहां नदी के पास एक कच्चा किला बनवा लिया। उसने इसका नाम मल गढ़ रख दिया। १७६२ में मरहठों ने इसे छीन लिया। १८०३ में यहां के मरहठा आमिल माधोराव फाल्किया ने अंग्रेजी कर्नल के विरुद्ध लड़ने में बड़ी वीरता दिखलाई। स्किनर के २०० सिपाही मारे गये। पर अन्त में यहां अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

नारोरा गांव गङ्गा के किनारे डिबाई से ७ मील

पूर्व की ओर बुलन्दशहर से २३ मील की दूरी पर स्थित है। यहां से लोअर (निचली) गङ्गा नहर निकाली गई। इसीसे नारोरा प्रसिद्ध हो गया है। यह नहर गङ्गा की समानान्तर बहती है और रामघाट होती हुई अलीगढ़ जिले में प्रवेश करती है। नहर निकालने के लिये गङ्गा में एक बांध बनाया गया। उसकी रक्षा के लिये दोनों किनारे कुछ दूर तक पक्के बना दिये गये। एक ट्राम्बे की सड़क नारोरा गांव को राजघाट स्टेशन से मिलाती है। यहां ट्राम्बे नहर के काम के लिये बनी थी। यहां नहर विभाग की कुछ इमारतें और एक छोटा बाजार है।

पहासू गांव खुर्जा से छतारी जाने वाली सड़क पर बुलन्दशहर से २९ मील की दूरी पर बसा है। इसके उत्तर में काली नदी और दक्षिण में गङ्गा-नहर की पहासू शाखा बहती है। इसका पुराना नाम पाहि आसन्न है जिसका अर्थ है दूसरे गांवों में खेती करने वाले शाह आलम ने यह परगना बेगम समरू को दे दिया था। १८३६ में उसके मरने पर कुछ समय तक अंग्रेजी राज्य में रहा। फिर यह वर्तमान नवाब (जमींदार) के पूर्वजों को सौंप दिया गया। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और बाजार है।

पिंडावल काली नदी और डिबाई के बीच में बुलन्द शहर से १२ मील की दूरी पर बसा है। अनूप शहर से अलीगढ़ जाने वाली पक्की सड़क यहां से केवल डेढ़ मील दूर है। इसको मेवाती वंश के एक रावल ने १२ वीं सदी में बसाया था। यहां के राजा शिया मुसलमान हैं। खूबपुरा यमुना के मकनपुरघाट से कुछ ही मील दूर है। गङ्गा नहर की माट-शाखा यहाँ होकर जाती है। यहां डाकखाना, स्कूल बाजार और अमरीकन मिशन का एक छोटा ईसाई गिरजा है। खूबपुरा की पेंट में मैं किसका फुफा हूँ' यहां की प्रसिद्ध कहावत अनजान लोगों को उधार देने वालों की हसी उड़ाने के लिये कही जाती है। कहा जाता है कि एक स्त्री ने फूफा पुकार कर एक बिसाती से कुछ सामान उधार लिया और दूसरी पेंठ के दिन दाम चुकाने क वचन दिया। दूसरी पेंठ को वह स्त्री न आई और बिसाती बाजार की प्रत्येक स्त्री से पूछता फिरा कि मैं किसका फूफा हूँ ?

राजघाट गङ्गा के किनारे पर अनूप शहर से ८ मील दक्षिण की ओर स्थित है। अलीगढ़ से चन्दौसी जाने वाली रेलवे राजघाट के पास एक पुल के ऊपर गङ्गा को पार करती है। यहां कार्तिकी स्नान का मेला लगता है। रेल के दक्षिण में नावों का पुल है जहां से बदायूं जिले को मार्ग जाता है। रामघाट गङ्गा के १५० फुट ऊंचे किनारे पर एक तीर्थ है। यहां कार्तिकी और वैशाखी पूर्णिमा और ज्येष्ठ दशहरा को दूर दूर से यात्री गङ्गा स्नान करने आते हैं। पहले रामघाट और मिर्जापुर बनारस के बीच में ऊन और गेहूँ का व्यापार बहुत होता था। नरोरा में बांध बन जाने से वह नावों का व्यापार बन्द हो गया। कहते हैं श्रीकृष्ण के ज्येष्ट भ्राता बलराम ने कोइल में कोलासुर को हराने के बाद रामघाट को बसाया। यहां के मन्दिर भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध हैं।

शिकारपुर कस्बा बुलन्द शहर से रामघाट जाने-वाली पक्की सड़क पर स्थित है। इसके दक्षिणी भाग में २५० वर्ष की पुरानी सराय है। मुसलमानी समय में यहां के सैय्यदों का बड़ा प्रभाव था। गदर में इनकी जागीरें छिन गई। कहते हैं इन सैय्यदों के पूर्वज सिकन्दर लोदी के गुरू थे। इनके पास इस समय भी बाबर, हुमायूं अकबर और जहांगीर की दी हुई सनदें है। इनके एक पूर्वज ने दाराशिकोह का पक्ष लिया। इसलिये औरंगजेब ने उसकी जागीर छीन ली। यहां कपड़ा बुनने और जूता बनाने का काम अच्छा होता है। इस नगर को अब से प्रायः १४५० वर्ष पहले सिकन्दर लोदी ने बसाया था। इससे पहले एक अन्यायी खेड़े पर तलपत नगरी नाम का दूसरा नगर था। कुछ दूरी पर विचित्र बारह खम्भा और पुराने किले के खंडहर हैं।

सिकन्दराबाद इसी नाम की तहसील का प्रधान नगर है। यह ग्रांड्ट्रंक रोड पर बुलन्द शहर से ११ मील पश्चिम की ओर स्थित है। स्टेशन क़स्बे से ४ मील दूर है। यहीं कई सड़कें निकलती हैं। सिकन्दराबाद कुछ नीची भूमि पर बसा है। कायस्थवाड़ा और कुंआ राजाजी इसके दो प्रधान भाग हैं। १४६८ में सिकन्दर लोदी ने सिकन्दराबाद बसाया था। १७४७ में यहां मरहठों का अधिकार हो गया। जब यहां ब्रिटिश अधिकार हुआ तो पहले अलीगढ़ जिले में

फिर १८८४ में बुलन्दशहर जिले में शामिल कर लिया गया। इसके पड़ोस में कई लड़ाइयां हुईं। १७८६ में नवाब वजीर और मरहठों से मुठभेड़ हुई। १७६४ में सूरजमल की मृत्यु के पहले मरहठों यहां पड़ाव डाला था। अन्त में अंग्रेजों और मरहठों की यहां पर लड़ाई हुई। १८५७ में पड़ोस के गूजरों, राजपूतों और मुसलमानों ने खूब लूट की। उन पर ४ लाख रु जुर्माना किया गया। २ लाख वसूल भी किया गया। लेकिन लूटे गये लोगों को इसमें से कुछ भी सहायता न मिली। यहां तहसील, थाना, स्कूल और बाजार है। यहां के जुलाहे बढ़िया साफा और दूसरा कपड़ा बुनते हैं जिसकी दिल्ली में बड़ी मांग होती है सियाना बुलन्द शहर से १९ की मील की दूरी पर उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। यहां से गुलाउठी, बसी और गढ़-मुक्तेश्वर को सड़कें गई हैं। सियाना से १ मील पूर्व की ओर गङ्गा-नहर की अनूपशहर शाखा बहती है। बसी और गढ़मुक्तेश्वर जाने के लिये इस पर पुल बने हैं। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। पहले यहां कुसुम (फूलों) और नील का व्यापार बहुत होता था। इसका पुराना नाम शय्यावन या शयनवन है। कहा जाता है कि हस्तिनापुर से मथुरा जाते समय बलराम ने यहां एक रात्रि शयन किया था उस समय इधर वन में बहुत से ऋषि मुनि रहते थे। दोर राजपूतों ने इसका नाम बदल कर सियाना रख दिया। दिल्ली के राजा पृथिवीराज के आदेश से यहां के तगा ब्राह्मणों ने राजपूतों को भगा दिया। अलाउद्दीन खिलजी के समय में शेखों ने तगा लोगों से इस परगने की जमीन छीन ली। अकबर के समय में इधर के बहुत से तगा मुसलमान हो गये। ब्रिटिश अधिकार हो जाने पर १८४४ तक यहां मुंसफी और तहसील रही। सूरजपुर ददरी स्टेशन से १ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह सिकन्दराबाद से १२ मील दूर है। पहले दिल्ली की शाही सड़क यहां होकर जाती थी। इसे सूरज मल (कायस्थ) ने बसाया था। फिर यह गांव भटियारों और गूजरों के हाथ में चला गया। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल, सराय है। बाजार मंगलवार को लगता है। इसके पड़ोस की जमीन अधिकतर ऊसर है।

तिल बेगमपुर सिकन्दराबाद से साढ़े तीन मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। पृथिवीराज के समय में भट्टी राजपूत यमुना पार से आकर यहाँ बस गये। औरंगजेब के समय में वे मुसलमान हो गये। गदर में उनकी जमीन छीन ली गई और कर्नल स्किनर को दे दी गई। गांव के पास एक पुराना कुआं है। इसमें संस्कृत और फारसी का लेख हैं। इसे हुमायूँ के समय में महतादत्त नामी एक खत्री ने बनवाया था।

अलीगढ़

अलीगढ़ का जिला गंगा और यमुना के बीच में मेरठ कमिश्नरी का धुर दक्षिणी भाग घेरे हुए है। पूर्व में गंगा नदी कुछ दूर तक अलीगढ़ और बदायूं के बीच में सीमा बनाती है। पश्चिम में थोड़ी दूर तक यमुना नदी अलीगढ़ जिले को पंजाब के गुड़गांव जिले से अलग करती है। इसके उत्तर में बुलन्दशहर की खुर्जा और अनूपशहर तहसीलें हैं। दक्षिण-पश्चिम में मथुरा जिला है। दक्षिण-पूर्व में एटा जिला है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई यमुना से गंगा तक ७० मील और चौड़ाई ४५ मील है। इसका क्षेत्रफल १९४७ वर्ग मील और जन संख्या ११,७२,००० है।

अलीगढ़ का जिला बड़ा उपजाऊ है। इसका क्रमशः ढाल उत्तर से दक्षिण-पूर्व की है। सब कहीं प्रायः समतल मैदान हैं। यदि कहीं कुछ ऊंचे टीले हैं तो वे बालू या मटियार के हैं। जो आखात हैं वे नदियों की घाटियां हैं। बीच का कुछ ऊंचा

मैदान एक ओर गंगा के खादर और दूसरी ओर नीम और चोइया नदियों की ओर क्रमशः ढाल हो गया है। इसके आगे काली नदी तक फिर कुछ ऊंची जमीन है। काली नदी के दाहिने किनारे पर बालू की पतली पेटी है। इस घाटी के आगे उपजाऊ मटियार और चिकनी मिट्टी का मध्यवर्ती आखात है। इसमें बहुत सी झीलें हैं। इनके पास रेह और ऊसर हो गया है। उत्तर पश्चिम की ओर यमुना के ऊंचे किनारे के आगे यमुना का खादर है। उत्तर पश्चिम में अधिक से अधिक ऊंचाई ६४० फुट और दक्षिण पूर्व में ५६० फुट है। गंगा नदी अलीगढ़ जिले को केवल छूती है और जिले और बदायूं के बीच में सीमा बनाती है। इस जिले में गंगा का कुछ ऊंचा किनारा और खादर स्थित है। नारोरा (बुलन्दशहर जिले) में बांध बंध जाने से गंगा की धारा कुछ स्थिर हो गई है।

गंगा की सहायक काली नदी (कालिन्दी) मुजफ्फरनगर जिले से निकल कर मेरठ, बुलन्दशहर होती हुई इस जिले में आती है। गरमी की ऋतु में इसकी चौड़ाई १० गज और गहराई १ गज हो जाती है। वर्षा में फैल कर २५० फुट चौड़ी हो जाती है। कभी कभी गंगा नहर का पानी इसमें गिरा दिया जाता है। कहीं कहीं इसका पानी सिंचाई के काम आता है। अलीगढ़ को पार करके काली नदी एटा जिले में पहुँचती है।

बरहरी के पास काली नदी में नीम नदी मिलती है। रामा कई के पास इसमें चोइया नाम की छोटी नदी मिलती है। चोइया गरमी में सूख जाती है। लेकिन नीम में सदा पानी रहता है और यहां सिंचाई का काम आती है। इसकी रेतीली देनीली और किनारे ढलवां है। काली नदी के संगम के पास इसके दोनों ओर तराई हो गई है। यहां यह २०० फुट चौड़ी है।

ईसन नदी सिकन्दरा राव के पास उथले तालाबों से निकलती है।

रिन्द नदी गंगा-नहर की शाखाओं के बीच में सदौली के पास एक आखात से निकलती है। इसके पड़ोस के गांवों में लगातार इसकी मन्द धारा का भिगते रहने से रेह हो गया है। हाल में इसकी तली गहरी कर दी गई है। अलीगढ़ जिले से यह एटा जिले में पहुँचती है और फतेहपुर जिले में यमुना से मिल जाती है।

सेंगर नदी भी दोआब में मध्यवर्ती आखात से निकलती है। पहले यह अभयवानझील से निकलती थी। नहर का जल न मिलने से गरमी की ऋतु में यह सूख जाती है।

कर्वन या कारों नदी बुलन्दशहर जिले के उत्तर में निकलती है और मथुरा और अलीगढ़ जिले में होकर शाहदरा के पास यमुना में मिल जाती है। गरमी की ऋतु में यह सूख जाती है। वर्षा ऋतु में इसकी गहराई ८ फुट और चौड़ाई १७० फुट हो जाती है।

करवन, और यमुना के बीच में पटवाहा नदी बहती है। यह मेरठ जिले से निकलती है और मथुरा जिले की नोहझील में गिर जाती है। यमुना नदी गंगा की तरह पुराने तट के नीचे एक छोटे खादर वाले भाग को छूती है।

गङ्गा नहर और उसकी शाखायें अलीगढ़ जिले में सिंचाई के प्रधान साधन हैं। सुमेरा और मचुआ के पास नहर में झील प्रपात हैं। नन्हू से कानपुर-शाखा दक्षिण-पूर्व की ओर बहकर अलीगढ़ से एटा जिलों में प्रवेश करती है। इटावा शाखा पहले ठीक दक्षिण की ओर जाती है फिर कानपुर शाखा की सामानान्तर बहती है। इनके अतिरिक्त कई उपशाखायें इस जिले को सींचती हैं।

लोअर (निचली गंगा नहर अलीगढ़ में केवल १२ मील बहती है। इस जिले में इसका अधिकतर मार्ग गंगा खादर में है। इसलिये यह सिंचाई के बहुत कम काम आती है।

अलीगढ़ जिला बड़ा उपजाऊ है। केवल १६ फीसदी जमीन ऊसर और वीरान है। बांगर के कुछ भाग में ढाक के जंगल हैं। खादर की नीची भूमि में अक्सर झाऊ मिलती है। गांवों और बड़े कस्बों के पास आम के बगीचे हैं। शेष भागों में खेती होती है।

ज्वार, बाजरा, अरहर, नील, गेहूँ, जौ, तम्बाकू और आलू यहां की प्रधान फसलें हैं।

अलीगढ़ जिले का कारबार

लद्दा या नील—का काम यहां पहले बहुत होता था। अब बहुत घट गया है। केवल आठ दस हजार एकड़ में नील होता है। बड़ी लड़ाई में जब जर्मनी का नील आना बन्द हो गया था। तब ३१ हजार एकड़ में नील उगता था और भाव भी चढ़ कर ५००)रु० मन हो गया था। तीस चालीस रुपये में डेढ़ सौ मन पौधे मिलते हैं। और हजार मन पौधों से ढाई या तीन मन नील निकलती है। सिकन्दरा राव तहसील में सब से अधिक नील होता है और प्रायः सब का सब कलकत्ते को भेज दिया जाता है।
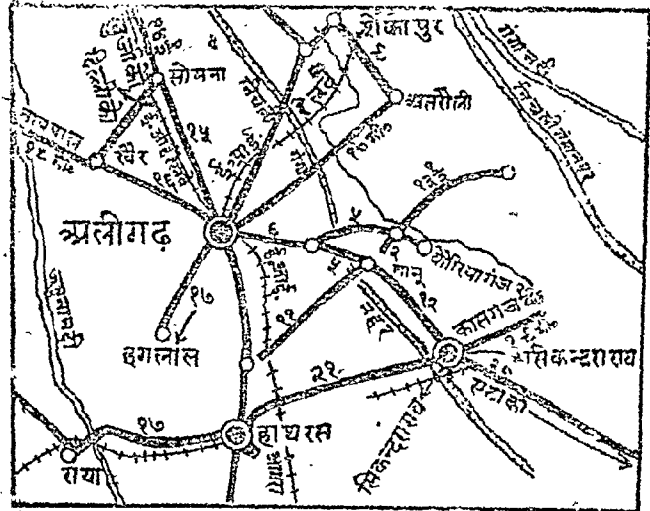
दाल—इस जिले में अरहर उर्द मूँग बहुत उगते हैं। हाथरस में हरसाल लगभग ढाई लाख मन दाल दलकर साफ की जाती है और अधिकतर कलकत्ते और मद्रास को भेज दी जाती है। दाल दलने का काम अधिकतर औरतें करती हैं। एक मन अरहर में ३० सेर साफ दाल निकलती है। ५ सेर चूनी और ५ सेर चोकर होता है। एक औरत दिन भर एक मन दाल दल लेती है जिसकी दलाई १ आने होती है। लड़के दाल फटकने और साफ करने का काम करते हैं। आदमी ढोने का काम करते हैं। औरत ५ आने, लड़के को ४ आने और आदमी को ८ आने मजदूरी मिलती है। एक कारखाने में फौज के लिये दाल तयार होती है।

शीशा—सिकन्दरा राव का शीशे का कारखाना तो टूट गया। पर पुरदिल नगर, अकाबाद और हसायन में चूड़ी, माला के दाने, मूँगा, बटन आदि बनाने का काम पुराने ढंग से अब भी होता है। कच्चा शीशा फीरोजाबाद और जलेसर से आता है। रेह आस पास की ऊसर जमीन से बहुत मिल जाता है। एक बीघा ऊसर जमीन से रेह लेने के लिये जमींदार १) रु० लेता है। एक मनिहार एक दिन में अपनी मामूली भट्टी से ३ हजार चूड़ियां या १ हजार दाने (गुरिया) बना लेता है। ये रंग बिरंगे दानों की मालायें इक्का के घोड़े या बैल को सजाने के काम आती हैं। सिकन्दरा राव में अचारी (खटाई रखने का बरतन) बनती हैं।

फेल्ट टोपी—अलीगढ़ शहर में फेल्ट टोपी का कारखाना है। इसमें हर महीने १० मन ऊन की खपत है और उससे तीन चार हजार टोपियां तयार होती हैं। पड़ोस में अच्छी ऊन नहीं मिलती है। इसलिये सात आठ रुपये सेर वाली बढ़िया ऊन बम्बई या कानपुर से मंगाई जाती है। पहले रुई धुनी जाती है। फिर उससे फेल्ट बनाई जाती है। फिर फेल्ट को दबा दबा कर सिकोड़ लेते हैं। फिर उसे खींचते हैं और ढांचों पर उसकी शकल को ठीक कर लेते हैं। अन्त में टोपी की किनारी बनाई जाती है और उस पर पालिश की जाती हैं बिक्री की सब से बड़ी दूकान दिल्ली में है।

हाथरस और अलीगढ़ में कपास ओटने और रुई के गट्ठे बनाने के कई कारखाने हैं। सिकन्दराराव में कपड़ा बुनने और कपड़ा छापने का काम होता है। यहां दरी कालीन और नमाज पढ़ने की आसमान की की भी बनाई जाती है।

पर अलीगढ़ धातु के काम के लिये बहुत प्रसिद्ध है। डाकघर के लिये लेटर बक्स बनाने का काम यहां १८४२ में आरम्भ किया गया। इस समय यहां ताले, मुहर, कैंची तमगे, पेटी, चाकू, साइन बोर्ड,

थैले आदि बहुत सी चीजें बनाई जाती हैं। मजबूत और बढ़िया ताले बनाने के लिये यहां कई दुकानें हैं। कुछ इग्लास हाथरस और दूसरे स्थानों में हैं।

यहां दूध और मक्खन का भी बहुत काम होता है। अलीगढ़ नाम पहले यहां के प्रसिद्ध (दोमील) गढ़ या किले का था। यह कुछ दूर उत्तर की ओर था शहर कोयल कहलाता था। किले का नाम कई बार बदला। यह किला लोदी बादशाहों के समय में १५२४ ई० में बनाया गया। १७१७ में सावित खां ने इसे फिर से बनवाया और इसका नाम सावित गढ़ रक्खा १७५७ में जाटों ने इस पर अधिकार कर लिया और इसका नाम रामगढ़ रक्खा। अफ्रासियाब ने इसमें कुछ वृद्धि की तब से इसका नाम अलीगढ़ हो गया। १७८५ में मरहठों ने इसे जीत लिया। मरहठों के समय में उनके फ्रांसीसी इंजीनियरों ने इसे जीता गदर में कुछ समय तक विद्रोहियों का इस पर अधिकार हो गया। समतल मैदान के बीच में ऊंची भूमि पर बना होने के कारण यह किला पहले बड़े काम का था ब्रिटिश शासन में यह उजड़ गया।

अलीगढ़ शहर ग्रांडट्रंक सड़क पर इलाहाबाद से ३०८ मील और आगरे से ४५ मील और दिल्ली से ८० मील दूर है। यहां कई पकी सड़कें मिलती हैं। यहीं ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन में बरेली से आने वाली शाखा मिलती है। शहर का कारबारी भाग पूर्व की ओर है। यहां अचलताल के पास होकर स्टेशन से सड़क आती हैं। स्टेशन से दूसरी ओर सिविललाइन्स, जेल, कचहरी और मस्लिम यूनिवर्सिटी है।

अतरौली कस्बा अलीगढ़से रामघाट को जानेवाली सड़क पर अलीगढ़ शहर से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित हैं। रेलवे स्टेशन ५ मील दूर है। इसके पास ही पुराना किला है। अपने शासनकाल में कुछ समय तक यहां मरहठों का एक अफसर रहता था। अतरौली में कपास, लोहे, पीतलके बर्तनों का अच्छा व्यापार होता है। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है। बरवानी हाथरस से १३ मील की दूरी पर एक बड़ा गांव है। यहीं एक किले के खंडहर हैं। इसके पास ही नहर की हरदुआ गंज शाखा बहती है। इसके पड़ोस में गुलाब की खेती बहुत होती है। इतर और गुलाब जल बनाने के लिये यहां हर साल ७००० मन से अधिक फूल पैदा किये जाते हैं। कलकत्ता, कन्नौज और जौनपुर के गन्धी इन्हे मोल लेने आते हैं। बेसवान् कस्बा अलीगढ़ से मथुरा जाने वाली सड़क के पास अलीगढ़से २२ मील दक्षिण पश्चिम की ओर बसा है। इसके पश्चिम म जाट तालुक्केदारों का फिल्म है। विजैगढ़ कस्बा गंगा नहर की इटावा शाखा के पश्चिमी या दाहिने किनारे पर बसा है। इसके पास ही एक बड़े किले के खण्डहर हैं १८०३ में यह किला मुसीन के राजा भगवन्त सिंह के अधिकार में था। उसके अनुयाइयों ने अंग्रेजों का घोर विरोध किया। पड़ोस की नीची जमीन में अंग्रेजी सेनापति और दूसरे अंग्रेजों की कब्रे हैं जो इस लड़ाई में मारे गये थे।

छर्रा रफतपुर अतरौली ११ मील दक्षिण-पूर्व की ओर पक्की सड़क पर स्थित है। यहां अनाज और शक्कर का अधिक व्यापार होता है। पास ही एक किला था जहां इस समय एक अलग मुहल्ला बस गया है हरदुआ गंज अलीगढ़ से उत्तर-पूर्व की ओर ७ मील की दूरी पर स्थित है। हरदुआ पुराना गाँव है। गंज आधमील पूर्व की ओर नया मुहल्ला बस गया है। यहां कपास ओटने की मिलें हैं। गदर में यहां बड़ी हानि हुई।

हाथरस अलीगढ़ से २२ मील दक्षिण की ओर अलीगढ़ से आगरे को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहीं होकर मथुरा से कासगंज को पक्की सड़क जाती है। हाथरस जंकशन पर ईस्टइण्डियन रेलवे और कासगँज से मथुरा को जानेवाले बाम्बे बड़ौदा सेण्ट्रल इण्डिया रेलवे का मेल होता है। इसके पुराने किले के लिये यहां कई बार लड़ाइयां हुई। इस समय इसके गँडहर विद्यमान हैं। हाथरस में कपास ओटने, तेल पेरने, पीतल के बर्तन चाकू, कैंची, सरौता बनाने और दाल दलने का काम बहुत होता है। व्यापार की दृष्टि से प्रान्त में कानपुर के बाद दूसरा स्थान हाथरस का ही है।

इँग्लास कस्बा अलीगढ़ से १६ मील दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। यहाँ जाटों की पुरानी बस्ती है। मरहठों ने यह ताल्लुका धार्मिक कामों के लिये गंगाधर पन्डित को सौंप दिया था। १८१६

उसकी मृत्यु के बाद इसका एक चौथाई भाग उसके उत्तरधिकारियों को मिला। शेष छिन गया। इसका कुछ भाग आगरा कालेज के लिये खर्च किया गया। गदर के समय यहां भारी लड़ाई हुई। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है।

जलाली एक पुराना नगर है। कहते हैं इसे जलालुद्दीन खिलजी ने बसाया था। इससे पहले का हिन्दू नगर खेड़े के रूप में दिखाई देता है। विद्रोही हिन्दुओं को दबाने के लिये उनने मुसलमानों की एक बस्ती यहां बसायी थी। जलाली अलीगढ़ से १३ मील की दूरी पर एक पक्की सड़क पर स्थित है। यहां कई मस्जिदें और इमामबाड़े हैं।

कचौरा सिकन्दराराव से ६ मील पश्चिम की ओर है। लार्ड लेक के समय में यहां के राजा ने अपने किले से घोर युद्ध किया था। इसमें एक अँग्रेज मेजर और कुछ सिपाही मारे गये। कोरिया गँज कालीन नदी के दाहिने किनारे पर अलीगढ़ से १७ मील पूर्व की ओर स्थित है। यह एक व्यापारी नगर है इसके पास ही एक पुराना खेड़ा है।

खैर कस्बा करबन के दाहिने किनाने पर स्थित है। यह अलीगढ़ से १५ मील दूर है। यहां चौहानों का राज्य था। अँग्रेजी राज्य होने पर यह उनसे छिन गया। गदर के समय में यहां के चौहानों ने सरकारी इमारतों को नष्ट किया और ३ लाख का माल लूटा। यहां तहसील और मिडिल स्कूल है। मेंडू का छोटा कस्बा हाथरस शहर से ४ मील और जंकशन से २ मील दूर है। पहले यहां जाटों की जागीर थी।

मुर्सान कस्बा हाथरस से ७ मील की दूरी पर स्थित है। पास ही कानपुर अचनेरी लाइन का टेशन है। बाजार कस्बे के बीच में है।

पिलखना एक पुराना कस्बा है। इसके पास होकर ननाऊ से दादों को सड़क जाती है।

सास्नी कस्बा अलीगढ से १४ मील दक्षिण की ओर स्थित है इसके पास कई सड़कें मिलती हैं। पूर्व की ओर यहां के प्रसिद्ध मिले के खंडहर हैं। यहां के राजा और अंग्रेजों से १८०२ ईस्वी में भारी लड़ाई हुई। किला तोड़ दिया गया। इसके ईंट-पत्थरों से सास्नी में नील का कारखाना बनाया गया।

सिकन्दरा राव का बड़ा कस्बा अलीगढ़ से २३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। यहां कास गंज से मथुरा जाने वाली सड़क पार करती है। पास ही कानपुर अचौरा रेलवे लाइन का स्टेशन है। कहते हैं इसे सुलतान सिकन्दर लोदी ने बसाया था राव खां नामी एक अफगान को यह जागीर में मिला इसलिये इसका नाम सिकन्दराराव पड़ गया। सिकन्दराराव नीची जमीन पर बसा है और देखने में मैला और भद्दा मालूम पड़ता है। यहीं से ईसन नदी निकलती है। यहां तहसील और मिडिल स्कूल हैं। यहां शोरा, शीशा और इत्र बनाने का काम होता है।

टप्पल का पुराना कस्बा यमुना के ऊँचे किनारे पर धारा से ५ मील की दूरी पर स्थित है। यहां से पक्की सड़कें खैर और अलीगढ़ को जाती हैं अलीगढ़ यहां से ३३ मील दूर है। पास में पुराने किले के खंडहर हैं।

फर्रुखाबाद

फर्रुखाबाद जिले के पश्चिम में एटा और मैनपुरी के जिले हैं। इसके उत्तर में बदायूँ, शाहजहांपुर और दक्षिण में इटावा और कानपुर के जिले हैं। पूर्व की ओर गंगा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। फर्रुखाबाद जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ७६ मील और चौड़ाई ४० मील है। इसका क्षेत्रफल १७८८ वर्ग मील और जनसंख्या ८,७८००० है। लेकिन गंगा के इधर उधर काली नदी की भयानक बाढ़ से बड़ी हानि हुई। आगे हट जाने से इसका क्षेत्रफल कुछ घटता बढ़ता रहता है। जहां गंगा की गहरी धारा रहती है वही इस जिले और बदायूँ शाहजहांपुर हरदोई के बीच की सीमा मानी जाती है। सबसे अधिक परिवर्तन कन्नौज और कायमगंज तहसील में होता है।

फर्रुखाबाद जिला एक समतल लहरदार मैदान है। इसमें पहाड़ी का नाम नहीं है। केवल नदियोंका कछार नीचा है और उसके ऊपर ऊँचा बांगर की भूमि है। जिले की ८० फीसदी भूमि बांगर है। शेष नीचा है इसकी अधिक उंचाई (मुहम्मदाबाद में) समुद्रतल से ५४८ फुट और कम से कम उंचाई मऊ रसूलपुर के पास ४७८ फुट है। बांगर भूमि को बागर काली नदी और ईसन नदियों ने चार भागों में बांट दिया है। नदी के पड़ोस में नीची भूमि है जो वर्षा की बाढ़ में डूब जाती है। नदी के ऊपर ऊँचे ढालू किनारे हैं। इनको नालों ने काट दिया है। इन्हीं नालों से नदी में पानी आता है। अधिक आगे उपजाऊ दुमट जमीन है। बांगर और गंगा के बीच वाले द्वाबा में ऊसर भूमि नहीं है। मिट्टी कुछ पीली है। बागर के दोनों किनारों के पास बालू है। कुछ भागों में भूड़ है। गंगा के कछार में तराई की नीची भूमि है। इसी तरह की नीची भूमि दूसरी नदियों के पड़ोस में मिलती है।

काली नदी मुजफ्फरनगर के जिले से निकलकर मेरठ, बुलन्दशहर आदि कई जिलों में बहती हुई प्राचीन संकिसा (शमशाबाद के पास) के पास फर्रुखाबाद जिले में प्रवेश करती है। १० मील शमशाबाद परगने में बहने के बाद काली नदी फर्रुखाबाद और मैनपुरी के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे फिर यह फर्रुखाबाद जिले के भीतर आती है। सिंगीरामपुर के पास काली नदी गङ्गा से केवल १ मील दूर रह जाती है। १८८८ में बाढ़ का जोर घटाने के लिये काली नदी से एक नाला काटकर गङ्गा में मिला दिया। पहले काली नदी कन्नौज से ४ मील आगे गङ्गा में मिलती थी। आजकल यह फीरोजपुर कटरी के पास गंगा में मिलती है। फर्रुखाबाद जिले में काली नदी के ऊपर उन दो स्थानों पर पुल बना हुआ है जहां से ट्रंक से एक सड़क बेवर से फतेहगढ़ को और दूसरी गुरुसहायगंज से फतेहगढ़ को आती है। जहां गुरुसहायगंज से आने वाली सड़क नदी को पार करती है वहीं पर रेल का भी पुल है। पहले काली नदी सिंचाई के भी काम आती थी। काली नदी को कालिन्दी या कालिनी भी कहते हैं। रामायण में इसे इक्षुमती कहा गया है।

ईसन नदी तिरवा और छिबरामऊ तहसीलों के बीच में सीमा बनाती हुई कानपुर जिले में पहुँचती है। बूढ़ी गंगा कम्पिल के पास दो धाराओं में बट जाती है। एक धारा उत्तर की ओर मुड़कर गंगा में मिल जाती है। दूसरी अधिक पुरानी धारा प्रधान ऊँचे तट से दो डेढ़ मील दूर बहती हुई शमशाबाद से ६ मील पूर्व अजीजाबाद के पास गंगा में मिल जाती है। बागर नदी एटा जिले से आकर पश्चिमी शमसाबाद होती हुई दक्षिण पूर्व की ओर मुड़ती है और भोजपुर के पुराने गांव के पास गंगा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में इसमें अधिक जल रहता है। गरमी में यह सूख जाती है। पहले इसकी तली में सूखी खेती होती थी। आजकल इसमें नहर का फालतू पानी छोड़ दिया जाता है।

फर्रुखाबाद जिले में १४ फीसदी जमीन ऐसी है जिसमें खेती नहीं हो सकती है। इसमें कुछ ऊसर और रेह है। कुछ जमीन में चरागाह और बाग हैं अधिकतर जमीन खेती के काम आती है। ज्वार, बाजरा, मकई, आलू, तम्बाकू, कपास गेहूँ और चना यहां की प्रधान फसलें हैं। गंगा के खादर में यहां के प्रसिद्ध तरबूज उगाये जाते हैं। सिंचाई का काम कुआं, तालाबों और निचली गंगा नहर की

शाखाओं से होता है। फर्रुखाबाद शोरा बनाने का काम पहले बहुत होता है। परदा और रजाई छापने का काम इस समय भी प्रसिद्ध है। कन्नौज में इत्र तैयार किया जाता है। १ तोला अच्छा इत्र तैयार करने में १ मन गुलाब के फूल खर्च होते हैं। पीतल और लोहे के बर्तन और सोने चांदी के जेवर भी फर्रुखाबाद में अच्छे बनते हैं। शोरा लोना (नमकीन) मिट्टी से बनाया जाता है। ऊसर भूमि का रेह भी इस काम आता है। खारी मिट्टी कम्पिल परगना और जिले के दक्षिणी-पूर्वी कोने में अधिक मिलती है। शोरा बनाने के लिये पहले खारी मिट्टी आयताकार कुंडियों में भरी जाती है। इसके बाद इसे धोकर घुले हुये खारे पानी को औटते हैं। इसमें एक डेढ़ दिन लग जाता है। इससे कलमी शोरा बनता है। कलमी शोरा बनाने में ६ या सात दिन लगते हैं। शोरा बनाने का काम नवम्बर से तक होता है।

अलीगढ़ गांव बरेली से फतेहगढ़ जानेवाली पक्की सड़क से केवल एक मील दूर है। यह फतेहगढ़ से ८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। पूर्व की ओर कुछ दूर पर रामगंगा बहती है। जब गदर में अमृतपुर की तहसील नष्ट कर दी गई तब नई तहसील का केन्द्र स्थान अलीगढ़ बना। यहां का पानी अच्छा नहीं है। बाजार हर शनिवार और मंगलवार को लगता है।

अमेठी गांव गंगा के एक ऊँचे टीले पर फर्रुखाबाद से १ मील पूर्व की ओर है। फर्रुखाबाद के अमेठी दरवाजे से यहां को एक सड़क आती है। एक पक्की सड़क कादरी दरवाजे से घाटिया घाट को जाती है। अमृतपुर गांव में कई कच्ची सड़कें मिलती हैं। यह फतेहगढ से १५ मील उत्तर की ओर है। इसके पड़ोस की भूमि बड़ी उपजाऊ है गांव बागों से घिरा है। वर्षा ऋतु में मीलों तक पानी भर जाता है। कहते हैं मानसिंह नामी एक गहरवार सरकार ने इसे बसाया था। यहां का पानी अमृत के समान था इसलिये इसका यह नाम पड़ा। गदर के पहले यह तहसील का केन्द्र था और यहां एक पुराना किला था। विद्रोहियों ने किला और तहसील को तोड़ डाला। गदर के बाद यहां एक मिडिल स्कूल है। बाजार सोमवार और बृहस्पतिवार को लगता है।

भोजपुर का प्राचीन गांव फतेहगढ़ से ६ मील दक्षिण की ओर गंगा के ऊँचे किनारे पर बसा है। इसके पड़ोस में जंगल है। भूमि नालों ने काट दी है। भोजपुर के दक्षिण की ओर बागर नाला गंगा में गिरता है। कुछ घर पुरानी ईंटों के बने हैं जिन्हें यहां के लोगों ने एक पुराने उजड़े हुये किले से निकाल लिया था।

भोलेपुर फतेहगढ़ से मिला हुआ बड़ा गांव है। प्रधान भाग फर्रुखाबाद को आने वाली पक्की सीमेंट की सड़क के दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कानपुर से अचनेरा को जानेवाली रेलवे लाइन का फतेहगढ़ स्टेशन वास्तव में भोलेपुर गांव में स्थित है। यहां आलू का बड़ा व्यापार होता है।

छिबरामऊ कस्बा तहसील का केन्द्र स्थान है। यह ग्रांडट्रंक रोड पर फतेहगढ़ से १७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है। यहां एक पुरानी सराय और बाजार है। जहां पुराना किला *था* उस स्थान पर अस्पताल है। इसका एक भाग महमूद गंज है। छिबरामऊ में दो मिडिल स्कूल हैं।

फर्रुखाबाद शहर गंगा किनारे से लगभग दो मील दूर है। शहर तीन ओर से (दक्षिण-पश्चिम और पूर्व) २० फुट ऊँची दीवार से घिरा है। कहीं कहीं यह पुरानी दीवार १२ फुट मोटी है। कई जगह यह टूट गई है। पहले स्थान स्थान पर इसके ऊपर बुर्ज बने थे। शहर से उत्तर की ओर गंगा का ऊँचा पुराना किनारा है। दक्षिण की दीवार २६४७ गज दक्षिण-पूर्व की दीवार १८७५ गज और दक्षिण-पश्चिम की दीवार १५७५ गज लम्बी है। दीवारों में दस दरवाजे हैं गंगा, पाई, कुतुब या उत्तरी, मऊ, जसमई, खंडिया, मदार, लाल, कादरी और अमेठी दरवाजे हैं। पर आजकल दीवार के टूट जाने से और भी कई रास्ते बन गये हैं। १ फतेहगढ़ से आनेवाली सड़क कादरी दरवाजे में हो कर जाती है। लाल दरवाजे से घाटिया घाट को पक्की सड़क जाती है। मदार दरवाजे से कानपुर को जसमई दरवाजे से मैनपुरी को मऊ दरवाजे से कायम गंज को पक्की सड़कें जाती हैं। उत्तरी-पूर्वी भाग में सुन्दर घर

और दुकाने हैं यहां का पानी बहुत अच्छा है। गंगा-तट की विश्रान्तें (विसरतें) बड़ी सुन्दर हैं। उत्तरी पश्चिमी ऊंचे भाग में जहां पहले किला था वहां इस समय तहसील और टाउन हाल है। टाउन हाल में एक अच्छा पुस्तकालय है। लिंजे गंज में अनाज का व्यापार होता है। कोतवाली के सामने सब्जी मंडी और कपड़े की दूकानें हैं। तम्बाकू, अफीम, आलू, फल, भांग शोरा, कपास, रजाई परदे, इत्र और बर्तन बाहर भेजे जाते हैं। फर्रुखाबाद शहर सम्राट फर्रुखासियर की स्मृति में नवाब मुहम्मद खां ने बसाया था। मुहम्मद खां मऊ रशीदाबाद में (१६६५ ई० में) पैदा हुआ था। उसने १७७२ में साम्रट फर्रुखासियर की सैनिक सहायता की पुरस्कार में उसे नवाब की पदवी और बड़ी जागीर मिली। उसी ने इस नगर को बसाया। १७४९ में यहां अवध के नवाब का अधिकार हो गया। १७५१ में यहाँ मरहठे आगये। १७७१ में सम्राट शाह आलम ने शहर के बाहर डेरा डाला था। १७७७ में अंग्रेजी फौज अवध के नवाब की ओर से फतेहगढ़ में आगई। १८०४ में यहां मरहठों का हमला हुआ। १८५७ में भीषण विद्रोह हुआ। फर्रुखाबाद में दो हाई स्कूल और दो मिडिल स्कूल हैं।

फतेहगढ़ कस्बा गङ्गा के दाहिने किनारे पर फर्रु-खाबाद से ३ मील की दूरी पर स्थित है। इसके उत्तर में गङ्गा के ठीक ऊपर पुराना किला है। इसके पड़ोस में फौजी बराकें कवायद करने का मैदान और अफसरों के बंगले हैं। पड़ोस में एक बड़ा गिरजाघर है। यह गिरजा उस रुपये से बना जो गदर के बाद फर्रुखाबाद के निवासियों से वसूल किया गया था। पुराना गिरजा विद्रोहियों ने नष्ट कर डाला था। जहां इस समय अस्पताल है वहां पहले अवध के एक मन्त्री (वजीर) का निवासस्थान था। बाजार काफी लम्बा है। पूर्व की ओर कचहरी और हाई स्कूल है।

गुरसहाय गंज ग्रांडट्रंक रोड पर एक बड़ा गांव और कानपुर से अचनेरा जाने वाली लाइन का एक स्टेशन है।

जलालाबाद गांव फतेहगढ़ से २३ मील की दूरी पर ग्रांडट्रंक रोड पर बसा है। यहां एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है।

कायमगंज इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह गङ्गा के ऊंचे किनारे पर फर्रुखाबाद से २२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। बूढ़ी गङ्गा यहां से १ मील दूर है। गङ्गा की धारा लगभग ६ मील दूर है। नगर लम्बा बसा है। यहां १ सराय १ अंग्रेजी स्कूल है। शनिवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां के चाकू सरौता और ताले अच्छे बनते हैं। पहले यहां तलवारें और बन्दूकें बनती थीं। यहां कई तरह के कपड़े बुने जाते हैं।

कमालगंज एक व्यापारी कस्बा और रेलवे स्टेशन है। गङ्गा यहां से २ मील दूर है। यहां एक मिडिल स्कूल है। इसे कमाल खां नामी एक नवाब के एक चेला ने बसाया था।

कम्पिल इसी नाम के परगने का प्रधान गांव है। यह गङ्गा के ऊंचे टीले पर फतेहगढ़ से २८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। गङ्गा के ऊंचे टीले की तली में बूढ़ी गङ्गा बहती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां से तम्बाकू और आलू बहुत बाहर भेजे जाते हैं। कायमगंज से एक सड़क कम्पिल होकर पटियाली (एटा) को गई है। एक सड़क रुदाइन रेलवे स्टेशन को गई है। उत्तर पूर्व में गङ्गा को (सूरजपुर घाट पर) पार करके बदायूं को गई है। एक सड़क जतीघाट के पास गङ्गा को पार करती है। गांव के उत्तर में जहां पहले गङ्गा बहती थी वहां मन्दिरों की पंक्तियां और विश्रान्तें खड़ी हैं। बाद में जब गङ्गा पानी यहां छोड़ देती हैं तो इस समय भी लोग इस बंधे हुये जल में स्नान करते हैं। रामेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर अत्यन्त प्राचीन और कुछ जीर्ण है। इसमें बारी बारी से एक पंक्ति ईंट और दूसरी पंक्ति पत्थर की है। सराउगी लोगों ने यहां नेमीनाथ का मन्दिर बनवाया है। यहीं मकान का मकबरा है। महाभारत के समय में यह दक्षिण-पांचाल की राजधानी था यहीं अर्जुन ने मत्स भेदन करके द्रोपदी को स्वयम्बर में जीता था। एक स्थान पर द्रोपदी कुण्ड है। यहीं पुराने किले के भग्नावशेष थे। तेरहवीं सदी में गयासुद्दीन बलबन ने दूसरा किला बनवाया। इसके बाद राठौर राजपूतों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया।

कन्नौज किसी समय में उत्तरी भारतवर्ष की राजधानी था। यह गङ्गा के ऊंचे किनारे पर फतेहगढ़ से ३३

मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पहले गंगा कन्नौज के एकदम पास ऊंचे किनारे को छूती हुई बहती थी। इस समय यहां से एक छोटी पक्की सड़क जाती है। यह कानपुर से अचनेरा को जाने वाली लाइन का एक स्टेशन है। पुराना कान्य कुब्ज वर्तमान कन्नौज से कहीं अधिक बड़ा था। इसके भग्नावशेष सरांय मीरा तक मिलते हैं। काफी दूर हल जोतने वाले किसानों को कभी कभी पुराने सिक्के, ईंटे और दूसरी चीजें मिल जाती हैं। पुराने कन्नौजी खंडहर वर्तमान लन्दन से कहीं अधिक क्षेत्रफल घेरे हुये हैं। कर्नल टाड के अनुसार इसका घेरा ३० मील से अधिक था। कुछ नये घर पुराने घरों के स्थान पर बने हैं। पुराने मन्दिर महमूद गजनवी के समय में तोड़ डाले गये। उत्तर-पूर्व की ओर गङ्गा का ऊंचा किनारा साठ सत्तर फुट ऊंचा है। दक्षिण की ओर बड़ा बाजार है। अजैपाल का मन्दिर पुराने किले का बचा हुआ चिन्ह है। जहां इस समय जामा मस्जिद है वहां सीता की रसोई थी। यह किले के बीच में है। इसके बहुत कुछ सामान भी हिन्दू मन्दिरों का लगा हुआ है। इसमें बहुत कुछ पुराने चिन्ह बिगाड़ दिये हैं। पड़ोस में कई मुसलमानी मकबरे हैं। सिंह भवानी में कई पुरानी मूर्तियाँ मिलीं। इनमें यज्ञ वाराई, शिव पार्वती, विष्णु और नन्दी की मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। कन्नौज नगर इतना पुराना है कि इसके स्थापना काल का ठीक पता नहीं चलता है। लेकिन कान्य कुब्ज का उल्लेख रामायण और महाभारत में आया है। हर्षवर्द्धन के समय में कन्नौज में आये हुये चीनी यात्री ह्वान्सांग ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। कन्नौज नगर को नष्ट करने वाले महमूद ने भी एक पत्र में लिखा था। यहां हजारों भवन मुसलमानों के दीन की तरह मजबूत हैं। इनमें अधिकतर संगमरमर के बने हैं। मन्दिरों की गणना नहीं की जा सकती। यह सम्भव नहीं कि करोड़ों के खर्च से इस प्रकार का नगर बनाया जा सके इस प्रकार के नगर के बनाने में २०० वर्ष से कम न लगेंगे। लेकिन इसी महमूद की लूट से कन्नौज पनप न सका। मीलों तक खेतों में ईंट और चूना के टुकड़े मिलते हैं।

खैर नगर—गंगा नहर के किनारे फतेहगढ़ से ४० मील दक्षिण पूर्व की ओर है। इसके सामने नहर पर पुल बना है। पास ही शेटन सिंह नामी एक राजपूत का बनवाया हुआ किला है। १७१६ से १७७१ तक यहां मरहठों का राज्य था। रविवार बुधवार को बाजार लगता है। खुदागंज काली नदी के बायें किनारे पर फतेहगढ़ से १४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से फतेहगढ़ और फरुखाबाद को पक्की सड़क जाती है। खुदागंज कानपुर अचनेरा लाइन का एक स्टेशन है। रेलवेलाइन लोहे के एक पुल के ऊपर से काली नदी को पार करती है। पुराने पुल के इस समय केवल कुछ खम्भे शेष बचे हैं। १८५७ में विद्रोहियों ने इसे तोड़ डाला था। यहां पर विद्रोहियों और अंग्रेजी सेना में भीषण लड़ाई हुई थी प्रायः सौ वर्ष पहले भी इस जगह काली नदी को पार करते समय नवाब अहमद खां और राजा नवलराय की सेना में लड़ाई हुई थी।

मऊ रशीदाबाद कायम गंज से दो मील पूर्व की ओर इसी का एक भाग है। यहां रशीद खां के महल और मकबरा के खंडहर है। महल के आंगन के तम्बाकू की खेती होती है। पुरानी मस्जिद हैदराबाद के निजाम की सहायता से सुधरवा दी गई। सियांगज गंगा और ग्रांडट्रंक रोड के बीच में फतेहगढ़ से ३५ मील दूर स्थित है यह अपने बाजार के लिये प्रसिद्ध है। अधिक पूर्व की ओर गंगा के किनारे पुरानी छावनी के चिन्ह हैं। इसकी इमारतें अवध के नवाबी राज्य के समय (१७७९-१८०१) में बनवाई गई थीं।

मीरन की सराय गांव ग्रांडट्रंक रोड पर पर फतेहगढ़ से ३२ मील दूर है। १६८२ में इस कन्नौज के सय्यदमुहम्मद ने बनवाया था। सराय के पास ही उसके बेटे का मकबरा है।

मुहम्मदाबाद फरुखाबाद से मैनपुरी को जने वाली सड़क पर स्थित है। इसे फरुखाबाद के प्रथम नवाब ने बसाया था। १७१३ में उसने यहां एक किला बनवाया और बाजार लगवाया। जब मुहम्मद एक मामूली सिपाही था उस समय उसने यहां के कानूनगो हरप्रसाद से एक मौजा अनुचित ढंग से माफी में लिखवाना चाहा। हर प्रसाद ने इनकार कर दिया। जब वह नवाब हुआ तब उसने कायस्थों की जमीन छीन ली उस पर अपना किला बनवाया और कानूनगो हर प्रसाद को किले में जिन्दा चुनवा दिया। उसी से किले का एक बुर्ज रायसाहब का बुर्ज कहलाता है।

नीम करोड़ी गांव फतेहगढ़ से १६ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यहां दो सड़कें मिलती हैं। कहा जाता है कि यहां पहले नीम के वृक्षों की अधिकता से इसका नाम नीम करोड़ी या करोड़ नीम वाला गांव रक्खा गया।

रुदायन एक छोटा गांव और रेलवे स्टेशन है। यह एटा की सीमा के पास है और फतेहगढ़ से ३० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है।

संकिसा (संकास्य , एक पुराना गांव है। पांचवीं शताब्दी में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान और ६३ में ह्वान सांग यहां आया था। बौद्धों का यह एक बड़ा तीर्थ है। बुद्ध भगवान स्वर्ग में ३ महीना समय बिताने के बाद यहीं पर दूसरी बार उतरे थे। यह काली नदी के पूर्व में है और पहले कन्नौज का द्वार कहलाता था।

सौरिख गांव फतेहगढ़ से २५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। फतेहगढ़ से इटावा को जाने वाली सड़क छिबरामऊ और सौरिख होकर जाती है। यहां से एक सड़क तिरवा को गई है। पूर्व की ओर ईसन नदी है। यहां थाना, स्कूल और डाकखाना है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

शम्साबाद का कस्बा बूढ़ी गङ्गा के एक ऊंचे टीले पर फतेहगढ़ से १८ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। वर्षा ऋतु में इस पुरानी धारा में पानी बहता है। गरमी में वर्षा के बाद कहीं पानी पड़ जाता है। कहीं खेती होती है। विलायती कपड़े के आने के पहले यहां बहुत बढ़िया कपड़ा बुना जाता था। पुराने समय के नवाबों के घर अधिक अच्छे हैं। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। नीम और इमली के पेड़ों की छाया में बाजार लगता है। साढ़े तीन मील की दूरी पर खोर (गांव) अधिक पुराना है। १२८८ में शम्शुद्दीन ने नावों पर सेना भेज कर राठौरों को हराकर शम्साबाद बसाया। एक टीले पर पुराने कोट (किले) के चिन्ह हैं। खोर के पांडे प्रसिद्ध हैं।

सिंघीराम पुर फतेहगढ़ से ११ मील की दूरी पर गंगा के ऊंचे किनारे पर बसा है। यहां जेष्ठ और कार्तिक महीने में गंगा स्नान का बड़ा मेला तीन दिन तक रहता है। वर्षा ऋतु में यहां का दृश्य बड़ा सुन्दर रहता है। उस समय गंगा घाट के पास बहती है। वैसे यह दो मील दूर हो जाती है। यहां कई पुरानी धर्मशालायें और एक प्राचीन मन्दिर है। यह गांव दौलतराव सिन्धिया (१७९४–१८२७) ने अपने गुरु रामकृष्ण दास को दान दिया था। गुरु के मरने पर इसका प्रबन्ध चेले के हाथ में रहता चला आया है।

तालग्राम फतेहगढ़ से २४ मील दक्षिण की ओर ईसन नदी और ग्रांड्ट्रंक रोड के मध्य में स्थित है। पहले कुछ समय तक तालग्राम एक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। यहां से एक सड़क इटावा को एक तिर्वा को और एक फर्रुखाबाद को जाती है। पश्चिम की ओर एक सड़क छिबरामऊ को और एक बिशनगढ़ होती हुई मैनपुरी को जाती है। पुराना किला नष्ट होकर एक खेड़ा बन गया है। यहां एक ताल, सराय और मिडिल स्कूल है।

थाटिया कस्बा तिर्वा से ७ मील कन्नौज से १० मील और फतेहगढ़ से ३६ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यहां कन्नौज और तिर्वा को अच्छी कच्ची सड़कें गई हैं। वर्षा ऋतु में जब ईसन नदी गहरी हो जाती है तब यहां पहुँचना कठिन हो जाता है। पहले यह सूती कपड़ा बनाने और छापने के लिये प्रसिद्ध था। फिर कारीगर दूसरे स्थानों को चले गये। नया भाग गंज थाटिया कहलाता है. यहां शुक्रवार और मंगलवार को बाजार लगता है।

तिर्वा कस्बा फतेहगढ़ से २५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। पुराना तिर्वा एक छोटा गांव है। नया तिर्वा गंज कहलाता है। दोनों में आध मील का अन्तर है। तिर्वा के राजा की गढ़ी में अधिकतर कच्चे घर हैं। कच्ची चारदीवारी के पास खाई है। यहां का पक्का तालाब और देवी का मन्दिर बड़ा सुन्दर है। गंज तिर्वा में कई छोटे छोटे मन्दिर हैं। यहीं तहसील और हाई स्कूल हैं। मँगलवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है।

याकूत गंज फतेहगढ़ से साढ़े तीन मील दक्षिण पश्चिम की दूरी पर एक पक्की सड़क पर स्थित है। यहां एक पुरानी सराय और मस्जिद, स्कूल और डाकखाना है।

हरदोई

हरदोई अवध का सबसे अधिक पश्चिमी जिला है गोमती नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है और इसे खीरी और सीतापुर जिलों से अलग करती है। इसके दक्षिण में लखनऊ और उन्नाव के जिले हैं। उत्तर में खीरी और शाहजहांपुर के जिले हैं। पश्चिम में फर्रुखाबाद का जिला है। गंगा और कुछ दूर तक रामगंगा की सहायक सेंधा नदी हरदोई की पश्चिमी सीमा बनाती है। इस जिले का क्षेत्रफल २३३० वर्ग मील है। हरदोई जिला दो प्राकृतिक भागों में बंटा हुआ है। बांगर की भूमि ऊँची है। कछार या खादर कुछ नीचा है। कुछ दूर तक गँगा का ऊँचा किनारा इन दोनों भागों को प्रथक करता है। पश्चिमी भाग के मध्य से यदि एक रेखा उत्तर से दक्षिण को खींची जावे तो इस रेखा के पूर्व में प्राय: ऊंची बांगर की समतल भूमि मिलेगी। बीच में सई नदी का उथला जल विभाजक है। गोमती की ओर जमीन धीरे धीरे नीची होती जाती है। बांगर की भूमि उत्तर में सब से अधिक ऊंची है। गोमती के समीप हिल्हानीके पास की भूमि समुद्र-तलसे ४६० फुट ऊंची है। इस जिले में गोमती नदी का किनारा प्राय: सब कहीं ऊंचा है। इसके पास की ऊंची भूमि की चौड़ाई २ मील से ८ मील तक है। मिट्टी कुछ बलुई और कम उपजाऊ है। पानी का तल २५ फुट से ४० फुट तक गहरा है। इसमें कहीं खड्ड और दलदल हैं। कहीं लहरदार रेतीले टीले हैं। खेती ऊंची भूमि में होती है। खेत प्राय: ऊसर भूमि से घिरे हैं। मटियार और बलुई भूमि की तँग पेटी है। अधिक दक्षिण में गर्रा नदी का बेसिन है। ऊंचे किनारे के नीचे पश्चिम में फर्रुखाबाद की सीमा तक गर्रा, सेंधा रामगंगा और गङ्गा की घाटियां हैं। शाहाबाद तहसील में गर्रा का प्रवाह प्रदेश नीचा और उपजाऊ है। इसके कछार में चिकनी मिट्टी है। गर्रा के पश्चिम में बलुई भूड़ है। इसका पश्चिमी सिरा अक्सर सेन्धा की बाढ़ में डूब जाता है। गर्रा और रामगङ्गा के बीच में कुछ दूर तक बलुई भूमि है। गर्रा के आगे सांडी और कटियारी परगनों में छोटी छोटी नदियों की जाल सा बिछा हुआ है। यह भाग अक्सर बाढ़ से डूब जाता है गङ्गा के कछार में बालू है और भागों में मटियार या चिकनी मिट्टी है। पानी बहुत पास निकल आता है। इस ओर खरीफ की फसल का कोई ठिकाना नहीं रहता है। रबी की फसल अच्छी होती है।

पूर्वी सीमा पर बहती है। देवकली के आगे यह लखनऊ जिले में पहुँचती है। गोमती की कई छोटी छोटी सहायक नदियां हैं। इनमें बेहटा नदी सँडीला की झीलों से निकलती है।

हरदोई जिलेमें लगभग १६ फीसदी जमीन ऊसर है। कुछ खेती के योग्य भूमि बेकार पड़ी रहती है। फिर भी इस जिले के बहुत बड़े भाग में खेती होती है ज्वार, बाजरा, उर्द, मूंग, गेहूं, चना जौ, ईख यहां की प्रधान फसलें हैं। कपास कुछ कम हो गई है। अफीम एक दम बन्द हो गई है।

संडीला बिलग्राम और शाहाबाद में सूती कपड़ा हाथ से बुना जाता है। सांडी, आदमपुर और मल्लावां में देशी ऊन के कम्बल भी बुने जाते हैं। हरदोई में शोरा बनाने, कपास ओटने और चीनी बनाने का काम होता है।

आलम नगर सुखटा के बायें किनारे पर शाहाबाद से मुहम्मदी को जाने वाली सड़क पर स्थित है। पहले इसका नाम बहलोमपुर था। जहांगीर के समय में यहां के एक पहलवान गोपाल शाह और तेज खां नामी पठान से झगड़ा हुआ। उससे यह गाँव निकम्मे लोगों से छिन गया और जहांगीर के सम्मानार्थ इसका नाम बहालपुर से बदल कर आलम नगर रख दिया गया।

आंझी गांव शाहाबाद से पिल्हानी को जाने वाली सड़क पर शाहाबाद से छः मील दूर स्थित है। गांव से लगभग ३ मील की दूरी पर अवध रुहेलखंड लाइन का रेलवे स्टेशन है। यहां एक छोटा बाजार लगता है। बालामऊ इसी नाम के परगने का सबसे बड़ा गांव सई नदी के बांये किनारे से लगभग १ मील दूर है। यह ईस्ट इंडियन (भूतपूर्व अवध रुहेल खंड) रेलवे लाइन पर जंकशन स्टेशन है। शाखा लाइन सीता पुर को गई है। यहां से बेनीगंज और बिलग्राम को सड़क गई है। पड़ोस में गेहूँ और गन्ना बहुत होता है। बाजार रोज लगता है।

बर्वन गांव गर्रा के दहिने किनारे पर हरदोई से १२ मील पश्चिम की ओर स्थित है। यहां के राजा के लड़कों ने दक्षिण की लड़ाइयों में वीरता दिखलाई इससे यहां मौजा माफी में दे दिया गया। यहां एक छोटा किला था। गदर में यह वीरान कर दिया गया। बावन गांव हरदोई से ७ मील की दूरी पर पश्चिम की ओर हरदोई से सई घाट को जाने वाली सड़क पर बसा है। सप्ताह में दो बार मेला लगता है। भादों महीने के पहले रविवार को सूर्य कुण्ड का मेला होता है। कहते हैं इस गांव को पुराने समय में एक राजपूत ने बसाया था। कन्नौज के सैयद सालार ने यहां एक फौज भेजा उसके जो सिपाही मारे गये वे सूरजकुण्ड में गाड़ दिये गये।

बेहटा गोकुल गांव हरदोई से ६ मील उत्तर-पश्चिम में एक रेलवे स्टेशन है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

बेनीगंज हरदोई से २१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कानपुर से सीतापुर को जानेवाली सड़क के मार्ग में पड़ता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। अब से प्रायः १७५ वर्ष पहले शुजाउद्दौला के एक दीवान बेनीबहादुर ने सुन्दर दुकानों की एक पंक्ति बनवाई तभी से इसका नाम बेनी गंज पड़ गया। इससे पहले इसे अहमदाबाद सरसंद कहते थे। सवा सौ वर्ष पहले यहां अहीरों का अधिकार हो गया था।

बिलग्राम कस्बा गंगा के ऊंचे पुराने किनारे पर हरदोई से १६ मील दक्षिण की ओर है। यह सांडी से आठ मील और फतेहगढ़ से २३ मील दूर है। शाहाबाद और सांडी से उन्नाव को सड़क यहीं होकर जाती है। बिलग्राम से गंगापार कन्नौज को कच्ची सड़क गई है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना सफाखाना और स्कूल है। स्कूल उस स्थान पर है जहां पहले पुराना किला था। बिलग्राम, हरदोई और माधागंज के बीच में कुछ व्यापार होता है। यहां मिट्टी के बर्तन (अमृतदान, घड़ा आदि) बहुत अच्छे बनते हैं। नक्काशीदार दरवाजे और चौखठ भी प्रसिद्ध है। लकड़ी की और भी कई चीजें अच्छी बनती हैं।

बिलग्राम एक ऊँचे टीले पर बना है। यह कई बार बना और उजड़ा पहले इसका नाम श्रीनगर था। महमूद गजनवी के समय में यहां मुसलमानों का अधिकार हुआ तभी इसका नाम श्रीनगर से बदल कर बिलग्राम रख दिया गया। बिलग्राम में उर्दू के कई प्रसिद्ध कवि हुये हैं।

धर्मपुर रामगंगा के दाहिने किनारे पर फतेहगढ़ से ११मील पूर्व और हरदोई से २० मील पश्चिम में है। गदर के अवसर पर कटियारी के राजा ने यहां कई अंग्रेज़ों को छिपा कर उनकी जान बचाई थी यहीं उसकी राजधानी और गढ़ी थी। जब रामगंगा ने धर्मपुर का बहुत सा भाग कटा दिया तब राजधानी खईपुर (खैरुद्दीनपुर) में बनी।

गोपामऊ का प्राचीन नगर गोमती नदी से २ मील पश्चिम में हरदोई से १५ मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां आरसी अच्छी बनती हैं। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। यहां एक मिडिल स्कूल और डाकखाना हैं। कहते हैं पहल यहां ठठेरा रहते थे। यहां के राज दरबार में मक्का का अजमतशाह नामी फकीर आया था। उसी समय सैयद सालार मसूद ने आक्रमण किया। फकीर ने राजा को भाग जाने की सम्मति दी इससे मुसलमानों का यहां अधिकार हो गया। लेकिन मसूद के चले जाने पर लाल पीर नामी सेनापति मार डाला गया। यहां उसकी दरगाह है।

गुंडवा गांव सडीला से १० मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां एक पुराने किले के खंडहर हैं।

हरदोई शहर इस जिले के मध्य में लखनऊ से ६३ मील और शाहजहांपुर से ३६ मील दूर है। उत्तर की ओर एक सड़क पिहानी को और पूर्व की ओर सीतापुर को जाती है। दक्षिण की ओर बिलग्राम को और दक्षिण-पश्चिम की ओर सांडी को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़क ठीक पश्चिम में फतेहगढ़ को गई है जो यहां से २६ मील दूर है। सिविल लाइन रेलवे स्टेशन से एक मील पश्चिम की ओर है। यहां शीशम, पाकर, इमली और जामुन के पेड़ हैं। पुरानी हरदोई सांडी सड़क के पास है इसके पास ही एक पुराना खेड़ा है नई हरदोई गदर के बाद बिलग्राम को जानेवाली सड़क के दोनों ओर बस गई है। यहां सरकारी कर्मचारियों और वकीलों के घर हैं। यहीं बड़ी बड़ी दुकानें हैं। घर खुले हवादार और दूर दूर बने हैं, यहां गन्ने से शक्कर बनाने की बड़ी मिल है। फसल के दिनों में डेढ़ दो हजार बोरे शक्कर प्रतिदिन बनती है। गन्ना न मिलने पर मिल का काम बन्द हो जाता है। कपास की कमी से कपास ओटने की मिल बन्द होगई है। लेकिन तेल पेरने की मिल से तेल बराबर पेरा जाता है।

माधोगंज बड़ा बाजार है। यह हरदोई से २३ मील दक्षिण-पश्चिम में है। यहां होकर सीतापुर से मेंहदी घाट और कानपुर को सड़क गई है। एक शाखा रेलवे बालामऊ से यहां को आती है। अनाज और कपास का व्यापार होता है। पास ही गदर में मरे हुये अंग्रेज़ों की कब्रें हैं। रुइया के राजा नरपतिसिंह की गढ़ी के खंडहर हैं। विद्रोही राजा से गांव छीन लिया गया और एक ईसाई को दे दिया गया।

मल्लावा कस्बा हरदोई से २७ मील दक्षिण में बिलग्राम से उन्नाव को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। यह दूर दूर बिखरा हुआ है। इसकी लम्बाई २ मील है। यहां थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और संस्कृत पाठशाला है। गुरदासगंज मुहल्ले में सोमवार शुक्रवार को और भगवन्तनगर में रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। भगवन्तनगर में ठठेरों की कई दुकानें हैं। यहां की थाली चम्मच और फूल के बर्तन प्रसिद्ध हैं। क्वार और चैत में मानदेवी का मेला लगता है। एक मन्दिर में आशादेवी की मूर्ति है। सिकन्दर लोदी ने यहां मुसलमानों को बसाया था। १६७५ में यहां एक किला था। अब वहां खेत है। १७७३ में ईस्ट इण्डिया जंगल कम्पिनी की एक छोटी फौज अवध के नवाब की सहायता के लिये आई थी। १७७७ में यह सेना कानपुर को चली गई। गदर में यहां की सेना में विद्रोह फैल गया था।

मंसूरी नगर पिहानी से बेहटागोकुल स्टेशन को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। पहले यह नगर कहलाता था और यहां एक किला। १७०२ ईस्वी में एक सोमवंशी राजा मुसलमान हो गया। उसने पिहानी के सैयदों की पूरी जागीर छीन ली और किले को फिर से बनवाया। उसी ने इस स्थान का नाम मंसूर नगर रक्खा। चैत के महीने में यहां भगत बाबा का मेला लगता है।

मसीत गांव सई के बायें किनारे पर एक रेलवे स्टेशन है। यह हरदोई से २ मील पूर्व की ओर है।

पाली कस्बा गर्रा के दाहिने किनारे पर फतेहगढ़ से सीतापुर को जानेवाली सड़क पर बसा है। यहां हरदोई से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। राज घाट पर गर्रा को पार करने के लिये वर्षा में नाव और शेष महीनों में पांज रहती है। कन्नौज के पास

राजाओं के सम्मानार्थ इसका नाम पाली रक्खा गया। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। पिहानी कस्बा सीतापुर से शाहबाद को जानेवाली कच्ची सड़क पर पड़ता है। यह हरदोई से १६ मील दूर है। यहां से एक सड़क बेहटा गोकुल रेलवे स्टेशन को जाती है। एक सड़क सीतापुर शाहजहांपुर सड़क से मिलती है। यहां थाना डाकखाना और मिडिल स्कूल है। बड़ी पिहानी पुरानी है और खेड़े के पास है। यहीं कन्नौज के दुबे ब्राह्मण रहते थे। इस समय केवल एक पुराना कुआं शेष है। छोटी पिहानी को निजाम मुरतजा ने बसाया था। इसे नाजिमपुर भी कहते हैं। नवाबी समय में पिहानी तलवारों की पक्की धार रखने और सरफा बनाने के लिये प्रसिद्ध था। यहां अकबर के मन्त्री सद्र-जहां और उसके बेटे के मकबरे हैं। यहीं मुर्तजाखां के किले के कुछ भाग शेष हैं। पिहानी का अर्थ है छिपने की जगह। कहते हैं जब १५४० ईस्वी में शेरशाह ने हुमायूँ को हराया तब कन्नौज के काजी सैयद अब्दुलगफूर ने कन्नौज को छोड़कर गंगा के इस किनारे शरण ली और शेरशाह को बादशाह स्वीकार न किया। जब हुमायूँ फिर राजा हुआ तो उसे पांच गांव और ५००० बीघा जंगल माफी में मिला। अकबर के समय में उसकी बड़ी उन्नति हुई। जहांगीर को पढ़ाने का काम सौंपा गया। वह नवाब सद्र जहां कहलाने लगा। अकबर के नये धर्म का सन्देश लेकर वह तूरान भेजा गया। जहांगीर के समय में वह ४००० सिपाहियों का सेनापति बनाया गया। कन्नौज में उसे एक जागीर मिली। १२० वर्ष की उम्र में उसका देहान्त हो गया।

सांडी कस्बा गर्रा के बायें किनारे पर हरदोई से फतेहगढ़ को जानेवाली सड़क पर स्थित है। हरदोई से १३ मील और फतेहगढ़ से २५ मील दूर है। हरदोई से सांडी तक सड़क पक्की है। सांडी से एक सड़क उत्तर की ओर शाहाबाद होकर शाहजहांपुर को जाती है। एक सड़क पूर्व की ओर बघौली रेलवे स्टेशन को जाती है। सांडी के आस पास पुराने आम के बगीचे हैं। उत्तर-पूर्व की ओर दो ढाई मील लम्बी और पौन मील चौड़ी दहर झील है। पड़ोस में ही पुराने किले के खंडहर हैं। इसे ऊँचा टीला कहते हैं। यहां से दूर दूर का दृश्य दिखाई देता है। सांडी सोमवंशी राजा सानतन सिंह की राजधानी थी। सोमवंशी झूसी (इलाहाबाद) से आये थे। सांडी का पुराना नाम सनातन डीह था। इसी से बिगड़ कर सांडी नाम पड़ा। १३६८ में राजपूत सरदार सनातन डीह या सनातन खेड़ा छोड़कर कमायूं पर्वत की ओर चले गये। यहां मुसलमानों का अधिकार हो गया। कहते हैं सनातन डीह के चारों ओर गहरी खाई थी। मुसलमानों ने इसका पानी गर्रा में काट दिया। तभी उन्होंने किले पर अधिकार कर पाया। जहां इस समय ऊंचे टीले पर वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल है वहां पहले किला था। कुछ पहले यहां अफीम की गोदाम थी। पूर्व की ओर जिन्दा पीर का मकबरा है। यह एक प्राचीन मन्दिर के खम्भों के कुछ टुकड़े मडल देवी के स्थान पर रक्खे हैं। यहां आषाढ़ बदी अष्टमी और रविवार को मेला लगता है। पास ही फूलमती का स्थान है जहां बौद्ध कारीगरी है। मीठा कुआं भी बहुत पुराना है। नवाबगंज मुहल्ले में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। इसे अवध के नवाब के एक अफसर ने बनवाया था। यहां अवध की कुछ फ़ौज रहती थी। यहां दरी और गाढ़ा अच्छा बुना जाता है। दहर झील के सिरे पर ब्रह्मावर्त है। संडीला क़स्बा लखनऊ से ३२ मील दक्षिण की ओर है। यहां से बेनी गंज, सीतापुर, फतेहपुर और कन्नौज को कच्ची सड़कें गई हैं। ईस्ट इण्डियन (अवध रुहेल खंड) रेलवे स्टेशन कस्बे से दक्षिण की ओर है। यहां तहसील, थाना और मिडिल स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहाँ का पान, घी, लड्डू और परदा प्रसिद्ध है। कुछ पुराने मकबरे हैं। शिरोमन नगर सुकेता नाले) के बायें किनारे पर बिलग्राम से शाहाबाद और शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इसे शाह-राह कहते हैं। यह हरदोई से १३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। फर्रुखसियर के वजीर (अब्दुल्ला) के एक कायस्थ अफसर (शिरोमन दास)-ने १७०८ ई० में उसे बसाया था। यहां उसने एक गढ़ी और (सुकेता के ऊपर) पुल भी बनवाया था। पुल बह गया। किले के खंडहर दिखाई देते हैं।

शाहाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह हरदोई से २२ मील और शाहजहांपुर से १

मील दूर है। यहां से थोड़ी दूर पर आभी रेलवे टेशन है। यहां से सांडी, पाली और जलालाबाद को सड़कें गई हैं। पहले यह अधिक प्रसिद्ध था। १७७० में यहां किलेनुमा महल था। इसे अङ्गदपुर कहते थे। कहते हैं इसे अंगद ने बसाया था। नया कस्बा के एक अफगान अफसर ने १६५७ में बसाया था यहां कई बाजार लगते हैं। यहां के आम अनार और आलू प्रसिद्ध हैं और हरदोई को भेजे जाते हैं।

उधरनपुर गर्रा से एक मील पूर्व की ओर हरदोई से शाह जहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

"हरदोई प्रान्त के उद्योगिक धन्धे"

हरदोई प्रान्त अवध में बिलकुल पश्चिम की ओर है। यह एक छोटा सा प्रान्त है। इसमें चार तहसीलें है—हरदोई, बिलग्राम, शहाबाद और स ण्डीला, प्रान्त का प्रान्त बहुत उपजाऊ है इसलिये अधिकतर प्रान्त है। कहीं कहीं घरेलू धन्धे भी नजर आते हैं।

रुई—कपास की खेती इस प्रान्त में बहुत होती है। यहां तक कि लखनऊ कमिश्नरी भर में कपास की खेती सब से अधिक यहीं होता है। कपास पुराने ढंग की रहटियों से ओटी जाती है। हरदोई और माधोगंज में कपास ओटी जाती है।

यहां कुछ कपास की तो खपत होती है, और बाकी कपास कानपुर वगैरह के मिलों में भेज दी जाती है।

गांवों में औरतें चर्खे से सूत कातती हैं। यहां की कुर्मी औरतों में इसका जोरों से प्रचार है। मल्लावें में सूत का मुख्य बाजार है।

जुलाहे पुराने ढंग के करघों से इस सूत का कपड़ा बुनते हैं। पहले यहां का बुना कपड़ा बहुत नफीस होता था। आजकल जुलाहे मिल का सूत अधिक काम में लाते हैं। गाढ़ा और डोरिया बुनने का काम बिलग्राम और सण्डीला तहसील में बहुत होता है।

जुलाहे कपड़े को घर घर जाकर, बाजार में, गांव गांव घूम कर बेचते हैं। बजाज लोग भी इनसे कपड़े खरीद कर दुकान पर रखते हैं।

मल्लावे और सण्डीला में पुराने ढङ्ग के करघों से बुनने के कुछ लोगों के निजी कारखाने भी हैं।

अखिल भारतवर्षीय चर्खा संघ की एक शाखा मलावे में है जहां कपड़ा बुना और रंगा जाता है, एक शाखा बिलग्राम में भी थी जो कुछ दिन हुये टूट गई है, चर्खा संघ के लोग गांव गांव घूमकर सूत कातने के फायदा लोगों को बताते हैं और रुई खरीदने के लिये रुपया भी उधार देते हैं, उनका सूत खरीद कर यहीं के जुलाहों से कपड़ा बुनवाते हैं। जगह जगह इनके खादी भन्डार तथा सूत इकट्ठा करने के केन्द्र हैं, ज्यों ज्यों खादी की मांग प्रान्त में बढ़ती जावेगी त्यों त्यों यहां का यह धन्धा भी बढ़ेगा।

ऊन—यहां के गड़रिये भेड़ से ऊन से भद्दे ढंग के कम्बल भी बनाते हैं जिन्हे गांव के किसान इस्तेमाल करते हैं। मामूली चर्खे से ऊन कातकर करघों से कम्बल बुना जाता है। इस जिले में करीब ५,००० कम्बल सालाना बुने जाते हैं।

सनई—की खेती भी काफी होती है। छुट्टी के समय गांव के आदमी, औरतें और लड़के सनई को तकली से कातकर सुतली बनाते हैं, इस सुतली को बुनकर शहाबाद और हरदोई में कहार वगैरह टाट-पट्टी बनाते हैं। यह टाट-पट्टी चौड़ी पट्टियों की शक्ल में होती हैं। इन्हें जोड़ कर परदे बनाये जाते हैं। बिछाने के काम में भी यह आती हैं। गाड़ी की पाखरी भी गल्ला वगैरह ले जाने के लिये इन्हीं पट्टियों से बनती हैं।

मूंज—नदियों के किनारों पर बिना बोये उगती है। इस मूंज की रस्सियां यहां के किसान और मजदूर बनाते हैं। औरतें इससे डलियां भी बुनती हैं।

५ गन्ना—यहां गन्ने की खेती प्राय: २००० एक भूमि में होती है। गांव में गन्ने को बैलों के कोल्हू से पेर कर रस निकालते हैं। इस रस को बड़े बड़े कड़ाओं में पका कर उसका गुड़ और राब बनाते हैं, यह राब और गुड़ गांव में खूब इस्तेमाल होता है।

अब गन्ना मशीन से भी पेरा जाता है। राब से देशी शक्कर भी बनाई जाती है। शाबाद में देशी शक्कर का एक छोटा सा कारखाना है।

६ तेल—तेली बैलों से खीचे जाने वाले कोल्हू से सरसों और तिल्ली का तेल पेरते हैं। नीम और मूंगफली का भी तेल पेरा जाता है लेकिन बहुत कम। कपास के बीज (बिनौले) से भी वे तेल निकालते हैं।

७ पोस्ता—पोस्ता की खेती यहां क़रीब ६४०० एकड़ में होती है। यह खेती सरकार की देख रेख में होती है क्योंकि पोस्ता से अफ़ीम निकलती है। पोस्ता खाने के काम आता है। कुछ तेल भी निकाला जाता है। अफ़ीम इकट्ठा कर गाजीपुर के कारखाने में भेज दी जाती है।

८ फल—शहाबाद के आम मलिहाबाद के आमों की तरह मशहूर हैं। आमों के मौसम में बहुत सा आम बाहर भेजा जाता है।

खसुलखास, सफेदा, लंगड़ा, दशेहरी, और मोहन-भोग आम यहां के मशहूर हैं।

बिलग्राम में अमरूद बहुत होता है। बाग बढ़ते ही जाते हैं। यहां का अमरूद बहुत अच्छा होता है। इलाहाबाद में अमरूदों की तरह यह भी मशहूर है। यहां से बहुत अमरुद बाहर जाता है।

९ लकड़ी—बिलग्राम और सन्डील की लकड़ी की नक्काशी मशहूर है। बिलग्राम के खड़ाऊँ प्रसिद्ध हैं। सन्डीले में अलमारी वगैरह अच्छी बनती हैं। प्रान्त के भिन्न भिन्न भागों में बढ़ई स्थानीय खपत के लिये गाड़ी, गाड़ी के पहिये वग़ैरह बनाते हैं।

१० चमड़ी—मरे और कसाई घर में मारे हुये जानवरों का चमड़ा यहां से कानपुर चला जाता है। बकरी का चमड़ा कानपुर में जूतों में अस्तर लगाने के काम आता है। चमार किसानों के लिये चमरौधा जूता बनाते हैं, खेत सीचने के लिये चमड़े की मोट भी बनाते हैं।

कुछ मोची चमड़े का बूट जूता भी बनाते हैं खास तौर पर आर्डर देने पर बढ़िया मजबूत जूता बना देते हैं।

शोरा—कच्ची जमीन और पुरानी कच्ची दीवलों पर लोनी लग जाया करती है। कुछ गांवों के लुनिया इस लोनी को इकट्ठा कर इससे जरिया बनाते हैं। जरिया खरीदने के लिये हरदोई में दो कोठियां हैं। ये कोठियां जरिया खरीद कर कलकत्ता भेजती हैं। जरिया को साफ कर ये कोठिया शोरा भी बनाती हैं और शोरे से नमक भी। यह नमक आदमी के इस्तेमाल करने के काबिल नहीं होता है। यह जानवरों को खिलाया जाता है।

लड़ाई के समय शोरा की मांग बहुत थी। अब शोरा की पूछ कहीं नहीं है। जब से चिलियन नाइट्रेट चला तब से शोरा की पूछ और भी नहीं रही। यहां की दोनों कोठियां बन्द सी हैं। भारत से यह रोजगार उठा जा रहा है। लुनिया भी अपना पेशा छोड़ कर दूसरे पेशे कर रहे हैं।

डलिया बुनना—गांवों में डलियां अरहर, झाऊ की डलियां नदी के किनारे के गांवों में बनती हैं, और अरहर की दूसरे दूर के गांवों में झाऊ नदी के किनारे बहुत होती है।

मिट्टी के बरतन—बिलग्राम और सन्डीला में मिट्टी के बरतन अच्छे बनते हैं। बिलग्राम के कुम्हार अचार रखने के लिये रंगीन लुकदार मिट्टी के बरतन बनाने में मशहूर हैं।

रेह—बिलग्राम तहसील में रेह सबसे अधिक मिलता है। रेह से सज्जी बनाई जाती है। इसे धोबी कपड़ा धोने में इस्तेमाल करते हैं।

धातु का सामान—मल्लावां, शहाबाद, और हैयत गंज में कसकुट और गिलट के बरतन ठठेरे बनाते हैं। यह पेशा यहां से उठा जा रहा है।

लोहे की तलवारें वगैरह हथियार मिहानी में बनाये जाते थे जिसके कारण इस प्रान्त की दूर दूर पर ख्याति थी। 'आर्म्स ऐक्ट' ने इस व्यवसाय

का नाश कर दिया है। अब भी वहां चाकू वगैरह बनते हैं। लेकिन इस्पात की जगह सादे लोहे के।

बिलग्राम के ताले मशहूर हैं। यहां के तीन लुहार प्रयाग, ईश्वरी, और बल्देव ताले बनाने में बहुत अच्छे कारीगर रहे हैं।

कंकड़—कंकड़ यहां बहुत सी जगहों पर खास कर ऊसर जमीन पर बहुत पाया जाता है। यह पक्की सड़कें बनाने के काम आता है।

सीतापुर

सीतापुर अवध का एक जिला है। इसके पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में गोमती नदी इसे हरदोई जिले से अलग करती है। इसके पूर्व में बहराय न का जिला और घाघरा नदी है। उत्तर में खीरी जिला है। दक्षिण में लखनऊ और बाराबंकी के जिले हैं जो गोमती और घाघरा के बीच में स्थित हैं। सीतापुर जिला कुछ कुछ आयताकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ७० मील और चौड़ाई ५५ मील है। इसका क्षेत्रफल २२५३ वर्ग मील है और जनसंख्या ११,६८,००० है। सीतापुर जिले के दो प्रधान प्राकृतिक विभाग हैं। (१) ऊंचा मैदान जो अधिक बड़ा है और जिससे नदियों के बीचवाली द्वाबा की जमीन शामिल है। (२) गांजर या निचला प्रदेश। ऊंचा मैदान प्रायः समतल लहर दार प्रदेश है। इसको नदियों ने कुछ काट दिया है। नदियों के पास कुछ नीची जमीन है। बीच वाले द्वाबा के मध्यवर्ती मार्ग की जमीन कुछ ऊंची है। फिर भी यहां पहाड़ी का नाम नहीं है भूमि का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर भूमि की ऊंचाई केवल ४०० फुट है।

गांजर ऊंचे किनारों के बीच में निचली भूमि है इसके पश्चिम में पानी का ऊंचा किनारा है।

दक्षिण की ओर चौका नदी है। इसके दक्षिण में चौका की पुरानी धारा है। यह निचला मैदान कड़ा चिकनी मिट्टी का बना है। इसे उन असंख्य-धाराओं ने काट दिया है जो घाग्रा के ऊंचे रेतीले किनारे में पास समाप्त हो जाती हैं। हर साल बाढ़ के दिनों में पानी डूब जाता है। कहीं पानी कुछ ही इंच गहरा होता है। कहीं इसकी गहराई आठ फुट हो जाती है। इस ओर गांव ऊंचे स्थानों पर बसे हैं। भयानक बाढ़ में कभी कभी गांव छोड़ना पड़ता है। आना जाना केवल नाव द्वारा हो सकता है। पश्चिम की ओर धारा मन्द रहती है। और खेतों को कम हानि होती है। पूर्व की ओर धारा प्रबल होती है। इधर खरीफ की फसल एकदम नष्ट हो जाती है। प्रबल-धार में हलके बारीक कण आगे बह जाते हैं। बालू के बड़े और मोटे कण नीचे बैठ जाते हैं। अधिक नमी रहने के कारण रेह ऊपर प्रगट हो जाता है।

सीतापुर का समस्त जिला उपजाऊ कांप (कछारी मिट्टी) का बना है। ऊंचे भाग की मटियार मिट्टी अधिक ऊपजाऊ है। कहीं कड़ी चिकनी मिट्टी है। कहीं भूड़ है। गोमती और सयाना नदी के पड़ोस में बलुई मिट्टी का अभाव है। नदियों के ऊंचे किनारों और पानी की धारा के बीच में तराई है। तराई की चौड़ाई सब जगह समान नहीं है।

गोमती नदी सीतापुर जिले की सबसे अधिक पश्चिमी नदी है। यह पीलीभीत की तराई से निकलती है और खीरी जिले को पार करके पकरिया गांव के पास उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर सीतापुर जिले में प्रवेश करती है। नन्दा, मिसिदेव और औरंगाबाद की पश्चिमी सीमा पर गोमती बड़ी टेढ़ी चाल से बहती है। खानपुर गांव के पास सीतापुर जिले को छोड़कर यह लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। गोमती की तली रेतीली है। इस जिले में प्रायः सब कहीं इसमें नाव चल सकती है। शाहजहांपुर जिले की मोती झील से निकलने वाली कैठनी और खीरी जिले से निकलने वाली सवासयान नदियां गोमती में मिलती है।

निचले प्रदेश की प्रधान नदी चौका है। तम्बौर के पास यह खीरी जिले से सीतापुर में प्रवेश करती है। सीतापुर को पार करने के बाद यह बाराबंकी

जिले में पहुँचती है और घाघरा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती हैं। केवानी नदी एक झील से निकल कर बिस्वा परगने के धर्मपुर गांव के पास चौका में मिल जाती है।

घाघरा धुर उत्तरी सिरे पर अवध की सबसे बड़ी नदी है इसकी तली बड़ी चौड़ी और किनारे ऊंचे हैं। इसमें से सब कहीं नावें चल सकती हैं। इसमें कहीं पांज नहीं है ऊपरी भाग में इसे कौरियाला कहते हैं। इसमें खीरी और बहरायच के वन की लकड़ी के बेड़े आते हैं और वह बहरामघाट के पास उतारे जाते हैं।

सीतापुर जिले के कुछ भागों (जैसे गांजर तराई) में अच्छी खेती नहीं होती है। लेकिन एक दम ऊसर भाग बहुत कम है। दाल, धान, कोदों, ज्वार बाजरा, अफीम, चना, गेहूँ, जौ, मक्का, गन्ना और तिलहन यहीं की प्रधान फसलें हैं। बिसवां तहसील में तम्बाकू अधिक होती है। अनाज, चना, तिलहन, गुड़ और नमक बाहर से आता है।

अटरिया गांव रुहेलखंड कमायूं रेलवे का एक स्टेशन है और यह सिधौली से आठ मील दक्षिण की ओर है। लाइन के पश्चिम में सीतापुर से लखनऊ को पक्की सड़क जाती है। गांव के बसाने वाले एक पवार राजपूत सरदार ने अपने घर के ऊपर एक अटारी बनवाई थी। इसी लिये इसका यह नाम पड़ा।

औरंगाबाद का छोटा कस्बा गोमती से ३ मील पूर्व की ओर नीमखार से ४ मील दूर है। यहां के जागीरदार के पूर्वजों को औरंगजेब से जागीर मिली थी। इस लिये औरंगजेब के सम्मानार्थ इसका नाम औरंगाबाद रक्खा गया। इसके पड़ोस में एक प्रसिद्ध ताल है। बाजार सप्ताह में २ बार लगता है।

बड़ा गांव सीतापुर से १६ मील की दूरी पर एक पुराना गांव है। यहां शक्कर बनाई जाती है और गुड़, शक्कर, कपास, नमक और लोहे का व्यापार होता है।

बाड़ी कस्बा पश्चिमी सीमा से मिला हुआ सर्यान नदी के पास स्थित है। मिस्त्रिख से सिधौली को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। यह सिधौली से ९ मील दूर है। पहले बाड़ी अधिक प्रसिद्ध था। कहते हैं हुमायूँ बादशाह का एक लड़का इधर सैर करने आया था उसने यहां एक बाड़ी बनवाई। आगे चल कर यहां गांव बस गया।

बिसवां इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सीतापुर से २१ मील पूर्व की ओर है। यहां तक पक्की सड़क आती है। एक पक्की सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर सिधौली को जाती है और रेलवे से मिलाती है। महमूदाबाद, बहराम घाट, लखीमपुर और (रसूलपुर में चौका और कचहरी में घाघरा को पार करके) बहराइच को गई हैं। तहसील और थाने के अतिरिक्त यहां हाई स्कूल, थाना, डाकखाना और बाजार है। रायगंज और किला दरवाजा में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। बिसवां की तम्बाकू बहुत प्रसिद्ध है। यहां ताजिया और ताबूत भी अच्छे बनते हैं। यहां का गाढ़ा, छपा हुआ कपड़ा, मिट्टी के बर्तन बहुत बढ़िया बनते हैं। बिसवां में २१ मुसलमानों के और ७० हिन्दुओं के धार्मिक स्थान हैं। कस्बे के बाहर हर सप्ताह मन्साराम का मेला लगता है। प्रायः ६०० वर्ष पहले बिस्वेसर नाथ नामी एक हिन्दू साधू ने इसे बसाया था इसी से इसका यह नाम पड़ा। इस साधू के रहने के स्थान पर एक मन्दिर बना है।

चन्द्रा गांव कठना नदी के पश्चिमी किनारे पर सीतापुर से १३ मील दूर एक पक्की सड़क पर स्थित है जो सीतापुर से शाहजहांपुर को जाती है। यहां से पिलानी, हरदोई और औरंगाबाद (खीरी) को सड़कें गई हैं। हरगांव पहले एक बड़ा शहर था। कहते हैं इसे हरिश्चन्द्र ने बसाया था। इसे फिर राजा वैराट और विक्रमादित्य ने सुधरवाया था। लेकिन प्राचीन नगर का अब केवल विशाल और ऊंचा खेड़ा शेष बचा है। सूरज कुंड भी पुराना है। यहां जेठ और कार्तिक में मेला लगता है। एक टीले पर मुसलमानों की दरगाह है जो हिन्दू मन्दिर के स्थान पर मन्दिर के ही मसाले से बनी हुई मालूम होता है। सीतापुर से बरेली को जाने वाली रेलवे लाइन का स्टेशन पश्चिम की ओर है। यह सीतापुर और खीरी के बीच में है। यहां से महोली और लहरपुर को सड़कें गई हैं। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

जहांगीराबाद गांव केवानी नदी के दाहिने किनारे पर सीतापुर से २६ मील और बिसवां से आठ मील दूर है। यहां होकर सीतापुर से बहरायच को पक्की

सड़क जाती है। यहां के जुलाहे गाढ़ा और दूसरा कपड़ा बनाते हैं। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। यहां महमूदाबाद के तालुकेदार की जमींदारी है।

कमालपुर सीतापुर से बरेली को जाने वाली रेलवे लाइन का स्टेशन हो जाने से बहुत बढ़ गया है। यहां होकर स्कूल, थाना और डाकखाना है।

खैराबाद जिले भर में दूसरे नम्बर का कस्बा है। यह सीतापुर से ५ मील दूर है। यहां होकर सीतापुर से लखनऊ को पक्की सड़क गई है। एक दूसरी सड़क खैराबाद के दक्षिणी भाग से रेलवे स्टेशन को गई है। खैराबाद से नीमखार मिस्रिख है। और लहरपुर को सड़कें गई हैं। बहुत पहले खैराबाद में मुसलमान सूबेदार का निवास स्थान था। अङ्गरेजी कमिश्नर आरम्भ से सीतापुर में रहने लगा। खैराबाद को खैरा नाम के एक पासी ने ११ वीं शताब्दी में बसाया था। सम्भव है यह नाम प्राचीन मनसचत्र तीर्थ को बदल कर रख दिया गया हो। यह तीर्थ विक्रमादित्य के समय से प्रसिद्ध था। यहां के तीर्थ में स्नान करने से कई रोग दूर हो जाते हैं। यहां ३० हिन्दू मन्दिर, ४२ मस्जिदें और कई अकबर के समय की पुरानी इमारतें हैं। यहां थाना, डाकखाना और हाई स्कूल है। यहां चार दिन बाजार लगता है। यहां रामलीला के अवसर पर और जनवरी महीने में मेला लगता है।

लहरपुर सीतापुर से उत्तर-पूर्व की ओर १७ मील दूर है। यहां से एक सड़क सीतापुर की ओर दूसरी घाघरा के किनारे मल्लनपुर को गई है। यहां से बिस्वां और लखीमपुर को भी सड़क गई है। लहरपुर से डेढ़ मील की दूरी पर कैलानी नदी बहती है। यह गरमी में पांज हो जाती है और दिनों में इसमें नावें चलती हैं। यहां थाना, डाकखाना और जू०हा० स्कूल है। यहां कई मन्दिर और मस्जिदें हैं। कहा जाता है कि फीरोजशाह सैयद सालार के मकबरे की जयारत करने बहरायच को जा रहा था तब १३७४ ईस्वी में उसने इसे बसाया था।

कहा जाता है अकबर के प्रसिद्ध मन्त्री राजा टोडरमल का जन्म यहीं लहरपुर में हुआ था। मछरटा सीतापुर से १६ मील की दूरी पर खैराबाद से नीमखार (नैमिषारण्य) को जाने वाली सड़क पर स्थित है। प्रान्तीय सड़क यहां होकर लहरपुर से मिस्रिख को जाती है। कहा जाता है मछरटा अकबर के समय में बसाया गया था। पहले यह सब प्रदेश तप भूमि थी। एक तपस्वी का नाम मछन्दरनाथ था। इसी से इस गांव का यह नाम पड़ा। यहां एक सराय, ६ मस्जिद ४ हिन्दू मन्दिर और एक ताल हैं। एक पुराने किले के भग्नावशेष हैं। यहां एक डाकखाना, एक जू० हा० स्कूल है।

महाराज नगर सीतापुर से १६ मील और बिस्वां से ५ मील दूर है। यहां के बाजार में सूत के रस्से और शक्कर की बिक्री बहुत होती है। यहां एक पक्का ताल और दो मन्दिर हैं।

महमूदाबाद बिस्वां से बहरामघाट जानेवाली सड़क पर सीतापुर से ३७ मील दूर है। यहां से एक पक्की सड़क सिधौली को और दूसरी पक्की सड़क चौकापार बाराबंकी जिले के कुर्सी नगर को जाती है। महमूदाबाद को भूतपूर्व राजा के पूर्वज नवाब महमूद ने बसाया था। यहां थाना डाकखाना और कालिवन स्कूल है। जेठ महीने के पहले इतवार को यहां नयुआ पीर का मुसलमानी मेला होता है।

महोली गांव कथना नदी के बायें किनारे के पास सीतापुर से शाहजहांपुर जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह सीतापुर से १५ मील और शाहजहांपुर से ३८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बजार सप्ताह में दो बार लगता है। अब से लगभग ४०० वर्ष पहले महिपाल नामी एक कुरमी ने एक पुराने गांव के स्थान पर एक गांव बसाया। इसी से उसका नाम महलो पड़ गया। नवाब शुजाउद्दौला के समय में यहां एक किला और कठना नदी का पुल बनवाया गया।

मनवन का पुराना गांव सरयान के बांये किनारे पर सीतापुर से लखनऊ को जाने वाली पक्की सड़क के पास सिधौली से ६ मील दूर है। यहां पर एक किले के भग्नावशेष और एक विशाल खेड़ा है। कहते हैं अयोध्या के राजा मानधाता ने इसे बसाया था। यह नदी के ऊंचे किनारे के ऊपर ५० एकड़ भूमि घेरे हुये है। इसमें बड़ी बड़ी ईंटें लगी थीं, यहां के कुछ भग्नावशेष लखनऊ के

अजायबघर में पहुँचा दिये गये। डेढ़ मील की दूरी पर दूसरे भग्नावशेष हैं।

मिश्रिख का प्राचीन नगर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सीतापुर से १३ मील की दूरी पर हरदोई को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां से बाड़ी सिधौली, मछरहटा और बड़ा गांव को सड़क जाती है। यहां तहसील, थाना, जू० हा० स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। कहा जाता है यहां के पवित्र कुंड में सब तीर्थों का जल मिश्रित है। यह पक्का कुंड बहुत पुराना है। इसी से इसका नाम मिश्रित या मिश्रिख पड़ा। यात्री लोग इसकी परिक्रमा करके अपनी तीर्थ यात्रा समाप्त करते हैं। यह तीर्थ यात्रा नीमखार (नैमिषारण्य) से आरम्भ होती है। हरैया, साकिन, साही कुतुब नगर, मण्डरावा, कोरौना, जरगवां, नीमखार (दूबारा) बरहटी स्थान पड़ते हैं। कहते हैं राजा दधीचि ने स्थान की स्थापना की थी। राजा विक्रमादित्य ने इस सरोवर (कुंड) को बनवाया था। महारानी अहिल्याबाई ने इसकी मरम्मत करवाई। इसके चारों ओर मन्दिर है। दधीचि मन्दिर पुराना है। परिक्रमा का मेला फागुन में लगता है। दूसरा मेला कार्तिक पूर्णिमा को लगता है।

नीमखार (नैमिषारण्य) गोमती के बायें किनारे पर अत्यन्त पुराना और पवित्र तीर्थ स्थान है। यह सीतापुर से २० मील दूरी है। यहां खैराबाद और सीतापुर से आने वाली सड़कें मिलती हैं। नीमखार पवित्र सरोवरों और मन्दिरों के लिये प्रसिद्ध है। कहते हैं नैमिषारण्य के पड़ोस में दस मील के घेरे में ८८,००० ऋषि तपस्या करते थे। अकबर के समय में यहां एक किला था। तीर्थ का व्यास ४० गज है। यह सर्व प्रसिद्ध है। पंच प्रयाग गोदावरी, काशी, गंङ्गोत्री और गोमती दूसरे तीर्थ हैं। यहीं ललता देवी का मन्दिर है। चक्रतीर्थ के दक्षिण-पश्चिम में एक ऊंचे टीले पर किला है। इस समय किले का केवल द्वार शेष है। कहते हैं कि पांडवों ने इस किले को बनवाया था। १३०५ में अलाउद्दीन खिल्जी के मन्त्री हाहाजान ने इसे फिर से बनवाया। नीमखार में स्कूल और डाकघर है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। फागुन मास और प्रति अमावस्या को चक्रतीर्थ का मेला लगता है।

फतेपुर बिस्वां से बहराम घाट को जाने वाली सड़क पर सीतापुर से ४२ मील दूर है। यहां अगहन में धनुषयज्ञ, कार्तिक में नानकसाह और शबान मुसलमानी महीने में मंसब अली का मेला होता है। अब से लगभग ४०० वर्ष पहले पैतेपाल ने इसे बसाया था। इसीसे इसका यह नाम पड़ा।

कुतुब नगर सीतापुर से १८ मील पश्चिम की ओर है। यहां से ३ मील पश्चिम में गोमती नदी बहती है। दधना मऊ के पास घाट है। घाट कठना और गोमती के संगम के नीचे है। ताल्लुकेदार का घर एक ऊंचे डीह पर बना है। अहाते के भीतर विश्वामित्र नाम का प्राचीन हिन्दू कूप और जम्बूद्वीप नाम का सरोवर है। कुतुब नगर के पास वाले कच्चे तालाब तक परिक्रमा करने वाले यात्री आया करते हैं। रामकोट गांव सीतापुर से मिश्रिख को जाने वाली सड़क पर है। इसके पास एक पुराना डीह है। कहा जाता है श्री रामचन्द्र जी ने इसे बनाया था। इसके पास एक सुन्दर ताल और शिवाला है। यहां दिवाली को मेला लगता है।

रामपुर मथुरा गांव चौका की एक सहायक नदी के बायें किनारे से पांच मील दूर है। अगहन में यहां धनुष यज्ञ का मेला लगता है।

स्यूटा का बड़ा गांव सीतापुर से ३२ मील पूर्व की ओर है। गांव में बाजार दो बार लगता है। कहते हैं कि कन्नौज के आल्हा ने यहां किला बनवाया था यहां एक बड़ा खेड़ा और पुराने भग्नावशेष हैं। आल्हा की स्मृति में हर पूर्णमासी को एक मेला लगता है। बसन्त पञ्चिमी को भी एक छोटा मेला लगता है।

सिधौली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सीतापुर से लखनऊ को जाने वाली प्रधान सड़क पर स्थित है। एक सड़क बिस्वां को जाती है। यहां एक रेलवे स्टेशन भी है। आने जाने की सुविधा के कारण ही बारी से हटाकर सिधौली में तहसील का केन्द्र स्थान बनाया गया। यहां से अनाज बाहर बहुत जाता है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

सीतापुर

सीतापुर सरगान नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। जब अवध अंग्रेजी राज्य में नहीं मिलाया गया था उस समय यह एक छोटा गांव था। १८५६ में नदी के बायें किनारे पर छावनी और सिविल स्टेशन बनी। यहीं हाई स्कूल और बाजार (टामसन गँज प्रथम डिप्टी कलेक्टर के सम्मानार्थ) बना। गदर के बाद अंग्रेजी फौज को रखने के लिये यहां की छावनी और अधिक बढ़ गई। जिले का केन्द्र स्थान बन जाने से सीतापुर तेजी से बढ़ा। यहां होकर शाहजहांपुर से लखनऊ को पक्की सड़क जाती है। नदी के ऊपर पक्का पुल बना है। पूर्व की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां से अनाज, गुड़, तिलहन और दाल बाहर को भेजी जाती है। कहते हैं कि तीर्थ यात्रा के अवसर पर सीता जी यहां ठहरी थीं इसीलिये इसका यह नाम पड़ा। यहां हाथ से कपड़ा बुनने और गुड़ बनाने का काम बहुत होता है।

लम्भौर कस्बा सीतापुर से ३५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां होकर सीतापुर से मल्लनपुर और बहरायच को सड़क जाती है। मल्लनपुर यहां से केवल ६ मील दूर है। लम्भौर कस्बा चौका और डहवर नदियों के बीच में स्थित है। चौकानदी ४ मील पश्चिम की ओर है। डहवर नदी २ मील पूर्व की ओर है। द्वाबा की भूमि में कई पुरानी धारायें हैं जो वर्षाऋतु में इस भाग को दुर्गम बना देती हैं। यहां थाना, डाकघर और स्कूल है। डहवर नदी के किनारे आल्हा का एक किला था। मुहम्मदगोरी ने इसी स्थान पर दूसरा किला बनवाया ६११ हिजरी में नदी ने नगर और किले को काटकर बहा दिया।

सीतापुर जिले का कारबार

सीतापुर जिले की जमीन दो भागों में बटी हुई है। ऊँची जमीन को उपरहार और नीची जमीन को गांजर कहते हैं। गांजर में दलदल और छोटे छोटे नाले बहुत हैं। वर्षाऋतु में यह सब प्रदेश पानी में डूब जाता है। चौका की बाढ़ में फसल को बड़ा नुकसान होता है। बाढ़ में कभी अच्छी मिट्टी और कभी बालू पड़ जाती है यहां ईख बहुत होती है। चावल भी उगाया जाता है। झपटी, गोंदी और कांस और झाऊ ऐसे भागों में है जहां की मिट्टी अच्छी नहीं है। कुछ भागों में झाऊ और बबूल के जंगल हैं। गांजर में भांग भी बहुत होती है। झीलों और तालाबों में मछली बहुत मारी जाती है। उपरहार में गेहूँ, ज्वार, बाजरा आदि की फसलें अच्छी होती हैं। यहां तन्दुरुस्ती भी ठीक रहती है। आने जाने में सुविधा है। सड़कों पर सवारी चल सकती हैं। पर गांजर में पैदल और नाव पर ही आना जाना हो सकता है।

सीतापुर में मकानों के लिये कंकड़ से चूना तैयार किया जाता है। जनवरी से जून तक बहुत से भागों में लूनी मिट्टी से शोरा तैयार किया जाता है।

टामसन गंज (सीतापुर), सलेमपुर, तरीमपुर, जहांगीराबाद, बिसवा मिसरिख और सिधौली में दाल दलने का काम बहुत होता है। लोहे का काम बहुत से गांवों में होता है। पर तांबा, जस्ता और सीसा को मिलाकर बटुआ, बटलोई आदि बरतन बनाने का काम महाराज नगर, कुतुब नगर में ही होता है। बड़े बड़े बरतनों के सांचे खैराबाद में बनते हैं। कुतुब नगर में हुक्का, कटोरा, गिलास कांस, फूल और गिलट के बनते हैं। कसकुट में जस्ते के जेवर मिलाने से गिलट तैयार होता है। गिलट के बरतन जर्मन सिल्वर की तरह चमकते हैं।

मनिहार लोग लाख की चूड़ियां बनाते हैं। सूती कपड़ा बनाने और फर्द आदि रंगने का काम साधारण है। गड़रिये लोग मोटे और मजबूत ऊनी कम्बल बुनते हैं। जेल में बेंत की चटाई, सन की टाट पट्टी, दुसूती, दरी और कालीन बुनने का काम होता है।

खीरी (लखीमपुर)

खीरी अवध का सबसे बड़ा जिला है और धुर उत्तरी-पूर्वी सिरे पर स्थित है पूर्व में कौरियाला नदी इसे बहराइच से अलग करती है। इसके दक्षिण में हरदोई और सीतापुर के जिले हैं। पश्चिम में शाहजहांपुर और पीलीभीत के जिले हैं इसके उत्तर में नैपाल राज्य है। इसका आकार एक विषम त्रिभुज के समान है। इसकी दक्षिणी भुजा ८२ मील उत्तरी-पूर्वी ६१ मील और उत्तरी-पश्चिमी भुजा ७१ मील है। इसका क्षेत्रफल २६७६ वर्गमील है। पहले नैपाल और खीरी के बीच में मोहन नदी सीमा मान ली गई थी। पर इस नदी का मार्ग बदलता रहता था। अतः १६०० ईस्वी में नई सीमा निर्धारित की गई। नदी के किनारे किनारे थोड़ी थोड़ी दूर पर पत्थर के खम्भे गाड़ दिये गये। खम्भों के बीच में ५० फुट चौड़ी पेटी साफ कर ली गई है। इसके बीच में गहरी खाई है।

यह जिला एक विशाल कछारी मैदान है। उत्तरी आधा भाग वन से ढका है। पानी की असंख्य धाराओं ने इसे स्थान स्थान पर काट दिया है। केवल नदियों के ऊचे नीचे किनारों से कहीं कहीं विषम भूमि मालूम होती है। नदियों के बीच में द्वावा कुछ ऊंचा है। नदियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। इनके पड़ोस में कछार है। धुर उत्तर में भूमि की ऊँचाई ६०० फुट है। दक्षिणी सिरे पर मोहन नदी के पास भूमि केवल ३७५ फुट ऊंची है। मैलानी की ऊंचाई ५८५ फुट है लखीमपुर ४८२ फुट ऊंचा है।

खीरी जिला चार प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है। दक्षिण-पश्चिम गोमती पार वाले प्रदेश में पसडावां और मुहम्मदी परगने हैं जो शाहजहांपुर जिले के पास हैं। पश्चिमी भाग नीचा है। यह घास और ढाक के जङ्गल से ढका है। इसके कुछ भाग में खेती होती है।

मध्यवर्ती भाग में उपजाऊ मटियार है। इसके पूर्व में गोमती के पास बलुई भूमि है।

गोमती और कठना नदियों का द्वावा उपहार कहलाता है। यह ऊंचा और रेतीला है। केवल औरंगाबाद के दक्षिण में कुछ नीची जमीन है। इसमें सिंचाई की कमी है। कठना के पूर्व में अत्यन्त उपजाऊ भाग है। केवल नदियों के पास बलुई भूमि है। चैला और हैदराबाद परगनों में नीची भूमि है। यहां चिकनी मिट्टी है। कुक्रा मैलानी में आधे से अधिक प्रदेश वन से ढका है। यहां जङ्गली जानवर बड़ी हानि पहुँचाते हैं।

उलपार एक जङ्गली भाग है। इसे असंख्य धाराओं ने काट दिया है। वर्षा ऋतु में यह बाढ़ के पानी से ढक जाता है। चौका नदी बाढ़ के बाद उपजाऊ मिट्टी छोड़ देती है। इसमें धान बहुत होता है। छोड़ी हुई कौरियाला की मिट्टी अच्छी नहीं होती है।

सुकेता एक छोटी नदी है। (नाला) यह शाहजहांपुर जिले से निकलती है और कुछ दूर तक खीरी जिले की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। आगे बह कर यह हरदोई जिले में पहुँचती है। गोमती नदी पीलीभीत और शाहजहांपुर जिलों में ४२ मील बहने के बाद रामपुर गांव के पास खीरी जिले में प्रवेश करती है। औरंगाबाद के खीरी जिले को छोड़ कर यह सीतापुर और हरदोई जिलों के बीच में सीमा बनाती है। शाहजहांपुर से लखीमपुर और सीतापुर को जाने वाली सड़कों पर पुल बना है। और भागों में इसे नाव द्वारा पार किया जाता है। कठना नदी मोती झील के पास शाहजहांपुर जिले से निकलती है। १०० मील बहने के बाद यह गोमती में मिल जाती है।

उल नदी जिले के मध्य भाग में बहती है। यह पीलीभीत जिले में पूरनपुर के दलदलों से निकलती है। खीरी जिले में टेढ़े मार्ग से बह कर चौका में मिल जाती है।

उल के आगे चौका या सारदा की घाटी है। इसमें काली और सरजू नदियों का जल मिला रहता है। काली नदी तिब्बत और अलमोड़ा को पृथक करने वाले हिमागारों से निकलती है। जब यह पीलीभीत

की तराई और नैपाल के बीच में सीमा बनाती है तब इसे सारदा कहते हैं। पीलीभीत जिले में मोतीघाट के पास इसमें चौका मिलती है। बहराम घाट के पास यह घाघरा में मिल जाती है। खीरी जिले में यह बहुधा अपना मार्ग बदलती रहती है।

सरजू या सहेली नदी नैपाल से आती है। शितावाघाट के पास यह कौरयाला में मिल जाती है।

मोहन नदी भी नैपाल से आती है। चन्दन चौकी के पास यह एक बड़ी नदी हो जाती है। रामनगर के पास यह कौरियाला में मिलती है।

खीरी जिले का वन अवध के दूसरे जिलों से कहीं अधिक बड़ा है। इसकी लकड़ी भी बहुत अच्छी है। चौका कठना और गोमती नदियों के किनारे वन है।

वन प्रदेश हरदोई और सीतापुर जिलों की सीमा तक चला गया है। लगभग ५६३ वर्ग मील में वन है। वन में साल के लट्ठे और स्लीपर बड़े मूल्यवान होते हैं। यह सारदा पार वाले प्रदेश से आते हैं। हल्दू, जामुन, शीशम, असैना और दूसरे पेड़ भी काम के होते हैं। वन से बैत, कांस, मूंज, कत्था और शहद भी मिलती है। यह सामान रेल द्वारा वाहर भेजा जाता है।

खीरी जिला खेती में पिछड़ा हुआ है। जिले में ३५ फीसदी भूमि खेती के योग्य है। कुछ भागों में बलुई भूड़ है। ऊंचे भागों में दुमट और नीचे भागों में मटियार या चिकनी मिट्टी है। चौका पार टपार मिट्टी मिलती है। इस जिले की प्रधान उपज धान है। धान कई प्रकार का होता है। गन्ना भी बहुत होता है। गन्ने से गुड़ और शक्कर बनाई है। रबी की फसलों में गेहूँ, जौ चना उगाया जाता है। खरीफ में ज्वार बाजरा बहुत होता है।

औरङ्गावाद एक बड़ा गांव है। यह लखीमपुर से चपरतला को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यहां से पांच मील की दूरी पर सीतापुर से शाहजहांपुर को सड़क जाती है। इसे नवाब सैय्यद खुर्रम ने बसाया था। औरंगजेब के सम्मानार्थ इसका नाम औरंगाबाद पड़ा। यहां उन भागे हुये अंग्रेजों के मकबरे हैं जो गदर में यहां मार डाले गये थे।

बरबार यह बड़ा गांव गोमती से २ मील दूर है। यह औरंगाबाद से मुहम्मदी को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पहले यह एक बड़े परगने का केन्द्र स्थान था। यहां एक किले के खंडहर हैं जिसे नवाब मुक्तादी खां ने औरंगजेब के समय में बनवाया था। यहां एक मिडिल स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

धौरहरा कस्बा सुखनी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। यह लखीमपुर से २० मील दूर है। यहां थाना और डाकखाना है। माता स्थान के पास एक जीर्ण मन्दिर है। पहले यह एक छोटे राज्य की राजधानी था। गदर में यहां शाहजहांपुर से भागकर आये हुए अङ्गरेजों ने शरण ली थी। लेकिन राजा पर अवध के नवाब का जोर पड़ा। उसने इन्हे विद्रोहियों को सौंप दिया। अन्त में राजा को फांसी दी गई और उसकी जायदाद जब्त कर ली गई।

फीरोजाबाद एक छोटा गांव है। यह धौरहरा से १८ मील दूर है। कहते हैं बहरायच को जाते समय फीरोजशाह ने इसे बसाया था। यहां एक कच्ची गढ़ी के खंडहर हैं।

गोला का प्रसिद्ध गांव लखीमपुर से २२ मील की दूरी पर मुहम्मदी को जाने वाली सड़क पर स्थित है। जिस नदी पर गोला स्थित था वह लुप्त हो गई। नगर कुछ ऊंचे टीले पर बसा है। बाजार पश्चिम की ओर है। यहां गुड़ और अनाज का व्यापार होता है। पूर्व की ओर गोकरननाथ का मन्दिर और सरोवर है जिसके चारों ओर दूसरे छोटे छोटे मन्दिर हैं। यहां फागुन और चैत के महीने में मेला लगता है। शिवाला पड़ोस की भूमि से कुछ नीचा बना है। लिंग एक प्रकार के कूप में स्थित है। कहते हैं लिंग पर जो चिन्ह है वह रावण के अंगूठे का है जब वह इसे लङ्का ले जा रहा था। सम्भव है किसी मुसलमान ने इस पर आघात किया हो। यहां बौद्धों का भी केन्द्र था।

हैदराबाद गांव गोला से ५ मील दक्षिण पूर्व की ओर स्थित है। गोला से शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क यहां से कुछ ही दूर है। कहते हैं पिहानी के सैयदों के एक सैय्यद हैदरनामी नौकर ने इसे बसाया था। यहां एक स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

इसा नगर धौरहरा से १२ मील की दूरी पर

मल्लनपुर को जाने वाली सड़क पर कौरियाला के ऊंचे किनारे पर स्थित है। गांव चौहानों के पुराने किले चारों ओर बसा है। कौरियाला नदी ४ मील पूर्व की ओर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। ककारा गांव धौरहरा से निघासन तहसील को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह सुखनी नदी के ऊंचे किनारे पर स्थित है। बाजार सप्ताह में दो बार विक्रमगंज में लगता है। पश्चिम की ओर एक झील के किनारे लीलानाथ महादेव का मन्दिर है।

कैमहरा गांव लखीमपुर से मुहम्मदी और शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। पास ही फरदहन रेलवे स्टेशन है। गांव के पश्चिम में जमुआरी नदी है।

खैरीगढ़ गांव सरयू के बांये किनारे पर निघासन से ११ मील दूर है गांव के उत्तर पश्चिम में संरक्षित वन है। तीन मील पश्चिम की ओर किला गौरी शाह के खंडहर हैं। कहते हैं कि इसे शहाबुद्दीन गोरी ने बनवाया था। किले के बाहर किसी हिन्दू भवन के नक्काशीदार भग्नावशेष हैं। यहीं एक जीवित घोड़े के बराबर पत्थर का घोड़ा था। यह लखनऊ भेज दिया गया। इसकी गर्दन पर समुद्रगुप्त का नाम खुदा था।

खीरी कस्बा लखीमपुर से तीन मील दूर है पास ही पश्चिम की ओर सीतापुर से बरेली को जाने वाली रेलवे का स्टेशन है। यहां जू० हा० स्कूल और अफीम की गोदाम है। यहां कई छोटे मन्दिर, इमाम बाड़े और मस्जिदें हैं।

कक्का गांव में गोला से भीरा और लखीमपुर से पीलीभीत को जाने वाली सड़कें मिलती हैं। यह गोला से १० मील दूर है। रेलवे स्टेशन ३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर जङ्गल में है। यहां बहुत समय तक मुसलमानों का अधिकार रहा। उन्नीसवीं सदी में यहां एक गढ़ी बनाई गई। इसके दरवाजे पर एक चपटा मकबरा अपने भाई को मारने वाले का है।

लखीमपुर जिले का केन्द्र-स्थान है। यह उल नदी के दक्षिणी ऊंचे किनारे पर बसा है। दक्षिण-पश्चिम की रेलवे स्टेशन है। रेल द्वारा यह सीतापुर से २८ मील और पीलीभीत से ६० मील दूर है। पूर्व और दक्षिण पूर्व की ओर सिविल लाइन है जहां अधिकतर योरुपीय लोगों के बंगले हैं। यहां चार बाजार लगते हैं। इनमें से दो यहां के कलक्टरों के नाम से प्रसिद्ध हैं। यहां गुड़ और अन्न की बिक्री होती है। यहां तहसील, थाना, कचहरी और हाई स्कूल हैं। यहीं संकटा देवी का प्रसिद्ध मेला लगता है लखीमपुर से बहरामघाट, बहराइच और दूसरे स्थानों को सड़कें गई हैं। मैलानी गांव वन के किनारे पर शाहजहांपुर जिले की सीमा के पास स्थित है। यहां होकर लखीमपुर पीलीभीत को सड़क जाती है। लकड़ी और लट्ठों का व्यापार का यह एक बड़ा केन्द्र है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

मटेरा गांव कौरियाला के किनारे पर लखीमपुर से २० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर बसा है। उस पार बहराइच जिले में पहुँचने के लिये, यहां नावें रहती हैं। इसके उत्तर में वन है। उत्तर-पश्चिम की ओर झील है। यह धौरहरा के राजा से जब्त करके कपूर्थला के राजा को दे दिया गया। मितौली गांव कठना नदी से २ मील की दूरी पर लखीमपुर से २० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। यहां गदर के समय के प्रसिद्ध राजा लोने सिंह की राजधानी थी। जहां इस समय थाना है वहीं किला था। गदर के बाद यह गांव जब्त कर लिया गया और कप्तान ओर को सौंप दिया गया। कप्तान ने इसे महमूदाबाद के राजा के हाथ बेंच दिया।

मुहम्मदी इसी नाम की तहसील का केन्द्र है और लखीमपुर से शाहजहांपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह लखीमपुर से ३६ मील और शाहजहांपुर से २० मील दूर है। गोमती नदी यहां से ३ मील पूर्व की ओर बहती है। यहां से उत्तर-पश्चिम की ओर पुवायें और दक्षिण-पूर्व की ओर औरंगाबाद को सड़क गई है। अवध को अङ्गरेजी राज्य में मिलाने के समय मुहम्मदी जिले का केन्द्र स्थान था। १८५६ ई० में लखीमपुर जिले का केन्द्र स्थान बना। इस समय मुहम्मदी में तहसील, थाना, डाकखाना और जू० हा० स्कूल है। औरंगजेब के समय में यहां एक किला बनाया गया जो इस समय खंडहर है। यहां एक

ईमामबाड़ा और सुन्दर बगीचे हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

निघासन इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह छोटा गांव लखीमपुर से २३ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल है।

ओयल एक बड़ा गांव और रुहेलखंड कमायूं रेलवे का स्टेशन है। यहां एक सुन्दर मन्दिर है जिसे यहां में एक चौहान तालुकेदार ने बनवाया था। राजा का महल गांव से दक्षिण-पूर्व ओर स्थित है। ओयल में डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। पैला गांव लखीमपुर से १२ मील दूर है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। यहां पांचो पीर का मेला लगता है।

पलिया गांव निघासन-तहसील में एक छोटा रेलवे स्टेशन है। यहां से अनाज और लकड़ी बाहर भेजी जाती है।

पसनवां मुहम्मदी से ६ मील दूर है। यहां थाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। सिकन्दराबाद गांव सर्यान नदी से एक मील दूर है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

फुलविहार गांव लखीमपुर से ८ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना और स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

खीरी जिले का कारबार

अवध भर में खीरी जिला सब से अधिक बड़ा है और उत्तरी-पश्चिमी कोने पर बसा है। यह जिला एक कछारी मैदान हैं पर इसका उत्तरी भाग बन से ढका है। शेष भाग नदी नालों से कटा फटा है। चौका और दूसरी नदियों के पास वाले भागों में अकसर बाढ़ आती है।

इस जिले में लगभग २० लाख मन गेहूँ पैदा होता है पहले १० लाख मन गेहूँ कराची बन्दरगाह से एंगलैंड, बेल्जियम जर्मनी आदि देशों को भेजा जाता हैं। १० लाख मन ज्वार भी बाहर जाती थी।

इस जिले में साल का वन बहुत है। शीशम, आसना और हल्दू भी बहुत है। ठेकेदार पेड़ काटते हैं। रेल वन के बीच में होकर गई है। इस लिये लकड़ी ढोने में कोई कठिनाई नहीं पड़ती है। लकड़ी के अतिरिक्त यहां के वन से रंग, दियासलाई आदि बहुत सी चीजें तयार हो सकती हैं। शहद, मोम और लाख कई भागों से निकाली जाती है। खिघई राज्य और कुछ दूसरे भागों में खैर के पेड़ों से कत्था निकाला जाता है। गोला गोरखनाथ के पास सिलिया कंकड़ बहुत मिलता है और चूना तयार करने के काम आता है। लोनिया मिट्टी से शोरा बनाया जाता है और फर्रुखाबाद के कोठी वालों के हाथ बेंच दिया जाता है।

ओयल और केमहरा में फूल और कसकुट के बरतन बनाये जाते हैं। ओयल में १०० मन बरतन प्रति दिन बनते हैं।

कई गांवों में सनई की टाट पट्टी बनाई जाती हैं। लखीमपुर और गोरखनाथ व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। लखीमपुर कपड़ा और तेलहन के लिये मशहूर है। लखीमपुर में चुंगी न लगने के कारण कपड़ा कानपुर के भाव से बिकता है। सीतापुर, शाहजहांपुर, पीली-भीत और बहरायच के छोटे छोटे व्यापारी यहीं से कपड़ा मोल ले जाते हैं।

पलिया, रामनगर और चन्दन चौको में बहुत सा सामान नैपाल से आता है और कुछ वहां भेजा जाता है। नैपाल से अधिकतर घी, खेट, तिलहन और मसाला आता है।

देहरादून

देहरादून मेरठ कमिश्नरी का सब से उत्तरी जिला है। इसका क्षेत्रफल ११६८ वर्ग मील है। इस जिले में दो प्राकृतिक विभाग हैं। दूनघाटी अधिक खुला हुआ मैदान है।

जौंसरा बावर का भाग पहाड़ी है। दून एक विषम आयताकार है। उत्तर से दक्षिण की ओर इसकी लम्बाई अधिक है। दक्षिण की ओर सिवालिक पर्वत है। सिवालिक का दक्षिणी ढाल अधिक सपाट है। उत्तर की ओर इनका ढाल क्रमशः है। उत्तर के पहाड़ों से बहकर आये हुये कंकड़ पत्थर और कांप को सिवालिक पर्वत अधिक दक्षिण की ओर बहने से रोक देते हैं। इस से दून की घाटी का धरातल दक्षिण की घाटियों से कहीं अधिक ऊंचा है। इसीलिये उत्तर की ओर से देखने पर सिवालिक बहुत ही छोटे और साधारण मालूम होते हैं। दून की घाटी दक्षिणी के मैदान से अधिक ऊँची होने पर भी ऊपर से प्रायः समतल मालूम पड़ती है। इधर बहने वाली नदियों ने इसे गहरा काट दिया है। दून की घाटी उत्तर में हिमालय, दक्षिण में सिवालिक, पश्चिम में यमुना और पूर्व में गंगा से घिरी हुई है।

दून की घाटी वास्तव में दो घाटियों में बँटी हुई है। पश्चिम की ओर का पानी यमुना की ओर बह आता है। पूर्वी भाग का पानी गङ्गा में मिलता है। देहरादून छावनी से राजापुर होकर जाने वाली रेखा जल विभाजक बनाती है। इस घाटी का दृश्य बड़ा सुहावना है। काश्मीर के बाद प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से दूसरा स्थान इसी घाटी का है। नदियों के किनारे और पहाड़ी वन से ढका है। कुछ भाग में खेती होती है। हिमालय और सिवालिक सदा दिखाई देते रहते हैं। बीच बीच में छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। एक पहाड़ी देहरादून शहर के पास से आरम्भ होती है।

पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर दून घाटी अधिक खुली हुई है। अधिकतर मिट्टी चिकनी है और कंकड़-पत्थर के टुकड़ों से भरी पड़ी है। केवल कहीं कहीं चिकनी मिट्टी और बालू का मिश्रण है।

जौंसरा बावर देहरादून का पहाड़ी प्रदेश है। इसका आकार एक अंडे के समान है उत्तर से दक्षिण की लम्बाई अधिक है। टोंस नदी इसके उत्तरी भाग का चक्कर काटकर कलसी के पास यमुना में मिल जाती है। जौंसर एक त्रिभुजाकार प्रदेश है। इसके उत्तर में लोखांडी पश्चिम में टोंस, पूर्व में यमुना नदी है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई १८ मील है। बावर की लम्बाई १० मील है। यह उत्तरी भाग को घेरे हुये है। जौंसर भाग पहाड़ों और नद कन्दराओं से भरा पड़ा है। एक पहाड़ी कलसी के पास आरम्भ होती है और टोंस की ओर बहने वाले पानी को यमुना में मिलने वाले पानी से अलग करती है। इस प्रदेश में मैदान बहुत ही कम है और केवल कहीं कहीं छोटे छोटे टुकड़ों में मिलता है।

उत्तर की ओर हिमालय पर्वत की श्रेणियां हैं। शिवालिक दक्षिण की ओर है। कहते हैं कि प्रायः सवालाख चोटियां होने के कारण इसका नाम सिवालिक पड़ा। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह नाम शिव जी से सम्बन्ध रखता है। हिम शिवालिक या सिवालिक पर्वत हिमालय से २० मील की दूरी पर हिमालय के ही समानान्तर है। सिवालिक यमुना के किनारे से गंगा के किनारे तक चला गया है। इनकी उंचाई २००० फुट से कम है। शायद ही कोई चोटी ३००० फुट से अधिक ऊँची हो। इनके बीच बीच में छोटी छोटी घाटियों की भूल भुलैया सी है। इनकी कोई लगातार श्रेणी नहीं है। थोड़ी दूर पर छोटे छोटे टीले उठे हुये हैं। सिवालिक पर्वत हिमालय से अधिक पुराने हैं। इनका बलुआ पत्थर बहुत मुलायम है और पानी बरसने या बहने पर भी अक्सर कट जाता है। देहरा शहर से उत्तर की ओर मसूरी श्रेणी बाहरी हिमालय का अंग है। यह दून घाटी के कुछ भाग को घेरे हुये हैं।

लन्धार चोटी की ऊँचाई ७९५९ फुट है। लाल टिब्बा ८५६५ फुट ऊँचा है। दक्षिण की ओर कई पहाड़ियां निकली हुई हैं। पहले यह पहाड़ियां घने वन से ढकी थी। इस समय कुछ नंगी रह गई हैं। गांवों के पड़ोस की लकड़ी से कोयला बना लिया

गया है। मंसूरी पहाड़ी के अधिकतर भाग में घर बन गये हैं जहां गरमी की ऋतु में सैर करने वाले लोग रहते हैं।

गङ्गा नदी तपोवन के पास दून घाटी में प्रवेश करती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर बड़े वेग से बहती हुई ऋषि केश के पास जिले के बाहर हो जाती है। यहां गङ्गा में चन्द्रनावा राय का नाला मिलता है जो वर्षा ऋतु को छोड़ कर प्रायः सूखा पड़ा रहता है। १० मील और नीचे की ओर पूर्वी दून की सोंग और सुस्वा नदियाँ गङ्गा में मिलती हैं। इसके आगे गङ्गा कई धाराओं में बँट जाती है। इनके बीच में वनाच्छादित द्वीप हैं। गङ्गा नदी बीस मील तक देहरादून और गढ़वाल जिले के बीच में सीमा बनाती है। हरद्वार के पास गङ्गा नदी देहरादून को छोड़ कर सहारनपुर जिले में प्रवेश करती है।

यमुना नदी टेहरी गढ़वाल में बन्दर पूंच या यमुनोत्री हिमागार से निकलती है। एक पर्वत श्रेणी यमुना और गङ्गा के बीच में जल विभाजक बनाती है। मसूरी के पास इस श्रेणी का अन्त हो जाता है। देवबल से साढ़े बाहर मील पूर्व की ओर यमुना नदी देहरादून जिले में प्रवेश करती है। यहीं इसमें रिकनागढ़ नाम की छोटी नदी मिलती है। आठ मील और नीचे खुटुनगढ़ नाम की और दूसरी छोटी नदी यमुना में मिलती है। यहाँ यमुना ३० गज चौड़ी और ५ फुट गहरी है। २० मील तक यमुना दक्षिण की ओर बहती है। इसके बाद यह दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ती है। यहीं अमलावा नदी इसमें मिलती है। यह छोटी नदी देवबन पर्वत से निकलती है और एक त्रिभुजाकार घाटी बनाती है। आगे यमुना के ऊपर झूलने वाला लोहे का पुल बना है। इसके ऊपर से चकराता को सड़क जाती है। पुल से दो मील नीचे की ओर पश्चिमी टोंस यमुना में मिलती है। इसके आगे यमुना नदी दून घाटी में प्रवेश करती है। दून घाटी से यमुना का स्रोत ११७ मील है। दून घाटी में भी यमुना बड़े वेग से बहती है। रामपुर मंडी में पास आसन नदी यमुना में मिलती है। इस ओर यमुना इतने वेग से बहती है कि इसमें नावें नहीं चल सकतीं।

पश्चिमी टोंस दून में यमुना की प्रधान सहायक नदी है। यह नदी यमुनोत्री के उत्तर में हर की दून से निकलती है। पहले इसे सुपिन नाम से पुकारते हैं। ३० मील पश्चिम की ओर बहने के बाद रूपिन नदी इसमें मिलती है। संगम के आगे उत्तर धारा को टोंस कहते हैं। १६ मील और आगे पहाड़ नदी मिलती है। कल्सी के पास यह यमुना में मिल जाती है।
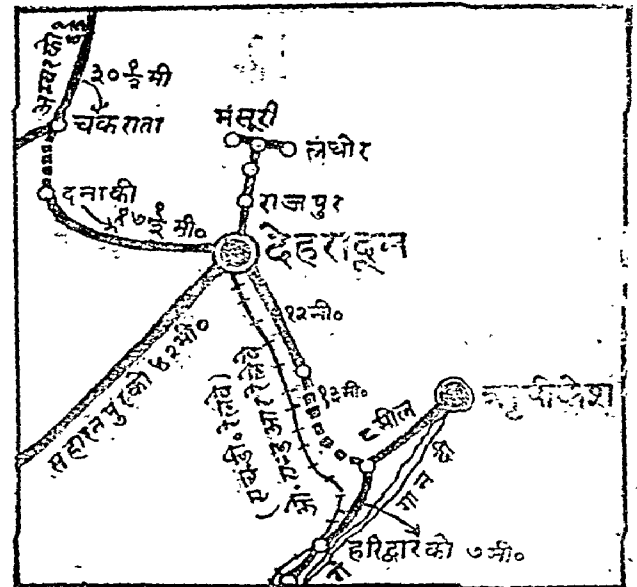
देहरादून की भूगर्भरचना बड़ी विचित्र है। इसके दक्षिणी भाग में शिवालिक पर्वत है। इसमें मुलायम बलुआ पत्थर की चट्टानें हैं। कुछ भागों की मिश्रित मिट्टी में पशुओं के ऐसे पुराने ढांचे पाये जाते हैं जो पत्थर बन गये हैं। ढांचे उन जानवरों के हैं जो मीठे पानी में रहते थे।

बाहरी हिमालय की चट्टानें अधिक पुरानी हैं। इनमें स्लेट, ज्वाला मुखी की बारीक राख, विशाल चूने के पत्थर और दूसरे कड़े पत्थर पाये जाते हैं। यहां सफेद, भूरे, पीले और सर्पाकार पत्थर मिलते हैं। जौंसर बावर में सीसा, सुरमा, लोहा और तांबा पाया जाता है।

देहरादून जिले की जलवायु शीतोष्ण है। मसूरी जैसे अधिक ऊंचे स्थानों का तापक्रम ठंडा है।

निचले भागों का तापक्रम अधिक गरम है। अधिक ऊँचाई के कारण देहरादून जिला मैदान के जिलों की अपेक्षा शीतल रहता है। वनाच्छादित शिवालिक पहाड़ियां मैदान की लू रोक लेती हैं।

वर्षा ऋतु के बाद अक्तूबर-नवम्बर में आकाश बड़ा निर्मल रहता है। दिन में गरमी पड़ती है। रात को ठंड पड़ती है और ओस भी बहुत गिरती है। दिसम्बर और जनवरी में जोर का जाड़ा पड़ता है। कभी कभी तापक्रम जमने के बिन्दु से भी नीचे गिर जाता है।

फरवरी मास में बादल फिर आने लगते हैं। जब देहरादून शहर में पानी बरसता है तब पहाड़ के ऊपर मसूरी में बरफ गिरती है। बरफ गिरने के बाद देहरादून से मसूरी का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। मार्च अप्रैल में तापक्रम तेजी से बढ़ने लगता है। मई से आधे जून तक तापक्रम और भी अधिक बढ़ जाता है। इसके बाद बादल आने लगते हैं और वर्षा ऋतु आरम्भ हो जाती है। कुछ भागों में वर्षा के कारण मच्छड़ बढ़ जाते हैं और मलेरिया ज्वर फैलता है। इस जिले की औसत वर्षा लगभग ६४ इंच है। देहरादून शहर में ७० इंच, चकराता में ७३ इंच राजपुर में १०८ इंच वर्षा होती है। यमुना के किनारे कल्सी में केवल ६२ इंच वर्षा होती है। फिर भी पड़ोस के मैदानी भागों से सब कहीं अधिक वर्षा है। और भावर में सिंचाई की जरूरत पड़ती है। सिंचाई की कई छोटी छोटी नहरें हैं। राजपुर नहर रिस्पना राव से निकलती है और देहरा शहर तक आती है। कलंगा नहर कलंगा पहाड़ी के पास से निकलती है। यह सोंग नदी और नागसिद्ध बन के बीच में स्थित प्रदेश को सींचती है। जाखन नहर भोजपुर के पास से निकलती है। कटपाथर नहर यमुना नदी से निकलती है। बिजैपुर नहर पूर्वी टोंस से निकलती है।

देहरादून में रौसिली (अच्छी दुमट) डकर (चिकनी मिट्टी) संक्रा (मामूली मिट्टी) और गोंइड (खार मिली मिट्टी) चार प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

मसूरी पहाड़ी और जौंसर में बढ़िया पहाड़ी आलू उगाये जाते हैं लगान का रुपया देने के लिये किसान हल्दी- मिर्च और अदरख उगाते हैं। देहरा शहर के पास चाय के बगीचे हैं, लेकिन देहरादून की प्रधान फसलें गेहूँ, चावल, धान, महुआ, जौ, मकई, चना, ज्वार और तिलहन है।

अजबपुर कलां एक पुराना गांव है और रिस्पनाराव के दाहिने किनारे पर बसा है। हरद्वार से देहरादून को सड़क यहीं होकर जाती है। एनफील्ड ग्रांट नामका बड़ा गांव यमुना के बांयें किनारे पर स्थित है। १८५७ में यहाँ ईसाई किसान बसाये गये। खेती के अतिरिक्त यहां चाय का भी बगीचा है।

आर्केडिया ग्रांट पर देहरादून की चाय कम्पिनी का अधिकार है।

बसन्त पुर एक पुराना गांव है जो हिमालय की तलहटी में बसा हुआ है। १५७५ ईस्वी में यहां एक मुसलमानी हमला हुआ, दूसरा हमला १६५५ ईस्वी में हुआ।

भावर परगना पाँच भागों, (खातों), में बटा हुआ है।

भोगपुर गांव देहरा शहर से १४ मील की दूरी पर बाहरी हिमालय की तलहटी में बसा है इसमें जाखन नहर का पानी आता है। पहाड़ और मैदान की उपज का विनिमय यहां के बाजार में होता है। यहां एक जूनियर हाई स्कूल है।

चकराता छावनी की ऊँचाई ६८८५ फुट है। यह कल्सी से २५ मील और मसूरी से ३८ मील दूर है। शिमला से मसूरी को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। चकराता के पड़ोस का दृश्य सुहावना नहीं है। लेकिन दूर की पहाड़ियों का दृश्य यहां से सुन्दर दिखाई देता है।

देवबन की पहाड़ियों से पीने का पानी मिलता है।

देहरादून शहर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह समुद्र-तल से २२६० फुट ऊँचा है। गङ्गा और यमुना के बीच की जलविभाजक रेखा से यह कुछ पूर्व की ओर है। शहर रिस्पना राव और बिन्दल नाम की दो छोटी नदियों के बीच में स्थित है। स्टेशन शहर से धुर दक्षिण की ओर है। उत्तर की ओर फारेस्ट कालेज है। हरद्वार से आने वाली रेलवे का यह अन्तिम स्टेशन है। यहां से हरद्वार और सहारनपुर को पक्की सड़क भी गई

है। पक्की सड़क राजपुर, मंसूरी और चकराता को भी गई है। यहां की जलवायु स्वास्थ्यकर है। पड़ोस का दृश्य बड़ा सुन्दर है। इसी से यह शिक्षा का केन्द्र बन गया है। यहां मिशन हाई स्कूल डी० ए० वी० इण्टर कालेज, महादेवी कन्या गुरु कुल, फारेस्ट कालेज, मिलीटरी कालेज और पबलिक स्कूल है। यहीं सर्वे आफिस में नक्शे बनते हैं।

यहां उदासी महन्तों का गुरुद्वारा पुराना और दर्शनीय है। यहां १६६६ ईस्वी से ही वास्तव में देहरा शहर का आरम्भ हुआ। गुरु द्वारा से बिगड़ कर देहरा नाम पड़ गया। गुरु राम राय का निवास-स्थान बनते ही यहां उदासी चेले और दूसरे लोग आकर बसनें लगे। निवास स्थान के चारों ओर नये नये घर बन गये। गुरुजी औरंगजेब की ओर से टेहरी नरेश फतेह साह के लिये सिफारिशी चिट्ठी लाये थे। इसलिये गुरुजी का बड़ा स्वागत हुआ। उनको मन्दिर के खर्च के लिये पहले चार गांव मिले फिर ४ गांव और मिल गये गुरुखा युद्ध के बाद देहरादून का जिला १८१५ में सहारनपुर में मिला लिया गया। आगे चलकर देहरा जिला बन जाने और छावनी होने से शहर की भी वृद्धि हुई यहां भारतीय सरकार का वैज्ञानिक विभाग भी स्थापित हुआ। १६६६ ई० में रेलवे आजाने से शहर की और भी अधिक वृद्धि हुई। १८२७ ईस्वी में देहरा में केवल ५१८ घर और २००० मनुष्य थे। इस समय देहरा शहर की जनसंख्या लगभग ५०,००० है।

दोईवाला गांव और स्टेशन हरद्वार १२ मील है। यहां से सवालाख मन ईंधन और ५०,००० मन इमारती लकड़ी और ५८००० मन पत्थर बाहर भेजा जाता है। कुछ बासमती चावल भी यहां से बाहर जाता है।

जीवन गढ़ गांव अस्थारी चाय बगान के पास स्थित है।

कल्ली पहले अधिक समृत गांव था। यह यमुना की सहायक अमलवा नदी के बाये किनारे पर स्थित है। कल्सी के समीप का दृश्य बड़ा सुन्दर है। कल्सी के पड़ोस में अशोक का एक शिला लेख है। इसे चित्रशिला कहते हैं। पीने का पानी अमलवा नहर से आता है। यहां तहसील, डाकखाना और स्कूल है। कौलागिरि गांव और चाय बगान देहरादून के पास है।

लन्धौर मसूरी पहाड़ी पर स्थित है। यह अंग्रेजी फौज और गोरों के रहने का स्थान है। पेड़ों से ढके हुए पहाड़ी ढालों पर खपरैल और टीन से छाये हुये घर भरे पड़े हैं।

मंसूरी पहली पहाड़ियों पर स्थित है। इसकी ऊंचाई समुद्र तल से छः सात हजार फुट है। इसका क्षेत्रफल १२ वर्ग मील है। जनसंख्या ऋतु के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। ग्रीष्म ऋतु में यहां सैर करने वालों की अधिकता हो जाती है। यहां हाई स्कूल, डाकघर और बाजार है।

नवादा एक प्राचीन गांव है। पहले यह दून का केन्द्र स्थान था। यहां मन्दिर और धर्मशाला है। पड़ोस में नाग सिद्ध पहाड़ी हैं। इसके दक्षिणी ढाल के पास सुस्वा नदी बहती है।

रामपुर पूर्वी दून का एक बड़ा गांव है। यहां कालंगा नहर से सिंचाई होती है। यह गांव सोंग नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहाँ कुछ गुरखा और जिले के छोटे कर्मचारी रहा करते हैं।

राजपुर कस्बा देहरादून से मसूरी को जानेवाली सड़क पर स्थित है और मसूरी पहाड़ियों के निचले ढालों पर स्थित है।

पहले देहरा से आनेवाली सड़क यहीं समाप्त हो जाती थी अब यह मसूरी के पास तक पहुँचा दी गई है। सड़क के दोनों ओर घरों की पंक्ति है। कुछ होटल हैं। यहीं लोग ठहरने के लिये आते थे। आगे चलकर मसूरी के उत्थान के साथ साथ राजपुर का का पतन हो गया।

ऋषिकेश गंगा के किनारे ऊंचे टीले पर बड़ा सुन्दर बसा है। हरद्वार के कुम्भ के बाद बहुत से यात्री यहां आया करते हैं। यहां कई मन्दिर हैं। भरत का मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि रावण को मारने के बाद लक्ष्मण ने यहीं तपस्या की थी। यहीं लक्ष्मण झूला है। धर्मशालायें भी बहुत हैं। यहां साधू बहुत रहते हैं। यहां देहरादून और हरद्वार से सड़क आती है। हरद्वार से रेल भी आ गई है।

यहां कई पाठशालायें और काली कमली वाले का केन्द्र स्थान है।

सहसपुर दून के पुराने गांवों में से एक है। यह देहरादून से २० मील दूर है और सुन्दर सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सहस्त्र धारा एक विचित्र गुफा है और बल्दी नदी के ऊंचे सपाट किनारे पर स्थित है। यह राजपुर से पूर्व की ओर बगदा गांव के पास है चट्टानें ऐसे पत्थर की बनी हैं जिनमें से पानी छन आता है। गुफा की छत से पानी लगातार टपकता रहता है। दूसरी ओर गन्धक का सोता है। इस जल के प्रयोग से कई बीमारियां दूर हो जाती हैं।

तपोवन गंगा के दाहिने किनारे पर एक छोटा गांव है ऋषि केश की तरह यह भी एक तीर्थ है जहां यात्री बराबर आया करते हैं। रावण को मारने के बाद श्रीरामचन्द्र जी ने ऋषिकेश में और लक्ष्मण ने तपोवन में तपस्या की थी। यह लक्ष्मण जी का मन्दिर है।

शाहजहाँपुर

यह जिला रुहेलखंड कमिश्नरी के दक्षिण-पूर्व है यह पूर्व में खीरी, दक्षिण में हरदोई और फर्रुखाबाद से घिरा है। इसके पश्चिम में बदायूं और बरेली के जिले हैं। उत्तर में पीलीभीत का जिला इस जिले से मिला हुआ है। उत्तर-पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक बड़ी से बड़ी लम्बाई ७५ मील है। अधिक से अधिक चौड़ाई तिलहर और शाहजहांपुर कस्बों के दक्षिण में ३८ मील है। जिले का क्षेत्रफल १७२६ वर्गमील या ११ लाख एकड़ है। सारा प्रदेश एक खुला हुआ मैदान सा है। खेती खूब होती है। बीच में जंगल, बाग, बिखरे हुए पेड़ हैं केवल उत्तर-पूर्व में सघन वन है। कई नदियों और नालों ने काट कर जमीन को ऊंचा नीचा कर दिया है। जिले का ढाल दक्षिण पूर्व की ओर है। इसी से नदियां दक्षिण पूर्व की ओर बहती हैं। अधिक से अधिक ऊँचाई कटरा के पास समुद्र-तल से ६०८ फुट है कम से कम ऊँचाई हरदोई की सीमा के पास ५८० फुट है।

खादर अथवा नीची जमीन नदियों की घाटियों में है। बांगर अथवा ऊंची भूमि जिले के बड़े भाग में फैली हुई है।

चिकनी मिट्टी की कड़ी ऊसर धरती वन कटी में है। वहां पहिले वन कट गया अब केवल ढाक आदि के ही पेड़ बचे हैं जिले भर की ½ धरती भूड़ (बालू) है। ⅙ चिकनी मिट्टी है शेष दुमट हैं। खुटार के परगनों में भूड़ बहुत हैं। जमौर, जलालाबाद निगोही और खेड़ा बमेड़ा में चिकनी मिट्टी बहुत है।

जिले की सभी नदियां गंगा जी में मिलती है। छोटे छोटे ताल बहुत हैं पर झीलें कम हैं।

सड़क बनाने के लिये कंकड़ बहुत हैं और खनजों का अभाव है।

चीतल, नील गाय, भेड़िया आदि जंगली जानवर हैं। मछलियां कई स्थानों में मारी जाती हैं। गाय, बैल, भैंस, भेड़ बकरी सब कहीं पलती हैं।

द्वाबा की अपेक्षा यहां अधिक (४० इंच) पानी बरसता है। शीतकाल मेरठ का सा होता है पर आगरा की सख्त गरमी नहीं होती है।

यहां आधे से अधिक धरती में खेती होती है। साल में रबी (सरदी) और खरीफ की दो फसलें काटी जाती हैं। गेहूँ चना, चावल, पोस्त मुख्य फस्लें हैं। ज्वार, बाजरा, अरहर और कपास खरीफ में और ईख गरमी में बोई जाती है। पानी में सिघाड़ा होता है। सिंचाई कुओं से होती है। हाल में सारदा नहर में पानी आने से जिले के बड़े भाग में सिंचाई होती है अकालों ने इस जिले को बहुत सताया है। मजदूरी सस्ती है पर सूद अधिक है शक्कर बनाना यहां का प्रधान धंधा है इसका केन्द्र रौसा है। गाढ़ा प्राय: सभी बड़े २ गांवों में बुना जाता है। बाजार बहुत जगह लगते हैं। कुछ स्थानों में मेला भी होता है। गदर के बाद सड़कें काफी हो गई हैं। समस्त लम्बाई प्राय: ५०० मील होगी। अवध रुहेलखंड और रुहेलखंड कमायूं रेलवे इस जिले को पार करती हैं।

रेल के पुलों और कुछ पक्के पुलों को छोड़ कर नदियों प्राय नावों के ही पुल हैं जो वर्षा के बाद बनते हैं।

साधारण गावों में नाव द्वारा नदी को पार करते हैं। गङ्गा, रामगङ्गा और गर्रा में दूर दूर तक नावें चल सकती हैं।

जिले भर की आबादी ६ लाख के ऊपर है। सवा आठ लाख हिन्दू, सवा लाख मुसलमान और २,००० ईसाई हैं। इस प्रकार प्रति वर्ग मील में लगभग ६०० मनुष्य रहते हैं। यहां के कुछ लोग, पास के और जिलों में भी पाये जाते हैं।
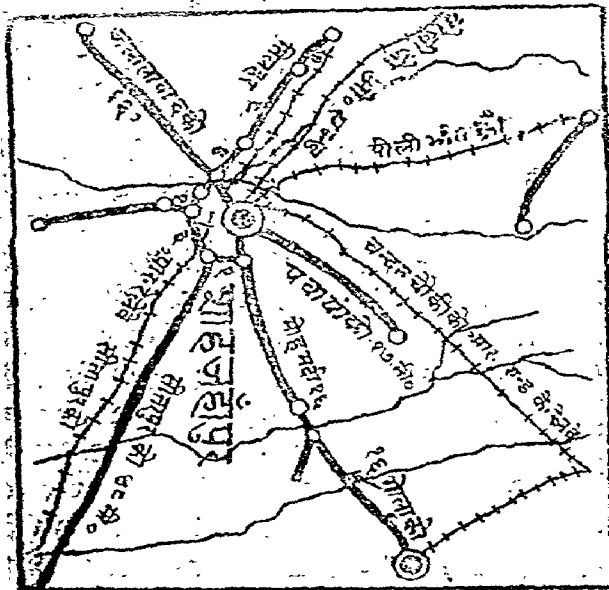
हिन्दुओं में चमार, किसान, राजपूत और ब्राह्मण बहुत हैं, कहार काछी, कुरमी, तेली, बनिए, नाई, धोबी आदि बहुत सी जातियों की संख्या कम है। मुसलमानों में पठान, शेख और जुलाहे अधिक संख्या में हैं।

केसरी प्रकाश, हास्यरस, श्री नगर रत्नावली पुस्तकें हिन्दी में बनी, अखबारे मुहब्बत शाहजहां पुर नामा, अनहरुलबहेर फारसी में बनीं। आर्यदर्पण और तिजारत यहां के समाचार पत्र हैं।

रुहेलखंड पर अंग्रेजों का अधिकार होते ही शाहजहांपुर में छावनी बन गई। गदर के बाद यह और भी बढ़ गई।

४१ थानेदार ३१ हेडकान्स्टेबिल २६८ सिपाही हैं। लाठी ऊक्सर चल जाती है।

जेल में ३२० कैदी रहते हैं। बैत की चटाई, कालीन कंबल और मोटा सूती कपड़ा बनाया जाता है।

शराब, ताड़ी, भंग, गांजा, चाय अफीम से बहुत आमदनी होती है। ३०० स्कूल हैं। ५ अरबी के ६ हिन्दी के १४ संस्कृत के और ७४ फरसी के मदरसे थे। ५५ फीसदी लोग पढ़े लिखे हैं। शाहजहांपुर, तिलहर, कांट, कटरा, खुटा और जलालाबाद में शफाखाना है।

प्राकृतिक बनावट

बन की पेटी—इस जिले के धुर उत्तर-पूर्व में बन है। बन के साथ ही इधर बहुत जमीन बेकार पड़ी है। इसमें खेती कम होती है। कुओं में पानी बहुत गहराई पर मिलता है। यहां बीमारी बहुत फैलती है। सुअर और दूसरे जंगली जानवर फसल को नुकसान पहुँचाते हैं। इसलिये इधर खेती है। और लोग भी कम रहते हैं। इस भाग को तराई कहते हैं।

आगे दक्षिण की ओर जमीन कुछ ऊँची है। इसका रंग कुछ हलका है। इसमें बालू बहुत है इसलिये इधर पैदावार बहुत कम है। इधर के जंगल और ऊसर में जंगली जानवर काफी हैं। पीने का पानी अच्छा नहीं है। अधिक वर्षा के दिनों में यहां बीमारी भी फैलती है। इसलिये इस भाग में बहुत कम लोग रहते हैं। यह भाग झुकना और गोमती नदियों के बीच में स्थित है। जिले का सबसे खराब भाग यही है।

बांगर—यहां मटियार की जमीन काफी उपजाऊ है। पुवाया, बड़ा गांव, निगोही और शाहजहांपुर और जमौर परगना में अधिकतर जमीन बांगर है। गर्रा नदी के दक्षिण में भूड़ या पीली बलुई जमीन है। तिलहर कांट और जलालाबाद में अधिकतर भूड़ है।

इसके आगे रामगङ्गा की तराई है। इधर जमीन नीची है। बाढ़ के दिनों में अधिकतर जमीन पानी में डूब जाती है। सूखने पर कहीं इसमें बालू पड़ जाती है। तब उसमें झाऊ उग आती है। गरमी में नदी किनारे तरबूज और खरबूजा उगाये जाते हैं।

वैसे इसमें कुछ पैदावार नहीं होती है। अगर बाढ़ के बाद अच्छी जमीन पड़ गई तो गेहूँ, चना और दूसरी फसलें होती हैं। इसी तरह की तराई गङ्गा के किनारे किनारे भी कुछ दूर तक मिलती है। इधर कांस और पतेल (मूंज) होती है।

वनकटी—जलालाबाद के पश्चिम में सबसे अधिक जमीन वनकटी की है। वहां ढाक का वन कहीं कहीं अब भी है। कहीं कहीं यह वन कट गया है। इधर चिकनी मिट्टी की कड़ी जमीन है। कहीं ऊसर है। कहीं सफेद रेह है। रेह से धोबी लोग कपड़े साफ करते हैं। वैसे यहां कुछ भी नहीं पैदा होता है। बाढ़ के दिनों में इधर भी पानी भर जाता है। यहां धान बहुत होता है।

जिले में लगभग १५ फीसदी जमीन भूड़ १२ फीसदी चिकनी मिट्टी और शेष मटियार है। जिले में लगभग ६० हजार एकड़ या ८ फीसदी जमीन ऊसर है।

पुवाया और खुटार परगनों में साल, आसन, कारौ महुआ और दूसरे पेड़ों के वन हैं। इन पेड़ों की लकड़ी बड़ी अच्छी होती है और हल, गाड़ी और दूसरी चीजों के बनाने के काम आती है। जलालाबाद, जसौर और निगोही परगनों में ढाक है। कहीं कहीं खसखस और कांस है। लगभग ४ फीसदी जमीन वन और जंगल से ढकी है।

नदियाँ

जिले की सब से बड़ी नदी गङ्गा है। लेकिन यह नदी कुछ ही मील तक इस जिले को छूती है। गङ्गा नदी इस जिले को फर्रुखाबाद से अलग करती है। हमारे जिले को छूने के पहले यह कई दूसरे जिलों में होकर बहती है। इसका निकास हिमालय की बरफ में है जिसे गङ्गोत्री कहते हैं। गरमी में बरफ तेजी से पिघलती है इसलिये वर्षा होने के पहले ही हमारी गङ्गा में बरफ का साफ पानी एक छोटी बाढ़ पैदा कर देता है। लेकिन बहुत बड़ी बाढ़ कुछ दिनों बाद वर्षा ऋतु में आती है। अड़ोस पड़ोस में नीचा खादर होने से गङ्गा की चौड़ाई कई मील की हो जाती है। उसके पानी का रंग भी मटीला हो जाता है। हमारे जिले के बहुत से लोग गङ्गा नहाने जाते हैं। ढाई घाट में कार्तिक की पूर्णमासी कतिकी का बड़ा मेला होता है। इसी तरह जेठ की दशमी को दशहरा का मेला लगता है।

रामगङ्गा भी हिमालय से निकलती है वह कई जिलों में बहती हुई शाहजहां जिले में आती है। अन्त में वह फिर कन्नौज के पास (फर्रुखाबाद के जिले में) गङ्गा में मिल जाती है। बरसात के दिनों में बढ़ी हुई रामगङ्गा बड़ी डरावनी मालूम होती है। पानी का धाड़ना दूर से ही सुनाई देता है। किनारे कट कर गिर जाते हैं। कभी कभी रामगंगा समूचे गांवों को काट कर बहा ले जाती है। गांव वाले किनारे से दूर झाऊ या मिट्टी के नये मकान बनाकर रहने लगते हैं। बाढ़ के दिनों में राम गङ्गा को पार करना आसान नहीं है। कभी कभी दो दो दिन उतारा नहीं होता है। इस जिले में रामगङ्गा के ऊपर एक भी पक्का पुल नहीं बना है। कोला घाट में पानी घटने पर हरसाल नावों का एक पुल बना लिया जाता है। बाढ आने के पहले ही वह तोड़ दिया जाता है। बरसात में यहां भी नाव से ही उतारा होता है। रामगङ्गा को नाव से पार करने के लिये कई घाट हैं। गरमी के दिनों में अक्सर उथला पानी रह जाने से नाव की भी जरूरत नहीं पड़ती है। लोग पांव पांव नदी को पार कर जाते हैं। रामगङ्गा के किनारे अक्सर मगर लेट रहते हैं।

खंडहर के पास रामगङ्गा में बहगुल नदी मिल जाती है। संगम के नीचे संगाहे का घाट है। यह नदी छोटी है। लेकिन बाहर से इस जिले में आती है। इसका पानी रामगङ्गा से अधिक साफ रहता है। इसके पानी से किसान अपने खेतों को भी सींचते हैं।

गर्रा—जिले भर की सब से अधिक मशहूर नदी गर्रा है। पीलीभीत में इसे देवहा कहते हैं। यह नदी कमायूं की पहाड़ियों से निकलती है। यह नदी जिले के सब से चौड़े भाग में होकर बहती है और जिले को लगभग दो बराबर भागों में बांटती है। कुछ दूर तक गर्रा नदी इस जिले को हरदोई से अलग करती है। अन्त में वह रामगङ्गा से मिल जाती है। गर्रा में बरसात के दिनों में कभी कभी भयानक बाढ़ आजाती है। यह नदी अक्सर अपने किनारे काट डालती है। इसको पार करने के लिये कई जगह घाट हैं। शाहजहांपुर से तीन मील की दूरी पर गर्रा के ऊपर रेल

का पुल बना है। शहर के दक्षिणी सिरे पर बड़ा मजबूत और सुन्दर पक्का पुल हाल में बना है। शहर के पास ही रौसर की कोठी के नीचे खन्नौत नदी गर्रा में मिल जाती है। खन्नौत नदी पीलीभीत के जंगलों से निकल कर आती है। यह नदी बड़ी छोटी है और बहुत ही धीरे धीरे बहती है। इससे इसका पानी बड़ा साफ रहता है। शहर के धोबी अक्सर इसी नदी में अपने कपड़े धोते हैं। इसके ऊपर कई पुल बने हैं।

गोमती नदी पीलीभीत के जंगली दलदलों से निकलती है। अपने जिले में २५ मील बहने के बाद यह नदी फिर अवध में चली जाती है। गुटैया घाट के पास इस पर एक लोहे का एक अच्छा पुल बना है। हमीपुर के पास गोमती में झुकना नदी मिल जाती है। झुकना नदी बहुत छोटी है। लेकिन इसके किनारे ऊंचे हैं। इसका पानी विषैला समझा जाता है। इसी से झुकना नदी के किनारे कोई गांव नहीं बसा है। कुछ मील और आगे बढ़ने पर गोमती के दाहिने किनारे पर भैंसिनी नदी आ मिलती है। इसका पानी भी अच्छा नहीं है। इनके सिवा इस जिले से छोटी और नदियां हैं। अपने नक़शे में इनके नाम देख लो।

झीलें

जिले का बहुत सा बरसाती पानी बहकर किसी न किसी नदी पहुँचता है। लेकिन कुछ बहुत नीचे भाग हैं। उनका पानी वहीं रह जाता है। इससे कुछ झीलें बन गई हैं। वे बहुत छोटी हैं पर वे खेतों के सींचने के काम आती हैं। एक झील तिलहर तहसील में पलिया दरोबस्त के पास है। दो झीलें खुदा गंज के उत्तर में है। ढकिया और कटरा के पास भी कुछ झीलें हैं। जलालाबाद में कोई बड़ी झील नहीं है। लेकिन पुवाये में कई झील हैं नाहिल के पास वाली झील बहुत बड़ी है।

जलवायु

हमारे जिले में दिवाली के बाद काफी जाड़ा पड़ने लगता है। सब लोग घरों के अन्दर सोते हैं। गांव में लोग पुआल बिछाते हैं और रात को आग तापते हैं। शहर के लोग बहुत सा कपड़ा पहनते हैं। दिन छोटे होते हैं और रातें बड़ी होती हैं। सबेरे को लोग घाम (धूप) में रहना पसन्द करते हैं। जाड़े में ओस रोज पड़ती है। पानी शायद ही कभी बरसता है कभी कभी पाला पड़ जाता है जिससे अरहर और दूसरे मुलायम पौधे सूख जाते हैं। बसन्त के बाद बड़ा अच्छा मौसम रहता है। न अधिक सरदी पड़ती है न गरमी होती है।

बैशाख से गरमी बड़े जोर की हो जाती है। दुपहरी में बाहर जाने को जी नहीं चाहता है। सब लोग खूब नहाते हैं और रात को बाहर सोते हैं। फिर भी गरमी के मारे नींद नहीं आती है। कभी कभी धूल भरी हुई आंधी चलती है इससे दिन में अंधेरा छा जाता है। कुछ पेड़ गिर जाते हैं।

आषाढ़ (जुलाई) से पानी बरसने लगता है। इससे गरमी कुछ कम हो जाती है। लेकिन मच्छड़ और दूसरे कीड़े बढ़ जाते हैं। पर पानी लगातार नहीं बरसता है। कभी आस्मान साफ हो जाता है। फिर भी ताल भर जाते हैं। अगर साल भर की वर्षा का पानी इकट्ठा कर लिया जावे उसका एक बूंद भी न सूखने पावे न इधर उधर बहने पावे तो हमारे जिले में औसत से वर्षा का पानी सब कहीं एक गज गहरा भर जावे। लेकिन हमारे जिले में सब कहीं एक सी वर्षा नहीं होती है। साल में औसत से शाहजहां पुर और पुवा की तहसीलों में लगभग ४० इंच पानी बरसता है। तिलहर में ३६ इंच और जलालाबाद के ३२ इंच वर्षा होती है। जब बहुत कम वर्षा होती है तो अकाल पड़ता है।

पशु

वनों के कट जाने से जंगली जानवर बहुत कम रह गये हैं। खुटार के जंगलों में कभी कभी तेन्दुआ मिल जाता है वह गाय बैल को खा जाता है कभी कभी वह एक आध बाहर सोते हुए लड़के को भी ले जाता है। चीतल, नील गाय और हिरण, ढाक दूसरे जंगलों में मिलते है। खादर में जङ्गली सुअर रहता है। लोमड़ी, खरगोश और सियार (गीदड़) सब कहीं पाये जाते हैं।

नदियों में तरह तरह की मछलियां और कछुए बहुत हैं। बड़ी नदियों में मगर मिलता है। वह मछ-

लियों और दूसरे जानवरों को मारकर खा जाता है। कभी कभी वह आदमी को भी पानी में घसीट ले जाता है।

इस जिले में कई लाख गया, बैल और भैंस हैं। गाय और भैंस दूध के लिये पाली जाती हैं। बैल और भैंसे हल और गाड़ी चलाते हैं। गड़रियों लोग भेड़ पालते हैं। वे भेड़ों की ऊन से कम्बल भी बनाते हैं। बकरी सभी गांवों में पाली जाती है। सवारी के लिये इस जिले के लोग घोड़े पालते हैं। बड़े बड़े कस्बों में घोड़े इक्का चलाते हैं। कहीं कहीं ऊँट भी पाला जाता है। बड़े रईस लोग हाथी रखते हैं। धोबी और दूसरे गरीब लोग बोझा ढोने के लिये गधा पालते हैं।

जिले में कंकड़ कई स्थानों में पाया जाता है। इसे कूट कर पक्की सड़क बनाई जाती है। चूना भी बनता है। वैसे हमारे जिले के अधिकतर मकान चिकनी मिट्टी से बनाये जाते हैं। यह मिट्टी बहुत से तालाबों में पाई जाती है। बड़े कस्बों में इसी से पक्की ईंटें बना लेते हैं। कुम्हार लोग घड़ा और दूसरे बर्तन बढ़िया चिकनी मिट्टी से ही बनाते हैं।

सिंचाई

जिले में पानी काफी बरस जाता है। नीचे जमीन में भी थोड़ी ही गहराई पर पानी निकल आता है। इसलिये सिंचाई की कठिनाई नहीं है। लेकिन भूड़ की बलुई जमीन और पुवायां तहसील में सिंचाई की बड़ी जरूरत थी। उसको पूरा करने के लिये हाल में सारदा नहर निकाली गई है। गर्रा के उत्तर में सारदा नहर है। गर्रा और रामगङ्गा के बीच की जमीन को सींचने के लिये नहर की कई छोटी छोटी शाखयें हैं। इन नहरों के खुल जाने से सींचने को आराम हो गया है। पर किसानों को नहर के पानी के लिये दाम देना पड़ता है। कई भागों में किसान लोग तालाबों के पानी से अपने खेतों को सींचते हैं। तालाब के ऊपर खेतों में पानी पहुँचाने के लिये दो दो किसान मिलकर बेंड़ी चलाते हैं।

जहां तालाब या नहर नहीं है वहां किसान लोग अपने खेतों को सींचने के लिये कच्चे कुएँ खोद लेते हैं। वे ढेंकुली या रेंहटी चलाकर कुए से पानी निकालते हैं।

खेती

जिले में ऊसर बंजर की निकम्मी जमीन १५ फीसदी से अधिक नहीं है। बाग, ताल, वन और जंगल भी थोड़े ही हैं। इसलिये हमारे जिले की बहुत सी जमीन कई तरह की फसल उगाने के काम आती है। खरीफ की फसल वर्षा होते ही जुलाई के महीने में बो दी जाती है। वर्षा के दिनों में सब से अधिक जमीन ज्वार बाजरा से घिरी होती है। इनके साथ अरहर उर्द मूंग और तिल भी बो देते हैं। उर्द मूंग तो ज्वार बाजरा के साथ ही अगहन तक कट जाते हैं। अरहर को पकने में देर लगती है वह चैत वैशाख में काटी जाती है। कुछ खेतों में किसान लोग अपने जानवरों को खिलाने के लिये चरी बो देते हैं। चरी के लिये ज्वार को घना बोते हैं। उसमें अरहर भी नहीं मिली रहती है। चरी को पकने के पहले ही हरा काट लेते हैं। खरीफ में धान की फसल प्रधान है। यह तालों के पास बहुत होती है। भूड़ की रेतीली जमीन में यह बहुत कम होता है।

रबी की फसल दिवाली से कुछ पहले बोई जाती है। आधे से कुछ अधिक जमीन में रबी की फसल बोई जाती है। इसमें गेहूँ प्रधान है। गेहूँ सारे जिले में होता है यहां तक कि अच्छे खेतों में फी एकड़ दस मन की पैदावार होती है। कहीं कहीं गेहूँ के साथ चना, मटर और जौ को भी मिला देते हैं। अक्सर चना और जौ को अलग अलग बोते हैं। रामगङ्गा के खदार और दूसरे तर भागों में किसान लोग पोस्त बो देते हैं। इससे अफीम तैयार होती है। अफीम की सरकारी कोठी के जिले भर की सब अफीम मोल ले ली जाती है और बाहर भेज दी जाती है।

शाहजहांपुर और जलालपुर के परगनों में ईख बहुत होती है। गांव वाले गन्ने को पेरकर गुड़ बनाते हैं।

रौसर में बहुत सा गन्ना रौसर की कोठी में भेज दिया जाता है वहां इससे शक्कर बनती है। पड़ोस में नये ढंग के मोजे गन्ने सरकारी खेतों में उगाये जाते हैं।

कारबार, व्यापार और मेले

गुड़ और राब बनाने के लिये कई जगह बेल खुले हुये हैं। यहां गन्ने के रस को औट कर खंडसारी लोग गुड़ की भेली या राब बनाते हैं। कहीं कहीं खांड भी बनती है। शक्कर तैयार करने का सबसे बड़ा कारखाना रौसा में है। यह कारखाना लगभग १०० वर्ष का पुराना है। यहां शराब भी बनती है।

जगह जगह पर जुलाहे लोग गजी या गाढ़ा बुनते हैं। शाहजहां पुर शहर में दरी और रेशम बुनने का काम भी कई जगह होता है। यहीं बैंच और मूंज के बान भी बटे जाते हैं। इनसे चटाई (पट्टा) और चारपाई बुनी जाती हैं।

तिलहर में सुन्दर मिट्टी के बरतन बनते हैं। शाहजहांपुर और तिलहर में ठठेरे लोग पीतल के बरतन बनाते हैं। यहां चाकू कैंची और सरौता बनाने का काम भी होता है। गदर से पहले इस जिले के लुहार लोग तलवार और बन्दूक भी बनाते थे। आजकल वे लोग हल, खुरपा और फावड़ा बनाते हैं।

यहां से गुड़, अफीम और अनाज बाहर जाता है। कपड़ा और दूसरा सामान हमारे यहां आता है। सामान खरीदने और बेचने के लिये कई जगह बाजार लगते हैं। जितना बड़ा कस्बा होता है उतना ही बड़ा बाजार लगता है। शाहजहांपुर और तिलहर का बाजार सबसे बड़ा है।

हमारे जिले में कई मेले भी लगते हैं। किसी किसी मेले में पचास पचास हजार आदमी इकट्ठे होते हैं। इन मेलों में भी बहुत सा लेन देन होता है। सब से बड़ा मेला कार्तिक की पूर्णमासी को गंगा स्नान के अवसर पर ढाई घाट में लगता है। गोगेपुर में महादेव का मेला फागुन के महीने में लगता है। कील्हापुर में ब्रह्मन देव का मेला चैत की पूर्णमासी को होता है। सेहरामऊ में देवी का मेला होता है।

चुके हैं। ईस्ट इंडियन रेलवे हरदोई से हमारे जिले में आती है और फिर वह जिले को पार करके बरेली चली जाती है। इस जिले में इस बड़ी रेलवे लाइन की लम्बाई लगभग ३५ मील है। कहेलिया, रौसा, शाहजहां पुर, बन्थरा, तिलहर और कटरा रेलवे स्टेशन हैं। शाहजहां पुर (केरूगंज) से रुहेलखंड कमायूं रेलवे नाम की दूसरी लाइन पीलीभीत को गई है। रौसा से एक लाइन सीतापुर को गई है। रौसा में रेलवे का कारबार बहुत बढ़ रहा है। लखनऊ से सीतापुर होकर बरेली जाने वाली छोटी लाइन इस जिले के उत्तरी पूर्वी सिरे को पार करती है।

जिले में कई पक्की सड़कें हैं। एक पक्की सड़क बरेली से आती है। वह कटरा और जलालाबाद होती हुई फतेहगढ़ को चली जाती है। दूसरी पक्की सड़क कटरा से शाहजहांपुर को आती है यहां से वह फिर सीतापुर को चली जाती है। एक पक्की सड़क शाहजहां पुर से सीधी जलालाबाद को और दूसरी पुवायें को गई है। इन सब सड़कों पर अब मोटर गाड़ियां भी चलने लगी हैं। ऊंट गाड़ी इक्का और बैलगाड़ी बहुत पहले ही से चलती थी।

कच्ची सड़कों की लम्बाई कई सौ मील है। इन पर बरसात में बड़ी कीचड़ रहती है और मोटर इक्के आसानी से नहीं चल सकते। बेचारी बैलगाड़ियां फंसती फंसाती किसी तरह चलती ही रहती हैं। सड़कों के रास्ते में पड़ने वाली सभी नदियों पर पुल या घाट हैं। पहले गंगा, रामगंगा और गर्रा में नावें बहुत सा सामान इधर उधर ढोती थीं। अब यह सामान रेल से इधर उधर भेजा जाता है।

अधिकतर मजदूरी करते हैं कुछ किसान हैं। बहुत थोड़े लोग चमड़े का काम करते हैं।

दूसरा नम्बर किसान का है वे बड़ी मेहनत से खेती करते हैं।

तीसरा नम्बर अहीरों का है। वे गाय बैल पालते हैं और खेती करते हैं।

इनके बाद राजपूतों की संख्या लगभग ७० हजार है। वे जमींदार और खेती का काम करते हैं।

ब्राह्मणों की संख्या लगभग ६२ हजार है। इनमें कुछ जमींदार और कुछ खेतिहर हैं। कुछ पुरोहित हैं। काछी मुराव और कुरमी बड़ी मेहनत से खेती करते हैं।

जिले में लगभग २५ हजार तेली हैं। वे तेल पेरने का काम करते हैं।

वैश्य (बनियों) की तादाद २३००० है। वे लेन देन और सौदागरी का का काम करते हैं। कोरी लोग कपड़ा बुनते हैं। और गड़िये भेड़ पालते हैं। इनकी संख्या लगभग २० हजार है। लोहार बढ़ई कायस्थ आदि दूसरी जातियों की संख्या २० हजार से भी कम है।

मुसलमानों में ९८ फीसदी सुन्नी और २ फीसदी शिया हैं। मुसलमान लोग अधिकतर बड़े बड़े शहरों में रहते हैं। शाहजहांपुर तहसील में वे सब से अधिक और जलालाबाद तहसील में वे सब से कम हैं। इस जिले में हिन्दी बोली जाती है। शहरों के मुसलमान लोग उर्दू या हिन्दुस्तानी बोलते हैं।

जिले में हर १०० आदमियों में सिर्फ ४ ऐसे हैं जो अपना नाम लिख पढ़ सकते हैं। ९६ आदमी दस्तखत करने के बदले अंगूठे की निशानी लगाते हैं।

इतिहास —

माटी (परगना खुटार) निगोही, गोला रायपुर और दूसरे स्थानों में पुराने खंडहर मिलते हैं। अहिछत्र राजाओं के बहुत से सिक्के माटी में मिले हैं। यहां किसी समय में उनकी प्रसिद्ध राजधानी थी। कहा जाता है कि राजा वेनु का राज्य भी यहां तक फैला था। राजपूतों के पहिले अहीर, गूजर आदि जातियों का यहां राज्य था। ११९६ ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बदायूं को जीत लिया था। उन दिनों हमारे जिले के बड़े भाग में बन था। इसलिये दिल्ली के सुल्तानों ने उत्तर-पूर्व के कटहर (वन प्रदेश) में फौजों को भेजना ठीक न समझा बदायूं से हरदोई को जाने वाले रास्ते को सुरक्षित रखने के लिये उन्होंने जलालाबाद, कांट और गोला में फौजी पड़ाव बना लिये थे। पूरे जिले को दिल्ली राज्य में मिलाना सहज न था। पहिले कटिहरिया तथा दूसरे राजपूतों से लड़ना पड़ता। इन्हें जीतने पर भी लोगों से लगान वसूल करना मुश्किल था। जब दबाये जाते तब यहां के लोग अपनी फसलों को जलाकर जंगल में घुस जाते थे। अवसर पाने पर राजपूत लोग सूबेदारों पर हमला भी करते थे। यह बात उन्हें बहुत ही खटकने लगी। १३७९ से १३८५ तक बार बार यह प्रदेश वीरान कर डाला गया। पर वीर राजा खड्ग सिंह ने रामगंगा और सारदा के बीच का सारा प्रदेश जीत लिया। इनके सुपुत्र हरीसिंह जी को बदायूं के सूबेदार बड़े आदर से देखते थे। हुमायूं के समय तक यहां के राजपूत स्वाधीन रहे। पर शेरशाह सूरी के एक खूंखार सरदार ने इन्हें जीत कर अपना मित्र बनाया। शेरशाह के मरने पर राजपूतों से एकबार फिर स्वतन्त्र हो गये। १५५५ में अकबर के [illegible]नापति खान जमान ने इन्हें नष्ट कर दिया। शासनकाल कांट-गोला अलग जिला हो गया। हुसेन खां तुर्करिया ने हिन्दुओं के मन्दिरों को गिरवा दिया और उन्हें कन्धे पर दुमड़ा पहिनने के लिये बाध्य किया पर अकबर ने उसे हटा दिया। इस जिले से अकबर को लगभग ९०,००० रुपये की आमदनी होती थी।

१६४७ ई० में बाछिल और गौड़ ठाकुरों ने कांट में शाही खजाना लूट लिया। इनको दंड देने के लिये दिलेर खां भारी फौज ले आया। चित्तर में १३,००० राजपूत खेत रहे। इस विजय के बदले में दिलेर खां को १४ गांव इनाम में मिले। उसे एक किला बनाने की भी आज्ञा मिल गई। गर्रा और खन्नौत के संगम पर नोनेर खेड़ा में पहिले भी गूजरों का एक किला था। उसी स्थान पर उसने किला बनाया और दिलेरगंज और बहादुरगंज मुहल्लों में पठानों को

बसाया। बहुत से हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान भी बनाया। इस प्रकार शाहजहांपुर शहर बना। औरङ्गजेब के समय तक शाहजहांपुर के पठान बरेली के गवर्नर के अधिकार में रहे। औरङ्गजेब के मरने पर यहां गड़बड़ी फैल गई। १७४० में एक रुहेला यहां का सरदार बन गया। पर पुवायां गौड़ राजा के हाथ आया। बहुत से हिन्दू जमीदार भी प्रायः स्वतन्त्र हो गये। दक्षिण पूर्व में अवध के नवाबी वजीर का राज्य था। कुछ दूर गर्रा को छोड़कर दोनों रियासतों के बीच स्वाभाविक सीमा न थी। रुहेलों का इधर कोई किला भी न था। शाहजहांपुर के पठान भी बरेली के रुहेलों से खुश न थे। मरहठों के भी हमले हो रहे थे। १७७२ ई० में वारेन हेस्टिंग्स ने कर्नल चैम्पियन की मातहती में एक अङ्गरेजी सेना शुजाउद्दौला की सहायता के लिये भेज दी। दोनों फौजों ने १७ अप्रैल सन् १७५४ को शाहाबाद से रुहेलों पर चढ़ाई करने के लिये कूच किया। कर्जा अदा करने और मरहठों को रोकने की शर्ते एक चिट्ठी में रुहेला सरदार के पास भेज दी गई। जवाब से सन्तुष्ट न होने पर वजीर की फौज ने बिना लड़े ही शाहजहांपुर पर कब्जा कर लिया। बहुत से जमीदार और पठान भी फौज में आ मिले। इस समय रुहेला सरदार बड़े ही अनुकूल स्थान पर डटा था। पहिले अंग्रेजी फौज ने बदायूं या पीलीभीत की ओर जाने का बहाना किया। फिर अचानक जब बरेली की सड़क पर अंग्रेजी फौज आ डटी तो रुहेलों की फौज में गड़बड़ी फैल गई। कटरा के पास लड़ाई हुई। रुहेले वीरता से लड़े पर अंग्रेजी तोपों का सामना न कर सके। रुहेला सरदार हाफिज अहमद खां २००० सिपाहियों के साथ खेत रहे। चैम्पियन के केवल १३२४ सिपाही मरे वजीर के २५ सिपाही मारे गये। कटरा से विजयी सेना पीलीभीत की ओर बढ़ी और वहां से फिर बरेली पहुँची। २७ वर्ष यहां अवध का ताज रहा। १० नवम्बर १८०१ में यह जिला अंग्रेजी कम्पिनी को मिला। १८५७ में गदर यहां भी फैला। पहिले गिरजाघर पर हमला हुआ। जेल और शहर बागियों के हाथ आया। गोरे लोग पुवायां के राजा के यहां गये। राजा अंग्रेजों का मित्र था। अन्त में बागियों को देखकर वे लोग मुहम्मदी चले गये।

बिचपुरिया (जलालाबाद) और कटरा में घमासान लड़ाइयां हुई। फतेहगढ़ और लखनऊ पर अंग्रेजों का फिर से कब्जा हो गया। धीरे धीरे सभी जगह बागी दबा दिये गये। गदर के बाद नाना साहब नैपाल की ओर भाग गये। जिले में शान्ति हो गई। प्लेग और अकाल को छोड़कर तब से अब तक कोई विशेष घटना न हुई।

शासन प्रबन्ध

जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर या मजिस्ट्रेट कहलाता है। उसका दफ्तर शाहजहांपुर शहर में है। वहीं वह कचहरी करता है। कभी कभी वह जिले का दौरा लगाता है। उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जर्मन का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं। ये लोग अपने थाने की देख भाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुकदमों का फैसला करने में जज, ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टरों से मदद मिलती है। माल के मुकदमे तिलहर में तैय किये जाते हैं। माल गुजारी वसूल करने के लिये पटवारी कानूनगो नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और तालीम का म्यूनिसिपैलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक बोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

शाहजहांपुर गर्रा से बायें और खन्नौत के दाहिने किनारे पर ऊँची जमीन पर बसा है। शहर से कुछ ही दूर पर ये दोनों नदियां एक दूसरे से मिल जाती

हैं। यह रेलवे का एक जंक्शन है। अवध रुहेलखंड या ईस्ट इंडियन रेलवे की बड़ी लाइन यहीं होकर लखनऊ से बरेली को गई है। इस बड़ी लाइन में एक छोटी लाइन मिल जाती है। यह छोटी लाइन गर्रा के ऊंचे किनारे पर बसे हुए बेरूगंज से आती है और पीलीभीत को चली जाती है। जहां बेरूगंज का आजकल स्टेशन है वहां पहले एक पुराना किला था। दूसरी छोटी लाइन खन्नौत के दूसरे किनारे पर बसे हुए रौसा सीतापुर को जाती है। शहर से पक्की सड़क भी पूर्व की ओर सीतापुर को पश्चिम की ओर बरेली को उत्तर की ओर पुवायें को दक्षिण की ओर जलालाबाद को गई है। कच्ची सड़कें यहां से हरदोई मुहम्मदी और पीलीभीत को जाती हैं।

कोतवाली के अहाते में बहादुर खां की मस्जिद शहर भर में सब से पुरानी इमारत है। इस १६४७ ई० का एक फारसी लेख है। शहर के दक्षिण सिरे पर गूजरों का किला बहुत पुराना था। रुहेलों ने इसकी मरम्मत कराई थी। लेकिन गदर के बाद यह किला तोड़ डाला गया। गदर के दिनों में यहां बहुत मार काट हुई। शहर में बेंत के बान से चटाई बुनने और रेशमी कपड़ा तैयार करने का काम होता है। खन्नौत का साफ बढ़िया रेशमी कपड़ा धोने के लिये बड़ा अच्छा रहता है। कुछ शक्कर का भी व्यापार होता है। बहादुर गंज का बाजार बहुत बड़ा है। शहर में तीन अंग्रेजी हाई स्कूल और दो वर्नाक्यूलर जुनियर हाई स्कूल हैं। यहीं जिले की बड़ी कचहरी है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्यूनिसिपल बोर्ड का दफ्तर है। शहर से ही मिली हुई छावनी है। यहां फौज रहती है। फौज के कपड़े सीने का काम यहां बहुत होता है।

शाहजहांपुर

बन्थरा गांव उस सड़क पर पड़ता है जो शाहजहांपुर से बरेली को जाती है। सड़क से उत्तर की ओर रेलवे लाइन है। यहां डाकघर और स्कूल भी है। यह गांव शाहजहांपुर से लगभग ६ मीत दूर है।

कहेलिया गांव शाहजहांपुर से ११ मील की दूरी पर रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन के पास ही हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

कांट एक पुराना कस्बा है। शाहजहांपुर से जलालाबाद आने वाली सड़क के अधबिच है। पहले यह शाहजहांपुर से अधिक मशहूर था। यहां की एक पुरानी टूटी फूटी मस्जिद में सवा तीन सौ वर्ष का पुराना लेख है। यहां एक जूनीयर हाई स्कूल, थाना और डाकखाना है।

मदनापुर शाहजहांपुर से १७ मील की दूरी पर बसा है। यहां होकर एक पक्की सड़क गई है जो कटरा से जलालाबाद को जाती है।

रौसा या रौसर एक छोटा गांव है। यहां खन्नौत और गर्रा का संगम है। शक्कर के कारखाने ने इसे बहुत मशहूर कर दिया है। आजकल यहां रेलवे का कारबार भी बढ़ रहा है। सीतापुर को जानेवाली रेलवे लाइन यहीं पर असली और बड़ी लाइन से अलग होती है। इसके पड़ोस में ईख के माडल फार्म हैं। इनमें गन्ने को सुधारने के लिये बहुत छानबीन की जाती है।

सेहरामऊ (दक्षिणी या जनूबी) यह गांव कहेलिया स्टेशन से दो मील और शाहजहांपुर से १० मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना, बाड़ा और स्कूल है। आषाढ़ के महीने में यहां देवी का मेला होता है। इस मेले में लगभग दस बारह हजार आदमी इकट्ठा हो जाते हैं।

पुवायां कस्बा शाहजहांपुर से १७ मील दूर है। यहां तक एक पक्की सड़क आती है। यह कस्बा अब से लगभग दो सौ वर्ष पहले बसाया गया था। यहीं राजा साहब का महल है। गदर में यहां के राजा साहब ने अंग्रेजों की बड़ी मदद की। आज कल यहां थाना, तहसील, जूनीयर हाई स्कूल और डाकखाना है।

यहां खांड और पीतल के बरतनों का व्यापार होता है। पीतल के बर्तन यहां बनते हैं और अधिकतर खीरी में बिकते हैं। हफ्ते में यहां दो दिन बाजार लगता है। दशहरा में छड़ियों का मेला भी होता है।

सेहरा मऊ (उत्तरी या शुमाली) उल नदी के पास पुवायें से २४ मील दूर है। यहां से जंगल दूर नहीं है। रेलवे स्टेशन दो मील दूर जोगराजपुर में है। यहां थाना डाकखाना और बाड़ा है। हफ्ते में दो बार छोटा बाजार भी लगता है।

पुवायां

बड़ा गांव सचमुच एक बड़ा गांव है। यह शाहजहांपुर से १४ मील दूर है और उस पक्की सड़क पर पड़ता है जो शहर से पुवायें को जाती है। पहले यहां खांड की बड़ी मंडी थी।

गोला गांव आजकल बहुत छोटा रह गया है। पर पुराने जमाने में यह बहुत मशहूर था। यह गांव शाहजहांपुर से १० मील की दूरी पर खन्नौत के दाहिने किनारे पर बसा है। पहले यहां कटिहरिया राजपूतों का बड़ा जोर था। गोला के दक्षिण में बहुत बड़ा और ऊँचा खेड़ा है। यहां कभी कभी पुराने सिक्के निकल आते हैं। हरी और नीली गुट्टी (मिट्टी के बरतनों और ईंटों के टुकड़े) बहुत बिखरे हुए हैं।

जोगराजपुर गांव है। लखनऊ से सीतापुर होकर बरेली जाने वाली छोटी लाइन पास ही है। स्टेशन को सेहरामऊ शुमाली (उत्तरी) के नाम से पुकारते हैं। अड़ोस पड़ोस के बन की लकड़ी यहीं से बाहर भेजी जाती है।

खुटार कटिहरिया राजपूतों की बस्ती है। यहां थाना, डांकखाना, शफाखाना और स्कूल है।

माटी—जिले के उत्तरी सिरे पर शहर से ४२ मील दूर है। यह गांव बहुत ही पुराना है। यहां पर कभी कभी चांदी और तांबे के बहुत पुराने सिक्के मिलते हैं। पुराने खंडहर दो मील लम्बे और एक मील चौड़े हैं। उत्तर पश्चिम की ओर एक बहुत पुराना ताल और मन्दिर है।

नाहिल—इस जिले के कटिहरिया राजपूतों का सदर मुकाम है। इसके उत्तर पूर्व की ओर एक बड़ी झील है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

तिलहर—अब से लगभग चार सौ वर्ष पहले तिलोक चन्द नामी एक बाछिल राजपूत ने इस कस्बे को बसाया था। इसी से इसका नाम तिलहर पड़ गया। शाहजहांपुर से बरेली जाने वाले शाही रास्ते की हिफाजत के लिये यहां एक किला भी बनाया गया था। पीछे से वह वीरान हो गया। यहां रेलवे का स्टेशन बन जाने से इस कस्बे का व्यापार कुछ बढ़ गया। यहां खांड का कारबार होता है। यहां अनाज की भी बड़ी मंडी है यहां चाकू सरौते भी अच्छे बनते हैं। यहीं तहसील, थाना, डाकखाना और दो जूनियर हाई स्कूल हैं।

निगोही एक बहुत पुराना गांव है। इसके पास ही कई पुराने खेड़े हैं। यहीं कई तरह के पुराने कुएं भी हैं।

तिलहर

चमेड़ा गांव एक बड़े पुराने खेड़े के पास है। इसीलिये इसे खेड़ा-चमेड़ा भी कहते हैं। यह गांव तिलहर से २ मील दूर है। यहां वालों ने गदर के दिनों में कुछ अङ्गरेजों को अपने घरों में छिपाकर उनकी जान बचाई थी।

गढ़िया रंगी रामगंगा के बायें किनारे पर कुछ ऊंची जमीन पर बसा है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है। जलालपुर गांव को जलाल खां नाम के एक रुहेले ने बसाया था। यहां एक बाजार लगता है जिसमें जानवरों की बिक्री होती है।

कटरा या मीरनपुर कटरा एक बड़ा कस्बा है। बरेली से फतेगढ़ जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर गुजरती है। यहां से दूसरी पक्की सड़क शाहजहांपुर होती हुई सीतापुर को गई है। जहां दोनों सड़कें मिलती हैं उसके पास ही फौजी पड़ाव है। रेलवे स्टेशन यहां से सिर्फ आध मील दूर है।

पुराना गांव मीरनपुर था। उसी के खंडहरों के ऊपर कटरा बसाया गया। १७७४ ई० में यहां एक बड़ी लड़ाई हुई थी। अवध का नवाब एक अङ्गरेजी फौज किराये पर लेकर यहां के रुहेले सरदार पर चढ़ आया। रुहेला सरदार मारा गया। उसकी फौज तितर बितर होकर फतेहगंज की ओर भाग गई। तब से रुहेलों के राज का अन्त हो गया।

यहां गल्ले का काफी व्यापार होता है। हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

खमरिया एक बड़ा गांव है। तिलहर से दक्षिण-पश्चिम की ओर १४ मील दूर है। यहां एक सुन्दर मन्दिर है। हफ्ते में दो दिन बाजार लगता है।

खुदागंज गर्रा के दाहिने किनारे पर तिलहर से १२ मील की दूरी पर बसा है। कटरा से बीसलपुर जाने वाली सड़क यहां होकर गुजरती है। रेल के

निकल जाने से यहां का व्यापार कुछ कम होगया फिर भी यहां का बाजार काफी अच्छा है। यहां एक जूनियर हाई स्कूल थाना और डाकखाना है।

जलालाबाद

जलालाबाद काफी बड़ा कस्बा है। जलालुद्दीन खिलजी के बाद इसका नाम जलालाबाद पड़ गया। शाहजहांपुर से यह कस्बा लगभग २० मील दूर है। यहां दो पक्की सड़कें मिलती हैं। एक कटरा से आती है। दूसरी शाहजहांपुर से आती है। दोनों सड़कें मिलकर एक हो गई हैं। यह सड़क फर्रुखाबाद को चली गई है। पहले यह सड़क रामगंगा के बाये किनारे से कुछ ही दूर पर चलती है। फिर वह अल्लाहगंज के पास रामगंगा को पार करती है। जलालाबाद से एक कच्ची सड़क कुन्डरिया को जाती है। यह सड़क खँडहर के पास बहगुल को और परौर के पास रामगंगा को पार करती है। जलालाबाद से कुछ ही दूर उत्तर की ओर एक नहर की शाखा बहती है।

कहते हैं यहां का पुराना किला वाछिल ठाकुरों ने बनवाया था फिर यह किला चन्देले ठाकुरों ने ले लिया। अन्त में यह फिर मुसलमानों के हाथ आया। पहले किले की दीवारें २५ फुट ऊँची थीं। अब से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले हाफिज रहमत खां ने इसकी मरम्मत करवाई थी। पर आज कल यह बड़ी टूटी फुटी हालत में है। इसके ऊपर तहसील और जू० हा० स्कूल का इमारत है। इस समय भी कस्बे का यही सबसे ऊंचा भाग है। कई सड़कों के मिलने से पहले जलालाबाद का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा था। रेल के खुल जाने से यहां का व्यापार बहुत घट गया। गदर के दिनों में इधर के लोग अङ्गरेजों से लड़े थे। गदर के दब जाने पर लोगों को दंड मिला। इससे भी यह कस्बा काफी घट गया। फिर भी यहां हर सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां थाना डाकखाना और शफाखाना भी है।

कलान—यह गांव जलालाबाद से १४ मील और शाहजहांपुर से २४ मील दूर है। जरीनपुर और परौर से आने वाली कच्ची सड़कें यहीं मिली हैं। पूर्व की ओर सोत नदी बहती है। गंगा जी का घाट बदरिनी घाट यहां से कुछ ही मील दूर है। कलान में एक स्कूल, थाना और डाकखाना है।

खजुरी—अरिल नदी के पास एक बड़ा गांव है। यहां हफ्ते में दो दिन बाजार लगता है। यहां का दशहरा अड़ोस पड़ोस में काफी मशहूर है।

खंडहर बहगुल के बायें किनारे पर एक बड़ा गांव है। कुछ ही दूर पर बहगुल और रामगंगा का संगम है। गदर के दिनों में यहां के चन्देले ठाकुर जलालाबाद के पठानों से बहादुरी से लड़े थे। पर पठानो की मदद के लिये बरेली से एक फौज आगई। दोनों ने मिलकर खंडहर को उजाड़ दिया। पीछे से दुबारा बसने पर भी इसका नाम खंडहर पड़ गया। यहां एक डाकखाना और स्कूल है। यहां के रामलीला (दशहरा) में लगभग सात हजार आदमियों की भीड़ इक्ट्ठी हो जाती है। कुडरिया रामगंगा के दाहिने किनारे पर जलालाबाद से १४ मील की दूरी पर बसा है। और स्कूल है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है। दशहरा के अवसर पर यहां देवी जी का मेला होता है।

मिर्जापुर एक बड़ा गांव है। यहां डाकखाना और एक जूनियर हाई स्कूल है।

परौर रामगंगा के दाहिने किनारे पर एक बड़ा गांव है। यहां राजा साहब का पक्का मकान बना है। हफ्ते में दो बार बाजार भी लगता है।

पिरथीपुर ढाई सोत नदी के किनारे बसा है। जलालाबाद से यहां तक एक अच्छी कच्ची सड़क आती है। यहां से आगे गंगा जी के किनारे तक सड़क अच्छी नहीं है। भरतपुर के पास गंगा के किनारे कातिकी और दशहरा का बड़ा मेला लगता है। दूर दूर के लोग लगभग ५०००० आदमी स्नान करने आते हैं। यहीं बैलों की भी बिक्री होती है।

जरीनपुर उस कच्ची सड़क पर बसा है जो जलालाद से ढाई घाट को जाती है। यहां हफ्ते में दो बार बाजार लगता है।

कोल्हापुर रामगंगा के दाहिने किनारे पर शाहजहांपुर से ३० मील दूर है। यहां हर इतवार और बुधवार को बाजार लगता है। चैत की पूर्णमाशी को यहां महादेव का भारी मेला होता है।

हमीरपुर

स्थित, सीमा और विस्तार

हमीरपुर जिला यमुना नदी के दक्षिण में ब्रिटिश बुन्देलखंड को घेरे हुए है। इसकी औसत चौड़ाई ५० मील और लम्बाई ५६ मील है। क्षेत्रफल २३०० वर्ग मील है।

हमीरपुर जिले के पश्चिम और उत्तर पश्चिम में झांसी और जालौन के जिले हैं। धसान नदी जिले को इन जिलों और बाउनी रियासत से अलग करती है। उत्तर की ओर यमुना नदी इस जिले को कानपुर और फतेहपुर जिलों से अलग करती है। पूर्व की ओर केन नदी इस जिले और बांदा जिले के बीच में बहती है। दक्षिण की ओर चरखारी छतरपुर और दूसरी रियासतें हमीरपुर जिले से मिली हुई हैं।

बनावट

अगर धसान नदी से बेतवा नदी तक एक ऐसी सीधी रेखा खींचे जो राठ कस्बे में होकर गुजरे तो हमीरपुर जिला दो भिन्न भागों में बट जायगा। इस रेखा के उत्तर में बारीक मिट्टी का समतल मैदान मिलेगा। रेखा के दक्षिण में अधिकतर पथरीली चट्टानें हैं कहीं कहीं बढ़ते बढ़ते पहाड़ियों का झुंड मिलता है। लेकिन अड़ोस पड़ोस की जमीन से उनकी उंचाई तीन चार सौ फुट से अधिक नहीं है। पत्थरों का रंग भी एक सा नहीं है। कहीं कहीं उनमें नीली, सफेद या गुलाबी रंग की धरियां हैं। कभी पहाड़ियां जमीन के कुछ नीचे छिप जाती हैं। कभी वे ऊपर दिखाई देने लगती हैं। पहाड़ियों की सब से अधिक प्रसिद्ध श्रेणी वह है जो नौगांव से महोवा को गई है। दूसरी श्रेणी अजनर से कुल पहाड़ को जाती है। इनमें तेलिया या हरा पत्थर बहुत मिलता है।

हमीरपुर जिले में कई तरह की मिट्टी मिलती है। माड़ और काबर मिट्टी का रंग काला होता है। यह काली चट्टानों के फिसलने से बनी है। वह अपने में नमी बहुत भर लेती है। लेकिन सूखने पर उसमें बड़ी बड़ी दरारें पड़ जाती हैं। फिर वह इतनी कड़ी हो जाती है कि उसमें हल नहीं चल सकता है।

पड़ुवा मिट्टी हलके रंग की होती है। वह बालू और चिकनी मिट्टी के मिलने से बनती है।

माड़ और काबर के पास मोटी जमीन मिलती है। पड़ुवा के पड़ोस में जमीन पतली होती है।

जो जमीन नदी के पास होती है और नम होती है उसे कछार या तरी कहते हैं।

जिले भर में लगभग २५ फीसदी माड़। २४ फीसदी काबर ३० फी सदी पड़ुआ और २१ फीसदी राकड़ मिट्टी है।

नदियां

हमीरपुर जिले में यमुना, बेतवा, धसान और केन बड़ी नदियां हैं। इनके सिवा और बहुत सी छोटी छोटी पहाड़ी नदियां हैं। इनमें कभी बिलकुल पानी नहीं रहता है। कभी ये उमड़ कर किनारों तक भर जाती हैं। पहाड़ी भाग में ये बहुत तेज बहती हैं। इस ओर इनके, सपाट किनारे कांटेदार झाड़ियों से ढके रहते हैं। लेकिन वे बहुत ऊंचे नहीं होते हैं। आगे बढ़कर वे अपनी तली को काटकाट कर बहुत गहरा बना देती हैं। अड़ोस पड़ोस की जमीन इनकी तली से बहुत ऊँची होती है। इनका रास्ता बहुत टेढ़ा होता है। अन्त में ये अपना पानी किसी न किसी बड़ी नदी में गिरा देती हैं। आगे इस जिले की बड़ी नदियों का कुछ और वर्णन है।

यमुना नदी मिस्रीपुर गांव के पास पहले पहल अपने जिले को छूती है। यहां पर इसने अचानक मुड़कर एक फन्दा सा बना लिया है। इसी मोड़ में में बाउनी रियासत का एक गांव है। यहा से यह ठीक पूर्व की ओर बहकर जमरेही तीर पहुँचती है। आगे वह अचानक दक्षिण की ओर मुड़ती है और सिकरीही गांव में पहुँचती है। इसके आगे बहते बहते वह हमीरपुर को छूती है। हमीरपुर ऊँची जगह पर बसा है। इसके एक ओर यमुना और दूसरी ओर बेतवा नदी बहती है। यहां से थोड़ी दूर आगे बेतवा नदी

यमुना में मिल जाती है। संगम से आगे यमुना नदी पूर्व की ओर बहती है। जिले में यमुना नदी की पूरी लम्बाई सिर्फ ३५ मील है। इसका दक्षिण किनारा यहां सब कहीं ऊँचा है। उत्तरी किनारा नीचा है।

जमरेही तीर और हमीरपुर के पास अच्छे खेत हैं। और जगह किनारों पर अक्सर गहरे खड्ड मिलते हैं। यमुना में छोटी छोटी नावें चला करती हैं कहीं कहीं कंकड़ों के ढेर मिलते हैं। कहीं किनारों पर दलदल हो जाते हैं। यहां नावें नहीं चल सकतीं। मिस्रीपुर और अमरोही तीर के बीच में पानी के इधर उधर दूर तक बालू है। पर बाढ़ में यमुना की चौड़ाई एक मील से ऊपर हो जाती है। उन दिनों बालू पानी के नीचे डूब जाती है। आगे नदी का पानी दक्षिणी किनारे से लगा हुआ बहता है। इससे इस तरफ बालू या कीचड़ नहीं पड़ने पाती है। हमारे जिले में यमुना के ऊपर कहीं भी पुल नहीं बना है। अगर हम दूसरे किनारे पर जाना चाहें तो नाव से ही नदी को पार कर सकते हैं।

जहां बेतवा नदी जिले को छूती है वहीं धसान नदी इसमें आकर मिली है। इस संगम से आगे बहुत दूर तक बेतवा नदी इस जिले की सीमा बनाती है। आखिरी भाग में वह हमीरपुर जिले की नदी हो जाती है। वह इस जिले में बहती है और हमीरपुर से छः मील की दूरी पर यमुना में मिल जाती है। इसका बहाव पूर्व की ओर है। लेकिन इसमें थोड़ी दूर पर बहुत मोड़ हैं। यदि दो आदमी धसान-बेतवा के संगम से यमुना-बेतवा के संगम तक दौड़ लगावें लेकिन एक नदी के किनारे किनारे दौड़े और दूसरा नाक की सीध में दौड़े तो इस दौड़ में लगातार किनारे किनारे दौड़ने वाले आदमी को दुगुना फासला तैय करना पड़ेगा।

बेतवा नदी के किनारे एक दम सपाट हैं। नदी की धारा और ऊंचे किनारों के बीच में खेत नहीं मिलते हैं। ऊपरी भाग में इसकी तली में पत्थर और चट्टानें मिलती हैं। नीचे की ओर तली में बालू है। इसके किनारे ऊंचे नीचे खड्डों और गारों से बहुत कटे फटे हैं। बरसात के दिनों में नदी बड़ी गहरी हो जाती है। लेकिन बाढ़ घट जाने पर इसमें इतना कम पानी रहता है कि इसको पार करने के लिये नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। इस जिले में बेतवा के ऊपर एक भी पुल नहीं बना है। सिर्फ हमीरपुर और चंदौत में नाव का घाट है। गहरे पानीमें नाव चलती है। पानी कम होने पर मुसाफिर लोग उतर पड़ते हैं और पांव पांव सूखे किनारे पर आ जाते हैं।

धसान नदी एक दो गांवों को अलग छूने के बाद लहचूरा घाट के पास इस जिले में घुसती है। लगभग ३३ मील तक यह नदी हमीरपुर जिले और झांसी जिले के बीच में सीमा बनाती है। चंदवारी गांव के पास धसान और बेतवा का संगम है। लहचूरा के आगे कई मील तक इस की तली पथरीली है। आगे रेतीली हो जाती है। बेतवा की तरह धसान के किनारे भी खड्डों से कटे फटे हैं। यह नदी बड़ी उथली है। सिर्फ एक जगह झांसी से मानिकपुर जाने वाली रेल इस नदी को पुल के ऊपर से पार करती है। वैसे लोग अक्सर इसको पैदल पार कर लेते हैं।

बेतवा और धसान में कई छोटी छोटी नदियां आकर मिलती हैं।

केन नदी पूर्व की ओर इस जिले को बांदा जिले से अलग करती है। इसके किनारे बहुत कटे फटे नहीं हैं। लेकिन इस जिले का बहुत सा पानी चन्द्रावल और दूसरी नदियों के जरिये से वह आता है। केन नदी राजापूर के पास अपना पानी यमुना में गिराती है।

हमीरपुर जिले में मशहूर झीलें तो नहीं हैं। न जिले में पानी ही अधिक बरसता है और न जमीन ही बहुत नीची है जिसमें दूर दूर का पानी बह कर इकट्ठा हो जावे। लेकिन हमारे जिले में बड़े बड़े पक्के ताल कई जगह हैं। पुराने जमाने में चन्देले राजा अपनी प्रजा को बहुत चाहते थे। उन्होंने जगह जगह पर लोगों के लिये बहुत से पक्के ताल बनवा दिये। महोबा का मदन सागर और जैतपुर का बेला ताल बहुत मशहूर है।

खनिज

हमीरपुर जिले में मकान बनाने के लिये पत्थर कई जगह से निकलता है। सड़क कूटने और चूना तैयार करने के लिये कंकड़ भी बहुत मिलता है।

पैदावार

इस जिले की सवा दो लाख एकड़ (लगभग १६ फीसदी) जमीन वीरान है। इसमें किसी तरह की खेती नहीं होती है। जिले के उत्तरी भाग में पेड़ों की कमी है। काली जमीन में बबूल अपने आप उगता है। नदियों के पास कई तरह के छोटे छोटे झाड़ उगते हैं। दक्षिण की ओर तेंदू, महुआ सेमल, ढाक, दूधी और दूसरे पेड़ों के जङ्गल कई पहाड़ी भागों में मिलते हैं। महुआ, आम, जामुन, शीशम, नीम, गूलर, बरगद और पीपल के पेड़ गांवों के पास बहुत लगाए जाते हैं। तुम्हारे पड़ोस में जो पेड़ मिलते हैं उनके नाम बतलाओ।

कांस से जिले के लोगों को बड़ी कठिनाई होती है। अधिक वर्षा के दिनों किसान मार की जमीन में कोई फसल नहीं बो पाता है। तब कांस उग आते हैं। उनके झुंड बहुत बड़े तो नहीं होते हैं, लेकिन उनकी जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि ये उखाड़ी नहीं जा सकतीं। कांस के बीज सफेद और हलके धुआ में छिपे रहते हैं। हवा उन्हें इधर उधर बखेर देती है। इस लिए पानी पाने पर दूसरे वर्ष कांस का जङ्गल और भी अधिक बढ़ जाता है। जब तक वह दस बीस वर्ष में अपने आप सूख न जाये तब तक वह बराबर बना रहता है।

हमीरपुर जिले का दक्षिणी भाग बहुत ऊँचा नीचा है। जगह जगह पर छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। पहाड़ियों की तलहटी में ही गांव बसे हैं। उत्तरी भाग में यमुना के किनारे तक कुछ कुछ काली जमीन का मैदान है। इस ओर पहाड़ियों का नाम नहीं है। मैदान और पठार को अलग करने वाली रेखा राठ नगर में होती हुई पूर्व से पश्चिम को चली गई है

हमीरपुर एक कृषि प्रधान जिला है। पर मौदहा में सोने चांदी के जेवर अच्छे बनते हैं। कुछ जेवरों में मछली बनी रहती है। आरसी भी बहुत प्रसिद्ध है।

महोवा के दक्षिण श्री नगर में पीतल की मूर्तियां और खिलौने अच्छे बनते हैं और मथुरा इलाहाबाद और फैजाबाद को भेज दिये जाते हैं।

मकान बनाने का पत्थर बहुत है पर निकाला नहीं जाता है। पहाड़ी, गढ़ी और गरोन में सड़क बनाने के लिए गिट्टी निकाली जाती है।

कुल पहाड़ तहसील में गौढ़ारी की खान से सुन्दर पत्थर निकलता है। इन पत्थरों से खिलौने और बरतन बनते हैं। हर साल लगभग २५,००० रुपये के बर्तन और खिलौने हरद्वार, इलाहाबाद, फैजाबाद, बनारस, कलकत्ता और जगन्नाथपुरी को भेजे जाते हैं।

चारागाह अधिक होने से इस जिले में गाय, बैल, भैंस और बकरी अधिक हैं। मरे हुए जानवरों से ३,००० मन खाल मिलती है। कत्ल किये हुये जानवरों से ६,००० मन खाल निकाली जाती है। इसके अतिरिक्त ३,००० मन खाल भेड़ बकरियों से मिलती है। घोंट फल और धवई पत्तियों से रंगिया लोग चमड़े को कमाते हैं। चमार लोग चरस पखाल और जूते बनाने में लगभग ५,००० मन चमड़ा खर्च करते हैं।

महोवा पान की खेती के लिये मशहूर है। महोबा के आस पास छाये हुये खेतों की अधिकता है। पान की बेल को धूप से बचाने के लिये छा देते हैं। महोवा के पास महाराजपुर (चरखारी राज्य) में भी पान के खेत हैं। लगभग १६ लाख रुपये के पान महोवा से बनारस, लाहौर, पेशावार, नैनीताल और राजपूताना आदि स्थानों को भेजे जाते हैं।

इस जिले में तेल पेरने का काम भी बहुत होता है। यहां लगभग डेढ़ लाख मन कपास होती है। कपास को ओटने, कातने और बुनने में भी बहुत से आदमी लगे हुए हैं।

यहाँ लगभग ३०,००० भेड़ें हैं जिनसे ८०० ऊन कतरती जाती है। लगभग ७०० मन धुनी हुई ऊन भदोही, मिर्जापुर और झांसी को भेज दी जाती है बची हुई ऊन से गड़रिए लोग कम्बल बुनते हैं।

जलवायु

यहाँ गरमी के दिनों में खूब गरमी पड़ती है। हवा में आग सी निकलती है। वह बड़ी खुश्क होती है। अगर कोई भीगा कपड़ा फैला दें तो जरा देर में सूख जायगा। गरम हवायें दोपहर से रात तक चलती रहती हैं। इस बीच में रास्ता चलने वालों को बड़ी तकलीफ होती है। तेज धूप से बचने के लिये छायादार पेड़ भी बहुत मिलते हैं। दक्षिण की पहाड़ी

यमुना में मिल जाती है। संगम से आगे यमुना नदी पूर्व की ओर बहती है। जिले में यमुना नदी की पूरी लम्बाई सिर्फ ३५ मील है। इसका दक्षिणी किनारा यहां सब कहीं ऊँचा है। उत्तरी किनारा नीचा है।

जमरेही तीर और हमीरपुर के पास अच्छे खेत हैं। और जगह किनारों पर अक्सर गहरे खड्ड मिलते हैं। यमुना में छोटी छोटी नावें चला करती हैं कहीं कहीं कंकड़ों के ढेर मिलते हैं। कहीं किनारों पर दल-दल हो जाते हैं। वहां नावें नहीं चल सकतीं। मिसीपुर और अमरौही तीर के बीच में पानी के इधर उधर दूर तक बालू है। पर बाढ़ में यमुना की चौड़ाई एक मील से ऊपर हो जाती है। उन दिनों बालू पानी के नीचे डूब जाती है। आगे नदी का पानी दक्षिणी किनारे से लगा हुआ बहता है। इससे इस तरफ बालू या कीचड़ नहीं पड़ने पाती है। हमारे जिले में यमुना के ऊपर कहीं भी पुल नहीं बना है। अगर हम दूसरे किनारे पर जाना चाहें तो नाव से ही नदी को पार कर सकते हैं।

जहां बेतवा नदी जिले को छूती है वहीं धसान नदी इसमें आकर मिली है। इस संगम से आगे बहुत दूर तक बेतवा नदी इस जिले की सीमा बनाती है। आखिरी भाग में यह हमीरपुर जिले की नदी हो जाती है। यह इस जिले में बहती है और हमीरपुर से छः मील की दूरी पर यमुना में मिल जाती है। इसका बहाव पूर्व की ओर है। लेकिन इसमें थोड़ी दूर पर बहुत मोड़ हैं। यदि दो आदमी धसान-बेतवा के संगम से यमुना-बेतवा के संगम तक दौड़ लगावें लेकिन एक नदी के किनारे किनारे दौड़े और दूसरा नाक की सीध में दौड़े तो इस दौड़ में लगातार किनारे किनारे दौड़ने वाले आदमी को दुगुना फासला तय करना पड़ेगा।

बेतवा नदी के किनारे एक दम सपाट हैं। नदी की धारा और ऊंचे किनारों के बीच में खेत नहीं मिलते हैं। ऊपरी भाग में इसकी तली में पत्थर और चट्टानें मिलती हैं। नीचे की ओर तली में बालू है। इसके किनारे ऊंचे नीचे खड्डों और गारों से बहुत कटे फटे हैं। बरसात के दिनों में नदी बड़ी गहरी हो जाती है। लेकिन बाढ़ घट जाने पर इसमें इतना कम पानी रहता है कि इसको पार करने के लिये नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। इस जिले में बेतवा के ऊपर एक भी पुल नहीं बना है। सिर्फ हमीरपुर और चंदौत में नाव का घाट है। गहरे पानीमें नाव चलती है; पानी कम होने पर मुसाफिर लोग उतर पड़ते हैं और पांव पांव सूखे किनारे पर आ जाते हैं।

धसान नदी एक दो गांवों को अलग छूने के बाद लहचूरा घाट के पास इस जिले में घुसती है। लगभग ३३ मील तक यह नदी हमीरपुर जिले और झांसी जिले के बीच में सीमा बनाती है। चंदवारी गांव के पास धसान और बेतवा का संगम है। लहचूरा के आगे कई मील तक इस की तली पथरीली है। आगे रेतीली हो जाती है। बेतवा की तरह धसान के किनारे भी खड्डों से कटे फटे हैं। यह नदी बड़ी उथली है। सिर्फ एक जगह झांसी से मानिकपुर जाने वाली रेल इस नदी को पुल के ऊपर से पार करती है। वैसे लोग अक्सर इसको पैदल पार कर लेते हैं।

बेतवा और धसान में कई छोटी छोटी नदियां आकर मिलती हैं।

केन नदी पूर्व की ओर इस जिले को बांदा जिले से अलग करती है। इसके किनारे बहुत कटे फटे नहीं हैं। लेकिन इस जिले का बहुत सा पानी चन्द्रावल और दूसरी नदियों के जरिये से बह आता है। केन नदी राजापूर के पास अपना पानी यमुना में गिराती है।

हमीरपुर जिले में मशहूर झीलें तो नहीं हैं। न जिले में पानी ही अधिक बरसता है और न जमीन ही बहुत नीची है जिसमें दूर दूर का पानी बह कर इकट्ठा हो जावे। लेकिन हमारे जिले में बड़े बड़े पक्के ताल कई जगह हैं। पुराने जमाने में चन्देले राजा अपनी प्रजा को बहुत चाहते थे। उन्होंने जगह जगह पर लोगों के लिये बहुत से पक्के ताल बनवा दिये। महोबा का मदन सागर और जैतपुर का बेला ताल बहुत मशहूर है।

खनिज

हमीरपुर जिले में मकान बनाने के लिये पत्थर कई जगह से निकलता है। सड़क कूटने और चूना तैयार करने के लिये कंकड़ भी बहुत मिलता है।

पैदावार

इस जिले की सवा दो लाख एकड़ (लगभग १६ फीसदी) जमीन वीरान है। इसमें किसी तरह की खेती नहीं होती है। जिले के उत्तरी भाग में पेड़ों की कमी है। काली जमीन में बबूल अपने आप उगता है। नदियों के पास कई तरह के छोटे छोटे झाड़ उगते हैं। दक्षिण की ओर तेंदू, महुआ सेमल, ढाक, दूधी और दूसरे पेड़ों के जङ्गल कई पहाड़ी भागों में मिलते हैं। महुआ, आम, जामुन, शीशम, नीम, गूलर, बरगद और पीपल के पेड़ गांवों के पास बहुत लगाए जाते हैं। तुम्हारे पड़ोस में जो पेड़ मिलते हैं उनके नाम बतलाओ।

कांस से जिले के लोगों को बड़ी कठिनाई होती है। अधिक वर्षा के दिनों किसान मार की जमीन में कोई फसल नहीं बो पाता है। तब कांस उग आते हैं। उनके झुंड बहुत घड़े तो नहीं होते हैं, लेकिन उनकी जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि ये उखाड़ी नहीं जा सकतीं। कांस के बीज सफेद और हलके घुआ में छिपे रहते हैं। हवा उन्हें इधर उधर बखेर देती है। इस लिए पानी पाने पर दूसरे वर्ष कांस का जङ्गल और भी अधिक बढ़ जाता है। जब तक वह दस बीस वर्ष में अपने आप सूख न जावे तब तक वह बराबर बना रहता है।

हमीरपुर जिले का दक्षिणी भाग बहुत ऊँचा नीचा है। जगह जगह पर छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। पहाड़ियों की तलहटी में ही गांव बसे हैं। उत्तरी भाग में यमुना के किनारे तक कुछ कुछ काली जमीन का मैदान है। इस ओर पहाड़ियों का नाम नहीं है। मैदान और पठार को अलग करने वाली रेखा राठ नगर में होती हुई पूर्व से पश्चिम को चली गई है

हमीरपुर एक कृषि प्रधान जिला है। पर मौदहा में सोने चांदी के जेवर अच्छे बनते हैं। कुछ जेवरों में मछली बनी रहती है। आरसी भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

महोबा के दक्षिण श्री नगर में पीतल की मूर्तियां और खिलौने अच्छे बनते हैं और मथुरा इलाहाबाद और फैजाबाद को भेज दिये जाते हैं।

मकान बनाने का पत्थर बहुत है पर निकाला नहीं जाता है। पहाड़ी, गढ़ी और गरौन में सड़क बनाने के लिए गिट्टी निकाली जाती है।

कुल पहाड़ तहसील में गौढ़ारी की खान से सुन्दर पत्थर निकलता है। इन पत्थरों से खिलौने और बरतन बनते हैं। हर साल लगभग २५,००० रुपये के बर्तन और खिलौने हरद्वार, इलाहाबाद, फैजाबाद, बनारस, कलकत्ता और जगन्नाथपुरी को भेजे जाते हैं।

चारागाह अधिक होने से इस जिले में गाय, बैल, भैंस और बकरी अधिक हैं। मरे हुए जानवरों से ३,००० मन खाल मिलती है। कत्ल किये हुये जानवरों से ६,००० मन खाल निकाली जाती है। इसके अतिरिक्त २,००० मन खाल भेड़ बकरियों से मिलती है। घोंट फल और धवई पत्तियों से रंगिया लोग चमड़े को कमाते हैं। चमार लोग चरस पखाल और जूते बनाने में लगभग ५,००० मन चमड़ा खर्च करते हैं।

महोबा पान की खेती के लिये मशहूर है। महोबा के आस पास छाये हुये खेतों की अधिकता है। पान की बेल को धूप से बचाने के लिये छा देते हैं। महोबा के पास महाराजपुर (चरखारी राज्य) में भी पान के खेत हैं। लगभग १६ लाख रुपये के पान महोबा से बनारस, लाहौर, पेशावार, नैनीताल और राजपूताना आदि स्थानों को भेजे जाते हैं।

इस जिले में तेल पेरने का काम भी बहुत होता है। यहां लगभग डेढ़ लाख मन कपास होती है। कपास को ओटने, कातने और बुनने में भी बहुत से आदमी लगे हुए हैं।

यहाँ लगभग ३०,००० भेड़ें हैं जिनसे ८०० ऊन कतरती जाती है। लगभग ७०० मन धुनी हुई ऊन भदोही, मिर्जापुर और झांसी को भेज दी जाती है बची हुई ऊन से गड़रिए लोग कम्बल बुनते हैं।

जलवायु

यहाँ गरमी के दिनों में खूब गरमी पड़ती है। हवा में आग सी निकलती है। वह बड़ी खुश्क होती है। अगर कोई भीगा कपड़ा फैला दें तो जरा देर में सूख जायगा। गरम हवायें दोपहर से रात तक चलती रहती हैं। इस बीच में रास्ता चलने वालों को बड़ी तकलीफ होती है। तेज धूप से बचने के लिये छायादार पेड़ भी बहुत मिलते हैं। दक्षिण की पहाड़ी

चट्टानें और भी अधिक तपने लगती हैं। पर इधर धूल बहुत नहीं उड़ती है। आसमान साफ रहता है। सर्दी की रातें बड़ी ठंडी होती हैं पर दोपहर के समय काफी गरमी हो जाती है।

यहां वर्षा का कोई ठीक नहीं है। किसी साल तो इतने जोर की वर्षा होती है कि नदियों में बाढ़ आ जाती है। किसी साल बहुत कम पानी बरसता है। किसान खेत नहीं बो पाते हैं और लोग भूखों मरने हैं। औसत से तुम्हारे यहां साल में ३६ इंच पानी बरसता है। साल में जितना पानी बरसता है वह अगर सब का सब जहाँ तहां पड़ा रहे और उसका एक भी बूंद न इधर उधर बहे न सूखे तो वह एक गज गहरा हो जायगा। महोबा में सबसे अधिक (३८½ इंच) पानी बरसता है। हमीरपुर में सबसे कम (३३½ इंच) पानी बरसता है।

समय पर वर्षा होने से फसल अच्छी होती है। वर्षा के दिनों में मच्छड़ बहुत बढ़ जाते हैं। उनके बार बार काटने से अक्सर लोगों को मलेरिया बुखार हो आता है।

पशु

जिले से चीता मिट गया है। लेकिन कुछ पहाड़ और महोबा के वनों और पहाड़ियों में तेंदुआ अब भी बहुत हैं। वह अक्सर जानवरों को मार डालता है और कभी कभी आदमियों पर भी हमला कर देता है। भालू कम रह गये हैं। बनों और नदियों के खड्डों में भेड़िया और लकड़बग्घा बहुत रहते हैं। गीदड़ और लोमड़ी तो सब कहीं हैं। उनसे कोई खास नुक्सान नहीं होता है। जङ्गली सुअर इतने अधिक हैं कि वे खेतों को अक्सर नुक्सान पहुँचाते रहते हैं। जङ्गलों में नील गाय और मैदानों में हिरणों के झुंड देखने में आते हैं। खरगोश दक्षिण में बहुत हैं। महोबा और कुछ दूसरे स्थानों में लंगूरों के झुंड लोगों को बहुत तंग करते रहते हैं।

नदियों में तरह तरह की मछलियां हैं। बड़ी नदियों में मगर भी रहता है। वह कभी कभी आदमी को नदी में खींच ले जाता है।

पालतू जानवरों में यहां गाय, बैल और भैंस बहुत पाले जाते हैं। गाय बैल तो दो लाख से ऊपर हैं। बार बार अकाल पड़ने से इनकी नस्ल अच्छी नहीं रही। खेत बढ़ने से चरागाह कम बचे। इससे उनकी संख्या भी कम हो गई। भैंस तो कुछ ही हजार हैं। इस जिले में भेड़ बकरी भी बहुत हैं। बकरियां कटीली कड़वी सभी तरह की पत्तियां खा लेती हैं। इससे बकरियां भेड़ों से कहीं अधिक हैं।

यहां ऊंट, गधे खच्चर और घोड़े बहुत कम हैं।

खेती

जिले के बहुत से भागों में अच्छी खेती नहीं होती है। कारण यह है कि यहां समय से वर्षा नहीं होती है। बहुत से गांवों में खेतों को निराने और फसल से कटीले जङ्गली पधों को अलग करने के लिये ठीक ठीक मजदूरों की कमी न होने से खेतों की देखभाल भी अच्छी होती है। यहां किसान अपने खेतों में खाद भी डालते हैं। इस लिये इधर फसल खूब होती है। तुम्हारे जिले की माड़ या काली जमीन में सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन अगर इधर किसान कुओं से अपने खेतों को सींचना भी चाहें तो कुओं में इतना कम पानी रहता है कि खेत ठीक ठीक सींचे नहीं जा सकते।

वर्षा होते ही किसान अपने खेतों को जोतना बोना शुरू कर देते हैं। इन दिनों जितनी जमीन जोती बोई जाती है उसकी लगभग आधी में ज्वार होती है। इसके साथ अरहर भी मिली रहती है। माड़ के काले खेतों में सब कहीं ज्वार नजर आती है। हलकी मिट्टी में किसान लोग ज्वार के साथ उर्द मूँग को भी मिला देते हैं। बहुत अच्छे खेत में फी एकड़ १८ मन ज्वार पैदा होती है। मामूली खेतों में सात आठ मन फी एकड़ होती है। इसे अगहन के महने में काटते हैं।

कपास—जिले की लगभग १८ फीसदी जमीन कपास की खेती से घिर जाती है। यह बरसात के शुरू में बोई जाती है। किसान लोग इसके साथ में भी अक्सर अरहर, तिल, उर्द और मूंग बो देते हैं। पडुआ और राकड़ जमीन में कपास बहुत होती है।

अरहर अलग नहीं उगाई जाती है। यह ज्वार या

बाजरा के साथ होती है। बाजरा को यहां लड़हरा भी कहते हैं। ज्वार के बाद इसी का स्थान है। यह खेती की १५ फीसदी जमीन घेरे हुए है यह माड़ की काली और भारी मिट्टी में नहीं होती है। काबर में भी कम उगती है। लेकिन नदियों के पास हलकी जमीन में बहुत होती है। बाजरा सावन में बोया जाता है और क्वार कार्तिक में कटता है।

झीलों और तालाबों के पास धान बहुत होता है। साठियां चावल साठ दिन में तैयार हो जाता है।

राठ और कुल पहाड़ के पास कुछ नील भी होता है।

पान महोबा में सैकड़ों वर्षों से होता चला आ रहा है। कुछ राठ में भी होता है। इसका काम तम्बोली लोगों के हाथ में है। पान का बगीचा १८ बीघा से ५० बीघा तक होता है। पान की बेल को धूप से बचाने के लिये बगीचे को पत्तियों से छा देते हैं। पान के बगीचे का लगान तीस चालीस रुपये बीघा होता है। लेकिन इससे तम्बोलियों को आमदनी भी बहुत होती है।

सावन में बोई जाने वाली फसल को खरीफ और कार्तिक में बोई जाने वाली फसल को रबी कहते हैं। रबी की फसल की ८० या ६० फीसदी जमीन चना से घिरी हुई है। यह अलग भी बोया जाता है और दूसरी फसलों के साथ भी मिला दिया जाता है। चना सभी तरह की जमीन में उगता है। कुछ भागों में गेहूँ और जौ भी उगाते हैं। इन्हीं दिनों अलसी और सरसों तेल के लिये उगाते हैं। मटर और मसूर दाल के लिये बोई जाती हैं।

थोड़ी थोड़ी अफीम और तम्बाकू लगभग सभी परगनों में उगाई जाती है।

सिंचाई

इस जिले की काली जमीन बहुत दिन तक अपनी नमी को बनाये रहती है। अगर ठीक समय पर पानी बरस जाय तो आधे से अधिक जमीन को अलग से सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। यहां के लोग समझते हैं कि अलग से खेत में पानी देने से फसल खराब हो जायगी। यहां कुआं बनाने में भी बहुत खर्च होता है। इस लिये इस जिले की बहुत थोड़ी जमीन सींची जाती है। सींची जाने वाली जमीन को सब से अधिक पानी कुओं से मिलता है। कुल पहाड़ के परगने में सबसे अधिक कुएँ हैं। इसके बाद महोबा का दूसरा नम्बर है। बहुत गहरे कुओं में चुर या चरस से पानी निकाला जाता है। जहां कुओं में नजदीक पानी मिलता है वहां ढेकली से पानी ऊपर लाया जाता है। कहीं कहीं रहट भी चलता है। हमीरपुर, महोबा और कुल पहाड़ के परगनों में दो तीन हजार कड़ भूमि नहरों से सींची जाती है। बेतवा नहर की हमीरपुर-शाखा केवल ११½ मील लम्बी है। यह नहर सिर्फ हमीरपुर परगने को सींचती है। यह नहर झांसी जिले से यहां आती है। हमीरपुर शहर के पास यह नहर फिर बेतवा में अपना बचा हुआ पानी गिरा देती है। धसान नहर जिले के पश्चिमी भाग को सींचती है। कुछ सिंचाई बेलाताल और दूसरे तालों से हो जाती है।

सिंचाई का ठीक इन्तजाम न होने से अकाल के दिनों में इस जिले के बहुत से लोग भूखों मरने लगते हैं। अबसे लगभग सौ वर्ष पूर्व एक ऐसा अकाल पड़ा जिससे इस जिले में लगभग आधे घर खाली हो गए। छोटे मोटे अकाल तो पड़ते ही रहते हैं।

व्यापार

जिले में थोड़ा बहुत व्यापार गांवों के छोटे छोटे बाजारों में होता है। यहां छानी बुजुर्ग में सिद्ध हर्ष बाबा का मेला सबसे बड़ा होता है। यह मेला पौष की पूर्णमासी को लगता है।

इस जिले से चना, दाल, घी, कपास, तिल और पान बाहर भेजे जाते हैं। महोबा के पान बड़े नामी होते हैं और दूर दूर बिकते हैं। जिले में कई ऐसी चीजों की जरूरत पड़ती है जो यहां नहीं होती हैं। दूकानदार बाहर से इन चीजों को मंगाते हैं। बाहर से आनेवाली चीजों में शक्कर, चावल, गेहूँ, नमक मिट्टी का तेल और कपड़ा मुख्य है।

आने जाने के मार्ग

मानिकपुर जाने वाली रेल जिले में हो कर जाती है। हरपालपुर, धुपलाताल (जैतपुर) कुल पहाड़, सूप, महोबा (कारी पहाड़ी) और मझगांइ लाइन के स्टेशन हैं जो इस जिले में पड़ते हैं।

कानपुर से बांदा को मिलाने वाली रेलवे भी इस जिले में हो कर गुजरती है। हमीरपुर से कुछ ही मील की दूरी पर यह रेल यमुना को पार करती है। अपने नक्शे में इसके स्टेशनों को ढूँढ़ो।

पक्की सड़कें

तुम्हारे जिले में एक पक्की सड़क ७ मील लम्बी है। यह सड़क तुम्हारे जिले को छोड़ने के बाद एक तरफ झांसी और दूसरी तरफ कानपुर को जाती है। दूसरी पक्की सड़क बांदा से आती है और तुम्हारे जिले में हो कर फतेहपुर को जाती है। यह भी लगभग इतनी लम्बी है। कबरई के पास ये दोनों पक्की सड़कें एक दूसरे से मिल गई हैं।

छोटी छोटी पक्की सड़कें कई हैं। एक पक्की सड़क हमीरपुर शहर का चक्कर काटती है। हमीरपुर से राठ को जाने वाली सड़क भी पक्की है। इसी तरह राठ से कुल पहाड़ को पक्की सड़क गई है। एक पक्की सड़क महोबा से चरखारी को और दूसरी छतरपुर को जाती है।

कच्ची सड़कें तो लगभग ४०० मील लम्बी हैं। वे बहुत से गांवों को एक दूसरे से मिलाती हैं।

जहां इन सड़कों के रास्ते में बड़ी नदियां पड़ती हैं वहां उनको पार करने के लिए घाट पर नाव रहती है। कानपुर, हमीरपुर और महोबा की सड़क के रास्ते में बरसात के बाद कुछ महीनों के लिये यमुना और बेतवा पर हर साल नाव का पुल बन जाता है।

शासन

हमीरपुर जिले का सब से बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। वह हमीरपुर में रहता है। वहीं वह कचहरी करता है। कभी कभी वह जिले का दौरा लगाता है। कलक्टर को पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सबसे बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट या कप्तान कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार मदद देते हैं। ये लोग अपने थाने की देखभाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है। मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट, दो डिप्टी कलक्टर और एक असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेट से मदद मिलती है। ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट महोबा में रहता है। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी, कानूनगो, नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और शिक्षा का काम म्यूनिसिपेलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लिये हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की शिक्षा सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुनते हैं।

इतिहास

बहुत पुराने समय में हमीरपुर जिले का अधिकतर भाग जंगल से ढका हुआ था। यहां कोल, भील और गोंड लोगों की बस्तियां थी। यहां के शिलालेखों से मालूम होता है कि अब से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले यहां गुप्तवंश के राजा लोग राज करते थे। हमारे जिले में राजहर्ष का एक तावेदार ब्राह्मण राजा यहां राज करने लगा।

हर्ष वर्धन के मरने पर गहरवार राजा हुये फिर चन्देलों का राज हुआ। इन लोगों ने अपना राज बहुत बढ़ा लिया था। इनमें आल्हा ऊदल और परमाल का नाम बहुत मशहूर है। अब से लगभग १००० वर्ष पहले पंजाब देश में पहले पहल बाहर से मुसलमान लोग लड़ने आये। उस समय हमारे जिले के लोगों ने पंजाब की मदद की लेकिन मुसलमानी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। अकबर ने हमीरपुर को दो सूबों में बांट दिया था। इसी समय बुन्देले उठ खड़े हुये। राजा छत्रसाल ने मुगलों के दांत खट्टे कर दिये।

जैतपुर और कुल पहाड़ के पास गहरी लड़ाइयां हुईं। मरहठों ने समय से मदद दी जिससे आगे चलकर यहां मरहठों का राज हो गया। मरहठों से यह देश अंग्रेजों को मिला। गदर के दिनों में यहां बड़ी मारकाट हुई। तब से अब तक जिले में कोई विशेष घटना न हुई।

तहसील हमीरपुर

हमीरपुर कस्बा बहुत बड़ा नहीं है। सिर्फ जिले

का सदर मुकाम है। पर कस्बा की स्थिति बड़ी अच्छी है।

यमुना और बेतवा नदी के बीच में संगम से कुछ दूर पश्चिम की ओर काफी ऊँची जमीन है। हमीरपुर इसी ऊँची जमीन पर बसा है। इस तरह से यह कस्बा दो नदियों के किनारे बना है। यहां के कुछ लोग बेतवा में नहाते हैं कुछ यमुना में नहाते हैं। दोनों नदियों को पार करने के लिये घाट पर नावें रहती हैं। पानी घट जाने पर इन नदियों के ऊपर नावों का पुल बन जाता है। यमुना पार करते ही दूसरी ओर पक्की सड़क मिलती है। इस पर कानपुर के लिये मोटर चला करते हैं। बेतवा को पार करने पर महोबा के लिये मोटर मिलता है। यहां कचहरी, अस्पताल, हाई स्कूल, जेल आदि की इमारतें तो कुछ बड़ी हैं। साधारण लोगों के छोटे खपड़ैल से छाये हुए घरों को देखने से हमीरपुर एक मामूली कस्बा मालूम होता है। कस्बे में दो छोटे बाजार हैं। यहां कोई बड़ा कारबार नहीं है।

इस कस्बे को अब से १ हज़ार वर्ष पहले राजा हम्मीर देव ने बसाया था। मुसलमानों का हमला होने पर वे अलवर से भागकर यहां आये थे। उन्होंने यहाँ एक किला बनवाया था जिसके खंडहर अब तक मौजूद हैं। कहा जाता है कि पृथ्वीराज ने महोबा जाते समय अपने कुछ सिपाही यहां छोड़ दिये थे।

छानी यह एक बड़ा गांव है। यहां हर शनिवार को बाजार लगता है। १९३३ ई० से यहां मेले के साथ कृषि प्रदर्शिनी (नुमायश) भी होने लगी है। यहां एक प्रायमरी स्कूल और डाकबंगला भी है।

हमीरपुर

झलोखर—यह गांव हमीरपुर से ८ मील की दूरी पर बसा है। बेतवा नहर की हमीरपुर शाखा इस गांव के पास होकर जाती है। यहां देवजी भुइया रानी का एक बहुत पुराना मन्दिर है। लोगों का विश्वास है कि इसके पड़ोस की मिट्टी वात वा गठिया को दूर कर देती है।

पचखुरा हमीरपुर से १२ मील दूर है। यहाँ से एक कच्ची सड़क यमुना के सुरौली घाट को जाती है। यह पुराना गांव है और ऊँचे टीले पर बसा है। वर्षा होने पर यहां कभी कभी बहुत पुराने सिक्के निकल आते हैं।

सुमेरपुर—हमीरपुर से महोबा को जाने वाली सड़क पर बसा है। यहां अनाज और ढोर (गाय बैल) का बड़ा भारी बाजार बुधवार और शनिवार को लगता है। यह नगर पुराना है। इसके पास ही तीन और पुराने खेड़े हैं। गांव के बाहर दो पुराने किलों के खण्डहर हैं। गुसाइयों का मन्दिर सब से अधिक पुराना है। गदर के दिनों में यहां बड़ी गड़बड़ी रही। इसके सुमेरा कहार ने बसाया था इससे इसका नाम सुमेरपुर पड़ गया।

सुरौली बुजुर्ग यमुना के किनारे एक बड़ा गांव है। फतेहपुर जाने वाले लोग इसी घाट से यमुना नदी को पार करते हैं। हमीरपुर से यह सिर्फ १० मील है। यहां के गौड़ राजपूतों ने गदर में तोप लगाकर नाव वालों से कर लेना शुरू कर दिया था। इसे कुछ वर्ष के लिये यह गांव उनसे छिन गया। पीछे से यह उन्हें फिर लौटा दिया गया।

विदोखर—यह गांव हमीरपुर से १५ मील दूर है। अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले बांदा के नवाब ने इस शहर को उजाड़ दिया। कार्तिक महीने में यहां एक मेला लगता है।

महोब—का कस्बा जिले के इतिहास में सब से अधिक प्रसिद्ध है। यह कस्बा हमीरपुर से ५४ मील दूर है। फतेहपुर से बांदा और सागर को जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। रेलवे स्टेशन कस्बे से २ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। यहां कई पुराने तालाब हैं एक पुराने चौकोर किले में आज कल तहसील और थाने की इमारतें हैं। यहां तार घर, डाकखाना शफाखाना और स्कूल भी है।

यह कस्बा तीन भागों में बटा हुआ है। (१) पुराना किला एक निचली पहाड़ी के उत्तर की ओर है। (२) भीतरी किला पहाड़ी चोटी पर है। (३) दरीबा दक्षिण की ओर एक छोटा गांव है। यहीं पान की दुकानें हैं।

इसके एक मुहल्ले का नाम मालिकपुरा है। कहते हैं कि मालिक शाह नाम का एक अरबी था। उसने यहां के आखिरी भार राजा को मार डाला। राजा

के १४ रानियां थीं। वे बिना आग के ही अपनेआप आग पैदा करके सती हो गईं। इसी से वरोखर ताल के पास एक जगह चौदह रानी की सती कहलती है।

महोबा की पुरानी शान तो चली गई। लेकिन यहां का व्यापार कुछ कुछ बढ़ रहा है। यहां अनाज, महुआ, घी और पान का व्यापार होता है। यहां एक एक चीज का बाजार एक एक दिन अलग अलग लगता है। ढोर का बाजार शुक्रवार को और अनाज का बाजार शनिवार को लगता है। पान का बाजार सोमवार को होता है। यहां हर साल कीरत सागर (ताल) के किनारे सावन के महीने में कजलिया का मेला लगता है। भादों के महीने में गोखर पहाड़ी के ऊपर सिद्ध मेला होता है। यहां के लोग कहते हैं कि महोबा नगर बहुत पुराने समय से चला आया है। त्रेतायुग में इसे कंकपुर कहते थे। द्वापर में यह पाटनपुर कहलाने लगा। कलियुग में इसका नाम महोत्सव से बिगड़कर महोबा पड़ गया। कलियुग में इसको बनाने वाले चन्देल राजा चन्द्रवर्मा ने यहां एक बड़ा यज्ञ करवाया था इसी से यह महोत्सव नगर या महोबा कहलाने लगा। चन्देल राजाओं ने ९०० ई० में खजुराहो को छोड़ कर यहां राजधानी बनाई। चन्देलों के आखिरी बड़े राजा परमाल के समय में पृथिवी राज चौहान ने महोबा को लुटवा दिया था। यहां आल्हा ऊदल का नाम भी बहुत मशहूर है।

महोबा-तहसील

कबरई चार छोटे छोटे गांवों के मिलने से बना है। महोबा से बांदा जानेवाली सड़क इसके पास होकर जाती है। इसके पड़ोस में एक बहुत पुराना ताल और ववरिया दाई का मन्दिर है।

मकरबई गांव महोबा से नौ मील पूर्व कबरई जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पास ही परमाल की बैठक बनी है। यहीं एक पुराना तालाब है। पास ही एक मन्दिर के खंडहर हैं।

श्रीनगर—इसे महाराज छत्रसाल के एक लड़के ने बसाया था। महोबा से छतरपुर जानेवाली सड़क यहां होकर जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल हैं। पास ही दो पुराने ताल बने हैं। बड़ा ताल अधिक सुन्दर है। इसके बीच में एक टापू है। उस पर एक चन्देल के बनवाये हुए मन्दिर के खंडहर हैं। हर सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। पहले यहां पीतल की मूर्तियां बड़ी सुन्दर बनती थीं।

जैतपुर कस्बा कुल पहाड़ से सिर्फ ७ मील दूर है। राठ और कुल पहाड़ से नौ गांव जाने वाली सड़कें यहीं मिलती है। बेलाताल रेलवे स्टेशन यहां से सिर्फ २ मील दूर है। कुछ दूर पूर्व की ओर बेला ताल है। इस गहरे ताल का घेर नौ मील है। ताल के पश्चिम की ओर छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। एक पहाड़ी के ऊपर पुराना किला है कहते हैं कि इस किले और जैतपुर कस्बे को महाराज छत्रसाल के पहले फरुखाबाद के बंगशनवाब च छत्र साल और पेशवा बाजी राव की फौजों ने नवाब की फौज को जैतपुर के किले में घेर लिया। घेरा सवा तीन महीने तक पड़ा रहा। अन्त में नवाब को हार माननी पड़ी। उसके बाद मुसलमान इस जिले को छोड़ कर चले गये।

यहां बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। कार्तिक की पूर्णमशी की श्री कृष्ण लीला का मेला लगता है।

कुल पहाड़ एक बड़ा कस्बा है जो हमीरपुर से ६० मील दूर है। रेलवे यहां से दो मील दक्षिण की ओर है। पास ही बुन्देलों के बनवाये पुराने ताल हैं। इनमें गढ़ा ताल सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कस्बे में हर मंगल वार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां के सरौता और चाकू मशहूर हैं। यहां अनाज और कपास का भी व्यापार होता है। कपास ओटने का एक कारखाना भी है। भादों के महीने में यहां जल-विहार का मेला होता है। कहते हैं कि यह कस्बा कुल्हुआ और पहाड़ी या नाम के गांवों के मिलने से बना था। इसी लिये इसका नाम कुल पहाड़ पड़ गया।

पंवारी

पनवारी में मऊ, राठ और कुल पहाड़ से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां एक बड़ा मन्दिर है कहते हैं महाभारत के राजा पांडु यहीं रहते थे।

सुगरा एक छोटा गांव है जो महोबा से पंवारी जाने वाली सड़क पर पड़ता है। पहले इधर सुअर बहुत थे। सुअर का ही दूसरा नाम सुगर है। इसी से बिगड़ कर किला बनवाया था। इसके भीतर एक

घाटली है। हर इतवार को यहां बाजार लगता है।

सूपा अर्जुन नदी के किनारे पर हमीरपुर से ५५ मील दूर है। यहां एक किला है जिसे १८०५ ई० में अंग्रेजों ने तोड़ डाला था। यहां कपास का व्यापार होता है और हर इतवार को बाजार लगता है।

राठ

राठ कस्बा जिले भर में सबसे बड़ा है। यहां तहसील थाना, डाकखाना और शफाखाना है। यहां कपड़ा बुनने और रंगने का काम होता है। यहीं जिले भर में सबसे बड़ी व्यापार की मंडी है। यहां का सागर ताल बहुत सुन्दर है। इसके पक्के घाट बहुत बड़े हैं। पास ही चन्देल बैठकें हैं। यहां दो किलों और कई
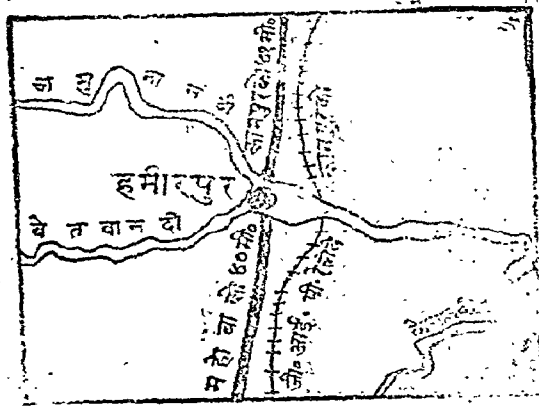
हिन्दू और जैन मन्दिरों के खंडहर हैं। औरंगजेब के मरने के बाद राजा छत्रसाल ने राठ को जीत लिया था। गदर के दिनों में यहां बड़ी मारकाट मची।

आउँटा एक बड़ा गांव है जो राठ से छः मील और हमीरपुर से ४३ मील दूर है। यहां हर गुरुवार को बाजार लगता है जिसमें अनाज, पान और कपड़ा बिकता है।

चन्दौत बेतवा नदी के किनारे राठ से २२ मील और हमीरपुर से ४० मील दूर है। राठ से काल्पी जाने वाली सड़क का घाट यही है। पहले यहीं परिहार लोगों का जोर था। फिर लोधी लोगों ने उन्हें भगा दिया। अब से लगभग ढाई सौ वर्ष पहले महाराज छत्रसाल ने यहां हमला किया था।

राठ तहसील

जलालपुर बेतवा के दाहिने किनारे पर हमीरपुर से २० मील की दूरी पर बसा है। पहले यहां बहुत व्यापार होता था इसके घट जाने से यहां बहुत से घर खाली हो गये इसका पुराना नाम खंडौत था। आज कल इसी नाम से पड़ोस के खेड़े को पुकारते हैं पृथिवी राज ने महोबा पर चढ़ाई करने के समय यहां एक थाना बनाया था।

काशीपुर गांव राठ से १८ मील की दूरी पर धसान नदी के किनारे बसा है। गदर के दिनों में यहां एक थाना बनाया था।

काशीपुर गांव राठ से १८ मील की दूरी पर यहां प्रसिद्ध बागी देशपत का अड्डा था।

मझगावां धसान नदी के पाट से १३ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। कहते हैं परिहार राजपूत आबू पहाड़ से चलकर यहां बस गये। उनके राजा ने रामगढ़ किला बनवाया। नदी के पास उसके खंडहर अब तक मौजूद हैं।

मौदहा तहसील

बंवार एक बड़ा गांव है। यह हमीरपुर से राठ जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पड़ोस में फौजी पड़ाव है। यहां हर इतवार को बाजार लगता है। थाना डाकखाना और जुनियार हाई स्कूल है।

चिहुनी टोला बरमा नदी के किनारे हमीरपुर से ४० मील दूर है। यहां एक बाजार है। कुछ लोग कपड़ा बुनने का काम करते हैं। यहां एक बड़ा सुन्दर मन्दिर बना है। पास ही एक पुराना खेड़ा है।

गहरौली के पास चन्देलों का बनवाया हुआ एक पुराना ताल है। इसके किनारे धनुष यज्ञ का मेला लगता है। पास ही कई पुराने मन्दिरों के खंडहर हैं। हर शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल भी है। खरेला जिले भर में सब से बड़ा गांव है। यहां हर मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। श्रावण की पूर्णमासी को महामुनि तालाब के किनारे कजलिया का मेला लगता है। गांव के ऊपर की ओर एक पहाड़ी है। यहां देवताओं की मूर्तियां अब तक

मिलती हैं। यहां पर बने हुये मन्दिर के पास से दूर का दृश्य दिखाई देता है।

पहाड़ी भिटारी मौदहा के पश्चिम में एक बड़ा गांव है। इसके पास एक छोटी पहाड़ी है और यह एक भीटे (टीले) के ऊपर बसा है इसलिये इसका यह नाम पड़ गया। यहां जमीन के नीचे एक विचित्र मन्दिर बना है। हर बुधवार को बाजार लगता है।

शायर—मौदहा से ६ मील और हमीरपुर से १८ मील दूर है। इसके पास एक कच्चा किला बना है। इसे बांदा के राजा गुमान सिंह ने बनवाया था। कार्तिक की पूर्णमासी को यहां सिद्धों का मेला होता है। अतरा में एक ब्राह्मणों की बस्ती है। भादों के महीने में यहां कंस लीला होती है। यहां प्राइमरी स्कूल भी है।

मौदहा कस्बा हमीरपुर से २० मील की दूरी पर महोबा जाने वाली सड़क के पास बसा है। बांदा से काल्पी जाने वाली सड़क यहीं होकर जाती है। तहसील के सिवा यहां थाना डाकखाना और स्कूल है।

चरखारी के राजा ने यहां एक किला बनवाया था। बांदा के नवाब ने इसे फिर से दुरुस्त करवाया यहां पांच बड़े बड़े ताल बनाये गये। इलाही ताल के किनारे जेठ के महीने में सैयद सलार या गाजी मियां का मेला लगता है। भादों के महीने में कंसवध का मेला लगता है। भादों के महीने कंसवध का मेला अधिक प्रसिद्ध है।

मुस्करा यह कस्बा हमीरपुर से २८ मील दूर राठ जानेवाली सड़क पर बसा है। कहते हैं कि यह नाम महेश खेड़ा से बिगड़ कर बना है। महेश के मन्दिर के चिन्ह अब तक मिलते हैं। पौप (पूस) के महीने में यहां सैरा का मेला लगता है। हर रविवार को बाजार लगता है। यहाँ पोने की तम्बाकू और पेड़े अच्छे बनते हैं। यहां थाना डाकखाना और जू० हा० स्कूल भी है।

खन्ना—यह हमीरपुर से महोबा जाने वाली पक्की सड़क पर है यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। यहां पौप मास की पंचमी को विलन्दपु बाबा का मेला लगता है।

खंड़ेह—यह कानपुर से बांदा जानेवाली रेलवे पर एक स्टेशन है। लेकिन स्टेशन का नाम अकोना इस गांव में दो मन्दिर हैं। ये द्विवेदियों के बनवाये हुये हैं। पत्थर का इनका काम जिले में सर्व प्रसिद्ध है। यहां डाकखाना, कवेशीखाना, स्कूल और औषधायल है।

कहरा—यह खंड़ेह से तीन कोस की दूरी पर बसा है यहां भी स्कूल है।

मवई खुर्द—यहां क्षत्रियों की बस्ती है। यहां एक मन्दिर और तालाब है। पौष ने महीने में यहां मेला और दंगल होता है।

इचौली—यह मटौंध से खन्ना जाने वाली कच्ची सड़क के समीप है यहां स्टेशन, स्कूल और डाकखाना है।

झाँसी

स्थिति और सीमा

जिला बुन्देलखंड के सब जिलों से अधिक बड़ा है। इसकी सूरत एक बन्द थैली से कुछ कुछ मिलती है। यमुना नदी के दक्षिण में यह सबसे मशहूर जिला है। हमारा जिला बहुत सी रियासतों और जिलों को छूता है। कोई अकेला जिला इतनी रियासतों को नहीं छूता है।

इसके उत्तर और उत्तर-पश्चिम में जालौन का जिला और समथर, दतिया और ग्वालियर राज्य है। पश्चिम की ओर लगभग ६० मील तक बेतवा नदी हमारे जिले को ग्वालियर राज्य से अलग करती है। यह नदी जिले को दो बार पार करती है और अन्त में फिर उत्तर की ओर पहुँच कर जालौन जिले और झांसी जिले के बीच में सीमा बनाती है। दक्षिण की ओर झांसी जिला मध्यप्रान्त के सागर जिले को छूता है। पूर्व की ओर ओरछा राज्य लगभग १०० मील तक झांसी जिले से मिला हुआ है। इसमें सिर्फ ३६ मील तक जमनी नदी हमारे जिले को ओरछा से अलग करती है। अधिक आगे पूर्व की ओर घसान नदी जिले को अलीपुरा, गौंचली, बीहट, जिगनी और सरीला रियासतों से अलग करती है। ये सब
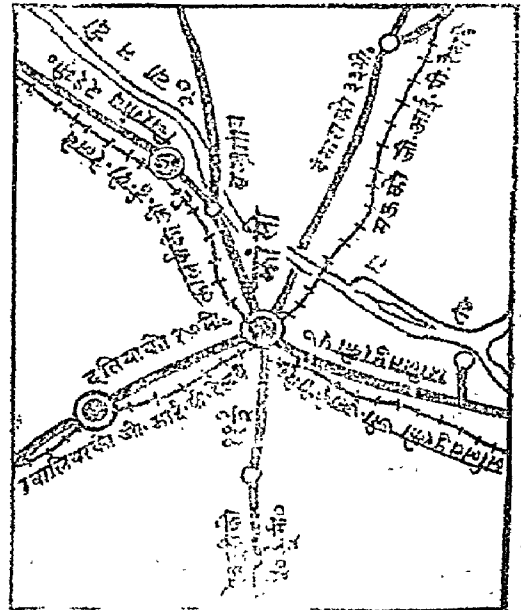
रियासतें हमीरपुर जिले में शामल हैं। ओरछा दतिया आदि पड़ोसी रियासतों से कुछ गांव झांसी

जिले के भीतर घुसे हुये हैं। पहले बेतवा के दक्षिण में ललितपुर अलग एक जिला था। वह झांसी से कुछ बड़ा था। अब वह झांसी में ही शामिल कर दिया गया है। दोनों के मिल जाने से आजकल झांसी जिले का क्षेत्रफल ३६०८ वर्गमील और जनसंख्या ७,७५,००० है।

प्राकृतिक विभाग

अगर एक सिरे से दूसरे सिरे तक झांसी जिले की सैर की जावे तो तरह तरह के सुन्दर दृश्य मिलेंगे धुर दक्षिण में विन्ध्याचल की ऊँची पहाड़ियां हैं। धसान नदी के ऊपर लखनजीर की पहाड़ी है। इसकी ऊँचाई आध मील से कुछ ही कम है। अगर नदी के किनारे से पहाड़ी की चोटी पर चढ़ें तो कई घंटे लग जावें। इसी तरह की सपाट पहाड़ियां दक्षिण में सब कहीं फैली हुई हैं। इनकी तलहटी से लेकर ललितपुर के पास तक लहरदार ऊँचा नीचा काली मिट्टी का मैदान उत्तर की ओर फैला हुआ है। बीच बीच में यह मैदान इतने नालों से कटा हुआ है कि शायद उन्हें ठीक ठीक गिना भी नहीं जा सकता। ललितपुर से आगे लाल धरती मिलती है। इस ओर असंख्य पहाड़ी टीले बिखरे हुये हैं। ये टीले कहीं नंगे हैं कहीं इनके ऊपर झरबेरी की कटीली झाड़ियां हैं। बेतवा नदी की घाटी को छोड़कर इस तरह की लाल जमीन झांसी शहर तक चली गई है। मऊ तहसील के दक्षिण-पश्चिम में भी काफी दूर तक इसी तरह की जमीन है।

इसके आगे काली मिट्टी का समतल मैदान मिलता है। इसमें चट्टानें भी कम हैं। अन्त में पश्चिम कि ओर चट्टानें एकदम छिप जाती हैं। लेकिन पूर्व की ओर लम्बी लम्बी पहाड़ियां दूर तक फैली हुई हैं। इधर नदियों के किनारे भी गहरे कटे हुये हैं। अगर हमें किसी खड्डे में चलना पड़े तो हम सामने तो दूर तक देख सकते हैं लेकिन दाहिनी या बाईं ओर १० गज दूर की चीज भी नहीं देख सकते। खाने-पीने की सभी चीजें जमीन से मिलती हैं। काली मिट्टी को किसान लोग मार और काबर नाम से पुकारते हैं। कोई कोई इसे मोटी या रेगर भी कहते हैं। बहुत पुराने समय में कुछ जली हुई चट्टानें इकट्ठी हो गईं। इनसे घिस कर जो मिट्टी बनी वह भी काली हो गई। पानी पाने पर यह मिट्टी फैल जाती है और फिसलनी हो जाती है। लेकिन गरमी में सूखने पर वह सिकुड़ जाती है। उसमें दरारें दिखाई देने लगती हैं। फिर भी इसमें अधिक समय तक नमी बनी रहती है और किसानों को ऐसी मिट्टी वाले खेत सींचने नहीं पड़ते हैं। पर बहुत वर्षा होने पर इसमें दलदल हो जाता है। इसमें जोतना बोना बन्द हो जाता है। पडुआ मिट्टी अधिक भारी होती है। इसका रंग कुछ हलका होता है। राकड़ जमीन नालों के पास मिलती है। कंसी किसी जमीन में कंकड़ पत्थर भी मिले रहते हैं। किसान लोग हलकी मिट्टी को पतरो और भारी को मोटी कहते हैं। जहां खूब खेती होती है उसे वे तरेता कहते हैं। जिस धरती में खेती नहीं हो सकती है उसे वो हार या डांग कहते हैं। नदी-नालों के पास की तर जमीन को वे तरी कहते हैं।

नदियां

पानी सदा ऊंचे भाग से नीचे भाग की ओर बहता है। झांसी जिले के कुछ भाग ऊंचे हैं और कुछ नीचे हैं। इसलिये जिले में जो पानी बरसता है वह बड़े बड़े नालों या नदियों की सूरत में निचले भाग की ओर बहता है। बेतवा, धसान, पहुज और जमीन नदियों को देखने से जिले के ढाल का पता लग जायगा। बेतवा नदी कुमारी गांव के पास भूपाल राज्य से निकलती है। फिर यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। ललितपुर से कुछ दूरी पर दक्षिण-पश्चिमी कोने से यह नदी अपने जिले में घुसती है। पहले तीस मील तक यह नदी इस जिले और ग्वालियर राज्य के बीच में सीमा बनाती है। फिर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ कर यह नदी अपने जिले के अन्दर आती है। लेकिन जिले को पार करके यह नदी ओरछा राज्य में चली जाती है। अन्त में वह फिर झांसी शहर के पास जिले में घुसती है। वह बराबर उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। और झांसी जिले को जालौन से अलग करती है। इसका रास्ता अधिकतर पहाड़ी है। इससे यह कहीं कहीं झरने बनाती है। कहीं गहरे कुंड बन गये हैं। विन्ध्याचल पहाड़ को पार करते समय इसमें बड़ी गहरी कन्दरा बन गई है। लेकिन झांसी

की सड़क के आगे बेतवा बहुत चौड़ी होगई है। इसके बीच में कई टापू हो गये हैं। इसकी दो धारायें भी हो गई हैं। इन धाराओं के बीच में जङ्गल से ढकी हुई पहाड़ी है। मानिक पुर से आने-वाली रेल के पुल के पास फिर ये दोनों धारायें मिलकर एक हो गई हैं। धुरवान और परीच्छा के पास इसमें बांध बनाये गये हैं। यहीं से सिंचाई की नहर निकलती है। पर इसमें नावों के चलने के लिये लगातार गहरा पानी रहता है। सिर्फ बीस स्थानों पर इसको पार करने के लिये घाट बने हैं।

धसान—बहुत छोटी नदी है। यह नदी भी भोपाल राज्य से निकलती है। पहले पहल यह नदी ललितपुर तहसील के दक्षिणी सिरे को छूती है। फिर यह लगभग १२ मील तक इस तहसील को सागर जिले से अलग करती है। लखनभीर पहाड़ी के पास यह विन्ध्याचल को काटती है। इसके आगे यह पहाड़ी तली में बहती हुई ओर्छा राज्य में घुसती है। लगभग साठ मील इस राज्य में बहने के बाद घाट कोटरा के पास धसान नदी फिर झांसी जिले को छूती है। और इसे हमीरपुर जिले से अलग करती है। अन्त में यह नदी हमारे जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने के पास बेतवा में मिल जाती है। इस ओर इसको तली कहीं रेतीली है कहीं पथरीली है। इसके किनारे बहुत ऊंचे हो गये हैं। वे अक्सर दो तीन मील तक गारों से कटे हुये हैं। बरसाती बाढ़ को छोड़ कर नदी में बहुत पानी नहीं रहता है। फिर भी इसको पार करने के लिये कई जगह नाव के घाट हैं। घाट लचूरा के पास इसके ऊपर रेल का मजबूत पुल बना हुआ है। उर, सुखनई और लेखरी आदि छोटी नदियां धसान में गिरती हैं।

जमनी नदी मदनपुर नगर के पास विन्ध्याचल से निकलती है और उत्तर की ओर बहती है। इसमें बहुत से नाले भी मिल गये हैं। महरोनी और बानपुर के बीच में यह कुछ पूर्व की ओर मुड़ जाती है। लेकिन आगे चलकर यह नदी फिर उत्तर की ओर मुड़ती है। लगभग २० मील तक यह ओरछा राज्य और झांसी जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसी बीच में शाहजाद और सजनम नदियां आकर इसमें मिल जाती हैं। वर्षा ऋतु में ये नदियां उमड़ कर बड़ी डरावनी हो जाती हैं लेकिन और दिनों में इनमें बहुत ही कम पानी रहता है। इनके किनारों पर कंकड़ बहुत हैं। यहां खेती बिल्कुल नहीं होती है।

पहुज नदी ग्वालियर राज्य से निकलती है। पश्चिम की ओर से पछोर—झांसी सड़क के पास यह नदी जिले में घुसती है। झांसी शहर इससे केवल तीन मील दूर रह जाता है। फिर पहूज नदी बाहर निकल कर जिले की पश्चिमी सीमा बनाती है। अन्त में भंडिर के पास पहूज नदी सीमा को छोड़ देती है और बहती बहती जालौन जिले में सिन्ध नदी से मिल जाती है। इसका रास्ता बहुत ही ऊंचा नीचा है।

झील और तालाब

जिले में इतनी बड़ी झीलें तो नहीं हैं जिनकी लम्बाई चौड़ाई कई मील हो या जिनमें बहुत गहरा पानी हो। पर जिले की ऊंची नीची पथरीली जमीन में तालाब बहुत बन गये हैं। इनमें बरसात का बहुत सा पानी दूर दूर से आकर भर जाता है। पुराने जमाने के चन्देल राजाओं ने लोगों के आराम के लिये बहुत से तालाबों को पक्का बनवा दिया। बरवा सागर या अर्जर को देखने के लिये लोग आते हैं। भसनेह के पास बोडा नाले का बांध बने कुछ साल हुए सबसे बड़ा तालाब तैयार किया गया। इस पर लगभग आठ लाख रुपये खर्च हुए। इससे बड़ी सिंचाई भी होती है। पचवारा, मगरवारा और काच-नेह ताल भी बहुत मशहूर हैं। बहुत से तालाब सिंचाई के काम आते हैं।

जलवायु

जिले में दिवाली से कुछ पहले ही सरदी पड़नी शुरू हो जाती है। दिसम्बर जनवरी में इतनी सरदी पड़ती है कि सभी लोग गरम कपड़े पहनते हैं। रात को भीतर सोते हैं। कुछ लोग आग तापते हैं। कभी कभी पाला भी पड़ता है जिससे अरहर और दूसरे मुलायम पौधे सूख जाते हैं।

होली से कुछ पहले न सरदी रहती है न गरमी। इसे वसन्त कहते हैं। लेकिन कुछ दिनों में गरमी बढ़ने लगती है। मई में बड़ी तेज गरमी पड़ती है।

हवा से लपट सी निकलती है। नंगे पैर गरम धरती पर चलने से पैर में छाले पड़ जाते हैं। कभी कभी जोर की आंधी चलती है। जिससे छप्पर उड़ जाते हैं और पेड़ उखड़ जाते हैं।

इसके बाद जुलाई में पानी बरसने लगता है। साल भर में एक गज से ऊपर (३८३ इंच) वर्षा होती है।

झांसी जिले में हवा में अक्सर खुश्की रहती है। अगर भीगा कपड़ा कमरे के अन्दर भी डाल दें तो वह जल्द सूख जाता है। पानी इधर उधर बहुत इकट्ठा नहीं होने पाता है। इससे मच्छड़ नहीं बढ़ते हैं। लोग तन्दुरुस्त बने रहते हैं। इस तरह जिले की जलवायु बड़ी अच्छी है। जहां कहीं काली मिट्टी है वहां मच्छड़ अधिक पाये जाते हैं।

सिंचाई

जैसे हम पानी पीते हैं वैसे ही गेहूं और दूसरे पौधे भी पानी चाहते हैं। अगर इन्हें ठीक ठीक पानी न मिले तो ये सूख जावें। झांसी जिले में साल भर लगातार पानी नहीं बरसता है। इस लिये खेतों को सींचने की जरूरत पड़ती है। सिंचाई का काम कुछ तो कुओं से होता है। ललितपुर में कुआं खुदाने में अधिक खर्च नहीं होता है। लेकिन झांसी की पथरीली जमीन में कुआं बनाने में बहुत रुपये लग जाते हैं।

तालाब भी कई हजार एकड़ जमीन सींचते हैं। तालाब कई जगह हैं। लेकिन बड़वा सागर, कचनेह मगरवारा और पचवारा बहुत मशहूर हैं।

इस जिले में नहर भी सींचने में बड़ी सहायता देती है। अब पचास वर्ष पहले परीक्षा गांव के पास मौजा खुर्द में बेतवा नदी के ऊपर एक पक्का बांध बनाया गया। यह बांध झांसी शहर से सिर्फ १४ मील दूर है। यह बांध २५ फुट ऊंचा और लगभग एक मील लम्बा है। इसके बन जाने से ऊपर की ओर १७ मील तक नदी फैलकर चौड़ी हो जाती है। यहीं पर बड़े दरवाजे बना दिये गये हैं जिनमें होकर नहर को पानी मिलता है। असली नहर झांसी से कानपुर जाने वाली सड़क के साथ चलती है। मेरठ के उत्तर-पश्चिम में पुलिया गांव के पास यह दो शाखाओं में बट जाती है। इन्हें हमीरपुर नहर और कुठौंद नहर कहते हैं। इस नहर के बनाने में लगभग ५ लाख रुपया खर्च हो गया। लेकिन इसके पानी से २१०० एकड़ जमीन सींची जाती है।

पहूज नदी से गढ़मऊ के पास सिंचाई की नहरें निकाली गई हैं। इनसे भी जमीन सींची जाती है। इतना होने पर भी हमारे जिले में सिंचाई काफी नहीं है। इसी से पानी कम बरसने से हमारे यहां अकाल पड़ता है। बहुत से घरों में रोटी बनाने के लिये अनाज नहीं रहता है। वे भूखों मरने लगते हैं अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले के अकाल में इतने लोग भूखों मरे कि लोग उसे चालीसा कह कर अब तक याद करते हैं। सम्वत १८४० में होने से उसका नाम चालीसा पड़ गया।

कांस एक लम्बी पैनी और पतली घास है। इसकी ऊँचाई १ हाथ से २ गज तक होती है। इसकी जड़ें पौधे से भी अधिक बड़ी होती हैं और दो ढाई गज गहरी होती हैं। कांस छप्पर छाने या ढोर चराने के काम आता है। पानी पाने से यह खूब फैलता है। इसका बीज सफेद रुए में छिपा रहता है। यह इतना हलका होता है कि हवा के साथ उड़कर यह इधर उधर फैल जाता है। जब एक बार कांस का राज हो जाता है। तो वहां हल नहीं चल सकता। किसान बिचारे का कोई वश नहीं चलता है इस जिले का बहुत सा भाग कांस से ढका हुआ है जहां किसी तरह की खेती नहीं होती है। अगर हम सब तरह की ऊसर जमीन को शामिल करलें तो औसत से हर सौ बीघे पीछे पन्द्रह बीघे ऐसे मिलेंगे जहां खेती हो ही नहीं सकती है।

हर साल हमारे जिले की कुछ अच्छी जमीन कट कर नालों में बह जाती है। इसको रोकने के लिये कहीं कहीं बबूल और दूसरे पेड़ लगाये गये हैं। पेड़ की जड़ें मिट्टी को रोके रहती हैं, इससे मिट्टी जल्द कटने नहीं पाती है।

झांसी जिले में ११२२१३ एकड़ जमीन वन से घिरी हुई है। इसमें कहीं कहीं सागौन, बांस, महुआ आदि से अच्छी लकड़ी मिलती है। अधिकतर जङ्गल से चलाने के लिये ईंधन भले ही मिल जावेपर

घर पाटने या हल और गाड़ी बनाने के लिये सुडौल लकड़ी यहां नहीं होती है। कहीं कहीं पहाड़ों पर धौं की मजबूत लकड़ मिलती हैं। इसे किसान खेती के हलों और बखरों के काम में लाते हैं जानवरों के चरने के लिये घास सब कहीं उगती है।

पशु

जिले भर के जंगलों में तरह तरह के जंगली जानवर रहते हैं। चीता और तेन्दुआ दोनों बड़े भयानक होते हैं। वे जानवरों को मार कर खा जाते हैं। कभी वे आदमियों पर भी हमला करते हैं। इसीलिये इन जानवरों को मारने के लिये इनाम दिया जाता है। भेड़िया और बनबिलाव अक्सर खोहों और गारों में रहते हैं। भेड़िया गांव में रात को चुप चाप आता है और भेड़ बकरियों को चुरा ले जाता है। कभी कभी वह सोते हुए बच्चे को भी ले जाता है। जंगली कुत्ते भी खूंख्वार होते हैं। सियार और लोमड़ियों का तादाद बहुत है लेकिन वे लोगों को कोई खास नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। जंगली हिरणों के झुंड अक्सर खेतों को चर जाते हैं। लेकिन आदमी को देखते ही वे लम्बी छलांगे मारते हैं और देखते देखते ओझल हो जाते हैं। बनैला सुअर इनसे भी अधिक हानि खेतों को पहुँचाता है। वह गारों या कटीले झाड़ों में रहता है। किसान लोग इससे अपनी फसल को बचाने लिये खेत के चारो ओर कटीले झाड़ जमा कर देते हैं। चिंकारा, नीलगाय, सम्भर और चीतल भी खेतों को चर जाते हैं। कहीं कहीं भालू भी मिलता है। बन्दर, खरगोश और सेही तो सब कहीं बहुत हैं।

जिले में मोर तोता आदि सुन्दर पक्षी भी बहुत हैं। नदियों में कई तरह की मछलियां पाई जाती हैं। बड़ी नदियों में मगर भी मिलते हैं जो बड़े जानवरों और आदमियों को भी घसीट ले जाते हैं।

घास की अधिकता होने से हमारे यहां गाय भैंस अहीर और गूजर लोग बहुत पालते हैं। इससे घी दूध की कमी नहीं है। कभी कभी यहां से अच्छा घी बाहर भेजा जाता है। पर हल खींचने वाले अच्छे बैलों की कमी है। यहां के बैल दुबले पतले होते हैं। चन्देरी बैल अच्छा गिना जाता है। अच्छे घोड़े भी बाहर से आते हैं। भेड़ बकरियों की संख्या कई लाख है।

खेती

जिले में बहुत सी जमीन ऊसर है जंगल और कांस भी काफी फैले हुये हैं। इसलिये यहां खेती आधे से कम हिस्से में होती है। ललितपुर तहसील में तो एक चौथाई से कुछ कम ही जमीन ऐसी है जिसमें खेती होती है। खेती की जमीन वर्षा और कांस की कमी या अधिकता के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। बहुत से खेतों में साल भर में सिर्फ एक फसल होती है। कुछ ऐसे हैं जिनमें अच्छी जमीन और सिंचाई होने से साल में दो फसलें तयार हो जाती हैं।

काली जमीन में ज्वार बहुत उगाई जाती है। वर्षा होते ही किसान लोग ज्वार को जुलाई महीने में बो देते हैं। कभी कभी इसके साथ अरहर भी बोई जाती है। मामूली जमीन में बाजरा बोया जाता है। ज्वार बाजरा की कटाई दिवाली के लगभग १ माह के बाद होने लगती है। लेकिन अरहर को पकने में देर लगती है। उसको कटाई होली के बाद होती है। तिल, उर्द, मूंग को ज्वार बाजरा के ही साथ बोते और काटते हैं। कपास भी इन्हीं दिनों में बोई जाती है इसके टेंट सरदी में बीने (इकट्ठे किये) जाते हैं। पहले इस जिले में गेहूँ बहुत होता था। अब इसकी खेती कुछ कम हो गई है। गेहूँ सरदी के शुरू होते ही बोया जाता है और होली के बाद कटता है। इन्हीं दिनों में चना, मटर, सरसों और जौ को बोते हैं। चना के खेत बहुत हैं।

आने जाने के मार्ग

जिले में झांसी शहर रेल का बड़ा जंकशन है। यहां कई रेलवे लाइनें मिलती हैं। एक लाइन यहां से मानिकपुर को गई है। एक लाइन झांसी से चिरगांव और मोठ होती हुई कानपुर को गई है। एक लाइन झांसी से आगरा होती हुई दिल्ली को गई है। पर हमारे जिले में इस लाइन की लम्बाई सिर्फ १२ मील है। इसके बाद यह लाइन दतिया राज्य में घुसती है। सब से बड़ी लाइन वह है जो झांसी से ललितपुर होती हुई भोपाल को गई है।

दूसरी ओर यह सड़क सागर को गई है। झांसी से ग्वालियर को भी पक्की सड़क गई है। झांसी से ललितपुर होती हुई मरौरा को जाने वाली सड़क भी पक्की है। इसी तरह झांसी से मऊ होती हुई नौ गांव को जो सड़क जाती है वह भी पक्की है। रेलवे स्टेशनों से पड़ोस के कस्बे को मिलाने वाली सड़कें अक्सर पक्की हैं। पर कच्ची सड़कें बहुत ज्यादा हैं। वर्षा में इनमें दलदल हो जाता है। गरमी के दिनों में इन पर धूल उड़ा करती है पर गाड़ी फंसने का डर नहीं रहता है। पक्की सड़कों के रास्ते में जो नदी पड़ती है उन पर अक्सर पुल बने हैं।

व्यापार

अब से ८० वर्ष पहले मऊ—रानीपुर जिले भर में सबसे बड़ी मंडी थी। लगभग ७ लाख रुपये का आलू, रंग और सूती कपड़ा बाहर जाया करता था। यहां की छींट, चुनरी और खरुआ को लोग बहुत पसन्द करते थे। बहुत से गांवों में सुन्दर साड़ी और धोती बनती थी। झांसी की कालीनें भी मशहूर थीं। घी, दाल और दूसरी चीजें भी खूब बिकती थीं। यह सब व्यापार बंजारे लोग अपने जानवरों की पीठ पर लाद कर करते थे। पाली का पान और जंगल से शहद, बल्ली, लाख और गोंद बाहर जाता था। कुछ सामान यहां से कालपी और कुछ ग्वालियर की ओर पहुँचता था।

रेल के निकलने पर झांसी शहर की स्थिति बड़ी अच्छी हो गई। यहां दो लाइनें मिल गई। अब सब व्यापार यहां हो कर बाहर जाने लगा। छोटा मोटा व्यापार देहाती बाजारों में भी होता है। जिले में कई बड़े बड़े मेले लगते हैं। मऊ का जल विहार और ललितपुर का रथ मेला देखने के लिये हजारों आदमी आते हैं। यहां बहुत सा माल बिकता है।

इस जिले में पक्की सड़क बनाने के लिये गिट्टी या छोटा पत्थर बहुत हैं। ललितपुर में बलुआ पत्थर बहुत हैं। मकान बनाने का पत्थर झांसी, कानपुर, सागर और आगरा को भेजा जाता है। कैलगवां में ऐसा पत्थर मिलता है जिससे सुन्दर प्याले बनते हैं।

अनुमान किया जाता है कि पठार में सोना, परोना में चांदी और सोनरई में तांबा बहुत है। इसको खोजने की तयारी हो रही है।

झांसी जिले में लगभग सवालाख एकड़ जमीन बन से घिरी हुई है। इसमें साखू तेंदू आदि पेड़ों से मजबूत लकड़ी मिलती हैं। घास भी बहुत हैं। बहुत से लोग बन में लकड़ी का काम करते हैं। ईंधन इकट्ठा करने और लाख, गोंद, कत्था और शहद छुड़ाने में भी बहुत से लोग लगे हैं।

इस जिले में केवड़ा और खस बहुत है पर उससे सुगन्धित तेल निकालने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। खस से केवल (गरमियों में) टट्टियां बनाई जाती है। इस जिले में लगभग एक लाख मन कपास होता है। इसको ओटने के लिये मऊ में एक मिल है। पर अधिकतर कपास हाथ से ओटा जाता है। हाथ से कातने बुनने का काम कई जगह होता है। १३ मन से अधिक सूत हर साल काता जाता है। यहां के कुर्ते बुनाई के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं। पर कोरी लोग अधिक हैं। रंगाई और छपाई का काम भी कई जगह होता है। कुछ लोग दरी बुनते हैं।

लोग, धर्म, भाषा पेशे

जिले में ७,७५,००० मनुष्य रहते हैं। जिले में ९४ फीसदी हिन्दू पांच फीसदी मुसलमान और शेष इसाई, पारसी और जैन हैं।

हिन्दुओं में चमारों की संख्या सबसे अधिक है। वे जिले भर में फैले हुए हैं पर मऊ और महरानी में उनके घर बहुत हैं। वे अक्सर मजदूरी करते हैं उनके पास खेत बहुत कम हैं।

कुछ दक्षिणी और मारवाणी ब्राह्मण हैं। पहले इनका यहां राज था। अब वे जमींदार और किसान हैं। जिले की लगभग ¼ जमीन इनके अधिकार में है। इसके बाद अहीर और गड़रियों का स्थान है। अहीर लोग गाय भैंस पालते हैं। गड़रिया भेड़ बकरी चराते हैं। राजपूत बड़े बड़े जमींदार और किसान हैं। पहले वे यहां राज करते थे। मरोठा तहसील में कुर्मी और घोष ठाकुरों की जमींदारी अधिक है।

आधे से अधिक मुसलमान लोग खेती करते हैं। कुछ धुना और जुलाहे हैं।

यहां की भाषा बुन्देली या बुन्देलखण्डी हिन्दी है। पढ़े लिखे लोग पश्चिमी हिन्दी या उर्दू बोलते हैं। कुछ मरहठों के घरों में मरहठी बोली जाती है। अब से २०० वर्ष पहले कुछ कंघी बनाने वाले लोग अजमेर से आकर यहां बस गये। वे बंजारी बोलते हैं।

बहुत पुराने समय में इस जिले के बड़े भाग में जङ्गल था। पर देवगढ़ और दूसरे स्थानों में पुराने शिलालेख मिले हैं। इनसे पता चला है कि अब से पन्द्रह सौ वर्ष पहले यहां मौर्यवंश का राज्य था। इसी समय हूण लोगों का हमला हुआ। छठी सदी में यहां राजा हर्षवर्द्धन ने राज्य किया।

पहले इसका नाम जजभुक्ति था। यहीं नवी सदी में राजा भोज का राज्य हुआ। इसके बाद चन्देले राजा हुए। इन्होंने कन्नौज के राजा को भी हरा दिया। जब पञ्जाब के राजा जयपाल पर अफगानिस्तान के सुल्तान ने हमला किया तो पञ्जाब के मदद के लिये चन्देलों ने एक फौज भेजी थी। लेकिन मुसलमान मजबूत होते गये। जब कन्नौज के राजा ने मुसलमानों की अधिनता स्वीकार कर ली तो यहां के लोग कन्नौज वालों से बड़े नाराज हुए। इससे यहां भी मुसलमानी हमला हुआ।

यहां का राजा परमाल बहुत मशहूर है। पृथिवीराज चौहान और उसके बीच में पहूज नदी के पास बड़ी भारी लड़ाई हुई। ललितपुर के पास मदनपुर गांव में एक ऐसा पत्थर मिला है जिस पर पृथिवीराज ने अपनी जीत का हाल खुदवाया था लेकिन अब से सात सौ वर्ष पहले सुल्तान कुतुबुद्दीन ने इस जिले को अपने राज में मिला लिया। इस तरह चन्देली राज्य का अन्त हो गया। इन चन्देले लोगों ने बहुत से ताल, मन्दिर और महल बनवाये थे। उनके निशान अब तक बाकी हैं। कुछ ही समय में वीर बुन्देले लोग उठे। इनका पहला सरदार ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये छुरी लेकर अपने को बलिदान करने लगा। उसका एक बूँद खून जमीन पर गिरा कि उसका हाथ रोक लिया गया। वह फिर राजा हो गया। पर लोहू का बूंद नीचे गिरने के कारण उसके वंश के लोग बुन्देले कहलाने लगे।

बाहरी हमले होने पर भी चन्देले लोग बड़े बलवान हो गये। अन्त में अकबर ने बुन्देले राजपूतों को अपने वश में कर लिया।

अब से २०० वर्ष पहले यहां के राजा छत्रसाल ने मरहठों की मदद से मुगलों के दांत खट्टे कर दिये। अब मरहठों का राज्य तेजी से बढ़ने लगा। उनके एक सरदार नारूशंकर ने झांसी शहर को बसाया और किले को मजबूत बना दिया। आगे चलकर १८०० ई० तक इधर का मरहठा राजा पूना दरबार से अलग होकर स्वाधीन हो गया। इसी बीच जो अँग्रेजी सौदागर हिन्दुस्तान में व्यापार करने आये थे वे राजा बन गये। उनका राज बढ़ते बढ़ते धसान नदी तक फैल गया। इस तरह १८१७ ई० में नारूशंकर का नाती (लड़के का लड़का) अंग्रेजों के अधीन हो गया। होते होते १८५३ में इस खानदान का आखिरी राजा बिना सन्तान के मर गया। झांसी का राज अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। विधवा रानी लक्ष्मीबाई को ५००० रू० साल की पेन्शन बंध गई।

तीन चार वर्ष में यहां गदर हुआ। अंग्रेज अफसर मार डाले गये बागियों ने राज लक्ष्मीबाई को सौंपा। कुछ अंग्रेज बरेठा में कैद कर लिये गये और बानपुर का राजा चन्देरी का मालिक बन गया। उसने बानपुर में नये ढंग का तोपखाना तैयार करवाया। झांसी की रानी ने पडवाहा मऊरानी आदि स्थानों पर अधिकार कर लिया। रानी बड़ी बहादुर निकली उसका राज बेतवा और धसान नदियों के बीच में सब कहीं फैल गया। फिर वह बागी नाना साहब, तांतिया टोपी और बानपुर के राजा से मिल गई।

इतने में अंग्रेजी फौज बढ़ने लगी। इसे रोकने

के लिये तांतियाटोपी ने रास्ते के जंगल में आग लगा दी। लेकिन कुछ ही समय में इस फौज ने झांसी को घेर लिया और ले लिया। रानी मरदाना पोशाक पहन कर कालपी की ओर चली आई। लड़ाई कई महीने तक चलती रही लेकिन आपस की फुट से बागी हार गये। सब कहीं अंग्रेजी राज्य हो गया। तब से अब तक जिले में कोई खास घटना न हुई।

राज-प्रबन्ध

जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ्तर झांसी शहर में है। यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह जिले का दौरा भी करता है। उसका एक सहायक ललितपुर में रहता है। तीन डिप्टीकलक्टर और असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेट उसके काम में हाथ बटाते हैं। झांसी छावनी के लिये एक कण्टून मजिस्ट्रेट अलग होता है। छावनी के सारे मुकदमे उसी के पास जाते हैं।

कलक्टर को पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सबसे बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं। ये लोग अपने अपने थाने की देखभाल करते हैं। इसको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, कलक्टर ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टर से मदद मिलती है। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी कानूनगो नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और शिक्षा का काम म्युनिसिपेलटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की शिक्षा सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

झाँसी-तहसील

बबीना एक बड़ा गांव है। ललितपुर से झांसी जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। झांसी शहर यहां से १७ मील दूर है। गांव में तीन बड़े तालाब हैं। यहां एक स्कूल, थाना और डाकखाना है। इसी नाम की रेलवे स्टेशन गांव से २ मील दूर है। लेकिन यहां तक पक्की सड़क जाती है।

बड़ा गांव बेतवा नदी के बायें किनारे पर बसा है। इसके पास ही फौजी कैम्प है। लेकिन बरसात में इधर बाढ़ आ जाती है।

बड़ुवा सागर—उस सड़क पर बसा है जो मऊ से झांसी को जाती है। झांसी शहर यहां से १२ मील दूर है। झांसी-मानिकपुर लाइन यहां से सिर्फ दो मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से ½ मील पूर्व की ओर बड़ी झील है। अब से २०० वर्ष पहले इस झील और इसके किनारे पर बसे हुए किले को ओरछा के राजा उदेत सिंह ने बनवाया था। इसी के पानी से सिंचाई हो जाने के कारण यहां तरह तरह की तरकारी उगाई जाती है। यह झांसी शहर में बिकने जाती है। यहां अजायब घर बनाने के लिये महोबा आदि स्थानों से मूर्तियां मंगाकर इकट्ठी की गई थीं। इसके पास ही कई मठों के खंडहर हैं।

बिजोली इस गांव में होकर झांसी से सागर को पक्की सड़क जाती है। इसके पास ही सिंचाई का एक ताल है। किनारे पर एक पुराना चन्देरी मन्दिर है।

रकसा गांव झांसी से ७ मील दूर है और झांसी-सीपरी सड़क पर पड़ता है। गांव के पास ही ईंटों का बना हुआ पुराना टूटा फूटा किला है। अच्छी जमीन को नालों के कटने से बचाने के लिये यहां कई प्रयत्न हुए।

झांसी शहर कलकत्ता और बम्बई से लगभग बराबर दूरी पर है। यह एक बड़ा रेलवे जंकशन है। यहां से एक लाइन मऊ हरपालपुर, महोबा, बांदा और करवी होती हुई मानिकपुर को गई है। दूसरी लाइन उत्तर की ओर कानपुर को और दक्षिण की ओर इटारसी को गई है। एक लाइन आगरा को जाती है। यहां से कई पक्की सड़कें भी पड़ोस के शहरों को जाती हैं। कच्ची सड़कों का तो जाल सा बिछा हुआ है।

लेकिन यह शहर बहुत पुराना नहीं है। अब से

लगभग चार सौ वर्ष पहले बेंगरा पहाड़ी में नीचे अपने दो घर बना लिये थे। जिस पहाड़ी पर किला बना है उसी का नाम बांगरा है। उस समय यहां किला न था। वे पहाड़ी के ऊपर बैठकर दूर तक अपने ढोरों को देख सकते थे। फिर ८० वर्ष बाद ओरछावाद के वीरसिंह महाराज ने यहां किला बनवा दिया। किले के पड़ोस में रहने से जान माल की रक्षा होती थी इसलिये किले के नीचे अब एक बड़ा कस्बा हो गया। अब से ३०० वर्ष पहले यह किला मुगलों के हाथ में चला गया। लेकिन वे इसे बहुत दिनों तक न रख सके। १०० वर्ष बाद मरहटों ने इस किले को उनसे छीन लिया। उन्होंने इसे बहुत मजबूत भी बना लिया। अब से लगभग सौ वर्ष पहले मरहठों ने लक्ष्मी तालाब, मन्दिर और शहर की चार दीवारी बनवाई। गदर से तीन चार वर्ष पहले झांसी का किला और शहर अंगरेजों के हाथ में आया। गदर में इनकी हालत बड़ी नाजुक हो गई। १८६० ई० में यह शहर और किला सिन्धिया महाराज को दे दिया गया। ग्वालियर के किले में अंग्रेजी फौज रहने लगी। १८८५ ई० से फिर अदल बदल हो गया। झांसी में अङ्गरेजी फौज रहने लगी और ग्वालियर पर सिन्धिया महाराज का अधिकार हो गया। तब से अब तक यहां बराबर अङ्गरेजी शासन है। किले के भीतर शिवरात्रि को लोग मन्दिर का दर्शन करने जा सकते हैं।

कई रेलों और सड़कों का मेल होने से झांसी शहर का कारबार बहुत बढ़ गया है। पास ही रेलवे का कारखाना है जहां रेल के डब्बों की रंगाई, मरम्मत और बनाने का काम होता है। यह शहर जिले भर की राजधानी है। इसलिये यहां बड़ी बड़ी कचहरी और दफ्तर हैं। जिले भर के बड़े बड़े मुकद्दमे यहीं तय होने जाते हैं। यहां एक कालेज और कई स्कूल हैं। यहीं बेतवा नहर का बड़ा दफ्तर है। यहां जी० आई० पी० रेलवे का एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसमें लगभग चार हजार आदमी काम करते हैं। यहां कालीन भी अच्छे बनते हैं। यहां एक इण्टर (Gourn Inent Iuter) कालेज और तीन हाई स्कूल हैं।

कोच भवन

यह गांव झांसी से ४ मील पूर्व की ओर कानपुर जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पास सिंचाई का एक पक्का बड़ा ताल है।

मोठ

मोठ कस्बा झांसी से कानपुर जाने वाली पक्की सड़क से लगा हुआ बसा है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना स्कूल और रेलवे स्टेशन है। पड़ोस में ही गुसाइयों के बनवाये हुए किले के खंडहर हैं।

बघैरा में एक पहाड़ी के ऊपर एक छोटा मन्दिर है। यहां दो कच्ची सड़कें मिलती हैं।

चिरगांव पहले बुन्देले सरदारों के हाथ में था। गदर के बाद उनकी जागीर छिन गई और किला तोड़ दिया गया। फिर भी यहां का व्यापार कुछ कुछ बढ़ रहा है। इराछ गांव बेतवा नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। नदी को पार करने के लिये यहां एक घाट है। यहां होकर एक पक्की सड़क झांसी को जाती है। झांसी शहर यहां से ४२ मील दूर है। गांव के बाजार में फसली चीजों को छोड़कर छींट और चुनरी भी बिकने आती है। चुनरी लाल या पीली रंगी होती है। इसके बीच में सुन्दर बेल बूटे रंगे रहते हैं। औरतें चुनरी ओढ़ना बहुत पसन्द करती हैं।

मुसलमानी समय में यह कस्बा सूबा आगरा की एक सरकार की राजधानी थी। यहां बहुत पुराने खंडहर हैं। यहां की मस्जिदों और दूसरी इमारतों में इनसे कहीं अधिक पुराने हिन्दू राजाओं के समय के खम्भे और पत्थर लगे हुए मिलते हैं। पर अब वे अधिकतर खंडहर हैं।

पूंछ गांव झांसी से ३० मील और मोठ से ६ मील दूर है। झांसी—कानपुर सड़क यहां होकर जाती है। पास ही रेलवे स्टेशन है। यहां काफी बड़ा बाजार लगता है। यहीं बहुत मोटी कच्ची दीवारों से घिरा हुआ पुराना किला है।

भसनेह—यह गांव गरौठा से आठ मील दूर है। इसके पास ही बन है। यहां से १२ मील उत्तर की ओर एक पहाड़ी पर एक पुराना किला

बना है। गदर के दिनों में भसनेह के ठाकुरों ने किले पर अपना अधिकार कर लिया था।

गरौठा गांव धसान नदी से ७ मील दूर लखेरी नाले के किनारे बसा हुआ है। इसके अड़ोस पड़ोस में कटी फटी जमीन और जंगल है। वैसे तो यहां से झांसी और दूसरे कस्बों को सड़क गई है। पर बरसात में रास्ते के नालों को पार करना मुश्किल हो जाता है। उन दिनों लोग मऊ रेलवे स्टेशन पर गाड़ी में सवार होकर झांसी पहुँचते हैं।

गुरसराय—यह कस्बा बेतवा और धसान नदियों के बीच में समतल जमीन पर बसा है। यहां से एक पक्की सड़क गरौठा को गई है। कच्ची सड़क मोठ और दूसरे गांवों को भी गई है। गांव के आधे मकान पक्के बने हैं। बीच में बाजार है। पास ही किला और पक्का ताल है। पहले मिर्जापुर की ओर से आने वाली गुड़ का व्यापार बहुत होता था। इसलिये इसका नाम गुर (गुड़) सराय पड़ गया। गरौठा तहसील में सबसे बड़ा कस्बा है। यहां पुराने समय का बना हुआ एक किला है जिसमें यहां के सबसे बड़े जमींदार रहते हैं ये पेशवा वंश के जागीरदार हैं।

मऊ तहसील

मऊ नगर झांसी से ३६ मील दूर नौगांव जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यहां से उत्तर की ओर गुरसराय को और दक्षिण की ओर टीकमगढ़ को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें गरौठा और लहचूरा को गई हैं। अक्सर इसे मऊ रानीपुर कहते हैं। लेकिन रानीपुर गांव यहां से ४ मील पश्चिम की ओर सुपरार और सुखनई नदियों के संगम पर बसा है। सुखनई नदी मऊ कस्बे को स्टेशन से अलग करती है। गांव के मकान बीच बीच में पेड़ होने से बड़े सुडौल मालूम होते हैं। यहां कई मन्दिर हैं। चौड़ी पक्की सड़क के दोनों ओर दुकानें हैं। एक भाग में उनका रंग कुछ लाल है। इसी से बाजार का नाम ही लाल बाजार हो गया। मरहठों ने यहां कुछ कुछ किलाबन्दी करवाई थी। लगभग सौ वर्ष पहले पिंडारियों ने इसे एकदम लूट लिया था। गदर में भी यहां के लोगों को बड़ी हानि उठानी पड़ी।

फिर भी यहां काफी व्यापार होता है। यहां का खरूआ, पतरी, चाती, और जमरूदी कपड़ा बहुत मशहूर है। यहां से चना, दाल और घी बाहर को बहुत जाता है। शक्कर, नमक, कपड़ा और गेहूँ बाहर से आता है।

भादों के महीने में सुखनई नदी के किनारे यहां जल विहार मेला लगता। यहां के मेले में गाय-बैल और दूसरे जानवर भी बहुत बिकते हैं।

अड़जार गांव के दक्षिण में एक बड़ी झील है। इससे खेत सींचे जाते हैं। कहते हैं कि सन् १६७१ ई० में ओरछा के सुजन सिंह ने इसे बनवाया था। इसके पक्के किनारों के भीतर ५८ मील का पानी बह आता है। इस में एक बांध मरहठों ने तयार कराया था।

कटेरा कस्बा मऊ से १४ मील और झांसी से ३० मील दूर है। यहीं मिट्टी के बर्तन कुल्हाड़ी, बसूला आदि अच्छे बनते हैं।

घाट कोटरा धसान नदी के पास है। यह गांव मऊ से १२ मील और झांसी से ५२ मील दूर है। जैसा इसके नाम से ही जाहिर है। यहां नदी पार करने के लिये १ घाट है।

घाट लहचुरा धसान के किनारे पर झांसी से ५० मील और मऊ से १० मील दूर है। नदी को पार करने के लिये यहां एक घाट है। लेकिन यहां से ३ मील दूर धसान नदी के ऊपर झांसी मानिकपुर रेलवे का पुल है। लहचुरा के पास ही सिंचाई के लिये एक बड़ा (२२१० फुट लम्बा) बांध बना हुआ है।

रानीपुर—अब से ढाई सौ वर्ष पहले ओरछा-नरेश की विधवा रानी हीरादेवी ने इसे बसाया था। इसीलिये इसका यह नाम पड़ गया। यह सुखनई नदी के बायें किनारे बसा है। नदी की रेतीली तली में साफ पानी बहता है पश्चिम की ओर बाजार है। बाहर मरहठों का बनवाया ईंट का पुराना किला है। पर यह गांव धीरे धीरे घट रहा है।

सकरार—एक छोटा गांव है। यह झांसी और मऊ से बराबर की दूरी है। उत्तर-पश्चिम

फौज भेजी गई थी। लेकिन यह फौज भी बुन्देलों से मिल गई और बागी बन गइ।

बांसी गांव उस पक्की सड़क पर बसा है जो ललितपुर से झांसी को गई है। यह ललितपुर से सिर्फ १३ मील दूर है। लेकिन झांसी यहां से ४३ मील दूर है। यहां पहुँचने के लिये जखौरा स्टेशन पर उतरते हैं जो गांव से सिर्फ पांच मील दूर है यहां हर बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। कोई तीन सौ वर्ष पहले यहां के राजा कृष्णराव ने एक किला बनवाया था। अब उस किले में डिस्ट्रिक्ट (जिले) का बंगला है।

बांट (Bant) गांव जखलोन रेलवे स्टेशन से सिर्फ ४ मील दूर है (लेकिन बरसात में शाहजाद नदी में बाढ़ आने से स्टेशन तक पहुँचना कठिन हो जाता है। १८६८ के अकाल में यहां एक सुन्दर सिंचाई का ताल बनवाया गया था। ताल के ऊपर चुआन झरना है। इसके पास ही शिवरात्रि को महादेव का मेला लगता है।

बिजरोथा लोग कई छोटे छोटे गांवों में बसे हैं। इसी नाम की स्टेशन यहां से २ मील दूर है। कहते हैं कि यहां बारी बारी से भील, गोंड, चन्देल और बुन्देल लोगों की बस्तियां बसीं। यहां से दो मील दूर स्टेशन पर बांसों की मंडी है।

चांदपुर के पास कई पुराने जैन मन्दिरों के खंडहर हैं। पास ही बहुत से पुराने मन्दिर हैं। एक जगह ८ सौ वर्ष का पुराना लेख खुदा हुआ है।

देवगढ़ दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां से कुछ ही दूर बेतवा के किनारे करनाली किला बना हुआ है। पास ही जैनियों के १६ मन्दिर हैं। मैदान में प्रसिद्ध दशावतार विष्णु (दस अवतारों) का मन्दिर है। एक मन्दिर पर राजा भोज के समय का लेख खुदा हुआ है।

धौरी गांव ललितपुर से १८ मील दक्षिण की ओर विन्ध्याचल पठार पर बसा है। कहते हैं कि पुराने समय में जब जरासन्ध ने मथुरा पर चढ़ाई की तो श्रीकृष्ण और बलराम दौड़ कर यहां छिप गये इसी से इसका नाम दौरी पड़ गया। इस गांव के पड़ोस में जंगल बहुत है। दो मील की दूरी पर हरदारी से पत्थर निकलता है। इसी से आजकल यहां से लकड़ी और पत्थर बाहर को भेजे जाते हैं।

दुधई ललितपुर से ठीक दक्षिण में आजकल यह एक छोटा गांव है। पर इसके पड़ोस के खण्डहरों को देखने से मालूम होता है कि पुराने समय में यह बड़ा भारी शहर रहा होगा। झुङ्गा नाला के आर पार बांध बन जाने से नीचे एक चोर चुआ (सोता) निकल आया। इससे यहां एक झील तयार हो गई जो सिंचाइ के काम आती है। तालाब के पूर्व में जंगल से ढका हुआ वामन का मन्दिर है।

हंसपुर—ललितपुर से १६ मील उत्तर की ओर एक छोटा गांव है। पर कहा जाता है कि पुराने समय में यह गोंड और चन्देलों की राजधानी रह चुका है।

महरोनी—महरोनी ललितपुर के दक्षिण पूर्व में २३ मील की दूरी पर स्थित है। टीकमगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और टाउन स्कूल है। हर सोमवार को यहां काफी बड़ा बाजार लगता है जिस किले में आजकल थाना और तहसील है उसे चन्देरी के राजा मानसिंह ने अब से लगभग दो सौ वर्ष पहले बनवाया था। फिर यह सिन्धया महाराज के हाथ लगा। ओर्छा के राजा ने इसको लेने की कोशिश की लेकिन वे उसे ले न सके।

सुनरई गांव ललितपुर से ३६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहाँ महाराज छत्रसाल के नाती (लड़के का लड़का) का बनवाया हुआ लगभग २०० वर्ष का पुराना किला है। गदर में यह बहुत कुछ टूट गया। यहीं कुछ पुराने मन्दिर हैं पास में तांबा निकलता है।

महोरोनी तहसील

बानपुर गांव जमनी नदी से सिर्फ ढाई मील है। यहां से एक कच्ची सड़क टीकमगढ़ को और दूसरी ललितपुर को जाती है। पुराना महल टूटी फूटी हालत में है। गदर के दिनों में राजा अङ्गरेजों से लड़ा था। इसी से उसका राज छिन गया। पहले यहां का पान बहुत मशहूर था।

बार—यह गांव ललितपुर से १७ मील दूर है।

यह पहाड़ी के पूर्वी ढाल पर बसा है। यहीं बांध बना कर सिंचाई का ताल तयार किया गया। बांध के पास केवड़ा के पेड़ हैं पहाड़ियों पर बने हैं जिसके बीच में बुन्देले राजपूतों की पुरानी इमारतों के खंडहर हैं।

धौरी सागर गांव मदौरा से ८ मील और ललितपुर से ४२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बसा है। यहीं महाराज छत्रसाल ने मुगलों की शाही सेना को हराया था। सिंचाई के ताल के ऊपर बसा हुआ गांव बड़ा सुन्दर मालूम होता है।

गिरार गांव धसान नदी में किनारे एक पहाड़ी के ऊपर बसा है। यहां कई पुराने मन्दिर और किले के खंडहर हैं।

मदौरा गांव ललितपुर के दक्षिण पूर्व में ३४ मील की दूरी पर बसा है। यहां एक स्कूल, थाना और डाकखाना है। गांव दक्षिणी सिरे पर मरहठों का बनवाया हुआ एक टूटा किला है। इसके नीचे सिंचाई का एक ताल है।

सड़मार—मदौरा से ३ मील उत्तर और ललितपुर से ३१ मील दक्षिण पूर्व की ओर बसा है। यहां कई जैन मन्दिर हैं। एक सती शिला के ऊपर सम्वत १८१३ और बादशाह आलम गीर का नाम खुदा हुआ है।

जालौन

स्थिति और सीमा

यमुना नदी उत्तर की ओर सब कहीं जालौन जिले को घेरे हुए है। इटावा या कानपुर जिले दूसरी ओर हैं। पश्चिम की ओर पहुज नदी जिले को ग्वालियर राज्य से अलग करती है। सिर्फ उत्तरी कोने के पास दतिया राज्य की जमीन जिले के अन्दर घुस आई है। पहुज और सिन्ध नदी का संगम इसी राज्य में है। सिन्ध नदी कुछ ही दूर आगे यमुना में मिल जाती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बेतवा नदी जिले को झांसी और हमीरपुर के जिलों से अलग करती है। इस जिले की अधिकतर सीमा नदियां बनाती हैं। इन नदियों को पार करने पर ही हम दूसरे जिले में पहुँचते हैं। लेकिन दक्षिण-पश्चिम की ओर कोई नदी नहीं है। पूर्व की ओर जालौन जिले और बावनी राज्य के बीच में कोई नदी नहीं बहती है। फिर भी हद बनी हुई है।

इस जिले में पहाड़ नहीं हैं। सिर्फ उरई तहसील में सैयद नगर के पास दो पहाड़ी टीले हैं। और सब कहीं प्रायः समतल जमीन है। यमुना बेतवा और पहुज नदियों के पास ऊंचे किनारे हैं। बीच का भाग नीचा है। इस तरह इस जिले की बनावट एक कटोरे की तरह है जिसके किनारे ऊंचे हों और बीच का भाग नीचा हो। नदियों के पास वाले किनारे बहुत कट फट गये हैं। वहां गारों (खडडों) का जाल सा बन गया है। ये खडड बरसाती पानी से कटते कटते नदी के किनारे से एक दो मील भीतर की ओर पहुँच गये हैं।

जिले के ढाल का ठीक ठीक पता बेतवा का नहरों से चल जाता है। कुठौंद और हमीरपुर की नहरें बहुत टेढ़ी बनी हैं। बात यह है कि पानी सदा ऊंची जमीन से नीची जमीन की ओर बहता है। इसलिये जिधर को अच्छा ढाल मिला उधर ही नहर भी खोदी गई।

बीच के निचले भाग का बरसाती पानी बहा ले जाने का काम नौन और मेलुंगा नाम की दो छोटी नदियां करती हैं। इनका रास्ता भी सीधा नहीं है। उनका बहाव उत्तर-पूर्व की ओर है। बीच वाले हिस्से में वे एक दूसरे से बहुत दूर हो जाती हैं। लेकिन जब यमुना नदी आठ मील रह जाती है तो वे एक दूसरे से मिल जाती हैं। इस तरह यमुना में दोनों का मिला हुआ पानी गिरता है। जहां इनका और यमुना का संगम है वह स्थान भी काल्पी से ऊपर आठ ही मील दूर है। बड़ी नदियों की तरह इनके किनारों पर भी बड़े गहरे खड्ड या गार बन गये हैं। इससे काल्पी परगना बहुत कटा फटा दिखाई

देता है। इन्हीं खेतों को बहुत सी अच्छी मिट्टी भी बह आई।

जिले की बाहरी सीमा पर सब कहीं खड्डों या नारों की पेटी है। इधर बीच बीच में एक आध अच्छे खेत हैं। लेकिन अधिकतर उजाड़ टीले हैं जिन पर कंकड़ बिछे हुए हैं।

भरे खेत नजर आते हैं। केवल कहीं कहीं छोटे छोटे जङ्गल हैं। ऊंचे टीलों पर लाल ईंट और खपड़ैल वाले गांव मिलते हैं। गांव दूर दूर बसे हैं। किसी किसी गांव के पास पुराने किले के खंडहर दिखाई देते हैं। उत्तर की ओर मार और कावर की काली जमीन छिप जाती है। पड़वा मिट्टी नजर आने लगती
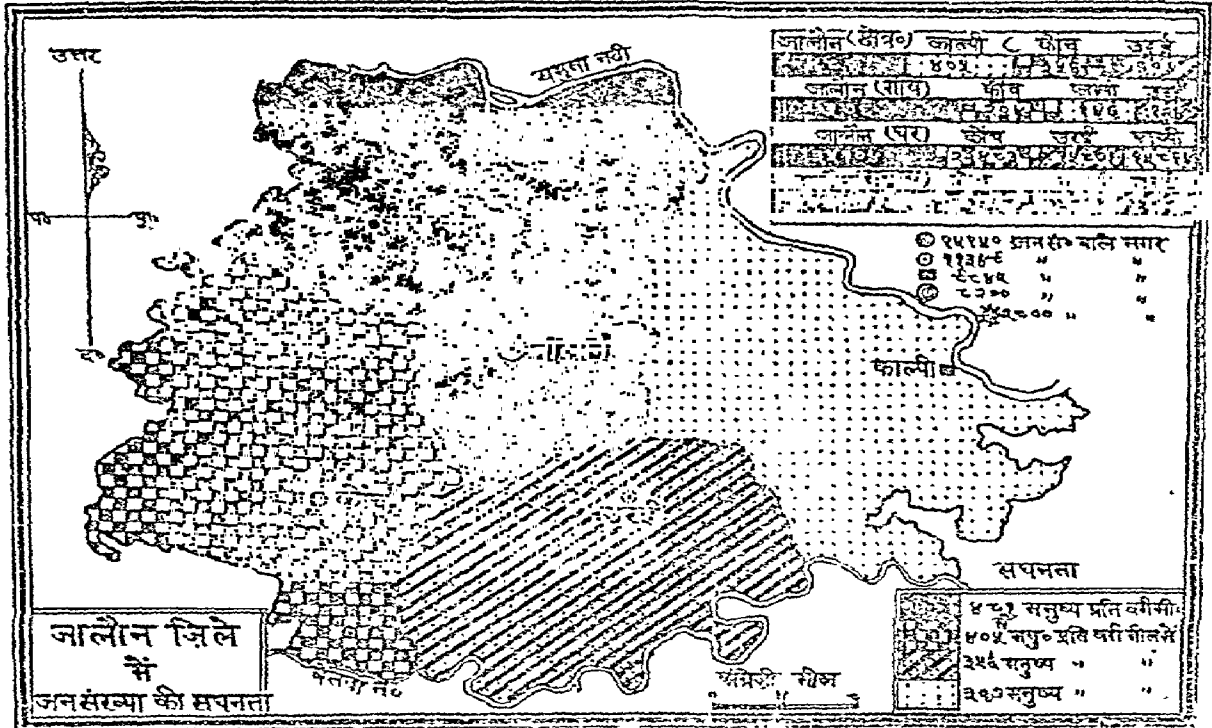
इसके ऊपर हलके रंग की बड़ी जमीन मिलती है। यहां की अच्छी मिट्टी बरसाती पानी के साथ नीचे बह गई अधिक आगे बीच के निचले भाग की ओर बढ़ने पर जमीन का रंग धुंधला हो जाता है। इस जमीन को किसान लोग कावर कहते हैं।

अन्त में काली मिट्टी मिलती है जिसे मार कहते हैं जिले के बीच और दक्षिणी भाग में सब कहीं कावर और मार की धुंधली काली मिट्टी मिलती है। औसत से १० बीघे में ७ बीघे जमीन काली है। १ बीघा पड़वा और २ बीघे राकड़ जमीन है।

यह जिला प्राय: सब कहीं बारीक मुलायम मिट्टी से बना है। पहाड़ों की पथरीली जमीन का यहां नाम नहीं है। बीच वाले हिस्से में सब कहीं हरे

है। इधर खेती अच्छी है। गांव पास पास हैं। इनके अड़ोस पड़ोस में महुआ और आम के बगीचे हैं।

जिले में सोना चांदी आदि खनिज पदार्थ नहीं हैं। सिर्फ बेतवा नदी के पास मकान बनाने के लिये कुछ पत्थर मिलता है। सड़क कूटने के लिये कंकड़ बहुत जगह मिलता है।

मार की काली जमीन बड़ी उपजाऊ होती है। इसमें हर साल बिना खाद और सिंचाई के गेहूँ और चना की मिली हुई फसल अच्छी होती है। लेकिन अगर ज्यादा पानी बरस जावे तो इसमें हल चलाना मुश्किल हो जाता है। इसमें कांस उग आते हैं। जिनको अलग करना कठिन हो जाता है। पड़वा की जमीन चिकनी मिट्टी और बालू के मिलने से बनती

है। यह हलके रंग की होती है। लेकिन कावर मिट्टी दोनों के बीच की होती है। इसका धुंधला रंग न तो माड़ की तरह गहरा काला होता है न पड़वा की तरह सफेद होता है।

इस जिले में सब मिलकार लगभग बीस फीसदी जमीन ऐसी है जहां कुछ नहीं पैदा होता है। २ फीसदी जमीन ऐसी है जहां कांस, बबूल, ढाक और करौंदा का जङ्गल है। नीम, महुआ और आम के पेड़ भी जिले की एक फीसदी जमीन घेरे हुए हैं।

नदियाँ

यमुना नदी—सिंतौरा गांव के पास जालौन जिले को पहले पहल छूती है। यहीं सिन्ध नदी इसमें मिलती है। यमुना नदी हमारे जिले की उत्तरी सीमा बनाती है। अगर हम इस जिले में यमुना के किनारे १३ मील प्रतिदिन की चाल से लगातार चलना शुरू करें तो हमको ठीक चार दिन लग जावेंगे। शेर गढ़ घाट के पास जालौन से औरैय्या जाने वाले मुसाफिर मिलेंगे।

ये लोग अपना सफर पैदल बैलगाड़ी या मोटर से पूरा करते हैं। वे यमुना को नाव से पार करते हैं। लेकिन काल्पी में एक पक्का पुल है जिस पर होकर उरई से कानपुर को रेल जाया करती है। जाड़े और गरमी के दिनों में यमुना नदी कहीं कहीं पांज हो जाती है। तभी मुसाफिरों के लिये काल्पी में नाव का पुल तैयार कर दिया जाता है। किनारों पर कई नाले हैं। इनसे बहुत से खड्ड बन गये हैं।

बेतवा नदी—६० मील तक जिले की दक्षिण पूर्वी सीमा बनाती है। यह नदी जिले को झांसी और हमीरपुर से अलग करती है। इसकी तली में यहां पत्थर नहीं है। पर बरसात में यह नदी काफी तेजी से बहती है। इन दिनों तुम इसे बिना नाव के पार नहीं कर सकते। गरमी के दिनों में इसमें इतना कम पानी रह जाता है कि इसे पार करने के लिये नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। कुछ दूर तक इसके दोनों किनारे ऐसे ऊंचे नीचे और कटे हैं कि उन पर खेती नहीं हो सकती है।

पहुज नदी—बहुत छोटी है। यह नदी ग्वालियर राज्य से निकलती है और झाँसी जिले में होकर इस जिले में आती है। यह जिले के बीच में बहती है। इसकी ताली अक्सर पथरीली और रेतीली है। वर्षा ऋतु में जब इसमें अचानक बाढ़ आ जाती है तब इसे पार करना कठिन हो जाता है। बहुत दूर तक इसके किनारों को नालों और खड्डों ने काट दिया है। इसलिये सिंचाई के काम नहीं आती है।

पशु

जालौन जिले में कई तरह के जानवर रहते हैं। चीता बहुत कम पाया जाता है। वह कभी कभी पश्चिम की रियासतों से भाग कर यहां आ जाता है। बड़ी बड़ी नदियों के खड्डों में तेंदुआ बहुत मिलते हैं। उन्हीं के पड़ोस में भेड़िया और वन बिलाव भी रहते हैं। काली मिट्टी के मैदान में हिरणों के झुण्ड अक्सर चरते दिखाई देते हैं। सियार और लोमड़ी नदियों के आस पास बहुत हैं। जङ्गली सुअर बहुत सी जगह किसानों के खेतों को नुकसान पहुँचाते रहते हैं। खरगोश, सेही और सांप सब कहीं पाये जाते हैं। बड़ी बड़ी नदियों में मगर, मछली और कछुये रहते हैं।

इस जिले के ढोर कुछ नाटे होते हैं। कोई कोई जमींदार बाहर से बढ़िया बैल मँगाते हैं। ढोर खरीदने का सबसे बड़ा बाजार कूंच में लगता है। अमर बेड़ा और दूसरे बाजारों में भी बैल बिकते हैं। यहां अक्सर अकाल पड़ने के कारण बैल कम रह गये। जो बचे वह अच्छे न रहे। घोड़े भी बाहर से आते हैं। मालदार पट्टीदार उन पर चढ़ा करते हैं। घोड़े बोझ ढोने के काम आते हैं।

इस जिले में घास की अधिकता होने से भेड़ बकरी भी बहुत हैं। गूजर गड़रिया और अहीर लोग इन्हें बहुत पालते हैं। वे उनका दूध यहीं खर्च करते हैं और घी जिले के बाहर भेजते हैं।

जलवायु

इस जिले में होली के कुछ ही दिन बाद गरमी पड़ने लगती है। एक दो महीने में खेतों में हरियाली का नाम नहीं रहता है। सभी घास झुलस जाती है। हवा आग की तरह गरम चलती है। इसमें धूल भी खूब मिली रहती है। इन धूल भरी आंधियों के आने

पर कुछ ठंडक पड़ने लगती है। फिर पानी बरसता है। कुछ दिन लगातार वर्षा के बाद फिर बाद में आसमान साफ हो जाता है। यहां कभी बहुत कम पानी बरसता है। इससे कोई फसल नहीं उग पाती है। सब कहीं अकाल पड़ता है लोग भूखों मरने लगते हैं। जब कभी बहुत अधिक पानी गिरता है तो भी काली जमीन को बहुत नुकसान पहुँचता है।

सिंचाई

जिले में पानी बहुत गहराई पर मिलता है। कुएँ पन्द्रह बीस गज गहरे होते हैं। बीच के भाग में तीस गज या इससे भी अधिक गहरे कुएं होते हैं। इतने गहरे कुओं से पानी खींचकर खेत सींचना आसान नहीं है। इसीलिए सिंचाई के कुएँ कम हैं। ताल भी अधिक नहीं हैं। नहर की सिंचाई बड़े काम की है। बेतवा नहर झांसी जिले से मिलती है। आगे बढ़ने पर इसकी दो शाखायें हो गई हैं। पश्चिमी शाखा कुठौंद कहलाती है। कुठौंद नहर दक्षिण पश्चिम की ओर से आती है। जिले में इस नहर का पूरा मार्ग ४४१ मील लम्बा है। पूर्वी शाखा इंगोई के पास हमारे जिले में घुसती है। इसका समूचा मार्ग ८३ मील लम्बा है। यह अन्त में हमीरपुर के पास अपना फालतू पानी यमुना में गिरा देती है।

जिले में इस पूर्वी शाखा या हमीरपुर नहर की लम्बाई ४६ मील है।

काली मिट्टी अपने नमी काफी देर तक बनाये रखती है। उसको अलग बहुत सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। इसलिये नहर का रास्ता इस तरह गया है कि वह अधिकतर हलकी जमीन में होकर गुजरे। फिर भी इसका कुछ भाग काली भारी मिट्टी में स्थित है। छोटे मोटे सभी राजवाहों को मिलाकर इसकी लम्बाई लगभग ५०० मील है। इसके खोलने में तीन लाख से ऊपर खर्च हुआ। लेकिन इससे सात लाख एकड़ जमीन सींची जा सकती है।

खेती

जिले के किसान अधिकतर गरीब और अनपढ़ हैं। जिस खेत में वे ज्वार या कपास बोते हैं उसे वे आषाढ़ के महीने में पानी बरसने पर सिर्फ एक दो बार जोतते हैं। इसी समय वे बाजरा धान, तिल और मकई भी बोते हैं।

हलके खेतों में कपास के साथ किसान लोग अरहर, मोठ, माश और कोदों को अक्सर मिला कर बोते हैं। जब ज्वार बाजरा की ऊँचाई एक दो फुट होती है तब किसान लोग हल चलाकर गुड़ाई कर देते हैं।

कुआर के महीने में किसान को बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। गेहूँ और चना के खेत चार पांच बार जोते जाते हैं। इन दिनों की बोई हुई फसल को जंगली जानवरों से बचाने के लिये मेंड़ों पर कांटेदार पौधे इकट्ठे कर दिये जाते हैं। इधर ज्वार बाजरा की कटनई होती है। गेहूँ चना की फसल होली के बाद कटती है।

माड़ की काली जमीन में खाद की जरूरत नहीं पड़ती है। लेकिन उत्तर की ओर पड़वा जमीन में लोग अक्सर खाद देते हैं।

आने जाने के मार्ग

पहले इस जिले में आने जाने में बड़ी मुश्किल पड़ती थी। न अच्छी सड़कें थीं न रेल ही थी। पानी की कमी से यहां अक्सर अकाल पड़ने लगे। १८३८ ई० में अकाल इतना विकराल था कि जिले के आधे से अधिक घर खाली हो गये। इसी तरह के अकाल लगभग हर दसवें साल पड़ने लगे। अकाल को दूर करने के लिये बहुत से उपाय किये गये। उनमें से एक यह था कि भीतरी भागों में अनाज पहुँचाने के लिये रेल और सड़कें खोली गईं। जो रेल पहले अकाल के लिये खोली गई वही रेल अब कानपुर को बम्बई से मिलाती है। इस रेल के ४५ मील जालौन जिले में पड़ते हैं। पिरोना, एेत, उरई और कालपी उसके बड़े स्टेशन हैं। एेत और कूंच के बीच में एक शाखा लाइन अलग है।

पक्की

कानपुर, झांसी और सागर को मिलानेवाली पक्की सड़क ४४ मील तक अपने जिले में होकर जाती है। भुआ और पिरोना में दो छोटी सड़कें यहां और मिलती हैं। एक पक्की सड़क कूंच को उरई और एेत से मिलाती है दूसरी जालौन होती

हुई शेरगढ़ घाट को जाती है। कच्ची सड़कें यहां और भी अधिक हैं। बरसात के दिनों में आज कल भी छोटी छोटी नदियां रुकावट डालती हैं। पर यमुना नदी पर लगभग २५ घाट हैं जहां मुसाफिरों को इस पार से उस पार ले जाने के लिये नाव रहती है। बाढ़ घटने पर काल्पी में नावों का पुल बन जाता है। यहीं रेल का सुन्दर और मजबूत पुल बना है। इसके सिवा बेतवा नदी पर तीन घाट हैं। एक घाट पहुज नदी पर है।

व्यापार

कूंच और काल्पी बहुत पुराने समय से व्यापार के लिये मशहूर हैं। रेल खुलने के बहुत पहले से ही काल्पी उत्तरी हिन्दुस्तान में व्यापार की सब से बड़ी मन्डी थी। बरसात में रास्ते बन्द हो जाने पर भी यहां गुड़, घी, नमक और चना का बड़ा व्यापार होता था। यह सामान दिल्ली, आगरा, मिर्जापुर और पटना तक पहुँता था। हर साल पचास साठ लाख की तो कपास ही बिकती थी। १८४० ई० के बाद व्यापार घटने लगा।

आजकल व्यापार का सामान रेल से भेजा जाता है। एक ओर वह बम्बई को जाता है दूसरी ओर वह कानपुर और दूसरे शहरों में पहुँचता है।

पहले इस जिले में कपड़ा बुनने और रंगने का काम भी बहुत होता था। आज कल यह कारबार बहुत ढीला पड़ गया है।

सैयद नगर जामुर्दी कपड़े के लिये मशहुर था। यह ऐकरी के थान से तैयार किया जाता था। वह ६½ गज लम्बा और दो गज चौड़ा होता था। उसको पहले धोकर साफ कर लेते थे। फिर उसे आठ दिन तक अन्डी के तेल और नमकीन मिट्टी या रस्सी से रगड़ते थे। इसके बाद साबुन से धोकर उसे हर्रा के पानी में डुबाते थे। सूखने पर गेरू गोंद फिटकरी और पानी को मिलाकर छपाई होती थी। कई बार रंगाई, छपाई और गरम धुलाई के बाद बड़ा बढ़िया कपड़ा तैयार होता था। उसका एक एक थान ६० रु० को बिकता था। वह पीलीभीत, बरेली, कांसी, हाथरस और नैपाल तक पहुँचता था। कोटरा में चुनरी का काम होता था। इससे यहाँ के लोगों को हरसाल १० हजार रुपये की आमदनी होती थी। आजकल यहाँ खरूआ और अमौआ कपड़े का कुछ काम होता है। कुछ साड़ी की रेशमी किनारी और गुलबदन का काम भी होता है। आजकल काल्पी में कपास ओटने की दो मिलें हैं। इसी तरह की एक मिल ऐत और कूंच में है।

लोग

इस जिले के लोग अधिकतर छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। सिर्फ काल्पी, कूंच, जालौन और उरई ऐसे कस्बे हैं जहां पांच हजार से ऊपर मनुष्य रहते हैं। उरई तहसील में रेल और सड़कों की सुविधा होने कारण व्यापार बढ़ गया। जमीन अच्छी है सिंचाई का भी आरम्भ है। इसी तरह जालौन तहसील में भी खेती अच्छी होती है। इसलिये इन दोनों तहसीलों में जिले को घनी आबादी बसी हुई है। काल्पी का पुराना व्यपार मिट गया। बहुत सी अच्छी जमीन नालों में बह गई। इसलिये यहां बहुत से लोगों की गुजर न हो सकी। कुछ लोग रोजी की तलाश में इधर उधर चले गये। इस तरह काल्पी तहसील की आबादी लगातार घट रही है।

इस जिले में लगभग पौने चार लाख मनुष्य रहते हैं। इनमें सौ पीछे लगभग ६४ हिन्दू और ६ मुसलमान हैं। जैन, ईसाई आदि तो १०० पीछे एक से भी कम हैं। हिन्दुओं में सबसे अधिक (१८ फीसदी) चमार हैं। वे सभी तहसीलों में फैले हुए हैं और मेहनत मजदूरी करते हैं।

दूसरा स्थान ब्राह्मणों का है। वे १६½ फीसदी हैं। इनमें कुछ मरहठे हैं।

तीसरा नम्बर राजपूतों का है। वे लगभग ६½ फीसदी हैं। वे लोग जमींदार हैं जिले में ८ फीसदी काछी हैं। वे अधिकतर शाकभाजी उगाते हैं।

कोरी लोगों का पुराना काम कपड़ा बुनना था। वह तो मिट गया। अब वे खेती या मजदूरी करते हैं।

अहीर और गड़रिया लोग ढोर चराते हैं। कुरमी महाजन आदि दूसरे हिन्दू लोग बहुत कम हैं।

मुसलमान अधिकतर खेतिहर हैं। कुछ कपड़ा बुनते हैं।

यहां की भाषा बुन्देलखंडी हिन्दी है। कुछ शावंती लोग राजस्थानी बोलते हैं।

इतिहास

इस जिले के बहुत पुराने इतिहास का ठीक ठीक पता लगना कठिन है। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि यहां मौर्य और गुप्त वंश के राजाओं ने राज्य किया अब से तेरह सौ वर्ष पहले यहां हर्ष वर्द्धन का राज्य था। आगे चलकर भी यहां कन्नौज के राजा राज्य करते रहे। अब से १००० वर्ष पहले खजुराहो और महोबा के चन्देले राज जड़ पकड़ गये। काल्पी में चन्देल लोगों का मजबूत किला था। फिर पहुज नदी के किनारे पर बसे हुए सिरसा नगर के पास पृथिवी राज चौहान के साथ चन्देलों का घमासान युद्ध हुआ। पृथिवी राज बड़ा बहादुर था चन्देले हार गये।

इसी समय मुसलमानों के हमले होने लगे। लेकिन बुन्देल लोगों ने अपना राज्य कर लिया।

बुन्देला नाम कैसे पड़ा? इसकी कथा पुरानी है। एक बार इनके पहले राजा पञ्चम का राजपाट छिन गया। इन्होंने ईश्वर से बड़ी प्रार्थना की। अन्त में वे छुरा लेकर अपने को बलिदान करने लगे। इनकी गर्दन से लोहू का एक ही बूंद गिरा था कि ईश्वर ने उनकी मनोकामना पूरी की। वे फिर राजा हो गये और उनकी सन्तान के लोग बून्द गिरने के कारण बुन्देल कहलाने लगे। बुन्देले लोग अधिक समय तक स्वाधीन न रह सके। मुगलों का राज यहां भी फैल गया। पर अब से दो सौ वर्ष पहले राजा छत्रसाल ने मरहठों से मिलकर मुगलों के दांत खट्टे कर दिये। छत्रसाल महाराज जालौन जिले पर राज करने लगे। जिले का कुछ भाग मरहठों को मिला। वे दिनों दिन मजबूत होते गये। लेकिन अब से लगभग सवा सौ वर्ष पहले अङ्गरेजी सौदागरों (ईस्टइंडिया कम्पनी) से उनकी लड़ाई हुई। इसमें मरहठे हार गये और जिले पर अंग्रेज राज करने लगे। इसके पचास वर्ष बाद यहां के लोगों ने अंग्रेजों को मार भगाने के लिये विद्रोह (बलवा) किया। लेकिन बागी लोग दबा दिये गये। तबसे स्वाधीन होने तक इस जिले में अंग्रेजी राज बराबर जारी रहा है।

राजप्रबन्ध

जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ्तर जालौन शहर में है यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह जिले का दौरा भी करता है। उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। पुलिस के दूसरे लोग वर्दी पहनते है। इनका सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट या कप्तान होता है; उसके बहुत से थानेदार मदद करते हैं। ये लोग अपने थाने की देख भाल, करते हैं। इनको कस्बों सिपाहियों और गाँवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुकदमों का फैसला करने के लिये ? डिप्टी कलक्टर एक असिस्टेन्टमजिस्ट्रेट, मुंसिफ और जज रहते हैं। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी कानून गो, तहसीलदार होते हैं। शहर की सफाई और तालीम का काम म्यूनिसिपेलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

उरई—शहर जालौन जिले की राजधानी है। यहीं जिले की कचहरी होती है। यह शहर झांसी से कानपुर जाने वाली सड़क के लगभग बीच में पड़ता है। यहां से कूंच और जालौन को भी पक्की सड़कें जाती हैं। पुराना उरई गांव एक पहाड़ीपर बसा था। नया कस्बा बहुत आगे फैल गया। फिर भी पक्के मकान यहां कम हैं कच्चे बहुत हैं। स्टेशन कस्बे से एक मील पश्चिम की ओर है। एक पुराने किले के खंडहर कस्बे के बाहर तक पाये जाते हैं। पास ही कई मुसलमानी मकबरे हैं। कस्बे के दक्षिणी सिरे पर पक्के घाट वाला सुन्दर ताल है। ताल के दूसरे किनारे पर जिला स्कूल है। रेलके खुल जाने से यहां का व्यापार काफी बढ़ गया है।

ऐट—यह गांव उरई से १९ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। गांव के पास ही रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से मिली हुई कपास ओटने की मिल है।

कुछ दूर पर एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां गांव में एक थाना, डाकखाना और एक स्कूल हैं।

कोटरा—बेतवा नदी के किनारे उरई से १७ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पुराने जमाने में यह बहुत मशहूर था। १७०० ई० में महाराज छत्रसाल ने दो महीने तक घेरा डालने के बाद इसको जीत पाया था। पड़ोस में मुसलमानी खंडहर बहुत हैं। यहां पहले हर साल डेढ़ लाख रुपये का जामुर्दी कपड़ा तैयार किया जाता था। अब यह कारबार सब मिट गया है। आजकल कुछ खरुआ कपड़ा रंगा जाता है। हर गुरुवार को बाजार होता है। मुहर्रम, चैत और कुआर में अलग अलग तीन मेले लगते हैं।

सैयद नगर उरई से १६ मील दूर बेतवा नदी के किनारे बसा है। मुसलमानी समय में यह बहुत मशहूर था। उस समय के यहां कई मकबरे और मसजिदें हैं। कोटरा की तरह यह कस्बा भी जामुर्दी कपड़े के लिये मशहूर था। इस वक्त यहां सिर्फ कुछ खारुआ कपड़ा रंगा जाता है। हर बुधवार को बाजार लगता है। बेतवा को पार करने के लिये यहां घाट है।

अमखेड़ा जालौन तहसील में एक बड़ा गांव है। यहां गुड़ और नमक का बहुत व्यापार होता है। हर मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

भदेक आजकल एक छोटा गांव है। पर अकबर के समय में यह एक सरकार की राजधानी रहा। पीछे से फिर यहां हिन्दू राजा हुए। गदर के दिनों में उनकी रियासत जब्त हो गई। लेकिन उनकी दो गढ़ियों के खंडहर अब तक मौजूद हैं।

हदरूख गांव उस पक्की सड़क के पास बसा है जो जालौन से शेरगढ़ घाट को जाती है। जालौन यहां से सिर्फ नौ मील दक्षिण की ओर है। बेतवा नहर की कुठौंद शाखा यहां होकर जाती है। यहां डाकखाना, पुलिस चौकी, बाड़ा और स्कूल भी है।

जगमनी पुर—इसी नाम की जागीर की राजधानी है। इसके पास ही सिन्ध नदी यमुना में मिलती है। यहां एक पक्का किला है। हर रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

कंजौसा गांव बहुत छोटा है। कातिक की पूर्णमासी को यहां पचनदा मेला होता है। लोगों का कहना है कि चम्बल, कुवारी, सिन्ध और पहुज नदियों का पानी यहीं पर मिलता है। इस तरह इसके पास पांच नदियों का संगम होने से यहां पचनदा मेला लगने लगा।

कुठौंद यह गांव जालौन से १५ मील दूर है। जालौन से शेरगढ़ जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। इसी गांव के नाम से बेतवा नहर की पश्चिमी शाखा पुकारी जाती है। यहां महरटों का बनवाया हुआ मन्दिर अबतक मौजूद है।

रामपुरा इसी नाम की जागीर की राजधानी है यहां घी अनाज और कपास की मंडी है। खडुडों के ऊपर राजा का महल बहुत मजबूत बना है।

जालौन कस्बा उरई से सिर्फ १३ मील दूर है। दोनों के बीच में कए पक्की सड़क जालौन से माधौगढ़ होती हुई शेरगढ़ घाट को गई है। यह कस्बा नीची जमीन में बसा है। इससे पड़ोस में पानी भर जाता है और बीमारी फैलती है। पहले यहां का व्यापार बहुत बढ़ा था। लेकिन रेल से दूर होने के कारण यह बहुत घट गया। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल, और टाउन स्कूल है।

माधौगढ़—जालौन के उत्तर पश्चिम में १३ मील की दूर पर बसा है। यहां थाना, शफाखाना डाकखाना और स्कूल है। यहां का गल्ला घी, कपास बहुत मशहूर है।

काल्पी—कस्बा यमुना के ऊंचे दाहिने किनारे पर बसा है। उरई यहां से सिर्फ २२ मील दूर है। झांसी से कानपुर जाने वाली पक्की सड़क काल्पी होकर जाती है। यह सड़क नावों के पुल पर यमुना को पार करती है। बरसात में पुल तोड़ दिया जाता है और नाव से मुसाफिर लोग यमुना को पार करते हैं। कस्बे के आस पास बहुत ही ऊंचे नीचे खड्ड या गार हैं। अच्छे घर पक्के बने हैं बाकी कच्चे हैं। ऊंचे घाट के ऊपर से यमुना नदी बड़ी सुन्दर मालूम होती है। पश्चिम की ओर मकबरों की भरमार है। इनमें चौरासी गुम्बज नाम का बड़ा मकबरा बहुत मशहूर है। जैसा इसके नाम से ही जाहिर है। इसमें ८४ गुम्बद हैं। पर अब वे गिरते जा रहे हैं। पहले

ये मकबरे कस्बे से जुड़े हुए थे। अब खंडहरों ने इन्हें अलग कर दिया है।

व्यापार के लिये गनेशगञ्ज और तरनानगञ्ज मुहल्ले बहुत प्रसिद्ध हैं। पुराने भाग में मन्दिर मस्जिद बहुत हैं। हर मङ्गलवार को यहां बाजार होता है और साल में तीन मेले लगते हैं। पहले यहां से हरसाल कई लाख रुपये की रुई और घी व्यापारी लोग बाहर भेजते थे। अब यहां का व्यापार बहुत घट गया है।

यहां का पुराना किला यमुना के सपाट किनारे पर बना है। अब यह बड़ी टूटी फूटी हालत में है किले के भीतर सिर्फ एक कमरा बचा है। इसकी दीवारें तीन गज मोटी हैं। कहते हैं मरहठे सूबेदार इसी में अपना खजाना रखते थे। चन्देलों के आठ मजबूत किलों में से यह एक था। अकबर ने इसे पश्चिम का दरवाजा बना दिया था। बुन्देलखंड पर चढ़ाई की तैयारी भी यहीं से होती थी। यहां तांबे की एक टकसाल थी। सत्रहवीं सदी में काल्पी में कभी मुगल और कभी महाराज छत्रसाल राज करते थे। फिर महाराज छत्रसाल ने इसे मरहठों को सौंप दिया। गदर में तांतिया टोपी और झांसी की रानी ने यहीं अपनी अपनी फौजों को टिकाया। इसके बाद यहां अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

अकबरपुर—यह बड़ा गांव काल्पी से ठीक दक्षिण में ८ मील दूर है। यहां गुरू रूपनबाबा की यादगार में कार्तिक सुदी पंचिमी को एक मेला लगता है जो पन्द्रह दिन तक रहता है। यहां गुरू अकबर के समय में हुए थे। निरंजनी मत इन्हीं ने चलाया था। इन्हीं ने इटौरा का नाम बदल कर अकबरपुर रख दिया। यहां एक बाजार रोज लगता है। गुरू का मन्दिर तालाब के किनारे बना हुआ है।

अटा गांव काल्पी से ११ मील दूर है। इतनी ही दूर वह उरई से है। झांसी-कानपुर सड़क यहां होकर जाती है। यह गांव महावीर के मन्दिर के लिये मशहूर है। हर सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। रेलवे स्टेशन भी पास ही है।

बबिना गांव काल्पी से १० मील दूर है। कहते कि हैं वाल्मीकि ऋषि यहीं पैदा हुए थे। यहां से फिर वे बिठूर को गये।

पाराशन गांव काल्पी से १४ मील की दूरी पर बेतवा नदी के किनारे बसा है। कहते हैं कि पाराशर ऋषि ने यहां तपस्या की थी। उन्हीं की यादगार में यहां एक छोटा मन्दिर बना है।

रायपुर काल्पी से २३ मील दूर यमुना के किनारे बसा है। यहां बहुत से पुराने घरों और मन्दिरों के खंडहर हैं। यहीं नदी पार करने के लिये घाट है।

कूंच—कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्रस्थान है। यह उरई से १८ मील पश्चिम की ओर है। यहां से ऐट और उरई को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें तो कई ओर को गई हैं। यह कस्बा दो उथले नालों से घिरा हुआ है। आगे इन्हीं दो नालों के मिलने से मेलुंगा नदी बनती है। इसके पश्चिम भाग में पहले एक पुराना कच्चा किला था उसी के खंडहरों के ऊपर आजकल तहसील और थाने की इमारतें खड़ी हैं। पूर्व की ओर डेढ़ सौ वर्ष का पुराना ताल है। यहीं से दुकानदारी की दुकानें शुरू हो जाती हैं। आगे बढ़ने पर रुइहाई मंडी, गुड़ई मंडी, नमकहाट और मानिक चौक पड़ेंगे। पश्चिमी भाग में कुछ मकान पक्के हैं। बहुत से कच्चे हैं। पहले यहां बड़ी भारी मंडी थी जालौन की आबादी चली जाने से यहां के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। हर शुक्रवार को बाजार लगता है। साल में ८ मेले लगते हैं। रुई ओटने की एक मिल भी यहां खुल गई है। तहसील थाने के सिवा यहां शफाखाना और टाउन स्कूल है।

बंगरा एक बड़ा गांव है जो जालौन से ११ मील पश्चिम की ओर है। बेतवा नहर की कुठौंद शाखा यहां होकर बहती है।

गोरखपुर—इसी नाम की जागीर की राजधानी है। यह कस्बा उरई से २६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां एक अजब कुआं है। दिन में पक्के किनारे से पहुज नदी के पास पानी एक दो हाथ रहता है। रात को यह किनारे के ऊपर उमड़ कर बाहर बहने लगता है और तीस चालीस गज नीचे

पहुँज में गिरता है। कहते हैं कि इस कुंए को मस्तराम बाबा का वरदान है। यहां साल में एक बार मेला भी लगता।

इंगोई एक छोटा गांव है जो जिले के धुर दक्षिण सिरे पर बसा है। वेतवा नदी यहां से तीन मील दक्षिण की ओर है। लेकिन इस नदी का हमीरपुर नहर गांव के खेतों में होकर जाती है। पास ही एक पुराना किला है। पिरोना रेलवे स्टेशन यहां से १ मील उत्तर की ओर है। कैलिया एक बड़ा गांव है। यह कूंच से मील दूर है। कुठौंद नहर यहां होकर जाती है। पास ही एक पुराने किले के खंडहर हैं।

मऊ एक बड़ा गांव है जो पहुँज नदी के किनारे बसा है। यहां का घी बम्बई तक पहुँचता है। इसी के पड़ोस में अब से सवा सौ वर्ष पहले पिंडारियों और अंग्रेज़ों के बीच में लड़ाई हुई थी।

सलैया गांव तहसील के दक्षिणी-पश्चिमी सिरे पर पहुँज नदी के किनारे बसा है। नदी को पार करने के लिये घाट है। पास ही पुराने किले के खंडहर हैं।

बाँदा

स्थिति और सीमा—बांदा जिला ब्रिटिश बुन्देलखण्ड में सबसे अधिक पूर्वी जिला है। यह जिला झांसी कमिश्नरी में स्थित है। इसका आकार कुछ तिकोना है। यमुना नदी इसकी उत्तरी सीमा बनाती है और इसे फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों से अलग करती है। पर जिले की प्रधान नदी केन है। बांदा शहर इसी नदी के किनारे बसा है। पूर्व की ओर बांदा जिला इलाहाबाद की बारा तहसील से मिला हुआ है।

दक्षिण-पूर्व की ओर रीवां राज्य है। इस जिले के दक्षिण में पन्ना, चरखारी और छतरपुर के छोटे छोटे राज्य हैं। पश्चिम की ओर केन नदी गौरिहार और चरखारी राज्यों को बांदा जिले से अलग करती है। आगे चल कर यही केन नदी हमीरपुर जिले को बांदा से अलग करती है। लेकिन पैलानी और बांदा तहसीलों में केन नदी बांदा की नदी हो जाती है जिससे ये दोनों तहसीलें हमीरपुर जिले से मिली हुई हैं। खड्डा गांव बांदा जिले के कुछ मौजे पास की रियासतों से घिरे हुए हैं।

विस्तार—पूर्वी सिरे से पश्चिमी सिरे तक ६० मील लम्बा है। धुर दक्षिण में कालिञ्जर के किले से उत्तर में यमुना के किनारे तक ५० मील चौड़ा है। लेकिन इस जिले का क्षेत्रफल २०१० वर्ग मील है।

प्राकृतिक बनावट—यह जिला दक्षिण में विन्ध्याचल की पहाड़ियों और उत्तर में यमुना नदी से घिरा हुआ है। फिर भी इसका अधिकतर भाग समतल है। बनावट के अनुसार इस जिले के दो बड़े भाग हैं:—१ पहाड़ी भाग और २ मैदान।

१—पहाड़ी भाग—अधिकतर ऊँचा भाग मऊ और करवी तहसीलों में पाया जाता है। सारे जिले का लगभग ⅓ भाग पहाड़ी है। विन्ध्याचल की पहाड़ियां अपने पड़ोस के मैदान से औसत से ५०० फुट ऊंची हैं। ये पहाड़ियां दक्षिणी पूर्वी कोने में यमुना के किनारे से शुरू होता हैं और उत्तर-पश्चिम की ओर चली गई हैं। इनके बीच में ऊँची जमीन है जिसे पाठा कहते हैं। इधर पानी की कमी है। खेती कम होती है। लेकिन घास, कांटेदार झाड़ियां और छोटे छोटे पेड़ बहुत हैं। पर सब जगह पहाड़ियों का अटूट सिलसिला नहीं है। कालिंजर करतल और कामतानाथ की पहाड़ियां बिलकुल अलग हैं और प्रकृतिक पहरेदार की तरह मैदान के बीच में अकेली खड़ी हुई हैं। कालिंजर का मशहूर किला इसी पहाड़ी के ऊपर बना है। वामेश्वर या वामदेव की अकेली पहाड़ी की छाया में बांदा शहर बस गया। बांदा नाम वामदेव से बिगड़ कर बना है।

२ मैदान—पाठा और पहाड़ियों के नीचे निचला मैदान है। सब कहीं इसका ढाल दक्षिण-पश्चिम

से उत्तर-पूर्व की ओर है। इसी से यहां वर्षा का बचा हुआ पानी कई नदी-नालों के द्वारा से यमुना नदी में पहुँचता है। यमुना के पास वाला मऊ नगर समुद्र तल से ३३० फुट ऊंचा है। राजापुर ३४० फुट है। बीच में करवी की ऊंचाई ४४० फुट है पर धुर दक्षिण में कालिंजर की पहाड़ी १२३० फुट ऊँची है।

निचला मैदान तीन प्राकृतिक भागों में बटा हुआ हैं।

१ केन नदी के उत्तर-पश्चिम का मैदान। इसका ढाल उत्तर से दक्षिण और पश्चिम से पूर्व की ओर है। मटौध के पश्चिम में अधिक समतल जमीन है। यहां की काली (कावर) मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। इस हिस्से में बांदा तहसील का एक बड़ा हिस्सा शामिल है।

२ केन और बागें का द्वाबा—इस द्वाबा में बाँदा तहसील का बचा हुआ हिस्सा नरैनी। गिरवां और बबेरू तहसीलें शामिल हैं। इस हिस्से में अधिकतर मार जमीन और कहीं काली (कावर) मिट्टी है। जिले भर में यह हिस्सा सबसे अधिक मूल्यवान है। बागैं नदी विन्ध्याचल की पहाड़ियों से आने वाले नालों को रोक लेती है और इस हिस्से को कटने फटने से बचाती है।

३ बागैं के दक्षिण पूर्व का मैदान—इस भाग में बदौसा, करवी और मऊ की तहसीलें शामिल हैं। यह भाग बहुत कटा फटा है। दक्षिण की ओर इसके बीच में कहीं कहीं पहाड़ी टीले उठे हैं। इस भाग की प्रधान नदी पयस्वनी है जो बागैं के समानान्तर बहती है। इस भाग की कुछ नदियां यमुना में कुछ पयस्वनी में और कुछ बागैं में मिलती हैं। दो नदियों के बीच वाले ऊँचे भाग या पाठा में कावर मिट्टी मिलती है। इस ओर पड़ुआ (कुछ हल्की रेतीली) मिट्टी सब से अच्छी होती है। बहुत बड़े हिस्से में राकड़ मिट्टी मिलती है। यह अक्सर पथरीली होती है और इसमें कंकड़ मिले रहते हैं।

नदियां—इस जिले में जो पानी बरसता है। वह नालों में होकर छोटी छोटी नदियों में आता है फिर ये नदियां अपने पानी को यमुना में गिरा देती हैं। जिले की सब से बड़ी नदी यमुना है। यह नदी बांदा जिले की उत्तरी सीमा बनाती है। यमुना का बहुत सा पानी खेत सींचने के लिये नहरों में चला जाता है फिर भी यह नदी काफी गहरी है और गरमी में भी करीब आध मील चौड़ी बनी रहती है। इसमें दो तीन सौ मन बोझा लादने वाली नावें चला करती हैं। बरसात में यह और भी अधिक गहरी और चौड़ी हो जाती है। इसको पार करने के लिये कई जगह घाट हैं। राजापुर में बहुत सी नावें इधर उधर चला करती हैं। बांदा से फतेहपुर जाने वाली पक्की सड़क के रास्ते में होने से चिल्ला में नावों का पुल बना दिया जाता है। बरसात में पुल टूट जाता है। यमुना नदी १२५ मील बांदा जिले में बहती है। लेकिन पक्का पुल इस पर एक जगह भी नहीं बना है।

केन—यमुना के बाद जिले की दूसरी सब से बड़ी नदी केन है। इसका पुराना नाम कर्णावती है। यह नदी दमोह जिले से आती है और करतल के पास बांदा जिले में घुसती है। शुरू में यह नदी चरखारी और गौरिहार रियासतों को बांदा जिले से अलग करती है। खास बांदा शहर नदी से सवा मील दूर है। पास ही रेल का पुल है। यहां नदी बड़ी गहरी है। इसका घाटी एकदम पथरीला हैं कुछ दूर तक केन नदी हमीरपुर और बांदा के बीच में सीमा बनाती है। फिर बांदा के पैलानी परगने में बहने के बाद चिल्ला के पास यमुना में मिल जाती है वर्षा के दिनों में केन नदी की धारा बहुत तेज हो जाती है। पानी १० मील फी घण्टे के हिसाब से बहता है। तभी इसमें नावें चिल्ला से बांदा तक आ सकती हैं। पर जो माल यमुना में आता है उसका चिल्ला में चढ़ाने और केन नदी के चक्करदार रास्ते से लाने में कठिनाई होती है। इसलिये यह माल चिल्ला से सीधी सड़क से बांदा पहुँचता है। केन नदी को पार करने के लिये कई जगह नावें चलती हैं। सागर से बांदा आने वाली पक्की सड़क के मार्ग में भूरेंडी में जाड़ों में नावों का पुल बन जाता है और गरमी के अन्त तक रहता है। चन्द्रावल और दूसरी छोटी सहायक नदियां केन में मिलती हैं। गरमी में ये छोटी नदियां अक्सर सूख जाती हैं।

बागें—यह नदी पन्ना राज्य की कोहारी से निकलती है और मसौनी भरतपुर के पास बांदा में घुसती है। यह नदी दक्षिण से उत्तर को जिले के प्रायः बीच में होकर बहती है और बिलास गांव के पास यमुना में मिल जाती है। सिर्फ बरसात में इसे पार करने के लिये नाव की जरूरत पड़ती है। और दिनों में इसमें घुटनों या कमर तक पानी रहता है पर इसकी मोटी बालू में करवी से बांदा को जाने वाली मोटर गाड़ियां अक्सर फंस जाती हैं। बदौसा के पास इसमें सिर्फ एक पुल है जिसके ऊपर रेल जाती है। कई बरसाती नाले इसमें आकर मिलते हैं। इनमें बान गङ्गा सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं कि पुराने समय में एक बार गोधरमपुर के पास रामचन्द्र जी का बाण गिरा था यहीं से निकलने के कारण इस नदी का नाम बानगङ्गा पड़ गया।

पयस्वनी—पयस्वनी नदी की असली धारा पथर कचार राज्य से निकलती है। कोठी रियासत के मझगवां के पास इसमें एक दूसरा नाला मिल जाता है। १६ मील तक यह नदी बांदा जिले की सीमा बनाती है। विन्ध्याचल की पहाड़ी से उतरने पर मतंगवां के पास पयस्वनी नदी दो सुन्दर झरने बनाती है। दोनों झरनों के बीच में ५० गज लम्बा और बहुत ही गहरा कुंड है। अनुसुइया की पहाड़ी तक नदी की धारा सपाट किनारों से घिरी हुई है। अनुसुइया से स्फटिकशिला तक नदी बड़ी सुहावनी मालूम होती है। दोनों ओर वन है। बीच में बड़ी बड़ी चट्टानें हैं। कहीं कहीं कुंड हैं। चित्रकूट में इसके किनारे पर सुन्दर घाट और मन्दिर हैं। यहीं पर इसमें कुछ गहरा पानी है जहां नाव चलती है। और सब कहीं उथले पानी में नाव की जरूरत नहीं पड़ती है। करवी के पास रेल का पुल है। एक दो जगह पयस्वनी नदी में आटा पीसने की छोटी छोटी पनचक्कियां हैं जो पानी के जोरसे चलती हैं। राजा पुरके पास यह नदी यमुना में मिल जाती है। ओहन इसकी छोटी सी सहायक नदी है।

इनके सिवा और भी कई नाले यमुना में गिरते हैं। इस जिले में कोई बड़ी झील नहीं है। लेकिन तालाब बहुत हैं। मानिकपुर के तालाब का पानी रेल के काम में आता है।

जलवायु—जिले के निचले हिस्सों में गरमी अधिक पड़ती है। ऊंचे हिस्से कुछ कम गरम रहते हैं। लेकिन धूप के समय नंगी चट्टानें जलने लगती हैं। गरमी की ऋतु मार्च (चैत) से शुरू होती है। तभी गेहूं की फसल कटने लगती है। गरमी की ऋतु जून तक रहती है। जून की दोपहर में घर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। कभी कभी लू चलती है। फिर आंधियां चलने लगती हैं। लेकिन यहां की आंधियों में बहुत धूल नहीं होती है।

जुलाई से सितम्बर तक वर्षा रहती है। पर पानी लगातार नहीं बरसता है। इस जिले में सब से अधिक पानी गिरवा और बदौसा में बरसता है। बांदा में सबसे कम पानी बरसता है। मऊ, करवी और बबेरू में मामूली पानी बरसता है।

बरसात के बाद जाड़ा आता है और अक्टूबर (कार्तिक) से फरवरी (माघ) तक रहता है। निचले भागों में कम सरदी पड़ती है। पाला शायद ही कभी पड़ता है। ऊंचे भागों में अधिक सरदी होती है। पर सरदी की ऋतु सब कहीं सुहावनी होती है। इसमें बीमारी कम होती है। बरसात में मच्छड़ों के बढ़ने से मलेरिया बुखार फैलता है और गरमी में पानी की कमी से हैजा होता है। वैसे यहां की खुराक जल वायु तन्दुरुस्ती के लिये बड़ी अच्छी है।

पैदावार—जिले भर में लगभग ३ लाख बीघा या १० फीसदी जमीन ऊसर है। इसमें कोई चीज नहीं पैदा होती है। नदियों और नालों के खड्डों में अक्सर बबूल और दूसरे पेड़ों के जङ्गल मिलते हैं। बबूल की मजबूत लकड़ी हल बनाने के काम आती है। करवी और मऊ तहसीलों में वन हैं। इसमें महुआ, तेन्दू, चिरौंजी, हल्दू, खैर, बांस और बेर के पेड़ मिलते हैं। इधर घास भी बहुत होती है। जहां ढोर चरा करते हैं। गांव के आस पास महुआ, नीम, शीशम, जामुन, इमली और आम के बाग मिलते हैं। फसल उगाने के लिये मैदान की मिट्टी बड़ी अच्छी होती है। इसमें ३० फीसदी पडुआ मिट्टी है। यह हलकी और कुछ कुछ रेतीली होती है। राकड़ या कंकड़ पत्थर मिली हुई मिट्टी भी ३० फीसदी है। यह कम उपजाऊ होती है। १८ फीसदी काबर या काली मिट्टी है। यह काफी उपजाऊ लेकिन कड़ी

होती है। बहुत पानी पाने पर यह दलदल बन जाती है। १६ फीसदी माड़ू मिट्टी है। यह भी काली और उपजाऊ होती है लेकिन इसमें छोटे छोटे कंकड़ मिले रहते हैं। यमुना, केन और दूसरी नदियों के पास ४ फीसदी कछारी मिट्टी पाई जाती है।

पाठा या ऊंचे भाग में फसलों के लिये अच्छी जमीन बहुत कम मिलती है। भोटा या कमजोर जमीन बहुत है।

फसलें—पानी बरसते ही पडुआ या राकड़ जमीन में ज्वार, उर्द, मूंग और कपास बो दी जाती है। जब कम पानी बरसता है तो यही फ़सलें काबर और माड़ू जमीन में भी बो देते हैं। अधिक पानी बरसने पर काबर और मांड़ू जमीन में जाड़े के शुरू में चना और गेहूँ बोते हैं।

बबेरू, बदौसा और गिरवां के जिन हिस्सों में खूब पानी बरस जाता है उनमें चावल भी उगाया जाता है।

जिले के बड़े हिस्से में पानी काफी नहीं बरसता है। इससे फसलों को सींचने या पानी देने की जरूरत पड़ती है। सिंचाई के लिये तालाबों और कुओं से काम लिया जाता है।

खरौती के पास केन नदी में बांध बना कर केन-नहर निकाली गई है। इस नहर और इसके राजवाहों से बांदा, नरैनी और बबेरू तहसीलों में सिंचाई होती है।

जीव जन्तु—पालतू जानवरों में गाय, बैल, भैंस, बकरी मुख्य हैं। वैसे और भी पशु जैसे घोड़े, ऊंट, हाथी भी किसी किसी गांव में होते हैं। ढोरों के चरने के लिये खूब स्थान है और दूध, घी इस जिले में अधिक होता है परन्तु गर्मी में जब घास सूख जाती है और पानी कम रह जाता है तो जानवरों की भी दशा खराब हो जाती है। प्रायः सभी किसान जानवर पालते हैं। परन्तु अहीर जाति के लोग इसके लिये अधिक प्रसिद्ध हैं। कुम्हार और मेहतर सुअर भी पालते हैं तथा मुर्गियां भी रखते हैं परन्तु ऊनसे विशेष काम नहीं होता है। बोझा ढोने के लिये गदहे भी रक्खे जाते हैं। बैलों को हल और गाड़ियों में जोतते हैं। जङ्गली पशुओं में सुअर, हिरण, लोमड़ी, खरगोश, नीलगाय और बन्दर मुख्य हैं। बन्दर को छोड़ कर सभी ऊपर आने वाले जानवरों का शिकार किया जाता है क्योंकि वे खेती को अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। तालाबों में मछलियों के अतिरिक्त मगर भी होते हैं। जङ्गलों में मोर और कोयल आदि विचित्र पक्षी होते हैं। कभी कभी गांवों में तेंदुआ भी आ जाता है जो प्रायः जानवरों पर हमला करता है और उन्हें हानि पहुँचाता है।

खनिज पदार्थ—मऊ तहसील में बेनीपुर पाली के पास पत्थर निकाला जाता है और इलाहाबाद को भेजा जाता है।

कालिंजर, सीतापुर कोल गढ़ैया और खोह से भी पत्थर खोदा जाता है। हर पहाड़ी में पत्थरों की भरमार है। रौली कल्यानपुर में मुलायम पत्थर मिलता है। गोधमपुर के पास चूने का पत्थर मिलता है इससे कलई या कली तैयार की जाती है। सड़क कूटने की मिट्टी भरतकूप और दूसरे स्थानों के पहाड़ों से निकाली जाती है। गोवर्द्धन और कई दूसरे स्थानों में लोहा मिलता है। इससे लोहार लोग तरह तरह की चीजें बनाते हैं।

ईंट और खपरैल बनाने की मिट्टी बहुत जगह पाई जाती है।

कारबार—इस जिले में सबसे अधिक लोग खेती का काम करते हैं। करवी और चित्रकूट में कुछ लोग लाल और सफेद पत्थर से सिल, कूंडी और दूसरे बरतन बनाते हैं।

बांदा शहर में पत्थर तराशने और उससे बटन कलमदान और दूसरी चीजों के बनाने का काम बड़ा अच्छा होता है। वह रंग बिरंगा पत्थर बांदा से ८० मील ऊपर केन नदी में मिलता है। कुछ पत्थर नर्मदा (जबलपुर के पास की घाटी से मिलता है। कुछ पंजाल नदी (भोपाल और होशंगाबाद के बीच में) से आता है। पत्थर को लकड़ी और लाख के बीच में दबाकर तार की कमान से काटते हैं। धरातल कुछ कुछ क्रम पहिये पर चिकना किया जाता है। खूब चिकना हो जाने जने पर उसमें लोहे के कांटे से छेद किये जाते हैं। इस कांटे के सिरे पर हीरे की कनी जड़ी रहती है। मकान बनाने का पत्थर और सड़क कूटने की मिट्टी कई

जगह से निकाली जाती है। डोंडा और रजोहन में लाल पीली गेरुआ मिट्टी और खड़िया निकाली जाती है। बरगढ़ में शीशा बनाने की सिलीका बालू निकलती है और नैनी और फीरोजाबाद को भेज दी जाती है। हर साल प्राय: डेढ़ लाख मन सिलीका बालू बाहर भेजी जाती है। चूने का पत्थर और कंकड़ भी बहुत से गांवों में पाया जाता है।

इस जिले में कसाई घर हैं। जिनसे साल भर में २५००० मन खाल मिलती है। लगभग २०,००० मन खाल पन्ना, अजयगढ़ और चरखारी राज्यों से आती है। लगभग, २०,००० मन खाल कानपुर, कलकत्ता, दिल्ली, आगरा और इलाहाबाद को भेज दी जाती है। शेष वहीं खर्च हो जाती है

इस जिले में वन बहुत हैं जिनसे लकड़ी, गोंद जड़ी बूटी, शहद और लाख मिलती है। नरैनी की घाटी में बांस मिलता है। यहां बांस बाँदा में सेका जाता है। इससे अच्छी लाठियां बनती हैं। इस जिले में कपास और तिलहन की अधिकता है। कपास ओटने और कातने बुनने और तेल पेरने का काम बहुत होता है। करवी में कपास ओटने और दबाकर गट्ठा बनाने का एक बड़ा कारखाना है। दरी और सूती कालीन कई जगह बनती हैं। बांदा के खद्दरभंडार का कपड़ा दूर दूर बिकता है।

इस जिले में लगभग ३५००० भेड़ें हैं। फागुन, असाढ़ और कार्तिक में उनकी ऊन कतरी जाती है। साल भर में एक भेड़ से १२ छटांक ऊन मिलती है। लगभग ७०० मन ऊन जिले में तैयार होती है है और डेढ़ सौ मन ऊन पास की रियासतों से आती है। ८०० मन ऊन कानपुर, मिर्जापुर और झांसी को भेज दी जाती है। बची हुई ऊन से गड़रिया लोग कम्बल बुनते हैं।

इस जिले में प्राय: १८,००० मन सन भी पैदा होता है। ६ हजार मन कलकत्ता, सतना और जबलपुर को भेज दिया जाता है। शेष से रस्सी और टाट, पट्टी बुनी जाती हैं।

आने जाने का मार्ग—रेलवे इस जिले में तीन रेलवे लाइन हैं।

जबलपुर से इलाहाबाद जाने वाली लाइन इस जिले में होकर जाती है। मानिकपुर और बरगढ़ इसके खास स्टेशन हैं।

एक लाइन मानिकपुर से झांसी को गई है। करवी, चित्रकूट, अतर्रा और बांदा इस लाइन के खास स्टेशन हैं। इस लाइन को जिले की प्राय: सभी नदियां पार करनी पड़ती हैं। इसमें ऊंचे-नीचे पहाड़, जंगल और हरे भरे खेत देखने में आते हैं।

तीसरी लाइन कानपुर से आती है और बाँदा के पास खैराड़ा स्टेशन में झांसी मानिकपुर लाइन से मिल जाती है।

पक्की सड़कें—पक्की सड़कों का केन्द्र बांदा है।

यहां से यह सड़कें फतेहपुर, सागर, नागौद, करतल, अतर्रा, करवी और मानिकपुर को गई हैं।

कच्ची सड़कें और भी अधिक हैं। वे बड़े बड़े गावों को मिलाती हैं। पाठा और विन्ध्याचल के पहाड़ी भाग में सड़कों की कमी है इस ओर अक्सर एक गांव को पगडंडियों से आना जाना होता है।

आबादी, भाषा, जाति और शिक्षा—१९४१ की मनुष्य गणना के हिसाब से इस जिले की आबादी सवा छ: लाख से कुछ ऊपर है। पर एक हजार में सिर्फ ६१ मनुष्य या ६ फीसदी मनुष्य पढ़े लिखे हैं। ९१ फीसदी मनुष्य अपना नाम तक नहीं लिख पढ़ सकते हैं। स्त्रियां तो यहां फी हजार में ७ पढ़ी लिखी मिलती हैं ९९३ अनपढ़ हैं।

जिले भर में सब से अधिक आबादी बांदा तहसील में—१ लाख ५८ हजार—और सब से कम मऊ तहसील में है। पर पिछले दस वर्ष में बबेरू तहसील में सब से अधिक आबादी बढ़ी है। करवी तहसील में वन की अधिकता और अक्सर अकाल पड़ने के कारण बहुत कम आबादी बढ़ी है।

इस सवा छ: लाख आबादी में पांच लाख अठासी हजार हिन्दू और ४१ हजार मुसलमान हैं। इसका मतलब यह है कि यहां ९४ फीसदी हिन्दू और ६ फीसदी मुसलमान रहते हैं। यहां का भाषा बुन्देलखंडी हिन्दी है।

हिन्दुओं में सब से अधिक संख्या चमारों की है। बसौंधा, कमासिन (बबेरू) और बांदा में वे बहुत हैं।

करवी (चित्रकूट के आस पास) और गिरवां में ब्राह्मणों की संख्या बहुत अधिक है, वैसे ये सभी तहसीलों में पाये जाते हैं।

राजपूत—बांदा और बबेरू में राजपूतों की संख्या बहुत है।

अहीर—अहीरों का चौथा नम्बर है। बबेरू, बदौसा के समीप उनकी संख्या सब से अधिक है। ये लोग ढोर चराते हैं और खेती करते हैं।

कोरी—मजदूरी करते हैं और कपड़ा बुनने का कार्य करते हैं। बबेरू में सब से अधिक संख्या है।

कुर्मी—ये लोग करवी और पश्चिमी तहसीलों में रहते हैं और खेती करते हैं।

काछी—ये लोग बड़े कस्बों के लिये तरकारी उगाते हैं। इनकी सब से अधिक संख्या बड़े कस्बों और पुरानी राजधानियों (सिंहुड़ा, बांदा और कालिंजर) में पाई जाती है। ये लोग बड़ी मेहनत से खेती करते हैं।

लोधी, जरख भी खेती का काम करते हैं। बनिये लोग सभी बड़े कस्बों में व्यापार और लेनदेन का काम करते हैं। कायस्थों की तादाद बहुत कम से और ये लोग नौकरी के पेशे में लगे हुये हैं।

बढ़ई, भरभूंजा, धोबी, डोम, कहार, कुम्हार, लोहार और नाई लोग जिले भर में फैले हुये हैं।

जिले भर में लगभग ६ फीसदी मुसलमान हैं। इसमें ९८ फीसदी सुन्नी और २ फीसदी शिया हैं। ये अधिकतर बांदा तहसील में रहते हैं।

इतिहास—बांदा जिले का इतिहास बहुत पुराना है। कालिंजर तपस्या स्थान) का नाम वेद और महाभारत में आता है। चित्रकूट में श्रीरामचन्द्र ने बनवास किया था। यहीं अशोक ने राज्य किया। फिर यहां चेदिवंश का राज्य हुआ। हर्ष वर्धन का राज्य बहुत प्रसिद्ध है। इसके बाद यहां चन्देल लोगों का राज्य हुआ।

चन्देल राजा बड़े वीर थे। इनमें राजा परमाल का नाम बहुत मशहूर है। परमाल के यहां आल्हा और ऊदल बड़े लड़ाका थे। १२०३ ई० में मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ने कालिंजर का किला जीत लिया। छः वर्ष बाद बघेलों ने यह किला मुसलमानों से छीन लिया। पर मुसलमानी हमले लगातार होते रहे। अब से कोई ४०० वर्ष पहले शेरशाह ने कालिंजर के किले को ले लिया। फिर यहां अकबर का राज हुआ। पर बुन्देल लोग अपने देश की आजादी के लिये बराबर लड़ते रहे। छत्रसाल ने मुगलों के दांत खट्टे कर दिये। अब से २०० वर्ष पहले मरहठों की मदद से बांदा में बुन्देलों का राज हो गया। पर मरहठों और बुन्देलों में आपस की फूट से १८०३ ई० में यह जिला ईस्ट इण्डियन कम्पनी को मिल गया। कुछ वर्षों की लड़ाई के बाद यहां अङ्गरेजी-राज हो गया। १८५७ के गदर में यहां बड़ी गड़बड़ी मची। पर कुछ महीनों के बाद शान्ति हो गई और बांदा जिला अङ्गरेजी राज्य में आ गया। तब से बीच बीच में अकाल के सिवा यहां बराबर शान्ति रही।

राज प्रबन्ध—जिले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ्तर बांदा शहर में है। यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह जिले का दौरा भी करता है। उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट या कप्तान कहलाता है। इसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते है। यह लोग अपने थाने की देख भाल करते। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है। एक डिप्टी सुपरिंटेण्डेण्ट पुलिस करवी में रहता है। मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, कलक्टर, ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट करवी में रहता है। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी, कानूनगो, नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और शिक्षा का काम म्युनिसिपैलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्टबोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

बांदा शहर केन नदी के किनारे बसा है। यह नाम वामदेव से बिगड़ कर बना है। यहां से एक

पक्की सड़क फतेहपुर की ओर दूसरी नवगांव और सागर को गई है। यहाँ से एक सड़क करवी और दूसरी करतल को गई है। झांसी मानिकपुर लाइन पर यह एक बड़ा स्टेशन है। इसके पास ही खैराड़ा में कानपुर लाइन भी आ मिलती है।

इस तरह जिले के बीच में न होने पर भी इस शहर में मार्गों का संगम है। यहीं जिले की कचहरी पुलिस लाइन और डिस्ट्रिक जेल हैं। यहां एक बड़ा सरकारी अस्पताल, कोतवाली और कई एक स्कूल हैं। यहीं म्यूनिसिपैल्टी, डिस्ट्रिक बोर्ड, केन नहर के दफ्तर हैं। शहर में पत्थर का काम काफी अच्छा होता है। लाठी, अनाज, कपड़ा और दूसरा सामान बाहर से यहां विकने के लिये आता है। बाजार रोज लगता है। कम्पनी बाग नवाब साहब का तालाब, मसजिद महेश्वरीदेवी और महादेवजी के मन्दिर देखने लायक हैं। पहाड़ी के ऊपर इस मन्दिर से सारा शहर दिखाई देता है। कुछ मकान छोटे और खपरैल से छाये हुये हैं। इस पहाड़ी की चोटी से केन नदी पर बना हुआ रेल का पुल भी दिखाई देती है। यहां की चौड़ी सड़कों पर मोटर, बाइसिकिल, इक्के और गाड़ियों की भीड़ दिखाई देगी। नवाबी मसजिद की बुर्ज और यह पहाड़ी कई मील की दूरी से दिखाई देती हैं। बाजार तो यहाँ रोज लगा रहता है। इसके सिवाय साल में कई एक मेले भी लगते हैं। केन नदी के दूसरे किनारे पर भूरागढ़ के किले के खंडहर हैं।

पैलानी—कस्बा बांदा से २३ मील दूर है। कहा जाता है कि यहां के लोग बड़े पैरने वाले (तैरने वाले) होते थे। इसलिये इसका नाम पैरानी या पैलानी पड़ गया। इसके आस पास केन नदी की उपजाऊ जमीन है। वैसाख के महीने में यहां एक मेला लगता है। यहां सरौते अच्छे बनते हैं।

महोखर—यह छोटा गांव बांदा से चार मील दूर है। यहां कार्तिक के अन्त में रहस मेला लगता है।

पचनेही—यह गांव बांदा से १० मील दूर है। इस गांव को पांच भाइयों ने बसाया था इसलिये इसका नाम पचनेही पड़ गया। गदर के समय में यहां के लोगों ने सरकारी अमीन को पकड़ लिया और उसके मुंह में घास भर कर उससे गांव का चक्कर लगवाया।

खपटिहा कलां—केन नदी के किनारे बांदा से १४ मील दूर है। यह गांव लगभग ५ मील लम्बा और २ मील चौड़ा है। कहा जाता है कि यहां खपटा (टूटे फूटे खपरैल) बहुत मिले थे इसलिये इसका नाम खपटिहा पड़ गया।

पपरेन्दा—यह गांव बांदा से १३ मील की दूरी पर फतेहपुर जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यहां बुन्देलों ने एक छोटा किला बनवाया था।

जसपुरा—यह कस्बा बांदा से २७ मील की दूरी पर केन की पुरानी घाटी (तरी) के किनारे बसा है। अक्सर बाढ़ आने के कारण इसके पड़ोस की जमीन बड़ी उपजाऊ है। पास ही एक पुराने किले के खंडहर हैं।

चिल्ला—यह गांव केन और यमुना के संगम के पास बांदा से फतेहपुर जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। घाट के सिवाय यहां एक डाकखाना और स्कूल हैं।

चंदधारा—यहां श्रीकृष्णलीला और बसन्त पंचमी के बड़े मेले लगते हैं।

सिंदवारी—यह गांव बांदा के उत्तर-पूर्व में १४ मील की दूरी पर बसा है। यहां से एक कच्ची सड़क फतेहपुर को गई है। यहां सोमवार और गुरुवार को बाजार लगता है। पास ही पुराने कच्चे किले के खंडहर हैं। इसके पास कई लड़ाइयां हुई थीं।

बबेरू गांव बबेरू तहसील के ठीक बीच में बसा है और बांदा से २६ मील दूर है। दक्षिण की ओर एक छोटे किले के खंडहर हैं। पास ही केन नहर है। कस्बे में तहसीली स्कूल थाना, शफाखाना और डाकखाना है। पुरानी तहसील गदर में जला दी गई थी। दूसरी तहसील यहां फिर से बनाई गई है। यहां शोरा बनाने का काम बहुत होता है। यहां मंगल और शनीचर को बाजार लगता है।

औगासी—यह गांव बबेरू से ८ मील की दूरी पर यमुना के किनारे बसा है। यहां एक पुराना कच्चा किला है। यह गांव ढोरों या जानवरों की बिक्री के लिये मशहूर है।

इंगुआ—यह बड़ा गांव बबेरू से ११ मील और यमुना से ६ मील दूर है। यहां एक छोटा बाजार लगता है। पास ही मऊ कस्बा मिला हुआ है।

कमासिन—यह कस्बा बांदा से ३८ मील दूर है। गदर के दिनों में यहां की तहसील जला दी गई थी। अब यहां एक थाना है। और रोज बाजार लगता है।

मरका—यह बड़ा गांव है जो बांदा से ३६ मील दूर है। गदर में शामिल होने के कारण यह गांव पवार राजपूतों के हाथ से छिन गया। इसके पास ही यमुना का घाट है। और हफ्ते में दो दिन बजार लगता है।

मुरवल—यह गांव बांदा से १५ मील दूर है। और बाँदा से बबेरू जाने वाली सड़क पर बसा है। गजरा नाला यहां होकर बहता है। पास ही एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहाँ पुराने समय में कई लड़ाइयाँ हुई थीं।

सिमौनी—यह गांव बांदा से १८ मील गरारा नाला के पश्चिमी किनारे पर बसा है। इसके पड़ोस में बहुत से पुराने खंडहर हैं।

सिंहपुर—यह गांव बांदा से २८ मील और करवी से १६ मील है। सिंहपुर से २१ मील पश्चिम की ओर साईपुर की पहाड़ी है। इस पर एक मुसलमान फकीर की पुरानी कब्र है।

नरैनी—कस्बा बांदा से २२ मील है। कालिंजर और करतल से आने वाली सड़कें यहां मिलती हैं। यहां से बहुत सा माल दिसावर को जाता है। यह माल पक्की सड़क से हो कर अतर्रा स्टेशन पर पहुँचता है। यहां ढोरों का बहुत सा व्यापार होता है यहां से दो मील की दूरी पर पनगरा है जहाँ से केन नहर की दो शाखायें हो जाती हैं।

गिरवां—यह कस्बा बांदा से २ मील की दूरी पर बसा है। बांदा से नागोद जाने वाली सड़क यहां होकर जाती है। पहिले यह तहसील थी परन्तु आज कल थाना है।

कालिंजर—कालिंजर का प्रसिद्ध किला १२३० फुट ऊंची पहाड़ी पर बसा है। इसके नीचे कालिंजर गांव है। यह स्थान बांदा से ३५ मील दूर है। यहां पहुँचने के लिये अतर्रा स्टेशन २४ मील दूर है। अतर्रा से नरैनी तक दस मील पक्की सड़क है फिर कच्ची सड़क है और बागे नदी पार करनी पड़ती है। किले के ऊपर जाने के लिये थोड़ी दूर की चढ़ाई पर सात बड़े बड़े दरवाजे मिलते हैं। आजकल यह किला टूटी फूटी हालत में है। परन्तु यहां सीता सेज, पातालगंगा, सिद्ध की गुफा, मृगधारा, कोटितीर्थ, नील कंठ और दूसरे स्थान देखने लायक हैं। समय समय पर यहां के लोगों ने इस किले की रक्षा के लिये बड़ी बहादुरी दिखलाई। इसका पुराना नाम तपस्या स्थान है जिसका जिक्र वेद और महाभारत में भी है।

बदौसा—यह कस्बा बागे नदी के ऊँचे किनारे पर बसा है। बांदा से करवी जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। झांसी मानिकपुर लाइन का यह एक बड़ा स्टेशन है।

अतर्रा बुजुर्ग—यह गांव बाँदा से करवी जाने वाली पक्की सड़क बसा है। और बाँदा से २० मील दूर है यहाँ से एक पक्की सड़क दक्षिण को नरैनी की ओर जाती है। यह झांसी मानिकपुर लाइन का एक स्टेशन है। पास ही केन नहर है। कस्बे से मिला हुआ एक बड़ा फार्म (खेत) है जहां नये ढंग से खेती होती है। कस्बे में बुधवार और शनीवार को बाजार लगता है।

करतल—यह गांव जिले के दक्षिणी पश्चिमी कोने में बांदा से ३६ मील की दूरी पर बसा है। यहां तक पक्की सड़क आती है। आड़ोस पड़ोस की रियासतों का माल यहाँ बिकने आता है फिर यह माल पक्की सड़क के ऊपर नरैनी और अतर्रा को पहुँचा दिया जाता है। बाजार हर शनिश्चर को लगता है। इसके पड़ोस में अजीब पहाड़ियां हैं। अब से सवा सौ वर्ष पहले रगौली में अंग्रेजी फौज से भारी लड़ाई हुई थी।

ओरन—यह गांव जिले के लगभग बीच में बसा है। इसके पड़ोस का बहुत सा भाग सींचा जाता है। इतवार और बुधवार को बाजार लगता है।

मड़फा—यह चपटी चोटी वाली पहाड़ी बदौसा से १० मील दूर है। यहां चन्देलों का एक मजबूत किला था। जिसके खंडहर अब भी मौजूद हैं। कहा

जाता है कि कालिंजर और मड़फा के किले एक ही रात में बनाये गये थे। कालिंजर तो पहले बन गया लेकिन मड़फा अधूरा ही रह गया।

कुल्हुवा मुआफी—यह छोटा गांव है। इसके पड़ोस में पुराने खंडहर और पास ही एक सोता है जहां से बान गंगा नदी निकलती है। यहां बांस और खैर का घना जंगल है।

बसाया था अकबर के समय में यह बहुत मशहूर हो गया था। एक पहाड़ी के ऊपर पुराने किले के खंडहर हैं। यहां पान की खेती भी होती है।

करवी—कस्बा बांदा से मानिकपुर जाने वाली सड़क पर बसा है और बांदा से ४२ मील दूर है। झांसी मानिकपुर लाइन का यह खास स्टेशन है। अब से सवा सौ वर्ष पहिले पेशवा बाजीराव के भाई

गोधरमपुर—विन्ध्याचल के नीचे एक घाटी में बसा है। यहां के खटिक लोग बांस और सब्जी बाहर भेजा करते हैं।

रसिन—यह गांव पुराना है और कालिंजर से करवी जाने वाली सड़क के बीच में बसा है। इसके पास की पहाड़ियों पर पुराने किले के खंडहर हैं।

सिंहुड़ा—यह गांव बांदा से १२ मील और गिरवां से तीन मील दूर है। इसके पास ही पहाड़ी पर एक पुराना मन्दिर है। केन नदी भी बहुत दूर नहीं है। कहा जाता है कि इस गांव को राजा पिथौरा ने

अमृत राव यहां बस गये थे। उसके लड़के ने गणेश बाग (पीली कोठी) बनवाया। कस्बे का असली भाग पैसुनी नदी के किनारे बसा है। पड़ोस में कपास अधिक होने के कारण यहां एक रुई का कारखाना बन गया है। बांदा को छोड़ कर जिले में सब से बड़ा कस्बा करवी ही है। यहां अङ्गरेजी स्कूल और तहसीली स्कूल भी हैं। करवी से मिला हुआ तरौहां है। यहां एक पुराना किला और खंडहर हैं।

चित्रकूट—यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है और

करवी से ६ मील दूर है। कामता नाथ की पहाड़ी के नीचे पक्की सीढ़ियां बनी हैं। अब से दो सौ वर्ष पहले महाराज छत्रसाल की रानी ने इन्हें बनवाया था पैसुनी के किनारे कुछ ही दूर पर अनुसुइया और दूसरे तीर्थ हैं। रामनौमी और दिवाली को यहां भारी मेले लगते हैं। और दूर दूर से यात्री आते हैं। चित्रकूट स्टेशन झांसी मानिकपुर लाइन पर बना है। यहां से चित्रकूट तीर्थ तीन मील दूर है लेकिन करवी स्टेशन से यहां तक मोटर गाड़ियां चला करती हैं। कस्बा सीतापुर के नाम से पुकारा जाता है जहां टाउनएरिया है।

मारकुंडी—यह जबलपुर लाइन का एक स्टेशन है। यहां से लकड़ी और घास बाहर भेजी जाती है।

पुरवा—यह एक पुराना गांव है और पैसुनी नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। पास ही एक पुराने किले के खंडहर हैं।

बहिलपुरवा—यह गांव मानिकपुर और करवी से बराबर दूरी पर (६ मील) एक रेलवे स्टेशन है। यह जङ्गल और पहाड़ के बीच में बसा है। यहां से कुछ लकड़ी का कोयला और जङ्गली सामान बाहर भेजा जाता है।

मानिकपुर यह जबलपुर लाइन पर एक बड़ा जंकशन है। दूसरी लाइन यहां से करवी और बांदा होती हुई झांसी को गई है। पास बाजार है। यहां का व्यापार बढ़ रहा है। पानी की कमी है। रेलवे स्टेशन के लिये पीने का पानी एक बड़े तालाब में इकट्ठा किया जाता है। यहां एक डाकखाना, स्कूल, सराय और जङ्गल के मोहकमे का बंगला है।

भौंरी—यह बड़ा गांव करवी से मऊ जाने वाली सड़क पर करवी से १० मील की दूरी पर स्थित है। इसके पास ही कुछ पहाड़ियां हैं। यह गांव चमड़े के व्यापार के लिये मशहूर है। पास ही पुराने खंडहर मिलते हैं।

बगरेही—इस गांव के पास ओहन नदी के किनारे लालपुर की पहाड़ी पर, वाल्मीक मुनि का आश्रम था।

मऊ—यह नगर यमुना के किनारे बसा है और बांदा से ७० मील दूर है। सब से पास वाला स्टेशन बरगढ़ है। नाव द्वारा कुछ व्यापार इलाहाबाद के साथ होता है।

राजापुर—यह गांव बांदा से ५५ मील की दूरी पर यमुना के किनारे बसा है। किसी समय यह बुन्देलखड भर में सब से बड़ा व्यापारी नगर था। नावें यहां की कपास और पत्थर को भरकर इलाहाबाद, मिर्जापुर और पटना पहुँचाती थीं। रेलों के खुलने से यहां के व्याहार को बड़ा धक्का पहुँचा, कुछ व्यापार अब भी होता है।* यहां यमुना के ठीक ऊपर ऊंचे किनारे पर तुलसीदास जी का मन्दिर है। इसमें तुलसीदासजी की मूर्ति और उनके हाथ की लिखी हुई रामायण रक्खी है।

बरगढ़—यह कस्बा जबलपुर लाइन पर एक मशहूर स्टेशन है और बांदा से ८० मील दूर है। मऊ तहसील पाठा का सब से मशहूर कस्बा है। यहाँ अनाज, कपास, घी और बकेंड़ा के व्यापार की मंडी है। यहाँ शीशा बनाने की सिली की बालू निकलती है और नैनी, फिरोजाबाद को भेज दी जाती है। पास ही पुराने किले के खंडहर हैं।

---

*इलाहाबाद से भरवारी होकर आने वाली पक्की सड़क यमुना के उस पार रुक जाती है। राजापुर से एक कच्ची सड़क करवी को गई है।

मथुरा

आगरा कमिश्नरी का उत्तरी पश्चिमी जिला है। इसके उत्तर-पश्चिम में पंजाब का गुरगांव जिला, उत्तर पूर्व और पूर्व में अलीगढ़ आठ मील तक इसके पूर्व में एटा जिला है। इसके दक्षिण में आगरा जिला और पश्चिम में भरतपुर राज्य है। भरतपुर राज्य के कुछ गांव मथुरा जिले के भीतर स्थित हैं इस जिले का आकार कुछ कुछ अर्द्ध चन्द्राकार है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६० मील और चौड़ाई ४० मील है। इसका क्षेत्रफल १४४५ वर्ग मील है। यमुना नदी इस जिले में होकर बहती है और इसको दो असमान भागों में बांटती है। भरतपुर की सीमा के आगे कहीं कहीं कुछ चट्टानें निकली हुई हैं। कहीं कहीं पहाड़ियां मैदान के ऊपर २०० फुट ऊंची उठी हुई हैं। शेष बड़े भाग का दृश्य एक समान है। मथुरा जिले का अधिकतर भाग प्राचीन ब्रज मंडल है। जगह जगह करील की झाड़ियां हैं। गोवर्द्धन और बरसाना का दृश्य वर्षा ऋतु में बड़ा सुन्दर रहता है।

माट, महावन और सादाबाद यमुना के पार वाली तहसीलों का दृश्य द्वावा के दूसरे भागों के समान है। यहां अच्छी खेती होती है। कुओं और नहरों द्वारा यहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। गांवों के पड़ोस में आमों के बगीचे हैं। इस भाग की पथवाहा और झिरना नदियों में कभी कभी पानी रहता है। भदौरा के ऊपर यमुना के पुराने मार्ग में झीलें बन गई हैं। ऊंचे नीचे रेतीले टीले किनारे से भीतर की ओर चले गये हैं। भदौरा के नीचे यमुना के किनारे कट कर खड्ड बन गये हैं।

पश्चिमी भाग में मथुरा और छाता की तहसीलें हैं। इधर गांव बड़े बड़े हैं। पुराने समय में यहां के लोग स्वयं अपनी रक्षा करते थे।

मथुरा वृन्दावन कोसी आदि बड़े नगर इसी ओर स्थित हैं। गोवर्द्धन नाले को छोड़ कर इस ओर नीची झीलों और दलदलों का प्राय: अभाव है। केवल कोयला के पास यमुना के पुराने मार्ग ने एक अनूप बना दिया है। इसके आगे कुछ दूर तक किनारे कटे फटे हैं खेती बहुत कम होती है। झाऊ और सरपत बहुत उगता है।

इन्हीं दो पश्चिमी तहसीलों में अरवली पहाड़ियों के अन्तिम सिरे स्थित हैं। चरण पहाड़ चट्टानों का नीचा ढेर है। यह ४०० गज लम्बा और १० फुट ऊंचा है। छ: मील दक्षिण-पूर्व की ओर नन्दगांव की पहाड़ी है। यह आधा मील लम्बी है। यह गांव के घरों से ढकी है। सब से ऊंचे भाग में नन्दराय का मन्दिर है। ४ मील दक्षिण की ओर दो समानान्तर पहाड़ियां हैं।
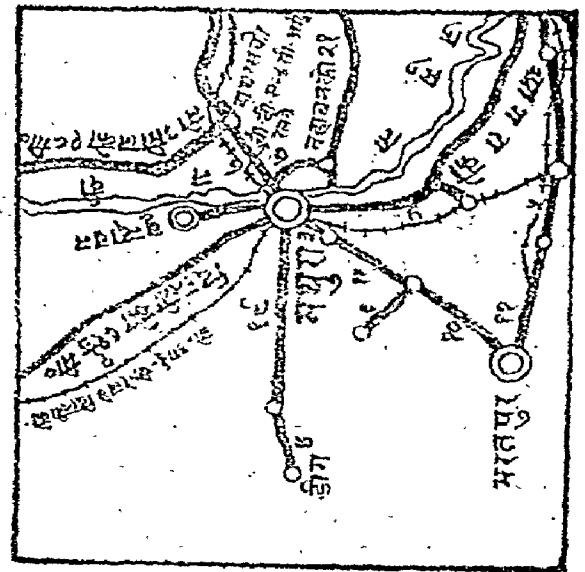
यह मैदान के ऊपर लगभग २०० फुट ऊंची उठी हुई हैं। रनकौली पहाड़ी और बरसाना पहाड़ी पेड़ों से ढकी है। इन पहाड़ियों के अतिरिक्त जिले का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग से अधिक ऊंचा है। यमुना के कछार में नीची भूमि है। बांगर में भूमि अधिक ऊंची है। बांगर में कहीं उपजाऊ दुमट और कहीं भूड़ और बलुई मिट्टी है। तराई में डहरया चिकनी कड़ी मिट्टी मिलती है पिलिया मिट्टी अधिकतर भागों में मिलती है। इसमें कुछ बालू मिली रहती है। नोह झील और दूसरे बंधे हुये पानी के प्रदेशों में चिकनोट मिट्टी मिलती है।

मथुरा जिले की प्रधान नदी यमुना है। यह चौन्दरास गांव के पास ,मथुरा जिले में प्रवेश करती है। १०० मील ठन्डी चाल से बहने के बाद यह मन्दौर गांव के पास जिले को छोड़ देती है। शेरगढ़, वृन्दावन, मथुरा और फरा यमुना के दाहिने किनारे पर स्थित हैं। माट, महावान गोकुल बायें किनारे पर बसे हैं। पहिले कुछ दूर तक यमुना किनारे नीचे और रेतीले हैं। आगे बढ़ने पर वे ऊंचे और सपाट हो जाते हैं। इन्हें नालों ने स्थान स्थान पर गहरा काट दिया है।

मथुरा की जलवायु पड़ोस के द्वाबा के जिलों से अधिक गरम और खुश्क है। जनवरी का तापक्रम ६० अंश और जून का तापक्रम ९३ अंश रहता है।

डाकखाना है। बाजार रविवार को लगता है। अरींग के पास ही मरहठों और लार्ड लेक की सेना से घोर युद्ध हुआ था।

औरंगाबाद-मथुरा से २ मील दक्षिण की ओर आगरे से दिल्ली को जाने वाली पक्की सडक पर स्थित है। यहां से यमुना के किनारे तक रेतीली भूमि है। उस पार गोकुल और महावन हैं। औरंगजेब के समय की बनवाई हुई एक मस्जिद के खंडहर पास ही हैं। यहां सेटों (सरकंडो) की कुरसियां बनती हैं। हर शुक्रवार को बाजार लगता है। बजना गांव धुर उत्तरी सिरे पर मथुरा शहर से ३३ मील दूर है। पुराना बाजार बीच में गुरुवार और शनिवार को लगता है।

बल्देव नगर मथुरा से सादाबाद को जानेवाली पक्की सड़क पर मथुरा से १० मील और महावन से ५ मील दूर है। इसे अक्सर दाऊजी कहते हैं। थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां बलराम या बलदेव जी का प्रसिद्ध मन्दिर के पास ही ८० गज लम्बा और ८० गज चौड़ा पक्का ताल है। यहां भादों की छठ को मेला लगता है। बरसाना मथुरा से ३१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। राधा जी का निवास स्थान बरसाना ही था। यह एक पहाड़ी के ढाल और उसकी तलहटी में बसा है। चार चोटियों पर लाड़ली जी (राधा जी) के मन्दिर मान मन्दिर डांगढ़ और मोर कुटी हैं। दूसरी पहाड़ी कुछ कम ऊंची है। बीच वाले तेज मार्ग को संकरी खोर कहते हैं। १७७४ ईस्वी में यहां जाटों और दिल्ली की सेना में घमासान लड़ाई हुई थी।

बठान गांव मथुरा से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर कोसी से ३ मील पश्चिम की ओर है। कहते हैं यहां बलराम जी अपने भाई श्री कृष्ण जी की प्रतीक्षा में बैठे थे। इसी से इसका नाम बैठेन से बिगड़कर बठान पड़ गया। बाहर की ओर बलभद्र कुंड है जिसके घाट पत्थर के बने हैं। यहां चैत कृष्ण तृतीय को मेला लगता है।

बेरी गांव आगरा नहर और अछनेरा लाइन के बीच में मथुरा से ११ मील को दूरी पर स्थित है। गदर में यहां के राजपूत जमीदारों ने विद्रोह किया उनसे यह गांव छीन लिया गया। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है। हर मंगलवार को बाजार लगता है।

बिसावर गांव सादाबाद से पश्चिम की ओर पक्की सड़क से १ मील दूर है। यह मथुरा से १६ मील दूर है। कहते हैं कि इस गांव को महावन के एक राजपूत सरदार ने ११वीं सदी में बसाया था। गांव में दो मंदिर और एक मकबरा हैं। यहां एक स्कूल है। बाजार बुधवार को लगता है।

वृन्दावन यमुना के किनारे पर मथुरा से ६ मील उत्तर की ओर है। यहां यमुना एक विचित्र मोड़ बनाती है। वृन्दावन इसी मोड़ से बने हुये प्रायः द्वीप पर बसा है। किसी समय यहां तुलसी की अधिकता थी। तुलसी को वृन्दा भी कहते हैं। इसी से इसका नाम वृन्दावन पड़ा। मथुरा से यहां तक पक्की सड़क और रेलवे लाइन आती है। सड़क अधबिच में एक पुल है जिसे माधो जी सीन्धिया की लड़की ने १८३३ में बनवाया था। पास ही एक पक्का तालाब है। वृन्दावन के पड़ोस में एक बड़ी बाउली है। इसमें ५७ सीढ़ियां हैं। इसे महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। वृन्दावन में १००० मन्दिर और ३२ घाट हैं। ब्रह्म कुंड और गोविन्द कुण्ड भी उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त यहां कई खेत्र और बगीचे हैं। गोविन्द देव का मन्दिर सम्वत १६४७ (१५९० ईस्वी) में बनवाया गया था।

इसे जैपुर के राजा मानसिंह ने अपने गुरू के आदेश से बनवाया था। काली मर्दन या कालीदह घाट के पास मदनमोहन का मन्दिर है। गोपी नाथ और जुगुल किशोर के मन्दिर भी पुराने हैं। रंग जी का मन्दिर नया है और मद्रासी ढंग का बना है। यह १८४५ में आरम्भ हुआ और १८५१ में ४५ लाख रुपये की लागत से पूरा हुआ। इसका बाहरी घेरा ७७३ फुट लम्बा और ४४० फुट चौड़ा है। दीवारों के घेर के अन्दर एक सुन्दर सरोवर और बगीचा है। सामने ६० फुट ऊंचा ध्वजा स्तम्भ है। यह २४ फुट नीचे गड़ा है। इसपर तांबे का पानी फिरा है। अकेले स्तम्भ का मूल्य १०,००० रु० है। प्रधान पश्चिम द्वार ९३ फुट ऊंचा है। एक कमरे में रथ रक्खा है। यह वर्ष में एक बार ब्रह्मोत्सव के अवसर पर निकाला जाता है। राधारमन का मन्दिर १० लाख रुपये की लागत से १८७६ में पूरा हुआ। राधा इन्द्र किशोर का मन्दिर टिकारी (गया) राज्य की रानी ने ३ लाख की लगत से १८७१ ई० में बनवाया। राधा गोपाल का मन्दिर ग्वालियर नरेश ने अपने गुरू के आदेश से १८६२ ई० में बनवाया। इसमें ४ लाख रु० लगा। वृन्द्रावन के कुंज भी प्रसिद्ध हैं।

वृन्दावन को प्रायः सभी पुराणों ने एक बड़ा तीर्थ बतलाया है। पर आरम्भ में यहां बन था। मानसिंह ने १५७० ई० में यहां मन्दिर बनवाया। १७८६ ई० में दौलतराव सेन्धिया ने यहां एक टकसाल स्थापित की। इसी से यह टकसाल वाली गली कहलाती है। जब जाटों का अधिकार हुआ तो टकसाल यहां से भरतपुर चली गयी। वहां वृन्दावनी रूप में बनने लगे जो प्रायः विवाह के समय में चलते थे।

चौमुहा गांव मथुरा से १० मील की दूरी पर दिल्ली की सड़क पर पड़ता है। यहां शेरशाह के समय की बनवाई हुई सराय के खँडहर हैं। पड़ोस में चतुर्मुखी रुद्र की मूर्ति मिली। इसी से इसका यह नाम पड़ा। जब महाराज सिन्धिया का यहां राज्य था तब उसने यह गांव शिक्षा-कार्य के लिये गंगाधर पन्डित को दे दिया था। फिर इसकी तीन चौथाई आय आगरा कालेज के लिये जाने लगी। विद्रोह में सम्मिलित होने के कारण विद्रोह के समय यह गाँव जला दिया गया और मालगुजारी बढ़ाकर ड्योढ़ी कर दी गई। इस समय आमदनी का कुछ भाग वृन्द्रावन के रंग जी मन्दिर के लिये खर्च किया जाता है। गांव में प्रायमरी स्कूल है। मंगलवार को बाजार लगता है।

छाता कस्बा मथुरा से २१ मील की दूरी पर दिल्ली को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां दुर्गाकार एक बड़ी (१२ एकड़) सराय है। ऊंचे दरवाजों पर पत्थर का काम है। भीतर कुछ भद्दे घर हैं। कहते हैं यह शेरशाह के समय में बनाई गई थी। १८५७ में यहां विद्रोही जमीदारों का अधिकार हो गया था। अंग्रेजी सेना ने अधिकार करने के लिये बुर्ज को उड़ा दिया। गांव को जला दिया और २२ अगुआ लोगों को गोली से मार डाला। एक साल तक लागान ड्योढ़ा कर दिया गया। श्री कृष्ण जी की छत्र धारण लीला यहां होने से इसका नाम छाता पड़ा। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल है। शुक्रवार को बाजार लगता है।

फरह यमुना के दाहिने किनारे के पास मथुरा से १५ मील दक्षिण की ओर आगरे को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। कहते हैं अकबर की माता हमीदा बेगम ने उसे बसाया था। १५५५ ई० में यहां शेरशाह के भतीजे सिकन्दर शाह और इब्राहीम शाह के बीच में लड़ाई हुई थी। १७३७ ई० में सूरजमल ने यहां तहसील स्थापित की थी। १८७० में यह आगरा से अलग करके मथुरा जिले में मिला दिया गया।

गोवर्द्धन मथुरा से डीग को जानेवाली पक्की सड़क पर मथुरा से १६ मील की दूरी पर स्थित है। प्राचीन समय में गायों के बढ़ाने का यह प्रधान केन्द्र था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है और पांच मील लम्बी एक नंग बलुआ पत्थर की पहाड़ी की गोद में बसा है। मैदान के ऊपर इसकी औसत ऊंचाई १०० फुट है। इसे अन्नकूट या गिरिराज भी कहते हैं। कहते हैं इसी पर्वत को अपनी अंगुली पर उठा कर कृष्ण भगवान ने ७ दिन तक ब्रजवासियों को इन्द्र की मूसलाधार वर्षा से बचाया था। इसकी सबसे ऊंची चोटी पर १५२० ईस्वी में

गोकुल के स्वामी बल्लाभाचार्य जी ने श्रीनाथ का मन्दिर बनवाया था। औरंगजेब के एक आक्रमण के समय मूर्ति नाथ द्वारा (उदयपुर) को पहुँचा दी गई। मन्दिर जीर्ण हो गया। चोटी के नीचे तलहटी में बसे हुये जैतीपुर गांव में कई मन्दिर हैं। दीपदान दिवाली के बाद गोकुल नाथ के मन्दिर में प्रतिवर्ष गिरिराज पूजा और अन्न कूट का मेला लगता है। पर्वत के चारों ओर परिक्रमा वाली सड़क ६ कोस (१२ मील) लम्बी है। नगर मानसी गंगा (ताल) के चारों ओर बसा है इसे अकबर के समय में राजा मानसिंह ने बनवाया था। दिवाली के समय इसका दृश्य बड़ा सुन्दर रहता है। कुछ महीनी में यह सूखा पड़ा रहता है। मथुरा से डीग को जाने वाली सड़क पहाड़ी के जिस भाग से जाती है उसे दान-घाट कहते हैं। यहां यह दो भागों में बंट गई है। बीच में मार्ग है। कहते हैं श्री कृष्ण जी इसी स्थान पर खड़े होकर दूध दही ले जाने वाली गोपियों से अपना भाग लेते थे। मानसी गंगा के पास हरिदेव का मन्दिर है। इसे अकबर के समय में अम्बर के राजा भगवान दास ने बनवाया था। मानसी गङ्गा के दूसरी ओर भरतपुर के राजा रणधीर सिंह और बलदेव सिंह की दो छतरियाँ हैं। २ मील आगे राधा-कुंड गांव के पास राजा सूरजमल की स्मृति में छतरियां बनी हुई हैं। पीछे की ओर बाग और सामने कुसुम सरोवर है। यह ४६० फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा है। एक राना जसवन्त सिंह की छतरी है। १८०३ में सिन्धिया से प्राप्त होने पर गोवर्द्धन और अन्य गांव भरतपुर के राजा रणजीत सिंह के छोटे लड़के कुँअर लक्ष्मण सिंह को भेंट कर दिये थे। १८२६ में उसके मरने पर ब्रिटिश कम्पनी ने इन गांवों को आगरा जिले में मिला लिया। भरतपुर राज्य की ओर से कई बार प्रार्थना की गई कि गोवर्द्धन भरत-पुर राज्य को दे दिया जावे क्योंकि वहां उनके पूर्वजों की स्मृतियां हैं और बदले में इतने ही मूल्य का दूसरा स्थान भरतपुर राज्य से ले लिया जाय। लेकिन यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। गोवर्द्धन में थाना डाक-खाना और स्कूल है। बाजार शनिवार को लगता है।

गोकुल नगर महावन तहसील के पश्चिम में यमुना के किनारे स्थित है। यह महावन से १ मील और मथुरा से ४ मील दूर है। मथुरा और गोकुल के बीच में यमुना के ऊपर रेल का पुल है। नावों का भी पुल बन जाता है। वास्तव में गोकुल महावन का ही एक बाहरी मुहल्ला है। स्वामी वल्लभाचार्य का स्थान होने से, बम्बई आदि दूर-दूर स्थानों से यात्री यहां प्रतिवर्ष आते हैं। दूसरे किनारे से गोकुल का दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। यहां कई मन्दिर हैं। गोकुल नाथ, मदन मोहन और विठल नाथ के मन्दिर बहुत पुराने हैं और १५११ ई० के बने हैं। द्वारकानाथ का मन्दिर १५४६ में बालकृष्ण का १६३६ में बना। भादों की जन्माष्टमी और कार्तिक में अन्न-कूट का यहां मेला लगता है। प्रधान दरवाजे से एक सड़क यमुना तट को जाती है। नीचे बल्लभ घाट है। इस पार से उस पार को नाव आया जाया करती है। गोकुल में रात्रि के समय बहुत सी गायें आ जाती हैं।

गोकुल में डाकखाना और स्कूल है। यहाँ चांदी के खिलौने और आभूषण अच्छे बनते हैं। जैत गांव मथुरा से ८ मील की दूरी पर दिल्ली को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है।

जवारा गांव माट से ४ मील ठीक पूर्व की ओर स्थित है। पहले इसे भूलागढ़ कहते थे। यहीं चन्द्रावन है यहीं बैरागी की गुफा है। पड़ोस में पीलू बबूल और पसेंदू के पेड़ हैं। कुछ कदम्ब के वृक्ष हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। होली के दूसरे और तीसरे दिन मेला लगता है।

कमार कस्बा मथुरा से ३ मील और कोसी से ६ मील दूर है। यहां कपास का व्यापार अधिक होता है। पड़ोस में पक्का ताल है। इसमें जंगल से पानी आता है। पड़ोस में राजा सूरजमल का बनवाया हुआ मन्दिर और पक्का सरोवर है। कमार में एक स्कूल है। सोमवार को बाजार लगता है।

करहरी गांव माट से ८ मील और मथुरा से १८ मील दूर है। यहां एक पुरानी सराय, उजड़ा हुआ नील का कारखाना और प्राइमरी स्कूल है। मंगलवार को बाजार लगता है शुक्रवार को ढोरों की बिक्री होती है।

खैरागाँव मथुरा से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। खादिर वन से बिगड़ कर यह नाम पड़ा है। पास दो कृष्ण कुंड है जिसमें पक्के घाट बने हैं। एक सिरे पर बलदेव का मन्दिर है। यहां वर्ष में एक बार मेला लगता है। गोपीनाथ का मन्दिर राजा टोडरमल ने बनवाया था। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। बाजार शनिवार को लगता है।

कोसी आगरा-दिल्ली सड़क पर मथुरा से २८ मील दूर है। यहीं जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। कुश स्थली (द्वारका) से बिगड़ कर कोसी नाम पड़ा। यहां के रत्नाकर कुंड, मायाकुंड, बिसाखाकुंड और गोमती कुंड इसकी पुष्टि करते हैं। क्योंकि यही कुंड द्वारका में हैं। कोसी नगर कुछ निचली भूमि में स्थित है। कुछ ही दूरी पर आगरा नहर बहती है। ठीक ठीक पानी न बहने के कारण कोसी का पड़ोस स्वास्थ्य कर नहीं है। नगर के बीच में एक बड़ी सराय है। इसके दो दरवाजों के बीच में प्रधान बाजार है। रत्नाकर कुंड (जिसे यहां के लोग पक्का तालाब कहते हैं) इतना ही लम्बा है। गोमती कुंड के पास चैत कृष्ण द्विज को फूल डोल का मेला लगता है। इस ताल के बीच में एक द्वीप है। दो-तीन पक्के घाट हैं। यहां कई मन्दिर हैं। कोसी में थाना, डाकखाना, अस्पताल और स्कूल है। मंगल और बुधवार को बाजार लगता है। यहां घी, अन्न, कपास और ढोर का व्यापार होता है। गाय बैल यहां दूर दूर से बिकने आते हैं। प्रति वर्ष ३०,००० पशु बिकते हैं। नक्खास या पशुओं के बाजार में पशुओं के रखने की बड़ी सुविधा है। बड़ा पक्का कुआं और कई चरही हैं। यहां जैनियों के तीन मन्दिर हैं। १८५७ में दिल्ली को जाते समय विद्रोहियों ने यहां से थाने और तहसील को लूटा और जलाया था।

कोट बन गांव कोसी से ४ मील दूर है। यह बन यात्रा की उत्तरी सीमा है। यहां सीताराम का मन्दिर और सीतल कुण्ड है।

महावन तहसील का केन्द्र स्थान है और यमुना के बांये किनारे पर स्थित है। यह मथुरा से ६ मील दूर है। इस समय इसके पड़ोस की भूमि उजाड़ है। पर पुराने समय में यहां वन था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। १६३४ ईस्वी में इसके पड़ोस में शाहजहां ने ४ चीतों का शिकार करवाया था। श्रीकृष्ण जी यहीं पले थे। १०१८ में महमूद गजनी ने मथुरा के साथ महावन को भी लूटा था। नगर का कुछ भाग पहाड़ी पर बसा है। जहां पहले किला था। यहाँ मन्दिर छोटे हैं। एक मन्दिर श्याम लाल का है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। मगोर्रा गांव यमुना के किनारे पर मथुरा से २८ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। चैत और क्वार में देवी का मेला लगता है।

माट मथुरा से १२ मील की दूरी पर यमुना के ऊंचे किनारे पर स्थित है। यह इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। राया स्टेशन को ८ मील लम्बी पक्की सड़क जाती है। यहां तहसील थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है जो पुरानी कच्ची गढ़ी के घेर में स्थित है। यह पहले उपवन कहलाता था। मट या मटकी से बिगड़ कर इसका वर्तमान नाम पड़ा। कहते हैं खेल में श्रीकृष्ण जी यहां भी मटकी उलट देते थे। चैत कृष्ण नवमी को यहां ग्वाल-मंडल का मेला और प्रति गुरुवार को बाजार लगता है।

मथुरा शहर यमुना के किनारे पर जिले के प्रायः मध्य में स्थित है। आगरे से दिल्ली को सड़क यहां होकर जाती है। मथुरा से आगरा ३२ मील और दिल्ली ८६ मील दूर है। यहां जी० आई० पी० और बम्बई-बड़ौदा रेलवे का जंकशन है। छोटी लाइन कानपुर से अचनेरा को यहां होकर जाती है। बड़ी लाइन कोटा से आती है। ईस्ट इण्डियन रेलवे हाथरस जंकशन पर छोटी लाइन वृन्दावन को जाती है। मथुरा होकर आगरा-दिल्ली पक्की सड़क जाती है। यहां से एक पक्की सड़क डीग और भरतपुर को, एक हाथरस को, एक वृन्दावन को, एक गोकुल, महावन और सादाबाद को गई है। यह एक प्रसिद्ध छावनी है। मथुरा शहर बहुत प्राचीन है यह कई बार उजड़ा और बसा। पुराने भग्नावशेष खुदाई करने से मिले हैं। इनका कुछ संग्रह मथुरा के अजायब घर में रक्खा है। जहां पहले केशव देव का प्रसिद्ध मन्दिर था वहां इस समय औरंगजेब की मस्जिद है। १६६९ ई० में औरंगजेब ने केशव देव का मन्दिर तोड़ डाला और उसके स्थान पर मस्जिद बनाई गई। खुदाई में

बुद्ध भगवान की कई मूर्त्तियां मिलीं। कुछ जैन मूर्त्तियां भी मिलीं। जहां कटरा है वहीं बौद्ध कालीन यश विहार था। कटरा घेरा ८०४ फुट लम्बा ६५३ फुट चौड़ा है।

केशव देव के मन्दिर का ऊपरी भाग एक दम नष्ट कर दिया गया लेकिन मस्जिद के पीछे निचले भाग का १६३ फुट तक पता लग सकता है। नष्ट होने से पहले बनियर और टेवर्नियर नामी योरुपीय यात्रियों ने मन्दिर के दर्शन किये थे। टेवर्नियर ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है। "मन्दिर इतना विशाल ऊंचा और भव्य है कि निचले भाग में स्थित होने पर भी यह पांच-छः कोस की दूरी से दिखाई देता है। इसमें लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है जो आगरा के पास वाली खदान से लाया गया है। यह अष्टभुज चबूतरे पर बना है। इस पर नक्काशी का पत्थर लगा है। दो पट्टियों पर कई प्रकार के पशु विशेष कर बन्दर बने हैं। चबूतरे के आधे भाग पर मन्दिर है आधा भाग सामने खुला है। मन्दिर के बीच वाले भाग में गुम्बद है। बाहरी भाग में ऊपर से नीचे तक बन्दर, हाथी आदि पशुओं के चित्र पत्थर पर हैं। ताखों में दैत्यों की मूर्त्तियां हैं। मन्दिर में प्रवेश करने के लिये केवल एक ऊंचा द्वार था इसमें कई स्तम्भ और पशु तथा मनुष्यों की मूर्तियां थीं पुराने सोने और चांदी के मंडप में मूर्ति स्थापित थी। मूर्ति का केवल सिर दिखाई देता था। मूर्ति काले संगमरमर की बनी थी। आंखों में लाल जड़े हुये थे। सारे शरीर पर कामदार लाल मखमल का वस्त्र था। इसलिये बाहें दिखाई नहीं देती थीं।

औरंगजेब के आक्रमण को लोग पहले ही भांप गये थे। इसलिये प्राचीन केशवदेव की मूर्ति मेवाड़ के राना राजसिंह ने हटवा ली थी। जिस रथ पर मूर्ति लाई जा रही थी उसके पहिये उदयपुर से २२ मील की दूरी पर बानास नदी की बालू में गहरे धस गये। रथ के पहिये न निकल सके इसलिये उसी स्थान पर मन्दिर बना दिया गया। मन्दिर के चारों ओर आजकल का नाथद्वारा नगर बस गया। कटरा के पीछे मथुरा में केशव देव का वर्तमान मन्दिर है। पास ही पाटरा कुंड है। यह अक्सर सूखा पड़ा रहता है। कटरा के दक्षिण में बलभद्र कुंड के पास श्रावणी (सलूनों) को मेला लगता है। इसके पास ही भूतेश्वर महादेव का मन्दिर है। कुछ ही दूरी पर धूल कोट के टीले हैं। कुछ दूरी पर श्रावस्ती संगम और कैलाश टीला है। इसके ढालों पर गोकर्णेश्वर का मन्दिर है। विशाल मूर्ति बड़ी पुरानी है। पास ही गौतम ऋषि की मूर्ति है। कैलाश के सामने रामलीला का मैदान है। यहीं सूखा श्रावस्ती कुंड है। पास ही महाविद्या देवी का मन्दिर है। कहते हैं आरम्भ की मूर्ति पांडवों ने स्थापित की थी। वर्तमान मन्दिर अठारहवीं सदी के अन्त में पेशवा ने बनवाया था। पड़ोस का करीली वृक्ष बड़ा पुराना है। इसके नीचे एक बौद्ध स्तम्भ पर माया देवी की मूर्ति खुदी हुई है। यहां क्वार और चैत्र में मेला लगता है। जैसिंह पुर खेड़े के नीचे यामुण्डदेवी का मन्दिर है। जहां खेड़ा है वहां सवाई जैसिंह का पुराना महल था। नीचे गणेशघाट या सेनापति घाट है। इसे सिन्धिया महराज के एक सेनापति ने बनवाया था।

कनकाली टीला के पास शिवताल है। इसमें सदा पानी रहता है। एक ओर गऊ घाट है जहां गाय पानी पीती हैं। यहां भादों की कृष्ण एकादशी को मेला लगता है। शिवताल के निर्माता की इच्छा थी कि वह केशव मन्दिर को फिर से बनावे। उसने बहुत सी भूमि भी ले ली थी। लेकिन जो मुसलमान २०० वर्ष से बसे थे उन्होंने अपनी जमीन बेचने से इनकार कर दिया अतः लम्बे मुकदमे के बाद उसे मन्दिर बनाने का विचार छोड़ना पड़ा। होली दरवाजे के पास दीर्घ विष्णु का मन्दिर उसकी चिर स्मृति है।

कंस का टोला होली दरवाजे के बाहर है। कहते हैं श्री कृष्ण जी ने दुष्ट कंस का यहीं दमन किया था। वर्तमान मथुरा शहर यमुना के दाहिने किनारे पर डेढ़ मील तक फैला हुआ है। दूसरी ओर से मथुरा का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। पानी के ऊपर पत्थर के घाटों की पंक्ति उठी हुई है। घाटों के ऊपर तंग सड़क के किनारे पत्थर के मन्दिर और घर बने हैं। प्रातःकाल स्नान करने वालों की यहां भीड़ लगी रहती है। कंस का किला (जो इस समय खंडहर है) दूर से दिखाई देता है। इसे राजा मानसिंह ने फिर से बनवाया था। आगे चलकर यहीं ज्योतिष प्रेमी सवाई जैसिंह महाराज रहते थे। गदर के कुछ पूर्व

यहां के भवन एक सरकारी ठेकेदार को बेच दिये गये उसने पत्थर आदि सब इनका सामान निकलवा लिया।

यमुना के किनारे के प्रायः बीच में वह स्थान है जहां श्रीकृष्णजी ने कंस को मार कर विश्राम लिया था। इसी से यह घाट विश्रान्त घाट कहलाता है। मथुरा का यह घाट और सब घाटों से सुन्दर है। पानी के ऊपर संगमरमर के महराब हैं। पानी में बड़े बड़े कछुए हैं। यहां से उत्तर की ओर वाले घाट उत्तर कोट और दक्षिण की ओर वाले घाट दक्षिण कोट कहलाते हैं। उत्तर कोट में गणेश घाट, मनसा घाट, दशाश्वमेधघाट, चक्रतीर्थघाट, कृष्णगंगा घाट, सोमतीर्थ घाट या वसुदेवघाट, ब्रह्मलोकघाट, घटभरनघाट, धारापाटन घाट, संगमतीर्थ घाट (वैकुंठ घाट) नवतीर्थ घाट और असिकुंड घाट हैं। दक्षिण की ओर अविमुक्त घाट, विश्रान्ति घाट, प्रयाग घाट, कनखल घाट, तिन्दुक घाट सूर्य घाट, चिन्तामणि घाट ध्रुव घाट ऋषि घाट मोक्ष घाट और बुद्ध घाट हैं। सतीघाट प्रधान सड़क के सामने हैं बंगाली घाट रेलवे पुल के पास है। ध्रुवघाट के ऊपर ध्रुवटीला पर ध्रुव मन्दिर है जो १८३७ ई० में बना था। सती बुर्ज जैपुर के राजा भगवानदास की माता की स्मृति में १५७० ई० में बनाया गया था। इस समय यह ५५ फुट ऊँचा है और चौमंजिला है। पहले यह अधिक ऊँचा था। कहते हैं औरंगजेब ने इसका ऊपरी भाग गिरवा दिया था।

शहर के प्रायः बीच में ऊँची भूमि पर जामा मस्जिद है। यह एक प्राचीन हिन्दू मन्दिर को उजाड़ कर १६६१ ई० में बनी थी। हिन्दू नगर के बीच में यह सबसे ऊँची इमारत है। १८०३ के भूचाल में ऊचा दरवाजा ऊपर से नीचे तक फट गया और एक मीनार का ऊपरी बुर्ज गिर गया। लेकिन गुम्बद की कोई हानि नहीं हुई।

द्वारकाधीश का विशाल मन्दिर ग्वालियर के कोषाध्यक्ष परीखजी ने १८१५ ई० में बनवाया था। यहीं भरतपुर महाराज का महल और सेठ लक्ष्मीचन्द का भवन है। मन्दिरोंके अतिरिक्त मथुरामें कई धर्मशालायें हैं। मथुरा में किशोरी रमन और चम्पा अग्रवाल दो इण्टर कालेज हैं। इनके अतिरिक्त यहां एक गवर्नमेण्ट हाई स्कूल और एक मिशन हाई स्कूल है। वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल पुराने किले पर बसा है। इनके अतिरिक्त यहां कई पाठशालायें हैं। गुरुकुल वृन्दावन में है। वहां का प्रेम महाविद्यालय भी एक राष्ट्रीय संस्था है। सदर बाजार में यमुना बाग है। सदर बाजार से मिली हुई छावनी है यहां सिपाहियों की बारकें और फौजी अफसरों के बंगले हैं।

मथुरा का अजायबघर भी बहुत सुन्दर है यहां मथुरा के पड़ोस में पाई गई प्राचीन मूर्तियां और दूसरी वस्तुओं का संग्रह है।

मथुरा में पत्थर खरादने, हाथ का कागज और पीतल की मूर्तियां बनाने का काम अच्छा होता है। रेलों का जंक्शन होने से मथुरा एक व्यापारी शहर बन गया है। यहां से अन्न, घी, पशु और दूसरी वस्तुओं का व्यापार होता है।

नन्दगांव उसी पहाड़ी की तलहटी में बसा है जहां बरसाना बसा है। नन्दगांव मथुरा से २६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। नन्द जी यहीं रहते थे। यहीं नन्द राय जी का मन्दिर है। गोपीनाथ, नृत्यगोपाल, गिरधारी, नन्दनन्दन राधामोहन मनदेवी के मन्दिर भी यहां हैं। कुछ दूरी पर मानसरोवर का पक्का तालाब है। कहते हैं कृष्ण जी इसी में गौओं को पानी पिलाते थे। इसके अतिरिक्त यहां और कई कुंड हैं। गांव के पास ही उधौ जी क्यार (कदम्ब कूंज) है।

नोह भील (गांव) मथुरा से ३० मील और माट से १८ मील दूर है। इसके पास ही इस नाम की भील है। कहते हैं पहले यहां यमुना की धारा (ऐटा) थी। इस गांव में बीच में एक कच्ची गढ़ी है जिसे भरतपुर राज्य के एक अफसर ने १७४० ई० बनवाया था। इस समय यह खंडहर है गांव के बाहर एक मकबरा या शाहहसन गोरी की दरगाह है। यहां मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। शुक्रवार को बाजार लगता है।

ओल एक पुराना गांव है। यह मथुरा से १६ मील दक्षिण की ओर है। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

पानी गांव मथुरा से ६ मील उत्तर की ओर यमुना के पूर्वी किनारे पर स्थित है। गांव खादर

(कछार) में बसा है। वर्षा काल में पड़ोस की भूमि पानी में डूब जाती है। यहां सूरजमल की रानी का बनवाया हुआ एक मन्दिर है।

राधाकुंड मथुरा से १६ मील पश्चिम की ओर है। इसे श्रीकुण्ड भी कहते हैं। श्री कृष्ण जी ने अरिष्ट दैत्य का वध करके यहीं स्नान किया था। यहाँ कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को मेला लगता है। कृष्णकुण्ड और राधाकुण्ड दोनों में पक्के घाट बने हैं।

राया कस्बा मथुरा से ८ मील की दूरी पर हाथरस को जाने वाली पक्की सड़क पर पड़ता है। यह कानपुर अचनेरा लाइन का एक स्टेशन है। माट-नहर-शाखा राया से १ मील दूर है। राया एक प्रसिद्ध व्यापारी नगर है। यहां थाना, डाकखाना और जू० हाई स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

सादाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह झिर्ना या कर्वन नदी के किनारे मथुरा से २४ मील दूर है। यहां चार पक्की सड़कें मिलती हैं। एक मथुरा को, एक जलेसर रोड स्टेशन (ई० आई० आर) को और दो अलीगढ़ और आगरा को जाती हैं शाहजहां के एक मंत्री सादुल्ला खाँ ने इसे बसाया था। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जू० हाई स्कूल है। मंगल और शनिश्चर को बाजार लगता है। सहपऊ गांव मथुरा से ३१ मील और सादाबाद से ७ मील दूर है। यह जलेसर रोड को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यहां नेम नाथ का मन्दिर है है जहां भादों के महीने में मेला लगता है। इसके पास एक पुराना किला था। मील की कोठी के पास भद्रकाली माता का स्थान है। यहां दशहरा के अवसर पर भैंसे की बलि चढ़ाई जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बुधवार और रविवार को मेला लगता है।

सेहीगांव मथुरा के उत्तर में १६ मील दूर है। यहां बिहारी जी का मन्दिर है। पास ही इन्द्रौली का पुराना खेड़ा है। यहां कार्तिक और वैशाखी को मेला लगता है। शाहपुर गांव मथुरा से ३६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर यमुना के दाहिने किनारे पर बसा है। इस गांव को सोलहवीं सदी के मध्य में शेरशाह के एक अफसर ने बसाया था। नदी के किनारे इस गांव के बसाने वाले (मीर जी) का मकबरा है। सामने एक किले के खंडहर हैं। इस किले को मरहठों के एक अफसर ने आरम्भ किया था। लार्ड लेक ने २८,००० रु० की मालगुजारी का यह गांव नवाब अशरफ खां को जागीर के रूप में उसके जीवन भर के लिये दिया था। शाहपुर में यमुना को पार करने के लिये नाव रहती है। बाजार सोमवार को लगता है।

शेरगढ़ यमुना के दाहिने किनारे पर मथुरा से २२ मील दूर है। इसके पास ही शेरशाह के बनवाये हुये किले के खंडहर हैं। गदर के समय में पड़ोस के गूजरों ने इसे लूटा था। जानवरों की चोरी इस समय भी हुआ करती है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है बृहस्पतिवार को बाजार लगता है।

सोनई मथुरा से हाथरस को जाने वाली पक्की सड़क पर पड़ता है। यहां के पुराने किले को गिरा कर थाना बनाया गया। फिर थाना भी तोड़ दिया गया। बाजार रविवार और गुरूवार को लगता है। सोंख कस्बा मथुरा से १६ मील दूर है। कहते हैं संखासुर से बिगड़ कर यह नाम पड़ा। पुराने किले के खेड़े के पास सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। किला भरतपुर के राजा सूरजमल के एक अफसर ने बनवाया था।

एटा

एटा जिला गङ्गा यमुना द्वावा के मध्यवर्ती भाग में स्थित है। उत्तर की ओर गङ्गा नदी इसे बदायूं जिले से अलग करती है। इसके पूर्व में फर्रुखाबाद, दक्षिण में आगरा और मैनपुरी, पश्चिम में अलीगढ़ और आगरा के जिले हैं। इसका क्षेत्रफल १७१६ वर्गमील और जनसंख्या १२ लाख है। एटा जिले की अधिक से अधिक लम्बाई (दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक, ६२ मील और चौड़ाई ४३ मील है।

काली नदी एटा जिले को दो भागों में बांटती है। काली नदी के दक्षिण-पश्चिम का भाग अधिक उपजाऊ है। उत्तर-पूर्व की ओर अलीगंज और कासगंज की भूमि अच्छी नहीं है। भूरचना की दृष्टि से एटा जिला चार भागों में बटा हुआ है। (१) गङ्गा की प्रधान वर्तमान धारा और पुराने ऊंचे किनारों की भूमि नीची है। (२) गङ्गा के ऊंचे किनारे से काली नदी के ऊंचे किनारे तक ऊंची भूमि है। (३) काली नदी की घाटी एक तंग, पेटी है। (४) काली नदी के उत्तर वाला प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है।

(१) गङ्गा की तराई कहीं कहीं १० मील चौड़ी है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल ३०० वर्गमील है। इस प्रदेश की मिट्टी नई और कछारी है। इस मिट्टी में बालू और वनस्पति का मिश्रण है। यहां गेहूँ और दूसरी फसलें बहुत अच्छी होती हैं।

(२) बूढ़ी गङ्गा और काली नदी के बीच में मध्यवर्ती ऊंचा बांगर का प्रदेश है। इसकी चौड़ाई आठ दस मील है। जमीन कुछ ऊंची नीची है। निचले भागों में पानी इकट्ठा हो जाता है।

(३) काली नदी का ढाल क्रमशः है। उत्तरी किनारा कहीं कहीं सपाट है। इसके पड़ोस की भूमि उपजाऊ है। किनारे के पास गांव बसे हुए हैं। काली नदी अपना मार्ग नहीं बदलती है। बाढ़ के बाद जो भूमि निकलती है वह बड़ी उपजाऊ होती है।

(४) काली नदी के उत्तर वाला प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। इसमें बालू का नाम नहीं है। कहीं कहीं ऊसर भूमि है। ईसन नदी काली-यमुना द्वावा के बीच में बहती है। इस प्रदेश में सिंचाई भी सुगम है। गङ्गा बूढ़ गङ्गा काली और ईसन इस प्रदेश की प्रधान नदियां हैं।

गङ्गा नदी २२ मील तक जिले की सीमा बनाती है। कहते हैं अब से आठ नौ सौ वर्ष पहले गङ्गा ने अपना पुराना मार्ग बदला था। अब वह धीरे धीरे अपने पुराने मार्ग के पास आ रही है। कछलाघाट और कादिर गञ्ज में गङ्गा को पार करने के लिये बाढ़ के घट जाने पर नावों का पुल रहता है। वर्षा ऋतु में नावें रहती हैं।

बूढ़ गङ्गा या बढ़ गङ्गा पुराने ऊंचे किनारे से काफी दूर बहती है। इस ३० फुट या ४० फुट ऊंचे किनारे को पहाड़ कहते हैं।

बूढ़ गङ्गा की धार बड़ी मन्द रहती है।

काली नदी या कालिन्दी बढ़ गङ्गा से दस बारह मील दक्षिण की ओर बहती है। यह अलीगढ़ जिले से यहां आती है। जिले कालिन्दी में का मार्ग ६५ मील लम्बा इसकी घाटी गहरी है। एक ऊँचे किनारे से दूसरे ऊँचे किनारे तक कालिन्दी की चौड़ाई ३ मील है। हाथरस नदरई और कुछ अन्य स्थानों पर पुल बना है। १८८६ में २५ लाख रुपये की लागत से इसके ऊपर एक ऐसा पुल बनाया गया। जिसके ऊपर से निचली गङ्गा नहर बहती है। पहले काली नदी सिंचाई के काम आती थी। आगे चल कर नहर के विभाग ने काली नदी में बांध बनाने की मनाई कर दी।

ईसन नदी की तली पड़ोस की भूमि से बहुत कम नीची है। इसमें तराई का नाम नहीं है। इसी से बाढ़ के दिनों में यह दूर तक फैल जाती है। एटा शहर से टूंडला, शिकोहाबाद और निधौली को जाने वाली सड़कों के ऊपर पुल बने हैं। आरिंद रिंद या रतवा कुछ दूसरी छोटी नदियां हैं।

एटा जिले के विषम धरातल में पानी ठीक ठीक नहीं बह पाता है। इसी से कुछ आखातें झीलें बन गई हैं कुछ झीलों में साल भर पानी रहता है। रुस्तम गढ़ महोता, दरिया गञ सिंकदरपुर और पटना झीलें काफी बड़ी हैं। इनके उथले पानी में सिंघाड़ा बहुत होता है। किनारे के पासवाली तर जमीन में

गेहूँ और दूसरी फसलें होती हैं। पानी के ऊपर कई तरह की चिड़ियां रहती हैं। एटा जिले की १० फीसदी जमीन ऊसर है। कहीं कहीं ढाक का जङ्गल है। गङ्गा और बूढ़ गङ्गा के पड़ोस में कटरी है। जहां गांडा सेठा (कांस) और झाऊ बहुत हैं।

अली गंज तहसील की दलदली भूमि में खस बहुत होता है। बबूल नीम शीशम जामुन यहां के साधारण पेड़ हैं। बस्ती के पड़ोस में आम के बगीचे हैं। जिले के कई भागों में कंकड़ मिलता है।

गन्ना, धान, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ और चना यहां की प्रधान फसलें हैं।

फसलें नहरों, कुओं, और तालाबों के पानी से सींची जाती हैं।

अलीगञ्ज कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यहां से थाना दरिया गञ्ज रेलवे स्टेशन को पक्की सड़क जाती है। यह नौ मील दूर है। दूसरी पक्की सड़क एटा को जाती है। अठारहवीं सदी में याकूत खां नामी फरुखाबाद के नवाब के हिजड़े ने बसाया था। यहां बहुत कम व्यापार होता है। बाजार गुरुवार और शनिवार को लगता है। यहां कुछ अनाज और कपास मोल लेकर बाहर जाती हैं। यहां तहसील थाना, डाकखाना और जू० हा० स्कूल है।

अयनपुर कस्बा एटा से १३ मील दूर है। यह दिल्ली से फरुखाबाद को जाने वाली सड़क पर स्थित है। ग्रांडट्रंक रोड के खुल जाने से इसका व्यापार बहुत घट गया, रेल के खुल जाने पर यहाँ के अनाज नील और कपास के व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। यहां इस समय डाकखाना और स्कूल है।

अतरंजीखेड़ा इस समय उजाड़ है और ईंटों से ढका है। यह एटा से १५ मील दूर है। अकबर के समय में यह कन्नौज का एक परगना था। शहाबुद्दीन गोरी के समय में यहां के राजा बेन ने कई बार मुसलमानों को हराया। अन्त में गोरी ने स्वयं सेना ले जाकर उसे हराया तब से यहां खेड़ा हो गया। यह खेड़ा ३००० फुट लम्बा १५०० फुट चौड़ा और ६५ फुट ऊँचा है। यहां बहुत पुराने सिक्के मिलते हैं।

अवागढ़ एटा से १३ मील पश्चिम में और जलेश्वर से १२ मील पूर्व में स्थित है। राजा का किला कस्बे से २ फर्लांग उत्तर-पूर्व में स्थित है। इस किले का घेरा १ मील है। यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना और तहसीली स्कूल है। मङ्गलवार और शनिवार को बाजार लगता है। दशहरा और होली के अवसर पर मेला लगता है।

बसुन्द्रा एटा से टूंडला को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इसके पास ही एक पुराना खेड़ा है यहां एक कच्ची गढ़ी के खंडहर हैं।

भरगैन गांव बूढ़ गङ्गा के किनारे पर एटा से ३३ मील की दूरी पर स्थित है। कहते हैं कि इसका नाम भार्गव या भारगहन ऋषि के नाम पर पड़ा है। मुसलमानी समय में इसके पड़ोस में भारी लड़ाइयां हुईं।

बिलाराम कस्बा इसी नाम के परगने का प्रधान गांव है। कास गञ्ज से ४ मील पश्चिम की ओर है। कहते हैं अब से ६१० वर्ष पहले इसे चौहान ठाकुरों ने बसाया था। यहां का राजा मुसलमानी आक्रमणकारियों से लड़ा। हार जाने पर यहां खेड़ा बन गया।

बिलसर या बिलसं गांव उस स्थान पर बसा है जो ह्वान सांग के समय में पिलोचिन कहलाता था। उस समय गांव के बीच में १०० फुट ऊँचा स्तूप था। इसे सम्राट अशोक ने उस स्थान पर बनवाया था जहाँ भगवान बुद्ध ने ७ दिन तक प्रचार किया था। यहां पांच मन्दिर और एक किला था। १२४७ में बलबन के समय में घमासान लड़ाई हुई थी।

ढुंडवारागञ्ज एटा से ३२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह कास गंज और कानपुर के बीच एक रेलवे स्टेशन है। पहले यहां कोट राजपूतों का अधिकार था। ११९४ ईस्वी में शहाबुद्दीन गोरी ने उन्हें भगा दिया। फिर यहां ढुंडिया कायस्थ बस गये। यहां डाकखाना और स्कूल हैं। बाजार सोमवार और बृहस्पतिवार को लगता है।

एटा शहर १८४६ से जिले का केन्द्र स्थान है। यह ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। एटा शहर को अब से ५५० वर्ष पहले पृथिवी राज के वंशज एक चौहान राजपूत संग्राम सिंह ने बसाया था। कहते हैं कि भाले से नींव खोदते समय इस राजपूत को एक ईंट मिली थी। इसी लिये शहर का नाम ईंटा और फिर उससे बिगड़कर एटा पड़ गया। संग्राम सिंह ने यहां एक गढ़ बनवाया था। गदर के समय राजा डामर सिंह

ने विद्रोह किया। इससे उसकी जायदाद और उपाधि छिन गई। किला नष्ट कर दिया गया।

एटा में हाई स्कूल, जिले की कचहरी, अस्पताल आदि है। यहां कई पक्की सड़कें मिलती हैं। लेकिन व्यापार या कोई विशेष कारीगरी नहीं है। कपास ओटने की एक मिल है।

जलेसर कस्बा ईसन और सिरसा नदियों के बीच में स्थित है। यह ईसन नदी के बायें किनारे से १ मील दूर है। जलेसर के ऊंचे भाग में जहां पहले किला था इस समय तहसील, थाना और मुंसफी है। निचले भाग में कस्बा है। यह ईस्ट इंडियन रेलवे की जलेसर रोड स्टेशन से ८ मील दूर है। यह श्रावा गढ़ से ११ मील और एटा से २३ मील दूर है। इसके पड़ोस में जंगल होने पर भी भूमि नीची और दलदली है। अक्सर पड़ोस की भमि जल (पानी) से डूब जाती थी। इसी से इसका नाम जलेश्वर या जलेसर पड़ा। पहाड़ी एक पुराने किले का खंडहर है। कहते हैं जब चित्तौड़ का पतन हुआ उसी समय राना कटीरा १४०३ ईस्वी में यहां शासन करता था। उसी ने यहां किला बनवाया था। जो मुसलमान मारे गये इनमें एक मकबरे के पड़ोस में उसका मेला लगता है। जलेसर में तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां कपास ओटने की एक मिल है। शोरा भी बनाया जाता है। यहां जूता, कपड़ा, चूड़ियाँ और बर्तन बनाने का काम होता है। कादिर गञ्ज गंगा के किनारे पर एटा से ३२ मील उत्तर की ओर स्थित है। पश्चिम की ओर एक पुराने किले के खंडहर हैं। किले के भीतर शुजातखां का मकबरा है जो फर्रुखाबाद नवाब की ओर से रुहेलों से लड़ता हुआ मारा गया। पहले यह ठाकुरों का गांव था। इसका पुराना नाम चिल्ला चौन था। गङ्गा की बाढ़ में किला गिर गया। पास ही रेता शाह नामी फकीर का मकबरा है। यहां प्रतिवर्ष मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। मङ्गलवार को बाजार लगता है।

कासगंज एटा जिले का सब से अधिक प्रसिद्ध नगर है। यह एटा से १६ मील की दूरी पर कानपुर अचनेरा लाइन का एक प्रधान स्टेशन है। यहीं पर बरेली से आने वाली रुहेल खण्ड कमायूं रेलवे की शाखा मिलती है। काली नदी यहां से सवा मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। एक पक्की सड़क कासगंज के बीच में होकर उत्तर से दक्षिण को जाती है। जहां प्रधान सड़कें मिलती हैं वहीं सुन्दर दुकानें और बारादरी है। यहाँ तहसील, थाना, पड़ाव और स्कूल है। उत्तर की ओर कासगञ्ज के पुराने राजा का किला और (दुर्गाकार) महल है। इसके भीतर मन्दिर है और हाथी घोड़ों के रहने के लिये अस्तबल हैं। नगर की दूसरी ओर रेलवे स्टेशन और रेलवे-कर्मचारियों की बस्ती है। पास ही कपास ओटने और शक्कर बनाने की मिलें हैं। रेलवे का जंकशन होने से कासगञ्ज का व्यापार बहुत बढ़ गया है। गल्ला, शक्कर और कपास का व्यापार प्रधान है। यहां पहले अंग्रेजी छावनी भी बनी थी। पर १८०४ में होल्कर की सेना ने यहां आक्रमण किया और छावनी जला डाली।

मरेहरा एटा से १२ मील उत्तर की ओर है पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन है। स्टेशन तक पक्की सड़क जाती है। आगे चल कर मरहची के पास कासगंज से एटा को जाने वाली सड़क से मिल गई है। अधिकतर निवासी मुसलमान हैं। यहां दो स्कूल और दो बाजार हैं। मरेहरा के उत्तर-पूर्व में सरूपगञ्ज नाम का गांव था। १२०५ में यहां के राजपूत राजा को एक खिलजी सरदार ने मार डाला और गांव में क़तल आम करवा दिया।

मोहनपुर गांव एटा से १६ मील उत्तरपूर्व की ओर है। कहते हैं मोहन सिंह नामी एक सोलंकी राजपूत ने इसे बसाया था। यहां स्कूल और डाकखाना है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। वर्ष में एक बार मेला लगता है।

नदौली गांव गङ्गा के पास एटा से ३२ मील उत्तर पूर्व की ओर है। गांव में एक स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। वर्ष में एक बार देवी का मेला लगता है।

निधौली गांव एटा से १० मील दूर है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। पास एक किले के खंडहर हैं। गांव के उत्तर की ओर ईसन नदी और दक्षिण की ओर गङ्गा-नहर बहती है। पटियाली गङ्गा

के ऊंचे किनारे पर एटा से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। किनारा एक दम सपाट है। नालों ने इसे काट दिया है। यह नगर पुराना है। इसका उल्लेख महाभारत आता में है कहते हैं यह भाग द्रोणाचार्य को मिला था। शहाबुद्दीन गोरी ने मन्दिरों को तुड़वाकर उनके सामान से यहां किला बनवाया था। उजड़ जाने पर गांव वालों ने किले के सामान से अपने घर बनवाये। यहां १७४६ में अवध के नवाब और फर्रुखाबाद के नवाब की सेनाओं में लड़ाई हुई। गदर के समय में भी यहां लड़ाई हुई। यहां डाकखाना और स्कूल है। बाजार मंगलवार और शनिवार को लगता है।

रामपुर अलीगञ्ज से ४ मील उत्तर की ओर एटा से ३२ मील दूर है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। कन्नौज की रानी का निवास स्थान है।

सहवर कस्बा एटा के २४ मील उत्तर पूर्व की ओर है। इसे एक चौहान ठाकुर ने बसाया था। यह कानपुर-अचनेरा लाइन का एक स्टेशन है। लेकिन इसका व्यापार बड़ा नहीं है। यहां डाकखाना और स्कूल है।

सकीत नगर एटा से १० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसके पड़ोस के टीले पर एक किला था। इस समय वह खंडहर हैं। सबसे ऊँचे भाग में एक जीर्ण मन्दिर हैं। मन्दिर के चारों ओर नगर बसा है। उत्तर की ओर एक सुन्दर पुल है। इस पर से एक पक्की सड़क ग्रांड ट्रंक सड़क तक गई है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। कहते हैं इसे एक चौहान ठाकुर राजा सकटदेव ने बसाया था। उसी ने वहां किला बनवाया था। १२८५ में गयासुद्दीन बलबन के शासन काल में बनवाई गई। १४८८ में बहलोल लोदी यहां बीमार हुआ और मर गया। बाद यहां चौहानों का फिर अधिकार हो गया। १५२० में यहां के राजा ने इब्राहीम लोदी का विरोध किया था। पर राजा को भागना पड़ा और इब्राहीम ने सकीट में मोंट मुसलमानों को बसाया। यहां कई पुरानी मस्जिदें हैं।

सराय अगत जिले के दक्षिणी पूर्वी सिरे पर स्थित है। वास्तव में काली नदी के नालों ने इसे दो भागों में बांट दी है। सराय पूर्व में है। अगत पश्चिम में है। यहां डाकखाना और स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है यह नगर ग्यारहवीं सदी में बसाया गया था। सराय के पश्चिम में ४० फुट ऊंचा आध मील घेरे वाला खेड़ा है। यहां बुद्ध की मूर्तियाँ और कई कालों के सोने चांदी और तांबे के सिक्के पाये जाते हैं। कहते हैं अगस्त्यमुनि से बिगड़ कर अगत बना है। सराय के सामने १ मील की दूरी पर संकिसा है। पहले दोनों एक ही बड़े और प्राचीन नगर के अंग थे। सोरों नगर बुढ़ गङ्गा के किनारे पर एटा से २७ मील की दूरी पर बसा है। यहां होकर बरेली से हाथरस को पक्की सड़क जाती है। गङ्गा (गढ़िया घाट) यहां से ४ मील दूर है। सोरों भारतवर्ष का एक प्रधान तीर्थ है। दूर दूर से यात्री यहां स्नान करने के लिये आते हैं। यहां अठारह पक्के घाट और अनेक (पचास-साठ) मन्दिर हैं। मन्दिरों के पास पीपल के वृक्ष हैं। यात्रियों के ठहरने के तीस बड़ी बड़ी धर्मशालायें बनी हैं। बरेली से कासगंज को जाने वाली रुहेलखंड-कमायूं रेलवे का एक स्टेशन है। इससे यहाँ आने में यात्रियों को सुविधा होती है। सोरों का पुराना नाम सूकर क्षेत्र है। यहाँ वाराहावतार लेकर विष्णु ने हिरण्यकश्यप राक्षस का वध किया था। जहाँ पुराना नगर था वहाँ इस समय टीला है जिसे किला कहते हैं। वाराह जी का मन्दिर उत्तर-पूर्व की ओर है। इस प्राचीन मन्दिर में वाराह लक्ष्मी की मूर्ति है। सीताराम जी का मन्दिर भी पुराना है। कहते हैं औरंगजेब ने इसे तुड़वा डाला था। १८८० में यह फिर से बनवाया गया। सोरों के खम्भे कुतुब मीनार के पास वाले खम्भों के समान हैं जिन पर सम्वत ११२४ (सन् १०६० ईस्वी) खुदा हुआ है।

सोरों के अधिकतर निवासी पंडे हैं इनकी जीविका यात्रियों से चलती है। सोरों में वर्ष भर में कई गङ्गा स्नान के मेले होते हैं।

थाना दरियाओ गंज बुढ़गङ्गा के किनारे पर एटा से २८ मील पूर्व की ओर है। यह थाना और दरि-

याओ गंज दो गांवों के मिलने से बना है। इन दोनों में थाना अधिक पुराना है। यहां एक किला बनाया था। इसकी ईंटें इस समय भी गङ्गा की तली में मिलती हैं। थाना के उत्तर-पूर्व को घोड़े के नाल के आकार की एक झील है जो वास्तव में गङ्गा की छाड़ (छोड़ा हुआ जलाशय) है। दक्षिण किनारे पर एक बरगद है जिसका घेरा ३८ फुट है। यह कानपुर-अचनेरा लाइन का एक स्टेशन है। यहां थाना और स्कूल है।

एटा जिले का कारबार

एटा जिले के सदरई, मरेहरा आदि कई गांवों में शोरा तैयार किया जाता है। शोरा बनाने का काम कार्तिक से चैत तक होता रहता है। लोनी मिट्टी पुराने गांवों में बहुत मिल जाती है। लोनिया लोग छोटे छोटे गोल गढ़े बनाते हैं। और उसमें तिनका या पूला भर देते हैं। इसी तिनके के ऊपर लोनी मिट्टी डाल दी जाती है। फिर उसके ऊपर पानी छोड़ा जाता है। छोटी छोटी नालियों में छन कर यह पानी नादों में पहुँचता है। फिर पानी लगभग छः घंटे उबाला जाता है। इससे पानी भाप बनकर उड़ जाता है और कच्चा शोरा रह जाता है। यह शोरा फर्रुखाबाद में बिकने के लिये भेज दिया जाता है। बड़ी लड़ाई के दिनों में बारूद बनाने के लिये इस शोरे की अब से कहीं अधिक मांग थी। १० मन कच्चे शोरे से ५ मन अच्छा शोरा और २ मन नमक निकलता है।

शीशा—जलेशर की मिल में ब्लाक (बड़ा) शीशा बनता है। हंडे बनाने के लिये चिकनी मिट्टी जबलपुर से आती है। कोयला झरिया से आता है। साल भर में लगभग ५०,००० रु० का १० मन सामान तैयार होता है।

सोरों के पास क़ादिरबारी में कच्ची गङ्गाजली बनती हैं। मरेहरा, कासगंज और मोहनपुर में मनिहार लोग चूड़ियां बनाते हैं।

कासगंज, मिलराम और तैयारपुर में चाकू, कैंची, अस्तुरा और सरौता बनते हैं।

सोरों में झाऊ, अरहर, बांस और खजूर से डलियां बनाई जाती हैं। यहीं गुस्सियों के परवे बनते हैं। सोरों में टीन की भी गङ्गाजली बनती हैं।

जेल में दरी, दुसूती, गाढ़ा, झाड़न और बान बनते हैं। बान मूँज से बनते हैं। एक कैदी १५ सेर मूँज कूट लेता है। या वह ३/४ सेर मूंज के ३०० गज बान बट लेता है। इसी बान से टाट या चटाई बनाई जाती है। मूंज गङ्गा के खादर में कासगञ्ज और अलीगञ्ज की तहसीलों में बहुत होती है। इससे बान बटे जाते हैं और रस्सियां बनाई जाती हैं। बहुत से बान क़ायमगंज और बदायूं में बिकने आते हैं। बान बटने का काम भिश्ती, चमार और किसान लोग करते हैं।

मरेहरा में शीशम बहुत है। इससे साधारण सामान के सिवा सिंगारदान, कलमदान और दफ़्तर के काम के संदूक बनते हैं।

जलेसर में पीतल के घुंघरु बनते हैं। लगभग दो लाख रुपये के घुंघरू पञ्जाब और पूर्वी उत्तर प्रदेश में भेजे जाते हैं।

मैनपुरी

मैनपुरी आगरा कमिश्नरी का एक जिला है। इसके उत्तर में एटा, पूर्व में फरुखाबाद, दक्षिण में इटावा और आगरा, पश्चिम में आगरा और एटा के जिले हैं। मैनपुरी की औसत लम्बाई ५६ मील और चौड़ाई कहीं कहीं १८ मील और कहीं ४२ मील है। इसका क्षेत्रफल १६८७ वर्गमील है।

मैनपुरी का जिला एक समतल मैदान है। केवल पश्चिम की ओर कुछ ऊंचे रेतीले टीले हैं। काली और ईसन की घाटियां भी कुछ ऊंची नीची और लहरदार हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर यमुना के ऊंचे किनारों को भी नालों ने गहरा काट दिया है। काली नदी उत्तर और उत्तर-पूर्व की ओर इस मैदान की सीमा बनाती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर यमुना नदी इसे घेरे हुए है। यह दोनों नदियां दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। नहर निकालने के लिये मैनपुरी जिले की उँचाई बड़ी सावधानी से जांची गई। उत्तर-पश्चिम में घिरोर के पास समुद्र-तल से भूमि की उंचाई ५२७ फुट है। बड़ा गांव के पास की ५७३ फुट ऊँची है दक्षिण-पूर्व की ओर यह केवल ४६३ फुट है।

द्वाबा के और भागों की तरह मैनपुरी जिले में बलुई भूड़ है। निचले भागों और ऊसर भागों के पास कड़ी चिकनी मिट्टी या मटियार है। अधिकतर भागों में उपजाऊ दुमट या दोनों का मिश्रण है। हलकी दुमट मिट्टी पिलिया कहलाती है। कुछ छोटी नदियों के पड़ोस में ऊसर भूमि है। कुछ भागों में रेह है जहां घास भी नहीं उग पाती है। मटियार का रंग कुछ काला होता है। सूखने पर यह सिकुड़ जाती है और इसमें दलदल हो जाती है। कम वर्षा होने से यह इतनी कड़ी बनी रहती है कि इसमें हल नहीं चल सकता। दोनों दशाओं में यह खेती के योग्य नहीं रहती है। भूड़ में ढीली बलुई मिट्टी होती है। भूड़ भी खेती के लिये अच्छी नहीं होती है। दुमट और बालू के मिश्रण को मिलौना कहते हैं। कड़ी भूड़ को टिकुरिया कहते हैं। ऊपरी ऊँचे भाग की भूमि को बांगर और निचली भूमि को तराई कहते हैं। यमुना के पड़ोस में ऊँची पठारी भूमि को उपरहार और नालों तथा खड्डों की भूमि का विहार कहते हैं। नदी की पुरानी तली की भूमि को भगना कहते हैं।

ईसन नदी कक नदी के संगम तक धीमी बहती है। इसके किनारे नीचे हैं। कक नदी का पानी मिल जाने से इसकी तली गहरी और धारा तेज हो जाती है। इसी तरह सेंगर नदी में जब सिन्हार नदी मिल जाती है तब सेंगर की धारा तेज हो जाती है। अरिन्द अपने समूचे मार्ग में धीमी चाल से बहती है। काली ईसन द्वाबा में बालू की अधिकता है। ईसन और सेंगर के बीच में कुछ कड़ी मिट्टी है। मध्यवर्ती भाग के दक्षिण में सिरसा और यमुना के बीच में कई प्रकार की मिली हुई मिट्टी मिलती है।

पीरा मिट्टी का रंग पीला होता है। यमुना नदी अगर सीधी रेखा में बहे तो मैनपुरी जिले में इसकी लम्बाई केवल १८ मील हो। लेकिन यमुना नदी मैनपुरी जिले में बड़े चक्करदार मोड़ बनाती है इस लिये इसकी लम्बाई यहां ४३ मील हो जाती है। इसका तली यहां मुलायम और बलुई है। इसलिये यमुना इसे सुगमता से काट कर इधर उधर मुड़ जाती है मुड़ने से इसका धार मन्द अवश्य पड़ जाती है। हरहा के पास यमुना का मोड़ ९ मील लम्बा है। अगर बटेश्वर के पास यमुना अपना मोड़ छोड़ दे और सीधी रेखा में बहने लगे तो बटेश्वर के घाट यमुना की धारा से ३ मील दूर हो जावें। इसी तरह मोड़ और कई स्थानों में हैं। यमुना में मध्यभारत की बरसाती नदियां अचानक बाढ़ लाती हैं। कहीं कहीं यमुना के किनारे ८० और १०० फुट ऊँचे उठे हुये हैं। ऊँचे भागों में खेती नहीं होती है। तंग कछार में प्रायः खेती होती है। शीतकाल और ग्रीष्म ऋतु में पांज हो जाती है। ओरावर मंरुआ, राजपुर, बलई, बड़ा बाग, बटेश्वर, विक्रमपुर और परगना गांवों में यमुना को पार करने के लिये घाट हैं जहां नाव रहती है। नारंगी बाह के पास यमुना सिकुड़ कर केवल १५० फुट रह जाती है। नादिया और पटसुई नाला इस जिले में यमुना में मिलते हैं।

काली नदी जिले की उत्तरी-पूर्वी सीमा बनाती है और मैनपुरी को एटा और फर्रुखाबाद जिलों से अलग करती है। इसकी पेटी तंग है। लेकिन इस में साल भर पानी रहता है। इसके कुछ ही भागों में

पोज होती है। सकट बेवर गांव के पास काली नदी में पुल बना है। इसके ऊपर से फर्रुखाबाद को सड़क जाती है। अल्लूपुरा छत्रखेड़ा, राजघाट, आदि स्थानों पर इसे पार करने के लिये नाव रहती है। लेकिन इसकी धार वर्षाऋतु में भी तेज नहीं होती है। नदी की तली में बहुत कम परिवर्तन होती है। यह निचली कछारी भूमि के ऊपर बहती है। इसके किनारे ऊँचे हैं। अक्सर यह इन किनारों के बीच में बहती है। कभी कभी वह इस किनारे या उस किनारे के पास बहती है तो इसका समूचा खादिर दूसरी ओर को हो जाता है। इस बलुई कछारी भूमि की चौड़ाई लगभग आध मील होती है। किनारे सपाट और ऊँचे होने के कारण पड़ोस की भूमि नदी के पानी से सींची नहीं जा सकती। लेकिन अधिक पूर्व की ओर खादर इतना नम रहता है कि इसे अलग से सींचने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कुछ भागों में इतना पानी इकट्ठा रहता है कि पड़ोस की भूमि पर रेह पड़ जाता है।

ईसन नदी में वर्षा ऋतु में इतना पानी हो जाता है कि कुछ ही स्थानों में इसे बिना नाव के पार किया जा सकता है। शेष ऋतुओं में इसमें बहुत कम पानी रहता है। अकाल पड़ने पर यह सूख जाती है। केवल गहरे स्थानों पर छोटे छोटे ताल शेष रह जाते हैं। इस पर पांच स्थानों में पुल हैं दो पुल मैनपुरी शहर के पास हैं। मैनपुरी से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर इसमें काक नदी मिलती है। यहां इसके पड़ोस की भूमि प्राय: ऊसर है। निचले भागों की भूमि अधिक अच्छी है। मैनपुरी शहर और कुछ गांवों के पास ईसन नदी तरबूज उगाने के काम आती है। मैनपुरी से नीचे यह अक्सर सिंचाई के काम आती है। आरिन्द या रिन्द नदी बहुत छोटी है। यह गंगा नहर की इटावा और कानपुर शाखाओं के मध्य में बहती है। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है सीधी रेखा की दूरी से यह तिगुना है। वर्षा ऋतु के बाद यह अक्सर सूख जाता है। और इसकी तली में रबी की फसलें उगती हैं। कुछ वर्षों से इसमें नहर का बचा हुआ पानी छोड़ दिया जाता है। इससे पड़ोस के खेत सींचे जा सकते हैं। सींचने के लिये इसमें कच्चे बांध बना दिये जाते हैं। इसकी तली उथली है और पड़ोस की भूमि से बहुत कम नीची है। इसी से प्रबल बाढ़ में इसका पानी दूर दूर तक फैल जाता है। इसके पड़ोस की भूमि में बालू कहीं नहीं है। पक्की सड़कों के मार्ग में इस पर पुल बने हैं।

सेंगर नदी ईसन से छोटी लेकिन अरिन्द से अधिक बड़ी है। अरिन्द और सिरसा नदियों के जल विभाजक का समस्त जल इसमें बस आता है। वर्षा ऋतु में नहर का बचा हुआ पानी आजाने से इसमें से जल की मात्रा बहुत बढ़ जाती है। ऊपरी भाग में सेंगर और सेन्हार इसकी दो शाखायें हैं। सेंगर उत्तर की ओर सेन्हार दक्षिण की ओर है। खेरिया के पास दोनों मिल जाती हैं। ऊपर से सङ्गम तक इसके पड़ोस की भूमि बड़ी उपजाऊ है। सङ्गम के नीचे की ओर भूमि निकम्मी होने लगती है। इसकी धारा तेज हो जाती है। किनारे ऊंचे हो गये हैं। इन ऊँचे किनारों को नालों ने अक्सर काट दिया है। निचले भाग में ऊंचे किनारे पड़ोस की भूमि को सींचने में बाधा डालते हैं। ऊपर भाग में सेंगर में सिंचाई के लिये काफी पानी नहीं रहता है।

सिरसा नदी मैनपुरी के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में प्रवेश करती है। भोगिनीपुर नहर के नीचे से गुजर कर यह शिकोहाबाद में पहुँचती है। यहां यह नहर और इटावा की सड़क के बीच में बहती है। इसमें बहुत थोड़े भाग का पानी आता है। इसके पड़ोस की मिट्टी हलकी और कुछ बलुई है। लेकिन इसके किनारों के पास ऊसर बहुत कम है। रेतीले किनारे केवल शिकोहाबाद कस्बे के पास मिलते हैं। वर्षा के बाद इसमें बहुत कम पानी रहता है। पर इससे इसकी तराई की सिंचाई हो जाती है। इसके पड़ोस की भूमि उपजाऊ है। इसमें नहर की भोगिनीपुर शाखा से सिंचाई हो जाती है। इसमें गेहूँ, जौ और चना की फसल अच्छी होती है।

इनके अतिरिक्त यहां छोटी नदियां और भी हैं। मैनपुरी जिले के बीच वाले भाग में दलदल बहुत हैं। कुछ झीलें और तालाब वर्षा ऋतु के बाद सिकुड़

या सूख जाते हैं। उनमें रबी की फसल उगाई जाती है।

मैनपुरी जिले में लगभग एक चौथाई जमीन खेती के काम नहीं आती है। इसमें ४ फीसदी जमीन पर गांव बसे हैं। १० फीसदी जमीन पानी से घिरी है। शेष ऊसर या उजाड़ है। उजाड़ जमीन का अधिकतर भाग ढाक के जङ्गल से घिरा है। जङ्गलों में भेड़िया, लकड़बग्घा, नील गाय और दूसरे जङ्गली जानवर मिलते हैं।

मैनपुरी की जलवायु द्वाबा के दूसरे जिलों के समान है। गरमी की ऋतु में थर्मामीटर का पारा छाया में ११० अंश फारेनहाइट तक पहुँच जाता है। कभी कभी १२० अंश तक हो जाता है। साधारण तापक्रम ९६ अंश रहता है। जनवरी का तापक्रम ५८ होता है। सरदी की ऋतु में पाला पड़ता है। इससे अरहर सूख जाती है। औसत वर्षा ३१ इञ्च होती है।

मैनपुरी जिले की लगभग ७० फीसदी भूमि खेती के योग्य है। उत्तरी भूड़वाले प्रदेश में कांस उगते हैं। १६ फीसदी भूमि खेती के योग्य होने पर भी खेती के काम में नहीं लगी है। कुछ भाग में चरागाह हैं। ज्वार, बाजारा' मडुआ, अरहर उद, मूंग खरीफ की फसलें हैं। गेहूँ, जौ चना, मटर, सरसों रबी की फसलें हैं। ७० फीसदी से अधिक जमीन रबी की फसल उगाने के काम आती है। कुछ भागों में कपास उगाई जाती है। कुछ अच्छी भूमि में दो फसलें होती हैं। तरबूज आदि जायद फसल नदियों के पड़ोस में १ फीसदी से भी कम भूमि में होती है। मैनपुरी में सचाई की बड़ी सुविधा है। यहां नहर, कुआं, झील और नदियों से सिंचाई होती है।

नहर के पड़ोस में ६४ फीसदी जमीन सींची जाती है। यमुना के नालों के पड़ोस में केवल ३४ फीसदी जमीन सींची जाती है। गङ्गानहर की इटावा और कानपुर शाखायें मैनपुरी जिले को पार करती थीं। १८८० से लोअर गङ्गा नहर की शाखायें यहां की भूमि को सींचने लगीं। नहर की बेवर-शाखा उत्तर में है। इसके दक्षिण में कानपुर शाखा है। छः मील और दक्षिण की ओर प्रधान नहर इटावा और भोगिनीपुर शाखाओं में बँट जाती है।

मैनपुरी जिले की आधी से अधिक भूमि कुओं से सींची जाती है। अधिकतर कुएं पक्के हैं।

मैनपुरी एक कृषि प्रधान जिला है। गेहूँ, तिलहन, कपास, चमड़ा, खाल यहां के निर्यात हैं। कारबार कम है। कपास ओटने और गाढ़ा बुनने का काम कुछ गांवों में होता है। खड़ाऊँ पर तारकशी का काम भी अच्छा होता है। मैनपुरी में चूड़ी और कांच या कच्चा शीशा, भी बनाया जाता है। नमकीन लोना मिट्टी मिलने से शोरा कई स्थानों में बनाया जाता है। नमक, धातु, कपड़ा, शक्कर आदि सामान यहां बाहर से आता है।

अकबरपुर—औंछा मैनपुरी से १६ मील पश्चिम की ओर है। इसके उत्तर की ओर ढाक का जङ्गल है जहां पहले डाकुओं का अड्डा था। उनको रोकने के लिये वहां थाना बनाया गया था। आगे चल कर थाना तोड़ दिया गया। यहां डाकखाना और स्कूल है। जहां ऊंचा खेड़ा है वहां इससे भी अधिक पुराना गांव और अकबर का कच्चा किला था। इसके पास ही ऋषि स्थान है। एक स्थान पर संस्कृत में ३३४ सम्वत (२७७ इस्वी) खुदा हुआ है। यहां चैत सुदी नवमी को मेला लगता है।

अराओं—गाँव शिकोहाबाद-फर्रुखाबाद रेलवे लाइन से २ मील दूर है। आगरारोड यहां होकर जाती है। यह मैनपुरी से २४ मील और शिकोहाबाद से ८ मील दूर है। सेंगर नदी उत्तर की ओर है पास ही एक पुराना खेड़ा है। चैत और क्वार में देवी का मेला लगता है।

बेवर—गाँव ग्रांडट्रंक रोड के उस स्थान पर बसा है जहां इटावा से फर्रुखाबाद को जाने वाली सड़क इसे पार करती है। यह मैनपुरी से १७ मील पूर्व की ओर है। कहते हैं पड़ोस में बेर की झाड़ियों की अधिकता होने से इसका नाम बेरबर या बेवर पड़ गया। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और बाजार है।

भोगांव—कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह मैनपुरी से ६ मील पूर्व की ओर है। आगरा से आने वाली पक्की सड़क यहां ग्रांडट्रंक रोड से मिलती है। ग्रांडट्रंक रोड कस्बे के बीच में होकर

जाती है पास ही रेलवे स्टेशन है। दक्षिण की ओर जमीन के नीचे हो जाने से एक झील बन गई है। जब झील बहुत भर जाती है तो इसका कुछ पानी एक नाले के द्वारा ईसन नदी में पहुँचता है जो यहां से ३ मील दक्षिण की ओर है। यहां थाना, तहसील, डाकखाना, जुनियर हाई स्कूल और अस्पताल है। मन्दिर के पास बाजार है।

जसराना—गांव मुस्तफाबाद तहसील का प्रधान नगर है। यह शिकोहाबाद से एटा को जानेवाली सड़क पर स्थित है और शिकोहाबाद से १२ मील दूर है। यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना, स्कूल और बाजार है। बाजार में घी और अन्न की बिक्री होती है। चैत के महीने में मेला लगता है। सेंगर नदी दक्षिण की ओर है। बाढ़ में नदी का पानी तहसील और अस्पताल तक पहुँचता है।

कढ़ाल—इसी नाम की तहसील का प्रधान नगर है। यह मैनपुरी से इटावा को जाने वाली सड़क पर मैनपुरी से १७ मील दक्षिण की ओर स्थित है। इटावा रेलवे स्टेशन से यह १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां तहसील, थाना, स्कूल और बाजार है। बाजार रविवार और गुरुवार को लगता है। यहां ये चार (देवी मेला, जैनी मेला, राम लीला और जगधर मेला) मेले लगते हैं। कहते हैं कि यहां के एक मुसलमान ने पहले पहल शिकस्त लिखना आरम्भ किया था।

करीमगंज—मैनपुरी से ३ मील की दूरी पर एटा को जाने वाली सड़क पर बसा है। पुराना नगर पास के खेरे पर बसा था। इसके पास ही एक लम्बी झील है। खेरे की चोटी पर पुराने किले के खंडहर हैं। सड़क के पास एक टूटी मूर्ति पड़ी है।

कुरावली—कस्बा मैनपुरी से एटा को जानेवाली सड़क पर मैनपुरी से १४ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना, और जुनियर हाई स्कूल है। ग्रांडट्रंक रोड कुरावली के एक किनारे से जाती है। स्कूल बाजार के बीच में है। यहां तारकशी का काम अच्छा होता है।

मैनपुरी—शहर आगरा से ६३ मील पूर्व की ओर शिकोहाबाद से फर्रुखाबाद को जाने वाली रेलवे लाइन का मध्यवर्ती स्टेशन है। ग्रांडट्रंक रोड की आगरा-शाखा यहां होकर जाती है। गढ़ी के पास पुराना मैनपुरी एक गांव है। गंज या नई मैनपुरी में बाजार है। पहले मैनपुरी एक चारदीवारी से घिरा था। इसमें ६ दरवाजे थे। ईसन नदी पुरानी मैनपुरी की पूर्वी सीमा बनाती है। यहां जिले की कचहरी, कोतवाली डाकखाना, दो हाई स्कूल (मिशन और गवर्नमेंट हाई स्कूल) एक वर्नाक्यूलर जुनियर हाई स्कूल और लाइब्रेरी है। पहले मैनपुरी बड़ा नगर न था। मथुरा से कन्नौज को जाने वाले गजनी और दूसरे मुसलमान आक्रमणकारियों का मार्ग साफ था। १३६३ ईस्वी में चौहानों के आजाने से मैनपुरी की प्रधानता बढ़ गई। १८०४ ई० के होल्कर की मराहठा सेना ने यहां आक्रमण किया। जेल के पास लड़ाई हुई थी। यहां घी, कपास, अन्न का व्यापार होता है। मैनपुरी तारकशी के खड़ाऊ और महीन कटी हुई सुपारी के लिये प्रसिद्ध है।

मुस्तफाबाद—मैनपुरी से २४ मील पश्चिम की ओर है। यहां से तहसील उठकर जसराना को चली गई। इस समय यहां डाकखाना, स्कूल और बाजार है। यहां एक पुराना कुआं है जिसे दूधाधारो कहते हैं। पास ही एक गढ़ी के खँडहर हैं।

नबीगंज—ग्रांडट्रंक रोड पर भोगांव से १४ मील पूर्व की ओर एक छोटा गांव है।

ओरावर—दस्त तरफ यमुना के बायें किनारे पर एक नाले पर बसा है। यहां अनाज और घी का व्यापार होता है। चैत के महीने में काली देवी के मन्दिर के पास मेला लगता है। इसके पास ही यमुना की कॉंप से बना हुआ भगना (पेटा) है।

पँधात—गांव मैनपुरी से २६ मील पश्चिम की ओर है। जोखैया के थान पर माघ और आषाढ़ में (जात) मेला लगता है। कहते हैं पृथिवीराज और जैचन्द की लड़ाई के अवसर पर यहां एक ब्राह्मण एक धानुक और एक भँगी मारा गया था। जहां ब्राह्मण मारा गया था वहां मन्दिर बना है।

परहान—गांव अरिन्द नदी के किनारे पर एटा को जानेवाली पक्की सड़क पर मैनपुरी से २३ मील की दूरी पर स्थित है। कहते हैं राजा परीक्षित के पहले इसे वरदान कहते थे। राजा परीक्षित ने इसका नाम परीक्षितगढ़ रक्खा। इस से बिगड़कर इसका नाम परहान पड़ गया। राजा परीक्षित के

मरने पर उसके पुत्र जन्मेजय ने अरन्दि के किनारे पर यहां एक यज्ञ किया था। यज्ञ के स्थान पर परीक्षित कुंड है। पास ही ऊंचा खेड़ा है। यहीं पर परीक्षित कूप और पुराने किले के खंडहर हैं।

फरहा—गांव जिले की पश्चिम सीमा पर मैनपुरी से ४० मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। घी, शक्कर, अनाज और कपास का व्यापार होता है।

परी—गांव यमुना के बायें किनारे पर एक नाले के ऊपर मैनपुरी से ४४ मील दूर है। इसके पड़ोस में पुराने समय के खंडहर बहुत हैं। यहां से बटेश्वर को जाने के लिये घाट है। जिसे नारंगी वाद कहते हैं। यह नाम राजा रुपरसेन की पुत्री की स्मृति में रक्खा गया। यहां अलाउद्दीन खिल्जी के समय के चिन्ह मिले हैं।

शिकोहाबाद—आगरा से मैनपुरी को जाने वाली पक्की सड़क पर स्टेशन से दो मील की दूरी पर स्थित है। यहां से एटा और इटावा को भी पक्की सड़कें गई हैं। यह ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन और फर्रुखाबाद को जाने वाली शाखा लाइन का जंकशन है। स्टेशन के पास ही गङ्गा-नहर की शाखा बहती है। इस पर यहां पुल बना है। नहर के आगे अहीर क्षत्रिय हाई स्कूल है। स्टेशन के पास शीशे का कारखाना है। जूनियर हाई स्कूल कस्बे के पास है। पुराना कस्बा दूर दूर बसा है। बाजार में कुछ अच्छी दुकानें हैं। यहां कपास और अनाज का व्यापार होता है। कहते हैं दारा शिकोह के सम्मानार्थ इसका नाम 'शिकोहाबाद रक्खा गया। मरहठों के शासनकाल में उनके गवर्नर भूरा पंडित ने नगर के उत्तर में एक किला बनवाया था। १८०१ में यहां अङ्गरेजों का अधिकार हो गया। १८०२ में मरहठों की एक सेना ने छापा मार कर अङ्गरेजी सेना को हरा दिया। तब से छावनी मैनपुरी को चली गई।

सिरसागंज—शिकोहाबाद से इटावा को जाने वाली सड़क पर शिकोहाबाद से ६ मील दूर है। कौरारा रेलवे स्टेशन इसके दक्षिण में है। यह एक व्यापारी नगर है। बुधवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। अधिकतर व्यापारी जैनी हैं। इनका बनवाया हुआ यहां एक जैन मन्दिर है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

बदायूं

बदायूं जिले का क्षेत्रफल २०१० वर्गमील और जन संख्या १०,१०,०१० है। बदायूं जिला रुहेलखंड के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में गंगा और रामगंगा के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में मुरादाबाद और बरेली के जिले और कुछ दूर तक रामपुर राज्य हैं। पूर्व में रामगंगा बहुत दूर तक इसे शाहजहांपुर जिले से अलग करती है। दक्षिण-पश्चिम में गंगा नदी इसे द्वावा के बुलन्दशहर, अलीगढ़, एटा और फर्रुखाबाद जिलों से अलग करती है। इसका आकार कुछ विषम है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६८ मील और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई ४८ मील है। कम से कम चौड़ाई ११ मील है।

भूरचना की दृष्टि से बदायूं का जिला गंगा के मैदान का अंग है जो हिमालय से मध्य भारत के पठार तक फैला हुआ है। जिला प्रायः समतल मैदान है। नदियों के बहाव के कारण यह भिन्न भिन्न भागों में कुछ ऊंचा नीचा हो गया है। इसका ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। गंगा के किनारे चाओपुर के पास समुद्र-तल से भूमि की ऊंचाई ६०५ फुट है। कछला के पास ५०० फुट और कादिर चौक के धुर दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर केवल ४७० फुट है। गंगा के आगे भूमि कुछ ऊंची है। यह महवा और सोत के बीच में जलविभाजक बनाती है। गवान के पास सब से ऊंचा भाग (६१५ फुट) है। बदायूं के पूर्व में रामगङ्गा की ओर भूमि तेजी के साथ ढाल हो गई है। दातागंज के पास भूमि की ऊंचाई ५०८ फुट और हजरतपुर के पास ४६७ फुट ऊंची है।

बदायूं का जिला भूड़ खादर और कटहर तीन प्राकृतिक भागों में बांटा जा सकता है। भूड़ का प्रदेश मुरादाबाद की सम्भल तहसील से आरम्भ होकर

असदपुर, सहसवान, उझानी और उसेहत परगनों में फैला हुआ है। भूड़ प्रदेश की चौड़ाई चार-पांच मील से अधिक नहीं है। इसमें अधिकतर बालू है। यहां कांस और मेमरी घास बहुत होती है। इसमें लगातार खेती नहीं हो सकती है। केवल कहीं कहीं बाजरा और जौ उगाया जाता है। यहां पेड़ बहुत कम हैं। यहां जन संख्या बहुत कम और गांव छोटे छोटे हैं। यहां जगली सुअर और दूसरे जानवर भी खेती में बाधा डालते हैं। गंगा के पड़ोस में भूड़ सब से अधिक बुरी है।

गङ्गा और भूड़ के बीच में खादर है। इसके पूर्व में गङ्गा का ऊंचा किनारा है। उत्तर की ओर चोइया है। यह भाग कहीं उपजाऊ और कहीं ऊसर है। गन्नौर तहसील के उत्तरी भाग में इस समय भी ढाक का जंगल है। गन्नौर और सहसवान में कई धारायें बहती हैं। महवा के संगम के आगे अधिक दक्षिण में खादर की भूमि अधिक उपजाऊ हो गई है। केवल कहीं कहीं ढाक का वन और ऊसर है। खादर की नई लाई हुई भूमि को बेला कहते हैं। उपजाऊ भूमि की वह तंग पेटी बढ़ती जा रही है।

भूड़ में पूर्व में कटहर का चौड़ा मैदान है। इसमें अधिकतर उपजाऊ कड़ी मिट्टी और बालू का मिश्रण है बिसौली, बदायूं और उझानी के कई भाग इसमें शामिल हैं। कटहर की प्रधान नदी सोत है। सोत नदी कटहर के बीच में होकर बहती है। इस प्रदेश में उपजाऊ खादर या पट मिट्टी है और कुओं में पास ही पानी निकल आने से अच्छी खेती होती है। जन-संख्या घनी और गांव बड़े हैं। पूर्व की ओर कटहर की भूमि अच्छी नहीं है। उत्तर की ओर सोत और अरील के बीच में भूमि अधिक ऊँची है। नदियों के पड़ोस में यह कुछ ऊची नीची है यहां अधिक समय तक पानी इकट्ठा रहने से निचले भागों में रेह निकल आता है।

पूर्व की ओर रामगङ्गा के पड़ोस में वनकटी है। यह अरील के पास तक चली गई है। यहां भारी चिकनी मिट्टी है। यहां धान बहुत होता है रबी की फसलें कुओं और तालाबों से सींची जाती है। पहले यहां घना वन था। खेती बढ़ने से वनकट गया। फिर भी कई भागों में ढाक का वन मिलता है। पानी ठीक न बहने से यहां ज्वर बहुत फैलता है।

गङ्गा नदी ६३ मील तक बदायूं की सीमा के पास बहती है। इसकी तली चौड़ी और रेतीली है। यहां यह प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदलती रहती है। इसके किनारे कहीं सपाट, कहीं क्रमशः ढाल हैं। नारोरा में लोअर गङ्गा नहर के निकट जाटों से असदपुर परगने में किनारों का नियंत्रण हो गया है। कहीं कहीं नदी के किनारे के पास उपजाऊ मिट्टी है यहां अच्छी खेती होती है। चचराला (जहां होकर चंदौसी-अलीगढ़ को रेल जाती है।) और कछला (जहां होकर बदायूं से सोरों को लाइन गई है) गङ्गा के ऊपर स्थायी पुल बने हैं। रामघाट और राजघाट में प्रतिवर्ष नावों के पुल बन जाते हैं। दूसरे स्थानों में गङ्गा को पार करने के लिये नाव रहती है।

महावा गङ्गा खादर की प्रधान नदी है। यह मुरादाबाद जिले की एक झील से निकलती है। यह राजपुर परगने में गंगा से २ मील की दूरी पर बदायूं जिले में घुसती है। यह ऊपरी भाग गङ्गा की प्रायः समानान्तर बहती है। सहसवान परगने में इसमें चोइया मिलती है। महवा में प्रायः प्रतिवर्ष बाढ़ आती है। गरमी की ऋतु में इसमें पाज हो जाती है। टिकटा या नकटिया बदमार या सिंह चोइयां महावा की सहायक हैं। इन सब का पानी लेकर महावा गङ्गा में मिलती है। कगरा और भैंसाउर गङ्गा की दूसरी छोटी सहायक नदियां हैं।

कटघर प्रदेश की प्रधान नदी सोत है। यह अमरोहा (मुरादाबाद) के पीलाकुंड (झील) से निकलती है।

इस्लाम नगर की उत्तरी सीमा के पास यह बदायूं जिले में प्रवेश करती है और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। मुगल सम्राट मुहम्मदशाह जब सम्भल से बदायूं आ रहा था तो उसे अक्सर सोत से प्यास बुझाने के लिये पानी मिलता था। इसलिये उसने इसका नाम यार वफादार रक्खा। सोत नदी एक गहरी और निश्चित तली में बहती है। यह अपने पड़ोस की भूमि को बाढ़ में बहुत कम हानि पहुँचाती है। पूर्वी सीमा के पास यह सिंचाई के काम आती है। खेड़ा जलालपुर के पास जिस कड़ी चिकनी मिट्टी के प्रदेश को यह सींचती है उसे चौर कहते हैं।

अरील नदी सम्भल (मुरादाबाद) के दलदलों से निकलती है। अजीतपुर गांव के पास उत्तरी-पूर्वी कोने पर अरील बदायूं जिले को छूती है। बिसौली को पार करके यह उत्तर की ओर मुड़ती है। पूर्वी सीमा में भरतपुर के पास यह बरेली जिले में पहुँचती है। कुछ मील बहने के बाद फिर यह बदायूं में प्रवेश करती है। सिरसा के पास अन्धेरिया का पानी लेकर बम्भा नदी चचाओ के पास अरील में मिलती है।

रामगंगा पूर्वी सीमा के पास २६ मील तक इस जिले के सलेमपुर परगने को शाहजहांपुर से अलग करती है। रामगङ्गा की तली बड़ी चौड़ी है। इसमें वह प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदलती रहती है। रुकमङ्पुर से सिमरिया तक इसके किनारे रेतीले हैं। कुछ दूर तक झाऊ का जंगल है। कुछ भूमि उपजाऊ है। इसमें रबी की फसल होती है। रामगङ्गा के किनारे कहीं सपाट और कहीं क्रमशः ढालू हैं। शीतकाल में कुछ स्थानों में पांज हो जाती है। पर प्रायः नाव से पार उतरना होता है। बदायूं से शाहजहां पुर को जाने वाली सड़क पर बेला डांडी में रामगङ्गा पर सबसे बड़ा घाट है।

बदायूं जिले में कई बड़ी झीलें हैं। यह सिंचाई के काम आती हैं। जिले की लगभग ढाई फीसदी भूमि पानी से ढकी है। कुछ भूमि में सड़कें हैं या घर बने हैं। कुछ भाग में ढाक और दूसरा जगल है। हाल में बहुत सा वन कट गया और वनकटी भूमि खेती के काम में आने लगी है। फिर भी जिले में बहुत सी भूमि ऊसर है। सब से अधिक ऊसर भूमि दातागंज और गन्नौर तहसीलों में है। ढाक के पड़ोस में भी ऊसर भूमि है। कटिहर प्रदेश में सब से कम ऊसर भूमि है।

बदायूं की जलवायु कुछ कुछ रुहेलखंड के दूसरे जिलों के समान है। लेकिन अधिक दक्षिण की ओर स्थित होने से इस जिले का औसत तापक्रम अधिक गरम और वर्षा कुछ कम है। जनवरी का तापक्रम ५३ अंश से ६० अंश तक रहता है। मई का तापक्रम ९२ अंश हो जाता है। औसत वर्षा ३४ इञ्च होती है। दातागञ्ज में सब से अधिक (३६ इञ्च) और गन्नौर में सब से कम वर्षा (२९ इञ्च) होती है। १८७९ में दातागञ्ज ६७ इंच वर्षा हुई १८६८ में यहां १७ इञ्च सहसवान और गन्नौर में केवल १० इञ्च वर्षा हुई।

बदायूँ जिले में रबी की अपेक्षा खरीफ की फसल अधिक होती है। केवल दातागञ्ज तहसील में निचली भूमि वर्षा में डूब जाने से रबी की फसल अधिक होती है। गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, अरहर, कपास, धान, ईख यहां की प्रधान फसलें हैं। कहीं कहीं कुछ पोस्ता भी होता है। प्रत्येक प्रदेश की फसलें भिन्न हैं। लेकिन गेहूँ और बाजरा प्रायः सब कहीं उगाया जाता है। औसत ५६ फीसदी खेतों में रबी की फसल होती है। रबी की फसल सब से अधिक बदायूँ की तहसील में होती है। रबी की फसल में अधिकांश गेहूँ (प्रायः ५० फी सदी) रहता है। गेहूँ के साथ चना, मटर, अथवा जौ भी मिला रहता है। अकेला जौ २९ फीसदी होता है। यह दातागञ्ज में सब से कम और गन्नौर में सब से अधिक होता है। बेला भूमि में बिझरा बहुत होता है। अकेला चना लगभग ७ फीसदी खेतों में होता है।

ज्वार अच्छी भूमि में बोई जाती है। खरीफ की फसल में २० फी सदी भूमि में ज्वार और ४२ फी सदी भूमि में बाजारा होता है। दातागञ्ज तहसील में २५ फीसदी भूमि ज्वार और बदायूं तहसील की ४८ फीसदी भूमि बाजरा उगाने के काम आती हैं। उनके साथ साथ उर्द, मूँग और मोठ बोई जाती है। खरीफ की फसल के साथ ही तिल भी बो दिये जाते हैं। खरीफ की फसल की ११ फीसदी भूमि में मकाई बोई जाती है। गङ्गा के खादर में बड़े काम की होती है। यह शीघ्र ही बाढ़ से ऊपर उठ आती है। डूब जाने पर भी बहुत कम हानि होती है क्योंकि मकई बाने में बहुत कम बीज लगता है। गन्नौर तहसील में प्रायः तीस फीसदी भूमि खरीफ की फसल में मकई से घिर जाती है।

लगभग ८ फीसदी खरीफ की भूमि कपास बोने काम आती है। कपास प्रायः अरहर के साथ मिला कर बोई जाती हैं। यह गन्नौर और बिसौली तहसीलों में अधिक बोई जाती है। बदायूँ और दातागञ्ज की तहसीलों में कपास कम बोई जाती है।

धान बहुत कम भूमि में बोया जाता है। लगभग ७ फीसदी भूमि में धान होता है। यह दातागञ्ज तहसील में सब से अधिक (१६ फीसदी) और गन्नौर में सब से कम(२ फीसदी) होता है। धान कई

प्रकार का होता है। साठी धान प्रायः साठ दिन में तैयार हो जाता है। लगभग ३ फीसदी भूमि ईख उगाने के काम आती है।

बदायूँ जिले में सिंचाई की सुविधा है। वर्षा अच्छी हो जाती है और कुओं में पास ही पानी मिल जाता है। केवल बिसौली तहसील के कुछ (मुरादाबाद और रामपुर के समीप वाले) भाग में पक्के कुयें बनवाने की आवश्यकता पड़ती है। औसत से जिले की २४ फीसदी भूमि को हल्ला से सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। बिसौली तहसील में ३० फीसदी और गन्नौर तहसील में १५ फीसदी भूमि सींची जाती है। समस्त सींची हुई भूमि की ७७ फीसदी कुओं से सींची जाती हैं। शेष झीलों, तालाबों से सींची जाती है। दातागञ्ज में अरील नदी, सहसवान और उझानी में भैंसोर नदी सिचाई के बड़े काम की है। सोत, बाफा और दूसरे नाले भी सिंचाई के काम आते हैं। उसेहत परगना के कुछ भाग पुरानी (बैस लोगों की खुदवाई हुई) नहरों से सींचे जाते हैं।

बदायूं कृषिप्रधान जिला है। फिर भी कुछ भागों में गुड़, राव, शक्कर और सज्जी बनाने का काम होता है। उझानी और कई स्थानों में जुलाहे मोटा गाढ़ा बुनते हैं। उझानी में एक मिल भी है। असदपुर और कुछ अन्य गांवों में मोटे कम्बल बुने जाते हैं।

पहले बदायूं गुलबदन और अतलस के लिये बहुत प्रसिद्ध था। यहाँ रेशमी धागे का काम सूती कपड़े पर किया जाता था। कुछ गांवों में तालाब की चिकनी काली मिट्टी में कुछ बालू मिलाकर कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। कई गांवों के मुसलमान मनिहार कांच और लाख की चूड़ियां बनाते हैं। सहसवान में केउड़ा तयार किया जाता है।

अलापुर—गांव बदायूं से १२ दक्षिण-पूर्व की ओर बदायूं से जलालाबाद (शाहजहांपुर) को जाने वाली कच्ची सड़क पर स्थित है। यह एक पुराना स्थान है। कहते हैं। (१४५० ई० में) सुल्तान अलाउद्दीन आलम की स्मृति में यह नाम पड़ा। उसने यहां एक मस्जिद बनवाई जिसकी मरम्मत फिर औरंगजेब ने करवाई। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

असदपुर—गांव गन्नौर से ४ मील और बदायूं से ४० मील दूर है। यहां से एक सड़क तहसील (गन्नौर को) और दूसरी ईस्लाम नगर से रामघाट गङ्गा के किनारे को जाती है। यहां एक प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

आला स्टेशन—गन्नौर से ३ मील और बदायूं से ५२ मील दूर है। यहां से एक पक्की सड़क गन्नौर (तहसील) को गई है। दूसरी पक्की सड़क यहां होकर बदायूं से अनूप शहर से बदायूं को गई है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता।

बिल्सी कस्बा—बदायूं से १६ मील दक्षिण ओर है। यह सहसवान (तहसील) से ६ मील दूर है। एक पक्की सड़क दक्षिण पश्चिम में अलीगञ्ज को जाती है। एक सड़क उझानी को जाती है। यह अवध के नवाबों के समय में बसाया गया था। पहले इसे विलासी गंज कहते थे। इसी से बिगड़कर यह नाम पड़ा। रेलवे के पहले यहां का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा था। यहां नील की कोठी भी थी। इस समय यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बिसौली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां से एक पक्की सड़क उत्तर की ओर आसफपुर रेलवे स्टेशन को जाती है। सड़क की एक शाखा चंदौसी और मुरादाबाद को गई है। दक्षिण पश्चिम की ओर एक सड़क सहसवान को गई है। बिसौली चारों ओर आम के बगीचों से घिरा हुआ है। केवल उत्तर की ओर रेल के एक ठेकेदार ने उन्हें कटवा डाला। बिसौली कस्बे में तीन बड़े मुहल्ले हैं। कटरा मुहल्लों में बाजार है। गदापुर भिखारियों का का स्मरण दिलाता है। तीसरा मुहल्ला कागजी टोला है।

रुहेला सरदार डूंडेखां के समय (१७५०) से बिसौली बहुत प्रसिद्ध हो गया। उसने यहां असफपुर और चन्दौसी की सड़कों के बीच में एक किला बनवाया। किला की इमारत रुहेलों के समय से भी अधिक पुरानी है। उन्होंने इसमें सुधार किया। दो सुन्दर द्वार और दीवार के कुछ भाग इस समय भी खड़े हैं। डंडेखां ने यहां एक इमामबड़ा, मस्जिद

सराय और दूसरे भवन बनवाये। गदर में यह जप्त कर लिये गये। इन्हीं में से एक में इस समय तहसील है। पुराना शीशमहल एकदम लुप्त हो गया। डूँडेखां के वंशजों पर ऐसी गरीबी छाई कि उन्होंने अपने घरों को ईंटे भी बेच डाली। बिसौली के दक्षिण में एक ऊचे स्थान पर डूँडेखां का मकबरा है। यह सोत की चौड़ी घाटी के ऊपर है। सोत पर उसने जो पक्का पुल बनवाया था वह बह गया। बिसौली में शाह-आलम द्वितीय के कुछ सिक्के मिले। रूहेलायुद्ध के समय अंग्रेजी सेना बिसौली में आई। लेकिन यहां छावनी नहीं बनाई गई। किला बिल्सी के डोनाल्ड महाशय के हाथ बेच दिया गया। आगे चल कर यह रामपुर के साहिबजादे को मिल गया जो बिल्सी में रहता था। बिसौली में तहसील थाना, मुन्सफी, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। रामलीला, मुहर्रम और जन्माष्टमी को साधारण मेला लगता है।

बदायूं शहर बरेली से मथुरा को जानेवाली प्रान्तीय सड़क पर बरेली से ३० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह रूहेलखंड कमायूं रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। रेलवे लाइन प्रान्तीय सड़क की समानान्तर चलती है। यहां से दातागंज, बिसौली, सादुल्लागंज, बक्सेनी, जलालाबाद (शाहजहांपुर) उसेहत और फर्रुखाबाद को सड़के गई हैं। शहर और सिविल लाइन में म्यूनिसिपेलिटी की ओर से अच्छी पक्की सड़कें बनी हैं।

बदायूं शहर सोत नदी से लगभग १ मील पूर्व में ऊँची भूमि पर बसा है। इसके ऊपर प्रान्तीय सड़क का अच्छा मजबूत पुल बना है। पुरानी बदायूं किला कहलाता है। दूसरा भाग नई बदायूं का है। पुरानी बदायूं में किले की दीवारों के शेष भाग इस समय भी दिखाई देते हैं। पश्चिम की ओर से दूर का दृश्य दिखाई देता है। पुरानी बदायूं में १३ मुहल्ले हैं। नई बदायूं दूर तक फैली हुई है। इसमें ३८ मुहल्ले हैं। बदायूं कोई बड़ा व्यापारी केन्द्र नहीं है। फिर भी यहां अनाज, लकड़ी, गुड़ और कपास का व्यापार होता है। यहां कलमदान अच्छे बनते हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर सिविल लाइन है। बदायूं की सिविल लाइन बहुत बड़ी नहीं है। केवल दो तीन योरूपीय रहते हैं। पास ही पुलिस लाइन और जेल है। बरेली पास होने से यहां छावनी नहीं है। दक्षिण-पश्चिम की ओर विक्टोरिया-पार्क है। इसके बीच में महारानी विक्टोरिया की मूर्ति तांबे की बनी है। १९०७ में इसका उद्घाटन हुआ। शहर के प्रायः बीच में दोमंजिला टाउनहाल है। यहां एक वर्नाक्यूलर जुनियार हाई स्कूल और जिला हाई स्कूल है। बदायूं का का इतिहास पुराना है। कहते हैं। इसका पुराना नाम बुद्ध गांव था। बुद्ध नामी एक राजा यहां दसवीं सदी में रहता था। कुछ लोगों का कहना है कि यहां दिल्ली के राजा महिपाल के प्रधान मन्त्री सूर्यध्वज ने वेदमऊ नाम का नगर बसाया था। यहीं वेदों को पढ़ाने के लिये एक प्रसिद्ध विद्यालय भी खोला गया। इसी से वेदाम्युत से बिगड़कर बेदमऊ और फिर बदायूं नाम पड़ गया। बदायूँ के बाहरी भाग लखनपुर में एक शिला लेख मिला। जो इस समय लखनऊ के अजायबघर में है। उसके अनुसार यहां के राष्ट्र का राजा कन्नौज के राठौरों के सम्बन्धी थे। इन्होंने वेदामयुत (बदायूं) में शिवजी का मन्दिर बनवाया था। यहां के राजाओं ने आरम्भ मुसलमान आक्रमणों से बदायूँ को कई बार वीरता से बचाया। ११९६ में कुतुबुद्दीन ने बदायूँ का घेरा डाला और अचानक रात में आक्रमण करके लेलिया। बदायूँ के अजयपाल ने यहां किला फिर से बनवाया और नीलकंठ महादेव का मन्दिर भी बनवाया। धर्मपाल यहाँ का अन्तिम हिन्दू राजा था। धर्मपाल कुतुबुद्दीन के साथ लड़ता हुआ मारा गया। १२३० में अल्तमश के बेटे रुकुनुद्दीन ने यहां मस्जिद बनवाई बलबन ने यहां राजपूतों के विद्रोह को बड़ी निर्दयता से दबाया। गांवों और जगल में स्थान पर लाशों के ढेर लग गये। इनकी गँध गङ्गा के किनारे तक पहुँचती थी। अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन को मरवाने के बाद दिल्ली जाते समय एक दिन यहां विश्राम किया था। १३७९ में फीरोजशाह का आदमी यहां मार डाला गया। दूसरे वर्ष (१३८० में) फीरोजशाह ने समूचे जिले को उजाड़ कर जंगल कर दिया कई हजार हिन्दू कत्ल कर दिये गये। ६ वर्ष तक यहां कोई खेत जोतने वाला न रहा। दिल्ली के मार्ग में स्थित होने के कारण बदायूँ में और भी कई बार हत्याकांड हुये। अकबर

के समय में बदायूँ एक टक्साली शहर था। यहां केवल तांबे के सिक्के बनते थे। १७२० ईस्वी के बाद यहां रुहेले पठानों का जोर बढ़ने लगा। १७४१ में उन्हें दबाने के लिये दिल्ली सम्राट ने अपने सूबेदार राजा हरनन्द को भेजा। आगे चलकर रुहेलों और अवध के नवाब से लड़ाई हुई। अवध के नवाब ने १७५१ में मरहठों से सहायता मांगी। महरठों ने रुहेलों को हराकर कमायूँ की पहाड़ियों की ओर भगा दिया और वहीं उन्हें घेर रक्खा। १७५२ में अहमद शाह दुर्रानी के आने पर उनका घेरा कुछ ढीला हुआ। पानीपत की लड़ाई के बाद १७६९ से मरहठों के हमले होने लगे। १७७० में डूंडेखां बिसौली में मर गया। इससे अफगानों की शक्ति और भी कम हो गई। १७७८ में मरहठों को यहां से निकालने के लिये अवध के नवाब और रुहेलों में फिर मेल होगया। १७७४ में अवध के नवाब ने अंग्रेजी सेना की सहायता से मीरनपुर कटरा (शाहजहांपुर) की लड़ाई में रुहेलों को हराकर रुहेल (जिसमें बदायूँ भी सम्मलित था) पर अपना अधिकार कर लिया। २७ वर्ष तक बदायूँ पर अधिकार रहा। अंग्रेजी सेना का खर्च न दे सकने पर अवध के नवाब से रुहेल खंड ले लिया गया। इस प्रकार १८०१ ई० से बदायूँ अंग्रेजी राज्य में आगया। १८५७ के गदर में विद्रोहियों ने तोड़कर जेल का फाटक खोल दिया। कलक्टर ने भागकर ककोरा के पास गङ्गा को पार किया और फतेहगढ़ के पास कटियार के राजा के यहां शरण ली। कुछ दिनों तक यहां फिर रुहेलों का राज्य हो गया। लेकिन ककराला और बिसौली में विद्रोहियों की हार हुई और बदायूँ में फिर अंग्रेजीराज्य हो गया।

दातागंज इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बदायूँ से बेलाडांडी घाट को जाने वाली सड़क पर स्थित है और बदायूँ से १७ मील दूर है। यहां तहसील के अतिरिक्त, थाना डाकखाना जुनियर हाई स्कूल और अस्पताल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां काफी व्यापार होता है।

गवान गांव गङ्गा से ४ मील और बदायूँ से ६० मील दूर है। पश्चिम की ओर महवा नदी बहती है। एक सड़क दक्षिण की बबराला रेलवे स्टेशन को जाती है। रेलवे के पहले यहां सड़क का एक बड़ा पड़ाव था। इस समय यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है और दशहरा का उत्सव होता है।

गन्नौर इसी नाम की तहसील का केन्द्र है। यह बदायूँ से अनूप शहर को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह गङ्गा तट से ३ मील और बदायूँ से ४६ मील दूर है। रेलवे खुलने से पहले यह एक व्यापारिक केन्द्र था। इस समय यहां का अनाज चन्दौसी को जाता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जुनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। पहले इसे ब्रह्मपुरी कहते थे।

हजरतपुर अरील नदी से १ मील पश्चिम की ओर है। इससे कुछ दूरी पर रामगङ्गा का संगम है। यहां से एक सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर जलालाबाद को जाने वाली सड़क से मिलती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

इस्लाम नगर बदायूँ से २४ मील की दूरी पर बदायूँ से सम्भल को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां से बिसौली असदपुर और चँदौसी को गई हैं। इसके चारों ओर आम के बगीचे हैं। यहाँ थाना, डाकखाना, सराय और जुनियर हाई स्कूल है। इस्लाम नगर पुराना स्थान है। अल्तमश के समय से इसका यह नाम पड़ गया। कछलागांव गङ्गा के किनारे बदायूँ से १७ मील दूर है। यहां होकर बरेली से मथुरा को सड़क जाती है। शीत काल में नावों का पुल बन जाता है। वर्षा आरम्भ होने पर यह तोड़ दिया जाता है। कछला के उत्तर में सहसवान से आनेवाली सड़क मिलती है। एक मील और उत्तर-पूर्व की ओर कमरानदी को पुल द्वारा पार करके बिल्सी से सड़क आती है। प्रधान सड़क से १ मील पश्चिम की ओर सोंसे को जाने वाली रेलवे एक मजबूत पुल के ऊपर से गंगा को पार करती है। स्टेशन सड़क के पास है। यहां थाना, डाकखाना, सराय और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। जेष्ठ दशहरा और कार्तिकी पूर्णिमा को गङ्गा स्नान का मेला लगता है। इसके पड़ोस की ऊसर भूमि में रेह बहुत है। इसे इकट्ठा करके उबाल और छानकर खारी बनाई जाती है यह फरुखाबाद को भेज दी जाती है।

ककोरा गांव गङ्गा के किनारे से ३ मील और बदायूं से १९ मील दूर है। इससे मिला हुआ कादिर चौक गांव है जहां थाना है। ककरा के पास गंगा के किनारे कार्तिकी की पूर्णिमा को गङ्गा स्नान का भारी मेला लगता है। यहां ३ लाख मनुष्य इकट्ठे होते हैं। कपड़ा बर्तन और ढोर का व्यापार भी होता है।

ककराला गांव दातागंज तहसील में बदायूं से ११ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह बदायूं से ऊसहत और फरुखाबाद को जानेवाली सड़क पर स्थित है। कंकड़ों की अधिकता होने से इसका नाम कंकराला या ककराला पड़ा। १८०३ में जंजीखा नामी एक सेनापति होलकर मरहठों को छोड़कर ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में जा मिला। १८५८ में यहां विद्रोहियों और ब्रिटिश सेना में लड़ाई हुई। यहां थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और सराय है।

कोट गांव बिसौली से सहसवान को जानेवाली सड़क के पश्चिम में बिसौली से ५ मील और बदायूं से २० मील दूर है। गांव के दक्षिण में एक पुराना टीला है। इसी के ऊपर कोट या किला था यहां बैस राजपूतों की बस्ती थी। वे इसे कोट सालिवाहन कहते थे। मुसलमानों के आने पर बैस लोग पूर्व की ओर १ मील की दूरी पर भानपुर गांव में चले गये।

कुमरगवां जिले की उत्तरी सीमा के पास बदायूं शहर से १० मील दूर है। यह बदायूं से आंवला को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है और गुड़ का व्यापार बहुत होता है। रामलीला के अवसर पर यहां एक छोटा मेला लगता है।

मुंडिया गांव बिसौली से ४ मील और बदायूं से २७ मील दूर है। दक्षिण-पूर्व की ओर एक मील की दूरी पर सोत नदी बहती है। इसके किनारे दलदलों के कारण खेती के योग्य नहीं है। यहां से गुड़ और गेहूं चन्दौसी को बहुत जाता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां डाकखाना और स्कूल है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

राजपुरा गांव बदायूं से ५६ मील की दूरी पर बसा है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। रुदाइन गांव बिसौली से ६ मील पश्चिम की ओर है। यहां हो कर इस्लाम नगर से बिसौली और बदायूं को सड़क जाती है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। रामनवमी के अवसर पर मेला लगता है।

सहसवान इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह महावा नदी के उत्तरी या बायें किनारे से कुछ ही दूर बदायूं और डभानी से गन्नौर और अनूपशहर को जानेवाली सड़क के दोनों ओर बसा है। यह बदायूं से २४ मील दूर है। यहां से बिल्सी, इस्लाम नगर और कछला को भी सड़कें हैं। गङ्गा पार कासगञ्ज को भी सड़क जाती है। सहसवान के मुहल्ले में वास्तव में फैले हुये गांव हैं। उत्तर की ओर ढांड मील है। सहसवान ऐसे स्थान पर बसा है जहां भूड़ और कछारी भूमि आकर एक दूसरे से मिलती हैं।

कहते हैं सहसवान को सहस्रबाहु ने बसाया था उसने यहां किला भी बनवाया था जिसका टीला काजी मुहल्ले में है। इसे परशुराम ने मारा था। ढांडझील के किनारे एक बहुत पुराना मन्दिर है। इसके पास ही स्नान करने के पक्के घाट हैं। यहां फागुन में मेला लगता है। इधर उधर सती स्मारक हैं। यहां मुसलमानों की तीन पुरानी मस्जिदें और कई मकबरे हैं। १८२० में सहसवान जिले का केन्द्र स्थान चुना गया। लेकिन समीप में जङ्गल और झील होने से यहां मलेरिया ज्वार फैलने लगता। १८३८ में जिले का केन्द्र-स्थान बदायूं बनाया गया। यहां इत्र और केवड़ा बनाया जाता है। गुलाब और केवड़ा पास के बगीचों में उगता है। पहले यहां यहीं नील की एक दो कोठियां थीं। इस समय यहां तहसील मुन्सफी, थाना, डाकखाना, अस्पताल, सराय और जूनियर हाई स्कूल है।

सिरसा गांव दाता गञ्ज से ४ मील की दूरी पर बाभा और अन्धेरिया के संगम पर बसा है जो झील में मिलती हैं। शेखपुर सोत के दाहिने किनारे पर स्थित है। सोत को पार करने के लिये घोंचा घाट पर नाव रहती है। यहां से बदायूं शहर ३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से १ मील दक्षिण की ओर बदायूं से मथुरा को प्रान्तीय सड़क जाती है। पास ही रुहेलखंड कमायूं रेलवे का स्टेशन है। कहते

हैं जहां पहले फुलिया बसा था। जिसके खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। यहां पर जहांगीर के समय में एक शेख फरीद ने इसे बसाया था। उसके वंशज इस समय जिले के बड़े जमींदारों में हैं। गदर में इन्होंने अंग्रेजों की बड़ी सहायता की। यहां एक अपर प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

उझानी का बड़ा कस्बा बरेली और बदायूं से कछला घाट और मथुरा को जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यह बदायूँ से ८ मील पश्चिम की ओर है। यहां से एक पक्की सड़क सहसवान को जाती है। स्टेशन (रुहेलखंड कमायूं रेलवे) कस्बे के उत्तर-पूर्व में इसके तीन ओर बगीचे हैं। पश्चिम की ओर रेतीली टीले हैं। कहते हैं पीपल वृक्षों की अधिकता होने से पहले इसे पिपरिया कहते थे। पीपल टोला इस समय भी इसका एक मुहल्ला है। अब से १४०० वर्ष पहले यहां घोसी बस गये। यहीं उजैन निवासी राजा महिपाल ने भी अपना निवास-स्थान बनाया। इससे इसका नाम उज्जैयनी से बिगड़ कर उझानी पड़ गया। आगे चल कर यहां रुहेल सरदार बस गये उन्होंने यहां कई इमारतें बनवाई। गदर के समय में बहादुर सिंह ने यहां विद्रोह का झण्डा उठाया। वह गङ्गापार भाग गया। लेकिन उसने एक अँग्रेजी अफसर की जान बचाई थी इसलिये उसके साथ उदारता का बर्ताव किया गया। उसी ने बहादुर गञ्ज मुहल्ला बसाया। यहां थाना डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां से घी, गुड़ अनाज और कपास भेजी जाती है। यहाँ कपास ओटने और सूती कपड़ा बुनने की दो मिलें हैं। शक्कर बनाने का भी काम होता है।

उसेहत बदायूँ से १३ मील की दूरी पर बदायूँ से फर्रुखाबाद को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह दातागञ्ज (तहसील) से २० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसके उत्तर में रेतीली टीले और दक्षिण में सोत (नदी) है। इसके बीच में पुराने किले के खंडहर हैं। यह बहुत पुराना स्थान है। १७४८ में बदायूँ के पास रुहेलों ने बंगश पठानों को हराया था तभी यह रुहेलों के हाथ आगया उन्होंने यहां एक किला और एक मस्जिद बनवाई। इस समय इसी पुराने किले में थाना है। यहाँ डाकखाना, स्कूल और सराय भी है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। लेकिन इसका व्यापार ककराला चला गया।

वजीर गञ्ज बदायूं से १८ मील और बिसौली से ६ मील दूर है। यहां से थाना सैयदपुर चला गया यहां डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। गांव से १ मील उत्तर-पूर्व की ओर एक पुराने ऊँचे टीले पर एक मन्दिर बना है। यहां यहां चैत के महीने में पूरनखेरा का मेला लगता है।

जरीफ नगर या द्विगपुर जरीफ नगर बदायूँ से ३४ मील की दूरी पर बदायूँ से गन्नौर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां से २ मील दक्षिण की ओर डेहगांव है। १ मील उत्तर की ओर महोवा नदी है। इसकी बाढ़ से पड़ोस की भूमि डूब जाती है। गदर के बाद यहां के लोगों को दबा रखने के लिये यहां थाना स्थापित किया। यहाँ डाकखाना और प्राइमरी स्कूल भी हैं।

आगरा

विषमाकार आगरा जिला संयुक्तप्रान्त के उत्तरी पश्चिमी कोने में स्थित है। इसके पश्चिम में भारतपुर राज्य, दक्षिण में ग्वालियर और धौलपुर राज्य हैं। उत्तर में मथुरा और एटा जिला पूर्व में मैनपुरी और इटावा जिला है। कुछ दूर तक यमुना नदी सीमा बनाती है। आगरे जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ७८ मील और चौड़ाई ३५ मील है। इसका क्षेत्रफल १८५४ वर्ग मील है।

आगरा जिला ४ प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है।

(१) इतमादपुर और फीरोजाबाद तहसीलें यमुना के उत्तर में हैं। यह दोनों द्वाबा के अंग हैं।

(२) यमुना और उतांगन के बीच ऊँची समतल भूमि है। यहीं आगरा करौली फतेहाबाद और अधिकांश खैरागढ़ की तहसीलें हैं।

(३) यमुना और चम्बल के बीच में बाह की तंग तहसील है।

(४) खैरागढ़ तहसील का शेष भाग एक अलग प्रदेश है। उतांगन के आगे यह प्रदेश भारतपुर और धौलपुर राज्यों के बीच में स्थित है।

(१) द्वाबा में स्थित आगरा जिले की दो तहसीलों का क्षेत्रफल ४८० वर्ग मील है। इस ऊँचे मैदान का धरातल समतल है। केवल कहीं कहीं यमुना की एक दो छोटी छोटी सहायक नदियों ने इसे काट कर विषम बना दिया है। कहीं कहीं रेतीले टीले भी हैं। पर प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। इसकी मिट्टी कुछ पीली और मटियार है। केवल यमुना के पड़ोस में नालों से कटे फटे ऊंचे किनारे हैं जो खेती के योग्य नहीं हैं। यहां बबूल के पेड़ हैं अथवा ढोर चराये जाते हैं। यमुना का खादर भी उपजाऊ नहीं है। यहां झाऊ और कांस होते हैं जो घर छाने के काम आते हैं।

(२) यमुना और उतांगन के बीच का प्रदेश मटियार का बना है। यक जिले का मध्यवर्ती भाग है। खोर नदी और एक दो नालों ने इसे काट दिया है। कुछ ऊंचे टीले और ऊंचे नीचे भागों को छोड़कर यह प्रदेश प्रायः समतल है। यमुना और उतांगन नदियों के पास कछार है।
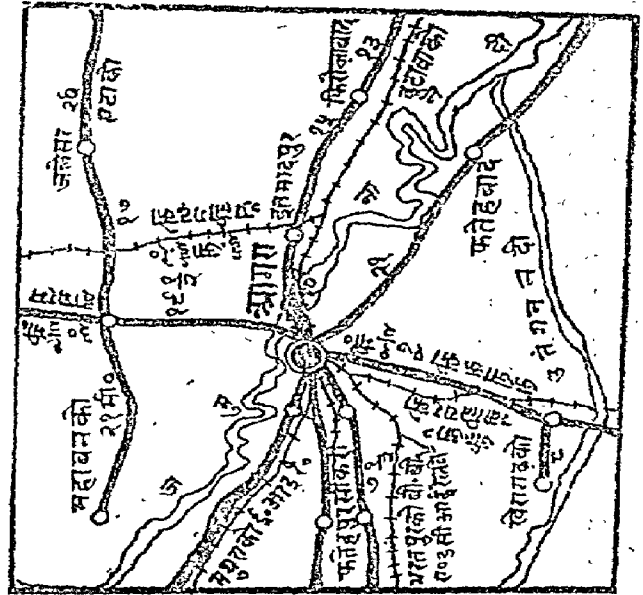
(यमुना) चम्बल का द्वाबा औसत से आठ या नौ मील चौड़ा है और ४२ मील लम्बा है। बीच में यह अधिक चौड़ा है। इसका आधा भाग यमुना और चम्बल के गहरे सूखे नालों से घिरा हुआ है। बीच वाले भाग में भूमि अच्छी है। उत्तर की ओर बालू हो गई है दक्षिण की ओर चम्बल के पड़ोस में कुछ चिकनी मिट्टी है। पश्चिम की ओर इस चिकनी मिट्टी का रंग काला है। इसे मार कहते हैं। यह बुन्देलखंड को मिट्टी से मिलती जुलती है। पूर्व की कड़ी मटियार है। यमुना और चम्बल के पड़ोस में नीची भूमि उपजाऊ है।

(४) उतांगन के आगे खैरागढ़ तहसील में उत्तरी सीमा के पास पहाड़ियां मिलती हैं। कुछ टीले

अकेले खड़े हैं। कुछ नालों के पास हैं। कहीं मटियार है। कहीं भूड़ है।

इस प्रकार जिले के अधिकतर भाग में गंगा की कांप है, यह कांप बहुत (५०० फुट से अधिक) गहरी है। इसकी तली समुद्र-तल से केवल पांच फुट ऊंची है। यह कांप यहां मध्यभारत से आने वाली मिट्टी से मिल गई है। करौली तहसील में विन्ध्याचल की टूटी फूटी पहाड़ियां हैं। मैदान के धरातल से पहाड़ियां लगभग १५० फुट ऊंची हैं। इनका रंग कहीं लाल और कहीं भूरा या मटीला है जिस पहाड़ी पर फतेहपुर सीकरी बना है वहां अच्छे इमारती पत्थर मिलते हैं। आगरा और दिल्ली की मस्जिदें और दूसरे भवन इसी पत्थर के बने हैं। पहाड़ियों का ढाल दक्षिण पूर्व की ओर है। उतांगन नदी के आगे खैरागढ़ की पहाड़ियां अधिक ऊंची हैं। आगरा और भरतपुर के बीच में सीमा बनाने वाली पहाड़ी को विन्ध्याचल कहते हैं। यह ३० मील लम्बी है। इसकी अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से ८२० फुट है। बहुत सी पहाड़ियां पड़ोस की भूमि से २० से लेकर ६० फुट ऊंची हैं। लेकिन यमुना और चम्बल के किनारे (करार) नीची कछारी भूमि के ऊपर ७० फुट से १५० फुट तक ऊंचे खड़े हैं। यमुना के उत्तर में मैदान की ऊंचाई ५५७ फुट है। फीरोजाबाद तहसील में यह केवल ५४० फुट रह गई है उतांगन के दक्षिण में भूमि कुछ ऊंची होती जाती है। खैरागढ़ के दक्षिण-पश्चिम में जिले की सब से अधिक ऊंची भूमि है। यमुना नदी करौनी के उत्तर में पहले पहल इस जिले को छूती है। कुछ दूर तक यह मथुरा और आगरा जिलों के बीच में सीमा बनाती है। उतांगन के सङ्गम के आगे यह बाह तहसील के उत्तर में बहती है और इस जिले को मैनपुरी और इटावा जिलों से अलग करती है। खिलौली के पास यमुना आगरा जिले को छोड़कर इटावा जिले में प्रवेश करती है। यमुना का मार्ग बड़ा टेढ़ा और मोड़दार है। आगरा जिले में यमुना की लम्बाई १४५ मील है। सीधा मार्ग इसका आधा है। यमुना के किनारे बड़े कड़े और स्थायी हैं। स्थान स्थान पर नालों ने इन्हें काट दिया है। यमुना की चौड़ाई कहीं एक फर्लांग और कहीं दो फर्लांग है। गहराई अधिक नहीं है। वर्षा ऋतु में भी इसकी गहराई १० फुट से अधिक नहीं रहती है। शेष ऋतुओं में दो या तीन फुट रह जाती है। आगरा नहर के निकल जाने से यमुना नाव चलाने योग्य नहीं रही। आगरे में यमुना पर पक्के पुल बने हैं। और स्थानों में लोग यमुना को पैदल या नाव द्वारा पार करते हैं। नरहरा के पास भिरना या कारों यमुना में सब से पहले आगरा जिले में मिलती हैं। यह नदी बुलन्दशहर, अलीगढ़ और मथुरा जिलों को पार करके यहां आती है। सिरसा सेंगर छोटी नदियां हैं।

उतांगन या बानगंगा २०० मील की दूरी पर जैपुर राज्य से निकलती है भरतपुर राज्य को पार करके कुछ दूर तक यह आगरा और भरतपुर राज्य के बीच में सीमा बनाती है। खैरागढ़ तहसील को पार करके यह पहले धौलपुर राज्य की सीमा बनाती है। फिर यह आगरा जिले में दूसरी बार प्रवेश करती है। आगरा जिले में ६३ मील बहने के बाद फतेहाबाद के पूर्व में रिहौली के पास यह यमुना में मिल जाती है वर्षा ऋतु में उतांगन में अचानक बाढ़ आ जाती है। शेष ऋतु में यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है। खारी नदी इसकी प्रधान सहायक नदी है। यह नदी भी भरतपुर राज्य में निकलती है।

चम्बल नदी मालवा में म्हो के पास विन्ध्याचल के उत्तरी ढालों से निकलती है। धुर पश्चिम समौना के पास यह आगरा जिले को छूती है। जिले की सीमा बनाती हुई इटावा जिले में यह यमुना से मिल जाती है। इसके किनारे बहुत ऊंचे और सपाट हैं। ऊंचे किनारों के बीच में चौड़ी घाटी है। इन्हीं किनारों के बीच में चम्बल नदी इधर उधर बहती रहती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। इस समय इसमें यमुना से भी अधिक पानी हो जाता है। खुश्क ऋतु में यह साधारण नदी हो जाती है और रेतीली तली में इधर उधर बहती है इसका पानी प्रायः गहरा नीला रहता है। यमुना के मटीले पानी से एकदम भिन्न मालूम होती है। आगरा जिले में चम्बल पर कहीं भी पुल नहीं बना

है। वर्षा ऋतु में नाव द्वारा इसे पार करते हैं। खुश्क ऋतु में इसमें पांज हो जाती है।

आगरा जिले में १८ फीसदी भूमि ऊसर अथवा खेती के योग्य नहीं हैं इसमें कहीं रेह है, कहीं उजाड़ टीले हैं। कुछ भागों में ढाक-बबूल का जङ्गल या घास है। गाँवों के पड़ोस में आम, जामुन, बेल आदि पेड़ों के बगीचे हैं। शेष बड़े भाग में खेती होती है।

आगरा जिले की जलवायु पड़ोस के और जिलों की अपेक्षा अधिक खुश्क और गरम है। गरमी की ऋतु लम्बी होती है। पानी कम बरसता है। अप्रैल से अगस्त तक यहां तापक्रम दूसरे जिलों से अधिक ऊँचा रहता है। अक्टूबर से शीतकाल का आरम्भ होता है।

जनवरी में अक्सर पाला पड़ता है। इस समय नादों में पानी भरने से उनके ऊपर से प्रातः काल के समय कभी कभी बरफ की तह इकट्ठी की जा सकती है। मार्च के अन्त में राजपूताने की ओर से गरम हवावे चलने लगती हैं। कभी कभी आंधी भी आती हैं। जनवरी महीने का तापक्रम ५६ अंश और जून का ९५ अंश रहता है। कभी कभी छाया में जून मास का तापक्रम ११७ अंश हो जाता है। वर्षा होने पर तापक्रम कम हो जाता है। औसत से इस जिले में २६ ईंच वर्षा होती है। खैरागढ़ में २४ इंच और फीरोजाबाद में २७ इंच वर्षा होती है। किसी वर्ष ४७ इंच और किसी (अकाल के) वर्ष १२ इंच वर्षा होती है। ज्वार, बाजरा, अरहर खरीफ की प्रधान फसलें हैं। कपास की फसल बड़े काम की होती है और सारे जिले में उगाई जाती है। कपास आषाढ़ में बोई जाती है और कार्तिक से माघ तक बीनी जाती है मोठ, उर्द, मूंग भी खरीफ की फसलें हैं। गेहूँ, चना, गुजई और बाजरा रबी की फसलें हैं। वर्षा कम होने से सिंचाई की जरूरत पड़ती है। अधिकतर सिंचाई कुओं से होती है। कुओं में पानी अधिक गहराई पर मिलता है। कुछ भाग नहरों (फतेहपुर सीकरी, गङ्गा नहर और आगरा नहर द्वारा सीचे जाते हैं। अकबर के समय में पहाड़ियों के बीच में फतेहपुर सीकरी के पास बांध बनवाया था।

संक्षिप्त इतिहास—आगरा जिले के कई स्थान पांडवों से सम्बन्ध रखने हैं। कहते हैं पिन्हात नाम उन्हीं से लिया गया है। उतांगन या वाणगंगा का स्रोत उस स्थान पर है। जहां अर्जुन ने अपना वाण छोड़कर गड्ढा बना दिया था। आगरा जिले के उत्तरी पश्चिमी भाग सूरसेन के राज्य में सम्मिलित थे। इस राज्य की राजधानी मथुरा थी। बटेश्वर और सूयपुर गांव बहुत पुराने हैं। यहां पुराने समय के सिक्के मिले हैं। सालमान नामी एक फारसी कवि ने (जो ११३१ ई० में मरा) लिखा है कि भीषण आक्रमण के बाद महमूद गजनवी ने आगरे के किले को जयपाल से छीना था। तारीखे दाऊदी में लिखा है कि महमूद ने आगरे को (जो कंस के समय से हिन्दुओं का एक समृद्धिशाली नगर था) ऐसा नष्ट किया कि यह एक साधारण गांव रह गया। यहां से महमूद ने फीरोजाबाद के चन्दवर किले पर आक्रमण किया था। पर महमूद की विजय स्थायी न थी। २०० वर्ष तक राजपूत सरदार आगरा जिले के मेवातियों पर राज्य करते रहे।

११९३ ई० में दिल्ली के चौहानों की शक्ति नष्ट हो गई मुसलमानी सेनायें दिल्ली और कोसी में आ डटीं। दूसरे वर्ष कन्नौज के राजा जयचन्द्र पर चढ़ाई करने से पहले फीरोजाबाद तहसील पर अधिकार कर लिया। ११९६ में वियना पर मुसलमानों का अधिकार होगया फिर भी चौहान राजपूत लड़ते रहे। १२५९ में पंवार राजपूत खैरागढ़ में आडटे। चौदहवीं सदी के अन्त में भदोरिया राजपूत हटकांट में आडटे औ उन्होंने वाह से म्यू या या मेवाती लोगों को भगा दिया। तैमूर के आक्रण पश्चात देशों में जो गड़बड़ी फैली उसमें राजपूत प्रायः स्वाधीन हो गये। १४०७ ईस्वी में इधर जौनपुर के सुल्तानों के हमले होने लगे। १४२० में चन्दवार के राजा को दबाकर पड़ोस के भागों को उन्होंने नष्ट कर दिया। १४५२ ईस्वी में दिल्ली और जौनपुर की सेनाओं में चन्दवार के पास बड़ी लड़ाई हुई। अन्त में दिल्ली के बहलोल बादशाह का यहां राज्य हो

बढ़ा। आगरे पर फिर अफगानों का अधिकार हो गया। लेकिन दिल्ली के पास हीमू की हार हुई और वह मार डाला गया। १५५८ ईस्वी में अकबर ने आगरे में प्रवेश कर पहले वह सुलतानपुर गाँव में ठहरा फिर वह बादलगढ़ किले चला गया।

१५६० में अकबर बियना की ओर शिकार के लिये गया। इसी समय बैराम खां ने विद्रोह का झंडा उठाया। अकबर की सेना ने उसे हरा दिया। और पकड़ लिया। उसकी पुरानी सेवाओं का ध्यान करके अकबर ने उसे क्षमा कर दिया। जब बैराम हज के लिये जा रहा था तो उसके एक शत्रु ने उसे रास्ते में ही मार डाला। १५६१ में अकबर फिर राजधानी (आगरे) को लौटा। १५६५ में अकबर हाथियों का शिकार करने के लिये आगरे से धौलपुर और नरवर को गया। लौटने पर उसने किले को बनवाना आरम्भ किया। इस किले के बनने में कई वर्ष लगे १५६६ में जौनपुर और बनारस से लौटने पर उसने नगरचैन नाम का भवन ककरहा गांव में बनवाया।

आगरे के उत्तर-पश्चिम में इससे खंडहर इस समय भी मिलते हैं। १५६८ में अकबर ने चित्तौड़ की ओर प्रस्थान किया। लौटकर १५६६ में उसने रण शमशेर किले को ले लिया। इसी वर्ष उसने फतेहपुर सीकरी की नींव डाली। दूसरे वर्ष यहीं सलीम (जहांगीर) का जन्म हुआ। इसकी स्मृति में अकबर ने यहां महल बनवाये। दूसरे वर्ष उसने शेख मुईनुद्दीन ने भिश्ती के मकबरे का दर्शन करने के लिये पैदल अजमेर की यात्रा की। यहां से वह बीकानेर और लाहोर को गया। १५७१ ईस्वी में वह फिर आगरे को आया। दूसरे वर्ष वह गुजरात (अहमदाबाद) को गया और १५७४ में फतेहपुर सीकरी को लौटा। १५७५ में वह बंगाल को गया। १५७७ में फतेहपुर सीकरी में टक्साल स्थापित की गई। १५८२ में वह पंजाब गया। १५८४ में यमुना के मार्ग से वह इलाहाबाद पहुँचा। १५८६ में उसने पंजाब और काबुल के लिये प्रस्थान किया। १५६६ में वह फिर आगरे में रहने लगा। इसके बाद वह बुढ़ानपुर और अहमद नगर को गया। १६०२ ई० में वह फिर आगरा लौट आया। १६०५ ई० में ६५ वर्ष की अवस्था में अकबर का देहान्त हो गया। सिकन्दरा में उसकी लाश गाड़ी गई वहीं उसका मकबरा बना।

अकबर के जीवन काल में पुर्चगाली, यूनानी, अंग्रेज और दूसरे योरुपीय लोग आगरे में आने लगे गये थे अकबर की मृत्यु के बाद १६०५ के अक्तूबर मास में जहांगीर गद्दी पर बैठा। जहांगीर ने पहले अपने सौतेले भाई खुसरू का पीछा किया जो मानसिंह की सहायता से राजा बनना चाहता था। खुसरू हार गया और १६०७ में बन्दी बनाकर आगरे लाया गया। १६११ में उसने नूरजहां से ब्याह किया। १६१३ से १६१८ तक वह अजमेर की ओर रहा। १६१६ में वह काश्मीर को गया। १६२२ ईस्वी में उसके बेटे खुर्रम (शाहजहां) ने विद्रोह का झँडा उठाया। १६२५ में खुर्रम ने आत्मसमपण किया और १६२८ में जहांगीर फिर आगरे को लौट आया। ईस्ट इँडिया कम्पिनी ने अपने एजेंट जहाँगीर के दरबार (आगरे) में भेजे।

१६२८ के फर्वरी मास में शाहजहां बादशाह बना। आरम्भ का समय ओरछा और दक्षिण में विद्रोह दबाने में बीता। १६२१ में वह आगरे को लौटा। बुढ़ानपुर में उसकी स्त्री अर्जुमन्द बानू मुमताज महल) का देहान्त हो गया। ६ महीने बाद उसकी अस्थि आगरे लाई गई और उनके ऊपर जगत्प्रसिद्ध ताजमहल बना।

१६५७ के शाहजहां दिल्ली में बीमार पड़ा। दारा शिकोह राजधानी में था वह राजप्रबन्ध करने लगा। उसके भाई शुजा बँगाल में, मुराद गुजरात में और औरङ्गजेब बीजापुर (दक्षिण) में थे। दारा खजाने पर अधिकार प्राप्त करने के लिये अपने पिता को आगरे ले आया। इसके बाद उसने राजा जैसिंह को शुजा के विरुद्ध भेजा जो इस समय बनारस में पड़ाव डाले हुये था। महाराजा जसवन्त सिंह मुराद और औरङ्गजेब से लड़ने के लिये भेजे गये। मलवा में औरङ्गजेब और मुराद की सेनायें मिल गई थी। दारा शिकोह किले के ठीक उत्तर की ओर जमुना बाग

रहने लगा। बनारस में शुजा बुरी तरह से हारा। उसके अनुयायी बन्दी बनाकर आगरे में लाये गये। वहां वे सड़कों पर घुमाये गये। लेकिन जसवन्तसिंह को सफलता न मिली। दक्षिण की सेनाओं ने उसकी सेना को भगा दिया। औरङ्गजेब उत्तर की ओर ग्वालियर की ओर आया। आगे बढ़कर उसने चम्बल को पार किया। आगरे से पांच मील पूर्व यमुना के किनारे सामगढ़ शाही सेना और औरङ्गजेब की सेना में लड़ाई हुई। दारा की सेना मुराद और औरङ्गजेब की संयुक्त सेना से कहीं अधिक बड़ी थी। दारा को अपनी विजय पर पूरा भरोसा था। शाहजहां ने बंगाल से लौटने वाली विजयी सेना के आने तक ठहरने की सम्मति दी। लेकिन दारा ने इस पर कोई ध्यान न दिया। आरम्भ में दारा विजयी होता दिखाई दिया। राजा रामसिंह के राजपूत सिपाहियों ने मुराद की सेना में भीषण मारकाट मचा दी।

औरङ्गजेब को रुस्तम खां के सिपाहियों ने बुरी तरह घेर लिया। औरङ्गजेब को इस ओर समय से कुछ नये सिपाहियों ने सहायता दी। इतने में दारा ने मध्य भाग पर आक्रमण किया और राजा रूपसिंह के सिपाहियों ने औरङ्गजेब की सेना को चीर कर पार कर दिया। लेकिन दारा के सिपाही पिछड़ गये। इतने में दारा का हाथी बिगड़ गया। जब हाथी वश में न आया तब दारा हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार हुआ। इससे दारा के सिपाही उसे न देखकर हताश होगये और उनमें गड़बड़ी मच गई। दारा और उसका बेटा आगरे की ओर भाग आये और उसी रात को लाहौर की ओर चले गये। तीन दिन के बाद औरङ्गजेब आगरे की ओर बढ़ा। वह मुबारक मंजिल में ठहरा। किले का प्रबन्ध शायस्ता खां को सौंप कर औरङ्गजेब ने मुराद के साथ दारा का पीछा किया और मथुरा में उसे पकड़ लिया। उसे कैद करके दिल्ली को भेज दिया। वहीं वह मार डाला गया।

औरङ्गजेब आलमगीर के नाम से बादशाह घोषित किया गया। शाहजहां कैद में रक्खा गया। १६६६ में कैद में ही वह मर गया ताज में उसकी भी कब्र बनी। इसी वर्ष शिवा जी आगरे आये और बन्द कर लिये गये। अन्त में भेस बदल कर पहले वे मथुरा को और फिर काशी होकर दक्षिण को चले गये। इसके बाद औरंगजेब का अधिकतर समय दक्षिण में बीता। १७०७ में औरंगजेब की मृत्यु हो गई। सिंहासन के लिये फिर गृह-कलह छिड़ गई। औरंगजेब के बड़े बेटे मुअज्जम ने आगरा और खजाना छीन लिया। दूसरा बेटा आजम दक्षिण की ओर से बढ़ रहा था। उसने उटंगन को पार किया। लेकिन दिराबाद के पास जजऊ की लड़ाई में आजम हार गया और मार डाला गया। मुअज्जम बहादुरशाह के नाम से सम्राट घोषित किया गया। जजऊ में बहादुरशाह ने विजय के उपलक्ष में एक मस्जिद और सराय बनवाई।

जाट और चौहान औरङ्गजेब के समय में ही बिगड़ गये थे। उनके नेता गोकुल को १६७० में फांसी दी गई। औरङ्गजेब के मरने पर बादशाह तेजी के साथ बदले। जाटों की शक्ति भी तेजी के साथ बढ़ी। १७२२ में जाटों के राजा बदन सिंह ने भरतपुर में किला बनवाया। कुछ समय बाद उसने वह किला अपने बेटे सूरजमल को सौंप दिया। १७२९ में मरहठे ग्वालियर के पास आ गये। १७३४ में मरहठों के घुड़सवार आगरे के पास आ गये। १७३७ में बाजी राव ने बादशाह से युद्ध छेड़ दिया और आगरा जिले पर हमला किया। उसने पहले चम्बल के दक्षिण में भदावर के राजा की जायदाद छीन ली। फिर उसने दोआब में प्रवेश किया। यहां से वह दटेरवर की ओर बढ़ा। यमुना को पार करके उसने शिकोहाबाद पर अधिकार कर लिया। उसने फीरोजाबाद और इतमादपुर को जलाया और जलेसर पर धावा बोल दिया। कुछ समय के बाद बाजी राव फतेहपुर सीकरी और डीग के मार्ग से दिल्ली की ओर बढ़ा। मरहठों को रोकने के लिये १७३६ में निजामुल मुल्क आगरे और मालवा का सूबेदार बनाया गया। १७३८ में जाटों ने फराह और अछनेरा के पास २३ गांव छीन लिये। १७३६ में नादिरशाह के हमले से गड़बड़ी और अधिक बढ़ गई। जाटों और मरहठों की शक्ति बढ़ गई। १७४८ में मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई। इसके बाद उसका कोई उत्तराधिकारी आगरे में रहने के लिये न आया। १७५७ में अहमद शाह दुर्रानी ने मथुरा को लूटा और आगरे की ओर बढ़ा लेकिन उसने किले

का नहीं लिया। १७५८ में मरहठे आगरे और दिल्ली के पड़ोस में पहुँच गये। पानीपत की हार के बाद जब मराहठा सूबेदार खजाने को लेकर आगरे को भागा तब सूरजमल ने यह खजाना छीन लिया और किलेबन्दी पर खर्च किया। आगे चलकर सूरजमल ने आगरा का किला ले लिया और जिले के बड़े भाग पर राज्य जमा लिया। १७६५ में उसने भदौरिया राजा से वाह भी छीन लिया। रुहेलों से तंग आकर दिल्ली के सम्राट ने मरहठों से सहायता मांगी। १७८४ में महादा जी सिन्धिया ने आगरे के किले पर अपना अधिकार कर लिया। सिन्धिया ने दिल्ली में भी अपना प्रभाव बढ़ा लिया। गुलाम कादिर ने बादशाह की आँखें निकलवा लीं। सिन्धिया ने बदले में उसके नाक, कान और जीभ कटवा कर उसे फांसी दी। १७६४ में महादा जी की मृत्यु के बाद उसका बेटा दौलतराव गद्दी पर बैठा। १८०२ ईस्वी में ईस्ट इंडिया कम्पनी और मरहठों में लड़ाई छिड़ गई। लार्ड लेक कानपुर से एक बड़ी सेना लेकर कन्नौज, और मैनपुरी के मार्ग से आगरे की ओर बढ़ा आगरे की रक्षा का भार सिन्ध के फ्रांसीसी सेनापतियों के हाथ में था। एक फ्रांसीसी सेनापति (पेटन) सिन्धिया को छोड़कर अँग्रेजों से मिल गया। इस विश्वासघात से चिढ़कर मरहठों ने दूसरे योरुपीय सेनापतियों को कैद कर लिया। लेकिन जल्दी में वे आगरे की रक्षा का ठीक प्रवन्ध न कर सके। मरहठे अन्त तक वीरता से लड़े। लेकिन वे किले को न बचा सके। मरहठों का २२ लाख रुपये का कोष पेटन ने अपने लिये लेना चाहा। लेकिन वह ईस्ट इंडिया कम्पिनी को मिला। १८०३ की सन्धि से आगरा जिला अंग्रेजी कम्पिनी के हाथ आया।

१८०४ में होल्कर से लड़ाई छिड़ गई। मरहठों ने कर्नल मानसून को बुरी तरह से हराया। उसकी फौज में भगदड़ मच गई। उसे आगरा बड़ी कठिनाई से मिला। होल्कर ने अंग्रेजी फौज से मथुरा खाली करवा लिया। मरहठे घुड़सवार पिन्हाट तक द्वाब में छापा मारने लगे। लेकिन लार्ड लेक ने फिर एक बड़ी सेना इकट्ठी की। फर्रुखाबाद के पास जब मरहठों के पास केवल दो दिन का भोजन रह गया था। लार्ड लेक ने होल्कर पर छापा मारा। यहां होल्कर की भारी हार हुई। वह मैनपुरी, एटा, हाथरस और मथुरा के मार्ग से आगरे की ओर आया और पञ्जाब को चला आया। उस समय से गदर तक आगरा जिले में शान्ति रही।

११ मई १८५७ को गदर की खबर मथुरा और आगरा में पहुँची। इस समय किले में अधिकतर हिन्दुस्तानी सिपाही थे। १३ मई को और योरुपीय सिपाही किले में भेज दिये गये और हिन्दुस्तानी सिपाही किले से बाहर कर दिये गये। गोरे और अधगोरे (यूरेशियन) लोग भरती किये गये वे सिविल लाइन में गश्त लगाने लगे। किले की रक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। कुछ सेना सिन्धिया महाराज ने भेज दी। कुछ सेना दूसरे देशी राज्यों से मंगाली गई। पुलिस के सिपाही भी बढ़ा लिये गये। ३० मई को दो छोटी देशी सेनायें मथुरा से ५ लाख रु० का खजाना लाने के लिये भेजी गई। मथुरा पहुँचकर इन्होंने विद्रोह का झंडा उठाया और खजाना लेकर उन्होंने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दूसरे दिन आगरे में परेड के मैदान में देशी सिपाहियों की ओर तोपों और अंग्रेजी सिपाहियों की बन्दूकों के मुंह कर दिये गये और इस प्रकार डराकर उनसे हथियार रखवा लिये गये। कुछ निहत्थे सिपाही अपने अपने घर चले गये। कुछ दिल्ली पहुँच कर दूसरे विद्रोहियों से जा मिले। इससे पड़ोस में विद्रोह की आग भड़क उठी। ३ जून को कानपुर से खबर का आना जाना बन्द हो गया। इसीदिन नीमच के सिपाही बिगड़ गये। ३ जून को नीमच में ६ जून को झांसी में १० जून को नौगांव में ४ जून को ग्वालियर में और १ जुलाई को इन्दौर में विद्रोह हुआ। पीड़ित योरुपीय जान लेकर आगरे में आने लगे। १२ जून को आगरा शहर और जिले में मार्शल्ला (फौजी कानून) घोषित किया गया। २ जुलाई को नीमच के सिपाहियों ने फतेहपुर सीकरी पर अधिकार कर लिया। २७ जून को सिविल लाइन खाली करके सभी योरुपीय किले में चले आये। लेफ्टीनेंट गवर्नर भी किले में आगया। जेल के योरुपीय सिपाहियों का पहरा देने का काम ५० सिक्ख कैदियों को सौंपा गया। वे मुक्त कर दिये गये और सिपाही बना दिये गये। नावों का

पुल तोड़ दिया गया। नावें किले के पास लाई गईं। कोटा के सिपाहियों ने जब विद्रोह किया तो उनके ऊँट और बन्दूकें छीन ली गईं। लेकिन शाहगंज की लड़ाई में विद्रोहियों की भारी जीत हुई। इससे किले में डर फैल गया। वहाँ ३५०० गोरे और २३ देशी ईसाई थे। विद्रोही आगरे से दिल्ली चले गये थे। फिर भी ३ दिन तक किसी ने किले से बाहर आने का साहस न किया। धीरे धीरे धौलपुर और दूसरे स्थानों से सहायता आगई। इस से शहर और जिले में थाने स्थापित किये गये। सेना की दो टोलियों ने गश्त लगाये। इस से कुछ समय में जिले में शान्ति स्थापित हो गई। १८५८ में लेफ्टनेन्ट गवर्नर के रहने का स्थान आगरे से हट कर इलाहाबाद में हो गया। १८६८ में हाईकोर्ट भी इलाहाबाद चला आया।

अचनेरा कस्बा आगरे से भरतपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आगरे से १७ मील दूर है। यहां से वाम्बे बड़ौद सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे की शाखा लाइन कानपुर को और प्रधान लाइन अजमेर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। यहां चैत में देवी का मेला लगता है। कन्सलीला और फूल के उत्सव होते हैं। कहते हैं दिल्ली के राजा अनंगपाल के बेटे अचल राजा ने इसे बसाया था।

आगरा शहर यमुना के दाहिने किनारे पर रेल द्वारा कलकत्ते से ८४३ मील और बम्बई से ८३६ मील दूर है। यहां से उत्तर में अलीगढ़, पूर्व में फीरोजाबाद, मैनपुरी, दक्षिण में धौलपुर-ग्वालियर दक्षिण-पश्चिम में भरतपुर, पश्चिम में मथुरा को पक्की सड़कें गई हैं। ईस्ट इंडियन रेलवे की शाखा लाइन टूंडला से आती है और यमुना पुल के पास फोर्ट स्टेशन में समाप्त हो जाती है। यहां से मीटर गेज लाइन पश्चिम की ओर छावनी स्टेशन होती हुई अचनेरा को जाती है। जी० आई० पी० की लाइन इसके समानान्तर चलती है और दक्षिण की ओर धौलपुर को जाती है। छावनी स्टेशन से उत्तर की ओर खवासपुर या आगरा रोड जंकशन से राजा की मंडी होती हुई सिकन्दरा और मथुरा को जाती है। यमुना के ऊपर जो पुल है उसके ऊपरी भाग पर रेल जाती है। नीचे से सड़क जाती है। आगरा शहर का बड़ा भाग यमुना के दाहिने किनारे पर किले से ऊपर की ओर स्थित है। दक्षिण ओर छावनी है। कुछ भाग माल (गुडस) स्टेशन के पास यमुना के दूसरे किनारे पर बसा है। अधिक आगे पूर्व की ओर जग प्रसिद्ध ताजमहल है। छावनी के उत्तर पश्चिम में सिविल लाइन है। प्रधान शहर यमुना और सिविल लाइन के बीच में स्थित है। कुछ मुहल्ले पश्चिम की ओर अलग अलग बसे हैं। आगरा शहर के अधिकांश घर पत्थर के बने हैं। लेकिन गलियां तंग ऊँची नीची और टेढ़ी हैं। पुराने समय में आगरा शहर एक चार दीवारी से घिरा हुआ था। इसमें प्रवेश करने के लिये १६ द्वार थे। कहते हैं चार दीवारी के भीतर आगरा शहर का क्षेत्रफल ११ वर्ग मील था।

सिविल लाइन छावनी के दक्षिण में आरम्भ होती है। सिविल लाइन में ही आगरा कालेज होस्टल मेडिकल कालेज और अस्पताल हैं। यहीं नागरी प्रचारिणी सभा आगरा पुस्तकालय और वाचनालय है। तहसील की इमारत में पहले टक्साल थी जो १८२४ ईस्वी में तोड़ दी गई। कुछ दूरी पर आगरे के आर्किबिशप बंगला और पादरी टोला है।

आगरा शहर ?१२ मुहल्लों में बटा हुआ है। छंगा मोदी हरवाते के पश्चिम में जहां इस समय महाराजा जैपुर की कोठी है वहां पहले प्रान्त के लाट सहाब (लेफ्टेनेंट गवर्नर) रहते थे। आलम गंज मुहल्ले में औरङ्गजेब की बनवाई हुई मस्जिद थी। इसे उसने १६७१ ईस्वी में बनवाया था। बाद को यह इमारत फिर से बनी और एक दफ्तर के काम आने लगी। लोहामंडी लोहे के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। यहीं थाना और मस्जिद मुखन्निसान (हिजड़ा की मस्जिद) है। कहते हैं लाल पत्थर की यह मस्जिद सम्राट अकबर ने एक हिजड़े की स्मृति में बनवाई थी जिसकी प्रार्थना से एक बार अकाल के समय वर्षा हुई थी।

नाई की मंडी के दक्षिण में दरबार शाह जी का मुहल्ला है। यहां एक दरगाह और मस्जिद है। कहते हैं एक बार शेरशाह ने अपने ऊँट मस्जिद में बँधवाये थे। इससे रुष्ट होकर फकीर ने श्राप दिया। इससे मस्जिद पड़ोस की भूमि से कुछ नीचे धंस गई।

शहर के दक्षिण में छावनी है। इसकी दक्षिणी सीमा ढाई मील लम्बी है। पश्चिमी सीमा लगभग ४ मील लम्बी है। कम्पिनी बाग के पड़ोस में ग्वालियर महाराज का भवन है। ऐशबाग या इशरत बाग में पहले दाराशिकोह का निवास था। इस समय यहां फौजी अफसरों का भोजनालय है। कुछ दक्षिण की ओर दारा के लड़के सुलेमान शिकोह की हवेली है। पास ही रंग महल है जिस पर इस समय अल्वर राज्य का अधिकार है। छावनी की उत्तरी सीमा के पास रेलवे लाइन के आगे जामे मस्जिद है। यह किला के उत्तरी पश्चिमी कोने के सामने है। इसे शाहजहां की लड़की जहांआरा ने बनवाया था। शाहजहां की कैद के समय में यह अपने पिता की सेवा करती थी। १६४४ में इसका बनना आरम्भ हुआ। यह पांच वर्ष में ६ लाख रुपये की लागत से बनकर तैयार हुई। यह लाल पत्थर की बनी है इसका फर्श पड़ोस की भूमि से ११ फुट ऊँचा है। ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियां बनी हैं। इसका सदर दरवाजा बड़ा सुन्दर था। लेकिन गदर के समय यह उड़ा दिया गया। अगर इस ओर से किले पर हमला होता तो पूरी मस्जिद को उड़ाने के लिये नीचे बारूद भर दी गई थी। मस्जिद १३० फुट लम्बी १०० फुट चौड़ी है। इसके द्वार का महराब ४० फुट से कुछ अधिक ऊँचा है। यह मुगल गृह निर्माण कला का सुन्दर नमूना है। गदर के समय १८५८ तक यह बंद रही। फिर यह लौटा दी गई।

आगरे का किला रेलवे के दक्षिण में यमुना के किनारे पर स्थित है। इसकी लम्बाई आध मील है। दूसरी ओर इसका घेरा डेढ़ मील है। अकबर के आदेश से १५६७ में इसका बनना आरम्भ हुआ। इसको पूरा होने में ८ वर्ष लगे। इससे पहले इसी स्थान पर बादलगढ़ का पुराना किला था। चारों ओर से लाल पत्थर की दुहरी दीवार से घिरा है। बाहरी दीवार ४० फुट ऊँची है। भीतरी दीवार ३० फुट और अधिक ऊँची उठी हुई है। पूर्व (यमुना के किनारे) की ओर बाहरी दीवार कुछ कम ऊची है। इसकी मजबूती के लिये पत्थरों का पुश्ताना लगा है। दीवारों पर थोड़ी थोड़ी दूरी पर बुर्ज बने हैं। इसकी बाहरी खाई लुप्त हो गई। भीतर खाई ३० फुट चौड़ी है। इसमें भीतर जाने के लिये ३ दरवाजे हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर दिल्ली दरवाजा है। दक्षिणी कोने पर अमरसिंह (सरदार अमरसिंह शाहजहां के समय में मरवा डाला गया था।) दरवाजा है। तीसरा दरवाजा यमुना की ओर है। दिल्ली दरवाजे के पास ही किले के भीतर मोती मस्जिद है। उत्तरी कोने पर बारूद खाना है जहां सब साधारण को जाने की आज्ञा नहीं है। मोती मस्जिद को शाहजहां ने ३ लाख के खर्च से (१६४८-१६५५) में बनवाया था। इसमें संगमरमर का काम है और बड़ी सुन्दर है। मोती मस्जिद से पश्चिम की ओर महल हैं। पास ही मीना बाजार है जहां ऊंचे घराने की स्त्रियां अपना अपना सामान अकबर और उसकी रानियों के हाथ बेचती थीं। अधिक दक्षिण की ओर दीवान-खास है। यह ५०० फुट लम्बा और ३७० फुट चौड़ा है। इसमें दरबारी लोगों की ही पहुँच होती थी पूर्व की ओर दीवान-आम है। यह तीन ओर से खुला हुआ है। फर्श और छत लाल बलुआ पत्थर की बनी है। संगमरमर के बने हुये सफेद खम्भों की तीन पंक्तियों पर सधी हुई है। सिंहासन के सामने सफेद संगमरमर की बड़ी चौकी है। सिंहासन के दाहिने और बायें ओर पत्थर की जाली वाली खिड़कियां हैं जहां से महल की स्त्रियां सभा को देख सकती थीं। पास ही अकेले पत्थर की गढ़ी हुई २५ फुट घेर वाली ५ फुट ऊंची नाद है जिसमें जहांगीर स्नान करता था। इसके एक ओर नगीना मस्जिद है। पूर्व की ओर मच्छी भवन है। इसके बीच वाले छोटे ताल में मछलियां रहती थीं। मच्छी भवन से दक्षिण में अंगूरी बाग है। पूर्व की ओर खास महल या आरामगाह है।

अंगूरी बाग के उत्तरी-पूर्वी किनारे पर शीशमहल है। इसमें छोटे छोटे शीशे लगे हैं। समन बुर्ज में शाहजहां ने कैद के दिन बिताये थे शीशमहल और समन बुर्ज के बीच में हम्माम या स्नानागार है। १८१३-१८२० में लार्ड हेस्टिंग्ज ने सर्वोत्तम स्नानगार को उखड़वाकर इंगलैंड भिजवा दिया। इस लूट से इस स्थान की सुन्दरता सदा के लिये नष्ट हो गई। लार्ड विलियम बैंटिंक ने (१८२८-२५) बहुत सा

बढ़िया कामदार संगमरमर पत्थर नीलाम कर दिया। एक ओर सोमनाथ के फाटक रक्खे हुये हैं यह १२ फुट ऊंचे ६ फुट चौड़े हैं। इन पर बढ़िया काम है। यह देवदारू के बने हैं। १८४२ में यह महमूद गजनवी के मकबरे से लाये गये। महमूद जो सोमनाथ के फाटक ले गया था वे चन्दन के बने थे। नीचे बावली और कुछ तहखाने हैं। एक बरामदे में हिन्दू मन्दिर है। जिसे भारतपुर के राजाने अठारहवीं सदी में अपने दस वर्ष के शाशनकाल में बनवाया था।

अंगूरी बाग के दक्षिण में जहांगीरी महल है। यह (पूर्व-पश्चिम) २६० लम्बा और (उत्तर-दक्षिण) २४६ फुट चौड़ा है। यह और महलों से पुराना है और हिन्दू ढङ्ग से बना है। कहते हैं जोधाबाई यहीं रहती थीं। इसमें एक छोटा मन्दिर भी था जिसे असहिष्णु औरंगजेब ने उखड़वा डाला।

ताजमहल या ताज बीबी का रौजा यमुना के दाहिने किनारे पर किले से डेढ़ मील की दूरी पर बना है। यहीं शाहजहां की स्त्री अर्जुमन्दबानू या मुमताज महल की कब्र है। उसका बाप नूरजहां का भाई था। इसके बनवानेमें ५ करोड़ रुपये खर्च हुये। संगमरमर मकराना (जैपुर) से लाया गया। हीरा जवाहिरात और सजावट का दूसरा सामान संसार के सभी भागों से आया। ताजमहल का चबूतरा ३१३ फुट वर्ग है और संगमरमर का बना है। चार कोनों पर संगमरमर की १६२½ फुट ऊंची मीनारें बनी हैं। बीच में १८६ फुट लम्बा चौड़ा मकबरा है। बीच में चारों ओर ६१½ फुट ऊँचे महराब हैं। प्रधान गुम्बद का व्यास ५८ फुट है। इसकी चोटी फर्श से २,२½ फुट ऊंची है। इसके ऊपर सुनहली कलगी ३० फुट ऊँची है। नीचे अष्ट भुज कमरा है। नीचे कब्रों के ऊपर बढ़िया काम है। पहले इसके दरवाजे चांदी के बने थे। कहते हैं भरतपुर के जाट इन्हें उठा ले गये। अपनी सुन्दरता और कारीगरी के लिये ताजमहल संसार के सात महान आश्चर्यों में से एक है।

ताज के दक्षिण में ताजगज मुहल्ला है। यहां कुछ मकबरे, महाबत खां का बाग और भरतपुर महाराज की कोठी है।

शहर के पास छावनी की पश्चिमी से मिली हुई ईदगाह है। कहते हैं शाहजहां ने इसे ४० दिन में पूरा करवाया। यह १६० फुट लम्बी और ४० फुट चौड़ी है।

अधिक पूर्व की ओर यमुना के किनारे राजवाड़ा है। यहां मुगल दरबार में सम्मिलित होने वाले राजपूत सरदार रहते थे यहीं राजा जस्वन्त सिंह की छतरी है। १६७७ ईस्वी में काबुल में उसकी मृत्यु हुई थी। यह लाल पत्थर का एक वर्गाकार भवन है। और चहार दीवारी से घिरे हुये बगीचे के बीच में स्थित है। आगरा बहुत समय तक मुगल राजाओं की राजधानी रहा। यहां राज दरबार से सहायता मिलने के कारण तरह तरह की दस्तकारियां फली फूलीं। पर पांच बातों में आगरा इतना प्रसिद्ध हुआ कि उनके बारे में एक कहावत चल पड़ी। वह कहावत यह है:—

दर, दरी, दरिया, दरियाई, दालदेव।

यहां के दर यानी दरवाजे या मकान, दरी दरिया या नदी, दरियाई एक प्रकार का रेशम और दाल देव सब कहीं प्रसिद्ध हो गये। आगरे में पत्थर का काम भी प्रसिद्ध है। संगमर के बने हुये ताजमहल के नमूने खिलौने और फतैंडर दूर दूर तक जाते हैं। यहां गोटा भी अच्छा बनता है। कुछ लोग टोपी बनाते हैं।

इस समय आगरे में चमड़े का काम बहुत उन्नत कर गया है। चमड़े के काम के लिये कानपुर के बाद दूसरा स्थान आगरे का ही है। दयाल बाग में राधा स्वामी उपनिवेश में जूते, फाउन्टेन आदि कई प्रकार की चीजे वैज्ञानिक ढङ्ग से बनती हैं।

आगरा इस प्रान्त में शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र है। यहां विश्वविद्यालय है जिसके सम्बन्ध में आगरा कालेज में इन्टर तक पढ़ाई होती है। यहीं ट्रेनिग कालेज और सेन्टजान्स कालेज गवर्नमेंटकालेज में बी० ए० और एम० ए० परीक्षा तक शिक्षा होती है। राजपूत कालेज गवर्नमेंट कालेज और राधा स्वामी कालेज में इण्टर तक पढ़ाई होती है। यहीं ट्रेनिग कालेज, नार्मल स्कूल और मेडिकल कालेज हैं। हाई स्कूल कई हैं। पगलों के सुधार के लिये भी एक अस्पताल है।

अहरान गांव आगरे से २१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां थाना डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाठशाला है। सप्ताहमें दो बार बाजार

लगता है। अकोलागांव खारी नदी के उत्तरी किनारे पर आगरे से १२ मील दूर है। मरहठों के शासन काल में यह गांव एक जोशी (ब्राह्मण) को माफी में मिला था। यहां मिट्टी के वर्तन वहुत बनते हैं। बाजार भी लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

बाह इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से इटावे को जाने वाली पक्की सड़क पर आगरे से ४५ मील और बटेश्वर से ६ मील दूर है। यहाँ से यमुना तट के विक्रमपुर घाट और चम्बल तट के केंजरा घाट को सड़कें गई हैं। कहते हैं भदावा के राजा कल्याण सिंह ने इसे सत्रहवीं सदी में बसाया था। राजा बख्तसिंह ने १७५८ में यहां महादेव का एक मन्दिर बनवाया जो अब तक खड़ा है। १७६८ में इसे जाटों ने छीन लिया। १७८४ में यहां मरहठों का अधिकार हो गया। बाहर की चार दीवारी में ४ दरवाजे हैं।

नगर के बीच में सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां से ग्वालियर और सिरसागंज (मैनपुर) को माल जाता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल हैं। यहां क्वार में रामलीला और चैत में बल्देवजी का मेला होता है। बारहान गांव आगरे से २२ मील उत्तर पूर्व की ओर इतिमादपुर तहसील से १२ मील उत्तर की ओर है। पास ही ईस्ट इंडियन रेलवे का स्टेशन है। यहां डाकखाना प्राइमरी स्कूल और बाजार है। तम्बाकू की विक्री वहुत होती है। कहते हैं इसके पड़ोस में ढाकरा राजपूतों के हाथ में १२ गांव थे।

इसी से इस गांव का यह नाम पड़ा। गदर से कुछ पहले यह अवाके राजा के अधिकार में चला गया। यहां भट्टी मुसलमानों के बनवाये हुये किले खंड़हर हैं।

बटेश्वर का प्राचीन गांव यमुना के दाहिने किनारे पर आगरे से ४१ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यह बाह से ६ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। यहां से एक सड़क यमुना को पार करके शिकोहाबाद को गई है। यहां पुराने खेर में पुराने समय की ईंटे सिक्के और दूसरी चीजें मिलती हैं। १६९६ ई० में भदावर के राजा वदनसिंह ने यहां वटेश्वरनाथ (महादेव) का मन्दिर बनवाया। यमुना के किनारे और भी कई मन्दिर बन गये। पड़ोस में राजा के किले और महल के खंड़हर हैं। यहां कार्तिकी की पूर्णिमा को वड़ा मेला लगता है। यह तीन सप्ताह तक रहता है। यहां पशु घोड़े ऊँट आदि और दूसरी चीजें दूर दूर से बिकने आती हैं।

चन्दवर का प्राचीन गांव यमुना के बायें किनारे पर फीरोजाबाद से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यमुना के ऊचे किनारे पर चौहानों का किला था। इसने कई बार दिल्ली के बादशाहों से लोहा लिया। इसके पड़ोस में मीलों तक मन्दिर आदि के खंडहर हैं। गांव से उत्तर की ओर अकबर के समकालीन शाह सूफी नाम का एक फकीर का मकबरा है। यहां वर्ष में एक बार मेला लगता है।

धीरपुरा इतमादपुर तहसील के उत्तरी-पूर्वी कोने पर टूंडला स्टेशन से ६ मील दूर है। दक्षिण में यह यमुना तक फैला हुआ है। इसके पूर्व में भिनी नाला है। यमुना में गिरने वाले छोटे छोटे नालों ने गांव को कई भागों में बांट दिया है। कहते हैं धीरसिंह नामी एक चौहान राजपूत ने इसे बसाया था। विद्रोह में भाग लेने के कारण यह गांव १८५८ में जब्त कर लिया गया था। गांव की प्रधान उपज तम्बाकू है। चैत के महीने में यहां दंगल होता है। पड़ोस से लगभग १०,००० दर्शक इकट्ठे होते हैं।

दूरा गांव किरावली तहसील के दक्षिण में फतेहपुर सीकरी से ५ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। गांव में बाजार लगता है। चैत के महीने में फूल डोल का मेला होता है। यहां के जाट भरतपुर राजवंश के सम्बन्धी हैं। गांव में होकर फतेहपुर सीकरी-नहर का पुराना राजवाहा जाता है।

फतेहाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान हैं। यहां होकर आगरे से इटावे को पक्की सड़क जाती है। एक सड़क पश्चिम की ओर शम्साबाद को और दूसरी सड़क उत्तर की ओर फीरोजाबाद को जाती है। १६५८ में दाराशिकोह पर विजय पाने के बाद औरंगजेब ने इसका नाम जफराबाद से बदल कर फतेहाबाद रख दिया। यहां उसने एक मस्जिद और सराय बनवाई। इसके दक्षिण की ओर फीलखाना (हाथियों के आराम के लिये बाग और ताल) बनवाया। मरहठा सरदार रावडूंडे ने यहां किलाबन्दी

की। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और फारसी का मक्तब है। अनाज की बिक्री रोज होती है। रविवार को पशु बिकते हैं। सोमवार के बाजार में चमड़ा, जूता और दूसरा सामान बिकता है। भादों में श्री बिहारी का मेला लगता है। सम्वत १८१० में मरहठों ने यहां बिहारी और महादेव के मन्दिर बनवाये थे। फतेहपुर सीकरी कस्बा आगरे से २३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। आगरे से पक्की सड़क मिढकौर और किरावली होती हुई खारी नदी को पुल द्वारा पार करके यहां आती है। कच्ची सड़क उत्तर में भरतपुर और अचनेरा को ओर उत्तर-पूर्व में खैरागढ़ को गई है। वर्तमान फतेहपुर सीकरी कस्बा है अकबर के महलों और पुराने खंडहरों के दक्षिण-पश्चिम में एक लाल पहाड़ी टीले के ढाल पर स्थित है। अधिकतर घर समतल भूमि पर पत्थर के बने हैं जो यहां बहुत सस्ता है। यहांथाना, डाकखाना और जू० हाई स्कूल है। शनिवार को बाजार लगता है। यहां चक्की और सूती कालीने बनती हैं।

सीकरी गांव को चौदहवीं सदी में धौलपुर से आये हुयें राजपूतों ने बसाया था। १५२७ में बाबर ने यहां पड़ाव डाला। खन्हवा या कन्हवा गांव के पास (जो यहां से १० मील की दूरी पर भरतपुर राज्य में स्थित है।) बाबर ने राणा संग्रामसिंह की सेना पर विजय पाई। गुजरात में विजय पाने के बाद अकबर ने इसका नाम फतेहपुर सीकरी रक्खा। यहां शेख सलीम चिश्ती नाम का एक प्रसिद्ध मुसलमान फकीर रहता था १५६९ में अकबर ने फकीर में दर्शन किये इस समय तक अकबर के कोई लड़का नहीं हुआ था। फकीर के आदेश से अकबर ने अपनी रानी को यहां रहने के लिये भेज दिया। दूसरे वर्ष शाहजादा सलीम (जहांगीर) पैदा हुआ। फकीर के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिये ही अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रक्खा। पुत्रके पैदा होने पर अकबर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने सलीम के जन्म स्थान पर महल बने और नया शहर बसाने का निश्चय कर लिया। लाहौर जाने के समय तक अकबर यहीं रहा पंजाब से लौटने पर वह आगरे में रहने लगा और फतेहपुर सीकरी का नया शहर उजड़ गया। १७२० में मुहम्मद शाह कुछ समय तक यहां रहा। यहीं जाटों और मरहठों ने अपने शासन काल में तहसील को केन्द्र बनाया था। कुछ समय तक शहर में विद्रोहियों का यहां प्रभुत्व रहा।

अकबर की फतेहपुर सीकरी में इस समय का सीकरी भी शामिल थी। इसका घेरा छः मील था। यह तीन ओर पत्थर की ऊंची दीवारों से घिरी थी। भीतर की दीवार ६ फुट चौड़ी और ३२ फुट ऊंची थी। इससे एकदम जुड़ी हुई बाहरी दीवार छः फुट अधिक ऊंची थी। इसमें इस प्रकार छेद बने थे कि भीतर से बाहर की ओर सिपाही गोली छोड़ सकते थे। चौथी (उत्तर-पश्चिम की) ओर अकबर की नगरी खुली हुई थी। इधर दीवार न थी। इस ओर घाटी के आर पार चन्दरौली और फतेहपुर सीकरी की पहाड़ियों के बीच में बांध बनवा कर एक कृत्रिम झील बनवायी थी। दीवारों में ६ दरवाजे थे। दिल्ली दरवाजा सीकरी और नगर गांवों के बीच में था। लाल दरवाजे के आगे आगरा दरवाजा प्रधान सड़क पर था। बीरबल दरवाजा पूर्वी कोने पर था। दक्षिण-पूर्व की ओर चन्दनपाल और ग्वालियर दरवाजे थे। टेहरी दरवाजा दक्षिण-पश्चिम की ओर न था यहां से नसीराबाद को सड़क जाती है। चोर दरवाजा पहाड़ों की चोटी पर था। अजमेर दरवाजा पश्चिमी ढाल पर न था। आगरा दरवाजा बाहर की ओर ५१ फुट और भीतर की ओर ४० फुट ऊंचा था। यह ४० फुट गहरा (मोटा) और ४० फुट चौड़ा था। छत पर जाने के लिये दोनों ओर जीने बने थे। इस ढंग के दूसरे दरवाजे थे।

आगरा दरवाजे से प्रधान सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ी के किनारे किनारे जाती है। इससे दाहिनी ओर को जो सड़क फूटती है वह अकबर के महलों को गई है। एक ओर उजड़ी हुई सराय है। इसके आगे बाजार दाहिनी ओर पहाड़ी पर बारादरी है। यहां अमीर लोग रहते थे। पास ही नौबत खाना (संगीत-गृह) है। नौबत खाने से पहाड़ी के ऊपर को सड़क जाती है। यहां महल के भवन हैं। पहले टक्साल पड़ती है। अकबर के समय में सिक्के यहीं ढलते थे। इसके सामने खजाना है। इसके आगे दीवान-आम है जो ३६६ फुट लम्बा और १८१ फुट चौड़ा है बाहर की ओर दक्षिण-पश्चिम के कोने पर

विशाल हम्माम (स्नानागार) दीवान आम के पीछे पश्चिम की ओर दीवान खास है। यह ७५६ फुट लम्बे और २७२ फुट चौड़े हाते के भीतर स्थित है। यहां पचीसी खेल खेलने के खाने बने हैं। पचीसी के आगे उत्तरी-पश्चिमी कोने पर हिन्दू योगी के रहने का कमरा है। इसके पश्चिम की ओर आंख मिचौनी और जनाना है। पचीसी के दक्षिण में खास महल है। खास महल के उत्तरी-पूर्वी कोने पर तुर्की सुल्ताना का कमरा है। बीच में एक तालाब है। तालाब में एक चबूतरा है। यहां तक पहुँचने के लिये चार मार्ग बने हैं। दक्षिण की ओर अकबर का ख्वाबगाह (शयनागार है। यह कमरा भिन्न भिन्न रंगों से रंगा हुआ है। इसके दक्षिण में दफ्तरखाना है। कुछ आगे मरियम का भवन है। अस्पताल के दक्षिण में पंच महल (पंच मंजिला महल) है। पंच-महल के दक्षिण में सुनहरा मकान या मरियम का भवन है। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में जोधबाई का महल है जो जहांगीर को ब्याही थी। एक दरवाजे से हवा महल को रास्ता गया है। इसके नीचे मरि-यम का बगीचा है। जोधबाई महल की पश्चिमी दीवार से मिले हुये ऊंटों के अस्पताल हैं। इनके आगे ऊंटों का अस्पताल है। अस्तबल के उत्तर में बीरबल का शानदार भवन है। बीरबल शाही कवि, हंसमुख, हाजिर जवाब और वीर सेनापति थे। वे सदा अकबर के साथ रहते थे और उन्हें प्रसन्न रखते थे। बीरबल के घरके पास ही छोटी नगीना मस्जिद थी। यहां महल की महिलायें जाती थीं। कुछ आगे जलागार था। यहां से महल में पानी जाता था। पास ही हाथी पोल है। जहां द्वार पर दो विशाल हाथी बने हुये हैं।

सराय के उत्तरी कोने के सामने हिरन मीनार है। यह १० फुट ऊंचे और ७२ फुट वर्ग चबूतरे पर बनी हुई है। इस चबूतरे में एक दूसरा अष्टभुज चबूतरा है यह बड़े चबूतरे से ४ फुट ऊंचा है। इसकी व्यास ३७ फुट है। इसके ऊपर ६६ फुट ऊंचा बुर्ज बना है। पहले १३ फुट की ऊंचाई तक यह अष्ट भुज है। इसके ऊपर २७½ फुट तक यह गोल है। इसके ऊपर यह पतला और नुकीला हो गया है। गोल भाग में इसमें नकली हाथी दाँत (थोड़ी थोड़ी दूर पर) गड़े हैं। इससे यह बड़ी विलक्षण मालूम होता है। ऊपरी भाग में जालीदार पत्थर का घेर है। चोटी तक चढ़ने के लिये भीतर से जाना है। कहते हैं अकबर यहीं बैठकर हिरण का शिकार किया करता था। इसी से इसका नाम हिरण मीनार पड़ा। यहीं बरामदे में बैठकर महल की स्त्रियां दङ्गल देखा करती थीं। महल के दक्षिण-पश्चिम में विशाल जामा मस्जिद और शेखसलीम चिश्ती का मकबरा है। जामा मस्जिद मक्का की मस्जिद के ढङ्ग पर बनी है और भारतवर्ष की सर्वोत्तम इमारतों में से एक है। खम्भे हिन्दू ढङ्ग से बने हैं। मस्जिद के दक्षिण में १३४ फुट ऊँचा बुलन्द दरवाजा है। यह ४२ फुट ऊंचे फर्श पर बना है। इसे अकबर ने दक्षिण-विजय से लौटने पर १६०१ में बनवाया था। यह न केवल भारतवर्ष वरन् संसार का सबसे बड़ा दरवाजा है यह मस्जिद से भी अधिक सुन्दर है। और इससे अधिक सुन्दर शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है।

बुलन्द दरवाजके बाहर कुछ दूरी पर पश्चिम की ओर ११ गज व्यास वाली बावली है।

शेखसलीम चिश्ती का मकबरा कामदार संगमर-मर के चबूतरे के ऊपर बना है। यह चबूतरा १ गज ऊंचा और १६ गज लम्बा १ गज चौड़ा है। मकबरे के चारों ओ १२½ फुट ऊँचा बराम्दा है। मकबरा बढ़िया कामदार संगमरमर के घेरे घिरा है। मकबरे के ऊपर तांबे और मोतीकी सीप से जड़ी हुई कामदार लकड़ी की छतरी है। ऊपर मकबरा है। नीचे कब्र है। मकबरे के फर्श पर कई रंग के संगमरमर जड़ हैं। इनमें तरह तरह का बढ़िया काम है। यहां दूर दूर से मुसलमान और हिन्दू यात्री प्रतिवर्ष दर्शन करने आते हैं।

मस्जिद के उत्तर-पश्चिम में फैजी का भवन है। इनके अतिरिक्त यहां कई छोटे छोटे मकबरे हैं।

फीरोजाबाद इसी नामकी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से २६ मील पूर्व की ओर प्रान्तीय सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क उत्तर की ओर जलेसर को और उत्तर-पूर्व की ओर कोटला को गई है। यह ईस्टइंडियन रेलवे की प्रधान लाइन का एक स्टेशन

है। आगरे के बाद जिले में दूसरा स्थान फीरोजाबाद का है। कहते हैं जब राजा टोडरमल गया की तीर्थ यात्रा करके लौट रहा था तब वह यहाँ पड़ोस वाले एक गांव में ठहरा। गांव वालों ने उसका तिरस्कार किया। इस पर अकबर ने फीरोजख्वाजा नामी एक हिजड़े को आदेश दिया कि वह इस गांव को नष्ट करके दूसरा गांव बसावे। इस नये गांव का नाम हिजड़े की स्मृति में फीरोजाबाद रक्खा गया। उसका मकबरा आगरे की सड़क के पास है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। एक पक्का ताल और पुरानी चारदीवारी से घिरा हुआ बगीचा है। मरहठों ने अपने शासनकाल में फीरोजाबाद को एक तहसील का केन्द्र स्थान बनाया था। यही व्यवस्था ब्रिटिश राज्य के हो जाने पर भी जारी रही। फीरोजाबाद कस्बा प्रधान सड़क के दोनों ओर बसा है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना सनातन धर्म हाई स्कूल, जुनियर हाई स्कूल और बाजार हैं। यहां कपास ओटने, आटा पीसने और चूड़ियां बनाने के कारखाने हैं। वर्ष भर में यहां कई मेले लगते हैं।

इरादत नगर खारी नदी के दाहिने किनारे पर फतेहाबाद से खैरागढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। जाट और मरहठा शासनकाल में यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था। १८७६ में तहसील तोड़ कर फतेहाबाद और खैरागढ़ में मिला दी गई है। इस समय यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

इतमादपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से १२ मील की दूरी पर फीरोजाबाद और मैनपुरी को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। उत्तर-पूर्व की ओर एक सड़क एटा को गई है। रेलवे स्टेशन कुछ ही दूर है। अकबर के हिजड़े इतमाद खां ने यहां एक मस्जिद और पक्का ताल बनवाया था। उसी की स्मृति में कस्बे का यह नाम पड़ा तो तालाब के किनारे सात आठ सौ फुट लम्बे हैं। तालाब के बीच में एक भवन है जो २१ महराबों पर बना है। इस तालाब को बुढ़िया का तालाब कहते हैं। इसी की तली की कीचड़ में कई बुद्ध कालीन चीजें पाई गई। इसे पहले बोधि-ताल कहते थे। इसी से बिगड़ कर इसका नाम बुढ़िया का तालाब पड़ा। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जुनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। प्रधान बाजार जिले के एक कलक्टर मिस्टर हालैंड की स्मृति में हालनगंज कहलाता है। तहसील एक मोटी और ऊँची दीवार से घिरी हुई है। यहां पहले किला था। किले की खाई सूख गई है।

इतिमादौला यमुना के बायें किनारे पर आगरा शहर का ही अंग है। इसके उत्तरी भाग में जहांगीर के प्रधानमन्त्री और नूरजहां के पिता इतिमादौला का मकबरा है। इसी से इसका यह नाम पड़ा। मकबरे के पास ही इतिमादपुर और अलीगढ़ से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां से आधा मील की दूरी पर रेलवे का पुल है जिसके ऊपर से टूंडल को लाइन जाती है। मकबरे के अतिरिक्त यहां बुलन्द बाग (बुलन्दखां नामी जहांगीर के हिजड़े का बाग), सतकुइयां और बत्तीस खम्भा, राम बाग, जहरा-बाग (जहरा बाबर की लड़की थी) और चीनी का रौजा है। यहीं मोतीबाग, चहारबाग, महताबबाग और अचानक बाग हैं।

जगनेर कस्बा आगरे से ३१ मील की दूरी पर खैरागढ़ तहसील से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह सड़क और कवार नाले के बीच में ग्वाल बाबा पहाड़ी की तलहटी में बसा है। इसके एक भाग में ब्राह्मण और दूसरे भाग में बनिये रहते हैं। बीच में बाजार है। इसके पड़ोस में एक किले के खंडहर हैं। पास ही सूरजमल ने चट्टान को कटवाकर ताल बनवाया था। नगर के पूर्व में ऊँचवा खेरे पर जाट और मरहठा शासन के समय के बने हुए घरों के खंडहर हैं।

जजऊ गांव उतांगन बायें किनारे पर आगरे से धौलपुर को जाने वाली सड़क के पास है। यहां से खैरागढ़ (तहसील) पांच मील पश्चिम की ओर है। जजऊ के पास कई प्राचीन गढ़े हुए पत्थर मिले हैं १७०७ में यहां पर बहादुरशाह और उसके भाई आजमशाह के बीच दिल्ली के सिंहासन के लिए लड़ाई हुई थी। आजमशाह मारा गया। विजय के उपलक्ष में बहादुरशाह ने यहां नदी के पास सड़क के पश्चिम में एक बड़ी सराय बनवाई।

जरसी गांव इतमादपुर की पूर्वी सीमा पर

टूंडला स्टेशन से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां थाना डाकखाना बाजार और प्राइमरी स्कूल है। यहां जूते बहुत बनते हैं और कलकत्ते भेज दिये जाते हैं। यहां से घी भी बाहर भेजा जाता है।

कचौरा गांव यमुना के दाहिने किनारे पर नालों के बीच में बसा है। यह आगरे से ५७ मील दूर है। यहां होकर आगरे से इटावे को सड़क जाती है। यह सड़क यहीं यमुना को पार करती है। इसी से इसे घाट का गांव कहते हैं। यमुना के ऊपर पुराने किले के खंडहर हैं। इसे भदावर के राजाओं ने बनवाया था भादों में महादेवछठ का मेला होता है। कागरोल आगरे से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। उत्तर-पश्चिम की ओर एक सड़क अचनेरा को जाती है। कागरोल बहुत पुराना है। वर्तमान गांव एक पुराने किले के खेड़े पर बसा है। यहां पुराने समय के सिक्के और गढ़े हुये पत्थर मिलते हैं। गांव के उत्तर की ओर बारह खम्भा है। यह शेख अम्बर का लाल पत्थर का गुम्बद वाला मकबरा है जो बाहर खम्भों पर बसा हुआ है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। खेरागढ़ (या खैरागढ़) इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यह उतांगन के बांयें किनारे पर आगरे से १८ मील खेरे पर बसा हुआ है। इसी से इसे खेरागढ़ कहते हैं। इसके पड़ोस में उत्तर की ओर एक पुराना टीला है। पूर्व की ओर टेसू टीला है। कहते हैं कच्चे गढ़ के नीचे और भी अधिक पुराने पक्के किले के खंडहर थे। जाटों और मरहठों के शासन काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। ब्रिटिश शासन के आरम्भ में यहां तहसील न रही। १८४२ में यहां फिर तहसील हो गई। १८६३ में इसका नाम खेरागढ़ से बदल कर सरकारी नाम खैरागढ़ कर दिया गया लेकिन स्थानीय लोग इसे खेरागढ़ ही कहते हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जुनियर हाई स्कूल है।

खण्डौली गांव आगरे से १० मील उत्तर की ओर अलीगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क इतिमादपुर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना, मिशन का अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। बाजार सप्ताह में दोबार लगता है। पड़ोस में मुगल काल के कुछ खंडहर हैं। क्वार के महीने में सैयद गुलाब शाह का मेला लगता है।

किरावली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहीं होकर आगरे से फतेहपुर सीकरी को पक्की सड़क जाती है। यह आगरे से १५ मील दूर है। यहां से अचनेरा और कागरोल को भी सड़कें जाती हैं। पहले फतेहपुर सीकरी तहसील का केन्द्र स्थान था। १८५० में तहसील उठकर यहां आ गई। तहसील पुरानी बारादरी में है जो एक चारदीवारी वाले बाग से घिरी है। इस बाग को बादशाही कहते हैं। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। चैत में कंसलीला और फूल डोल के मेले लगते हैं।

कोटला गांव मैनपुरी की सीमा के पास फीरोजाबाद तहसील के पूर्व में स्थित है। यहां फीरोजाबाद और टूंडला से आनेवाली सड़कें मिलती हैं। एक सड़क उत्तर की ओर अवा को जाती है। यहां डाकखाना और स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। दशहरा, मुहर्रम और फूल डोल के मेले लगते हैं। यह कोटला जागीर का प्रधान नगर है। जागीरदार की गढ़ी ४० फुट ऊची दीवार और चौड़ी खाई से घिरी है। मलपुरा गांव आगरे से ७ मील दक्षिण पश्चिम की ओर आगरे से खीरागढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। इसके पास ही आगरा नहर के राजवाहे हैं। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है बाजार रविवारको लगता है। मरहठों के शासन काल में यहां एक किला था उनके अफसर यहीं रहते थे। यहीं एक हिन्दू छतरी है।

मिढाकुर गांव आगरे से फतेहपुर सीकरी को जाने वाली सड़क पर आगरे से १० मील दूर है। दक्षिण-पश्चिम की ओर एक किले के खंडहर हैं। यहां इस्लामशाह और उसके भाई आदिल खां से लड़ाई हुई थी। दूसरी बार १५५५ में यहां हीमू और इब्राहीमशाह सूरी से लड़ाई हुई थी। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। यहां सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। यहां से मिट्टी के बर्तन बाहर बिकने जाते हैं।

नौगवां भदावर राज्य का केन्द्र स्थान है। यह

यमुना के दाहिने किनारे पर वाह से १८ मील और आगरे से ५३ मील दूर है।

राजा का महल कुछ ऊंचाई पर बना है। यह एक कच्ची दीवार और खाई से घिरा है। यहां डाकखाना और स्कूल है। यमुना को पार करने के लिये राजा की नाव रहती है। नौनी गांव खेरागढ़ से ८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर नीची पहाड़ियों के पूर्व की ओर बसा है।

यहां के लोगों की धारणा है कि जो कोई इन पहाड़ियों के पेड़ों को काटेगा वह एक वर्ष के भीतर मर जायगा। इसी से वे हरे भरे पेड़ों से ढकी है। इसी से गांव के पड़ोस का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम होता है। पहाड़ियों के नीचे बबूलों से ढका हुआ मैदान धौलपुर राज्य तक चला गया है। इसमें खेती नहीं होती है।

परनागांव यमुना के दाहिने किनारे पर वाह से १० मील और आगरे से ५२ मील दूर है। यह सूर के नालों के बीच में बसा है। यह सड़क से कुछ दूर है। लेकिन यमुना को पार करने के लिये घाट है। एक ऊंचे टीले पर कच्ची गढ़ी है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

पिनहाट आगरेसे ३२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कहते हैं कि यह पांडु या पांडव हाट से बिगड़ कर बना है। भदावर के राजा ने चम्बल के नलों के ऊपर यहां एक बड़ा किला बनवाया था। चम्बल नदी यहां से १ मील दक्षिण की ओर बहती है। उसी ने यहां एक बाजार और पक्का ताल बनवाया। नगर के चारो ओर उसने एक चार दीवारी घिरवा दी। जाटों के शासन-काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। यहां थाना, डकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दोबारा बाजार लगता है। यहां चैत में देवी का और भादों कार्तिक क्वार और अगहन में बलदेव का मेला लगता है। यहां तीन मन्दिर हैं। रनकूट आगरे से मथुरा को जाने वाली सड़क पर जी० आई० पी० रेलवे का एक स्टेशन है। उत्तर की ओर यमुना के किनारे स्नान करने के घाट बने हैं। यहां परशुराम का मन्दिर है जहां दशहरे को मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। और बाजार भी लगता है।

सैयद गांव आगरे से धौलपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह आगरे से १७ मील दक्षिण की ओर है। पूर्व की ओर जी० आई० पी० की लाइन समानान्तर चलती है। स्टेशन पास ही है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। शुक्रवार को बाजार लगता है। तांतपुर की खदानों से यहां पत्थर बहुत आता है और रेल द्वारा बाहर भेजा जाता है।

सरेंढी गांव आगरे से २४ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। खैरागढ़ तहसील ७ मील दूर है। मरहठों और जाटों के शासन काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। १८४८ में तहसील यहां से हटकर खेरागढ़ को चली गई। यहीं लार्ड लेक और अम्बा जी राव इंगलियाके बीच में १८०३ में क्षणिक सन्धि हुई थी। यहां प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बाजार लगता है।

शम्साबाद आगरे से १२ मील दक्षिण-पूर्व को ओर है। यहां आगरे से राजाखेड़ा और फतेहाबाद से खेरागढ़ को जाने वाली सड़कें मिलती हैं। शम्सशेरशाह नामी एक फकीर की स्मृति में इसका यह नाम पड़ा। मरहठों और जटों के शासन काल में यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था। इस समय यहां थाना, डाकखाना और बाजार है। चैत में करा लीला और भादों में बल्देव जी मन्दिर के पास जल-यात्रा का मेला लगता है।

सिकन्दरा गांव आगरे से मथुरा को जानेवाली सड़क पर आगरे से ५ मील दूर है। एक पक्की सड़क स्वामी गांव में कैलाशमन्दिर को गई है। स्वामी गांव के घाट में यमुना को पार करके दूसरी ओर मथुरा जिले के महावन को सड़क गई है। दूसरी सड़क आगरा छावनी से आती है। सावन के महीने में छड़ियों का मेला लगता है।

सुल्तान सिकन्दर लोदी की स्मृति में गांव का यह नाम पड़ा। १८३७-३८ में अकाल में चर्च मिशनरी सोसइटी ने यहां एक अनाथालय खोला इससे क्षुधा से पीड़ित और असहाय लोग अधिक संख्या में ईसाई हो गये। गदर में ईसाई बस्ती छिन्न भिन्न हो गई। शान्ति स्थापित होने पर सिकन्दरा में ईसाई बस्ती फिर बसाई गई। इस समय

यहां एक ईसाई अनाथालय, मिडिल स्कूल, थाना और डाकखाना है।

कहते हैं सिकन्दर लोदी के समय का आगरा यहीं था। इसके पड़ोस में अनेक पुराने घरों के खंडहर हैं। सिकन्दरा लोदी के समय की बारादरी अनाथालय के हाते में इस समय भी मौजूद है। यह लाल पत्थर की एक वर्गाकार इमारत है। इसकी लम्बाई १४२ फुट है। यह दो मंजिल है। निचली मन्जिल में ४२ कमरे हैं। प्रत्येक कोने पर सुन्दर अष्टभुज बुर्ज है। बारादरी १४९५ ईस्वी में बनी। इसके बाद यहीं अकबर की रानी, जैपुर के राजा भगवान दास की बहिन मरियम जमना का मकबरा बना। वह २६२२ में मरी। उसके बेटे जहांगीर ने उसका मकबरा बनवाया।

पर सिकन्दरा अकबर के मकबरे के कारण सबसे अधिक प्रसिद्ध है। मकबरे का बगीचा अकबर के जीवन-काल में ही तैयार हो गया था। जहांगीर ने १५ लाख रुपये के खर्च से अपने पिता अकबर का मकबरा बनवाया जो भारतवर्ष की प्रसिद्ध इमारतों में हैं। मकबरे का हाता १५० एकड़ है और एक ऊंची दीवार से घिरा है। कोनों पर अष्टभुज बुर्ज हैं। चार दरवाजे हैं। दक्षिणी दरवाजा सड़क के सामने है और सबसे बड़ा है। यह सत्तर फुट से अधिक ऊंचा है और संगमरमर से सजा है। फाटक के प्रत्येक कोने पर छोटी मीनारें हैं। दरवाजे से मकबरे तक पक्की सड़क जाती है। मकबरा ४०० फुट लम्बे और २००० फुट चौड़े सफेद संगमरमर के चबूतरे पर बना है। यह पंचमन्जिल है। निचली मंजिल ३० फुट ऊंची और ३२० फुट लम्बी-चौड़ी है। २० फुट लम्बी प्रत्येक भुजा के बीच में दरवाजा है दक्षिण की ओर प्रधान दरवाजे से सम्राट अकबर की कब्र तक ढलवां मार्ग है। ३८ फुट वर्ग कमरा गहरे नीले अस्तर और सुनहरी पत्ती से सजा है। कब्र सादी है। पड़ोस के कमरों में अकबर की लड़कियों की कब्रें हैं। यहीं शाह आलम के बेटे की कब्र है। निचली मंजिल के ऊपर की मंजिल कम ऊंची और छोटी है। दूसरी मंजिल १४ फुट ६ इञ्च ऊंची है। इसकी प्रत्येक भुजा १८२ फुट लम्बी है। तीसरी मंजिल १५ फुट २ इंच और चौथी मंजिल १४ फुट ६ इंच ऊँची है। चोटी वाली मंजिल का संगमरमर का घेरा १५७ फुट है। फर्श से चोटी की ऊंचाई लगभग १०० फुट है। बाहरी दीवार पर संगमरमर का काम है। कब्र के पत्थर पर अल्लाह अकबर बड़े अक्षरों में खुदा है। नीचे जल्ल जलालहू खुदा है। दीवारों पर अरबी में ईश्वर के ९ नाम हैं। कुछ ही दूर पर एक कामदार चौकी है कहते हैं इस पर प्रसिद्ध कोहनूर हीरा रक्खा रहता था और ऊपरी मंजिल पर सोने और चांदी का छत्र था। मकबरे के पास है चारदीवारी से घिरे हुये बगीचे में कांचमहल है। इसे जोधबाई महल भी कहते हैं। जहांगीर ने इसे जोधबाई के रहने के लिये बनवाया था। चर्च मिशनरी सोसाइटी को दे दिया गया।

बाईं ओर सूरजभान का बाग है इसमें बड़ी बारीक कारीगरी है। कुछ आगे पूर्व की ओर ठोस लाल पत्थर का बना हुआ पूरा घोड़ा है। इसके सामने जहांगीर के हिजड़े की सराय है। सराय के पीछे पक्का ताल है। यह १८० गज लम्बा और इतना ही चौड़ा है। इसके पास ही सिकन्दर लोदी का मकबरा है इसके आगे दूसरे पक्के ताल के पास अकबर के एक पीर और एक मन्सबदार का मकबरा है। यह लाल पत्थर का बना है और खम्भों की छः पंक्तियों पर सधा है।

टूंडला कलकत्ते से दिल्ली को जाने वाली ईस्ट-इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन का एक बड़ा स्टेशन है। यह आगरे से १२ मील पूर्व में और इतिमादपुर से ३ मील दक्षिण-पश्चिम में है। यहां से एक पक्की सड़क आगरे से मैनपुरी को जाने वाली सड़क से मिल जाती है। आगे चलकर यह एटा को चली गई है। रेल निकलने के पहले टूंडला और पासवाले टूंडली गांव को बहुत कम लोग जानते थे। रेल खुल जाने पर यह एक बड़ा जंकशन बन गया। यहां से शाखा लाइन आगरे को जाती है। स्टेशन के पड़ोस में रेलवे-कर्मचारियों की एक बड़ी बस्ती बस गई। यहां थाना, डाकखाना, सराय, बाजार और हाई स्कूल है।

इटावा

इटावा जिला उत्तर प्रदेश के दक्षिणी पश्चिमी भाग में स्थित है। इसकी लम्बाई ६० मील और चौड़ाई ३५ मील है। इटावा शहर के पड़ोस में पश्चिम की ओर जिले की चौड़ाई केवल १२ मील रह गई है। इटावा जिले के उत्तर में फर्रुखाबाद और मैनपुरी, पश्चिम की ओर आगरा इसके पूर्व में कानपुर का जिला है। इटावा के दक्षिण में यमुना और चम्बल नदियाँ इसे जालौन जिले और ग्वालियर राज्य से अलग करती हैं। इटावा जिले का आकार एक विषम चतुर्भुज के समान है इसका क्षेत्रफल १६६१ वर्ग मील है।

इटावा जिला द्वाबा का अंग है। फिर भी यहाँ बहने वाली नदियों ने इसे ४ प्राकृतिक भागों में बाँट दिया है।

१ सेंगर के उत्तर पूर्व का प्रदेश—यहाँ सेंगर नदी पश्चिम से पूर्व की ओर यमुना की प्रायः समानान्तर बहती है। इसमें समू, बिधना और इटावा, भरथना औरैया तहसील के उत्तरी भाग शामिल हैं।

२ सेंगर के दक्षिण का प्रदेश—जो सेंगर से लेकर यमुना के ऊँचे किनारों तक फैला हुआ है। यह लहरदार कुछ ऊँचा नीचा प्रदेश है। इसमें इटावा भरथना और औरैया तहसील का अधिकतर भाग शामिल है।

३ इन तहसीलों का यमुना के समीप वाला भाग एक अलग प्रदेश है।

४ यमुना के आगे सिन्ध, कुवारी, चम्बल और यमुना के संगम तक जानिबरास्त प्रदेश है।

(१) सेंगर नदी के उत्तरवाला प्रदेश पचार कहलाता है। इसका क्षेत्रफल ८८४ वर्ग मील है। इसमें जिले की आधे से अधिक (५२ फीसदी) जमीन शामिल है। यह एक समतल प्रदेश है। केवल कहीं कहीं इसमें रेतीले टील हैं। कुछ स्थानों पर परिन्द आदि छोटी नदियाँ या नालों ने इसे काट दिया है। इसमें उपजाऊ मिट्टी है। अधिकतर मटियार है। कहीं झीलें हैं और चिकनी मिट्टी है। कुछ भागों में ऊसर है। उपजाऊ होने के कारण यह भाग अधिक घना बसा है।

(२) सेंगर और यमुना के बीच वाला भाग धार कहलाता है। इसकी जमीन कुछ लाल, हलकी, बलुई और उपजाऊ है। इसकी जमीन एकदम समधार नहीं है। इसके बीच वाला भाग सबसे नीचा है। इस भाग में सबसे अधिक खेती होती है। कहीं कहीं इसमें बालू और भूड़ के टीले हैं। सिंचाई की नहरों ने इसका रूप बदल दिया है। फिर भी इस भाग की जनसंख्या कम है।

(३) यमुना के किनारे ऊँचे टीले और गहरे खड्ड हैं। इसे कुरका कहते हैं। इस ओर जनसंख्या कम है। गाँव दूर दूर खड्डों में बसे हैं। इस प्रदेश के कुछ भाग में धार के समान ही खेती है। बड़े भाग में गहरे और जंगली खड्ड या नाले हैं। यह कहीं नग्न हैं कहीं घास और कटीली झाड़ियों से घिरे हैं। यमुना के किनारे वाली नीची भूमि में बाढ़ के समय अच्छी मिट्टी की तह बिछ जाती है। इस उपजाऊ भूमि में खेती होती है। इससे भी अधिक उपजाऊ एकदम यमुना के पास वाली घोटी है।

(४) यमुना पार वाला प्रदेश यमुना और चम्बल के बीच में स्थित है। इसे पार कहते हैं। इसी में चम्बल के दाहिने किनारे वाला और चम्बल और कुवारी के बीच का प्रदेश शामिल है। इसमें औरैया भरथना और इटावा तहसीलों के कुछ भाग शामिल हैं। यह आगरा की सीमा के पास तहसील से यमुना चम्बल सिन्ध और कुवारी के संगम तक फैला हुआ है। पूर्व की ओर दो नदियों के बीच में संकरी भूमि है। यहाँ नाले भी हैं इससे समतल भूमि का अभाव है। पश्चिम की ओर अधिक चौड़ी पेटी है। बीच में कुछ ऊंचा पठार है।

यह पठार चार-पाँच मील चौड़ा है। इसमें रेतीले टीले कम हैं लेकिन टूटने वाली चिकनी मिट्टी के टीले अधिक हैं। इनमें छेद और दरारें हैं। इसके दोनों ओर नालों का जाल सा फैला हुआ है। इस प्रदेश में पेड़ों का अभाव है। यहाँ राजपूत किसान बसे हैं। कुवारी के दक्षिण में परिहार राजपूतों की अधिकता होने से यह प्रदेश परिहार कहलाता है।

मैनपुरी की सीमा के पास इटावा जिले की भूमि समुद्र-तल से ४६९ फुट ऊँची है। सेंगरी नदी की तली इस से २० फुट नीची है। १० मील पूर्व की ओर भूमि की ऊँचाई ४८१ फुट रह जाती है। फफूंद के आगे दूसरे सिरे पर भूमि केवल ४५६ फुट ऊँची है।

पचार और घार (जार) प्रदेशों में दुमट, मटियार और भड़ मिट्टी मिलती है। दुमट बहुत बड़े भाग में मिलती है। निचले भागों में चिकनी मिट्टी है। वर्षा ऋतु में इनमें पानी इकट्ठा हो जाता है। यहां चावल उगाया जाता है। इन्हें भावर कहते हैं। नालों के पड़ोस में कंकड़ बहुत हैं। इस ककरीली भूमि को एकार कहते हैं। घाटी में बाढ़ से डूब जाने वाली भूमि कछार कहलाती है। गांव के पड़ोस वाली भूमि जिसमें नियमित रूप से खाद डाली जाती है गौहान कहलाती है। इसके आगे मंझा है जहां स्वाभाविक रूप से अच्छी मिट्टी पाई जाती है। अधिक आगे बाहर वाले भाग हार कहलाते हैं। इनमें कभी कभी खेती होती है। गङ्गा और यमुना का जल विभाजक इटावा जिले के उत्तरी सिरे पर है। इसलिये बहुत थोड़े भाग का पानी पंडु नदी के द्वारा गङ्गा में पहुँचता है। यह छोटी विधूना उत्तरी पूर्वी कोने के पास निचली भीलों से निकलती है।

सेंगर नदी इटावा तहसील के उत्तरी भाग में धनुहा गांव के पास इटावा जिले में प्रवेश करती है। दक्षिण-पूर्व की ओर यमुना के समानान्तर बहती हुई चिचौली गांव के पास यह इटावा जिले को छोड़कर कानपुर में पहुँचती है। ऊपरी भाग में इसके किनारे नीचे हैं। उनमें खेती होती है। इटावा शहर से ४ मील उत्तर की ओर अमृतपुर गांव के पास इसमें सरसा नदी मिलती है। इस संगम के आगे सेंगर की तली गहरी हो जाती है। पड़ोस का पानी इसमें बह आने से इसके किनारे नालों ने काट दिये हैं। पूर्व की ओर इन नालों की संख्या और गहराई अधिक बढ़ जाती है। इनमें खेती नहीं हो सकती है। इनमें कुछ घास होती है जहां जानवर चरते हैं। बबूल के पेड़ भी बहुत हैं।

यमुना नदी उत्तर-पश्चिम में बाबटगांव के पास इटावा जिले को छूती है और १५ मील तक इटावा और आगरा जिलों के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। हरौली गांव के पास यह विचित्र मोड़ बनाती है। भरेह गांव के पास चम्बल नदी यमुना में मिलती है। संगम के आगे यमुना कुछ दूर तक दक्षिण की ओर बहती है। फिर पूर्व की ओर मुड़ती है। इधर यह इटावा और जालौन जिलों के बीच में सीमा बनाती है। इटावा जिले में सीधी रेखा में यमुना की लम्बाई ७० मील से अधिक न होनी चाहिये लेकिन मोड़दार मार्ग होने के कारण इस जिले में यमुना की लम्बाई १२० मील है। यमुना का एक किनारा ऊंचा और सपाट है। दूसरा किनारा नीचा रहता है। शीतकाल में यमुना की चौड़ाई १००गज और वर्षा काल में ६०० गज हो जाती है। इसकी बाढ़ २१ फुट होती है।

चम्बल नदी यमुना के दक्षिण में बहती है। यह मालवा में म्हो के पास विन्ध्याचल के उत्तरी ढाल से निकलती है। मुरौंग गांवके पास यह इटावा जिले को छूती है और २५ मील तक ग्वालियर राज्य और इटावा जिले के बीच में सीमा बनाती है। बरेछा गांव के पास यह इटावा जिले की नदी हो जाती है और २२ मील तक जिले के भीतर बहती है। भारेह के पास यह मोड़ बनाकर यमुना में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में चम्बल में भयानक बाढ़ आती है और ऋतुओं में इसका पानी स्वच्छ रहता है। बड़ी बाढ़ में दोनों किनारों के बीच में आना जाना बन्द हो जाता है। चम्बल के भँवरदार तेज पानी में इन दिनों कोई नाव नहीं चल सकती। कुवारी नदी १० मील तक ग्वालियर राज्य और इटावा जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे १० मील तक यह इटावा जिले में बहती है चम्बल यमुना संगम से ५ मील नीचे यह यमुना में मिल जाती है। कुवारी नदी ग्वालियर राज्य के मोरार नगर के पास से निकलती है। उत्तर की ओर चक्करदार मार्ग बनाती हुई बहती है। औरैया के पास इसमें सिन्ध नदी मिलती है। कुवरी १८५ मील लम्बी है। चम्बल की तरह इसमें भी वर्षा ऋतु में भयानक बाढ़ आती है।

इटावा जिले का वर्षा जल तेजी से नदियां बहा ले जाती हैं। इसी से यहां भीलें अधिक नहीं हैं।

केवल उत्तरी भाग में चिकनी मिट्टी और कुछ नीची भूमि होने से रहन, महौरा, हरदोई, सोंधना आदि स्थानों में झील बन गई हैं।

इटावा जिले में २२ फीसदी जमीन वीरान है। इसमें ऊसर या रेह है या नाले हैं। कुछ भाग में ढाक और बबूल के जंगल और चरागाह हैं। पहले यह जंगल और भी अधिक था। ढाक का जंगल चैत महीने में फूलता है। तभी टेसू के फूल इकट्ठे किये जाते हैं। कुछ लोग इसका गोंद इकट्ठा करते हैं। कुछ दोना बनाने के लिये पत्तियां तोड़ते हैं। चम्बल के जंगली भागों में तेंदुआ पाया जाता है। कभी कभी चीता भी मिलता है। भेड़िया सभी भागों में मिलता है। चिंकारा और दूसरे हिरण भी बहुत हैं। सेगर और यमुना के बीच में नील गाय पाई जाती है। गीदड़, लोमड़ी, सेही, बन्दर सब कहीं पाये जाते हैं।

इटावा जिले की जलवायु दूसरे जिलों की तरह गरम और खुश्क है। जून मास का तापक्रम ९६ अंश और जुलाई का ६५ अंश रहता है। वर्षा २१ इञ्च होती है। ज्वार बाजरा अरहर खरीफ की फसलें हैं। लगभग २० फीसदी जमीन खरीफ की फसल उगाने के काम आती है। कपास इस जिले की बड़ी मूल्यवान फसल होती है। गेहूँ, जौ, गोचनी (गेहूँ और चना) गुजई (गेहूँ और जौ) रबी की फसल हैं। रबी की फसल सींचने की आवश्यकता पड़ती है। सिचाई का अच्छा प्रबन्ध है। अधिकतर सिचाई नहरों से होती है। यहां होकर गंगा-नहर की शाखायें जाती हैं। कुछ भूमि कुओं से सींची जाती है। कुओं में पचार प्रदेश में अठारह-बीस फुट की गहराई पर पानी मिलता है। घार (गार) प्रदेश में ६० से ८० फुट की गहराई पर पानी निकलता है। कुछ कुएं पक्के और कुछ कच्चे होते हैं।

कपास, घी, तिलहन यहां के प्रधान निर्यात हैं। कपड़ा, धातु चावल, नमक और शक्कर यहां की आयात हैं। गाढ़ा, दरी, कांच और पीतल के बरतन बनाने का काम होता है।

अचल्दा ईस्ट इण्डियन रेलवे का एक स्टेशन है। यह इटावा से २५ मील दूर है। यहां से बिधना को पक्की सड़क जाती है जो १ मील लम्बी है। यहां डाक घर और स्कूल है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। अहेरीपुर कल्पी से इटावा को जाने वाली पक्की सड़क से २ मील उत्तर की ओर है। यह इटावा से ३० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। आध मील पश्चिम को ओर पुराना खेड़ा है। सेगर नदी ढाई मील उत्तर पूर्व की ओर बहती है। महेसरी लोग प्रायः घी, कपास और अन्न का व्यापार करते हैं। खटिक लोग गाड़ी बनाते हैं। मङ्गलवार और शनिवार को बाजार लगता है जिसमें चमार लोग गाय बैल बिकवाते हैं और दलाली लेते हैं। उत्तर की ओर एक पक्का ताल है। अहीरों की अधिकता होने से इसका नाम अहिरपुर या अहेरीपुर पड़ गया। यहां डाकघर और स्कूल है।

एरवा (खास) एक पुराने ऊंचे खेरे के चारों ओर बसा है। बिधूनाको जाने वाली सड़क के पड़ोस में एक प्राचीन बौद्ध मन्दिर के भग्नावशेष हैं। पहले यह फरुखाबाद जिले में शामिल था। और यहां तहसील थी। १८५७ ई० में तहसील तोड़ दी गई और यह इटावा जिले में मिला दिया। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। दो मील पश्चिम की ओर दोवा में अगहन सुदी पंचमी को दुर्वासा ऋषि का मेला लगता है और १५ दिन तक रहता।

औरैया इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान इटावा से ४१ मील दूर है। यह आगरा से इलाहाबाद को जाने वाली पक्की सड़क पर पड़ता है। है। औरैया के पास ही जालौन से दिबियापुर को जाने वाली पक्की सड़क इसे पार करती है।

तहसील जालौन सड़क पर बनी है। प्रधान बाजार जिले के एक कलक्टर की स्मृति में ह्यूमगंज कहलाता है। उत्तर की ओर एक बड़ी झील है। यहां तहसील, थाना, अस्पताल और वर्नाक्यूलर जूनियर हाई स्कूल है। औरैया घी के व्यापार की एक बड़ी मंडी है। इसी से ईस्ट इण्डियन और जी० आई० पी० रेलवे कम्पिनियों की यहां एजेंसियां हैं। कहते हैं १५-२१ ई० में नारायनपुर गांव बसाया। इसे सफलता न मिली। एक फकीर ने अवर या और नाम रखने की

सम्मति दी। इसी से इसका नाम औरैया पड़ गया। यहां पर मरहठों की बनवाई हुई दो पक्की सराय हैं। दो पक्के ताल और कुएँ हैं। दो सौ वर्ष की पुरानी दो मस्जिदें और ढाई-तीन सौ वर्ष के पुराने मन्दिर हैं।

वेला विधूना तहसील के उत्तरी पूर्वी सिरे पर पांडु नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। यह इटावा से ४७ मील दूर है। यहां होकर औरैया और इटावा से कन्नौज की सड़कें गई हैं। पहले यहां तहसील थी। गदर के बाद तहसील तोड़ दी गई। यह एक ऊँचे खेरे पर बसा है। चारदीवार के चिन्ह इस समय भी मिलते हैं। पुराने किले पर कछवाहे रहते हैं। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है।

भारेह गाँव यमुना और चम्बल के संगम पर बसा है। यह इटावा से २१ मील और औरैया से १६ मील दूर है। भरथना इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह इटावा से १२ मील दूर है। गांव रेलवे से उत्तर की ओर है। कहते हैं इसे भरतसिंह नामी एक राजपूत ने बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। कभी कभी इसे भरथना बीबीपुर भी कहते हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, रेलवे स्टेशन (ई० आई० आर०) और जूनियर हाई स्कूल है। बुध, शुक्रवार और रविवार को गंज में बाजार लगता है। विधूना इसी नाम की तससील का केन्द्र स्थान है। यह इटावा से ३२ मील दूर है। यहां से अचलदा रेलवे स्टेशन की पक्की सड़क जाती है। पूर्व की ओर रिन्द नदी बहती है। यहां से कन्नौज को जाने वाली सड़क इसे एक पुल के ऊपर से पार करती है। उत्तर की ओर एक पुराने किले के खंडहर हैं। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

चक्रनगर इटावा से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर यमुना और चम्बल के बीच में स्थित है। गदर के दिनों में यहां के राजा ने विद्रोहियों का साथ दिया था। इसलिये उसकी जागीर छीन ली गई थी। दो मील पश्चिम की ओर प्राचीन नगर था। वहां का बड़ा खेड़ा झाड़ियों से ढका होने पर भी दूर से दिखाई देता है। इसके पास ही एक पुराना कुआं है। कहते हैं पांडवों के समय में यह नगर इतना बड़ा था कि इसका एक द्वार सर ताल और दूसरा द्वार ३० मील की दूरी पर भारेह के पास था जहां यमुना और चम्बल का संगम है। महाभारत के समय यह एक चक्र कहलाता था। कहते हैं यहीं भीमसेन ने बकासुर (राजा) का संहार किया था। यहां डाकखाना और स्कूल है।

दिबिया पुर गार के स्टेशन को फफूंद नाम से पुकारते हैं। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। दिबियापुर इटावा से ३५ मील और औरैया से १२ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

इटावा शहर जिले का प्रधान शहर है। यह ईस्ट इण्डियन रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहीं आगरा से इलाहाबाद को और फर्रुखाबाद से ग्वालियर को जाने वाली सड़के मिलती हैं। यह आगरे से ७० मील दूर है। शहर से कुछ ही दूरी पर यमुना नदी उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। इटावा शहर इसी मोड़ और रेलवे के बीच में ऊंचे स्थान पर बसा है। कुछ मुहल्ले नदी के पास हैं। लेकिन प्रधान शहर को आधमील लम्बे एक सूखे नाले ने नदी से अलग कर दिया है। उतर की ओर इटावा शहर रेलवे लाइन से ४०० गज की दूरी तक फैल गया है। पुराना इटावा सूखे नालों के सिरों पर बसा है। नया शहर उत्तर की ओर बढ़ रहा है। चौड़े नालों के बीच बीच में पेड़ हैं। ऊंचा नीचा बसा होने से शहर बड़ा सुहावना मालूम होता है। नालों के ऊपर पुल बन से आने जाने में सुविधा हो गई है। शहर से बाहर उत्तर पश्चिम की ओर आगरा और मैनपुरी से आने वाली सड़के मिलती है। ग्वालियर से फर्रुखाबाद को जानेवाली सड़क बाजार में आगरे को जाने वाली सड़क को पार करती है।

बाजार में कपड़ा, पीतल के वर्तन और अनाज और घी की बहुत बिक्री होती है। इटावा में ७७ मुहल्ले हैं। २६ मुहल्ले नये शहर में और ५१ मुहल्ले पुराने इटावा में हैं। शहर में सनातनधर्म इण्टर कालेज और इस्लामिया हाई स्कूल है। उत्तर की ओर स्टेशन के पास गवर्नमेण्ट इण्टर कालेज है। शहर में अस्पताल, कोतवाली और जामा मस्जिद हैं। यह पुराने

हिन्दू मन्दिर के सामान से बनी हुई मालूम होती है। यमुना के पड़ोस में पुराना किला और टिकसी महादेव का मन्दिर बहुत ऊंचे भाग पर बना है। इसकी फर्श से सारे शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। कर्ण पूरा मुहल्ले में जैन मन्दिर है।

इटावा की सिविल लाइन उत्तर-पश्चिम की ओर है। रेलवे बंगलों के पड़ोस में ही जेल है। कहते हैं चौहान सरदार सुमेर सिंह ने यमुना के किनारे भेड़िया और बकरी को एक साथ पानी पीते देखा इससे उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने यहां किला बनवाने का निश्चय किया। खेरे में खोदते समय काम करने वालों को यहां ईंटें बहुत मिलीं। इसीसे इसका नाम ईंटा आया या इटावा पड़ गया। कहते हैं महमूद
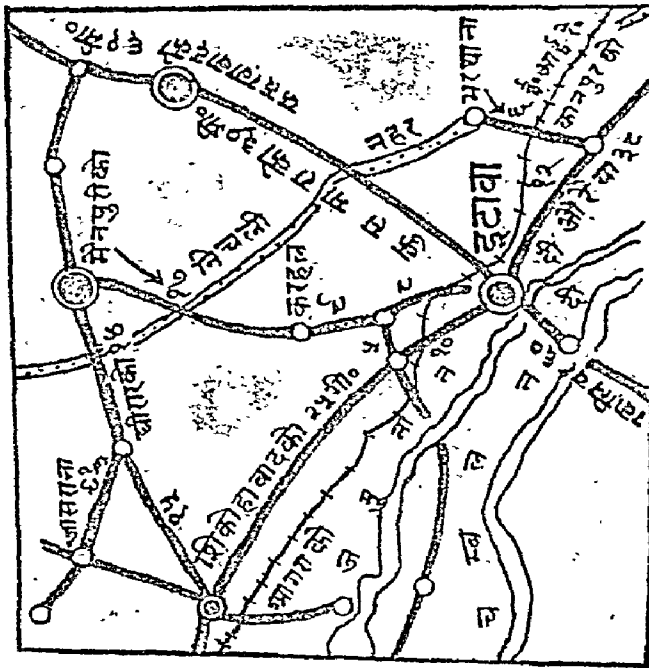
गजनी और गोरी दोनों ही ने इसे लूटा। आगे चलकर यहाँ रुहेलों के हमले हुये। १७५० ई० में मल्हारराव की सेना यहां आई और इसका प्रबन्ध जालौन के के मरठा गवर्नर के हाथ में चला गया। इसके बाद कुछ समय तक यहां अवध के नवाब का राज्य रहा। १८०१ ईस्वी में यहां ब्रिटिश अधिकार होगया।

जसवन्तनगर इटावा से १० मील उत्तर-पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन है। इसे जस्वन्त राय नामी मैनपुरी के एक कायस्थ ने बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। आगरे से इटावा को जानेवाली सड़क कस्बे के बीच में होकर जाती है। दक्षिणी पूर्वी कोने की ओर सरसा नदी के किनारे एक पक्का ताल है। यहीं मन्दिर, छतरी और पक्के घाट बने हैं। १८५७ ईस्वी में कुछ समय के लिये यहां विद्रोहियों का अधिकार हो गया था। यहां भादों में जलविहार में और क्वांर में दसहरा का मेला लगता है। यहां से बहुत सा घी रेल द्वारा बाहर भेजा जाता है। यहां थाना, डाकखाना और जू० हाई स्कूल है।

कुदर कोट गांव इटावा से कन्नौज को जाने वाली सड़क पर पड़ता है। यहां थाना और स्कूल है। इसके पड़ोस एक खेड़ा है जहां एक पुराने किले के खंडहर हैं। कहते हैं पुराने समय में एक राजा अपनी रानी के साथ इस ओर के जंगल में होकर जा रहा था। यहीं उसकी रानी का कुन्दल खो गया। ढूंढ़ने पर वह मिल गया। इससे प्रसन्न होकर राजा ने एक कोट (किला) बनवाया और उसका नाम कुन्दल कोट रक्खा इसी से बिगड़ कर कुन्दरकोट नाम पड़ गया। यहां दसवीं सदी का एक शिला लेख मिला। इस समय यहां जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। पान भी उगाया जाता है। यहां के बेर बड़े बड़े और मीठे होते हैं।

लखन कस्बा इटावा से १६ मील की दूरी पर गङ्गा नहर की भोगिनीपुर शाखा के किनारे स्थित है। पहले यहां तहसील थी, वहां अब स्कूल है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है। चैत के महीने में मेला लगता है।

मुंज गांव इटावा से १४ मील की दूरी पर इटावा फर्रुखाबाद सड़क के पास बसा है। कहते हैं यहां के मोरध्वज ने महाभारत के युद्ध में भाग लिया था। इसके पास एक पुराना खेड़ा है।

फफूंद कस्बा इटावा से ३६ मील और औरैया से १० मील दूर है। फफूंद रेलवे स्टेशन कस्बे से ६ मील दूर है। कहते हैं फफूंद देव नामी एक राजपूत ने इसे बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। यहां एक फकीर का मकबरा है। पहले यहांबहुत बढ़िया धोतियां बनती थीं।

कानपुर

कानपुर जिला इलाहाबाद कमिश्नरी के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह गङ्गा-यमुना-द्वाबा का अंग है। इसका आकार एक विषम चतुर्भुज के सामान है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ७० मील और पूर्व से पश्चिम की इसकी चौड़ाई ६४ मील है। यह २५-२६ और २६-५८ उत्तरी अक्षांशों और ७९३१ और ८०-३४ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है इसके उत्तर-पूर्व में गंगा नदी बहती है और इसे अवध के हरदोई और उन्नाव जिलों से अलग करती है दक्षिण की ओर यमुना के पार हमीरपुर और जालौन के जिले हैं। दक्षिण-पूर्व की ओर फतेहपुर जिला और पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर इटावा और फरुखाबाद का जिला है। कानपुर जिले का औसत क्षेत्रफल २३६१ वर्ग मील है। लेकिन गंगा और यमुना की गहरी धाराओं के इधर उधर हो जाने से कानपुर जिले का क्षेत्रफल भी कुछ घटता बढ़ता रहता है।

कानपुर जिला द्वाबा का प्रायः समतल कांप का मैदान है। नदियों के पड़ोस में इसका क्रमशः ढाल उत्तर पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। भीतर की ओर कई छोटी छोटी नदियों ने इसे लहरदार और कुछ विषम बना दिया है। गंगा की तली के ऊपर ऊँचे किनारे प्रायः सपाट हैं। इनमें ऊंचे किनारों से मध्य भाग की ओर ढाल क्रमशः है। इस मध्यवर्ती भाग के आगे यमुना के ऊँचे किनारों की ओर भूमि फिर धीरे धीरे ऊंची हो गई है। धुर उत्तरी सिरे पर कानपुर जिले की ऊंचाई ४५.१ फुट और फतेहपुर जिले की सीमा के पास ३९५ फुट है। गङ्गा का किनारा मध्यवर्ती भाग से अधिक ऊंचा है। यमुना का ऊंचा किनारा भी मध्यवर्ती भाग से ऊँचा है। लेकिन गंगा का किनारा यमुना के किनारे से अधिक ऊंचा है। गंगा की तली मध्यवर्ती मैदान से ५० फुट नीची है। लेकिन यमुना की तली ९० फुट नीची है। इस प्रकार जिले का सबसे नीचा भाग यमुना की तली के पास और सबसे ऊँचा भाग गंगा के ऊँचे किनारे के पास मिलता है।

गंगा नदी कानपुर जिले के समूचे भाग में उत्तरी पूर्वी और पूर्वी सीमा बनाती हुई बहती है। गंगा का पेटा (तला) चौड़ा और रेतीला है गंगा नदी इस चौड़े पेटे में कभी इस ओर कभी उस ओर बहती है। वर्षा ऋतु में गंगा की चौड़ाई अधिक हो जाती है। शीत काल में यह बहुत कम रह जाती है। इससे बड़ी नावों के चलने में बाधा पड़ती है। छोटी नावें सदा चलती रहती हैं। किनारों के पास कहीं कहीं नई उपजाऊ कछारी मिट्टी है। पेटे के अधिकतर भाग में एक दम बालू है। कानपुर से बिठुर तक गंगा के किनारे वाला कछार नया है। लेकिन यह इतना ऊंचा उठ गया है कि यहां साधारण बाढ़ का पानी नहीं पहुँचने पाता है। यह कछार बड़ा उपजाऊ है। इसमें बिना सिंचाई के अच्छी फसलें होती हैं। रेतीली तली के ऊपर गंगा के ऊंचे किनारे उठे हुये हैं। गंगा में पानी गिराने वाले नालों ने इन किनारों को स्थान स्थान पर काट दिया है। दुर्गापुर (शिवराजपुर के परगने में) और जाजमऊ के पास किनारे बहुत ऊँचे हैं। और भागों में इनकी ऊँचाई कुछ कम है। इन किनारों की भूमि खेती के योग्य नहीं है।

ईसन नदी अलीगढ़ जिले से निकल कर एटा, मैनपुरी, फरुखाबाद होती हुई मकनपुर के पास कानपुर में प्रवेश करती है। १३ मील चक्करदार मार्ग से बहने के बाद महगवां के पास गंगा में मिल जाती है। ईसन की घाटी चौड़ी और रेतीली है। इसमें हर साल बाढ़ आती है। इसके किनारे पर रेतीले टीले हैं जो दक्षिण की ओर अधिक सपाट है। किनारों को नालों ने काट दिया है। यह नाले कुछ दूर भीतर की ओर चले गये हैं।

नोन नदी बिल्हौर तहसील की उत्तरी सीमा के कबर गांव के पास दलदलों से निकलती है। निचली भूमि में रेह की अधिकता होने से इसका पानी खारा होगया है जैसे इसके नाम से ही स्पष्ट है। इसकी घाटी गहरी नहीं है। बिठुर के पास गंगा में मिल जाती है।

पांडु नदी फर्रुखाबाद जिले में निकलती है। गंगा की प्रायः समानान्तर बहती हुई यह कानपुर की सीमा के बाहर फतेहपुर जिले में गंगा से मिलती है। पांडु नदी के आगे इस जिले के मध्यवर्ती भाग में गंगा का जल विभाजक है। अधिक आगे दक्षिण ओर का जल यमुना में पहुँचता है।

रिन्द या अरिन्द नदी अलीगढ़ जिले से निकलती है। एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद और इटावा जिलों को पार करती हुई अरिन्द नदी नारगांव के पास कानपुर में पहुँचती है। इस जिले में १०५ मील लम्बा मोड़दार मार्ग पूरा करके अरिन्द नदी फतेहपुर जिले में यमुना से मिल जाती है। अरिन्द या रिन्द की घाटी गहरी है। इसके किनारों को नालों ने काट दिया है। दोनों ओर ढाक का जङ्गल है। इसमें कई छोटे छोटे नाले मिलते हैं। अरिन्द के किनारे पर बहुत से पुराने मन्दिर हैं सेंगर नदी भी अलीगढ़ जिले में निकलती है। डेरापुर के पास यह कानपुर जिले में घुसती है पचोटरा के पास यमुना में मिल जाती है।

कहीं कहीं नदी के किनारे पर उपजाऊ तराई है। यमुना सङ्गम के पास सेंगर का पानी रुक जाता है। इसके पड़ोस की भूमि वीरान है। इसमें कई छोटे नाले मिलते हैं।

नोन नदी (द्वितीय) कानपुर जिले के मध्यवर्ती निचले दलदलों से निकलने वाले कई नालों के मिलने से बनती है। दक्षिण की ओर बह कर एक स्थान पर यह यमुना से केवल तीन मील दूर रह जाती है। यहां पर यह अचानक दक्षिण पूर्व की ओर मुड़ती है और फतेहपुर जिले में पहुँचकर यमुना से मिलती है। प्रारम्भ में नोन की तली उथली है। आगे चलकर यह गहरी होजाती है। सेनाओ धारा इतनी चौड़ी है कि इसे प्रायः झील कहते हैं। भोगिनीपुर तहसील में यह यमुना से दो-तीन मील की दूरी पर बहती है। ऐसा जान पड़ता है कि यही यमुना का पुराना मार्ग था। खरतला के पास यह यमुना में मिल जाती है। इसके ऊपरी भाग में अच्छी खेती होती है।

यमुना नदी भोगनीपुर के पश्चिम में कानपुर जिले को छूती है। कुछ दूर तक यमुना नदी एक ओर कानपुर और दूसरी ओर बुन्देलखंड के हमीरपुर और जालौन जिलों के बीच में सीमा बनाती है। इसके मोड़ों के बीच में बाउनी का छोटा राज्य स्थित है। यहां यमुना के किनारे ऊंचे हैं। जिनके पास वाले निचले भागों की भूमि बाढ़ में डूब जाती है उन्हें तीर कहते हैं। इनके आगे उपजाऊ कछार है। इनके आगे यमुना के किनारे तली ऊपर कछार है। इनके आगे यमुना के किनारे तली के ऊपर साठ-सत्तर फुट ऊंचे उठे हुये हैं। इन किनारों की रेतीली और कंकरीली भूमि एक दम उजाड़ है। यहां जंगली जानवर रहते हैं। पहले यहां डाकुओं के अड्डे थे।
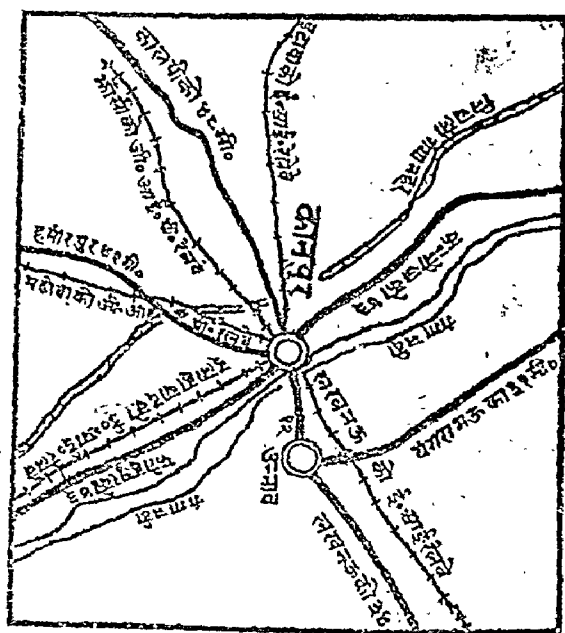
नदियों ने कानपुर जिले को कई द्वावों में बांट दिया है। उत्तर की ओर गंगा और ईसन का द्वावा है। यहां की भूमि हलकी दुमट है। यह प्रायः समतल और उपजाऊ है। यहां अधिकतर परिश्रमी कुरमी खेती करते हैं। इसलिये इस भाग को अक्कर कुर्मियत कहते हैं। पांडु और ईसन तथा गंगा के बीच का द्वावा लम्बा और तङ्ग है। यह समूचे जिले में फैला हुआ है। इसके उत्तर में कुछ अच्छी मिट्टी है। दक्षिण की ओर बलुई मिट्टी है। कहीं कहीं ऊसर है। नोन के पास दलदल हैं।

पांडु और अरिन्द का द्वाब चौड़ा है। इसमें बड़े बड़े ऊसर हैं। बीच बीच में खेत हैं। कहीं कहीं उथली झीलें हैं। अरिन्द की घाटी में कुछ लाल मिट्टी है।

अरिन्द—सेंगर द्वाब अधिक उपजाऊ है। इसमें ऊसर कम है। कहीं कहीं ढाक का जङ्गल है।

सेंगर—यमुना द्वाब ऊंचा और प्रायः समतल प्रदेश है। यहां मटियार है। कहीं कहीं ऊसर है। इसके उत्तरी भाग की मिट्टी अधिक अच्छी है। यमुना के पड़ोस की मिट्टी अच्छी है। इस ओर सिंचाई की कमी है। पानी अधिक गहराई पर मिलता है।

नदियों की पेटियां कानपुर जिले का बीस फीसदी भाग घेरे हुये हैं। नालों के ऊंचे किनारों और यमुना के पड़ोस में कंकड़ मिली हुई राकड़ मिट्टी मिलती है। इसके बीच बीच में भूड़ है। समतल भागों की काली कावर मिट्टी है। नालों के ऊपर कुछ लाल रङ्ग की पड़वा मिट्टी है जो बहुत जल्द टूटती है। घाटमपुर के पास कुछ खेतों के काली मार मिट्टी है जहां कपास अच्छी होती है। पर जिले के अधिकतर भाग में द्वाब के दूसरे भागों में पाई जाने वाली दुमट, मटियार और भूड़ मिट्टी मिलती है। रिंद घाटी में कुछ लाल और सेंगर के दक्षिण में पीलिया (पीली) मिट्टी पाई जाती है।

जिले के अधिकतर भाग का पानी तेजी से बह जाता है और एक स्थान पर सदा इकट्ठा नहीं रहने पाता है। इस लिये इस जिले में बड़ी झीलों का प्रायः अभाव है। कुछ भूर मटियार और ऊसर के भागों में मिलती हैं। जहांगीराबाद, हरनू आदि स्थानों में झीलें हैं। कानपुर जिले में एक चौथाई भूमि ऊसर या वीरान है और खेतो के काम नहीं आती है। इससे यदि वह भूमि जो पानी सड़कों, रेलों और घरों से घिरी हुई है अलग कर दें तो भी जिले की बीस फीसदी भूमि खेती के काम की नहीं हैं। इनके अतिरिक्त हरनू, रूरा आदि स्थानों में ढाक के जङ्गल हैं जहां खेती नही होती है। कुछ निचले भागों में बबूल के पेड़ हैं। यमुना के पड़ोस में चीता और ढाक के जङ्गलों में नील गाय बहुत हैं। गीदड़ भेड़िया सब कहीं मिलता है। बस्ती के पड़ोस में आम, महुआ और दूसरे पेड़ों के बाग हैं।

मार्च से मई तक कानपुर जिले में विकराल गरमी पड़ती है। इसके अन्त में धूल भरी आंधियां आती हैं और फिर वर्षा होने लगती है। वर्षा समाप्त होने पर अक्टूबर से फरवरी के अन्त तक जाड़ा पड़ता है। इस जिले में औसत से ३३ इंच पानी बरसता है। कभी कभी दुर्भिक्ष के वर्ष में यहां वर्ष भर में केवल १२ इंच पानी बरसा है। सुकाल में ७६ इंच तक पानी बरस गया है।

उत्तरी भाग में अधिकतर रबी की फसल होती है। जिले की समस्त भूमि के सातवें भाग में गेहूँ उगाया जाता है। जौ, गुजई और चना और अधिक भूमि घेरे हुए हैं। पांच फीसदी भूमि आलू उगाने के काम आती है। ज्वार, बाजरा, अरहर, तिल, उर्द, मूंग, खरीफ की फसलें हैं। कुछ स्थानों में पान उगाये जाते हैं। सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। सिंचाई नहरों, झीलों और कुओं से होती है।

अकबर कस्बा कानपुर से २६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह काल्पी सड़क से ३ मील उत्तर की ओर है। पास ही दो और पक्की सड़कें मिलती हैं। ८ मील लम्बी एक पक्की सड़क रूरा रेलवे स्टेशन को जाती है। पूर्व की ओर गंगा नहर की इटावा शाखा बहती है। अकबरपुर निचले प्रदेश में स्थित है। इस लिये इसके पड़ोस में पानी इकट्ठा रहता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल और जू० हाई स्कूल है। पहले इस स्थान को गुरई खेरा नाम से पुकारते थे। अकबर के शासन काल में इसका नाम अकबरपुर पड़ गया। यह एक व्यापारिक केन्द्र है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

अमरोधा एक पुराना मुसलमानी कस्बा है। यह कानपुर से ४२ मील दूर है। अमरोधा से काल्पी रोड और-चौरा स्टेशन को सड़कें जाती हैं। इसके पश्चिम में शाहपुर के खडहर हैं। यमुना ने शाहपुर को नष्ट कर दिया केवल कुछ खंडहर बचे हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

असलत गंज कानपुर से ३८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर बिल्हौर तहसील का एक बड़ा गांव है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। पास ही नहर की उपशाखा है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

बानीपारा डेरापुर तहसील में कानपुर से ३० मील दूरी पर स्थित है। यहां महादेव का एक प्राचीन

मन्दिर है। यहां शिवरात्रि को मेला लगता है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

बरह एक छोटा मुसलमानी कस्बा कानपुर से काल्पी को जानेवाली सड़क पर स्थित है। कहते हैं इस कस्बे को मुगलों ने बसाया था। इसके पास ही एक पक्का ताल है।

बरई गढ़ गांव नरवल से ३ मील और कानपुर से १८ मील की दूरी पर स्थित है। गांव के दक्षिण में एक ताल के पास पान बहुत उगाये जाते हैं। यहाँ डाकखाना और स्कूल है। भादों में गहौली देवी का मेला लगता है।

बारीपाल गांव नोन नदी के दाहिने किनारे पर घाटमपुर के दक्षिण में स्थित है। यह घाटमपुर से १० मील और कानपुर से ३६ मील दूर है। यहां घी, कपास और अनाज का व्यापार होता है। भोगनीपुर यह इस समय तहसील का केन्द्र स्थान नहीं है। यह कानपुर से ४१ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर काल्पी को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। कहते हैं अब से सवा तीन सौ वर्ष पहले भोगचन्द नामी एक कायस्थ ने इसे बसाया था। उसी ने भोगसागर नाम का पक्का ताल बनवाया। इसके पास ही भोगनीपुर नाम की शाखा नहर बहती है। यहां डाकखाना और स्कूल है।

बिल्हौर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है और कानपुर से ३४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह ग्रांड्ट्रंक रोड पर फैला हुआ बसा है। कानपुर अचनेरा लाइन इसकी समानान्तर चलती है। स्टेशन के पास से गङ्गा के किनारे पर बसे हुये नानामऊ गांव को सड़क जाती है। एक सड़क मकनपुर को जाती है। यहां अनाज का अच्छा व्यापार होता है और बाजार रोज लगता है। यहां तहसील थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

बिठूर का प्राचीन नगर कानपुर से १२ मील की दूरी पर गङ्गा के किनारे स्थित है। कानपुर से यहां को पक्की सड़क आती है। कानपुर अचनेरा लाइन की एक शाखा भी बिठूर तक आती है। कच्ची सड़क नोननदी को पार करके चौबेपुर को जाती है। कहते हैं ब्रह्मा जी ने सृष्टि को रचकर यहीं ब्रह्मावर्त घाट पर अश्वमेध यज्ञ किया था। यहीं रामायण के रचयिता वाल्मीकि जी का आश्रम था। सीता जी बनवास के समय यहां आई थीं। यहां लव और कुश उत्पन्न हुये थे जिन्होंने श्री रामचन्द्र जी के अश्वमेध के घोड़े को रोका था। यहीं युद्ध के समय उनको सब ने पहचाना था और रामचन्द्र जी से मेल हुआ था। पड़ोस में में पुराने बाण मिले हैं। यहीं मरहठों ने श्री रामचन्द्र जी का मन्दिर बनवाया था। १८११ से १८१६ तक यह जिले का केन्द्र स्थान रहा १८१६ में बाजी राव पेशवा को यहां रक्खा गया। उसे १५००० सिपाही और उनकी सहायता के लिये कुछ माफी के गांव मिले। इसे आराजी लश्कर कहते थे। लेकिन जब नाना साहब ने विद्रोह में भाग लिया तो यह जायदाद जब्त कर ली गई। नाना के महल के नष्ट हो जाने और मरहठों की शक्ति क्षीण होने से बिठूर का भी ह्रास हो गया। इस समय यह केवल तीर्थ रह गया है। गङ्गा के किनारे पक्के घाट बने हैं। यहां कई मन्दिर हैं यहां विजया दशहरा, कार्तिकी पूर्णिमा और पौष संक्रान्ति को मेला लगते हैं। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और स्कूल है।

कानपुर शहर गङ्गा के दाहिने या पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह इलाहाबाद से १२० मील और लखनऊ से ४२ मील दूर है। यह हावड़ा (कलकत्ता) से दिल्ली को जाने वाली ईस्ट इण्डियन रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। यहां से लखनऊ को बड़ी लाइन और (बंगाल वेस्टर्न रेलवे) लाइन गई हैं। एक छोटी लाइन (बम्बई बड़ौदा सेंट्रल इंडिया रलवे) यहां से फतेहगढ़, आगरा और अचनेरा को गई हैं। जी आई पी की शाखा लाइनें झांसी और बांदा गई हैं। यहां होकर ग्रांड ट्रंक रोड जाती है। दूसरी पक्की सड़कें हमीरपुर, काल्पी, लखनऊ, और बिठूर को गई हैं।

कानपुर कन्हैयापुर या कान्हापुर से बिगड़कर बना है। पर इसकी वृद्धि १७७८ ईस्वी से आरम्भ होती है जब यहां ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना के लिये छावनी बनी थी। योरुपीय व्यापारियों ने इसे अपने व्यापार का केन्द्र बनाया, उनकी रक्षा के लिये फौज का रखना आवश्यक था। गदर के बाद यहां चौड़ी सड़कें बनीं।

गदर में कानपुर की प्रायः सभी बड़ी बड़ी इमारतें नष्ट हो चुकी थीं। इस समय छावनी उत्तर में गङ्गा के किनारे से लेकर दक्षिण में ग्रांड ट्रंक रोड तक और पूर्व में जाजमऊ से लेकर पश्चिम में लखनऊ को जाने वाली रेलवे लाइन तक चली गई है। छावनी के पश्चिम में शहर और गङ्गा के बीच में सिविल लाइन है। यहां की प्रधान सड़क माल रोड है जो आगे चलकर बिठूर को चली गई है।

शहर बहुत घना बसा है। इसकी गलियां तंग हैं। माल रोड और नहर के बीच में शहर का व्यापारी भाग है। यहीं नया गंज, दाल मंडी, पुराना नाच घर, सिरकी, रोटी गोदाम, शुतुर्खाना, फीलखाना बाजार बीच में हैं। चटाई, पटकापुर और कुरसावां उत्तर की ओर हैं। पहले नया गंज गल्ले के व्यापार के लिये प्रसिद्ध था। लेकिन यहां बैल गाड़ियों के ठहरने के लिये पर्याप्त स्थान न था। इस लिये गल्ले के व्यापार के लिये कलक्टरगंज बनाया गया। चौक में सुन्दर दुकानें हैं। चौक की सड़क सिरसैया घाट में समाप्त होती है।

कानपुर उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा कारबारी शहर है। यहीं कपास ओटने और रुई के गट्ठे बनाने, मोटा सूती कपड़ा बुनने का प्रधान कारखाना है। आटा पीसने, शक्कर बनाने की यहां कई मिलें हैं। चमड़े का जीन, बूट जूता आदि सामान बनाने के कई कारखाने हैं। सरकारी कारखाना सब से बड़ा है। लगभग ५ लाख खालें प्रति दिन कमाई जाती हैं। तेल पेरने, रंग तैयार करने और रसायन सम्बन्धी सामान तैयार करने के भी कारखाने हैं।

मार्गों का केन्द्र होने से कानपुर का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा है। यहाँ अनाज तिलहन, मसाले, शक्कर, गुड़, कपास, जूट (पाट) ऊनी सूती कपड़े, चमड़े, घी, लोहे का सामान का व्यापार होता है। प्रति वर्ष यहां करोड़ों रुपये का सामान तैयार होता है अथवा आता है और प्रान्त के प्रत्येक भाग में पहुँचता है।

बिठूर पास होने से यहां प्रति वर्ष हजारों यात्री उतरा करते हैं। व्यापार और कारबार में वृद्धि होने के साथ साथ कानपुर में शिक्षा की वृद्धि हुई है। यहां डी० ए० वी० डिग्री कालेज के अतिरिक्त कृषि कालेज, कई इन्टर कालेज और हाई स्कूल हैं।

चौबेपुर गांव, कानपुर-अचनेरा लाइन पर कानपुर से १७ मील दूर है। स्टेशन से एक सड़क बिठूर को जाती है पड़ोस में नहर की उप शाखा से सिंचाई होती है। यहां के बाजार में गाय-बैल, आलू तम्बाकू और अनाज की बिक्री होती है। गांव में दो तीन मन्दिर हैं। कार्तिकी पूर्णिमा को कंस लीला का मेला होता है।

डेरापुर सेंगर नदी के दाहिने किनारे पर इसी नाम की तहसील का केन्द्र-स्थान है। यह रूरा रेलवे स्टेशन से ६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। स्टेशन तक पक्की सड़क जाती है। यह कानपुर से ३५ मील पश्चिम की ओर है। यहाँ मुसलमानों की पुरानी बस्ती है। यहां कई जीर्ण मस्जिदें, सहस कुंड और मरहठों के समय (१७५६-६२) के बने हुए किले के खंडहर हैं। यहां तहसील थाना, अस्पताल और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

गगनेर गाँव अकबरपुर (तहसील) से ६ मील और कानपुर से २४ मील दूर है। इसके उत्तर पूर्व में नोन की सहायक न्योर नदी बहती है। पड़ोस की भूमि ऊसर और नीची है। कांस बहुत उगते हैं। यहाँ कुछ बुनाई का काम होता है। बाजार बड़ा नहीं होता है। जेठ के महीने में गाजीपीर का मेला लगता है। इस मेले में गाय बैल बहुत बिकते हैं। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है।

घाटमपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह कानपुर से हमीरपुर को जाने वाली पक्की सड़क पर कानपुर से २७ मील की दूरी पर स्थित है। कहते हैं घाटमदेव नामी एक बैंस सरदार ने इसे बसाया था। यहां कुधा देवी का एक पुराना मन्दिर है। दक्षिण की ओर ३१५ वर्ष का पुराना गुसाईं मन्दिर है। यहां तहसील थाना, डाकखाना, अस्पताल और जुनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

जाजमऊ का पुराना नगर गङ्गा के किनारे पर कानपुर छावनी के पूर्व में स्थित है। यह कानपुर शहर से ४ मील दूर है। यहां तक पक्की सड़क आती

है। पहले इसे सिद्धपुर कहते थे। इसके पूर्व में सिद्धेश्वर महादेव और सिद्ध देवी के मन्दिर हैं।

यह गङ्गा के पक्के घाट के ऊपर बने हैं। श्रावण मास के सोमवार को यहां बहुत से यात्री स्नान करने आते हैं। प्रसिद्ध मुस्लिम भूगोल-वेत्ता अलबरूनी ने जाजमऊ का उल्लेख किया है। इसके पास ही गङ्गा के ऊपर एक टीला है। कहते हैं यहीं चन्देल राजा चन्द्रवर्मा का गढ़ था। यहीं जजाति या ययाति राज्य की राजधानी थी। इसीसे बिगड़कर जाजमऊ नाम पड़ा। इसके पड़ोस में पुरानी ईंटों और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े बहुत मिलते हैं। कहीं कहीं यह पृथ्वी के भीतर ४० फुट की गहराई तक पाये जाते हैं। जाजमऊ गांव नालों के ऊपर दूर तक फैला हुआ है। एक ऊंचे टीले के ऊपर मखदूमशाह अलउल हक की मकबरा है। यह हिन्दू मन्दिर के सामने से बनाया गया। कहते हैं मखदूमशाह कुतुबुद्दीन ऐबक के साथ आया था।

झींझक गांव गङ्गा नहर की इटावा शाखा के दाहिने किनारे पर कानपुर से ३८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। पास ही ईस्ट इण्डियन-रेलवे की स्टेशन है। झींझक में डाकखाना और प्रइमरी स्कूल है। यहां के बाजार में पड़ोस की चीजें बिकती हैं। जुही कानपुर का बाहरी भाग है। यह ग्रांडट्रंक रोड के पास बसा है। चैत में वाराह देवी का मेला लगता है। ककवान गांव गंगा नहर की कानपुर शाखा के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। नहर द्वारा यहां से ईंधन और दूसरा सामान कानपुर को जाता है।

कल्याणपुर गांव कानपुर से ५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर ग्रांड ट्रंक रोड पर बसा है। कानपुर-अचनेरा लाइन सड़क की समानान्तर चलती है। स्टेशन के पास से एक पक्की सड़क बिठूर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

ख्वाजा फूल इटावा की सीमा के पास कानपुर से ४८ मील दूर है। इसके पड़ोस में भोगनीपुर-नहर की एक शाखा से सिंचाई होती है। कहते हैं फूल मलिक सम्राट अकबर का एक विश्वास पात्र हिजड़ा था। उसे इतमाद खां भी कहते थे। उसने आगरे के पास इतमातपुर बसाया यहां लाल पत्थर का एक किला बनवाया। इसका बहुत सा पत्थर नवाब आसफुद्दौला लखनऊ ले गया। मरहठों ने इसे किले की मरम्मत की और इसे दृढ़ बना लिया। गदर के बाद यह तोड़ दिया गया। यहां यात्रियों के लिये एक सराय बनी है। महराजपुर कानपुर से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर ग्रांड ट्रंक रोड पर बसा है। यहां यहां से एक पक्की सड़क नर्बल (तहसील) को जाती है। इसी सड़क पर सिरसौल रेलवे स्टेशन दो मील मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

मकनपुर गांव बिल्हौर तहसील के धुर उत्तरी सिरे पर ईसन नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। फर्रूखाबाद जिले की सीमा यहां से केवल दो मील दूर है। यह बिल्हौर से ८ मील और कानपुर से ४० मील दूर है। यहां से और रेलवे स्टेशन तक साढ़े तीन मील लम्बी पक्की सड़क जाती है कहते हैं, मकनपुर और अरौल रेलवे स्टेशन के बीच में हरपुर नामी हिन्दू गांव है। पहले मकनपुर इसी का अंग था। इस समय यहां कई मुसलमानी कई मुसलमानी मकबरे हैं। एक पाकर वृक्ष के नीचे मलंग (पागल फकीर) गाना गाते और बाजा बजाते हैं। शाह मदार का मकबरा सर्व प्रसिद्ध है। माघ के महीने में यहां बसन्त मेला २० दिन तक लगता है। यहां घोड़े, ऊंट और बैल दूर दूर से बिकने आते हैं। लगभग १ लाख मनुष्य इकट्ठा होते हैं। यात्रियों से जो कर लिया जाता है उसका अधिकतर भाग शाह मदार की बहिन के वंशजों में बट जाता है। यहां एक डाकखाना और प्रइमरी स्कूल है बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

मंगलपुर गांव झींझक स्टेशन से ४० मील और डेरापुर (तहसील) से ६ मील दूर है। मंगलपुर शाखा नहर से सिंचाई होती है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है कहते हैं इसे गोंडों ने बसाया। एक सरदार ने इसका नाम बदल कर मंगलपुर रख दिया।

नजफगढ़ गंगा के किनारे एक छोटा कस्बा है। यह कानपुर से १६ मील दूर है। १०६६ में शाह आलम ने यह गांव नवाब नजफ खां को माफी में

दे दिया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा उसने यहां एक बाजार और किला बनवाया। आगे चलकर कुछ समय तक यहां नील का कारखाना रहा। इस समय यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार प्राइमरी स्कूल है।

नानामऊ बिल्हौर से ४ मील उत्तर- पूर्व की ओर गङ्गा के किनारे पर स्थित है। यहीं होकर लखनऊ से फरुखाबाद को पुराना मार्ग जाता था। गङ्गा को पार करने और दूसरी ओर बङ्गारामऊ (उनाव जिले में) जाने के लिये नाव रहती है। नर्वल कस्बा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सिर-सौल रेलवे स्टेशन से ६ मील दूर है और कानपुर से से १८ मील दक्षिण की ओर है। कस्बे के उत्तर की ओर जुलाहे और रंगसाज रहते हैं। १०० वर्ष पहले यह एक चौहान राजा की राजधानी थी। इस समय यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

पुखरायां कस्बा कल्पी को जाने वाली पक्की सड़क के उत्तर में कानपुर से ३६ मी दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पास ही रेलवे स्टेशन है। तहसील के अतिरिक्त यहां एक थाना डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। यहां एक बड़ा बाजार लगता है। रसूलाबाद बिल्हौर तहसील के पश्चिमी सिरे पर स्थित है। यह झींझक रेलवे स्टेशन से ११ मील और कानपुर से ४० मील दूर है। यहां से झींझक, सिकन्दरा, बिल्हौर, नानामऊ, मकनपुर और कानपुर को पक्की सड़कें गई हैं। अपने शासन काल में (१७६-६२) मरहठों ने यहां एक कच्चा किला बनवाया था। इस समय यहां थाना है। यहां डाकखाना और स्कूल हैं।

रूरा गांव कानपुर से २८ मील पश्चिम की ओर ईस्ट इंडियन रेलवे का स्टेशन है। यहां से अकबरपुर (तहसील) को पक्की सड़क जाती है। एक सड़क डेरापुर को गई है। पास ही इटावा शाखा नहर का पुल है। डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। चचेंडी या सचेंडा कस्बा काल्पी को जाने वाली पक्की सड़क के दक्षिण की ओर है। इसके पूर्व में गङ्गा-नहर की पन्डुआ शाखा बहती है। कहते हैं इसे चन्देल राजा चाणकदेव ने बसाया था। विद्रोह में भाग लेने के कारण यह राज्य छीन लिया गया और नीलाम कर दिया गया। चन्देलों का उजड़ा हुआ विशाल किला पूर्व की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां एक छोटा बाजार है।

सलेमपुर कानपुर से ११ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। *जाजमऊ से महाराजपुर को जाने वाली* सड़क पर स्थित है। पहले यह नील का एक बड़ा कारखाना था।

शिवली एक अत्यन्त पुराना गांव है। कहते हैं एक बनजारे को जंगल साफ करते समय शिव जी की मूर्ति मिली। इसी से इसका यह नाम पड़ा। पहले यह चन्देल राज्य में शामिल था। कन्डुआ नहर की उपशाखा से इसके पड़ोस की भूमि सींची जाती है। शिवली में कई कच्ची सड़कें मिलती हैं। यहां कानपुर से २२ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाठशाला है।

शिवराजपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह कानपुर से २१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। कानपुर-अचनेरा लाइन सड़क की समानान्तर चलती है। कहते हैं प्रथम चन्देल राजा शिवराज देव ने १३३६ ई० में *इस नगर को बसाया था*। उसके *बनवाये हुये किले* में उसके वंशज १८५७ तक रहते रहे। गदर में किला नष्ट कर डाला गया। पास ही छतरपुर गांव में एक पुराना मन्दिर है। यहां शिवरात्रि को बड़ा उत्सव होता है। शिवराजपुर में तहसील थाना, अस्पताल और जुनियर हाई स्कूल है।

सिकन्दरा का पुराना कस्बा कानपुर से ४५ मील दूर है। यहां से रसधन डेरापुर यमुना के किनारे बीजामऊ घाट और बिल्हौर को सड़कें जाती हैं। कहते हैं पुराने बिलासपुर के स्थान पर इसे सिकन्दर लोदी ने बसाया था। यहां कई पुराने कमबरों के खंडहर हैं। एक पुरानी सराय है। यहां थाना, डाक-खाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

सिरसौल ग्रांडट्रंक सड़क पर कानपुर से १५ मील दूर है। पूर्व की ओर ईस्ट इंडियन रेलवे स्टेशन है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बाजार सप्ताह में दोबार लगता है। तारगांव कानपुर से २२ मील

दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसके पश्चिम में नोन नदी और पूर्व की ओर नहर की शाखा है। तिलसहरी गांव नवल से ७ मील उत्तर की ओर है। यह एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। चैत में नन्दोदेवी का मेला होता है।

फतेहपुर

फतेहपुर का जिला गङ्गा यमुना द्वाब के पूर्वी भाग में स्थित है। इसके उत्तर-पश्चिम में कानपुर और दक्षिण-पूर्व में इलाहाबाद का जिला है। उत्तर की ओर गङ्गा के उस पार अवध के उन्नाव, रायबरेली और परतावगढ़ के जिले हैं। दक्षिण की ओर यमुना नदी फतेहपुर को हमीरपुर और बांदा जिलों से अलग करती है। इसका क्षेत्रफल १५८५ वर्ग मील है। यह कुछ आयताकार है। इसकी औसत लम्बाई (पूर्व से पश्चिम तक) ६५ मील और चौड़ाई (उत्तर से दक्षिण तक) २५ मील है। जन संख्या ६,९८७८९ है।

फतेहपुर जिले की भूरचना गङ्गा और यमुना ने निश्चत की है। इन नदियों के पास वाली भूमि है। इनके ऊंचे किनारों से जिले के मध्यवर्ती भाग की ओर भूमि क्रमशः नीची होती गई है गङ्गा और यमुना के पास ऊंचे किनारे और धारा के बीच में कछारी भूमि की तंग पेटी है। इसकी चौड़ाई कहीं २ ५ मील तक है। ऊंचे किनारे के ऊपर समतल मैदान है। इसमें मन्दवाहिनी छोटी छोटी नदियां हैं। नालो के पड़ोस में भूमि ऊंची नीची है। पानी तेजी से वह आता है। ऊंचे मैदान का ढाल क्रमशः उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। कानपुर की सीमा कोरा) के पास भूमि समुद्र तल से ४२५ फुट ऊंची है। पूर्वी सिरे पर भूमि केवल ३६५ फुट ऊंची रह गई है। गङ्गा नदी पहले पहले इस जिले के बिन्दकी परगने के उत्तर में उस स्थान पर छूती है जहां इसमें कानपुर जिले से आने वाली पांडु नदी गिरती है। यहां से खुसरूपुर तक (फतेहपुर के उत्तर में) गङ्गा चौड़ी तली बनाती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। इसके आगे मुड़कर यह १४ मील तक उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। राजघाट से जहां पर रायबरेली को सड़कें जाती हैं गङ्गा फिर दक्षिण-पूर्व की ओर बहने लगती है। गौटी के पास गंगा फतेहपुर जिले को छोड़ देती है। पश्चिमी भाग में गङ्गा के किनारे ऊंचे हैं। पूर्व की ओर वे नीचे हो गये हैं। गङ्गा के बीच बीच में रेतीले टापू भी निकल आये हैं जहां नीलगाय और जंगली सुअर रहते हैं। किनारे से ऊपर वाला मैदान तली से प्रायः ५० फुट ऊंचा है। गंगा के पड़ोस में बलुई मिट्टी अधिक तेजी से कट जाती है। इसी से यमुना की अपेक्षा गंगा में गिरने वाले अधिक बड़े और गहरे हैं। जिले के प्रायः बीच वाले भाग में जल विभाजक है। उत्तर का पानी गङ्गा में और दक्षिण का पानी यमुना में आता है। शिवराजपुर और भिटौर को छोड़कर इस जिले में गङ्गा के किनारे अधिक बड़े कस्बे नहीं हैं।

यमुना नदी दक्षिणी सीमा के पास बहुत ही टेढ़ा भाग बनाती हुई बहती है। यह डबसौरा के पास जिले में प्रवेश करती है और धाता के पास बाहर चली जाती है। गंगा की अपेक्षा यमुना की तली अधिक गहरी है। कहीं कहीं गंगा की तली से यमुना की तली ५० फुट अधिक गहरी है। गंगा की अपेक्षा यमुना का बहाव अधिक धीमा है। जहां गंगा में प्रति मील में १३ इंच का उतार है वहां यमुना में केवल ४ इंच का उतार है। यमुना के किनारे ऊंचे और सपाट हैं। यह नालों से कटे हुये हैं। लेकिन

इटावा और आगरा जिलों में यमुना के किनारे यहां से कहीं अधिक ऊंचे हैं। यमुना के मार्ग में इस जिले की १५० वर्ग मील भूमि घिरी हुई है। इसमें कछार बहुत कम है। जहां कहीं यमुना का कछार है वह इतना उपजाऊ है कि बिना सिंचाई के ही इसमें गेहूँ की बड़ी अच्छी फसल होती है। यमुना का सब से बड़ा कछार केन नदी के संगम के सामने होली के पास है। यहां यमुना दक्षिण की ओर हटी हुई मालूम होती है। उपजाऊ कछार ऊंचे किनारे के नीचे हैं। रिन्द और वारी नदी के संगम के पास भी इसी प्रकार की उपजाऊ भूमि है। यमुना के पड़ोस वाले कुओं में ६० से ८० फुट की गहराई पर पानी मिलता है। इसीलिये यमुना के पड़ोस वाले भागों में कुओं से कम सिंचाई होती है।

यमुना में कई सहायक नदियां इस जिले की सीमा के पास मिलती हैं। केन और बागें नदियां बुन्देलखंड से आकर यमुना के दाहिने किनारे पर मिलती हैं। उत्तरी बायें किनारे पर मिलने वाली नून नदी है। यह कानपुर जिले से आती है और चांदपुर गांव के पास यमुना में मिलती है। इसके पड़ोस की भूमि बुन्देलखंडी मार भूमि के समान है। इस ओर कांस बहुत उगते हैं। इनके हलके बीज हवा अपने साथ हमीरपुर और बांदा से उड़ा लाती है। रिन्द नदी अलीगढ़ जिले में निकलती है और एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद इटावा और कानपुर जिलों में बहती हुई कोरा के उत्तर में इस जिले में प्रवेश करती है। इस जिले में ३० मील विषम मार्ग बनाती हुई दरियाबाद गांव के पास यह यमुना में मिल जाती है। रिन्द के पड़ोस में नालों का जाल सा फैला हुआ है। वर्षा ऋतु में रिन्द में अपना पानी गिराने के लिये इन नालों ने कड़ी कंकरीली मिट्टी को काट कर अपना मार्ग बनाया है। इन नालों के पड़ोस में छोटी कांटेदार झाड़ियां हैं। रिन्द में कुछ न कुछ पानी साल भर रहता है। किनारों से कुछ दूरी पर छठी सदी से लेकर १० वीं सदी के पुराने मन्दिरों के खंडहर मिलते हैं।

बड़ी या महा नदी बिन्दकी के पास से निकलती है। दक्षिण-पूर्व की ओर ७० मील बहकर कोट गांव के पास यह यमुना में मिल जाती है। यह नदी बहुत छोटी है लेकिन जिले का अधिकतर मध्यवर्ती भाग इसी से सींचा जाता है। जिले के दो तिहाई प्रदेश का पानी बहकर इसमें आता है। बिजैपुर गांव के पास इसमें छोटी नदी मिलती है जो फतेहपुर के पूर्व में झीलों से निकलती है।

ससुर खदेरी नदी मध्यवर्ती जल विभाजक के दलदलों से (हुसेनगंज के पास) निकलती है। हसुआ परगने में पाँच मील के बाद भी यह दलदलों की एक लड़ी सी मालूम होती है। हुसेन गंज से यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। हथगांव से दो मील आगे इसमें एक नाला मिलता है। सावन्त-झील का कुछ पानी मिल जाने पर ससुर खदेरी नदी की तली आठ-दस गज चौड़ी हो जाती है।

फतेहपुर शहर के पूर्व और पश्चिम में कुछ खाबड़ हैं जहां पानी के ठीक ठीक न बहने के कारण झीलें बन गई हैं। मोरांव झील सबसे बड़ी है।

गंगा के पड़ोस में भूड़ मिट्टी मिलती है। दुमट मिट्टी दक्षिण वाले भाग में मिलती है। अधिक आगे चिकनी मिट्टी है जहां भूमि नीची है और जहां झीलें बन गई हैं। इस चिकनी मिट्टी को मटियार कहते हैं। इसके ऊसर में कोई फसल नहीं होती है। चौचर में मामूली फसल होती है। अधिक दक्षिण में यमुना के पास पिलिया, पांडु या सिगोन मिट्टी मिलती है। यमुना जल विभाजक के चपटे भागों में कावर (कुछ काली) मिट्टी मिलती है। गीली होने पर कावर मिट्टी दलदली हो जाती है। सूखने पर इसमें इतनी गहरी दरारें पड़ जाती है कि यह सिंचाई के काम की नहीं रहती है। मार मिट्टी अधिक काली होती है और नून नदी के आगे मिलती हैं। जिले का प्रायः एक चौथाई भाग ऊसर और उजाड़ है। बीचवाले दलदलों के पास ढाक का जंगल है। गंगा यमुना रिन्द और नून नदियों के पड़ोस छोटी छोटी कांटेदार झाड़ियां हैं। यहां बबूल के पेड़ बहुत हैं। नदियों के पड़ोस वाले जंगल से घिरे हुये नालों में तेंदुआ भेड़िया और छोटे छोटे जंगली जानवर मिलते हैं।

फतेहपुर जिले की जलवायु कुछ इलाहाबाद और कानपुर के समान है। जनवरी प्रायः पचास-साठ अंश फारेनहाइट रहता है कभी कभी पाला

भी पड़ता है जिससे अरहर की फसल सूख जाती है। जून का तापक्रम ९० से ११० अंश तक रहता है। वर्षा होने पर १० या १२ अंश तापक्रम घट जाता है। औसत से वर्ष भर में ३४ इंच वर्षा होती है।

द्वाबा के दूसरे जिलों की तरह फतेहपुर जिले में रबी और खरीफ दो प्रधान फसलें हैं। खरीफ की फसल में ३८ फीसदी भूमि में ज्वार बोई जाती है। अक्सर ज्वार के साथ अरहर भी बोई जाती है। धान एक चौथाई भूमि में होता है। फतेहपुर और खागा तहसीलों में धान बहुत बोया जाता है। जेठऊ धान झीलों के पड़ोस में बोया जाता है।

खरीफकी फसल में बाजरा और कपास २० फीसदी भूमि को घेरती है। कुछ भागों में गन्ना और मकई भी बोते हैं। रबी की फसल अधिक अच्छी नहीं होती है। यहां बिर्रा या बिभरा बहुत होती है। बड़ी बड़ी नदियों के पड़ोस में सँवा बोया जाता है। तालाबों सिंघाड़ा होता है।

जिले की ४८ फीसदी भूमि कुओं से २० फीसदी तालाबों और और झीलों से और २२ फीसदी भूमि नहरों से सींची जाती है। रिन्द नदी के उत्तर में निचली गंगा नहर की फतेहपुर-शाखा से और दक्षिण में इटावा शाखा की घाटमपुर-उपनहर से सिंचाई होती है। बड़ी नदी और छोटी नदी में कच्चे बांध बनाकर लोग पड़ोस की भूमि सींचते हैं।

फतेहपुर एक कृषिप्रधान जिला है। कोड़ा बनाने और कोड़ा छावेने के काम अधिक प्रसिद्ध है। मामूली कोड़े बांस की छड़ी में सूत की डोरी मजबूती से बाँधकर बनाते हैं। बढ़िया कोड़े में सोने-चांदी के तार का काम रहता है। अनाज आदि कृषि की उपज का ही यहां व्यापार है। अनाज बाहर भेजा जाता है।

ऐरावां गांव खागा से ६ मील उत्तर-पूर्व की ओर फतेहपुर से २४ मील दूर है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

अमौली फतेहपुर से ४२ मील दूर है। यहां से खजुहा, घाटमपुर और हमीरपुर को सड़कें गई हैं। यह नून नदी के सूखे नालों से २ मील दूर बसा है। इसके पास ही एक उथली झील और जंगल है। यहां कई मुसलमानी समय के खंडहर हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। क्वार में कृष्ण-लीला का मेला लगता है।

असनी गांव फतेहपुर से ११ मील की दूरी पर गङ्गा के किनारे स्थित है। यहां से हुसेन गंज को सड़क जाती है जो रायबरेली को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। घाट के ऊपर कई मन्दिर बने हैं। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को गङ्गा स्नान का मेला होता है। यहां डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। असनी एक प्राचीन स्थान है। कहते हैं मुसलमानों का आक्रमण होने से पहले यहां अपना कोष (खजाना) गाड़ा था। कहते हैं पुराने किले को गांव के बसाने वाले एक भाट ने बनवाया था। असनी नाम अश्वनी (सूर्य-पुत्र) से बिगड़ कर बना है। यहां अश्वनी कुमार का मन्दिर बना है। जो प्राचीन लेखवाला स्तम्भ इस समय फतेहपुर टाउन हाल के बगीचे हैं में वह अब से ७५ वर्ष पहले असनी से यहां लाया गया था।

असोथर गांव फतेहपुर से १८ मील दूर है। यहां नहर पर पुल बना है। एक सड़क बहरामपुर रेलवे-स्टेशन को जाती है। गांव के उत्तर और पूर्व में उथले ताल हैं। गांव के उत्तर-पूर्व में असोथर के राजा का महल है जो पुराने किले के भीतर है। किले के चारों ओर खाई है। एक ऊंची सड़क तालाब में होकर किले को जाती है। किले से दक्षिण की ओर पुराने गांव के भग्नावशेष हैं। सबसे ऊंचे टीले पर अश्वत्थामा का घेरा है। कहते हैं पहले द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा की स्मृति में इसे अश्वत्थामापुर कहते थे। इसी से बिगड़कर असोथर बना है। कुछ और दक्षिण की ओर एक छोटे टीले पर पांडवों की (नंगी) मूर्तियां हैं। सरकी के पास भी १८७९ में पुराने भग्नावशेष मिले। यहां फागुन के महीने में जागेश्वर महादेव का मेला लगता है। असोथर में थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। नहर की असोथर शाखा से पड़ोस की भूमि सींची जाती है।

औंग—गांव फतेहपुर से २४ मील और बिन्दकी रोड स्टेशन से ढाई मील पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। उत्तर की ओर शिवराजपुर और दक्षिण की ओर कोरा को कच्ची सड़कें गई हैं। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। गदर के समय यहां लड़ाई हुई थी। पास वाले आसफपुर और अभयपुर गांवों में बौद्ध और जैन काल के भग्नावशेष हैं।

आया—गांव फतेहपुर से १० मील दूर है। इसके पास एक पुराने किले के खंडहर हैं। किले के दक्षिण में एक पुराना खेड़ा है। इसके ऊपर पुरानी मूर्तियां और स्तम्भ हैं। गांव के उत्तर और पश्चिम में उथले ताल हैं। नहर की अलीपुर शाखा से पड़ोस के खेत सींचे जाते हैं। बहरामपुर गांव ईस्टइण्डियन रेलवे के दक्षिण में स्थित है। यहां से थरियांव को (जो ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है) पक्की सड़क गई है। स्टेशन से दक्षिण की ओर नरैनी और असोथर को सड़क गई है। पहले ईस्ट इंडियन रेलवे यहीं तक बनी थी। इस लिये यहां बड़े दफ्तर और इंजिन के कमरे बने थे। जब लाइन आगे बढ़ी और यहां अन्तिम स्टेशन न रहा तब यह कमरे अफीम के अफसरों को सौंप दिये गये। यहां डाकखाना और बाजार है। नामों की गड़बड़ी को मिटाने के लिये स्टेशन का नाम थरियांव रख दिया गया।

बहुआ गांव फतेहपुर से बांदा को जाने वाली सड़क के पूर्व में फतेहपुर से १० मील दूर है। दक्षिण में नहर की गाजीपुर शाखा बहती है। सड़क की दाहिनी ओर तालाब है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। इसके पास ही दसवीं सदी का बना हुआ पुराना महादेव का मन्दिर है। पहले इसे काकोरा (नारायण और लक्ष्मी) का मन्दिर कहते थे दक्षिण की ओर और भी पुराने भग्नावशेष हैं।

भिटौरा गांव गङ्गा के ऊंचे जंगल से घिरे हुये किनारे पर फतेहपुर से ८ मील उत्तर की ओर है। १८१४ में जब यह जिला कानपुर से अलग किया गया तब भिटौरा जिले का केन्द्र स्थान बना। उस समय ग्रांड ट्रंक रोड ठीक न बनी। गङ्गा के मार्ग से भिटौरा में पहुँचना सुगम था। यह फतेहपुर से अधिक स्वास्थ्यकर था। १८२५ में अधिक केन्द्रवर्ती स्थिति होने के कारण फतेहपुर जिले का केन्द्र स्थान बनाया गया। इस समय भिटौरा में प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। यह गांव बहुत पुराना है। नदी तट के पास एक प्राचीन झुकी हुई विशाल मूर्ति है।

बिलन्दा गांव ग्रां० ट्रंक रोड पर फतेहपुर से ५ मील पूर्व की ओर है। इस नाम से अक्सर चक बिरारी और सरायसैयदखां दो गांवों को पुकारा जाता है। चक बिरारी को औरङ्गजेब के लड़के मोहसिन की स्मृति में मोहसिनाबाद भी कहते हैं। सैयद खां मोहसिना के शिक्षक का भाई था। वह कुछ समय तक कड़ा में रहा। उसने यहां एक सराय बनवाई। ग्रांड ट्रंक रोड को सीधा बनाने के लिये सराय तोड़ दी गई। गदर के समय में यहां लड़ाई हुई थी। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

बिन्दकी कस्बा बिन्द करोड़ (मौहर) स्टेशन से ६ मील दूर है। कन्सपुर गुगौली स्टेशन केवल ४ मील दूर है। कई सड़कों के मिलने से बिन्दकी जिले भर में सबसे बड़ा व्यापारी केन्द्र है। बाजार मन्दिर और पक्के तालाब के पास लगता है। उत्तर की ओर पुरानी बिन्दकी है। बैलाही बाजार में बैल बिकते हैं। चसराही में चमड़ा, गुड़ाई में गुड़ और नमखाई में नमक बिकता है। पास ही बैलगाड़ियों का पड़ाव है। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। यह स्थान पुराना है। १८८६ में कुछ पुराने समय की चीजें मिलीं जो पक्के ताल के पास रक्खी हुई हैं।

चन्दनपुर फतेहपुर से ३० मील दूर है। यह सड़क से कुछ दूर है। कहते हैं चन्द नामी एक भार राजपूत ने इसे बसाया था। उसने यमुना के पास किला भी बनवाया था। लेकिन किले का कोई चिन्ह शेष नहीं हैं। यहां थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

दतमाई—गांव कोरा से शिवराजपुर को जाने वाली पक्की सड़क पर फतेहपुर शाखा-नहर के पास स्थित है। यहां एक पक्का ताल और १७२० ईस्वी की बनी हुई बड़ी बाउली है। ताल के पास कई मन्दिर हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

थाता—गांव फतेहपुर से ३७ मील की दूरी पर फतेहपुर शाखा नहर के पास बसा है। यहीं कई कच्ची सड़कें मिलती हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां मिट्टी के बर्तन (लाल और काले रंग के) अच्छे बनते हैं। क्वार में रामलीला और चैत में चंडिकादेवी का मेला लगता है।

एकडाला गांव कुछ पुराना है। यह यमुना के ऊंचे किनारे पर खागा से १८ मील की दूरी पर स्थित है। कहते हैं यहां बीरबल की मौसी रहती थी। एक बार बीरबल के साथ अकबर भी इस गांव में आया था।

फतेहपुर शहर जिले का केन्द्र स्थान है। यह कानपुर से ४७ मील और इलाहाबाद से ७८ मील दूर है। यह ईस्ट इंडियन रेलवे का एक स्टेशन ग्रांड ट्रंक रोड शहर के उत्तरी भाग में होकर जाती है। यहां से एक पक्की सड़क उत्तर-पूर्व की ओर रायबरेली को और दक्षिण-पश्चिम की ओर बांदा को जाती है। शहर में पक्के घरों की अपेक्षा कच्चे घर अधिक हैं। जहां पुराने घर गिर गये वहीं फिर नये घर बने। इससे शहर के बीच वाला भाग कुछ ऊंचा हो गया है। इसके पड़ोस में कई झील और तालाब हैं। लेकिन फतेहपुर के पड़ोस में ऐतिहासिक महत्व के कोई भग्नावशेष नहीं हैं। केवल अबू नगर मुहल्ले में नवाब अब्दुलसमद खां का मकबरा और उसके भग्नावशेष हैं। यह औरङ्गजेब के समय में बुन्देलखंड के पैलानी का एक फौजदार था। यहां हाई स्कूल जूनियर हाई स्कूल, तहसील, कचेहरी, अस्पताल और कोतवाली है। १८८६ ई० में यहां का टाउनहाल बना। यह एक बगीचे के भीतर है। इसके पीछे की ओर पक्का तालाब है। बगीचे में उन पुराने भग्नावशेषों का संग्रह है जो जिले के भिन्न भिन्न स्थानों में पाये गये। थाने से मिली हुई कच्ची सराय है। सिविल लाइन में बहुत कम बंगले और घर हैं। रेलवे लाइन के दक्षिण में अमरीकन मिशन के कुछ घर हैं जहां इसाई रहते हैं। पश्चिम की ओर जेल है। इसके पास ही चार पक्के खम्भे टुकर महाशय की स्मृति में बने हैं जो गदर में यहां मार डाले गये थे।

गढ़ गांव जिले भर में सब से बड़ा गांव है। यह खागा से १२ मील की दूरी पर यमुना तालों के बीच में बसा है। यहां से ४ मील की दूरी पर यमुना का घाट है जहां से बांदा जिले को सड़क जाती है। यहां एक प्राइमरी स्कूल और बाजार है। कहते हैं पहले यहां एक गढ़ या किला था इसीलिये गांव का यह नाम पड़ा। कोट को बसाने वाले पठानों ने इस किले को नष्ट कर डाला।

गढ़ी जार—रिन्द नदी के दाहिने किनारे पर खजुहा से ८ मील उत्तर की ओर है। दक्षिण-पश्चिम ओर गढ़ी (या छोटा किला) है। कहते हैं एक गौतम ने जो मुसलमान हो गया जिसका नाम बहादुर खां रक्खा गया) यह किला बनवाया था। उसके मकबरे के पास उसके महल के भग्नावशेष हैं।

गाजीपुर गांव—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह फतेहपुर से ८ मील दक्षिण की ओर है। यहां से एक सड़क यमुना के ललित घाट को जाती है। गांव से आध मील की दूरी पर नहर की गाजीपुर शाखा जाती है। पूर्व की ओर प्राचीन किलेबन्द नगर के खंडहर हैं। चारदीवारी और खाइयों का अनुमान किया जा सकता है कि इसके चारों ओर गहरी खाई थी। पहले यहां चन्देलों का प्रबल दुर्ग था। असोथर के राजा ने इसकी मरम्मत करवाई। उसने इसका नाम फतेहगढ़ रक्खा। उत्तर की ओर एक दूसरे किले की स्थिति है। दक्षिण-पश्चिम की ओर तालाब हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

कल्यानपुर—ग्रांड ट्रंक रोड के उत्तर की ओर फतेहपुर से १६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। पास ही ऊसर भूमि में कंसपुर गुगौली की रेलवे स्टेशन है। १८५१ से १८९५ तक कल्यानपुर तहसील का केन्द्र स्थान रहा। तहसील के टूटने पर तहसील की इमारतें नीलाम कर दी गईं। इस समय यहां थाना और डाकखाना है।

कटोघन गांव ग्रांड ट्रंक रोड के दक्षिण में खागा से ४ मील पूर्व की ओर है। गांव कुछ ऊंची भूमि पर बसा है। पड़ोस में छोटे छोटे ताल बहुत हैं। जिनसे धान उगाने में सहायता मिलती है। यहां

डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। चैत में दुर्गा का मेला लगता है।

खागा—गांव इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह ग्रांडट्रंक रोड पर फतेहपुर से २० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। एक पक्की सड़क खागा रेलवे स्टेशन से १० मील दूर यमुना के किनारे पर बसे हुये किशनपुर को जाती है। एक सड़क गंगा के किनारे हटागांव और नौबस्ता को गई है। खागा गांव छोटी नदी के मोड़ पर बसा है। पड़ोस की भूमि नीची होने के कारण वर्षा ऋतु में प्रायः डूब जाती है। पुरानी तहसील और सरकारी इमारतें उत्तर-पश्चिम की ओर ऊसर भूमि पर बनी हैं। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर स्कूल है। बाजार के पास पक्का ताल है। कार्तिक में रामलीला का उत्सव होता है।

खुजुहा—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह विन्दकी से ४ मील पश्चिम की ओर फतेहपुर से ३१ मील दूर है। कस्बा ऊंची भूमि पर बसा है। इसका ढाल रिन्द के नालों की ओर है। कस्बा सड़क के दोनों ओर बसा है। कहते हैं पहले यहां खजूरों की अधिकता थी। इसी से इसका यह नाम पड़ गया। लेकिन इस समय यहां एक भी खजूर नहीं है। १६५९ में यहीं औरंगजेब ने शाहशुजा को हराया था। विजय के उपलक्ष में उसने यहां एक बड़ी (१० एकड़ के घेरे में) सराय बनवाई। इसमें प्रवेश करने के लिये दो ऊंचे दुमंजिले द्वार हैं। इनके ऊपर मीनारें बनी हैं। बीच में मस्जिद है। बाहरी घेरेवाली दीवार से मिले हुये १३० महराबदार कमरे बने हैं। कुछ कमरे जू० स्कूल के काम आते हैं। १८९५ में जब तहसील कल्यानपुर से टूटकर यहां आ गई तब कुछ कमरे तहसील के काम आने लगे। सराय के पूर्वी द्वार के बाहर दुकानों की दुहरी पंक्ति है। यहां का बादशाही बाग और पक्का ताल भी औरंगजेब ने ही बनवाया था। कुछ समय तक यहां नील का कारखाना रहा। पहले खजुहा में धनुष (कमान) बहुत अच्छे बनते थे। इस समय यहां पीतल के बर्तन और ताश बनते हैं। लखन खेरा में रामलीला कंस लीला के उत्सव होते हैं। यहाँ थाना डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

खकरेरू गांव खागा से यमुना के सलेमपुर घाट को जाने वाली सड़क पर खागा से ११ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। भादों में भदुआ का मेला लगता है। इसके पास एक खेरा है कहते हैं पहले यहाँ किला था। किले के ऊपर मन्दिर बना। मन्दिर को तोड़कर मुसलमानों ने वहां मस्जिद बनाई। मन्दिर के नष्ट होने पर इसके सामान से १८५२ ई० में तहसील की इमारत बनी लेकिन कुछ कामदार पत्थर इस समय भी यहां पड़े हैं।

कोरा—का प्राचीन नगर कानपुर की सीमा के पास फतेहपुर से २६ मील पश्चिम की ओर है। जहानाबाद तक सड़क पक्की है। घाटमपुर और काल्पी को सड़क कच्ची है। कोरा से शिवराजपुर और कबिठान रेलवे स्टेशन को भी सड़कें गई हैं। कोरा का अधिक भाग रिन्द नदी के पुराने (१७५० ई० का) पुल के पश्चिम में सड़क के उत्तर में स्थित है। कोरा नगर एक नाले में ऊपर है। इसमें नहर का बचा हुआ पानी गिरता है। नाले के दूसरी ओर पुराना गौतम दुर्ग (किला) है। इस समय किले के स्थान पर कसाई घर है। बारादरी के पास पक्का ताल है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

कोट गांव—यमुना और बड़ी नदी के संगम से एक मील के ऊपर फतहपुर से १८ मील दूर है। यहां भार लोगों का एक किला था। अलाउद्दीन के समय में पठानों ने उन्हें भगा दिया। इसका उल्लेख गांव की मस्जिद में है जो ४९० हिजरी की बनी है।

कुंडा—कनक यमुना के ऊंचे किनारे पर फतेहपुर से १८ मील दूर है। यह पुराना गांव है। पन्द्रहवीं सदी में यहां के राजपूत मुसलमान बना लिये गये। यहां बांदा जिले को आने के लिये घाट है।

कुटिया—गांव के ऊंचे किनारे पर मालवा से ३ मील उत्तर-पश्चिम में फतेहपुर से ११ मील दूर है। यहां गंगा के रावतपुर घाट को मार्ग गया है। यह स्थान पुराना है। गांव के पश्चिम में ऊंचा

टीला है जिसे कोट कहते हैं। यहीं पुराना किला था। सम्भव है चीनी यात्रियों ने जि ओ यू तो स्थान का उल्लेख किया है वह यही हो।

कुटिला गांव गंगा के किनारे पर खागा (तहसील) से १४ मील है। इसके पड़ोस में दो किलों के खंडहर हैं। कहते हैं एक को जयचन्द के और दूसरे को अफगानों ने बनवाया था। यहां भादों, कार्तिक और माघ की प्रतिपदा को मेला लगता है।

ललौली—का बड़ा गांव फतेहपुर से बांदा को जानेवाली पक्की सड़क पर फतेहपुर से २१ मील और यमुना के चिल्ला घाट से २ मील दूर है। ललौली ऊंचे किनारे पर बसा है। इसके नीचे उपजाऊ मैदान है। दक्षिण की ओर सड़क पर डाकखाना और सराय है। इस सराय को १६ वीं सदी में बांदा के नवाब ने बनवाया था। लेकिन झांसी-मानिकपुर लाइन के खुल जाने से इधर का आना-जाना बहुत कम हो गया। थाना ऊंची जगह पर है। यहां प्रायः आधे दक्षिणी राजपूत मुसलमान हैं। इनके पूर्वज १४-५ ई० में मुसलमान बना लिये गये थे।

मल्वा—या मल्वन गांव ग्रांड ट्रंक रोड के पास उत्तर की ओर है। यह फतेहपुर से १२ मील दूर है। यहां पुराना थाना था। रेलवे स्टेशन को जाने वाली सड़क के पास पुराना पक्का तालाब है। १८५० में कल्लू फकीर ने यहां एक मस्जिद इमामबाड़ा और करबला बनवाया। गांव के बीच में लाल पत्थर का पुराना हिन्दू स्तम्भ है। कुछ दूरी पर यहां गदर में मरे हुए एक गोरे सिपाही की कब्र है। मल्वन में प्राइमरी स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

मड़वा—गांव गंगा के ऊंचे किनारे पर खागा (तहसील) से ६ मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

मौहर—गांव ईस्ट इंडियन रेलवे का स्टेशन है जिसे बिन्दकी रोड कहते हैं। यहां से बिन्दकी का गल्ला और दूसरा सामान बाहर भेजा जाता है। यहां डिस्ट्रिक बोर्ड की सराय डाकखाना है।

मुटौर गांव गाजीपुर (तहसील) से आठ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पूर्व की ओर साह से यमुना के औंटी घाट को सड़क जाती है। दो मील उत्तर-पूर्व की ओर फतेहपुर नहर की शाखा है। मुटौर ऊंचे भाग पर बसा है। जहां से नाले नीचे कछारी मैदान को गये हैं। यहां नहर की शाखाओं से सिंचाई होती है। गांव के उत्तर पश्चिम की ओर एक पुराना टूटा फूटा किला है। यह किला औरंगजेब के समय में बना।

नौबस्ता गांव गंगा के किनारे पर खागा से १० मील दूर स्थित है। घाट के उस पार राय बरेली को सड़क जाती है। अवध रुहेलखंड के खुलने से इसका व्यापार बन्द हो गया। गंगा के किनारे अठारहवीं सदी के कई छोटे छोटे मन्दिर हैं। यहां माघ, जेठ और भादों में गंगा स्नान का मेला होता है। यह गांव नया बसा है, पर इसकी स्थिति बड़ी पुरानी है। इसके पड़ोस में कई पुराने भग्नावशेष मिले हैं। कुछ फतेहपुर के टाउन हाल में रक्खे गये हैं।

रेन—गांव यमुना के किनारे गाजीपुर (तहसील) से १४ मील और फतेहपुर से १८ मील दूर है। प्रधान यमुना के ऊंचे टीले पर बसा है। इसे कई नालों ने काट दिया है। इसके पास एक प्राचीन नगर के खण्डहर रेन से कीर्ति खेड़ा तक फैले हुए हैं। इनमें कुछ जैन मूर्तियां हैं। अधिकतर हिन्दू देवताओं की मूर्तियां और मन्दिरों के सजाव के टुकड़े हैं। इनमें से १२ चुन कर फतेहपुर टाउन हाल के बगीचे में रक्खे गये हैं। एक मन्दिर में फागुन के महीने में महादेव का मेला होता है।

साह गांव उत्तर सीमा के पास बांदा को जानेवाली सड़क पर फतेहपुर से ७ मील दूर है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। साह-नहर शाखा से पड़ोस की भूमि सींची जाती है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

सरौली गांव खागा से १० मील दक्षिण की ओर यमुना और बड़ी नदी के बीच में एक ऊंचे टीले पर बसा है। यहां दो विशाल गुजराती इमली हैं। सातों गांव फतेहपुर के दक्षिणी-पूर्वी कोने पर स्थित हैं। यहां होकर बहरामपुर स्टेशन से नरैनी घाट को सड़क जाती है। सातों एक पुराने ऊंचे खेरे पर बसा है। इसके पड़ोस में ढाक का जंगल है। जो अब बहुत साफ हो गया है। इसके पड़ोस

में एक टूटी फूटी (खिचर) गढ़ी है। पड़ोस में कई पुरानी चीजें मिली हैं। गांव के उत्तरी सिरे पर स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। भादों में जलविहार के अवसर पर सानों जोग का मेला लगता है।

शिवराजपुर का पुराना गांव गंगा के ढालू किनारे पर मौहर (बिन्दकी रोड) स्टेशन से २१ मील और बिन्दकी से १० मील उत्तर की ओर है। दोनों स्थानों से यहां तक सड़क आई है। यही सड़क यहां से यमुना के चिल्ला घाट और बांदा को चली गई है। मौहर के पास ग्रांडट्रंकरोड इसे पार करके कानपुर की ओर जाती है। यह फतेहपुर से २३ मील दूर है। यहां से लगभग १ मील तक गंगा के किनारे घाट और जीर्ण मन्दिर हैं। कातिकी पूर्णिमा को गंगा स्नान का मेला लगता है। गंगा के घाट के उस पार उन्नाव जिला है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है।

सिजौली गांव रिन्द नदी के पश्चिमी किनारे के ऊपर ऊंची भूमि पर बसा है। यह फतेहपुर से २१ मील पश्चिम की ओर है। गांव के पूर्वी भाग को नालों ने काट दिया है। पड़ोस की भूमि नहर की सिजौली-उपशाखा द्वारा सींची जाती है। चैत और बैसाख में यहां दो छोटे मेले लगते हैं।

थरियांव गांव को रामपुर थरियांव कहते हैं। यह ग्राडट्रंकरोड से आध मील उत्तर की ओर फतेहपुर से १३ मील दूर है। दक्षिण-पश्चिम की ओर फौजी पड़ाव, सराय और थाना है। एक सड़क ईस्टइंडियन की बहरामपुर या थरियांव रेलवे स्टेशन को जाती है। यहाँ डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। उत्तर की ओर छोटी नदी की तली को खोदकर एक कृत्रिम झील बनाई गई है जिसे सागर कहते हैं। यहां एक ऊचा मन्दिर और शीतला देवी का स्थान है। यहीं बुद्ध भगवान का सिर बना हुआ है। आषाढ़ के महीने में यहां मेला लगता है।

ठिठौरा गांव जिले के दक्षिणी पश्चिमी कोने पर फतेहपुर से ११ मील दूर है। उत्तर-पूर्व की ओर कुछ दूरी पर बड़ी नदी बहती है। बड़ी नदी के किनारे कुछ नया मन्दिर है। अधिक दक्षिण की ओर दसवीं सदी का बना हुआ जीर्ण मन्दिर है।

टिंडौली गांव पुरानी बिन्दकी से डेढ़ मील उत्तर की ओर है। विचित्र मन्दिर रिन्द नदी के किनारे बने हुये हैं। यहां का प्राचीन विशाल मन्दिर सर्वोत्तम है। यह खजुराहों के मन्दिरों के ढंग का बना है।

इलाहाबाद

इलाहाबाद जिला इसी कमिश्नरी का पूर्वी जिला है। इसके उत्तर में एक तिहाई दूरी तक गंगा नदी सीमा बनाती है और इसे रायबरेली और परतावगढ़ जिलों से अलग करती है। आगे चलकर गंगा इलाहाबाद की नदी हो जाती है और शेष दो तिहाई दूरी तक जौनपुर जिला उत्तरी सीमा बनाता है। पूर्व और दक्षिण-पूर्व में मिर्जापुर का जिला है। दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में रीवा राज्य है। पश्चिम की ओर बांदा और फतेहपुर के जिले हैं।

इलाहाबाद की सीमा बड़ी जटिल है। रीवा राज्य और परतावगढ़ जिले के कई गांव इस जिले में घुसे हुये हैं। पूर्व से पश्चिम तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ७४ मील और उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई ६४ मील है। इसका औसत क्षेत्रफल २८८१ वर्ग मील है। सीमा के पास गंगा और यमुना की धारा के इधर उधर हो जाने से यह क्षेत्रफल कुछ घटता बढ़ता रहता है।

गंगा और और यमुना किले के पास इलाहाबाद शहर में मिलती हैं। इन दोनों नदियों ने जिले को तीन प्राकृतिक भागों में बांट दिया है। गंगा और यमुना के बीच वाले भाग को अक्सर दावा कहते हैं। इसमें इलाहाबाद, सिराथू और मंझनपुर की तहसीलें हैं। गंगा पार वाले प्रदेश में सौरों, फूलपुर और हड़िया तहसीलें हैं। यमुना पार वाले भाग में बारा करछना और मेजा तहसीलें हैं।

द्वाब का प्रदेश-फतेहपुर द्वाब का ही अंग है। यहां यह त्रिभुजाकार है। इसका क्षेत्रफल ८१६ वर्ग मील है। गंगा इसकी उत्तरी सीमा बनाती है। गंगा के ऊंचे किनारों को नालों ने काट दिया है। ऊंचे किनारों और धारा के बीच में रेतीली अथवा चिकनी मिट्टी का कछारी प्रदेश है। यह कहीं अधिक चौड़ा है। कहीं तंग हो गया है। बाढ़ के दिनों में यह प्रायः पानी से डूब जाता है। इसके उपजाऊ भागों में रबी की फसल अच्छी होती है। रेतीले भागों में (कड़ा और शाहजादपुर में पास) कांस और झाऊ होती है। किनारा ऊंचा और कंकरीला है। कहीं कहीं नालों ने इसे मीलों तक काट दिया है। किनारे इतने ऊंचे हैं कि बड़ी से बड़ी बाढ़ भी इनके ऊपर तक नहीं पहुँचती है। भीतर की ओर भूमि क्रमशः ढालू होगई है अतः यह प्रदेश बीच में अधिक उपजाऊ और कुछ नीचा है। बीचवाले निचले भाग में ससुरखदेरी नदी की घाटी है। ससुरखदेरी के पड़ोस लहरदार कुछ कम उपजाऊ भूमि है। कहीं कहीं एक दम ऊसर है। इलाहाबाद शहर के पश्चिम में यमुना-संगम के पड़ोस में इसे गहरे नालों ने काट दिया है। जहां ससुर खदेरी इलाहाबाद जिले में प्रवेश करती है। तो आरम्भ में इसके किनारे पड़ोस की जमीन से समतल है। कुछ दूर तक यहाँ ढाक का वन है। पश्चिम द्वावा में ससुर खदेरी के पास तक चिकनी मिट्टी की पेटी है। यहां भूमि अक्सर ऊसर है। तालावों और झीलों की अधिकता है। यमुना के ऊँचे किनारे कंकड़ों से भरे पड़े हैं यहां सिंचाई की भी सुविधा नहीं है। निचले भाग में अक्सर ढाक का जंगल है। अलवरा झील के पड़ोस में मिट्टी कुछ काली है। और बुन्देलखंड की मार भूमि से मिलती जुलती है। यह भाग द्वावा के और भागों से भिन्न मालूम पड़ता है। पवोसा के पास तो एक पहाड़ी भी उठी हुई है। फिर भी द्वावा प्रायः सब कहीं समतल और उपजाऊ है।

गंगा पार का प्रदेश अवध की तरह है। इस प्रदेश के दक्षिणी सिरे पर गङ्गा है। झूसी, नवाबगञ्ज आदि स्थानों पर गङ्गा का चौड़ा कछार है। गङ्गा का ऊचा किनारा टूटा फूटा और रेतीला है। इस किनारे

के उत्तर में हलकी उपजाऊ जमीन है इसके आगे चिकनी मिट्टी है जो जिले की सीमा तक चली गई है। कुओं में पानी नजदीक मिल जाता है। झील और तालाब भी बहुत हैं। वर्षा का फालतू पानी उत्तर की ओर सई में अथवा दक्षिण की ओर मन्सेता में पहुँच कर गङ्गा में आता है। पूर्वी भाग का कुछ पानी वरना नदी में पहुँचता है। इधर की चिकनी मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। इसमें धान बहुत होता है। गेहूँ और गन्ना भी होता है। खेतों का लगान भी अधिक है। इस ओर गांव बहुत छोटे हैं। घर प्रायः खपरैल या फूससे छाये हुये हैं। इस प्रदेश का क्षेत्रफल ...८ वर्ग मील है। यमुना पार वाला प्रदेश जिले के प्रदेशों से एकदम भिन्न है। इसका क्षेत्रफल ११८१ वर्ग मील है। यह प्रदेश वास्तव में बुन्देलखंड का भाग है। बारा परगने में यमुना के किनारे कुछ कछारी भूमि है। लेकिन भीतर की ओर नीची पहाड़ियां आरम्भ हो जाती हैं जो टौंस नदी तक चली गई हैं। यह विन्ध्याचल की पहाड़ियां हैं। यह बांदा जिले के समान हैं। इनके ऊपर मोटे करारों की मिट्टी की पतली पेटी बिछी हुई है। नीचे कड़ी चट्टानें हैं। यहां आबादी बहुत कम है।

टौंस के दक्षिण में मेजा तहसील के पूर्व में उपजाऊ भूमि मिलती है। उपजाऊ भूमि गंगा के किनारे से मांडा पहाड़ियों तक चली गई है। विन्ध्याचल की पहाड़ियां मिर्जापुर की सीमा से मांडा, मेजा और कोहरार होती हुई पश्चिमी सीमा तक चली गई हैं। इनके पड़ोस में मार और चिकनी मिट्टी का पठार है। नालों ने इसे स्थान स्थान पर काट दिया है। गरमी में प्राण झुलसाने वाली लू चलती है। वर्षाऋतु में यहां दलदल हो जाता है। ऊसर भूमि में कांस बहुत हैं। कुछ भाग में जंगल है। कहीं कहीं खेती होती है।

भूगर्भ गंगा पार वाले प्रदेशमें उपजाऊ कछारी कांप है। इसी तरह की कांप द्वाबा, करछना तहसील और मेजा के उत्तर-पूर्व में है। बुन्देलखंडी मोटे कण वाली मिट्टी द्वाब के दक्षिण में (विशेष कर अथर्वन परगना में मिलती है। यमुना पार के दक्षिणी पश्चिमी भाग में विन्ध्याचल की पहाड़ियां मिलती हैं। यमुना पार वाले भाग में गंगा की कांप और विन्ध्याचल बालू का मेल होता है। विन्ध्याचल की पहाड़ियों के ऊपरी परत कुछ लाल बलुआ पत्थर के बने हैं। उत्तर की ओर इनका सपाट उतार है। दक्षिण की ओर पठार है। दक्षिण की रीवां का बलुआ पत्थर और पन्ना की कड़ी मिट्टी मिलती है। पन्ना श्रेणी की अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से १२१८ फुट है कई भागों में यह १००० फुट से अधिक ऊंची है। उत्तर की ओर इसका ढाल सपाट है। औसत से प्रतिमील में इसका उतार ४२० फुट है। द्वाबा की भूमि का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। द्वाबा में पश्चिमी भाग की ऊंचाई ३४७ फुट है। इलाहाबाद शहर के पास भूमि केवल ३१५ फुट ऊंची रह गई है। गंगा के ऊत्तर में भूमि उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर ढालू होती गई। झूसी के पास भूमि ३०७ फुट ऊंची है। मिर्जापुर की सीमा के पास इलाहाबाद जिले की भूमि समुद्र-तल से केवल २९३ फुट ऊँची रहगई है।

द्वाबा में कहीं कहीं बलुआ मिट्टी मिलती है। निचले भाग में मटियार है। पानी से एक दम भीगी चिकनी मिट्टी चचार कहलाती है। यह धान उगाने के काम आती है। बालू मिली हुई चिकनी मिट्टी दुमट कहलाती है। सँझनपुर तहसील में यमुना के उत्तर में कपास उगाने योग्य काली मार मिट्टी मिलती है। पहाड़ी भूमि मोटा कहलाती है। यह खेती के योग्य नहीं होती है। तलहटी की मिट्टी चौथा कहलाती है। नदियों के पड़ोस की नीची भूमि कछार या तराई कहलाती है। ऊँची भूमि उपरहार कहलाती है।

गंगा नदी फतेहपुर जिले के उत्तरी सिरे के पास बहने के बाद २३ मील तक सिराथू और इलाहाबाद तहसीलों की उत्तरी सीमा बनाती हैं। पट्टी नरौर के पास यह जिले के भीतर घुसती है। यहां इसकी तली चौड़ी है। इस चौड़ी तली में गंगा इधर उधर मुड़ती हुई बहती है। अफजलपुर सातों और कड़ा, शहजादपुर इसके किनारे हैं। दक्षिण में इलाहाबाद तहसील और उत्तर में सोरों तहसीलों के बीच में बहती हुई गंगा इलाहाबाद छावनी में पहुँचती है। यहा से फाफामऊ तक यह उत्तर पूर्व की ओर मुड़ती है। सँगम के आगे किले के समीप यमुना सँगम तक यह दक्षिण की ओर मुड़ती है। सँगम के आगे यह फिर दक्षिण पूर्व की

ओर मुड़ती है। संगम के आगे यह फिर दक्षिण पूर्व की ओर मुड़ती है। इसके उत्तर में हंडिया और फूलपुर की तहसील हैं दक्षिण में करछना और मेजा की तहसीलें हैं। इसके आगे यह मिर्जापुर जिले को छूती है और ११ मील तक मेजा तहसील और मिर्जापुर जिले के बीच में सीमा बनाती है। भूसी और इलाहाबाद के नीचे सिरसा के पास गंगा में टोंस नदी मिलती है। दूसरी ओर बायें किनारे पर लच्छागिरी और कसौधन हैं। पहले यहां तक स्टीमर आते थे। वर्षा ऋतु में गङ्गा यहां विशाल नदी हो जाती है। इसकी चौड़ाई दो तीन मील हो जाती है। शीत काल और ग्रीष्म ऋतु में यह सिकुड़ जाती है। यह दो या अधिक धाराओं में बट जाती है और सिंगरौर आदि स्थानों में पांज हो जाती है। बाढ़ में समुद्र-तल से गङ्गा की उँचाई २८० फुट और ग्रीष्म ऋतु में २३७ फुट रह जाती है। फाफामऊ के पास बिस्नार, भूसी के पास मनसेता, उस्मानपुर के पास बैरगिया, लच्छागिरि के पास अन्दावा और गोदावरी नाले गङ्गा में बायें किनारे पर मिलते हैं। दाहिने किनारे पर भी कई नाले मिलते हैं। लेकिन गङ्गा में इस जिले में मिलने वाली प्रधान नदी यमुना है। यमुना नदी इलाहाबाद जिले में ६३ मील लम्बी है। यह पश्चिमी सिरे पर इलाहाबाद जिले को छूती है। बहुत दूर तक यह इलाहाबाद के अथर्वन, करारी और चायल परगनों को बांदा जिले की कमासिन और मऊ तहसलों से अलग करती है। यमुना की धारा गहरी और किनारे सपाट हैं। कहीं कहीं तली के ऊपर ११० फुट ऊँचे किनारे उठे हुये हैं। यमुना के पवोसा पहाड़ी को काट कर विन्ध्याचल की दूसरी श्रेणियों से अलग कर दिया है। परतापपुर के पास यमुना इलाहाबाद जिले में प्रवेश करती है। इसके उत्तर में चायल परगना और दक्षिण में बरा और अरैल के परगने हैं। किले के पास यह गङ्गा में मिलती हैं। सङ्गम के पास अरैल, चायल और भूसी परगने एक दूसरे को छूते हैं। बिसौना से देउरिया तक यमुना दक्षिण की ओर मुड़ती है। देउरिया के पास ही यमुना के बीच में सुजावन देवता की पहाड़ी है। यह उत्तर की ओर मुड़ती है। इलाहाबाद शहर में रेल के पुल के आगे किले के नीचे यह गङ्गा में मिल जाती है। वर्षाऋतु में इसकी चौड़ाई डेढ़ दो मील हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में आधा मील रह जाती है यमुना के पानी में कम मिट्टी रहती है। इसकी गहराई भी अधिक है। इसलिये वर्षा के अन्त में इसका जल नीला हो जाता है। कभी कभी यमुना में ४६½ फुट ऊँची बाढ़ आती है। यमुना में छोटे छोटे कई नाले मिलते हैं। इनमें ससुरखदेरी नदी सब से बड़ी है। यह करेलाबाग (इलाहाबाद) के पश्चिम में यमुना में मिलती है और फतेहपुर जिले से आती है। ससुरखदेरी द्वावा के बीच वाले भाग का पानी बहा लाती है। सिराथू तहसील में इसके किनारे पड़ोस की भूमि से समतल हैं। मँझनपुर तहसील में इसकी तली गहरी होने लगती है। यमुना सङ्गम के पास इसके किनारे बहुत ऊँचे हो जाते हैं वर्षाऋतु में इसमें नाव चलती हैं। ग्रीष्म काल में यह सूख जाती है।

टोंस नदी रीवां राज्य के पहाड़ी प्रदेश से निकलती है। बारा परगने में देउरिया के पास यह इलाहाबाद जिले को छूती है। कुछ मील तक सीमा के पास बह कर यह जिले के भीतर घुसती है। उत्तर-पूर्व की ओर बह कर सिरसा के पास यह गङ्गा में मिल जाती है। टोंस नदी ४० मील तक एक ओर उत्तर में बारा और करछना तहसील और दूसरी ओर दक्षिण में मेजा तहसील के बीच में सीमा बनाती है। टोंस नदी में काफी पानी रहता है। लेकिन तली में कँकड़-पत्थर होने से इसमें नावें नहीं चल सकती हैं। टोंस के किनारे सपाट हैं। वे नालों से कटे हुये हैं। वर्षाऋतु में पुल के पास इसमें ६२ फुट ऊँची बाढ़ आती है। इस ऋतु में इसकी चौड़ाई ४०० गज हो जाती है। ग्रीष्म काल में इसकी चौड़ाई १५० गज से अधिक नहीं होती है। टोंस की प्रधान सहायक बेलन नदी है जो बिजैगढ़ राज्य की पहाड़ियों से निकलती है। कोंदी के पास यह टोंस में मिल जाती है। लानी आदि छोटे छोटे कई नाले टोंस में मिलते हैं।

इलाहाबाद जिले के अधिकतर जिले का वर्षाजल तेजी के साथ नदियों में बह जाता है। पानी न ठहरने से झीलों की कमी है। गङ्गा के उत्तर में सिथारा

के पास जोगी नाल सब से बड़ा है। छोटे छोटे ताल और स्थानों में भी हैं। इलाहाबाद जिले में लगभग २० फीसदी भूमि वीरान है और खेती के काम नहीं आती है। इसमें वह भूमि भी शामिल है जहां घर बने हैं, सड़कें और रेलें हैं अथवा पानी है। अधिक वीरान जमीन यमुना के दक्षिण में मेजा तहसील में है।

गङ्गा पार की तहसीलों में बहुत कम जङ्गल हैं। केवल कहीं कहीं ढाक का जङ्गल है। द्वाब में सिराथू तहसील और अथर्वन परगने में ढाक का जङ्गल बहुत है। ससुरखदेरी नदी के मार्ग में बहुत दूर तक ढाक का जङ्गल है। गङ्गा के किनारों के पास बेर और बबूल के पेड़ हैं। सब से बड़ा जङ्गल यमुना पार बारा और मेजा तहसीलों में मिलता है। यहां बेर, तेन्दू, जामुन, खिउहा, गुठर, महुआ, आम, गूलर और सलई के पेड़ हैं। कहीं कहीं सागौन के पेड़ मिलते हैं। करछना के दक्षिण में मार भूमि में गांडर और खस खस है। निचली भूमि में सरपत उगता है। शिवराजपुर में अच्छा पत्थर मिलता है। कंकड़ कई भागों में मिलता है। कुछ स्थानों में रेह भी पाया जाता है। जङ्गलों में भालू, चीता, भेड़िया और हिरण मिलते हैं। कछार में जङ्गली सुअर, नील गाय बहुत हैं। गङ्गा, यमुना और टोंस नदियों में मगर और घड़ियाल पाये जाते हैं। इनमें तरह तरह की मछलियां भी मिलती हैं। इलाहाबाद जिले का शीतकाल बड़ा सुहावना रहता है। शीतकाल में पछुआ हवा चलने से हवा में खुश्की भी बढ़ जाती है शीतकाल प्रायः दशहरा से होली तक रहता है। शीतकाल में बहुत कम वर्षा होती है। पौष और माघ में सबसे अधिक जाड़ा पड़ता है। शीतकाल का औसत तापक्रम ६० अंश फारेन हाइट रहता है। मई महीने का औसत तापक्रम ६२ अंश फारेन हाइट हो जाता है। कभी कभी यह तापक्रम १०० अंश से ऊपर पहुँचता है। वर्षा होने पर तापक्रम कुछ घट जाता है। लूका चलना एकदम बन्द हो जाता है। लेकिन हवा में नमी बढ़ जाने से बदली की गरमी असह्य हो जाती है। इलाहाबाद जिले में औसत वार्षिक वर्षा ३८ इंच होती है। पश्चिम की ओर सिराथू और मंझनपुर तहसीलों में कुछ कम (३६ इंच) वर्षा होती है। गङ्गा पार हंडिया में ३७ इंच, फूलपुर और सौरों में ३६ इंच वर्षा होती है। दक्षिण-पूर्व की ओर अधिक वर्षा होती है। मेजा में ३६ इंच और करछना में ४० इंच वर्षा होती है। अतिवर्षा की वर्षों में ५० इंच और कभी कभी प्रायः ७० इंच तक वर्षा हुई है। दुर्भिक्ष की वर्षों में २० इंच वर्षा हुई है। मंझनपुर में एक वर्ष (१८८० में) केवल ११ इंच पानी बरसा है।

भूरचना में अन्तर होने से इलाहाबाद जिले के भिन्न भिन्न भागों की उर्वरता में भी अन्तर है। बहुत सा भाग ऐसा ऊसर और बीरान है कि वहां कोई फसल नहीं उगती है। कुछ भागों में भूमि अधिक उपजाऊ होने से दुफसली है जहां वर्ष में दो फसलें काटी जाती हैं। लगभग ६० फीसदी भूमि में खेती है। २० फीसदी वीरान है। बीस फीसदी खेती के योग्य होने पर भी खेती के काम नहीं आती है। द्वाब में रबी, गङ्गा पार खरीफ, यमुना पार टोंस के उत्तर में रबी और टोंस के दक्षिण में खरीफ की फसल प्रधान है। खरीफ की फसल में ४० फीसदी धान रहता है। इसमें अधिकतर क्वारी धान होता है। कुछ ८ फीसदी अगहनी रहता है। गङ्गा के उत्तर सोरों, सिकन्दरा और माह परगनों में धान होता है। द्वाब में चिकनी मिट्टी वाले कड़ा और अथर्वन परगनों में धान होता है। यमुना पार बारा के पूर्व और खैरागढ़ की चांचर भूमि में धान होता है। गङ्गा और यमुना के किनारे कहीं कहीं चिकनी मिट्टी पड़ जाने पर मल्लाह लोग जेठी चावल उगा लेते हैं। ज्वार का स्थान चावल के बाद दूसरा है। औसत से जिले की खरीफ फसल की २२ फीसदी भूमि में ज्वार होती है। ऊँची और बलुई भूमि में ज्वार के स्थान पर बाजरा बोया जाता है। खरीफ की लगभग १८ फीसदी भूमि में ज्वार होता है। ज्वार और बाजरा के साथ अक्सर उर्द, मूंग और अरहर बो देते हैं। कुछ भाग में मकई उगाई जाती है। छोटे पौदों में कोदों, मड़ुआ, सावां और ककुनी हैं। कुछ भागों में कपास और सनई उगाई जाती है। नगरों

के पास तरह तरह के शाक उगाये जाते हैं। प्रतापगढ़ के समीप वाले स्थानों में पान के बगीचे हैं।

रबी की फसलों में कुछ गेहूँ, अधिकतर चना है। बहुत बड़े भाग में गेहूँ मटर या गेहूँ चना और सरसों अथवा जो मटर और चना मिलाकर बोते हैं। नदियों के पड़ोस में खरबूजा, ककड़ी और तरबूज उगाते हैं। अधिकतर भागों में कुओं से सिंचाई होती है। कुछ कुएँ पक्के हैं। अधिकतर कच्चे हैं।

पश्चिमी भाग में नहर से सिंचाई होती है। गङ्गा नहर को द्वाब के बीच में इलाहाबाद तक लाने का विचार था। लेकिन इसमें पानी की इतनी कमी थी कि यह योजना स्थगित रही। जब लोअर (निचली) गङ्गा नहर खुली तो प्रधान नहर तो फतेहपुर जिले में धाता के पास समाप्त कर दी गई। लेकिन इसकी उपशाखायें ४० मील तक इलाहाबाद जिले के अथर्बन, दक्षिणी करारी और दक्षिणी पश्चिमी चायल को सींचती हैं। ससुरखदेरी के किनारे बसे हुये नूरपुर गाँव के पास नहर की इस उपशाखा का अन्त हो जाता है। यमुना पार वाले भाग में सिंचाई की बड़ी आवश्यकता है लेकिन टोंस, बेलन आदि पहाड़ी और बरसाती नदियाँ सिंचाई के लिये अनुकूल नहीं हैं।

अकबर के समय में इलाहाबाद में बढ़िया कालीनें बुनी जाती थीं। आगे चल कर यह कारबार लुप्त हो गया।

मऊऐमा में कुछ साड़ियां बुनी जाती हैं। इनकी बम्बई में बड़ी मांग है। फूलपुर, कड़ा और कुछ अन्य स्थानों के जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। कुछ गाँवों के गड़रिये अपनी भेड़ों की ऊन से मोटे कम्बल बुनते हैं। जड़ाऊ और गोटा का काम दारानगर और कड़ा में होता है। पीतल के बर्तन शमसाबाद सराय-आकिल में अच्छे बनते हैं। लोहे के ताले और गोटे फूलपुर में बनते हैं। इलाहाबाद शहर में ट्रंक और यमुना के किनारे छोटी छोटी नावें बनाने का काम होता है। यहां चमड़े, पीतल के बर्तन, बाल्टा, टोकरी, जाल और लकड़ी का सामान भी बनाया जाता है। नैनी में शीशे और शक्कर का कारखाना है। शीशे के कारबार के लिये नैनी की स्थिति बड़ी उपयुक्त है। यहां यमुना की बालू, लोहगरा से क्वार्ट्ज, रानीगंज से कोयला सुगमता से आ जाता है। शीशे का सामान बाहर भेजने के समय पैक करने के लिये पड़ोस में धान का प्याल भी बहुत मिल जाता है।

कुछ दिनों से इलाहाबाद में बीड़ी बनाने छापई का टाइप ढालने और हाथ से कागज बनाने का भी काम होने लगा है।

पुराने समय में (जब अधिकतर आना जाना नाव के द्वारा होता था) इलाहाबाद का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा था। एक एक घाट में वर्ष भर में ढाई तीन हजार लदी हुई नावें उतरा करती थीं। रेलों ने नावों का व्यापार छीन लिया और व्यापारिक दौड़ में इलाहाबाद कानपुर से पीछे रह गया।

इलाहाबाद जिले का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। मनु के समय में यह ब्रह्मर्षि का भाग था जो गङ्गा-यमुना के बीच ब्रह्मावर्त से घिरा हुआ था। वनवास-यात्रा के समय श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता जी ने सिंगरौर (शृंगवेरपुर) के पास गङ्गा को पार किया था यहीं भिल्ल राजा गुह ने उनका स्वागत किया था। उन्होंने प्रयाग के मन्दिर और अक्षयवट (कभी नष्ट न होने वाले बरगद) के दर्शन किये थे। यहीं भारद्वाज आश्रम के पास रामचन्द्र जी की खोज में आये हुये भरत का सत्कार किया गया था। प्रयाग में त्रिवेणी (गङ्गा यमुना और सरस्वती) के संगम के पास यज्ञ विशेष रूप से होते थे। इसी से इसका नाम प्रयाग पड़ गया। कहते हैं यहीं ब्रह्मा जी ने अश्वमेध यज्ञ किया था। यहीं संखासुर से वेद प्राप्त किये गये थे। इन कई कारणों से प्रयाग को तीर्थों का राजा अथवा तीर्थराज कहते हैं।

कहते हैं वर्तमान कोसम के पड़ोस में ही प्राचीन कौशाम्बी या कुसुम नगरी थी जहां श्री रामचन्द्र जी के आत्मज कुश ने अपनी राजधानी बनाई थी। यहीं पांडवों ने अपने वनवास के १२ वर्ष बिताये थे। यहीं हस्तिनापुर के नष्ट होने पर कौरवों ने राजधानी बनाई थी। उनके नेता चक्र के २२ उत्तराधिकारियों ने कौशाम्बी में राज्य किया। इन्हीं में एक उदीयन था जिसने ईसा से ६०० वर्ष पूर्व यहां राज्य किया और जिसका उल्लेख कालिदास ने मेघदूत में किया है। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग ने भी उसका

उल्लेख किया और लिखा, कि उदायन ने बुद्ध भगवान की एक विशाल मूर्ति बनवाई और महल के भीतर एक पत्थर छत्र (तम्बू) के नीचे स्थापित किया। यह बौद्ध धर्म का एक बड़ा केन्द्र था। यहां जैनियों का भी एक मन्दिर था। कड़ा में पाये गये १०३६ ई० के एक शिला लेख में कौशाम्बी का उल्लेख है। कौशाम्बी नगरी के भग्नावशेष इलाहाबाद शहर से ३६ मील की दूरी पर कोसमखिराज और कोसम इनाम गावों के बीच में स्थित है। किले का घेरा साढ़े चार मील था। चारदीवारी पड़ोस की भूमि से ३० से ३५ फुट तक ऊँची थी। बुर्ज इनसे भी कहीं अधिक ऊंचे थे। यहां का स्तम्भ १५ फुट ऊँचा है। इसका घेरा ८ फुट है। यहां से ४ मील पश्चिम की ओर पबोसा की गुफा है। इसके ऊपर जैन मन्दिर है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यहां अर्जुन के पौत्र राजा परीक्षित का किला था। गौतम बुद्ध के समय में इलाहाबाद का जिला अवध या कौशल राज्य का अंग था। बुद्ध भगवान ने अपने प्रचार का छठा और नवां वर्ष यहां बिताया। मगध के अजातशत्रु ने यहां आक्रमण किया और अवध के राज्य को नष्ट कर दिया। ईसा से ३२१ वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य मगध का राजा हुआ। शीघ्र ही समस्त उत्तरी भारत पर उसका अधिकार हो गया। ईसा से २७२ वर्ष पूर्व उसका पौत्र अशोक मगध के राज्य-सिंहासन पर बैठा। ईसा से २३२ वर्ष पूर्व उसने प्रयाग का प्रसिद्ध स्तम्भ खड़ा किया यह स्तम्भ बलुआ पत्थर की एक पूरी शिला का बना हुआ है। इसमें किसी प्रकार का जोड़ नहीं है। यह स्तम्भ ३५ फुट लम्बा है। इसका व्यास २ फुट ११ इञ्च है। ऊपरी भाग का व्यास घटते घटते २ फुट २ इञ्च रह गया है। इसका शीर्ष ऊपरी भाग लुप्त हो गया है। इसके ऊपर सम्भवतः सिंह की मूर्ति थी। इस स्तम्भ पर अशोक के छः आदेश खुदे हुये हैं। आरम्भ में कौशाम्बी के शासकों को सम्बोधित किया गया है। इससे अनुमान किया जाता है कि पहले पहल यह कौशाम्बी में खड़ा किया गया था। फीरोज तुगलक इसी प्रकार का एक स्तम्भ दिल्ली को ले गया था। सम्भव है वही इस स्तम्भ को कौशाम्बी से इलाहाबाद ले आया हो। इस स्तम्भ पर समुद्र गुप्त का भी एक लेख है। एक लेख जहांगीर का है। भिन्न भिन्न अवसरों पर यात्रियों ने भी अपने नाम खोद दिये। अशोक ने इस स्तम्भ को खड़ा किया। कुछ समय बाद यह गिर पड़ा। समुद्र गुप्त ने इसे खड़ा किया। आगे चल कर यह फिर गिर पड़ा। फीरोज तुगलक ने इसे खड़ा करवाया। जहांगीर ने इसे गिरा हुआ पाया और इसे किले के बीच में खड़ा किया। १७९८ में अङ्गरेजी जनरल किड ने उसे उखड़वा डाला। १८३८ में यह फिर खड़ा किया गया। इसमें राजा बीरबल का नाम भी खुदा हुआ है जो १५७५ ई० में यहां कुम्भ मेले में आया था। अशोक के समय से गुप्त काल तक इस जिले के इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। ३२६ ई० में समुद्र गुप्त मगध के सिंहासन पर बैठा। इसके आगे इलाहाबाद मगधराज्य में मिल गया। समुद्रगुप्त की दिग्विजय का हाल स्तम्भ पर संस्कृत में खुदा हुआ है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में चीनी यात्री फाहियान प्रयाग और कौशाम्बी में आया। उसने देश को घना बसा हुआ और धनधान्य से परिपूर्ण पाया। श्वेत हूणों के आक्रमण के समय (छठी सदी) तक इलाहाबाद मगध राज्य का अंग रहा। इसके बाद अराजकता फैली। उज्जैन के राजा यशोधर्मन ने हूणों को हराकर गङ्गा की घाटी में अपना राज्य स्थापित किया। इसके बाद थानेश्वर के राजा हर्षवर्धन ने कन्नौज को जीतकर गङ्गा की घाटी में अपना राज्य स्थापित किया। हर्षवर्द्धन के कोष में जो कुछ धन संचित हो पाता था उसे वह हर पांचवें वर्ष प्रयाग आकर साधु सन्तों और दीन दुःखियों को बांट देता था। लोगों की प्रयाग में बड़ी भीड़ हो जाती थी। माघ मेला अप्रैल महीने तक लगा रहता था। यहां बुद्ध, शिव और सूर्य की पूजा होती थी। ६४४ ईस्वी में हर्षवर्द्धन ने चीनी यात्री ह्वानसांग को निमन्त्रण दिया। वह ८५ दिन तक राजा के साथ रहा। इसके बाद वह कौशाम्बी को गया। उस समय पातालपुरी का मन्दिर प्रयाग के बीच में था। मन्दिर और गङ्गा यमुना के सगम के बीच में बहुत बड़ा रेतीला मैदान था। ६४८ में हर्ष की मृत्यु के बाद प्रयाग का इतिहास फिर अंधकार में पड़ गया। कुछ समय (७३२ से ८५१ तक)

यहां गौड़ के पाल राजाओं का राज्य रहा अधिकतर समय में यहां कन्नौज का शासन रहा परिहार राजाओं के समय में प्रतिष्ठानपुर (झूँसी) प्रान्त की राजधानी था। । कौशाम्बी जिसमें कड़ा भी शामिल था एक जिले का केन्द्र स्थान था। महमूद (गजनी) के आक्रमण से परिहार शक्ति क्षीण हो गई। राजा त्रिलोचन पाल इलाहाद में रहने लगा। उसका उत्तराधिकारी यश पाल भी यहीं रहता था। कड़ा के शिला लेख (१०३६ में) में इसी राजा का उल्लेख है। १०६० में इसकी शक्ति एकदम नष्ट हो गई। इस वर्ष गहरवार राजा चन्द्रदेव ने कन्नौज पर आक्रमण किया और प्रयाग तक अपना राज्य फैला लिया मुसलमानों का आक्रमण होने पर गहरवार राजपूतों ने मांडा में शरण ली। मांडा के वर्तमान राजा गहरवार हैं।
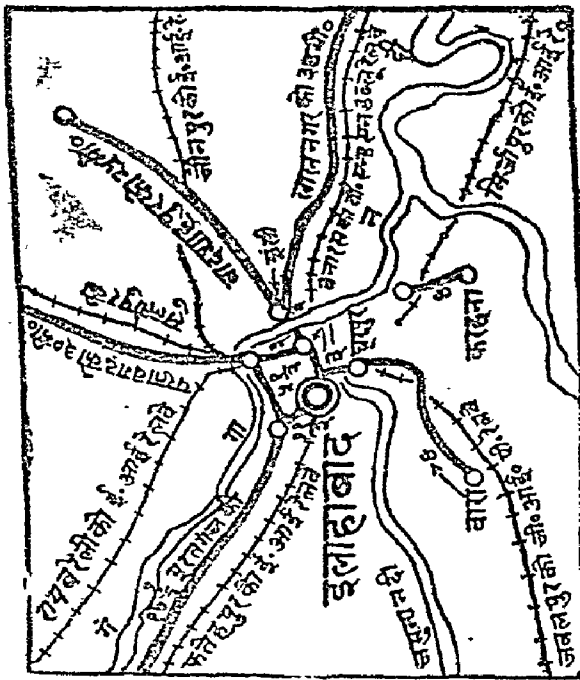
शहाबुद्दीन गोरी के आक्रमण के समय तक यहां राजपूतों का राज्य रहा। ११६४ में जयचन्द की पराजय और मृत्यु के बाद विजयी मुसलमान बनारस तक पहुँच गये। १२०२ में कालिजर पर उनका अधिकार हो गया। इसके कुछ ही समय बाद पड़ोस के प्रान्त की राजधानी कड़ा में बनी। इसके तीन शताब्दी बाद इलाहाबाद में राजधानी की स्थापना हुई। १२४८ में छोटे नसीरुद्दीन की सेना कड़ा में आ गई। १२५८ में यहां विद्रोह हुआ। पर किसी तरह उलुगखां (गयासुद्दीन बलबन) ने विद्रोह को शान्त करके अपना अधिकार जमा लिया १२६० में उसके मरने पर उसके भतीजे ने अपने आप को सूबेदार घोषित करके दिल्ली पर चढ़ाई की। लेकिन जालालुद्दीन (फीरोज) ने उसे हटाकर अपने भतीजे अलाउद्दीन (मुहम्मद) को कड़ा का गवर्नर नियुक्त किया। १२६५ में सुल्तान अपने भतीजे से भेंट करने आया। लेकिन अलाउद्दीन ने अपने वृद्ध चाचा को कड़ा और मानिकपुर के बीच में गङ्गा के उत्तरी किनारे पर धोखे से मरवा डाला। इसके पश्चात अलाउद्दीन दिल्ली पहुँचकर सुल्तान बन गया। कड़ा प्रान्त का शासन एक सूबेदार को सौंप दिया गया। १३२५ में मुहम्मद तुगलक ने सेना लाकर द्वाब को उजाड़ दिया। इसके अत्याचार से लोग त्राहि त्राहि करने लगे। वार वार विद्रोह होने लगा।

१३७७ में फीरोजशाह ने कड़ा, डलमऊ और महोबा की सूबेदारी मर्दान दौलत सौंप दी। वह नसीरुलमुल्क मालिक अशर्फ कहलाने लगा। एक वर्ष बाद उसका बेटा सूबेदार बना। १३६४ में इस बेटे का मन्त्री (वजीर) कन्नौज से लेकर बिहार तक सारे प्रदेश पर शासन करने लगा। इधर हिन्दू सरदार विद्रोह करते रहे। उधर मुगलों के आक्रमण से दिल्ली की शक्ति डगमगाने लगी। यह वजीर अवसर पाकर दिल्ली से स्वाधीन हो गया। १३६६ में उसका भतीजा जिसे उसने बेटा मान लिया था, जौनपुर का सुल्तान बन गया। १४०१ में उसका भाई इब्राहीम शाह जौनपुर की गद्दी पर बैठा। ४०६ में उसने कन्नौज ले लिया। १४२६ में उसने कालपी पर अधिकार कर लिया। १४३७ में यमुना के दक्षिण में बड़ी दूर तक वह मालिक बन गया। उसने हिन्दू सरदारों को मिला लिया। १४४० में महमूद स्वामी बना। दिल्ली सुल्तान बहलोल लोदी ने उसे बहुत बढ़ने न दिया। महमूद के बाद मुहम्मद और फिर हुसेन जौनपुर की गद्दी पर बैठा। लेकिन बहलोल से लड़ाई चलती रही। १४७६ में बहलोल ने जौनपुर जीत लिया और अपने बेटे आलम खां को कड़ा का सूबेदार बनाया।

हार जाने पर भी हिन्दू राजाओं की सहायता से लड़ाई जारी रक्खी। हुसेन के एक अफसर ने जौनपुर के सूबेदार मुबारक खां को भूसी से प्रयाग के आने के लिये गंगा पार करते समय पकड़ लिया और पन्ना के राजा को सौंप दिया। ७६४ में पन्ना का राजा हार गया। इससे मुबारक खां छोड़ दिया गया। हुसेन चुनार में डटा रहा। सिकन्दर लोदी ने उसे दबाने के लिये एक सेना कड़ा और दूसरी सेना अयोध्या से भेजी। सिकन्दर चुनार तो न ले सका लेकिन उसने कन्तित के राजा बलभद्र पर चढ़ाई कर दी। राजा ने पहले आत्मसमर्पण किया लेकिन फिर उसे सुल्तान पर सन्देह होने लगा। अतः वह भाग गया। कन्तित का राज्य अफगानों को सौंप दिया गया। कड़ा और डलमऊ को लौटते समय सिकन्दर ने अरैल के पड़ोस वाले भाग उजड़वा डाले। १४६४-६५ में बलभद्र की खोज में सुल्तान ने बलभद्र के बेटे बीरसिंह देव को खानघाटी पर हराकर पन्ना पर चढ़ाई की। बलभद्र यहां से भागा और मार्ग में मर गया।

१५१७ में सिकन्दर लोदी के मरने पर फिर गड़बड़ी मच गई। इब्राहीम लोदी दिल्ली सम्राट हुआ। उसके भाई जलाल खां ने काल्पी को छीन कर अपने आपको जौनपुर का सुल्तान घोषित किया लेकिन वह हारा और मारा गया। १५१६ में कड़ा के सूबेदार ने विद्रोह किया। वह भी हारा और कन्नौज के पास मारा गया। लेकिन इब्राहीम से लोग असन्तुष्ट थे। स्थान स्थान पर अफगान सरदार स्वतन्त्र बन गये थे। जब १५२६ में बाबर ने इब्राहीम को हराया तब लोहानी अफगानों ने मुहम्मद शाह को जौनपुर के सिंहासन पर बैठाया। १५२८ में बाबर के बेटे हुमायूं ने जौनपुर जीत लिया। दूसरे वर्ष बाबर ने अफगानों को दबाने के लिये एक बड़ी सेना भेजी। कड़ा के पास बाबर और जलालुद्दीन लोहानी में सन्धि हो गई। १५३० में बाबर मारा गया। इस समय बिहार जलालुद्दीन लोहानी के मन्त्री शेरखां के अधिकार में था। जौनपुर और उसके पड़ोस के देश को (कड़ा तक महमूद ने फिर ले लिया था। लेकिन १५३१ में हुमायूं ने महमूद को भगा दिया था लेकिन चुनार को घेरने में हुमायूं सफल न हुआ। १५३६ ई० में चुनार का दूसरा घेरा डाला गया। लेकिन हुमायूं गौड़ की ओर बढ़ा। वहाँ उसने देखा कि सुल्तान को उतार कर शेरखां स्वयं सुल्तान बन गया है। शेरखां मुगलों के आने पर पीछे हटता गया लेकिन धीरे धीरे उसने जौनपुर, कड़ा और अवध पर अधिकार कर लिया। इस तरह हुमायूं के लौटने का रास्ता घिर गया। चौसा और कन्नौज की लड़ाई में मुगलों की हार हुई। १५४० में शेरशाह समस्त हिन्दुस्तान का बादशाह बन गया। शेरशाह के शासन काल में कोई विद्रोह न हुआ। उसने आगरे से कड़ा तक सड़क बनवाई जो आगे चल कर भूसी होकर जौनपुर तक पहुँच गई। थोड़ी थोड़ी दूर पर ठहरने के लिये सराय बनाई गई। जिन शासन सुधारों का श्रेय अकबर को मिला है उनमें बहुतों का आरम्भ शेरशाह ने किया था। सूरी वंश के अन्तिम राजाओं के समय में इस जिले में गड़बड़ी मच गई। मुहम्मद आदिल के हिन्दू सेनापति हेमू ने आदिल के विद्रोहियों को हराकर काल्पी पर अधिकार कर लिया। चुनार के किले में आदिल जौनपुर का सुल्तान घोषित किया गया। लेकिन अकबर ने (बैरामखां की सहायता से) हेमू को हराकर आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। १५५६ में अकबर के सेनापतियों ने अफगानों को जौनपुर और बनारस से भगा दिया था। कड़ा का शासन कमाल खां को सौंप दिया गया। फिर भी अफगान विद्रोह का अन्त नहीं हुआ था १५६२ में अकबर पूर्व की ओर आया। १५६५ में लखनऊ के मार्ग से पूर्व की ओर आया। विद्रोही जौनपुर आ डटे। १५६६ में अकबर ने जौनपुर पर अधिकार कर लिया। जब अकबर चुनार पहुँचा तब फिर इधर विद्रोह हुआ। जब अकबर जौनपुर की ओर लौटा तो विद्रोही कड़ा को पार करके मानिकपुर की ओर भाग गये। यह समाचार पाकर अकबर ने रायबरेली से मानिकपुर को सीधा रास्ता लिया। उसके सूबेदार भी विद्रोहियों का दूसरे मार्ग से पीछा कर रहे थे। कड़ा के पास लड़ाई हुई। विद्रोही मारे गये। यह लड़ाई प्रयाग और भूसी के मकरावल गांव में हुई थी। प्रयाग को इस समय इलाहाबाद (इलादेवी के पास) भी कहते

थे। विजय के बाद अकबर एक दिन में प्रयाग आया। बनारस जाने के पहले यहां उसने दो दिन आराम किया। इसी समय सङ्गम के पास किला बनवाने का विचार उसके मन में आया। १५६८ में कड़ा का प्रबन्ध आसफ खां के हाथ में आया। बनारस से लौटने पर अकबर ने कड़ा के किले में कुछ समय तक आराम किया।

कई वर्ष तक यहां शान्ति रही। लेकिन १५८० में जब बङ्गाल में विद्रोह हुआ तो भूसी और प्रयाग में जागीरदार नियाबतखां ने कड़ा के किले पर हमला किया। लेकिन शाही सेना ने तेजी से उसका पीछा किया। वह भाग कर कन्तित आया। यहां से वह अवध को चला गया। बदानी का कहना है कि अकबर १५७५ में प्रयाग आया और उसने इलाहाबाद नाम के शाही शहर की नींव डाली। इसी समय बीरबल भी अकबर के साथ आया था। तबकाते अकबरी के अनुसार अकबर ने १५८४ में यहां किला बनाने और इलाहाबाद शहर बसाने का आदेश दिया था। वह आगरे से नाव पर चढ़कर यहां आया था। किला बन जाने पर इलाहाबाद ही प्रान्त की राजधानी बना। इसके बाद जौनपुर और कड़ा का महत्व कम हो गया। इलाहाबाद में बड़ी बेड़ी (समुद्र में चलने योग्य) नावें बनने लगीं। यह नावें गङ्गा के मार्ग से समुद्र-तट तक पहुँचती थीं। अकबर के समय में इलाहाबाद का सूबा दस सरकारों में बंटा था। इनमें इलाहाबाद और कड़ा की सरकार वर्तमान जिले में शामिल थीं। बारा परगना भटघोरा या बुन्देलखण्ड के पहाड़ी प्रदेश में शामिल था। इलाहाबाद सरकार में ११ परगने थे इनमें कन्तित और भदोही इस समय जिले से बाहर हैं। इलाहाबाद हवेली में खेती की भूमि २८४०५.७ बीघा थी। जमींदार ब्राह्मण थे। वे १000 पैदल सिपाही रखते थे। भूसी में ब्राह्मण और राजपूत जमींदार थे। वे २० घुड़सवार और ४०० पैदल रखते थे। खेती की भूमि ४२४८८ बीघा थी। सिकन्दरा भी ब्राह्मण मुहाल था। यहां ३४७५६ बीघा खेती थी। यहाँ २५ घुड़सवार और ५०० सिपाही रहते थे सिंगरौर या वर्तमान नवाबगंज में ३८५३६ बीघा भूमि थी। ब्राह्मण, कायस्थ और रहमत इलाही (नये मुसलमान) जमींदार थे। सोरों चन्देल राजपूतों और ब्राह्मणों के हाथ में था। यह लोग ६६६०.२ बीघा भूमि के लिये ४० घुड़सवार और १,००० सिपाही देते थे। माह में पत्थर का किला था। यह गहरवार राजपूतों के हाथ में था जो २० घुड़सवार और ४०० पैदल सिपाही देते थे। किवई ब्राह्मणों और राजपूतों के हाथ में था। यह लोग १५ घुड़सवार और ४०० सिपाही देते थे। इनकी भूमि १४३८५ बीघा थी। जलालाबाद या अरैल के जमींदार ब्राह्मण थे। यह १० घुड़सवार और ४०० सिपाही देते थे। खैरागढ़ की पैमायश नहीं हुई थी। यहां के राजपूतों से आशा की जाती थी कि वे आवश्यकता पड़ने पर २०० घुड़सवार और ५००० सिपाही देंगे। कड़ा में कायस्थ, ब्राह्मण और राजपूत जमींदार थे। करारी में ३६६८७ बीघा जमीन थी अथर्व में राजपूत जमींदार थे। यह १८५१६ बीघा के लिये १० घुड़सवार और २०० पैदल सिपाही रखते थे।

प्रान्त का शासन सूबेदार के हाथों में था। किला फौजदार को सौंप दिया जाता है। १४९७ में अकबर का बेटा दानियल प्रान्त का फौजदार बना। दो वर्ष बाद यह स्थान सलीम (जहांगीर) को दिया गया। जहांगीर नया सिक्का चलाने लगा और पुरानी जागीरें छीन कर अपने समर्थकों को देने लगा। वह मदिरापान और भोगविलास में फंस गया और अपने बेटे खुसरू से लड़ने लगा। मानसिंह की बहिन ने अपने बेटे खुसरू का पक्ष लिया। इसमें उसकी चिन्ता इतनी बढ़ी कि अफीम खाकर उसने अपना अन्त कर लिया। वह खुसरू बाग में गाड़ी गई यहीं खुसरू और उसकी बहिन का मकबरा है।

इस घटना से रुष्ट होकर अकबर ने प्रयाग आने का निश्चय किया। इतने ही में उसकी माता का देहान्त हो गया। अकबर खुसरू को बहुत चाहता था। पर मरने के पहिले किसी तरह सलीम और अकबर में समझौता हो गया। जहांगीर को सिंहासन केवल भाग्य से मिल गया। अभागा खुसरू पकड़ा गया और इलाहाबाद को लाया गया। यहां १६२२ में वह मर गया। लोगों का विश्वास है कि जहांगीर ने उसे मरवा डाला। जहांगीर के शासन काल में

इलाहाबाद का महत्व घट गया। जहांगीर का अनुकरण करके शाहजहां ने १६२२ ई० में विद्रोह का झंडा उठाया। १६२४ में इस ओर के विद्रोह को दबाने के लिये परवाज और दूसरे सेनापतियों को भेजा। इनके आने के पहले विद्रोहियों ने किले और झूंसी को घेर लिया था। परवाज ने ऊपरी भाग में नावों को इकट्ठा किया और शत्रु को बचाकर सेना ले आया। विद्रोही पहले जौनपुर की ओर और फिर बनारस को चले गये जहां शाहजहां पड़ाव डाले हुये था। शाहजहां अपनी सेना को इकट्ठा करके टौंस के सङ्गम तक ले आया। शाही सेना की मुठभेड़ में वह हार गया और दक्षिण की ओर भाग गया। १६२५ में उसका जहांगीर से मेल हो गया।

शाहजहां के समय में इस जिले का अधिक उल्लेख नहीं है। १६३० ई० में परतावगढ़ के सोमवंशी राजा प्रताप सिंह ने प्रान्त के सूबेदार कमाल खां को मार डाला।

१६५७ में शाहजहां बीमार पड़ा। उस समय शाहजादा मुहम्मद शुजा बंगाल और बिहार का सूबेदार था। यहां उसने अपने को शाह घोषित किया और वह पश्चिम की ओर बढ़ा। बनारस में दारा शिकोह ने उसे हरा दिया। इस प्रकार बङ्गाल दारा के हाथ में आ गया। लेकिन एक वर्ष बाद औरङ्गजेब ने दारा को हराकर अपने पिता को कैद कर लिया और स्वयं बादशाह बन गया। कुछ महीनों के बाद शुजा फिर बङ्गाल से लौटा। इलाहाबाद के किले के फौजदार सैयद कासिम ने किला शुजा को सौंप दिया। लेकिन फतेहपुर जिले के खजुहा की लड़ाई में शुजा फिर हारा। सैयद कासिम ने इस बार शुजा को किले में न घुसने दिया और किले की कुंजी औरङ्गजेब के सेनापति मुहम्मद सुल्तान को देदी जो शुजा का पीछा कर रहा था। फिर भी औरङ्गजेब ने फौजदार को बदल दिया। १६६६ में अली कुलीखां यहां का फौजदार था। इस वर्ष आगरे से निकल कर शिवा जी मथुरा होकर इलाहाबाद आया था। यहां उसने अपने लड़के सम्भा जी को एक ब्राह्मण के यहां रख दिया। दो बहुमूल्य रत्न यहां के सूबेदार को रिश्वत में देकर शिवा जी दक्षिण को चला गया १६६२ से १६६६ तक सिपहदार खां इलाहाबाद का सूबेदार था। उसने इलाहाबाद शहर के पश्चिम सिपहदरगंज या सूबादारगञ्ज बसाया।

१७०७ में औरङ्गजेब के मरने पर सैय्यद अब्दुल्ला खां (बड़ा मैयद) इलाहाबाद का सूबेदार था। कड़ा सरबुलन्द खां के अधिकार में था। इस सरदार ने जहांदार का पक्ष लिया उसके उत्तराधिकारी छबीलाराम नागर (ब्राह्मण) ने पहले जहांदार का ही पक्ष लिया। लेकिन शाहीसेना में गड़बड़ी देखकर उसने फर्रुखसियर का साथ दिया। फर्रुखसियर दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के पूर्व ही इलाहाबाद छबीलाराम को दे चुका था। अब्दुल्ला के भाई ने छबीलाराम को नीचा दिखाना चाहा। १७१६ ईस्वी में इलाहाबाद का किला अपने भतीजे गिरधर बहादुर को सौंप कर छबीलाराम अपनी सेना लेकर कई मील आगे बढ़ा। लेकिन इसी बीच में उसे लकवा मार गया और वह मर गया। इस पर सैयदों ने गिरधर को आत्म समर्पण करने का आदेश दिया। बदले में अवध और गोरखपुर देने का वचन दिया गया। लेकिन गिरधर ने इस पर कुछ ध्यान न दिया और रक्षा की तयारी की। उसने रसद इकट्ठी की और गङ्गा से यमुना तक खाई खुदवाई। बुन्देलों ने यमुना पार करके दिल्ली की सेना को बहुत सताया। गिरधर की प्रर्थना से इटावा के हिन्दू विद्रोह में शामिल हो गये। इलाहाबाद से १० मील पश्चिम में शाही सेना की हिन्दुओं से मुठभेड़ हुई। ३ दिन के बाद इलाहाबाद के किले के बाहर युद्ध हुआ। पर कोई फल न निकला। घेरा सफल न हुआ। १६२० के अप्रैल मास में सैयद भाइयों ने रतनचन्द को राजदूत बनाकर सन्धि करने के लिये भेजा। ३ मई को समिति बैठी। गिरधर ने अवध का प्रांत और ३६ लाख रुपया लेकर इलाहाबाद का किला खाली कर दिया। १७२१ में इलाहाबाद का किला फर्रुखाबाद के मुहम्मद खां को दे दिया गया। उसने अपने प्रतिनिधि भूरेखां को किला लेने के लिये भेजा। चार वर्ष बाद भूरेखां बुन्देल राजा छत्रसाल से लड़ने के लिये भेजा गया। १७२७ ई० में दिल्ली-सम्राट की आज्ञा से लड़ाई कुछ समय के लिये बन्द रही। लेकिन कुछ समय बाद भूरे खां ने फिर छत्रसाल

के लड़के हृदय नयरान और दूसरे लड़कों पर चढ़ाई की। लड़ाई दो वर्ष तक चली। बुन्देलों ने मरहठों से सहायता मांगी। इस पर मुहम्मद खाँ ने बड़ी कठीनाई से अपना पीछा छुड़ा पाया। १७३२ में इलाहाबाद प्रांत सरबुलन्द खां को सौंप दिया गया। १७२५ में मुहम्मद खां ने फिर इलाहाबाद लेने का प्रयत्न किया। भदोही और कन्तित के राजाओं ने सरबुलन्द खां की सहायता की। १७३६ में सर बुलन्द खां फिर इलाहाबाद का सूबेदार हो गया। १७४२ में इलाहाबाद प्रान्त अवध के नवाब वजीर सफदर जंग को मिल गया।

१७३६ में मरहठों ने मथुरा, इलाहाबाद और ब ा-रस के तीर्थ स्थानों को लौटाने को कहा। बुन्देलखंड पर मरहठों का अधिकार हो ही चुका था। वे यमुना को पार करके द्वाब में पहुँचने लग १७३६ में रघू जी भोंसला प्रयाग आया। उसने यहां के उप सूबेदार को मार डाल और बहुत सा धन लूट कर ले गया। इससे भोंसला और पेशवा में कुछ अनबन हो गई। १७४२ में भोंसला ने जब फिर इलाहाबाद पर चढ़ाई की धमकी दी तो पेशवा बाला जी राव बंगाल के सूबेदार अलीवर्दी खां की सहायता के लिये इस प्रान्त में आया। पर दो वर्ष में मरहठों के आपस के मतभेद दूर हो गये और यह निश्चय हुआ कि इलाहाबाद प्रान्त में जो भूमिकर (मालगुजारी) वसूल हो वह पेशवा को मिले। नवाब वजीर ने दीवान नवलरय (कायस्थ) को इलाहाबाद का सूबेदार बनाकर भेजा। १७८६ में नवलारय ने अवध की सेना लेकर फरुखाबाद पर चढ़ाई की। उसने ५० लाख रूपया हर्जाना वसूल किया और मुहम्मद खां के पांच लड़कों को कैद कर इलाहाबाद ले आया। मुहम्मद खां की विधवा बीबी साहिबा किसी तरह भाग निकली। १७५० में वे इलाहाबाद के किले में मार डाले गये। कुछ लोगों का अनुमान है नवाब सफदर बेग ने उन्हें जिन्दा ही दीवार में चुनवा दिया। इसका कारण यह था कि सूबेदार नवलराय मारा गया था। कुछ समय बाद फरुखा बाद के नवाब अहमद खां ने अवध के वजीर को हरा दिया। इससे इलाहाबाद प्रान्त में बड़ी गड़बड़ी फैल गई। कुछ मुसलमान अवध की ओर थे कुछ फरुखाबाद की ओर थे। लेकिन सभी हिन्दू मरहठों के पक्ष में थे। असोथर के राजा ने (जिसके हाथ में करारी का परगना था) मरहठों को यमुना पार करने के लिये निमन्त्रण भेजा। अहमद खां ने इलाहाबाद के किले का घेरा डाल दिया। उसने खुल्दाबाद से लेकर किले तक सारा शहर लूटा और घेरा डाल दिया। केवलदरियाबाद के पठानों का मुहल्ला छोड़ दिया। किले का घेरा उत्तर की ओर से तो पड़ा ही था। अहमद खां ने प्रतापगढ़ के राजा पृथिपति की सहायता से भूंसी के ऊंचे टीले पर भी (जो राजा हरबोंग का किला कहलाता था) अपनी तोपें लगा दी थीं। यमुना की ओर से घेरा डालना सम्भव नहीं था। इस ओर इन्द्रगिरि गुसाईं ५००० नग्न सन्यासियों को लेकर तीर्थ यात्रा के लिये आया था वह अवध की ओर था। इससे यमुना के ऊपर किले में घिरे हुये बकाउल्ला खां ने यमुना के ऊपर अरैल से नवों का पुल बनवा लिया। इस ओर से उसे रसद भी मिलने लगी। लेकिन इसी समय बनारस का राजा बलवन्त सिंह (जो अवध के नवाब का शत्रु था) मदोही में अली कुली खां को हटाकर अरैल पर चढ़ आया। अरैल में बलवन्त सिंह के आजाने से बकाउल्लाओं को किला छोड़कर लड़ने के लिये बाध्य होना पड़ा। शहर और किले के बीच में लड़ाई हुई। प्रताप के राजा के वीर सिपाहियों के सामने अवध की नवाबी सेना न टिक सकी। अतः फरुखाबाद के अहमद खां की पूर्ण विजय हुई। बकाउल्ला खाँ पुल के पार भागा। उसके साथ किले का तोपखाना भी चला गया। किला खाली हो गया और पुल तोड़ दिया गया। भूल से भ्रम में पड़ कर किले पर अधिकार नहीं किया गया और घेरा जारी रहा। इसी बीच में कोयल के पास सफदर जंग ने फरुखाबाद की सेना को हराया। इस हार का समाचार सुन कर अहमद खां इलाहाबाद और उसका बेटा भूंसी को छोड़ कर फरुखाबाद को बचाने के लिये चले गये।

कुछ समय में अवध का फिर अधिकार हो गया। इलाहाबाद अलीकुली खां को मिला। शुजा-उद्दौला अवध का नवाब हुआ। १७५८ में अली कुली खां ने शाहजादे अली गौहर (शाह आलम)

का इलाहाबाद में स्वागत किया। शाहजादे ने शुजाउद्दौला को इलाहाबाद बुला लिया। शुजाउद्दौला ने इलाहाबाद आकर शाहजादे से भेंट की और उसे सब प्राकर की सहायता देने का वचन दिया। शाहआलम बंगाल पर चढ़ाई करने चला। शुजाउद्दौला ने धोखा दिया। अपने परिवार को किला में रखने की आज्ञा ले ली। जब कुली खां पटना पहुँचा तब शुजाउद्दौला ने किले और समूचे इलाहाबाद के प्रान्त पर अधिकार कर लिया। इससे कुली खा ने पटना का घेरा उठा लिया। वह इलाहाबाद की ओर लौटा। लेकिन बनारस जिले के सैयद राजा के पास बलवन्त सिंह ने उसका मार्ग रोक कर उसे घेर लिया। कुली खां ने आत्मसमर्पण किया और वह शुजाउद्दौला के सामने आया। शुजाउद्दौला ने कुलीखां को कैद कर लिया। कुछ ही समय में कुली खां मर गया (या मार डाला गया) १७५६ में अली गौहर शाह आलम की उपाधि लेकर दिल्ली का बादशाह हुआ। १७६० में तीन बार और १७६१ में चौथीबार हारने के बाद असहाय शाहआलम ने २४ लाख वार्षिक लेकर मीर कासिम को बंगाल का सूबेदार मान लिया और ईस्ट इंडिया कम्पिनी से सन्धि कर ली। कुछ ही समय में मीरकासिम और ईस्ट इण्डिया कम्पिनी से झगड़ा हो गया। १७६३ ई० में मीरकासिम बनारस आया। यहां उसने अवध के नवाब को अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न किया। उसके पत्रों का सन्तोषजनक उत्तर मिला। अतः मीरकासिम यमुना के किनारे बिहीपुर के पास नवाब से भेंट करने गया। इस समय अवध का नवाब यहीं पड़ाव डाले था और कालिंजर के सम्बन्ध में राजा हिन्दूपति से सन्धिवार्ता कर रहा था। इस वार्ता में मीरकासिम ने उसकी सहायता की और सन्धि पूरी हो गई। इसके बाद मीरकासिम ने नवाब से सैनिक सहायता मांगी। शाह आलम ने अवध को बहुत रोका। बक्सर की लड़ाई में शुजाउद्दौला की हार हुई। १७६४ में वह बनारस भाग आया। शाहआलम कम्पिनी से मिल गया। अवध का नवाब इलाहाबाद चला आया। यहां वह तीन महीने रहा और एक नई सेना इकट्ठी करने लगा। इसके बाद कर्नल कार्नाक ने चुनार के किले का घेरा डाला और उसे ले लिया। राबर्ट फ्लेचर शाहआलम के सा[थ] इलाहाबाद को आया। किले के फौजदार अली बेग खां ने इलाहाबाद का किला अंग्रेजों को सौंप दिया। शुजाउद्दौला जो थोड़ी सेना इकट्ठा कर सका था उ[से] लेकर कानपुर की ओर जा रहा था। लेकिन अंग्रेज[ी] सेना उसका पीछा कर रही थी। १७६५ में कानपु[र] जिले में जाजमऊ के पास दोनों सेनाओं में लड़ा[ई] हुई। शुजाउद्दौला हरा गया और सन्धि हो गई। इलाहाबाद, कड़ा और कोटा उससे ले लिये गये और शाहआलम को दे दिये गये शेष राज्य उसके हा[थ] में रहा। और शाहआलम खुसरू बाग में रहने लगा। अंग्रेजी सेना किले में डट गई। १७६७ में नई सन्धि के अनुसार चुनार का किला अवध के नवाब क[ो] और इलाहाबाद का किला अंग्रेजी कम्पिनी क[ो] मिला। १७७१ में शाहआलम कोरा की सीमा के पास आया। राबर्ट बार्कर के मना करने पर भ[ी] शाहआलम ने मरहठों से सन्धि करली और व[ह] दिल्ली चला गया शाह आलम ने इलाहाबाद क[ा] प्रान्त भी मरहठों को सौंपने का वचन दिय[ा] था। लेकिन शाहआलम के सूबेदार मुनीरूद्दौला ने कम्पिनी की एक नई सेना मँगाली और काउंसिल का एक अंग्रेज सदस्य कर वसूल करने के लिय[े] इलाहाबाद आ गया। एक प्रकार से इलाहाबाद का प्रान्त अंग्रेजी कम्पिनी के हाथ आ गया। १७७३ में कम्पिनी ने ५० लाख रु० में यह प्रान्त अवध के नवाब के हाथ बेच दिया। चकिया और कोस का प्रबन्ध मियां अल्मस अली खां को सौंपा गया। इलाहाबाद का प्रबन्ध पहले मुनीरूद्दौला को और फिर दयाराम को दिया गया। इलाहाबाद का किला नाम के लिये अवध के नवाब के अधिकार में था। लेकिन यहां अंग्रेज अफसर और अंग्रेज सिपाही रहते थे। धीरे धीरे अंग्रेजी सेना के खर्च का कर्ज अवध के नवाब पर लद रहा था। १४ नवम्बर १८०१ में इस कर्ज को चुकाने के लिये अवध के नवाब ने द्वाबा के जिले अंग्रेजी कम्पिनी को सौंप दिये।

कम्पिनी के हाथ में आजाने पर इलाहाबाद का सैनिक महत्व बढ़ गया। यह जिले का एक केन्द्र बना दिया गया। मरहठों के युद्ध के समय लार्ड

लेक ने एक बड़ी सेना यहां छोड़ दी थी। यह सेना बुन्देल खंड पर चढ़ाई करने के लिये भेजी गई थी। १८१६ में किवई का परगना अवध के नवाब से मिल गया। १८२५ में यह परगना फतेहपुर जिले में मिला दिया गया। १८३४ में इलाहाबाद प्रान्त की राजधानी बना और यहां हाईकोर्ट भी हो गया। लेकिन एक वर्ष बाद दोनों आगरा चले गये।

१२ मई १८५७ को जब मेरठ के विद्रोह का समाचार इलाहाबाद में पहुँचा तब यहां गोरी सेना बहुत कम थी। छावनी में देशी सेना थी। इसी की एक टोली किले में भी थी। किले में अधिकतर फीरोजपुर के सिक्ख सिपाही थे। शहर और सेना में सनसनी फैलने लगी। १८ मई को इलाहाबाद के योरुपीय लोगों ने विद्रोह को दबाने के लिये आपस में परामर्श किया। १६ मई को परतापगढ़ से अवध की दो सेनायें आईं। यह दोनों खजाने और जेल की रक्षा के लिये तथा दारागंज से शहर तक परेड करने के लिये भेज दी गईं। कुछ दिन बाद ६० तोप चलाने वाले योरुपीय चुनार से यहां आये। ये किले में रक्खे गये। कलक्टर आदि गोरे अफसर काली सेना पर विश्वास नहीं करते थे। अतः खजाना को किले में भेजने की तैयारी की गई। २३ मई को गोरी स्त्रियां और बच्चे किले में भेज दिये गये। स्टेशन और शहर का गश्त लगाने के लिये गोरे स्वयं सेवक भरती किये गये। ३ जून को सर हेनरी लारेन्स ने अधिकारियों का तार दिया कि वे सिक्खों का विश्वास न करें। दूसरे दिन लखनऊ और इलाहाबाद के बीच का तार टूट गया। ४ जून को बनारस के विद्रोह का समाचार मिला। विद्रोही इलाहाबाद की ओर आ रहे हैं। यह सुनकर गोरे और डरे। किले के फाटक बन्द कर लिये गये। बिना पास के किले के भीतर आने की आज्ञा न रही। कुछ देशी सेना दारागंज में गङ्गा के मार्ग का नियन्त्रण करने के लिये भेज दी गई। हर एक गोरा किले में भेज दिया गया। लेकिन ५ जून की संध्या को कुछ गोरे अपने निवास स्थान को चले गये। छठी जून को देशी सेना इकट्ठी की गई और गवर्नर जनरल का पत्र पढ़ कर उन्हें सुनाया गया और राजभक्ति के लिये सिपाहियों को धन्यवाद दिया गया। इसी दिन संध्या के समय दारागञ्ज के सिपाहियों ने विद्रोह का झंडा फहराया। वे तोपों को छावनी में घसीट लाये। उनका अफसर अलोपी बाग से दूसरे सिपाही लाने के लिये घोड़े पर दौड़ा आया। इन सब सिपाहियों को इकट्ठा करने में देरी लगी। जब ये दारागञ्ज के सिपाहियों के सामने आ गये तो केवल २ सिपाहियों ने अपने अफसर की आज्ञा मांगी। अफसर पर एकदम गोली चलाई गई। वह जान बचाकर भागा। लेकिन वह हे अपने दूसरे साथियों को सूचना न दे सका जो छावनी में भोजन के कमरे में थे। इन १७ नये पुराने अफसरों पर गोलियां चलाई गईं। इनमें केवल दो मनुष्य किसी प्रकार भाग कर किले में पहुँचे। जो अफसर दारागञ्ज में कैद कर लिये गये थे वे अन्धेरे में गङ्गा को दो बार पार करके किले में पहुँचे। शहर और छावनी में सब जगह विद्रोह की आग फैल गई। गोरे लोग सब स्थानों से भाग कर किले में आने लगे। विद्रोहियों ने जेल के फाटक खोल कर ३००० कैदियों को मुक्त कर दिया। यह विद्रोहियों में मिल गये। जो देशी सेना किले के भीतर थी। उससे गोरों को भारी चिन्ता हो रही थी। इन्हें फाटक के पास इकट्ठा किया गया। उनके सामने हथियारबन्द सिक्ख और तोप चलाने वाले गोरे थे। दूसरे शस्त्र वाले गोरे इधर दीवारों के पास थे। देशी सिपाहियों को हथियार रखने के लिये कहा गया। पहले कुछ क्षण के लिये सिपाही सोच विचार में पड़ गये। लेकिन जब उनके सामने वाली भरी हुई तोपों को चलाने के लिये पलीता जलाया गया तब उन्होंने हथियार रख दिये। इसके बाद निहत्थे देशी सिपाही किले के बाहर कर दिये गये। इस घटना से सिक्खों पर भी प्रभाव पड़ा। कुछ दिनों में और स्थानों से कुछ गोरे आ गये। यमुना के किनारे की दूकानें लूट ली गईं। इससे किले के भीतर शराब पानी की तरह अधिकता से फैल गया। प्रायः सभी लोग किले में शराब पीकर मस्त रहते थे। ऐसी दशा में जो विद्रोही दो। दारागञ्ज और गङ्गा के नावों के पुल पर अधिकार जमाये हुये थे। उन पर कोई हमला न हुआ। विद्रोहियों ने किले के पास वाले स्थानों पर अधिकार जमा कर किले को भली-भांति घेर लिया था। शहर में बड़ी गड़बड़ी थी। रेलवे लाइन और तार तोड़ डाले गये थे।

पेंन्शन पाने वाले सिपाही और दूसरे उपद्रवी लोग विद्रोहियों में मिल गये थे। सब कहीं लूट मार हो गई। पहले गोरे लोगों का माल लूट लिया गया या नष्ट कर दिया गया। इसके बाद विद्रोहियों ने बंगालियों और दूसरे मालदार लोगों को लूटा। विद्रोहियों ने सरकारी खजाना भी छीन लिया। पहले इसे दिल्ली सम्राट को भेंट करने का प्रस्ताव किया गया फिर उन्होंने उसे आपस में बांट लिया। जो लो चाँदी लादकर अपने गांव में ले जाते थे वे प्राय: मार्ग में ही लूट लिये जाते थे और मार डाले जाते थे। इसके बाद द्वाबा के एक फकीर मौलवी हियाकत अली ने विद्रोहियों का संगठन किया। चायल के जमींदारों ने उसका साथ दिया और वह इलाहाबाद का सूबेदार बन गया। उसने खुसरू बाग में अपना झंडा फहराया और दिल्ली के मुगल सम्राट का शासन घोषित किया।

१२ जून को कप्तान नेल ने गोरों और सिक्खों को इकट्ठा करके दारागञ्ज पर गोले छोड़े, और विद्रोहियों को भगा कर गङ्गा के नावों के पुल पर अधिकार कर लिया।

पुल की मरम्मत कर ली गई फिर नेल के सिक्ख सिपाही और गोरे साथी भूंसी पहुँचे। भूंसी को साफ करने के बाद वे कीटगञ्ज को लौटे। कीटगंज से भी विद्रोही भगा दिये गये। १४ जून को यमुना स्टीमर से आये हुये अधिक सिपाही मिल गये। इसके बाद सिक्खों को उनकी इच्छा के विरुद्ध किले से बाहर करके दूसरी सरकारी उन इमारतों में रख दिया गया जहां किले की तोपों के गोले पहुँच सकते थे। १५ जून को स्टीमर और किले के गोरे सिपाहियों की सहायता से कीटगंज और मुट्ठीगंज पर धावा बोला गया। गोरी सेना को पूरी सहायता मिली। मौलवी और उसके साथी विद्रोही नेता इलाहाबाद से भाग गये। जिन तोपों को पहले उन्होंने अंग्रेजों से छीना था, उन्हें भी छोड़ दिया। अंग्रेज बैदी भी छोड़ दिये गये।

दूसरे दिन शहर प्राय: खाली हो गया। मजिस्ट्रेट कोतवाली में गया। वहां उसने अपने अफसर रख दिये। दूसरे दिन छावनी, पठानों के दरियाबाद और मेवातियों के सैदाबाद और रसूलपुर गांवों पर चढ़ाई की गई कहीं किसी प्रकार का विरोध न था। किले में हैजा फैल गया था। अफवाहें फैल रही थीं कि इलाहाबाद तोप से उड़ा दिया जायगा। शहर प्राय: खाली था। कारण यह था कि प्रतिदिन धड़ पकड़ हो रही थी। जिन पर गदर में सम्मिलित होने का सन्देह होता था उन्हें खुली सड़क पर फाँसी देकर लटका दिया जाता था। चार अंग्रेज कमिश्नरों को आज्ञा मिली थी कि वे शीघ्रातिशीघ्र कड़े से कड़ा दंड दें। गोरे सिपाही और गोरे स्वयं सेवक प्रत्येक हिन्दुस्तानी को दोषी समझते थे। वे सैकड़ों शहरी और देहाती लोगों को गोली से उड़ाने लगे। इलाहाबाद और उसके पड़ोस में ऐसा अमानुषिक व्यवहार किया गया कि लोग अंग्रेजों का नाम सुनकर ही डर के मारे भाग जाते थे। इससे अंग्रेजों को सवारी डेरे और भोजन मिलने में कठिनाई होने लगी।

इलाहाबाद शहर के बाहर भी विद्रोह फैल गया था। अरैल के मुसलमानों और इलाहाबाद के प्रागवालों ने इसमें विशेष भाग लिया। रेलवे के अंग्रेज अफसरों ने भरवारी में पानी की टंकी के ऊपर चढ़ कर दो दिन तक अपनी जान बचाई इसके बाद अवध के सिपाहियों ने (जो राजभक्त बने रहे थे) भीड़ से उनकी रक्षा की। कालाकांकर के राजा हनवन्तसिंह ने १० अंग्रेजों को गङ्गा के किनारे तक पहुँचाया। तरौल के अजीतसिंह ने सुल्तानपुर और परतापगढ़ के अंग्रेजों को इलाहाबाद पहुँचा दिया। और भी कई भागों में अंग्रेजों की रक्षा की गई। गङ्गा के उत्तर में साधारण गड़बड़ी थी। (यमुना के दक्षिण में मांडा, बारा और डैया के राजाओं ने शान्ति रक्खी। ३० जून को ३००० सिक्ख और प्राय: ५०० अंग्रेज सिपाही और दो तोपों के साथ गांवों की खबर ली गई। इलाहाबाद से फतेहपुर तक जिन गांवों पर विद्रोह में भाग लेने का सन्देह था (वास्तव में सभी गांवों पर विद्रोह का सन्देह था (वे सब जला दिये गये और नष्ट कर दिये गये। दो जुलाई को कानपुर से विद्रोह का समाचार आया। ७ जुलाई को जब हैवलाक सहायता लेकर कानपुर की ओर बढ़ा तो उसने देखा कि सभी गांव खाली थे। हरएक पेड़ पर लाश लटक रही थीं। इसलिये रास्ते में भोजन सामग्री का मिलना कठिन था। कानपुर की सहायता

के लिये गङ्गा के मार्ग से स्टीमर द्वारा भी सहायता भेजी गई थी। बारबार सेना के आने से ग्रांड्ट्रंक रोड पर शान्ति स्थापित हो गई थी। दूर वाले गांवों में फिर भी विद्रोह की आग धधक रही थी। गङ्गा के उत्तर के गांवों को दवाने के लिये पहले गोपीगञ्ज में और फिर हनूमानगञ्ज में सैनिक अड्डा बनाया गया। इसके बाद १८५८ के जनवरी महीने में सेना फूलपुर पहुँची। यहां विद्रोहियों का जोर था। इसलिये कुछ नई सेना इलाहाबाद से बुलाई गई। मनसेठा के पास इलाहाबाद से ८ मील की दूरी पर लड़ाई हुई। विद्रोही हारे। लेकिन उन्होंने फाफामऊ और सोरों पर अधिकार कर लिया। जौनपुर और इलाहाबाद से सैनिक सहायता मिलने पर विद्रोही प्रतापगढ़ की ओर भगा दिये गये। इसके बाद अंग्रेजी सेनापति अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित स्टीमर पर सवार होकर गङ्गा के ऊपर की ओर बढ़ा। रास्ते में उसे जहां कहीं (हिन्दुस्तानियों की) नावें मिलीं उसने नष्ट कर डालीं। दहियावां तरौल और बैसपुर आदि स्थानों में विद्रोहियों को दबाती हुई अंग्रेजी सेना इलाहाबाद को लौट आई। द्वाब में कड़ा के विद्रोही सेना के आने-जाने से कुछ दबे रहे। लेकिन अथर्वन और कोरों आदि स्थानों में विद्रोहियों को दबाने के लिये सेना भेजनी पड़ी। मंझनपुर में विद्रोहियों का सामना करने के लिये एक बंगाली अफसर ने स्वयं सेवकों की एक टोली तैयार की थी।

१८५८ के फर्वरी मास में लार्ड कैनिंग ने पश्चिमोत्तर प्रदेश आगरा और अवध प्रान्त की रचना की और इलाहाबाद को इसकी राजधानी बनाया। १८६८ में यहां हाई कोर्ट आ गया। आगे इलाहाबाद में वह दरबार हुआ था जहां लार्ड कैनिंग ने प्रथम वायसराय के पद से महारानी विक्टोरिया का आज्ञापत्र भारतीय प्रजा को घोषित किया था। १८८७ में यहां लेजिस्लेटिव कौंसिल और यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। म्यूर कालेज पहले दरभंगा कासेल में प्रारम्भ हुआ था फिर इसकी अलग इमारत बनी। १९०१ में लार्ड कर्जन इस प्रान्त में पधारे। उन्होंने इसका नाम पश्चिमोत्तर प्रदेश से बदल कर उत्तर प्रदेश रख दिया।

इलाहाबाद शहर समुद्र-तल से प्राय: ३०० फुट की ऊँचाई पर कलकत्ते से ६६४ मील और बम्बई से ८४४ मील की दूरी पर स्थित है। शहर गङ्गा यमुना के संगम के पास बसा है। सङ्गम किले से पूर्व की ओर है। शहर किले से पश्चिम और उत्तर की ओर है। इसके उत्तर और पूर्व में गङ्गा है। यमुना दक्षिण की ओर है।

इलाहाबाद का पुराना नाम प्रयाग है। यह शहर बहुत पुराना है। ह्वानसांग के समय में प्रयाग शहर पातालपुरी-मन्दिर के चारों ओर बसा था। इस समय किले के भीतर है प्रयाग बहुत पुराने समय में ही एक प्रधान तीर्थ था। यहीं भरद्वाज मुनि का आश्रम था। आगे चल कर परिहार राजाओं के समय में प्रतिष्ठानपुर या झूसी अधिक प्रसिद्ध हो गया। मुसलमानों के आक्रमण होने पर प्रयाग तीर्थ तो बना रहा लेकिन शहर नष्ट हो गया। अकबर के समय में इसकी फिर से वृद्धि हुई। इला का स्थान होने से प्रयाग को प्राय: इलाहाबाद कहते थे। इसी से इलाहाबाद नाम पड़ा।

आज कल एलनगञ्ज को प्रयाग कहते हैं। १५७२ ई० में अकबर ने यहां किला उसी स्थान पर बनवाया जहां कहते हैं पहले अशोक का किला था। जब इलाहाबाद ब्रिटिश अधिकार में आया तब ब्रिटिश अफसर किले में या पड़ोस के स्थानों में रहते थे। सिविल स्टेशन पश्चिम की ओर बनी। अफसरों के घर यमुना के किनारे थे। जहां इस समय अमरीकन (जमुना) मिशन का घेरा है वहां पहले कचहरी थी। आगे चलकर सिविल लाइन उत्तर की ओर बसी। अधिक उत्तर की ओर फौजी छावनी थी। कनलगञ्ज और कटरा बाजार में आवश्यक सामग्री बिकती थी। गदर में सिविल लाइन नष्ट हो गई। गदर के अन्त में पश्चिम की ओर की भूमि जब्त कर ली गई। यहां रेलवे स्टेशन बना। नई छावनी और सिविल लाइन को भी अधिक स्थान मिल गया। इलाहाबाद में एक प्रकार से तीन फौजी छावनी है। सब से पुराना फौजी अड्डा किला है उत्तर की ओर पुरानी छावनी है। यहीं फाफामऊ के पड़ोस में सिपाहियों के रहने के लिये नये स्थान बन गये हैं। नई छावनी पश्चिम की ओर है। यह बढ़ते बढ़ते पश्चिम की ओर बमरौली के हवाई

अड्डे तक चली गई है। रेलवे स्टेशन और छावनी के बीच में इलाहाबाद की वर्तमान सिविल लाइन है। कटरा, कर्नलगञ्ज उत्तर की ओर दारगञ्ज पूर्व की ओर है। कीडगञ्ज (जनरल किड की स्मृति में यह नाम रक्खा गया) या कीटगञ्ज दक्षिण-पूर्व की ओर यमुना के किनारे स्थित है। यहां अधिकतर प्रागवाल रहते हैं। कुछ आगे यमुना की ओर माधो गञ्ज और मुट्ठीगञ्ज के व्यापारी मुहल्ले हैं। बलुआ घाट के आगे यमुना के किनारे दरियाबाद और मीरापुर है। ककरहाघाट के आगे सदियापुर गांव है। इससे मिला हुआ सी ड्रोम है जहां यमुना के गहरे पानी में हवाई नावें उतरती हैं। इससे मिला हुआ तपेदिक का अस्पताल और करेला बाग का वाटर वर्क्स है जहां से इलाहाबाद शहर के लिये पीने का पानी आता है। करेला गांव यमुना के किनारे इलाहाबाद की पश्चिमी सीमा कहा जा सकता है। थोड़ी थोड़ी दूर पर यमुना में कई नाले मिलते हैं। शहर का अधिकतर भाग ऊँची भूमि पर बसा है। लेकिन अतरसुइया (सम्भवत: यह नाम अत्रि अनुसइया से बिगड़ कर बना है), अहियापुर, कटघर आदि कुछ मुहल्ले नीचे हैं। इनके निचले भाग भयानक बाढ़ में डूब जाते हैं।

वास्तव में गङ्गा का ऊँचा किनारा कर्जन पुल और शिवकोटि महादेव के मन्दिर के पास है। इसके आगे गङ्गा का साधारण ऊँचाई वाला कछार है। दक्षिण की ओर मुड़ने के कारण गङ्गा का ऊँचा किनारा प्रयाग स्टेशन कर्नल गञ्ज, स्वराज भवन भारद्वाज आश्रम, दरभंगा कोठी, गवर्नमेण्ट हाउस (लाट साहब की कोठी) गवनमेण्ट इण्टर कालेज होता हुआ मुट्ठीगंज की ओर मुड़ जाता है। इससे पूर्व की ओर निचले कछार में बसे हुये भागों को बाढ़ बचाने के लिये उत्तर और पूर्व में बड़ा बांध बना है। यह बांध प्रयाग स्टेशन से दारागंज को चला गया है। (कहते हैं इसे सम्राट अकबर ने बनवाया था।) दारागंज से गङ्गा के किनारे यह बांध किले तक गया है और यमुना के ऊँचे ककरीले किनारे से मिल गया है। १८७५ ई० में यह बांध टूट गया इससे इलाहाबाद का बहुत सा भाग डूब गया और बड़ी हानि हुई। दारागंज और किले के बीच में इस बांध के नीचे बलुई भूमि पर संगम तक प्रति वर्ष माघ मेला लगता है। यहां यात्रियों और पुजारियों के ठहरने के लिये कुटी बन जाती हैं। दुकानें भी सज जाती हैं। इससे यहां एक महीने तक एक नगर सा बस जाता है। इसके पश्चात् कुटियां उजड़ जाती हैं। किनारे पर पंडों के झंडे और तख्ते शेष रह जाते हैं। छठें वर्ष अर्द्ध कुम्भ में साधारण वर्षों से बड़ा मेला लगता है। सब से बड़ा मेला प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ के अवसर पर लगता है। किसी दिन बांध से संगम तक मनुष्यों का एक विशाल समूह दिखाई देता है। स्नान करने वालों की संख्या ४० या ५० लाख तक पहुँच जाती है। मेला के मैदान से उत्तर की ओर उपजाऊ कछार है। बाढ़ घटने पर इसमें गेहूँ, जौ, मटर और चना बहुत होता है। इलाहाबाद बहुत ही फैला हुआ है। शहर प्रधान के ७६ मुहल्लों, कीटगञ्ज के १२ मुहल्लों दारागञ्ज के ८ और कटरा-कर्नल गञ्ज के ७ मुहल्लों के अतिरिक्त इलाहाबाद म्युनिसिपेलिटी और छावनी की सीमा के भीतर ५८ गांव स्थित हैं।

कटरा मुहल्ले के पड़ोस की भूमि सम्राट अकबर के समय में जैपुर नरेश को मिली थी। पहले इसे कटरा सवाई जैसिंह कहते थे। इस समय भी जैपुर नरेश के वंशज एक माफीदार हैं। लेकिन आधुनिक कटरा की वृद्धि सिविल लाइन और छावनी के कारण हुई है। दोनों के लिये कटरा एक अनुकूल बाजार है। कटरा का बाजार बख्तियारी और फतेहपुर बिछुआ गाँवों में स्थित है। कर्नल गञ्ज एक प्रकार से कटरा का पूर्वी मुहल्ला है। कर्नल गञ्ज के पूर्वी सिरे पर भारद्वाज आश्रम है। यहीं भारद्वाज मुनि ने श्री रामचन्द्र और भरत जी का स्वागत किया था। उत्तर की ओर नया कटरा और करनपुर है। गङ्गा के ऊंचे किनारे पर बेली है। यह नाम यहां के कमिश्नर बेली की स्मृति में रक्खा गया है। राजापुर गांव कटरा के ठीक पश्चिम स्थित है। इसके पास ही इसाइयों का कब्रिस्तान है। दारागञ्ज अधिक अलग और अधिक बड़ा है। यह नाम अभागे दाराशिकोह की स्मृति में पड़ा। यह गङ्गा के ऊंचे बांध पर बसा है। यह किले के उत्तर में है। गङ्गा के ऊँचे टीले पर बसे हुये

के लिये गङ्गा के मार्ग से स्टीमर द्वारा भी सहायता भेजी गई थी। बारबार सेना के आने से ग्रांड्ट्रंक रोड पर शान्ति स्थापित हो गई थी। दूर वाले गांवों में फिर भी विद्रोह की आग धधक रही थी। गङ्गा के उत्तर के गांवों को दबाने के लिये पहले गोपीगञ्ज में और फिर हनूमानगञ्ज में सैनिक अड्डा बनाया गया। इसके बाद १८५८ के जनवरी महीने में सेना फूलपुर पहुँची। यहां विद्रोहियों का जोर था। इसलिये कुछ नई सेना इलाहाबाद से बुलाई गई। मनसेठा के पास इलाहाबाद से ८ मील की दूरी पर लड़ाई हुई। विद्रोही हारे। लेकिन उन्होंने फाफामऊ और सोरों पर अधिकार कर लिया। जौनपुर और इलाहाबाद से सैनिक सहायता मिलने पर विद्रोही प्रतापगढ़ की ओर भगा दिये गये। इसके बाद अंग्रेजी सेनापति अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित स्टीमर पर सवार होकर गङ्गा के ऊपर की ओर बढ़ा। रास्ते में उसे जहां कहीं (हिन्दुस्तानियों की) नावें मिलीं उसने नष्ट कर डालीं। दहियावां तरौल और बैसपुर आदि स्थानों में विद्रोहियों को दबाती हुई अंग्रेजी सेना इलाहाबाद को लौट आई। द्वाब में कड़ा के विद्रोही सेना के आने-जाने से कुछ दबे रहे। लेकिन अथर्वन और कोरों आदि स्थानों में विद्रोहियों को दबाने के लिये सेना भेजनी पड़ी। मंझनपुर में विद्रोहियों का सामना करने के लिये एक बंगाली अफसर ने स्वयं सेवकों की एक टोली तैयार की थी।

१८५८ के फर्वरी मास में लार्ड कैनिंग ने पश्चिमोत्तर प्रदेश आगरा और अवध प्रान्त की रचना की और इलाहाबाद को इसकी राजधानी बनाया। १८६८ में यहां हाई कोर्ट आ गया। आगे इलाहाबाद में वह दरबार हुआ था जहां लार्ड कैनिंग ने प्रथम वायसराय के पद से महारानी विक्टोरिया का आज्ञापत्र भारतीय प्रजा को घोषित किया था। १८८७ में यहां लेजिस्लेटिव कौंसिल और यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। म्यूर कालेज पहले दरभंगा कासेल में आरम्भ हुआ था फिर इसकी अलग इमारत बनी। १९०१ में लार्ड कर्जन इस प्रान्त में पधारे। उन्होंने इसका नाम पश्चिमोत्तर प्रदेश से बदल कर उत्तर प्रदेश रख दिया।

इलाहाबाद शहर समुद्र तल से प्राः ३०० फुट की ऊँचाई पर कलकत्ते से ६६४ मील और बम्बई से ८४४ मील की दूरी पर स्थित है। शहर गङ्गा यमुना के संगम के पास बसा है। सङ्गम किले से पूर्व की ओर है। शहर किले से पश्चिम और उत्तर की ओर है। इसके उत्तर और पूर्व में गङ्गा है। यमुना दक्षिण की ओर है।

इलाहाबाद का पुराना नाम प्रयाग है। यह शहर बहुत पुराना है। ह्वानसांग के समय में प्रयाग शहर पातालपुरी-मन्दिर के चारों ओर बसा था। इस समय किले के भीतर है प्रयाग बहुत पुराने समय में ही एक प्रधान तीर्थ था। यहीं भरद्वाज मुनि का आश्रम था। आगे चल कर परिहार राजाओं के समय में प्रतिष्ठानपुर या झूंसी अधिक प्रसिद्ध हो गया। मुसलमानों के आक्रमण होने पर प्रयाग तीर्थ तो बना रहा लेकिन शहर नष्ट हो गया। अकबर के समय में इसकी फिर से वृद्धि हुई। इला का स्थान होने से प्रयाग को प्रायः इलाहाबाद कहते थे। इसी से इलाहाबाद नाम पड़ा।

आज कल एलनगञ्ज को प्रयाग कहते हैं। १५७२ ई० में अकबर ने यहां किला उसी स्थान पर बनवाया जहां कहते हैं पहले अशोक का किला था। जब इलाहाबाद ब्रिटिश अधिकार में आया तब ब्रिटिश अफसर किले में या पड़ोस के स्थानों में रहते थे। सिविल स्टेशन पश्चिम की ओर बनी। अफसरों के घर यमुना के किनारे थे। जहां इस समय अमरीकन (जमुना) मिशन का घेरा है वहां पहले कचहरी थी। आगे चलकर सिविल लाइन उत्तर की ओर बसी। अधिक उत्तर की ओर फौजी छवानी थी। कनलगञ्ज और कटरा बाजार में आवश्यक सामग्री बिकती थी। गदर में सिविल लाइन नष्ट हो गई। गदर के अन्त में पश्चिम की ओर की भूमि जब्त कर ली गई। यहां रेलवे स्टेशन बना। नई छावनी और सिविल लाइन को भी अधिक स्थान मिल गया। इलाहाबाद में एक प्रकार से तीन फौजी छावनी है। सब से पुराना फौजी अड्डा किला है उत्तर की ओर पुरानी छावनी है। यहीं फाफामऊ के पड़ोस में सिपाहियों के रहने के लिये नये स्थान बन गये हैं। नई छावनी पश्चिम की ओर है। यह बढ़ते बढ़ते पश्चिम की ओर बमरौली के हवाई

अड्डे तक चली गई है। रेलवे स्टेशन और छावनी के बीच में इलाहाबाद की वर्तमान सिविल लाइन है। कटरा, कर्नलगञ्ज उत्तर की ओर दारागञ्ज पूर्व की ओर है। कीडगञ्ज (जनरल किड की स्मृति में यह नाम रक्खा गया) या कीटगञ्ज दक्षिण-पूर्व की ओर यमुना के किनारे स्थित है। यहां अधिकतर प्रागवाल रहते है। कुछ आगे यमुना की ओर माधो गञ्ज और मुट्ठीगञ्ज के व्यापारी मुहल्ले हैं। बलुआ घाट के आगे यमुना के किनारे दरियाबाद और मीरापुर है। ककरहाघाट के आगे सदियापुर गांव हैं। इससे मिला हुआ सी ड्रोम है जहां यमुना के गहरे पानी में हवाई नावें उतरती हैं। इससे मिला हुआ तपेदिक का अस्पताल और करेला बाग का वाटर वर्क्स है जहां से इलाहाबाद शहर के लिये पीने का पानी आता है। करेला गांव यमुना के किनारे इलाहाबाद की पश्चिमी सीमा कहा जा सकता है। थोड़ी थोड़ी दूर पर यमुना में कई नाले मिलते हैं। शहर का अधिकतर भाग ऊँची भूमि पर बसा है। लेकिन अतरसुइया (सम्भवतः यह नाम अत्रि अनुसइया से बिगड़ कर बना है), अहियापुर, कटघर आदि कुछ मुहल्ले नीचे हैं। इनके निचले भाग भयानक बाढ़ में डूब जाते हैं।

वास्तव में गङ्गा का ऊँचा किनारा कर्जन पुल और शिवकोटि महादेव के मन्दिर के पास है। इसके आगे गङ्गा का साधारण ऊँचाई वाला कछार है। दक्षिण की ओर मुड़ने के कारण गङ्गा का ऊँचा किनारा प्रयाग स्टेशन कर्नल गञ्ज, स्वराज भवन भारद्वाज आश्रम, दरभंगा कोठी, गवर्नमेण्ट हाउस (लाट साहब की कोठी) गवनमेण्ट इण्टर कालेज होता हुआ मुट्ठीगंज की ओर मुड़ जाता है। इससे पूर्व की ओर निचले कछार में बसे हुये भागों को बाढ़ बचाने के लिये उत्तर और पूर्व में बड़ा बांध बना है। यह बांध प्रयाग स्टेशन से दारागंज को चला गया है। (कहते हैं इसे सम्राट अकबर ने बनवाया था।) दारागंज से गङ्गा के किनारे यह बांध किले तक गया है और यमुना के ऊँचे ककरीले किनारे से मिल गया है। १८७५ ई० में यह बांध टूट गया इससे इलाहाबाद का बहुत सा भाग डूब गया और बड़ी हानि हुई। दारागंज और किले के बीच में इस बांध के नीचे बलुई भूमि पर संगम तक प्रति वर्ष माघ मेला लगता है। यहां यात्रियों और पुजारियों के ठहरने के लिये कुटी बन जाती हैं। दुकानें भी सज जाती हैं। इससे यहां एक महीने तक एक नगर सा बस जाता है। इसके पश्चात् कुटियां उजड़ जाती हैं। किनारे पर पंडों के झंडे और तख्ते शेष रह जाते हैं। छठें वर्ष अर्द्ध कुम्भ में साधारण वर्षों से बड़ा मेला लगता है। सब से बड़ा मेला प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ के अवसर पर लगता हैं। किसी दिन बांध से संगम तक मनुष्यों का एक विशाल समूह दिखाई देता है। स्नान करने वालों की संख्या ४० या ५० लाख तक पहुँच जाती है। मेला के मैदान से उत्तर की ओर उपजाऊ कछार है। बाढ़ घटने पर इसमें गेहूँ, जौ, मटर और चना बहुत होता है। इलाहाबाद बहुत ही फैला हुआ है। शहर प्रधान के ७६ मुहल्लों, कीटगञ्ज के १२ मुहल्लों दारागञ्ज के ८ और कटरा-कर्नल गञ्ज के ७ मुहल्लों के अतिरिक्त इलाहाबाद म्युनिसिपेलिटी और छावनी की सीमा के भीतर ५८ गांव स्थित हैं।

कटरा मुहल्ले के पड़ोस की भूमि सम्राट अकबर के समय में जैपुर नरेश को मिली थी। पहले इसे कटरा सवाई जैसिंह कहते थे। इस समय भी जैपुर नरेश के वंशज एक माफीदार हैं। लेकिन आधुनिक कटरा की वृद्धि सिविल लाइन और छावनी के कारण हुई है। दोनों के लिये कटरा एक अनुकूल बाजार है। कटरा का बाजार बख्तियारी और फतेहपुर बिछुआ गाँवों में स्थित है। कर्नल गञ्ज एक प्रकार से कटरा का पूर्वी मुहल्ला है। कर्नल गञ्ज के पूर्वी सिरे पर भारद्वाज आश्रम है। यहीं भारद्वाज मुनि ने श्री रामचन्द्र और भरत जी का स्वागत किया था। उत्तर की ओर नया कटरा और करनपुर है। गङ्गा के ऊंचे किनारे पर बेली है। यह नाम यहां के कमिश्नर बेली की स्मृति में रक्खा गया है। रोजापुर गांव कटरा के ठीक पश्चिम स्थित है। इसके पास ही इसाइयों का कब्रिस्तान है। दारागञ्ज अधिक अलग और अधिक बड़ा है। यह नाम अभागे दाराशिकोह की स्मृति में पड़ा। यह गङ्गा के ऊंचे बांध पर बसा है। यह किले के उत्तर में है। गङ्गा के ऊँचे टीले पर बसे हुये

नागवासू के मन्दिर से दक्षिण की ओर यह एक मील तक फैला हुआ है। पहले यह मन्दिर बहुत छोटा था। प्राय: सवा सौ वर्ष हुये नागपुर के भोंसला महाराज ने इसे फिर से बनवाकर बड़ा कर दिया। दारागञ्ज में कई मन्दिर है। माधो जी का मन्दिर बहुत पुराना है। यहां निरंजनी और निर्मली अखाड़े हैं। यहां बहुत से साधू रहते हैं। यहां प्रागवाल भी बहुत हैं। दारागञ्ज का थाना, अस्पताल और हाई स्कूल अलग है। दारागञ्ज के पश्चिम में अलोपी बाग हैं। यहां एक बड़े बगीचे के बीच में अलोपशंकरी देवी का मन्दिर है। इसी से इस मुहल्ले का यह नाम पड़ा। ग्रांडट्रंक रोड दारागञ्ज के दक्षिणी सिरे से अलोपी बाग होती हुई पश्चिम की ओर बढ़ती है। अलोपशंकरी के मन्दिर के आगे सड़क के उत्तर में अलाहपुर और मटियारा गांव है। इस ओर कई बाग हैं। इनमें सर्व प्रसिद्ध सोहबतिया बाग है। यह किले से कर्नलगञ्ज को जानेवाली सड़क के दाहिने ओर पड़ता है। सोहबतियाबाग में बहुत सी नई कोठियां (प्राय: वकीलों की) बन गई हैं।

अलोपी बाग से आगे ग्रांडट्रंक रोड मधुआपुर और खलासी लाइन होती हुई दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ती है। इसके दक्षिण में कीटगञ्ज का कब्रिस्तान है। किले को जानेवाली शाखा रेलवे को पार करके ग्रांडट्रंक रोड बैरहना में आती है। दक्षिण की ओर कीटगञ्ज का उत्तरी सिरा है। सिन्धिया के मन्दिर और कोठा पार्चा रेल के महराब के नीचे से होकर ग्रांडट्रंक रोड शहर के प्रधान भाग में प्रवेश करती है। यहां पर इसे कर्नलगञ्ज से यमुना-पुल को जानेवाली लौंदर रोड पार करती है। यहीं पर इसमें कीटगञ्ज से आनेवाली सड़क मिलती है। ग्रांडट्रंक रोड प्रधान शहर को दो भागों में बांट देती है। कोठापार्चा से कोतवाली तक फैले हुये भाग को मीरगंज कहते हैं। इसके दक्षिण की ओर का पूर्वी भाग मुट्ठीगंज कहलाता है। यह नाम इलाहाबाद के प्रथम कलक्टर एहमुटी की स्मृति में रक्खा गया था। ग्रांडट्रंक रोड से एक सड़क दक्षिण की ओर मुट्ठीगंज होती हुई यमुना रोड से मिल जाता है। इसके आगे अमरीकन मिशन का विशाल हाता है। इसमें कालेज, स्कूल, होस्टल, गिरजा और ईसाई प्रोफेसरों के रहने के लिये बँगले बने हैं। इसमें सामने यमुना के दूसरे किनारे पर इसी मिशन का कृषि-इन्स्टीटयूट है। ग्रांड ट्रंक रोड से उत्तर की ओर मुट्ठीगञ्ज से आने वाली सड़क हिन्दी-साहित्य सम्मेलन और संग्रहालय होती हुई हीवट रोड में मिल जाती है। अधिक आगे पश्चिम की ओर बलुआघाट रोड दक्षिण की ओर यमुना के किनारे बलुआघाट को जाती है। इसके पास ही बनारस महाराज की कोठी है। उत्तर की ओर बहादुर गंज के नाके के पास यह फिर ग्रांड ट्रंक रोड में मिल जाती है। इस बलुआ घाट रोड पर पत्थर, लोहे, लकड़ी और घास की दुकानें हैं। इसके पश्चिम में अहियापुर, मीरनपुर और कल्याणी देवी है। अधिक पश्चिम में कोतवाली से एक तंग सड़क रानीमंडी, अतरसुइया, खत्री पाठशाला डी० ए० वी० हाई स्कूल और भूगोल-कार्यालय होती हुई ककरहाघाट में समाप्त हो जाती है। यमुना के दूसरे किनारे पर हिन्दी विद्यापिठ है। इस सड़क के पश्चिम में तुलसीपुर, रसूलपुर और सदियापुर गांव हैं। इसके आगे पश्चिम की ओर करेला बाग रोड है। जो खुल्दाबाद नई बस्ती होती हुई यमुना के किनारे वाटर वर्क्स के पास समाप्त हो जाती है।

कोतवाली के पड़ोस में ही चौक है। यह घने बसे हुये भाग के बीच में स्थित है। यहां इलाहाबाद की बढ़ियां दुकानें हैं। यहीं उत्तर की ओर घंटाघर है। चौक के दक्षिण में भारती भवन पुस्तकालय है। पश्चिम की ओर काल्विन अस्पताल (जो १८६१ में बना) से एक सड़क मछली बजार होती हुई रेलवे स्टेशन को गई है। जानसेनगंज से पश्चिम की ओर स्टेशन के पास से होती हुई एक सड़क खुसरू बाग और लीडर प्रेस को गई है।

खुल्दाबाद की सराय एक बड़ा घेरा है। यहां लिखा है कि यह सराय जहांगीर की आज्ञा से बनी थी। बीच में उत्तर की ओर ऊँचा दरवाजा है। यह सुन्दर दरवाजा जहांगीर ने बनवाया था। जब सलीम इलाहाबाद आया तो वह खुसरू बाग में ही रहता था। उसका विद्रोही बेटा खुसरू इसी बाग में बन्दी (कैद) रक्खा गया था। यहीं १६२२ ईस्वी में खुसरू की मृत्यु हुई। इस बाग में खुसरू के मकबरे

पर उसके मरने की तिथि (१०३१ हिजरी या १६२२) फारसी में लिखी है। दूसरा मकबरा खुसरू की बहिन का है जो १६२५ में मरी। तीसरा मकबरा खुसरू की माता राजा मानसिंह की बहिन का है। १६२१ ईस्वी में उसकी मृत्यु हुई। बाग के बीच में एक और चौथा मकबरा है। इसे तमोलिन का मकबरा कहते हैं। सम्भवतः यह फतेहपुर सीकरी का इस्तम्बोली बेगम का मकबरा है। कुछ लोगों का कहना है कि खुसरू की एक बहिन ने इसे अपने लिये बनवाया था। लेकिन उसकी मृत्यु दूसरे स्थान पर हुई। खुसरू-बाग में तरह तरह के पेड़ों के पौधे सरकार की ओर से बिकते हैं खुसरू बाग के आगे कुछ कारखाने और फिर लूकरगञ्ज का नया मुहल्ला है। यह नया मुहल्ला गवर्नमेण्ट प्रेस के सुपरिन्टेण्डेण्ट मिस्टर लूकर के प्रयत्न से हाल में बसाया गया। इसमें अधिकतर साधारण कोटि के सरकारी कर्मचारी और कुछ बंगाली रहते हैं। यहीं आटा पीसने की मिल है। रेलवे लाइन के उत्तर में सुरजकुंड के पुल से प्रायः एक मील तक रेलवे कर्मचारियों की बस्ती है। रेलवे बस्ती से उत्तर में राजापुर तक सिविल लाइन है।

चौक से कटरा को जाने वाली सड़क के दाहिनी ओर १३३ एकड़ में एल्फ्रेड पार्क है। इसी में पब्लिक लाइब्रेरी और महारानी विक्टोरिया की मूर्ति है। एल्फ्रेड पार्क के उत्तर में थार्नहिल रोड के उस पार म्यूर सेन्ट्रल कालेज है। १८७४ में लार्ड नार्थब्रुक ने इसकी नींव डाली। इसके पश्चिम में हिन्दू होस्टल और पूर्व में मुस्लिम होस्टल है। कुछ दूर उत्तर की ओर हालैंड हाल और यूनिवर्सिटी है। यूनिवर्सिटी के सामने जहां पहले पायनियर प्रेस था वहां बेसिक ट्रेनिंग कालेज रहा।

प्रयाग का किला बहुत पुराना है। कुछ लोगों का अनुमान है कि इसे सम्राट अशोक ने बनवाया अकबर ने इसका वास्तविक निर्माण किया। महल का कुछ भाग नष्ट हो गया। जहां पहले सूबेदार रहता था वहां इस समय बारूद खाना है। एक घेरे में सम्राट अशोक की लाट (स्तम्भ) है। किले में ही प्रयाग का प्राचीन पातालपुरी-मन्दिर है। यह गङ्गा दरवाजे के पास ही पृथिवी के भीतर है। कुछ लोगों का अनुमान है कि जैसे किले का तल ऊँचा किया गया वैसे ही मन्दिर नीचे पड़ गया। किले की दीवारों के पहले मन्दिर ऊंची भूमि पर स्थित था। ह्वानसांग के समय में मन्दिर के आगे आंगन था जहां अक्षयवट (कभी नाश न होने वाला बरगद का वृक्ष) खड़ा था। किले के बन जाने से काम्यकूप भी लुप्त हो गया। लेकिन उदार अकबर ने मन्दिर को किसी प्रकार का धक्का नहीं पहुँचने दिया। कुछ समय तक मन्दिर नीचे पड़ जाने के कारण एकदम अंधेरे में था। १६०६ ई. में प्रयाग के हिन्दू नेताओं ने मन्दिर में ऊपर से झरोखे बनवाकर उजाले का प्रबन्ध किया। इसी समय मन्दिर से बाहर निकलने के लिये पूर्व की ओर एक नया जीना बनवाया गया। पातालपुर का मन्दिर आयाताकार है। यह उत्तर से दक्षिण तक ४६½ फुट चौड़ा और पूर्व से पश्चिम तक ८४ फुट लम्बा है। छत धुंधली पत्थर की चोटियों से बनी है और पत्थर के स्तम्भों (खम्भों) पर सधी है। खम्भों की सात पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में १२ खम्भे हैं। बीच वाली पंक्ति में दुहरे खम्भे हैं। इस पंक्ति के खम्भे २½ फुट ऊँचे और ११ इंच चौड़े हैं। खम्भों के बीच में ६ इंच का अन्तर है। पंक्तियां के बीच में उत्तर से दक्षिण तक ५ फुट है। और पूर्व से पश्चिम तक ४½ फुट की दूरी है। फर्श से पत्थर की छत की ऊँचाई ६½ फुट है। उत्तर की ओर एक गहरा ताल है। कहते हैं यहां से त्रिवेणी गङ्गा यमुना, सरस्वती संगम के लिये एक अभ्यन्तर मार्ग गया है। यहीं अक्षयवट के प्रतिनिधि रूप में पीपलवृक्ष की एक शाखा रक्खी गई है। यहीं यात्री भेंट चढ़ाते हैं। दीवारों पर महादेव, गणेश और देवताओं की मूर्तियां हैं।

इलाहाबाद प्रान्त में शिक्षा का प्रधान केन्द्र है। यहां विश्व विद्यालय है जहां होस्टल में रहने वाले प्रायः १००० विद्यार्थियों को बी० ए० और एम० ए० आदि डिग्रियों (उपाधियों) की उच्च शिक्षा दी जाती है। यहां कायस्थ पाठशाला, ईविंग कालेज, क्रास्थवेट (लड़कियां का) अग्रवाल विद्यालय और बंगाली इंटर कालेज हैं। हाई स्कूल लगभग एक दर्जन हैं। यहीं शिक्षकों को तय्यार करने के लिये

ट्रेनिंग कालेज है। कृषि शिक्षा अमरीकन मिशन के एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट में दी जाती है। कार्पेन्ट्री और चमड़े के भी स्कूल हैं। हरिजन आश्रम में हरिजन बालकों की शिक्षा देने के अतिरिक्त उन्हें कई प्रकार का काम सिखाया जाता है जिससे वे स्वावलम्बी बन सकें। यहीं हिन्दी के प्रचार और अनुशीलन के लिये अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रधान कार्यालय तथा विद्यापीठ है।

प्रयाग कारबारी शहर न होने पर भी ट्रंक, नाव (यमुना के किनारे) जाल, टोकरी और बर्तन बनाने के लिये प्रसिद्ध है। यहीं गङ्गा पार झूंसी और यमुना पार नैनी में शक्कर बनाने का कारखाना है। नैनी में शीशे का भी कारखाना है।

अरैल का प्राचीन गांव किले के ठीक सामने यमुना के दाहिने किनारे पर स्थित है। किले के पूर्व में घाट है जहां से अरैल के लिये नावें आया जाया करती हैं। लेकिन इलाहाबाद से अरैल पहुँचने के लिये सुगम मार्ग यमुना के पुल के ऊपर है। यह पुल प्रान्त का अत्यन्त महत्वपूर्ण पुल है। पुल दोहरा है। एक तरफ पैदल और हलकी गाड़ियां चलती हैं दूसरी सड़क से मोटर लारियां और भरी हुई भारी गाड़ियां चलती हैं। इसके ऊपर रेल की दुहरी लाइन है। एक लाइन से हावड़ा को गाड़ियां जाती हैं। दूसरी लाइन से इलाहाबाद की ओर रेल गाड़ियां आया करती हैं। अरैल में वेनीमाधो और सोमेश्वर नाथ के दो प्राचीन हिन्दू मन्दिर हैं। यहां एक कच्चा किला था। कहते हैं अकबर ने इसे सुधरवा दिया था। संगम के समीप होने से अरैल भी एक तीर्थ माना जाता है। जो यात्री नैनी स्टेशन उतरते हैं। वे प्रायः यहीं आया करते हैं। शिवरात्रि के अवसर पर यहां भारी मेला होता है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है।

बारा गांव—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह इलाहाबाद से १८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर एक पक्की सड़क पर स्थित है जो जबलपुर जाने वाली सड़क की एक शाखा है। गांव बहुत पुराना है। पास ही और भी पुराना ऊँचा टीला है। भैरों के मन्दिर के पास पुराने भग्नावशेष मिलते हैं। इस गांव पर बघेल वंशी राजा की जमींदारी है। शंकरगढ़ के राजा इसी वंश के हैं।

बरोखर कला—मेजा से रीवा को जानेवाली सड़क पर मेजा से २१ मील दूर है। यह इलाहाबाद से ४० मील दूर है। जिले की दक्षिणी सीमा यहां से केवल २ मील दूर रह जाती है। यहां एक संस्कृत पाठशाला और छोटा स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है और प्रति मंगलवार को हनूमान का मेला लगता है।

भारतगञ्ज इलाहाबाद से ३६ मील और मेजा से ११ मील दूर है। यह मांडा से केवल एक मील दूर है। लेकिन मांडा और इस गांव के बीच में एक नीची पहाड़ी है। यहां होकर मांडा से नहवई या मेजा रोड रेलवे स्टेशन को पक्की सड़क जाती है। पुराने समय में यह देशी गाढ़ा बुनने और रंगने के लिये अधिक प्रसिद्ध था। यहां लोहे के बर्तन भी बनते हैं और गल्ले का व्यापार होता है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

भरवारी गांव इलाहाबाद से २४ मील की दूरी पर ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। यहां से एक पक्की सड़क यमुना के किनारे राजापुर को गई है। दक्षिण की ओर ईस्ट इण्डियन रेलवे का एक स्टेशन है। एक सड़क उत्तर की ओर सिंगेती घाट (गङ्गा तट) को गई है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। यहाँ सप्ताह में दो बार बाजार लगता है और गल्ले का व्यापार बहुत होता है। दशहरा के अवसर पर मेला लगता है। चायल का पुराना गांव इलाहाबाद से १५ मील पश्चिम की ओर है। मनौरी स्टेशन ग्रांड ट्रंक रोड पर बसे हुये पूरामुफ्ती से होती हुई यहां को एक सड़क आती है। पहले यहां तहसील थी। इस समय तहसील की इमारत में जूनियर हाई स्कूल है। जूनियर हाई स्कूल के अतिरिक्त यहां बेसिक हाई स्कूल प्राइमरी स्कूल है। यहां डाकखाना और बाजार है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। चायल में दो पुरानी मस्जिदें हैं। अकबर के समय से पूर्व ही यहां मुसलमानी बस्ती बस गई थी।

डांडी गांव इलाहाबाद से जबलपुर को जानेवाली सोहागी घाट सड़क पर यमुना-पुल से १२ मील

दूर है। यह बारा से १० मील दक्षिण की ओर है। यहां थाना और डाकखाना है। बारा राज्य का अङ्ग है।

दारा नगर सैनी से गुतनी घाट को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यहां से उत्तर की ओर एक सड़क कड़ा को जाती है। यह सिराथू से ४ मील और इलाहाबाद से ३६ मील है। यहां अनाज, कपड़ा कपास और पीतल के बर्तनों का व्यापार होता है। कहते हैं यह शाहजहां के शासन काल में बसाया गया था। शाहजहां के पुत्र दाराशिकोह की स्मृति में यह नाम पड़ा। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। यहां की मस्जिद १६६० ईस्वी में बनी। कुछ इमारतें इससे भी पुरानी हैं और १५०० ई० में बनी।

देउरिया गांव यमुना के दाहिने किनारे पर इलाहाबाद से ११ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। बीकर गांव में पहले अनाज, अलसी, चमड़ा और ढोर का व्यापार मिर्जापुर से बहुत होता था। यमद्वितीया कार्तिक और चैत में यहां बड़ा मेला लगता है। देउरिया और इसके पास वाले भीटा गांव में यमुना के किनारे से आध मील की दूरी तक एक मील के मोड़ में मौर्य, कुशान, और गुप्त कालीन प्राचीन भग्नावशेष मिले हैं। यमुना के बीच में एक पहाड़ी टापू पर सुजावन देवता का मन्दिर है। १६४५ तक यहां एक पुराना मन्दिर था। उस वर्ष इलाहाबाद के सूबेदार शायस्ता खां ने इसे तोड़वा ढाला। कुछ समय बीतने पर फिर यहां मन्दिर हो गया। यहां विन्ध्या का उत्तरी सिरा है। देउरिया के स्थान पर प्राचीन समय में एक बड़ा शहर था।

शहर के चारो ओर ११ फुट मोटी दीवार थी। यहां ईसा से सात आठ सौ वर्ष पूर्व के कुछ गडटे, ईंट, बाण, सिक्के, मुहर आदि मिले हैं। किले के भीतर बाजार और घर थे। मनक्वार गांव में १ मील पूर्व की ओर बुद्ध भगवान की एक बुद्धासन मूर्ति मिली है। पड़ोस की पहाड़ी गुफाओं में भी कुछ पुराने चिन्ह मिले हैं।

घूरपुर इलाहाबाद से जबलपुर को जाने वाली पक्की सड़क पर इलाहाबाद से ८ मील दूर है। यहां थाना है। इस से कुछ उत्तर की ओर इदारत गंज में पठानों की पुरानी बस्ती है। हंडिया इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह गङ्गा के उत्तर में इलाहाबाद से २१ मील की दूरी पर ग्रांड ट्रंक रोड पर स्थित है। बनारस को जाने वाली छोटी लाइन सड़क की समान्तर जाती है। इसका यहां स्टेशन है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और जू० हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। इसमें चमड़े, अन्न का व्यापार होता है। दशहरा के अवसर पर मेला होता है। कहते हैं पुराने समय में इसे हरिहरपुर कहते थे। आसफुद्दौला के समय में गांव वालों ने नवाबी खजाना लूट लिया। गांव वालों को दंड देने के लिये यहां सेना भेजी गई। लेकिन यहां के पूज्य फकीर शाह हयात ने मिट्टी की हंड़िया दिखा कर उन्हें रोक दिया। उस समय से इसका नाम हंडिया पड़ गया। इस फकीर का मकबरा पूर्व की ओर है।

झूंसी का प्राचीन नगर गंगा के ऊंचे बायें किनारे पर स्थित है। किले के सामने इससे कुछ ऊपर गङ्गा में मनसेता नाला मिलता है। गङ्गा को पार करने के लिये नावें आती जाती रहती है। वर्षा के समाप्त होने पर दारागंज में गङ्गा के ऊपर नावों का अस्थायी पुल भी बन जाता है। झूंसी होकर ग्रांड ट्रंक रोड बनारस की ओर से इलाहाबाद को आती है। एक सड़क फूलपुर और जौनपुर को जाती है। दक्षिण की ओर छोटी लाइन का स्टेशन है। यह लाइन रामबाग (इलाहाबाद सिटी) से चलती है और गङ्गा को लोहे के पुल से पार करके झूंसी होती हुई बनारस को जाती है। यहां थाना, डाकखाना जूनियर स्कूल और प्राइवेट नार्मल स्कूल है। यहां एक चीनी का बड़ा कारखाना है। नई झूंसी से आध मील दक्षिण की ओर पुरानी झूंसी है। पुराणों में इसका नाम प्रतिष्ठानपुर या केसी है कन्नौज के त्रिलोचन पाल नामी परिहार राजा ने कन्नौज छोड़कर प्रतिष्ठान में ही अपनी राजधानी बनाई थी। यह बार्ता एक पुराने ताम्र पत्र में लिखी मिली जो १८३० ई० में पाया गया था। यहां सोमवंशी राजाओं का पुराना केन्द्र था। प्रतापगढ़ के सोमवंशी राजा यहीं से गये थे। ह्वानसांग ने केसी (क्यासी पुलो) नाम से इसका

उल्लेख किया है। कुछ लोग इसका नाम हुर भूमिपर भी बताते हैं। कहते हैं यहां के राजा और उसकी राजधानी को गोरखनाथ और उनके गुरु मछन्दर नाथ ने नष्ट कर डाला। मुसलमानों का कहना है झूसी भूचाल से नष्ट हो गया। इस भूचाल को मुसलमानों के कथनानुसार सैयदअली मुरतजा ने १२५६ में ईश्वर से प्रार्थना करके बुलाया था। झूसी के प्राचीन स्थानों में कुछ मन्दिर और दो जीर्ण किले हैं। यहीं शेखतकी (जो १३२० ई० में मरा) का मकबरा है। १७१२ में फर्रुखसियर ने इस मकबरे के दर्शन किये थे। कहते हैं यहां का एक दुर्ग समुद्रगुप्त ने बनवाया था। यहीं गङ्गा के एक ऊंचे टीले पर प्राचीन कूप है। जिसे समुद्रकूप कहते हैं। यहां कई बार गुप्तकालीन सिक्के मिले हैं। ऊंचे किनारे पर साधुओं की गुफाये हैं नगर में ब्रह्मचारियों साधुओं और सन्यासियों के मठ हैं है।

कड़ा सिराथू से पांच मील उत्तर-पूर्व की ओर इलाहाबाद से ४१ मील दूर है। सिराथू से सैनी और दारा नगर होती हुई यहां तक पक्की सड़क आती है। यह सड़क गङ्गा के घाट पर समाप्त हो जाती है। गङ्गा के दूसरे किनारे पर परतागढ़ का शुतनी गांव है। एक समय में कड़ा बहुत प्रसिद्ध था और प्रान्त की राजधानी था। यहां से किले में एक शिला लेख मिला। इसके अनुसार १०३६ ईस्वी में कन्नौज के यशपाल ने इसे बनवाया था। इब्न बतूता के समय (१३४०) तक यह हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ था। प्राचीन समय में इसे कला नगर कहते थे। नगर के उत्तर में कालेश्वर नाथ का मन्दिर है। यहां आषाढ़, चैत और श्रावण की अष्टिमी को मेला लगता है। पश्चिम की ओर एक जीर्ण बारादरी है। इसे १७५० में एक महाराष्ट्र आमिल कृष्ण पंडित ने बनवाया था। रीवा के राज रामचन्द्र के १५५८ के ताम्र पत्र में करकोटक नगर का उल्लेख है। कहते हैं महासती मा कर (हाथ) गिरा था। इसी से बिगड़ कर इसका नाम पड़ गया। कड़े के कुबरी घाट में भादों, कार्तिक और माघ में गङ्गा स्नान का मेला लगता है। वर्तमान कड़ा प्राचीन वैभवशाली कड़ा नगर का छाया मात्र है। प्राचीन नगर के भग्नावशेष गंगा तट से १ मील की चौड़ाई में दो मील तक फैले हुए हैं। गङ्गा के ऊंचे टीले पर टूटे फूटे खंडहर पुरानी पुरानी दिल्ली या कन्नौज के समान हैं। सब से ऊंचा टीला सड़क के ऊपर ६० फुट ऊंचा खड़ा है। यहां बलुआ पत्थर के बड़े बड़े टुकड़ों का बना हुआ प्राचीन हिन्दू किला था। इसके ऊपरी भाग ईंट के बने थे। यह ६०० फुट लम्बा और ४५० फुट चौड़ा था। यह एकदम उजड़ा हुआ है। इसके नीचे बाजार घाट और फूटा मन्दिर है। घाट के नीचे गङ्गा में एक पुराने कुएं का घेर है। बाजार में १५७० ई० की बनी हुई जामा मस्जिद है। जब १२९५ में अलाउद्दीन ने अपने चचा जलालुद्दीन को मरवा डाला और स्वयं बादशाह बन गया तो उस समय कड़ा में ख्वाजा नाम का एक फकीर रहता था। वह १३०६ ई० में मरा। यहाँ उसका मकबरा बना हुआ है। यहां और भी कई मकबरे हैं। गांव के बीच में मलूकदास साधू का घर है। वह १६८२ ई० में मरा कहते हैं औरंगजेब ने सिराथू गांव उसे माफी में दे दिया था। उसके चेलों ने यहां एक मठ बनाया है। रेलवे के खुलने के पहले जब नावों द्वारा व्यापार होता था तो कड़ा एक प्रसिद्ध व्यापारी नगर था। यहां हाथ से कागज भी बहुत बनता था। इस समय यह कम्बलों के लिये प्रसिद्ध है। स्कूल दारा नगर चला गया यहां डाकखाना है।

करारी गांव इलाहाबाद से २७ मील पश्चिम की ओर स्थित है। मझनपुर से करारी ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पुराना किला खडहर होगया है। पहले इसी में तहसील थी। फिर तहसील मझनपुर चली गई। सप्ताह में चार बार बाजार लगता है। लेकिन व्यापार बहुत कम होता है। यहां डाकखाना और जूनियर स्कूल है।

करछना इलाहाबाद से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां होकर इलाहाबाद से कोहरार और कोरांव को सड़क जाती है। यहीं होकर एक सड़क मांडा से घूरपुर को गई है। एक पक्की सड़क २ मील पश्चिम की ओर करछना रेलवे स्टेशन को चली गई है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और जूनियर स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार (पास वाले हिन्दू पुर गांव में) लगता है।

करमा कस्बा—करछना से जसरा को जाने वाली सड़क पर इलाहाबाद से १२ मील दक्षिण की ओर है। यह गाय-बैल और चमड़े की बिक्री के लिये जिले में प्रधान बाजार है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। खीरी का छोटा गांव मॉंडा से शंकरगढ़ को जाने वाली सड़क पर इलाहाबाद से २६ मील दूर है। यहां थाना और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। थाने के पास एक पुराना मन्दिर है जहां दशहरा का उत्सव होता है।

कोहखिराज गांव—इलाहाबाद से २४ मील उत्तर-पश्चिम में गॉंड्ट्रंक रोड से कुछ उत्तर की ओर स्थित है। कोहखिराज का अर्थ है मालगुजारी देने वाला। इसके पास ही कोह इनाम या माफी वाला गांव था। १८५८ के विद्रोह के बाद कोह इनाम एक दम नष्ट कर डाला गया। यहां थाना डाकखाना और फौजी पड़ाव है। यहां एक पुरानी मस्जिद है। गांव के सामने ही गङ्गा का घाट है जहां से दूसरे किनारे पर बसे हुये नौबस्ता को नावें आया जाया करती हैं।

कोहरार गांव—टौंस घाटी के ऊपर एक ऊंचे टीले पर इलाहाबाद से २३ मील दूर है। पास ही एक ऊंचे टीले पर पुराने किले के खडहर हैं। यहां कई सड़कें मिलती हैं। यहां एक छोटा स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

कोसम (खिराज और इनाम) गांव—यमुना के किनारे पर मंझनपुर से १२ मील दक्षिण की ओर सराय आकिल से ६ मील पश्चिम की ओर है। यहां पुराने समय के विशाल खडहर और भग्नावशेष हैं। उजड़े किले में मल्लाह रहते हैं जो रस्सी बट कर निर्वाह करते हैं। कोसम से ३ मील पश्चिम की ओर पभोसा की पहाड़ी है। यहां एक जैन मन्दिर है। कहते हैं जैनियों के चौथे तीर्थङ्कर यहीं पैदा हुये थे। यहां सभी भागों के जैन लोग शीतकाल में तीर्थ करने आते हैं।

कोटवां गांव—फूलपुर से हनूमानगंज को जाने वाली कच्ची सड़क पर स्थित हैं। एक सड़क गङ्गा के किनारे को गई है। यह इलाहाबाद से ११ मील दूर है। कोटवा और देउकली के बीच में होकर छोटी लाइन जाती है। यहां एक स्कूल और महादेव का पुराना मन्दिर है जहां श्रावण महीने की पंचमी को मेला लगता है।

कोरांव गांव—मेजा से ११ मील दक्षिण की ओर इलाहाबाद से ३५ मील है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। इसके पास ६ सड़कें (मेजा, मांडा, डूमनगंज, रीवा, शङ्करगढ़ और इलाहाबाद को जाने वाली मिलती हैं।

मांडा कस्बा—मेजा से ११ मील और इलाहाबाद से ३६ मील दूर है। यहां से एक पक्की सड़क भारतगंज और नहवई (मांडा रोड) रेलवे स्टेशन को जाती है। यह करछना और नैनी को जाने वाली सड़क से मिल जाती है। मांडा कस्बा निचली पहाड़ियों की तलहटी में बसा है। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। दसहरा के अवसर पर मेला लगता है। कहते हैं मांडा को भार लोगों ने बसाया था। जिन्हें गहरवार राजपूतों ने निकाल दिया था। यह नाम मांडो सिक्की नाम के एक स्थानीय साधू की स्मृति में रक्खा गया

मंझनपुर कस्बा—इलाहाबाद से ३१ मील पश्चिम की ओर भरवारी से ८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। भरवारी से मंझनपुर को एक पक्की सड़क जाती है। दक्षिण की ओर यह सड़क यमुना के किनारे राजापुर घाट को चली गई हैं। यहां से कच्ची सड़क उत्तर-पश्चिम सिराथू को गई है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां कानपुर और दूसरे स्थानों के गल्ले के व्यापारी आते हैं। यहां चैत के महीने में मेला लगता है।

मऊ ऐमा कस्बा —इलाहाबाद से २१ मील और सोरॉं से ८ मील दूर है। फैजाबाद से आनेवाली पक्की सड़क यहाँ से कुछ ही दूर है। यह लखनऊ को जानेवाली रेलवे लाइन का एक स्टेशन है। पहले यहां के जुलाहों को बड़ी आय होती थी। मिल के कपड़ों के संघर्ष से इनका कारबार बहुत घट गया। यहां थाना, डाकखाना, जूनियर स्कूल और बाजार है। बाजार में अन्न, कपड़ा, कपास, गुड़, और

तम्बाकू की बिक्री होती है। मऊ ऐसा इस जिले का पहला स्थान है जहां पहले प्लेग फैली।

मेजा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह इलाहाबाद से २८ मील दक्षिण-पूर्व में और मेजा रोड स्टेशन से ६ मील दक्षिण की ओर स्थित है। मेजा रोड से एक पक्की सड़क कोरांव को जाती है। यहां इसमें मांडा से आने वाली सड़क मिलती है। यह कस्बा निचली पहाड़ियों की तलहटी में बसा है। १८७८ में अकाल पीड़ित लोगों को सहायता देने के लिये यहां एक पक्का तालाब बनवाया गया। इस तालाब में मन्दिर के पासवाली पहाड़ियों के एक सोते से पानी आता है। भादों महीने के प्रथम रविवार को यहां बड़ा मेला लगता है। अधिक पूर्व में पड़ाव के पास एक दूसरा तालाब है। गांव के पश्चिम में तहसील, थाना, डाकखाना और जूनि० स्कूल है।

मोहनगंज गोहरी गांव का बड़ा बाजार है। यह फाफामऊ से सिवैथ को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह फाफामऊ से १ मील और इलाहाबाद से ८ मील दूर है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। तम्बाकू, कपास, कपड़ा और अनाज का व्यापार होता है। भादों जन्माष्टिमी के अवसर पर यहां मेला लगता है। मूरतगंज इलाहाबाद से २१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंक रोड पर एक बड़ा बाजार है। बाजार के पश्चिमी सिरे से पश्चिम की ओर एक पक्की सड़क भरवारी स्टेशन और वहां से फिर राजापुर घाट को जाती है। सड़कों के बीच वाले त्रिभुज में पक्का ताल बना है। बाजार में डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अगहन में धनुषयज्ञ का उत्सव होता है।

नैनी गांव इलाहाबाद शहर से तीन मील की दूरी पर यमुना के पुल से दक्षिण की ओर है। यह ईस्ट इंडियन रेलवे से पूर्व की ओर स्थित है। यहीं ईस्ट इंडियन रेलवे की हावड़े से आनेवाली प्रधान लाइन में जबलपुर की ओर से आनेवाली जी० आई० पी० रेलवे मिलती है। वास्तव में यह लाइन आधे मील की दूरी पर छिउकी से फूटती है। माघ मेला के अवसर पर बहुत से यात्री यहां उतरते हैं। यात्रियों की सुविधा के लिये यहां कई टिकट घर खुल जाते हैं। उत्तर की ओर चीनी की मिल है। अधिक उत्तर में नैनी जेल है। इससे मिला हुआ कोढ़ीखाना है। पश्चिम की ओर कांच का कारखाना है। नवाबगंज एक बहुत ही छोटा गांव है। यहां का बाजार अवध के नवाब वजीर सफदर जंग ने बनवाया था। इसी से यह नाम पड़ा। यह फाफामऊ से कुंडा को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। यहां थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और पड़ाव है।

पनासा गाँव टोंस के बायें किनारे पर एक ऊंचे टीले पर स्थित है। यह करछना से ७ मील और इलाहाबाद से १६ मील दूर है। कहते हैं अब से १००० वर्ष पहले पावन पांडे नाम के एक ब्राह्मण ने इसे बसाया था। कुछ दूरी पर रेल के पुल के पास गुप्त कालीन एक स्तम्भ है।

फूलपुर कस्बा इलाहाबाद से १८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां होकर जौनपुर को पक्की सड़क जाती है। रेलवे स्टेशन उत्तर पूर्व की ओर है। इसके पड़ोस में निचली भूमि, झीलें और धान के खेत हैं। कहते हैं एक शेख फूल ने इसे अब से प्रायः ४०० वर्ष पहले बसाया था इसी से इसका यह नाम पड़ा। पहले यहां के जुलाहे बढ़िया छींट और कपड़ा बुनते थे। बाजार प्रतिदिन लगता है यहां कपड़ा, कपास, शक्कर और पीतल के बर्तनों का व्यापार होता है। यहां थाना, डाकखाना, ट्रेनिंग स्कूल और जूनियर स्कूल है। दशहरा का उत्सव होता है।

पूरामुफ्ती इलाहाबाद से १२ मील और मनौरी रेलवे स्टेशन से २ मील की दूरी पर ग्रांडट्रंक रोड पर स्थित है। यहां एक सड़क चायल से आती है। यहां थाना, डाकखाना, और पड़ाव है। मनौरी में बाजार लगता है। पहले यहां तेल का बड़ा कारखाना था।

सैदाबाद ग्रांडट्रंक रोड के दक्षिण में इलाहाबाद २० मील पूर्व की ओर हंडिया से ५ मील पश्चिम की ओर है। यहां डाकखाना, स्कूल, पड़ाव और छोटी लाइन का स्टेशन है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

सराय आकिल—इलाहाबाद से २२ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यहां से एक सड़क इलाहाबाद

शहर को और दूसरी यमुना के किनारे महिला घाट को आती है। बरेठी के आकिल मुहम्मद नामी एक मुसलमान फकीर की स्मृति में इसका यह नाम पड़ गया। यहां उसका मकबरा है। यहां पीतल के बर्तन और जेवर अच्छे बनते हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। बांदा और दूसरे स्थानों के व्यापारी यहां अनाज, कपड़ा बर्तन और चमड़ा मोल लेने आते हैं। यहां थाना, डाकखाना, और जूनियर हाई स्कूल है। दशहरा के अवसर पर मेला होता है।

सराय इनायत ग्रांडट्रंक रोड पर इलाहाबाद से ९ मील पूर्व की ओर है। १८ वीं सदी में इनायत खां नामी एक मुसलमान ने यहां एक मस्जिद और सराय बनवाई इसी से इसका यह नाम पड़ा। इस छोटे गांव में इस समय थाना और डाकखाना है।

सरीरा वास्तव में दो गांव हैं। पश्चिम सरीरा पश्चिम की ओर है, पूर्व सरीरा आध मील पूर्व की ओर है। यह इलाहाबाद से ३१ मील पश्चिम की ओर और मंझनपुर से ८ मील दक्षिण की ओर है। पश्चिम सरीरा प्रधान गांव है और करारी से राजापुर घाट को जाने वाली सड़क पर स्थित है। एक सड़क पश्चिम की ओर को जाती है। दोनों सड़कें गांव के पश्चिम में नहर की धाता शाखा को पार करती हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। भादों के महीने में झकझुलनी का मेला होता है।

शहजादपुर गङ्गा के ऊँचे किनारे पर सिराथू से ६ मील पूर्व की ओर इलाहाबाद से ३३ मील दूर है। यहां से एक सड़क ग्रांडट्रंक रोड और शुजातपुर रेलवे स्टेशन को आती है। पश्चिम की ओर एक पुराने पत्थर के बने हुये महल के खंडहर है। गङ्गा के किनारे बहुत से मन्दिरों और मकबरों के भग्नावशेष हैं। पहले यहां सूती कपड़े की छपाई का काम अच्छा होता था। शोरा भी बनता था। इस समय कुछ जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। यहां बाजार डकाखाना और प्राइमरी स्कूल है। दशहरा का उत्सव होता है और चैत में मेला लगता है। इसके उत्तर में उपजाऊ कछार है। ऊँचे सूखे भाग में बाग या नाले हैं।

शंकरगढ़ को १८७५ ईस्वी में बारा के राजा ने बसाया था। यह मांडा से यमुना के किनारे प्रतापपुर को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। यह बारा से १० मील और इलाहाबाद से २६ मील दूर है। पास ही जी० आई० पी० रेलवे का स्टेशन है। पूर्व की ओर एक सड़क इलाहाबाद से बांदा को जाने वाली सड़क से मिलती है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। बाजार रोज लगता है। इसके पड़ोस में पत्थर बहुत निकलता है। पत्थर का व्यापार प्रधान है। पड़ोस में गोचर भूमि बहुत होने से यहां दूध अच्छा और सस्ता मिलता है। इससे यहां के हलवाई मावा (खोआ) के प्रसिद्ध गुलाबजामुन बनाते हैं। यहीं राजा साहब की कोठी हैं। शिवराजपुर का छोटा गाँव बारा से ६ मील और इलाहाबाद से २६ मील दूर है। यह इलाहाबाद से बांदा और मांडा से प्रतापपुर (यमुना के किनारे) जाने वाली सड़कों के बीच वाली त्रिभुजाकार भूमि पर बसा है। यहां से सवा मील की दूरी पर शंकरगढ़ का बाजार और रेलवे स्टेशन बनने से पहले शिवराजपुर अधिक प्रसिद्ध था। यहां ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर गढ़वा के विख्यात भग्नावशेष हैं। उत्तर की ओर जुवई पहाड़ी पर पत्थर की खदानें हैं। पत्थर ढोने के लिये एक शाखा लाइन खदानों से शङ्करगढ़ स्टेशन को गई है। यहां बारा के राजा का अधिकार है।

गढ़वा एक पुराने गढ़ा या किले का नाम है। यह वास्तव में छोटी छोटी पहाड़ियों के बीच में दीवार का एक घेरा है। जिसके भीतर नीची भूमि पर मन्दिर बने हैं। इसमें दुर्ग के समान छेद बारा के राजा विक्रमाजीत सिंह ने १७५० ई० में बनवा दिये थे। इसके पूर्व और पश्चिम में दो सुन्दर तालाब हैं। यहां पत्थर के कई घाट शेष हैं। घेरे के भीतर सुन्दर नक्काशी के कई खम्भे हैं। उत्तरी पश्चिमी कोने पर ११४२ ई० (बरगढ़) का बना हुआ मन्दिर है। इसे भट्टग्राम (बरगढ़) के रणपाल ने बनवाया था। पहले यह मन्दिर बड़ा सुन्दर था। इस समय यह जीर्णावस्था में है। मन्दिर के पास विष्णु की टूटी हुई मूर्ति है। पश्चिमी दीवार के पास ब्रह्मा विष्णु और शिव की विशाल मूर्तियां हैं जिन्हें दसवीं शताब्दी में ज्वाला दित्य नामी एक जोगी ने बनवाया

था। उत्तर-पश्चिम की ओर प्राचीन मन्दिर के मसाले से एक नया मन्दिर बना है। इसमें सूर्य और नवग्रहो की मूर्तियां हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर एक कोठरी में विष्णु के दस अवतार बने हैं। यहां के दो अत्यन्त सुन्दर गुप्त कालीन स्तम्भ लखनऊ के अजायब घर में पहुँच गये हैं। यहां चन्द्र गुप्त द्वितीय, स्कन्द गुप्त और कुमार गुप्त के कई शिला लेख मिले। इसके पड़ोस में जो भग्नावशेष मिल रहे हैं उनसे सिद्ध होता है किसी समय भट्ट ग्राम एक विशाल नगर था। सिकन्दरा गांव मन्सेता के बायें किनारे पर फूलपुर से सोरॉव को जाने वाली सड़क पर इलाहाबाद से १२ मील उत्तर पूर्व की ओर है। कहते हैं सिकन्दर लोदी की स्मृति में यह नाम पड़ा। अकबर के समय में यह एक परगने का केन्द्र-स्थान था। १६०७ में यहां से थाना उठ गया। यहां एक प्राइमरी स्कूल और बाजार है। जेठ के रविवार को यहां सूर्य का मेला लगता है।

सिंगरौर (शृंगवेरपुर) गङ्गा के बायें किनारे पर इलाहाबाद से २२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह फाफामऊ से लालगञ्ज और कुंडा को जानेवाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर है। पास वाले रानीगञ्ज गांव में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

प्राचीन समय में शृङ्गवेरपुर अधिक प्रसिद्ध था। यहां से गङ्गा दक्षिण की ओर मुड़ती है। इससे नगर का बड़ा भाग कट गया। इसे फिर नवाब सफदर जंग ने बनाया। शृंगवेरपुर में शृंगि ऋषि रहते थे। पश्चिम की ओर एक ऊँचे टीले पर उनका स्थान बना है। यहां हर गौरी और चार पहियों के रथ पर सवार सूर्य की मूर्तियां हैं। रथ सात घोड़ों से खींचा जा रहा है। यहां के राजा ने श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण और सीता जी का स्वागत किया था। एक टीले पर एक मस्जिद और मुहम्मद सदारी का मकबरा बना है। यह हिन्दू मन्दिर के मसाले से बना है। सूर्य भीटे पर पुरानी ईंटें बिखरी हुई हैं। यहां प्राचीन समय के सिक्के मिले हैं। यहां एक स्कूल है। आषाढ़ और सावन में देवी का मेला होता है।

सिराथू गांव इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह सिराथू स्टेशन से १ मील दूर है। यह संझनपुर और धाता को जाने वाली सड़कों के बीच में इलाहाबाद से ३८ मील दूर है। रेलवे स्टेशन से एक सड़क उत्तर की ओर सैना को जाती है यहां से प्राय: १ मील की दूरी पर ग्रांड ट्रंक रोड पर स्थित है। यहां एक स्कूल और पड़ाव है। कहते हैं औरङ्गजेब ने इसका कुछ भाग कड़ा के फकीर मलूकदास को दे दिया था।

सिरसा गांव गङ्गा के दाहिने किनारे पर टौंस और गङ्गा के संगम से नीचे की ओर मेजा से ८ मील उत्तर की ओर इलाहाबाद से २ मील दूर है। मेजारोड रेलवे स्टेशन यहां से ३ मील दूर है। स्टेशन के पास ही अफीम की गोदाम और डाकखाना है। रेल के पहले जब गङ्गा में कलकत्ते की ओर से नावों द्वारा व्यापार होता था उस समय सिरसा एक बड़ा व्यापारी केन्द्र हो गया था। यहां से अल्सी और अनाज कलकत्ते को जाता था। कुछ व्यापार इस समय भी होता है। शुक्रवार और सोमवार को बाजार लगता है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और हाई स्कूल है।

सिवैथ का पुराना मुसलमानी गांव इलाहाबाद से ६ मील उत्तर की ओर है। यह फाफामऊ से मऊऐमा को जाने वाली सड़क पर स्थित है। पास ही पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां से एक पक्की सड़क शिवगढ़ को जाती है। यहां के जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं। गांव में एक स्कूल है।

सोरॉव इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह इलाहाबाद से फैजाबाद को जाने वाली पक्की सड़क पर इलाहाबाद से १३ मील उत्तर की ओर है। सोरांव के पास इस सड़क को नवाबगञ्ज से फूलपुर को जाने वाली सड़क काटती है। दक्षिण-पूर्व की ओर एक सड़क सिवैथ रेलवे स्टेशन को गई है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और पड़ाव है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।
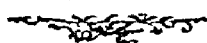
मिर्जापुर

मिर्जापुर जिला—यह मैदान के जिलों में सबसे अधिक बड़ा है। इसकी लम्बाई अधिक से अधिक सवा सौ मील और चौड़ाई ६० मील है। इसका क्षेत्र फल ५२४० वर्ग मील है। यह जिला उत्तर की ओर बनारस और जौनपुर जिलों से घिरा हुआ है। इसके पूर्व में बिहार प्रान्त के शाहाबाद और पलामू जिले हैं। दक्षिण में सरगूजा राज्य और दक्षिण-पश्चिम में रीवा राज्य है। उत्तर-पश्चिम में इलाहाबाद का जिला है। इस बड़ी सीमा में सिर्फ ८ मील तक गङ्गा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है और जिले की चुनार तहसील को बनारस जिले से अलग करती है।

जिस तरह यह जिला बहुत बड़ा है उसी तरह से जिले में तरह तरह के सुन्दर दृश्य भी हैं। उत्तर की ओर गङ्गा के दोनों किनारों पर कछारी मैदान है। विन्ध्या की चोटियों से कैमूर पर्वत श्रेणी और सोन नदी की घाटी तक पुराना पठार है। दक्षिण की ओर अधिक जङ्गल और पहाड़ हैं। केवल कहीं कहीं पहाड़ियों के बीच में उपजाऊ मैदान हैं।

गङ्गा की घाटी—गङ्गा नदी ने अपनी घाटी को दो हिस्सों में बांट दिया है। उत्तरी हिस्सा ५०० वर्ग मील है। यह लगभग २० मील चौड़ा और ४० मील लम्बा है। दक्षिण भाग ६०० वर्ग मील है। इसकी लम्बाई ६० मील है। लेकिन इसकी चौड़ाई एक सी नहीं है। चुनार विन्ध्याचल और कुछ दूसरे स्थानों में पहाड़ियां गङ्गा के किनारे तक आगई हैं। उन्होंने मैदान के लिये कुछ भी जगह नहीं छोड़ी दोनों भागों की जमीन एक सी ही उपजाऊ है। लेकिन दक्षिणी भाग बहुत कटा फटा है। विन्ध्याचल से निकलने वाली छोटी नदियां इधर ही होकर गङ्गा में बहती हैं।

विन्ध्याचल का पठार जिले के बीच में है। यह भाग विन्ध्या चल और कैमूर पहाड़ियों के बीच में बसा भाग गङ्गा के मैदान के ऊपर ५०० फुट ऊँचा उठा हुआ है। कहीं कहीं इसकी ऊंचाई १२०० फुट है। इसका क्षेत्रफल १८०० वर्ग मील है। इस ओर का जङ्गली दृश्य बड़ा सुन्दर है। लेकिन जमीन अच्छी नहीं है। इसी से खेती कम होती है।

सोन नदी के दक्षिण में सोन पार है। इधर बहुत सी छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। अक्सर उनके ऊपर छोटी छोटी झाड़ियां मिलती हैं। यह प्रदेश १७०० वर्ग मील है। पर इधर जमीन अच्छी है। सोन, कनन, सिंगरौली और दूधी नदियों की घाटी में ही खेती के योग्य अच्छी जमीन मिलती है।

इस तरह गङ्गा की घाटी में सब से अच्छी जमीन मिलती है। दुमट, मटियार और बलुआ में अच्छी खेती होती है। बलुई जमीन अच्छी नहीं होती है। पठार पर कड़ी, कम गहरी लाल चिकनी मिट्टी होती है। इसमें लोहा मिला रहता है। इसमें बहुत कम पैदावार होती है। कैमूर पहाड़ की तलहटी में उपजाऊ जमीन है। लेकिन जिले भर में लगभग आधी जमीन ऐसी है जिसमें खेती नहीं हो सकती है।

नदियां—गङ्गा नदी करौंदिया गांव के पास पश्चिम की ओर से मिर्जापुर जिले में घुसती है। ८४ मील बहने के बाद गङ्गा नदी इस जिले को छोड़ कर बनारस में पहुँचती है। जिले में गङ्गा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी रेखा का फासला ५६ मील से अधिक न होगा। गङ्गा नदी बड़ी टेढ़ी चाल से चलती है। इसका दाहिना किनारा बहुत ऊंचा है। लेकिन जहां जिरगा, बेलन, करनौती, खजुरी और लिघला नदियां गङ्गा में मिलती हैं वहां यह बहुत कटा फटा है। उत्तरी किनारा अक्सर बहुत नीचा है। इधर कछारी मिट्टी में पानी के किनारे तक खेत हैं। हर साल गङ्गा नदी में तीस-चालीस फुट ऊंची बाढ़ आती है। इन दिनों गङ्गा की धार बड़ी तेज और चौड़ी हो जाती है। और दिनों में गंगा की चौड़ाई चार पांच सौ गज होती है। गङ्गा को पार करने के लिये कई जगह पर घाट हैं। बरसात के बाद हरसाल मिर्जापुर में लोहे की नावों का पान्टून पुल बन जाता है। गरमी के बाद बाढ़ आते ही यह पुल फिर तोड़ दिया जाता है। चन्द्र भागा नदी चकिया तहसील में विन्ध्याचल के पठार से निकलती है। पठार से नीचे उतरते समय यह

नदी ४०० फुट ऊंचा देवदारी झरना (प्रपात) बनाती है। यहीं एक चट्टान के ऊपर पुराने गहरवार किले के खंडहर हैं। इसके आगे सात मील तक नदी के किनारे इतने ऊंचे हैं कि पानी से किनारे के ऊपर चढ़ना कठिन है। केरा मंगरौर के पास मैदान है।

कर्मनासा नदी जिले के बाहर रोहतासगढ़ की कैमूर पहाड़ो से निकलती है। इसकी चौड़ाई बहुत घटती बढ़ती रहती है। लेकिन इसमें नावें कहीं नहीं चलती हैं।

सोन नदी रीवां राज्य से जिले में आती है। ३५ मील जिले में बहने के बाद यह नदी फिर बिहार के आरा जिले में चली जाती है। इसकी घाटी बड़ी गहरी है। इसी से घाटी की चौड़ाई आठ नौ मील से अधिक नहीं है। गरमी के दिनों में इसकी धारा ६० से १०० गज चौड़ी रहती है। लोग इसे पांव पांव पार कर जाते हैं। बाढ़ के दिनों में यह नदी बड़ी भयानक हो जाती है। इस नदी में बांस के बड़े देहरी को बढ़ाये जाते हैं।

बेलन नदी राबर्टसगंज के पूर्व में निकलती है। इसका पठारी भाग बहुत सुन्दर है। मिर्जापुर जिले को छोड़ने के बाद यह नदी टोंस में मिल जाती है।

वनस्पति—जिले का पठारी भाग जङ्गल से घिरा है। जङ्गल की बहुत सी लकड़ी मिर्जापुर शहर में बिकने आती है। कुछ लोग लकड़ी के कोयला बनाते हैं। सोन पार में नदियों के पास जङ्गल बहुत घना है। जङ्गल में सेमल, आंवला-बहेरा, तेन्दू और खैर के पेड़ बड़े काम के होते हैं।

यहीं महुआ, बांस और साल के पेड़ मिलते हैं। कहुआ या अर्जुन की छाल से चमार लोग चमड़ा कमाते हैं। पलास या ढाक से लाख निकाली जाती है। आसन या सज्जा की पत्तियां टसर और रेशम के कीड़ों को खिलाई जाती है। खैर की लकड़ी को उबाल कर खैरिया लोग खैर निकलते हैं। लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े दिन भर उबाले जाते हैं। फिर उसका रस दूसरे बरतनों में कर लिया जाता है। यही सूखकर कत्था हो जाता है।

मैदान में बरगद, पीपल, शीशम, आम, नीम, बेल, जामुन, और इमली, के पेड़ मिलते हैं। आम का बाग अक्सर गांव के पास होता है।

पशु—घने जङ्गलों में चीता मिलता है। तेन्दुआ सब कहीं पाया जाता है। भेड़िया उत्तरी भाग में रहता है और रात को बकरी उठा ले जाता है। गीदड़ और लोमड़ी मैदान में बहुत हैं। कहीं कहीं चीता मिलता है। गङ्गा की घाटी में नील गाय, हिरण और जंगली सुअर भी बहुत हैं। गङ्गा नदी के कहीं केहीं मगर मिलता है। कुछुआ और मछली सभी नदियों में हैं।

इस जिले में गाय-बैल सब कहीं पाले जाते हैं। पहाड़ी भाग में भेड़-बकरी बहुत हैं। कहीं कहीं सवारी और बोझ ढोने के लिये ऊंट पाले जाते हैं। कस्बों में इक्का चलाने वाले घोड़े रखते हैं। धोबी लोग गधे पालते हैं।

जलवायु—(सरदी, गरमी और वर्षा) होली के बाद इस जिले में गरमी बढ़ने लगती है। वैसाख और जेठ के महीनों में नंगी चट्टानें तपने लगती हैं। वर्षा होने पर गरमी कुछ कम हो जाती है। दिवाली के अड़ोस पड़ोस न सरदी न गरमी अधिक होती है। लेकिन माघ के महीने में कड़ा जाड़ा पड़ता है।

अगर हम अपने साल भर की सारी वर्षा का सारा पानी एक जगह इकट्ठा कर सकें तो यह पानी राबर्टसगंज में सवा गज गहरा हो जायगा, लेकिन साल में इस जिले में सब कहीं ४० इंच से अधिक वर्षा होती है। इस जिले की जलवायु तन्दुरुस्ती के लिये बड़ी अच्छी है।

खेती—बरसात होते ही कैमूर के उत्तर में हमारे किसान लोग धान बो देते हैं अगर तुम धान बोते समय किसान के साथ रहो तो तुम्हारे पैर कीचड़ में सन जावें। जहां पानी कम होता है। वहां बाजारा बोया जाता है। बाजरा के साथ किसान लोग अरहर और तिल भी बो देते हैं। कहीं कहीं ज्वार भी बोई जाती है। अरहर को छोड़कर यह फसल सरदी होते ही कट जाती है। सरदी शुरू होने के कुछ पहले गेहूँ और चना बोया जाता है। पर इस जिले में गेहूँ से चना अधिक होता है। इसी के साथ सरसों और मटर भी बोई जाती है। गङ्गा की घाटी में पानी काफी बरस जाता है। फसल को अलग से सींचते की जरूरत नहीं पड़ती है। पर

सोन पार में पानी की कमी से वहां फसल उगाने के लिये खेतों को सींचना पड़ता है।

मिर्जापुर का कारबार—मिर्जापुर के दक्षिण भाग में फेलस्पार मिलता है काली और कुछ भूरी अभ्रक भी यहाँ मिलती है। पुखरा के दक्षिण-पश्चिम में एपिडोट (Epidote) चट्टान मिलती है।

औंधी के पूर्व में संगमरमर मिलता है। चरचरी के दक्षिण पश्चिम में सीमा मिलता। पांगन नदी के किनारे कोयलकट और बोरची के पास दूधी तहसील में लोहा पाया जाता है। सिंगरौली में लोहा बहुत है।

बन—मिर्जापुर जिले की आधी जमीन (लगभग) (१५ लाख एकड़) जमीन उजाड़ है। पर यहां के बनों में बड़े काम की चीजें मिलती हैं।

पीपल के पेड़ों से लाख मिलती है सेमल के पेड़ से रेशम की तरह मुलायम और चमकीली कपास निकलती है। और तकियों और गद्दों में भरने के काम आती है। इसकी लकड़ी दियासलई बनाने के लिये बड़ी अच्छी होती है। बीज से तेल निकलता है। पलास या ढाक के फूलों से सुन्दर रंग निकाला जाता है।

बहेरा आंवला और हर्रा चमड़ा कमाने के काम आता है।

शीशम, साल, तेंदू और हल्दू की लकड़ी बड़ी मजबूत होती है और तरह तरह के काम में आती है। तेंदू की पत्तियों से बीड़ी बनती है।

बांस भी लाठी डंडा बनाने और अन्य कई कामों में आता है। इससे कागज भी बनता है। महुआ के फूल मीठे होते हैं और खाये जाते हैं। उनसे शराब भी बनती है। फलों से तेल निकाला जाता है।

आसन के पत्ते रेशम के कीड़ों को खिलाये जाते हैं और खैर से कत्था निकलता है।

बरगद, नीम, बेल, जामुन, इमली सब कहीं है धोअरा, खिड़िया, सलाई, परसीदोह, म्चीजासाल, कहुआ या अर्जुन और कुलू के पेड़ बन में मिलते हैं।

२५० सुनार केवल मिर्जापुर शहर ही में हैं। हर साल १५००० तोले चांदी और २५० तोले सोना गहना बनाने के लिये मंगाया जाता है। कड़ा, बाजू, करधनी, अंगूठी आदि तरह तरह के जेवर बनते हैं।

पत्थर—मिर्जापुर में १४,००० पत्थर की खदानें हैं। इनमें ३००० से पत्थर निकाला जाता है। सारी खानें सरकार की जायदाद समझी जाती हैं। इसलिये जो पत्थर खोदकर निकाला जाता है उस पर सरकार २ पैसे प्रति घन फुट के हिसाब से कर लेती है।

पत्थर से चक्की, पाट, कूंडी, प्याले, पटा आदि तरह तरह के बरतन बनते हैं।

राबर्टसगंज तहसील में चूने का पत्थर बहुत है। पर आने जाने और बोझा ढाने की सुविधा न होने से यहां सीमेंट का कोई कारखाना नहीं है। यहां आटा पीसने की पांच मिलें हैं।

यहां हरसाल ढाई लाख मन से ऊपर पीतल, १३,००० मन तांबा और ३४,०८० मन जस्ता लोटा, थाली, घड़ा आदि बरतन बनाने के लिये मंगाया जाता है। कुल १५० छोटे छोटे कारखाने हैं जिनमें ४००० ठठेरे काम करते हैं। हरसाल ८५ लाख रुपये के बरतन यहां से बनकर बाहर जाते हैं।

चमड़ा—लगभग १००० चमार काम करते हैं वे ऊंट की खाल से कुप्पा (तेल भरने के लिये) बैल की खाल से मोट और भैंस की खाल से जूता बनाते हैं। भेड़ बकरी की खाल ढोल या खंजरी मढ़ने के काम आती है। सादा चमड़ा कानपुर भेज दिया जाता है।

जिले भर में लगभग १०७ केवट, मल्लाह और पासी मछली मारने का काम करते हैं।

जेल में दरी और मूंज की चटाई बुनी जाती है। हर एक कैदी को ३०० गज रस्सी बटनी पड़ती है जो २—४ (फुट) चटाई के लिये काफी होती है। मूंज कासगंज (एटा) से आती है।

लाख—मिर्जापुर में प्रान्त भर में लाख का सब से बड़ा कारबार है। ८० कारखानों में १५००० मनुष्य काम करते हैं। १६५,००० मन कच्ची लाख मध्य-प्रान्त, बरार, आसाम, सिन्ध और पञ्जाब से मई और अक्तूबर महीने में आती है। इसको साफ करके २½ करोड़ रुपये की लाख बाहर भेजी जाती है।

तेल—तिल, महुआ, सरसों, अलसी और बर्रे से तेल पेरा जाता है। एक घानी में तीन चार सेर

दाने पड़ते हैं और तीन घंटे में १ सेर तेल तैयार होता है।

एक घानी की पिराई ३ आने लगते हैं। दिन भर में तीन चार घानी पेरी जाती हैं। इस प्रकार कोल्हू के एक बैल और तेली की मजदूरी किसी तरह निकल आती है। नीम और अरेंडी की मिंगी पेरी जाती है इसलिये उससे आधा तेल निकलता है।

मिट्टी के बरतन—यहां ८५०० कुम्हार हैं। पर चुनार के पास (दो मील की दूरी पर) दो तालावों से नकटी और खासी नाव की सर्वोत्तम मिट्टी निकलती है इससे यहां २०,००० रु० के बरतन तैयार होते हैं और कलकत्ता, बनारस और इलाहाबाद को भेजे जाते हैं।

रेशम—३०,००,००० कोकून हरसाल अहरौरा में आते हैं। अहरौरा में ८५ घर पटवों के हैं जो रेशम का ही काम करते हैं। बहुत सा रेशम बनारस को भी भेजा जाता है।

ऊन—मिर्जापुर, माधो सिंह, घोसिया में ऊनकी कालीनें बनती हैं। मिर्जापुर शहर में ५०० कारीगर हैं। ५००० गंगा के उत्तर में ऊन का काम करते हैं। ३०२० करघे हैं। ११ या बारह हजार मन वजन की कालीनें बाहर जाती हैं। १५ लाख रुपये का सामान तैयार होता है।

लकड़ी—की दुकानें हैं। पर अच्छे रंगीन खिलौने अहरौरा में बनते हैं। ५ हजार रु० के खिलौने बनारस को भेजे जाते हैं। २ लाख रु० का सारा सामान तैयार होता है।

१६, लाख रु० का सूती कपड़ा तैयार होता है। कपास बम्बई पञ्जाब और मध्यप्रान्त से आती है।

६ लाख रु० का पत्थर निकाला जाता है।

८५ लाख रु० के बर्तन तैयार होते हैं।

आने जाने के मार्ग

पक्की सड़कें—जिले के उत्तरी भाग में सड़क बनाने में सुविधा है। दक्षिणी भाग में पहाड़ और जंगल बड़ी रुकावट डालते हैं। इसलिये दक्षिण की ओर बैलगाड़ी और मोटर कम चलते हैं। लोग अपना सामान बैल या ऊँट पर लाद कर ले आते हैं। जिले में सब से अधिक मशहूर पक्की सड़क ग्रांडट्रंक रोड है। यह सड़क गङ्गा से बहुत दूर नहीं है। यह सड़क बनारस से इस जिले में आती है और इस जिले को पारकर इलाहाबाद की ओर चली जाती है। जिले में इसकी लम्बाई केवल २४ मील है। मिर्जापुर से जौनपुर जानेवाली पक्की सड़क इसको काटती हुई जाती है। दूसरी पक्की सड़क मिर्जापुर से चलकर गोपी गंज के पास ग्रांडट्रंक रोड से मिल जाती है। गोपी गंज से एक छोटी सड़क गङ्गा के किनारे समथार को गई है। रामनगर से अहरौरा जाने वाली सड़क अधिक बड़ी है।

ग्रेटडेकन रोड मिर्जापुर शहर से दक्षिण की ओर जिले के बाहर जाती है। मिर्जापुर से रावर्टसगञ्ज पहुँचने के लिये (मरिआहांतक) पक्की सड़क मिलती है। विन्ध्याचल पहाड़ी का पत्थर शहर में लाने के लिये भी एक छोटी चक्करदार पक्की सड़क तैयार हो गई है।

जिले में गङ्गा और सोन नदियों में नावें चला करती हैं। गङ्गा के किनारे कई घाट हैं। वहां नदी को पार करके लोग एक किनारे से दूसरे किनारे को जाते हैं। यहां से बहुत से मल्लाह हर साल पत्थर और लकड़ी बंगाल की तरफ ले जाते हैं। उधर से वे चावल गिरी और दूसरी चीजें लाद लाते हैं।

रेलवे—ईस्ट इंडियन रेलवे इस शहर को पश्चिम की ओर इलाहाबाद से और पूर्व की ओर हावड़ा से मिलाती है। इस जिले के नक्शे में अहरौरा रोड, कैलाहाट, डगमगपुर, पहाड़ी, भिंगुरा, मिर्जापुर, विन्ध्याचल, विरोही गायपुरा और जिगना स्टेशन हैं।

गङ्गा के उत्तरी किनारे के पास बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे है। यह लाइन एक ओर बनारस और दूसरी ओर इलाहाबाद को जाती है। माधोसिंह स्टेशन से एक शाखा मिर्जापुर घाट या चील को आती है। इसके सामने ही गङ्गा के दूसरे किनारे पर मिर्जापुर शहर बसा है।

इतिहास—जिले के पहाड़ी भाग में पुराने जमाने की कुछ अनोखी गुफायें हैं। इनमें पत्थर और हड्डी के हथियार मिले हैं। उन दिनों में यहां के लोग लोहे के हथियार बनाना नहीं जानते थे। इन लोगों ने गुफाओं में बड़े सुन्दर चित्र खींचे हैं। एक

जगह उन्होंने काशी और सारनाथ के चित्र बनाये हैं। एक चित्र में गैंडा का शिकार दिखलाया गया है। आजकल एक सींगवाला बड़ा गैंडा नैपाल की तराई में रहता है। पर पुराने जमाने में यह जिला भी ऐसा तर और हरा भरा था कि यहां के दलदलों में गैंडा घूमते थे। पीछे से लोगों ने जंगल काट कर साफ कर दिये। इससे पानी कम बरसने लगा।

बहुत पुराने समय में बहर, चेरों और सिउरी लोगों का जोर था। कोल और खखार लोग आज कल बड़ी गिरी हालत में हैं। लेकिन पहले इनका भी राज्य था।

आगे चलकर गङ्गा की घाटी में अशोक और गुप्त राजाओं का राज्य हुआ। ग्यारहवीं सदी में यह जिला कन्नौज के राज्य में मिल गया। ११९३ ई० में मुहम्मद गोरी ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया। फिर इस जिले पर भी मुसलमानों के हमले होने लगे। लेकिन जिले के सभी भागों में चन्देले राजा अपना राज्य करते रहे।

पन्द्रहवीं सदी में चुनार का मजबूत किला मुसलमानों के हाथ चला गया। १५३० ई० में शेरशाह ने इस किले को ले लिया।

१५६२ ई० में चुनार का किला और यह जिला अकबर के राज्य में शामिल हो गया। दो तीन वर्ष बाद अकबर ने पड़ोस के घने वन में जंगली हाथियों का शिकार किया।

दक्षिणी भाग में कुछ हद तक राजपूतों का ही राज्य बना रहा। १७४० ई० में गङ्गापुर के एक भूमिहार जमींदार का का लड़का राजा बन गया। उसका नाम बलवन्त सिंह था। उसने पहले अपने गांव में किला बनवाया। वह बड़ा वीर था। पहले उसने इलाहाबाद के सूबेदार को हराया। फिर उसने गङ्गा के किनारे रामनगर में अपना महल बनाया। धीरे धीरे उसने अहरौरा, लतीफ पुर और विजयगढ़ के किले जीत लिये। अन्त में उसने चुनार के किले को लेने की तैयारी की। इससे अवध का नवाब उससे नाराज हो गया। पर इसी बीच में ईस्ट इण्डिया कम्पिनी ने दिल्ली के राजा और अवध के नवाब को बकसर की लड़ाई में हरा दिया। इससे बलवन्त सहिं का राज्य उसी के हाथ में बना रहा। पर उस पर लगान बढ़ा दिया गया १७७० ई० में बलवन्त सिंह के मरने पर चेत सिंह बनारस का राजा हुआ। चेतसिंह को पहले २२ लाख रुपये अवध के नवाब को नजर करने पड़े। फिर उसे कम्पिनी को सालाना २२ लाख रुपये देने पड़े। पर कम्पिनी का गवर्नर वारेन हेटिंग्स चेत सिंह से बिगड़ गया। उसने चेतसिंह से कई लाख रुपये और सिपाही मांगे। अन्त में उसने राजा को महल में कैद कराने का हुक्म दिया। इससे प्रजा बिगड़ गई। हेटिंग्स को भागकर चुनार में शरण लेनी पड़ी। बहुत दिनों तक पहाड़ी भाग में लड़ाई होती रही। अन्त में चेत सिंह पहाड़ी रास्ते से ग्वालियर की ओर निकल भागा। लेकिन वह मर गया और उसका फुफेरा भाई महीप नरायन सिंह बनारस का राजा बनाया गया। अब बनारस राज्य को सालाना ४० लाख रु० लगान के देने पड़े। नये राजा को अपनी टकसाल से रुपया गढ़ने का अधिकार भी न रहा। १७९४ ई० में कुछ परगनों को छोड़कर राजा से शेष राज्य ले लिया गया। १७९५ ई० में उसका बेटा उदित नरायन सिंह बहादुर राजा बनाया गया। अभी तक मिर्जापुर जिला बनारस में शामिल था। १८३० ई० में यह जिला अलग हो गया।

१८५७ में गदर हुआ। भदोही इलाके में बड़ी गड़बड़ी रही। बाहर से आने वाले बागियों को लोगों से कोई सहायता न मिली। दक्षिणी पहाड़ी भाग में कई बार बागियों से मुठभेड़ हुई। एक दो बागी गाँव जला दिये गये। कुछ ही समय में जिले भर में शान्ति हो गई। तब से अब इस जिले में कोई भारी घटना न हुई।

लोग, शिक्षा और भाषा—जिले लगभग १२ लाख मनुष्य रहते हैं। सब से अधिक मनुष्य गङ्गा की घाटी में रहते हैं। पहाड़ी भाग कम आबाद है। उधर स्कूल भी कम हैं। अधिकतर लोग गांवों में रहते हैं। विन्ध्याचल, मिर्जापुर, चुनार और अहरौरा ही ऐसे कस्बे हैं जहां ५००० से अधिक मनुष्य रहते हैं। अधिकतर लोग छोटे छोटे गावों में रहते हैं।

हर सौ आदमी पीछे ९३ हिन्दू, ६ मुसलमान और बाकी में ईसाई आदि हैं। पहाड़ी भाग के कोल, गोंड और दूसरे लोग हिन्दू देवी देवताओं को मानते हैं। वे राजा जयचन्द के लड़के लखनदेव को भी

देवता के समान मानते हैं। उनके ओझा (गुरू) भूत प्रेतों को भगाने का काम करते हैं। वे घनश्याम देव और दूल्ला देव को भी मानते हैं। दूल्हा देव का गीत यह है:—

जिमिलिया में जनम भयो,
सरगुजवा में ब्याह रचल,
एड़िया में महवर पियर धोतिया।
दूल्हा गौना करावै चल भैलिन,
आगे आगे दूल्हाजी का घोड़ा चलल,
पीछे-पीछे दुलहिन जी की डांडी॥

हिंदुओं में सब से अधिक (डेढ़ लाख या १५ फी सदी से ऊपर) ब्राह्मण हैं। और मिर्जापुर तहसील में वे सब से अधिक हैं। वे अधिकतर जमींदार और किसान हैं। दूसरा नम्बर चमारों का है। वे मजदूरी और खेती करते हैं। कुछ चमड़ा साफ करते हैं।

अहीर और कुरमी १० फीसदी (१ लाख से कुछ ऊपर हैं। वे गाय पालते हैं और खेती करते हैं।

राजपूत लगभग ५०,००० हैं। वे जमींदार और किसान हैं।

लोहार लोहे का काम करते हैं। गड़रिया भेड़ पालते हैं। तेली तेल पेरते हैं। बनिये व्यापार करते हैं। पर इनकी तादाद ज्यादा नहीं है।

कोल (२७०००) अधिकतर मिर्जापुर और राबर्ट्स गञ्ज तहसीलों में रहते हैं। मांझी या गोंड मझवर (२१,०००) भी राबर्ट्स गञ्ज में रहते हैं। यहां खरवर लोग रहते हैं। वे खैर (कत्था) निकालते हैं। भयार लोग अधिकतर बीज बोने और चींड लोग मजदूरी का काम करते हैं। गोंड, चेरो पंखा और दूसरे लोगों की संख्या कम है।

मुसलमानों में अधिकतर जुलाहे हैं कुछ शेख और बेहना हैं।

अधिकतर लोग पूर्वी हिन्दी बोलते हैं। पहाड़ी लोग भी अपनी पुरानी बोली छोड़ कर हिन्दी ही बोलते हैं। मुसलमान लोग खड़ी बोली बोलते हैं।

शिक्षा की कमी है। ६० फीसदी से ऊपर लोग अपना नाम तक नहीं लिख सकते हैं।

राज प्रबन्ध—जिले का सब से बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ्तर मिर्जापुर शहर में है। यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह जिले का दौरा भी करता है उसको पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते हैं। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सब से बड़ा अफसर पुलिस सुपरिन्टेन्डेण्ट या कप्तान कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं। यह लोग अपनेथाने की देख भाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है। मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, कलक्टर ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टर से मदद मिलती है। मालगुजारी वसूल करने के लिये पटवारी, कानूनगो नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और तालीम का काम म्युनिसिपैल्टी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की तालीम सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्टबोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं

मिर्जापुर जिले भर में सबसे बड़ा शहर है। लेकिन यह बहुत बड़ा पुराना नहीं है। पहले विन्ध्याचल और कन्तित अधिक मशहूर थे। कहते हैं जब औरंगजेब ने विन्ध्याचल के मन्दिर गिरवा दिये उसके बाद नार घाट के पास मिर्जापुर शहर की नींव पड़ी। पुराने लेखों में पहले पहल सन् १७६० ई० के लगभग मिर्जापुर का नाम मिलता है। पर इसके बाद शहर बड़ी तेजी से व्यापार की मंडी बन गया। दक्षिण की रुई यहीं आने लगी। उस समय स्टीमर कलकत्ते से यहां तक आते थे। यमुना और ऊपरी गङ्गा में देशी नावें उधर का समान यहां लाती थीं। पर १८६० के लगभग रेल इलाहाबाद तक पहुँच गई। इससे मिर्जापुर का व्यापार एक दम ढीला पड़ गया। धीरे धीरे यहां कालीन, लाख और पीतल का कारबार बढ़ने लगा जो अब भी मौजूद है।

शहर गङ्गा के ऊंचे किनारे पर बसा है। सिविल लाइन उत्तर-पूर्व की ओर है। शहर में कोई आलीशान इमारतें नहीं हैं। लेकिन यहां से कई बड़े शहरों को पक्की सड़कें जाती हैं। यहां ईस्ट इण्डियन रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है। गङ्गा के दूसरे किनारे पर बङ्गाल

नार्थ वेस्टन रेलवे का स्टेशन है। यहां जिले की कचहरी और हाई स्कूल है।

मिर्जापुर खुर्द या छोटा मिर्जापुर हाल में बसाया गया। यह बड़े शहर से २३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां शक्कर तैयार करने का काम होता है। लालगंज ग्रेटडकन रोड पर मिर्जापुर से १६ मील दूर है। पहले यहां व्यापारी लोग पड़ाव डालते थे। इसो से यह मशहूर हो गया। यहां एक छोटा बाजार लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल भी है।

मरिहान—मिर्जापुर से १८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां पर दो तरफ से आने वाली सड़कें मिलती हैं। पड़ोस में पान की खेती होती है।

अकोढ़ी—मिर्जापुर से १० मील पश्चिम की ओर एक बड़ा गांव है। गदर के दिनों में यहां के लोगों ने शहर लूटने की तैयारी की थी।

अष्टभुजा—विन्ध्याचल गांव से ढाई मील दूर पहाड़ी पर एक तीर्थ है।

बाड़ा या चील मिर्जापुर शहर के सामने गंगा के दूसरे किनारे पर एक बड़ा गाँव है। गोपीगंज से आने वाली पक्की सड़क यहीं ठहर जाती है। पास ही पान्टून पुल है।

विन्ध्याचल—गङ्गा के किनारे पहाड़ी के नीचे मिर्जापुर शहर से ६ मील पश्चिम की ओर है। यहीं विन्ध्यवासिनी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसका दर्शन करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। यहीं पहले पम्पापुर था। पास ही पुराने खंडहर हैं।

दिमोर आजकल बहुत छोटा गांव रह गया है। यहां १८२४ ई० में बंजारों ने एक मन्दिर बनवाया। इस पर एक लम्बा लेख खुदा हुआ है।

देवहाट या ड्रमंडगंज कटा दर्रे के पास ग्रेटडेकन रोड पर एक प्रसिद्ध गांव है।

हलिया—मिर्जापुरसे ३४ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यहां हर इतवार और बुधवार को बाजार लगता है। पास ही एक पुराना कच्चा किला है।

कछवा—मिर्जापुर से ११ मील उत्तर-पूर्व की ओर एक बड़ा गांव है। घाट तक पक्की सड़क है आगे कच्ची है। यहां लोहे के बर्तन अच्छे बनते हैं। जहां पहले नील की कोठी थी वहां अब शफाखाना है। यहां एक बड़ा बाजार लगता है। कुछ घर पक्के हैं। अधिकतर कच्चे हैं।

कन्तित—उफला और गङ्गा के संगम पर विन्ध्याचल के पास एक पुराना गांव है। पुराने किले खंडहर अब तक मौजूद हैं।

कोंढ़—भदोही जिले भर में एक बहुत पुराना गांव है। यह मिर्जापुर से उत्तर की ओर २१ मील दूर है। यहां पुराने किले और दूसरे मकानों के खंडहर हैं। आजकल यहां एक रेलवे स्टेशन थाना और स्कूल है।

डींग—यह मिर्जापुर से उत्तर-पश्चिम की ओर २२ मील दूर है। यहां गंगास्नान का बड़ा मेला होता है। पास वाले कटरा सुजान सिंह गांव में हर बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है।

गोपीगंज—मिर्जापुर से उत्तर-पश्चिम की ओर १९ मील दूर है। यहीं मिर्जापुर से आनेवाली पक्की सड़क ग्रांडट्रंक रोड से मिलती है। तीसरी छोटी पक्की सड़क रामपुर घाट को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

खमरिया—मिर्जापुर से गोपीगञ्ज को जाने वाली पक्की सड़क पर एक बड़ा गांव के है। यहां के जुलाहे कालीन और कपड़ा बुनने का काम करते हैं। पहले यहां नील की कोठी भी थी।

कोढ़—गोपीगंज से १४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। इसी के साथ ज्ञानपुर मिला हुआ है। यहां डाकखाना, शफाखाना, तहसील और हाई स्कूल है। यहां बाजार भी लगता है।

उफ—यह गांव मिर्जापुर से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंक रोड पर बसा है।

चुनार—यह चरणाद्रि से बिगड़ कर बना है। इसका अर्थ है पहाड़ का पैर। सचमुच यहां विन्ध्याचल पहाड़ का पैर गङ्गा जी में घुसा हुआ मालूम होता है। पास ही जिरगो नदी गङ्गा में मिलती है। कहते हैं विक्रमादित्य के भाई भारती नाथ, यहां भोग किया करते थे। उनके लिये विक्रमादित्य ने पहाड़ी

पर किला बनवा दिया। इस जिले ने कई राज पलटते देखे हैं। आजकल इसके भीतर एक रिफार्मेटरी (जुर्म करने वाले लड़कों को सुधारने वाला) स्कूल है। कस्बे में एक हाई स्कूल, एक टाऊन स्कूल है। यहां मिट्टी के बर्तन बहुत अच्छे बनते हैं। कहते हैं यहां की एक मस्जिद (मिगम मुअज्जिम) में कर्बला के शहीद हसन और हुसेन के उतारे हुए कपड़े रक्खे हैं। गंगेश्वर नाथ मन्दिर में एक बहुत पुरानी मूर्ति है।

पतीता--यह मिर्जापुर से ३२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। १७५२ ई० में इसको चेतसिंह ने जीता था। १७८१ ई० में यह ईस्ट इंडिया कम्पिनी के हाथ लगा। यहां एक कच्चा किला है।

सकटेसगढ़--आजकल यह एक छोटा गांव है। यहां अकबर के समय में कोल लोगों को ठीक रखने के लिये सकट सिंह ने एक किला बनवाया था। यह किला उस स्थान पर बना है जहां जिरगो नदी पहाड़ छोड़कर मैदान में आती है। पास ही सिद्ध नाथ की गुफा है।

सुकृत--मिर्जापुर से ४० मील दक्षिण-पूर्व की ओर एक छोटा गांव है। पास ही इसी नाम का दर्रा है जिसमें होकर सड़क विन्ध्याचल पठार से गङ्गा की घाटी में उतरती है। दर्रे के नीचे लतीफपुर किले के खंडहर हैं। १७५२ ई० में चेतसिंह ने इसे जीत लिया। लेकिन १७८१ ई० में यह ईस्ट इंडिया कम्पिनी के हाथ लगा। अहरौरा कस्बा दक्षिण-पूर्व की ओर चुनार से १२ मील और मिर्जापुर से ३२ मील दूर है। यहां से एक कच्ची सड़क चुनार को जाती है। दूसरी पक्की सड़क अहरौरा रोड रेलवे स्टेशन को गई है। इसके पास ही चपटी चोटी वाले पथरीले टीले हैं। यहां लकड़ी के सुन्दर रंगीन खिलौने बनते हैं। टसर का काम भी होता है। यहां कई बड़े गोले (बाजार) हैं। यहीं तारघर, डाकघर स्कूल और शफाखाना है।

भुइली--चुनार से ११ मील पूर्व एक बड़ा गांव है। यहां एक डाकघर और स्कूल है। बाजार रोज लगता है। पहाड़ों के ऊपर एक पुराना किला है। नीचे खोह में कुछ शिला लेख और चित्र खुदे हैं।

चकिया--इसी नाम की तहसील का प्रधान नगर (सदरमुकाम) है। यहां सुन्दर तालाब, बगीचा, स्कूल और डाकखाना है। यहां से ८ मील की दूरी पर कर्मनासा नदी का झरना है। यहां शक्कर बनाने का काम होता है।

केड़ा-मंगरौर--इसी नाम के दो छोटे छोटे गांवों के मिलने से बना है।

सिकन्दरपुर--चन्द्रप्रभा नदी के किनारे एक बड़ा गांव है। इसके पास ही रामनगर और चन्दौली जाने वाली दो सड़कें मिलती हैं। इसे बलन्वत सिंह ने परगने का सदर मुकाम बनवाया था। फिर राजा उदित नारायण के समय में चकिया सदर मुकाम बन गया।

सुरियावां--यह दो छोटे छोटे गांवों के मिलने से बना है। यहां इसी नाम की रेलवे स्टेशन है। पहले यहां मोना लोगों की राजधानी थी। उनके किले के निशान अब तक मिलते हैं। पास ही दो सुन्दर ताल हैं। आज कल इस गांव में थाना, डाकखाना और स्कूल है।

राबर्टसगंज--राबर्टसगंज को जिले के कलक्टर राबर्टस साहब ने १८४६ ई० में बसाया था। यहां से ४ मील दूर बेलन नदी पर अच्छा पुल है। हर सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, शफाखाना और स्कूल है।

राजपुर--मिर्जापुर से ४४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां सिंचाई के लिये कई ताल और पुल बनाये गये। यहां से दो मील उत्तर की ओर शाहगंज में थाना, डाकखाना और स्कूल है। पहले यहां तहसील भी थी। पर जलवायु अच्छी न होने के कारण तहसील टूट कर राबर्टसगंज चली गई।

अगोरी--रिहन्द और सोन नदियों के संगम पर एक छोटा गांव है। पर पुराने समय में यहाँ एक बड़ा शहर था। उसी के यहाँ आजकल खंडहर हैं। पास ही एक पुराना किला और मन्दिर है। किले के भीतर एक पत्थर के मकान पर फारसी भाषा में एक लेख खुदा हुआ है। यह गांव मिर्जापुर से ६२ मील और राबर्टसगंज से १४ मील है।

विजयागढ़—मिर्जापुर से ६० मील और रावर्टसगंज से १२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहीं लगभग २००० फुट ऊँची पहाड़ी पर पुराना प्रसिद्ध किला है। यह पहाड़ी अड़ोस पड़ोस के पठार से ८०० फुट ऊँची खड़ी है। पास ही गधार नदी के ऊपर पुराना पुल है। इसे सम्वत १८२६ या १७७२ ई० में बलवन्त सिंह ने बनवाया था।

दूधी—सोन नदी के दक्षिण में सबसे अधिक प्रसिद्ध गांव है। यहां थाना, डाकखाना और शफाखाना है। हर बृहस्पतिवार को बाजार लगता है।

गहरवार गांव मिर्जापुर से दक्षिण पूर्व की ओर ८४ मील दूर है। यहीं सिंगरौली के राजा साहब रहते हैं। उत्तर की ओर एक बड़ा ताल है।

घोरावल गाँव मिर्जापुर से ३६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां हर इतवार और बुधवार को बाजार लगता है। यहां से बहुत सा अनाज, लकड़ी और घी मिर्जापुर को आता है। यहां डाकखाना, थाना और स्कूल है।

कोन—मिर्जापुर से ६० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। सोन नदी के दक्षिण में यह एक उपजाऊ घाटी के बीच में बसा है। हर आठवें दिन बाजार लगता है।

★ ★ ★

बनारस

बनारस जिले में गङ्गा के दोनों ओर का प्रदेश शामिल है। यह २५°·८ और २५°.३५ अक्षांशों के बीच में स्थित है। इस जिले का आकार कुछ विषम है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ५४ मील और उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई २८ मील है। इसका घेरा लगभग २०० मील और क्षेत्रफल १००८ वर्ग मील है। बनारस जिले के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में जौनपुर का जिला है। उत्तर-पूर्व और पूर्व में गाजीपुर का जिला है। इसके दक्षिण में मिर्जापुर और दक्षिण-पूर्व में बिहार का शाहाबाद (आरा) जिला है। कर्मनासा नदी आरा जिले को बनारस से अलग करती है। लखनऊ को छोड़कर बनारस जिले का क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश के सब जिलों से छोटा है। लेकिन प्राचीन संस्कृति और शिक्षा की दृष्टि से इसका स्थान बहुत ऊँचा है।

बनारस का जिला गङ्गा के मैदान का अंग है। इसमें कांप (कछारी मिट्टी है। कुछ नई है। नदियों के तट से दूर ऊँची पुरानी कांप की भूमि है। लेकिन विन्ध्याचल की पहाड़ियां दक्षिण में मिर्जापुर जिले में छूट जाती हैं। उनके दर्शन बनारस जिले में कहीं नहीं होते हैं। बनारस जिले में कांप या कछारी मिट्टी की ठीक ठीक जांच नहीं हुई है। लेकिन कुओं के खोदने से पता चला है कि यहां प्रथम ३८ फुट तक दुमट या बालू मिली हुई चिकनी मिट्टी है। इसके नीचे ३० फुट नीची कांप मिट्टी है। २० फुट कड़ी चिकनी मिट्टी है। इसके नीचे पानी से भरी हुई कुछ लाल बालू है। भूरचना की दृष्टि से बनारस का जिला दो भागों में बांटा जा सकता है।

(१) गङ्गा के प्रवाह-प्रदेश के नीचे और गीले (तर) भाग को तराई कहते हैं।

(२) किनारे से आगे ऊंचे भाग उपरवार कहलाते हैं। पश्चिमी आधा भाग (जिस में बनारस और गङ्गापार तहसीलें हैं) पूर्वी भाग (चन्दौली) की अपेक्षा अधिक ऊँचा है। भूमि का ढाल पूर्व या दक्षिण-पूर्व की ओर है। औसत से एक मील में भूमि का ढाल ६ इञ्च से अधिक नहीं है। जौनपुर की सीमा के पास उत्तर में भूमि की अधिक से अधिक ऊंचाई २६८ फुट है। बनारस शहर गंगा के ऊंचे किनारे पर स्थित है। इसकी ऊंचाई समुद्र-तल से २५२ फुट है। गङ्गा का नीचा किनारा समुद्रतल से केवल १६७ फुट ऊंचा है मुगल सराय समुद्रतल से २५५ फुट की ऊंचाई पर है।

पश्चिमी आधे भाग में अच्छी उपजाऊ दुमट मिट्टी है कहीं कहीं भूड़ सराई है। कुछ स्थानों में एक-

दम भूड़ या बालू है। निचले भागों में कहीं चिकनी मिट्टी या मटियार है। इन निचले स्थानों के पड़ोस में झीलें हैं जिनसे धान के खेत सींचे जाते हैं। नन्द की घाटी में उद्गम से गोमती-संगम तक चिकनी मिट्टी पाई जाती है। बीच वाले भागों में भी चिकनी मिट्टी मिलती है। लेकिन बरना नदी के दक्षिण में चिकनी मिट्टी बहुत कम पाई जाती है। गंगा की घाटी में कई प्रकार की उपजाऊ मिट्टी मिलती है। पूर्वी भाग में (चन्दौली तहसील) में भी अधिकतर दुमट है। लेकिन भूड़ सवाई और भूड़ बहुत कम है। यहां पश्चिमी भाग की अपेक्षा चिकनी मिट्टी कहीं अधिक है। धुस और मकवर दक्षिणी प्रदेशों में एक दम चिकनी मिट्टी है। पूर्वी परगने में कड़ैल मिट्टी है। इसका रंग कुछ काला है और बुन्देलखंड की मार मिट्टी से मिलती जुलती है। सूखने पर इसमें दरारें पड़ जाती हैं। भीगी होने पर ही इसमें जुताई हो सकती है। दशहरा के समीप वर्षा होने पर ही रबी की फसल बोई जा सकती है।

गङ्गा के निचले भाग में चिकनी मिट्टी को बालू मिलाकर सुधारा जा सकता है। यहां कुछ ही गहराई पर बालू मिल जाती है। लेकिन कर्मनासा के समीप वाले ऊंचे भागों में बालू मिलाकर चिकनी मिट्टी को सुधारना सम्भव नहीं है। यहां वर्षा या सिंचाई होने पर ही खेती हो सकती है। लेकिन एक बार भीग जाने पर कड़ैल मिट्टी में अधिक समय तक नमी रहती है और फिर रबी की फसल को अलग से सींचने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कहीं कहीं ऊसर भूमि समस्त जिलों में मिलती है। चन्दौली में ऊसर भूमि अधिक है। इसमें नमक मिला रहता है। कहीं कहीं रेह ऊपर इकट्ठा हो जाता है। फिर भी दूसरे जिलों की अपेक्षा बनारस जिले में ऊसर भूमि बहुत कम है।

गङ्गा नदी दक्षिण-पूर्वी सिरे पर बेतावर गांव के पास बनारस जिले को छूती है। यहां गङ्गा पार का कुछ पानी लाकर बेतवर नाला इसमें मिलता है। इसके आगे ७ मील तक गङ्गा नदी मिर्जापुर और बनारस के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे गोमती नदी के संगम तक गङ्गा बनारस जिले के भीतर बहती है। यहां यह बनारस और चन्दौली तहसील के बीच में सीमा बनाती है। यहां गङ्गा नदी अर्द्ध वृत्ताकार मोड़ बनाकर बहती है। मोड़ के बाहर की ओर प्रायः ऊंचा किनारा रहता है। भीतर की ओर नीचा और रेतीला रहता है। यहां घर छाने के लिये कांसे होते हैं। केवल कहीं कहीं किनारे के पास खेती के योग्य अच्छी मिट्टी मिलती है। जहाँ कहीं कम गहरी बालू की तह के नीचे चिकनी मिट्टी होती है वहां तरबूज उगाये जाते हैं। जिले के ऊपरी प्रथम भाग में रामनगर के आगे तक गङ्गा का मार्ग कुछ उत्तर की ओर है। यहां गङ्गा का दाहिना किनारा ऊंचा और कंकरीला है। गहरी धारा एकदम ऊंचे किनारे के पास बहती है। जोर की आंधी चलने पर नावों के उलट जाने का डर रहता है। ऐसी दशा में नावें कई दिन तक ठहर जाती हैं। रामनगर के आगे गङ्गा उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। गहरी धारा बायें किनारे की ओर हो जाती है। असी (नाले) के संगम के आगे बायां किनारे बहुत ऊंचा हो जाता है। इस ऊंचे बायें किनारे पर काशी के घाट, मन्दिर और भवन बने हैं।

दूसरी (दाहिनी) ओर गंगाकी की धारा और ऊंचे किनारे के बीच में बहुत दूर तक बालू फैली हुई है। रेलवे के पुल से कैंली तक गङ्गा पूर्व की ओर बहती है। फिर भी उत्तरी या बांया किनारा वरना के संगम तक ऊंचा उठा हुआ है। इधर कंकड़ की अधिकता से धारा में परिवर्तन नहीं होता है। लेकिन नाव चलाने में संकट रहता है। ताँतेपुर गांव के पास गंगा की धारा दूसरी ओर को हटती है। इस ओर के किनारे नीचे और रेतीले हो जाते हैं।

कैंली के पास गंगा फिर उत्तर की ओर मुड़ती है। बलुआ तक उत्तरी की ओर बहती है। कैंली से कनवर (पांच मील) तक दाहिना किनारा पहले बलुआ और फिर ऊंचा और कंकरीला हो जाता है। नावों को पानी के नीचे छिपे हुये कंकड़ों से टकराने का सदा भय रहता है। कनवर से बलुआ तक नदी की धारा और ऊंचे किनारे के बीच में कुछ दूर तक नीची बलुई भूमि है। मोड़ के दूसरी ओर एक दूसरी धारा है। बाढ़ के दिनों गङ्गा की इस धारा के बीच में मुकुटपुर आदि चार गांव टापू बन जाते

हैं। वर्ष में कुछ महीनों तक दूसरी धारा सूख जाती है। बलुआ के पास यह धारा गंगा में मिल जाती है। यहां गंगा उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ती है। आगे चलकर यह उत्तर और फिर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। यहाँ कहीं कहीं गंङ्गा का खादर निकल आता है। गोमती के संगम के सामने मुहम्मदपुर, जमालपुर और पड़ोस के भागों में अच्छी मिट्टी इकट्ठी हो जाती है वारा के पास कुछ मील तक गङ्गा बनारस और गाजीपुर के बीच में सीमा बनाती है। दक्षिणी किनारे पर दूर तक बालू है। इस जिले में गङ्गा में ३८ फुट तक बाढ़ आती है। लेकिन बाढ़ से हानि नहीं होती है। बाढ़ के दिनों में गङ्गा का प्रवाह प्रति घन्टे ५ मील हो जाता है। गरमी में यह २ मील रह जाता है।

बानगंगा गंगा के बनाये हुये पुराने मार्ग में बहती है। यह टांडा के पास आरम्भ होती है और छः मील दक्षिण की ओर बहती है। इसके आगे यह पूर्व की ओर और फिर उत्तर की ओर बहती है। कहा जाता है कि गंगा ने कैथी और टांडा के बीच में कंकरीले टीले को काट कर अपना वर्तमान मार्ग बनाया।

सुम्भा असी और कुछ छोटे छोटे नालों के अतिरिक्त बरना और गोमती नदियां भी बनारस जिले में गंगा से मिलती हैं। बरना नदी इलाहाबाद और मिर्जापुर की सीमा के पास निकलती है। बनारस जिले में यह पश्चिमी सीमा के पास प्रवेश करती है जहां सरवन गांव के पास जौनपुर जिले से आने वाली बिसू ही नदी इसमें मिलती है। कुछ दूर तक बिसू ही नदी जिले की सीमा बनाती है। दोनों की तली गहरी है। दोनों के मिलने से बरन कुछ बड़ी नदी बन जाती है। बरना नदी बहुत टेढ़ा मार्ग बनाती हुई पूर्व की ओर बहती है। बनारस छावनी के पास आकर बरना नदी सिविल लाइन में होती हुई सराय मोहना के पास गंगा में मिल जाती है। संगम एक तीर्थ है। यहां मेला लगता है। समस्त मार्ग में बरना के किनारे ऊंचे हैं। इन्हें असंख्य नालों ने काट दिया है। किनारे के ऊपर की भूमि कुछ हलकी और बलुई है। लेकिन तली में चिकनी मिट्टी है। बरना की धारा और किनारों के बीच बीच में बहुत कम खादर है। ऊंचे किनारे होने से इसमें किनारों से ऊपर बहुत कम बाढ़ आती है। निचले भाग में कभी कभी गंगा की बाढ़ का पानी बरना में बाढ़ कर देता है। बाढ़ के पानी में अच्छी मिट्टी मिली रहती है। इसलिये बरना की बाढ़ से पड़ोस की भूमि में अच्छी मिट्टी की तह बिछ जाती है। इससे बड़ा लाभ होता है।

गोमती नदी बहुत बड़ी है। बनारस जिले में घुसने से पहले इसमें सई नदी का पानी मिल जाता है। सुल्तानी पुर परगने के उत्तर में भदवन गांव के पास यह पहले पहल इस जिले को छूती है। प्रायः २२ मील तक गोमती नदी बनारस जिले की सीमा बनाती है और कैथी के पास गंगा मिल जाती है। गोमती का मार्ग बड़ा चक्करदार है। इसके किनारे कहीं एक दम ऊंचे और सपाट हैं। कहीं नीचे और क्रमशः ढालू हैं। धारा और किनारों के बीच में प्रायः चौड़ी कछारी भूमि है। बाढ़ के बाद गोमती जो मिट्टी छोड़ देती है वह बड़ी उपजाऊ होती है। औसत से गोमती में १७ फुट बाढ़ आती है। लेकिन कभी कभी इसमें बड़ी भयानक बाढ़ आती है। १८७१ में गोमती में ऐसी बाढ़ आई कि जौनपुर शहर प्रायः नष्ट हो गया। गोमती नदी में कई छोटे छोटे नाले मिलते हैं। इनमें नन्द सब से बड़ा है। यह जौनपुर की सीमा के पास दलदलों से से निकलता है। बनारस जिले में २५ मील बहने के बाद धौरहरा गांव के पास यह गोमती में मिल जाता है। नन्द में हाथी नाला मिलता है जो सुल्तानपुर जिले की सीमा के पास जगदीशपुर के दलदलों से निकलता है। हरिहर पुर के पास यह नन्द में मिल जाता है।

कर्मनासा नदी कैमूर की पहाड़ियों से निकलती है। मिर्जापुर जिले से आकर फतेहपुर गांव के पास यह बनारस जिले में प्रवेश करती है। यह बहुत बड़ी और वेगवती नदी है। वर्षा ऋतु में इसमें भारी बाढ़ आती है। इस जिले के दक्षिणी-पूर्वी सिरे में १० मील बहने के बाद यह बनारस और बिहार के आरा जिले के बीच में सीमा बनाती है। जिले में फतेहपुर गांव से लेकर कर्मनासा का (इस जिले में) समस्त मार्ग ३४ मील लम्बा है। ककरैत के पास कर्मनासा बनारस जिले को छोड़ देती है। चौसा के पास यह गङ्गा

में मिल जाती है। नौबतपुर में कर्मनासा पर पुल बना है। जहां ग्रांडट्रंक रोड और गया को जानेवाली रेलवे लाइन इसे पार करती है। पुल के पास १०० गज चौड़ी है। ग्रीष्म ऋतु में यह प्रायः सूख जाती है। इसमें सब कहीं पांज हो जाती है। इसके किनारे बहुत ऊँचे और सपाट हैं इनके पास खादर भूमि का आभाव है। वर्षा ऋतु में इसमें अचानक भारी (३० फुट) बाढ़ आती है। कभी ऊचे किनारों के ऊपर उमड़ कर इसका पानी बहने लगता है। काशी और दूसरे स्थानों के कट्टर हिन्दू कर्मनासा के जल को छूने से बचते हैं। लेकिन इसके किनारे पर रहने वाले इसकी चिन्ता नहीं करते हैं। पांज हो जाने पर इसके किनारे पर रहने वाले दूसरे यात्रियों को पार कर देते हैं और उनसे मनमानी उतराई लेते हैं। कर्मनासा की प्रधान सहायक गरई नदी है। यह मिर्जापुर की पहाड़ियों से निकलती है और शिवनाथपुर। (परगना धुस) के पास बनारस जिले में घुसती है। ऊपरी भाग में इसकी तली उथली है आगे चल कर गहरी हो जाती है। गरारी के पास मिर्जापुर जिले से ही आने वाली चन्द्रप्रभा नदी इसमें मिलती है। चन्द्रप्रभा में साल भर पानी रहता है। मिर्जापुर जिले और इस जिले में यह सिंचाई के भी काम आती है गरई के उत्तर में बनारस जिले का कुछ ऐसा नीचा भाग है जहां का पानी किसी नदी में नहीं पहुँच पाता हैं। यहां झील और दलदल बन गये हैं। जब अधिक वर्षा होती है तब यहां की बाढ़ से धान की फसल को बड़ी हानि पहुँचती है। समय पर सूखी भूमि न निकलने से रबी की फसल के बोने में भी बाधा पड़ती है। बनारस जिले का लगभग साढ़े चार फी सदी भाग पानी से घिरा है जो पश्चिमी जिलों की अपेक्षा कहीं अधिक है। लेकिन इस जिले में ऊसर भूमि बहुत कम है। जङ्गल भी कम है। केवल कहीं-कहीं ढाक या छोटी छोटी झाड़ियां हैं। गांवों के पास बाग है। अधिकतर भूमि खेती के काम आती है।

बनारस जिले की जलवायु दूसरे पूर्वी जिलों के समान है। शीतकाल के महीने कुछ ठंडे और खुश्क होते हैं। कभी कभी पाला भी पड़ता है। दिसम्बर और जनवरी सबसे अधिक ठंडे महीने हैं। इन दिनों औसत तापक्रम ६० अंश फारेनहाइट रहता है। मई और जून सबसे गरम महीने हैं। इन महीनों का तापक्रम ९० अंश रहता है। फिर भी यहां से इलाहाबाद की अपेक्षा कम गरमी पड़ती है। औसत वार्षिक वर्षा ४२ इंच होती है। किसी किसी वर्ष ६६ इंच तक वर्षा हो जाती है। किसी वर्ष केवल २१ इञ्च वर्षा हुई है। बनारस जिले की फसलें पड़ोस के जिलों के समान हैं। खरीफ की प्रधान (४० फी सदी) फसल धान है। सबसे अधिक (६० फी सदी) धान चन्दौली तहसील में होता है। धुस परगने में ८३ फी सदी धान होता है।
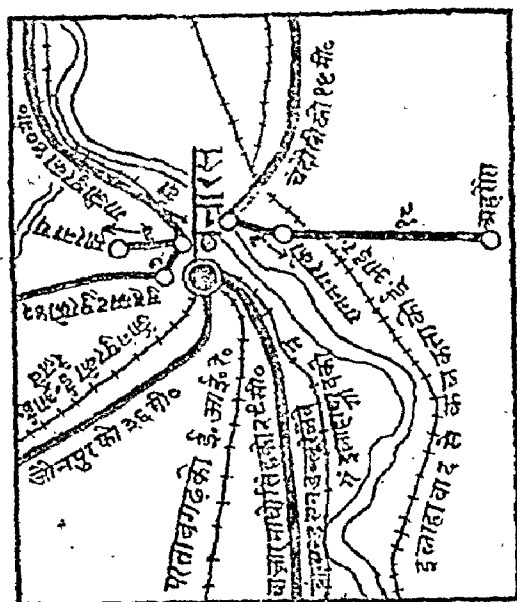
खरीफ की फसल में दूसरा स्थान ज्वार का है। लेकिन ज्वार को अरहट, भंग उर्द आदि के साथ मिलाकर बोते हैं। केवल चारा के लिये चरी अलग बो दी जाती है। खरीफ की फसल का १८ फीसदी क्षेत्रफल ज्वार से घिर जाता है। कुछ भागों में ईख होती है। मकई की खेती हाल में बहुत बढ़ गई है। कहीं कहीं सांवा, महुआ, कोदो और काकुन भी उगाते हैं। बनारस जिले में रबी की फसल अच्छी नहीं होती है। रबी फसल में जौ प्रधान है। इस फसल की ३२ फीसदी भूमि जौ से घिर जाती है। गंगा पार और बनारस तहसीलों में रबी की फसल की ४५

फीसदी भूमि में जौ होता है। चन्दौली में केवल ११ फीसदी भूमि में जौ होता है। गेहूँ केवल १० फी सदी होता है। गुजई ३ फी सदी बोई जाती है। चना मटर कई भागों में बोये जाते हैं। कुछ भागों में मसूर और पोस्त की खेती भी होती है।

बनारस जिले में अच्छी वर्षा होने से खेतों को अलग सींचने की कम आवश्यकता होती है। अधिकतर सिंचाई कुओं और तालाबों से होती है। बनारस कोई कारबारी शहर नहीं है। पर यहां सुन्दर कला कौशल के घरेलू धन्धे बहुत हैं। बनारस में रेशम का कारबार बहुत पुराना है। कच्चा रेशम बङ्गाल, चीन, इटली और मध्य एशिया (समरकन्द, बुखारा) से आता है। इस पर यहां तरह तरह की बढ़िया, कारीगरी का काम होता है। यहां की रेशमी सारी और दूसरे कपड़े बहुत प्रसिद्ध हैं। बनारस में गोट और सोना चांदी के तार का काम भी बहुत अच्छा होता है। तांबा, पीतल और जर्मन सिल्वर के बढ़िया बर्तन बनते हैं। तीर्थ स्थान होने से यहां दूर दूर के यात्रियों की सदा भरमार रहती है। इनके आने से यहां का माल तेजी से बिक जाता है कुछ माल दूसरे शहरों के व्यापारियों के हाथ बेंच दिया जाता है।

काशी भारतवर्ष का अत्यन्त पुराना नगर है काशी रहस्य के अनुसार ब्रह्मा ने सर्व प्रथम काशी की रचना की थी। इसकी बाहरी सीमा पंचक्रोशी द्वारा बनती थी। यह स्थान ऋषियों के निवास के लिये इतना छोटा था कि फिर दूसरे भागों की रचना हुई। इस पौराणिक कथा से कोई भले ही सहमत न हो लेकिन काशी की प्रचीनता के बारे में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। पुराणों के समय में ही काशी एक पवित्र तीर्थ स्थान हो गया था। इसे काशी अथवा वाराणसी कहते थे। वाराणसी से ही बिगड़ कर बनारस बना है। काशी का अर्थ चमकना है। स्थान स्थान पर आकर ऋषियों के सम्पर्क से आत्मा चमक उठे उसे काशी कहते थे। वरणा और असी का इस नगरी के पास गङ्गा में सङ्गम होने से इसे वाराणसी भी कहते हैं काशी को शिवपुरी भी कहते हैं। सारंगनाथ (सारनाथ) में बुद्ध भगवान ने अपने प्रथम पांच शिष्य बनाये थे। यहां जो पहला शिलालेख मिला वह लखनऊ के अजायब घर में रक्खा हुआ है। पांचवीं सदी में चीनी यात्री फाहियान और सातवीं सदी में ह्वांगसांग ने बनारस को एक बड़ा समृद्धिशाली नगर बताया है। उस समय यहां ३० बौद्ध मठ और ३००० भिक्षु थे। हिन्दू मन्दिर थे। हिन्दू पुजारी १०,००० थे। मन्दिरों में शिव की पूजा प्रधान थी। महादेव के एक मन्दिर में तांबे की बनी मूर्ति १०० फुट ऊंची थी। पत्थर का एक स्तम्भ ७० फुट ऊंचा था। कुतुबुद्दीन और दूसरे मुसलमानों का आक्रमण होने पर यहां से बहुत से ब्राह्मण दक्षिण की ओर चले गये। अकबर के समय से औरंगजेब के समय तक बनारस की दशा दूसरे जिलों के समान थी। १६६६ ई० में शिवाजी ने आगरे से निकल कर मथुरा और प्रयाग होते हुये बनारस में ब्राह्मणों के यहां शरण ली थी। लेकिन औरंगजेब के जासूस उसका पीछा कर रहे थे। इसलिये कुछ दिन ठहर कर शिवाजी यहां से पटना चला गया। इसके तीन वर्ष बाद औरंगजेब ने काशी का विख्यात विश्वनाथ मन्दिर गिरवा दिया और उसके स्थान पर अपनी बड़ी मस्जिद बनवाई। औरंगजेब ने जैसे मथुरा का नाम बदल कर इस्लामाबाद रक्खा वैसे ही बनारस का नाम बदल कर उसने मुहम्मदाबाद रक्खा। लेकिन यह नाम लोगों को पसन्द न आया और चल न सका। बनारस में अकबर के समय से लेकर मुगल बादशाहों की टकसाल रही। औरंगजेब के मरने के बाद १७१२ तक बहादुर शाह के समय में शाही सेना बनारस में डटी रही इसके बाद जहांदर और उसके भतीजे के बीच में गृह युद्ध आरम्भ हुआ। फर्रुखसियर को अपने पिता अजीमुश्शान से बंगाल का प्रान्त मिला था। बिहार के सैय्यदों और इलाहाबाद के सूबेदार अब्दुल्ला खां ने फर्रुखसियर का साथ दिया। संयुक्त सेना कर्मनासा नदी को पार करके २८ अक्तूबर १७६८ को सैय्यद राजा पहुँची। दूसरे दिन वह मुगलसराय आई। यह सेना बनारस नहीं आई केवल राय कृपा नाथ से १लाख रुपया लिया गया। चुनार और इलाहाबाद होती हुई यह सेना खजुहा पहुँची वहां इसकी विजय हुई। फर्रुखसियर दिल्ली का बादशाह हुआ। लेकिन १७१६ में उसके

शासन का अन्त हो गया। इसके बाद बनारस, जौनपुर और गाजीपुर के जिले अवध के प्रथम नवाब वजीर सादात खां को दे दिये गये। बदले में वह सात लाख रुपया मालगुजारी देने लगा। सादात खां ने बनारस की ओर बहुत कम ध्यान दिया। उसने ८ लाख रुपये वार्षिक मालगुजारी लेकर बनारस का सूबा अपने एक मित्र और मातहत मीर रहमत अली को दे दिया। यह बड़ा सुस्त और अयोग्य था। सारा प्रबन्ध उसके कर्मचारी करते थे इनमें प्रधान मन्साराम (गौतम भूमिहार ब्राह्मण) था। वह ठिठरिया (जिसे आजकल गङ्गापुर कहते हैं) का जमींदार था। १७८३ में अवध का नवाब सादातखां बनारस के सूबेदार रुस्तम अली से नाराज हो गया। नवाब ने अपने दामाद और सहायक सफदर जङ्ग को जांच पड़ताल करने के लिये भेजा। सूबे का वास्तविक अधिकार मन्साराम के हाथ में था। इसलिये रुस्तम अली ने मन्साराम को समझौता कराने भेजा। जांच का फल यह हुआ कि रुस्तम अली अलग कर दिया गया। गाजीपुर शेख अब्दुल्ला को दे दिया गया। बनारस, जौनपुर और चुनार की सरकार मन्साराम के बेटे बलवन्त सिंह को मिली। लेकिन बलवन्त सिह की शक्ति सीमित थी क्योंकि उसे जौनपुर के किले, बनारस की कोतवाली और टक्साल पर अधिकार प्राप्त नहीं था। इतने ही में उसका पिता मन्साराम मर गया। बलवन्त सिंह ने सम्राट से राजा की उपाधि कई गांवों की जमीदारी और बनारस, जौनपुर, चुनार सरकार की मंजूरी प्राप्त कर ली। इसके बाद बलवन्त सिंह की शक्ति इतनी बढ़ गई कि वह प्राय: स्वाधीन हो गया। पहले उसने गङ्गापुर में दुर्गाकार महल बनवाया। पहले नवाब वजीर के गुमाश्ते बलवन्त सिंह के कामों पर नजर रखते थे। लेकिन दस वर्ष तक बलवन्त सिंह ने समय समय पर मालगुजारी चुका दी और नवाब को किसी प्रकार की शिकायत का अवसर न मिला। इसी बीच में विरोधी जमींदारों को अलग करके बलवन्तसिंह ने सारे सूबेदारों पर अपना अधिकार जमा लिया। १७४८ में जब सफदर जंग दिल्ली गया तब उसकी अनुपस्थिति में बलवन्तसिह ने अवध के गुमाश्तों को निकाल दिया और मालगुजारी देना बन्द कर दिया। इलाहाबाद के सूबेदार अली खां को बुरी तरह से हरा कर उसने भदोही के किले और परगने पर अधिकार कर लिया।

१७४६ में फर्रूखाबाद के बंगशनवाब ने अवध के नवाब को हरा दिया। इसलिये अवध का नवाब बलवन्त सिंह का कुछ न कर सका। फर्रूखाबाद के नवाब ने जौनपुर और बनारस का अधिकार लेने के लिये अपने एक प्रतिनिधि को भेजा। बलवन्त सिंह ने आधा प्रदेश देकर समझौता कर लिया। इससे अवध का नवाब सफदर जंग और भी चिढ़ गया। अत: अवधपुर अधिकार प्राप्त करते ही सफदर जंग बलवन्त सिंह को दंड देने के लिये पूर्व की ओर बढ़ा। प्रतापगढ़ के राजा के साथ जो बर्ताव हुआ था उससे सचेत होकर बलवन्त सिंह बनारस के नावबी दरबार में उपस्थित न हुआ। वह मिर्जापुर के अपने पहाड़ी अड्डों की ओर चला गया सफदर जंग ने गङ्गापुर को लूट कर ही सन्तोष कर लिया। और अवध लौट कर उसने बलवन्त सिंह से सन्धि कर ली। १७५२ में बलवन्त सिंह ने गङ्गापुर को छोड़कर रामनगर में किला बनवाया। उसने विजयगढ़ और मिर्जापुर के दूसरे पहाड़ी स्थानों को भी दृढ़ बना लिया। यहीं उसने अपना कोष (खजाना) रक्खा। १७५४ में सफदर जंग के स्थान पर शुजाउद्दौला अवध का नवाब हुआ। इस स्थिति से लाभ उठाकर बलवन्त सिंह ने चुनार का किला लेने का प्रयत्न किया। इसमें वह सफल न हुआ। इससे अवध का नया नवाब रुष्ट हो गया। लेकिन बलवन्त सिंह ने अधिक मालगुजारी देकर उसे शान्त कर लिया। एक बार गाजीपुर के सूबेदार ने बलवन्त सिंह को धक्का पहुँचाने का प्रयत्न किया। बलवन्त सिंह ने इससे बेच कर १७५७ में गाजीपुर को छीन लिया और अपने आश्रित अधिकारियों को बांट दिया।

१७६० में शाह आलम ने इलाहाबाद के सूबेदार मुहम्मद कुली खां की सहायता से पटना पर चढ़ाई की। पटना का घेरा सफल हो रहा था। इनकी विजय हो रही थी। लेकिन इसी बीच में अवध के नवाब ने इलाहाबाद के किले पर अधिकार कर लिया। इससे डर कर दोनों इलाहाबाद की ओर लौटे। अवध के नवाब ने उनका मार्ग रोकने के लिये बलवन्त सिंह को आदेश दिया। अपनी सेना ले जाकर सैयद राज

के पास बलवन्त सिंह ने मुहम्मद कुली खां को हरा कर उसे कैद कर लिया और शुजाउद्दौला के पास भिजवा दिया। लेकिन उसने शाह आलम को इलाहाबाद जाने दिया। इस घटना से शुजाउद्दौला का क्रोध शान्त न हुआ। वह मनही मन बलवन्तसिंह से जल जाता था। इसलिये बलवन्तसिंह को फांसने के लिये शाह आलम को निमन्त्रित करके उसने बनारस में विजय के उपलक्ष में दरबार किया। लेकिन बलवन्तसिंह इन चालों को भली-भांति समझता था। इसलिये वह दरबार में सम्मिलित ही न हुआ। दो वर्ष तक किसी प्रकार शान्ति रही। लेकिन १७६३ में मीर कासिम पटना से भागकर बनारस आया। उसने अंग्रेजों (ईस्ट इंडिया कम्पनी) के विरुद्ध लड़ने के लिये शाह आलम और शुजाउद्दौला को अपनी ओर मिला लिया बलवन्तसिंह को भी विवश होकर दाऊद नगर में ७००० सिपाही लाने पड़े। लेकिन इस गुटबन्दी में सम्मिलित होने के लिये उसकी कुछ भी इच्छा न थी। बलवन्तसिंह से कहा गया कि वह लड़ाई में शामिल हो। बक्सर की लड़ाई में जब शुजाउद्दौला और शाह आलम बुरी तरह से हारे तो इनकी हारी हुई सेना लौटकर बनारस आई। लेकिन बलवन्तसिंह पहले राम नगर और फिर लतीफपुर (मिर्जापुर) को चला गया था। यहां उसने अंग्रेजों से सन्धि कर ली। शाह आलम को बलवन्त सिंह के सारे अधिकार पूर्ववत रखने के लिये बाध्य किया गया। बदले में सेना के खर्च के लिये बलवन्तसिंह ने ८ लाख रुपया देना स्वीकार कर लिया। शुजाउद्दौला अलग रहा। लेकिन वह फिर हारा। अंग्रेजी सेनापति कर्नाक ने चुनार के किले पर अधिकार करके बलवन्तसिंह को प्रान्त का सूबेदार और मेरियट नामी अंग्रेज को रेजीडेंट बनाया। १७६५ में शुजाउद्दौला से संधि हो गई। इसके अनुसार इलाहाबाद का किला अंग्रेजों को मिला। चुनार का किला नवाब को मिला बनारस का प्रान्त नवाब को इस शर्त पर मिला कि पूर्ववत बलवन्तसिंह राजा रहे। इससे राजा और नवाब में मेल न हुआ। १७६७ में नवाब ने राजा को निकालने का प्रयत्न किया लेकिन क्लाइव ने नवाब को रोक दिया केवल माल गवरनर जनरल जान कार्टियर बनारस में पधारे राजा और नवाब दोनों को सम्मिलित होना पड़ा। इस अवसर पर फिर नवाब ने राजा बलवन्तसिंह को पकड़वाने का विफल प्रयत्न किया। पर किसी प्रकार शान्त हो गया।

१७७० में राजा बलवन्तसिंह का देहान्त हो गया उसकी रानी गुलाब कुअंर के केवल एक लड़की थी। लेकिन राजपूत महिला से चेतसिंह पैदा हुआ था। इस लड़की के अबोध बालक महीप नारायण को गद्दी पर बिठाने का प्रयत्न किया गया राजा के विश्वास पात्र सहकारी औसानसिंह ने चेतसिंह का पक्ष लिया। अतः चेतसिंह बनारस का राजा हुआ। २२ लाख रुपये की भेंट देकर चेतसिंह ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला को प्रसन्न कर लिया। राजा का स्वागत करने के लिये नवाब बनारस आया। वारेन हेस्टिंग्ज भी बनारस आया। दोनों के परामर्श से चेतसिंह राजा हुआ। २२ लाख रुपये मालगुजारी नियत कर दी गई। दूसरे वर्ष देख भाल करने के लिये अंग्रेज रेजीडेंट भी बनारस में रहने लगा। १७७५ में शुजाउद्दौला मर गया। उसके उत्तराधिकारी आसफुद्दौला ने बनारस का प्रान्त ईस्टइंडिया कम्पिनी को दे दिया। रेजीडेन्ट फिलिप फ्रैंसिस का आदमी था जो वारेन हेस्टिंग्स का विरोधी था। इस मतभेद से लाभ उठा कर चेतसिंह ने अपनी स्थिति दृढ़ कर ली। लेकिन उसकी बाबू औसानसिंह से खटपट हो गई। उधर कर्नल मान्सन के मरने पर वारेन हेस्टिंग्स बङ्गाल में सर्व प्रधान हो गया। उसका विरोध करने वाला कोई न आया। उसी समय से चेतसिंह के बुरे दिन आये। वारेन हेस्टिंग्स ने आरम्भ से ही चेतसिंह को नीचा दिखाने की चेष्टा की। उसने पुराने रेजीडेण्ट को हटा कर नया रेजीडेण्ट यह कर दिखाने के लिये तुला हुआ था कि राजा का अधिकार कुछ भी नहीं है। कुछ समय तक राजा दबता गया। १७७८ में फ्रांस और इङ्गलैंड की लड़ाई हुई। लेकिन राजा से ५ लाख रुपया देने को कहा गया। यह रुपया कठिनाई से चुकता हो पाया था। लेकिन दूसरे वर्ष फिर चेतसिंह से ५ लाख रुपये मांगा गया। इस रुपये को बल पूर्वक

गई। वह रुपया भी वसूल कर लिया गया। १७८० में जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी और मरहठों और निजाम से लड़ाई छिड़ी तो फिर सेना के बल से रुपया वसूल किया गया। १७८० के नवम्बर मास में चेतसिंह से पहले २००० और फिर १००० घुड़सवार देने को कहा गया। राजा ने इस मांग को पूरा करने में असमर्थता प्रगट की। वारेन हेस्टिंग्स ने बिगड़ कर राजा पर ५० लाख रुपया जुर्माना किया। १७८१ के जुलाई महीने में वारेन हेस्टिंग्स इस रुपये को वसूल करने के लिये बनारस आया। २००० सशस्त्र सिपाहियों के साथ राजा चेतसिंह बक्सर में हेस्टिंग्स से मिला। बनारस पहुँच कर हेस्टिंग्स ने अपने आचरण के सम्बन्ध में चेतसिंह से तुरन्त उत्तर मांगा।

सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर १६ अगस्त को वारेन हेस्टिंग्स ने शिवाला-घाट महल से राजा को पकड़ लाने के लिये रेजीडेंट को भेजा। चेतसिंह ने चुपचाप आत्म समर्पण कर दिया। चेतसिंह को ३ अंग्रेज अफसरों और सिपाहियों की दो कम्पिनियों के हाथ सौंप दिया गया। राजा की कैद का हाल सुन कर बहुत से सिपाही राम नगर से आकर महल के सामने इकट्ठे हो गये। स्थित विकट हो रही थी। अंगरेजी सेना के सिपाहियों के पास गोली बारूद न थी। अतः मेजर पोफम ने दूसरे सशस्त्र सिपाही भेजे। इनके आने पर इन्हों ने महल और पड़ोस की गलियों को भीड़ से घिरा हुआ पाया। सशस्त्र लोगों ने नवागन्तुक सिपाहियों के मार्ग को रोका। उधर राजा को कैद करने वाले सिपाहियों पर भी गोलियां चलने लगीं। अधिकतर (२०५) पहरेदार सिपाही और अफसर मारे गये। यहां समाचार पाकर मेजर पोफम घटना स्थल पर गया। इस समय महल में सन्नाटा था। रामनगर का किला प्रायः खाली था। शहर में विद्रोहियों की संख्या कहीं अधिक थी।

राजा चेतसिंह पीछे की खिड़की से साफों को बांध कर उनके सहारे गंगा में उतर आया और गंगा के ही मार्ग से वह निकल भागा। अब वारेन हेस्टिंग्स को अपनी भयंकर स्थिति का पता लगा। उनके पास जो सेना थी उससे रामनगर पर चढ़ाई करना ठीक न समझा। उसने चुनार और दानापुर से और नई सेना बुलाई। मिर्जापुर से भी सिपाही बुलाये गये। पहले चुनार से आये हुये सिपाहियों के साथ राम नगर के किले पर चढ़ाई की गई। इसी बीच में कुछ सिपाहियों को लेकर कप्तान मेफेअर ने बनारस नगर में घुसने का प्रयत्न किया। वह बनारस की गलियों में बुरी तरह से फँस गया और मारा गया कप्तान डेक्साट भी मारा गया। १०५ सिपाही मारे गये। ७२ घायल हुये शेष चुनार की ओर निकले। रामनगर पर चढ़ाई करने वाली सेना भी बड़ी कठिनाई से निकल पाई। अब हेस्टिंग्स के पास केवल ४५० सिपाही शेष रह गये। बनारस में विद्रोहियों की संख्या बढ़ रही थी। हेस्टिंग्स के प्राण संकट में थे। रात में किसी तरह सिपाहियों के साथ हेस्टिंग्स बनारस छोड़ कर चुनार को भाग आया। २८ सितम्बर को हेस्टिंग्स पूरी सैनिक तैयारी के साथ फिर बनारस को लौटा। उसने राजा बलवन्त सिंह की लड़की के छोटे बालक महीप नारायन को बनारस की गद्दी पर बिठाया। बनारस का राज्य कर (मालगुजारी) बढ़ाकर ४० लाख रुपये वर्षिक कर दी। बनारस शहर में राजा से पृथक एक अलक मजिस्ट्रेट नियुक्त कर दिया। पहला मजिस्ट्रेट अली इब्राहीम खां था। १७९४ में राजा महीप नरायन से बहुत सा भाग छीन लिया गया। केवल परिवार के कुछ पुराने परगने उसके हाथ में छोड़ दिये गये। मालगुजारी भी बढ़ा दी गई। १७९६ में यहां एक विद्रोह हुआ। १७९७ में अवध का नवाब आसफुद्दौला मर गया। लखनऊ के ब्रिटिश रेजीडेंट ने नवाब के बेटे वजीर अली को नवाब बनाया। कुछ ही समय बाद वह उतार दिया गया और शुजाउद्दौला का जो बेटा (सादात अली खां) जीवित था वह नवाब बनाया गया। नवाब वजीर अली को डेढ़ लाख वार्षिक की पेन्शन देकर बनारस में माधोदास के बाग में रहने के लिये भेज दिया गया। यहां यह अपने पूरे नवाबी ठाट में रहने लगा। रेजीडेन्ट ने उस पर संदेश किया कि वह काबुल के जमान शाह और बंगाल के विद्रोही मुसलमानों को मिलाकर षड़यन्त्र रच रहा है। अंतः इसे बनारस से कलकत्ते जाने की आज्ञा मिली।

चलते समय २०० सिपाहियों के साथ पदच्युत नवाब ने रेजीडेन्ट (मिस्टर चेरी) से भेंट की। इस बहस में दोनों से गरम बहस हो गई। नवाब के सिपाही ने पीछे से चेरी साहब की गर्दन पकड़ ली। गर्दन छुड़ाकर किसी तरह वह भागा। लेकिन वह पकड़ लिया गया। नवाब ने अपनी तलवार से उसके टुकड़े कर डाले गये। यही हाल उसके संरक्षक अंग्रेजों का किया गया। नवाब ने अंग्रेज मजिस्ट्रेट पर भी हमला किया। लेकिन उसे बचने का अवसर मिल गया। पुलिस और सेना इकट्ठी की गई। वजीर अली ने पहले रक्षा करने का प्रयत्न किया। लेकिन विषम परिस्थिति देख कर वह कुछ साथियों को लेकर आजम गढ़ की ओर भाग गया। उससे सम्बन्ध रखने वाले जगतसिंह और दूसरे साथी लोगों को फांसी दी गई। वजीर अली गोरखपुर को उजाड़ कर जैपुर चला गया। यहां वह पकड़ा गया। पहले वह कलकत्ते के और आगे चल कर वेलोर भेज दिया गया। यहीं वह मर गया।

१८०६ में यहां हिन्दू मुसलमानों का दङ्गा हुआ। औरंगजेब की मस्जिद काशी विश्वनाथ मन्दिर के बीच में पड़ी हुई जगह पर हिन्दू हनूमान जी का मन्दिर बना रहे थे। जुलाहों ने यह मन्दिर तोड़ डाला और दूसरे मन्दिरों को नष्ट करने के लिये बढ़े। दूसरे दिन हिन्दू इकट्ठे हुये लेकिन बनारस के मजिस्ट्रेट मिस्टर बर्ड ने उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया। मजिस्ट्रेट ने मस्जिदों की रक्षा के लिये कुछ सेना भी बुला ली। कुछ समय बाद जुलाहों ने विश्वनाथ के मन्दिर पर चढ़ाई की। उन्होंने अवसर पाकर प्रसिद्ध लाट भैरों को तोड़ डाला। और कुछ पुजारियों को मार डाला। इससे हिन्दू बड़े क्रुद्ध हुये। उन्होंने सिपाहियों की परवाह न कर औरंगजेब की मस्जिद को जला दिया और दूसरी पचास मस्जिदें नष्ट कर डाली। कई सौ मनुष्य मारे गये। कुछ दिनों तक सेना से कुछ भी करते न बना और बनारस में अराजकता छाई रही। आगे चल कर धीरे धीरे शान्ति हो गई। १८१० में जब नया टैक्स लगाया गया तो भी यहाँ दंगा हो गया। ८५२ में एक नागर की फांसी हो जाने पर बनारस में तीन दिन तक दूकाने बन्द रहीं। छावनी में सिपाहियों को भोजन की कमी होने लगी अन्त में उन्हें बाहर से भोजन मिल गया। जब इस सम्बन्ध में नागरिकों ने बाहर सभा की तो उन्हें मार कर तितर बितर कर दिया गया। कुछ नेता जेल में में बन्द कर दिये गये।

१८५७ में यहां मेरठ और दिल्ली से विद्रोह का समाचार पहुँचा। इस समय यहां गोरे तोप चलाने वाले, लुधियाना के सिक्ख और इस प्रान्त के हिन्दू सिपाही थे। चुनार के पास सुल्तानपुर छावनी में मुसलमान घुड़सवार थे। महंगी के कारण लोगों में विद्रोह की आग पहलेही से धधक रही थी। सिपाहियों ने अंग्रेजी राज्य से मुक्त होने के लिये खुल्लमखुल्ला ईश्वर से प्रार्थना की। इन्हें दबा रखने के लिये सुल्तानपुर से राजभक्त सिपाही बुला लिये गये। गोरे लोगों की रक्षा के लिये उपाय किये गये।

पहली जून को सिपाहियों की लाइन में आग लगी हुई दिखाई दी। मद्रास और दीनापुर से अधिक सेना आ जाने पर देशी सिपाहियों से हथियार रखने के लिये कहा गया। पहले उन्होंने हथियार जमा कर दिये। लेकिन जब उन्होंने बन्दूकें फिर उठा लीं और तोपों पर गोली छोड़ना आरम्भ कर दिया। लेकिन तोपों की बौछार के सामने वे ठहर न सके और बन्दूकें इधर उधर फेंक कर भागने लगे। कुछ सिक्ख और दूसरे सिपाहियों ने भी अफसरों पर गोलियां चलाई लेकिन तोपों की बौछार ने ३ घंटे में विद्रोही सिपाहियों को दबा दिया। तोपों की आवाज सुनकर मिशनरी पहले रामनगर को और फिर चुनार को भाग गये। बहुत से गोरे टकसाल में जा छिपे। कुछ गोरे कचहरी की छत पर चले गये। रात में मुसलमानों ने विद्रोह का झंडा उठाया और विश्वनाथ के मन्दिर पर हरा झन्डा फहराने की आवाज उठाई। इस से राजपूत बिगड़ गये। बनारस के राजा ने शहर में शान्ति रखने का पूर प्रयत्न किया।

काशी या बनारस गंगा के बायें किनारे पर कलकत्ते से ४२५ मील और बम्बई से १४१ मील की दूरी पर स्थित है। यहां न केवल गंगा का जलमार्ग है (जिसमें बड़ी बड़ी नावें चल सकती हैं वरन यहीं कई सड़कें और रेलवे लाइनें आकर मिलती हैं

डफरिन पुल शहर के पूर्वी भाग को गंगा के दूसरे किनारे से जोड़ता है इसके ऊपर से मुगल-सराय को रेल जाती है। काशी स्टेशन के पुल के पास है। लेकिन बनारस छावनी स्टेशन शहर के उत्तर-पश्चिम में है। छावनी स्टेशन से जौनपुर फैजाबाद और लखनऊ को रेलवे लाइन गई हैं। यहां बंगाल नार्थ वेस्टेर्न रेलवे का भी जंकशन है। यह लाइन पूर्व की ओर आती है। इसका एक स्टेशन बनारस शहर है। ईस्ट इंडियन रेलवे के नीचे से जाती है। बनरा नदी को पार करके यह गाजी पुर और गोरखपुर गई है। पक्की सड़कों में सर्व प्रधान ग्रांडट्रंक रोड है। यह डफरिनपुल के ऊपर से गंगा को पार करती है। दूसरी पक्की सड़कें जौनपुर, गाजीपुर और आजमगढ़ को गई हैं। पुल के दक्षिणी किनारे से एक सड़क रामनगर होती हुई मिर्जापुर को गई हैं। तीथयात्रियों के लिये यहां को पञ्च कोशी सड़क बड़ी प्रसिद्ध है। कच्ची सड़कें कई स्थानों को गई हैं।

प्रधान शहर गंगा के ऊंचे उत्तरी चन्द्राकार कंकरीले पर बसा है। असी संगम से डफरिन पुल तक गंगा के मोड़ पर बने हुये घाट, मन्दिर और महल बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

औरंगजेब की मस्जिद की मीनारें बहुत ऊंची हैं और दूर से दिखाई देती हैं। इनके नीचे असंख्य मन्दिरों के सुनहले कंगूरे बड़े भले मालूम होते हैं।

अली नाला शहर की दक्षिणी सीमा बनाती है। इसके आगे हिन्दू विश्व विद्यालय है। हाल में इस ओर भी कुछ नये घर बन गये हैं।

असी संगम के पास असी घाट है। कहते हैं सुम और निसुम दानवों को पराजित करके दुर्गा जी कुंड के पास विश्राम किया और पास ही अपनी असि (तलवार) डाल दी इससे असि या अस्सी नाला बन गया।

दुर्गा जी ने आशीर्वाद दिया कि जो कोई असी को पार करके श्रद्धा पूर्वक काशी में जावे उसके पाप नष्ट हो जावें। ईसी से संगम के पास बहुत से यात्री स्नान करने आते हैं। पास ही जगन्नाथ जी का मन्दिर है यहां जेष्ठ और आषाढ़ में संगम स्नान का मेला होता है। एक मेला लोहारिक कुंड के पास होता है। इसे इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। जगन्नाथ जी के मन्दिर के पास कई अखाड़े हैं। एक में वैष्णव वैरागी रहते हैं। इनको रींवा नरेश से सहायता मिलती है। कुछ अखाड़ों में विद्यार्थियों को शिक्षा मिलती है। कहते हैं विष्णुपन्थी आखाड़ा बनारस में सब से पुराना है। इसे वैष्णव धर्म का उद्धार करने वाले रामानुजाचार्य ने स्थापित किया। इनके शिष्य भिक्षा से निर्वाह करते हैं। दादू पन्थी अखाड़ा भी ३०० वर्ष का पुराना है। एक निरसन्तान ब्राह्मण ने सड़क पर पड़े हुये दादू नामक बालक को उठाकर उसका पालन पोषण किया। आगे चल कर दादू विरक्त हो गया। उसके अनुयाई दादू पन्थी कहलाते हैं। असी घाट के नीचे तुलसी घाट है। रामायण के रचयिता भक्त तुलसीदास जी यहां कई वर्ष रहे सम्वत सोलह सौ अस्सी में (१६२३) में उनका स्वर्गवास हो गया। तुलसीदास के मन्दिर में उस समय के कई स्मारक रक्खे हैं। यहां हनुमान जी की मूर्ति है है जिनके वे उपासक थे। यहीं उस नाव का एक टुकड़ा है जिस पर चढ़कर तुलसीदास जी प्रतिदिन गंगा को पार करते थे।

हनूमान घाट के पास नागा लोगों का जूना अखाड़ा है। इनकी शाखा इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और गोदावरी में हैं। यह समस्त भारत में यात्रा करते हैं। इनके पास बहुत धन है। इनको कई राज्यों से सहायता मिलती है। हनूमान घाट के ऊपर बने हुये एक घर में स्वामी वल्लभाचार्य रहते थे। कहते हैं अपने शिष्यों को उपदेश देते हुये १६२० में वे गंगा में गिर पड़े और उनका स्वर्गवास हो गया। हनूमान घाट के आगे राय बल्देव सहाय और बच्छराज के दो छोटे घाट हैं। इनके आगे प्रसिद्ध शिवाला है। इस दुर्गाकार भवन को बैजनाथ मिश्र ने बनवाया था। यहीं १७८१ तक चेत सिंह ने निवास किया। इसी के आंगन में विद्रोह के समय अंग्रेजी सेना के सिपाही मारे गये थे। इसी की एक छोटी खिड़की से चेतसिंह को नीचे उतार दिया गया था। इस समय इस पर भारत सरकार का अधिकार है।

शिवाले के नीचे शिवाला घाट है। ऊपर शिव जी का मन्दिर होने से उस घाट का यह नाम पड़ा।

यहां ३०० वर्ष का पुराना निर्वाणी अखाड़ा है। इसकी एक शाखा इलाहाबाद में है। दूसरा निरंजनी अखाड़ा है। इनका प्रधान केन्द्र बड़ौदा में है। निरंकार ईश्वर की प्रार्थना करने से इनका यह नाम पड़ा। इनके आगेललित घाट और फिर केदार घाट है। बहुत पहले केदार ही बनारस का धुर दक्षिणी भाग था घाट के ऊपर बंगालियों का केदारेश्वर मन्दिर है। इसके पड़ोस में गौरी कुंड है। कहते हैं इसका जल पीने से ज्वर दूर हो जाता है। इसके आगे चौकी घाट है जहां एक विलक्षण पीपल है। जो घाट की सीढ़ियों को तोड़ कर उग आया है। इसके सामने रुक्मेश्व मन्दिर है। इसके आगे नारद घाट है। यह नाम नारद ऋषि की स्मृति में पड़ गया है। इसके आगे भेलूपुरा मुहल्ले की उत्तरी सीमा है। इसके आगे कई घ.ट हैं। इनमें पहला अमृतराव घाट है। अमृतराय पेशवा के वंश का था और करवी में रहता था। इसे छत्र घाट भी कहते हैं। इससे मिले हुये मुनेश्वर घाट गङ्गामहल घाट, खीरी घाट, चौसाठी घाट हैं। इनके आगे पांडे घाट, रानाघाट और मुन्शी घाट हैं। मुन्शी घाट को अहिल्याबाई के बड़े मिस्त्री मुन्शी श्रीधर ने बनवाया था इसके आगे शीतला घाट से मिला हुआ दशाश्वमेध घाट है। इसके ऊपर शहर में जाने वाली प्रधान सड़क है कहते हैं यहां ब्रह्मा ने दश अश्वमेध यज्ञों को पूरा करके काशी और प्रयाग की रचना की थी। यहाँ चन्द्रग्रहण और दूसरे अवसरों पर गंगा स्नान का मेला लगता है। इसके आगे मान मन्दिर घाट है। जहां १६६३ ई० में जैपुर के राजा जैसिंह ने ज्योषिविद्या का अध्ययन करने के लिये वेधशाला बनवाई थी। यह वेधशाला दिल्ली, मथुरा, उज्जैन और जैपुर की वेधशालाओं के समान है। कहते हैं। पुराना मन्दिर अकबर के दरबारी राजा मानसिंह ने बनवाया था उनकी स्मृति को चिर स्थायी रखने के लिये महाराज जैसिंह ने यहाँ वेध-शाला बनवाई। इससे कुछ आगे लकड़ी का बना हुआ विचित्र आकार का नैपाली मन्दिर है। इसे नैपाल नरेश ने बनवाया था इसके आगे मीर घाट है। राजा बलवन्तसिंह के पहले मीर रुस्तम अली बनारस प्रान्त का सूबेदार था। नवाब इसी के पास वाले घर में रहता था। नवाब के पतन के बाद यह घर मन्सारात को मिल गया।

चौक के सामने वाले गङ्गा तट पर कई घाट है। जिस घाट के सामने उमराव गिरि गुसाईं की बावली बनी उसे उमराव गिरि बावली घाट कहते हैं। जल-साई घाट के पास मुर्दे जलाये जाते हैं। और उनकी राख गङ्गा में छोड़ी जाती है। इसके आगे मणिकर्णिका घाट है जहां यात्री बहुत आते हैं। कहते हैं पार्वती जी के कर्ण की मणि इसके पास वाले कुएं में गिर गई थी। इसलिये इस घाट का नाम मणिक-र्णिका घाट पड़ गया। कुएं और घाट के बीच में तारकेश्वर मन्दिर है। मन्दिर के ऊपर पत्थर की एक बड़ी और गोल शिला पर विष्णु जी की चरण पादुका है। घाट के ऊपर सिद्ध विनायक या गणेश जी का मन्दिर है। इससे मिला हुआ अमेठी के राजा का सुन्दर मन्दिर है। मणिकर्णिका घाट के आगे भोंसला घाट हैं इसके ऊपर नागपुर के भोंसला राजा का विशाल भवन है। इसके आगे अधूरा सिन्धिया घाट है। इस घाट का निर्माण कराने वाली ग्वालिर की बैजा बाई का विचार था कि यहीं सर्वोत्तम घाट बने। लेकिन किनारे से आनेवाली एक धारा बनाने वालों के काम में बाधा डालती थी। उन्होंने इसके उद्‌गम का पता लगाते समय एक गुफा को खोल दिया। यहां एक वृद्ध पुरुष मिला। उसने अपने समय की वार्तायें, रामचन्द्र, सीता आदि के विषय में) पूंछी जब उसे पता लगा कि इस समय काशी में एक दूसरी ज.ति का राज्य है तब वह गंगा में कूद पड़ा। फिर उसका पता न लगा। सिन्धिया घाट के आगे संकटा देवी मन्दिर के समाने संकटा घाट है। इसके आगे कोशिला और गणपति घाट हैं।

कोतवाली के समीप वाले तट पर रामघाट राम-नवमी के उत्सव के लिये प्रसिद्ध है। इसके आगे मंगलागौरी दलपत घाट हैं। इनके आगे पञ्च गंगा घाट है। कहते हैं इस घाट के पास गंगा में पृथिवी के भीतर ही भीतर चार और नदियाँ (धूतपापा, किर्णा नदी, जर्णा नदी और सरस्वती) मिलती हैं। यह घाट बहुत बड़ा है। इसके ऊपर लक्ष्मण वाला भवन है। घाट के उत्तरी पूर्वी सिरे पर औरंगजेब की मस्जिद है। इसकी मीनारें बनारस शहर सब से

डफरिन पुल शहर के पूर्वी भाग को गंगा के दूसरे किनारे से जोड़ता है इसके ऊपर से मुगल-सराय को रेल जाती है। काशी स्टेशन के पुल के पास है। लेकिन बनारस छावनी स्टेशन शहर के उत्तर-पश्चिम में है। छावनी स्टेशन से जौनपुर फैजाबाद और लखनऊ को रेलवे लाइन गई हैं। यहां बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का भी जंकशन है। यह लाइन पूर्व की ओर आती है। इसका एक स्टेशन बनारस शहर है। ईस्ट इंडियन रेलवे के नीचे से जाती है। बनरा नदी को पार करके यह गाजी पुर और गोरखपुर गई है। पक्की सड़कों में सर्व प्रधान ग्रांडट्रंक रोड है। यह डफरिनपुल के ऊपर से गंगा को पार करती है। दूसरी पक्की सड़कें जौनपुर, गाजीपुर और आजमगढ़ को गई हैं। पुल के दक्षिणी किनारे से एक सड़क रामनगर होती हुई मिर्जापुर को गई हैं। तीर्थयात्रियों के लिये यहां की पञ्च कोशी सड़क बड़ी प्रसिद्ध है। कच्ची सड़कें कई स्थानों को गई हैं।

प्रधान शहर गंगा के ऊंचे उत्तरी चन्द्राकार कंकरीले पर बसा है। असी संगम से डफरिन पुल तक गंगा के मोड़ पर बने हुये घाट, मन्दिर और महल बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

औरंगजेब की मस्जिद की मीनारें बहुत ऊंची हैं और दूर से दिखाई देती हैं। इनके नीचे असंख्य मन्दिरों के सुनहले कंगूरे बड़े भले मालूम होते हैं।

असी नाला शहर की दक्षिणी सीमा बनाती है। इसके आगे हिन्दू विश्व विद्यालय है। हाल में इस ओर भी कुछ नये घर बन गये हैं।

असी संगम के पास असी घाट है। कहते हैं शुम्भ और निशुम्भ दानवों को पराजित करके दुर्गा जी कुंड के पास विश्राम किया और पास ही अपनी असि (तलवार) डाल दी इससे असि या अस्सी नाला बन गया।

दुर्गा जी ने आशीर्वाद दिया कि जो कोई असी को पार करके श्रद्धा पूर्वक काशी में जावे उसके पाप नष्ट हो जावें। इसी से संगम के पास बहुत से यात्री स्नान करने आते हैं। पास ही जगन्नाथ जी का मन्दिर है यहां जेष्ठ और आषाढ़ में संगम स्नान का मेला होता है। एक मेला लोहारिक कुंड के पास होता है। इसे इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। जगन्नाथ जी के मन्दिर के पास कई अखाड़े हैं। एक में वैष्णव वैरागी रहते हैं। इनको रींवा नरेश से सहायता मिलती है। कुछ अखाड़ों में विद्यार्थियों को शिक्षा मिलती है। कहते हैं विष्णुपन्थी आखाड़ा बनारस में सब से पुराना है। इसे वैष्णव धर्म का उद्धार करने वाले रामानुजाचार्य ने स्थापित किया। इनके शिष्य भिक्षा से निर्वाह करते हैं। दादू पन्थी अखाड़ा भी ३०० वर्ष का पुराना है। एक निस्सन्तान ब्राह्मण ने सड़क पर पड़े हुये दादू नामक बालक को उठाकर उसका पालन पोषण किया। आगे चल कर दादू विरक्त हो गया। उसके अनुयाई दादू पन्थी कहलाते हैं। असी घाट के नीचे तुलसी घाट है। रामायण के रचयिता भक्त तुलसीदास जी यहां कई वर्ष रहे सम्वत सोलह सौ अस्सी में (१६२३) में उनका स्वर्गवास हो गया। तुलसीदास के मन्दिर में उस समय के कई स्मारक रक्खे हैं। यहां हनुमान जी की मूर्ति है है जिनके वे उपासक थे। यहीं उस नाव का एक टुकड़ा है जिस पर चढ़कर तुलसीदास जी प्रतिदिन गंगा को पार करते थे।

हनुमान घाट के पास नागा लोगों का जूना अखाड़ा है। इनकी शाखा इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और गोदावरी में हैं। यह समस्त भारत में यात्रा करते हैं। इनके पास बहुत धन है। इनको कई राज्यों से सहायता मिलती है। हनुमान घाट के ऊपर बने हुये एक घर में स्वामी वल्लभाचार्य रहते थे। कहते हैं अपने शिष्यों को उपदेश देते हुये १६२० में वे गंगा में गिर पड़े और उनका स्वर्गवास हो गया। हनूमान घाट के आगे राय बल्देव सहाय और बच्छ राज के दो छोटे घाट हैं। इनके आगे प्रसिद्ध शिवाला है। इस दुर्गाकार भवन को बैजनाथ मिश्र ने बनवाया था। यहीं १७८१ तक चेत सिंह ने निवास किया। इसी के आंगन में विद्रोह के समय अंग्रेजी सेना के सिपाही मारे गये थे। इसी की एक छोटी खिड़की से चेतसिंह को नीचे उतार दिया गया था। इस समय इस पर भारत सरकार का अधिकार है।

शिवाले के नीचे शिवाला घाट है। ऊपर शिव जी का मन्दिर होने से इस घाट का यह नाम पड़ा।

यहां ३०० वर्ष का पुराना निर्वाणी अखाड़ा है। इसकी एक शाखा इलाहाबाद में है। दूसरा निरंजनी अखाड़ा है। इनका प्रधान केन्द्र बड़ौदा में है। निरंकार ईश्वर की प्रार्थना करने से इनका यह नाम पड़ा। इनके आगेललित घाट और फिर केदार घाट है। बहुत पहले केदार ही बनारस का धुर दक्षिणी भाग था घाट के ऊपर बंगालियों का केदारेश्वर मन्दिर है। इसके पड़ोस में गौरी कुंड है। कहते हैं इसका जल पीने से ज्वर दूर हो जाता है। इसके आगे चौकी घाट है जहां एक विलक्षण पीपल है। जो घाट की सीढ़ियों को तोड़ कर उग आया है। इसके सामने रुक्मेश्व मन्दिर है। इसके आगे नारद घाट है। यह नाम नारद ऋषि की स्मृति में पड़ गया है। इसके आगे भेलूपुरा मुहल्ले की उत्तरी सीमा है। इसके आगे कई घ.ट हैं। इनमें पहला अमृतराव घाट है। अमृतराय पेशवा के वंश का था और करवी में रहता था। इसे छत्र घाट भी कहते हैं। इससे मिले हुये मुनेश्वर घाट गङ्गामहल घाट, खीरी घाट, चौसाठी घाट हैं। इनके आगे पांडे घाट, रानाघाट और मुन्शी घाट हैं। मुन्शी घाट को अहिल्याबाई के बड़े मिस्त्री मुन्शी श्रीधर ने बनवाया था इसके आगे शीतला घाट से मिला हुआ दशाश्वमेध घाट है। इसके ऊपर शहर में जाने वाली प्रधान सड़क है कहते हैं यहां ब्रह्मा ने दश अश्वमेध यज्ञों को पूरा करके काशी और प्रयाग की रचना की थी। यहाँ चन्द्रग्रहण और दूसरे अवसरों पर गंगा स्नान का मेला लगता है। इनके आगे मान मन्दिर ,घाट है। जहां १६६३ ई० में जैपुर के राजा जैसिंह ने ज्योतिविद्या का अध्ययन करने के लिये वेधशाला बनवाई थी। यह वेधशाला दिल्ली, मथुरा, उज्जैन और जैपुर की वेधशालाओं के समान है। कहते हैं। पुराना मन्दिर अकबर के दरबारी राजा मानसिंह ने बनवाया था उनकी स्मृति को चिर स्थायी रखने के लिये महाराज जैसिंह ने यहाँ वेधशाला बनवाई। इससे कुछ आगे लकड़ी का बना हुआ विचित्र आकार का नैपाली मन्दिर है। इसे नैपाल नरेश ने बनवाया था इसके आगे मीर घाट है। राजा बलवन्तसिंह के पहले मीर रुस्तम अली बनारस प्रान्त का सूबेदार था। नवाब इसी के पास वाले घर में रहता था। नवाब के पतन के बाद यह घर मन्साराम को मिल गया।

चौक के सामने वाले गङ्गा तट पर कई घाट हैं। जिस घाट के सामने उमराव गिरि गुसाई की बावली बनी उसे उमराव गिरि बावली घाट कहते हैं। जलसाई घाट के पास मुर्दे जलाये जाते हैं। और उनकी राख गङ्गा में छोड़ी जाती है। इनके आगे मणिकर्णिका घाट है जहां यात्री बहुत आते हैं। कहते हैं पार्वती जी के कर्ण की मणि इसके पास वाले कुएं में गिर गई थी। इसलिये इस घाट का नाम मणिकर्णिका घाट पड़ गया। कुएं और घाट के बीच में तारकेश्वर मन्दिर है। मन्दिर के ऊपर पत्थर की एक बड़ी और गोल शिला पर विष्णु जी की चरण पादुका है। घाट के ऊपर सिद्ध विनायक या गणेश जी का मन्दिर है। इससे मिला हुआ अमेठी के राजा का सुन्दर मन्दिर है। मणिकर्णिका घाट के आगे भोंसला घाट है इसके ऊपर नागपुर के भोंसला राजा का विशाल भवन है। इसके आगे अधूरा सिन्धिया घाट है। इस घाट का निर्माण कराने वाली ग्वालिर की बैजा बाई का विचार था कि यहीं सर्वोत्तम घाट बने। लेकिन किनारे से आनेवाली एक धारा बनाने वालों के काम में बाधा डालती थी। उन्होंने इसके उद्गम का पता लगाते समय एक गुफा को खोल दिया। यहां एक वृद्ध पुरुष मिला। उसने अपने समय की वार्तायें, रामचन्द्र, सीता आदि के विषय में) पूंछी जब उसे पता लगा कि इस समय काशी में एक दूसरी ज.ति का राज्य है तब वह गंगा में कूद पड़ा। फिर उसका पता न लगा। सिन्धिया घाट के आगे संकटा देवी मन्दिर के समाने संकटा घाट है। इसके आगे कोशिला और गणपति घाट हैं।

कोतवाली के समीप वाले तट पर रामघाट रामनवमी के उत्सव के लिये प्रसिद्ध है। इनके आगे मंगलागौरी दलपत घाट हैं। इनके आगे पञ्च गंगा घाट है। कहते हैं इस घाट के पास गंगा में पृथिवी के भीतर ही भीतर चार और नदियाँ (धूतपापा, किर्णा नदी, जर्णा नदी और सरस्वती) मिलती हैं। यह घाट बहुत बड़ा है। इसके ऊपर लक्ष्मण बाला भवन है। घाट के उत्तरी पूर्वी सिरे पर औरंगजेब की मस्जिद है। इसकी मीनारें बनारस शहर सब से

ऊंची (१४२ फुट) हैं। यह विष्णु मन्दिर के स्थान पर बनी है। मस्जिद में एक मुल्ला रहता है। दूसरे मुसलमान यहां कम आते हैं। पञ्चगङ्गा घाट के आगे शीतलाघाट और गाय हैं।

गंगा का शेष भाग पूर्वी सीमा के पास आदमपुर मुहल्ले में पड़ता है। इस ओर घाट बहुत कम हैं। एक वाला बाई घाट (महाराष्ट्र राजकुमारी के नाम से) इसके आगे त्रिलोचन या नेत्र वाले शिवजी का मन्दिर बना है। मन्दिर का घेरा बहुत पुराना लेकिन कुछ ही पहले पूना के एक भक्त (नाथू नाला) ने बनवाया था। इसके महूघाट तिलिया नाला घाट और प्रह्लाद घाट में बहुत कम यात्री जाते हैं। डफरिन पुल के पास राजघाट वास्तव में स्नान करने का घाट नहीं है। पुल के आगे गंगा के ऊंचे किनारे पर राजाघाट का पुराना किला बना था। गदर के बाद इसकी मरम्मत की गई। लेकिन इसमें बहुत समय से सिपाही नहीं रहते हैं। इसके आगे गंगा का किनारा नीचा हो जाता है। पड़ोस में कई प्राचीन खंडहर हैं। कुछ दूर आगे बरना और गंगा का संगम है जहाँ दूर से यात्री स्नान करने आते हैं। पहले इसके पास भी एक छोटा किला बना था।

बनारस शहर के दक्षिणी सिरे पर भेलूपुरा गांव था। अब यह शहर का एक मुहल्ला बन गया है। भेलूपुरा की सड़क रामनगर के सामने दूसरे किनारे से आरम्भ होती है। आदमपुरा में लाट भैरों (भैरों का स्तम्भ) सर्व प्रसिद्ध है। कहते हैं पहले यहां मन्दिर भी था औरंगजेब ने इसे तुड़वा डाला। यह स्तम्भ ४० फुट ऊँचा था। १८०६ के हिन्दू-मुसलमानों के दंगे में यह मुसलमानों ने गिरा दिया और तोड़ डाला। हिन्दुओं ने मस्जिद गिराकर बदला चुकाया। इस समय इस लाट (स्तम्भ) का बहुत थोड़ा भाग शेष है इस पर तांबे का पत्र चढ़ा है। आदमपुरा के पश्चिम में जैतपुरा है जो पश्चिम में चेतगंज तक फैला है। इसका उत्तरी भाग खुला हुआ है। इसमें कहीं टीले कहीं निचले भाग और तालाब हैं। इसके कुछ भागों में खेत हैं। शहर के उत्तरी-पश्चिमी भाग में चेतगञ्ज है। प्रधान सड़क सिकरौल में बरना के पुल से क्वीन्स कालेज होती हुई चेतगंज को आती है। बाजार राजा चेतसिंह ने बनवाया था। इसमें थाना है। यहां से एक सड़क विक्टोरिया पार्क होती हुई दशाश्वमेध घाट को जाती है चेतगञ्ज के दक्षिण-पश्चिम में पिशाच मोचन का विशाल सरोवर एक तीर्थ है। कहते हैं भैरोनाथ ने बनारस को पिचास राक्षस से यहीं मुक्त किया था। इसके किनारे पर बहुत से मन्दिर बने हुये हैं। यहां वर्ष में कई मेले लगते हैं। तालाब के पानी तक उतरने के लिये चारों ओर से सीढ़ियां बनी हुई हैं। बनारस की सिविल लाइन को अक्सर सिकरौल कहते हैं। बरना के उत्तर में इसी नाम का एक गांव बसा हुआ है। इसके दक्षिण में चेतगञ्ज और पश्चिम में छावनी है। राजा बाजार के पीछे टक्साल है। यह १७३० में आरम्भ हुई थी १७८० तक यह बनारसके राजा केअधिकार में रही। इसके बाद वारेन हेस्टिंगस ने इसे रेजीडेण्ट को सौंप दिया। १८३० में टक्साल तोड़ दी गई। लेकिन विशाल इमारत बनी रही। यहां गदर के अवसर पर गोरों को शरण मिली थी। राजा बाजार के सामने नदेश्वर की कोठी है। इसके हाते में नदेश्वर देवी का मन्दिर है।

बनारस छावनी बरना के दक्षिण में स्थित है।

बनारस के पीने का पानी भदैनी (रामनगर के सामने) में २ फुट चौड़े नल के द्वारा गङ्गा से ऊपर उठाया जाता है। यहां से चल कर यह भेलूपुरा की तीन विशाल टंकियों में आकर ठहर जाता है। यहां से यह पानी ६००० से ऊपर घरों में पहुँचता है। सड़कों पर सर्व साधारण के लिये ४०० से ऊपर नल लगे हैं।

बनारस प्राचीन समय से शिक्षा का केन्द्र रहा है। यहां संस्कृत की अनेक पाठशालायें हैं। हिन्दू विश्व विद्यालय भारतवर्ष की एक अपूर्व सम्पत्ति है जिसकी रचना महामना मालवीय जी ने अपने आदर्श त्याग से की है। इसके अतिरिक्त यहां काशी विद्यापीठ, थियसाफीकल स्कूल, क्वीन्स कालेज, कई हाई स्कूल और इण्टर कालेज हैं।

अली नगर गांव ग्रांडट्रंक रोड पर मुगलसराय स्टेशन से दो मील और डफरिन पुल से ८ मील दूर है। इसके पड़ोस में एक पुरानी सराय के खंडहर हैं। यहां अन्न की एक बड़ी मंडी है।

बबुरी गांव चन्दौली तहसील में दक्षिणी सीमा के पास स्थित है। यह चन्दौली से ७ मील दक्षिण-पश्चिम बनारस से १३ मील दूर है। यह चन्द्रप्रभा नदी के बांयें किनारे पर बसा है। इस पर पुल बना है जिसके ऊपर चन्दौली से चकिया को सड़क जाती है। पहले यहां अन्न और कपड़े का बड़ा बाजार था। आजकल साधारण बाजार लगता है। यहां कम्बल, जूते और कुओं से पानी खींचने के लिये मोट बनाये जाते हैं। यहां प्राइमरी स्कूल और पुलिस की चौकी है।

बलुआ गांव बनारस से १२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर गङ्गा के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां होकर बनारस से गाजपुरी जिले के धनपुर को सड़क जाती है। गङ्गा को पार करने के लिये नाव का घाट है। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। पहले यहां नील और शक्कर के कारखाने थे। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहाँ कंकड़ के किनारे से टकराकर गङ्गा कुछ दूर तक पश्चिम-दाहिनी हो जाती है। माघ में यहाँ गङ्गा स्नान का बड़ा मेला लगता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यहां भी बाल्मीकि ऋषि का आश्रम था। इस समय गांव में महादेव का एक मन्दिर है।

बड़ा गांव बनारस से १८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां से एक पक्की सड़क पांच मील दूर बबतपुर रेलवे स्टेशन को जाती है। यहां थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और बाजार है। यहां के जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

बसनी गांव बनारस शहर से १३ मील और जौनपुर की सड़क से १ मील दूर है। इसके पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं। यहां बहुत अच्छी शक्कर बनती थी। इस गांव की कुछ भूमि काशीनरेश के हाथ में है।

चन्दौली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह ग्रांडट्रंकरोड पर बनारस से २२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से बबुरी, चकिया और दूसरे स्थानों को सड़कें गई हैं। पहले यहां नील और शक्कर का कारखाना था। इस समय यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। चन्दौली को चन्द्रसाह नामी एक राजपूत ने बसाया था। पुराना किला खंडहर हो गया है। गदर में यहां के राजपूत विद्रोही हो गये थे। उनकी जमीन छीन ली गई।

चन्द्रावती गांव को रघुवंशी सरदार दोमनदेव ने बसाया था चन्द्रावती उसकी स्त्री का नाम था। यहां उसने गङ्गा के बायें किनारे पर ईंटों का किला बनवाया था। यह बनारस से १४ मील दूर है। यहां दो मन्दिर हैं जिन्हें बौद्ध लोग भी पवित्र मानते हैं। कहते हैं भगवान बुद्ध ने सारनाथ जाते समय यहां उपदेश दिया था। यहां एक स्कूल है। गङ्गा को पार करने के लिये नाव का घाट है।

धौरहरा बनारस जिले का सब से बड़ा गांव है। यह गोमती के बायें किनारे पर बनारस से १४ मील दूर है। सड़क यहां से कुछ दूर है। लेकिन गाजीपुर को जानेवाली रेलवे लाइन पास ही है। गोमती की तराई में रबी की फसल बहुत अच्छी होती है। ऊपर की ऊँची भूमि अच्छी नहीं है। यहां स्कूल और बाजार हैं। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

घुस गांव बनारस से ११ मील दूर है। मुगलसराय रेलवे स्टेशन ३ मील पश्चिम की ओर है। ग्रांडट्रंकरोड १ मील पश्चिम की ओर है।

गङ्गापुर गांव बनारस से ६ मील पश्चिम की ओर ग्रांडट्रंकरोड से २ मील दूर है। यहां पूर्व की ओर रामनगर दक्षिण की ओर चुनार, दक्षिण-पश्चिम की ओर मिर्जापुर और उत्तर की ओर हरधुआ (जौनपुर सड़क पर) से आने वाली सड़कें मिलती हैं। पहले इस गांव को ठिठरिया कहते थे। यहीं भूमिहार ब्राह्मणों के उस वंश का बहुत समय तक निवास था जिस से मन्साराम, बलवन्त सिंह और चेतसिंह की उत्पत्ति हुई है। गांव के उत्तर में मन्साराम ने एक किला बनवाया था। किले के चारों ओर गहरी खाई थी। रामनगर के बनने के पहले राजा बलवन्त सिंह यहीं रहते थे। इस समय किले में काशी नरेश की तहसील और दफ्तर है। गांव में डाकखाना, स्कूल और बाजार है।

जखनी गांव मिर्जापुर जिले की सीमा के पास दक्षिण की ओर स्थित है। यह बनारस से १६ मील दूर है। यहां जखनी देवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसके

पड़ोस में मन्साराम के वंश से सम्बन्ध रखने वाले भूमिहार ब्राह्मण रहते थे। अठारहवीं सदी के आरम्भ में वे स्वाधीन होने लगे। फर्रुखसियर ने उन्हें दबाने के लिये सेना भेजी। आगे चलकर फिर यहां भूमिहार ब्राह्मण बस गये। इनमें मन्साराम सर्व-प्रधान बन गया। उसी ने एक प्रकार से वर्तमान बनारस की नींव डाली।

कैथी गांव गङ्गा के बायें किनारे पर बनारस से गाजीपुर को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह बनारस शहर से १६ मील दूर है। २ मील पश्चिम की ओर रजवारी रेलवे स्टेशन है। गांव की भूमि गङ्गा और गोमती के संगम से उत्तर को ओर फैली हुई है। संगम के पास निचली भूमि या दियरा है। यह भाग दोनों नदियों की बाढ़ से डूब जाता है। गांव में कई मन्दिर हैं। मार्कंडेय महादेव के मन्दिर पर शिवरात्रि का उत्सव होता है। गङ्गा को पार करने के लिये नाव का घाट है। गोमती को पार करने के लिये वर्षा ऋतु के अन्त में नावों का पुल बन जाता है। वर्षा ऋतु में नाव चलती है।

कठिरांव बनारस से २२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसके पड़ोस की चिकनी मिट्टी में धान बहुत होते हैं। तालाबों से सिंचाई होती है। पूर्व की ओर एक पुराना किला है। पश्चिम की ओर एक मुसलमानी इमाम बाड़ा है। गांव में कई मन्दिर हैं। यहां एक स्कूल है। बाजार प्रतिदिन लगता है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

लोहटा गांव बनारस से ४ मील पश्चिम की ओर स्थित है। यहां एक स्कूल और बाजार है। पहले यहाँ शक्कर का व्यापार बहुत होता था। फरवरी के महीने में यहां शाह मदार का मेला होता है।

मझवर गांव चन्दौली तहसील से डेढ़ मील दूर है। अकबर के समय में यह एक परगने का प्रधान नगर था। मुगलसराय उत्तर प्रदेश का एक महत्व पूर्ण रेलवे जंकशन है। यहां ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन (जो पटना होकर आती है) से गया होकर आनेवाली व्यास (कार्ड) लाइन मिलती है। यहीं भूतपूर्व अवध रुहेल खंड वर्तमान ईस्ट इंडियन) रेलवे आरम्भ होती है जो फैजाबाद तथा परतापगढ़ (प्रतापगढ़) से लखनऊ होती हुई सहारन पुर को गई है। रेलवे स्टेशन बनारस के डफरिन पुल से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। ग्रांडट्रंक रेलवे (भूतपूर्व अवध रुहेलखंड रेलवे) लाइन के समानान्तर चलती है। मुगलसराय स्टेशन एक मील पूर्व की ओर छूट जाता है। कहते हैं इसके पास वाले गांव में अकबर (कुछ लोगों के अनुसार दो मुगल व्यापारियों) ने एक सराय बनवाई। इसी से इसका नाम मुगल सराय पड़ा। स्टेशन, रेलवे गार्ड और रेल से सम्बन्ध रखने वाले दूसरे घर दो छोटे गांवों की भूमि में बने हैं। रेलवे वालों की सुविधा के लिये यहां एक बाजार बन गया है। यहां डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। यात्रियों की सुविधा के लिये कलकत्ते के एक मारवाड़ी सज्जन ने यहां धर्मशाला बनवा दी है।

नौबतपुर गाँव कर्मनासा के बायें किनारे पर उस स्थान पर बसा है जहां ग्रांड ट्रंक रोड जिले में प्रवेश करती है। यह चन्दौली से ८ मील और बनारस शहर से २६ मील दूर है। नदी के ऊपर पक्का पुल बना है। इस पुल को १८६-३१ में दिल्ली के एक अग्रवाल वैश्य ने बनवाया था। उत्तर की ओर कुछ दूरी पर मुगल सराय से गया को जाने वाली रेलवे का भी पुल है। पहले इस गांव को स्थानीय सूबेदार नबी खां ने बसाया था। उसके ढोल (नौबत) से इसका नाम नौबतपुर पड़ गया। राजा बलवन्त सिंह ने इसे फिर से बसाया। उसी ने यहां एक पक्की सराय बनवाई। रेल खुलने से पहले यहां का व्यापार कुछ अधिक बढ़ा चढ़ा था।

नियर डीह का पुराना गांव गोमती के ऊंचे दाहिने किनारे पर बनारस से १७ मील उत्तर की ओर स्थित है। एक पुराने ऊंचे टीले पर बने हुये मन्दिर के पास रामलीला होती है। फूलपुर गांव बनारस से जौनपुर को जाने वाली सड़क पर प्रायः मध्य में स्थित है। एक शाखा लाइन फूलपुर (अवध रुहेल खंड) रेलवे स्टेशन को जाती है जो गांव से दो मील दूर है। यहाँ थाना, डाकखाना और बाजार है। कहते हैं राजा बलवन्त सिंह की रानी ने (जैसे फूल चुनते हैं) थोड़ी थोड़ी भूमि पड़ोस के गांवों से लेकर इसे बसाया। इसी से इसका नाम फूलपुर पड़ा।

पिंड्रा गांव बनारस से जौनपुर को जाने वाली

पक्की सड़क पर बनारस से १५ मील और रेलवे स्टेशन से ४ मील दूर है। सड़क के दोनों ओर बाजार है। वर्षा ऋतु में नन्द नदी यहां का कुछ पानी बहा ले जाती है। ग्रीष्म ऋतु में यह सूख जाती है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। रामलीला के उत्सव पर मेला लगता है। यहां के प्रसिद्ध जमींदार बरियार का सिंह (जो किले में रहता था) ने पहले मन्साराम विरोध किया। लेकिन जब मन्साराम के बेटे राजा बलन्वत सिंह का ब्याह बरियार सिंह की बेटी से हुआ तो दोनों में मेल हो गया। बरियार सिंह के मर जाने पर जब शुजाउद्दौला ने १७४९ में चढ़ाई की तो वीर विधवा ने नवाब का घोर विरोध किया। इससे नवाब इतना प्रसन्न हुआ कि किला उसी के अधिकार में रहने दिया।

राजातालाब को अक्सर रानी तलाब कहते हैं। यह बड़ा तालाब बनारस से ६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर हैं। यह पंचक्रोशी मार्ग के भीतर है। गांव बहुत छोटा है। यह बनारस के महाराजा के अधिकार में है। यहां फौजी पड़ाव और थाना हैं। तालाब के पड़ोस में कई मन्दिर हैं। इसे रामसागर भी कहते हैं। यहां से एक मील की दूरी पर दूसरा तालाब है। इसे शिवसागर कहते हैं। आषाढ़ महीने में रामसागर से शिवसागर तक रथयात्रा होती है। रथ को मनुष्य खींचते हैं। कभी कभी काशी नरेश स्वयं आरम्भ में हाथ लगाते हैं।

रामगढ़ बानगङ्गा के पूर्वी किनारे पर बनारस से १८ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। गांव के पूर्वी भाग में अच्छी कड़ैल मिट्टी है। शेष भागों में कम उपजाऊ बलुआ मिट्टी है। सिंचाई कुओं और बानगङ्गा के पानी से होती है। कहते हैं पड़ोस के बैराट किले में प्राचीन समय में पांडवों ने गुप्त वास किया था। इस किले की दीवारें ७० फुट से १०० फुट तक मोटी हैं। इस समय इसके कुछ ही भाग शेष हैं। उत्तर-पूर्व की ओर अजगरा गांव में बादशाही ताल है। रामगढ़ में रामशाला नाम का मन्दिर है। यहां १५० वर्ष पहले कीनाराम नामी विख्यात साधू रहता था। गांव के पोड़स में प्राचीन टीले और खंडहर हैं। जहां बौद्ध कालीन सिक्के मिला करते हैं।

रामनगर गङ्गा के ऊंचे दाहिने किनारे पर डफरिन पुल से ४ मील ऊपर की ओर स्थित है। यह चन्दौली से १६ मील दूर है। बनारस के दक्षिणी सिरे से यह दिखाई देता है। यहां आने के लिये नगवा से नाव मिलती है। एक पक्की सड़क जलीलपुर के पास ग्रांडट्रंक रोड से मिलाती है। यहां से एक सड़क चकिया को और दूसरी सड़क मुगलसराय को जाती है। १७५० ई० से राजा बलवन्तसिंह ने यहां अपनी राजधानी बनाई तब से रामनगर प्रसिद्ध हो गया। यहां गङ्गा के किनारे राजा ने किला बनवाया जिसमें इस समय उसके वंशज रहते हैं। एक सीधी सड़क किले से पूर्व की ओर आती है। बनारस से आने वाली सड़क समकोण बनाती हुई इसे पार करती है। इसके आगे तिरपौलिया या तेहरा द्वारा है। सड़कों के दोनों ओर पक्के घर बने हैं। भूमि समतल है। लेकिन नगर का पानी तेजी से गङ्गा में बह जाता है। राजा चेतसिंह ने अपने पिता से भी अधिक नगर को सजाया। उसने रामनगर से उत्तर-पूर्व की ओर कुतुलूपुर के विशाल बगीचों में उसने भव्य मन्दिर और तालाब बनवाया। मन्दिर १०० फुट ऊँचा है ४० फुट की ऊंचाई तक इसमें बढ़िया कारीगरी है। तालाब के पानी तक पहुँचने के लिये चारों ओर सीढ़ियां बनी हुई हैं। इसमें असंख्य स्नान करने वाले एक साथ स्नान कर सकते हैं। तालाब के प्रत्येक कोने पर एक मन्दिर है। कहते हैं वेद व्यास ने इस स्थान को पवित्र किया था। किले में भी वेद-व्यास की स्मृति में एक छोटा मन्दिर बना हुआ है। रामनगर में ठठेरी बाजार लोहारी टोला, तेलियना और पटवा टोला चार प्रधान टोले (मुहल्ले) हैं। यहां गल्ले का बड़ा व्यापार होता है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल हैं। जन संख्या के अनुसार इस जिले में बनारस के बाद दूसरा स्थान रामनगर का है।

सैयद राजा गांव ग्रांड ट्रंक रोड के उत्तर में बनारस से २४ मील पूर्व-उत्तर की ओर है। सड़क के पास ही ईस्ट-इंडियन रेलवे की गया लाइन चलती है। पास ही स्टेशन है। रेल के पहले यहां का व्या-

पार अधिक बढ़ा था। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। कहते हैं अवध के राजे अहमद नामी एक सैय्यद ने ५५० में यहां एक सरांय बनवाई, इसी से इसका यह नाम पड़ा। भूमि कल्यान तिवारी का मिल गई उसने इसका नाम बदल कर कल्यानपुर रख दिया। गांव में सैयद राजे का मकबरा है जहां कुछ मुसलमान प्रति गुरुवार को इकट्ठा होते हैं। पास के शिवपुर गांव में (जिसे बैजनाथ गंज और हरनाथपुर भी कहते हैं) १७४५ ई० में राजा बलन्वत सिंह के एक करद राजा ने यहां किला बनवाया और बाजार लगवाया यहां सूती कालीनें और बतन बनते हैं।

सकलडीहा चन्दौली से ६ मील उत्तर की ओर और बनारस से २० मील पूर्व की ओर स्थित है। यहां से मुगलसराय, सैदपुर (गाजीपुर) और जमनिया को सड़कें गई हैं। एक सड़क सकलडीहा (ईस्ट इंडियन) रेलवे स्टेशन को गई है। रेलवे के खुलने से यहाँ का व्यापार दूसरे स्थानों के हाथ में चला गया है।

सारनाथ बनारस से ४ मील उत्तर की ओर गाजीपुर को जानेवाली सड़क के पास ही स्थित है। पहले बनारस से सारनाथ को और भी अधिक सीधी सड़क जाती थी। इसके कुछ चिन्ह मिलते हैं। यह सड़क बनारस शहर के मध्य में पंचगङ्गा (औरंगजेब की मस्जिद) के पास से आरम्भ होकर लाट भैरों होती हुई पुराने पुल के पास बरना नदी को पार करती थी। इसके कुछ चिन्ह गाजीपुर जाने वाली रेलवे लाइन के पुल के पास इस समय भी मिलते हैं। अठारहवीं सदी में इसी स्थान पर एक पुल मुगलों ने बनवाया। इसका कुछ भाग बाद में बिगड़ गया था। अतः बनारस के रेजीडेन्ट ने इसके पत्थरों से एक दूसरा पुल बनवाया। प्राचीन सारनाथ की इमारतों के पत्थरों की लूट से डन्कन पुल बनाया गया।

प्राचीन समय में सारनाथ को मृगदाव (हिरणों का वन) और ऋषि पाटन (ऋषियों का निवास स्थान) कहते थे। निग्रोधमिग जातक या बुद्धभगवन की जन्म कथा में इसका उल्लेख इस प्रकार है। अपने एक जन्म में बुद्ध मृगों के राजा के रूप में बनारस के निकट बन में विचर रहे थे। आखेट प्रेमी बनारस के राजा ने एक बार बहुत से हिरण मार डाले इस पर बुद्ध ने राजा से कहा यदि आप शिकार करना छोड़ दें तो आपको वर्ष भर प्रतिदिन एक हिरण भेंट किया जावे। राजा ने यह बात मान ली। कुछ समय तक प्रतिदिन राजा के पास एक हिरण आने लगा। एक दिन एक गर्भवती हिरणी की बारी आई। उसने बुद्ध से कहा मेरे मरने का समय आ गया यह सम्भव है लेकिन मेरे पेट के बच्चे के मरने का समय अभी किस प्रकार हो सकता है। इस पर हिरणों के भावी बुद्ध को दया आई। इसलिये उसने हिरणी के बदले अपने आपको बनारस के राजा के सामने अर्पण किया इस पर बनारस के राजा ने विस्मित होकर कहा "मैं तो मनुष्य के रूप में केवल हिरण हूँ। आप हिरण के रूप में मनुष्य हैं।" उस दिन से उसने हिरणों का मारना बन्द कर दिया और पास का दाव या बन हिरणों के विचरने के लिये छोड़ दिया। उस समय से यह स्थान मृगदाव (हिरणों का बन) कहलाने लगा। यहीं प्रथमबार बुद्ध भगवान ने अपना उपदेश संसार को दिया। जिस स्थान पर बैठ कर बुद्ध भगवान ने व्याख्यान दिया उसे बौद्ध लोग बड़ा पवित्र मानते हैं। चीनी यात्री फाहियान के समय में यहां एक विहार था यहां कुछ नाम का व्यक्ति रहता था। पड़ोस के हिरण उसके पास आकर रात्रि बिताया करते थे। ह्वान सांग के समय में बौद्ध भिक्षुओं की संख्या यहां और अधिक बढ़ गई थी। यहां भव्य भवन बन गये थे। एक स्थान पर १५०० भिक्षु ज्ञान प्राप्त करते थे। विहार २०० फुट ऊँचा था। छत के ऊपर सोने से मढ़ा हुआ आम का फल बना था। इस विहार की नींव और जीना पत्थर का बना था। बुर्ज और ईटों के बने थे। चारों ओर ताख सौ सौ पंक्तियों में बने थे। प्रत्येक ताख में बुद्ध भगवान की सुनहरी मूर्ति रक्खी थी। विहार के बीच में जीवित बुद्ध के आकार के समान तांबे की एक मूर्ति थी। सामने ७० फुट ऊँचा एक पत्थर स्तम्भ था। यह पत्थर प्रकाश के समान चमकता था। यहां प्रार्थना करने वालों के अपनी श्रद्धानुसार शुभ या अशुभ चिन्ह दिखाई देते थे। यहीं बुद्ध भगवान ने उपदेश देना आरम्भ

किया था। यहां एक स्तूप ३०० फुट ऊँचा बना था। ११६४ में कुतुबुद्दीन के आक्रमण ने इन बौद्ध स्मारकों को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। अनेकों स्तूप खंडहरों के नीचे दब गये। कई सदियों तक बौद्ध भग्नावशेष दबे पड़े रहे। अठारहवीं सदी के अन्त में इनकी खुदाई आरम्भ हुई। यहां एक स्तूप (धशख) का व्यास ६३ फुट है। ४३ फुट की ऊँचाई तक यह पत्थर का बना है। इसके ऊपर १०४ फुट की ऊँचाई तक ईंटों का बना है। नींव को मिलाकर इसकी ऊंचाई १४३ फुट है। यह गुप्तकालीन कलाकौशल से सुसज्जित है। अन्तिम स्तूप सातवीं शताब्दी में बना। उस समय का यहां एक शिला लेख मिला है।

१७९४ में राजा चेत सिंह के दीवान जगतसिंह के कारीगर ईंटों की खोज में सारनाथ के पड़ोस में खुदाई कर रहे थे। दैवयोग से वे स्तूप के कोष-गृह (खजाने के कमरे) में पहुँच गये। यहां उन्हें पत्थर का एक भारी सन्दूक मिला। इसके भीतर का बहुत खजाना तो पाने वालों को मिला। लेकिन हरे संगमरमर की सन्दूकची जोनाथन डन्कन महाशय को मिली इसके भीतर जली हुई हड्डियां, मोती, लाल और सोने की पत्तियां थीं। बाहरी पत्थर का सन्दूक १८३५ में कनिंघम साहब को मिला। उन्होंने इसे कलकत्ते के अजायबघर में रखवा दिया। कुछ चीजें लखनऊ के के अजायब घर में पहुँच गई हैं। १९०५ में पुरातत्व विभाग ने खुदाई आरम्भ की। यहां बौद्ध कालीन कई नई चीजें मिली हैं। फिर भी अभी प्राचीन सारनाथ का समूचा वैभव प्रगट नहीं हो सका है।

शिवपुर गांव जौनपुर को जानेवाली सड़क पर बनारस शहर से १ मील पश्चिम की ओर है। शिवपुर रेलवे स्टेशन डेढ़ मील और पश्चिम की ओर है। यहां लोहे के बर्तन और खेती के औजार बनते हैं। यहां डाकखाना स्कूल और सराय है। इसके पास ही द्रोपदी कुंड है। जो राजा टोडरमल के आदेश से बनाया गया था। पंच कोशी मार्ग पर स्थित होने के कारण यह एक तीर्थ है। कहते हैं इसके पड़ोस के जंगल में सदियों पहले शिवाजी की एक मूर्ति मिली। इसी से यह नाम पड़ा।

सिन्धौरा गाँव बनारस से १६ मील की दूरी पर उत्तर-पश्चिम की ओर है। कहते हैं पहले यहां सिन्दूर बहुत बनता था। इसी से यह नाम पड़ा। पहले यहां कपड़े और गल्ले का व्यापार बहुत होता था। कुछ गाढ़ा इस समय भी यहां के जुलाहे बुनते हैं। यहां डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

ठटरा गांव ग्रांडट्रंक रोड से आध मील उत्तर की ओर बनारस से २० मील दूर है। यह गोतम भूमिहार ब्राह्मणों का पुराना निवास स्थान है। राजा बलवन्त सिंह के दीवान बाबू औसान सिंह का जन्म इसी गांव में हुआ था। यहां एक प्राइमरी स्कूल और बाजार है। पहले यहां शक्कर का व्यापार बहुत होता था।

* * *

जौनपुर

जौनपुर का जिला बनारस कमिश्नरी के उत्तरी पश्चिमी भाग में स्थित है। यह २५·२४ और २६·-१२· उत्तरी अक्षांश और ८८·७ और ८३·५ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसके पश्चिम में परतापगढ़ और इलाहाबाद के जिले हैं। इसके दक्षिण में मिर्जापुर और बनारस के जिले हैं। इसके पूर्व में गाजीपुर और आजमगढ़ है। उत्तर में सुल्तानपुर का जिला है। ऐतिहासिक कारणों से इसकी सीमा बड़ी विषम है। मछली शहर तहसील के एकदम बीच में १५ गांवों (साढ़े सोलह वर्ग मील) का पंवारा ताल्लुका प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील में सम्मिलित है। १२ वर्गमील क्षेत्रफल के २४ गांव प्रतापगढ़ और सुल्तानपुर जिलों से घिरे होने पर भी इस जिले में सम्मिलित हैं। उत्तर से दक्षिण तक इस जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ५३ मील और पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई ५६ मील है। इसका क्षेत्रफल १२४४ वर्ग मील है।

जौनपुर एक समतल मैदान है। नदियों की घाटियों ने इसे कुछ ऊचा-नीचा बना दिया है। नदियां उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती

हैं। कहीं कहीं पुराने उजड़े हुये नगरों के खेरे और टीले हैं जिन पर वृक्ष उग आये हैं। जहां कहीं पुराने राजपूतों के बनाये हुये किले नष्ट कर दिये गये वहां भी ऊंचे टीले बन गये हैं। जौनपुर जिला बड़ा उपजाऊ है। इसमें जंगल कम है। खेती बहुत होती है और दक्षिण में चिकनी मिट्टी के निचले प्रदेश में कुछ जंगल पाया जाता है। यह जिला बड़ा घना बसा है। थोड़ी थोड़ी दूर पर छोटे छोटे गांव मिलते हैं।

इस जिले की प्रधान नदी गोमती है। यह नदी पीलीभीत जिले के दलदलों से निकलती है। खीरी, सीतापुर, लखनऊ, बाराबकी और सुल्तानपुर जिले में

बहती हुई गोमती नदी जौनपुर जिले के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर चांदा परगने में प्रवेश करती है। ४ मील तक गोमती सुल्तानपुर और जौनपुर के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे चार मील तक गोमती सुल्तानपुर जिले में बहती है। इसके आगे कुछ दूर तक सीमा बनाने के बाद गोमती नदी जौनपुर जिले में प्रवेश करती है। जिले में गोमती का मार्ग बड़ा टेढ़ा है। पहले यह पूर्व की ओर फिर दक्षिण की ओर मुड़ती है आलमगीर गांव में पास यह फिर पूर्व की ओर मुड़ती है और जौनपुर शहर होती हुई आगे बढ़ती है। पूर्वी सिरे पर जमैठा के पास यह दक्षिण की ओर मुड़कर जफराबाद की ओर बढ़ती है। केराकट तहसील में दक्षिण-पूर्व की ओर बह कर गोमती जौनपुर जिले के बाहर हो जाती है और बनारस जिले में यह गङ्गा से मिल जाता है। इस जिले में गोमती नदी का मार्ग ८६ मील लम्बा है। यदि गोमती सीधी रेखा में बहती तो इसकी लम्बाई बहुत ही कम होती। जिले में गोमती की तली बड़ी गहरी है इसकी घाटी एकदम स्पष्ट है। इसके मार्ग में बहुत कम परिवर्तन होते हैं। गोमती की धारा बड़ी मन्द है। वर्षा ऋतु में भी इसका वेग प्रति घंटे ३ मील से अधिक नहीं होता है वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। दूसरी ऋतुओं में भी इसमें गहरा पानी बना रहता है। कुछ ही स्थानों में इसमें पांज होती है। जौनपुर शहर में गोमती पर दो पुल बने हैं। जिले के दूसरे स्थानों में गोमती को पार करने के लिये नावें चला करती हैं। कहीं कहीं नावों के अस्थायी पुल बन जाते हैं। गोमती के किनारे ऊँचे और सपाट हैं। इन्हें नालों ने काट दिया है। कहीं कहीं मोड़ के बीच में उपजाऊ जमीन हैं। गोमती के किनारे पर प्रायः बलुई मिट्टी मिलती है। किनारे पर कुओं में अधिक गहराई पर पानी मिलने से यह सिंचाई के लिये के लिये भी अधिक उपयोगी नहीं है।

जौनपुर जिले में गोमती में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। इसमें प्रधान पीली और सई हैं। सवाइन नाला झीलों और जंगलों को पार करता हुआ पिलिछा के पास गोमती में मिलता है। दहीरपुर नाला जौनपुर शहर के नीचे गोमती में मिलता है। अधिक आगे गोमती नदी में गठिया नाला दाहिने किनारे पर मिलता है। मुफ्तीगंज नाला पूर्व में गोमती से मिलता है। गोमती की सहायक पीली नदी कुछ बड़ी है। इसमें वर्ष भर पानी रहता है। यहां सुल्तानपुर जिले के चांदा परगने की झीलों से निकलती है। परतापगढ़ जिले में होती हुई यह आगे बढ़ती है। सिंगरामऊ को पार करने पर इसमें तम्बूरा नदी मिल जाती है। दरियागंज के पास पीली नदी गोमती में मिल जाती है। पीली नदीका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। इसके किनारों को नालों ने काट दिया है।

सई बड़ी नदी है। यह अवध के दक्षिणी और पश्चिमी भाग का पानी बहा लाती है। यह हरदोई जिले में निकलती है। लखनऊ और उन्नाव के बीच में सीमा बनाकर यह रायबरेली और प्रतापगढ़ जिलों को पार करके जौनपुर जिले के पश्चिमी भाग में आती है। कई परगनों में बहती हुई राजापुर के पास सई नदी गोमती में मिल जाती है। संगम के पास संगम स्नान का मेला होता है। कभी कभी सई में भयानक बाढ़ आती है। १८७५ में इसमें ऐसी बाढ़ आई कि जलालपुर का बाजार टूट गया। इलाहाबाद से जौनपुर और आजमगढ़ को जाने वाली सड़कों के मार्ग में सई के ऊपर पुल बने हैं।

विसूही नदी एकदम जौनपुर जिले की नदी है। यह मछली शहर तहसील में निकलती है। दक्षिण की ओर चक्करदार मार्ग बनाती हुई जौनपुर, मिर्जापुर और बनारस की सीमा के पास वरना में मिल जाती है। ऊपरी भाग में इसकी तली उर्थली है। आगे चलकर कंकड़ और चिकनी मिट्टी के किनारों के बीच में घाटी गहरी हो जाती है। इसमें सदा पांज रहती है।

वरना नदी जौनपुर जिले में प्रवेश नहीं करती है। लेकिन बहुत दूर तक यह जिले की सीमा बनाती है। वरना नदी इलाहाबाद जिले में फूलपुर के उत्तर में मैलाहन झील से निकलता है। मुंगरा परगने को छूने के बाद वरना नदी दक्षिण की ओर मिर्जापुर जिले में मुड़ जाती है। यह गोमती से भी अधिक टेढ़ी है और ६० मील तक जौनपुर जिले की सीमा बनाती है। जौनपुर को छोड़ने के बाद यह पूर्व की ओर बनारस में पहुँचती है और वहीं गंगा से मिल जाती है। वरना के किनारे ऊँचे और सपाट हैं। किनारे की मिट्टी रँगीली या कँकरीली है और खेती के लिये अच्छी नहीं है।

मंगई या मँगर नदी सुल्तानपुर जिले के दलदलों से (दोस्तपुर के पास) निकलती हैं। पूर्व की ओर मुड़कर यह आजमगढ़ जिले में पहुँचती है और निजामाबाद के पास टोंस में मिल जाती है।

गङ्गी नदी जौनपुर जिले में आरा के पास झीलों से निकलती है। लेकिन कुछ दूर सीमा बनाने के बाद यह आजमगढ़ की नदी हो जाती है।

गोमती, सई और विसूही नदियां जौनपुर जिले को प्रायः ४ समानान्तर प्राकृतिक भागों में बांट देती है। इन भागों का ऊपरी आकार प्रायः एक सा है नदी की गहरी तली के ऊपर किनारे ऊँचे खड़े हैं। किनारे से भीतर की ओर क्रमशः ढाल है। आगे चल कर कुछ चढ़ाव है यहीं जलविभाजक है जिससे एक ओर का पानी एक नदी में और दूसरी ओर का पानी दूसरी नदी में पहुँचना है। अलग भागों की ऊँचाई और मिट्टी में कुछ भेद है। गोमती के पड़ोस में असंख्य नालों ने समीप के भागों को कुछ ऊंचा नीचा लहरदार बना दिया है।

गोमती के उत्तर का प्रदेश सुल्तानपुर की सीमा से दक्षिणी-पूर्व में गाजीपुर की सीमा तक फैला हुआ है। इसका उत्तरी भाग खुटहन और जौनपुर तहसीलों में स्थित है। गोमती का जल-विभाजक नदी के पास ही है। पूर्व की ओर भूमि तेजी के साथ ढालू होती गई है। यहां नीची और दलदली भूमि है। इसमें धान बहुत होता है। बीच बीच में ऊसर है। इधर पानी ठीक-ठीक नहीं बह पाता है। इससे बड़ी बड़ी झीलें एक दूसरे से मिल जाती हैं। इसका दक्षिणी भाग कोरा कट तहसील में स्थित है। इस ओर का पानी गंगी और दूसरे नालों के द्वारा बह जाता है। बीच वाला निचला भाग भी अधिक नीचा नहीं है। इसकी मिट्टी दोमट (बालू और चिकनी मिट्टी का मिश्रण) है। उत्तर की ओर अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से २९० फुट है। जौनपुर शहर समुद्र-तल से २६२ फुट ऊँचा है। गाजीपुर की सीमा के पास भूमि केवल २५४ फुट ऊंची है।

दूसरा भाग गोमती और सई का द्वाबा है। यह जिले का सब से अधिक उपजाऊ और घना बसा हुआ भाग है। यह कुछ ऊंचा है। इसका पानी पीली नदी और उसकी सहायक छोटी नदियां बहा ले जाती हैं। अधिक वर्षा होने पर नदियों के पड़ोस में बाढ़ आती है। लेकिन इस भाग में झीलों और ऊसर प्रदेशों का प्रायः अभाव है। यहां की मिट्टी मकई और रबी की फसल के लिये बड़ी अच्छी है। भूमि का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। सीमा पर परतापगढ़ में नवादा के पास भूमि समुद्र तल से ३०८ फुट ऊंची है। महराजगंज में इसकी ऊंचाई

२६६ फुट और जौनपुर शहर के दक्षिण में २६१ फुट है।

सई—विसुही द्वाबा में सई के ऊंचे किनारों से भूमि तेजी के साथ ढालू होती गई है। यहां चिकनी मिट्टी है। थोड़ी थोड़ी दूरी पर छोटे छोटे तालाब और दलदल हैं। धरातल का कुछ पानी बड़ी कठिनाई से विसुही की ओर बह पाता है। इधर ऊसर भूमि बहुत है। इस भाग की प्रधान फसल धान है। प्रतापगढ़ की सीमा के पास भूमि समुद्र-तल से ३०० फुट ऊंची है। धुर पूर्व में भैंसा के पास इसकी उंचाई २६५ फुट रह गई है। विसुही और बरना के बीच का द्वाब दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित है। यह बहुत तंग है। यहां अधिकतर चिकनी मिट्टी (मटियार) है। मछली शहर तहसील के दक्षिण में ऊसर भी बहुत मिलता है। अधिक पूर्व में नदियों की धारायें कुछ गहरी हो गई हैं। यह दोमट मिट्टी है। इस भाग का पानी रुकने नहीं पाता है और तेजी के साथ पड़ोस की नदियों में बह जाता है। केवल बादशाहपुर के पास तालाबों की अधिकता है। पश्चिम की ओर भूमि अधिक ऊंचा है। जौनपुर जिले में लगभग ५ फीसदी भूमि झीलों से घिरी है। प्रबल वर्षा में झीलों का पानी किनारों के ऊपर उमड़ कर पड़ोस की भूमि को डुबो कर हानि पहुँचाता है। इनसे भी अधिक हानि गोमती और सई की बाढ़ से होती है। बड़ी बाढ़ के समय खुश्क ऋतु की साधारण तली के ऊपर ४५ फुट ऊँचा पानी चढ़ जाता है। १८७१ की बाढ़ में गोमती का पानी जौनपुर के पुल के ऊपर से बहने लगा। शहर के निचले भाग पानी में डूब गये। सराय में कीचड़ भर गई। इसी समय सई ने जलालपुर के पुल को डुबा दिया। १४० गांव डूब गये और ६००० एकड़ भूमि की फसलें नष्ट हो गईं।

जिले में लगभग ७ फीसदी भूमि ऊसर है। जङ्गल कम है। कहीं-कहीं ढाक का जङ्गल मिलता है। इससे लोगों को जलाने के लिये ईंधन मिलता है। गांवों के पड़ोस में बाग है।

जौनपुर जिले की जलवायु दूसरे पूर्वी जिलों की भांति उष्णार्द्र है। हवा में नमी के कारण सरदी और गरमी के तापक्रम में बहुत कम अन्तर रहता है। यहां नवम्बर के पहले जाड़ा नहीं पड़ता है। उधर मार्च के पहले ही जाड़ा समाप्त हो जाता है। इस ऋतु में हवा पश्चिम से पूर्व को चलती है। अप्रैल के अन्त में गरमी पड़ने पर हवा पूर्व से पश्चिम की ओर चलने लगती है। मई और जून में ११० अंश फारेनहाइट तक तापक्रम हो जाता है। दिसम्बर और जनवरी में ७६ अंश रह जाता है। कम से कम तापक्रम ५० अंश तक हो जाता है। वर्ष भर में ४२ या ४३ इञ्च वर्षा होती है। अतिवृष्टि के समय प्रायः ७४ इंच और अनावृष्टि के वर्ष में १५ इञ्च वर्षा होती है।

जौनपुर जिले में खेती के योग्य प्रायः सभी भूमि में खेती होती है। खरीफ के फसल में सब से बड़ी (३८ फीसदी) फसल धान की है। धान की फसल लगातार बढ़ रही है। दलदलों के सिरे और उनके पास की भूमि में धान बोया जाने लगा है। खरीफ की फसल में दूसरा स्थान मकई का है। खरीफ की फसल की १६ फीसदी भूमि में मकई उगाई जाती है। यह फसल किसान के बड़े काम की होती है। धान पकने से पहले किसान मकई खाकर ही निर्वाह करता है। अरहर जिले के कई भागों में उगाई जाती है। लेकिन अरहर ज्वार या बाजरा के साथ बोई जाती है। जौनपुर जिले में गन्ने की फसल पहले से कुछ कम हो गई है। यहां कोदो, महुआ, उर्द, मूंग और सनई भी खरीफ की फसल में होती है।

रबी की फसल में जौ बहुत (३६ फीसदी) होता है। गेहूँ भी कई भागों में उगाया जाता है। रबी की फसल की १० फीसदी भूमि गेहूँ उगाने के काम आती है। कुछ भागों में गेहूँ को चना या जौ के साथ मिलाकर बोते हैं। चना अधिकतर जौ या गेहूँ के साथ मिलाकर बोया जाता है। कहीं-कहीं यह अकेला भी बो दिया जाता है। जहां सिंचाई का प्रबन्ध नहीं है और जहां दूसरी फसल नहीं हो सकती है वहां प्रायः चना बो दिया जाता है। पूर्वी भाग में रबी की प्रधान फसल मटर है। जायद फसल में तरबूज और खरबूजा उगाये जाते हैं। जौनपुर इन दोनों के लिये प्रसिद्ध है। बोने के पहले बीजों को पानी में भिगोते हैं और फिर राख में लपेट

कर छः छः इंच की दूरी पर छोटे गढ्ढों में बोते हैं। इनसे किसानों को अच्छी आमदनी होती है। जौनपुर जिले में अधिकतर सिंचाई कुओं से होती है। खरीफ की फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। कुएं इतने अधिक हैं कि रबी की फसल के लिये औसत से ६ एकड़ के लिये १ कुआं है। कुओं में काफी (नौ या दस गज) गहराई पर पानी मिलता है। जहां कुओं में पास पानी मिलता है वहां ढेकली से पानी निकाला जाता है। अधिक गहरे कुओं में पुर चलाते हैं। सिंचाई की सुविधा होने से जौनपुर जिले में दुर्भिक्ष का प्रकोप कम होता है। जौनपुर कोई बड़ा कारबारी नगर नहीं है। जफराबाद में सनई और दूसरे रद्दी रेशों से हाथ का कागज सदियों तक बनता रहा। कुछ कारीगर जौनपुर के मियांपुर मुहल्ले में आकर बस गये। कुछ दिनों तक इनका यह कारबार चलता रहा लेकिन आगे चलकर मिलों के संघर्ष से यह काम चौपट हो गया। कारीगर लखनऊ की मिलों और दूसरे स्थानों को चले गये। कुछ दिनों तक कागज की तश्तरी और दूसरी चीजें यहां बनती रहीं। नील का काम भी यहां अधिक समय तक न चल सका। शक्कर बनाने का काम कई स्थानों में होता है। जौनपुर इत्र और सुगन्धित तेलों के लिये इस समय भी प्रसिद्ध है। यह कारबार शर्की सुल्तानों ने ईरान के कारीगरों की सहायता से यहां चलाया था। इत्र प्रायः केवड़ा और गुलाब के फूलों से बनाया जाता है। बनाने का ढंग वही है जो कन्नौज, गाजीपुर और दूसरे स्थानों में है। फूलों का सत चन्दन के तेल से निकालते हैं। इसी से इत्र बनता है। फूलों का सत पानी में निकालने से अरक तैयार होता है। फूल का सत तिली के तेल में भी मिलाया जाता है। इससे सुगन्धित तेल बनता है।

यहां मिट्टी और धातु के बर्तन और शीशे का सामान बनाने का भी काम होता है। जुलाहे कई स्थानों में कपड़ा बुनने का काम करते हैं।

जौनपुर के इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जौनपुर स्थान पुराना है। लोगों का अनुमान है कि जमदग्निपुर से बिगड़कर जौनपुर नाम बना है। पड़ोस में यमुना में गोमती के दाहिने किनारे पर जमदग्नि ऋषि का स्थान है। कुछ लोगों का कहना है कि जौनपुर स्थान तो पुराना है लेकिन वर्तमान जौनपुरनाम जूनापुर से बिगड़ कर बना है। मुहम्मद तुगलक को जूना भी कहते थे। कहते हैं फीरोज तुगलक जब नया शहर बसा रहा था तब स्वप्न में उसे आदेश मिला कि शहर का नाम जूना की स्मृति में रक्खा जाये। कुछ लोग इसे यवनेन्द्रपुर या यवनपुर का अपभ्रंश बताते हैं। लाल दरवाजा मस्जिद के एक खम्भे पर यमानयामपुर नाम खुदा था। जौनपुर की विशाल मस्जिदें, महल और दूसरे भवन प्राचीन हिन्दू मन्दिरों, किलों और दूसरे भवनों को तोड़ कर बनाये गये हैं। कुछ पत्थर गोमती के मार्ग से बनारस से भी लाया गया है। हिन्दू-चिन्हों को छिपाने के लिये बहुत से गढ़े हुये खम्भों का सामने वाला भाग पीछे की ओर करके खम्भों को उल्टा लगाया गया है। इस प्रकार बहुत सा प्राचीन इतिहास इन मस्जिदों और मकबरों में छिपा पड़ा है। कहते हैं। महमूद गजनी जयपाल का पीछा करते करते मनैछ (जफराबाद) तक आया था। १०१६ और १०६७ के बीच में यहां कन्नौज के राजाओं का राज्य था। विजय मंडिल राजा विजय चन्द्र की स्मृति दिलाता है। विजयचन्द्र ने कई मन्दिर बनवाये जो मस्जिदों में बदल दिये गये। ११६४ में मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने विजयचन्द्र के बेटे जयचन्द को हराया और मार डाला। लेकिन राजा ने पहले ही अपना विशाल कोष (खजाना) अपने बेटे उदयपाल के पास मनैछ में पहुँचा दिया था। कुतुबुद्दीन इस कोष की खोज में मनैछ को आया। उदयपाल भाग गया। राजपूत मनैछ के असली किले को बचाने के लिये वीरता से लड़े। लेकिन यहां कुतुबुद्दीन का अधिकार हो गया और विशाल कोष उसके हाथ आया। सुल्तान स्वयं यहां आया। उसने किले में दरबार किया। इसमें हिन्दू सरदार भी सम्मिलित हुये। बनारस पर चढ़ाई करने के पूर्व मुहम्मद गोरी ने मनैछ में उदयपाल के दीवान जैत सिंह को राजगद्दी पर बिठाया। जफराबाद और लखनऊ में दूसरे हिन्दू राजा थे। चुनार और उसके पड़ोस वाले भागों पर जयचन्द के बड़े बेटे का अधिकार था। अल्तमश के समय तक कन्नौज

के राजाओं के सिक्के चलते रहे। १३२१ में गयासुद्दीन ने राजा सकित सिंह से मनैछ छीनने के लिये एक सेना भेजी। विजय पाने पर जफर नामी एक हाकिम जफराबाद में नियुक्त किया गया। मुहम्मद तुगलक से घबराकर बहुत से दरबारी इधर आकर शरण लेने लगे। इस पर मुहम्मद तुगलक को सन्देह हुआ। यहां के सूबेदार एनुलमुल्क को देवगिर जाने की आज्ञा मिली। सूबेदार ने आज्ञा न मानी और लड़ने को तैयार हो गया। उसके दो भाई मारे गये लेकिन सूबेदार क्षमा कर दिया गया। उसने बहुत सा धन, अन्न और दूसरा सामान दिल्ली भेजकर सुल्तान को सन्तुष्ट कर लिया। १३५३ में फीरोजशाह ने बंगाल के सूबेदार पर चढ़ाई की। कहते हैं गोरखपुर और चम्पारन के मार्ग से फीरोज बंगाल की ओर गया और जफराबाद के मार्ग से लौटा। यहां गोमती का किनारा उसे इतना पसन्द आया कि १३५६ और १३६४ में उसने यहां नया शहर (जौनपुर) बसाया। ७३५ हिजरी में अटाला मस्जिद की नींव डाली गई।

सुल्तान का बेटा जफर जौनपुर शहर का प्रथम सूबेदार हुआ। १३७६ ई० में दूसरा बेटा शाहजहां नसीर खां जौनपुर का सूबेदार हुआ। वह यहीं मरा। जौनपुर में उसकी कब्र बनी है। इसके बाद मालिक सरवर नाम का एक हिजड़ा यहां का सूबेदार हुआ। १३९३ ई० में दिल्ली सुल्तान ने मालिक अश्शर्क (पूर्व का राजा) की उपाधि देकर हिन्दू सरदारों को दबाने के लिये कन्नौज से विहार तक सारे प्रदेश का स्वामी बना दिया। इटावा, कोल, कहुराकनिल और कन्नौज के विद्रोहियों को दबाकर १३९४ में वह जौनपुर पहुँचा। धीरे धीरे कन्नौज कड़ा, संडीला, डलमऊ, बहराइच, विहार और तिरहुत पर उसने अधिकार कर लिया। उसने काफिरों (हिन्दुओं) को दबाया और छीने हुये किलों की मरम्मत की। १३९९ में तैमूर के हमले से दिल्ली में गड़बड़ी मची। इसी वर्ष मालिक अश्शर्क का देहान्त हो गया। उसके उत्तराधिकारी करनफूल ने मुबारकशाह नाम से अपने आप को शाह घोषित किया। वह अपने नाम के सिक्के चलाने लगा। कुछ ही समय में वह मर गया और इब्राहीम जौनपुर का राजा हुआ। १४०६ ईस्वी में गङ्गा को पार के इब्राहीम ने दिल्ली की सेना का सामना किया और कन्नौज पर अधिकार कर लिया। वर्षा ऋतु कन्नौज में ही बिताकर १४०७ ई० में इब्राहीम दिल्ली की ओर बढ़ा। मार्ग में उसने सम्भल और बुलन्दशहर पर अधिकार कर लिया। मालवा की ओर से कहीं जौनपुर पर आक्रमण न हो इसलिये इब्राहीम यमुना के किनारे से फिर जौनपुर को लौट आया। उसी वर्ष उसने बंगाल के राजा कंस (गणेश) पर चढ़ाई की। इसके बाद कई वर्ष तक जौनपुर में शान्ति रही। १४१३ में दिल्ली का सुल्तान महमूद मर गया। इब्राहीम ने काल्पी पर चढ़ाई की।

लेकिन दिल्ली के दौलत खां लोदी के डर से वह लौट आया। इस अवकाश को उसने जौनपुर सजाने में लगाया। यहां इसने आलीशान इमारतें बनवाई। पर केवल कुछ ही शेष रहीं। बहुत सी इमारतें सिकन्दर लोदी ने गिरवा दीं। १४२७ में इब्राहीम ने फिर काल्पी पर चढ़ाई की। १४२८ में इटावा के पास यमुना के दाहिने किनारे पर शाही सेना से लड़ाई का कोई फल न हुआ। १४३२ में इब्राहीम ने फिर काल्पी पर हमला किया। लेकिन इस बार भी वह काल्पी ले न सका। १४३३ में उसने ग्वालियर के पड़ोस के कई परगने छीन लिये। १४४० में इब्राहीम का देहान्त हो गया। उसका बड़ा बेटा महमूद (महमूद शाह) जौनपुर का शाह हुआ। १४४२ में महमूद ने बंगाल पर चढ़ाई की। कालीकोट के राजा ने फारस के बादशाह से सहायता मांगी। फारस के शाह के हस्तक्षेप से चढ़ाई रुक गई। १४४५ में महमूद ने काल्पी पर इस बहाने (मालवा के सुल्तान को बहका कर) अधिकार कर लिया कि वहां का सूबेदार मुसलमान नहीं है। लेकिन सैनिक दबाव पड़ने पर उसने काल्पी के किले को खाली कर दिया। इसके बाद महमूद ने चुनार के पड़ोस में विद्रोह दबाया और उड़ीसा की ओर अपना राज्य बढ़ाया। १४५६ में वह मर गया। उसका बेटा अयोग्य था। १४५९ में भीकम खां मुहम्मद शाह के नाम से जौनपुर का शाह हुआ। लेकिन पांच महीने के निर्दयतापूर्ण शासन के बाद वह स्वयं मार डाला गया। इसके बाद हुसेनशाह

जौनपुर का शाह हुआ। १४६६ में उसने ग्वालियर जीत लिया। १४७३ में जब दिल्ली सुल्तान पंजाब में था हुसेन ने दिल्ली पर चढ़ाई करदी। किसी तरह दोनों में सन्धि हो गई। १४७६ में उसने इटावा ले लिया। जब उसने दिल्ली पर चढ़ाई की तो पहले तो उसे कुछ सफलता मिली लेकिन अन्त में दिल्ली के बहलोल लोदी ने यमुना के किनारे हुसेन को बुरी तरह हराया। हुसेन ने पहले ग्वालियर के राजा के यहां शरण ली। दूसरी बार हमला होनेपर उसने पैदल भागकर पन्ना के राजा के यहां शरण ली। बहलोल ने उसका पीछा न छोड़ा और जौनपुर पर अधिकार कर लिया। यहां १४७८ में उसने मुबारक खां लोहानी को सूबेदार बनाया।

१४८६ में हुसेन ने नई सेना इकट्ठी करके अफगानों को भगा दिया। लेकिन कुछ समय बाद उसे हटना पड़ा। चुनार के पड़ोस का भाग उसके अधिकार में रहा। १४९३ में जौनपुर सुल्तानपुर और प्रतापगढ़ के राजपूतों ने विद्रोह का झंडा उठाया और जौनपुरके सूबेदार मुबारकखां को हटाकर उसके भाई(कड़ाके सूबेदार) को मार डाला। मुबारकखां को पन्ना के राजा ने झूँसी में पकड़ लिया था। दिल्ली सुल्तान ने राजपूतों पर गोमती के किनारे अचानक छापा मारा। उनका सरदार जर्खुण्ड के किले को भाग गया जहां हुसेन का अधिकार था। दूसरे दिन हुसेन भी कटगढ़ (रायबरेली जिले में) के पास हार गया। बरबक जौनपुर का सूबेदार बनाया गया। हुसेन खां ने भागकर चुनार के किले में शरण ली। इसके बाद सुल्तान ने पन्ना पर चढ़ाई की। लेकिन पहाड़ी भाग में उसके सब घोड़े नष्ट हो गये। इसलिये नये घोड़े लेने के लिये वह जौनपुर आया। यह समाचार पाकर हुसेन फिर जौनपुर की ओर बढ़ा। सिकन्दर शाह उसका सामना करने के लिये दक्षिण की ओर कन्तितको आया। गङ्गा को पार करनेके बाद वह बनारस की ओर बढ़ा। ३०मील आगे भट्टराजा की सैनिक सहायता से हुसेन हरा दिया गया। हुसेन ने भागकर लखनौती में शरण ली। यहीं १५०० या १५०४ में उसकी मृत्यु हो गई। हुसेन की मृत्यु के साथ ही जौनपुर के शरकी राजवंश का भी नाश हो गया। इसके बाद सिकन्दर जौनपुर को लौटा। वहां उसने ६ महीने ठहरकर शरकी बादशाहों की बनवाई हुई प्रायः सभी इमारतों को नष्ट कर डाला। गोमती के किनारे पर बसा हुआ विशाल शाही महल जमीन में मिला दिया गया। उनकी बनवाई मस्जिदें भी गिरा दी गईं। १५१० में सिकन्दर मर गया। उसका बेटा इब्राहीम लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसके दूसरे बेटे (जलाल खां जो काल्पी में था) ने सरदारों की सहायता से जौनपुर पर अधिकार कर लिया उसने जलालुद्दीन का नाम ग्रहण करके अपने आप को जौनपुर का शाह घोषित किया और अपने सिक्के ढलवाये। आगे चलकर जलालुद्दीन ने हिन्दुस्तान की राजधानी आगरे पर चढ़ाई की। यहां से हार कर वह मध्य भारत को भागा। वहीं वह मर गया। जब १५२६ में पानीपत की लड़ाई में बाबर ने इब्राहीम को हराया तो लोहानी अफगान जौनपुर और बिहार में स्वाधीन हो गये। लेकिन हुमायूं मुगल सेना लेकर जौनपुर की ओर आया। अफगान भाग गये। अफगानों ने हिन्दुओं को भी अपनी ओर मिला लिया। लेकिन फतेहपुर सीकरी के पास खनवा की लड़ाई में बाबर विजयी हुआ। फिर भी जलालुद्दीन लोहानी अपने मन्त्री फरीद खां (शेर खां) सूरी के साथ विरोध-की तैयारी कर रहा था। १५२९ में बाबर ने बिहार पर चढ़ाई की लेकिन कड़ा में सन्धि हो गई। १५३० में बाबर मर गया। जब हुमायूं कालिंजर के किले को घेरे हुये था, अफगानों ने मिलकर जौनपुर को जीत लिया। हुमायूं फिर इधर आया। इस बार शेर खां अपनी सेना लेकर चुनार को चला गया। अफगान बुरी तरह हारे। हुमायूं आगरे को लौट गया। जौनपुर के अफगानों ने शेर खां का पक्ष लेकर विद्रोह का झंडा उठाया। हुमायूं ने हिन्दूबेग को जौनपुर का सूबेदार बनाकर भेजा। १५३६ में हुमायूं स्वयं आया। उसने ६ महीने तक चुनार को घेरा डाला। वह चुनार को नहीं ले पाया था कि उसे शेर खां को दबाने के लिये बंगाल को जाना पड़ा। शेर खां ने गौड़ पर अधिकार कर लिया था। १५३८ में हुमायूं बंगाल में पहुँचा। जब मुगल वहाँ आराम कर रहे थे तभी शेर खां ने जौनपुर पर छापा मारा और उसे ले लिया। कुछ ही समय में कन्नौज और सम्भल तक अपना अधिकार कर

लिया। लौटते समय १५३६ में चौसा के पास हुमायूं की हार हुई।

१५४० में कन्नौज के पास भोजपुर में हुमायूं इतनी बुरी तरह से हारा कि शेरशाह हिन्दुस्तान का बादशाह हो गया। शेरशाह और उसके उत्तराधिकारी के शासनकाल में जौनपुर में बराबर शान्ति रही। १५५५ में हुमायूं फिर विजयी होकर दिल्ली में प्रवेश कर रहा था। इसी समय बंगाल के सूरी शाह ने जौनपुर पर चढ़ाई की। लेकिन आदिल के हिन्दू सेनापति हेमू ने काल्पी के युद्ध में उसे बुरी तरह हराकर मार डाला। अकबर ने अफगानों को दबाने के लिये अलीकुली खां को भेजा। वही जौनपुर का सूबेदार बनाया गया। १५६५ में विद्रोह को दबाने के लिये अकबर इधर आया। अकबर ने जौनपुर में एक महल बनवाने की आज्ञा दी। १५६७ में दूसरे विद्रोह को दबाने के लिये अकबर फिर इधर आया और जौनपुर, में ३ दिन ठहरा। मुनीम खां खानखाना जौनपुर गाजीपुर और बनारस का सूबेदार बनाया गया। उसने जौनपुर में पक्का पुल बनवाया। किले का दरवाजा और दूसरे भवन भी बनवाये गये। अकबर के समय में जौनपुर सूबे की राजधानी न रहा। लेकिन यहां एक सरकार का केन्द्र स्थान बना रहा। यहां किले में टक्साल बनी रही। दूसरे मुगल बादशाहों के समय में कन्नौज का ह्रास होता गया।

१७१६ में दिल्ली सम्राट ने जौनपुर, गाजीपुर, बनारस और चुनार की सरकारों को नवाब मीर मुर्तजा खां नामी एक सरदार के सुपुर्द कर दिया। १७२७ में ये सरकारें ७ लाख रु० वार्षिक पर सादात खां को मिलीं। अवध पर उसे १७२२ में ही अधिकार मिल चुका था। नवाब ने इन्हें ८ लाख वार्षिक पर अपने पुराने मित्र रुस्तम अली को दे दिया। रुस्तम अली अयोग्य था। सारा शासन भार उसके विश्वास पात्र कर्मचारी मन्साराम के हाथ में आ गया। १७३७ में रुस्तम के विरुद्ध अवध के नवाब सफदर जंग ने जांच की। इसी समय १३ लाख वार्षिक के पट्टे पर जौनपुर, बनारस और चुनार की सरकारों को अपने बेटे बलवन्त सिंह के नाम करा लिया। १७३८ में मनसाराम मर गया। बलवन्त सिंह को राजा की उपाधि मिल गई और उसने अपनी शक्ति बढ़ा ली। जब कुछ समय के लिये फर्रुखाबाद के बंगश नवाब ने यहां अपना अधिकार जमाया उस समय बलवन्तसिंह ने मरियाहू में अपनी सेना एकत्रित की और फर्रुखाबाद के नवाब की अनुमति से आधे राज्य पर अधिकार जमाये रहा। १७५२ में फिर अवध का अधिकार हो जाने पर भी बलवन्त सिंह राजा बना रहा। १७५७ में बलवन्त सिंह ने गरवारा के हिम्मत बहादुर के परारी में सई के किनारे पर बने हुये कच्चे किले पर चढ़ाई की और उसे ले लिया। इसके बाद उसने मछली शहर के शेख काबुल मुहम्मद को किले के बाहर आने के लिये फुसलाकर उसे कैद कर लिया सफदर जंग के मरजाने पर शुजा उद्दौला के समय में बलवन्त सिंह का राज्य १७६१ में गाजीपुर के मिल जाने से अधिक बढ़ गया। १७६३ में राजा ने चलौली के किले को नष्ट करके विद्रोहियों को दबा दिया।

१७६४ में बक्सर की लड़ाई के बाद जौनपुर और शेष बनारस प्रान्त एक प्रकार से कम्पिनी को मिल गया था। लेकिन इंगलैंड में कम्पिनी के मालिकों ने इसे पसन्द न किया और पुरानी स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही। कुछ ही समय के बाद बलवन्त सिंह बीमार पड़ा। विद्रोही जमींदार फिर सिर उठाने लगे। मछली शहर के फौजदार खां ने वहां का किला छीन लिया और राजा के दो मित्रों को मार डाला। दूसरे दिन फौजदार खां मारा गया और राजा के कर्मचारियों ने किले पर अधिकार कर लिया। १७७२ में बलवन्त सिंह मर गया। उसके स्थान पर उसका बेटा चेतसिंह राजा हुआ। जौनपुर में चेतसिंह और शुजाउद्दौला में सन्धि हो गई। १७७५ में शुजाउद्दौला मर गया। आसफुद्दौला अवध का नवाब हुआ। नये नवाब ने बनारस प्रान्त कम्पिनी को दे दिया। लेकिन चेतसिंह राजा बना रहा। १७७६ में यहां हिन्दू मुसलमानों का झगड़ा हुआ। पंजा शरीफ के पास हिन्दू एक छोटा मन्दिर बना रहे थे। मुसलमानों ने मन्दिर गिरा दिया। दोनों दलों में जोर की लड़ाई हुई। आरम्भ में मुसलमान जीते। मन्दिर के स्थान पर उन्होंने आठ

दिन में मस्जिद खड़ी कर ली। हिन्दुओं ने इस मस्जिद को गिरा दिया। चेतसिंह ने मांडी के राजा को यहां सेना के साथ शान्ति स्थापित करने के लिये भेजा।

१७८१ में चेतसिंह के अलग हो जाने से जौनपुर का शासन प्रबन्ध अंग्रेजों के हाथ में आगया। १७६४ तक पुराना प्रबन्ध चलता रहा। डनकन साहब ने मुफ्ती करीमुल्ला को जौनपुर शहर और पड़ोस का प्रथम न्यायाधी और मजिस्ट्रेट बनाया। लगान वसूल करने का काम कल्ब अलीबेग को सौंपा गया। लगान सेना की सहायता से ही वसूल होता था। १७६५ में यहां इस्तमरारी बन्दोबस्त घोषित किया गया और जमींदारों से सीधे लगान वसूल होने लगा।

१८५७ में यहां गदर की खबर पहुँची। गोरे प्लाण्टर अपने कारखानों को छोड़ कर जौनपुर को आने लगे। पांच जून को जब सिक्ख सिपाहियों को मालूम हुआ कि बनारस में उनके साथियों पर अंग्रेज सिपाहियों ने गोलियाँ चलाई तो वे बिगड़ खड़े हुये। उन्होंने अपने अफसरों को मार डाला और खजाना लूट लिया। इसके बाद उन्होंने गोरों से (जो कचहरी में इकट्ठे थे) हथियार रखवा लिये। गोरों ने वहां से भाग कर केराकट में शरण ली। यहां डोभी के रघुवंशी विद्रोहियों ने उन्हें घेर लिया। यहां से वे बनारस पहुँचा दिये गये। सिक्ख सिपाही जौनपुर से लखनऊ चले आये। खजाने का शेष भाग बुड्ढी स्त्रियों और बच्चों ने लूट लिया। विद्रोह की आग सब कहीं भड़क उठी थी। ८ सितम्बर को कर्नल राटन के साथ गुरखों की एक सेना जौनपुर आई। पुलिस और थानों का संगठन हुआ। सेना, पुलिस और राजभक्तों की सहायता से स्थान स्थान पर विद्रोहियों को दंड देकर विद्रोह दबा दिया। इसके बाद इस जिले में कोई विशेष घटना न हुई।

जौनपुर का प्रसिद्ध और प्राचीन नगर गोमती के किनारे पर सई गोमती के संगम से १५ मील ऊपर की ओर है। यहां चार रेलवे लाइनें और कई सड़कें मिलती हैं। बनारस से फैजाबाद होकर लखनऊ को जानेवाली लाइन शहर के पूर्व की ओर से जाती है। स्टेशन दक्षिणी सिरे पर जफराबाद के पास है। भदरी स्टेशन के पास छोटी लाइन मिलती है। यह लाइन दक्षिण-पूर्व की ओर केराकट औंड़िहार और गाजीपुर को गई है। जफराबाद के पास से ही एक लाइन इलाहाबाद को जाती है। गोमती -पुल के पास ही लखनऊ इलाहाबाद मिर्जापुर बनारस और जफराबाद से आने वाली पक्की सड़कें मिलती हैं। चार पक्की सड़कें उत्तर की ओर सुल्तानपुर, फैजाबाद आजमगढ़ और केराकट से आकर मिलती हैं।

जौनपुर बनारस से ३६ मील, मिर्जापुर से ४३ मील इलाहाबाद से ६१ मील, लखनऊ से ६२ मील, फैजाबाद से ८६ मील और आजमगढ़ से ४० मील दूर है। जौनपुर शहर का प्रधान भाग (जिसमें किला, मस्जिदें और बाजार शामिल हैं) गोमती के बायें या उत्तरी किनारे पर स्थित है। दक्षिण की ओर एक दो मुहल्ले और सिविल लाइन है। दक्षिण वाले भाग में कई गाँवों की भूमि शामिल है। सिविल लाइन के उत्तर और बनारस सड़क के पश्चिम में जेल है। इसके दक्षिण में कचहरी तहसील और पुलिस लाइन है। पुल के पास ही पक्की सराय का उत्तरी दरवाजा है। इस पुल को १५६४-१५६८ में मुनीम खां खानखाना ने बनवाया था। पुल के ऊपर चलने के मार्ग २६ फुट चौड़ा है। इसके ऊपर २ फुट ३ इंच का घेर है। दोनों सिरों पर सुन्दर महराब हैं। यह एक किनारे से दूसरे किनारे तक ६५४ फुट लम्बा है। पुल का दक्षिणी भाग १७६ फुट लम्बा है। उसका उत्तरी भाग ३५३ फुट लम्बा है। दोनों के बीच में १२५ फुट लम्बा द्वीप वाला भाग है। द्वीप के पास एक पत्थर के हाथी के ऊपर एक विशाल सिंह बना है। इसे हिन्दू कारीगरों ने बनाया है। सम्भव है यह किसी मन्दिर से लाया गया हो जिन्हें मुसलमानों ने तोड़ डाला।

जौनपुर में पठानों की बनवाई हुई विशाल मस्जिदों के अनेक भग्नावशेष हैं, जिन दिनों में जौनपुर किला और दूसरी आलीशान इमारतों से सुशोभित था उन दिनों में इसे हिन्दुस्तान का शीराज कहते थे। यह अधिकतर हिन्दू मन्दिरों और महलों से बने थे।

पुल के उत्तरी सिरे के पश्चिम में किला है। इसमें मिट्टी के टीलों के ऊपर पत्थर की टूटी फूटी दीवारें

हैं। गदर के बाद बची हुई दीवारें अकारण ही तोड़ डाली गईं। आरम्भ में यहां गहरवार राजाओं ने किला बनवाया था। गदर के बाद यहां का ४६ स्तम्भों वाला चिहाल सितून तिमंजिला महल भी नष्ट कर दिया गया। पत्थर की दीवारें फीरोजशाह तुगलक ने बनवाई थीं। किला बनवाने के लिये उसे जफराबाद के मन्दिरों से बहुत सा सामान मिल गया। १८५६ में जब एक बुर्ज तोड़ा तो इसमें प्रायः हर एक पत्थर ऐसा निकला जो पहले किसी हिन्दू मन्दिर को सुशोभित करता था। जो दीवारें शेष हैं उनमें भी कहीं कहीं हिन्दू मन्दिरों के पत्थर मिलते हैं। दरवाजा ४६½ फुट ऊँचा है। किले के भीतर एक बड़ी मस्जिद है।

अटाला मस्जिद जौनपुर की अत्यन्त सुन्दर इमारत है। यह किले के उत्तरी पूर्वी कोने पर स्थित है। यह नाम अटलादेवी के मन्दिर से लिया गया। यह मन्दिर कन्नौज के विजय चन्द ने बनवाया था। जफराबाद के गहरवार राजपूतों ने इसका संचालन किया। कहते हैं फीरोज ने इसे गिराने का आदेश दिया था। लेकिन हिन्दुओं की प्रार्थना को स्वीकार करके उसने मन्दिर का गिराना रोक दिया। लेकिन यह समझौता अधिक समय तक न रहा १३६४ में ख्वाजा कमाल खान जहां ने मस्जिद का बनाना आरम्भ किया। जौनपुर के इब्राहीम ने १४०८ में इसे पूरा किया। खम्भों पर सम्वत दिया है। यह मस्जिद ७५ फुट ऊँची और ४५ फुट (निचले भाग में) चौड़ी है। ऊपरी भाग में यह ४७ फुट चौड़ी है। मस्जिद का आंगन १७४ फुट वर्ग है। इसके किनारे वाले भाग हिन्दू स्तम्भों की पांच पंक्तियों से सधे हैं। यह शहर की दूसरी इमारतों की तरह सब की सब पत्थर की बनी है। इब्राहीम के ही समय में दरीबा या चार अंगुल मस्जिद बनी। यह उस स्थान पर बनाई गई जहां कन्नौज के विजय चन्द का मन्दिर था। यह १४१७ में तैयार हुई। इसका घेरा ६६ फुट है। चपटी छत हिन्दू स्तम्भों की १० पंक्तियों पर सधी हुई है। कहते हैं यहां एक ऐसा पत्थर था जिसे चाहे कोई नापे चार अंगुली होता था। इसी से मस्जिद का यह नाम पड़ा। गदर के बाद इस पत्थर में यह विशेषता न रही।

झंझरी मस्जिद शहर के दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर सिपाह और गोमती के बीच में है। यह उस जगह पर है जहां कन्नौज के राजा जयचन्द ने एक मन्दिर बनवाया था। इस स्थान को मुक्ताघाट कहते हैं। इसे इब्राहीम ने गिरवा दिया। इसमें एक झंझरी या जाली बनी है। इसी से इसका यह नाम पड़ा। शहर के धुर उत्तरी पश्चिमी सिरे पर इब्राहीम के बेटे महमूद के समय की बनी हुई लाल दरवाजा मस्जिद है। इसके पास ही महमूद की बीबी ने लाल दरवाजा बनवाया था। इसके पास वाले भागों को सिकन्दर लोदी ने गिरवा दिया। यह हिन्दू ढंग से बनी है। एक जगह कन्नौज के विजय चन्द का नाम और सम्वत १२२५ खुदा है। दूसरे स्थान पर १२६७ सम्वत खुदा है। कुछ ऐसे यात्रियों के भी नाम हैं जो इस प्राचीन मन्दिर का दर्शन करने के लिये आये थे। मस्जिद की लम्बाई १६० फुट और चौड़ाई १७१ फुट है। एक लेख उस स्तम्भ पर है जो बनारस के एक मन्दिर से यहां लाया गया था। इसमें ३ विशाल दरवाजे हैं। गुम्बद का व्यास २२½ फुट है।

जामा मस्जिद जौनपुर की सब मस्जिदों से बड़ी है। इसकी नींव १४३८ में पड़ी १४७८ में यह बन कर तैयार हुई। यह पुरानी बाजार में स्थित है। एक ओर सड़क से ऊपर चढ़ने के लिये इसमें २७ पत्थर की सीढ़ियां लगी हैं। भीतर की ओर २१६ फुट लम्बी और २१७ फुट चौड़ी है। इसके कुछ भाग सिकन्दर लोदी ने गिरवा दिये। यह ३२० फुट लम्बे और ३०७ फुट चौड़े भाग को घेरे हुये है। इसका गुम्बद ७२½ फुट ऊँचा है। यह ३ इञ्च मोटे पत्थर का बना है। इसमें गढ़ाई और नक्काशी का अच्छा काम है। इसमें एक उल्टे पत्थर पर मोखरी राजा ईश्वर वर्मा के शासन से सम्बन्ध रखने वाला संस्कृत में लेख खुदा है। ईश्वर वर्मा आठवीं सदी में राज्य करता था। शेष लेख अरबी में हैं। उत्तरी दरवाजे के उत्तर में कुछ फुट की दूरी पर खानगाह या शर्की बादशाहों का कब्रिस्तान है। यहां हुसेनशाह, जलालुद्दीन, महमूद और दूसरे शाहीवंश के लोगों के मकबरे हैं।

जहां विजयचन्द का महल था वहीं पर शरकी राजाओं ने अपना महल बनवाया। यहां की कुछ

पुरानी इमारतें नष्ट हो गई कुछ इस समय भी शेष हैं।

जौनपुर में कई हाई स्कूल और जूनियर हाई स्कूल हैं। संस्कृत और अरबी पढ़ाने का भी प्रबन्ध है। अरबी प्रायः मस्जिदों में पढ़ाई जाती है।

असौंवां गांव उत्तरी सीमा के कुछ दूरी पर मंगई नदी के पास स्थित है। यहां जौनपुर से २६ मील और शाहगञ्ज से ८ मील दूर है। यहां स्कूल और डाकघर है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बदलापुर गांव जौनपुर से १६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां जौनपुर से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क बादशाहपुर से खुटहन को जाने वाली सड़क से मिलती है। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और सराय है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। इसके पास एक पुराना किला और मन्दिर है।

बादशाहपुर को पहले मुंगेरा कहते थे। यह जौनपुर से इलाहाबाद को जाने वाली से पक्की सड़क के उत्तर में स्थित है। यह जौनपुर से ३२ मील और मछली शहर तहसील) से १४ मील पश्चिम की ओर है, यहां बदलपुर और सुजानगञ्ज से आने वाली सड़कें मिलती है। रेलवे स्टेशन आध मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यहां कोई प्राचीन भग्नाशेष नहीं हैं। जब बनारस प्रान्त ईस्ट इंडिया कम्पिनी को मिला तो यहां चुङ्गी घर हुआ यह इस समय भी जिले का एक व्यापारी केन्द्र है। यहां शक्कर, कपड़ा और गल्ले का व्यापार होता है। यहां थाना, डाकखान, पड़ाव और हाई स्कूल है। यहां कुछ मस्जिदें और एक सुन्दर मन्दिर है।

बख्शा गांव जौनपुर से ६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है यहां से २ मील आगे गजाधर गञ्ज का बाजार है बरसानिआऊँ रेल और सड़क के समीप होने से व्यापार का केन्द्र बन रहा है। यहां थाना, डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। बड़ा गांव शाहगञ्ज से ४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर जौनपुर से २५ मील दूर है। यहां डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। यहां शक्कर भी बनाई जाती है।

बरसाथी एक पुराना गांव है। यहां नन्दवक राजपूतों का अधिक समय तक अधिकार रहा। यह जौनपुर से १८ मील दूर है। यहां डाकखाना और स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बशारतपुर गोमती के दाहिने किनारे से एक मील और जौनपुर से ६ मील दूर है। यहां शम्भूगञ्ज से गोमती किनारे पर छूछा घाट को जाने वाली सड़क अलीगञ्ज से मई को जाने वाली सड़क से मिलती है। यहीं पर गोरे मालिक की नील की एक कोठी थी। गदर के समय यहीं कुछ गोरे इकट्ठे हुये थे। जो बनारस को पहुँचा दिये गये थे। गांव में एक स्कूल है।

चन्दावक गांव गोमती से १ मील उत्तर की ओर बनारस से आजमगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह बनारस से १८ मील और जौनपुर से २२ मील दूर है। एक मील उत्तर की ओर पक्की सड़क के पास दोभी रेलवे स्टेशन है। जहां से छोटी लाइन औंड़िहार और गाजीपुर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना, पक्की सराय और जूनियर हाई स्कूल है। बाजार प्रतिदिन लगता है। पड़ोस में नदी के किनारे के टीले पर पुराने किले के खंडहर हैं।

गौरा बादशाहपुर, जौनपुर से आजमगढ़ को जाने वाली सड़क पर जौनपुर से ६ मील दूर है। इससे मिला हुआ बंजारपुर बाजार है। यहां पहले बंजारे जानवरों के पीठ पर लाद कर अनाज बेचने के लिये जाते हैं। पहले यह राजपूतों का गांव था। सरदार के मरने पर उसके तीन लड़कों में एक लड़के केसरसिंह को जायदाद का भाग नहीं मिला। इससे वह मुसलमान हो गया। औरङ्गजेब ने उसका एक तिहाई भाग दिलवा दिया। कृतज्ञता प्रगट करने के लिये उसने गांव का नाम बादशाह रख दिया। गौरा का बाजार अधिक बड़ा है। अनाज, कपड़ा, और गुड़ बहुत बिकता है। यहां डाकखाना, स्कूल, पड़ाव और नानकपन्थियों का मठ है।

गौसपुर का गांव जौनपुर से १७ मील दूर है। गदर में यह गांव जब्त कर लिया गया। विद्रोही जमीदार इरादत खां को फांसी हो गई। इसके पास वाले तिवरा गांव में स्कूल और बाजार है। गौसपुर में एक मुसलमान फकीर के सम्मानार्थ एक बड़ा मेला लगता है। फकीर का मकबरा बगदाद के पास है। वहां से एक ईंट यहां लाकर रक्खी गई है। यहां बैल

भैंस से लेकर मुर्गे तक कई प्रकार के पशुओं का बलिदान किया जाता है।

गोपालपुर बिसूही नदी के दायें किनारे पर जौनपुर से १६ मील दूर है। यहां होकर बनारस से जमालपुर को सड़क जाती है जो जौनपुर और मिर्जापुर को मिलाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां स्कूल डाकखाना और बाजार है। बाजार में कपड़ा, गुड़ और गल्ला बिकता है। गुलजार गञ्ज जौनपुर से इलाहाबाद को जाने वाली पक्की सड़क पर जौनपुर से १२ मील दूर है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। बाजार गुलजार सिंह नामी एक ठाकुर ने लगवाया था। इसके पास ही पक्के घाट का ताल है। यहां कुछ शक्कर भी बनाई जाती है।

जलालपुर जौनपुर से बनारस को जाने वाली सड़क पर जौनपुर से ६ मील दूर है। बाजार से दक्षिण-पूर्व की ओर जलालगंज रेलवे स्टेशन है रेलवे लाइन गर्डर के पुल के ऊपर सई नदी को पार करती है। यह १८७१ की बाढ़ में बाद बना। सप्ताह के दो बार बाजार लगता है सई ऊंचे दाहिने किनारे पर है यहां से तीन मील उत्तर-पूर्व की ओर राजपुर के पास सई नदी गोमती में गिरती है। सङ्गम के पास कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है। यहां चमड़े के मोट भी बहुत बिकते हैं। जलालपुर के चूड़ा बहुत प्रसिद्ध है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। जलालपुर नाम सिकन्दर लोदी के लड़के जलाल खां की स्मृति में रक्खा गया। कहते हैं जलाल खां ने यहीं राजधानी बनाई। लेकिन इसका यहां कोई चिन्ह शेष नहीं है। १५२७ में हुमायूं ने उसके महल और दूसरी इमारतों को गिरवा दिया। १५१० ईस्वी में सई के ऊपर बना हुआ पुल शेष है। यह २६५ फुट लम्बा और ६ महराबों के ऊपर बना है। रेल के पुल के सामने यह बहुत नीचा और छोटा दिखाई देता है। बाढ़ इसके ऊपर से निकल आती है।

जमैन गांव गोमती के दाहिने या दक्षिणी किनारे पर जौनपुर सिविललाइन से ३ मील पूर्व की ओर है। यहां से एक सड़क कुद पुर को जाती है। जो मिर्जापुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। गोमती इस गांव को पूर्व, उत्तर और दक्षिण की ओर घेरे हुये है। तीनों ओर नाव से पार करने के लिये अलग अलग घाट हैं।

इस गांव पर महाराजा बनारस का अधिकार है. यहां से कुछ लोग आसाम और बङ्गाल को मजदूरी की खोज में जाया करते हैं। गरमी की ऋतु में गोमती के मोड़ में यहां बड़े-बड़े तरबूज होते हैं। यहां एक स्कूल और अखरो देवी का मन्दिर है। सोमवार और शुक्रवार को यहां मेला लगता है। दूसरे किनारे पर पछेता में दशहरा का उत्सव होता है।

कज गांव जौनपुर शहर से ५ मील दक्षिण की ओर है। यहां से २ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर (इलाहाबाद जौनपुर लाइन का) परियाक रेलवे स्टेशन है। यहां के जुलाहे मजबूत कपड़ा बुनते हैं। यहां एक प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में तीन बार बाजार लगता है। कज गांव को टेढ़वा (टेढ़ा गांव) भी कहते हैं।

खेतासराय जौनपुर से शाह गंज को जाने वाली पक्की सड़क पश्चिम की ओर जौनपुर से १६ मील दूर है। पूर्व की ओर आध मील की दूरी पर रेलवे स्टेशन है। यहां एक प्रायमरी स्कूल और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार होता है। इसमें अनाज बहुत बिकता है। शुजाउद्दौला के समय में खेतलदास नाम के एक खत्री ने यहां एक पक्की सराय बनवाई थी। इसी से यह नाम पड़ा। बैसाख के महीने में गुरखेत या सोहबत गाजी मियां का मेला होता है। खुटहन गांव जौनपुर से १८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। एक पक्की सड़क खेतासराय रेलवे स्टेशन को (८ मील पूर्व की ओर है) जाती है। दूसरी सड़क जौनपुर को गई है। यहां डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगत है।

केराकट गोमती के ऊंचे बायें किनारे पर जौनपुर से १८ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। जौनपुर से औंड़िहार को जाने वाली छोटी लाइन का स्टेशन आध मील उत्तर-पूर्व की ओर है। जौनपुर से आने वाली सड़क पक्की है। यही गाजीपुर की ओर चली जाती है। यह नाम कारकोट (ऊंचे किनारे का दुर्ग) से बिगाड़ कर बना है। उत्तर-पश्चिम की ओर शरकी शाहजादी चमना बीबी का मकबरा है। १८४६ में

यहां तहसील बनी। गदर में राय हिंगन लाल ने यहां के कलक्टर और गोमती के मार्ग से आये हुये दूसरे गोरों को अपने घर में छिपाकर उनकी जान बचाई। यहां के घर कच्चे हैं। लोगों को अन्ध विश्वास है कि पक्का घर बनाने से स्वामी मर जाता है यहां अनाज और गन्ना पेरने के कोल्हू बिकते हैं। बाजार प्रधान सड़क के दोनों ओर बना है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। नदी के किनारे कई पुराने मन्दिर हैं।

कोइरीपुर चांदा परगने का प्रधान नगर है जो चारों ओर से सुल्तानपुर और प्रतापगढ़ जिले से घिरा है। जौनपुर से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क से एक मील पश्चिम की ओर है। गांव सिंगरा-मऊ राज्य का अंग है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और स्कूल है सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

मछली शहर इलाहाबाद से जौनपुर को जानेवाली सड़क पर जौनपुर से १८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। एक पक्की सड़क यहां से जंघई स्टेशन को जाती है। पूर्व की ओर से एक सड़क बनारस को और उत्तर की ओर प्रतापगढ़ को जाती है। इसे घीसू नाम के एक भाट सरदार ने बसाया था और किला बनवाया था। इसलिये पहले इसे घिसवा कहते थे। पड़ोस की निचली भूमि में बाढ़ के साथ मछलियों के आ जाने से शायद उसका नाम मछलीशहर पड़ा। राजपूतों ने भाटों को भगा दिया। मुसलमानों ने राजपूतों को भगाकर फीरोजशाह के समय में यहाँ अपनी बस्ती बनाई। जौनपुर के हुसेनशाह ने यहां जामा मस्जिद बनवाई। शेख मंगली ने पूर्व की ओर ईदगाह और काबुल मुहम्मद (जो पहले भूमिहार ब्राह्मण था) ने पश्चिम की ओर कर्बला बनवाया। पुराने किले में पहले तहसील थी। गदर के बाद यह गिरा दिया गया। इसी का यहां अकेला टीला है। और सब कहीं इसके पड़ोस की निचली भूमि में छोटे छोटे ताल हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में चार बार बाजार लगता है।

मल्हनी जौनपुर से खुटहन को जाने वाली सड़क पर जौनपुर से ६ मील दूर है। पूर्व की ओर ४ मील दूर मिहरावां रेलवे स्टेशन को पक्की सड़क जाती है यहां शक्कर बनती है और जुलाहे बढ़िया गजी बुनते हैं।

मरियाहू इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह जौनपुर से मिर्जापुर को जाने वाली सड़क पर जौनपुर से १२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कस्बे के दक्षिणी सिरे पर बनारस से प्रतापगढ़ को जाने वाली सड़क मिर्जापुर को जाने वाली सड़क को काटती हुई जाती है। पास ही जौनपुर इलाहाबाद लाइन का स्टेशन है। स्टेशन के पास चंडी देवी का पुराना मन्दिर है। इसके उत्तर में एक बड़ा पक्का ताल है। बाजार में डाकखाना और जूनिअर हाई स्कूल है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना और अस्पताल है। यहां अच्छी गजी और गाढ़ा बुना जाता है। कपड़े के अतिरिक्त बाजार में अनाज (मिर्जापुर और बनारस के) पीतल और तांबे के बर्तन बहुत बिकते हैं।

मुफ्तीगंज का बाजार उतियासन मौजे में जौनपुर से केराकट को जानेवाली सड़क पर जौनपुर से ११ मील और केराकट से ७ मील दूर है। जौनपुर से औडिहार को जाने वाली रेलवे लाइन सड़क की समानान्तर चलती है। स्टेशन पूर्व की ओर बाजार के पास है। बाजार प्रतिदिन लगता है और अन्न, शक्कर और दूसरी वस्तुओं का व्यापार होता है। शक्कर बनाने के यहां कई कारखाने हैं। यहाँ स्कूल और डाकखाना है। निवरिया का बड़ा बाजार रसुलहा गांव में स्थित है। यह गोपालपुर से ३ मील पूर्व की ओर है। एक मील पूर्व की ओर बनारस को सड़क जाती है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अन्न कपड़ा और पीतल के बर्तनों का व्यापार होता है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। नन्दवक राजपूत कई शताब्दियों तक इसके स्वामी रहे। गदर में यह उनसे छिन गया। उत्तर की ओर इनका बनवाया हुआ पुराना किला था। यहां कई मन्दिर हैं जहाँ दशहरा का उत्सव होता है।

पिलकिछा गांव गोमती के ऊंचे बायें किनारे पर जौनपुर से १६ मील और खुटहन से २ मील दूर है। घाट के ऊपर सवाइन नदी गोमती में मिलती है। कार्तिक पूर्णिमा को गोमती स्नान का मेला

होता है। यहां एक बड़ा प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

रामपुर धनुआ जौनपुर से मिर्जापुर को जानेवाली सड़क पर जौनपुर से २१ मील दूर है। यह मिर्जापुर जिले के भदोही कस्बे से ६ मील उत्तर की ओर है। सड़क के दोनों ओर बाजार है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अनाज, कपड़ा और पीतल के बर्तनों की बिक्री होती है। यहां के जुलाहे मिर्जापुर के बाजार के लिये कालीनें बुना करते हैं। यहां थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल, पड़ाव और दो पुराने शिवाले हैं।

रेहती गांव जलालपुर स्टेशन से २ मील और जौनपुर से १२ मील की दूरी पर जौनपुर से बनारस को जाने वाली पक्की सड़क और रेलवे के बीच में स्थित है। कहते हैं पड़ोस में रेह की अधिकता होने से इसका यह नाम पड़ा। इसे बड़ा गांव भी कहते हैं। बड़ी सड़क पर बाजार प्रतिदिन लगता है। यहां एक स्कूल है। जिले के नाथ महादेव से प्रसिद्ध मन्दिर के पास श्रावण के महीने में और शिवरात्रि का मेला लगता है।

शाहगंज खुटहन तहसील का केन्द्र स्थान है। और जौनपुर जिले का एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। शुजाउद्दौला ने यहां बाजार बारादरी (जिसमें आजकल जूनियर हाई स्कूल है) और ईदगाह शाह हजरत अली की स्मृति में बनवाई। यह जौनपुर से फैजाबाद को जाने वाली पक्की सड़क पर जौनपुर से २२ मील उत्तर की ओर है। एक पक्की सड़क उत्तर-पूर्व की ओर आजमगढ़ को जाती है। एक सड़क राय मुहीउद्दीन होती हुई सुल्तानपुर जिले में कादीपुर को जाती है। बनारस फैजाबाद को जाने वाली बड़ी रेलवे लाइन सड़क की समानान्तर चलती है। स्टेशन उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहीं आजमगढ़ से मऊ को जानेवाली छोटी लाइन मिलती है। शाहगंज निचली भूमि पर बसा है। कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। सब कहीं धान के खेत हैं। कलक्टरगंज बाजार मालगोदाम के पास है। पश्चिम की ओर ऊसर भूमि पर तहसील बनी है। कचहरी के सामने सड़क पर थाना है। जहां फैजाबाद और आजमगढ़ को जाने वाली सड़कें मिलती हैं वहीं पर डाक और तारघर है। इससे मिला हुआ अस्पताल है। उत्तर-पूर्व की ओर पुराना शाह पंजा (मकबरा) है। शाहगंज में शक्कर बनाने की कई मिलें हैं। यहां के जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। मार्गों का केन्द्र होने से यह अनाज, तिलहन, शक्कर, कपड़ा, सूत, कपास, बर्तन और नमक का बड़ा व्यापार होता है।

सिंगरामऊ पुराने बैसे ताल्लुका का केन्द्र स्थान है। इसे बैस जागीरदारों के पूर्वज सिंहराय ने बसाया था यह जौनपुर से सुल्तानपुर को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह जौनपुर से २४ मील दूर है। यहां स्कूल, डाकखाना और पड़ाव है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। पास ही सिंहावल में महाकाली का स्थान है। यहां प्रति मंगलवार को मेला लगता है। क्वार में दशहरा का बड़ा मेला होता है।

सुजानगंज यह बादशाहपुर से खुटहन को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह जौनपुर से २६ मील पश्चिम की ओर है। यहां होकर एक सड़क बनारस से प्रतापगढ़ को गई है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। साधारण वस्तुओं के अतिरिक्त यहां पशुओं की भी बिक्री होती है। सड़कों के चौराहे पर थाना है। गांव के भीतर डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। इसके पास ही बजरंगज में बाजार के अतिरिक्त शिवरात्रि का मेला होता है।

सुखलालगंज बरसाथी स्टेशन से ४ मील पूर्व की ओर है। यहां के जुलाहे अच्छा कपड़ा और कालीनें बुनते हैं। सप्ताह में तीन बार बाजार लगता है। यहां धनुपयज्ञ का मेला होता है।

सुरपुर गांव शाहगंज से कादीपुर और सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह जौनपुर से ३० मील दूर है। गांव का कुछ भाग जौनपुर जिले में और शेष भाग सुल्तानपुर जिले में स्थित है। जो भाग सुल्तानपुर जिले में स्थित है उसे भवानीपुर कहते हैं। यहाँ डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

जफराबाद का प्राचीन नगर गोमती के दहिने किनारे पर पक्की सड़क पर जौनपुर से पांच मील और बनारस से ३१ मील दूर है। नगर से आध मील उत्तर-पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन है। यह

जौनपुर की सिविल लाइन के पास है। यहीं पर इलाहाबाद से आने वाली लाइन मिलती है। यहां के जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। पहले यहां से कागज भी बहुत बनता था। फिर यह काम नष्ट हो गया। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। बाजार में अनाज, कपड़ा, जूता और चमड़े के मोट बहुत बिकते हैं।

जफराबाद का पुराना नाम मनैछ है। इस नाम का गांव अब दो मील उत्तर की ओर इस समय भी है। इसका इतिहास बुद्ध भगवान के समय से आरम्भ होता है। महमूद गजनवी ने बनारस के चन्द्रपाल से इसे छीन लिया था। इसके बाद कन्नौज के जयचन्द के लड़कों से अस्नी का दुर्ग छीन लिया गया। १३२१ में गयासुद्दीन तुगलक के तीसरे बेटे जफर ने शक्ति सकित सिंह को हराकर इसे छीन लिया और इसका नाम बदल कर जफराबाद रख दिया। इसके पड़ोस में हिन्दू मन्दिरों, किलों और महलों के भग्नाशेष हैं। यहां कई पुराने मकबरे और मस्जिदें हैं।

कारबार

नैचा—कुछ लोग हुक्का पीने का नैचा बनाते हैं। सेन्ट पीलीभीत से आता है।

रेहकई हिस्सों में हैं।

शोरा बनाने का काम कई जगह होता है।

साबुन बनाने का काम बादशाहपुर में होता है

लोहे के कोल्हू—ईख पेरने के लिये लोहे के कोल्हू शाहगंज में बनते हैं। साफ लोहा जमशेदपुर से और कोयला झरिया से आता है। लेकिन मांग न होने के कारण केवल नवम्बर दिसम्बर और जनवरी में कारखाना चलता है।

मरिआहू में चाकू छुरी और गुप्ती बनती हैं।

रामपुर में चांदी के बाजू बनते हैं।

चमड़े से जूते और तेल रखने के लिये कुप्पी बनती है। बरात के दिनों में यहां पटाखे और फुलझड़ी भी बहुत बनती है।

मूंज देहात के कुछ लोग मूंज के बाध बटते हैं मूंज प्रतापगढ़ से आती है।

मरिआहू में सन को दबाने और गट्ठे बनाने का कारखाना है।

जेल में मूंज और रामबांस से बान बटे जाते हैं और पट्टा चटाई बनती है।

तेल पेरने का काम प्रायः हर गांव में होता है।

सुगंधित तेल तैयार करने के छोटे बड़े ६० कारखाने हैं। बेला, चमेली और केवड़ा का तेल तैयार किया जाता है। प्रायः १५० एकड़ में बेला, चमेली और केउड़ा के पौधे लगे हैं। बेला गरमी में फूलता है। पर चमेली और केउड़ा के फूल वर्षा के अन्त में मिलते हैं। बेला के फूल ५०) मन और चमेली केउड़ा के २५) मन मिलते हैं। तिल चंदौसी, अमरोहा, सतना और करची से आता है। लगभग ५०० मन बेला १०००) चमेली और ५०० मन केउड़ा का तेल तयार किया जाता है।

यहां एक आदमी तेल रखने के लिये शीशे के करावा बनाता है।

दरी बनाने और गाढ़ा बुनने का काम कई जगह होता है।

गाजीपुर

गाजीपुर का जिला बनारस कमिश्नरी का अङ्ग है। यह २५·१६ और २५°·५४ अक्षांशों और ८३·४ और ८३°५८° पूर्वी देशान्तर के बीच में स्थित है। इसके उत्तर-पश्चिम में आजमगढ़, उत्तर-पूर्व में बलिया और दक्षिण-पूर्व में बिहार का शाहाबाद या आरा जिला है। शाहाबाद और गाजीपुर जिलों के बीच में कर्मनासा नदी सीमा बनाती है। जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ५६ मील और चौड़ाई ३७ मील है। इसका क्षेत्रफल १३६२ वर्गमील है।

गाजीपुर का जिला एक उपजाऊ मैदान है। गंगा की चौड़ी घाटी और दूसरी छोटी धाराओं के कारण कहीं-कहीं विविध दृश्य हैं। वैसे यहाँ बड़े भाग में धान के खेत हैं। गांवों के पड़ोस में आम और दूसरे पेड़ों के बगीचे हैं। उपजाऊ भूमि होने से गांव पास-पास हैं। और जनसंख्या सघन है। खेती के योग्य सभी खेतों में फसल उगाई जाती है। केवल रेतीले और ऊसर प्रदेश छूटे हुये हैं। यह भाग इस जिले में बहुत कम हैं। उत्तर की ओर ऊसर कुछ अधिक है। भूमि का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। पश्चिमी सिरे पर जहां गोमती नदी जिले को छूती है। भूमि समुद्र-तल से २५४ फुट ऊँची है। गाजीपुर शहर के पास भूमि केवल २२६ फुट ऊँची है। कर्मनासा के किनारे गायघाट पर भूमि २२८ फुट, दिलदार नगर में २२५ फुट और सीमा के बाहर बक्सर में २०६ फुट ऊंची है। ऊँचे भाग गंगा की बाढ़ के तल से १० फुट से लेकर २० फुट ऊंचे हैं। शुष्क ऋतु में गंगा-तल से ऊंचे भाग ५० फुट से लेकर ७० फुट ऊंचे रहते हैं।

गंगा नदी गाजीपु जिले को धुर दक्षिणी-पश्चिमी सिरे पर छूती है। कई मील तक गंगा नदी बनारस और गाजीपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। प्रथम दो मील के बाद औंडिहार में गंगा अपने प्रवाह की दिशा बदल देती है।

धहनापुर के पास तक गङ्गा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। यहां गङ्गा ५ मील तक उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। इस मोड़ में गङ्गा की धारा दाहिने किनारे के पास हो जाती है। उत्तरी किनारे के पास बालू पड़ जाती है जो प्रति वर्ष बाढ़ में डूब जाया करती है। नारी पचदेउरा के पास गङ्गा की गहरी धारा फिर उत्तरी किनारे के पास लौट आती है।

चोचकपुर और पहारपुर के पास बहती हुई गङ्गा दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है करन्दा से जमनिया तक गङ्गा फिर उत्तर की ओर मुड़ती है। प्रधान धारा बायें किनारे के पास रहती है। लेकिन किनारा मजबूत नहीं है। इसलिये धारा में परिवर्तन होता रहता है। मैनपुर से गङ्गा उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती है। धारा ऊंचे कंकरीले किनारे के पास रहती है। इसी ऊंची कंकरीले किनारे पर गाजीपुर शहर बसा है। यहां से कुछ मील आगे निचले कछारी प्रदेश में होकर गङ्गा दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है। कई वर्ष तक गङ्गा में तीन धारायें बन गई। इनके बीच में टापू निकल आये। यह धारायें बारा के पास मिल जाती थी। लेकिन फिर गङ्गा दाहिने किनारे की ओर बहने लगी। दूसरी धारायें मिट्टी से भर गई। इस प्रकार जमनिया से बारा तक गङ्गा एक विशाल चाप बनाती है। बारा के पास धारा तङ्ग हो जाती है। यहां से शाहाबाद जिले में चौसा तक गङ्गा पूर्व की ओर बहती है। यहां यह उत्तर-पूर्व की ओर मुड़कर बक्सर की ओर बहती है।

गाजीपुर जिले के मुहम्मदाबाद परगने और बिहार के शाहाबाद (आरा) जिले के बीच में सीमा बनाती हुई गङ्गा रसूलपुर के पास बलिया जिले में प्रवेश करती है। जहां गोमती-सङ्गम के पास गङ्गा गाजीपुर जिले में प्रवेश करती है। वहां से बाहर निकलने के स्थान (रसूलपुर के पास) तक गङ्गा ६४ मील लम्बी है। गंगा का किनारा ऊंचा और सपाट रहता है। दूसरा सामने का किनारा प्रायः नीचा रहता है। निचले किनारे और गहरी धारा के बीच में प्रायः बालू पड़ जाती है। गंगा का भाग यहां सीधा नहीं है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर मोड़ हैं। खुश्क ऋतु में गंगा ८०० गज चौड़ी रहती है। बाढ़ में इसकी चौड़ाई १ मील हो जाती है। गंगा में अधिक से अधिक ४५) फुट ऊंची बाढ़ आती है। बाढ़ के बाद कुछ भागों में बड़ी अच्छी मिट्टी बिछ जाती है।

इसलिये गाजीपुर जिले के किसान बाढ़ का सदा स्वागत करते हैं।

गोमती नदी इस जिले में गंगा की प्रथम सहायक नदी है। दक्षिणी सीमा के पास बहती हुई गोमती कुछ दूर तक गाजीपुर और बनारस जिलों को अलग करती है। औड़िहार से २ मील ऊपर कैथी के पास गोमती गंगा में मिल जाती है। यहां गोमती बड़ी नदी है। इसमें वर्ष भर नावें चला करती हैं। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। संगम के पास गंगा नदी गोमती की बाढ़ के पानी को कुछ रोक देती है। इसलिये संगम से ऊपर और भी अधिक बाढ़ हो जाती है। गोमती के किनारे ऊँचे हैं। गोमती के पड़ोस की भूमि उपजाऊ नहीं है। और नालों से कट गई है। एक बड़ा (सर्वा) नाला गाजीपुर और जौनपुर जिलों के बीच में सीमा बनाता है।

गंगी नदी जौनपुर जिले से निकलती है। और मैनपुर के पास गंगा के बायें किनारे पर मिल जाती है। गंगी में पछादी और दूसरे छोटे-छोटे नाले मिलते हैं।

बेसू अधिक बड़ी नदी है। यह आजमगढ़ जिले की देवगांव तहसील के दलदलों से निकलती है। ७ मील तक यह गाजीपुर और आजमगढ़ जिले के बीच में सीमा बनाती है। ऊपरी भाग में नोन, उदवन्ती और दोना के मिलने से बेसू गौसपुर के पास एक बड़ी नदी हो जाती है। डूंगरपुर के पास यह गङ्गा में मिल जाती है। बाढ़ में यह बड़ी नदी हो जाती है गरमी की ऋतु में यह प्रायः सूख जाती है। शादियाबाद और दूसरे स्थानों पर सड़कों के मार्ग में इस पर पुल बने हैं।

मंगई नदी सुल्तानपुर जिले में दोस्तपुर के पास निकलती है। जौनपुर और आज़मगढ़ जिले में होती हुई यह गाजीपुर जिले में प्रवेश करती है। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। सरजू और गंगा के संगम के पास यह सरजू में मिल जाती है। इस जिले मंगई नदी की लम्बाई ६२ मील है। सोता को छोड़कर मंगई में कोई नदी नहीं मिलती है। वर्षा ऋतु में इसकी चौड़ाई २०० फुट हो जाती है। ग्रीष्म ऋतु में केवल २० फुट रह जाती है।

मैंसाही नदी आजमगढ़ जिले की मुहम्मदबाद तहसील से निकलती है। जलालाबाद के पास यह गाजीपुर जिले को छूती है। बहादुरगंज कस्बे के नीचे यह सरजू में गिर जाती है।

सरजू को छोटी सरजू और टोंस भी कहते हैं। यह बड़ी सरजू से भिन्न है। छोटी सरजू फैजाबाद जिले में घाघरा से फूट निकलती है। इसी में फैजाबाद जिले से आने वाली टोंस नदी मिलती है। मैंसाही के अतिरिक्त गोधनी नदी झीलों से निकल कर १० मील बहने के बाद फतेह सराय के पास सरजू नदी में मिल जाती है सरजू दो मील चौड़ी घाटी में बहती है। धारा की चौड़ाई वर्षा ऋतु में ८०० फुट और गरमी में १०० फुट रहती है। इसकी गहराई ४ फुट से लेकर २५ फुट तक पाई जाती है। पहले इसमें नाव बहुत चलती थीं। रेल के निकलने से नावों का व्यापार बन्द हो गया। बाढ़ के बाद यह अपने पड़ोस में बालू छोड़ देती है। इससे किसानों को बड़ी हानि होती है। वास्तव में सरजू घाघरा की एक पुरानी धारा है। गंगा-संगम से लगातार पूर्व की ओर हटने के कारण सम्भव है भविष्य में घाघरा नदी फिर अपने पुराने मार्ग में होकर बहने लगे।

लम्बुइया और कर्मनासा नदियां गंगा के दाहिने किनारे पर मिलती हैं। लम्बुई गांव के पास लम्बुइया नदी गंगा में मिलती है। कर्मनासा या पुण्यकर्मों को नाश करने वाली नदी कैमूर की पहाड़ियों से निकलती है। मिर्जापुर और बनारस जिलों में होती हुई यह बिहार के शाहाबाद (आरा) जिले को पहले बनारस से फिर गाजीपुर से पृथक करती है। बारा के पास चौसा में यह गंगा से मिल जाती है। यहीं चौसा में शेरशाह ने हुमायूं को हराया था। कर्मनासा की तली गहरी है। दोनों ओर यह ऊंचे किनारों से घिरी है। इसमें भयानक बाढ़ आती है। कभी कभी किनारों के ऊपर उमड़ कर कर्मनासा का पानी गंगा में मिल जाता है। बारा के पास कर्मनासा के ऊपर रेल का पुल बना है। एक समय क्लाइव की उग्रनीति से चिन्तित होकर ईस्ट इन्डिया कम्पनी के डाइरेक्टरों ने कर्मनासा को अपनी पश्चिमी सीमा बना दिया था।

जिले के कुछ भाग (विशेषकर उत्तरी भाग) इतने नीचे हैं कि इनका पानी किसी नदी में नहीं पहुँचने पाता है। इस प्रकार के निचले प्रदेश दक्षिण में मंगई और उत्तर में भैंसाही और सरजू नदियों के बीच में स्थित हैं। इस प्रदेश में बहुत सी उथली झीलें और तालाब हैं। इनमें सिंघरा ताल, पचोतर, नदताल, मझन झील, परना झील प्रधान हैं। गंगा के उत्तर में गाजीपुर जिले का ऊँचा मैदानी भाग है। अधिक ऊंचे भागों में बालू है। नदी के किनारे से भीतर की ओर ढाल है। भीतर की ओर अच्छी दुमट मिट्टी है। यहां दुमट को दोरस कहते हैं। कुछ भागों में मटियार (चिकनी मिट्टी) है। कुछ भागों में ऊसर और कंकड़ है। ऊसर में कहीं कहीं रेह पाया जाता है। ऊँची भूमि को उपरवार कहते हैं।

निचले कछारी भागों को तरी कहते हैं। गङ्गा के दक्षिण में किनारे के पास बलुआ मिट्टी है अधिक आगे दुमट है। कुछ भागों में कडैल या काली मिट्टी है। गङ्गा के दक्षिण में ऊँची भूमि विषम है। जमनिया के बीच वाले और उत्तरी भाग में साधारण दुमट या मटियार मिट्टी है। रेलवे के दक्षिण में कमनाशा तक उपजाऊ कडैल मिट्टी है। यहां कर्मनाशा की बाढ़ का कोई निश्चय नहीं है। सिंचाई की सुविधा नहीं है। इसलिये उपाऊ भूमि होने पर भी फसलें सदा अधिक अच्छी नहीं होती हैं। इसका दक्षिणी और पूर्वी भाग और भी कम उपजाऊ है। यहां ढनकर भूमि में सिंचाई होने के कुछ भी पैदा नहीं होता है।

गाजीपुर जिले की लगभग ४ फीसदी भूमि उजाड़ और ऊसर है। ३ फीसदी भूमि में बस्ती सड़क और रेलवे हैं। ७ फीसदी भूमि पानी (नदी झील आदि) से घिरी है। इस जिले में वन का अभाव है। शादियाबाद, बहरियाबाद, पचोतर आदि कुछ स्थानों में ढाक और बबूल के जङ्गल हैं। जंगल में नीलगाय, जङ्गली सुअर और गीदड़ पाये जाते हैं। अलग बिखरे हुये पेड़ों में पीपल, नीम शीशम, इमली, सिरस आदि कई प्रकार के पेड़ हैं।

गाजीपुर जिले की जलवायु गङ्गाघाटी के दूसरे जिलों के समान है। यहां सरदी की ऋतु लम्बी अवश्य होती है। इस ऋतु में पश्चिमी जिलों की तरह विकराल गरमी नहीं पड़ती है। लेकिन पूर्वीय नम हवाओं के चलने से यहां की कम गरमी असह्य हो जाती है। फर्वरी से मंगई तक हवा पश्चिम से पूर्व को चलती है। वर्ष के शेष महीनों में यह पूर्व से ही चलती है। अगस्त और वर्षा के समाप्त होने पर भी कुछ दिन हवा पश्चिम की ओर से चलती है। शीतकाल में कभी कभी पाला भी पड़ जाता है। कोहरा (कोहासा) सरदी के प्रायः सभी महीनों में रहता है। फर्वरी और मार्च में किसी किसी वर्ष ओले भी गिर जाते हैं। जनवरी का तापक्रम ६१ अंश और मई-जून में १०६ अंश फारेनहाइट रहता है। वर्ष में प्रायः ४० इञ्च वर्षा होती है किसी किसी वर्ष यहां केवल १३ इञ्च वर्षा हुई है। अति वृष्टि के वर्ष में ६३ इञ्च तक पानी बरसा है।

गाजीपुर जिले में कृषि का विकास उन्नत दशा में है। कुछ भागों में वर्ष में दो फसलें काटी जाती हैं। इन भागों को दो फसली कहते हैं। खेती के क्षेत्र-फल बढ़ने के लिये इस जिले में स्थान नहीं है। जहां कहीं खेती के योग्य जमीन बिना जोती पड़ी रहती है उसको जोतने बोने से इस्तमारी बन्दोबस्त के जिले में जमीदार को पूरा लाभ था। जिले की प्रधान फसल धान है। प्रायः ४० फीसदी भूमि में धान उगाया जाता है। कुछ परगनों (जमनिया, जहूराबाद, सादियाबाद आदि) में दो तिहाई भूमि धान उगाने के काम आती है। धान कई प्रकार का होता है। जिले की दूसरी मूल्यवान फसल ईख है। लगभग ७ फीसदी भूमि में ईख होती है। ज्वार, बाजरा के साथ अरहर मिला कर बोई जाती है। खरीफ की फसल में सावां महुआ, मूँग और मोठ भी होती है। पहले यहां नील भी बहुत होता था। रबी की फसल में ऊँचे भाग में जौ बहुत होता है। ३२ फीसदी भूमि में केवल जौ होता है। १० फी सदी गुजई (गेहूँ और जौ का मिलाकर) बोई जाती है। कुछ भाग में गेहूँ अथवा गेहूँ और चना को मिलाकर बोते हैं। अकेला चना १० फीसदी भूमि में बोते हैं। दो फसली भागों में प्रायः मटर बोई जाती है। रबी की फसल के साथ साथ लगभग ४ फी सदी भूमि में पोस्त (अफीम) बोया जाता है।

कहीं कहीं किसान अपने खर्च के लिये तम्बाकू, सनई और दूसरी फसलें भी बो लेता है। जिले के अधिकतर भाग में सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सिंचाई कुओं, झीलों और तालाबों से होती है।

जिले के प्रधान कारबार में यहां अफीम का कारखाना है। उत्तर प्रदेश के सभी जिलों से इस कारखाने में अफीम की पत्तियां और पौधे के दूसरे अंग आते हैं। यह कारखाना गङ्गा के ऊँचे किनारे पर शहर और सिविल लाइन के बीच में स्थित है। यह ४५ एकड़ भूमि घेरे हुये है। गङ्गा के समीप यह और भी भूमि ले सकता है। पहले कारखाना एक निजी अस्पताल में रहा। कुछ समय तक यह जेल की एक इमारत में रहा। १८२० ई० में यह वर्तमान स्थान पर स्थापित हुआ। यहां कभी कभी ८५००० मन अफीम तैयार हुई है। कारखाने में छः भिन्न भिन्न घेरे हैं। सुपरिन्टेण्डेण्ट का बंगला गङ्गा के किनारे है। कारखाने के भीतर भाग में २५००० मन पत्तियां रखने का स्थान है। इसी भाग में अफीम के तैयार करने और रखने का स्थान है। यहीं दूसरे जिलों से जो अफीम आती है वह रक्खी जाती है। यहाँ १०,००० अफीम के बर्तन या बोरे रखने का स्थान है। मालखाने में पत्थर की ३० कोठरियों में ४०,००० मन अफीम रक्खी जा सकती है। आठ गोदामों में लकड़ी के इतने खांचे या खाने बने हैं कि उनमें अफीम के १३,५०,००० थक्के रक्खे जा सकते हैं। अफीम तैयार करने के दोहरे कमरों की लम्बाई ४०० फुट है। दो इमारतें आबकारी विभाग के लिये अफीम तैयार करती हैं। इनके चबूतरे पर एक समय में अफीम की ६०० तश्तरियों के रखने के लिये स्थान है। यन्त्रों से सुसज्जित एक कमरा अफीम की जांच करने और अल्केलाइड बनाने के लिये है। कुछ कमरे बर्तनों और बोरों को धोने के लिये और लेवा (गाढ़ा रस) तैयार करने के लिये हैं। एक गोदाम सामान रखने के लिये है। यदि दैव योग से कहीं आग लग जाय तो उसे बुझाने के लिये यहां दो भाप के जोर से चलने वाले और पांच हाथ से चलने वाले इंजिन हैं। पानी कई पक्के तालाबों से आता है। एक ८८ फुट ऊँची टंकी भी पानी के लिये बनी है। यह टंकी दुर्घटना का सामना करने के लिये सदा भरी रक्खी जाती है। खर्च का पानी दूसरे हौजों या तालाबों से आता है। टंकी में ६३,६३० गैलन पानी समाता है। इसको भरने के लिये ८६ फुट गहरा और २५ फुट व्यास वाला एक विशाल कुआं है। पानी प्रबल पम्पों से भरा जाता है। एक दूसरा कुआं गङ्गा के किनारे है। कारखाने के भीतर आने वालों और बाहर जाने वालों की तलाशी लेने और पहरा देने के लिये ८८ मनुष्य नियत हैं। पहले यहां बहुत सी अफीम चीन भेजने के लिये तैयार होती थी। अब अधिकतर उत्तर प्रदेश, पंजाब और बंगाल आदि राज्यों के आबकारी (इक्साइज) विभाग के लिये तैयार की जाती है। सिटी स्टेशन से कारखाने के बाहरी घेरे तक रेल की एक लाइन सामान लाने और ले जाने के लिये बनी है।

नये वर्ष की अफीम भिन्न भिन्न जिलों से अप्रैल मास में एक एक मन के मिट्टी के बर्तनों या बोरों में आती है। तोलने के बाद इस अफीम की परीक्षा की जाती है। इसके बाद यह मालखाने के पत्थर के कमरों में खाली कर ली जाती है। अफीम की शुद्धता को जांचने के लिये आयोडीन (Iodine) का प्रयोग होता है। जिस अफीम में बालू या दूसरी चीज की मिलावट होती है उसे पेस्ट (काढ़ा) बनाने के लिये अलग रख लेते हैं। स्थानीय अफसर जिन सन्देहात्मक पारों या बर्तनों को यहां परीक्षा के लिये भेजते हैं वे जब्त कर लिये जाते हैं या उनसे काढ़ा (गाढ़ा रस) बना लिया जाता है। मिलावट की मात्रा के अनुसार जुर्माना भी किया जाता है। खाने की अफीम अप्रैल मास के अन्त में बनाई जाती है। इसमें इस बात का ध्यान रक्खा जाता है कि इसमें ७१ फीसदी अफीम रहे। इसके बाद कारीगर अफीम की टिकियां बनाते हैं। पहले १० टिकिया बनाने के लिये १ आना मजदूरी मिलती थी। कारीगर दिनभर में ४५ से ७० तक टिकियां बनाते हैं। अब उनकी मजदूरी बढ़ा दी गई है। टिकियां बनाने के लिये पीतल के अर्द्ध वृत्ताकार ढांचे होते हैं। पहले टिकियों को मिट्टी के प्यालों में में उंडेल कर धूप में रख देते हैं। सूख जाने पर

उन्हें गोदाम में रक्खे हुये लकड़ी के सांचों या खानों में रख देते हैं।

अफीम की देख भाल के लिये बहुत से मनुष्य रहते हैं। वे अफीम की टिकियों को हाथ या लकड़ी से रगड़ते रहते हैं। इससे अफीम नमी या कीड़ों से खराब नहीं होने पाती है और ठीक ठीक सूख जाती है। अगस्त के आरम्भ में टिकियों पर लेवा या गाढ़ा रस लपेट कर उनके ऊपर फूलदार पत्तियां चिपका ली जाती हैं। नवम्बर में टिकियां तैयार हो जाती हैं। फिर कलक्टर छः टिकियों को परीक्षा के लिये चुनता है। परीक्षा का फल व्यापारियों की सुविधा के लिये कलकत्ते में प्रकाशित किया जाता है। फिर आम के सन्दूकों में चालीस चालीस टिकियां भर कर बन्द कर देते हैं। कोनों पर और खाली जगह पर पोस्त की पत्तियां भर देते हैं। सन्दूक की संधि को कपड़े और कोलतार से बन्द कर देते हैं। जिससे भीतर नमी न जा सके। फिर इसे बोरे में भरकर सी देते हैं। बोरे के ऊपर बनारस अफीम शब्द लिखे जाते हैं। सरकारी मुहर भी लग जाती है। प्रतिदिन ५००० टोकरियां भरकर तैयार की जाती हैं। हर चौथे दिन अफीम की टोकरियों को कलकत्ते ले जाने के लिये एक विशेष मालगाड़ी छूटती है।

जो अफीम आबकारी विभाग के लिये तैयार की जाती है वह धूप में सुखाई जाती है। उसमें ९० फीसदी शुद्ध अफीम रहती है। एक एक सेर की टिकियां तैयार कर के नैपाली कागज में लपेट ली जाती हैं। टिकियों पर पहले थोड़ा तेल चुपड़ लिया जाता है जिससे वह कागज में चिपक न जावे। इस प्रकार ६० सेर के बक्स तैयार होते हैं। प्रतिवर्ष इस काम के लिये प्रायः ६००० मन अफीम तैयार की जाती है। कुछ मार्फिया और दूसरी चीजें भी तैयार होती हैं। कुछ अफीम सिविल सर्जनों को भेज दी जाती है। इस काम के लिये सरकार प्रतिवर्ष ३०,००० बोरे अलीपुर के जेलखाने से मोल लेती है। २५ लाख प्याले कुम्हारों से मोल लिये जाते हैं। सन्दूक पटना से आते हैं। २८००० बांस की चटाइयां भी मोल ली जाती हैं। औसत से यहां ढाई तीन हजार मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं।

गाजीपुर बहुत पुराने समय से गुलाबजल और इत्र के लिये प्रसिद्ध रहा है। गुलाब के फूल उगाने वाले नियत मूल्य पर कारीगरों के हाथ फूल बेच देते हैं। गुलाब जल तांबे के बड़े बड़े बर्तनों में बनाया जाता है। इनमें १२ हजार से १६ हजार तक फूल समा सकते हैं। प्रति ८००० फूलों में दस या ग्यारह सेर पानी मिलाया जाता है इससे ८ सेर गुलाब जल तैयार होता है। सत निकलने के बाद जल को शीशे की बोतलों में भरकर कई दिन तक धूप और हवा में सूखने देते हैं। इसके बाद बोतलों के मुँह को रुई और चिकनी मिट्टी से बन्द कर देते हैं। अच्छा गुलाबजल तैयार करने के लिये दो, तीन या कभी कभी चार बार भपका देकर जल तैयार करते हैं। यदि एक बार भपके वाली ८ सेर जल की बोतल का मूल्य दस रुपया होता है तो ४ बार भपके से तैयार किये गये उतने ही जल का मूल्य ७० रुपया होता है।

इत्र गुलाबजल का सत या तेल होता है। यह जल के ऊपर से कबूतर के पैरों से बड़ी सावधानी से इकट्ठा किया जाता है। सत निकले जल में फिर से नये फूल मिलाये जाते हैं। भपका देने से गुलाब जल के ऊपर इत्र (तेल) फिर तैरने लगता है। इसे फिर कबूतर के परों से इकट्ठा करते हैं। यही क्रम कई दिन तक चलता है। इसके बाद इसे धूप में सूखने देते हैं। इससे पानी का अंश सूख जाता है। शुद्ध इत्र (तेल) शेष रह जाता है। यह बड़ा कीमती होता है शुद्ध इत्र डेढ़ या दो रुपया तोला के भाव से बिकता है। साधारण इत्र चन्दन के बुरादे को मिलाने से कहीं अधिक तैयार किया जाता है। इस इत्र का मूल्य २ रुपया तोले से लेकर १० रुपया तोला तक होता है। यहां की भूमि और जलवायु गुलाब उगाने के लिये बड़ी अनुकूल है। इसलिये गुलाब के बहुत से फूल जौनपुर को भेज दिये जाते हैं।

गाजीपुर में चीनी भी तैयार की जाती है। औसत से यहां १ लाख मन चीनी बनती है। यहां चीनी प्रायः गुड़ से बनती है। इसमें एक चौथाई शुद्ध चीनी, आधी कच्ची चीनी और एक चौथाई शीरा होता है।

ऊसर और रेह वाले प्रदेश में विशेषकर सैदपुर में शोरा बनता है। जिले में १२ या १३ हजार मन शोरा बनाया जाता है। कुछ गांवों में जुलाहे गाढ़ा या गजी बुनते हैं।

संक्षिप्त इतिहास—गाजीपुर में प्राचीन भग्नावशेष बहुत हैं। लेकिन उनका ठीक ठीक अनुसंधान नहीं हुआ है। सैदपुर से औडिहार और उसके आगे जौनपुर की सड़क के पास पुराने खेरे या टीले फैले हुये हैं। सैदपुर की दो मुसलमानी इमारतें प्राचीन हिन्दू या बौद्ध इमारतों को तोड़कर बनाई गई हैं। एक टीले पर प्रस्तर काल के भग्नावशेष मिले हैं। इनके ऊपर पुराने हिन्दू मन्दिर के भग्नावशेष थे।

एक पत्थर पर कोलूलेन्द्र पुर नाम खुदा हुआ मिला। गांव वाले इस समय भी गांव को कोलूलेन्द्रपुर नाम से पुकारते हैं। यहां छिदे हुये बौद्ध कालीन कई सिक्के मिले। १८४ में मौर्य साम्राज्य के अन्त होने पर यहां पटना के शुंगवंश का राज्य हुआ। इसके बाद गुप्त राज्य हुआ। इसके भग्नावशेष भिटरी में मिले हैं। इसके बाद यहां हर्षवर्द्धन का राज्य हुआ। फिर यहां राजपूतों की कई बस्तियां बनीं। इन्हीं के यहां दिल्ली (कुछ लोगों के अनुसार) कर्नाटक से आकर भूमिहार ब्राह्मण नौकरी करने लगे। कहते हैं राजा मानधाता ने इन्हें भूमि दान की थी। वह दिल्ली के राजा पृथिवी राज का वंशज था। कहते हैं यह राजा मानधाता जगन्नाथ जी को तीर्थ करने जा रहा था। ब्राह्मणों के आदेशानसार उसने कठोर में गङ्गा स्नान किया। इससे उसका रोग अच्छा हो गया। उसने यहीं कठोर में किला बनवाया। एक बार उसके भतीजे ने एक मुसलमान लड़की पकड़ ली। उसे छुड़ाने के लिये दिल्ली सुल्तान ने ४० गाजी भेजे। इन्होंने अचानक छापा मार कर किले को छीन लिया और राजा को मार डाला। विजयस्थल पर १३३० ईस्वी में गाजीपुर शहर बसाया गया। फीरोज के समय में यह जिला जौनपुर के राज्य में शामिल कर लिया गया। फिर यहां लोदी वंश का राज्य हुआ। मुगल राज्य का यहां आरम्भ ही हो पाया था कि १५३६ में कर्मनासा और गङ्गा के संगम के पास चौसा की लड़ाई में हुमायूं की शेर खां (शाह) से मुठ भेड़ हुई। दो महीने तक सेनायें एक दूसरे को ताकती रहीं। इसके बाद हुमायूं ने गङ्गा को पार करने के लिये नावों का पुल तैयार किया। इस पर शेरखां ने आक्रमण किया। मुगल सेना हार गई। पुल तोड़ दिया गया। स्वयं हुमायूं गङ्गा में डूबते डूबते बचा

इस विजय के बाद शेरशाह का यहां अधिकार हो गया। १५६० में यहां फिर मुगल राज्य हो गया। औरङ्गजेब के भाइयों की लड़ाई का गाजीपुर पर कोई असर न पड़ा। लेकिन १७१२ में गाजीपुर जौनपुर से अलग होकर फर्रुखसियर के हाथ में आ गया। १७१६ में गाजीपुर, जौनपुर, बनारस और चुनार की सरकारें मुर्तजा खां नामी एक सरदार को जागीर में मिल गई। उससे १७२७ में ७ लाख की मालगुजारी पर अवध के प्रथम नवाब वजीर सादातखां को मिल गई। १७३८ की जांच के अनुसार गाजीपुर अलग कर लिया गया और ३ लाख वार्षिक की मालगुजारी पर शेख अब्दुल्ला को मिल गया। यह जहूराबाद परगने के एक जमींदार का लड़का था उसने दिल्ली में शिक्षा पाई थी। और शाही दरबार में नौकरी कर ली थी इसके बाद उसने अवध के नवाब सादात खां के यहां नौकरी कर ली थी। इसी से उसे गाजीपुर जिले का शासन मिल गया। उसने जलालाबाद, शादियाबाद और कासिमाबाद में किले बनवाये। मगई नदी के ऊपर उसने कासिमाबाद को जाने वाली सड़क पर पुल बनवाया। गाजीपुर शहर में उसने चिहल सितून नाम का महल, एक मस्जिद और इमामबाड़ा बनवाया। उसने यहां एक बड़ा (नवाब) बाग लगवाया और पक्का ताल बनवाया।

१७४४ में अब्दुल्ला मर गया। इसी बाग में उसकी कब्र बनी। अब्दुल्ला के चार बेटे थे। लेकिन बड़ा बेटा मृत्यु के समय गाजीपुर में न था। अतः उसका छोटा बेटा करमुल्ला गाजीपुर का सूबेदार बना। इस पर बड़े बेटे ने नवाब से प्रार्थना की और १ लाख रू० अधिक मालगुजारी देने का बचन दिया। करमुल्ला ने अपने भाई का विरोध न किया। लेकिन नवाब के सहयाक नवलराय की सहायता प्राप्त कर ली। १७४७ में फजल अली अलग कर दिया गया। करमुल्ला फिर सूबेदार बना। अहमदशाह अब्दाली

उन्हें गोदाम में रक्खे हुये लकड़ी के सांचों या खानों में रख देते हैं।

अफीम की देख भाल के लिये बहुत से मनुष्य रहते हैं। वे अफीम की टिकियों को हाथ या लकड़ी से रगड़ते रहते हैं। इससे अफीम नमी या कीड़ों से खराब नहीं होने पाती है और ठीक ठीक सूख जाती है। अगस्त के आरम्भ में टिकियों पर लेवा या गाढ़ा रस लपेट कर उनके ऊपर फूलदार पत्तियां चिपका ली जाती हैं। नवम्बर में टिकियां तैयार हो जाती हैं। फिर कलक्टर छः टिकियों को परीक्षा के लिये चुनता है। परीक्षा का फल व्यापारियों की सुविधा के लिये कलकत्ते में प्रकाशित किया जाता है। फिर आम के सन्दूकों में चालीस चालीस टिकियां भर कर बन्द कर देते हैं। कोनों पर और खाली जगह पर पोस्त की पत्तियां भर देते हैं। सन्दूक की संधि को कपड़े और कोलतार से बन्द कर देते हैं। जिससे भीतर नमी न जा सके। फिर इसे बोरे में भरकर सी देते हैं। बोरे के ऊपर बनारस अफीम शब्द लिखे जाते हैं। सरकारी मुहर भी लग जाती है। प्रतिदिन ५००० टोकरियां भरकर तैयार की जाती हैं। हर चौथे दिन अफीम की टोकरियों को कलकत्ते ले जाने के लिये एक विशेष मालगाड़ी छूटती है।

जो अफीम आबकारी विभाग के लिये तैयार की जाती है वह धूप में सुखाई जाती है। उसमें ६० फीसदी शुद्ध अफीम रहती है। एक एक सेर की टिकियां तैयार कर के नैपाली कागज में लपेट ली जाती हैं। टिकियों पर पहले थोड़ा तेल चुपड़ लिया जाता है जिससे वह कागज में चिपक न जावे। इस प्रकार ६० सेर के बक्स तैयार होते हैं। प्रतिवर्ष इस काम के लिये प्रायः ६००० मन अफीम तैयार की जाती है। कुछ मार्फिया और दूसरी चीजें भी तैयार होती हैं। कुछ अफीम सिविल सर्जनों को भेज दी जाती है। इस काम के लिये सरकार प्रतिवर्ष ३०,००० बोरे अलीपुर के जेलखाने से मोल लेती है। २५ लाख प्याले कुम्हारों से मोल लिये जाते हैं। संदूक पटना से आते हैं। २५००० बांस की चटाइयां भी मोल ली जाती हैं। औसत से यहां ढाई तीन हजार मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं।

गाजीपुर बहुत पुराने समय से गुलाबजल और इत्र के लिये प्रसिद्ध रहा है। गुलाब के फूल उगाने वाले नियत मूल्य पर कारीगरों के हाथ फूल बेच देते हैं। गुलाब जल तांबे के बड़े बड़े बर्तनों में बनाया जाता है। इनमें १२ हजार से १६ हजार तक फूल समा सकते हैं। प्रति ८००० फूलों में दस या ग्यारह सेर पानी मिलाया जाता है इससे ८ सेर गुलाब जल तैयार होता है। सत निकलने के बाद जल को शीशे की बोतलों में भरकर कई दिन तक धूप और हवा में सूखने देते हैं। इसके बाद बोतलों के मुँह को रुई और चिकनी मिट्टी से बन्द कर देते हैं। अच्छा गुलाबजल तैयार करने के लिये दो, तीन या कभी कभी चार चार भपका देकर जल तैयार करते हैं। यदि एक बार भपके वाली ८ सेर जल की बोतल का मूल्य दस रुपया होता है तो ४ बार भपके से तैयार किये गये उतने ही जल का मूल्य ७० रुपया होता है।

इत्र गुलाबजल का सत या तेल होता है। यह जल के ऊपर से कबूतर के पैरों से बड़ी सावधानी से इकट्ठा किया जाता है। सत निकले जल में फिर से नये फूल मिलाये जाते हैं। भपका देने से गुलाब जल के ऊपर इत्र (तेल) फिर तैरने लगता है। इसे फिर कबूतर के परों से इकट्ठा करते हैं। यही क्रम कई दिन तक चलता है। इसके बाद इसे धूप में सूखने देते हैं। इससे पानी का अंश सूख जाता है। शुद्ध इत्र (तेल) शेष रह जाता है। यह बड़ा कीमती होता है शुद्ध इत्र डेढ़ या दो रुपया तोला के भाव से बिकता है। साधारण इत्र चन्दन के बुरादे को मिलाने से कहीं अधिक तैयार किया जाता है। इस इत्र का मूल्य २ रुपया तोले से लेकर १० रुपया तोला तक होता है। यहां की भूमि और जलवायु गुलाब उगाने के लिये बड़ी अनुकूल है। इसलिये गुलाब के बहुत से फूल जौनपुर को भेज दिये जाते हैं।

गाजीपुर में चीनी भी तैयार की जाती है। औसत से यहां १ लाख मन चीनी बनती है। यहां चीनी प्रायः गुड़ से बनती है। इसमें एक चौथाई शुद्ध चीनी, आधी कच्ची चीनी और एक चौथाई शीरा होता है।

ऊसर और रेह वाले प्रदेश में विशेषकर सैदपुर में शोरा बनता है। जिले में १२ या १३ हजार मन शोरा बनाया जाता है। कुछ गांवों में जुलाहे गाढ़ा या गजी बुनते हैं।

संक्षिप्त इतिहास—गाजीपुर में प्राचीन भग्नावशेष बहुत हैं। लेकिन उनका ठीक ठीक अनुसंधान नहीं हुआ है। सैदपुर से औड़िहार और उसके आगे जौनपुर की सड़क के पास पुराने खेरे या टीले फैले हुये हैं। सैदपुर की दो मुसलमानी इमारतें प्राचीन हिन्दू या बौद्ध इमारतों को तोड़कर बनाई गई हैं। एक टीले पर प्रस्तर काल के भग्नावशेष मिले हैं। इनके ऊपर पुराने हिन्दू मन्दिर के भग्नावशेष थे।

एक पत्थर पर कुलूलेन्द्र पुर नाम खुदा हुआ मिला। गांव वाले इस समय भी गांव को कुलूजेन्द्रपुर नाम से पुकारते हैं। यहां छिदे हुये बौद्ध कालीन कई सिक्के मिले। १८४ में मौर्य साम्राज्य के अन्त होने पर यहां पटना के शुंगवंश का राज्य हुआ। इसके बाद गुप्त राज्य हुआ। इसके भग्नावशेष भिटरी में मिले हैं। इसके बाद यहां हर्षवर्द्धन का राज्य हुआ। फिर यहां राजपूतों की कई बस्तियां बनीं। इन्हीं के यहां दिल्ली (कुछ लोगों के अनुसार) कर्नाटक से आकर भूमिहार ब्राह्मण नौकरी करने लगे। कहते हैं राजा मानधाता ने इन्हें भूमि दान की थी। वह दिल्ली के राजा पृथिवी राज का वंशज था। कहते हैं यह राजा मानधाता जगन्नाथ जी को तीर्थ करने जा रहा था। ब्राह्मणों के आदेशानसार उसने कठोर में गङ्गा स्नान किया। इससे उसका रोग अच्छा हो गया। उसने यहीं कठोर में किला बनवाया। एक बार उसके भतीजे ने एक मुसलमान लड़की पकड़ ली। उसे छुड़ाने के लिये दिल्ली सुल्तान ने ४० गाजी भेजे। इन्होंने अचानक छापा मार कर किले को छीन लिया और राजा को मार डाला। विजयस्थल पर १३३० ईस्वी में गाजीपुर शहर बसाया गया। फीरोज के समय में यह जिला जौनपुर के राज्य में शामिल कर लिया गया। फिर यहां लोदी वंश का राज्य हुआ। मुगल राज्य का यहां आरम्भ ही हो पाया था कि १५३६ में कर्मनासा और गङ्गा के संगम के पास चौसा की लड़ाई में हुमायूं की शेर खां (शाह) से मुठ भेड़ हुई। दो महीने तक सेनायें एक दूसरे को ताकती रहीं। इसके बाद हुमायूं ने गङ्गा को पार करने के लिये नावों का पुल तैयार किया। इस पर शेरखां ने आक्रमण किया। मुगल सेना हार गई। पुल तोड़ दिया गया। स्वयं हुमायूं गङ्गा में डूबते डूबते बचा

इस विजय के बाद शेरशाह का यहां अधिकार हो गया। १५६० में यहां फिर मुगल राज्य हो गया। औरङ्गजेब के भाइयों की लड़ाई का गाजीपुर पर कोई असर न पड़ा। लेकिन १७१२ में गाजीपुर जौनपुर से अलग होकर फर्रुखसियर के हाथ में आ गया। १७ ६ में गाजीपुर, जौनपुर, बनारस और चुनार की सरकारें मुर्तजा खां नामी एक सरदार को जागीर में मिल गई। उससे १७२७ में ७ लाख की मालगुजारी पर अवध के प्रथम नवाब वजीर सादातखां को मिल गई। १७३८ की जांच के अनुसार गाजीपुर अलग कर लिया गया और ३ लाख वार्षिक की मालगुजारी पर शेख अब्दुल्ला को मिल गया। यह जहूराबाद परगने के एक जमींदार का लड़का था उसने दिल्ली में शिक्षा पाई थी। और शाही दरबार में नौकरी कर ली थी इसके बाद उसने अवध के नवाब सादात खां के यहां नौकरी कर ली थी। इसी से उसे गाजीपुर जिले का शासन मिल गया। उसने जलालाबाद, शादियाबाद और कासिमाबाद में किले बनवाये। मगई नदी के ऊपर उसने कासिमाबाद को जाने वाली सड़क पर पुल बनवाया। गाजीपुर शहर में उसने चिहल सितून नाम का महल, एक मस्जिद और इमामबाड़ा बनवाया। उसने यहां एक बड़ा (नवाब) बाग लगवाया और पक्का ताल बनवाया।

१७४४ में अब्दुल्ला मर गया। इसी बाग में उसकी कब्र बनी। अब्दुल्ला के चार बेटे थे। लेकिन बड़ा बेटा मृत्यु के समय गाजीपुर में न था। अतः उसका छोटा बेटा करमुल्ला गाजीपुर का सूबेदार बना। इस पर बड़े बेटे ने नवाब से प्रार्थना की और १ लाख रु० अधिक मालगुजारी देने का वचन दिया। करमुल्ला ने अपने भाई का विरोध न किया। लेकिन नवाब के सहयाक नवलराय की सहायता प्राप्त कर ली। १७४७ में फजल अली अलग कर दिया गया। करमुल्ला फिर सूबेदार बना। अहमदशाह अब्दाली

के विरुद्ध सरहिन्द की लड़ाई में फजल अली ने अवध के नवाब को इतना प्रसन्न कर लिया कि १७४७ में वह फिर गाजीपुर का सूबेदार बना दिया गया। जब फर्रुखाबाद के बंगश नवाब का बल बढ़ा तो वह बिना लड़े ही भाग गया। इसके बाद वह फिर सूबेदार हो गया।

१७५४ में अवध के नये नवाब शुजाउद्दौला ने असन्तुष्ट होकर फजल अली को अलग कर दिया। लेकिन एक बार वह फिर सूबेदार बना दिया गया। इस बार उसने ऐसा अत्याचार किया कि नवाब के सहायक बेनीबहादुर और राजा बलवन्तसिंह यहां भेजे गये। फजलअली ने उनका सशस्त्र विरोध किया। लेकिन वह हार गया और पटना को भाग गया। इस पर ८ लाख रू० वार्षिक मालगुजारी पर गाजीपुर का जिला राजा बलवन्तसिंह को दे दिया गया। फजल अली इतना मोटा था कि वह घोड़े पर सवार नहीं हो सकता था। कई वर्षों तक वह अपने पैर नहीं देख सका था। एक बार उसने कहा कि मैंने मनुष्यों को और कई प्रकार से मरते देखा है लेकिन डूबते हुये कभी नहीं देखा। अतः एक नाव पर मनुष्य भरे गये और उसके सामने गङ्गा में डुबा दिये गये।

राजा बलवन्तसिंह ने गाजीपुर जिले का बड़ा अच्छा शासन किया। इतना उत्तम शासक पहले गाजीपुर जिले को नहीं मिला था। उसने बड़े बड़े जमींदारों को दबा दिया। १७६४ में बक्सर की लड़ाई में जब अवध का नवाब शुजाउद्दौला हारा, तब ईस्टइण्डिया कम्पनी की अनुमति से गाजीपुर और पड़ोस के प्रदेश पर बलवन्तसिंह का अधिकार बना रहा। १७७० में बलवन्तसिंह की मृत्यु के बाद उसका बेटा चेतसिंह राजा हुआ। चेतसिंह की वारेनहेस्टिंग्स से न बनी। उसे भागना पड़ा। उसका बेटा महीपनरायन नाम मात्र का राजा हुआ। पूर्ण अधिकार कम्पिनी के हाथ में था। १७८७ में गाजीपुर में पुलिस की एक सेना नियुक्त की गई। कुछ समय तक गाजीपुर शहर के बाहर गांवों में अराजकता फैली रही धीरे धीरे शान्ति स्थापित हो गई।

गदर के समय जिन जमींदारों की जमींदारी नीलाम में बोली बोलने वालों के पास चली गई थी, वे कम्पिनी से असन्तुष्ट थे। यहां से सिपाही भी भरती किये जाते थे। शहर में देशी सेना थी जो अभी बरमा से लौट कर आई थी। पहले शान्ति रही। लेकिन ३ जून को जब गोरे लोग आजमगढ़ से भाग कर यहां आये तो ३ दिन में यहां भी गदर मच गया। कचहरी के समाने लूट मार होने लगी। पुलिस से कुछ भी करते न बना। गोरे लोगों ने भाग कर एक स्टीमर में शरण ली। १५ जून को कलक्टर ने खजाना बनारस भेज दिया। बिहार (दानापुर) के विद्रोह का कुछ असर यहां भी पड़ा। लेकिन थोड़े ही समय में शान्ति स्थापित हो गई। देहात में विद्रोह के अपराधियों को दण्ड दिया गया और सब कहीं जिले भर में शान्ति स्थापित हो गई।

गाजीपुर शहर गङ्गा के उत्तरी किनारे पर बनारस से ४५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह समुद्रतल से २२० फुट ऊँचा है अवध तिरहुत रेलवे की एक शाखा लाइन औंडिहार से यहां आकर बलिया को चली गई है। गाजीपुर सिटी (शहर के लिये) और गाजीपुर घाट (स्टीमर घाट के लिये दो रेलवे स्टेशनें हैं। रेलवे स्टेशन के पास तीन पक्की सड़कें मिलती हैं। पश्चिम की ओर बनारस, पूर्व की ओर बलिया और उत्तर की ओर आजमगढ़ और गोरखपुर से सड़कें आकर यहां मिलती हैं। यहीं से एक पक्की सड़क शहर होती हुई गङ्गा के घाट को चली गई है जहां से दूसरे किनारे के ताड़ी घाट स्टेशन को स्टीमर छूटा करते हैं। कहते गाजीपुर शहर १३३० में बसाया गया था। कहते हैं हैं यहां पर एक पुराना नगर बसा था जिसे गजपतिपुर, गजपुर और गढ़पुर नामों से पुकारते थे। जहां शहर का अस्पताल है वहां पहले प्राचीन किला था। इसके पड़ोस में कई पुरानी (ईंट, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े आदि) चीजें मिलती हैं। गाजीपुर शहर साढ़े तीन मील (पूर्व में खुदाईपुरा पश्चिम में पीर नगर) तक फैला हुआ है। किनारे से भीतर की ओर शहर की चौड़ाई लगभग १ मील है। छावनी पीर नगर से पुराने अस्पताल (सवा दो मील) तक फैली हुई है। छावनी १८०१ में २५ मौजों की भूमि से बनी और १८१३ से

१८४५ तक रही। फिर कुछ समय तक यहां फौजी घोड़े रक्खे गये। १८७३ में यह विभाग भी तोड़ दिया गया। छावनी में जो बारीकें बनी थीं वे भी प्रायः तोड़ दी गईं। पुराना कब्रिस्तान बनारस को जानेवाली सड़क के उत्तर में है। गिरजे के दक्षिण में लाडकार्नवालिस का स्मारक है। लार्ड कार्न वालिस की मूर्ति के एक ओर ब्राह्मण एक और दूसरी ओर एक मुसलमान दिखलाया गया है। ६७ वर्ष की उम्र में लार्ड कार्न वालिस जब दूसरी बार गवर्नर जनरल बना कर भेजा गया तो ५ अक्तूबर १८०५ में वह इसी स्थान के पास मर गया। जहां उसका स्मारक बना है।

छावनी के पूर्व में पुरानी सिविल लाइन और कचहरी है। यहीं तहसील और पटवारी स्कूल है। स्टेशन से एक सड़क अफीम के कारखाने को जाती है। गाजीपुर में दो हाई स्कूल और एक जूनियर हाई स्कूल है।

औंड़िहार गाँव बनारस से गाजीपुर को जाने वाली सड़क पर गाजीपुर से २६ मील पश्चिम की ओर है। यह एक रेलवे जंकशन है। यहां से एक लाइन बनारस से मऊ (आजमगढ़) को जाती है। इसमें गाजीपुर और जौनपुर को जाने वाली शाखा लाइनें मिलती हैं। यहाँ डाकखाना, स्कूल और बाजार है। इनके पड़ोस में प्राचीन भग्नावशेष दूर तक फैले हुये हैं।

बहादुरगंज सरजू के दक्षिणी किनारे पर गाजीपुर से २२ मील दूर है। यहां सरजू का घाट है। दूसरी ओर रसरा को मार्ग गया है। कहते हैं १७४२ में गाजीपुर के सूबेदार ने इसे बसाया था। और यहां किला बनवाया था। कुछ ही समय में पूर्व की ओर पटना और पश्चिम की ओर आजमगढ़ का व्यापार यहां केन्द्रित हो गया। यहां अनाज, शक्कर और शोरे का व्यापार होता है। हाथ का बुना हुआ कुछ गाढ़ा भी बिकता है। बाजार प्रतिदिन लगता है। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। रामनौमी के अवसर पर मेला लगता है।

बहरियाबाद सैदपुर से आजमगढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। कहते हैं इस परगने में बसने वाले प्रथम मुसलमान का नाम मलिकबहरी था इसलिये इसका नाम बहरियाबाद पड़ गया। उसका यहां मकबरा बना है। यहां डाकखाना और स्कूल है। यहां संस्कृत की पाठशाला और अरबी का मदरसा है। बाजार छोटा है।

बारा कस्बा गंगा के ऊंचे किनारे पर बनारस से बक्सर को जाने वाली सड़क पर बसा है। यह गाजीपुर से १८ मील दूर है। बारा एक प्राचीन स्थान है। यह पुराने बीरपुर गांव से सम्बन्ध रखता है। इसके पड़ोस में एक बड़ा टीला है। पश्चिम की ओर एक मील तक पुराने भग्नावशेष फैले हुए हैं। बड़ी सड़क पर स्थित होने से यहाँ का व्यापार बढ़ गया है। यहां गाढ़ा बुना जाता है और सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। रामलीला का उत्सव होता है।

भिटरी गांव सैदपुर से मिल जाने के कारण सैदपुर भिटरी कहलाता है। यह गाजीपुर से २० मील दूर है। पश्चिम की ओर गांव के पास ही गंगी नदी बहती है। इसके ऊपर ३०० वर्ष का पुराना पक्का पुल बना है। भिटरी गांव एक आयताकार ऊंचे टीले पर बसा है। पहले यहां पर किला बना था। इसके पड़ोस में कई पुराने भग्नावशेष हैं। कहते हैं यह नाम भीम उत्तरी से बिगड़ कर बना है। यहां भीमसेन का निवास था। इसके पड़ोस में पुरानी विशाल ईंटें मिली हैं। इसका कुछ सामान पुल और मस्जिद बनाने में खर्च हो गया। एक मस्जिद में तीस पुराने गढ़े हुये पत्थर के खम्भे हैं। किसी समय यहां बौद्धों का प्रभुत्व था। गुप्तकाल में यह बहुत प्रसिद्ध हो गया। उस समय का बना हुआ यहां किले में लाल पत्थर का एक स्तम्भ खड़ा है। यह १८½ फुट लम्बा है। इसका सिरा घंटे के आकार का है। इस पर स्कन्द गुप्त और समुद्र गुप्त के समय का एक लेख खुदा है। एक चांदी का पत्र और कुछ सिक्के भी मिले हैं। बीरपुर गांव गङ्गा के ऊंचे किनारे पर गाजीपुर से ३२ मील की दूरी पर बारा के ठीक सामने बसा है। गाजीपुर से बलिया को जाने वाली सड़क उत्तर की ओर है। यहां तक गांव से कच्ची सड़क जाती है। यहां डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। पास ही गङ्गा का घाट है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहते हैं यहां चेरू

राजा की राजधानी थी। भूमिहारों ने उसका राज्य नष्ट कर दिया। कोट में पुराने सिक्के और गढ़े हुये पत्थर मिलते हैं। धानापुर गाजीपुर से बनारस को जाने वाली पक्की सड़क पर गाजीपुर से १६ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। यहां के बाजार में बनारस से गल्ले के व्यापारी आते हैं। शक्कर, कपड़ा और बर्तनों की भी दुकानें हैं। यहां शक्कर के कारखाने हैं। यहां के चमार मोट और चमड़े का दूसरा सामान बनाते हैं। जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं।

गांव के दक्षिण-पश्चिम में पुराना कोट या किला है। आध मील उत्तर की ओर खंडहरों का टीला है। कहते हैं राजा धनदेव ने इसे बसाया था। कहते हैं। यह वही धनदेव राजा है जिसने धनवर बसाया था।

दिलदार नगर बनारस से बक्सर को जाने वाली सड़क पर गाजीपुर से १२ मील दक्षिण की ओर है। ईस्ट इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन का स्टेशन एक मील दूर है। यहां से एक शाखा लाइन ताड़ीघाट स्टेशन को जाती है। स्टेशन के पास ही फतेहपुर बाजार है। स्टेशन और गांव के बीच में अखढा या भग्नावशेष का पुराना टीला है। कहते हैं यहां राजा नल की राजधानी थी। पश्चिम की ओर रानी सागर (ताल) है। यह नाम रानी दमयन्ती की स्मृति में पड़ा। टीला ३०० फुट लम्बा और २५० फुट चौड़ा है। बीच में दो मन्दिरों की नींव है। उत्तरी पूर्वी कोने पर बहुत ही सुन्दर मन्दिर था। कहते हैं। औरङ्गजेब के समय में दिलदार खां ने इसे तोड़वा डाला। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। कई मार्गों के मिलने से दिलदार नगर का व्यापार बढ़ गया।

गहमर गांव गाजीपुर से १८ मील दूर है। इसके दक्षिण में ईस्ट इंडियन रेलवे की लाइन जाती है। गहमर गंगा के ऊंचे किनारे पर बसा है। यहां थाना डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। रामलीला और रामनौमी के अवसर पर यहां मेला लगता है। बाजार में अनाज बहुत बिकता है।

गौसपुर गाजीपुर से बलिया को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह गाजीपुर से ६ मील की दूरी पर गंगा के ऊंचे किनारे पर बसा है। इसके नीचे कछार में बहती हुई बेसू नदी गंगा में मिलती है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहते हैं इस गांव के भूमिहार ब्राह्मण उन ब्राह्मणों के वंशज हैं जिन्होंने राजा मानधाता का कोढ़ अच्छा किया था। कहते हैं गांव के पूर्व की ओर वही तालाब है जिसमें राजा ने स्नान किया था। इस समय भी बहुत से कोढ़ी यहां स्नान करने आते हैं। यहां हिन्दू सभ्यता के कई चिन्ह (पुरानी ईंटे और गढ़े हुये पत्थरों के टुकड़े) मिलते हैं।

हिगातर गाजीपुर से धनपुर और बनारस को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह गङ्गा के दक्षिणी किनारे से १ मील दूर है। यहां एक स्कूल और एक संस्कृत पाठशाला है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है। यहां दक्षिण की ओर एक पुराने किले का टीला है। यहां पुरानी ईंटे, गढ़े हुये पत्थर और हिन्दू सभ्यता के सूचक स्तम्भ मिलते हैं। गिरी हुई मस्जिद के भग्नावशेषों से सिद्ध होता है कि यह हिन्दू मन्दिरों को तोड़ कर बनाई गई थी। कहते हैं गयासुद्दीन तुगलक के समय में एक अन्सारी शेख ने यह मस्जिद बनवाई थी। प्राचीन समय की एक इमारत उजड़े हुये रूप में एक पत्थर के फर्श पर खड़ी है। इसके १६ विशाल वर्गाकार स्तम्भों पर बढ़िया कारीगरी है।

जलालाबाद गांव आजमगढ़ जिले की सीमा के पास आजमगढ़ को जाने वाली सड़क के उत्तर में स्थित है। यह गाजीपुर से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। एक सड़क दुलापुर रेलवे स्टेशन को जाती है। जो गांव से डेढ़ मील दक्षिण की ओर है। गांव धान के खेतों और तालाबों के बीच में बसा है। पुराने किले के खंडहर गांव और पक्की सड़क के बीच में हैं। कहते हैं यह किला सोइरियों ने बनवाया था। गाजीपुर के सूबेदार शेख अब्दुल ने इसे फिर से बनवाया था। बीच में इसके कुछ भाग शेष रह गये हैं। यहां से लोनिया कुछ शोरा बनाते हैं। जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। कुछ शक्कर भी बनाई जाती है। हर शुक्रवार को बाजार लगता

है। १८८५ तक यहां पुलिस चौकी रही। यहां डाकखाना और स्कूल है।

कमालपुर जमनिया (तहसील) से १३ मील पश्चिम की ओर है। यहां होकर एक सड़क सकलडीहा को जाती है। इस सड़क से एक शाखा ईस्ट इंडियन रेलवे की धीना स्टेशन को जाती हैं। यहां के जुलाहे कपड़ा बहुत बुनते हैं। गांव में कई छोटी मस्जिदें हैं। यहां के बाजार में कपड़ा और अनाज बहुत बिकता है। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। रामलीला का उत्सव होता है।

करन्दा गांव गाजीपुर से १० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। गाजीपुर से एक कच्ची सड़क यहां होकर चोचकपुर घाट और बनारस को गई है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। १६०७ में थाना तोड़ दिया गया। एक प्राइवेट स्कूल में फारसी और अरबी पढ़ाई जाती है। जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। सप्ताह में तीन वार बाजार लगता है।

करीमुद्दीनपुर गाजीपुर से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर सड़क और रेलवे के बीच में स्थित है। स्टेशन पास ही उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां थाना- डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। रामनौमी का मेला लगता है। यहां चीनी भी बनाई जाती है। गांव के दक्षिण-पश्चिम में एक पुराना टीला है। इस पर मन्दिर बना है।

खल्सीपुर बेसू नदी के दाहिने किनारे पर गाजीपुर से ५ मील की दूरी पर मुहम्मदाबाद को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। सड़क पुल के ऊपर से बेसर को पार करती है। रेलवे गांव में हो कर जाती है। लेकिन स्टेशन गाजीपुर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। भादों में तिर्मोहनी का मेला लगता है।

कुरेसर गाजीपुर से बलिया को जाने वाली पक्की सड़क गजीपुर से १६ मील दूर है। यह गंगा की घाटी के ऊपर ऊंचे कछार पर बसा है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कार्तिकी पूर्णिमा को गंगा स्नान का मेला होता है।

मरदह गोरखपुर को जाने वाली पक्की सड़क से पूर्व की ओर कासिमाबाद से जलालाबाद को जाने वाली सड़क के चौराहे पर गाजीपुर से १६ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दोवार बाजार लगता है। पहले यहां नील और चीनी का कारखाना था। दशहरा के अवसर पर मेला लगता है।

मुहम्मदाबाद गाजीपुर से १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर बलिया को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क सीधी बलिया को गई है। एक सड़क यूसुफपुर रेलवे स्टेशन होती हुई कासिमाबाद को जाती है। यहां दो बाजार लगते हैं। एक यूसुफपुर में और दूसरा जफरपुरा में लगता है। शिवरात्रि को मेला लगता है। गाजियुद्दीन के मकबरे पर कुछ लोग अगहन और जेठ के महीने में इकट्ठे होते हैं। यहां तहसील, थाना, मुंसफी कचहरी, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। एक स्कूल में कुरान पढ़ाया जाता है। दो हिन्दी के स्कूल हैं। यांह चीनी के ६ छोटे छोटे कारखाने हैं। पड़ोस में आम के बाग बहुत हैं। अनुमान है कि यह कस्बा लोदी व दशाहों के समय में बसा। अकबर के समय में यह एक परगने का केन्द्र स्थान था। कहते हैं यहां एक फलाहरी साधू रहता था। इसलिये इसे मुहम्दाबाद फलाहारवारी भी कहते थे। यहां के अन्सारी शेख अरब से आये हुये एक ख्वाजा हमीदुद्दीन के वंशज हैं। एक घराने में १६८३ ई० की सनद है। इसमें शाह उल्ला को क़ाजी बनाया गया था। ब्रिटिश राज्य होने पर भी इस वंश का ही एक मनुष्य काजी बनाया गया था। डाक्टर (मुख्तार अहमद) अन्सारी (कांग्रेस के राष्ट्रपति) का जन्म यहीं हुआ था।

नागसर ताड़ीघाट को जानेवाली ईस्ट इंडियन रेलवे की शाखा लाइन पर एक स्टेशन है। यह गाजीपुर से ७ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। भूमिहार ब्राह्मणों ने इस गांव को बसाया था। उत्तर-पूर्व की एक लम्बी और तंग झील के किनारे उधरनपुर गांव है। जहां इस समय झील है। वहां पहले गंगा की पुरानी धारा रही होगी। इसके पड़ोस में कई पुराने खेरों (टीलों) से सिद्ध होता है कि यह

प्राचीन स्थान है। भग्नावशेषों का अभी ठीक ठीक पता नहीं लगाया गया है।

नन्दगंज बनारस को जानेवाली सड़क पर गाजीपुर से १२ मील पश्चिम की ओर है। रेलवे सड़क की समानान्तर चलती है। स्टेशन बाजार के उत्तर में है। बाजार पक्की सड़क पर है। यहां चीनी का एक कारखाना है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

नौली या नवलगांव गाजीपुर से ६ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यहां एक मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

नोनहारा सड़क से अलग गाजीपुर से ८ मील दूर है। यहां चीनी बनाने के ५ कारखाने हैं। जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और हिन्दी स्कूल है।

कासिमाबाद या सोन बरसा गांव में मऊ, बहादुरगंज, रसरा, मरदह और मुहम्मदाबाद से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यह गाजीपुर से १५ मील दूर है। गांव का नाम शेख मुहम्मद कासिम नाम के एक जमींदार की स्मृति में पड़ गया। इस जमींदार का लड़का शेख अब्दुल्ला गाजीपुर का सूबेदार हो गया था। उसने यहां किला बनवाया और अपने पिता की स्मृति में गांव का नाम कासिमाबाद रक्खा। टूटा फूटा किला पश्चिम की ओर एक ऊंचे टीले पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल, बाजार और चीनी का कारखाना है।

रेवतीपुर गाजीपुर से गहमार और बक्सर को जाने वाली सड़क पर गाजीपुर से ८ मील पूर्व-दक्षिण की ओर है। यह गंगा के ऊपर ऊंची भूमि पर बसा है। यहां से एक सड़क दक्षिण की ओर ईस्ट इंडियन रेलवे की भर्दस स्टेशन को जाती है। यहां के जुलाहे बहुत सा गाढ़ा बुनते हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां डाकखाना और जूनियर स्कूल है। १५०७ ई० में पूरनमल और उसके भाई आजमशाह की ओर से जाजम में लड़े थे। आजमशाह के हार जाने पर पूरनमल यहां चला आया। कुछ समय तक यहां की भूमि उसके वंशजों के हाथ में रही। १८१५ ई० में यह नीलाम हो गई।

सादात कस्बा गाजीपुर से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कस्बे के बीच में हो कर औंडिहार से मऊ को रेलवे जाती है। लेकिन स्टेशन यहां से डेढ़ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कस्बे के बीच में लाइन निकालने के लिये मार्ग के घर गिरा दिये गये। पड़ोस के धान के खेतों को भी हानि हुई और जन-संख्या कम हो गई। यहां चीनी बनाई जाती है और जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। यहां थाना, डाकखाना, एक प्राइमरी स्कूल और कुरान पढ़ाने के लिये दो मदरसे हैं।

सैदपुर गंगा के उत्तरी या बायें किनारे पर स्थित है। यह गाजीपुर से २४ मील की दूरी पर बनारस को जाने वाली पक्की सड़क से दक्षिण की ओर स्थित है। सैदपुर से एक पक्की सड़क आकर इस सड़क से मिल जाती है। एक सड़क रेलवे स्टेशन को मिलाती है। सैदपुर गंगा के कंकरीले दृढ़ किनारे पर बसा है। यह स्थान बहुत पुराना है। यह नाम नया किस पुराने नगर का है इसका ठीक ठीक पता नहीं चल पाया है। इसके पड़ोस में हिन्दू और बौद्धकालीन प्राचीन भग्नावशेष मिले हैं। सम्भवतः यह गुप्त राजाओं के शासनकाल में बसा था। बाजार के दक्षिणी सिरे से पश्चिम की ओर दो मुसलमानी दरगाहें हैं। इनमें से एक बौद्धकालीन स्तम्भों पर खड़ी है। एक दरगाह पर चैत महीने में मेला होता है। यहां नदी और रेल दोनों मार्गों से व्यापार होता है। यहां गाढ़ा बुनने और शोरा बनाने का काम होता है यहां तहसील, थाना, डाकखाना, मुन्सफी, अस्पताल, जूनियर और नार्मल स्कूल है।

शादियाबाद बेसू नदी के दाहिने किनारे पर गाजीपुर से १४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां से एक सड़क सादात को और एक सैदपुर को गई है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। बाजार में स्थानीय चीजें बिकती हैं? यहां हिन्दू ढंग के दो मकबरे हैं। ताड़ी गांव गाजीपुर शहर के ठीक सामने गङ्गा के दाहिने किनारे पर स्थित है। ईस्ट इण्डियन रेलवे की शाखा यहां तक आती है। अन्तिम स्टेशन लाइन के होने से ताड़ी घाट प्रसिद्ध हो गया। यहाँ गाजीपुर से स्टीमर

आया जाया करता है। गांव में डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

जहूराबाद गाजीपुर से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कहते हैं हुमायूं के अनुयाइयों ने १५२६ में इसे बसाया था। पर अब इसकी दशा बिगड़ गई है। कुछ शक्कर बनाने और कपड़ा बुनने का काम होता है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। शिवरात्रि (फागुन) और बैशाख में मेला लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

जमनिया—गङ्गा के ऊँचे किनारे पर गाजीपुर से १० मील दक्षिण की ओर है। कस्बे के पूर्वी भाग से एक सड़क जमनिया (ई० आई०) रेलवे स्टेशन को जाती है। स्टेशन तीन मील दक्षिण की ओर है। अकबर के समय में अलीकुली खां जमन नाम का जौनपुर का सूबेदार था। उसने गाजीपुर से अफगानों को भगा दिया और १५६० में यहां अपना अधिकार कर लिया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यहां पर पहले ही एक प्राचीन नगर विद्यमान था। कहते हैं यहां जमदग्नि ऋषि रहते थे। इसी से इसका नाम जमदग्निया पड़ा। इससे बिगड़ कर आगे चल कर इसका नाम जमनिया पड़ गया। ऋषि के पास कामधेनु थी। इसकी सहायता से ऋषि ने राजा मदन का अच्छा सत्कार किया। राजा ने ऋषि के ऐश्वर्य से जल कर गाय छीन ली। लेकिन ऋषि के पुत्र परशुराम ने कामधेनु अपने पराक्रम से छीन ली। राजा मदन ने प्रायश्चित्त के लिये यहां एक यज्ञ किया। कहते हैं इसका उल्लेख एक ताम्र पत्र पर खुदा था जो गत शताब्दी में एक मुसलमान को मिला। यह ताम्रपत्र एक पत्थर की सन्दूकची में बन्द था। तिवारी ब्राह्मणों से भूमि के सम्बन्ध में झगड़ा होने के कारण मुसलमान ने यह ताम्रपत्र गङ्गा में या मकन। ताल में फेंक दिया। इसी राजा ने दो मील की दूरी पर मदनेश्वर का मन्दिर बनवाया और एक स्तम्भ खड़ा करवाया। यह लठिया का स्तम्भ २० फुट ऊंचा है। इसका घेर २०½ इञ्च है। इसके पड़ोस में एक कोट या पुराना किला था। इसमें विशाल स्तम्भ थे। लेकिन इसकी ईंटों और पत्थरों से गांव वालों ने घर बनाये और रेल वालों ने रेल की गिट्टी तैयार कराई। इससे इतिहास की सामग्री नष्ट हो गई

१७५७ में जिले के सूबेदार फजल अली ने जमनिया को नष्ट कर दिया। कुछ वर्षों के बाद दूसरे सूबेदार ने इसे फिर से बसाया। यहां के जुलाहे कपड़ा बहुत बुनते हैं। अन्न का भी व्यापार होता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल, जूनियर हाई स्कूल, हिन्दी स्कूल और कुरान पढ़ाने के लिये ६ मदरसे हैं। रामलीला के अवसर पर यहां मेला लगता है। गङ्गीपुर से गाजीपुर गोरखपुर को जाने वाली सड़क के पश्चिम में गाजीपुर शहर से ५ मील उत्तर की ओर है। बेसू नदी के पुल से यह एक मील दूर है। शक्कर के व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। यहां प्रति वर्ष ४००० मन शक्कर तैयार की जाती है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

कारबार

नोन्हारा, पहाड़ीपुर, सुबखारपुर और सुहवल आदि गांवों में चूड़ी बनती है। पर गाजीपुर में चूड़ीहार लोग चूड़ियों को सजाने का काम करते हैं। कुछ लोग मखमली टोपियों पर जरदोजी का काम करते हैं। जेवर कई कस्बों में बनता है।

गाजीपुर में कुछ कुम्हार सुन्दर खिलौने बनाते हैं। लोनिया लोग कई गांवों में सज्जी बनाते हैं। शादियाबाद के ऊसर के रेह से उत्तम सज्जी तैयार होती है। शोरा और साबुन भी बनता है आटा पीसने की ८ मिलें हैं।

जमनिया के लुहार चाकू और सरौते बनाते हैं। गाजीपुर में कुछ लोग टिन से सन्दूक डिबिया आदि बनाते हैं। चमड़े से जूते और कुप्पी बनती हैं। आतिशबाजी का सामान भी बनता है। सात आठ दुकानों में हुक्का तैयार किया जाता है। नारियल कलकत्ते से आता है। रेह, शीरा और सूखी तम्बाकू को मिला कर पीने की तम्बाकू तैयार की जाती है। दरी, निवाड़ और चटाई भी बनती हैं।

अफीम—सारे उत्तर प्रदेश की अफीम और पोस्त की पत्तियां यहां आती हैं। अन्दर की गोदाम

में २५,००० मन अफीम की पत्तियां और २४ लाख अफीम के सकोरे आ सकते हैं। सबसे भीतर के भाग में अफीम के १० हजार घड़े रक्खे जा सकते हैं यहाँ सब अफीम जांची जाती है।

इत्र और गुलाब बनाने के यहां १० कारखाने हैं। पास के खेतों में गुलाब केवड़ा आदि के खेत हैं। तिल बेतिया से आता है। एक कारीगर तेल रखने के लिये शीशे के करावा बनाता है।

सूत कातने और कम्बल बुनने का काम कई जगह होता है।

☆ ☆ ☆

बलिया

बनारस कमिश्नरी का सब से अधिक पूर्वी जिला बलिया है। घाघरा और गङ्गा के सङ्गम से पश्चिम की ओर के एक विषम प्रदेश को यह घेरे हुये है। दक्षिण की ओर गङ्गा नदी बलिया जिले को शाहाबाद (आरा) जिले से अलग करती है। घाघरा नदी जिले की उत्तरी और पूर्वी सीमा पर बहती है और बलिया जिले से अलग करती है। पश्चिम बिहार के सारन जिले से अलग करती है। पश्चिम की ओर केवल सरजू नदी कुछ दूर तक प्राकृतिक सीमा बनाती है। शेष सीमा कृत्रिम है। बलिया के उत्तर में आजमगढ़ और दक्षिण में गाजीपुर का जिला है। बलिया जिला २५·३३ और २६·११ अक्षांशों और ८३·३८ और ८४·३६ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक ६३ मील और चौड़ाई ४२ मील है। नदियों के इधर उधर हो जाने से जिले का क्षेत्रफल कुछ घटता बढ़ता रहता है। औसत क्षेत्रफल १२४० वर्ग मील है।

बलिया का जिला एक समतल मैदान है। यहां कोई पहाड़ी नहीं है। केवल नदियों के ऊंचे किनारों और नीची तली के कारण कुछ विषमता दिखाई देती है। कहीं कहीं कुछ निचले भाग हैं जिनमें छोटी छोटी नदियों का पानी इकट्ठा होने से तालाब और झीलें बन गई हैं। जिले में पुराना मैदान कुछ अधिक ऊँचा है। नया कछार नीचा है। इसमें नदी इधर उधर अपना मार्ग बदलती रहती है। बाढ़ में निचला कछार डूब जाता है। क्षेत्रफल में ऊँचे और नीचे भाग समान हैं। ऊँचे भाग की औसत ऊँचाई समुद्र-तल से २१० फुट है। यह जिले के पश्चिमी भाग को घेरे हुये है। इसमें भदांव लखनेसर और कोधाचित परगने शामिल हैं। इसीमें अधिकतर सिकन्दर पुर, भीतरी गढ़ा और खरीद और बलिया की तङ्ग पेटियां शामिल हैं। इस ओर कुछ दूर सहतवार तक दक्षिण में रेलवे लाइन ऊँचे और नीचे भाग के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे ऊँचे कछार का सिरा समाप्त हो जाता है। यहाँ ऊंचे भाग की सीमा घाघरा के समानांतर चलकर बांसडीह के पास पीछे की ओर मुड़ जाती है। बांसडीह से पहले यह पश्चिम की ओर फिर उत्तर की ओर मनियर के पास मुड़ती है। मनियर घाघरा के कंकरीले किनारे पर स्थित है। दक्षिण-पश्चिम में ऊंचा मैदान सरजू की घाटी के पास समाप्त हो जाता है। सरजू की घाटी यहाँ सकरी और गहरी है। यहां बालू मिली हुई बलसुन्दर मिट्टी है। ऊंचे टीलों पर बालू अधिक है। निचले भागों में चिकनी कड़ी मिट्टी है जहां धान की फसल होती है। पश्चिमी भाग में ऊसर की अधिकता है यहां कहीं कहीं रेह है। इस ओर ६० सैकड़ा अच्छी दुमट मिट्टी है। शेष में बालू, मटियार (चिकनी मिट्टी) और करैल है।

निचला प्रदेश—इसमें बलिया जिले का शेष भाग सम्मिलित है। यह सब कहीं एक सा नहीं है। इसमें कुछ पुरानी कांप है और नदियों के किनारों के पास है। इसे दियरा कहते हैं। यह दूसरे भागों के समान बड़ा उपजाऊ है। धुर पूर्व में घाघरा और गङ्गा की कांप कछारी मिट्टी आपस में मिल जाती है और दोनों में कोई अन्तर नहीं मालूम होता है। नई और पुरानी कांप में भी कोई विशेष अन्तर नहीं है। जहां कहीं गङ्गा ने पुरानी मिट्टी को काट दिया है वहां ऊंचा बलुआ

टीला बन गया है। उसके ऊपर अच्छी मिट्टी है। इसकी मुटाई कहीं एक हाथ कहीं कुछ गज है। निचला भाग कुछ ऊँचा नीचा और लहरदार है। ऊँचा मैदान औसत में निचले भाग की अपेक्षा १५ फुट अधिक ऊँचा है। खादीपुर बांसडीह के पास समुद्रतल से २०५ फुट ऊँचा है। रेवती के पास नूरपुर समुद्र तल से १६० फुट ऊँचा है।

घाघरा नदी बहुत बड़ी है। गहरी होने से घाघरा में ग्रीष्मऋतु में भी इस जिले में सब कहीं बड़ी बड़ी नावें और स्टीमर चल सकते हैं। घाघरा कमायूं और नैपाल से निकलने से कई बड़ी नदियों (चौका, कौरियाली, राप्ती) और कुछ छोटी नदियों के मिलने से बनी है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। बाढ़ में इसकी धार बहुत तेज हो जाती है। ऊंचे किनारों के बीच की समस्त भूमि पानी से ढक जाती है। बाढ़ के समाप्त होने पर किनारों के पास बड़ी उपजाऊ भूमि निकल आती है। बीच बीच में कई धारायें बन जाती हैं। तुरती पुर कुतुबगञ्ज, एलसगढ़ में किनारा कंकरीला और दृढ़ होने से अटल बना रहता है और भागों में घाघरा अपना माग बदलती रहती है। मनियर के पूर्व में घाघरा में सब से अधिक परिवर्तन होता है। इस ओर घाघरा के दक्षिण में सारा प्रदेश निचला कछार है। इसलिये भारी बाढ़ में बहुत सी भूमि पानी में डूब जाती है। बांसडीह और रेवती के उत्तर की भूमि भी पानी में डूब जाती है। पड़ासे मैदान तक घाघरा का मार्ग छोटा होने और वेग अधिक होने के कारण घाघरा का मार्ग गङ्गा की अपेक्षा अधिक सीधा है। घाघरा में कभी नये द्वीप निकल आते हैं। कभी पुराने द्वीप नष्ट हो जाते हैं। बाढ़ के बाद कभी यह उपजाऊ कांप और कभी बालू छोड़ देती है। इस बालू में झाऊ और (फूस) ढोंड के अतिरिक्त और कुछ नहीं उगता है। कभी घाघरा के पास वाले उपजाऊ खेत बाढ़ के बाद दूसरे वर्ष एक दम बालू से ढक जाते हैं।

बलिया जिले में बहुत कम और छोटी नदियां घाघरा में मिलती हैं। हाहा या अहार नदी तुरतीपुर से २ मील पश्चिम की ओर घाघरा में मिलती है। यह आजमगढ़ जिले के रतोई ताल से निकलती है। बहेरा या बजरहा नाला मनियर के पास घाघरा में मिलता है। बहेरी नदी पहले मुंदियारी डाह (झील) में गिरती है। यहां से आगे बढ़कर यह मनिहार के पूर्व में घाघरा में मिलती है। तेगरहा वास्तव में घाघरा की ही धारा है। यह मनिहार से कुछ नीचे से निकलती है और चन्द-दियरा के पास फिर घाघरा में मिल जाती है।

गङ्गा नदी गढ़ा परगना के धुर दक्षिण में बलिया जिले की सीमा को छूती है। कंकड़ के एक ऊंचे किनारे पर कोल्हाडीह और दूसरे ऊँचे कंकरीली किनारे पर बक्सर है। इसके आगे गङ्गा के मार्ग में कछारी मैदान है। गङ्गा इसे सदा काटती छाटती और बदलती रहती है। दूसरा कड़ा किनारा बक्सर से ३४ मील आगे बक्सर में मिलता है। बलिया जिले में गङ्गा प्रायः अपना मार्ग बदलती रहती है। बक्सर के आगे पूर्व में गङ्गा कई मोड़ बनाती हैं। स्थायी किनारे धारा से कहीं १० मील और कहीं २० मील दूर हैं। कहीं गङ्गा किनारे के गांव को काटती और बाग को उजाड़ती है। कहीं दूसरे किनारे पर यह एक नया दियरा बनाती है। कभी यह बलिया की ओर कभी शाहाबाद (आरा) जिले की ओर होकर बहती है। द्वावा परगना बाढ़ में प्रायः समूचा डूब जाता है। इसमें बड़े बड़े परि-वर्तन होते हैं। सरदी की ऋतु में यहां सब कहीं खतहल होते हैं। किनारे पर गांवों का अभाव है। आवश्यकता पड़ने पर किसान इधर झाऊ की दीवारों और फूस के छप्पर वाले झोपड़ों में रहते हैं। बाढ़ आने पर किसान इन छप्परों को उतार ले जाते हैं। बाढ़ के बाद गङ्गा जो कांप या नई मिट्टी छोड़ देती है। वह बड़ी उपजाऊ होती है। इसमें गेहूँ, जौ, मटर और सरसों बहुत होती है। दियरा के बनने में पहले बालू की तहें इकट्ठी होती हैं। इनके ऊपर चिकनी मिट्टी की तह पड़ जाती है। कुछ समय में ऊपर मिट्टी की तह इतनी मोटी हो जाती है कि इस पर खेती होने लगती है। जैसे जैसे नदी पीछे हटती जाती है दियरा ऊंचा होता जाता है। कभी कभी खेती होने के पहले यहां एक आध वर्ष तक झाऊ उगती रहती है। इस समय गङ्गा नदी बलिया शहर तक उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। बलिया

के पूर्व में गङ्गा नदी दक्षिण की ओर एक लम्बा मोड़ बनाती है। उत्तर की ओर दियरा है।

इसके आगे गङ्गा ने बलिया की सीमा के बीस गांव काटकर बहा दिये। गङ्गा और घाघरा का संगम आजकल शाहाबाद जिले में है। १८४० में घाघरा और गङ्गा का संगम बलिया से २७ मील पूर्व और छपरा से ६ मील पश्चिम में था। संगम लगातार पूर्व की ओर बढ रहा है। इसका कारण यह है कि घाघरा अपनी बाढ़ के साथ बहुत सी मिट्टी लाती है। इसकी धारा बहुत तेज है। लेकिन संगम के पास इसकी धारा मंद हो जाती है। घाघरा की लाई हुई बहुत सी मिट्टी संगम के पास ही छोड़ जाती है।

संगम के आगे संयुक्त धारा भी कुछ धीमी हो जाती है। इसलिये बहुत सी मिट्टी पीछे छूट जाती है और संगम आगे की ओर बढ़ जाता है। १८५० में संगम १८४० के स्थान से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ गया। १८७५ में यह पांच मील और आगे पूर्व की ओर बढ़ गया और छपरा से कुछ पूर्व की ओर हो गया। १८९५ में सङ्गम छपरा से १४ मील आगे पूर्व की ओर बढ़ गया। इस प्रकार औसत से प्राय: आध मील की चाल से घाघरा और गङ्गा का संगम लगातार पूर्व की ओर बढ़ता जा रहा है। बलिया जिले में गङ्गा की प्रधान सहायक सरजू या टोंस है। कुछ लोगों का अनुमान है कि घाघरा या सरजू की एक पुरानी धारा ने इस मार्ग का अनुसरण किया है। सरजू नदी आरम्भ में कुछ मील तक बलिया और गाजीपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। प्रधानपुर के पास यह कोपाचित परगने में प्रवेश करती है और दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। बलिया शहर से ३ मील पश्चिम में बांसथाना के पास सरजू गंगा में मिल जाती है। गङ्गा के कटाव के कारण सरजू और गङ्गा के संगम का स्थान बदलता जा रहा है। कुछ वर्ष पहले सरजू बलिया के दक्षिण में बहकर यहां से २ मील दक्षिण-पूर्व की ओर गंगा में मिलती थी। पहले सरजू में व्यापार बहुत होता था। आज कल वर्षा-ऋतु में यह बहुत गहरी हो जाती है। फेफना और बड़ा गांव के बीच में सरजू के ऊपर रेल का पुल बना है। गंगा और सरजू के संगम के पूर्व गाजीपुर जिले से आकर मंगई नदी सरजू में मिलती है।

नीची भूमि होने के कारण बलिया जिले का वर्षा जल ठीक ठीक नदियों में नहीं बह पाता है। इससे यहां बहुत सी झीलें बन गई हैं। सुरहा-ताल इन सब में अधिक प्रसिद्ध है। पूरा भरने पर इसका घेरा १६ मील हो जाता है। इसके पड़ोस में धान बहुत होता है। लेकिन अचानक बाढ़ आ जाने से धान पानी में डूब जाता है। सुरहा ताल में मछलियां भी बहुत होती हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि बहुत पहले सुरहा ताल के पास ही गङ्गा और घाघरा का संगम था। मनियर और बांसडीह के बीच में मुन्दियार दाह सम्भवत: घाघरा की पुरानी धारा का बचा हुआ अंग है। यह संकुचित अर्द्ध वृत्ताकार है। इसमें मछली बहुत पाई जाती हैं। इसकी सिवार से चटाइयां बुनी जाती हैं। रेउती दाह, फवलदाह, बसनाही ताल, तलेजा ताल, गोका ताल और सखेल ताल भी प्रसिद्ध हैं।

बलिया जिले में खेती का विस्तार अपनी चरम सीमा तक पहुँच गया है। अत: इस जिले में ऊसर भूमि बहुत कम है। ऊसर भूमि छोटे छोटे टुकड़ों में मिलती है। इसके ऊपर सफेद रेह बिछा रहता है। सब प्रकार की ऊसर भूमि जो खेती के काम नहीं आती है इस जिले में १५ फीसदी से अधिक नहीं है। इस जिले में जंगल का प्राय: अभाव है। केवल नदियों के रेतीले किनारों के पास झाऊ मिलती है। रसरा तहसील में दो तीन सौ बीघा भूमि ढाक से घिरी है।

बलिया जिले की जलवायु कुछ समशीतोष्ण है। यहां पाला बहुत कम पड़ता है। जून महीने में १०० अंश फारेनहाइट तक तापक्रम पहुँच जाता है। यहां औसत से ४० इंच वर्षा होती है। आजकल के वर्ष में यहां २३ इंच और सुकाल के वर्ष में यहां ७३ इंच वर्षा हुई है।

बलिया जिले में केवल १५ फीसदी ऐसी भूमि है जहां खेती नहीं होती है। इसमें कुछ जल से ढंका है। कुछ में घर बने हैं या सड़कें और रेल हैं।

कुछ जङ्गल है। कहीं ऊसर है। शेष ८५ फीसदी भूमि बड़ी उपजाऊ है। अधिक उपजाऊ भूमि दो फसली है। इसमें वर्ष में दो फसलें काटी जाती हैं। खरीफ की प्रधान फसल धान है। इस फसल के ५५ फीसदी भाग में धान होता है। कहीं कहीं कोदो, ज्वार, बाजरा और अरहर भी होती है। इसी समय उर्द, मूंग, मोठ और सांवां भी होता है। जिले की २४ फीसदी भूमि में रबी की फसल होती है। इसमें जौ, गेहूँ, गुजई, चना, मटर और सरसों होती है। हवा में नमी रहने और प्रबल वर्षा होने के कारण बलिया जिले में सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है। सिंचाई के लिये जगह जगह झीलें और तालाब हैं। कुओं में पास ही पानी मिल जाता है।

बलिया कृषि प्रधान जिला है। कुछ स्थानों में चीनी साफ करने, शोरा बनाने और कपड़ा बुनने का काम होता है।

बैरिया बलिया से २० मील की दूरी पर सुरेमन नगर रेलवे स्टेशन से ४ मील दक्षिण की ओर है। इन दोनों स्थानों को बैरिया से सड़कें गई हैं। यहां गङ्गा के दमोदरपुर घाट, खेती और बांस डीह को भी सड़कें गई हैं। एक नई सड़क बैरिया के बीच में होकर रेलवे स्टेशन को गई है। यहां से चीनी और गाढ़ा बाहर जाता है। चमार जूते बनाते हैं। यहां थाना, डाकखाना, सराय, जूनियर हाई स्कूल और बाजार है। यहां से दो मील उत्तर की ओर रानीगंज का बाजार है जो डुमरांव राज्य के अधिकार में है।

बलिया शहर गङ्गा के किनारे पर गाजीपुर से ४२ मील दूर है। यहां से गाजीपुर को और जिले की दूसरी तहसीलों को पक्की सड़कें गई हैं। अवध तिरहुत रेलवे की लाइन यहां बनारस और गाजीपुर से आती है। इसकी एक शाखा मऊ को गई है। इस लाइन के खुलने के पहले बलिया के लिये ईस्ट इंडियन रेलवे की डुमरांव स्टेशन थी जो यहां से १३ मील दक्षिण की ओर है। गङ्गा को पार करने के लिये नाव का घाट है। लेकिन इस ओर सड़क अच्छी नहीं है। वर्षाऋतु में इधर का आना जाना बन्द हो जाता है। कहते हैं वाल्मीकि ऋषि की स्मृति में यह नाम पड़ा। उनका आश्रम पुराने समय में ही नष्ट हो गया। कहते हैं यहां एक विशाल बौद्ध मठ भी था।

सरजू और गङ्गा का सङ्गम होने से यहां ददरी का मेला लगने लगा। कहते हैं यहाँ भृगु ऋषि का भी आश्रम और मन्दिर था जो गङ्गा ने काट कर बहा दिया। कहते हैं परसृन्ध ताल के पास हजारों ऋषि योग किया करते थे। प्रथम मन्दिर सङ्गम के पास बना था। प्राचीन नगर सरजू या टोंस के उत्तरी किनारे पर बसा था। १८७२ से १८७७ तक यह कट कट कर बह गया। १८७७ में धारा तहसील और कचहरी के पास आ गई। इंगलिश स्कूल, अस्पताल और पुरानी मस्जिद नष्ट हो गई। पुराने नगर का कोई चिन्ह शेष न रहा। १८९४ में कचहरी कोरंटा-डीह चली गई जो अधिक सुरक्षित था। लेकिन अस्पताल और हाई स्कूल बलिया में ही बना रहा। १८९६ में नदी के कुछ हट जाने से कचहरी फिर बलिया चली आई। जहां गङ्गा में कटहर नाला मिलता है वहां पर किनारा कड़ा और कंकरीला है। उसके कटने का डर नहीं है। यहां से गङ्गा बलिया की ओर कटाव करने के बदले शिवपुरदियरा की ओर मुड़ जाती है। अतः १८९७ में रेल के उत्तर में सिविल लाइन बनाने के लिये २४० एकड़ भूमि ली गई। कुछ बङ्गले बने और १९०१ में बलिया फिर जिले का केन्द्र स्थान हो गया। १९०४ में गङ्गा के कटाव से फिर कुछ लोग बलिया से चले गये। रेलवे के दक्षिण में नया स्थान लिया गया। बीच में आयताकार चौक बनाया गया। उत्तर में स्टेशन के लिये और दक्षिण में राबर्टस गञ्ज के लिये एक पक्की सड़क बनी। फिर दूसरी सड़कें और नालियां बनीं। फिर भी बलिया घना बसा हुआ नगर नहीं है। यहीं कोतवाली, अस्पताल, दो हाई स्कूल, दो संस्कृत पाठशालायें और एक जूनियर हाई स्कूल है। बलिया कोई कारबारी या व्यापारी नगर नहीं है। यहां कुछ गाढ़ा, चीनी, लोहे और पीतल के बर्तन बनाने का काम होता है। कुछ घी और तिलहन भी बाहर भेजा जाता है। अधिकतर व्यापार ददरी के मेले पर होता है। इससे बलिया शहर को बड़ा लाभ होता है।

बांसडीह इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। ११ मील लम्बी एक पक्की सड़क यहां से

बलिया को जाती है। यहां से दक्षिण-पूर्व में सहतवार, रेवत, बैरिया को उत्तर-पश्चिम में सिकन्दरपुर और तुरतीपुर को और पूर्व में सुखपुरा और गरवार को सड़कें गई हैं। यह कई गढ़ी या टीलों के पड़ोस में बसा है। पड़ोस की भूमि नीची होने के कारण अधिकतर घर ऊँची भूमि पर बसे हैं इसलिये यह दूर से ही दिखाई देता है। पड़ोस में तालावों और बगीचों के कारण इसकी सुन्दरता और भी अधिक बढ़ गई है। लेकिन गांव के भीतर अच्छी सड़क नहीं है। गड्ढे और गिरे हुये कच्चे घर भी मिलते हैं। ड्यढ़ी गांव के पास पुराने चेरू राजा के पुराने किले के खंडहर हैं। चेरू लोगों को नरौलिया या नरौनी राजपूतों ने भगा दिया। इस समय इनकी दशा बिगड़ गई है। बांस डीह में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कुछ शक्कर, शोरा और गाढ़ा तैयार किया जाता है। १८८२ में यहां तहसील बनी। यहाँ थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है।

बड़ा गांव बलिया से १० मील पश्चिम की ओर है। इसे चित फीरोज भी कहते हैं। यह गाजीपुर की सड़क से दो मील दूर है। एक पक्की सड़क इस सड़क से मिलती है। और रेलवे स्टेशन तक चली जाती है। चित गांव सरजू के दाहिने किनारे के पास लाइन के उत्तर में स्टेशन से पश्चिम की ओर है। फीरोजपुर दक्षिण में सड़क के दूसरी ओर है। चित गांव अधिक घना बसा है। पुराना होने से जैसे जैसे पुराने घर गिरते गये वैसे वैसे उनके ऊपर नये घर बनते गये इस प्रकार इसकी स्थित ऊँची हो गई। यहां अधिकतर कौशिक राजपूत रहते हैं। यहां भिखाशाह के मानने वालों का मठ है। सड़क के पास दो बड़े ताल हैं। एक ताल पक्का है। इसके घाट पत्थर के बने हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। दशहरा का मेला होता है।

बिल्थरा गांव घाघरा के दाहिने किनारे पर बलिया से ३० मील और रसरा (तहसील) से १३ मील दूर है। इसके पास से सिकन्दरपुर से तुरतीपुर को सड़क जाती है। एक सड़क बिल्थरा रोड स्टेशन को जाती है। जो यहां से चार मील पश्चिम की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। गोरखपुर के वन से घाघरा के मार्ग से जो साख की लकड़ी आती है, वह यहां इकट्ठी की जाती है और गाजीपुर बलिया और आजमगढ़ को भेज दी जाती है।

चन्द्दियारा गांव घाघरा के पड़ोस में बैरिया से रेलवे गञ्ज को जाने वाली सड़क पर बसा है। यह बलिया से २७ मील और बैरिया से ६ मील दूर है। रेलवे स्टेशन २ मील उत्तर की ओर है। और घाघरा के ऊपर पुल बन गया है। यह गांव डुमराव राज्य के अधिकार में है।

छाता गंव बलिया की उत्तरी सीमा पर बलिया से ८ मील उत्तर-पूर्व की ओर सहतवार को जाने वाली सड़क पर स्थित है। सड़क के दक्षिण में रेलवे लाईन है। बांसडीह रोड या चरौली स्टेशन २ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है यहां चीनी बनाने और गाढ़ा बुनने का काम होता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

डुमरी गांव सरजू से १ मील उत्तर की ओर बलिया से १२ मील और रसरा तहसील से ७ मील दूर है। पूर्व में गरवार से ताजपुर रेलवे स्टेशन और गाजीपुर को सड़क जाती है। जहां सड़क नदी को पार करती है। वहीं पर पुराने किले के खंडहर हैं। यहां प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां चीनी बनाने और गाढ़ा बुनने का का काम करती है।

गरवार गांव बलिया से १० मील उत्तर-पश्चिम में ऐसे स्थान पर बसा है। जहां ४ सड़कें मिलती हैं यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां चीनी बनाने का काम होता है। पड़ोस में पुराने खंडहरों का टीला है।

हनूमानगञ्ज बलिया से सिकन्दरपुर को जाने वाली सड़क के पूर्व में बलिया से ३ मील उत्तर की ओर है। यहां का बाजार अब से सवा सौ वर्ष पहले एक बनिये ने बनाया था। यह चीनी के व्यापार का केन्द्र बन गया। चीनी साफ करने के लिये खुरदा-

ताल में सिवार बहुत मिल जाती है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। उसके बेटे ने यहां से बलिया तक पक्की सड़क और कटहर नाले के ऊपर पुल बनवाया। इसके पड़ोस में नई बस्ती के पास कक पुराना टीला है। कहते हैं पहले यहां एक चीरू किला है।

जौही गांव बलिया से ८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कहते हैं डेढ़ सौ वर्ष पहले जौही नदी के दक्षिण या शाहाबाद (आरा) की ओर वाले किनारे पर था। लेकिन फिर इस ओर नई भूमि निकल आई। इस समय गङ्गा नदी कुछ दक्षिण की ओर बहती है। गङ्गा पार करने के लिये नाव का घाट है।

कारो गांव—बांसडीह से सहतवार को जाने वाली सड़क पर बांसडीह से ३ मील और बलिया से १७ मील पश्चिम की ओर है। पहले यहां थाना और डाकखाना था। इस समय यहां प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। शिवरात्रि के अवसर पर महादेव के मन्दिर के पास मेला लगता है। गाजीपुर से फेफना को रेल के बन जाने से मेला में आने वाले यात्रियों की संख्या और अधिक बढ़ गई है। मन्दिर गांव के उत्तर-पूर्व में एक पुराने तालाब के किनारे स्थित है। कहते हैं इसी ताल के किनारे महादेव ने कामदेव को भस्म किया था। इसी से इस गांव का नाम कामारण्य (काम का वन) या कारो पड़ गया।

लखनसर गांव रसरा से पांच मील दक्षिण-पश्चिम की ओर सरजू के बायें किनारे पर स्थित है। कहते हैं लक्ष्मण जी ने यहां महादेव का एक मन्दिर बनवाया था इसके पड़ोस के ऊँचे किनारे पर पुराने भग्नावशेष मिलते हैं।

मनियर कस्बा घाघरा के दाहिने किनारे पर बलिया से १८ मील दूर है। नदी के मार्ग से यहां चावल और दूसरे अनाज से भरी हुई नावें गोरखपुर बस्ती और साख से आती हैं। नमक, तम्बाकू और दूसरा सामान बंगाल से आता है। अनाज और दूसरा सामान रखने के लिये यहां ६ बड़े और १० छोटे गोला बने हैं। यहां से चीनी और तिलहन पटना, मुर्शिदाबा, माल्दा और कलकत्ता को जाती है। चीनी बनाने और गाढ़ा बुनने का काम होता है। बुधवार और शनिवार को मेला लगता है। परशुराम के मन्दिर के पास है। वैशाख के महीने में एक तीजा (अक्षय तृतीया) का मेला लगता है।

नगरा-यह (तहसील) से ८ मील और बलिया से २५ मील दूर है। यहां पर कई कच्ची सड़कें मिलती हैं। १८९२ में यह आजमगढ़ जिले में शामिल था और तहसील का केन्द्र स्थान था। जब बलिया का जिला अलग हो गया। तब तहसील तोड़ दी गई। इस समय यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां गाढ़ा बुना जाता है और चीनी बनाई जाती है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

नरायनपुर उन चार बड़े गांवों में है जो १८९२ ईस्वी में गाजीपुर जिले से अलग कर के बलिया जिले में मिला दिया गये। बलिया से गाजीपुर को जाने वाली सड़क से यह कुछ उत्तर की ओर है। कोरंटाडीह से २ मील पश्चिम की ओर है। पहले यहां फौजी घोड़े रक्खे जाते थे। यह एक पुराना स्थान है। यहां प्राचीन समय के सिक्के और दूसरे भग्नावशेष मिलते हैं। यहां नारायण देव का मन्दिर था जिसे चीनी यात्रियों ने बक्सर के सामने बतलाया था।

फेफना गांव बलिया से ७ मील पश्चिम की ओर है। इसके दक्षिण में बलिया से बनारस को छोटी लाइन गई है। यहां से एक शाखा लाइन मऊ को गई है। एक पक्की सड़क प्रधान लाइन के समानान्तर चलती है। एक पक्की सड़क रसरा को गई है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

रसरा इसी नाम की पश्चिमी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बलिया से २१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां से बलिया को रेल और पक्की सड़क जाती है। स्टेशन आध मील दूर है। बाजार लाइन के दक्षिण में है। रेल के किनारे किनारे कच्ची सड़क हलधर पुर और मऊ को गई है। एक सड़क रेलवे स्टेशन के उत्तर में नगरा को गई है। एक सड़क सरजू के किनारे पर बसे हुये प्रधानपुर को गई है। पहले प्रधानपुर से व्यापार का बहुत सा माल सरजू और गङ्गा के मार्ग से रसरा को आता था। कुछ माल इस समय भी जल मार्ग से आता

है। अधिकतर माल सड़क और रेल से आने लगा है। कपड़ा, चीनी, चमड़ा, लोहा, मसाला और शोरा यहां का प्राधन व्यापारिक माल है। रसेरा की सड़कें जिले के दूसरे नगरों की अपेक्षा अधिक सुन्दर और स्वच्छ हैं। पश्चिम की ओर एक बड़ा बाग है। पहले यहां वन था। यहीं एक बड़ा ताल और नाथ बाबा का स्थान है। ताल के चारों ओर कई मन्दिर और सती टीले हैं। रसरा में तहसील, मुन्सफी, थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल हैं। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

रस्टंड गांव बलिया से १२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर गरवार से खजुरी को जानेवाली सड़क के दोनों ओर बसा है। इस गांव का इस्तमरारी (स्थायी) बन्दोबस्त कर्चौलिया राजपूतों से हुआ था यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और बाजार है। गाढ़ा बुनने और चीनी बनाने का काम होता है।

रेवती कस्बा बांसडीह (तहसील) से १० मील और बलिया से १६ मील दूर है। यह रेवतीडाह नाम के बड़े ताल के पूर्वी किनारे पर बसा है। यहां से एक कच्ची सड़क उत्तर-पूर्व में बैरिया को और दूसरी कच्ची सड़क सहतवार को गई है। एक सड़क दक्षिण में आध मील दूर रेवती स्टेशन को गई है। स्टेशन से यह सड़क मझवा को गई है। इसके पड़ोस की निचली भूमि दलदली है। वर्षा ऋतु में यह पानी में डूब जाती है।

यहां के जुलाहे गाढ़ा बहुत बुनते हैं। चमार जूता बनाते हैं। यहां अच्छी पालकी बनती है जो ददरी के मेले में बिकने के लिये भेज दी जाती है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। दशहरा का मेला होता है। यहां थाना डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

सहतवार को महतवार और महतपाल भी कहते हैं। यहां होकर बलिया से रेवती को सड़क जाती है। सड़क के दोनों ओर बाजार है। घर अधिकतर पक्के हैं। लेकिन पड़ोस की भूमि दलदली है। वर्षा ऋतु में आना जाना कठिन हो जाता है। यहां के जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। ददरी के मेले के लिये पालकी बनाई जाती हैं। यहां से शक्कर, जूता और कपड़ा बाहर जाता है। सप्ताह में दोबार बाजार लगता है। गाय बैलों की भी बिक्री होती है। दशहरा के अवसर पर मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

सिकन्दरपुर का पुराना कस्बा घाघरा के दाहिने किनारे से ३ मील दक्षिण की ओर है। यह बांसडीह से १४ मील और बलिया से २१ मील दूर है। इसके उत्तरी भाग में होकर एक सड़क बांसडीह से तुरतीपुर को जाती है। पूर्व की ओर इसमें बलिया से आनेवाली सड़क मिलती है। पश्चिम की ओर इसमें नगरा से आनेवाली सड़क मिलती है। यहां से ४ मील दूर खरिद तक प्राचीन भग्नावशेष बिखरे हुये हैं। बलिया सड़क के पूर्व में एक पुराने किले के खंडहर हैं। इसे किला कोहना कहते हैं। कस्बे का नाम सिकन्दर लोदी की स्मृति में रक्खा गया। उसने जौनपुर के राज्य को नष्ट कर यहां फिर से दिल्ली का राज्य स्थापित किया था। कहते हैं किला बनाते समय सिकन्दर के आदेश से एक ब्राह्मण कन्या और दूसरी दुसाधिया कन्या जीवित ही दीवार में चुन दी गई थीं। जिस स्थान पर ब्राह्मण कन्या की इस प्रकार हत्या हुई थी वहां एक छोटा मन्दिर है। दूसरी कन्या के बधस्थाने पर एक पत्थर खड़ा है। यहां गाढ़ा बुना जाता है। कुछ इत्र भी बनाया जाता है। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। मुहर्रम के अवसर पर मेला होता है।

तुरतीपुर घाघरा के दाहिने किनारे पर बलिया से ३६ मील और रसरा से २० मील दूर है। रेलवे लाइन यहां गर्डर के पुल के ऊपर घाघरा को पार करती है। स्टेशन दक्षिण की ओर है। पहले घाघरा के मार्ग से व्यापार बहुत होता था। यहां पीतल के बर्तन अच्छे बनते हैं। शोरा भी बनता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। चैत में भगवती का मेला ७ दिन तक लगता है। यहां एक स्कूल भी है।

प्रतापगढ़

प्रतापगढ़ का जिला अवध के दक्षिणी-पूर्वी भाग में स्थित है। यह पश्चिम से पूर्व तक ६८ मील तक (८१.१६ और ८२.२७ देशान्तरों के बीच में) फैला हुआ है। यह २४.३४ और २६.११ उत्तरी अक्षांशों के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १४४१ वर्ग-मील है। इसके उत्तर में सुल्तानपुर पश्चिम में रायबरेली है। दक्षिण की ओर गङ्गा नदी ३० मील तक प्राकृतिक सीमा बनाती है। और प्रतापगढ़ को इलाहाबाद जिले से अलग करती है। गङ्गा के किनारे अर्जुनपुर गांव से प्रतापगढ़ जिले की सीमा उत्तर-पूर्व की ओर हो जाती हैं और आगे चल कर जौनपुर जिले को छूती है। जौनपुर का जिला उत्तर में गोमती नदी तक प्रतापगढ़ की पूर्वी सीमा बनाता है। उत्तरी-पूर्वी सिरे पर गोमती नदी पांच मील तक सुल्तानपुर और प्रतापगढ़ के बीच में सीमा बनाती है। दक्षिण की ओर इस जिले के भीतर ऐसे गांव हैं जो जौनपुर जिले से सम्बन्ध रखते हैं। २ गांव इलाहाबाद जिले से सम्बन्ध रखते हैं। इलाहाबाद जिले के अन्तर्गत मिर्जापुर-चौहारी के २० गांव प्रताप-गढ़ जिले से सम्बन्ध रखते हैं।

प्रतापगढ़ दक्षिणी-पूर्वी अवध का एक घना बसा हुआ जिला है। जहां खेती उन्नत दशा में है। यह एक कृषि प्रधान जिला है। जिसमें गांवों की अधिकता है शहरों या कस्बों का प्रायः अभाव है।

प्रतापगढ़ जिला एक समतल उपजाऊ मैदान है। इसके प्रायः प्रत्येक भाग में खेती होती है। केवल नदियों और नालों के पड़ोस में भूमि कुछ विषम हो गई है। दक्षिणी भाग में गङ्गा के पड़ोस में कुछ जङ्गल है। कहीं ऊसर के छोटे-छोटे टुकड़े हैं। गांवों के पड़ोस में आम और महुआ के बगीचे हैं। अधिकतर भाग में तरह-तरह की खेती होती है।

गङ्गा नदी ३० मील तक प्रतापगढ़ जिले की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। मरसापुर के पास गङ्गा प्रथमबार प्रतापगढ़ जिले को छूती है। अपने मार्ग में यह कई मोड़ बनाती है। कालाकांकर की गढ़ी और मानिकपुर और गुतनी के पुराने कस्बों के पास बहती हुई गङ्गा आगे बढ़ती है। और जहाना-बाद के पास जिले के बाहर हो जाती है। मुरसापुर से गुतनी तक गङ्गा अपने पुराने किनारे के पास बहती है। कहीं-कहीं (जैसे मानिकपुर किले के पास) किनारे बहुत ऊँचे हो गये हैं। गुतनी में पूर्व में गङ्गा प्रायः १५ मील तक उपजाऊ खादर बनाती है। इस खादर की चौड़ाई कहीं-कहीं ४ मील तक है। इसमें कुछ भागों में झाऊ का जङ्गल है। जहां नील-गाय और जङ्गली सुअर रहते हैं। कुछ भागों में गाय-बैल चरते हैं। अधिकतर भागों में खेती होती है।

गङ्गा के किनारे भी सई नदी की तरह अधिक कटे-फटे हैं। इनमें भी खेती होती है। यहीं पर अच्छे गांव बसे हुये हैं। किनारे क्रमशः ढालू हो गये हैं। इन पर भी तम्बाकू और दूसरी फसलें उगाई जाती हैं। इस जिले में गङ्गा की एक मात्र सहायक दौर है। दौर नदी रानीमऊ के पास कड़ी चिकनी मिट्टी के उथले नालों से आरम्भ होती है। यह बहुत ही टेढ़ा मार्ग बनाती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर पहले गङ्गा की समानान्तर बहती है। जहाना-बाद के पास जिले के दक्षिणी सिरे पर नालों के बीच में यह गङ्गा में मिल जाती है। गङ्गा के बीच वाले भाग में विचित्र चेंटी झील है। यह उत्तर-पश्चिम और पूर्व की ओर (१० फुट से ३० फुट तक) ऊँचे किनारों से ढकी है। इसके दक्षिण में गङ्गा का खादर है। इस झील का क्षेत्रफल ७ वर्ग-मील है। पहले खादर की एक धारा के द्वारा गङ्गा की बाढ़ इस झील में पहुँच जाती थी। और इसे पन्द्रह बीस फुट अधिक गहरा कर देती थी। बालू के घटने पर बहुत सा पानी झील में ही रह जाता है। क्योंकि धारा की तली झील की तली से अधिक ऊँची है। आगे बांध बना लिया गया और झील की बहुत सी भूमि खेती के काम आने लगी। वास्तव में चेंटी झील गङ्गा की एक पुरानी धारा थी। दौर के आगे भूमि नीची होती गई है। यहां नैया झीलें बन गई हैं। इसके आगे सई नदी का चौड़ा जल विभाजक है। सई नदी हर-दोई जिले के उत्तर में निकलती है। यह हरदोई,

लखनऊ, उन्नाव और रायबरेली जिले में बहती हुई मुस्तफाबाद के पास प्रतापगढ़ जिले में प्रवेश करती है। इसका मार्ग बहुत टेढ़ा है। मोड़ों के बीच में उपजाऊ पठार हैं। कई मोड़ों के बाद यह प्रतापगढ़ शहर के पास पहुँचती है। इसके बाद यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़कर पट्टी परगने में पहुँचती है। इसके आगे कोट बिलखार तक यह उत्तर की ओर मुड़ती है। दनीयां गांव के पास सई प्रतापगढ़ जिले को छोड़कर जौनपुर जिले में प्रवेश करती है। और जौनपुर शहर से २० मील दक्षिण-पूर्व में गोमती में
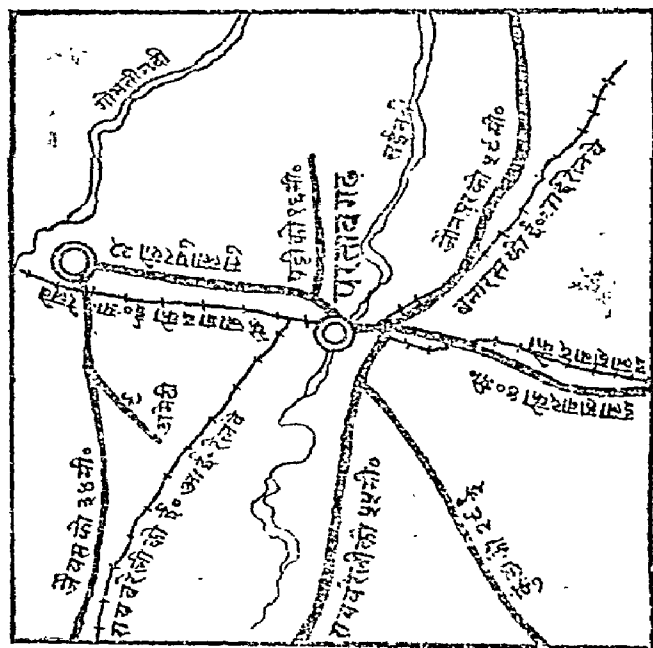
मिल जाती है। प्रतापगढ़ जिले में सई का मार्ग ४५ मील लम्बा है। ग्रीष्म ऋतु में सई तंग और उथली हो जाती है। इसके सहायक नाले प्रायः सूख जाते हैं। वर्षा ऋतु में इसमें बहुत जल हो जाता है। इसका वेग भी बढ़ जाता है। सई के किनारे ऊँचे हैं। स्थान-स्थान पर नालों ने इन्हें काट दिया है। इसके किनारों पर खेती होती है। कहीं कहीं आम और महुआ के पेड़ हैं। नैया नदी रायबरेली जिले में निकलती है और कैथौला के पास सई में बायें किनारे पर मिल जाती है। नैया से १८ मील पूर्व की ओर सई में चमरौरा नदी मिलती है। जो सुल्तानपुर जिले से निकलती है। इसकी तली चौड़ी है। कुछ खादर भी है। परया नदी पट्टी परगने के निचले भागों से निकलती है। चार पांच मील की दूरी पर चमरौरा की समानान्तर बहती है। कोट बिल्लौर के पास यह सई में मिल जाती है। बायें किनारे पर सई में मिलने वाली पीली और तम्बूरा छोटी नदियां हैं। चोइया नदी आठ नौ मील बहने के बाद दाहिने किनारे पर सई में मिल जाती है। लोनी नदी रामपुर के झीलों के प्रदेश से निकलती है। और पूर्व की ओर बह कर प्रतापगढ़ जिले के मध्य में सई में मिल जाती है। सकरनी नदी भी छोटी है। और लोनी-सई संगम से पाच छः मील पूर्व में सई में मिल जाती है। उसके किनारे ऊँचे और सपाट हैं। यह टूटे-फूटे प्रदेश में बहती है बकुलही नदी जिले के दक्षिणी भाग से निकलती है। यह उत्तर की ओर टेढ़ी चाल से बहती है। दलीपपुर के पास सई मिल जाती है।

गोमती नदी जिले के उत्तरी-पूर्वी किनारे पर ४ मील तक प्रतापगढ़ और सुल्तानपुर के बीच में सीमा बनाती है। यह बड़ी और गहरी नदी है। बिराहीमपुर के घाट में पट्टी से कादीपुर को जाने वाली सड़क के लिये गोमती में नाव रहती है।

सई के बायें किनारे पर मिलने वाली नदियां उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं। दाहिने किनारे पर मिलने वाली नदियां टेढ़ी चाल से पूर्व की ओर बहती हैं। जिले के पश्चिमी अर्द्ध भाग का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। इस ओर वर्षा-जल ठीक-ठीक नहीं बह पाता है। यहीं रामपुर परगने में झीलें बन गई हैं। पट्टी तहसील के दक्षिण में भी इसी प्रकार का निचला प्रदेश है। जहां झीलें और दलदल बन गये हैं। जिले की १३ वर्गमील भूमि उथली झीलों से ढकी है। अधिकतर झीलें शीतकाल में सूख जाती हैं कुछ पानी सिंचाई में खर्च हो जाता है। पट्टी के दक्षिण-पूर्व में नौरेहरा झील सब से बड़ी है। इसका क्षेत्रफल ४ वर्गमील है। यह कभी नहीं सूखती है। कुंडा में कई छोटी-छोटी झीलें हैं। एक बार रामपुर के राजा ने झीलों को सुखाने के लिये एक बड़ी नाली गंगा तक बनवाने का प्रयत्न किया था। लेकिन यह प्रयत्न सफल न हुआ अधिक वर्षा होने पर झीलों के निचले दलदली प्रदेश में खेती नहीं हो पाती है।

जिले में कहीं ढाक के छोटे छोटे जंगल मिलते हैं। पहले जङ्गल बहुत था। जनसंख्या और खेती के बढ़ने से बहुत से जङ्गल खेती के काम आने लगे हैं। कुछ जङ्गल पशुओं के चराने के काम आते हैं। कहीं कहीं ऊसर भी है। सई के किनारे कुछ भागों में बबूल के जङ्गल हैं। कहीं कुछ ऊसर भूमि है जहां घास वर्षा ऋतु में कुछ समय तक होती है। गङ्गा के किनारे के पास घरों को छाने के लिये सरपत और जलाने के लिये भाऊ मिलती है। जङ्गलों और सई के नालों में भेड़िया मिलते हैं। गङ्गा के भाऊ और सरपत के जङ्गलों में जङ्गली सुअर और नील गाय हैं। इनसे फसलों को हानि होती है। गीदड़ और लोमड़ी सब कहीं हैं। ऊसर भूमि में अक्सर झीलों के पड़ोस में रेह मिलता है। रेह को इकट्ठा करके लुनिया लोग शोरा बनाते हैं। सई से पड़ोस में खारी कुओं के पानी से अंग्रेजी राज्य के आने के पहले बहुत नमक बनाते थे। वे एक एक कुए के लिये जमींदार को पचास पचास रुपया देते थे। इससे किसी किसी जमींदार को (जैसे पिरथीपुर के ताल्लुकेदार को) ४०,००० रुपया वार्षिक आमदनी होती थी। पड़ोस के लोगों को सस्ता नमक मिलता था। लेकिन अंग्रेजी राज्य हो जाने से नमक का बनाना बन्द कर दिया गया। इससे लुनियों का सैकड़ों पीढ़ियों का पैत्रिक कारबार जाता रहा। जमींदारों की आमदनी बन्द हो गई और गरीबों को सस्ते नमक का सहारा न रहा। कंकड़ों से चूना तैयार किया जाता है।

प्रतापगढ़ की जलवायु दक्षिण अवध के दूसरे जिलों के समान है। गङ्गा के दक्षिण के जिलों (जैसे इलाहाबाद) की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में यहां गरमी कम पड़ती है। आधे अक्तूबर (कार्तिक) से आधे मार्च (माघ) तक शीतकाल रहता है। इस समय वर्षा प्रायः नहीं होती है। मई या जून का परम तापक्रम ९१ अंश और जनवरी का लघु तापक्रम ६० अंश रहता है। शीतकाल में कभी कभी पाला पड़ जाने से अरहर आलू आदि फसलें नष्ट हो जाती हैं। वर्षा लगभग ४० इञ्च होती है। गङ्गा के पड़ोस में कुंडा में सबसे अधिक वर्षा होती है। सई के पास प्रतापगढ़ का दूसरा स्थान है। लेकिन पट्टी में सबसे कम (३८ इञ्च) वर्षा होती है। किसी किसी वर्ष यहां केवल १७ इञ्च वर्षा हुई है। अतिवृष्टि के वर्ष में ७८ इञ्च तक वर्षा हुई है।

पड़ोस के दूसरे जिलों की तरह प्रतापगढ़ में भूमि (भूड़, मटियार और दुमट) तीन प्रकार की है। कृषि की सुविधानुसार खेत गोयड़, मंझार और पालो कहलाते हैं। गोयड़ गांव के पास वाले खेत होते हैं। इनमें अच्छी खाद पड़ती है। मंझार की स्थिति बीच में होती है। पालो बहुत दूर होने हैं उनमें शायद ही कभी खाद पहुँचती है। जिले में लगभग ३८ फीसदी भूमि गोयड़ है। ३३ फीसदी मझार और शेष पालो हैं। इस जिले में रबी की अपेक्षा खरीफ की फसल अधिक होती है। औसत से ५६ फीसदी खरीफ और ४४ फीसदी रबी होती है। जिले में लगभग एक तिहाई भूमि इतनी अच्छी है कि इसमें वर्ष में दो फसलें होती हैं। खरीफ की फसल में धान का स्थान प्रधान है। खरीफ की फसल में एक तिहाई धान रहता है। जिन भागों में निचली और चिकनी मटियार भूमि है उनमें धान बहुत होता है। कुंडा तहसील में सबसे अधिक धान होता है। ढिंगवस परगने में ६६ फीसदी भूमि में धान होता है। प्रतापगढ़ तहसील से सबसे कम (१६ फीसदी) धान होता है। धान के पश्चात् ज्वार-बाजरा का स्थान है। ज्वार को चारे के लिये भी बोते हैं। ज्वार बाजरा को प्रायः अरहर के स्थान पर बोते हैं। कहीं कहीं उर्द और मूंग भी मिला देते हैं। ज्वार को प्रायः अधिक अच्छी और बाजरा को साधारण भूमि में बोते हैं। पट्टी तहसील में ईख बहुत बोई जाती है। दूसरी तहसीलों में कम ईख होती है। पहले ३ जिले में कपास अधिक बोई जाती थी। अब कपास और नील बोने की चाल उठ गई है।

रबी की फसल में जौ अधिक क्षेत्रफल में बोया जाता है। गेहूँ अधिक मूल्यवान होता है और अधिक उपजाऊ भागों में बोया जाता है। इसे एक दो बार सींचने की भी आवश्यकता होती है। चना और मटर रबी की प्रधान फसलें हैं। प्रायः धान काटने के बाद उपजाऊ खेतों में चना या मटर बो देते हैं। जिले के कुछ भागों में पोस्ता (अफीम)

बोया जाता है। प्रतापगढ़ जिले में सिंचाई की बड़ी सुविधा है। छोटी नदियां और झीलें खेतों के सींचने के लिये अनुकूल हैं। कुओं में पास ही पानी मिल जाता है। जिन कुओं की निचली तली में बालू अधिक रहती है उन्हें पक्का बनाते हैं।

कृषि प्रधान होने से प्रतापगढ़ जिले में कारबार बहुत कम है। पहले कई स्थानों में नील तैयार किया जाता था। गुड़ और चीनी इस समय भी कई स्थानों में तैयार की जाती है। १८९६ में कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह ने रेशम का कारबार आरम्भ किया था। रेंडी या अंडी रेशम के कीड़ों को अंडी के पत्ते खिलाने से तैयार होता है। यह बड़ा मजबूत होता है। लेकिन स्थानीय जुलाहे इसका ठीक ठीक बुनना नहीं जानते हैं। इसलिये यह बहुत कम तैयार होता है। अच्छा रेशम शहतूत के पत्ते खिलाने से तैयार होता है। इसकी बनारस आदि स्थानों में बड़ी मांग है। शहतूत उगाने के लिये राजा ने कई गांवों को जमीन बिना लगान के दे दी। किसान शहतूत के पेड़ वाले खेतों में जो फसल चाहता उगा सकता था। वह जमीन का लगान अलग न देकर शहतूत के पत्तों के रूप में ही देता था। लेकिन यह प्रयोग अधिक सफल न हो सका।

संक्षिप्त इतिहास—प्रतापगढ़ जिले में अनेक प्राचीन स्थान हैं। कुछ भग्नावशेष बौद्धकालीन हैं। अनुमान किया जाता है कि कुंडा तहसील के बिहार स्थान को प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग ने देखा था। इसका प्राचीन नाम कुशभवनपुर था। कहते हैं मानिकपुर का पुराना नाम मनपुर है। इसे कन्नौज के राजा ने बसाया था। जयचन्द के भाई मानिक चन्द ने इसका नाम बदल कर मानिकपुर रख दिया। अवध के दूसरे भागों की तरह, प्रतापगढ़ में यहां के मूल निवासी भार लोग रहते थे। सई नदी के पास हिन्दौर (जो प्रतापगढ़ से १२ मील की दूरी पर रायबरेली को जाने वाली सड़क पर स्थित है।) में इनकी राजधानी थी। फिर यहां राजपूतों का आक्रमण हुआ और धीरे धीरे समस्त जिले पर राजपूतों का अधिकार हो गया। राजपूतों में सोमवंशी राजपूत सर्व प्रधान थे। यह लोग झूसी से इस जिले में आये। कहते हैं झूसी के राजा रामदेव के बेटे धरसेन ने शिकार के समय एक खरगोश को शेख नकी नाम के एक मुसलमान फकीर के झोपड़े में हांककर उसे अप्रसन्न कर दिया। कुछ समय में राजा मर गया। उसकी गर्भवती रानी ने फकीर से शरण मांगी। फकीर ने रानी को सन्तोष दिया और कहा उसके बड़ा प्रतापी बेटा होगा। उसे उत्तर की ओर जाने का आदेश दिया।

रानी अपने अनुयाइयों को लेकर झूसी से पांचों सिद्ध स्थान को आई जो प्रतापगढ़ शहर से डेढ़ मील दूर है। यहीं उसके पेट से लखन सेन का जन्म हुआ। लखनसेन ने भारों और राइकवारों को भगाकर पहले हिन्दौर के किले पर अधिकार कर लिया फिर आरोर गांव (वर्तमान प्रतापगढ़) ले लिया। यह घटना १२५८ ईस्वी में हुई। लखन सेन के तीन बेटे थे। बड़ा लड़का गोहनवर देव अपने जीवन काल में ही अपना भाग अपने बेटे उधर देव को देना चाहता था। इस पर लखन सेन के दूसरे बेटे मलूक देव ने आपत्ति की। वह दिल्ली चला गया और वहां मुसलमान हो गया। उसने सम्राट की लड़की से ब्याह किया। वह इलाहाबाद का सूबेदार बना दिया गया। इलाहाबाद से उसने प्रतापगढ़ पर चढ़ाई की और समस्त सोम वंशियों को मुसलमान बनाने की इच्छा प्रगट की। शेष दो भाइयों ने निश्चय किया कि जो इस जाति-द्रोही और धर्म-द्रोही का वध करे वही राजा है। इसपर लखन सेन के तीसरे बेटे जेतसिंह ने उसे मार डाला। प्रतापगढ़ के पास फुलवारी में उसका मकबरा बना है। इससे प्रसन्न होकर बड़े बेटे ने जेतसिंह को अरोर (प्रतापगढ़) का राजा बनाया। उसने अपने लिये एक छोटी जागीर ली। प्रतापगढ़ के समस्त सोमवंशी इन्हीं दो भाइयों के वंशज हैं। इनमें प्रतापगढ़ के राजा जेतसिंह के वंशज अधिक प्रसिद्ध हैं। जेतसिंह की मृत्यु के बाद उसका बेटा कान्ह देव राजा हुआ। उसने १६५४ तक राज्य किया। इसी वंश के राजा पृथिवी सिंह ने पिथी गंज का बाजार बनवाया। १३७७ में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बेटा लोधसिंह कुछ ही वर्ष जीवित रहा। उसके बेटे सुल्तान शाह ने फीरोज तुगलक की नौकर

र ली और बुन्देलखंड और बघेलखंड के विद्रोह को दबाने में दिल्ली सुल्तान की बड़ी सहायता की। जब यह दिल्ली गया तो उसे अरोर भेंट में मिला। से इलाहाबाद, सोरांव, सिकन्दरा, नहवई और कवई के परगने मिल गये। उसका छोटा बेटा राजा तनियरशाह १४२२ में गद्दी पर बैठा उसने २२ वर्ष क राज्य किया। उसके बेटे घाटम देव ने बहलोल लोगों की नौकरी कर ली। उसे गोरखपुर में सतासी के राजा हिन्दू पाल को दबाने का काम सौंपा गया। १४७८ में उसकी मृत्यु हो गई। उसके ६ बेटे थे। सबसे बड़ा लड़का संग्राम साह गद्दी पर बैठा। उसने अवार पिरथीगंज में क़िला बनवाया। यहीं उसने इन्दौर से अपने परिवार को रहने के लिये भेज दिया। उसने सुलतानपुर के बघगोतियों को हराया। उसके मरने पर उसका बेटा रामचन्द्र १४६४ में राजा हुआ। १४२६ में रामचन्द्र की मृत्यु हो गई। उसका बेटा लक्ष्मी नारायण राजा हुआ। १५७६ में जब वह प्रयाग की तीर्थ यात्रा कर रहा था मार्ग में बिजली के गिरने से उसकी मृत्यु हो गई। उसके बेटे तेज सिंह ने सई के किनारे तेजगढ़ (किला) बनवाया। १६२८ में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बेटा प्रताप सिंह राजा हुआ। प्रताप सिंह ने रामनगर में राजधानी बनाई। वहीं उसने गढ़ या किला बनवाया। प्रतापगढ़ पहले किले का नाम था। आगे चल कर नगर का नाम भी प्रतापगढ़ पड़ गया। प्रताप बड़ा वीर योधा और प्रतापी था। पहले उसने अवार के राजा साह पर चढ़ाई की और उसे कुचाल डाला। इसके बाद प्रताप ने इलाहाबाद के सूबेदार कमाल खां को हराया और मार डाला। इसके बाद उसने कन्हपुरिया सरदार और तिलोई के राजा को हराया। कहते हैं प्रताप लँगड़ा था और तिलोई का राजा अन्धा था। वे एक दूसरे को चिढ़ाया करते थे। इसके बाद राजा प्रतापसिंह ने प्रतापगढ़ में विशाल भवन बनवाये। उस समय यह नगर अवध में अपनी शोभा और ऐश्वर्य में अद्वितीय था। लेकिन अवध की सरकार ने अधिकतर भवन गिरवा दिये। १६८२ में प्रतापसिंह की मृत्यु हुई। उसका बेटा जैसिंह देव गद्दी पर बैठा। उसने सरियावां के राजा को हराकर कैद कर लिया और उससे मरियाहू और भदाही के परगने छीन लिये।

औरंगजेब के दरबार में वक्त बलीसिंह राजा जैसिंहदेव का प्रतिनिधि था। उसने अपने राजा की ओर से बुन्देलखड के विद्रोही राजा छत्रसाल को दबाने का बीड़ा उठाया। इस कार्य को पूरा करने पर दिल्ली सम्राट औरंगजेब ने जैसिंह देव को दिल्ली आने के लिये निमंत्रण दिया। दिल्ली दरबार में औरंगजेब ने अपनी टोपी राजा को भेंट की और उसे कुलाहन नरेश (टोपी का राजा) की उपाधि दी। उसे जौनपुर मुगेरा और गरवारा परगने भी दिये गये। इससे रुष्ट होकर इलाहाबाद के सूबेदार पीरू ने प्रतापगढ़ पर चढ़ाई की। कहते हैं उसने बारह वर्ष तक प्रतापगढ़ का घेरा डाला। अन्त में उसकी हार हुई और वह मारा गया। १७१६ में जैसिंह देव की मृत्यु हो गई। उसका बेटा छत्रधारी सिंह राजा हुआ। इस समय अवसर पाकर अवध के नवाब ने मुगेरा, गरवारा, नहवई और किवई के परगने छीन लिये। केवल प्रतापगढ़, सोरांव और सिकन्दरा शेष रह गये। १७२५ में उसका बेटा पृथिवीपति सिंह राजा हुआ। उसने प्रतापगढ़ का नया क़िला बनवाया। उसने अवध के नवाब सफदर जंग के विरुद्ध फर्रुखाबाद के बंगश नवाब को इलाहाबाद के किले की चढ़ाई में सहायता दी थी। इससे सफदर जंग रुष्ट हो गया। अफगानों को हराने के बाद उसने प्रतापगढ़ में विश्वासघात से काम लिया। उसने राजा को मानिकपुर का फौजदार बनाने का बचन दिया और उसे अपने दरबार में बुलाया। विश्वास में आकर राजा अपने साथ बहुत कम साथी ले गया था। १७५४ में गंगा के किनारे गुतनी के पास खुले दरबार में राजा मार डाला गया। इसके बाद नवाब ने प्रतापगढ़ छीन लिया और सारा राज्य जब्त कर लिया। तीन चार वर्ष तक यहां अवध का सीधा शासन रहा। पृथिवीपति सिंह का दूसरा भाई हिन्दूपति सिंह लखनऊ को गया और वहां मुसलमान हो गया। अब उसका नाम सर फीरोज अली खां हो गया। उसे पट्टी में सवांसा की जागीर मिली। लेकिन दूसरे सोमवंशी उसके भ्रष्ट हो जाने से इतने रुष्ट थे कि

शीघ्र ही उन्होंने उसे मार डाला । इसी समय पृथिवीपति के बड़े लड़के राजा दुनियापति सिंह ने प्रतापगढ़ परगने पर अधिकार कर लिया । लेकिन सोरांव और सिकन्दरा सदा के लिये इस राज्य से अलग हो गये । बदला लेने को सोच ही रहा था कि इस्मायल बेग और तकी बेग ने बड़ी सेना लेकर उसका पीछा किया और १७६५ में उसे मार डाला । उसके बेटे सरूपसिंह ने तेजगढ़ और दूसरे स्थानों पर अधिकार करके प्रतापगढ़ के उत्तरी पश्चिमी भागों को ले लिया । उसके बेटे श्रीपति सिंह ने राज्य को कुछ और बढ़ाया ।

दुनियापति सिंह की मृत्यु के बाद नवाब ने प्रतापगढ़ किला ले लेने के लिये अफसर भेजे। लेकिन १७६६ में राजा पृथिवीपति के भतीजे सिकन्दर साह ने सोमवंशियों को इकट्ठा करके पुरानी राजधानी पर अधिकार कर लिया। छः महीने के बाद वह भगा दिया गया । १७६८ में दुनियापति के भाई राजा बहादुर सिंह ने भीषण युद्ध के बाद प्रतापगढ़ का किला छीन लिया । आगे चलकर अवध की सेना ने प्रतापगढ़ फिर छीन लिया । अंग्रेजी राज्य में मिलाने के पूर्व प्रतापगढ़ में अवध के नाजिम शासन करते थे । कुछ समय के बाद बहादुर सिंह ने बहलोलपुर ले लिया । आगे चलकर राजा दर्शनसिंह बहलोलपुर का प्रबन्ध करने लगा । १८८४ में राजा दर्शन सिंह मर गया । २ वर्ष तक राजा विजयबहादुर ने राज्य किया । उसकी मृत्यु के बाद यहां गड़बड़ी मची और लम्बा मुकदमा चला । राज्य पर भारी कर्ज लद गया । १८६६ में सरकार ने कुछ समय के लिये राज्य को अपने अधिकार में ले लिया ।

तरौल का राज्य राजा संग्रामसिंह के छोटे बेटे को मिला । प्रतापगढ़ की समृद्धि के समय यहां के राजा प्रायः अज्ञान बने रहे । गदर के समय वहां के राजा गुलाब सिंह ने अंग्रेजों का विरोध किया । लेकिन उससे विरोधी अजीतसिंह ने सुल्तानपुर से भाग कर आये हुए अंग्रेजों को अपने यहां शरण दी । गदर के बाद गुलाबसिंह का राज्य जब्त कर लिया गया और अजीतसिंह को दे दिया गया । विद्रोह के समय में अजीतसिंह ने अपने परिवार को जौनपुर भेजकर ब्रिटिश अफसरों की विद्रोह दबाने में बड़ी सहायता की थी । अतः विद्रोह के बाद उसे तरौल के राज्य के अतिरिक्त बेला छावनी और दूसरे जिलों के कुछ गांव मिल गये । १८६६ में उसने ब्रिटिश सरकार से २८००० रु० में प्रतापगढ़ का किला मोल ले लिया । उसने छत्रधारी सिंह और पृथिवीपति सिंह के महलों की मरम्मत करवाई । १८७७ में उसे राजा की उपाधि मिली । उसने बहलोलपुर, पिरथीगंज, रायपुर, बिछौर और चौरास रियासतों को मोल लेकर अपना राज्य बढ़ा लिया । १८८९ में वह ७३ वर्ष की अवस्था में मर गया । राज्य का नाम तरौल से बदल कर किला प्रतापगढ़ रख दिया गया । उसके बाद उसके भाई बिशनाथसिंह का पौत्र प्रताप बहादुर सिंह राजा हुआ । इस राज्य में लगभग ११६ गांव शामिल हैं ।

भदरी नरेश लालसाह की सन्तान हैं । लालसाह के बेटे जीतसिंह ने अधिकारियों से सन्धि कर ली । उसे राय की उपाधि मिली । १७४८ में उसका बेटा दलजीतसिंह नाजिम मिरजा से लड़ गया और मार डाला गया । उसका बेटा जालिम सिंह कुछ समय इधर उधर भागने के बाद राजा हुआ । १८१० में लगान न दे सकने पर भदरी का प्रबन्ध सीधा नवाब के अधिकारियों के हाथ में आ गया । जब राजा लखनऊ में कैद था । वीर रानी ने कुछ लोगों को इकट्ठा करके कर वसूल किया और गद्दी पर अधिकार कर लिया । १८१५ में उसका पति मुक्त कर दिया गया । उसके बाद जगमोहनसिंह राजा हुआ । आगे चल कर नवाबी कर्मचारियों की उससे खटपट हो गई । रामचौरा के पास गंगा के किनारे जगमोहन सिंह और उसका बेटा दोनों अचानक मार डाले गये इससे ब्रिटिश सरकार को बुरा लगा । नाजिम अलग कर दिया गया । भदरी राज्य राजा जगमोहन सिंह के भतीजे अमरनाथ सिंह को मिला । उसके बाद उसका गोद लिया हुआ बेटा जगतबहादुर सिंह राजा हुआ । जगतबहादुर भी निस्सन्तान मर गया । उसके गोद लिये हुए बेटे सबजीत सिंह को भदरी रियासत और राय की उपाधि १८८६ में ब्रिटिश सरकार की ओर से मिली । उसने अच्छा प्रबन्ध किया और मरते समय अपने बेटे राय कृष्णप्रसाद सिंह को लगभग ६० गांव छोड़े । राज्य पर एक पैसे का भी

कर्ज न था। गदर के समय भदरी में मज़बूत किला था। १८५८ में यह किला तोड़ दिया गया। राज साहब गढ़ी में रहते हैं।

बेला प्रतावगढ़ जिले का केन्द्र स्थान है। यह इलाहाबाद से ३६ मील की दूरी पर फैजाबाद को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह रेलवे का भी जङ्कशन है। यहां होकर लखनऊ, फैजाबाद, बनारस और इलाहाबाद को रेलवे लाइन गई हैं। पश्चिम की ओर एक पक्की सड़क रायबरेली को गई है। बेला को प्रायः प्रतावगढ़ कहते हैं। पुरानः नगर कस्बा प्रतावगढ़ कहलाता है। यह ४ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। बेला से उत्तर और पूर्व की ओर सई नदी बहती है। यहां पुराना घाट और पुल है। यहीं बेला देवी का मन्दिर है। जिससे नगर का नाम बेला पड़ा। नया नगर १८०२ ईस्वी में छावनी के लिये बसाया गया। गदर के बाद यह जिले का केन्द्र स्थान बना। यहां थाना, कचहरी, तहसील, अस्पताल, हाई स्कूल और जूनियर हाई स्कूल हैं।

भदरी गांव बेला से ३२ मील और इलाहाबाद से २८ मील गङ्गा से पांच मील उत्तर की ओर है। यहां राजा साहब की कोठी है। राजा साहब का एक बङ्गला झील के किनारे बेंटी में है। यहां बासों के बीच में पुराने किले के खंडहर फैले हुये हैं। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। स्टेशन होने से यहां से अनाज बाहर बहुत जाता है। कुछ अनाज भरवारी को जाता है। जो यहां से १० मील दूर है। यहां के मेले में पशुओं की बिक्री होती है। नवाबी समय में भदरी के पड़ोस में भारी लड़ाइयां हुइ। राय सबजीत सिंह का बनवाया हुआ पत्थर का मन्दिर है। अन्त गांव बेला से रायपुर अमेठी को जाने जाने वाली सड़क पर १३ मील और सई नदी से ३ मील उत्तर की ओर है। यह एक रेलवे स्टेशन भी है। यह एक छोटी जागीर का केन्द्र स्थान है पहले यहां नीम का साबुन बहुत बनता था।

बिहार (बिहार) गांव कुन्डा (तहसील) से ७ मील और प्रतावगढ़ से ६ मील दूर है। यहां होकर सालोन से लाल गोपालगञ्ज को सड़क जाती है। एक सड़क प्रतावगढ़ को गई है। अवध के अंगरेजी राज्य में मिल जाने पर बिहार कुछ समय तक एक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। इसके पड़ोस में टूटी ईंटों और गढ़े हुये पत्थरों के रूप में पुराने ऊंचे टीलों पर बौद्ध कालीन और इससे भी अधिक प्राचीन भग्नावशेष बिखरे हुये हैं। पुराने टीले पूर्व की ओर दूर तक बिखरे हुये हैं। कुछ पुराने टीले अर्द्ध वृत्ताकार झील के किनारे हैं। एक ओर नवाबी किला है। दक्षिण-पश्चिम की ओर अष्टभुजी देवी का मन्दिर है। मन्दिर और किले के बीच में एक मुसलमानी (मर्दान शहीद) मकबरा है। इसके द्वार की सीढ़ी एक पुराने मन्दिर से बनी है। इसके पड़ोस में कुछ मूर्तियां मिली हैं।

डेरवा इस जिले का एक बड़ा बाजार है। यह सबलगढ़ गांव में स्थित है यह प्रतावगढ़ से कुन्डा को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह भदरी राज्य में है। यहां डाकखाना, बाजार और प्राइमरी स्कूल है।

धारूपुर लालगंज से कुन्डा को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह बेला से २४ मील और मानिकपुर से ६ मील दूर है। यहां राजा रामपाल सिंह के पूर्वज धारू साह का बनवाया हुआ किला है। किले के पास ही जलेसर गंज का बाजार है। यहां राजा संग्राम सिंह का निवास-स्थान था जहां से वह बुंदेलखंड के छः साल से लड़ने के लिये गया। गदर में राजा (हनवन्त सिंह) ने भाग कर आये हुये अंग्रेजों की रक्षा की थी और उन्हें इलाहाबाद पहुँचा दिया था। यहां कालाकांकर के राजा साहब रहा करते हैं। यहां रेशम का कारबार भी था। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और बाजार हैं।

ढिंगवस इसी नाम के ताल्लुके का केन्द्र स्थान है। ताल्लुकेदार साहब की कोठी झील के किनारे बनी है। यह बेला से २८ मील दूर है। कल्याणपुर में बाजार लगता है। यहां एक प्रायमरी स्कूल है।

गौरा स्टेशन नं.रेहरा गांव के पास है। यहां डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। गौरा बहुत छोटा गांव है। यहां से स्टेशन तक पक्की सड़क गई है। गुतनी एक पुराना मुसलमानी कस्बा है। गङ्गा के किनारे स्थित है। गङ्गा को पार करने के लिये नाव का घाट है। दूसरे ओर

सिराथू को सड़क गई है। गुतनी में डाकखाना, प्रायमरी स्कूल और रेलवे स्टेशन है। इसके पास ही राजा पृथिवीपतिसिंह की हत्या नवाब मन्सूर अली खां या सफदर जङ्ग ने की थी। हनूमान गञ्ज का बाजार कन्धई मधपुर गांव में स्थित हैं। कुछ दूर दक्षिण की ओर रंजितपुर चिलबिला से एक सड़क सैदाबाद को जाती हैं। यहां थाना और प्रायमरी स्कूल है। यहां हनुमान गंज और भैरोंगंज के दो बाजार लगते हैं।

हिन्दौर गांव बेला से रायबरेली को जाने वाली सड़क के पास बेला से १५ मील दूर हैं। पहले यह बड़ा चढ़ा बढ़ा था। यहां का व्यापार कुछ फूलपुर गया चला इससे इसका ह्रास होने लगा। कहते हैं दुन्हवी नामी एक राक्षस ने इसे बसाया था। उसे भीमसेन ने जीता था। आगे चलकर यहां कन्हपुरिया और सोमवंशी राजपूतों में युद्ध हुआ। यही सोमवंशियों के पूर्वज लखन सेन का निवास स्थान था जिसने १२५८ में भार और राइकवरों को जीता था। यहां पुराने किले के खंडहर हैं। यह प्रतावगढ़ के राजा का गांव है।

कालाकांकर गङ्गा के किनारे पर मानिकपुर से ४ मील और प्रतावगढ़ से ४४ मील दूर है। यहां राजा रामपाल सिंह की कोठी है। १८३९ में यहां किला बनाया गया था। इसके चारों ओर की खाई में गङ्गा से पानी आता था। कहते हैं इसे गुतनी के मुहम्मद हयाव नामी एक मुसलमान ने बसाया इसीसे इसे अक्सर कालाकांकर (मुहम्मदाबाद) कहते हैं। नाव और रेल की सुविधा होने से यहां का व्यापार बढ़ रहा है। सिराथू रेलवे स्टेशन यहां से अधिक दूर नहीं है। यहां शक्कर, कपड़ा और अनाज का व्यापार होता है। यहां चमड़ा और रेशम का काम होता है। यहां एक जूनियर हाई स्कूल है।

जेठवारा प्रतावगढ़ से डेरवा को जाने वाली पक्की सड़क पर प्रतावगढ़ से १७ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है।

कटरा मेदनी गंज कस्बा बेला ४ मील दक्षिण-पश्चिम में और कस्बा प्रतावगढ़ से २ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां के जुलाहे गाढ़ा और दुसुती बहुत बुनते हैं। यहां दानेदार शक्कर भी बनती थी। यह नाम राजा छत्रधारी सिंह के बेटे राजा मदिनी सिंह की स्मृति में पड़ा। उसकी रानी ने यहां पक्का ताल बनाया। कहते हैं इस तालाब के जल में दानेदार शक्कर तैयार करने के लिये विशेष गुण है। यहां कई टूटे फूटे मकबरे हैं। यहां बाजार और प्राइमरी स्कूल है। क्वार में मेला लगता है।

कुंडा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां प्रतापगढ़ से मानिकपुर और रायबरेली से इलाहाबाद को जाने वाली सड़के मिलती हैं। यह बेला से ३७ मील और इलाहाबाद से ३२ मील दूर है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। रेलवे स्टेशन और मार्गों की सुविधा होने से यहां अनाज कपड़ा और कम्बलों का व्यापार अधिक होता है। यहां जिले भर के लिये कम्बल बनते हैं। यहां तहसील, थाना, मुन्सफी, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है।

लालगंज का बाजार प्रतावगढ़ से रायबरेली को जाने वाली सड़क पर बेला से २५ मील दूर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

लालगोपाल गञ्ज में होकर इलाहाबाद और प्रतावगढ़ जिलों की सीमा जाती है। प्रतावगढ़ जिले का मार्ग लालगंज कहलाता है। इलाहाबाद जिले वाला भाग गोपाल गंज कहलाता है। इसी से इसका संयुक्त नाम लाल गोपाल गंज पड़ा। यह गंगा से ३ मील उत्तर की ओर रेलवे का एक स्टेशन है। यहां होकर मानिकपुर और कुंडा से इलाहाबाद को सड़क जाती है। यह बेला से ३१ मील दूर है। लाल गंज भदरी नरेश के अधिकार में है। गोपाल गंज में मुसलमान जमीदार हैं।

मानिकपुर का प्राचीन कस्बा गङ्गा के किनारे पर प्रतावगढ़ रायबरेली और इलाहाबाद से समान दूरी (३६ मील) पर स्थित है। एक ओर सिराथू और दूसरी ओर गुतनी रेलवे स्टेशन है। मानिकपुर के बगीचों के बीच में पुराने खंडहर हैं। बसा हुआ मार्ग उत्तर की ओर गंगा के किनारों से खंडहरों तक फैला हुआ है। यह पुराने किले और शाहाबाद के बीच में स्थित है। प्रधान बाजार पुरा अलीनकी में दक्षिण-पूर्व की ओर है। छोटा बाजार

शाहाबाद में हैं। शाहाबाद में ही डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। इसके पड़ोस में १२० फुट ऊंचे टीले पर गंगा के ठीक ऊपर पुराने किले के खंडहर हैं। कहते हैं कन्नौज के मनदेव ने इसे बसाया था। जैचन्द के सौतेले भाई मानिकचन्द के समय में इसका नाम मानिकपुर पड़ गया। पर पुरानी नींव के नीचे इससे भी अधिक पुराने समय के भग्नावशेष हैं। कड़ा के साथ मानिकपुर का इस प्रदेश के इतिहास से गहरा सम्बन्ध रहा है। यहां कार्तिक और आषाढ़ की पूर्णमासी को मेला लगता है। पट्टी गांव इसी नाम का तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां होकर प्रतापगढ़ से अकबरपुर (फैजाबाद) को सड़क जाती है। यह प्रतापगढ़ से १३ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल हैं। इसके पड़ोस में पुराने किले के खंडहर हैं। बचगोटियों का यहां थाट (पट्टी) अलग हुआ इसी से इसका नाम पट्टी हो गया।

रायगढ़ ढेरवा से विहार को जानेवाली सड़क पर प्रतापगढ़ की सड़क से कुछ दूर है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और बाजार है। इसके पड़ोस में ढिंगवस और भदरी के ताल्लुकेदारों के बीच में लड़ाई हुई थी।

रामपुर लालगंज से संग्रामगढ़ को जाने वाली सड़क पर लालगंज से ७ मील दूर है। गांव और बाजार पुराने किले के भीतर है। किले की कच्ची दीवारें और खांई बहुत सा स्थान घेरे हैं। भीतर आने के लिये खांई के ऊपर दो स्थानों पर पुल बना है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

रानीगंज का बाजार और थाना रसेतीपुर गांव में स्थित है। यह प्रतापगढ़ से बादशाहपुर (जौनपुर) को जाने वाली सड़क पर प्रतापगढ़ से १० मील दूर है। रानीगंज से उत्तर को ओर पास ही दादूपुर गांव में अवध रूहेलखंड का स्टेशन है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

रंजीतपुर चिलबिला इलाहाबाद से फैजाबाद को जाने वाली सड़क पर बेला से २ मील उत्तर की ओर है। यहां से एक पक्की सड़क पूर्व की ओर पट्टी को और दूसरी सड़क गरबारा बाजार और अमेठी को जाती है। यहां के बड़े बाजार (नवाबगंज) को अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने बसाया था। रेलवे स्टेशन पास ही है। यहां से एक शाखा उत्तर की ओर फैजाबाद को गई है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। अगहन में एक छोटा मेला लगता है। यहां के सोमवंशी जमींदार पुराने वंश के हैं और संग्राम शाह के दूसरे बेटे रूपनारायण की सन्तान हैं।

रनकी गांव अटेहा से परशादेपुर को जाने वाली सड़क पर अटेहा से ४ मील दूर है। इसके पड़ोस में उत्तर-पश्चिम की ओर एक पुराने किले के खंडहर हैं। इसके खंडहरों में बहुत से इण्डो बेक्ट्रियन सिक्के मिले हैं। कहते हैं यहां विक्रमादित्य के भाई राजा भर्तृहरि की राजधानी थी। इसके भग्नावशेषों की ठीक ठीक खुदाई नहीं हुई है।

संगीपुर अटेहा से ४ मील की दूरी पर लालगंज को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क चन्द्रिका की ओर अन्तू को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां कन्हपुरिया राजपूतों की प्रधानता है। यह गांव तिलोई के राजा का है।

संग्रामगढ़ प्रतापगढ़ से मानिकपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर प्रतापगढ़ से ३० मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। गांव के दक्षिण में एक बड़ी झील है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। रामलीला का मेला होता है। यह गांव रामपुर धारूपुर राज्य का अंग है। इस गांव को २०० वर्ष पहले वर्तमान राजा के पूर्वज संग्राम सिंह ने बसाया था।

शाहपुर गंगा के किनारे मानिकपुर से ८ मील और प्रतापगढ़ से ३७ मील दूर है। इसके पश्चिम में दिलेरगंज या नवादा है। यह दोनों स्थान बड़े पुराने हैं। यहां एक दरगाह, मस्जिद और कादम रसूल अकबर के समय का बना है दिलेरगंज में एक किला, मस्जिद, रंगमहल और दीवानखाना के खंडहर हैं। यहाँ की मस्जिद जहांगीर के समय में बनी। शाहपुर में भदरी राज्य का बंगला और बाजार है। अहियापुर गांव सई नदी के किनारे पर या सई संगम के पास प्रतापगढ़ से ७ मील दूर है। बिलखर नाथ का मन्दिर कोट बिलखर के भग्नावशेषों के

ऊपर बना है। यह बांदा के एक दीक्षित का किला था। उसने बिलखरियों की नींव डाली। बचगोतियों के पूर्वज बरियासिंह ने उसे मार डाला। इससे किला बचगोतियों को मिला। १७७३ में नाज़िम ने किला गिरवा दिया। खंडहर सई के किनारे ऊचे टीले पर फैले हुए हैं। यह तीन ओर से झाड़ियों से ढके हुये नालों से घिरे हैं।

बिलखरनाथ के मन्दिर पर मेला लगता है। गांव में अधिकतर मुसलमान रहते हैं।

सुल्तानपुर

सुल्तानपुर का जिला अवध में पूर्वी भाग में गोमती नदी के दोनों ओर २५'३६ और ६६'५० अक्षांशों और ८१'३२ और ८२'४१ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में फैजाबाद और दक्षिण में प्रतापगढ़ का जिला है। इसके उत्तर पश्चिम में बाराबंकी और पश्चिम में रायबरेली है। इसके पूर्व में जौनपुर और आजमगढ़ के जिले हैं।

सुल्तानपुर एक कृषि प्रधान जिला है। जनसंख्या अधिक घनी (प्रति वर्गमील में प्रायः ६५० मनुष्य रहते हैं) है। जिले में लगभग ढाई हजार गांव हैं। लेकिन सुल्तानपुर सहर को छोड़कर बड़ा कस्वा एक भी नहीं है। सुल्तानपुर शहर की जनसंख्या भी १०,००० से कम है। सुल्तानपुर जिले की भूमि चौरस है। उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर क्रमशः ढाल है। समतल भूमि को गोमती और इसमें मिलने वाले नालों ने कुछ विषम बना दिया है। प्रायः समस्त जिला गोमती के प्रवाह प्रदेश में स्थित है। केवल दक्षिणी सिरे का कुछ पानी बहकर सई नदी में आता है। जल विभाजक की ऊँचाई सुल्तानपुर शहर के पास ३५२ फुट है। गोमती के दक्षिण में सुल्तानपुर जिले की भूमि तीन भागों में बटी हुई है। घोमती के किनारे नालों से कट फट गये हैं। यह उजाड़ है। केवल कहीं कहीं इनके ऊपर आम और महुआ के पेड़ मिलते हैं। मध्यवर्ती भाग बड़ा उपजाऊ है। यहां अच्छी खेती होती है। गांवों के पास बगीचे हैं। धुर दक्षिण में झीलों की पेटी हैं। यहां धान के खेतों के मध्य में ऊसर भूमि थोड़ी थोड़ी दूर पर मिलती है। गोमती के उत्तर में भी नदी के समीप वाला भाग उजाड़ है। इसके आगे उपजाऊ भूमि है जिसका पानी बह कर मझुई की छोटी घाटी में जाता है।

गोमती इस जिले की प्रधान नदी है। यह उत्तरी-पश्चिमी कोने पर जिले में प्रवेश करती है। यहां यह बहुत ही धीमी और टेढ़ी चाल से बहती है। जगदीशपुर परगने में यह उत्तरी सीमा के पास मुड़ जाती है और सुल्तानपुर को बाराबंकी और फैजाबाद जिलों से अलग करती है। इसके किनारे ऊँचे और प्रायः सपाट हैं। इसी से प्राचीन नगर गोमती के इन ऊचे किनारों पर मनोहर दृश्य के बीच में बसाये गये थे। प्राचीन किशनी और साथिन के खंडहर गोमती के किनारे दूर तक फैले हुए हैं। साथिन के आगे नदी कुछ खुल जाती है। ऊंचे किनारे पीछे हट जाते हैं। मऊ अतवारा के आगे किनारे नीचे हो जाते हैं और बाढ़ के समय पड़ोस की भूमि पानी में डूब जाती है। जगदीशपुर के दक्षिण-पूर्व में गोमती उत्तर की ओर स्थित इसोली परगने को मुसाफिरखाना परगने से अलग करती है जो दक्षिण की ओर है। यहां गोमती ने कुछ तराई बनाई है। फतेहपुर से आगे गोमती कुछ सीधी रेखा में बहती है। इसौली के आगे किनारे पास पास हो जाते हैं और धारा संकुचित हो जाती है। आगे चलकर नदी के किनारे फिर नीचे हो जाते हैं। कुरवर राज्य में इससे किनारों को कटने से रोकने के लिये कुछ प्रयत्न किया गया लेकिन बाढ के दिनों में मुलायम रेतीले किनारों को कटने से रोकना कठिन हो जाता है। चन्दौर और वर्तमान सुल्तानपुर के पास होती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर बढती है। इसके किनारे पर चमरघाट और दियरा पड़ते हैं। जहां दियरा राज्य

के राजा साहब रहते हैं। धीपाप में गोमती स्नान का मेला लगता है। कुछ दूरी पर अल्देमऊ के खंडहर हैं। कादीपुर एक तहसील का केन्द्र स्थान है। द्वारका में स्योपुर वंश की पुरानी गद्दी है। कट सारी गांव तक गोमती के किनारे बहुत कट गये हैं। चान्दा में गोमती के किनारे फिर ऊंचे और सपाट हो गये हैं। पड़ोस का पानी असंख्य नालों के द्वारा गोमती में आता है। गोमती की तली गहरी है। अतः भयानक बाढ़ में ही गोमती हानि पहुँचाती है। कन्दू नाला रायबरेली जिले से आता है। २३ मील सुल्तानपुर जिले में बहने के बाद यह गोमती में मिल जाती है। बनारस जिले में गोमती में मिलने वाले वेदनाला, चौहा और दूसरे नाले छोटे हैं। मझुई नदी वरौसा के पूर्व में निकलती है। दोस्तपुर गांव के पास होकर यह उत्तरी पूर्वी कोने पर सुल्तानपुर जिले के बाहर जाकर टौंस में मिल जाती है। शीतकाल में यह बहुत छोटी नदी रह जाती है। वर्षा ऋतु में उमड़ कर यह बहुत बड़ी नदी हो जाती है। मंगार नदी दोस्तपुर के पास दलदलों से निकलती है।

झील बहुत लम्बी और उथली है। राजा का बांध नाम की झील बांध बनने से बनी है। १८४५ ईस्वी में अमेठी के राजा विशेश्वर बख्श सिंह ने बांध बनवाया था। इसका क्षेत्रफल २४ वर्ग मील है। प्रबल वर्षा में बांध टूट जाता है। इससे पड़ोस के गांवों को बड़ी हानि होती है। दक्षिण-पश्चिम में गौरीगञ्ज के पास लोधी ताल भी बहुत बड़ा है। मीरनपुर परगने में करहवा झील (जो रवानिया पश्चिम गांव के पास स्थित है) सब से बड़ी और सब से अधिक हानि पहुँचाने वाली झील है। भोजपुर और कोटवा झीलें उत्तरी सीमा के पास हैं।

सुल्तानपुर जिले में २४ फीसदी भूमि उजाड़ है और खेती के काम नहीं आती है। इसमें एक तिहाई भूमि पानी से घिरी है। कुछ (३ फीसदी) भूमि घर, सड़क और रेल मार्ग से घिरी हुई है। शेष (१३ फीसदी) एकदम स्वाभाविक रूप से उजाड़ है। सुल्तानपुर जिले में बड़े बड़े वन नहीं बचे हैं। एक छोटा जङ्गल राजा साहब अमेठी के किले के चारों ओर रामनगर में हैं। पहले ढाक के जङ्गल जिले भर में फैले हुये थे। अब कन्द नाले और कुछ

ऊपर बना है। यह बांदा के एक दीक्षित का किला था। उसने बिलखरियों की नींव डाली। बचगोतियों के पूर्वज बरियासिंह ने उसे मार डाला। इससे किला बचगोतियों को मिला। १७७३ में नाज़िम ने किला गिरवा दिया। खंडहर सई के किनारे ऊंचे टीले पर फैले हुए हैं। यह तीन ओर से झाड़ियों से ढके हुये नालों से घिरे हैं।

बिलखरनाथ के मन्दिर पर मेला लगता है। गांव में अधिकतर मुसलमान रहते हैं।

सुल्तानपुर

सुल्तानपुर का जिला अवध में पूर्वी भाग में गोमती नदी के दोनों ओर २५°२६ और ६६°४० अक्षांशों और ८१°३२ और ८२°४१ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसके उत्तर में फैजाबाद और दक्षिण में प्रतापगढ़ का जिला है। इसके उत्तर पश्चिम में बाराबंकी और पश्चिम में रायबरेली है। इसके पूर्व में जौनपुर और आज़मगढ़ के ज़िले हैं।

सुल्तानपुर एक कृषि प्रधान ज़िला है। जनसंख्या अधिक घनी (प्रति वर्गमील में प्रायः ६५० मनुष्य रहते हैं) है। ज़िले में लगभग ढाई हज़ार गांव हैं। लेकिन सुल्तानपुर सहर को छोड़कर बड़ा कस्बा एक भी नहीं है। सुल्तानपुर शहर की जनसंख्या भी १०,००० से कम है। सुल्तानपुर ज़िले की भूमि चौरस है। उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर क्रमशः ढाल है। समतल भूमि को गोमती और इसमें मिलने वाले नालों ने कुछ विषम बना दिया है। प्रायः समस्त ज़िला गोमती के प्रवाह प्रदेश में स्थित है। केवल दक्षिणी सिरे का कुछ पानी बहकर सई नदी में आता है। जल विभाजक की ऊँचाई सुल्तानपुर शहर के पास ३५२ फुट है। गोमती के दक्षिण में सुल्तानपुर ज़िले की भूमि तीन भागों में बटी हुई है। घोमती के किनारे नालों से कट फट गये हैं। यह उजाड़ है। केवल कहीं कहीं इनके ऊपर आम और महुआ के पेड़ मिलते हैं। मध्यवर्ती भाग बड़ा उपजाऊ है। यहां अच्छी खेती होती है। गांवों के पास बगीचे हैं। धुर दक्षिण में झीलों की पेटी है। यहां धान के खेतों के मध्य में ऊसर भूमि थोड़ी थोड़ी दूर पर मिलती है। गोमती के उत्तर में भी नदी के समीप वाला भाग उजाड़ है। इसके आगे उपजाऊ भूमि है जिसका पानी बह कर मझुई की छोटी घाटी में जाता है।

गोमती इस ज़िले की प्रधान नदी है। यह उत्तरी-पश्चिमी कोने पर ज़िले में प्रवेश करती है। यहां यह बहुत ही धीमी और टेढ़ी चाल से बहती है। जगदीशपुर परगने में यह उत्तरी सीमा के पास मुड़ जाती है और सुल्तानपुर को बाराबंकी और फैजाबाद ज़िलों से अलग करती है। इसके किनारे ऊँचे और प्रायः सपाट हैं। इसी से प्राचीन नगर गोमती के इन ऊचे किनारों पर मनोहर दृश्य के बीच में बसाये गये थे। प्राचीन किशनी और साथिन के खंडहर गोमती के किनारे दूर तक फैले हुए हैं। साथिन के आगे नदी कुछ खुल जाती है। ऊंचे किनारे पीछे हट जाते हैं। मऊ अतवारा के आगे किनारे नीचे हो जाते हैं और बाढ़ के समय पड़ोस की भूमि पानी में डूब जाती है। जगदीशपुर के दक्षिण-पूर्व में गोमती उत्तर की ओर स्थित इसौली परगने को मुसाफिरखाना परगने से अलग करती है जो दक्षिण की ओर है। यहां गोमती ने कुछ तराई बनाई है। फतेहपुर से आगे गोमती कुछ सीधी रेखा में बहती है। इसौली के आगे किनारे पास-पास हो जाते हैं और धारा संकुचित हो जाती है। आगे चलकर नदी के किनारे फिर नीचे हो जाते हैं। कुरवर राज्य में इससे किनारों को कटने से रोकने के लिये कुछ प्रयत्न किया गया लेकिन बाढ के दिनों में मुलायम रेतीले किनारों को कटने से रोकना कठिन हो जाता है। चन्दौर और वर्तमान सुल्तानपुर के पास होती हुई दक्षिण-पूर्व की ओर बढती है। इसके किनारे पर चमरघाट और दियरा पड़ते हैं। जहां दियरा राज्य

के राजा साहब रहते हैं। धीपाप में गोमती स्नान का मेला लगता है। कुछ दूरी पर अल्देमऊ के खंडहर हैं। कादीपुर एक तहसील का केन्द्र स्थान है। द्वारका में म्योपुर वंश की पुरानी गद्दी है। कट सारी गांव तक गोमती के किनारे बहुत कट गये हैं। चान्दा में गोमती के किनारे फिर ऊंचे और सपाट हो गये हैं। पड़ोस का पानी असंख्य नालों के द्वारा गोमती में आता है। गोमती की तली गहरी है। अतः भयानक बाढ़ में ही गोमती हानि पहुँचाती है। कन्दू नाला रायबरेली जिले से आता है। २३ मील सुल्तानपुर जिले में बहने के बाद यह गोमती में मिल जाती है। बनारस जिले में गोमती में मिलने वाले वेदनाला, चौहा और दूसरे नाले छोटे हैं। मझुई नदी बरौसा के पूर्व में निकलती है। दोस्तपुर गांव के पास होकर यह उत्तरी पूर्वी कोने पर सुल्तानपुर जिले के बाहर जाकर टोंस में मिल जाती है। शीतकाल में यह बहुत छोटी नदी रह जाती है। वर्षा ऋतु में उमड़ कर यह बहुत बड़ी नदी हो जाती है। मंगार नदी दोस्तपुर के पास दलदलों से निकलती है।

तेंधा नदी ताल मरिआंव से निकलती है। प्रथम १२ मील में ताल झीलें और दलदल हैं। नरैनी के पास यह नदी बन जाती है। विशेश्वरगञ्ज होती हुई यह तेंधा की ओर मुड़ती है। छान्ना के पास दक्षिण की ओर मुड़कर यह प्रतापगढ़ जिले में पहुँचती है। वहां यह चमरौरी से मिलकर सई नदी में गिरती है। चांदा के पश्चिम में पीली नदी कई झीलों के मिलने से बनती है। यह शेरगढ़ के दलदलों से आरम्भ होकर दक्षिण की ओर प्रतापगढ़ जिले में पहुँचती है।

जिले के कई भागों में वर्षा जल ठीक ठीक नहीं बह पाता है। इससे इन भागों में झीलें बन गई हैं। बीच वाले और दक्षिणी भाग में झीलें और दलदल बहुत हैं। गौरा जामुन में शायद ही कोई ऐसा गांव हो जहां तालाब न हो। ताल मरियांव इन सब में बड़ा है। यह उथला है। वर्षा ऋतु में इसमें पानी भरा रहता है। खुश्क ऋतु में इसमें गेहूँ की अच्छी फसल होती है। अमेठी में गौरा जामुन के पास भूमि नीची है। पानी बह नहीं पाता है। यहां नैया झील बहुत लम्बी और उथली है। राजा का बांध नाम की झील बांध बनने से बनी है। १८४५ ईस्वी में अमेठी के राजा विशेश्वर बख्श सिंह ने बांध बनवाया था। इसका क्षेत्रफल २४ वर्ग मील है। प्रबल वर्षा में बांध टूट जाता है। इससे पड़ोस के गांवों को बड़ी हानि होती है। दक्षिण-पश्चिम में गौरीगञ्ज के पास लोधी ताल भी बहुत बड़ा है। मीरनपुर परगने में करहवा झील (जो रवानिया पश्चिम गांव के पास स्थित है) सब से बड़ी और सब से अधिक हानि पहुँचाने वाली झील है। भोजपुर और कोटवा झीलें उत्तरी सीमा के पास हैं।

सुल्तानपुर जिले में २४ फीसदी भूमि उजाड़ है और खेती के काम नहीं आती है। इसमें एक तिहाई भूमि पानी से घिरी है। कुछ (३ फीसदी) भूमि घर, सड़क और रेल मार्ग से घिरी हुई है। शेष (१२ फीसदी) एकदम स्वाभाविक रूप से उजाड़ है। सुल्तानपुर जिले में बड़े बड़े वन नहीं बचे हैं। एक छोटा जङ्गल राजा साहब अमेठी के किले के चारों ओर रामनगर में हैं। पहले ढाक के जङ्गल जिले भर में फैले हुये थे। अब कन्दू नाले और कुछ अन्य स्थानों में ही ढाक का जङ्गल है। जङ्गलों में भेड़िया, नील गाय, जङ्गली सुअर और गीदड़ हैं। जिले की सवा छः फीसदी भूमि में आम और दूसरे पेड़ों के बगीचे हैं। सुल्तानपुर जिले की जलवायु शीतोष्ण और स्वास्थ्यकर है। अक्टूबर से फरवरी तक कुछ जाड़ा रहता है। जनवरी का औसत तापक्रम ६५ अंश फारेन हाइट रहता है। फरवरी के अन्त में ऋतु परिवर्तन होता है। मार्च के बाद गरमी पड़ने लगती है।

जून में सब से अधिक गरमी (१०० अंश फारेन हाइट) पड़ती है। सुल्तानपुर जिले में औसत से ४१ इञ्च वर्षा होती है। अच्छे वर्षों में यहां ५० इञ्च से ऊपर वर्षा हुई है। खुश्क वर्षों में केवल १२ इञ्च वर्षा हुई है। सुल्तानपुर जिले में लगभग ५८ फीसदी भूमि में खेती होती है। दूसरे जिलों की भांति यहां भी मटियार या चिकनी कड़ी मिट्टी, भूड़ या बलुई मिट्टी और दुमट या दोनों (बालू और चिकनी मिट्टी का मिश्रण) है। चिकनी मिट्टी के दो प्रधान उपभेद (कपसहा और टीकर) हैं। गांव के

घास वाली खाद भरी हुई गोंयड़ इसके आगे मध्यवर्ती भाग मझार और एकदम बाहर की ओर पालो भूमि होती है। पालो में बहुत कम खाद दी जाती है।

इस जिले में खरीफ की प्रधान (६१ फीसदी) फसल-धान है। अमेठी में खरीफ की ७५ फीसदी भूमि में धान बोया जाता है। लेकिन ऊंचे भागों (मुसाफिर खाना के पड़ोस) में केवल ५० फीसदी धान रहता है। दूसरा स्थान (१३ फीसदी) ज्वार का है। बाजरा १ फीसदी से भी कम रहता है। यहां कपास नहीं उगाई जाती है। ईख पांच फीसदी भूमि में होती है।

रबी की फसल में गेहूँ अकेला १७ फीसदी, जौ या चना, के साथ ७ फीसदी भूमि में होता है। चना मटर रबी की २६ फीसदी भूमि में घेरते हैं। २१ फीसदी भूमि में जौ होता है। शेष में पोस्त (अफीम), तम्बाकू और शाक भाजी आदि दूसरी फसलें रहती हैं।

जिले की ७१ फीसदी भूमि सींची जाती है। सींचने का काम झीलों, तालावों, कुओं और छोटी नदियों से लिया जाता है। सींचने के लिये गोमती नदी उपयुक्त नहीं है। इसके किनारे ऊँचे हैं तली का पानी अधिक नीचे रहता है।

संक्षिप्त इतिहास—इस जिले का रामायण की घटनाओं से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। चांदा परगने के राजपति गांव के धोपाप स्थान पर रामचन्द्र जी ने रावण वध करने के बाद प्रायश्चित किया था। उसी सन्ध्या को रामचन्द्र जी ने दियरा में दीपदान संस्कार और हरसेन (हरिशयन) गांव में शयन किया था। सुल्तानपुर शहर के पास सीताकुंड है जहां सीता जी ने शयन किया था। यहां आजकल भी चैत और कार्तिक में स्नान का मेला होता है। सुल्तानपुर का प्राचीन नगर पहले कुशपुर या कुशभवनपुर कहलाता था। कहते हैं श्री रामचन्द्र जी के पुत्र कुश ने इसे गोमती के दाहिने किनारे पर बसाया था। महमूदपुर, टीकरी और दूसरे स्थानों में बौद्ध कालीन भग्नावशेष मिले हैं। मुसलमानों के आक्रमण के पहले यहां भार लोग रहते थे जिनपर कन्नौज के राजा राज्य करते थे। ११९२ में जैयचन्द्र के पतन के बाद भी भार लोग इस जिले में कुछ समय तक स्वच्छन्द राज्य करते रहे। राजपूत और मुसलमान दोनों ही उनसे घृणा करते थे। जहां इस समय कई पुराने खेरे हैं वहां पहले इनके किले बने थे।

दिल्ली के सुल्तानों ने अवध और मानिकपुर पर बहुत पहले ही अधिकार कर लिया था। लेकिन सुल्तानपुर कुछ समय तक उनके आक्रमण से बचा रहा। जो आक्रमण हुये इनसे राजपूतों की शक्ति कम न हुई। १३९४ में दिल्ली सुल्तान फीरोज ने अपने वजीर ख्वाजा जहां को जौनपुर का राज्य सौंपा और उसे मालिक अशर्फ की उपाधि दी। उसका अधिकार द्वाब के निचले भाग के साथ साथ गङ्गा के उत्तर वाले भाग पर बढ़ गया। वह एक प्रकार का स्वाधीन शाह हो गया। सुल्तानपुर जौनपुर राज्य का अङ्ग बन गया। सिकन्दर लोदी की विजय के समय तक यही दशा रही। इब्राहीम शाह ने राजपूतों को मुसलमान बनाया। शर्की बादशाहों के सिक्के गोमती के किनारे धोपाप और कई स्थानों पर मिलते हैं। यहीं शाहगढ़ का पुराना किला था शर्की राज्य के पतन के बाद लोदी शासन में यहां कोई विशेष घटना नहीं हुई। हुमायूं के भागने के बाद सूरी राजाओं ने सुल्तानपुर जिले में कई किले बनवाये। शेरशाह ने शासन में भी सुधार किया। अकबर के समय में सुल्तानपुर अवध सूबे का अङ्ग बना। कई मुहालों पर राजपूतों का अधिकार बना रहा। कुछ भाग उन राजपूतों को मिले जो मुसलमान हो गये थे। लखनऊ की सरकार में ५५ मुहाल थे। इनमें अमेठी और इसौली इस जिले में थे। गोमती के किनारे एक किला था। इसमें ५० सवार और २००० पैदल सिपाही रहते थे। इस पर बचगोती और दूसरे राजपूतों का अधिकार था। गढ़ अमेठी कुछ छोटा था। यहां बहमनगोती या बंधलगोती राजपूतों का अधिकार था। अमेठी में भी किला था यहां २२० सवार और ५५० पैदल सिपाही रहते थे। शाहजहां के समय में नूरजहां का भतीजा अहमद बेग खां को यहां की जागीर मिली। इसके बाद यह मानिकपुर की जागीर में मिला दी गई। गौराजामुन जैस में शामिल था। कठोत में किला बना वह आज कल का मीरनपुर है। वर्तमान जिले के कुछ

भाग जौनपुर में शामिल थे। अकबर के बाद दो शताब्दी तक सुल्तानपुर का जिला का कुछ भाग अवध में और शेष भाग द्वाब में मिला रहा। तिलोई के राजा मोहन सिंह को दबाने के लिये सादात खां आगरे से अवध को भेजा गया। मोहन-सिंह के राज्य का भाग अवध और कुछ इलाहाबाद के सूबे में था। सादात खां ने राजा मोहन सिंह को मार डाला। आगे चल कर उसके उत्तराधिकारी सफदर जंग ने अवध के साथ इलाहाबाद पर भी अधिकार कर लिया। सफदर जंग के मरने पर कुछ समय तक अवध और इलाहाबाद के सूबे अलग रहे। अवध शुजाउद्दौला के हाथ में था। इलाहाबाद मुहम्मद कुली के हाथ में था। १७६५ में इलाहाबाद दिल्ली। सम्राट को मिला। अन्त में इलाहाबाद का सूबा तोड़ दिया गया। जैसे, चांदा और कढ़ोत के परगने अवध में मिला दिये गये। सादात अली खां ने पुराने विभागों (सूबों और सरकारों) के स्थान पर निजामत और चकलों में प्रान्त को बांटा। यही विभाग ब्रिटिश राज्य में आजाने के समय तक प्रचलित रहे। सुल्तानपुर एक निजामत का केन्द्र स्थान बना। यह निजामत उत्तर में घाघरा के किनारे से दक्षिण में इलाहाबाद जिले तक फैली हुई थी। इसमें निजामत में सुल्तानपुर अल्देमऊ, जगदीशपुर और प्रतापगढ़ के ४ चकला शामिल थे। १७६३ से १८५६ तक जौनपुर में २७ नाजिम हुये। इनमें कुछ दो बार हुये। कुछ थोड़े समय तक ही रहे। इनमें शीतल प्रसाद (१७६४ से १८००) मीर गुलाम हुसेन (१८१२ से १८१४) फिर १८१८ से १८२३ तक) राजा दर्शन सिंह १८२८ से १८३४ तक फिर १८३७ से १८३८) और उसके पुत्र राजा मानसिंह १८४५ से १८४७ तक विशेष उल्लेखनीय हैं। इस समय बड़े बड़े जमींदार शक्ति-शाली हो गये थे। १८५६ में ब्रिटिश राज्य में मिल जाने पर सुल्तानपुर जिले में कई विशेष घटना न हुई। १८५७ में गदर आरम्भ हुआ। गदर के डर से गोरे अफसरों ने अपने स्त्री बच्चों को इलाहाबाद भेज दिया था। कुछ अमेठी के राजा माधोसिंह के किले में रख दिये गये। कुछ गोरों ने जमींदारों के यहां शरण ली। ६ जून को सिपाहियों ने विद्रोह आरम्भ किया। एक सिपाही ने कर्नल फिशर को गोली से उड़ा दिया। उसके बाद सिपाही दूसरे गोरे अफसरों पर टूट पड़े। अफसरों को समाप्त करके विद्रोहियों ने उनके घरों को जलाया और लूटा। इसके बाद सिपाही लखनऊ और दरियाबाद (बाराबंकी) की ओर चले गये। सुल्तानपुर में कुछ समय तक शान्ति रही। गदर में दियरा के राजा ब्रिटिश सरकार का पूर्ण भक्त बना रहा। उसने गोरों को अपने यहां शरण दी। फैजाबाद के मौलवी ने जब गोरों को भिजवाने के लिये सन्देश भेजा तब उसने इनकार कर दी। उसने गोरों को बनारस भिजवा दिया और जौनपुर के अधिकारियों को विद्रोह के दबाने में सहायता दी। लेकिन जब उसने खुफिया पुलिस के अफसर आनेगो साहब को अपने यहां बुलाया। तो लार्ड कैनिंग ने उसे दियरा न जाने दिया। अमेठी के राजा (माधोसिंह) ने गोरों को अपने यहां शरण दी। उन्हें इलाहाबाद भेज देने के बाद उसने विद्रोहियों का पक्ष लिया। ऐसा ही हसनपुर के राजा हुसेन अली और कन्हपुरियों ने किया। गुरखा सिपाही आजमगढ़ से जौनपुर में ८ सितम्बर १८५७ को पहुँचे। इसके बाद वहां ब्रिटिश राज्य स्थापित हो गया। ३१ अक्तूबर को कर्नल नाटक ने चांदा के विद्रोहियों को हराया। १८५८ के फरवरी मास में जंगबहादुर और गुरखों के आने पर सुल्तान-पुर के निवासी भाग गये। एक ही दिन में सारा नगर खाली हो गया। गुरखों ने घर लूटे। गांव वालों ने घरों की लकड़ी निकाल कर फौजी पड़ाव में जलाने के लिये बेच दी। फरवरी में चांदा के ऊंची सराय और किले के विद्रोहियों से छीन लिया गया। उनके नेता मेहदीहसन ने लखनऊ के मार्ग में स्थित भदैयां के किले पर अधिकार करने की सोची लेकिन अंग्रेजी सेना ने इसे पहले ही ले लिया। इसके बाद सुल्तानपुर की लड़ाई आरम्भ हुई। २५००० विद्रोही २५ तोपों के साथ गोमती में मिलने वाले नालों में इकट्ठे हुये। विद्रोही सेना का वामपक्ष सुल्तानपुर के बाजार में था। मध्यभाग उजड़े घरों के पीछे था। दाहिना पक्ष ऊँची भूमि के पास गांव और बहादुरगंज की पक्की सराय के सामने था। अधिकतर तोपें उस स्थान पर थीं

जहां लखनऊ को जाने वाली सड़क नाले को पार करती है। छः तोपें सराय में थीं। ३ तोपें एकदम दाहिने सिरे पर थीं। नाले की तली गहरी थी। यह पेड़ों से ढका था। २३ फरवरी को सवेरे ६ बजे अंग्रेजी सेनापति ने विद्रोहियों की स्थिति देखी। अंग्रेजी सेनापति ने छिपकर जंगल की ओर से और बाईं ओर से विद्रोहियों पर हमला किया। इसमें विद्रोही बुरी तरह हारे उनकी २१ तोपें छिन गईं। २५ फरवरी को गोमती के किनारे छिपे हुए ७०० विद्रोहियों पर धावा बोला गया। विद्रोही हारे और गोमती के पार भाग गये। मुसाफिरखाने से डेढ़ मील की दूरी पर कन्दू नाले के पास गुरखों ने मेहदी हसन के विद्रोहियों को छिन्न भिन्न कर दिया। इस सेना ने पहले जगदीशपुर के पास पड़ाव डाला फिर यह लखनऊ की ओर चली गई। ४ नवम्बर १८५८ को अमेठी का किला घेर लिया गया। राजा माधोसिंह से आत्म-समर्पण करने के लिये कहा गया और उसे विश्वास दिलाया गया कि उसकी सब जायदाद उसके अधिकार में रहेगी। राजा सन्धि करना चाहता था लेकिन उसे किले के भीतर स्थित विद्रोही सिपाहियों का डर था। जब ६ नवम्बर को सेना किले के पास पहुँच गई तब दूसरे दिन राज ने आत्मसमर्पण कर दिया। उसके सिपाही रात में ही दूसरे मार्ग से भाग गये थे। किला छीन कर नष्ट कर दिया गया। गदर के शान्त हो जाने पर पुराना सुल्तानपुर नष्ट कर दिया गया। नया सुल्तानपुर गोमती के दक्षिण में बसाया गया। कुछ समय तक यहां ब्रिटिश छावनी भी रही। १८६१ में सेना हटा ली गई और सुल्तानपुर में छावनी समाप्त हो गई। काजी लोगों पर अफसरों के वध करने के दोष में मुकदमा चलाया गया उनकी जायदाद छीन ली गई। उनके १२ गांव दियरा के राजा और दूसरों को दे दिये गये। मुकदमा २ वर्ष तक चला अन्त में वे छोड़ दिये गये लेकिन जब्त की हुई जायदात नहीं लौटाई गई। इस प्रकार इसाकपुर के पुराने ताल्लुके का अन्त हो गया। गदर के बाद सुल्तानपुर में कोई विशेष घटना न हुई।

बलदेपुर एक बहुत ही छोटा गांव कादीपुर से २ मील दक्षिण-पश्चिम में गोमती के बायें किनारे के पास स्थित है। इसके पड़ोस में भार किले और दूसरे प्राचीन भग्नावशेषों के चिन्ह मिलते हैं। कहते हैं शर्की सुल्तानों ने इसे नष्ट कर दिया था। कुछ मुसलमानी मकबरों के भी यहां खंडहर हैं।

अमेठी के राजा साहब रामनगर में रहते हैं। रामनगर या जंगल-रामनगर रायपुर से मुसाफिर खाने को जाने वाली सड़क पर रायपुर से २ मील उत्तर की ओर और सुल्तानपुर से २० मील दूर है। रायपुर से मुन्शी गंज तक अमेठी के राजा ने इस सड़क को पक्की करवा दिया है। मुन्शी गंज के पास ही धानूपुर से गौरी गंज को जानेवाली सड़क मिलती है। यहां राजा साहब का महल जिले भर में सब से बड़ा भवन है। गांव से पश्चिम की ओर वन है। यहां राजा साहब का खुलवाया हुआ एक अंग्रेजी जूनियर हाई स्कूल है।

रायपुर-अमेठी गांव अमेठी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह तीन गांवों के मिलने से बना। यहां होकर रायबरेली से सुल्तानपुर को सड़क जाती है। यह सुल्तानपुर से १८ मील दूर है। यहां अमेठी रेलवे स्टेशन है। रायपुर अमेठी राज्य में है। राजा साहब यहां से २ मील दूर रामपुर में रहते हैं। राजा साहब के पूर्वज रायपुर फुलवारी में रहते थे। वहीं उनके किले के खंडहर हैं। इसका एक भाग इस समय भी तोप खाना कहलाता है। रायपुर में तहसील के अतिरिक्त थाना, डाकखाना और स्कूल है। १८९८ में रेल के खुल जाने से यहां का व्यापार बढ़ गया।

बंधुआ कलां सुल्तानपुर से ६ मील पश्चिम की ओर है लखनऊ से जौनपुर को जानेवाली सड़क यहां से आध मील उत्तर की ओर है। यह हसनपुर के राजा का गांव है जो यहां से १ मील उत्तर की ओर रहता है। हसनपुर से बंधुओं को एक छोटा मार्ग गया है। यहां पीतल और फूल के बर्तन बनते हैं। हुसेन गंज का बाजार पूर्व की ओर सड़क के पास है। यहाँ बानन साही बाबा सहज राम की संगत या समाधि है। संगत के महन्त को खर्च के लिये पड़ोस के गांवों में भूमि मिली हुई है। महन्त और उसके चेले बंधुआ में, रहते हैं। बाजार शुकुला उत्तर-पूर्व में बाराबंकी की सीमा

के पास स्थित है। यहां होकर इन्होंना से रुदौली (बाराबंकी) को सड़क जाती है। यहां से एक सड़क पूर्व की ओर चलकर रायबरेली से फैजाबाद को जानेवाली सड़क से मिल जाती है। यहां थाना और बाजार है। बाजार में शक्कर और चमड़े का व्यापार बहुत होता है।

भदैयां गांव लखनऊ से जौनपुर को जानेवाली सड़क पर सुल्तानपुर से १० मील दक्षिण-पूर्व की ओर गोमती के दाहिने किनारे से २ मील दक्षिण की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल और पड़ाव है।

चांदा गांव लखनऊ से जौनपुर को जानेवाली सड़क पर सुल्तानपुर से २५ मील दूर है। यहां बाजार, स्कूल और सराय है। किला छोड़ दिया गया है। गदर में यहां लड़ाई हुई थी।

चन्दौर गांव गोमती के उत्तरी किनारे पर सुल्तानपुर से १५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है।

दियरा गांव गोमती के बायें किनारे पर कादीपुर से ६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां दियरा के राजा साहब का निवास स्थान है। यहीं गदर में भागकर आये हुये गोरों को राजा साहब ने शरण दी थी। कहते हैं रामचन्द्र जी ने यहां दान किया था और गोमती को पार किया था। इसी से इसे पहले दीप नगर कहते थे। यहां गोमती स्नान का बड़ा मेला होता है। पास वाले हरसेन गांव में रामचन्द्र जी ने शयन किया था।

धोपाप गोमती के दक्षिणी किनारे पर लम्भुआ से दियरा को जानेवाली सड़क के पास स्थित है। घाट शाहगढ़ गांव में बने हैं। इसके दो किलों और एक प्राचीन नगर के भग्नावशेष हैं। यह गोमती या धूतवापा नदी के किनारे स्थित है। विष्णु पुराण में गोमती का धूतवापा नाम से उल्लेख किया गया है। कहते हैं यहां नदी के किनारे शेरशाह सूरी ने किला बनवाया था। गोमती नदी किले के पास एक लम्बी मोड़ बनाती है। किले में एक हिन्दू मन्दिर है। यहां कुशन, बौद्ध और पठानी सिक्के मिलते हैं। किले के पीछे टूटा फूटा मदरसा है। किले के नीचे धोपाप घाट है। वर्तमान घाट को दियरा के राजा साहब ने बनवाया था। उन्हीं का यह गांव है। यहां चैत और कार्तिक में मेला लगता है।

दोस्तपुर मझुई नदी के किनारे कादीपुर तहसील का एक मात्र कस्बा है। नवाबी शासन काल में यहां मझुई के ऊपर पक्का पुल बनाया गया। दोस्तपुर, सुल्तानपुर से २५ मील दूर है। पुराने समय में यह और भी अधिक बड़ा था और मुसलमानी केन्द्र था। यहां थाना और जूनियर हाई स्कूल है। बाजार में साधारण व्यापार होता है।

द्वारका कोई गांव नहीं है। यह उस स्थान का नाम है जहां गोमती के बायें किनारे पर पहले किला बना था। यह म्योपुर के राजकुमारों का केन्द्र था। संग्रामसिंह और दूसरे राजकुमार द्वारका के किले से पड़ोस के शत्रुओं पर चढ़ाई किया करते थे। किले के नीचे से गुजरने वाली नावों को वे लूट लिया करते थे। दो बार जौनपुर से सुल्तानपुर के सिपाहियों का जिन नावों पर वेतन भेजा गया उन्हें भी उन्होंने रोक लिया। १८१२ में इस किले को लेने के लिये सुल्तानपुर से सेना भेजी गई। कुछ किले को लेने के बाद १८३० तक यहां ब्रिटिश सेना रही इसके बाद पहलवान सिंह के बेटे फतेह सिंह ने फिर किले पर अधिकार कर लिया। १००० साथियों की टोली बनाकर वह डाकू हो गया। गदर के बाद किला नष्ट कर दिया गया और पड़ोस का कंटीला जंगल साफ कर लिया गया। इस समय भी इसके खंडहर दिखाई देते हैं।

गौरा गांव गौरी गंज से जगदीशपुर को जानेवाली सड़क पर जामुन से २ मील उत्तर की ओर है। एक सड़क मुसाफिर खाना को जाती है। गौरा कटरी राज्य का एक गांव है। इसके पूर्व में एक झील है जो सिंचाई के काम आती है। एक ऊंचे टीले पर पहले किला बना था। इस समय यहां एक प्राइमरी स्कूल है। गौरा गंज रायबरेली से अमेठी को जाने वाली सड़क पर सुल्तानपुर से २५ मील दूर है। यहां का बाजार अमेठी के राजा माधोसिंह ने बनवाया था। यह जिले में अनाज की सब से बड़ी मंडी है। यहां थाना, डाकखाना, और स्कूल है। पड़ोस में गहरे तालाब हैं।

हालापुर रायबरेली से फैजाबाद को जानेवाली सड़क के दक्षिण में स्थित है। यहां से ३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर आसघाट में गोमती के ऊपर लकड़ी का पुल बना है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। हसन पुर गांव सुल्तानपुर से ४ मील पश्चिम की ओर है। लखनऊ को जाने-वाली सड़क कुछ दक्षिण की ओर है। यह शेरशाह के समय में पुराने नर्वल गांव के स्थान पर बसाया गया था। यहां का नाला गोमती में मिलता है। यहां हसनपुर के जागीरदार रहते हैं। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। दक्षिण की ओर हसन खां के मकबरे के पास इमाम गंज का बाजार है।

इसौली का पुराना मुसलमानी कस्बा गोमती के मोड़ पर बसा है। नवाबी समय में इसौली के सैयद ऊंचे सरकारी ओहदों पर नियुक्त होते थे। कहते हैं यहां का पुराना किला नदी के ऊंचे टीले पर भार लोगों ने बनवाया था। इस समय इसके यहां खंडहर हैं। पूर्व की ओर दरगाह है जहां एक बार औरङ्गजेब आया था। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

जगदीशपुर को निहालगढ़ भी कहते हैं। निहाल गढ़ (किला) भाले सुल्तान निहाल खां ने १७१५ में बनवाया था। कच्चा गढ़ या किला टूट गया। यहीं नया गांव बस गया। पुराना गांव (जगदीश पुर) का महत्व कम हो गया। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। जगदीशपुर में लखनऊ से जौनपुर को और रायबरेली से फैजाबाद को जाने-वाली सड़कें मिलती हैं। बाजार में अनाज, कपड़ा और पड़ोस के ठठेरों के बनाये हुये पीतल के बर्तन बिकते हैं।

कादीपुर एक बहुत ही छोटा गांव है। मध्यवर्ती स्थिति होने के कारण यह एक तहसील का केन्द्र-स्थान बनाया गया। सुल्तानपुर से जौनपुर की सीमा के पास सुरपुर को और प्रतापगढ़ से अकबर-को जानेवाली सड़कें यहां मिलती हैं। दक्षिण की ओर गांव गोमती के किनारे तक फैला हुआ है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है।

किशनी गोमती के ऊँचे दाहिने किनारे पर एक पुराना मुसलमानी कस्बा है। यह गोमती में मिलने वाले नालों से घिरा हुआ है। यह सुल्तानपुर से ४५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। ४०० वर्ष पहले यहाँ राजपूतों का किला था। उनके राजा किशन चन्द की स्मृति में यह नाम पड़ा। खानजादे मुसलमानों ने राजपूतों को हटाकर अपना अधिकार कर लिया।

कुरेभर इलाहाबाद से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर सुल्तानपुर से ११ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। एक छोटा बाजार भी है। यह कुरवर के राजा का गांव है।

कुरवर गांव सुल्तानपुर से ८ मील उत्तर-पश्चिम में पक्की सड़क पर स्थित है। यहीं राजा का महल अस्पताल प्राइमरी स्कूल और गोमती का घाट है।

लम्भुआ गांव सुल्तानपुर से जौनपुर को जाने वाली सड़क पर सुल्तानपुर से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां थाना, प्राइमरी स्कूल और छोटा बाजार है।

पहले यहां नील की कोठी भी थी। मुसाफिर खाना इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है और लखनऊ से जौनपुर को जाने वाली सड़क पर सुल्तान पुर से २२ मील दूर स्थित है। यहां तहसील, थाना, अस्पताल और स्कूल है।

सुल्तानपुर गोमती के किनारे पर एक छोटे प्राय-द्वीप पर स्थित है। यह प्रायद्वीप पर बसा है। यह प्रायद्वीप गोमती के मुड़ने से बन गया है। कहते हैं प्राचीन नगर को रामचन्द्र जी के पुत्र कुश ने बसाया था। इसी से इसे कुशपुर या कुश भवनपुर कहते थे। चीनी यात्री ह्वानसांग ने यहां अशोक के समय का बना हुआ एक जीर्ण स्तूप देखा था। यहाँ से ५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर महमूद पुर के पास इस समय भी बौद्ध भग्नावशेष मिलते हैं। जहां वर्तमान नगर की सिविल लाइन गोमती की सूखी भूमि पर बनी है वहां पहले छावनी थी। बंगले नालों के बीच में समतल भूमि पर बने हैं। यहां कचहरी, थाना, तहसील और अस्पताल है। यहीं दो हाई स्कूल और जूनियर हाई स्कूल हैं।

कहते हैं मुसलमानों से पहले यहां भार लोगों का अधिकार था। एक बार दो सैयद मुसलमान

सौदागरों के कुछ घोड़े छीन लिये और सौदागरों को मार डाला। इस पर अलाउद्दीन (शहाबुद्दीन) गोरी ने यहां चढ़ाई की। घेरा साल भर पड़ा रहा। लेकिन कोई फल न हुआ। अन्त में थकने का बहाना करके अलाउद्दीन ने इच्छा प्रगट की कि भार राजा भेंट लेकर उसकी सेना को लौट जाने दे। राजा राजी हो गये। कई सौ ढकी हुई और सजी हुई पालकियाँ भेंट के रूप में किले के भीतर भेजी गईं। संकेत पाकर इनमें से सुसज्जित सिपाही उछल पड़े और इस प्रकार अचानक छापा मार कर उन्होंने किले पर अधिकार कर लिया।

कारबार

लगभग पूरा प्रान्त एक समतल मैदान है जिसका प्रत्येक भाग उपजाऊ हैं, यहां तक कि ऊसर में भी बहुत सी रेह पाई जाती है। गंगा नदी दक्षिण-पश्चिम में ३० मील तक इस जिले में बहती है। लोनी नदियां भी हैं। अन्य छोटी नदियां दौर, पैया, पीली, सकरनी, बकुलाही हैं।

झील—बेती झील, नैया झील, नवरेह झील। अन्य झीलें शाहपुर, अधर गंज, दाऊद पुर, मतरसन्द, सकरा, रंगौली, सिरसी, निवारी, रामपूरा, भगदरा और ढेढ़वा हैं। कुंडा में भी कई स्थानों पर झीलें पाई जाती हैं। इन झीलों से सिंचाई होती है।

इस प्रान्त में घने जङ्गल नहीं हैं। परन्तु छिवलों (पलासों) से भरे हुये छोटे मोटे जङ्गल कहीं-कहीं पाये जाते हैं। बबूल भी नदियों के किनारे तथा बाँधों पर अधिकता से मिलता है। लगभग ७००० एकड़ भूमि बागों से भरी हुई है। जिनमें कहीं-कहीं तो एक लाख तक पेड़ पाये जाते हैं और उन बागों का नाम। 'लखपेड़ा' पड़ गया है। सधारणतः इनमें महुआ तथा आम ही के पेड़ होते हैं। इस जिले में अवध के अन्य जिलों की अपेक्षा महुआ सबसे अधिक पाया जाता है। अन्य वृक्ष कटहल, बेल, शरीफा हैं जिनका फल खाया जाता हैं। घास अधिक नहीं होती अतः पशुओं को पुआल, भूसा (बजरा और ज्वार तथा मक्का गेहूँ जौ इत्यादि) खिलाया जाता है। गङ्गा के किनारे सरपत अधिक पाई जाती हैं। जिसके मूंज से रस्सियां इत्यादि बनाई जाती हैं।

(१) मकान बनाने की वस्तुयें

(अ) ईंट, खपरे और चूना आवश्यकतानुसार ठेकेदारों द्वारा बनाई जाती हैं। खपड़े कुम्हारों द्वारा सारे प्रान्त में बनाये जाते हैं।

(ब) कंकड़ अकसर ऊसर भूमि के नीचे की तलों में प्रान्त भर में पाया जाता है।

(२) रसायनिक वस्तुयें

(अ) रेह—अक्सर ऊसर भूमि में पाई जाती है। उत्तर में तो कम परन्तु प्रान्त के दक्षिणी भागों की ऊसर भूमि अक्सर रेह से भरी होती है। लगभग १२५००० एकड़ भूमि रेह से ढकी हुई है। इस का अधिक भाग कुंडा तथा पट्टी की तहसील में पाया जाता है।

(ब) नमक—पहले लगभग एक लाख रुपये का नमक बनाया जाता था। परन्तु अब शायद कहीं कहीं बनाया जाता है।

(स) शोरा—पहले शोरा अधिक बनाया जाता था परन्तु योरुपीय महायुद्ध के पश्चात् से बहुत कम बनता है। क्योंकि इसका दाम घट गया है परन्तु जमीदारों ने इस पर टैक्स बढ़ा दिया है। बनाने वाले लुनिया हैं जो दूसरे पेशों से अधिक रुपया पैदा कर सकते हैं।

(द) नील—लगभग ३२७ एकड़ भूमि में जमीनदारों तथा ताल्लुकदारों के यहां इसकी खेती होती है और इसके छोटे मोटे कारखाने भी हैं। नील कानपुर तथा कलकत्ता इत्यादि शहरों को भेजी जाती है।

(३) अन्न

गेहूँ सात लाख मन से भी अधिक पाया जाता है। चावल, ज्वार, बाजरा तथा अन्न सभी आवश्यकीय वस्तुयें उगाई जाती हैं। आटा पीसने के लिये स्थान-स्थान पर चक्कियां पाई जाती हैं।

(४) शीशा

शीशे की चूड़ियां अब भी बनाई जाती है यद्यपि फीरोजाबाद इत्यादि से अधिक चूड़ियां मंगाई जाती

हैं। टैक्स इत्यादि बढ़ जाने से इसका उद्यम घट गया है। शीशा पहले रेह से बनते हैं और उसमें अक्सर नीला रंग देकर चूड़ी बनाते हैं।

अगर होशियार आदमी इस कार्य्य को शिक्षा पाने के बाद शुरू करें और उन्हें धनिकों की प्रर्याप्त सहायता प्राप्त हो तो इसका व्यापार अधिक उन्नति कर सकता है।

५—पीतल के बर्तन

ठठेरा लोग अकसर पीतल की बटुली और पतीली इत्यादि बनाते हैं। नवाब गंज के निकट भवानीगंज में इसका कुछ काम होता है परन्तु सगठित रूप से प्रान्त में कहीं कहीं कार्य्य होता है :

६—चमड़ा

लगभग ४६८८६ खालें प्रति वर्ष मिल सकती हैं जो कानपुर भेजी जाती हैं। जिले में सिंचाई के लिये मोट तथा चरसा बनाया जाता है। कहीं कहीं जूते भी बनाये जाते हैं परन्तु बने हुये चमड़े का कार्य्य कहीं नहीं होता है।

७—अन्य वस्तुयें

(१) मछली मारना—लगभग ८५ प्रतिशत मनुष्य माँस भक्षी हैं और मछलियों की माँग अधिक है। ये मछलियाँ भीलों, तालाबों तथा नदियों में मारी जाती हैं और धीमर तथा गुरिया जाति इस कार्य्य को अधिक करते हैं! मांस से सस्ती होने के कारण लोग अकसर मछली ही खाते हैं। ये अक्सर बर्फ में बन्द कर बाहर भी भेजी जाती है।

(२) जेल में बनाई हुई वस्तुयें :—

(१) मूंज द्वारा बाध बटा जाता है जो चारपाई बिनने के काम में आता है घर के ठाट बांधने के काम में भी आता है।

(२) बैंत बनाया जाता है।

(३) दस्ती कपड़े, चिक, दरी और नेवाड़ इत्यादि जेलों के अन्दर बनाई जाती हैं।

जेलों में कम से कम सादी मशीनों का इस्तेमाल तो अवश्य होना चाहिये ताकि कहीं कोई न कोई कार्य्य अवश्य ही सीख लें। दुःख है कि करघे इत्यादि का भी जेलों में व्यौहार नहीं किया जाता। पशुओं इत्यादि की हड्डियाँ लगभग ६००० मन इस प्रान्त से मिल सकती है। लगभग ५५००० सींगे भी मिल सकती है।

८—तेल

यद्यपि महुओं की निश्चित संख्या नहीं विदित है तथापि अवध के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा यहां अधिक होने के कारण कुसुली का तेल अधिक मात्रा में ग़रीबों द्वारा तैयार किया जाता है। बरें, नीम, अल्सी और रेंडी का तेल भी तैयार किया जाता है।

अन्य वस्तुयें

(१) करघों द्वारा गाँवों में जुलाहे रुई कात कर कपड़े बुनते हैं।

(२) रजाइयों के लिये लिहाफ बनाये और रंगे जाते हैं।

(३) सुतली द्वारा टाट की पट्टी बनाई जाती है।

(४) भेड़ों के द्वारा अच्छे और सस्ते कम्मल तैयार किये जाते हैं। शेष ऊन कानपुर भेज दिया जाता है।

रायबरेली

रायबरेली अवध के दक्षिण में लखनऊ कमिश्नरी का धुर दक्षिणी जिला है। यह २५.४६ और २६.३६ अक्षांशों और ८०.४१ और ८१.३४ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। रायबरेली जिले का आकार कुछ विषम है। इसके उत्तर में लखनऊ और बाराबंकी पूर्व में सुल्तानपुर दक्षिण-पूर्व में प्रतापगढ़ है। रायबरेली के दक्षिण में गङ्गा नदी है जो इसे फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों से अलग करती है। पश्चिम में उन्नाव का जिला है। गङ्गा के इधर-उधर हट जाने से रायबरेली जिले का क्षेत्रफल भी कुछ घटता बढ़ता रहता है (क्योंकि गङ्गा की गहरी धारा दोनों ओर के जिलों में सीमा बनाती है) औसत क्षेत्रफल १७४८ वर्गमील है। रायबरेली एक कृषि प्रधान जिला है। इनमें अधिकतर गांव हैं। सब से बड़ा कस्बा रायबरेली है। इसकी जन-संख्या २०००० से कम है। जैसे सालोन और डलमऊ दूसरे कस्बे हैं। शेष १७४० गांव हैं। किसान अपने खेत को सुधारने में लगा रहता है। और अपने खेत के पास ही रहना पसन्द करता है इससे गांव छोटे-छोटे हैं। जहां किसान खेत से दूर बड़े गांव में रहता है। वहां खेती उन्नत दशा में नहीं है।

रायबरेली जिले का अधिकतर भाग चपटा मैदान है। शेष भाग कुछ विषम या लहरदार हैं। दो नदियों के बीच का भाग ऊंचा है। उत्तर-पश्चिम में अधिक से अधिक उंचाई समुद्र-तल से ३६५ फुट है। दक्षिण-पूर्वी सिरा २८५ फुट ऊँचा है इतना ढाल होने के कारण वर्षा जल शीघ्रता से बह जाता है। इसी से झीलें अधिक बड़ी नहीं हैं। छोटी छोटी झीलें गरमी में सूख जाती हैं।

गंगा जिले की सब से बड़ी नदी है। यह पश्चिमी सिरे पर बकसर घाट से कुछ ही दूर मलिपुर गांव के पास रायबरेली जिले में प्रवेश करती है। यहां से यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। बैरुआ गांव के पास यह कुछ उत्तर को मुड़ती है। रलपुर गांव होती हुई यह खजुर गांव से डलमऊ तक कुछ पूर्व-उत्तर की ओर हो जाती है। डलमऊ परगने में गंगा का मार्ग प्रायः सीधा है। गुकना के पास यह कुछ दूर तक दक्षिण की ओर मुड़ती है। नौबस्ता घाट से आगे कटरा बहादुर गंज को यह सीधी हो जाती है इसके आगे यह रायबरेली जिले को छोड़कर प्रतापगढ़ और इलाहाबाद जिलों के बीच में सीमा बनाती है रायबरेली की सीमा के पास गंगा की लम्बाई ५४ मील है। इसकी तली रेतीली है। तली की चौड़ाई दो मील है। कहीं-कहीं पश्चिम की ओर कुछ अधिक है। गंगा में सात आठ सौ मन बोझ लादने वाली नावें साल भर चल सकती हैं। लेकिन रेल के खुल जाने से नावों का व्यापार
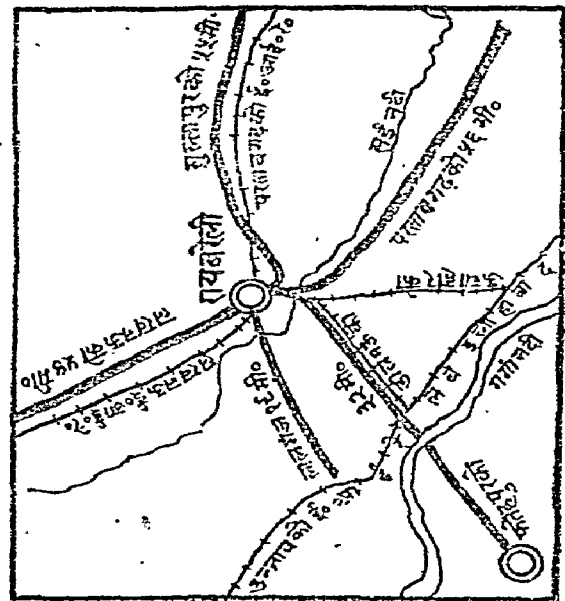
कम हो गया है। रायबरेली जिले में गङ्गा के ऊपर कोई पुल नहीं बना है। गङ्गा को पार करने के लिये घाटों पर नावें रहती हैं। इस जिले में गङ्गा में मिलने वाली सहायक नदियां बड़ी नहीं हैं। चोब नदी इटौरा बुजुर्ग के पास निकलती है। कुछ मील दक्षिण की ओर बहने के बाद शाहजहांपुर के पास गुकना घाट से १ मील ऊपर गंगा में मिल जाती है। लोनी नदी पश्चिम में उन्नाव जिले में निकलती है। सिमरी के पास यह उन्नाव जिले में प्रवेश करती है। दक्षिण-पश्चिम की ओर टेढ़ी चाल से बहती हुई डलमऊ के पश्चिम में यह

गंगा में मिल जाती है। गरमी में यह प्रायः सूख जाती है। एक छोटा नाला मुस्तफाबाद के पास से निकल कर दक्षिण की ओर बहता हुआ गंगा में मिलता है।

सई नदी जिले के मध्य में होकर बहती है और जिले को दो प्रायः समान भागों में बांटती है। सई नदी हरदोई जिले में निकलती है। कुछ दूर तक यह लखनऊ और उन्नाव जिलों के बीच में सीमा बनाती है। उत्तरी-पश्चिमी कोने पर रामपुर सुदौली के पास सई नदी रायबरेली जिले में प्रवेश करती है। यह बहुत ही टेढ़ा मार्ग बना कर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। पहले ६ मील तक यह दक्षिण की ओर बहती है। रायबरेली शहर के पश्चिम की ओर बहती हुई यह पूर्व की ओर मुड़ती है। पुरानी छावनी के दक्षिणी सिरे को छूती हुई यह फिर मोड़ बनाकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। कान्ह पुर प्रतापगढ़ के (रामपुर कसिया के सामने) यह रायबरेली जिले को छोड़ देती है। रायबरेली जिले में सई नदी का समस्त मार्ग ६० मील से ऊपर है। वर्षा ऋतु में यह अधिक गहरी और चौड़ी हो जाती है। गरमी में इसकी गहराई प्रायः २ फुट रह जाती है। सई के किनारे ऊचे और सपाट हैं। पानी का तल पड़ोस की भूमि से बहुत नीचा है। इसलिये कुछ भागों को छोड़कर यह इस जिले में सिचाई के काम नहीं आती है। सई के ऊपर रायबरेली के पास एक सुन्दर पुल बना है। यह १८६७ में बनाया गया था। डलमऊ के पास नवाबी समय का पक्का पुल बना है। बसेहा नदी पुरई के पास सई के दाहिने किनारे पर मिलती है। यह खीरों परगने के दलदलों से निकलती है और गरमी में सूख जाती है। लेकिन वर्षा ऋतु में यह फैल कर बड़ी नदी हो जाती है। लोह नदी उन्नाव जिले के एक बड़े ताल से निकलती है। गुरबक्सगंज से ३ मील उत्तर-पूर्व की ओर बरयार गांव के पास यह सई के दाहिने किनारे पर मिल जाती है। चोव नदी बाराडीह के पास सई में मिलती है।

जिले की शेष नदियां बहुत छोटी हैं। इधर की इन छोटी नदियों को नैया नाम से पुकारते हैं। जिस गांव के पास होकर नदी बहती है। उसका नाम भी जुड़ जाता है। कठवारा नैया कठवारा गांव के पास मुड़कर सई में मिलती है। नैया महाराज गंज के पास बहकर सई में मिलती है।

गंगा का कछार गंगा की धारा और ऊंचे किनारे के बीच में स्थित है। इसकी चौड़ाई कहीं दो मील है कहीं कुछ भी नहीं है। वर्षा ऋतु में यह पानी में डूब जाती है। वर्षा के अन्त में इसमें रबी की फसल अच्छी होती है।

गङ्गा के ऊंचे किनारे के ऊपर भीतर की ओर गङ्गा का ऊंचा मैदान या उपरहार है। इस भाग का पानी नालों के द्वारा सीधे गङ्गा या लोनी नदी में बह आता है। गङ्गा के पास चलकर पूर्व की ओर इसकी चौड़ाई बहुत कम हो जाती है। डलमऊ के पास इसकी चौड़ाई १ मील से अधिक नहीं है।

गङ्गा का ऊंचा मैदान या उपरहार है। इस भाग का पानी नालों के द्वारा सीधे गङ्गा या लोनी नदी में बह आता है। गङ्गा के पास चलकर पूर्व की ओर इसकी चौड़ाई बहुत कम हो जाती है। डलमऊ के पास इसकी चौड़ाई १ मील से अधिक नहीं है। पश्चिम की ओर बीच-बीच में कुछ निचले भाग हैं। जिनमें वर्षा जल इकट्ठा हो जाता है और धान की खेती होती है। डलमऊ और सालोन में इसकी औसत चौड़ाई चार मील है। अधिक पूर्व की ओर यहां का वर्षा जल चोव और दूसरी छोटी नदियों में पानी बह जाता है। यह भाग हरा भरा है। थोड़ी-थोड़ी दूर पर आम और महुआ के बगीचे मिलते हैं। नदी के किनारे सरपत होता है जो घर छाने और रस्सी बनवाने के काम आता है। इस भाग में दुमट मिट्टी है। कहीं कहीं बालू अधिक है। जैसे-जैसे नदी का तल नीचा होता गया। वैसे-वैसे यहां नालों का जल बढ़ता गया। कटते कटते नालों के बीच में अनेक पठार बन गये हैं। इनमें समतल भूमि बड़ी उपजाऊ है। नदी और नालों की ओर ढालू भूमि अच्छी नहीं है। कहीं कहीं भूड़ है। यहां गेहूँ अच्छा होता है। खरीफ की फसल में मडुआ और ज्वार होता है। धान कम होता है।

ऊंचे की ओर यह ऊँचा मैदान नीचा हो गया है। दुमट के स्थान पर चिकनी मिट्टी मिलती है।

कहीं कहीं दलदल और ऊसर है। यह प्रदेश पश्चिम में खीरोन से लाल गंज होता हुआ वेला भेला और रोहनिया तक फैला हुआ है। इस भाग की प्रधान फसल धान है। खुश्क ऋतु में यह सूखकर ऐसा कड़ा हो जाता है। कि यहां गेहूँ की फसल नहीं हो सकती है। धान की सिंचाई के लिये असंख्य झीलों और तालावों से पानी प्रायः लगातार मिलता रहता है। इधर जङ्गली धान भी होता है। कहीं कहीं ऊसर हैं।

सई का ऊँचा मैदान सई के दोनों ओर फैला हुआ है। यह गङ्गा के उपरहार के समान है। यहां विना सिंचाई के रवी की फसल नहीं हो सकती। अधिक वर्षा होने से इतनी जङ्गली झाड़ियां उग आती हैं कि वे खरीफ की फसल को दवा देती हैं। सई के पड़ोस में भूमि अच्छी है। यहां वढ़िया फसलें होती हैं। इसकी चौड़ाई सव कहीं समान नहीं है। पंडरी गनेशपुर के पास पूर्व की ओर इसकी चौड़ाई २ मील रह गई है। दक्षिण की ओर नालों ने इसे वहुत काट दिया है। सई के दोनों ओर इस प्रदेश की औसत चौड़ाई ३ मील है। उत्तरी भाग में कड़ी चिकनी मिट्टी है। यहां धान वहुत होता है। गोमती के पड़ोस में कुछ हलकी मिट्टी है। शेष भागों में कड़ी चिकनी मिट्टी (मटियार) है। मोहन गंज, रोखा कुन्दरवां के पास सव से अधिक कड़ी मिट्टी है। यहां खरीफ की फसल में ७० फीसदी धान होता है। लेकिन यहां दूसरी फसल वहुत कम हो पाती है। रवी की फसल अच्छी नहीं होती है।

इस जिले में प्रायः २० प्रतिशत भूमि उजाड़ या ऊसर है। सव से अधिक ऊसर महराज गञ्ज और रायबरेली तहसीलों में है। पहले इस जिले में जङ्गल वहुत था। स्लीमैन के समय में सई के दोनों ओर वारह मील तक जङ्गल फैला हुआ था। आज कल जङ्गल कम रह गया है। ढाक के छोटे छोटे जङ्गल जिले के भागों में फैले हुये हैं। खेती वढ़ जाने से जङ्गली जानवर भी कम रह गये हैं। नीलगाय, हिरण और वनभैंसा कई जङ्गली भागों में पाये जाते हैं। उनके झुंड किसानों की फसल को वड़ी हानि पहुँचाते हैं।

रायबरेली की जलवायु दक्षिणी अवध के दूसरे जिलों के समान है। रायवरेली का जिला प्रान्त के प्रायः मध्य में है। इसलिये इसकी जलवायु न तो पश्चिमी जिलों की तरह विषम और विकराल है। न पूर्वी जिलों की तरह समशीतोष्ण है। शीतकाल में साधारण जाड़ा होता है। पाला वहुत कम पड़ता है। औसत वर्षा ३६ इञ्च होती है। दुर्भिक्ष के पूर्व में कभी कभी केवल ७० या ८० इञ्च वर्षा हुई है।

इस जिले में खेती के योग्य भूमि में ७७ प्रतिशत दुमट ११ प्रतिशत मटियार और १२ प्रतिशत भड़ है। महराजगंज तहसील में मटियार अधिक है। रायबरेली और डलमऊ तहसीलों के पश्चिमी भाग में भूड़ की प्रधानता है। इस जिले में रवी की अपेक्षा खरीफ की फसल अधिक भूमि में होती है। लेकिन रवी की फसल अधिक मूल्यवान होती है। कुछ (७ प्रतिशत) भूमि दो फसली है जिसमें वर्ष में दो फसलें होती हैं। खरीफ की फसल में धान प्रधान (४५ प्रतिशत) है। दूसरा स्थान ज्वार का है। जो इस फसल की १६ प्रतिशत भूमि में होती है। यह दुमट भूमि में अच्छी होती है। कोदों, मडुवा, वाजरा, उर्द, मूंग साधारण फसलें हैं। रवी की फसल में गेहूँ अधिक मूल्यवान है। जौ कुछ अधिक भूमि में वोया जाता है। कुछ भूमि में पोस्त (अफिम) चना, मटर की खेती भी होती है। इस जिले की ६७ प्रतिशत भूमि कुओं से सींची जाती है। ३२ प्रतिशत भूमि तालावों से सींची जाती है।

पहले इस जिले के खिरोन, सरेनी और डलमऊ परगनों में नमक वहुत वनाया जाता था। शोरा वनाने का काम कुछ अधिक समय तक चलता रहा। जामदानी और दूसरा कपड़ा वुनने का काम इस समय भी होता है। कहते हैं अठारहवी सदी में मिका नाम के एक जुलाहे ने नवाव आसफद्दौला की तारीफ कपड़े में वुन कर उसे इतना प्रसन्न किया कि नवाव ने उसे कुछ ज़मीन उसे सदा के लिये दे दी। कहते हैं इसी तरह की तारीफ उसने निजाम के लिये भी वुनी निजाम ने उसे ५००० रुपये इनाम दिये। लेकिन वह रास्ते में ही मार डाला गया। रायवरेली और जैस के जुलाहे इस समय भी अच्छा गाढ़ा वुनते हैं।

मनिहार कई जगह चूड़ियां बनाते हैं। डलमऊ में शीशियां बनाई जाती हैं।

संक्षिप्त इतिहास—रायबरेली जिले के प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। कुछ स्थानों पर गड़े हुये पत्थर और पुराने सिक्के मिले हैं। महराजगंज तहसील के टांडा गांव में गुप्त सम्राटों की २५ मुहरें मिलीं। डलमऊ, जगतपुर, जैस और रायबरेली के खेरों की खुदाई भी नहीं हुई है। सम्भव है इनमें इतिहास की अमूल्य सामग्री छिपी हो।

इस जिले में राजपूतों के कई घराने हैं। इनमें बैस सब से पुराने हैं। कहते हैं यह लोग शालिवाहन के वंशज हैं जिसने उज्जैन के विक्रमादित्य को हराया था। उसने पंजाब को जीत कर प्राय: समस्त भारत पर अधिकार कर लिया। स्यालकोट में उसकी मृत्यु हो गई। कहते हैं शालिवाहन तक्षक का पुत्र था। वे सूर्यवंशी हैं। इस वंश के राजा त्रिलोकचन्द ने (जब दिल्ली सुल्तान और जौनपुर के शासकों में लड़ाई हो रही थी) अपना राज्य गङ्गा के तट से काकोरी तक स्थापित कर लिया। इस प्रकार रायबरेली जिले का पश्चिमी भाग बैस क्षत्रियों के अधिकार में था। पूर्वी भाग पर कन्हपुरिया राजपूत शासन करते थे। अमेठी के राजपूत आरम्भ में कालिंजर के गौड़ थे। आगे चल कर अमेठी में बस गये। राजपूतों की प्रबलशक्ति होने के कारण इस जिले में बहुत समय तक मुसलमानी राज्य नहीं जम पाया। डलमऊ पर मुसलमानों का पहले पहल अधिकार हुआ। १३९४ में जब जौनपुर में नया मुसलमानी राज्य बना तब इस जिले में मुसलमानों के बार बार आक्रमण होने लगे। १४०१ में इब्राहीम जौनपुर का सुल्तान हुआ। उसने जिले के कई स्थानों में मुसलमानों की बस्तियां बसाई और उनको जमीन दी। उसने रायबरेली को कस्बा बनाया और यहां एक काजी नियत किया। लेकिन बैस और कन्हपुरिया राजपूतों ने मिलकर एक बार फिर मुसलमानों को यहां से भगा दिया। त्रिलोकचन्द के मरने के बाद मुसलमानों का शासन इस जिले में नाम मात्र के लिये रहा। १४९३ में दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर शाह ने डलमऊ पर चढ़ाई की और कटघर के पास उसने हिन्दुओं को हराया। पर विद्रोह का अन्त न हुआ। अकबर के समय में जिले का कुछ भाग इलाहाबाद के सूबे में और शेष भाग अवध के सूबे में शामिल था। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में इलाहाबाद जिले के पदाधिकारी छबीलेराम ने यहां स्वाधीन राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने इलाहाबाद के किले पर अधिकार कर लिया। और भूमिकर को इकट्ठा करके अपने कार्य में लाने लगा। डलमऊ के पास उसने गङ्गा को पार किया और जिले के पश्चिमी परगनों पर अधिकार कर लिया। लेकिन मुहम्मद के शासन में वह इलाहाबाद बुला लिया गया। सादात खां अवध का सूबेदार बनाया गया। कुर्री सुदौली के चेतराय को छोड़कर जिले के शेष राजपूत सरदारों ने आधीनता स्वीकार कर ली। सादात खां ने राजपूत सरदारों को ही मालगुजारी वसूल करने का काम सौंप दिया। सादात खां के मरने पर सफदर जङ्ग नवाब हुआ। उसे इलाहाबाद का भी सूबा मिल गया। लेकिन सफदर जग के मरने पर उसके बेटे शुजाउद्दौला और उसके भतीजे मुहम्मद कुली खां में राजा के बटवारे के सम्बन्ध में झगड़ा हुआ। इलाहाबाद और मानिकपुर कुली खां को मिला। कुली खां ने रायबरेली में अपनी राजधानी बनाई। लेकिन वह राजपूत सरदारों को न दबा सका। १७५९ में शुजाउद्दौला ने उसका प्रदेश छीन लिया। इसी समय इधर मरहठों के आक्रमण होने लगे। मरहठों ने राजपूतों से मेल कर लिया। राजपूतों ने मुसलमानी राज्य को उखाड़-फेंकने के लिये मरहठों का स्वागत किया। फतेहपुर के फौजदार गोपाल ने डलमऊ के पास गङ्गा को पार किया और वहां मुसलमानों का कत्लआम किया। १७७४ में आसफुद्दौला अवध का नवाब हुआ। उसने सालोन, जैस और नसीराबाद के परगने अपनी माता को जागीर में दे दिये। रायबरेली, डलमऊ, बुलेंदी, खीरोन के परगने बैसवाड़े के चकलेदार को सौंप दिये गये। १८५६ तक यही क्रम रहा। इसके बाद अवध अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

गदर ने इस जिले में भीषण रूप नहीं लिया। सर्व साधारण जनता ने विद्रोहियों का साथ दिया।

ताल्लुकेदार स्वाधीन होने लगे। उन्होंने विद्रोहियों के चक्रवर्ती कोष में मालगुजारी का भेजना बन्द कर दिया। १८५८ के नवम्बर मास तक इस जिले में विद्रोहियों का नाम न रहा। ताल्लुकेदारों का नाम न रहा। ताल्लुकेदारों ने आत्म समपर्ण कर दिया। विद्रोह के बाद कोई विशेष घटना न हुई।

बछरावां रायबरेली से लखनऊ को जाने वाली सड़क के पूर्व उस स्थान पर बसा है जहां महाराज गंज से मौरावां और हैदरगढ़ (बाराबंकी) से गुरबक्सगंज को जाने वाली सड़कें प्रधान सड़क को काटती हैं। यह रायबरेली से २० मील दूर है। भूतपूर्व अवध रूहेलखंड रेलवे सड़क की समानान्तर चलती है। स्टेशन पश्चिम की ओर है। यहां थाना, डाकखाना और प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार गिरधर गंज में बाजार लगता है। कहते हैं यहां के पड़ोस के टीले पर पहले भारों का किला था। इस परगने के चौधरी बच्छराज पांडे की स्मृति में इसका यह नाम पड़ा।

बेहटा कलां लालगंज से ५ मील और रायबरेली से ३० मील दूर है। दोनों को मिलाने वाली सड़क एक मील दक्षिण की ओर है। यहां डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और बाजार है।

भिटार गांव रायबरेली से उन्नाव को जाने वाली सड़क पर रायबरेली से २० मील दूर है। यहां एक प्रायमरी स्कूल है। आनन्द गंज का बाजार लगता है। आनन्दी देवी के मन्दिर के पास मेला लगता है।

चांदापुर महाराजगंज में ४ मील पूर्व में स्थित है। इसे सिमरौटा के राजा दुगविजय सिंह ने बसाया था। पुराने किले के चारों ओर घना जङ्गल था। कुछ जङ्गल इस समय भी शेष है। सप्ताह में दो बार शिवदर्शन गंज का बाजार लगता है। डलमऊ एक प्राचीन स्थान है। यह गङ्गा के किनारे पर रायबरेली से फतेहपुर को जाने वाली सड़क पर रायबरेली से १६ मील दूर है। यह लखनऊ से ६० मील और कानपुर से ४८ मील दूर है। डलमऊ के एक ऊँचे टीले पर बसा है। ऊंची नीची भूमि को नाले ने फाट दिया है। यहां तहसील थाना, डाकखाना मुंसफी अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। यहां तीन बाजार हैं पुराना बाजार या चरई मंडी जौनपुर के बादशाही के समय में बना था। टिकैत गंज बाजार अवध के मन्त्री टिकैत राय ने बनवाया था। ग्लिनगंज बाजार १८६२ ई० में यहां डिप्टी कमिश्नर ग्लिन ने बनवाया था। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां गंगा स्नान का बड़ा मेला लगता है। बैसाख के अन्तिम सोमवार को मखदूम बदरुद्दीन बद्रे आलम के मकबरे पर मुसलमानी मेला लगता है। वह दिल्ली सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश का पदाधिकारी था। कहते हैं कन्नौज के राजा बलदेव ने इस नगर को बसाया था। सालार साहू ने यहां आक्रमण किया। कड़ा और मानिकपुर के सरदारों को कैद करके उसने यहां मुसलमानी राज्य की जड़ जमा दी। फीरोजशाह तुगलक ने इस्लामी शिक्षा दिलाने के लिये यहां एक मदरसा स्थापित किया। इसी समय यहां ईदगाह बनाई गई। १३६८ में यह जौनपुर के शर्की राज्य में मिला लिया गया। इसी समय मुसलमानों ने यहां भार लोगों को नष्ट कर दिया। सुल्तान इब्राहीम शर्की ने गङ्गा के किनारे यहां एक पक्का कुआं बनवाया और बगीचा लगवाया। बगीचे में उसके पौत्र का मकबरा बना है। वह १४४० में गद्दी पर बैठा था। लड़ाई में उसके भाई ने उसे मार डाला। मकबरा शाह शर्की नाम से प्रसिद्ध है। इब्राहीम ने ही डलमऊ के किले की मरम्मत करवाई। यह किला गङ्गा के ऊपर १०० फुट ऊँचे टीले पर बनाया गया था। इसका घेरा ६०० गज या आध मील से कुछ अधिक है। घेरे की कच्ची दीवारें ४० से ६० फुट ऊँची और कई सौ फुट मोटी थी। शाहजहां के समय में डलमऊ के फौजदार ने यहां एक बारादरी और मस्जिद बनवाई। पूर्व की ओर दरवाजा है। जिसे इब्राहीम शाह ने प्राचीन मन्दिर के सामान से बनवाया। पुरानी कारीगरी के पत्थर ईंटों के भीतर छिपा दिये गये। कुछ कारीगरी गुप्तकाल की है। पहले यहां दो बौद्ध स्तूप थे। हिन्दुओं ने इन टीलों को क़िले में बदल दिया। टूटी हुई दशा में भी यह खेड़ा अवध भर में सर्वोत्तम है। एक टीले पर हिन्दू सामान से दरगाह बनाई गई। कहते हैं पहले यह आल्हा ऊदल का स्थान था। अवध के नवाब सुजाउद्दौला ने यहां एक भवन बनवाया। कहते हैं अवध के नवाब सादात अली खां का यहीं जन्म हुआ था।

शुजाउद्दौला ने यहां के निवासियों की पुरानी माफी छीन ली। इसी वर्ष महाराष्ट्रीय सेनापति पंडित गोपाल राव ने गङ्गा को पार करके डलमऊ को लूटा इसके बाद इस मुसलमानी नगर की आभा जाती रही। औरंगजेब के समय में गङ्गा स्नान के अवसर पर यहां हिन्दुओं और मुसलमानों में लड़ाई हुई इसमें इस नगर के रईस शेख अब्दुल आलम और उसके ७ साथी मारे गये।

फुरसत गंज रायबरेली से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क पर रायबरेली से १२ मील दूर है। यह ईस्ट इंडियन (अवध रुहेलखंड) रेलवे का एक स्टेशन और प्रसिद्ध बाजार है। रविवार गुरुवार को बाजार लगता है। यहां डाकखाना और स्कूल है।

गौरा (हरदोई) डलमऊ से सलोन को जाने वाली सड़क पर डलमऊ से ६ मील पूर्व में है। यहां डाकखाना और स्कूल है। अचलगंज में बाजार लगता है। दशहरा को छोटा मेला लगता है।

गुरुबख्श गंज में रायबरेली से उन्नाव और लाल गंज से बछरावां को जाने वाली सड़कें मिलती हैं। यह रायबरेली से १२ मील पश्चिम की ओर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। मङ्गलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

हरचन्द (अवध रुहेलखंड) रेलवे स्टेशन है। रघुबर गंज में बाजार लगता है। यहां डाकखाना स्कूल और पड़ाव है। यह सई नदी की सहायक बैता के दाहिने किनारे पर स्थित है।

हरदोई महाराज गंज से बिछरावां को जानेवाली सड़क पर रायबरेली से १८ मील दूर है। कहते हैं अब से ६०० वर्ष पहले हरदेव नामी एक भार ने इसे बसाया था। यहां सैयद सालार के एक साथी आगा शहीद का मकबरा है। यहां जौनपुर के इब्राहीम शर्की ने एक कच्चा किला बनवाया था। इन्हौना एक प्राचीन स्थान है। यहां रायबरेली से रुदौली (बाराबंकी) और लखनऊ से जौनपुर को जाने वाली सड़कें एक दूसरे को काटती हैं। यह रायबरेली से २६ मील दूर है। १८५६ से १८६६ तक यह सुल्तानपुर जिले में शामिल था और एक तहसील का केन्द्र स्थान था। तहसील और थाने के हट जाने से यहां की जनसंख्या कम हो गई। यहां के रतनगंज बाजार को १८६३ में रतननरायन नामी एक तहसीलदार ने बनवाया था। यहां डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और पड़ाव है। पास ही दक्षिण की ओर नवाबी किले के खंडहर हैं।

जगतपुर में रायबरेली से इलाहाबाद को और डलमऊ से सालोन को जाने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। पहले यहां राना बेनी माधो बख्श की जागीर थी। उनका किला उत्तर-पूर्व की ओर शंकरपुर गांव में बना था। दक्षिण की ओर एक मील व्यास वाला ऊंचा बंधन टीला है। यह चारों ओर गहरी खाई से घिरा है। यहां बौद्ध कालीन कई भग्नावशेष मिले हैं। इनमें एक ३० फुट ऊंचा स्तूप है। पर इसका अभी ठीक-ठीक पता नहीं लगाया गया है।

जैस (जायस) पड़ोस की भूमि के ऊपर ऊंचे टीले पर बसा है। यह रायबरेली से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क के उत्तर में रायबरेली से २० मील और सुल्तानपुर से ३६ मील दूर है। दक्षिण की ओर अवध रुहेलखंड रेलवे चलती है। स्टेशन आध मील पश्चिम की ओर है। जैस की गलियां बड़ी तङ्ग हैं। यहां डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। यहां चार बाजार लगते हैं। अनाज, सूती कपड़ा, मलमल और तम्बाकू का व्यापार होता है। पहले यहां मलमल बहुत बनता था। कहते हैं पहले यहां उदयनगर या उजालिका नगर नाम का भारगढ़ और नगर था। ऊंचे टीले पर पुराने भग्नावशेष मिलते हैं। महमूद गजनवी के समय में सैयद इमामुद्दीन खिल्जी इस नगर को लेने के लिये भेजा गया था। वह लड़ाई में मारा गया। उसका मकबरा नगर के नीचे बना है। यहां और भी कई मकबरे हैं। एक मकबरा ६ गज लम्बा है। यहां की जामा मस्जिद बड़ी सुन्दर है। यह प्राचीन हिन्दू मन्दिर के मसाले से बनाई गई थी। जौनपुर के इब्राहीम शाह ने इसकी मरम्मत करवाई। यहां कई इमामबाड़े हैं। पदमावत के रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी यहीं पैदा हुये थे। उन्होंने शेरशाह के समय

में यह ग्रन्थ हिन्दी में रचा था। वे मखदूम अशरफ के चेले थे।

खीरोन एक पुराना मुसलमानी कस्बा है। यह रायबरेली से उन्नाव को जाने वाली सड़क पर रायबरेली से २४ मील दूर है। उत्तर की ओर एक पुराना तालाब है। पूर्व की ओर कई बगीचे हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। रघुनाथगंज और बलभद्रगंज में दो बाजार लगते हैं। पड़ोस में कंकड़ बहुत निकलता है। बलभद्रेश्वर महादेव के मन्दिर के पास फागुन के महीने में मेला लगता है। सैयद सालार के एक साथी फतेह शहीद का मकबरा है।

लालगंज रायबरेली से भिटारी घाट और फतेहपुर को जाने वाली सड़क पर रयाबरेली से १६ मील और डलमऊ से ६ मील दूर है। लालगंज से उन्नाव को भी सड़क जाती है। रायबरेली के बाद जिले में दूसरा बड़ा बाजार लालगंज में लगता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। चमड़ा, तिलहन और कपड़े का व्यापार कानपुर में होता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

महाराजगंज इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। पहले इसे दृगविजयगंज कहते थे। इसे राजा दृगविजयसिंह ने बसाया था। यह रायबरेली से १२ मील दूर है। यहां तक पक्की सड़क जाती है। इन्हौना, बछरावां और दूसरे स्थानों को भी सड़कें गई हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। यह जिले के उत्तरी भाग का प्रधान बाजार है। बाजार और गांव पर चांदापुर के राजा का अधिकार है।

मुस्तफाबाद गङ्गा से तीन मील उत्तर की ओर रायबरेली से इलाहाबाद को आने वाली सड़क पर रायबरेली से दो मील दूर है। यहां होकर सालों से खागा की सड़क जाती है। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और (मजहरगंज का) बाजार है। शाहजहां के समय में यहां बहुत से मकबरे और इमामबाड़े बनवाये गये थे। इसे राजा दर्शनसिंह ने एक बार लूटा था।

नैना गांव सई नदी के दक्षिणी किनारे पर सालों से रायबरेली को जाने वाली सड़क से दो मील दूर है। यह रायबरेली से १८ मील दूर है। यह कन्हपुरिया राजपूतों का केन्द्र है। नालों के बीच में उनके बनवाये हुये किले के खंडहर इस समय भी सई के किनारे दिखाई देते हैं। १८२६ में राजा दर्शनसिंह ने इस पर चढ़ाई की थी। गदर में यहां के राजपूत विद्रोहियों से मिल गये। उन्होंने परशादेपुर स्टेशन को लूट लिया। गदर के बाद उनकी जायदाद जब्त कर ली गई।

नसीराबाद जैस से सालों को जाने वाली सड़क पर रायबरेली से २५ मील और जैस से ४ मील दूर है यहाँ से एक सड़क मऊ और फतेहपुर को गई है। यह एक मुसलमानी कस्बा है और एक पुराने किले के खंडहरों के ऊपर टीले पर बसा है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। रेलवे यहां से ३ मील दूर है। यहां चार बाजार लगते हैं। कहते हैं दिल्ली के नसीरुद्दीन हुमायूं ने यहां किला बनवाया था। इसी से यह नाम पड़ा। यहां शिया और सुन्नियों में अक्सर झगड़ा रहता है।

परशादेपुर सई नदी के उत्तरी किनारे पर रायबरेली से अटेहा को जाने वाली सड़क पर रायबरेली से २० मील दूर है। यहां जुलाहे बहुत रहते हैं। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और दो बाजार हैं। गदर में राजपूतों ने यहां के स्टेशन को लूट लिया। गदर के समय तक सालों जिले का केन्द्र स्थान पड़ोस वाले केस्वापुर गांव में था।

रायबरेली शहर जिले का केन्द्र स्थान है। यह लखनऊ से ४८ मील दक्षिण-पूर्व में प्रतापगढ़ से ५२ मील उत्तर-पश्चिम में फतेहपुर से ३० मील उत्तर में और सुल्तानपुर से ५६ मील पश्चिम में है। यहां ६ पक्की और कई कच्ची सड़कों का मेल होता है। यहां से लखनऊ, महारजगंज, लालगंज डलमऊ, सालों, सुल्तानपुर, उन्नाव, इलाहाबाद और फैजाबाद को सड़कें गई हैं। लखनऊ से मुगलसराय और इलाहाबाद को जानेवाली रेलवे लाइन का यह एक बड़ा स्टेशन है। रायबरेली से मिला हुआ जहानाबाद है। जहानाबाद को जहान खां सूबेदार ने बसाया था। यहां रंगमहल और उसका मकबरा है। रायबरेली सई नदी के किनारे बसा है। सई के ऊपर पुल बना है जो बैस ताल्लुकेदारों के चन्दे से बना था। कहते हैं रायबरेली को भार लोगों ने

बसाया था। इसका पुराना नाम भरौली या बरौली था। जौनपुर के इब्राहीम शाह ने भारों को हटा कर रायबरेली को शेखों और सैयदों को सौंप दिया। उसके पौत्र ने इसका नाम बदल कर हुसेनाबाद कर दिया। पर यह नाम न चला। इब्राहीम शाह ने यहां किला बनवाया। इसमें उसने पुराने भवनों की ईंटों का प्रयोग किया जो दो फुट लम्बी एक फुट मोटी और डेढ़ फुट चौड़ी हैं। इसका पश्चिमी दरवाजा इस समय भी खड़ा है और इसी प्रकार की ईंटों का बना है। इसके बीच में ३५ फुट व्यास वाली बावली है। मरहठों के डर से शुजाउद्दौला के समय में कई अमीरों ने अपनी इमारतें किले के भीतर बनवाईं। दरवाजे के पास जौनपुर के मखदूम अहमद जाफरी का मकबरा है। कहते हैं किले का जो भाग दिन में बनता था वह रात को गिर जाता था लेकिन जब से जौनपुर के फकीर ने यहां अपना कदम रक्खा तब से किला ठीक ठीक बनने लगा और पूरा हो गया। यहां की जामा मस्जिद को भी इब्राहीम शाह ने बनावाया। सम्राट आलमगीर ने इसकी मरम्मत करवाई। नवाब जहां खां ने यहां दूसरी बड़ी मस्जिद बनवाई तीसरी मस्जिद मक्का के काबा की नकल है। इसे शाह अलमुल्ला ने बनवाया था। एक मस्जिद उसके बेटे ने डेरा में बनवाई थी। सूरासऊ के राजा दिग्विजय सिंह ने यहां सराय और अस्पताल बनवाया।

रायबरेली में ६ बाजार हैं। यहां (सुल्तानपुर जिले के) हसनपुर बंधुआ के पीतल के बर्तन, जैस के कपड़े, लखनऊ की तरकारियां और तरह तरह के विलायती सामान बिकते हैं। बेली गंज (बाजार) में अनाज बहुत बिकता है। रायबरेली से दो मील बाहर मुंशी गंज का बाजार है। इसे नवाब के दीवान चंडी सहाय ने बनवाया था।

रायबरेली में कचहरी, कोतवाली, जेल, अस्पताल, दो हाई स्कूल, एक जूनियर हाई स्कूल और एक संस्कृत पाठशाला है। १६०१ में मिशन स्कूल तोड़ दिया गया। गदर के बाद सालों से जिले का केन्द्र स्थान हटाकर रायबरेली में लाया गया तभी दक्षिण-पश्चिम की ओर छावनी बनाई गई। कुछ वर्ष के बाद छावनी तोड़ दी गई। उसमें कचहरी बनाई गई। यहीं क्लब और दूसरे बंगले हैं। यहां महाराजा रंजीतसिंह के प्रपौत्र शाहजादा वासुदेव सिंह और सिक्ख सेनापति छतरा सिंह के वंशज रहते हैं। सिक्ख युद्ध के बाद उनके पूर्वज पंजाब से निकाल दिये गये थे। उनकी पेंशन और जागीर इन्हें मिल रही है।

राजामऊ उद्रेहरा के बैस तालुकेदार का निवास स्थान है। यह बछरावां से ५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर उन्नाव की सीमा के पास है। यहां बाजार और स्कूल है। श्रावण की पूर्णमासी को दंगल होता है। सालों का पुराना मुसलमानी कस्बा रायबरेली से २० मील दूर है। यहां रायबरेली से प्रतापगढ़ और जैस से मुस्तफाबाद और खागा को जानेवाली सड़कें मिलती हैं। यहां से पश्चिम में डलमऊ को दक्षिण में मानिकपुर को और दक्षिण-पूर्व में कुंडा को सड़कें गई हैं। सालों का कस्बा सई नदी से ४ मील दक्षिण की ओर है। इसके पूर्व में एक बड़ी झील है। कहते हैं सम्राट शालिवाहन ने इसे बसाया था। यहां के भारों को मुसलमानों ने नष्ट कर दिया। नवाबी समय में यह एक चकले का केन्द्र स्थान था। अंग्रेजी राज्य में मिलाने के समय सालों ही जिले का केन्द्र स्थान बनाया गया। लेकिन गदर के बाद रायबरेली जिले का केन्द्र स्थान बना। यहां थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और तहसील है। फैजगंज में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

सरेनी लालगंज से डौंडिया खेरा को जानेवाली सड़क पर ऐसे स्थान पर बसा है जहां होकर गुरबक्सगंज से रालपुर घाट को जानेवाली सड़क जाती है। यह रायबरेली से २८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

सातों रायबरेली से उन्नाव को जाने वाली सड़क पर सई नदी से २ मील पश्चिम की ओर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। पड़ोस में फतेह बहादुर सिंह के किलों के खंडहर हैं। क्वार और चैत में पार्वती का मेला होता है।

शंकर गंज नैया नदी के दक्षिणी किनारे पर रायबरेली से फैजाबाद को जानेवाली सड़क के उत्तर में रायबरेली से २१ मील दूर है। यहां

सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है अनाज, कपड़ा, डोरी, गुड़, नमक और चमड़े की बिक्री होती है।

शिवरतन गंज का बाजार महाराज गंज से १२ मील दूर है। सोममार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। पहले थाना भी था।

सिमरौटा रायबरेली से २२ मील दूर है। यहां महराज गंज इन्हौना और मोहन गंज से हैदरगढ़ को जानेवाली सड़कें मिलती हैं। चांदापुर के राजा का भवन पूर्व की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है। सुदामनपुर गंगा से २ मील उत्तर की ओर नालों से कटी फटी निचली भूमि पर बसा है। श्रावण के महीने में कंकोरन का मेला १५ दिन तक लगता है। मेले में पशुओं की बिक्री होती है।

थुलेंदी का छोटा कस्बा महाराज गंज बछरावां को जानेवाली सड़क पर रायबरेली से १८ मील दूर है। उत्तर और दक्षिण की ओर दो बड़े ताल हैं। यहां जौनपुर के इब्राहीम शाह ने एक कच्ची गढ़ी बनवाई थी। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। जेठ के शुक्रवार को सैयद सालार का मेला लगता है। कहते हैं भुला नाम के एक भार सरदार ने इसे बसाया था।

तिलोई जैस से इन्हौना को जानेवाली सड़क के पश्चिम में मोहन गंज से मिला है। रायबरेली से फैजाबाद को जाने वाली सड़क दक्षिण की ओर है। यह कन्हपुरिया राज्य का केन्द्र स्थान है। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

★ ★ ★

उन्नाव

उन्नाव का जिला अवध के दक्षिण-पश्चिमी सिरे पर स्थित है इसके उत्तर में हरदोई, पूर्व में लखनऊ और दक्षिण में रायबरेली के जिले हैं। गंगा नदी इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है और इसे कानपुर और फतेहपुर जिलों से अलग करती है। उन्नाव का जिला २६. ८' और २७. २' उत्तरी अक्षांशों और ८०.३ और ८०.३ पूर्वी देशान्तरों के बीच में घिरा है। इसका क्षेत्रफल, १७२७ वर्ग मील है। इस जिले में बड़े नगरों और बाजारों की कमी है। केवल उन्नाव (१४,०००) और पुरवा (१०,०,००) दो कस्बों की जनसंख्या १० हजार से ऊपर है। इनके अतिरिक्त पांच नगरों (सफीपुर, मौसवां, असीवां, बांगरमऊ, मोहन) की जनसंख्या ५ हजार से कुछ अधिक है। शेष १६३३ छोटे छोटे गांव हैं। गांव के लोग अपने खेतों के पास रहना पसन्द करते हैं। इसलिये गांव छोटे हैं।

उन्नाव का जिला दो प्राकृतिक भागों में बटा है। तराई या निचला प्रदेश गंगा की धारा के पास है। उपरहार या ऊँचा मैदान गंगा के ऊँचे किनारे से पूर्व की ओर जिले के बड़े भाग में फैला हुआ है। नदी की धारा के किनारे किनारे कछारी भूमि है जो सदा बाढ़ में डूब जाया करती है। इसके आगे कुछ और भूमि है जो कभी कभी बाढ़ में डूब जाती है। इसके कुछ भाग खेती के योग्य नहीं हैं। निचले भाग में खरीफ की फसल का कोई ठिकाना नहीं रहता है लेकिन रबी की फसल अच्छी होती है। यहां प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। सिंचाई के लिये कुयें सुगमता से खुद जाते हैं। इनमें पानी पास ही मिल जाता है। उत्तरी भाग की अपेक्षा दक्षिण की ओर तराई प्रदेश अधिक चौड़ा है। उन्नाव के परगने में भी तराई का प्रदेश तंग है। उन्नाव और हरहा की तराई में बहुत सी ऊसर भूमि है जिसमें बबूल, झाऊ और कांस बहुत है।

गंगा का ऊँचा किनारा तराई को उपरहार या ऊँचे मैदान से अलग करता है। इस ऊँचे किनारे के एकदम नीचे प्रायः दलदल मिलते हैं। यहीं कल्यानी नदी बहती है। ऊँचा किनारा गंगा की वर्तमान धारा के समानान्तर नहीं है। कहीं यह धारा के पास है कहीं यह दूर है। कहीं यह सपाट है कहीं क्रमशः ऊँचा होता गया है। किनारे के ठीक

ऊपर प्रायः बलुई भूमि है। यहां सिंचाई भी नहीं हो सकती है। गंगा के ऊंचे किनारे से पूर्व की ओर सई नदी की घाटी तक उपहार या ऊंचा मैदान है। यह लहरदार है। कहीं कहीं साधरण ऊंचाई के टीले और गहरे गढ़े हैं। गढ़ों में चिकनी मिट्टी है। इनके निचले भागों में उथले दलदल हैं। यह प्रदेश बड़ा हरा भरा है। इसमें मीलों तक बगीचे मिलते हैं। इसके कुछ भागों में ऊसर है। सफीपुर तहसील में अधिक ऊंची नीची भूमि है। हरदोई की सीमा के पास भूड़ है। दक्षिणी भाग में उपजाऊ दुमट है। मोहन के पड़ोस में कुछ ऊसर है। पुरवा तहसील के पूर्व में तरह तरह की भूमि मिलती है। मौरावां परगने में ताल बहुत हैं।

जिले के पूर्वी सिरे पर सई नदी की घाटी है। उत्तर की ओर निचली भूमि में इसकी बाढ़ से बड़ी हानि होती है। कुछ भागों में लगातार पानी रहने से भूमि में रेह हो जाता है। पुरवा तहसील में सई की घाटी अधिक गहरी है।

गंगा उन्नाव की सब से बड़ी नदी है। यह जिले की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। लेकीन इस जिले में गंगा सिंचाई या नाव चलाने के अधिक काम नहीं आती है। कानपुर से उन्नाव हो कर जाने वाली सड़क और रेलवे का पुल गंगा के ऊपर बना है। शेष भागों में गंगा को पार करने के लिये घाटों पर नावें रहती हैं। गंगा नदी यहां सिंचाई के काम नहीं आती है। गंगा के कई सोते सिंचाई के काम आते हैं। गंगा नदी उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। जाजमऊ, औरंगाबाद और शंकरपुर के पास गंगा चक्करदार मोड़ बनाती है।

सई नदी कुछ दूर तक जिले की सीमा बनाती है और जिले को लखनऊ जिले से अलग करती है। सई नदी हरदोई जिले में निकलती है और विषम मार्ग बनाती है। मौरावां परगने में सराय मुबारकपुर के पास यह उन्नाव जिले को छोड़कर रायबरेली जिले में प्रवेश करती है। सई नदी में साल भर पानी रहता है लेकिन वर्षा के अन्त में इसमें कई स्थानों में पांज हो जाती है। मोहन, बानी और भनैला के पास सई के ऊपर पुल बने हैं। सई के पड़ोस में चिकनी मिट्टी बहुत है। प्रबल वर्षा में इसकी बाढ़ से हानि होती है। जिले की दूसरी नदियां बहुत छोटी हैं और गरमी में सूख जाती हैं। इनमें कल्यानी नदी हरदोई जिले से निकलती है। लहरामऊ के पास यह उन्नाव जिले में प्रवेश करती है और मरौंडा के पास यह गंगा में मिल जाती है। यह बहुत धीमी चाल से बहती है, वर्षा ऋतु में इसमें बाढ़ आजाती है।

तिनाई नदी असीवां के पास कुटकरी भील से निकलती है। पटियार परगने में यह गंगा में मिल जाती है। इसके किनारे ऊंचे हैं। इससे इसका पानी सिंचाई के लिये ऊपर खींचने में बहुत खर्च पड़ता है। वर्षा ऋतु को छोड कर यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है।

लोनी नदी उन्नाव के पवई ताल से निकलती है। रायबरेली के खजुर गांव के पास यह गंगा में मिल जाती है।

नरही या गुरधोई नदी हरहा परगने के दलदलों से निकलती है। यह गंगा के ऊंचे किनारे के नीचे बहती है और बक्सर के पास गंगा में मिल जाती है।

गाजिउद्दीन हैदर की बनवाई हुई पुरानी नहर में सरदार नहर का कुछ पानी छोड़ दिया जाता है। उन्नाव जिले में भीलें और तालाब बहुत हैं। कुछ में साल भर पानी रहता है। इनमें सिंघाड़े उगाये जाते हैं।

इस जिले में ४६ प्रतिशत दुमट है। १७ प्रतिशत मटियार या चिकनी मिट्टी है। १६ प्रतिशत भूड़ है। २० प्रतिशत से कुछ ऊपर उजाड़ या ऊसर भूमि है जो खेती के काम नहीं आती है। इसमें लगभग ४ प्रतिशत भूमि पानी से घिरी है। कुछ घरों, सड़कों और रेलवे लाइन से घिरी है शेष ऊसर है जिले की साढ़े पांच प्रतिशत भूमि में बाग हैं। नदियों के पड़ोस में कुछ जंगल है जहां नील गाय, हिरण, जंगली सुअर और भेड़िया पाया जाता है।

जिले की ५७ प्रतिशत भूमि में खेती होती है। २२ प्रतिशत भूमि खेती के योग्य होते हुये भी इस समय खेती के काम नहीं आती है। खेती की एक चौथाई भूमि इतनी अच्छी है कि इसमें वर्ष में दो फसलें होती हैं। प्रान्त के पश्चिम भाग में

जहां सिंचाई की सुविधा है वहीं दुफसली भूमि है। उन्नाव जिले की दोफसली भूमि में सिंचाई नहीं होती है। उन्नाव जिले की प्रायः आधी भूमि में खरीफ और आधी में रब्बी की फसल होती है। खरीफ की २५ फीसदी भूमि में धान होता है। २३ फीसदी भूमि में ज्वार होती है। इसमें अरहर उर्द और मूंग मिली रहती है। कुछ भाग में बाजरा मकई, कपास और दूसरी फसलें होती हैं। रबी की फसल की २२ फीसदी भूमि में गेहूँ १४ फीसदी भूमि में गुजई, १० फीसदी में जौ, ३२ फीसदी में चना, शेष में पोस्ता (अफीम) मटर आदि होता है।

उन्नाव एक बहुत छोटा जिला है। खेती अधिक होती है। कुछ जमीन ऊसर है। जहां कुछ नीचे रेह और कंकड़ मिलता है। दस्तकारियां बहुत ही कम हैं। केवल भगवन्त नगर और नवाबगंज में पीतल के बरतन बनाये जाते हैं। एक दो जगह शक्कर बनाने और हड्डी पीसने का काम होता है। कहीं-कहीं बढ़ई लोग लहड़ और गड़रिये कमली बनाते हैं। बिघून और जमाल नगर में कपड़ा बुनने और छापने का काम होता है।

कहते हैं कि परसराम ने इसी जिले से क्षत्रियों का संहार आरम्भ किया था। श्रवण के पास ही अयोध्या के राजा दशरथ ने मृग समझ कर श्रवण ऋषि का वध किया था। परिहार या परियार में सीता जी का परित्याग हुआ था। वहां से आगे गङ्गा के दूसरे किनारे पर उन्होंने बिठूर में बाल्यमीकि ऋषि के आश्रम में शरण ली थी। यहीं लव और कुश का जन्म हुआ था। यहीं इन दोनों बालकों ने अश्वमेघ का घोड़ा रोका था। परियार के पास तांबे के बने हुये तीरों के कुछ सिरे मिले हैं। कहते हैं इन्हीं तीरों को लव और कुश ने छोड़ा था। जिले में कई पुराने टीले और खेड़े हैं। लेकिन उनकी खुदाई नहीं हुई है। भार लोग जिले के पूर्वी भाग में प्रबल थे। राजपूतों की राजधानी रामकोट में थी। जिसे आजकल बांगरमऊ कहते हैं। कहते हैं आल्हा ऊदल ने इन राजपूत सरदारों को जीत लिया था। इस विजय के उपलक्ष में कन्नौज के राजा जयचन्द ने बांगर का प्रदेश दिया था इस प्रदेश में राजपूत दो प्रकार से आये। कुछ तो मुसलमानों का आक्रमण होने पर इधर आ गये। कुछ राजपूतों ने दिल्ली के सम्राट की नौकरी कर ली। उन्हें दिल्ली सम्राट की ओर से कुछ भूमि मिली। कुछ उन्होंने अपने भुजबल से जीत ली। कहते हैं रणभीरपुर (पुरवा) प्राचीन समय से रघुवन्शी राजपूतों की राजधानी थी। यह लोग अयोध्या के राजाओं के वंशज हैं। रघुवंशियों के अतिरिक्त यहां घिसेन राजपूतों का भी राज्य था कहते हैं उनके एक राजा उपवन्त की स्मृति में ही उन्नाव नाम पड़ा। बिसेन राजपूत मानिकपुर से आये थे। दक्षिण की ओर गङ्गा-तट के समीप गौतम राजपूत शासन करते थे। उत्तरी भाग में चन्देल थे जो शिवराजपुर (कानपुर) से आये थे।

दीक्षित लोग कन्नौज से इधर आये थे। धीरे धीरे वे गङ्गा से गोमती और हरदोई से बैसवाड़े तक फैल गये। कुछ चौहान रायकवार और जंवार भी यहां आ गये। आगे चलकर सेंकर और गौड़ राजपूत आये। गौड़ राजपूतों में केसरी सिंह सब प्रसिद्ध है। १८२० में उसने एक बड़ा राज्य बना लिया। १८४५ में उसकी मृत्यु हो गई। उसके मरने पर उसका राज्य कई भागों में बंट गया। उसके वंशज गदर में अंग्रेजों से लड़े। उससे उनका राज्य जब्त कर लिया। बांगर मऊ के गौड़ बाबर के समय में यहां आकर बस गये। बाबर ने गङ्गा और कल्यानी के बीच की भूमि गौड़ों के पूर्वज जगतसाह को जागीर में दी थी। पवार राजपूतों को अकबर के समय में मौरावां के पास जागीर मिली थी। परिहार राजपूत मारवाड़ से आये। हरहा के पास गहलोट राजपूतों की छोटी जागीर है।

कहते हैं महमूद गजनवी के भतीजे सैयद सालार ने १०३० ई० में इस जिले पर आक्रमण किया था। यह भी कहा जाता है कि कुछ स्थानों में उसके मृतक अनुयाइयों की कब्रें बनी हैं। कहते हैं अलाउद्दीन नामी एक सैयद ने कन्नौज से आकर प्राचीन नवदेवकुल (नवल) स्थान को नष्ट किया और उसके पड़ोस में बांगर मऊ को बसाया। १३०२ ईस्वी में उसकी कब्र बनी। सफीपुर में

मुसलमानों की दूसरी बस्ती बसी । इसके बाद मुसलमानों ने सिपाहियों को स्त्रियों के भेष में डोलियों में विठाकर उन्नाव पर अचानक छापा मारा और धोखे से ले लिया । सैयदों की एक जागीर विठूर और परियार तीर्थों की यात्रा करने वाले यात्रियों की रक्षा करने की शर्त पर उन्हें दी गई । १८७२ में उन्होंने किला बनवाया । गदर में भाग लेने के कारण उनकी जागीर छिन गई । अकबर के समय में उन्नाव का जिला लखनऊ की सरकार में सम्मिलित कर लिया गया । पर राजपूतों की छोटी छोटी जागीर यहां प्रायः यथा पूर्व बनी रही । अकबर से पहले हुमायूँ को रोकने के लिये इस जिले के हिन्दुओं ने हेमू का साथ दिया था । दीक्षितों का प्रधान पृथीमल उनका नेता था । मुगलों से लड़ने के कारण दीक्षितों का प्रभुत्व सदा के लिये नष्ट हो गया । नवाबी समय में उन्नाव जिले का कुछ भाग रायबरेली जिले में शामिल था । प्रायः शेष भाग पुरवा का चकला था । सफीपुर और रसूलाबाद के चकले (जिले) अलग थे । बैस राजा चेतराय को छोड़कर इस जिले के समस्त राजाओं ने अवध के नवाब की आधीनता स्वीकार कर ली थी । चेतराम पच्छिम गांव के किले से लगातार लड़ता रहा । उसकी वीरता से प्रसन्न होकर नवाब ने उसका कर आधा कर दिया और उसके साथ सम्मान का बर्ताव किया । जैसे जैसे नवाबों की शक्ति घटी वैसे वैसे यहां के राजाओं की शक्ति बढ़ गई । वे अवध के चकले दारों से लड़ने लगे । जब यह जिला अंग्रेजी राज्य में मिलाया गया तब जिला पुरवा कहलाता था । १८५७ ईस्वी में ४ जून को कानपुर में विद्रोह आरम्भ हुआ । कप्तान इवैन्स ने यह समाचार तुरन्त लखनऊ को भेज दिया । उसने कानपुर में सब नावों को एकत्रित करके गङ्गा के दूसरे किनारे पर (उन्नाव की ओर) बंधवाने का आदेश दिया । लेकिन विद्रोहियों ने कानपुर के नावों के पुल को ले लिया और समस्त नावों पर अधिकार कर लिया । कप्तान के सम्बन्धी और दूसरे अंग्रेज नाना साहब के आदेश से मार डाले गये । कप्तान इवैन्स लखनऊ चला गया । उन्नाव जिले के कुछ ताल्लुकेदार राजभक्त बने रहे । अधिकांश तटस्थ थे । केवल कुछ ताल्लुकेदारों ने विद्रोह किया । डौंडिया खेरे का राम बख्श सिंह अंग्रेजों का कट्टर शत्रु था । उसको बक्सर के मन्दिर में फांसी दे दी गई । बांगर मऊ के जवारों ने भी फतेहगढ़ से भगाकर आये हुये कैदियों को नाना साहब के पास कानपुर में भेज दिया । इन लोगों ने जनरल हैवलाक की सेना का विरोध किया । वह उन्नाव में घायल हुआ और चार दिन के बाद मर गया । कांठा के कुछ सेंगर भी विद्रोही हो गये इन सब की जागीरें छिन गईं । रसूलाबाद का मंसब अली भी विद्रोही हो गया । उसको जिले से बाहर निकाल दिया गया और उसकी जायदाद जब्त कर ली गई । मौरावां के खत्री सराफों और हरहा के चन्देलों ने अंग्रेजों की बड़ी सहायता की । इन सब राजभक्तों को उपयुक्त पुरस्कार दिया गया ।

उन्नाव कानपुर से ११ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है । यहां होकर कानपुर से लखनऊ को पक्की सड़क और रेलवे लाइन गई है । यहां से हरदोई, रायबरेली, संडीला पुरवा और सिकन्दरपुर को भी सड़कें गई हैं । जहां इस समय उन्नाव शहर बसा है वहां पुराने समय में जङ्गल था । अब से ११०० वर्ष पहले बङ्गाल के राजा के कर्मचारी एक चौहान राजपूत ने जङ्गल साफ करवाया और नगर बसाया । फिर यह कन्नौज के चन्द्रवंशी क्षत्रियों के हाथ में चला गया । उपवन्तसिंह नाम के एक बिसेन सरदार ने यहां किला बनवाया और स्वाधीन राज्य स्थापित किया । उसने इस स्थान का नाम उपवन्त रक्खा जिसे बिगाड़ कर उन्नाव नाम पड़ा । १४५० में यहां घोर युद्ध हुआ । उपवन्त सिंह का बेटा राजा जयदेव सिंह कट्टर हिन्दू था । वह मुसलमानों को अजान (सार्वजानिक प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिये आवाज लगाने) की आज्ञा नहीं देता था । जैदी सैयदों ने एक भोज के अवसर पर अचानक छापा मारा । वे धोखा देकर किले के भीतर घुस आये उन्होंने राजा को मार डाला और राज्य पर अपना अधिकार कर लिया । शाहजहां के समय में यहां कई शेख बसाये गये । उनका एक वंशज मौलवी इहसान अली सादात अली खां के दरबार का प्रसिद्ध कवि था । गोपाल दास शेरशाह

का कानूनगो था। उसका वंशज राजा नन्द किशोर कुछ समय तक चक्लेदार रहा। १८५७ में जनरल हैवलाक की सेना और विद्रोहियों के बीच में यहां भीषण लड़ाई हुई थी।

उन्नाव शहर के पश्चिम में बहुत से सुन्दर बाग हैं। कुओं का पानी अच्छा है। लेकिन पानी अधिक गहराई (कहीं कहीं ?१० फुट) पर मिलता है। यहां जिले की कचहरी, तहसील, कोतवाली अस्पताल जिला स्कूल और जूनियर हाई स्कूल है। यहां सिविल लाइन बहुत छोटा है। इसमें कुछ ही बङ्गले हैं। स्टेशन पास ही है।

अचलगंज में उन्नाव से रायबरेली को जाने वाली सड़क पुरवा से कानपुर को जाने वाली सड़क से मिलती है। यह उन्नाव से ६ मील और हरहा से २ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अनाज का व्यापार होता है।

अजगैन उन्नाव से १० मील उत्तर-पूर्व की ओर रेल का स्टेशन है। कानपुर से लखनऊ को जाने वाली सड़क भी पास ही है। यहां से उत्तर-पूर्व में मोहन और उत्तर-पश्चिम में रसूलाबाद को सड़कें गई हैं। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है। इसे भामनसिंह दीक्षित ने बसाया था। इसका पुराना नाम भानपारा था। एक ज्योतिषी के आदेश से समृद्ध बनाने के लिये इसका नाम बदल कर अजग्राम (ब्रह्मा का गांव) रख दिया गया। इसी से विगड़कर अजजैन नाम पड़ा।

अखीवां कस्बा एक सुन्दर झील के किनारे पर उन्नाव से २० मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां होकर लखनऊ से बांगरमऊ को सड़क जाती है। कहते हैं ८०० वर्ष पहले असुन नाम के एक धोबी ने इसे बसाया था। यहां एक पक्की सराय है। यहां के जुलाहे अच्छी धोती बुनते हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बकावर डौंडिया खेरा से ३ मील दक्षिण में और उन्नाव से ३२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर गङ्गा के किनारे पर स्थित है। यहां बैसे राजपूतों का प्रथम केन्द्र था। राजा अभयचन्द ने यहां बकेश्वर महादेव के उपलक्ष में इसका नाम बकेश्वर रक्खा इसी से बिगड़ कर इसका नाम बक्सर पड़ गया। कुछ लोगों का कहना है यहां बकासुर रहता था। यहां बक का आश्रम होने से इसका नाम बक आश्रम या बकसर पड़ा। कृष्ण जी ने उसका वध किया। यहां गङ्गा चन्द्रिका देवी का मन्दिर है। कार्तिक पूर्णिमा को यहां गङ्गा स्नान का बड़ा मेला लगता है। यहां गङ्गा जी कुछ दूर तक उत्तरवाहिनी हो जाती हैं। क्वार और चैत की अष्टिमी और फाल्गुन में शिवरात्रि का भी मेला लगता है। गदर में गोरों ने भाग कर इस मन्दिर में शरण ली थी। मन्दिर का द्वार बन्द करके वे विद्रोहियों पर भीतर से गोली चलाने लगे। विद्रोही बाहर से उन पर गोली नहीं चला सकते थे अतः उन्होंने मन्दिर के चारों ओर लकड़ी इकट्ठी करके आग लगा दी। जब बाहर की आग और धुआं से उनका दम घुटने लगा तो वे गङ्गा में कूद कर और ६ मील तैर कर मोरामऊ के राजा के यहां शरण ली। गदर के बाद डौंडियां खेरे का विद्रोही राजा राम बख्श सिंह मन्दिर के पास वाले पेड़ पर फांसी पर लटका दिया गया और मन्दिर बारूद से उड़ा दिया गया। बांगरमऊ उन्नाव से ३१ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां होकर हरदोई को सड़क जाती है। यह कल्यानी के बायें किनारे पर बसा है और बड़े बड़े बागों से घिरा है। यहां थाना डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। यहां रविवार और बुधवार को बाजार लगता है।

बारा गांव उन्नाव से २४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर गङ्गा तट के बक्सर गांव से उन्नाव को जाने वाली सड़क पर स्थित है। गंगा यहां से ५ मील दक्षिण की ओर है। यहां थाना और प्रायमरी स्कूल है पहले यहां नील बनाया जाता था। सुनार आभूषण और बढ़ई लकड़ी का सामान अच्छा बनाते हैं। यहां देवी के दो मन्दिर हैं।

भगवन्त नगर का व्यापारी कस्बा उन्नाव से ३२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। इसे डौंडिया खेड़ा किले के राव मर्दनसिंह की धर्म पत्नी भगवन्त कुँवर ने बसाया था। यहां पीतल और लोहे के वर्तन बनाने का काम होता है। यहां एक जूनियर हाई स्कूल है।

बिहार कस्बा उन्नाव से २८ मील दक्षिण-पूर्व की

ओर रायबरेली से आने वाली सड़क के उत्तर में है। लोनी नदी पश्चिम की ओर बहती है। इस पर पुल बना है। पहले बिहार रायबरेली जिले में शामिल था और एक तहसील का केन्द्र स्थान था। १८६२ में तहसील तोड़ दी गई और यह उन्नाव जिले में मिला दिया गया। यहां थाना और जूनियर हाई स्कूल है। रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। यहां विद्याधर साधू की समाधि है यहां पर पूस के महीने में मेला लगता है। यहां कपड़ा, गुड़ और बर्तनों की बिक्री होती। यहां एक कच्ची सराय और पक्का तालाब है। रायबरेली की सड़क के दक्षिण में पुराने किले के खंडहर हैं। सवा सौ वर्ष पहले यहां बैस राजपूतों में बड़ी लड़ाई हुई थी।

बिहार उन्नाव से १० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह अचलगंज के थाने से २ मील दूर है। यहां रावत लोगों का केन्द्र स्थान था। यहां से एक सड़क नौराही नदी को पार करके गंगा के किनारे को गई है। यहां प्रायमरी स्कूल और बाजार है। डौंडिया खेरा या संग्रामपुर नौराही के ऊंचे किनारे पर उन्नाव डलमऊ सड़क से तीन मील पश्चिम की ओर है। यह बैस राजपूतों का केन्द्र स्थान है। यहां विद्रोही सरदार नाम बख्शसिंह को गदर के बाद फांसी दे दी गई थी। गांव से डेढ़ मील की दूरी पर गङ्गा के ऊचे किनारे पर उसके किले के खंडहर है।

फतेहपुर चौरासी सफीपुर (तहसील) से ६ मील और उन्नाव से २५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर कल्यानी नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित है। कहते हैं जैपुर राज्य के अभयपुर पाटन स्थान से आये हुये राजा कर्णदेव ने इसे बसाया था। पहले यहां ठठेरों का अधिकार था। इसके बाद सैयद और फिर जंवार राजपूतों ने बारी बारी से लड़ाई लड़कर यहां अपनी बस्ती बसाई। यहां थाना और प्रायमरी स्कूल है। मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

घाटमपुर उन्नाव से डलमऊ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। कहते हैं इसे घाटम देव नामी एक बैस सरदार ने अब से ७०० वर्ष पहले बसाया था। उस समय यह गंगा के ठीक किनारे पर था। यहां गंगा का घाट था। फिर गंगा ने अपना मार्ग बदला और वह यहां से दक्षिण की ओर चार मील दूर हो गई। यहां प्रायमरी स्कूल और बाजार है।

हैदराबाद उन्नाव से सडीला को जाने वाली सड़क पर उन्नाव १६ मील उत्तर की ओर है। अब से २०० वर्ष पहले दिल्ली सम्राट की आज्ञा से इसे हैदर खां नामी एक व्यक्ति ने बसाया था। यहां प्रायमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

हरहा पहले एक तहसील का केन्द्र स्थान था। यह उन्नाव से ८ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। उन्नाव से रायबरेली को जाने वाली सड़क यहां से २ मील उत्तर की ओर है। यहां से इस सड़क तक एक छोटी सड़क गई है। गांव में होकर गुरधोई नदी बहती है। गंगा यहां से २ मील दक्षिण की ओर है। यह सुल्तान महमूद गजनवी के समय में बसाया गया था। पहले यहां अहीरों का शेखापुर गांव था। इसके पश्चिम में लोगों का इन्द्रपुर गांव था। इन्द्रपुर के जमीदारों ने इसे जीत कर पड़ोस का जंगल साफ कर दिया और उन्होंने गांव का नाम हरहा रक्खा। आलमगीर के समय में यहां के मानसिंह के पास एक बड़ी जागीर थी। लखनऊ के नवाब ने भी यहां के कई व्यक्तियों को ऊंचे पद दिये। महमूद के एक सेनापति मकबूले आलम का यहां मकबरा है। उसके बनवाये हुये किले के खंडहर भी हैं। यहां बीस मन्दिर और छः मस्जिदें हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

हसनगंज मोहन (हसनगंज) तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां मियांगंज और रसूलाबाद से मोहन को जाने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल, जूनियर हाई स्कूल और बाजार है। महादेव गांव में आसफुद्दौला के नवाब हसन रजा खां ने इसे बसाया था उसे यह गांव नवाब की ओर से माफी में मिला था।

इस्लामाबाद बिझौली उन्नाव से २७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। सई नदी यहां से एक मील उत्तर की ओर बहती है। यह बहुत पुराना गांव है। ८०० वर्ष पहले रामकोट के राजा ने इस पर अपना अधिकार कर लिया था। दिल्ली की शाही सेना के सेनापति इस्लाम हुसेन खां ने इस पर अपना अधि-

कार कर लिया और इसका नाम इस्लामाबाद बिफौली रक्खा यहां एक प्राइमरी स्कूल है। यहां चैत और क्वार में देवी का और भादों में जन्माष्टमी का मेला होता है।

आजमऊ गङ्गा के पास उन्नाव से २२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। औरंगजेब के समय में जार्ज सिंह चन्देल ने इसे बसाया था। दक्षिण-पश्चिम की ओर एक छोटा जङ्गल है। कांठा उन्नाव से १८ मील पूर्व की ओर है। यहां होकर एक सड़क पुरवा (तहसील) से लखनऊ को जाती है। दूसरी सड़क नवाबगंज से पुरवा को जाती है। कहते हैं कांठा नामी एक लोध ने अब से ६०० वर्ष पूर्व बसाया था। दिल्ली के बादशाहों के समय में यहां एक किला था। यहीं उनके तहसीलदार का दफ्तर था। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। जेठ मास के प्रथम मंगलवार को महावीर जी का मेला होता है। क्वार में रामलीला का उत्सव होता है। १५२७ में गोपालसिंह नामी एक सेंगर क्षत्री ने (जो यमुना पार जगमोहनपुर से आया था) इस ताल्लुके को बसाया। उसके भाई जगतसाह ने घुड़सवारों की सेना से इब्राहीम लोदी की सहायता की थी। गदर में यहां के रंजीतसिंह ने अंग्रेजों की बड़ी सहायत की थी।

कुरसत कस्बा सफीपुर (तहसील) से १० मील उत्तर की ओर और उन्नाव से २८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। कहते हैं इसे बाबर के एक सैनिक कुदसुद्दीन ने बसाया था। इसका पुराना नाम कुदसत था। इसी से बिगड़कर इसका नाम कुरसत पड़ गया। गांव के पश्चिम में कुछ जङ्गल है। उत्तर की ओर गाजिउद्दीन हैदर की पुरानी नहर सई में गिर जाती है। १८४० में अवध के चकलादार लाला बद्रीनाथ और शेख करीम बख्श के बीच में लड़ाई हुई थी। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। महाराज गंज हरदोई और संडीला से उन्नाव को जानेवाली सड़कों के बीच में स्थित है। मखी नाम के एक लोध ने अब से १००० वर्ष पूर्व बसाया था। अब से ४०० वर्ष पूर्व मैनपुरी से जानेवाले राजा ईश्वरी सिंह ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। यहां मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। क्वार में रामलीला का मेला होता है।

मौरावां कस्बा महुआ और आम के बगीचों के बीच में पुरवा (तहसील) से ७ मील की दूरी पर पुरवा से रायबरेली को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह उन्नाव से २६ मील दूर है। यहाँ से लखनऊ, बछरावां और बिहार को सड़कें गई हैं। २ मील दक्षिण-पश्चिम को ओर बसाहा झील है। यहां थाना, अस्पताल, सराय, हाई स्कूल और जूनियर हाई स्कूल है। यहां आभूषण और लकड़ी का काम अच्छा बनता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। चमराजध्वज नामी एक सूर्यवंशी क्षत्री ने इसे बसाया था। मियांगंज उन्नाव से १८ मील उत्तर-पश्चिम की ओर लखनऊ से बांगरमऊ को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यहां से १ मील की दूरी पर सडीला से उन्नाव को जानेवाली सड़क इसे पार करती है। यह फतेहगढ़ से ७७ मील दक्षिण-पूर्व की ओर और लखनऊ से ३४ मील पश्चिम की ओर है। नवाब आसफुद्दौला के अर्थमन्त्री और हिजड़े मियां अल्मस अली खां ने इसे बसाया था। पहले इसे भोपतपुर कहते थे। १८५७ में यहां विद्रोहियों की हार हुई थी। यहां एक प्राइमरी स्कूल और सराय है। मोहन का मुसलमानी कस्बा लखनऊ और कानपुर के राजमार्ग पर नवाबी समय में एक महत्व पूर्ण स्थान था। यह लखनऊ से १८ मील दूर है। यहां होकर मलीहाबाद, बनी के पुल, हरौनी स्टेशन और दूसरे स्थानों को सड़कें गई हैं। मोहन सई नदी के ऊंचे किनारे पर बसा है। नवाब के मन्त्री राजा नवलराया ने सई के ऊपर एक सुन्दर पुल बनवाया था। पुल के पास एक पुराने किले का खेरा है। इसके ऊपर एक मुसलमानी मकबरा बना है। यहां डाकखाना और जूनियर स्कूल है। तहसील उठकर यहां से ४ मील की दूरी पर हसनगंज में चली गई।

मुरादाबाद सफीपुर तहसील से १६ मील और उन्नाव से ३६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां होकर हरदोई से उन्नाव को सड़क जाती है। कहते हैं औरंगजेब के समय में मुरादअली शेर

नामी एक व्यक्ति ने इसे बनवाया था। उत्तर की ओर गाजिउद्दीन की पुरानी नहर तक बगीचे फैले हुये हैं। यह बगीचे हरदोई जिले के जलालाबाद कस्बे के हैं। यहां जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। चैत और क्वार में देवी का मेला लगता है। यहां के मौलवी फजलुल-रहमान से मिलने के लिये दूर दूर से लोग आया करते थे। १८९७ में उनकी मृत्यु हो गई।

नवाबगंज उन्नाव से १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर अजगैन रेलवे स्टेशन से ३ मील और लखनऊ से २५ मील दूर है। चैत के अन्त में यहां दुर्गादेवी का मेला होता है। यह जिले भर में सब से बड़ा मेला होता है। गंज (बाजार) को नवाब के प्रधान मंत्री अमीनुद्दौला ने बनवाया था। नौबत राय खजांची ने यहां ताल बनवाया। तहसील के हटजाने और गांव के बीच में होकर रेलवे लाइन के बनने से यह स्थान नष्ट हो गया। नवल गंज लखनऊ से मोहन को जानेवाली सड़क पर लखनऊ से १३ मील और उन्नाव से २६ मील दूर है। नवाब सफदर जंग के नायब नवलराय ने इसे बनवाया था। महाराज गंज इसी से मिला हुआ है। इसे अर्थ मन्त्री महाराजा बाल कृष्ण ने बनवाया था। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अनाज, तम्बाकू, मसाले और शाक भाजी की बिक्री होती है। नवलगंज में पीतल के बर्तन भी बहुत बनते हैं। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है। परियर गङ्गा के किनारे पर उन्नाव से १४ मील दूर है। यहां से सफीपुर और रसूलपुर को सड़कें जाती हैं। गांव के पास ही दो मील लम्बी मढुआ झील है। नवाबी समय में यहां तहसीलदार रहता था। तहसीलदार रूपसिंह बाछिल ने यहां एक किला और चारदीवारी से घिरा हुआ गंज बनवाया जिसे दौलत गंज कहते हैं। यहां सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। बाजार में कपड़ा बहुत बिकता है। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां १ लाख से ऊपर यात्री गङ्गा स्नान करने के लिये आते हैं। कहते हैं अश्वमेध के अवसर पर श्रीरामचन्द्र जी ने यहां श्यामवर्ण घोड़ा छोड़ा था। लव और कुश ने परियार के वन में घोड़े को पकड़ लिया था। इससे युद्ध [illegible] हो गया।

मन्दिर में कुछ तीरों के सिरे रक्खे हैं। कहते हैं यह तीर (बाण) दोनों ओर से छोड़े गये थे। इस तरह के बाण लोगों को प्रायः नदी की तली में मिल जाते हैं। कहते हैं यहां लव और कुश का बनवाया हुआ बालकानेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर है। एक जानकी जी या सीता रानी का मन्दिर है।

पाटन गांव लोनी नदी से १ मील दक्षिण की ओर उन्नाव से रायबरेली को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां एक प्राइमरी स्कूल और फकीर मुहब्त शाह का मकबरा है।

पुरवा कस्बा परगने के बीच में कई सड़कों के चौराहे पर स्थित है। यहां होकर उन्नाव से रायबरेली को, कानपुर को, लखनऊ को और लालगंज को सड़कें जाती हैं। पुरवा में जूते अच्छे बनते हैं। सप्ताह में दो बार बड़ा बाजार लगता है। शिवरात्रि के अवसर पर बिल्लेश्वर महादेव का मेला लगता है। यहां तहसील, थाना, मुंसफी अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। अंग्रेजी राज्य में मिलने के समय यही जिले का केन्द्र स्थान था कहते हैं अब से ५०० वर्ष पूर्व अयोध्या निवासी रघुवंशी राजा नेवन ने इसे बसाया था। उसका निवास स्थान नेवायां कहलाता है। यह यहां से ४ मील दूर है। लोनी नदी ने उसे काट कर बहा दिया। उसके बाद राजा रणजीत-सिंह ने पुरवा की नींव डाली। पहले यह रणबीरपुर कहलाता था। फिर यह रंजीतपुर या पुरवा कहलाने लगा। १७१६ से १७७६ तक राजा अचलसिंह बैस ने यहां निवास किया। राजा सीतल प्रसाद त्रिवेदी ने शीतल गंज बसाया और एक ताल और मन्दिर बनवाया। फतेह अली ने फतेहगंज बसाया, एक बाग लगवाया और पक्का ताल बनवाया। यहां बिल्लेश्वर महादेव का मन्दिर और मीना साहब का एक मकबरा है। यहीं न्यामतशाह और हीराशाह की कब्रें हैं।

रसूलाबाद उन्नाव से संडीला को जाने वाली सड़क पर उन्नाव से १४ मील उत्तर की ओर है। यहां से पश्चिम में सफीपुर और हरदोई, उत्तर-पूर्व लखनऊ को, अजगैन रेलवे स्टेशन और गङ्गा के किनारे परियार को सड़कें गई हैं। इसके दक्षिण पश्चिम में छोटा सा जङ्गल है। यहां एक प्राइमरी

स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। शाही सेना के दो रिसालदारों ने जंगल साफ करके इसे बसाया था। उनका एक बंशज औरंगजेब के समय में लखनऊ का सूबेदार था। उसने १६६५ में यहां एक मस्जिद और एक किला बनवाया। इस समय ४ मस्जिद और पांच मन्दिर हैं।

सफीपुर उन्नाव से हरदोई को जाने वाली सड़क पर उन्नाव से १७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां से चारों ओर (परियार बालामऊ, मियांगंज और रसूलाबाद) को सड़कें गई हैं। यहां तहसील, थाना, मुंसफी, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अवध सरकार के उच्चपदाधिकारी दीवान उमेदराय और मौलवी फजल आजिम इसी नगर के निवासी थे। उमेदराय ने यहां बाजार और सराय बनवाई। मौलवी ने कई, कुएँ मस्जिदें और इमामबाड़े बनवाये कहते हैं इसे सई शुकुल नामी एक ब्राह्मण ने बनाया था। इसी से प्रायः सईपुर कहते थे। जौनपुर के बादशाह इब्राहीम ने एक सेना भेजकर शुकुल और उसके राजा उग्रसेन को मार डाला। इसके बाद यहां सफी नाम का एक फकीर आया। उसकी स्मृति में इसका नाम सफीपुर पड़ गया। यहां कई दरवेशों के मकबरे हैं।

संग्रामपुर या सरवन (श्रवण) का प्राचीन गांव एक बड़ी झील के दक्षिण में मौरावां से जब्रैला को जाने वाली सड़क से एक मील दक्षिण की ओर है। यह मौरावां से ६ मील दूर है। यहां एक प्रायमरी स्कूल है। कहते हैं राजा दशरथ मन्दिर में पूजा करने और जंगली पशुओं का आखेट करने के लिये यहां आये थे। इस समय श्रवण अपने वृद्ध माता पिता को कांवर में लेकर तीर्थ करने निकले थे। तालाब के पास पहुँच कर श्रवण कांवर को अलग रख कर पानी पीने लगा। राजा ने पानी का शब्द सुनकर अँधेरे में समझा कि कोई जंगली पशु पानी पी रहा है। उसने धनुष पर बाण चढ़ाकर श्रवण की ओर छोड़ा। इसके लगते ही वह मर गया। इस पर वृद्ध और अन्धे माता-पिता ने बध करने वाले को श्राप दिया कि उनकी तरह ही उनके पुत्र का बध करने वाला पुत्र वियोग से मरे। श्राप देकर उन्होंने प्राण त्याग दिये। इसी स्थान पर श्रवण या सरवन गांव बसा है। यहां कोई क्षत्रीय नहीं रहता है। जब कभी किसी क्षत्रीय ने यहां बसने का प्रयत्न किया तब उसका अनिष्ट हुआ। तालाब के पास श्रवण की पत्थर की मूर्ति बनी है। कहते हैं श्रवण प्यास से मरा था इसलिये इस मूर्ति की नाभिक छेद में कितना ही जल छोड़ा जाय यह कभी नहीं भरता है।

लखनऊ

लखनऊ का जिला अवध तथा संयुक्त प्रान्त भर में सब से छोटा है। लेकिन इस जिले में अवध का सब से बड़ा शहर स्थित है। इसका आकार एक विषम चतुर्भुज है। इसकी औसत लम्बाई ४५ मील और चौड़ाई २५ मील है। इसका क्षेत्रफल ६६७ वर्ग मील है। इस जिले के पूर्व में बराबंकी दक्षिण में रायबरेली दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम में उन्नाव उत्तर-पश्चिम में हरदोई और उत्तर में सीतापुर का जिला है।

इस जिले में पहाड़ियों का नाम नहीं है। लेकिन यह बहुत हरा भरा है। थोड़ी थोड़ी दूर पर गांव बिखरे हुये हैं। नदियों और नालों के पड़ोस में भूमि ऊँची नीची हो गई है। नदियों के पास में ही ऊँचे रेतीले टीले हैं इनमें सिंचाई न होने के कारण बाजरा और मोठ के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता है। ऊसर भूमि अधिकतर जिले के दक्षिण और पश्चिम में मिलती है। बिजनौर परगने में ३० फीसदी से अधिक भूमि ऊसर है। लखनऊ के एक पाताल तोड़ कुयें की खुदाई में १३३६ फुट की गहराई तक बालू और बालू मिली हुई कांप मिली। बीच बीच में कंकड़ की तहें थीं। समुद्रतल से १००० फुट की गहराई तक वहां स्थाई जल की धारा न मिली। नदियों से दूर भूमि टूटी फूटी नहीं है। भूमि का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। ढाल

इतना कम है कि नदियां बिना मोड़ बनाये हुये अधिक दूर आगे नहीं वह पाती है। महोना के पास जिले के उत्तरी सिरे पर भूमि समुद्र-तल से ४१५ फुट ऊंची है। लखनऊ के दक्षिण में आलम बाग के पास भूमि ३६४ फुट ऊंची है। नग्राम के पास दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर भूमि ३७२ फुट ऊँची है। इस प्रकार प्रति मील में भूमि का ढाल १ फुट से कम है। गोमती और सई इस जिले की दो बड़ी नदियां है। गोमती नदी पीलीभीत जिले में पीलीभीत शहर से ६६ मील पूर्व में निकलती है। ४२ मील टेढ़ी चाल से बहने के बाद यह खीरी जिले में प्रवेश करती है। इसके आगे गोमती दक्षिण की ओर मुड़ती है और सीतापुर और हरदोई जिलों के बीच में सीमा बनाती है। फिर यह लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। पहले गोमती नदी महोना और मलीहाबाद परगनों को अलग करती है। फिर यह रनियामऊ गांव के पास लखनऊ परगने में प्रवेश करती है। लखनऊ शहर के बीच में बहती हुई कुछ दूर तक गोमती लखनऊ और मोहनलालगंज के बीच में सीमा बनाती है। अन्त में सलेमपुर गांव के पास गोमती लखनऊ जिले को छोड़कर बाराबंकी जिले में प्रवेश करती है। गोमती की तली पड़ोस की भूमि से नीची है इसलिये गोमती सिंचाई के काम नहीं आती है। अच्छी भूमि प्रायः गोमती के किनारे से कुछ दूरी पर मिलती है। इसके ऊंचे नीचे किनारे प्रायः रेतीले हैं। कहीं कहीं छोटे छोटे गीले कछार हैं। अधिकतर खादर लखनऊ परगने में है। इनमें प्रायः खरीफ की फसल होती है। कभी कभी रबी की फसल भी होती है। प्रबल वर्षा में तराई पानी में डूब जाती है। ऊँचे किनारों पर बसे हुये गावों में सिंचाई की सुविधा न होने से खेती नहीं हो पाती है। इस जिले में गोमती की सहायक नदियां छोटी-छोटी हैं। बेंहटा नदी हरदोई जिले से निकलती है। मलीहाबाद परगने को पार करके कुछ दूर तक यह काकोरी परगने की उत्तरी सीमा बनाती है। कंकराबाद गांव के पास यह गोमती के दाहिने किनारे पर मिल जाती है। लोनी नदी मोहन लाल गंज परगने में निकलती है। ६ मील बह कर सलेमपुर के पास यह गोमती में दाहिने किनारे पर मिल जाती है। इनके अतिरिक्त कुछ नाले भी गोमती में मिलते हैं।

सई नदी उन्नाव जिले के मोहन परगने से लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। कुछ दूर तक यह जिले की सीमा बनाती है। बिसिंगपुर के पास सई नदी लखनऊ जिले के बाहर हो जाती है और रायबरेली और प्रतापगढ़ जिलों को पार करने के बाद जौनपुर शहर से १८ मील नीचे यह गोमती में मिल जाती है। नगवा नदी बानी के पास सई में मिलती है। बख नदी लखनऊ रेलवे स्टेशन के पास निकलती है। रायबरेली की सीमा पर स्थित बिसिंहपुर गांव के पास यह सई में मिल जाती है।

लखनऊ जिले के अधिकतर भाग का पानी गोमती और सई नदियों और उनकी सहायक नदियों में बह जाता है। कुछ भाग ऐसे नीचे हैं कि उनका पानी किसी नदी में नहीं पहूँच पाता है। वहां झीलें बन गई हैं। कहीं-कहीं ढाक के वन और ऊसर भूमि है। जिले की अधिकतर मिट्टी हलकी दुमट है। इसमें बालू और चिकनी मिट्टी का मिश्रण है। कुछ भागों में भूड़ और मटियार है। जिले की १६ प्रतिशत भूमि खेती के काम नहीं आती है। इसमें कुछ पानी से ढकी है। कुछ घरों सड़कों और रेलों से घिरी हुई है। शेष ऊसर है। जिले में वन का अभाव है। केवल कहीं-कहीं ढाक के जङ्गल मिलते हैं। इनमें जङ्गली सुअर, गीदड़ और हिरण पाये जाते हैं। लखनऊ का जिला अवध के दूसरे जिलों से कुछ अधिक गरम है। फिर भी इलाहाबाद और बुन्देलखंड की अपेक्षा यहां कम गरमी पड़ती है। पेड़ों के कट जाने, पक्की सड़कों और पक्के घरों के बन जाने से लखनऊ शहर जिले के दूसरे स्थानों से अधिक गरम है। कभी-कभी तापक्रम ग्रीष्म ऋतु में ११० अन्श फारेनहाइट हो जाता है। सरदी में पाला भी पड़ जाता है। गरमी के ऋतु में पश्चिम की ओर से हवायें चलती हैं। तभी धूल भरी आंधियां भी आती हैं। औसत से जिले में ३६ इञ्च से कुछ कम वर्षा होती है। कभी कभी सुकाल में यहां ७० इञ्च तक वर्षा हुई है। दुर्भिक्ष में केवल १८ इञ्च वर्षा हुई है।

साधारणतः लखनऊ जिले में अच्छी खेती होती

है । खरीफ की फसल अधिक प्रसिद्ध है । और अधिक क्षेत्रफल में होती है। खरीफ की २६ फीसदी भूमि में धान होता है। १२ फीसदी भूमि में ज्वार होती है। साधारण खेतों में बाजरा होता है। इनके साथ अरहर, उर्द, मूंग भी बो दी जाती है। कुछ भागों में मकई बोते हैं। रबी की फसल में ३३ फीसदी गेहूँ रहता है। २७ फीसदी खेतों में चना रहता है। जौ कम बोया जाता है। गोमती के किनारे लखनऊ तहसील में गरमी की ऋतु में एक तीसरी फसल भी उगा ली जाती है। इसमें खरबूजा, तरबूजा, ककड़ी और तरह तरह की तरकारियां रहती हैं। इस जिले में सिंचाई के अच्छे साधन हैं। अधिकतर खेत कुओं से सींचे जाते हैं। कुछ तालाबों से सींचे जाते हैं। कुछ भागों में नहर से सिंचाई होती है। गाजिउद्दीन हैदर की बनवाई हुई पुरानी नहर सिंचाई के लिये व्यर्थ है। इस नहर द्वारा हरदोई उन्नाव और लखनऊ जिले की भूमि को सींचने का विचार था। नहर द्वारा गंगा का पानी गोमती तक पहुँचाने का विचार था। इस योजना को राजा बख्तावर सिंह ने आरम्भ किया था। पर यह योजना सफल न हो सकी। वर्षा ऋतु को छोड़कर नहर की तली प्राय: सूखी रहती है। यह नहर काकोरी के पश्चिम में लखनऊ जिले में प्रवेश करती है। आलमनगर के पास रेलवे लाइन इसे पार करती है। यह लखनऊ शहर के दक्षिण में हैवलाक रोड के समानान्तर चलती है और सिविल लाइन को छावनी से अलग करती है। सुल्तान गंज के दक्षिण में यह गोमती में मिलती है। जिले के कुछ भागों में सारदा नहर से सिंचाई होती है।

लखनऊ जिले में मुसलमान जुलाहे और हिन्दू कोरी कपड़ा बुनने का काम करते हैं। मोहन लाल परगने और दूसरे गांवों में गाढ़ा बहुत बुना जाता है। यह बड़ा मजबूत और सस्ता होता है। लखनऊ शहर में मोटे से मोटा गाढ़ा और बढ़िया से बढ़िया मलमल बुनने का काम होता है। हसनगंज थाने में मुहम्मद नगर इसका प्रधान केन्द्र है। इस जिले में कपास नहीं होती है। अत: रुई बाहर से आती है। यहां की मलमल में चिकन की कढ़ाई का काम होता है। लेकिन विलायती मलमल ने यहां के जुलाहों को बड़ा धक्का पहुँचाया। दौलतगंज और झांसी टोला में सूती कपड़ा छापने का काम होता है। बढ़िया छपाई के लिये कपड़े को पानी, तिली के तेल और भेड़ की रेंडी से मलकर तीन सप्ताह तक रखते हैं। एक सप्ताह के बाद धोकर धूप में सुखा लिये जाते हैं। फिर उसको कई रंग मिले हुये पानी में डूबते हैं। फिर धोकर और सुखा कर छपाई करते हैं। यहां की छींट बड़ी बढ़िया होती है। कपड़े को तरह तरह के रंग में रंगने का काम भी यहां अच्छा होता है। चिकन का काम सूती मलमल या रेशम पर होता है। यह काम उच्च कोटि के थोड़े कारीगरों के हाथ में है। कुछ कारीगर चौक में रहते हैं।

इस काम में परदानशीन स्त्रियों और बच्चों का भी निर्वाह हो जाता है। लखनऊ में सोने और चांदी के तार से कामदानी का भी काम होता है। तार खोखला होता है। बहुत बारीक धागे और सुई को इसके छेद में डाल कर मलमल पर इसे सी देते हैं। कामदानी में कारीगर काढ़कर तरह तरह के फूल और फल बना देता है। ठीक ठीक और चमकीले भड़कीले रंग से काम की शोभा बढ़ जाती है। प्राय: चांदी की पत्तियों में सोने का फल बनाकर कारीगरी दिखलाई जाती है। तरह तरह के बेलबूटे भी बनाये जाते हैं। लच्छा कालाबत्तू लैस और गोटे का काम भी होता है। इसमें भी तार की सफाई है। यहां का गोटा विलायती गोटे से बहुत बढ़िया होता है।

काश्मीरी कारीगरों के आजाने से कुछ दिनों लखनऊ में शाल बुनने का काम होता रहा लेकिन अधिकतर कारीगर काश्मीर को लौट गये। इससे शाल बुनने का काम बन्द हो गया लेकिन रफू का काम फिर भी चलता रहा। ऊनी आसन और जायनमाज बनाने का कुछ काम होता है। इस पर तरह तरह के चित्र बने रहते हैं। लखनऊ के सुनार सोने चांदी के बढ़िया आभूषण बनाते हैं। कुछ लोग हुक्का बनाते हैं।

हुक्कों और दूसरे बर्तनों पर मुसलमान कारीगर बिदरी और जरबुलन्द का काम भी करते हैं।

घटिया धातु पर तार बिठा दिया जाता है और चमका दिया जाता है। कभी कभी इस ढंग से जानवरों के चित्र बना दिये जाते हैं। लखनऊ में खसदान, पानदान, बधना, डेगची, पतीली और दूसरे बर्तन भी बनाये जाते हैं। कुछ मुसलमान कारीगर हड्डी हाथी दांत के कंघे, कागज काटने की छुरी, शतरंज की मुहरें और इमारतों के नमूने बनाते हैं। बढ़ई लोग बढ़िया कामदार चौखट मेज कुरसी और दूसरी चीजें शीशम, तून और दूसरी लकड़ी से बनाते हैं। लकड़ी के तरह तरह के रंगीन खिलौने भी बनाये जाते हैं। इस जिले में मिट्टी के बर्तन, खिलौने और फल बनाने का का काम भी अच्छा होता है। शीशे की बोतलों और चूड़ियां बनाने का काम पहले बहुत होता था। जूता और चमड़े का दूसरा सामना भी बनाया जाता है। लखनऊ की बनी हुई तम्बाकू और इत्र भी प्रसिद्ध है।

गोमती के उत्तरी किनारे पर सुल्तान गंज में १८७६ में अपर इंडिया कूपर पेपर (कागज) मिल्स स्थापित की गई। शराब बनाने और तेल पेरने का भी काम होता है। चार बाग स्टेशन के पास रेलवे का बड़ा कारखाना है। इनके अतिरिक्त लखनऊ में कई बड़े बड़े छापाखाने हैं।

संक्षिप्त इतिहास—कहते हैं लखनऊ को श्री रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण जी ने बसाया था। इसका पुराना नाम लक्ष्मणवती था। मच्छ भवन के पास का ऊंचा टीला इस समय भी लक्ष्मण टीला कहलाता है। कहते हैं यहां एक ऐसा छेद था जहां से शेषनाग के लिये जल और फूल चढ़ाये जाते थे। कहते हैं रूखरा गांव रूखा से सम्बन्ध रखता है। यहां बाणासुर की लड़की थी जो श्री कृष्ण जी के पौत्र अनुरुद्ध पर आसक्त हो गई थी। अर्जुनपुर को अर्जुन ने बसाया था। नगोहन में पांडव आये थे। सूर्यवंशी राज्य के अन्त में यहां वन हो गया था। इसमें ऋषि और मुनि रहते थे। इन्होंने कई नगर बसाये। मड़िआंव मंडल ऋषि ने बसाया था। जागौर को जगदेव योगी ने बसाया था। कहते हैं इन्हें राजा परीक्षित की ओर से यहां भूमि मिली थी। कहते हैं इसी अन्धकार के समय भार, कुरमी और मुराव लोगों ने दुर्गों को बनाकर छोटे छोटे भागों पर शासन करना आरम्भ कर दिया। यह लोग स्वाधीन थे। इनमें बहराइच का भारवंश अधिक बलवान था। इसी वंश के त्रिलोक चन्द ने ९१८ में दिल्ली के विक्रम पाल को हराकर समस्त अवध पर अपना अधिकार कर लिया। १०९३ में गोविन्द चन्द की विधवा रानी भीम देवी ने यह राज्य अपने गुरू हरगोविन्द को सौंप दिया। गुरू के उत्तराधिकारियों ने यहां १४ पीढ़ी तक राज्य किया। कहते हैं कन्नौज के राजा ने आल्हा और ऊदल को यह भाग जीतने के लिये भेजा था।

कहते हैं महमूद गजनवी ने अपने भतीजे सैयदसालार को भी इधर आक्रमण करने के लिये भेजा था। कई नगरों में उसके मरे हुये सैनिकों के मकबरे बने हैं। बाराबंकी के सतरिख में उसका केन्द्र स्थान था। लखनऊ में एक मकबरा सोहबतिया बाग में था। मड़िआंव में नौगजा पीर का मकबरा है। सैयदसालार के मारे जाने से राजपूत अधिकाधिक संख्या में अवध में आने लगे। बैस सर्व प्रथम आये और बैसवाड़े में बस गये। गौतम राजपूतों ने सिसैंडी में अपना अड्डा बनाया। १४०० ईस्वी में मालवा के धारा नगर से पंवार महोना में आये कहते हैं उन्हीं के साथ सोलकी आये और मलीहाबाद परगने में बस गये। मैनपुरी से चौहान आये। कुर्मियों को भगाकर उन्होंने मौली राज्य स्थापित किया। इसी समय चमर-गौड़ या अमेठिया राजपूत आये। गहरवार और दूसरे राजपूत भी यहां आकर बस गये।

इसी बीच में १२०२ ई० में मुहम्मद बख्तियार खिल्जी का आक्रमण हुआ। यह बंगाल की सूबेदारी लेने के लिये अवध के मार्ग से ही गया था। कहते हैं मलीहाबाद के पास बख्तियार नगर को इसी ने बसाया था। यहीं उसने कुछ पठान छोड़ दिये। इसी समय सतरिख से आकर गोमती के उत्तर में ४२ गांवों में किदवई शेख बस गये। आगे भी यहां मुसलमान आते रहे। शाहजहां के समय (१६५६) में दिलेर खां ने कुछ पठानों को बख्तियार नगर और गढ़ी संजर खां में बसाया। कुल पठान शुजाउद्दौला के समय (१७५३) में आये। कुछ हिन्दू मुसलमान हो गये और शेख और पठान बन गये।

लखनऊ शहर में ब्राह्मण और कायस्थ रहते थे वे लक्ष्मण टीले के पड़ोस में बसे हुये थे। उनके स्थान पर रामनगर के पठान बसा दिये गये। इनकी जमींदारी गोल दरवाजे तक थी। इनके पूर्व (जहाँ नीम के वृक्षों की अधिकता थी) में शेखों का प्रभुत्व हो गया। इनके घर मच्छी भवन से रेजडेंसी तक फैले हुये थे। गदर के बाद यह घर गिरा दिये गये। इनमें कई अवध के सूबेदार थे। इनके एक पूर्वज ने यहां एक मजबूत किला उस स्थान पर बनवाया था जहां आगे चलकर मच्छी भवन बना। कहते हैं इस किले को लिखना नामी एक हिन्दू ने बनाया था। इसलिये इसे किला लिखना कहते थे। जैसे जैसे शेख बढ़े और फले फूले वैसे वैसे शहर भी बढ़ा। पुराने लक्ष्मणपुर नाम के स्थान पर इसका नाम लखनऊ पड़ गया। मुसलमानी शासन के आरम्भ से ही लखनऊ अवध का अंग था। पहले राजधानी अयोध्या में थी। कभी कभी लखनऊ में भी राजधानी रही। १५२६ में हुमायूं ने लखनऊ पर अधिकार कर लिया। आगे चलकर यह सूरी बादशाहों के हाथ में चला गया। यहां उन्होंने तांबे के सिक्के बनाने के लिये टकसाल स्थापित की। १४७८ में यहां शाह मीना नाम के एक फकीर की मृत्यु हुई उसी की स्मृति में एक मुहल्ले का नाम मीना नगर पड़ गया।

अकबर लखनऊ को बहुत पसन्द करता था उसके समय में तांबे के सिक्कों की टक्साल यहां जारी रही। चौक के दक्षिण में कई मुहल्ले बनाये गये। अकबर के समय में भी यहां ब्राह्मण अधिक रहते थे। अकबर ने उनसे वाजपेयी यज्ञ करवाया और उन्हें १ लाख रुपया दक्षिणा में दिया। उस समय से वे लखनऊ में वाजपेयी कहलाने लगे। लेकिन उनका मुहल्ला तोड़ दिया गया। कहते हैं जौनपुर में हारने के बाद हुमायूं यहां चार घंटे ठहरा। इसी बीच में यहां के शेखों ने १००० रुपये और पचास घोड़े इकट्ठे करके हुमायूं को भेंट किये।

अकबर की मृत्यु के बाद लखनऊ का उल्लेख बहुत कम आता है। सादात खां नामी निशापुर के एक ईरानी सौदागर ने सम्राट मुहम्मदशाह को सैयद भाइयों के चंगुल से छुड़ाने में बड़ी सहायता की। इससे इस सौदागर की बड़ी उन्नति हुई। १७३८ में यह अवध का सूबेदार बना दिया गया। उसी से अवध के नवाबी वंश का आरम्भ होता है। उसने अयोध्या में किला बनवाया। वहीं वह रहने लगा। लेकिन कुछ समय वह लखनऊ में भी रहा। पहले शेखों ने अकबरी दरवाजे में उसका विरोध किया। अतः उसने शहर के बाहर डेरा डाला। दावत के बहाने शेखों को भुलावा देकर वह शहर के भीतर चला गया। शेखान दरवाजे में एक तलवार लटकी रहती थी। इसके सामने सभी नवागु तुर्कों को झुकना पड़ता था। सादातखां ने इसे गिरा दिया। इसके बाद उसने किले के भीतर पंच महल को किराये पर लिया। उसने यहां कई कटरे बनाये। सादात खां के बाद उसका भतीजा और दामाद अब्दुल मसूर खां (सफदर जंग) अवध का नवाब हुआ। लेकिन वह अधिकतर दिल्ली में रहता था। १७५४ में उसकी मृत्यु हुई। मरने से कुछ समय पहले वह अवध में रहने के लिये आया। उसने फैजाबाद में अपनी राजधानी बनाई। इससे उसके समय में लखनऊ की अधिक उन्नति न हुई। लखनऊ के महल उसके हाथ में अवश्य बने रहे। महलों का किराया न देकर उनके स्वामी शेखों को उसने ७०० एकड़ भूमि दी। उसने पुराने किले को फिर से बनवाया और उसका नाम मच्छी भवन रक्खा। शहर के दक्षिण में बैसवाड़े में बैस राजपूतों को डराने के लिये उसने जलालाबाद का किला बनवाया। उसके मन्त्री नवलराय ने गोमती के ऊपर पत्थर के पुल का बनवाना आरम्भ किया। लेकिन वह उसे पूरा होते न देख सका। वह पहले ही मर गया। १७५४ में जब सफदरजंग की मृत्यु हुई तो उसकी लाश दफन होने के लिये दिल्ली को भेजी गई। उसका बेटा शुजाउद्दौला अवध का नवाब हुआ। वह अधिकतर फैजाबाद में रहा। केवल कुछ दिनों वह लखनऊ में रहा। १७७५ में फैजाबाद में उसकी मृत्यु हो गई। जब उसका बेटा आसफुद्दौला अवध का नवाब हुआ तब लखनऊ में नयायुग आरम्भ हुआ। उसने फैजाबाद को छोड़ कर लखनऊ में अपनी राजधानी बनाई। उसके समय में लखनऊ में नये नये भवन बने। कहते हैं ५२ गांवों की भूमि लखनऊ शहर को बढ़ाने

के लिये ले ली गई। उसकी उदारता अवध भर में प्रसिद्ध थी। लोग अब भी कहा करते हैं 'जिसको न दे मौला तिसको दे आसफ़ुद्दौला।' आसफ़ुद्दौला ने लखनऊ में असंख्य भवन बनवाये और बगीचे लगवाये। किले के पश्चिम में गोमती के किनारे दौलतखाना है। यहीं आसफ़कोठी या महल है। मच्छी भवन में बड़ा इमामबाड़ा है। रूमी दरवाजा भी उसका बनाया हुआ है। १७८० में रेजीडेंसी बनी। बिबियापुर महल, चिन्हाट (जो आगे चलकर गिरा दिया गया) ऐशबाग, चारबाग, यहियागंज और अस्तबल उसी के समय में बने शहर के भीतर वजीरगंज, जमानीगंज, फतेहगंज, रकाबगंज, दौलतगंज, बेगमगंज और नखास बने। अहाता खानसामान, टिकैतगंज और टिकैतराय का बाज़ार भी उसी के समय में बना। तीरमनिगंज, टीकरी, छावनी हसनुद्दीन खां, हसनगंज, बावली, भवानीगंज, बालकगंज काश्मीरी मुहल्ला, निवासगंज, तहसिनगंज, खुदागंज और अलीगंज, अम्बारगंज तोप दरवाजा और ख्यालीगंज भी बने। वजीरगंज में नवाब के अर्थमन्त्री महाराजा झाऊलाल ने झाऊलाल बाजार लगवाया। नवाब के समय में क्लाडी मार्टिन नवाब का प्रिय हो गया वह एक प्रकार से प्रधान मन्त्री था। उसने बहुत सा धन इकट्ठा किया। १८०० ईस्वी में उसकी मृत्यु हो गई। उसने मार्टीनिया बनवाया जहाँ उसकी कब्र है।

आसफ़ुद्दौला के समय में लखनऊ के दरबार की शोभा अपूर्व थी। अवध प्रान्त समृद्धि के शिखर पर था। उसका एक मात्र उद्देश्य यह था कि भारतवर्ष का कोई दरबार उसके दरबार से शान में आगे न बढ़ने पावे। उसको यह चिन्ता लगी रहती थी कि टीपू के पास कितने हाथी हैं। निजाम के पास कितने मूल्यवान हीरे और रत्न हैं। १८०० में यहां पांच लाख से ऊपर जनसंख्या थी। लेकिन आसफ़ुद्दौला भोग विलास में फंस गया। साधारण लोगों की दशा बिगड़ गई। १७९७ में उसकी मृत्यु हो गई। वह अपने इमाम बाड़े में गाड़ा गया। उसका बेटा वजीर अली नवाब हुआ। उसने केवल ४ महीने तक राज्य किया। इसके बाद सरजान शोर ने उसे गद्दी से उतार दिया और बनारस भेज दिया। आसफ़ुद्दौला का सौतेला भाई सादात अली खां नवाब बनाया गया। सादात अली खां १७९८ में बनारस से लखनऊ पहुँचा वह बिबियापुर महल में ठहरा। यहां लार्ड टेनमथ ने बड़ा दरबार किया और फिर शहर में उसका जलूस निकाला गया। सादात अली खां ने १६ वर्ष तक राज्य किया। वह मितव्ययी था। लेकिन उसने लखनऊ को सजाने में खूब खर्च किया। क़ैसरबाग और दिलकुशा के बीच की प्रधान इमारतें उसी ने बनवाई। वह फ़र्हत बाग में रहता था। उसने बेलीगार्ड, टेढ़ी कोठी, लाल बारादरी, दिलाराम और दिलकुशा महल बनवाया। उसी ने हयात बख्श को फिर से बनवाया। नूर बख्श, बेगम की कोठी, कांकरवाली कोठी, दरख़्शां खुरशेद, मंजिल, चौपड़ अस्तबल, (जहां यूनियन क्लब है) और सिकन्दर बाग उसके समय में बने, इनके अतिरिक्त उसने शहर के पश्चिम में सादातगंज बनवाया। उसी के शासन काल में रकाबगंज, जङ्गलीगंज मकबूलगँज (गणेशगंज थाने में) गोलागंज, मौलवीगंज (वजीरगंज में) और रस्तोगी मुहल्ला चाक में बना। सादात अली खां का पालन पोषण अंग्रेजी समाज में हुआ था। मरने के समय उसने खजाने में १४ करोड़ रुपये छोड़े। १८१४ में उसे जहर दे दिया गया। इससे उसकी मृत्यु हो गई। कैनिंग कालेज के उत्तर-पूर्व के एक इमामबाड़े में वह गाड़ा गया। दूसरा इमामबाड़ा उसकी बेगम खुरशेद जादी का है। उसका बेटा गाजिउद्दीन अवध का सातवां और अन्तिम नवाब था। १८१९ में लार्ड हेस्टिंग्स ने उससे भेंट की और उसे शाह की उपाधि दी। इसलिये उसके उत्तराधिकारी शाह कहलाने लगे। उसने अपने पिता का आलीशान मकबरा बनवाया। उसी ने मोती महल, मुबारक मंजिल, शाह मंजिल, क़दम रसूल और विलायत बाग बनवाया। उसी ने अपने नाम की नहर आरम्भ की। गोमती के उत्तर में उसने बादशाहगँज बसाया। उसके शासनकाल में मेहदीगंज सादातगंज थाने में बना। उसी समय उसके मन्त्री ने ड्योढ़ी आगामीर सराय आगामीर और करबला बनवाया। १८२७ में वह मर गया और अपने बनवाये हुये शाहनजफ़ (मकबरे)

में गाड़ा गया। उसका बेटा नसीरुद्दीन हैदराबाद का शाह बना। उसने १० वर्ष तक राज्य किया। उसने तारावाली कोठी, तारों के देखने के लिये (वेधशाला) बनवाई। यहां उसने तरह तरह के यन्त्र एकत्रित किये। इरादतगंज में उसने बड़ा करबला बनवाया। यहीं वह गाड़ा गया। उसने गनेशगंज और गोमती के उत्तर में चान्दगंज बसाया। उसके मन्त्री रोशनुद्दौला ने अपने नाम का भवन बनवाया जहां कचहरी है। ७ जुलाई को उसे विष दे दिया गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसका चाचा मुहम्मद अलीशाह (सादात अली खां का भाई) बादशाह हुआ। बादशाह बेगम ने मुन्ना जान को गद्दी पर बिठाने की कोशिश की। वे दोनो नजरबंद करके चुनार को निकाल दिये गये। १८४२ में मुहम्मद अली शाह की मृत्यु हो गई। वह अपने इमामबाड़े में गाड़ा गया। उसने हुसेनाबाद का इमामबाड़ा और जामा मस्जिद को बनवाया। उसी ने सतखंड़ (सातखंड़ या मंजिल) बुर्ज का बनवाना आरम्भ किया था। गोलागंज के पूर्व में हकीम मेहदी अली का मकबरा भी उसी के समय में बना। उसका बेटा अमजद अलीशाह गद्दी पर बैठा। उसने पांच वर्ष तक राज्य किया। अमजद अलीशाह ने कानपर के लिये। वर्तमान सड़क बनवाई। उसने गोमती के ऊपर लोहे का पुल बनवाया उसके मन्त्री अमीनुद्दौला ने अमीनाबाद का बाजार और उसने हजरतगंज बनवाया। हजरतगंज में ही उसका मकबरा बना। कानपुर की सड़क पर शहर के बीच में उसने बड़ी सराय बनवाई। फरवरी १८४७ में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बेटा वाजिदअलीशाह अन्तिम बादशाह हुआ। उसने कैसर बाग का महल (१८४८-५० में) बनवाया। उसने कुछ ही वर्ष राज्य किया। कुप्रबन्ध का अपराध लगा कर फरवरी १८५६ में ब्रिटिश सरकार ने उसे लखनऊ की बादशाहत से सदा के लिये हटा दिया और नजरबन्द करके कलकत्ते में भेज दिया। यहां वह मई के महीने में पहुँचा। चार महीने के बाद सितम्बर में उसकी मृत्यु हो गई। उस समय लखनऊ भारतवर्ष के अत्यन्त समृद्धि शाली नगरों में से एक था। बीचवाल भाग घना बसा था। लखनऊ की सड़कों पर घुड़सवार सोने के किनारों वाले मखमली कपड़े पहन कर लगातार इधर उधर जाते थे। इनके पीछे इनके नौकर सोने और चांदी की मढ़ी हुई लाठी, सोने चांदी की मूठ वाली तलवार भाले और गदा लेकर चलते थे। अमीर लोग सुनहली और रंगीन पालकियों में बैठकर भीड़के बीच में होकर जाते थे। उनके पीछे सशस्त्र सिपाही रहते थे। कभी कभी उनके पीछे घुड़ सवार रहते थे। कुछ लोग चांदी के बने हुये बढ़िया कामदार हौदे के बीच में हाथियों पर सवार होकर निकालते थे। इनके अनुचर भारत के सभी भागों से आते थे। इनकी पोशाकें अलग अलग रहती थीं। इस प्रकार की भीड़ से भरी हुई लखनऊ की सड़कें नवाबी काल में बड़ी सुन्दर मालूम होती थीं। अठारवीं सदी के अन्तिम चरण में अवध के राज्य में अवध के अतिरिक्त रुहेलखंड, इलाहाबाद, कानपुर और गाजीपुर भी शामिल थे। इनकी सब सूबों में बड़ी सेनायें थीं। ईस्ट इंडिया कम्पिनी ने इन सेनाओं से मरहठों की बाढ़ को रोकने में सहायता ली।

१८५७ में गदर के प्रथम चिन्ह दिखाई दिये। जब चीफ कमिश्नर गाड़ी पर सवार होकर जा रहा था उसके ऊपर मिट्टी का एक ढेला फेंका गया। दूसरी मई को अवध के सिपाहियों ने नये (चरबी लगे हुये) कारतूसों को छूने से इनकार कर दिया। दूसरे दिन इन सिपाहियों से परेड कराई गई। तोपों को लिये हुये अँग्रेज सिपाही उनके सामने थे। तोपों को देखकर आधे सिपाही हथियार फेंक कर भाग गये। ११ मई को उसने दरबार किया। इसके साथ ही उसने मच्छी भवन और रेजीडेंसी में मजबूत किलेबन्दी की। १८ मई को उसे सब सैनिक अधिकार मिल गये। ३० मई को वास्तव में गदर आरम्भ हुआ। इस दिन देशी सिपाहियों ने मंडिआव छावनी के बंगले जलाये और दो तीन अँग्रेज अफसरों को मार डाला। इसी शाम को शहर में विद्रोह किया लेकिन पुलिस ने विद्रोहियों को दबा दिया। इस पर हेनरी रेजीडेंन्सी में चले गये। ४ जून को सीतापुर के विद्रोहियों की खबर आई। पचास सिपाही कानपुर से आये। इस पर अँग्रेजी सिपाही रेजीडेन्सी के दो स्थानों पर और मच्छी भवन में नियत कर

दिये गये और लम्बे घेरे की तैयारी की गई दो दिन के बाद कानपुर में विद्रोह हुआ। फिर तो विद्रोह की लहर समस्त अवध में फैल गई। २६ जून को विद्रोहियों ने चिन्हाट ले लिया। ३१ जून से रेजीडेंसी का घेरा आरम्भ हुआ। उसी रात को कर्नल पामर ने मच्छी भवन को खाली करके उड़ा दिया सिपाही रेजीडेंसी में भेज दिये गये। इस समय लखनऊ में १००८ ब्रिटिश अफसर और सिपाही थे। कुछ ईसाई स्त्रियां और बच्चे थे। रेजीडेंसी में घिरे हुये व्यक्तियों की संख्या ३००० थी। दूसरी जुलाई को सर हेनरी लारेंस बुरी तरह घायल हुआ। ४ जुलाई को वह मर गया। मेजर बैंक्स लखनऊ के चीफ कमिश्नर हुये। कुछ दिनों में वे भी मार डाले गये। जनरल इङ्गलिस प्रधान सेनाध्यक्ष चुने गये। विद्रोहियों ने रेजीडेंसी पर गोलेबारी जारी रक्खी ७ जुलाई को जोहान्स के घर पर धावा बोला गया। घर का कुछ भाग उड़ा दिया गया। दो दिन के बाद बहुत से विद्रोही मारे गये। १७ जुलाई को विद्रोही हटा दिये गये। २१ जुलाई को कानपुर से हैवलाक का पत्र आया। १० अगस्त को विद्रोहियों ने दोपहर के ग्यारह बजे से आधी रात तक रेजीडेंसी पर गोलियों की बौछार की फिर वे पीछे हट आये। १८ अगस्त को विद्रोहियों ने बारूद भर कर सिक्खों के हाते में सुरंग लगा दी। ५ सितम्बर को विद्रोहियों ने रेजीडेंसी पर फिर छापा मारने का प्रयत्न किया। १४ सितम्बर को कैप्टेन फुल्टन मारा गया। रेजीडेंसी की इमारत गोलियों की बौछार से छेद चुकी थी। भोजन भी कम हो रहा था। २० सितम्बर को जनरल आउट्रम कानपुर में गङ्गा को पार करके लखनऊ की ओर बढ़ा। २३ सितम्बर को उसकी तोपों के गोलों का शब्द सुनाई दिया। २५ सितम्बर को हैलाक और आउट्रम की सेनायें रेजीडेंसी में पहुँच गई। इनकी सेनाओं ने २२ सितम्बर को लखनऊ जिले में सई नदी को बानी के पुल से पार करके लखनऊ जिले में प्रवेश किया था। २३ सितम्बर को आलमबाग की लड़ाई हुई। २५ सितम्बर को चाल पुल को पार करके अंग्रेजी सेना चक्करदार मार्ग से मोती महल में पहुँच गई। यहां कैसर बाग और खुरशेद मंजिल से उनके ऊपर गोलियों की बौछार होने लगी। लेकिन कुछ समय में विद्रोहियों की तोपें शान्त हो गई। यहीं कैसर बाग में जनरल नेल की मृत्यु हो गई। लेकिन अंग्रेजी सेना छतर मंजिल और बेलीगार्ड होती हुई रेजीडेंसी में पहुँच गई। इस प्रयास में हैवलाक की छोटी सेना के ११६ सिपाही मारे गये। कुल ६३६ मारे गये और ७७ का पता न लगा। २७ सितम्बर को विद्रोहियों ने रेजीडेंसी को फिर घेर लिया विद्रोहियों की हानि हुई लेकिन लोहे के पुल के पास वे डटे रहे, २६ अक्तूबर से रेजीडेंसी के भीतर घिरे हुये लोगों को कम भोजन दिया जाने लगा जिससे घिरे हुये सब लोग एक मास तक भोजन पा सकें। ७ अक्तूबर को ३०० सिपाही कानपुर मेजर बिपम के साथ आये। कुछ सेना कालिन कैम्पबेल के साथ आई। कावनांग हिन्दुस्तानी भेष बनाकर लखनऊ में आ पहुँचा। १२ नवम्बर को सहायता देने वाली सेना आलमबाग में आ पहुँची। दूसरे दिन इसने दिल कुशा और मार्टिनियर पर अधिकार कर लिया। दूसरे दिन सिकन्दर बाग में २००० विद्रोही नष्ट कर दिये गये। यहाँ से ब्रिगेडियर होप शाह नजफ के मार्ग से रेजीडेंसी की ओर बढ़ा। शाहनजफ में रात्रि को छापा मारा गया। दूसरे दिन कदमरसूल भी ले लिया गया। १७ नवम्बर को खुरशेद मन्जिल और मोती महल छीन लिये गये। १८ नवम्बर को दिन भर लड़ाई होती रही। कैसरबाग में विद्रोहियों का अड्डा था। यहां जोर से गोलाबारी की गई। २४ नवम्बर को सरहेनरी हेवलाक की मृत्यु हो गई। वह आलम बाग में गाड़ा गया। सरजेम्स आउट्रम वहां का सेनापति बना। लेकिन वह एक प्रकार से बन्दी बना रहा। पहले वह रेजीडेंसी में घिर गया। इसके बाद वह आलम बाग में घेर लिया गया। १८५८ की दूसरी अप्रैल तक वह इसी प्रकार घिरा रहा। उसके ६०० सिपाही आलम बाग औरजलालाबाद के किलों की रक्षा कर रहे थे। कुछ सिपाहीबानी में कानपुर की सड़क की रक्षा के लिये रख लिये गये। कुछ सिपाही हर पन्द्रहवे दिन सामान के साथ भेजने पड़ते थे। इस प्रकार विद्रोहियों से मोर्चा लेने के लिये उसके उसके पास २००० से कुछ अधिक सिपाही शेष बचे। विद्रही पहले कुछ दब गये थे। लेकिन अंग्रेजी सेना को

शिथिल देखकर २२ दिसम्बर को विद्रोहियों ने एक सेना दिलकुशा के आगे गुइली गांव में भेजी। यहाँ उनकी हार हुई। उनकी ४ तोपें छिन गईं। १२ जनवरी को विद्रोहियों ने फिर आक्रमण किया। इस बार भी उन्हें पीछे हटना पड़ा। इसके बाद विद्रोहियों ने कई बार आक्रमण किया लेकिन उन्हें कोई लाभ न हुआ। २८ फरवरी को कालिन कैम्पबेल आगया। दूसरी मार्च को उसने दिलकुशा और मुहम्मदबाग ले लिया। ४ मार्च को कैम्पबेल बिबिया-पुर कोठी में चला गया। उसी रात को गोमती पर पुल बना लिया गया। ५ मार्च को जनरल फ्रैंक्स सुल्तानपुर से आगया। कुछ सेनायें दूसरे स्थानों से पहले ही आचुकी थीं। इस प्रकार इस समय अंग्रेजी सेना में २५,६६८ सिपाही और १६४ तोपें हो गईं। मार्टिनियर और बादशाह बाग ले लिया गया। १० मार्च को बैंक की कोठी पर चढ़ाई हुई। यहां से बेगम की कोठी और हजरतगंज पर आक्रमण हुआ। दिलाराम भी ले लिया गया। इसी दिन महाराजा जगबहादुर ८००० गुरखा सिपाहियों के साथ आ पहुँचा। ११ मार्च को सिक्ख और स्काट सिपाहियों ने बेगम की कोठी पर चढ़ाई की। इसमें अंग्रेजों को भारी हानि उठानी पड़ी। इसी दिन शाहनजफ (जो खाली होगया था) और सिकन्दर बाग पर सेना ने अधिकार कर लिया। इसी दिन आउट्रम ने लोहे के पुल पर अधिकार कर लिया और पत्थर के पुल पर चढ़ाई की। पत्थर के पुल पर विद्रोही अधिक प्रबल थे। इसलिये उसको लेने का विचार छोड़ दिया गया। १२ और १३ मार्च को अंग्रेजी सेना बेगम की कोठी के आगे इमामबाड़े की ओर बढ़ी। कुछ भारी तोपों से शहर पर तोपें छोड़ी गये। १४ मार्च को सिक्खों और गोरों ने इमामबाड़ा ले लिया। इसके बाद कैसर बाग, खुरशेद मंजिल, तारा कोठी, मोतीमहल और छतर मंजिल पर ब्रिटिश सेना ने तेजी के साथ अधिकार कर लिया। दूसरे दिन कैसर बाग के भिन्न भिन्न भागों में लड़ाई हुई और विद्रोही वहाँ से भगा दिये गये। अधिकतर विद्रोही लखनऊ को छोड़कर बाहर चले गये। भागे हुये विद्रोहियों से मोर्चा लेने के लिये जनरल ग्रांट सीतापुर की सड़क की ओर जनरल कैम्पबेल संडीला की ओर बढ़े। १६ मार्च को आउट्रम ने विद्रोहियों को रेजीडेंसी से भगा दिया। विद्रोहियों ने मच्छीभवन खाली कर दिया और बड़े इमामबाड़े पर अधिकार कर लिया गया। हुसेनाबाद पर बिना लड़े ही अंग्रेजी सेना का अधिकार हो गया। गुरखों ने चार बाग पर और बानपुर की सड़क पर अधिकार कर लिया। गुरखों पर आक्रमण करने वाले विद्रोही भगा दिये गये उनकी तोपें छीन ली गईं। लखनऊ शहर के उत्तर-पश्चिम में अब केवल मूसाबाग विद्रोहियों के हाथ में था। १९ मार्च को आउट्रम ने उसे भी ले लिया। विद्रोही लखनऊ के बाहर चले गये। उनका पीछा करने के लिये घुड़सवार भेजे गये। इसी बीच में फैजाबाद का मौलवी २ तोपों और फक्कड़ सिपाहियों की सहायता से शहर के बीच में एक किलेबन्द इमारत में आ डटा। भीषण लड़ाई के बाद सिक्खों और गोरों ने उसे वहां से निकाल दिया। इस प्रकार १८५८ के अप्रैल मास में अंग्रेजों का लखनऊ पर फिर अधिकार हो गया। अब लखनऊ से अंग्रेजी सेना आजमगढ़ बाराबंकी और दूसरे स्थानों को शान्ति स्थापित करने के लिये जाने लगी। मोहन लाल गंज में शेख मुसाहिब अली अन्त तक विद्रोही बना रहा। उसकी धौरहारा जागीर जब्त कर ली गई। सलेमपुर की लड़ाई में मुसाहिब और कुरमी विद्रोही नेता खुलाल चन्द लड़ाई में मारे गये।

मलीहाबाद में फकीर लकड़शाह ने कुछ समय तक विद्रोह जारी रक्खा अन्त में वह भगा दिया गया। इस प्रकार लखनऊ जिले में विद्रोह समाप्त हो गया। १९२० में लखनऊ में काउँसिल भवन बना और कुछ अंश में स्वायत्तशासन का आरम्भ हुआ। अमीनागंज के बाजार को आसफुद्दौला ने बनोगा गाँव में लगवाया था। यह मोहना से ४ मील दूर है। रुहेलों पर आक्रमण करने के समय नवाब ने दूसरा अमानीगंज मलीहाबाद में बसाया। नवाबी समय में यह लखनऊ से बिसवां और खैरा-बाद को जानेवाली सड़क पर पड़ता था। यहाँ अनाज और कपड़े का व्यापार होता है। बनोगागांव के पड़ोस में पहले वन था। इसी से यह नाम पड़ा। गाँव में प्राइमरी स्कूल है।

अमौसी लखनऊ से कानपुर को जानेवाली पक्की सड़क और रेलवे लाइन के बीच में लखनऊ से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। रेलवे स्टेशन आधमील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां एक स्कूल है। यह गांव चौहानों का केन्द्र है। गांव के उत्तर में कई बड़ी झीलें हैं। मटियार के बीच में ऊसर भूमि है। चौहानों का नेता विनायक बाबा पन्द्रहवीं शताब्दी में यहां आया था। कहते हैं अकबर के समय में चौहानों ने बिजनौर के एक पीर जादे को मार डाला। इससे इनकी कुछ भूमि छीन ली गई और शेखों को दे दी गई।

अमेठी का प्राचीन गांव लखनऊ से सुल्तानपुर को जानेवाली सड़क के पूर्व में लखनऊ से १७ मील दूर है। गांव ऊंचे ऊंचे पेड़ों के बीच में घिरा है। यहां सप्ताह में चार बार बाजार लगते हैं। पड़ोस के बुने हुये गाढ़े की बड़ी बिक्री होती है। चमड़े का भी व्यापार होता है। पहले यहां भार लोगों का अधिकार था। महमूद गजनवी के भतीजे ने यहां आक्रमण किया। फिर यहां राजा डींगर की अध्यक्षता में गौड़ों का अधिकार हो गया। १५५० से फिर यहां मुसलमान प्रबल हो गये। किसी हिन्दू ने यहां मन्दिर बनाने का साहस न किया। वाजिद अली के शासन काल में अमेठी का एक मौलवी अयोध्या की हनूमान गढ़ी को जीतने के लिये एक सेना ले गया। जब वाजिद अलीशाह की सेना ने उसे रोका तब वह न माना और मार डाला गया। अमेठी में कई मुसलमान पीरों के मकबरे हैं।

धड़ौली गांव सलेमपुर से २ मील दक्षिण की ओर है। गदर में यहां के कुरमी विद्रोही हो गये थे। इससे यह गांव उनसे छीन लिया गया। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

बख्शी का तालाब लखनऊ से सीतापुर को जानेवाली सड़क पर लखनऊ से ८ मील उत्तर की ओर है। कहते हैं नसीरुद्दीन हैदर के बख्शी त्रिपुर चन्द ने यहां एक पक्का तालाब बनवाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। तालाब के चारों ओर पानी तक पक्के घाट बने हैं। कोनों पर बुर्ज हैं। सड़क के सामने बांके बिहारी का मन्दिर है। लखनऊ से सीतापुर और बरेली को जानेवाली रेलवे लाइन का यह एक स्टेशन है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और फौजी पड़ाव है।

बख्तियार नगर मलीहाबाद से मिला हुआ है। यहां अमनाजई पठानों का अड्डा है। १६५६ में वे गढ़ी संजर खां में बस गये थे। १६६३ में उनका एक वंशज सरमस्त खां यहां चला आया। उसका बेटा दिलवर खां दिल्ली के बादशाह फर्रुखसियर का एक मंसबदार हो गया। वीरता और स्वामिभक्ति के कारण उसे नवाब शमशेर खां की उपाधि और ३ लाख रु० वार्षिक आय की जागीर मिली। नवाब सफदर जंग के समय में इस परिवार पर संकट आया। फर्रुखाबाद के नवाब से मिल जाने के कारण कई गांव जब्त कर लिये गये। लेकिन बख्तियार नगर लौटा दिया। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

बंथरा सिकन्दरपुर लखनऊ से कानपुर को जानेवाली सड़क पर लखनऊ से १२ मील और बनीपुल से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। उत्तर की ओर थाना, डाकखाना और पड़ाव हैं। दक्षिण की ओर बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। पशुओं (ढोरों) की बिक्री होती है।

भौली गांव लखनऊ से ८ मील उत्तर और रुहेलखंड कमायूं रेलवे की बख्शी तालाब स्टेशन से २ मील पश्चिम की ओर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बिजनौर कस्बा लखनऊ शहर से ३ मील दक्षिण की ओर है। कानपुर को जानेवाली पक्की सड़क से यह २ मील पूर्व की ओर है। एक कच्ची सड़क लखनऊ से जेल और जलालाबाद के किले के पास होती हुई बिजनौर और सिरौंदा को गई है। पूर्व की ओर कई बड़ी झीलें हैं जिनसे बख नदी निकलती है। यहां गाढ़ा अच्छा बुना जाता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। पशुओं की भी बिक्री होती है। यहां एक बड़ा प्राइमरी स्कूल है। कहते हैं इसे बिजली राजा नाम के एक पासी ने बसाया था। इसके पड़ोस में कई मुसलमानी मकबरों के खंडहर हैं। चिन्हाट लखनऊ से फैजाबाद को जाने वाली पक्की सड़क पर लखनऊ से ६ मील दूर है। एक सड़क गाजिउद्दीन हैदर के बनवाये हुये रफातगंज

बाजार में होकर सतरिख को गई। जहां नवाबी समय में कोतवाल का निवास स्थान था वहां आजकल स्कूल है। कहते हैं पहले यहां चनाहाट था। इसी से बिगड़ कर चिन्हाट नाम पड़ा। यहां मीरन पहलवान की दरगाह है। जेठ में उसके उर्स का मेला होता है। गदर के समय में यहां सरहेनरी लारेन्स की सेना की हार हुई थी। यहां से पीछे हट कर सेना ने रेजीडेंसी में शरण ली थी। यहां ११२ अँगरेज और बहुत से देशी सिपाही मारे गये थे। अँगरेजों की ४ तोपें भी छिन गई थीं।

गुसाईंगंज का बाजार लखनऊ और सुल्तानपुर की सड़क पर स्थित है। यह लखनऊ से १४ मील और मोहनलालगंज (तहसील) से ८ मील दूर है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल हैं। थाने के सामने पुराने किले के खंडहर हैं। शुजाउद्दौला के समय में राजा हिम्मत गिर गुसाईं का यह किला बड़ा दृढ़ था। राजा के पास १०० नागा घुड़ सवार रहते थे।

इटौंजा लखनऊ से सीतापुर को जाने वाली सड़क के पूर्व में लखनऊ से ८ मील उत्तर की ओर है। यहां थाना, डाकखाना, रेलवे स्टेशन हैं। बाजार सोमवार और शुक्रवार को लगता है। मार्च में शिवबाराह का और क्वार में रामलीला का मेला लगता है।

जिन्दौर मलीहाबाद से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसमें कई छोटे गांव मिले हैं। इनमें दो बेहटा नदी के किनारे स्थित हैं। यह छोटी नदी गरमी में सूख जाती है। लेकिन वर्षा में उमड़ कर खरीफ की फसल को नष्ट कर देती है। रहीमाबाद में सोमवार को और बकी नगर में बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। रहीमाबाद अवध रुहेलखंड रेलवे का स्टेशन है। वास्तव में स्टेशन तरौना गांव में है जो १ मील उत्तर की ओर है। कहते हैं यह गांव बड़ा पुराना है। गदर में यहां के लोगों ने प्रसिद्ध विद्रोही लक्कड़ शाह के विरुद्ध अँगरेजों की बड़ी सहायता की थी।

जुगौर पूर्वी सिरे पर लखनऊ से बाराबंकी और फैजाबाद को जाने वाली सड़क से २ मील दक्षिण की ओर है। कुछ दूर उत्तर की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां एक स्कूल है कहते हैं जोगी जगदेव ने इसे बसाया था। मुसलमानों ने इसे भारों से लिया था। कहते हैं सुल्ताना रज़िया ने यहां के मुसलमानों को एक फरमान द्वारा ५४ गांवों की ज़मींदारी दी थी। यहां कई मुसलमानी मकबरे हैं।

काकारो कस्बा लखनऊ से ८ मील पश्चिम में लखनऊ से मलीहाबाद को जाने वाली सड़क पर स्थित है। रेलवे स्टेशन पास ही है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल हैं। रेलवे ट्रेन के खजाने को लूटने की दुर्घटना यहीं हुई थी। यह स्थान बड़ा पुराना है। यहां भार लोगों का काकोरगढ़ (किला) था बैस राजपूतों ने इसे जीत लिया। फिर यहां मुसलमानों के आक्रमण हुए। यहां कई मुसलमानी मकबरे हैं।

लखनऊ जिले का केन्द्र स्थान और अवध तथा एक प्रकार से संयुक्तप्रान्त की राजधानी है। इसका अधिकतर भाग गोमती नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा है। कुछ भाग उत्तरी किनारे पर है। दोनों के बीच में पुल है। यह कलकत्ते से ६१० मील, बनारस से १९६ मील, कानपुर से ४२ मील और इलाहाबाद से १४० मील दूर है। यह समुद्र-तल से ४०३ फुट ऊँचा है। दूर से देखने पर लखनऊ बड़ा सुहावना शहर मालूम होता है। लखनऊ में नवाबी समय की कई इमारतें हैं। गदर के बाद कुछ इमारतें तोड़ दी गईं और फौजी काम की कई चौड़ी सड़कें शहर के बीच से निकाली गईं। दूसरी सड़कें भी चौड़ी कर दी गईं। रेजीडेन्सी गोमती से ३०० गज दूर है। इसे आसफुद्दौला ने ऊँचे स्थान पर १७८० ईस्वी में बनवाया था। गदर में पांच महीने तक गोलियों की बौछार से यह जर्जर हो गई।

बड़ा इमामबाड़ा भी मजबूत बना है। लखनऊ पर दूसरी बार अधिकार हो जाने पर कुछ समय तक यहां तोपघर और बारूदघर रहा। यह मच्छी भवन के पड़ोस में सड़क से पश्चिम की ओर है। चालीसा अकाल से पीड़ित लोगों को सहायता देने की दृष्टि से आसफुद्दौला ने १७८४ में इसे बनवाया था। कहते हैं अकाल से पीड़ित शहर के प्रतिष्ठित लोगों ने भी यहां मजदूरों का काम किया था। उनकी प्रतिष्ठा रखने के लिये उनको रात्रि में मजदूरी

दी जाती थी और उनके नाम छोड़ दिये जाते थे। इसमें एक विशाल कमरा १६२ फुट लम्बा और ५३॥ फुट चौड़ा है। इसके दो ओर बरामदा है। प्रत्येक सिरे पर ५३ फुट व्यासवाली अष्टभुज है। इसके नीचे कई फुट मोटे छोटे छोटे तहखाने या अभ्यन्तर गृह हैं। पहले इसकी दीवारों पर जो बढ़िया कारीगरी और सजावट थी वह नष्ट हो गई। कुछ समय तक यहां अँग्रेजी तोपखाने की गोदाम रही। इसके बनाने में १० लाख रुपये खर्च हुए। आसफुद्दौला की कब्र यहीं बनी है।

लखनऊ शहर छः भागों में बटा है। मच्छी भवन के दक्षिण-पश्चिम में चौक है। उत्तर-पश्चिम में दौलतगंज है। दक्षिण-पश्चिम की ओर चौक के आगे सादातगंज है। वजीरगंज मच्छी भवन के दक्षिण में और चौक तथा सादातगंज के पूर्व में है। गणेशगंज दक्षिण-पूर्व की ओर है और चारबाग स्टेशन से अमीनाबाद के मार्ग में पड़ता है। इसी में हजरतगञ्ज और सिविल लाइन भी शामिल है। हसनगञ्ज गोमती के उत्तर में है। मच्छी भवन लखनऊ के बीच में है। यह गोमती के ऊपर एक बड़ा टीला है। इसी पर पुराना किला बना था। यह लखनऊ का सब से पुराना भाग है। इसे लक्ष्मण टीला भी कहते हैं। श्री रामचन्द्र जी के भाई लक्ष्मण जी ने इस नगर को बसाया था। इसी से इसे लक्ष्मणपुर भी कहते थे। इसी से विगड़ कर लखनपुर या लखनऊ बना। लखनऊ के शेखों ने लक्ष्मण टीले पर एक दृढ़ किला बनवाया। इसके पड़ोस में ही मुबारक महल और पंच मंजिले पांच महल में वे रहते थे। लेकिन यह सब इमारतें गिरा दी गईं। जब सादात अली खां १७३२ में पहले पहल लखनऊ को आया तो उसने इन इमारतों को ५६५ रु० मासिक किराये पर लिया था। पहले कुछ समय तक किराया मिलता रहा। फिर नवाबों ने इन पर अपना अधिकार कर लिया। सफदर जंग ने पुराने किले को फिर से बनवाया। इसके बाद इसका नाम मच्छी भवन पड़ गया। ७००० के मंसबदार की हैसियत से सूबेदार मछली का निशान रखता था। इसी से इसका नाम मच्छी भवन पड़ गया। उसके मन्त्री नवलराय ने गोमती में कुए गड़वा कर पत्थर का पुल बनवाना आरम्भ किया। लेकिन वह इसे पूरा न देख सका। आसफुद्दौला ने इसे पूरा करवाया। लक्ष्मण टीले के मन्दिर के स्थान पर औरंगजेब ने मस्जिद बनवाई।

लेकिन आसफुद्दौला की मस्जिद सुन्दर इमामबाड़े और रूमी दरवाजे के सामने औरंजेब की मस्जिद कुछ भी नहीं जंचती है। जब अंग्रेजी सेना ३० जून को रेजीडेन्सी हट गई तो उसने रात को मच्छी-भवन बारूद से उड़ा दिया। दूसरा अधिकार हो जाने पर कुछ मरम्मत की गई। लेकिन १८८५ में यह फिर नष्ट कर दिया गया। छतर मंजिल से गोमती के किनारे किनारे हुसेनाबाद को जानेवाली सड़क टीले को पार करती है। गदर के बाद मच्छी भवन के चारों ओर आध आध मील की दूरी तक स्थान साफ कर दिया गया। इस सफाई में लखनऊ के सब से पुराने बाजपेयी और इसनाइजगंज के मुहल्ले नष्ट कर दिये गये। वर्षों तक चौक और गोमती के बीच में ईंटा कत्तल पड़ा रहा। १८८७ में यहीं पर विक्टोरिया पार्क बना। रेजीडेंसी के आगे गोमती के समीप फरहत बख्श (महल) के खंडहर हैं। इसका एक भाग छतर मंजिल से मिला हुआ है। इसे जनरल मार्टिन ने बनवाया था। सादात-अली खां ने उससे ५०,००० रुपये में मोल ले लिया। इसमें उसने लाल बारादरी या सिंहासन का कमरा और दूसरी इमारतें बनवाई। लाल बारा-दरी में प्रान्तीय अजायब घर है जिसमें पुराने सिक्के पुस्तकें और दूसरी प्राचीन वस्तुयें रक्खी हुई हैं। बारादरी में राज्यभिषेक के अवसर पर अवध का बादशाह यहां सिंहासन पर बैठता था। रेजीडेंट इस अवसर पर उसे भेंट नजर देता था। फरहत बख्श से मिली हुई दक्षिण की ओर दो इमारतें दर्शन विलास और गुलिस्ताने ईरान हैं। दर्शन-विलास में इंजीनियर का दफ्तर है। गुलिस्ताने ईरान का कुछ भाग अजायब घर के काम आता है। इन दोनों इमारतों को गाजिउद्दीन हैदर ने बनवाया था।

इनके आगे छतर मंजिल के दो महल हैं। दोनों ही गोमती के सामने हैं। इनसे बड़े में यूनाइटेड सर्विस क्लब है। छोटे में खफीफा कचहरी और

रजिस्ट्री का दफ्तर है। इन दोनों को गाजिउद्दीन हैदर ने आरम्भ किया था। उसके बेटे ने उसे पूरा किया। बादशाह फरहत बख्श महल में रहता था। इनमें उसकी बेगमें रहती थीं। छतर मंजिल के उत्तर में टेढ़ी कोठी है। इसे सादात अली खां ने बनवाया था। आजकल इसमें जूडिशल कमिश्नर का दफ्तर है। दक्षिण की ओर गाजिउद्दीन हैदर का बनवाया हुआ चीनी बाजार खंडहर हो गया है। इसके आगे कैसर बाग है। इसे वाजिद अलीशाह ने १८४८ में आरम्भ किया था। १८५० में यह बनकर पूरा हुआ था।

चीनी बाजार के पास ही सादात अली खां और उसकी स्त्री मुर्शिद जादी के मकबरे हैं। उन दोनों की मृत्यु के बाद उसके बेटे गाजिउद्दीन हैदर ने बनवाया था। आगे हजरत बाग है। दाहिनी ओर चांदीवाली बारादरी है। इसमें किसी समय चांदी जड़ी थी। कहीं खास मुकाम और बादशाह मंजिल है। बाईं ओर चौलखी इमारतें हैं। कहते हैं इन्हें बादशाह के नाई ने बनवाया था और ४ लाख रुपये में बादशाह के हाथ बेच दिया था। यहीं बादशाह की बेगमें रहा करती थीं। यहीं विद्रोह में सम्मिलित होने वाली बेगम अपना दरबार करती थीं, यहीं कुछ अँग्रेज हफ्तों तक कैदी रक्खे गये थे। इसके आगे वह स्थान है जहां वाजिदअली शाह मेले के अवसर पर पीले कपड़े पहन कर फकीर के भेष में बैठा करता था। वह शहतूत के पेड़ के नीचे संगमरमर के फर्श पर बैठता था। चार पांच गज की उंचाई तक पेड़ गहरा लाल रंग दिया जाता था। इससे पेड़ सूख गया। इस समय यह स्थान ट्रेनिंग स्कूल का अंग है। कैसर बाग के पड़ोस में अगस्त के महीने में जोगिया मेला लगता था। पत्थर की बारादरी बलरामपुर महाराज की जायदाद है। कैसर पसन्द इमारतों को नवाब के मन्त्री रोशनुद्दौला ने बनवाया था। वाजिदअली शाह ने उन्हें जब्त कर लिया और अपनी एक रक्खी हुई स्त्री माशूकुस्सुल्तान को दे दिया। इसके निचले भाग में धौरहरा कैदी रक्खे गये थे। यहीं से वे पूर्वी दरवाजे के पास लाकर कत्ल किये गये थे। शेर दरवाजे के नीचे जनरल नेल मारा गया था।

कैसर बाग की कुछ इमारते लार्ड कैनिंग ने तालुकेदारों को इस शर्त पर लौटा दी कि वे उनको ठीक दशा में रक्खें। जब वे लखनऊ आते हैं तब इन्हीं में रहते हैं।

कैसर बाग के उत्तर-पश्चिम में विशाल और सुन्दर रोशनुद्दौला की कोठी है। आजकल यहां जिले की कचहरी है। इसे भी शाह नसीरुद्दीन के मन्त्री ने बनवाया था। कैसर बाग के पूर्व में महल और गोमती नदी के बीच में तारावाली कोठी या वेधशाला है। गदर में ज्योतिष के अध्ययन में सहायता देने वाले यन्त्र लुप्त हो गये। इसमें इस समय बैंक आफ बंगाल है। १८५७ में फैजाबाद का विद्रोही मौलवी अहमदुल्ला शाह या डंकाशाह यहीं रहता था। वह चलने के पहले अपने आगे ढोल, या डंका बजवाता था इसलिये उसे डंकाशाह कहते थे। यहीं विद्रोही नेता सभा किया करते थे।

खुरशेद मंजिल तारावाली कोठी के पास है। इसे सादातअली खां ने बनवाया था। अपनी स्त्री की स्मृति में उसने इसका नाम खुरशेद मंजिल रक्खा। उसके बेटे ने इसे पूरा किया। यह एक किले के रूप

में बनी है। इसके चारों ओर चार गज चौड़ी खाई बनी है। गदर में अँग्रेजी सेनापतियों का यहां अड्डा रहा। इस समय यहां लड़कियों का स्कूल है।

खुरशेद मंजिल के उत्तर में गोमती के किनारे मोती महल है। इसका गुम्बद मोती के समान है। इसलिये इसे मोती महल कहते हैं। मोती महल की प्रधान इमारत सादात अली खां ने बनवाई थी। मुबारक मंजिल और शाह मंजिल को गाजीउद्दीन हैदर ने बनवाया था। इसी के घेरे में चीते और दूसरे जङ्गली जानवरों की लड़ाइयां होती थीं। लेकिन हाथी और गैंडे की लड़ाई गोमती के दूसरे किनारे वाले हजारी बाग के घेरे में होती थी। भीड़ के पास इतना लड़का भयंकर था। गदर में यहां कई अँग्रेज मारे गये थे। इस समय यह बलरामपुर महाराज की जायदाद है। मोती महल के पूर्व में शाह नजफ है। इसी में इसके बनवाने वाले गाजिउद्दीन हैदर उसकी स्त्री और शाहीवंश के मकबरे हैं। नजफ का अर्थ पहाड़ी है। यह अली के मकबरे की नकल है और टीले पर बना है। मोहर्रम और शाह के मृत्युदिवस पर यहां जलसा होता है। गदर में यहां भीषण लड़ाई हुई थी। इसके पास ही कदम रसूल है। इसे गाजिउद्दीन हैदर ने एक कृत्रिम टीले पर बनवाया था।

एक पत्थर था जिसमें रसूल (मुहम्मद) के कदम (पद) का चिन्ह बना था। गदर के बाद इस पत्थर का पता न लगा। इस समय यह गिरी हुई दशा में है। तारावाली कोठी में सामने उन गोरे सैनिकों के स्मारक हैं जो गदर में मार डाले गये थे। विक्टोरिया पार्क के पास दौलतगंज में हुसेनाबाद का इमामबाड़ा और जामा मस्जिद है। मस्जिद की दीवारों पर बढ़िया कारीगरी है। हुसेनाबाद ताल के पास घंटाघर है। १८८० ई० में इसका आरम्भ हुआ। १८८७ ई० में यह घन्टाघर बन कर पूरा हुआ। इसके बनने में १,१७,००० रुपये लगे। घन्टे का वजन १ टन से ऊपर है। यह घन्टाघर २२१ फुट ऊंचा है। इसकी लम्बाई २० फुट और चौड़ाई २० फुट है। इसमें भारतवर्ष में सब से बड़ी घड़ी लगी है। तालाब के पश्चिम में अधूरा सतखंडा है। मुहम्मद अलीशाह केवल चार खंड (मंजिल) बनवा पाया था। इसी बीच में वह मर गया। तालाब के सामने मुहम्मदअली शाह की बनवाई हुई बारादरी है। इसमें लखनऊ के नवाबों के चित्रों का संग्रह है। घन्टाघर के उत्तर में दौलतखाना है। इसमें कई इमारतें शामिल हैं। जब आसफुद्दौला ने फैजाबाद से बदलकर यहां राजधानी बनाई तो यही उसका महल था। प्रधान इमारत आसफ कोठी कहलाती है।

दौलदतगंज मुहल्ले को आसफुद्दौला ने बनवाया था। यह हुसेनाबाद के उत्तर में है। दक्षिण में सराय माली खां है। इसे सादात खां ने बनवाया था। तहसीनगंज को आसफुद्दौला के एक मन्त्री ने (जो हिन्दू से मुसलमान हो गया था) बनवाया था। मिरजा मन्डी की नींव मिर्जा सलीम ने (जो आगे चलकर सम्राट जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।) डाली थी। रानी कटरा को अवध के सूबेदार गिरधर नागर की रानी ने बनवाया। वह इलाहाबाद के सूबेदार छबीले राम का भतीजा था। गढ़ी पीर खां शाहजहां के समय में बसी। शहर के आगे पश्चिम की ओर मुसा बाग है। इसे आसफुद्दौला ने लगवाया था। इसमें जनरल मार्टिन ने सादात अली खां के लिये योरुपीय ढंग का बङ्गला बनवाया था। यहां जङ्गली जानवरों की लड़ाइयां हुआ करती थीं। यहां विद्रोह का आरम्भ हुआ था। इस समय यहां खंडहर हैं। इसके पड़ोस में मिर्जा बाग है। इसका यह नाम शाहजादा सलीम के सम्मानार्थ रक्खा गया। दौलतगंज लखनऊ का पुराना मुहल्ला है। पर आजकल यह कुछ खाली सा हो रहा है। लोग पूर्व की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इससे यहां के बड़े घरों का किराया अमीनाबाद की मामूली कोठरियों से कम रह गया है।

चौक के उत्तर में दौलतगंज और दक्षिण में सादातगंज है। पूर्व की ओर यह वजीरगंज तक फैला हुआ है। इसके दक्षिणी या अकबरी दरवाजे को अवध के सूबेदार के नायब बिलग्राम के काजी महमूद ने बनवाया था। उसी ने महमूद नगर और शाहगंज बसाया। शाहजहां के समय में अशरफ अली खां ने अशरफाबाद बनवाया। यह शाहगंज के दक्षिण में नौबस्त से मिला हुआ है। चौक के

चारों ओर बसे हुये कटारी, सोंधी, बंजारी, अहीर टोला (मुहल्ले) अधिक पुराने हैं। अधिक पश्चिम में महबूबगंज है। इसे आसफुद्दौला ने बसाया था। इसके आगे वजीर बाग, मुअज्जम नगर, करीमगंज और इराम नगर है। महबूबगंज और चौक के बीच में कटरा बिजान बेग खां है। इसे सादात खां ने बनवाया था। उसी ने सैयद हुसेन खां और अबूतुराब खां के कटरे और बाग महानरायन बनवाये। चौक मुहल्ला बहुत घना बसा हुआ है।

सादातगंज शहर के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित है। यह आलमगञ्ज और पुरानी नहर तक चला गया है। इसके उत्तर में काश्मीर मुहल्ला है जिसे आसफुद्दौला ने बसाया था। दक्षिण की ओर ताल कटूरा है। यहां रूई की मिलें और पुराना करबला है। विक्टोरियागंज के पूर्व में ऐशबाग है। इसे आसफुद्दौला ने बसाया था। बाजार सादात अली खां ने बनवाया था।

वजीरगंज सादातगंज में पूर्व में है। यह कैसरबाग से दक्षिण की ओर रेलवे स्टेशन तक चला गया है। पूर्व की ओर यह कानपुर सड़क और गणेशगंज तक फैला हुआ है। यहां के बाजार का यह नाम आसफुद्दौला ने अपने गोद लिये हुये बेटे वजीर अली खां के सम्मानार्थ रक्खा। उत्तरी मुहल्ला ड्योढ़ी आगामीर है। इसे गाजिउद्दीन हैदर के मन्त्री आगामीर मुतमादुद्दौला ने बनवाया था। इसके दक्षिण में राजा बाजार यहियागञ्ज और नवाबगञ्ज हैं। कैनिंग रोड के पूर्व में माशागञ्ज, चिकमन्डी, मौलवीगंज और गोपालगंज हैं। फतेहगंज अमानीगंज और बेगमगज आसफुद्दौला के समय में बने। पूर्व में कैसर बाग की ओर बाजार झाऊ लाल है। इसे आसफुद्दौला के अर्थ मन्त्री झाऊ लाल कायस्थ ने बनवाया था। अमीनाबाद बाजार और सराय को अमजदअली शाह के मन्त्री अमीनुद्दौला ने बनवाया था। यहीं लखनऊ के प्रसिद्ध फकीर मीनाशाह का मकबरा है। उसी के प्रोत्साहन से शेख लखनऊ में बस गये थे। गदर में मकबरे का कुछ भाग टूट गया था। फिर इसकी मरम्मत हो गई। इसके पास ही मेहदीअली खां का मकबरा है।

वजीरगंज के पूर्व में गणेशगंज का मुहल्ला गोमती नदी तक चला गया है। इसी में सिविल-लाइन और दूसरे मुहल्ले शामिल हैं। यहां के रकाबगंज, जङ्गलीगंज और मकबूलगंज सादातअली खां ने बनवाये थे। हजरतगंज लखनऊ का प्रसिद्ध मुहल्ला है। यहीं योरुपीय दुकानें, बड़ी इमारतें और जनरल पोस्ट आफिस है। सादात अली खां की बनवाई हुई नूरबख्श कोठी में चीफ कमिश्नर का दफ़्तर है। सादात अली की कंकर वाली कोठी में सिटी मजिस्ट्रेट रहता है। हजरतगंज को अमजद अलीशाह ने बसाया था। यहीं उसका मकबरा है। इसे छोटा इमामबाड़ा कहते हैं। गदर में इसकी सजावट की सामग्री लुट गई। हजरतगंज में दक्षिण में क्राइस्ट चर्च के आगे लाट साहब की कोठी है। सादातअली खां के समय में जनरल मार्टिन ने इसे बनवाया था। लखनऊ के कमिश्नर मेजर बैंक्स (जो गदर में मार डाला गया) की स्मृति में इसे बंक्स कोठी भी कहते थे। इसके पूर्व में दारश्शफा (यहां नवाब को बीमारी से आराम मिला था। इसलिये इसका नाम पड़ा) और बेगम की कोठी है। बेगम की कोठी में डाकखाना है।

इसके आगे विंगफील्ड पार्क है। विंगफील्ड लखनऊ के एक चीफ कमिश्नर थे। कुछ दूर आगे सिकन्दर बाग है। इसी से मिला हुआ सुल्तान बाग है। गदर में यहां भीषण लड़ाई हुई थी।

विंगफील्ड पार्क के दक्षिण पूर्व में मार्टिनियर है जो इटेलियन ढङ्ग से बनी हुई है। यहां लड़कियों का मार्टिनियर कालेज है जो भारतवर्ष के पुराने कालिजों में से एक है। गदर में यहां विद्रोहियों का अधिकार गया हो था।

गोमती के उत्तर में हसनगंज है। यह सीतापुर को जाने वाली सड़क के पूर्व में हैं। यहां आबादी कम है। इसके दक्षिण में मुकरिम नगर और पश्चिम में ठठेरी टोला है। अधिक पश्चिम में बानमंडी और मुराव टोला है। उत्तर में मेहदीगंज और फतेहपुर हैं। हसनगंज के पूर्व में चांदगंज है। दक्षिण-पूर्व नासीरुद्दीन हैदर का लगवाया हुआ बादशाह बाग है। इस समय यह कपूर्थला-महाराज की सम्पत्ति है। यहीं उनका एजेंट कभी कभी रहता है। इसके पूर्व

में हैदराबाद है। जहां हजारी बाग, कान्विन इन्स-टीट्यूट, पुलिस लाइन और पागलखाना है। अधिक पूर्व में न्यूसगंज और बादशाह नगर है। बादशाह नगर में रेलवे स्टेशन और अपर इण्डिया कूपर पेपर मिल है जो गोमती के किनारे सुल्तानगंज के सामने स्थित है।

शहर के दक्षिण में पुरानी नहर के आगे लखनऊ की छावनी है। छावनी का क्षेत्रफल लगभग दस वर्ग मील है। यह पश्चिम में रायबरेली को जाने वाली सड़क से पूर्व में गोमती तक फैली हुई है। यहां हिन्दुस्तानी और गोरे सिपाही रहते हैं।

दिलकुशा के पूर्व के गोमती के किनारे के पास बिबियापुर कोठी है। इस नाम का गांव पास ही दक्षिण-पूर्व की ओर है इस दो मंजिला योरुपीय ढङ्ग की इमारत को जनरल मार्टिन ने आसफुद्दौला के लिये बनवाया था। वजीर अली खां को गद्दी से उतारने के समय सर जान शोर ने यहीं दरबार किया था। फिर उसे नजरबन्द करके यहां से बनारस भेजा था।

बिबियापुर के उत्तर और दिलकुशा के पूर्व में बिलायती बाग है। कहते हैं गाजिउद्दीन हैदर की गोरी स्त्री के कारण यह नाम पड़ा। यहां कुछ बिलायती पेड़ भी लगाये गये थे। वाजिदअली शाह के समय में महल की बेगमें यहां आया करती थी। इस समय यह उजड़ी हुई हालत में है।

चार बाग रेलवे स्टेशन से डेढ़ मील की दूरी पर रायबरेली को जाने वाली सड़क पर डिस्ट्रिक्ट जेल है। इससे मिली हुई सेंट्रल जेल है। जेल से १ मील और आगे बख नदी का उद्गम है। सड़क के पश्चिम में जलालाबाद के पुराने किले के खंडहर हैं। जेल के पश्चिम में कानपुर-रोड के पूर्व में आलम बाग है। इसे वाजिदअली शाह ने अपनी बेगम के लिये बनवाय था। गदर में यहां लड़ाई हुई थी।

लखनऊ का चार बाग रेलवे स्टेशन या जङ्क्शन प्रान्त की सर्वोत्तम स्टेशन है। लखनऊ में यूनिवर्सिटी मेडिकल कालेज और सेक्रेटेरियट, कौंसिल भवन भी अपूर्व हैं। माल मलीहाबाद से असरौली को जाने वाली सड़क पर स्थित है। रामनरायनगंज में गुरुवार और रविवार को बाजार लगता है। पशुओं की भी बिक्री होती है। चैत में आठों, जेठ में महाबीर और भादों में जन्माष्टिमी का मेला लगता है। यह गहरवारों का प्रधान अड्डा है।

मलीहाबाद लखनऊ से पन्द्रह मील की दूरी पर संडीला को जाने वाली सड़क पर स्थित है। उत्तर की ओर अवध रुहेलखंड रेलवे लाइन है। स्टेशन १ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। मिरजागंज बाजार संडीला की सड़क के पास लगता है। मलीहाबाद में तबक और ताजिया अच्छे बनते हैं। मलीहाबाद में सफेद आम और बड़े मीठे बेरों के बगीचे भी बहुत हैं। मलीहाबाद से मिला हुआ बख्तियार नगर और गढ़ी संजरखां है।

मंड़िआंव लखनऊ से ४ मील उत्तर की ओर है। लखनऊ से सीतापुर को जाने वाली पक्की सड़क यहां से एक मील दूर है। लखनऊ से बरेली को जाने वाली सड़क की समानन्तर चलती है। स्टेशन मुहीमुल्लापुर में है। गदर से पहले यहां छावनी भी थी। सादात अलीखां की ओर से यहां ईस्ट-इंडिया कम्पिनी की सेना रहती है थी। अफसर बंगलों में रहते थे। देशी सिपाही झोपड़ों में रहते थे। १८५७ की ३० मई को सिपाहियों ने छावनी को लूट और जला दिया। इसके बाद फिर यहां छावनी नहीं रही। मंड़िआंव पुराना स्थान है। कहते हैं मंडल ऋषि यहीं रहते थे। यहां कई मुसलमानी मकबरे हैं।

मोहनलालगंज लखनऊ से रायबरेली को जाने वाली सड़क पर लखनऊ से १४ मील दूर है। रेलवे लाइन सड़क की समानन्तर चलती है। स्टेशन उत्तर-पूर्व की ओर है। पास ही बाजार है। बाजार को राजा काशीप्रसाद ने बनवाया और अपने ससुर मोहन लाल की स्मृति में इनका नाम मोहनलाल गंज रक्खा। राजा ने ही एक लाख रुपया लगाकर यह मन्दिर बनवाया। यह २५० फुट ऊँचा है। भादों में यहां जल विहार का उत्सव होता है। बाजार में कपड़े और अनाज का व्यापार होता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है

नगराम बाराबंकी के पड़ोस में लखनऊ से १६ मील दूर है। यह नगर बहुत पुराना है। लेकिन उजड़ा हुआ है। यहां दो बाजार लगते हैं। धान का व्यापार बहुत होता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल हैं। एक पुराने किले का टीला है। कहते हैं राजा नल की स्मृति में नलग्राम से बिगड़ कर इसका यह नग्राम नाम पड़ा।

निगोहन लखनऊ से रायबरेली को जाने वाली सड़क के पश्चिम में लखनऊ से २३ मील और मोहनलाल गंज (तहसील) से ८ मील दूर है। रेलवे स्टेशन गांव से पूर्व की ओर है। यहां प्राइमरी स्कूल, बाजार और चर्च आफ इङ्गलैंड मिशन का केन्द्र है। निगोहन बड़ा प्राचीन स्थान है। कहते हैं ब्राह्मण हत्या के दंड में एक राजा को सर्प का रूप मिला था जब पांडव इधर आये तब उन्हीं ने राजा को श्राप से मुक्त कर दिया और पुराना रूप दे दिया। राजा ने यहां यज्ञ किया नाग यज्ञ होने से इसका नाम नगोहन अथवा निगोहन पड़ा।

सलेमपुर सुल्तानपुर से लखनऊ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह गोमती के किनारे एक ऊँचे टीले पर बसा है। गोमती के ऊपर लम्बा पुल बना है। यहां पहले अमेठिया राजपूतों का अधिकार था। फिर यहां शेखों का अधिकार हो गया।

ससेंडी मोहनलाल गंज से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। उन्नाव और रायबरेली के बीच का कुछ व्यापार यहां होकर जाता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। १८२४ में राजा दृगपालसिंह की विधवा स्त्री ने पाठक अमृतलाल को संकल्प दिया। उसके बेटे मोहनलाल से राजा काशीप्रसाद ने यह यह जागीर प्राप्त की। यहीं राजा चन्द्रशेखर प्रसाद की सम्पत्ति उतरावां मोहनलालगंज से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर लखनऊ से रायबरेली को जाने वाली सड़क से ८ मील पूर्व की ओर है। यहां एक स्कूल और बाजार है। यहां पहले भारों का किला था। एक भाग इस समय भी किला कहलाता है।

★ ★ ★

बाराबंकी

बाराबंकी का जिला फैजाबाद कमिश्नरी में शामिल है। यह अवध के प्रायः मध्य में २६°३० और २७°१६ उत्तरी अक्षांशों और ८०°५८ और ८१°५५ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इस ज़िले का प्रायः सभी भाग गोमती और घाघरा नदियों के बीच में है। केवल दो परगने गोमती के दक्षिण में है। घाघरा नदी इस जिले के उत्तर-पूर्व में बहती है और इस जिले को गोंडा और बहरायच जिलों से अलग करती है। इसके पूर्व में फैजाबाद और सुल्तानपुर के जिले हैं। दक्षिण की ओर सुल्तानपुर जिले का कुछ भाग और रायबरेली का जिला है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ५७ मील है उत्तर से दक्षिण तक इसका विस्तार ५८ मील है। इसका क्षेत्रफल नदियों के इधर उधर हो जाने से घटता बढ़ता रहता है। औसत क्षेत्रफल १७६० वर्ग मील है। बाराबंकी प्रान्त का अत्यन्त उपजाऊ जिला है। इसी से प्रतिवर्ग मील में यहां प्रायः ५०० मनुष्य बसे हुये हैं। घना बसा होने पर भी इस जिले में बड़े बड़े नगर नहीं है। इसमें २०६२ गांव है। आधे से अधिक गांवों की जनसंख्या १००० से कम है। केवल २०० गांवों की जनसंख्या १००० और २००० के बीच में है। केवल पांच कस्बे हैं। इनमें नवाबगंज और रुदौली दो कस्बों की जनसंख्या १०,००० से अधिक है। नवाबगंज ही जिले का केन्द्र स्थान है।

बाराबंकी जिला एक समतल मैदान है। यहां पहाड़ी का नाम नहीं है। अधिक से अधिक ऊँची भूमि समुद्रतल से ४२० फुट ऊँची है। उत्तर की ओर एक टीला घाघरा के समानान्तर चला गया है। यह घाघरा से १ मील से लेकर ३ मील तक दूर है। वास्तव में यह घाघरा का ही ऊँचा किनारा है। इसके टीले के पड़ोस की भूमि कुछ ऊँची नीची और लहरदार है। यह जङ्गल से ढकी है। इसके दक्षिण में गोमती की ओर क्रमशः ढाल है। गोमती के पड़ोस की भूमि को कई नालों ने काट दिया है। प्रायः समतल मैदान होने पर भी यह जिला कई

भागों में बांटा जा सकता है। घाघरा-चौका द्वाब उत्तर में घाघरा और चौका या सारदा के द्वाब में भिटौली परगना स्थित है। यह समस्त भाग कछार की तराई है और ऊंचे किनारों से घिरा है। यहां कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। वर्षा ऋतु में यह पानी में डूब जाता है। इससे यहां खरीफ की फसल का ठिकाना नहीं रहता है। लेकिन इस प्रदेश में अकाल नहीं पड़ता है। वास्तव में जब दूसरे जिलों में दुर्भिक्ष होता है तभी यहां निचली नम भूमि में अधिक अच्छी फसल होती है। अधिक वर्षा होने पर इतना पानी भर जाता है कि भूमि को सुधारने में कई वर्ष लग जाते हैं। यह परगना महाराजा कपूर्थला की जायदाद है। गदर में यहां के रायकवार जागीरदार से यह परगना छीन लिया गया और गदर को दबाने में सहायता देने वाले कपूर्थला महाराज को भेंट कर दिया गया।

घाघरा खादर—घाघरा-चौका संगम के आगे घाघरा की कछारी घाटी में कई गांव बसे हैं। यह एक तंग उपजाऊ पेटी है। इसमें रामनगर, बादोसराय, दरियाबाद और रुदौली परगना की भूमि है। घाघरा या इसकी सहायक नदियों की बाढ़ में गांवों की भूमि डूब जाती है और दलदल बन जाते हैं। छोटी छोटी धाराओं का यहां जाल सा बिछा हुआ है। यह सभी ओर को गई हैं। तराई की भूमि घाघरा के ऊंचे किनारे तक फैली हुई है जिसके नीचे घाघरा की पुरानी तली के निचले भाग में धान बहुत होता है। ऊंचे किनारे पर बसे हुये गांवों में तरह तरह की तरकारियां उगाई जाती हैं।

मध्यवर्ती ऊँचा प्रदेश—इस प्रदेश में जिले का बहुत बड़ा भाग शामिल है। यह घाघरा के ऊँचे किनारे से गोमती के पड़ोस तक चला गया है। इसे ऊपरहार कहते हैं। यह बड़ा उपजाऊ है। केवल कहीं कहीं बालू है। यहां दुमट मिट्टी असंख्य झीलों और तालाबों से सींची जाती है। जहां झील या तालाब नहीं हैं वहां कुओं से सिंचाई होती है। कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। उनके खोदने में कोई कठिनाई नहीं होती है। उत्तरी सिरे पर उपरहार तराई के समान है। यहां चौका और उसकी सहायक नदियों की बाढ़ आ जाती है। मध्यवर्ती प्रदेश की भूमि को कल्याणी, रेथ और दूसरी छोटी नदियों ने काटकर कुछ विषम बना दिया है। गोमती की सहायक नदियों के पड़ोस में बलुई भूमि है। कल्याणी के ऊपरी भाग में भूमि नीची है। यहां कुछ दलदल हैं। इस नदी की तली उथली है और झीलों की एक लड़ी सी मालूम होती है। रेथ और कल्याणी के बीच में भी झीलें हैं। देवा के पास बरेली झील सब से बड़ी है। यहां ढाक के जंगल की एक पतली पेटी है। नवाबी समय में यह जङ्गल और भी अधिक बड़ा था। यहीं ढाकुओं का अड्डा था। रेथ और गोमती के बीच वाले द्वाब की भूमि बड़ी अच्छी है। यहां जिले भर में सर्वोत्तम खेती होती हैं। इसके मध्यवर्ती भाग में नवाबगञ्ज प्रतापगञ्ज, सतरिख और सिद्धौर के परगने हैं। यहां का वर्षा जल शीघ्रता से गोमती में बह जाता है। इस ओर बस्ती के पड़ोस में आम के बाग बहुत हैं। ऊसर भूमि या ढाक का जङ्गल बहुत कम है। यहां भी तालाबों और प्रायः पक्के कुओं से सिंचाई की बड़ी सुविधा है। सचमुच यह भाग बड़ा उपजाऊ है। यहां आने जाने की बड़ी सुविधा है और फैजाबाद और लखनऊ के प्रथम कोटि के बाजार भी पास हैं। कल्याणी के पड़ोस को छोड़कर उपहार के शेष भाग भी बड़े उपजाऊ हैं। कल्याणी के पड़ोस में कुछ तराई है। अधिकतर रेतीले नाले हैं। यहां खेती अच्छी नहीं होती है। गोमती के पड़ोस में अच्छी खेती होती है। कहीं कहीं कुछ ऊसर और ढाक के जङ्गल हैं।

गोमती पार—हैदरगढ़ और सबहा के परगने गोमती के दक्षिण में स्थित हैं। यह भाग जिले के और भागों से भिन्न है। गोमती के ऊँचे किनारे नालों से कटे फटे हैं। इधर खेती का कोई ठिकाना नहीं है। बीच वाले भाग में अच्छी खेती होती है। कहीं कहीं जंगल है। इस भाग का वर्षा जल लोनी नाम की दो छोटी नदियों में बह जाता है। वह दोनों नदियां उत्तर की ओर गोमती में गिरने के पहले आपस में मिल जाती हैं। इस प्रदेश के दक्षिणी भाग में सुल्तानपुर, रायबरेली और लखनऊ जिलों की सीमा के पास झीलों की एक पंक्ति

ुसलमानों का इस जिले में पहली बार
प्रा । पर इसका प्रभाव क्षणिक था।
८ (११५१ ई०) के एक ताम्रपत्र में
गोविन्द चन्द्र देव का उल्लेख है। यह
नऊ के अजायब घर में रक्खा है।
ाल के शेख निजामुद्दीन अन्सारी ने
धिकार कर लिया। इसके ३ वर्ष बाद
जैदपुर ले लिया। ६ वर्ष बाद मवई
ी घस गये। कहते हैं वे भटिंडा से
०५ में अलाउद्दीन खिल्जी ने सदौली
कर लिया। १४४० में दरियाव खां ने
साया। मुसलमानों के आक्रमण के
ानों के राजपूत भी बाराबंकी जिले में

राजपूत गदर के समय तक इस जिले
रहे। कहते हैं वे कश्मीर से आये
जपूत दरियाव खां के साथ आये थे।
करने के लिये राजपूत सिपाही जगह
ये गये। शर्की बादशाहों और दिल्ली
ड़ाई मुसलमानों की आपस की लड़ाई
ं के दोनों पक्ष विजय पाने के लिये
हायता लेते थे। अकबर के समय में
त्तर भाग लखनऊ की सरकार में
अवध की सरकार में जिले का पूर्वी
था। भिलवल का अकेला महाल
की मानिकपुर सरकार में शामिल
ी खां ने पुराना क्रम हटा कर प्रान्त
र चकलों में बांट दिया। १७५१ में
को उखाड़ फेकने के लिये रायकवार
विद्रोह किया। अवध का नवाब
सके सहायक नवलराय को फरुखा-
ाव ने काली नदी के किनारे हराकर
५० में स्वयं सफदर जंग और उसके
हियों को फरुखावाद के नवब ने
ा। यदि ठीक इसी समय विद्रोह
तो फल कुछ और ही होता। लेकिन
रते रहे। इस बीच में सफदरजङ्ग
अफगानों को अवध से अलग
उसने राजपूतों पर चढ़ाई की।
राजपूत राम नगर के राजा अनूपसिंह के नेतृत्व में
इकट्ठे हुये। बलरामपुर के जवारों, गोंडा के बिसेन
और दूसरे राजपूतों ने रायकवारों का साथ दिया।
कल्याणी के किनारे च्योलाघाट के पास लड़ाई हुई।
मुसलमानों की पूर्ण विजय हुई। लड़ाई में बलराम-
पुर का राजा मारा गया। दोनों ओर से १५००
सिपाही मारे गये। इस हार से कुछ समय के लिये
रायकवारों की शक्ति दब गई। इससे महमूदाबाद के
खानजादों (मुसलमानों) की शक्ति बढ़ गई। बौंदी
और राम नगर के राज्य छिन्न-भिन्न हो गये। राम
नगर के राजा के पास कुछ ही गांव शेष रह गये।

नवाबी काल में लखनऊ पास होने से पहले इस
जिले में कड़ा शासन रहा। नवाबों ने छोटे छोटे
राजाओं की संख्या कम कर दी। आसफुद्दौला ने इस
जिले की सब जागीरें अपने हाथ में ले लीं। उसने
जिले को पांच (दरियाबाद रुदौली, रामनगर,
देवा जहांगीराबाद, जगदीशपुर और हैदरगढ़)
चकलों में बांट दिया। लेकिन परगने ज्यों के त्यों बने
रहे। १८१८ में सादात अली खां की मृत्यु हो गई।
१८५६ में अँग्रेजी राज्य में मिलने के समय तक
जिले की सीमा में कुछ न कुछ अन्तर होता गया।
रामनगर के राजा ने अपना पुराना राज्य प्राप्त नहीं
कर पाया था। पर काफी बढ़ा लिया था।

१८०० ई० में राम नगर का चकला अवध के
दरबार के एक हिजड़े मीर अफीद अलीखां को दे
दिया गया। १८१८ तक यह उसी के हाथ में रहा।
१८३२ में बांदो सराय को दरियाबाद के साथ मिला
दिया गया और अमृतलाल पाठक को दे दिया गया।
उसके समय में किसानों और जमीदारों का बुरा हाल
हो गया। १८३४ में उसकी मृत्यु हो गई। १८३७ में
यह सुल्तानपुर की निजामत में मिला दिया गया।
१८४३ ई० तक दर्शन सिंह का अधिकार रहा। दूसरे
वर्ष कुछ अन्य स्थानों के साथ इसका ठेका राजा
मानसिंह को दिया गया। ३ वर्ष बाद लखनऊ के
मुन्नालाल नामी एक कायस्थ को मिला। १८४६ और
१८५० में गिरधर सिंह नामी एक सेनापति ने लगान
वसूल किया। १८५१ से १८५४ तक राजा बख्तावार
सिंह ने लगान वसूल किया। इसके बाद १८५६ तक
अमानी में लगान वसूल हुआ।

भागों में बांटा जा सकता है। घाघरा-चौका द्वाब उत्तर में घाघरा और चौका या सारदा के द्वाब में भिटौली परगना स्थित है। यह समस्त भाग कछार की तराई है और ऊंचे किनारों से घिरा है। यहां कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। वर्षा ऋतु में यह पानी में डूब जाता है। इससे यहां खरीफ की फसल का ठिकाना नहीं रहता है। लेकिन इस प्रदेश में अकाल नहीं पड़ता है। वास्तव में जब दूसरे जिलों में दुर्भिक्ष होता है तभी यहां निचली नम भूमि में अधिक अच्छी फसल होती है। अधिक वर्षा होने पर इतना पानी भर जाता है कि भूमि को सुधारने में कई वर्ष लग जाते हैं। यह परगना महाराजा कपूर्थला की जायदाद है। गदर में यहां के रायकवार जागीरदार से यह परगना छीन लिया गया और गदर को दबाने में सहायता देने वाले कपूर्थला महाराज को भेंट कर दिया गया।

घाघरा खादर—घाघरा-चौका संगम के आगे घाघरा की कछारी घाटी में कई गांव बसे हैं। यह एक तंग उपजाऊ पेटी है। इसमें रामनगर, बादोसराय, दरियाबाद और रुदौली परगना की भूमि है। घाघरा या इसकी सहायक नदियों की बाढ़ में गांवों की भूमि डूब जाती है और दलदल बन जाते हैं। छोटी छोटी धाराओं का यहां जाल सा बिछा हुआ है। यह सभी ओर को गई हैं। तराई की भूमि घाघरा के ऊँचे किनारे तक फैली हुई है जिसके नीचे घाघरा की पुरानी तली के निचले भाग में धान बहुत होता है। ऊँचे किनारे पर बसे हुये गांवों में तरह तरह की तरकारियां उगाई जाती हैं।

मध्यवर्ती ऊँचा प्रदेश—इस प्रदेश में जिले का बहुत बड़ा भाग शामिल है। यह घाघरा के ऊँचे किनारे से गोमती के पड़ोस तक चला गया है। इसे ऊपरहार कहते हैं। यह बड़ा उपजाऊ है। केवल कहीं कहीं बालू है। यहां दुमट मिट्टी असंख्य झीलों और तालाबों से सींची जाती है। जहां झील या तालाब नहीं हैं वहां कुओं से सिंचाई होती है। कुओं में पानी पास ही मिल जाता है। उनके खोदने में कोई कठिनाई नहीं होती है। उत्तरी सिरे पर उपरहार तराई के समान है। यहां चौका और उसकी सहायक नदियों की बाढ़ आ जाती है। मध्यवर्ती प्रदेश की भूमि को कल्याणी, रेथ और दूसरी छोटी नदियों ने काटकर कुछ विषम बना दिया है। गोमती की सहायक नदियों के पड़ोस में बलुई भूमि है। कल्याणी के ऊपरी भाग में भूमि नीची है। यहां कुछ दलदल हैं। इस नदी की तली उथली है और झीलों की एक लड़ी सी मालूम होती है। रेथ और कल्याणी के बीच में भी झीलें हैं। देवा के पास बरेली झील सब से बड़ी है। यहां ढाक के जंगल की एक पतली पेटी है। नवाबी समय में यह जङ्गल और भी अधिक बड़ा था। यहीं ढाकुओं का अड्डा था। रेथ और गोमती के बीच वाले द्वाब की भूमि बड़ी अच्छी है। यहां जिले भर में सर्वोत्तम खेती होती है। इसके मध्यवर्ती भाग में नवाबगञ्ज प्रतापगञ्ज, सतरिख और सिद्धौर के परगने हैं। यहां का वर्षा जल शीघ्रता से गोमती में बह जाता है। इस ओर बस्ती के पड़ोस में आम के बाग बहुत हैं। ऊसर भूमि या ढाक का जङ्गल बहुत कम है। यहां भी तालाबों और प्रायः पक्के कुओं से सिंचाई की बड़ी सुविधा है। सचमुच यह भाग बड़ा उपजाऊ है। यहां आने जाने की बड़ी सुविधा है और फैजाबाद और लखनऊ के प्रथम कोटि के बाजार भी पास हैं। कल्याणी के पड़ोस को छोड़कर उपहार के शेष भाग भी बड़े उपजाऊ हैं। कल्याणी के पड़ोस में कुछ तराई है। अधिकतर रेतीले नाले हैं। यहां खेती अच्छी नहीं होती है। गोमती के पड़ोस में अच्छी खेती होती है। कहीं कहीं कुछ ऊसर और ढाक के जङ्गल हैं।

गोमती पार—हैदरगढ़ और सबहा के परगने गोमती के दक्षिण में स्थित हैं। यह भाग जिले के और भागों से भिन्न है। गोमती के ऊँचे किनारे नालों से कटे फटे हैं। इधर खेती का कोई ठिकाना नहीं है। बीच वाले भाग में अच्छी खेती होती है। कहीं कहीं जंगल है। इस भाग का वर्षा जल लोनी नाम की दो छोटी नदियों में बह जाता है। यह दोनों नदियां उत्तर की ओर गोमती में गिरने के पहले आपस में मिल जाती हैं। इस प्रदेश के दक्षिणी भाग में सुलतानपुर, रायबरेली और लखनऊ जिलों की सीमा के पास झीलों की एक पंक्ति

है। इस ओर का पानी ठीक ठीक नहीं बह पाता है।

गोमती की तराई अधिक चौड़ी नहीं है। इसमें बाढ़ का डर लगा रहता है। बाढ़ के बाद कभी उपजऊ कांप बिछ जाती है। कभी भूमि इतनी गीली हो जाती है कि अधिक समय तक यहां खेती नहीं हो पाती है।

घाघरा अवध की बड़ी नदी है। यह अपने समस्त मार्ग में जिले की उत्तरी सीमा बनाती है। उत्तरी सिरे पर पूरनपुर बुधनपुर के पास घाघरा पहलीबार बाराबंकी जिले को छूती है। यहां से घाघरा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। भिटौली परगने के आगे यह कुछ पूर्व की ओर फिर दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है। बहरामघाट से एक मील ऊपर की ओर इसमें चौका (सारदा) नदी मिलती है। चौका संगम के आगे घाघरा दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। ५४ मील तक बाराबंकी की उत्तरी पूर्वी सीमा पर बहने के बाद महरौचा गांव के पास घाघरा बाराबंकी जिले को छोड़कर फैजाबाद जिले में प्रवेश करती है और आरा जिले में गङ्गा से मिल जाती है। घाघरा के पड़ोस की बलुई भूमि में झाऊ का जङ्गल है। इस जङ्गल की चौड़ाई लगभग १ मील है। इसमें नील गाय और जङ्गली सुअर रहते हैं। एक मील के आगे कुछ कड़ी और खेती के योग्य तराई की भूमि है। यहां बाढ़ आया करती है। लेकिन राम नगर के पास भूमि अधिक ऊँची है। इसलिये यहां बाढ़ से बहुत कम हानि होती है। घाघरा सिंचाई के काम नहीं आती है। इसका कारण यह है कि इसके पड़ोस की भूमि इतनी गीली है कि यहां सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यहां इस बात की आवश्यकता होती है कि भूमि किस प्रकार सूखे और खेती के योग्य हो। बादोसराय के पास एल्गिन पुल के नीचे और ऊपर बाढ़ के पानी को रोकने का प्रबन्ध किया है। बहराम घाट के पास इस पुल की लम्बाई ३६६५ फुट है। इसमें २०० फुट लम्बे १७ महराब हैं।

यह फौलादी गर्डरों का पुल है और १८६६ ई० में बना। दुर्गापुर गांव के पास नदी के पानी को इधर उधर दो मील तक मोड़ कर पुल बनाया गया।

चौका नदी को ऊपरी भाग में सारदा कहते हैं। ब्रह्मदेव के पास यह कमायूं की पहाड़ियों को पीछे छोड़कर खीरी जिले में प्रवेश करती है। सीतापुर जिले से यह बाराबंकी जिले में आती है। पहले यह बहुत बड़ी नदी थी। खीरी के दक्षिण में पहले ही इसका कुछ पानी कौरियाला में चला गया। गया। हाल में कुछ पानी सारदा-नहर में चला गया। इससे इसमें पानी की मात्रा कम हो गई है। फिर भी यह एक बड़ी नदी है और वर्षा में अपनी बाढ़ से भिटौली परगने और दूसरे भागों को डुबा देती है। पहले घाघरा और चौका का सङ्गम स्थान बदलता रहता था। बहारम घाट के पास पुल बनने पर इसके मार्ग का भी नियंत्रण कर दिया गया। जिसे यह अब बहराम घाट से एक मील की दूरी पर स्थिर सा हो गया है। पुराने समय में जब जब इसने मार्ग बदला तब तब इसकी एक नई धारा बन गई। इस प्रकार इसके पड़ोस में पुराने समय की कई धाराओं के मार्ग मिलते हैं। इनमें एक सोती या जसोई नदी है जो मथुरा के पास चौका में मिल जाती है। सामली नदी बसन्तपुर गांव के पास चौका में मिलती है। जैओरी नदी बहराम घाट के पास निचली तराई में निकलती है और ऊँचे पुराने किनारे के पास बहती है। जलालपुर के पास यह घाघरा में मिल जाती है।

गोमती नदी भोजपुर गांव के पास लखनऊ से बाराबंकी जिले में प्रवेश करती है। यहां से यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ती है और लखनऊ और बारबंकी के बीच में सीमा बनाती है। जौरस के आगे गोमती बारबंकी जिले की नदी हो जाती है। मुबारकपुर के आगे भिलवल घाट तक यह दक्षिण की ओर मुड़ती है। भिलवल घाट के आगे यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहने लगती है। अन्त में यह बाराबंकी जिले के बाहर उस स्थान पर होती है, जहां तीन (बाराबंकी, सुल्तानपुर और फैजाबाद) जिलों की सीमायें मिलती हैं। इस जिले में गोमती का मार्ग चक्करदार होने से १०५ मील लम्बा हो गया है। सीधी रेखा में यहां गोमती की लम्बाई

४२ मील से अधिक नहीं है। गोमती की तली गहरी और किनारे प्राय: सपाट हैं। इसलिये यहां खादर का प्राय: अभाव है। गरमी में गोमती में कुछ स्थानों में पांज हो जाती है। बाढ़ के बाद गोमती उपजाऊ पान या पन्हेरा मिट्टी बिछा देती है। इसमें अच्छी फसलें होती हैं। कभी कभी गोमती बालू भी छोड़ देती है। इससे खेती नष्ट हो जाती है गोचर (चराने योग्य) भूमि निकल आती है। ग्रीष्मऋतु में गोमती के किनारे जानवरों को चरने के लिये अच्छी घास मिल जाती है। अगर गन्दा न किया जाय तो गोमती का पानी भी अच्छा है। इससे गोमती के पड़ोस के जानवर जिले के और भागों से अच्छे होते हैं। कई स्थानों पर गोमती स्नान का मेला लगता है। कल्याणी नदी कुर्सी परगने ने उत्तर-पश्चिम में झीलों से निकलती है। यह कई छोटी धाराओं के मिलने से बनी है। द्वारकापुर गांव के पास यह गोमती में मिल जाती है। गरमी में इसमें बहुत कम पानी रहता है इसलिये यह सिंचाई के काम नहीं आती है। रेथ नदी लखनऊ में महोबा परगने की झीलों में से निकलती है। कुर्सी के पास बहती हुई यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और करीमाबाद के पास गोमती में मिल जाती है। लखनऊ फैजाबाद सड़क से एक मील नीचे की ओर रेथ में जमरिया नदी मिलती है। जमरिया कुछ मील दूर झीलों से निकलती है। और नवाबगज कस्बे और बाराबंकी सिविल लाइन के पास बहती हुई रेथ में मिलती हैं। प्रबल वर्षा में पड़ोस के पानी को बहा ले जाने के लिये जमरिया की तली न अधिक गहरी है न चौड़ी है। १६०० ईस्वी में एक बार यहां १२ इंच पानी बरसा। इससे जमरिया में ऐसी बाढ़ आई कि सड़क का नवाबी पुल प्राय: बह गया और बाहर के कुछ मुहल्लों में बाढ़ का पानी भर गया।

इस जिले में झीलों और तालाबों की भरमार है। प्राय: प्रत्येक परगने का कुछ न कुछ भाग पानी से घिरा है। समस्त जिले की ६ फीसदी से अधिक भूमि पानी से घिरी है। रामनगर के परगने में बघर ताल सब में बड़ा है। अवध के और जिलों की तरह यहां भी तीन प्रकार की (मटियार, दुमट और भूड़) मिट्टी है। ४८ फीसदी प्रथम श्रेणी की (मटियार) मिट्टी है। ४२ फीसदी द्वितीय श्रेणी की (दुमट) मिट्टी है। १० फीसदी तृतीय श्रेणी की (भूड़) मिट्टी है। इसमें २३ फीसदी गोयंड, ४६ फीसदी मंझार और २२ फीसदी पालो है। शेष बालू है। इस जिले में ऊसर भूमि बहुत कम है। केवल कहीं कहीं ढाक या झाऊ के छोटे छोटे जङ्गल हैं। केवल १३ फीसदी भूमि ऐसी है जो खेती के काम की नहीं है। इसमें ६ फीसदी से कुछ अधिक भूमि पानी से घिरी है। कुछ भूमि में घर सड़कें और रेल हैं शेष ढाई फीसदी ऊसर या उजाड़ है। दूसरे दक्षिण और पश्चिमी जिलों की अपेक्षा यहां अधिक वर्षा होती है। औसत वर्षा ४३ इंच होती है। किसी किसी वर्ष ६४ इञ्च वर्षा हुई है। अकाल के वर्ष में यहां २३ इञ्च वर्षा हुई है। तापक्रम लखनऊ के समान रहता है। लेकिन वर्षा अधिक होने से यहां मलेरिया बहुत होता है।

बारबंकी जिले में लगभग ७० फीसदी भूमि में खेती होती हैं। खरीफ की फसल प्रधान है। इस फसल की प्रधान फसल (४६ फीसदी) धान है। दूसरा स्थान ईख का है। अवध के दूसरे जिलों की अपेक्षा बाराबंकी में ईख अधिक होती है। यह गोमती के उत्तर में होती है। मकई, कोदों और ज्वार खरीफ की दूसरी फसलें हैं। रबी में चना मटर की प्रधानता है। कुछ गेहूँ और जौ भी होता है। कहीं कहीं पोस्ता (अफीम) भी उगाया जाता है।

इस जिले के नवाबगंज और दूसरे स्थानों में जुलाहे सूती कपड़ा बहुत बुनते हैं। कपड़े छापने का भी काम होता है। फर्रुखाबाद के बाद परदों की छपाई में दूसरा स्थान बाराबंकी का है। मिट्टी के बर्तन, कोल्हू और चूड़ी बनाने का काम कई स्थानों में होता है।

संक्षिप्त इतिहास—बाराबंकी जिले के प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। यहां प्राचीन भग्नावशेषों की कमी है। जो पुराने खेरे या टीले हैं उनका अनुसन्धान नहीं हुआ है। नवीं शताब्दी में यहां कन्नौज के राजा का शासन था। यहां कन्नौज के राजा भोजदेव (जो ८६२ में राज्य करता था) के कई सिक्के मिले हैं। १०३० में

सतरिख पर मुसलमानों का इस जिले में पहली बार आक्रमण हुआ। पर इसका प्रभाव क्षणिक था। सम्वत १२०८ (११५१ ई०) के एक ताम्रपत्र में कन्नौज के गोविन्द चन्द्र देव का उल्लेख है। यह ताम्रपत्र लखनऊ के अजायब घर में रक्खा है। ११८६ में हिरात के शेख निजामुद्दीन अन्सारी ने सिहाली पर अधिका कर लिया। इसके ३ वर्ष बाद मुसलमानों ने जैदपुर ले लिया। ६ वर्ष बाद मवई परगने में भट्टी बस गये। कहते हैं वे भटिंडा से आये थे। १३०५ में अलाउद्दीन खिल्जी ने सदौली पर अधिकार कर लिया। १४४० में दरियाव खां ने दरियाबाद बसाया। मुसलमानों के आक्रमण के समय दूसरे स्थानों के राजपूत भी बारावंकी जिले में भर गये।

रायकवार राजपूत ग़दर के समय तक इस जिले में शक्तिशाली रहे। कहते हैं वे कश्मीर से आये थे। कल्हन राजपूत दरियाव खां के साथ आये थे। सेना में भरती करने के लिये राजपूत सिपाही जगह जगह बसा दिये गये। शर्की बादशाहों और दिल्ली सुल्तानों की लड़ाई मुसलमानों की आपस की लड़ाई थी। मुसलमानों के दोनों पक्ष विजय पाने के लिये राजपूतों की सहायता लेते थे। अकबर के समय में जिले का अधिकतर भाग लखनऊ की सरकार में शामिल था। अवध की सरकार में जिले का पूर्वी भाग शामिल था। भिलवल का अकेला महाल इलाहाबाद सूबे की मानिकपुर सरकार में शामिल था। सादातअली खां ने पुराना क्रम हटा कर प्रान्त को निजामत और चकलों में बांट दिया। १७५१ में मुसलमानी राज्य को उखाड़ फेकने के लिये रायकवार राजपूतों ने यहां विद्रोह किया। अवध का नवाब दिल्ली में था। उसके सहायक नवलराय को फरुखाबाद के बंगश नवाब ने काली नदी के किनारे हराकर मार डाला। १७५० में स्वयं सफदर जंग और उसके ५०,००० सिपाहियों को फरुखाबाद के नवव ने लड़ाई में हरा दिया। यदि ठीक इसी समय विद्रोह किया गया होता तो फल कुछ और ही होता। लेकिन राजपूत प्रतीक्षा करते रहे। इस बीच में सफदरजङ्ग ने रिश्वत देकर अफगानों को अवध से अलग कर दिया। फिर उसने राजपूतों पर चढ़ाई की। राजपूत राम नगर के राजा अनूपसिंह के नेतृत्व में इकट्ठे हुये। बलरामपुर के जवारों, गोंडा के बिसेन और दूसरे राजपूतों ने रायकवारों का साथ दिया। कल्याणी के किनारे च्योलाघाट के पास लड़ाई हुई। मुसलमानों की पूर्ण विजय हुई। लड़ाई में बलरामपुर का राजा मारा गया। दोनों ओर से १५०० सिपाही मारे गये। इस हार से कुछ समय के लिये रायकवारों की शक्ति दब गई। इससे महमूदाबाद के खानजादों (मुसलमानों) की शक्ति बढ़ गई। बौंदी और राम नगर के राज्य छिन्न-भिन्न हो गये। राम नगर के राजा के पास कुछ ही गांव शेष रह गये।

नवाबी काल में लखनऊ पास होने से पहले इस जिले में कड़ा शासन रहा। नवाबों ने छोटे छोटे राजाओं की संख्या कम कर दी। आसफुद्दौला ने इस जिले की सब जागीरें अपने हाथ में ले लीं। उसने जिले को पांच (दरियाबाद रुदौली, रामनगर, देवा जहांगीराबाद, जगदीशपुर और हैदरगढ) चकलों में बांट दिया। लेकिन परगने ज्यों के त्यों बने रहे। १८१८ में सादात अली खां की मृत्यु हो गई। १८५६ में अँग्रेजी राज्य में मिलने के समय तक जिले की सीमा में कुछ न कुछ अन्तर होता गया। रामनगर के राजा ने अपना पुराना राज्य प्राप्त नहीं कर पाया था। पर काफी बढ़ा लिया था।

१८०० ई० में राम नगर का चकला अवध के दरबार के एक हिजड़े मीर अफीद अलीखां को दे दिया गया। १८१८ तक यह उसी के हाथ में रहा। १८३२ में बांदो सराय को दरियाबाद के साथ मिला दिया गया और अमृतलाल पाठक को दे दिया गया। उसके समय में किसानों और जमीदारों का बुरा हाल हो गया। १८३४ में उसकी मृत्यु हो गई। १८३७ में यह सुल्तानपुर की निजामत में मिला दिया गया। १८४३ ई० तक दर्शन सिंह का अधिकार रहा। दूसरे वर्ष कुछ अन्य स्थानों के साथ इसका ठेका राजा मानसिंह को दिया गया। ३ वर्ष बाद लखनऊ के मुन्नालाल नामी एक कायस्थ को मिला। १८४६ और १८५० में गिरधर सिंह नामी एक सेनापति ने लगान वसूल किया। १८५१ से १८५४ तक राजा बख्तावार सिंह ने लगान वसूल किया। इसके बाद १८५६ तक अमानी में लगान वसूल हुआ।

१८०६ में रामनगर के राजा सूरतसिंह को रामनगर और मुहम्मदपुर का प्रबन्ध सौंप दिया गया। उसने प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव किया। लेकिन लगान न दे सकने के कारण वह लखनऊ में कैद कर लिया गया। खन्डीला के राजा गोवर्द्धनदास की जमानत पर वह छूटा। १८२६ से १८३८ तक उसके बेटे राजागुरुबख्श सिंह का अधिकार रहा। १८४४ में राजा का फिर अधिकार हो गया। अंग्रेजी राज्य में मिलने के समय ५० गांव गुरुबक्स सिंह और ४९ गांव सर्वजीत सिंह के पास थे। जिले की दशा अच्छी न थी। गदर के समय बाराबंकी जिले के प्रायः सभी ताल्लुकेदारों ने विद्रोहियों और गद्दी से उतारे हुये नवाब का साथ दिया। विद्रोह के समय दरियाबाद जिले का केन्द्र स्थान था। गदर होते ही गोरे लोग भाग गये। खजाना लूट लिया गया। गोरों ने पहले साही के जमींदार रामसिंह के यहां शरण ली। फिर वे ११ जून को लखनऊ पहुँच गये। चिन्हाट की लड़ाई में विद्रोहियों की जीत हुई। इससे बाराबंकी जिले से अंग्रेजी राज्य कुछ समय के लिये उठ गया।

जब लखनऊ पर फिर अँग्रेजों का अधिकार हो गया तो कुछ विद्रोही बाराबंकी जिले में चले आये। कुर्सी कस्बे के पास ४००० विद्रोही इकट्ठे हुये यहां विद्रोहियों की हार हुई। विद्रोहियों ने एक बार फिर नवाबगंज छीन लिया। विद्रोही एक ऊंचे पठार पर इकट्ठे हुये। उनके तीन ओर जमरिया नाला था चौथी ओर जङ्गल था। अँग्रेजी सेनापति ने चक्कर काट कर जङ्गल में पांज के पास रात बिताई। सवेरा होते ही उसने विद्रोहियों पर चढ़ाई की। उसकी छोटी तोपें घोड़ों पर थीं। इनके गोलों की बौछार से विद्रोहियों की बड़ी तोपों का चलना बन्द हो गया। जमींदार बड़ी वीरता से लड़े लेकिन कुछ घन्टों के बाद उनके पैर उखड़ गये और वे इधर उधर भाग गये। कुछ भिटौली के किले में चले गये। कपूर्थला के राजा की सहायता से जिले के बाहरी भागों में भी विद्रोह दबा दिया गया। भिटौली के राजा को छोड़कर जिले के सभी ताल्लुकेदारों ने क्षमा मांग ली। भिटौली का राज्य जब्त करके कपूर्थला नरेश को भेंट कर दिया गया। जिले के किले नष्ट कर दिये गये और लोगों से हथियार छीन लिए गये। गदर के बाद जिले में कोई विशेष घटना नहीं हुई।

प्रसिद्ध स्थान—अलियाबाद का छोटा कस्बा दरियाबाद से रुदौली को जानेवाली सड़क के उत्तर में दरियाबाद से ५ मील और नवाबगंज से ३० मील दूर है। इसके ३ ओर बड़े बड़े तालाब हैं। पहले यहां देशी कपड़ा बहुत बुना जाता था।

बादो सराय फतेहपुर से दरियाबाद को जानेवाली सड़क के पूर्व में रामनगर से ६ मील और बाराबंकी से २१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कहते हैं अब से ५०० वर्ष पूर्व बादशाह नामी एक फकीर ने इसे बसाया था। यहां से ४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर सतनामी साधू जगजीवन दास का मन्दिर है। घाघरा नदी ३ मील उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। घाघरा और बादो सराय के बीच में मलमत शाह की दरगाह है। कहते हैं यहां का फकीर अपनी आवश्यकता को पूरा करने के बाद शेष खाद्य सामग्री शृगालों को बांट देता था।

बहरामघाट चौका नदी के किनारे पर बसा है। यह नवाबगंज से २२ मील दूर है। थोड़ी दूर पर चौका और घाघरा का सङ्गम है। यहां से डेढ़ मील दक्षिण-पूर्व की ओर चौका घाट का रेलवे पुल है। इसके ऊपर से बङ्गाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की गाड़ियां जाती हैं। पुल बनने के पूर्व नेपाल, गोंडा और बहराइच जिले के बीच में बहरामघाट घाघरा के किनारे बड़ा व्यापारी केन्द्र था।

बाराबंकी वास्तव में अवध रुहेलखंड रेलवे स्टेशन के उत्तर में एक छोटा गांव है। जिले का केन्द्र स्थान होने से यह प्रसिद्ध हो गया। यह नवाबगंज से सवा मील दूर है। यहां कचहरी और सिविल लाइन है। जमरिया के नालों में इसका पानी बह जाता है। यहां होकर लखनऊ से फैजाबाद को सड़क जाती है। यहां रेलवे का जकशन है। फैजाबाद लूपलाइन से एक शाखा बहराम घाट को जाती है। मीटर गेज (छोटी) लाइन यहां से गोंडा को गई है।

बाराबंकी स्थान बहुत पुराना है। कहते हैं मुसलमानों के आने से ६०० वर्ष-पूर्व जसनामी एक

भार ने इसे बसाया था। कहते हैं मुसलमानों ने इसे बारह भागों में बांट दिया था। बाहर बांके आपस में लड़े इस से इसका नाम बाराबंकी पड़ गया। कुछ लोग कहते हैं कि यहां वन के बारह भाग थे। इसी से इसका नाम बाराबंकी पड़ा।

भिटौली नवाबगंज से ३० मील दूर चौका के उत्तरी किनारे पर स्थित है। यहां से ५ मील ऊपर घाघरा और चौका का संगम है। पुराना किला गांव के पश्चिम में है। पहले यह रायकवार राजपूतों का प्रधान केन्द्र था। गदर में यहां का राजा गुरूबक्स सिंह अधिक समय तक अँग्रेजी सेना से लड़ता रहा। गदर के बाद किला गिरा दिया गया और राज्य छीन कर कपूर्थला-महराज को दे दिया गया। यहां एक छोटा स्कूल और कपूर्थला-महराज की तहसील है।

बिलेहरा चौका और घाघरा की निचली भूमि के ऊपर ऊँचे किनारे पर बसा है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। यहां बिल्हेरा और पैतेपुर के राजा का महल और केन्द्र स्थान है।

बेमियरगंज रामसनेही घाट तहसील का केन्द्र स्थान है। यह धरौली गांव में स्थित है जो नवाबगंज से अवध ट्रंक रोड पर २४ मील दूर है। पश्चिम की ओर दरियाबाद से हैदरगढ़ को जानेवाली सड़क प्रधान सड़क को पार करती है। यहां का सुन्दर बाजार ऊंची चारदीवारी से घिरा है। सूरजपुर के राजा सिंह जी की विधवा रानी लेखराज कुँवर ने इसे बनवाया था। जिले के डिप्टी कमिश्नर की स्मृति में यह नाम रक्खा गया। यहां तहसील, थाना डाकखाना, सराय और बाजार है।

दरियाबाद का पुराना मुसलमानी कस्बा नवाबगंज से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर बाराबंकी से २२ मील पूर्व की ओर है। लखनऊ से फैजाबाद को जाने वाली प्रान्तीय पक्की सड़क यहां से ६ मील दूर है। दरियाबाद दलदलों से घिरी हुई निचली भूमि पर बसा है। वर्षा ऋतु में दूर तक पानी हो जाता है। कहते हैं जौनपुर के शाह दरियाब खां नामी एक सैनिक ने इसे बासाया था। यहां डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और अस्पताल है।

देव कस्बा नवाबगंज से फतेहपुर को जानेवाली पक्की सड़क के पूर्व में बाराबंकी से ८ मील उत्तर की ओर है। यह एक ऊंचे टीले पर बसा है। कहते हैं देवल ऋषि ने इसे बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा। एक टीले पर सैयद जमाल और कमाल के मकबरे हैं। नवाबी समय में यह एक चकले (जिले) का केन्द्र स्थान था। गत ८० वर्षों में यह बहुत घट गया। इस समय यहां मिट्टी के बर्तन और शीशे की चूड़ियां बनाने का काम होता है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। दशहरा का मेला होता है।

फतेहपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान बाराबंकी से १८ मील उत्तर की ओर है। बाराबंकी से यहां तक पक्की सड़क आती है। फतेहपुर से एक पक्की सड़क रामनगर और दरियाबाद को जाती है। एक सड़क बिन्दौरा रेलवे स्टेशन को गई है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। कहते हैं फतेह मुहम्मद खां नामी दिल्ली के एक शहजादे ने इसे १३२१ ईस्वी में बसाया था। इसके पड़ोस में कई पुराने इमाम बाड़े और मकबरे हैं। यहां कई मन्दिर भी।

हैदरगढ़ गोमती से ४ मील दक्षिण में बाराबंकी से २६ दूर है। कहते हैं १७८७ में आसफुद्दौला के चकले दार अमीरुद्दौला हैदर ने इसे बसाया था। इसके पड़ोस में एक किले के खंडहर और दूसरे भग्नावशेष हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और स्कूल हैं।

इचौली का छोटा मुसलमानी कस्बा दरियाबाद से घाघरा के लोहरी मऊ घाट की जानेवाली सड़क पर टिकैतनगर से १ मील उत्तर-पूर्व में नवाबगंज से २५ मील दूर है। यहां आसफुद्दौला के अर्थ-मन्त्री महाराज टिकैत राय का बनवाया हुआ एक पक्का ताल है। कहते हैं यह भार नरेश इंचा का केन्द्र स्थान था। सैयद सालार के साथियों ने किला गिरा दिया और दूसरा नगर बसाया। नाम पुराना बना रहा।

कुर्सी कस्बा लखनऊ और बाराबंकी से समान दूरी (१६ मील) पर स्थित है। लखनऊ से आने वाली पक्की सड़क उत्तर की ओर टिकैतगंज को

चली गई है। अकबर के समय में यह एक परगने का केन्द्र स्थान था। यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। कहते हैं वाणापुर के एक सेवक (केसरी) ने इसे बसाया था। उसका पुराना किला केसरी गढ़ कहलाता था। इसके बाद यहां भार और फिर मुसलमानों का राज्य हुआ।

मवई कल्यणी नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यहां से एक सड़क मखदूमपुर रेलवे स्टेशन को गई है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। कहते हैं मवई को भारों ने बसाया था। मुसलमानों के आने के पहले यहां ब्राह्मण बसे हुई थे। ब्राह्मणों और मुसलमानों में झगड़ा हुआ। ब्राह्मण एकदम नष्ट कर दिये गये।

नवाबगंज जिले का सब से बड़ा नगर और वास्तव में जिले का केन्द्र स्थान है। यह लखनऊ से १७ मील पूर्व में और फैजाबाद से ६१ मील पश्चिम में है। बाहराम घाट यहां से २२ मील उत्तर की ओर है। यहां होकर प्रान्तीय सड़क लखनऊ से फैजाबाद को जाती है। छोटी जमरिया नदी पर पुल बना है। यहां से पकी सड़कें फतेहपुर, बहराम घाट और हैदरगढ़ को गई। उत्तर की ओर रेलवे स्टेशन है जहां लूपलाइन में बहराम घाट की बड़ी शाखा लाइन और गोंडा को जानेवाली छोटी लाइन मिलती है। स्टेशन का नाम पड़ोस के बारावंक गांव के कारण बारावंकी पड़ गया है। यहां कचेहरी तहसील, थाना, अस्पताल हाई स्कूल और जूनियर हाई स्कूल हैं। बीच में घंटा घर है। यह शुजाउद्दौला के समय में बसाया गया। यहाँ अनाज, घी, कपड़ा, चमड़ा आदि का बड़ा व्यापार होता है।

रामनगर बारावंकी से बहरामघाट को जाने-वाली सड़क के पूर्व में बारावंकी से १८ मील दूर है। पश्चिम में अवध रुहेलखंड की लाइन है। बुढ़वल स्टेशन आध मील दूर है। रामनगर घाघरा के ऊंचे किनारे पर बसा है। यहां थाना, डाकखाना अस्पताल और स्कूल है। यह रायकवार राजपूतों का केन्द्र स्थान है। कहते हैं राजा रामसिंह ने इसे बसाया था।

रुदौली गांव बारावंकी से ३८ मील और राम सनेही घाट (तहसील) से १४ मील दूर है। यह लखनऊ से फैजाबद को जानेवाली सड़क से २ मील दक्षिण की ओर है।

रुदौली रेलवे स्टेशन आध मील उत्तर की ओर है। यहां अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है।

सफ्दर गञ्ज नवाब गञ्ज से १० मील पूर्व की ओर रेल का स्टेशन है। यहां के बाजार में अनाज का व्यापार होता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है।

सादात गँज को बादशाह गञ्ज भी कहते हैं। यह बारावंकी से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर कल्यानी नदी के पास बसा है। यहां के बाजार को राम नगर के राजा सूरतसिंह ने बनवाया था। अनाज का व्यापार बहुत होता है। जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं।

सतरिख गाँव नवाब गंज से ६ मील दक्षिण की ओर है। जमरिया नदी १ मील पश्चिम की ओर बहती है। यहां रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। कहते हैं सप्तरिख नाम के एक हिन्दू राजा ने इसे बसाया था। यहां सयद सालार के पिता का केन्द्र स्थान था। यहां उसका मकबरा बना है। जेठ की पूर्णमासी को उसकी दरगाह पर मेला लगता है।

सिद्दौ कस्बा नवाबगंज से १८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसके चारों ओर ताल और दलदल हैं। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। कपड़े और अनाज का व्यापार होता है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है।

सूरजपुर का प्राचीन गाँव कल्याणी की एक सहायक रहरी नदी के उत्तरी किनारे पर बसा है। अकबर के समय में राजा ब्रह्मवली सिंह ने पठानों को यहां से भगा कर अधिकार कर लिया था। सूरजपुर ताल्लुके का यह केन्द्र स्थान है। यहां से आध मील की दूरी पर देवीगंज का बाजार है

टिकैतगंज का बाजार लखनऊ से महमूदाबाद को जानेवाली सड़क पर कुर्सी से २ मील उत्तर की ओर है। यहां का बाजार महाराज टिकैतराय ने बनवाया था। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। इसके पास मोहसद गांव में पुराना खेड़ा है।

टिकैत नगर दरियाबाद से ४ मील उत्तर की ओर बारावंकी से २६ मील दूर है। पहले यह पत्थर की

चार दीवारों से घिरा था। यह जिले का एक बड़ा बाजार है। घाघरा के मार्ग से यहां बहुत सा अनाज आता है। १७८४ में महाराज टिकैतराय ने इसे बसाया था। यहां पीतल के बर्तन अच्छे बनते हैं। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है।

जेदपुर नवाब गञ्ज से सिद्धौर को जाने वाली सड़क पर बाराबंकी से १८ मील दूर है, यहां अस्पताल डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। यहां चमड़े और कपड़े का व्यापार अधिक होता है। जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं।

फैजाबाद

फैजाबाद का जिला अवध के उत्तर-पूर्व में २६°:६' और २६°.५०' उत्तरी-आक्षांशों और ८१°.४' और ८३°.८ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसका आकार एक ऐसे विषम चतुर्भुज के समान है। जिसका एक कोना पूर्व की ओर अधिक निकला हुआ है। घाघरा नदी फैजाबाद जिले की समस्त उत्तरी सीमा बनाती है। यह ८५ मील तक जिले की सीमा पर बहती है और इसे गोंडा, बस्ती और गोरखपुर जिलों से अलग करती है। फैजाबाद के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में सुल्तानपुर का जिला है। इस ओर मझोई नदी पूर्व में और गोमती नदी दक्षिणी-पश्चिमी कोने पर प्राकृतिक सीमा बनाती है। शेष भाग में कृत्रिम सीमा है। फैजाबाद के पश्चिम में बाराबंकी और पूर्व में आजमगढ़ और गोरखपुर के जिले हैं। जैसे घाघरा नदी अपना मार्ग इधर उधर बदलती है वैसे फैजाबाद जिले का क्षेत्रफल भी घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल १७४० वर्ग मील है। इस क्षेत्रफल में फैजाबाद जिले के गांव भी शामिल हैं जो आजमगढ़ जिले में स्थित है।

फैजाबाद जिला प्रायः समतल मैदान है। जिले में बहने वाली नदियों ने इसे कुछ लहरदार और विषम बना दिया है। नदियां प्रायः पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है। जिन निचले भागों का वर्षा-जल बह कर किसी नदी में नहीं पहुँचने पाता है। उनमें छोटे छोटे ताल बन गये हैं। उत्तर की ओर घाघरा नदी के पेटे में बालू और कांप के कुछ भाग बन गये इनमें कहीं कहीं खेती होती है। इन्हें मंझा कहते हैं। निचले भाग नदियों के ऊंचे किनारों से घिरे हैं। इन किनारों के आगे कहीं खुला हुआ चपटा उपजाऊ मैदान है। इसमें गावों, बागों और ढाक के कुछ जंगलों और तालों को छोड़कर सब जगह खेती होती है। कुछ भागों (अकबरपुर और टांडा परगनों) में कहीं कहीं ऊसर है। फैजाबाद जिले की औसत उंचाई समुद्र-तल से ३०० फुट है। जिले के उत्तरी भाग का पानी घाघरा में, मध्यवर्ती और दक्षिणी-पूर्वी भाग का पानी टोंस में और दक्षिणी पश्चिमी भाग का पानी गोमती में बह जाता है।

घाघरा नदी इस जिले की सब से बड़ी नदी है। यह जिले की उत्तरी सीमा बनाती है। यह उत्तरो-पश्चिमी सिरे पर फैजाबाद जिले को छूती है और पूर्वी सिरे पर जिले के बाहर हो जाती। घाघरा का दक्षिणी किनारा धारा के ऊपर २५ फुट ऊंचा उठा हुआ है। वर्षा ऋतु में इसकी धारा बड़ी चौड़ी और गहरी हो जाती है। प्रति वर्ष इसकी धारा इधर उधर होती रहती है। शीतकाल और ग्रीष्म के आरम्भ में वर्षा या पिघली हुई बरफ का पानी न मिलने से इसकी धारा कम चौड़ी हो जाती है। धारा के दोनों ओर चौड़े कछार निकल आते हैं। इनके उपजाऊ भागों में खेती होती है। रेतीले भागों में झाऊ का जंगल हो जाता है। फैजाबाद छावनी के गुप्तारघाट और अयोध्या के बिल्हार घाट के बीच में घाघरा हिन्दुओं की दृष्टि में विशेष रूप से पवित्र मानी जाती है। यहां इसे सरयू कहते हैं। अलमोड़ा की पहाड़ियों में सारदा या काली-संगम से पूर्व इसकी एक सहायक नदी भी सरयू या सरजू नाम से विख्यात है। खीरी जिले में सुहेली को भी सरजू नाम से पुकारते हैं। सुहेली नदी कौरियाला या घाघरा में मिल जाती है। घाघरा सिंचाई के काम की नहीं है। लेकिन इसकी बाढ़ से हानि भी नहीं होती है।

केवल बहुत नीचे भागों में कभी कुछ हानि हो जाती है। व्यापार के लिये घाघरा बड़ी उपयोगी है। इसमें बिहार से अयोध्या तक नये स्टीमर और पुरानी चाल की नावें चला करती हैं। व्यापार का माल कई प्रकार का होता है। बहुत से यात्री भी अयोध्या को जलमार्ग से आते जाते हैं। अयोध्या के पास नये घाट में वर्षा समाप्त होने पर क्षणिक पुल बन जाता है और स्थानों में घाघरा को पार करने के लिये स्टीमर या नावें मिलती हैं। फैजाबाद जिले में घाघरा में कोई बड़ी सहायक नदी नहीं मिलती है। पश्चिमी सिरे पर सिहोराघाट के पास एक छोटी धार मिलती है जो वास्तव में घाघरा की पुरानी धारा है। टांडा के पास छोटी थिर्वानदी घाघरा में मिलती है। थिर्वा ईसी जिले की झीलों से निकलती है और उत्तर की ओर बहकर घाघरा में मिल जाती है। थिर्वा धीमी चाल से बहती है वह सिंचाई के बड़े काम की है। जंगलों से घिरे हुये इसके किनारे बड़े सुन्दर मालूम होते हैं।

पिकिया नदी गढ़ा परगने से निकल कर तेंदुआ से पूर्व की ओर जिले की सीमा में पहुँचती है और फैजाबाद को आजमगढ़ जिले से अलग करती है। कुछ दूर आजमगढ़ जिले में बहने के बाद यह फिर फैजाबाद जिले में आ जाती है और कम्हरिया घाट के पास घाघरा में मिल जाती है। पिकिय अधिकतर ढाक के जंगल से घिरे हुये ऊपर में बहती है। घाघारा में गिरने से पूर्व पिकिया में गदैया या छोटी सरजू मिल जाती है। तौरी नदी टांडा और बस-खारी के बीच वाली झीलों से निकलकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है और आजमगढ़ जिले में घाघरा में मिल जाती है। यह सिंचाई के बड़े काम की है। अयोध्या के पास घाघरा में तिलाई या तिलांग नदी मिलती है।

टोंस नदी मढ़ा और बिसुई नदियों के मिलने से बनती है। यह दोनो नदियां अकबरपुर से पांच मील पश्चिम की ओर मिलती हैं। मढ़ा नदी बाराबंकी जिले के रुदौली परगने से निकलती है। यह फैजाबाद जिले में मध्य में पश्चिमी आधे भाग में बहती है। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। सरदी में यह प्रायः सूख जाती है। बिसुई दक्षिण की ओर बहने वाली टोंस की सहायक नदी है। यह सुल्तानपुर जिले में निकलती है। बिसुई भी सिंचाई के लिये बड़ी उपयोगी है। मझौरा के पास मढ़ा और बिसुई नदियां एक दूसरे से मिल जाती हैं। दोनों के मिलने से टोंस नदी बनती है। टोंस अकबरपुर, जलालपुर और नागपुर होती हुई दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर जिले के बाहर हो जाती है। अकबरपुर समनपुर और अहरौक में टोंस पर पुल बना है। जलालपुर तक टोंस में नावें चल सकती हैं। अस्थाई पुल सङ्गम और दूसरे स्थानों के पास बन जाते हैं। टोंस की प्रधान सहायक मझोई है। यह जिले की दक्षिणी सीमा के पास बहती है। यह किनांवा झील के पास निकलती है और पूर्व की ओर बह कर आजमगढ़ जिले में टोंस से मिल जाती हैं। इसके निचले मार्ग में वर्ष भर पानी रहता है। चन्दौसी, हरवंश, दोस्तपुर और सुरहुरपुर में इस पर पुल बने हैं।

गोमती नदी फैजाबाद जिले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में बहती है। कुछ दूर तक फैजाबाद और सुल्तानपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। यहां इसमें दो छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। गोमती के किनारे ऊँचे और कटे फटे हैं। गोमती की तली पड़ोस की भूमि से इतनी नीची है कि यह सिंचाई के काम नहीं आती है।

फैजाबाद जिले के कुछ भाग इतने नीचे हैं कि इनका पानी किसी नदी तक नहीं पहुँच पाता है। यहीं झीलें पाई जाती हैं। मिल्कीपुर के पड़ोस में दलदल है। दूसरे निचले स्थानों में झीलें हैं। जिले की साढ़े आठ फीसदी भूमि पानी से ढकी है।

फैजाबाद जिले में लगभग १६½ फीसदी भूमि उजाड़ है। इसमें वे भाग भी शामिल हैं जो पानी से ढके हैं। कुछ भागों में रेल, सड़क और घर बने हैं। इस प्रकार केवल ४ फीसदी भूमि यहां ऐसी है जो खेती के योग्य नहीं है। कुछ भूमि में ढाक (जैसे मिल्कीपुर के पास) और झाऊ के जङ्गल हैं। कुछ उजाड़ नाले हैं। जङ्गलों में हिरण, गीदड़ आदि कुछ जङ्गली जानवर मिलते हैं।

ऊंचे भाग उपहार कहलाते हैं इनका ढाल टिकार और बिहार की ओर होता है।

जलवायु—फैजाबाद जिले की जलवायु अवध के दूसरे जिलों के समान है। दूसरे दक्षिणी जिलों की अपेक्षा फैजाबाद जिले में शीतकाल कुछ अधिक लम्बा होता है। गरमी की ऋतु में यहां तापक्रम भी ऊँचा हो जाता है। औसत से यहां वर्ष भर में ४२ इंच वर्षा होती है। कभी कभी ८८ इंच तक वर्षा हुई है। १८७६ के दुर्भिक्ष के वर्ष में केवल २२ इंच वर्षा हुई।

कृषि—फैजाबाद जिले में ६२ फीसदी से अधिक भूमि में खेती होती है। कुछ भूमि इतनी अच्छी है कि यहां वर्ष में दो फसलें होती हैं खरीफ की फसल की ५७ फीसदी भूमि में धान होता है। जिले की मूल्यवान फसल ईख की है। पहले यहां नील भी होता था। ज्वार, मूंग, उर्द, मकई, अरहर खरीफ की दूसरी फसलें हैं। बाजरा बहुत कम होता है। रबी की प्रधान फसल गेहूँ है। यहां जौ, चना, मटर भी बहुत होता है।

जिले में रबी की फसल में २२ फीसदी गेहूँ, २५ फी सदी जौ, ४७ फीसदी चना मटर रहता कुछ भागों में पोस्त भी होता है।

कारबार—फैजाबाद का जिला अवध के उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह जिला प्रायः सब का सब समतल मैदान है। घाघरा का मंझा और दूसरी नदियों की तली कुछ नीची है। शेष जमीन बड़ी उपजाऊ है। सब कहीं खेती होती है, बीच बीच में ढाक के वन, महुआ और आम के बगीचे और छोटे छोटे तालाब हैं।

फैजाबाद जिले के कई भागों में अच्छा कंकड़ प्रायः ८ इंच की गहराई पर मिलता है। कहीं कहीं गहराई कुछ अधिक है। यह कंकड़ सड़क बनाने और चूना तैयार करने के काम में आता है।

लोटा, कटोरा और पतीली आदि बरतन फैजाबाद और अयोध्या में बनते हैं। फैजाबाद में ट्रंक भी बनने लगे हैं।

टांडा, अकबरपुर आदि कई गांवों में खद्दर और दूसरा कपड़ा बुना जाता है। कई जगह कपड़े की छपाई भी होती है।

फैजाबाद के लकड़ी के सन्दूक, कलमदान और इत्रदान भी अच्छे बनते हैं।

संक्षिप्त इतिहास—अयोध्या का श्री रामचन्द्र जी से सम्बन्ध है। यहां (कौशल में) त्रेतायुग में सूर्य वंशी क्षत्रियों का राज्य था। इसका विस्तृत वर्णन वाल्मीकि और तुलसीदास की रामायण में है। कौशल राज्य की राजधानी अयोध्या थी। यहां ईसा से २०० वर्ष के पुराने सिक्के मिले हैं। कुछ बौद्ध कालीन वर्गाकार सिक्के मिले हैं। चीनी यात्रियों ने भी साकेत या अयोध्या का उल्लेख किया है। कुछ समय तक यहां कन्नौज के राजाओं का भी शासन रहा। ११९४ में शहाबुद्दीन ने कन्नौज से बढ़ते बढ़ते अयोध्या को जीत लिया। इसके पड़ोस में उसने कई दिन शिकार करने में बिताये। इसके बाद कुतुबुद्दीन का एक अफसर यहां सूबेदार नियुक्त हुआ।
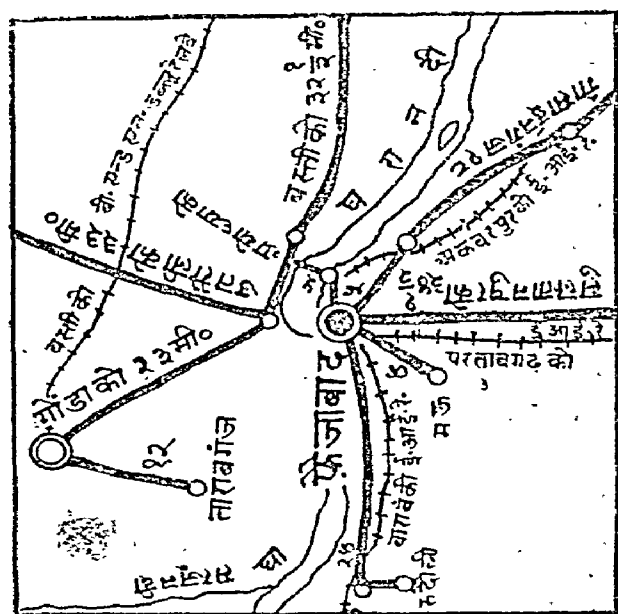
कहते हैं भार विद्रोहियों ने १२२६ में १,२०,००० मुसलमानों को मार डाला। विद्रोह दबा दिया गया। बहुत समय तक अवध दिल्ली का एक सूबा बना रहा। १३६४ में अफगानों ने जौनपुर में एक स्वाधीन राज्य स्थापित किया। इस समय अवध का महत्व कुछ कम हो गया। लेकिन बहलोल लोदी ने जौनपुर राज्य को नष्ट करके अवध की सूबेदारी काला पहाड़ फर्मूली को दे दी। इसके बाद अवध बाबर के हाथ में चला गया। जिस स्थान पर श्रीरामचन्द्र जी का

जन्म हुआ था वहां १५२८ में बाबर ने मस्जिद बनवाई। इसके बाद अवध शेरशाह के हाथ में चला गया। १५५६ में अकबर ने अली कुली खां को अवध जीतने के लिये भेजा। अफगान हारे। मुगलों का यहां राज्य स्थापित हो गया। जब १५६७ में सूबेदार ने विद्रोह किया तो राजा टोडरमल और दूसरे सेनपतियों ने शाही सेना लेकर अयोध्या के किले को घेर लिया। १५६८ में विद्रोही सूबेदार गोरखपुर को भाग गया। इसके बाद यहां कई सूबेदार बदले। अकबर के उत्तराधिकारियों के शासन में अवध का बहुत कम उल्लेख है। यहां कई छोटे छोटे राजा हो गये। जब सादात खां अवध का सूबेदार हुआ तो उसने प्रतापगढ़ के सोमवंशियों, बैसवाड़ा के बैसों और तिलोई के कन्हपुरियों को दबाने के लिये अयोध्या के लक्ष्मणघाट पर किला मुबारक बनवाया। लेकिन राजधानी फैजाबाद के नये शहर में बनाई गई। बड़े सैयदों की पराजय के बाद १७२० में अवध का पूरा प्रान्त सादात खां को मिल गया। सादात खां के बाद उसका भतीजा अबुल मन्सूर खां (सफदर जंग) अवध का नवाब हुआ। सफदर जंग ने फैजाबाद का शहर बसाया। १७५४ में उसकी मृत्यु हो गई। उसका बेटा (शुजाउद्दौला) १७६४ में बक्सर की लड़ाई के बाद स्थायी रूप से फैजाबाद में रहने लगा। १७७५ में शुजाउद्दौला के मरने के समय फैजाबाद उन्नत के शिखर पर पहुँच गया था। इसके बाद आसफुद्दौला ने फैजाबाद को छोड़कर लखनऊ में अपनी राजधानी बनाई। फैजाबाद बहूबेगम के हाथ में रहा। १८१५ में बेगम की मृत्यु हो गई। इसके बाद फैजाबाद का ह्रास हो गया। १७९३ में फैजाबाद जिले का प्रथम नाजिम सुल्तानपुर का मिरजासातार बेग था। कुछ महीनों के बाद राजा शीतल प्रसाद त्रिवेदी यहां का नाजिम हुआ। उसके कड़े शासन के बाद १८०१ में राजा निवाजशाह नाजिम हुआ। १८२७ में प्रसिद्ध राजा दर्शन सिंह यहां के नाजिम हुये। अपने ६ वर्ष के शासनकाल में उन्होंने अयोध्या राज्य की नींव डाली। कुछ परिवर्तन के बाद १८३८ में राजा दर्शन सिंह फिर एक वर्ष के लिये अयोध्या के नाजिम हुये। १८४० से १८४५ तक ८ नाजिम हुये। १८४५ के अन्त में राजा मानसिंह दो वर्ष के लिये नाजिम हुये। १८४८ में वाजिद-अली खां और १८५० में आगा अली खां नाजिम हुये। इसके बाद १८५६ में अवध अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। फैजाबाद एक जिले और कमिश्नरी का केन्द्र स्थान बनाया गया। १८५७ के गदर में संगठन का कार्य स्थगित रहा। गोरे अफसरों को देशी सिपाहियों पर पहले ही से सन्देह था। मई महीने में कलक्टर और असिस्टेंट कमिश्नर के घरों की किलेबन्दी की गई। राजा मानसिंह और दूसरे जमीदारों ने अंग्रेजों को अपने यहां शरण देने का वचन दिया। गोरी स्त्रियों और बच्चों को लखनऊ भेजने की तैयारी की गई। लेकिन दरियाबाद में गड़बड़ी होने के कारण ऐसा न हो सका। १८ जून को विद्रोह आरम्भ हुआ। गोरे नावों पर सवार होकर घाघरा में नीचे की ओर बढ़े। लेकिन १२ मील की दूरी पर बेगमगंज के पास सिपाहियों ने इन पर गोली चलाई। इसके बाद नावों पर चढ़कर सिपाहियों ने उनका पीछा किया। वे बस्ती जिले के गांवों की ओर भागे लेकिन पकड़ लिये गये और मार डाले गये। केवल सर्जेंट बुशर भागकर कप्तान गंज पहुँच सका। गोरों की एक नाव अयोध्या में ठहर गई। यहां उन्होंने एक देशी नाव किराये पर ली। इस नाव पर गुप्त रीति से सवार होने के कारण विद्रोहियों को इन पर सन्देह न हुआ और वे दानापुर कुशल-पूर्वक पहुँच गये। विद्रोहियों ने खजाने का २,२०,००० रुपया लूट लिया और जेल के फाटक खोल दिये। तालुकेदारों ने प्रायः विद्रोहियों का साथ दिया मानसिंह ने विद्रोह के आरम्भ और अन्त में अंग्रेजों का साथ दिया। इससे बहुत सी जानें बच गई और शान्ति स्थापित होने में सहायता मिली। कई महीनों तक फैजाबाद पर विद्रोहियों का अधिकार रहा। १८५८ की ३ जनवरी को जंगबहादुर और उसके नैपाली सिपाहियों ने गोरखपुर को ले लिया। इसके बाद महाराजा जंगबहादुर अवध की ओर बढ़ा। कुछ अंग्रेजी सेना भी आ मिली। अयोध्या में नावों से घाघरा को पार करने वाले प्रायः सभी विद्रोही डुबा दिये गये। उनकी केवल एक नाव बच सकी।

सेना की कुछ टोलियां जिले के दूसरे स्थानों को भेजी गईं। कुछ ही समय में यहां शान्ति स्थापित हो गई।

नगर—अयोध्या का प्राचीन नगर घाघरा या सरजू के दाहिने किनारे पर फैजाबाद शहर से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। यहां तक पक्की सड़क आती है। रेलवे सड़क के समानान्तर चलती है। प्रधान लाइन रानूपाली में छूट जाती है। शाखा लाइन अयोध्या घाट तक आती है। अयोध्या स्टेशन नगर से डेढ़ मील दक्षिण की ओर है। स्टेशन से नगर को पक्की सड़क आती है। नगर से एक पक्की सड़क अयोध्या के बीच से दक्षिण की ओर आकर दर्शन नगर के पास जौनपुर को जानेवाली सड़क में मिलती है। इनके अतिरिक्त यहां और कई सड़कें हैं। अयोध्याघाट के पास वर्षा के अन्त में सरयू को पार करने के लिये नावों का पुल बन जाता है। वर्षा ऋतु में नावें चला करती हैं। अयोध्या भारतवर्ष का एक अति प्राचीन नगर है। इसका रामयण और सूर्य वंशी राजाओं से घनिष्ट सम्बन्ध है। यहां कई राजवंशों की राजधानी रही। सातवीं सदी से आगे अयोध्या उजड़ी पड़ी रही। लेकिन यहां पवित्र तीर्थ स्थान सदा बना रहा। मुसलमानों के आने पर अयोध्या एक प्रान्त की राजधानी बनी। इससे इसका महत्व फिर बढ़ गया। अकबर के समय में यहाँ टकसाल रही। मुसलमानी राजधानी हो जाने पर अयोध्या में मन्दिरों की संख्या बढ़ गई। शाकल द्वीपीय ब्राह्मणों की शक्ति बढ़ गई। उन्हीं का एक प्रतिनिधि अयोध्या का महाराजा हो गया। पूर्व की ओर उसका सुन्दर महल बना है। इनमें ६ जैन मन्दिर हैं। शेष हिन्दू मन्दिर हैं। अयोध्या मन्दिरों का नगर है। कहते हैं मुसलमानों के आक्रमण के समय यहां तीन (जन्म स्थान मन्दिर, स्वर्गद्वार मन्दिर और त्रेता का ठाकुर) मन्दिर थे। १५२८ में बाबर यहां आया और एक सप्ताह तक ठहरा। उसने प्राचीन मन्दिर तुड़वा डाला और जन्म स्थान पर मन्दिर के सामान से अपनी (बाबर की) मस्जिद बनवाई। बहुत से प्राचीन स्तम्भ इस समय भी अच्छी दशा में है। यह काले कसौटी के पत्थर के स्थम्भ है। इनकी लम्बाई सात या आठ फुट है। निचले भाग में यह चौकोर (वर्गाकार) हैं। और चोटी पर गोल या अष्टभुजाकार हैं। कुछ समय (गदर) तक हिन्दू और मुसलमान एक ही स्थान पर पूजा करते रहे। गदर के बाद मस्जिद का घेरा बन गया। जन्म स्थान में हिन्दुओं का जाना बन्द हो गया। हिन्दुओं ने बाहरी भाग में अपना पूजा-स्थान बनवाया।

जन्म स्थान के नष्ट भ्रष्ट होने से हिन्दू और मुसलमानों में वैमनस्य बढ़ गया। १८५५ में हिन्दू मुसलमानों की खुल्लम खुल्ला लड़ाई हुई। मुसलमान जन्म स्थान में इकट्ठे हुये। यहां से उन्होंने हनूमान-गढ़ी पर चढ़ाई की। लेकिन वे भगा दिये गये। इसके बाद हिन्दुओं ने जन्म स्थान पर धावा बोला। इसके फाटक पर ७० मुसलमान मारे गये। इसे गंज शहीदां कहते हैं। ब्रिटिश सेना ने कोई हस्तक्षेप न किया। लेकिन जब अमेठी के मौलवी अमीर अली ने लखनऊ में अयोध्या में हनूमान गढ़ी को नष्ट करने के लिये एक सेना तैयार की तो उसके साथी बाराबंकी में रोक दिये गये। औरंगजेब की बनवाई हुई मस्जिदें बिगड़ी दशा में हैं। त्रेता का ठाकुर मन्दिर उस स्थान पर बना है जहां रामचन्द्रजी ने यज्ञ किया था। यहां रामचन्द्र और सीता जी की मूर्तियों की स्थापना है। २०० वर्ष पहले कुलू (पंजाब) के राजा ने इसकी मरम्मत करवाई फिर महारानी अहिल्या बाई ने १७८४ ई० में इसका सुधार किया और पड़ोस का घाट बनवाया। उसने एक नया (अहिल्या बाई) मन्दिर बनवाया। और इसे २६१) रु० वार्षिकदान दिया। यह दान इस समय भी इन्दौर राज्य की ओर से मन्दिर को मिलता है। कहते हैं जिन प्राचीन मूर्तियों को औरंगजेब ने सरजू में फिकवा दिया था वे निकाल ली गई और फिर से त्रेता के मन्दिर में स्थापित की गई। यह मन्दिर रामनवमी और कार्तिकी के मेले के अवसर पर खुलता है।

अयोध्या के पश्चिमी भाग में ऊंचे टीले पर प्राचीन रामकोट स्थित है। यहां कई मन्दिर बने हैं। इनमें हनुमानगढ़ी सर्व प्रधान है। यह विशाल आयताकार गढ़ है। कोनों पर गोल गुम्बद बने हैं। इसके

ऊपर पश्चिम की ओर पहाड़ी पर जन्मस्थान (जहां श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ था) मन्दिर था। इसके पास ही टीकमगढ़ या ओरछा की रानी का बनवाया हुआ सुन्दर कनक भवन है। यहीं सीता रसोई, बड़ा स्थान (बड़ा अखाड़ा) हैं। रत्न सिंहासन वह स्थान है जहां वनवास से लौटने पर रामचन्द्र जी का राज्याभिषेक हुआ था। यहीं रङ्गमहल, आनन्दभवन, कौशिल्या भवन, जन्मभूमि, अमरदास, का मन्दिर और दूसरे अनेक मन्दिर हैं।

हनुमानगढ़ी से प्रधान सड़क उत्तर की ओर सरयू-तट को जाती है। मार्ग में वाईं ओर भूर और शीशमहल मन्दिर हैं। दाहिनी ओर कृष्ण, उमादत्त और तुलसीदास के मन्दिर हैं। नदी के किनारे सड़क के पश्चिम में स्नान करने के लिये घाट बने हैं। घाट के ऊपर भी कई मन्दिर हैं। इनमें स्वर्गद्वार, जानकी तीर्थ, नागेश्वर नाथ महादेव का प्राचीन मन्दिर चन्द्रहरि, लक्ष्मणघाट, या सहस्र धारा, और लक्ष्मण किला अधिक प्रसिद्ध स्थान हैं। सड़क के पूर्व में सरयूतट के पास और भी अधिक मन्दिर और तीर्थ स्थान हैं। यह रामघाट तक चले गये हैं। सुग्रीव कुंड, धर्महरि, मनीराम छावनी, मुजफ्फरपुर के सुरसर बाबू का मन्दिर और महाराजा का संगमरमर मन्दिर दर्शनीय हैं।

महराजा के महल और रानी बाजार के आगे दक्षिण की ओर मणि पर्वत का टीला है। यह ६५ फुट ऊंचा है और बौद्ध स्तूप मालूम पड़ता है। कहते हैं जब हनूमान जी लक्ष्मण जी को जिलाने के लिये लंका से हिमालय को गये थे तो वे अपने साथ एक समूचा पर्वत ले आये। इसका एक अंग यहीं अयोध्या में टूट कर गिर पड़ा। कुछ लोग कहते हैं कि रामचन्द्र जी के मजदूरों ने अपनी टोकरियों को उंडेल कर यहां टीला बना दिया था। मणि पर्वत पर सेत और तोव के मकबरे हैं जो हिन्दुओं से लड़ते हुये मारे गये थे। रामकोट के दक्षिण-पूर्व में सुग्रीव पर्वत और एक दूसरा टीला है।

अयोध्या के १४५ तीर्थ स्थानों में ८३ अयोध्या के भीतर हैं। शेष दक्षिण की ओर पड़ोस के स्थानों में हैं। पश्चिमी सिरे पर फैजाबाद छावनी के गुप्तार (गुप्तहरि) पार्क में गुप्तहरि मन्दिर है। भरतकुंड मदरसा के पास है। बिल्लुहरि या बिल्हारघाट जलालुद्दीन नगर के पास है। सूरज कुंड, विभीषण कुंड, रामकुंड और निर्मली कुंड भी तीर्थ स्थान हैं। यह सब अयोध्या की परिक्रमा में आजाते हैं। अयोध्या में रथ यात्रा (आषाढ़ में) झूला (श्रावण में) रामलीला कार्तिकी स्नान और परिक्रमा और रामनौमी (चैत्र में) के मेले लगते है। अयोध्या में साधुओं के कई अखाड़े हैं। वैरागियों के सात अखाड़े हैं। १६ वर्ष से कम उम्र वाले बालक शिष्य बनाये जाते हैं। ब्राह्मण और क्षत्री बालकों के लिये यह बन्धन कुछ शिथिल कर लिया जाता है। तीन वर्ष तक शिष्य छोरा रहते हैं। वे मन्दिर और रसोई घर के छोटे बर्तन मांजते हैं। ईधन लाते हैं और पूजा-पाठ करते हैं। इसके बाद ३ वर्ष तक वे बन्दगीदार रहते हैं। वे पानी भरते हैं। बड़े बड़े बर्तन मांजते हैं, भोजन बनाते हैं और पूजा करते हैं। इसके अन्त में ३ वर्ष तक हुर्दङ्गाकल रहता है। इस समय वे मूर्तियों के सामने प्रसाद चढ़ाते हैं। भोजन बांटते हैं, निशान (मन्दिर का झंडा) ले जाते हैं और पूजा करते हैं। दसवें वर्ष के आरम्भ में चेला नागा हो जाता है अयोध्या छोड़ कर भारतवर्ष के तीर्थों की यात्रा करने जाता है और भिक्षा मांगकर निर्वाह करता है। तीर्थ यात्रा समाप्त हो जाने पर वह अतिथि बन जाता है। यह अवस्था जीवन भर रहती है। इस अवस्था में उसे भोजन वस्त्र मिलता है। पूजा-पाठ को छोड़कर उसे कोई काम नहीं करना पड़ता है। सातों में दिगम्बरी साधुओं का प्रथम स्थान है। उत्सव के समय वे आगे रहते है। इसके पीछे दाहिनी ओर निर्वाणी और बाईं ओर निर्मोही रहते हैं। तीसरी पंक्ति में निर्वाणी के पीछे दाहिनी ओर खाकी और बाईं ओर निरालम्भी चलते हैं। निर्मोही के बाद सन्तोषी और महानिर्मोही आते हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय के बाद आगे और दायें बायें कुछ स्थान खाली छोड़ दिया जाता है।

दिगम्बरी साधू नंगे रहते हैं। इनके पन्थ को बलरामदास ने स्थापित किया था जो अब से सवा

दो सौ वर्ष पहले अयोध्या में आये थे। इनकी संख्या १५ है लेकिन इनके पास बड़ी सम्पत्ति है। गोरखपुर और फैजाबाद जिले में इनको कई मौजे माफी में मिले हैं।

निर्वाणी साधू हनूमान गढ़ी मन्दिर में रहते हैं। इनकी संख्या बहुत अधिक है। अयोध्या में रहने वाले २५० निर्वाणी साधुओं को नियमित रूप से प्रतिदिन भोजन मिलता है। निर्वाणी चार (हरद्वारी, उज्जैनिया बसन्तिया और सगरिया) थोक या पट्टियों में बटे हुये हैं। प्रत्येक थोक का महन्त अलग होता है। इन सब के ऊपर एक बड़ा महन्त होता है। वह सर्व सम्मति से चुना जाता है। वह मन्दिर के सामने बरामदे की गद्दी पर बैठता है। निर्वाणी बड़े धनी हैं। इन्हें फैजाबाद, गोंडा, बस्ती, प्रतापगढ़ और शाहजहांपुर जिलों में कई मौजे माफी में मिले हैं। यह व्याज पर रुपया उधार देने और हाथियों को मोल लेने और बेचने का व्यवसाय करते हैं। इन्हें यात्रियों से भी बहुत सा धन चढ़ावे में मिलता है।

निर्मोही (जिन्होंने मोह त्याग दिया हो) साधुओं के आदिगुरु जैपुर के गोविन्ददास थे। पहले वे रामकोट के जन्म स्थान मन्दिर में रहते थे। इसके शेष भाग पर इस समय भी उनका अधिकार है। जब मुसलमानों ने जन्म स्थान को नष्ट कर दिया तो ये रामघाट को चले गये। आगे इनमें आपस में झगड़ा हुआ। इससे कुछ निर्मोही गुप्तार घाट को चले गये। इनको बस्ती जिले के कुछ मौजे माफी में मिले हैं। अधिकतर निर्मोही उस धन से निर्वाह करते हैं जो मन्दिर में चढ़ता है।

खाकी या भस्म लगाने वाले साधुओं के अखाड़े को चित्रकूट के दयाराम ने शुजाउद्दौला के समय में स्थापित किया था। यहां अयोध्या में मन्दिर बनाने के लिये नवाब ने उन्हें ४ बीघा जमीन दे दी। इनकी संख्या लगभग २०० है। इनमें एक चौथाई अयोध्या में रहते हैं। शेष विचरते रहते हैं। खाकी अखाड़े को कुछ भूमि बस्ती जिले में और १ गांव गोंडा जिले में मिला हुआ है। निरालम्बी या आश्रयहीन अखाड़े की स्थापना कोटा से अयोध्या को आये हुये बीरमलदास ने की थी। उन्होंने यहां एक मन्दिर भी बनवाया था। उनके एक चेले नरसिंहदास ने दर्शनसिंह के मन्दिर के पास एक मन्दिर बनवाया। इनकी संख्या कम है। इनका निर्वाह यात्रियों के दिये हुये दान से होता है। सन्तोषी साधुओं की संख्या और भी कम है। इस अखाड़े को सफदर जङ्ग के समय में जैपुर के रतीराम ने स्थापित किया था। इनका निर्वाह दान से ही होता है। महा निर्वाणी अखाड़े को कोटा बूंदी के पुरषोत्तमदास ने शुजाउद्दौला के शासनकाल में स्थापित किया था। इनका यहां एक मन्दिर है। इनकी संख्या प्रायः २५ है यह बहुधा विचरते रहते हैं।

नगर—अकबरपुर फैजाबाद से ३६ मील और टांडा से १२ मील दूर है। (भूतपूर्व) अवध रुहेलखंड की स्टेशन कस्बे के पास ही उत्तर-पूर्व की ओर है। अकबरपुर टोंस के बायें किनारे पर बसा है। यहां टोंस पर पक्का पुल बना है। एक मील की दूरी पर रेल का पुल है। कस्बे में होकर फैजाबाद से जौनपुर को पक्की सड़क जाती है। एक शाखा टांडा को गई है। यह कस्बा सम्राट अकबर के समय में बसाया गया था। सूबेदार ने टोंस के बायें किनारे पर किला भी बनवाया था। कहते हैं पहले यहां जङ्गल था। यहां एक फकीर रहता था। उसे डाकुओं ने मार डाला। उसका मकबरा किले में बनाया गया। यहां अकबर के समय में एक टक्साल थी। अकबरपुर में तहसील (जो पुराने किले में स्थित है) थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और अंग्रेजी स्कूल है। यहां एक इमामबाड़ा और कई मस्जिदें हैं। यहां खद्दर बहुत बनता है। बाजार में अनाज और चमड़ा बिकता है। यहां रामव्याह और स्नान का मेला लगता है।

अमानीगंज बाजार फैजाबाद से २७ मील दूर है। यह रुदौली से हलियापुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अनाज, कपड़ा, कपास और दूसरी वस्तुओं का व्यापार होता है। रामलीला का मेला लगता है।

बसखारी कस्बा अकबरपुर से रामनगर को और टांडा से आजमगढ़ को जाने वाली सड़कों के चौराहे

पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहते हैं इस कस्बे के पड़ोस में एक मुसलमान ने कुएं से पानी खींच कर पिया तो कुएं का पानी खारा था। अतः उसने कहा 'बस खारी' इससे इसका नाम बसखारी पड़ गया।

भदरसा कस्बा फैजाबाद से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क से कुछ पश्चिम की ओर है। कस्बे और सड़क के बीच में इलाहाबाद की रेलवे लाइन आती है। स्टेशन का नाम भरतकुंड है। कहते हैं रामचन्द्र जी के वन-वास के समय भरत जी ने यहीं निवास किया था। यहां सोमवती अमावस्या को मेला लगता है। यहाँ डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। मीरन जैना के मकबरे पर मेला लगता है। कहते हैं यहां चोरों का पता लग जाता है। जिन पर सन्देह होता है उनसे कब्र के फूल उठाने के लिये कहा जाता है। फिर उनसे पूछा जाता है कि तुमने कितनी क़ब्रें देखीं? चोर अशुद्ध उत्तर देता है।

बीकापुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान (जो पास वाले तेंदूआ गांव में है) है। यहां थाना, डाक-तारघर, पड़ाव और प्राइमरी स्कूल है। यह फैजाबाद से सुल्तानपुर और इलाहाबाद को जाने वाली सड़क पर फैजाबाद से १३ मील दूर है।

बिल्हार (बिल्लु हरि) घाट भूत पूर्व अवध रुहेलखंड लाइन का एक स्टेशन है। सरयू का घाट यहां से डेढ़ मील दूर है। यह सरयू के पवित्र घाटों की पूर्वी सीमा है। पश्चिमी सीमा गुप्तहरि (गुप्तार) घाट फैजाबाद छावनी के पास है। यहां बैसाखी के अवसर पर सरयू स्नान का मेला लगता है।

दर्शन नगर का बाजार महदौना के राजा दर्शन सिंह ने लगवाया था। यह फैजाबाद से ४ मील की दूरी पर फैजाबाद और अयोध्या से पूर्व की ओर जाने वाली सड़कों के चौराहे पर स्थित है। बाजार चारों ओर ऊंचे पक्की दीवारों से घिरा है। बीच में दरवाजे हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। स्टेशन पास होने से व्यापार बढ़ रहा है। बाजार में ही सूरजकुंड और सूर्य-मन्दिर है। सड़क के पास देवी का मन्दिर है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है।

फैजाबाद शहर घाघरा के दाहिने किनारे पर लखनऊ से ७८ मील पूर्व इलाहाबाद से ९२ मील उत्तर और हिमालय से ७० मील दक्षिण की ओर है। वर्षा के अन्त में आकाश निर्मल होने पर कभी कभी यहां से हिमालय के दर्शन हो जाते हैं। अयोध्या का प्राचीन नगर यहां से ४ मील पूर्व की ओर है। रेलवे की एक लूप (चाप) लाइन बनारस और जौनपुर से फैजाबाद होती हुई लखनऊ को जाती है। स्टेशन सिविल लाइन के पास ही पश्चिम की ओर है। एक शाखा लाइन रानू पाली से अयोध्या घाट को जाती है। दूसरी शाखा लाइन फैजाबाद से दक्षिण की ओर सुल्तानपुर होती हुई इलाहाबाद को जाती है। पक्की सड़कें फैजाबाद से इलाहाबाद, लखनऊ, टांडा, रायबरेली और दूसरे स्थानों को गई हैं। शहर और छावनी में सड़कों का जाल बिछा हुआ है। अवध में लखनऊ के बाद दूसरा स्थान फैजाबाद का ही है। फैजाबाद बहुत पुराना नहीं है। प्राचीन नगर पड़ोस में अयोध्या है। इसके पड़ोस में केवड़ा और दूसरे सुगन्धित पौधों का जङ्गल था। अवध के प्रथम नवाब वजीर सादात खां ने अयोध्या में लक्ष्मण घाट के पास किला (मुबारक) बनवाया यहीं वह रहने लगा। लेकिन नवाब ने शिकार के लिये फैजाबाद में बङ्गला बनवाया। यह मोती महल के पास इस समय भी घाघरा के ऊंचे किनारे पर स्थित है। इसके बाद नवाब ने दिलकुशा महल बनवाया। १७३९ में उसकी मृत्यु के समय तक यह पूरा नहीं हो पाया था। उसके उत्तराधिकारी अबुल मन्सूर खां या सफदर जङ्ग ने फैजाबाद का शहर बसाया। यहीं उसने अपने रहने के लिय महल और फौज के लिये कमरे बनवाये। लेकिन उसका अधिकतर समय दिल्ली और दूसरे स्थानों में बीता। मरने से कुछ ही समय पहले वह स्थायी रूप से अवध में रहने लगा। नवाब के उच्च पदाधिकारी नवलराय ने सरयू के किनारे अयोध्या में सुन्दर भवन बनवाया। कई मुगल सरदारों ने फैजाबाद में बगीचे लगवाये। उनकी स्मृति में मुगलपुरा महल्ला बस गया। दीवान आत्माराम के लड़कों ने लम्बा बाजार बनवाया।

सफदर जंग का उत्तराधिकारी शुजाउद्दौला आरम्भ में कभी कभी फैजाबाद आया। लेकिन १७६४ में बक्सर की हार के बाद उसने फैजाबाद में ही अपना निवासस्थान और राजधानी बनवाई। उसने यहां किला बनाया जो बाद में तोड़ दिया गया जिसे छोटा कलकत्ता कहते हैं। इसके आगे सफील या फसील थी। यहां तेजी से घर बन गये। नवाब ने दिलकुशा (जो इस समय अफीम का बँगला कहलाता है) और मोती महल पूरा किया। १७६५ में उसने चौक और तिपौलिया (जिसमें तीन महराब है) दरवाजा बनवाया। इसके बाद अँगूरी बाग, आसफ बाग मोती बाग, बुलन्द बाग और लाल बाग बने। इसी समय यहां कुछ और भवन बने। शुजाउद्दौला का मकबरा और गुलाब बारी बनी। शुजाउद्दौला की धर्मपत्नी को प्रायः बहू बेगम कहते हैं। १७७५ में शुजाउद्दौला के मरने के बाद भी वह यहीं बहुत वर्षों तक मोतीमहल में रहती थी। इसके पास ही बेगम की मस्जिद थी। बेगम के विश्वास पात्र दराबअली खां का भवन गुप्तार पार्क के पास है। वारेन हेस्टिंग्स पर मुकदमा चलाने में उसका भी हाथ था। १८१६ में मरने पर बेगम जवाहरबाग के मकबरे में दफन की गई। मरने से पहले बेगम ने दराब खां के मकबरे के लिये ३ लाख रुपया दिया। १८१८ में दराब खां की मृत्यु हो गई। उसका मकबरा पूरा नहीं हो पाया था। यह १८०१ में पूरा हुआ। आसफुद्दौला अपनी मां (बेगम) से लड़ बैठा। अतः वह फैजाबाद में अधिक समय तक न रहा। उसने लखनऊ में अपनी राजधानी बनाई। शुजाउद्दौला के समय में फैजाबाद अपनी उन्नति के शिखर पर पहुँच गया था और शान शौकत में दिल्ली से टक्कर लेने लगा था। यहां ईरान, चीन और योरुप के सौदागर भर गये थे। धन पानी की तरह बहता था। आबादी बढ़ कर चारदीवारी के बाहर फैल गई थी। आसफुद्दौला के चले जाने से फैजाबाद को भारी धक्का लगा। लेकिन वह बेगम के मर जाने से फैजाबाद की शान एकदम फीकी पड़ गई। जब अवध अँग्रेजी राज्य में मिलाया गया तब फैजाबाद की दशा अच्छी न थी। गदर के बाद सड़कें चौड़ी कर दी गईं। कुछ घर फिर से बने। पश्चिम की ओर रेलवे स्टेशन और छावनी के बीच में सिविल लाइन बनी। यहीं कचहरी, अजायब घर और पब्लिक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) है। घाघरा को पार करने के लिये मीरन घाट पर नावें रहती हैं। गुप्तार पार्क के पास गुप्त हरि का मन्दिर उस स्थान पर बना है जहां रामचन्द्र जी ने इस संसार को छोड़ा था। फैजाबाद में एक इण्टर कालेज, २ हाई स्कूल, १ नार्मल स्कूल और एक जूनियर हाई स्कूल है। यहां जेल, अस्पताल, डाकतार-घर, कोतवाली पुलिस लाइन और विक्टोरिया हाल है। फैजाबाद कोई कारबारी नगर नहीं है। लेकिन उत्तरी और पूर्वी भागों के लिये यह एक बड़ा व्यापार-केन्द्र है।

गोशाईगंज फैजाबाद से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर फैजाबाद से अकबरपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। सड़क के पूर्व में रेलवे (अवध रुहेल खंड) लाइन का स्टेशन है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां से अनाज और चमड़ा बाहर को भेजा जाता है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

हैदरगंज बिसुही नदी के पास कई सड़कों के चौराहे पर फैजाबाद से २४ मील दूर है। यहां थाना डाकखाना, अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

इल्तिफातगंज घाघरा के किनारे पर फैजवाद से टांडा को जाने वाली सड़क पर फैजाबाद से २६ मील और टांडा से ८ मील दूर है। यहां से एक सड़क दक्षिण में अकबरपुर को जाती है। यहां के जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। यहां एक बड़ा बाजार है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

जलालपुर कस्बा टौंस के दाहिने किनारे पर अकबर पुर से दक्षिण-पूर्व की ओर १४ मील और फैजाबाद से ५० मील दूर है। यहां से एक पक्की सड़क मलीपुर रेलवे स्टेशन को जाती है। कच्ची सड़कें कई स्थानों को गई हैं। टौंस में वर्षा ऋतु में नाव चलती है। वर्षा के समाप्त होने पर अस्थायी पुल बन जाता है। यहां थाना डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। कहते हैं जलालपुर जलाउद्दीन अकबर के समय में बसा, इसी से इसका यह नाम पड़ा। किछौछा को अशरफपुर भी कहते हैं। यह तीर्थ

नदी के किनारे पर कई (जलालपुर से बसखारी और अकबरपुर से तेन्दुआ को जाने वाली) सड़कों के चौराहे पर फैजाबाद से ५० मील दूर है। गांव निचली भूमि पर बसा है और तालाबों से घिरा है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। कहते हैं मखदूम अशरफ ने भार लोगों का भगा कर यहां अपना अधिकार जमाया था।

कुन्दरखा खुर्द या ड्योढ़ी हिन्दूसिंह सोहवल स्टेशन से अमानीगंज को जाने वाली सड़क पर फैजाबाद से १४ मील दूर है। यहां विसेन सरदार हिन्दू सिंह रहते थे। बाजार को ड्योढ़ी कहते हैं। यहां सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। यह गांव महाराजा, अयोध्या की जमींदारी में है। कहते हैं अब से प्राय: ६०० वर्ष पहले इसे खुन्दरसिंह ने बसाया था। हिन्दूसिंह नवाब शुजाउद्दौला का विश्वास पात्र सैनिक था। उसने बांगरमऊ (उन्नाव) के पास बिजौलिया का किला जीतने में बड़ी वीरता दिखलाई। इससे प्रसन्न होकर नवाब ने सात सेनाओं का उसे सेनापति बना दिया। इसके बाद रुहेला युद्ध आदि सभी लड़ाइयों में नवाब का हाथ बटाया। उसको कपासी और लटचौरी गांव माफी में मिले। आसफुद्दौला भी उसका बड़ा आदर करता था। एक बार नैपाल की तराई में हिन्दूसिंह ने अपनी तलवार से चीते का शिकार किया और उसे मार डाला। इससे प्रसन्न होकर नवाब ने अपना हाथी और उचितपुर गांव भेंट में दिया।

लोरपुर फैजाबाद से जौनपुर को जाने वाली सड़क के पश्चिम में अकबरपुर (तहसील) से ३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां के जुलाहे कपड़ा बुनने का काम करते हैं। यहां प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां रामलीला और मुहर्रम का मेला होता है। गांव के उत्तर में एक बड़ा ताल है। इसके बीच में एक टीला है। टीले तक पहुँचने के लिये एक ओर से मार्ग बना है। इस टीले पर इमली के पेड़ों के बीच में सैयदताज का मकबरा है। कहते हैं गोरी बादशाहों के समय में वह अरब से आया था। मकबरा फीरोज तुगलक के समय में बना। खजाने की खोज में चोरों ने इसके पड़ोस को कई बार खोद डाला।

महाराजगंज का बाजार फैजाबाद से जौनपुर को जाने वाली सड़क के दक्षिण में स्थित है। यह फैजाबाद से १६ मील दूर है। बाजार के पास से एक सड़क टांडा को जाती है। एक सड़क घाघरा के किनारे दिलासीगंज को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

मगाल्सी गांव घाघरा के ऊँचे किनारे पर रौनाह से २ मील पूर्व में है। गांव ऊँची भूमि पर बसा है जिसे नालों ने काट दिया है। एक नाला लखनऊ को जाने वाली सड़क तक आता है। इस पर बहू बेगम के दीवान तुराब अली ने पुल बनवा दिया था। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। बाजार महाराज गंज के नाम से प्रसिद्ध है। यहां के कुछ शेखों के पास पुराने (फीरोज और अकबर के) समय की सनदें और फरमान हैं।

मुस्तफाबाद जिले के उत्तरी-पूर्वी सिरे पर बाराबंकी की सीमा के पास स्थित है। यह फैजाबाद से लखनऊ को जाने वाली प्रधान सड़क और अवध रुहेल खंड रेलवे लाइन के बीच में बसा है। स्टेशन का नाम बड़ा गांव है। स्टेशन से एक सड़क बेगमगंज और दरियाबाद (बाराबंकी) को जाती है। यहां के जुलाहे और रङ्गसाज अच्छी दशा में हैं। वे अपने बुने हुये और रङ्गे हुये कपड़ों को पड़ोस के बाजारों में बेच लेते हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

नागपुर टोंस के ऊँचे दाहिने किनारे पर जलालपुर से २ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह फैजाबाद शहर से ५२ मील दूर है। नदी में मिलने वाले नालों ने गांव को कई भागों में बांट दिया है। कहते हैं यह गांव अब से ३००० वर्ष पहले बसाया गया था। यहां के जुलाहे कपड़ा बुनते हैं। कुछ बम्बई आदि दूर दूर शहरों की मिलों में काम करने चले गये हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां इमामबाड़ा और करबला बना है। यहां तराहन का मेला लगता है।

रौनाही घाघरा के ऊँचे किनारे पर फैजाबाद से ११ मील पश्चिम की ओर और सोहवल स्टेशन

से २ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहां थाना (जो पुराने किले में स्थित है) डाकखाना प्राइमरी स्कूल और नवाबी समय की पक्की सराय है। यहां ११ मस्जिदें १ ईदगाह और ३ हिन्दू मन्दिर हैं। दक्षिण पूर्व की ओर एक सुन्दर जैन मन्दिर है। इसमें काले पत्थर की बनी हुई पारसनाथ की मूर्ति है। इसमें फर्श संगमरमर का बना है और पीतल के फाटक लगे हैं। रौनाही का बाजार छोटा है। लखनऊ को जानेवाली पुरानी सड़क पर स्थित होने से यह विख्यात हो गया।

शाहगंज पहारपुर के बाजार का नाम है। यह फैजाबाद से १२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर हेस्टिंगटनगंज और इसौली (सुल्तानपुर) को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यहां होकर एक सड़क अमानीगंज से भदरसा को जाती है। यहां अयोध्या के महाराजा का भवन और किला है। राजा मानसिंह ने फैजाबाद से भागकर आये हुए गोरों को इसी किले में शरण दी थी। इससे विद्रोहियों ने १८५८ में किले को घेर लिया था। विशाल कच्ची दीवारों पर १४ तोपें लगी थीं। यहां डाकखाना अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

शाहजादपुर टोंस के दाहिने या दक्षिणी किनारे पर फैजाबाद से जौनपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर अकबरपुर से १ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से जलालपुर, दोस्तपुर और सुल्तानपुर को भी सड़कें गई हैं। इसके पास ही सिंझौली (सुझावलगढ़) में भार सरदार का गढ़ था। यहां लोहा ढालने का काम होता है। इसीसे यह ईख पेरने के कोल्हू के व्यापार का केन्द्र बन गया है। यहां सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अनाज और चमड़े का व्यापार होता है। भादों में गाय चरावन का मेला लगता है।

सोहवलगांव फैजाबाद से १० मील पश्चिम की ओर अवध रुहेलखंड रेलवे का स्टेशन है। स्टेशन से घाघरा के किनारे रौनाही के पास ढेमुआ घाट को सड़क गई है। दक्षिण-पश्चिम में अमानीगंज, दक्षिण-पूर्व में दौलतपुर को सड़कें गई हैं। दौलतगंज में रायबरेली को जानेवाली सड़क मिलती है। रेलवे स्टेशन के दक्षिण में सुचितागंज का बाजार है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां से अनाज और दूसरा सामान बाहर जाता है। पासवाले खिरौनी गांव में प्राइमरी स्कूल है।

सुल्तानपुर जिले के पूर्वी सिरे पर सरजू नदी के किनारे टांडा से आजमगढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यह टांडा से ३२ मील और फैजाबाद से ७० मील दूर है। एक सड़क घाघरा के कम्हरिया घाट को जाती है। यह पलवार ताल्लुका का प्रधान नगर है। गदर के बाद पलवार का किला नष्ट कर दिया गया। पलवार सरदार बलराम ने इसे बसाया था। इसका पुराना नाम बलरामपुर है। रघुनाथसिंह ने यहां बाजार लगवाया। तभी से इसका नाम सुल्तानपुर पड़ गया। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। यहां एक चौथाई मुसलमान हैं। इनमें अधिकतर जुलाहे हैं जो कपड़ा बुनने का काम करते हैं। गांव के पड़ोस में कई सती स्तम्भ हैं।

सुरहुरपुर एक प्राचीन गांव है। यह जिले की दक्षिणी सीमा के पास मझोई नदी के किनारे पर स्थित है। नदी पर अकबर के समय का पक्का पुल बना है। यहां होकर फैजाबाद से जौनपुर को सड़क जाती है। यहां सुभनाथ जोगी का अधिकार था। सैयद सालार ने इस पर चढ़ाई की और जोगी को मार डाला। यहां पुराने किले के खंडहर और कुछ मुसलमानी मकबरे हैं। सुखर पीर की दरगाह है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

टांडा कस्बा फैजाबाद से आजमगढ़ को जानेवाली सड़क पर फैजाबाद से ३७ मील दूर है। एक पक्की सड़क अकबरपुर को जाती है जो १२ मील दूर है। उत्तर की ओर १ मील की दूरी पर घाघरा नदी बहती है। यहां इसको पार करने के लिये घाट है। टांडा का अर्थ कारवां या काफला है। पहले यहां बंजारे लोग घाघरा को पार करने के लिये अपने सामान के साथ पड़ाव डाला करते थे। धीरे धीरे यह पड़ाव नगर में बदल गया।

फर्रुखसियर ने यह गांव एक शेख को दे दिया। यहां हिन्दू कातने वाले और मुसलमान जुलाहे कपड़ा बुनने वाले अधिक हैं। यहां स्काट नाम का एक गोरा भी बस गया था। १७९६ तक परगने की जागीर स्काट के हाथ में रही। यहां तहसील, थाना डाकखाना, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। शेख हारून के मकबरे पर भादों महीने के पहले रविवार को मेला लगता है। इससे १ मील पश्चिम की ओर हुसेन अली का इमामबाड़ा है। यहां ताजिया गाड़े जाते हैं। रामनौमी, रामलीला और कार्तिकी पूर्णिमा को मेला लगता है।

गोंडा

गोंडा जिले के उत्तरी भाग में तराई है। यहां मलेरिया बहुत फैला करती है। इस प्रदेश में तुलसीपुर, बलरामपुर और अतरौला परगने का उत्तरी भाग शामिल है।

उपरहार या ऊँचा भाग जिले के बीच में स्थित है। इसमें अतरौला का शेष भाग, गोंडा परगना और महदेवा और नवाबगंज के बहुत से भाग बसे हुए हैं।

तराई के तर भाग में तराबगंज तहसील और पहारपुर परगना स्थित हैं। इसी भाग में नदियों का जाल सा बिछा है और अक्सर बाढ़ आती है।

अतरौला के कारीगर लोग गुलदस्तों पर तरह तरह के बेल बूटे बनाते हैं। पर ये चीजें धनी लोगों के लिये होती हैं इसलिये इनकी मांग बहुत कम है।

गोंडा शहर में चूना बनाने के चार कारखाने हैं। खरगपुर, बलरामपुर और मछली गांव में पतीली, बटलोई, गगरा, लोटा, थाली और कटोरा बनाये जाते हैं। ये बरतन अधिकतर टूटे फूटे बरतनों को गलाकर बनाये जाते हैं। बलरामपुर में फूल के बरतन भी बनते हैं। बलरामपुर में गुप्ती और चाकू भी बनते हैं। मनकापुर में चन्दन के तेल का कारखाना है। यह कारखाना कन्नौज से सम्बन्ध रखता है जो तेल यहां तैयार होता है वह सब कन्नौज को भेज दिया जाता है।

तेल बनाने से पहले रेती से चन्दन की लकड़ी का बुरादा बना लिया जाता है। फिर इस बुरादे को बड़े बड़े देग में रखकर पानी छोड़ देते हैं। फिर ये देग ढक्कनों से ढक दी जाते हैं। इससे हवा न आ सके इसलिये ढक्कन किनारों पर रुई लगाकर मिट्टी से लेप देते हैं। ढक्कन के बीच में एक छेद होता है जिसमें एक नल (ट्यूब) लगा दिया जाता है। यह नल एक दूसरे तांबे के बरतन में मिला दिया जाता है और ठंडे पानी में होकर गुजरता है। इस प्रकार जब डेगची के नीचे आंच की जाती है तब भाप ठंडी होकर तांबे के बरतन में पहुँचती है। ये तांबे के बरतन बारह बारह घंटे के बाद बदल दिये जाते हैं। यह काम एक सप्ताह तक होता रहता है। पर बीच का पानी जब कुछ गरम हो जाता है तो उसकी जगह पर ठंडा पानी रख दिया जाता है। इस काम के लिये लगभग ११०० मन चन्दन बंगलौर से आता है। प्रत्येक टन का दाम १८०० रु० होता है। ईंधन टीकरी वन से मिल जाता है।

कटरा बीरपुर और दोबागढ़ में कपड़ा छापने का काम होता है।

गोंडा का जिला अवध के उत्तर में फैजाबाद कमिश्नरी का एक जिला है। यह घाघरा नदी और हिमालय की बाहरी पर्वत-श्रेणी के बीच में स्थित है। उत्तर में नैपाल राज्य और इस जिले के बीच में कृत्रिम सीमा है। जंगल के बीच में एक पेटी को साफ करके नियत दूरी पर पक्के खम्भे बना दिये गये हैं। पूर्व की ओर आरा नदी गोंडा जिले को २२ मील तक नैपाल राज्य से प्रथक करती है। इसके आगे इस जिले के पूर्व में घाघरा तक बस्ती जिला है। दोनों जिलों के बीच में कुछ दूर तक कृत्रिम सीमा है। शेष भाग में बूढ़ी राप्ती, राप्ती, सुवावन, कुवना और मनवर नदियां सीमा बनाती हैं। गोंडा जिले की दक्षिणी सीमा पर घाघरा नदी बहती है। यह इस जिले को फैजाबाद

और बाराबंकी जिलों से अलग करती है। पश्चिम में बहराइच और इस जिले के बीच में कुछ दूर तक छोटी नदियां सीमा बनाती है। शेष भाग में कृत्रिम सीमा है। गोंडा अवध के बड़े जिलों में है। यह आयताकार है। यह बीच में संकुचित और सिरों पर चौड़ा हो गया है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६८ मील और चौड़ाई ६६ मील है। इसका क्षेत्रफल २८१० वर्ग मील है। इसमें १५६ वर्ग मील सरकारी वन है। यह जिला २६·३३ और २७·५० उत्तरी अक्षांशों और ८१·३३ और ८२·३६ पूर्वी देशान्तरों के बीच में घिरा है।

गोंडा जिला तीन प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है। १ तराई--इसके उत्तर में तराई है जो उत्तर में हिमालय की तलहटी वाले वन से दक्षिण की ओर राप्ती नदी के किनारे तक फैली हुई है। इस तराई प्रदेश में तुलसीपुर का समूचा परगना अधिकांश बलरामपुर और अतरौला का उत्तरी सिरा शामिल है। यह प्रदेश बहुत नीचा और गीला है। कुओं में पानी धरातल के पास मिल जाता है। यहां बहुधा बाढ़ आती है। उत्तर की ओर असंख्य तेज पहाड़ी धारायें अपने साथ कंकड़ पत्थर बहा लाती हैं। उनकी चौड़ी तली कड़ी पथरीली चट्टानों और बालू से ढकी रहती है। अधिक दक्षिण में चिकनी मिट्टी है। यहां दलदल बहुत हैं। यह भाग धान की खेती के लिये बहुत अच्छा है। तुलसीपुर बहुत समय से चावल के लिये प्रसिद्ध रहा है। लेकिन इस भाग में मलेरिया बहुत फैलता है।

२ उपहार—तराई के आगे दक्षिण में मध्यवर्ती ऊँचा मैदान या उपरहार है। यह राप्ती नदी से लेकर उपरहार के ऊँचे टूटे फूटे रेतीली टीले तक फैला हुआ है। यह नदी और गोंडा शहर के दक्षिण तक फैला हुआ है। पश्चिम की ओर इसके सिरे पर नदी का एक ऊंचा किनारा सा मालूम होता है। दक्षिण-पूर्व की ओर ऊंचा किनारा लुप्त हो गया है। केवल कहीं कहीं रेतीले टीले शेष हैं। कहीं कहीं विषम भूमि की तंग पेटी है। उपरहार एक ऊंचा पठार सा मालूम होता है। बीच बीच में इसे नदियों और नालों ने काट दिया है। इसमें कहीं अधिक उपजाऊ भूमि है। कहीं कम उपजाऊ भूमि है। कई भागों में जङ्गल है जो यह प्रगट करता है कि पहले यह समस्त प्रदेश जंगल से ढका था। दक्षिण-पूर्व की ओर टीकरी का सरकारी रक्षित वन है। कुवाना नदी के पड़ोस का वन अलग अलग व्यक्तियों के अधिकार में है। इन वनों के जंगली जानवर पड़ोस के गांवों को बड़ी हानि पहुँचाते हैं। उपहार में अतरौला तहसील का शेष भाग, गोंडा का बड़ा परगना और महादेव और नवाब गंज के कुछ भाग शामिल हैं।

३ तरहार—उपरहार के किनारे से घाघरा नदी तक तरहार (गीला) प्रदेश है। इस निचले गीले प्रदेश में समस्त तराबगंज तहसील और पहाड़पुर का परगना शामिल है। औसत से इसका तल उपरहार से १५ फुट अधिक नीचा है। घाघरा और उसकी सहायक नदियों ने तरहार को काटकर उपरहार से अलग कर दिया है। तरहार में छोटी छोटी नदियों का जाल सा बिछा हुआ है। बाढ़ में इसका बड़ा भाग पानी में डूब जाता है। निचली तली में सब कहीं नदी की बालू है। इसके ऊपर अच्छी कांप मिट्टी का परत बिछा है। यह परत कहीं अधिक मोटा है। कहीं पतला है। इसमें कहीं रेतीले टीले हैं। कहीं नीचे उपजाऊ गड्ढे हैं। यहां कुछ ही गहराई पर कुओं में पानी निकल आता है। इसलिये इस भाग में अकाल का डर नहीं रहता है। अकाल के वर्षों में यहां मकई की फसल बड़ी अच्छी होती है। बाढ़ के वर्ष में फसल के नष्ट होने के साथ साथ बीमारी भी बहुत फैलती है।

जिले के उत्तर सिरे पर समुद्र-तल से भूमि ३६० फुट ऊँची है। इसके आगे दक्षिण की ओर भूमि नीची होती जाती है। तुलसीपुर के पास भूमि ३६० फुट और बलरामपुर के पास ३१० फुट ऊँची है। मध्यवर्ती मैदान उत्तर-पश्चिम इससे कुछ अधिक ऊँचा है। कौरिया स्टेशन के पास भूमि समुद्र-तल से ३६६ फुट ऊँची है। लेकिन दक्षिण पूर्व की ओर भूमि नीची होती गई है। नवाबगंज के उत्तर में बस्ती जिले की सीमा के पास भूमि केवल ३२५ फुट ऊँची है। तरहार जिले

का सब से नीचा भाग है। इसकी ऊँचाई कर्नलगंज के पास ३५५ फुट है। अयोध्या के सामने केवल ३१० फुट है।

तराई में कड़ी चिकनी मिट्टी है। उपरहार में चिकनी और बलुई मिट्टी का मिश्रण है। कहीं कहीं बालू है। तरहार में भी इसी प्रकार की हलकी दुमट मिट्टी है। कहीं कहीं भूड़ है। कुछ भागों में केवल फी सदी खादवाली गोंयड़, ५८ फीसदी मझार (मध्य में) और ३६ फीसदी पालो है।

इस जिले की भूमि का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। उत्तर की ओर का वर्षा-जल राप्ती नदी में और दक्षिणी भाग का वर्षा-जल घाघार नदी में पहुँचता है।

राप्ती नदी का प्रवाह प्रदेश तराई में स्थित है। दक्षिण की ओर से आनेवाली केवल सुवावन नदी कुछ दूर तक उपरहार की उत्तरी सीमा पर बहती है। राप्ती नदी नैपाल के पहाड़ों से निकलती है।

बहरायच जिले में बहती हुई राप्ती नदी पश्चिमी सिरे बलरामपुर परगने के मथुरा गांव के पास यह गोंडा जिले में प्रवेश करती है। अतरौला की सीमा तक राप्ती बलरामपुर परगने में बहती है फिर यह दोनों परगनों के बीच में सीमा बनाती हुई मटेरिया घाट में पास बस्ती जिले को छूती है। इस स्थान से यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और सुवावन के संगम तक गोंडा जिले की सीमा बनाती है। राप्ती एक बड़ी और वेगवती नदी है। इसमें साल भर अनाज लाद कर नावें चलती हैं। बहरायच के जंगलों की लकड़ी भी राप्ती में बहाकर लाई जाती है। अधिक मोड़ होने से राप्ती में नाव चलाने में कठिनाई होती है। राप्ती के किनारे ऊँचे हैं। फिर भी यह लगातार अपना मार्ग बदलती रहती है। प्रबल वर्षा होने पर ही राप्ती अपने किनारों के ऊपर उमड़ कर बाढ़ लाती है। बाढ़ के बाद यह अत्यन्त उपजाऊ मिट्टी छोड़ देती है। राप्ती के ऊपर इस जिले में केवल एक पुल का है जो बलरामपुर और तुलसीपुर के बीच बना है। और स्थानों में राप्ती को पार करने के लिये जिसमें कई नाव के घाट हैं। राप्ती के दोनों ओर विशेष कर उत्तर में नदी ने कई पुरानी धारायें बना दी हैं। इनमें प्रत्येक धारा होकर राप्ती कुछ समय तक बहती रही है। कई धाराओं में साल भर पानी रहता है। इनमें बूढ़ी राप्ती सब से बड़ी है। यह मथुरा गांव के पास आरम्भ होती है और बस्ती जिले की सीमा तक राप्ती के समानान्तर बहती है। इसके आगे यह पूर्व दिशा में बहती है और बहुत दूर तक तुलसीपुर परगने को बस्ती जिले से अलग करती है। तुलसीपुर दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर आरा नदी के सङ्गम के पास यह गोंडा जिले को छोड़ कर बाहर हो जाती है। उत्तर की पहाड़ियों से निकल कर दक्षिण की ओर आने वाली सभी पहाड़ी नदियों का पानी बूढ़ी राप्ती रोक लेती है। इससे यह एक बड़ी नदी हो जाती है। प्रबल बाढ़ में बूढ़ी राप्ती और प्रधान राप्ती का पानी मिलकर एक हो जाता है। इससे बहुत दूर तक पड़ोस की भूमि पानी में डूब जाती है। बूढ़ी राप्ती की सहायक नदियां अनेक हैं। किसी किसी नदी के भिन्न भिन्न भागों में उसका प्रथक प्रथक नाम है। इस प्रकार कुछ नदियों के कई नाम हैं पर उन सब में समानता है। उनकी चौड़ी तली में पहाड़ से लाये हुये कंकड़ पत्थर के टुकड़े बिछे हैं।

खुश्क ऋतु में यह सहायक नदियां लुप्त हो जाती हैं अथवा उनमें बहुत कम पानी रहता है। लेकिन वर्षा ऋतु में वे उमड़ कर विकराल रूप धारण कर लेती हैं। बाढ़ के बाद पड़ोस के खेतों में प्रायः वे उजाड़ बालू छोड़ जाती हैं। तुलसीपुर के उत्तर में उनकी संख्या बहुत है। हरएक नाले का अलग नाम है। आगे बढ़ वे एक दूसरे से मिल जाती है और उनकी संख्या कम हो जाती है। कुछ अलग अलग ही बह कर बूढ़ी राप्ती में मिलती हैं। इनमें खरझर, करची, फकरहा, काठा, भंभर, बँरूआ और आरा प्रधान हैं।

राप्ती के दक्षिण में प्रधान सहायक नदी सुवावन है। यह तराई के एक दम दक्षिणी किनारे पर बहती है। यह पश्चिमी सीमा के पास निकलती है और बलरामपुर के पास होती हुई अतरौला परगने को पार करती है। बस्ती जिले की सीमा पर रसूलाबाद गांव के पास यह राप्ती में मिल जाती है। यह नदी बहुत धीरे धीरे टेढ़ी चाल से बहती है। सङ्गम के

पड़ोस में इसकी तली गहरी हो जाने से यह कुछ बड़ी नदी हो जाती है।

गोंडा जिले की शेष नदियां उपरहार और तरहार में वह कर घाघरा नदी में मिलती हैं। इनमें सब से अधिक उत्तरी नदी कुवाना है। यह वहरायच जिले में निकलती है। वहां १० मील वहने के बाद गोंडा जिले में उत्तरी-पश्चिमी कोने पर प्रवेश करती है। यहां से अतरौला तहसील तक यह गोंडा परगने की उत्तरी सीमा पर वहती है। इसके आगे यह सादुल्ला नगर को अतरौला परगने से अलग करती है। अन्त में यह वूढ़ापारा और बस्ती जिले के बीच में सीमा वनाती है। जैदा थिरार आदि कई छोटी छोटी नदियां (उपरहार में वहकर) इसमें मिलती हैं। कुवाना भी धीरे धीरे वहती है। इसके किनारों पर ढाक का जङ्गल है। पहले यहां जङ्गल वहुत अधिक था। गोंडा और बलरामपुर के बीच में इसके ऊपर रेल का पुल वना है। कुवाना के दक्षिण में विसूही नदी वहती है। यह वहरायच जिले के इकौना परगने में निकलती है। पश्चिमी सीमा के पास यह गोंडा जिले में प्रवेश करती है। पहले यह पूर्व की ओर वहती है। फिर दक्षिण की ओर मुड़कर यह अतरौला तहसील में आती है। गोंडा जिले में ७० मील वहने के वाद कुवाना में मिलने से पहले ही यह जिले के वाहर हो जाती है। पूर्वी भाग में इसकी तली गहरी हो जाती है। इसके किनारों पर भी ढाक, जामुन और महुआ के पेड़ों का वन है। जिले में प्रवेश करते समय इसकी चौड़ाई दस पन्द्रह गज है। अन्त में इसकी चौड़ाई ५० गज हो जाती है गोंडा और बलरामपुर और अतरौला और नवावगंज में वीच में इस पर पुल वने हैं।

मनवर नदी अधिक छोटी है। यह गोंडा परगने के वीच में निकलती है। मनकापुर परगने और टीकरी जंगल को पार करके यह वस्ती जिले में पहुँचती है। इसके पड़ोस में जंगल है। कहीं कहीं साधारण घास से ढकी हुई वालू है। विदिया नगर के पास यह जिले के वाहर चली जाती है। यहीं पर इसमें मन्द वाहिनी और दलदलों से घिरी हुई चमनई नदी मिलती है।

टेढ़ी नदी उपरहार के दक्षिणी किनारे के नीचे वहती है। नवाबपुर के पास इसमें बघेलताल का पानी आता है। यह जिसमें पश्चिमी सिरे पर प्रवेश करती है। अयोध्या से कुछ मील ऊपर यह घाघरा में मिल जाती है।

सरजू नदी—टेढ़ी और घाघरा के वीच में कई धारायें हैं। इनमें प्रधान सरजू है। यह वहरायच जिले में प्रधान नदी से निकलती। पक्का के पास फिर यह घाघरा में मिल जाती है। कुन्दवा और विलाई नदियां वेगमगंज के पास एक दूसरे से मिल जाती हैं। पूर्व की ओर वह कर दलेल नगर के पास वे घाघरा में गिर जाती हैं। वाढ़ के समय में यह छोटी नदियां भयानक रूप धारण कर लेती हैं और समय में भी वह प्रायः आने जाने में वाधा डालती हैं।

घाघरा नदी कई (कौरियाला, सरजू, चौका और दूसरी) नदियों के मिलने से वनती है। यह पश्चिमी सिरे पर गोंडा जिले को छूती है और दक्षिणी सीमा पर वहती है। गोंडा जिले में ५५ मील वहने के वाद अयोध्या के सामने लकड़मंडी के पास जिले के वाहर हो जाती है। इसकी तली गहरी और चौड़ी है। इसमें यह इधर उधरवहती है। वाढ़ के वाद घाघरा के किनारे अक्सर कट जाते हैं। इसी से इस जिले का क्षेत्रफल भी घट वढ़ जाता है। जहां नदी की गहरी धारा रहती है वही सीमा मानी जाती है। इसमें साल भर वड़ी वड़ी नावें चला करती हैं। वह रामघाट और नदी तट के वाजारों के वीच में इसके मार्ग से अच्छा व्यापार होता है। रेलवे के खुल जाने और (एल्गिन) पुल के वन जाने से नदी का व्यापार वहुत कम हो गया है। पटना और दूसरे स्थानों से घाघरा में अयोध्या तक स्टीमर आया करते हैं। लकड़मंडी और अयोध्या के वीच के गोंडा जिले की सीमा पर घाघरा में वर्षा समाप्त होने पर नावों का पुल वन जाया करता है।

गोंडा जिला छोटी वड़ी झीलों से भरा पड़ा है। तराई और तरहार में ये छोटी नदियों के मार्ग वदलने से वनी हैं। इनका आकार नाल के समान है। इनके किनारे ऊंचे और रेतीले हैं। जहां इस प्रकार की झीलें हैं वहां पहले नदी के मोड़ थे। जब नदी ने मार्ग वदला और मोड़ के सिरों पर

मिट्टी भर गई तभी शेष भाग में झील बन गई। उपरहार और दूसरे निचले भागों में वर्षा जल के ठीक ठीक न बह सकने के कारण भी निचले भागों में पानी इकट्ठा होता गया और झीलें बन गईं। गोंडा शहर के उत्तर में खरगपुर के चारों ओर इसी प्रकार की झीलें हैं। सोहेला ताल परगने के बीच में है। तरहार के नवाबगंज और महदेवा परगनों में कई झीलें हैं। इनमें पार्मती ताल और अरधा ताल प्रधान हैं। तराई में राप्ती के दोनों ओर घाल के प्रदेश में असंख्य ताल और दलदल हैं। तारावगंज में तहसील सब से अधिक और गोंडा तहसील में सब से कम ताल और झीलें हैं। सिंचाई के अतिरिक्त तालों में सिंघाड़े उगाये जाते हैं और मछलियों का शिकार होता है। गोंडा जिले के काफी बड़े भाग में वन है। सब से अधिक बड़ा वन तुलसीपुर परगने में कुवाना और बिसूही नदियों के किनारों पर है। यह वन मनकापुर के दक्षिण और नवाबगंज के उत्तर में है। इसमें दो रक्षित वन हैं। शेष ताल्लुकेदारों के हाथ में हैं। एक रक्षित वन की तंग पेटी पहाड़ों की तलहटी में स्थित है। दूसरा रक्षित वन टीकरी का है जो मनकापुर के दक्षिण में है। गदर के बाद १८५९ में जब यह भाग जब्त किया गया तो गांवों की भूमि तो बलरामपुर के महाराजा साहब को दे दी गई। लेकिन ऊसर और वन प्रदेश पर ब्रिटिश सरकार का अधिकार रहा। १८६६ में वन की रक्षा के लिये नियम बनाये गये और वन की सीमायें निश्चित कर दी गईं। बिना आज्ञा के कोई इस वन की लकड़ी नहीं ले सकता। १८७६ में तुलसीपुर का वन रक्षित कर दिया गया। १८९६ में चराने का अधिकार ले लिया गया। तुलसीपुर का वन पश्चिम में गन्धेला नाले के पूर्व में आरानदी तक फैला हुआ है। इसके उत्तर में नैपाल राज्य दक्षिण में बलरामपुर राज्य के गांव हैं। सीमा पर क्रमानुसार नम्बर पड़े हुये हैं। इसकी लम्बाई ३५ मील और चौड़ाई ४ मील है। इसका क्षेत्रफल १४३ वर्ग मील है। इसके बीच बीच में पथरीली तली वाले नाले हैं। गरमी में यह सूख जाते हैं। उत्तर की ओर पेड़ छोटे और मुरझाये हुये हैं। बीच वाले भाग में पेड़ लम्बे, सीधे और अच्छे हैं। दक्षिण की ओर भी पेड़ बहुत ही छोटे और झाड़ियों के रूप में हैं। यहां असैना, हल्दू, साल और धाऊ हैं। साल अधिकतर पूर्व और बीच वाले भाग में है। कुछ भागों में, शीशम, खैर (कत्था) महुआ और दूसरे पेड़ भी मिलते हैं। जंगलों से लकड़ी, ईंधन, छप्पर छाने के कांस, कागज बनाने की घास, महुआ और चमड़ा बाहर भेजा जाता है। घर बनाने के लिये साल और बैलगाड़ी बनाने के लिये हल्दू की बड़ी मांग है।

टीकरी या नवाबगंज का वन चमनई और मनवर नदियों के बीच में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १२,२१६ एकड़ है। वन प्रायः समतल भूमि पर खड़ा है। दक्षिण की ओर क्रमशः ढाल है। यह दुमट मिट्टी २ फुट गहरी है। जगह जगह पर बालू और चिकनी मिट्टी भी है। इसके तीन चौथाई भाग में साल के पेड़ हैं। असैना, धाऊ, महुआ और दूसरे पेड़ हैं। यहां से इमारती लकड़ी, ईंधन, महुआ, बैब घास (कागज बनाने के लिये) बाहर भेजी जाती है। ताल्लुकेदारों के जङ्गल में भी साल आदि इमारती लकड़ी ईंधन और घास मिलती है। जङ्गल में चीता, तेंदुआ, भालू और भेड़िया रहते हैं। यहां नील गाय और हिरण भी रहते हैं।

वन के अतिरिक्त गोंडा जिले में ३० की सदी ऊसर आदि ऐसी भूमि है, जिसमें खेती नहीं होती है। इसमें कुछ पानी से ढकी है। कुछ भूमि पर घर, सड़क और रेल है। शेष ऊसर या उजाड़ है।

गोंडा जिले की जलवायु पड़ोस के बहराइच और बस्ती जिलों के समान है। मई और जून महीनों का तापक्रम प्रायः ९० अंश रहता है। कभी यह १०५ अंश तक हो जाता है। दक्षिणी जिलों की अपेक्षा यहां शीतकाल अधिक समय तक रहता है। लेकिन यहां पाला नहीं पड़ता है। हवायें पूर्व की ओर से चला करती हैं। यहां औसत से ४६ इंच से अधिक वर्षा होती है। किसी किसी वर्ष यहां ८६ इंच तक वर्षा हुई है। अकाल के वर्ष में यहां केवल १६ इंच वर्षा हुई है।

औसत से गोंडा जिले की ६१ की सदी भूमि खेती के काम आती है। पर खेती की भूमि लगातार बढ़ती जा रही है। दलदल और जङ्गल घटते जा

रहे हैं। इस जिले की भूमि को जोतने-बोने में सुगमता रहती है। इसलिये यहां कई भागों में वर्ष में दो फसलें उगाई जाती हैं। दुफसील भूमि लगभग ४१ फी सदी है।

खरीफ की प्रधान फसल धान है। ५६ फीसदी भूमि में धान होता है। यहां धान कई प्रकार का होता है। उपरहार की अपेक्षा तराई और तरहार में धान बहुत होता है। मकई २४ फी सदी भूमि में उगाई जाती है। धान के बाद दूसरा स्थान मकई का है। कोदों, ईख, बाजरा, खरीफ की दूसरी फसलें हैं। रबी में गेहूँ मटर, जौ, मसूर की अधिकता है। कहीं कहीं तिलहन, पोस्ता भी उगाया जाता है। रबी में २७ फी सदी भूमि में गेहूँ उगाया जाता है।

गोंडा जिले के जुलाहे और कोरी इस समय भी गाढ़ा बुनते हैं। मिलों के सस्ते कपड़े के फैल जाने से इनका कारबार कम हो गया है। बीरपुर, कटरा, नवाबगंज आदि कुछ स्थानों में कपड़े पर छपाई का भी काम होता हैं। कत्थई रंग से कपड़ा रंगा भी जाता है। कत्थों के पेड़ों के कम हो जाने से रंगाई का काम भी घटता जा रहा है। कत्था बनाने का काम फरवरी के अन्त में आरम्भ होता हैं। कत्था बनाने के लिये बड़े बड़े हडे बाहर से आते हैं। कुछ बर्तन जिले खरगपुर, मछली गांव और दूसरे स्थानों से मिल जाते हैं। अतरौला में मिट्टी के बर्तन बढ़िया कामदार बनते हैं। इन पर कारीगार तरह तरह के फूल और दसरे चित्र बनाते हैं। बर्तन प्रायः हरे रङ्ग के होते हैं। इन पर चमकीले रङ्ग से चित्र बनाये जाते हैं। लुनिया लोग शीशे की चूड़ियां बनाते हैं। कुछ चूड़ियां यहीं बिक जाती हैं। कुछ फैजाबाद को भेज दी जाती हैं। कुवाना नदी के किनारे बेंत उगाते हैं। इनसे टोकरीयां बुनी जाती हैं। बहुत सी टोकरी रेल द्वारा लखनऊ और दूसरे स्थानों को भेज दी जाती हैं।

गोंडा जिला प्राचीन समय में अयोध्या के कौशल राज्य का अङ्ग था। रामचन्द्र जी के स्वर्गारोहण के समय यहां सूर्य वंशी राजा राज्य करते थे। सरयू (घाघरा) नदी इस राज्य को दो भागों में बांटती थी। उत्तरी भाग घाघरा के उत्तर में और दक्षिणी भाग घाघरा के दक्षिण में था। बौद्ध काल में यह राज्य श्रावस्ती राज्य का अङ्ग हो गया। उत्तरी सीमा पर सेहत मेहत के भग्नावशेष दूर तक फैले हुये हैं। श्रावस्ती नगर नैपाल राज्य में था। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्रावस्ती गोंडा जिले के समीप था। हर्षवर्द्धन के एक ताम्र पत्र (६३१-३२) में श्रावस्ती राज्य का उल्लेख है। महेन्द्रपाल (७६१-६२) और भवगुप्त द्वितीय (ग्यारहवीं सदी) के ताम्रपत्रों में भी श्रावस्ती राज्य का नाम आया है। बारहवीं और कुछ कुछ तेरहवीं सदी तक बौद्ध धर्म यहां बना रहा। कहते हैं चम्पकपुरी का राजा सुहेलदेव (सुहिलदल) सैयदसालार से लड़ा था। सुहेलदेव का हिन्दू राजाओं ने साथ दिया। बहरायच की लड़ाई में सैयद सालार मारा गया। राजा भी मर गया। अशोकपुर की लड़ाई में सैयद सालार का साथी अटिला पीर भी मारा गया कुछ लोगों का अनुमान है कि सुहेलदेव जैन था। सेहत मेहत के नष्ट हो जाने पर जो जैन मन्दिर बना वह इस समय भी विद्यमान है।

खरगू पुर, मछलीगांव, पारस और देवीपाटन में भी प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं मुसलमानों के आक्रमण होने से जिले में असभ्यता छा गई। अयोध्या के पड़ोस में जङ्गल हो गया। रघुवंशी राजदूत घाघरा में इस पार बहुत कम रह गये। पूरे जिले पर डोम, थारू, भार और पासियों का राज्य हो गया। कहते हैं सेहत मेहत के राजवंश के स्थान पर गोरखपुर जिले में डोमनगर के डोम लोग राज्य करने लगे। इसी जाति के राजा उग्रसेन ने डोमरियाडीह नगर बसाया। लेकिन जब उसने एक ब्राह्मण कन्या से व्याह करने का प्रयत्न किया तो सुल्तानपुर से राय जगत सिंह ने एक बड़ी सेना लेकर उग्रसेन पर चढ़ाई की और १३७६ ईस्वी में इस राज्य को नष्ट कर दिया। आगे चलकर बन्धल गोती (राजपूत जो अमेठी के राजपूतों के सम्बन्धी हैं (नवाबगंज में बस गये। वहां से वे उत्तर की ओर महदेवा और मनकापुर में फैल गये। यहां उन्होंने स्वाधीन राज्य स्थापित किया। खुरासा और जिले के दक्षिणी भागों में कलहन राजपूतों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया। मुसलमानी शासन काल में गोंडा का जिला बहरायच में शामिल कर

लिया गया। इसका अधिक उल्लेख नहीं आता है। गयासुद्दीन तुगलक गोंडा होकर बङ्गाल को गया था। आगे चलकर फीरोज भी इसी मार्ग से बङ्गाल को गया। खुरसा का राजा लखनौती तक फीरोज के साथ रहा। १५४४ में कल्हन राजा का अन्त हो गया। इसके बाद मनकापुर में बन्धल गोती प्रबल हो गये। उत्तरी भाग में अंवारा राजपूत बलवान हो गये। इन्हीं ने आगे चलकर बलरामपुर राज्य स्थापित किया। इसी समय अतरौला में पठान बस गये। इनका नेता अली खां जिसने अकबर का लगातार विरोध किया। १५७१ में वह मारा गया। उसके बेटे ने सम्राट अकबर से सन्धि कर ली। इस प्रकार अतरौला पठानों के हाथ में बना रहा। खुरासा में विसेन राजपूतों का अधिकार हो गया। अकबर के समय में गोंडा जिला तीन (गोरखपुर, बहरायच और अवध) सरकारों में बट गया। पर दिल्ली के शाही मार्ग से दूर पड़ जाने और वन से घिरा होने के कारण गोंडा जिला प्राय: स्वाधीन बना रहा। उत्तर में बलरामपुर और अतरौला की शक्ति बढ़ गई। इसी समय नैपाल के चौहान तुलसीपुर में आ बसे। कहते हैं खुरासा के जागीरदार की हैसियत से १६१८ में विसेन राजपूत मानसिंह ने अजमेर में जहांगीर को एक सुन्दर हाथी भेंट किया। जहांगरी ने प्रसन्न होकर उसे राजा की उपाधि दी। मानसिंह के मरने पर कुछ राजा साधारण हुये लेकिन १६६५ में राजा रामसिंह ने इस राज्य को बहुत बढ़ा दिया। १६६८ में उसका बेटा दत्त सिंह राजा हुआ। घाघरा के उत्तर में वह और भी अधिक शक्ति शाली हो गया। कहते हैं पहले पहल एक ब्राह्मण स्त्री को छोड़ने-वाले बहरायच के पठानों पर चढ़ाई की। इसके बाद दक्षिण की ओर टेढ़ी नदी के आगे उसने चढ़ाई की। अतरौला के पठानों ने उसका साथ दिया। उसे पूरी सफलता मिली। पूरनपुर और अटा जीत लिये। उसके राज्य की सीमा पारस-पुर नगर के दक्षिण में निश्चित की गई।

जब सादात खां को अवध का शासन मिला तब गोंडा पर एक नई आपत्ति आई। सादात खां ने इस ओर के राजाओं और जागीरदारों को दबाने के लिये बहरायच के एक पठान अलवल खां को नियत किया। अलवल खां और राजादत्त सिंह की आरम्भ से ही अनबन हो गई। राजा दत्त सिंह छोटे कद के थे। प्रथमबार मिलते समय अलवल खां को कुछ ऊपर उठा लिया। इस पर राजा ने अपने भाई को मिलाने के बदले महादेवा के विशाल काय भैरों राय को भेंट कराई। भैरों राय ने अल-वल खां को गले से लगाते समय ऊपर उठा लिया। इसके बाद गोंडा के राजा (दत्त सिंह) ने कर देना बन्द कर दिया। कर वसूल करने के लिये अलवल खां एक बड़ी सेना लेकर आया। पस्का के पास अलवल खां ने घाघरा को पार किया। यहां कल्हन राजपूतों की सहायता से अलवल खां ने पस्का का किला भी छीन लिया। जब अलवल खां गोंडा की ओर बढ़ा तब पहले तो उसने टाल टूल की क्योंकि उसके बहुत से सिपाही देवी पाटन को चले गये थे। जब पर्याप्त सेना एकत्रित हो गई तब सर्भगपुर के पास घमासान लड़ाई हुई। अलवल खां को भैरों राय ने मार डाला। नवाबी सेना हार कर भाग गई। राजादत्त सिंह ने प्रसन्न होकर भैरों राय को महादेवा की जमींदारी भेंट कर दी। दूसरी बार नवाबी सेना ने गोंडा को घेर कर इसका बुरा हाल कर दिया। इसी समय रामपुर के राजपूतों ने आकर गोंडा की रक्षा की। इसके बाद राजदत्त-सिंह ने नवाब से सन्धि कर ली। इससे राजादत्त-सिंह की शक्ति कम न हुई वरन कुछ बढ़ ही गई। उसने भिनगा में अपने भाई को राजा बनाया। मनकापुर का राज्य छीनकर उसने अपने छोटे बेटे को सौंप दिया। इसके बाद उसने वंसी के राजा को हराया। घाघरा और कुवाना नदियों के बीच में उसका सामना करने वाला कोई न रहा। दत्तसिंह के मरने पर उसका बेटा उदित सिंह राजा हुआ। वह बड़ा धार्मिक था। उसने मथुरा और दूसरे तीर्थों की कई बार यात्रा की। उसके एक लड़के ने पारसपुर की कल्हन-राज कुमारी से ब्याह किया। इससे दोनों वंशों में सन्धि हो गई राजा जैसिंह ने कर देना बन्द कर दिया और एक अंग्रेज अफसर (जिसने गोहानी में नमक और नील का कारखाना खोला था) के कार्य में हस्तक्षेप

किया। टेढ़ी नदी के किनारे लड़ाई हुई। राजा जैसिंह हारा और पहाड़ियों में भाग गया। वहां वह मर गया। उसके भाई का पौत्र पहलवान सिंह का पौत्र गुमान सिंह राजा हुआ। लेकिन बहरायच के मन्त्री टिकैतराय के भाई निर्मलदास ने गोंडा पर अधिकार कर लिया। १७७३ में गोंडा की जागीर अवध के नवाब आसफुद्दौला की माता बहू बेगम को मिली। १७६६ तक उसका एक हिंजड़ा दराब अली खां इसका प्रबन्ध करता रहा। १८०१ की सन्धि के अनुसार अवध के नवाब ने कुछ जिले अंग्रेजी कम्पिनी को दे दिये। इन्हीं में गोंडा जिले के कई परगने शामिल थे। बहरायच के महाराज निर्मल दास बहू बेगम की जागीर का प्रबन्ध करने लगा। यहां कई नाजिम हुये अन्तिम नाजिम राय सघन लाल १८५३ से अवध के अंग्रेजी राज्य में शामिल होने के समय तक प्रबन्ध करता रहा। निमलदास ने गुमान सिंह को कैद करके लखनऊ भेज दिया लेकिन सतनामी सम्प्रदाय के संस्थापक कोटवा (बाराबंकी) के महन्त नजजीवन दास के प्रयत्न से राजागुमान सिंह मुक्त कर दिया गया। गुमान सिंह गोंडा को लौट आया वहां उसे ३२ गांव मिले। १८३६ में वह निस्सन्तान मर गया। राजा का छोटा भाई देवीबख्श सिंह गद्दी पर बैठा। वह बड़ा योग्य था। उसने शीघ्र ही अपना राज्य बढ़ा लिया। लेकिन वह अंग्रेजों का शत्रु था। इससे उसके राज्य का अन्त हो गया। १८५६ में अवध अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। गोंडा एक प्रथक जिला बनाया गया।

गदर में सिपाहियों ने सिकारा के खजाने और स्टेशन को लूट लिया। फिर वे गोंडा की ओर बढ़े। अंग्रेज अफसर बलरामपुर को चले गये। गोंडा का राजा देवीबख्श सिंह विद्रोह में अग्रसर था। बेगम के १००० सिपाहियों ने उसका साथ दिया। बलरामपुर का राजा अन्त तक अंग्रेजों का भक्त रहा। नैपाल के महाराजा सरजंग बहादुर ने १८५७ की १ अगस्त को गोरखपुर पर अधिकार कर लिया। कुछ समय तक गुरखों और अंग्रेजी फौज इधर न आ सकी। लेकिन अन्त में विद्रोही हार गये। इधर कानपुर के नाना साहब का भाई बालाराव तुलसीपुर के किले आ गया था। इसलिये जंगल की लड़ाई कुछ समय तक चलती रही। अंग्रेजी कम्पिनी की ओर से क्षमा घोषित की गई थी। इधर बालाराव ने प्रत्येक भागने वाले को प्राणदंड की धमकी दी। अन्त में बालाराव की सेना छिन्न भिन्न हो गई। सर्वा दर्रे के पास नाना और बालाराव ने अन्तिम मोरचा लिया घमासान लडाई में बहुत से विद्रोही मारे गये। शेष नैपाल की पहाड़ियों में भाग गये। कहते हैं वहां नैपालियों ने बहुत कम विद्रोहियों को जीवित छोड़ा। तुलसीपुर की रानी और गोंडा के राजा ने अन्त तक आत्म समर्पण नहीं किया। उनके राज्य जब्त कर लिये गये और बलरामपुर के राजभक्त राजा को भेंट कर दिये गये। कुछ समय तक गोंडा में सेना रक्खी गई। १८६४ में गोंडा की छावनी तोड़ दी गई। गदर के बाद जिले में कोई विशेष घटना नहीं हुई।

अशोकपुर—गोंडा से फैजाबाद को जाने वाली सड़क के पूर्व में बजीरगंज से ३ मील उत्तर की ओर है। इस छोटे गांव में एक प्राइमरी स्कूल है। पहले यहां अशोकनाथ महादेव का प्राचीन मन्दिर था। इसके स्थान पर सैयद सालार में भतीजे हरिला पीर का मकबरा बन गया। कहते हैं वह यह मन्दिर के आक्रमण में मारा गया था। पहले अशोकपुर डोमरियाडीह तक फैला हुआ था। यहां तक इसके प्राचीन भग्नावशेष फैले हुये हैं। जेठ के महीने में यहां पीर का मेला लगता है।

बलरामपुर इसी नाम के राज्य का प्रधान नगर है। यह सुवावां नदी के बायें किनारे पर स्थित है और राप्ती से २ मील दक्षिण की ओर है। यहां से गोंडा को पक्की सड़क और रेल गई है। स्टेशन दो मील दूर है और सुवावां के दक्षिण में है। यहां कच्ची सड़कें इकौना, श्रीनगर, अतरौला, तुलसीपुर और चधरीडीह को गई हैं नगर उत्तर की ओर कुछ ऊँचा है। इसका ढाल दक्षिण में सुवावां नदी की ओर है। इस ओर दलदल बन गये हैं। वर्षा ऋतु में इस नदी और राप्ती की बाढ़ से दूर तक पानी फैल जाता है। केवल ऊँचे भाग शेष बचते हैं। बलरामपुर जिले भर में सबसे बड़ा नगर है महाराजा सर दृगविजय सिंह ने इसे बहुत सुन्दर बना दिया था। बलरामपुर अधिक पुराना नहीं है क्योंकि

पहले यहां के राजा धुसही में रहते थे जो बलरामपुर से मिला हुआ पश्चिम की ओर है। बाजार में पुराने बाजार की तङ्ग सड़कें चौड़ी कर दी गई हैं। सड़कों के दोनों ओर दुकानों की पंक्तियां हैं। बाजार प्रतिदिन लगता है। चावल की बिक्री बहुत है। स्टेशन के पास एक नया बाजार बनाया गया है। पहले यहां नैपाल का सामान बहुत बिकता था। फिर नैपाल के राजा ने यह प्रयत्न किया कि नैपाल का सामान राज्य के भीतर ही बिके। बलरामपुर में गद्दा, कम्बल, नमदा (फेल्ट) और चाकू बनते हैं। कुवाना नदी के किनारे बेंत बहुत उगते हैं। इससे यहां टोकरियां बनाई जाती है। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल हाई और जूनियर हाई स्कूल है। यहां राजा का महल और मोती गिरि गुसाईं का सुन्दर भवन है। यहां से डेढ़ मील की दूरी पर विजलेश्वरी देवी का मन्दिर एविजलीपुर गांव में बना हैं। यहां आषाढ़ की पूर्णिमा को मेला लगता है।

बेगमगंज गोंडा से १५ मील दक्षिण की ओर है। गांव के पश्चिम में कुन्दवा नदी बहती है। यहीं पर इसमें बिलाई नदी मिलती है। नदी के किनारे पर बेगमगंज का बाजार उस समय बनाया गया जब गोंडा बहू बेगम की जागीर में शामिल था। यहां महाराजा अयोध्या की जमीदारी है। बेगमगंज में सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। १८७६ तक यहां तहसील रही। इसके बाद घाघरा के कटाव से तहसील यहां से उठकर तराबगंज में चली गई।

कर्नल गंज गोंडा से बलरामपुर को जाने वाली सड़क पर गोंडा से १५ मील पश्चिम की ओर है। यहां से दक्षिण-पूर्व में तराबगंज और नवाबगंज को उत्तर-पूर्व में कटरा और बलरामपुर को और उत्तर-पश्चिम में बहरायच को सड़क गई है। नगर के पास ही नार्थवेस्टर्न रेलवे पक्की सड़क की समानान्तर चलती है। पहले इसे सकरौरा कहते थे। १७८० में अवध के नवाब वजीर ने यहां के जागीर दारों को दबाने के लिये एक बड़ी सेना भेजी। ८ वर्ष तक यहां सेना का पड़ाव रहा। १८०२ में कर्नल फुकस के आधिपत्य में एक दूसरी सेना भेजी गई। पड़ोस में एक बाजार लगने लगा। कर्नल की स्मृति में बाजार का नाम कर्नल-गंज पड़ गया। जब अवध अंग्रेजी राज्य में मिलाया गया। तब तक यहां छावनी बनी रही। गदर में यहां के सिपाही विद्रोही हो गये। अंग्रेज अफसर बड़ी कठिनाई से अपनी जान बचा कर बलरामपुर को भाग निकले। गदर के बाद छावनी तोड़ दी गई। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल, जूनियर हाई स्कूल और बाजार है। बजार प्रतिदिन लगता है। यहां कुछ ठठेरे पीतल के बर्तन बनाते हैं।

देवी पाटन तुलसीपुर से कुछ दूर पश्चिम की ओर चौधरी डीह को जाने वाली सड़क पर स्थित है। गांव छोटा है पर यह स्थान बहुत पुराना है। कहते हैं महाभारत के समय में राजा कर्ण ने इसे बसाया था। यहां देवी का एक पुराना मन्दिर है। कुछ लोग कहते हैं कि देवी का नया मन्दिर विक्रमादित्य या चन्द्रगुप्त द्वितीय ने बनवाया था। उसी ने अयोध्या के पुराने मन्दिर का जीर्णोद्धार किया था। एक तीसरा मन्दिर गोरखनाथ के उत्तराधिकारी रत्ननाथ ने चौदहवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में बनवाया था। रत्न नाथ के बाद देवीपाटन में कनफटा योगियों के २० से ऊपर महन्त हुये। कान फटा और बाली पहनने के कारण इन्हें कनफटा योगी कहते हैं। औरङ्गजेब के समय तक यहां गोरखपुर, नैपाल और दूसरे स्थानों से यात्री आते थे। यह मन्दिर लाला पत्थर का बना था। औरङ्गजेब के अफसरों ने पुजारियों को मार डाला, मूर्तियां तोड़ दी और मन्दिर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। कहते हैं इसका बदला दो राजपूतों ने लिया। उन्होंने अपराधी मुसलमान को मार डाला और सुरवीर टीले पर गाड़ दिया जहां सुअरों की भेंट चढ़ाई जाती है। एक चौथा मन्दिर तुलसीपुर चौहानों का बनवाया हुआ है। इसके एक पत्थर पर नागरी में गोरखनाथ का नाम खुदा है। मन्दिर पुराने खंडहारों के बीच में खड़ा है। इसके पास ही एक पुराना तालाब और कुआं है। चैत के महीने में प्रतिपदा से नवमी तक यहां एक बड़ा मेला लगता है। यहां दूर दूर से यात्री और व्यापारी आते हैं। यहां भैंसे, बकरे और सुअर

चढ़ाये जाते हैं। प्रति बलि पर पुजारी को अलग दक्षिणा दी जाती है। यहां तथानों या नैपाली टट्टूओं का बड़ा व्यापार होता है। यहां कपड़ा, बर्तन, मसाले और पहाड़ी वस्तुयें बहुत बिकती हैं। टट्टू बेचने वाला एक रुपया और मोल लेने वाला प्रति रुपये पर एक आना कर के रूप में बलरामपुर राज्य को देता है।

देहरस (गांव) कर्नलगंज से तराबगंज को जानेवाली सड़क पर तराबगंज (तहसील) से ८ मील पश्चिम की ओर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। पड़ोस में पान बहुत उगाये जाते हैं।

धानेपुर गोंडा से अतरौला को जानेवाली पक्की सड़क पर गोंडा से १४ मील दूर है। यह पांडे ताल्लुकेदार की रामनगर जागीर का केन्द्र स्थान है। उसके पूर्वजों के बनवाये हुये किले के खंडहर सड़क से पश्चिम की ओर हैं। यहाँ डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बाजार प्रतिदिन लगता है। यहां गाय बैल बहुत बिकते हैं।

दिगसिर घाघरा से ४ मील उत्तर की ओर और बेगमगंज से २ मील पूर्व की ओर गोंडा को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। नवाबी समय में यह एक चकलेदार के केन्द्र स्थान था। गदर के बाद गांव अयोध्या यह महाराज को दिया गया। कहते हैं यहां दुगेश्वर महादेव का एक प्राचीन मन्दिर था। इसी से बिगड़कर गांव का यह नाम पड़ा। गैसांडी गांव तुलसीपुर से ढस्का बाजार को जानेवाली रेलवे पर दोनों स्थानों के प्रायः मध्य में स्थित है। स्टेशन से एक शाखा-लाइन बन को गई है। यहां से चावल और जंगल का माल बाहर बहुत जाता है। यह गांव बलरामपुर महाराज के अधिकार में है।

गोंडा शहर इस जिले का केन्द्र स्थान है। यह फैजाबाद से २८ मील उत्तर पश्चिम की ओर है। हिमालय की बाहरी श्रेणियां यहां से केवल ५० मील दूर रह जाती हैं। वर्षा ऋतु में और निर्मल आकाश होने पर पहाड़ियां यहां से दिखाई देती हैं। अंग्रेजी राज्य में मिलाने के समय यहां की जन-संख्या अधिक थी और बाजार भी अच्छा था। इन्हीं दो कारणों और मार्गों की सुविधा से यह जिले का केन्द्र स्थान बनाया गया। बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का स्टेशन यहां से डेढ़ मील उत्तर की ओर है। शहर से पश्चिम की ओर सिविल लाइन में गोंडा कचेहरी का दूसरा स्टेशन है। गोंडा स्टेशन से एक रेलवे लाइन उत्तर पश्चिम की ओर बहरायच को और दूसरी उत्तर की ओर बलरामपुर को गई है। पक्की सड़कें गोंडा से बलरामपुर, अतरौला, फैजाबाद, बहरायच कर्नलगंज और तराबगंज को गई हैं। यह सब सड़कें शहर के बीच में चौक में मिलती हैं। चौक के चारों ओर गोंडा शहर के मुहल्ले बसे हुये हैं। कहते हैं जहां इस समय गोंडा शहर है वहां पहले जङ्गल था। खुरासा के कल्हन राजाओं के समय में राजा के अहीर यहाँ सोते थे। यहीं उनके गाय बैलों के ठहरने का स्थान या गोंथा था। इसी से इस शहर का नाम गोंडा पड़ गया। राजा मान सिंह ने यहां शहर बसाया उसी ने यहां अपना महल बनवाया और गहरी खाई खुदवाकर कच्ची दीवार से किले बन्दी की। आगे चलकर कुछ लोगों ने खाई से मिट्टी लेकर अपने घर बनाये इस से यहां ताल बन गये। यह गहरे तालाब कभी ऊपर तक पानी से भरने नहीं पाते हैं। पुराना शहर उत्तर नागी गढ़ी, दक्षिण में चौक के पास वाले पुराने कुये, पूर्व में लम्बे तालाब के बीच में बसा था। राजादत्त सिंह के समय में बहुत से राजपूत कटेहरिया और बैसटोला मुहल्लों में बस गये। बैस टोला चारदीवारी के बाहर बसाया गया। राजा दत्तसिंह ने यहां महल बनवाया जो शहर के उत्तर-पूर्व में टूटी फूटी दशा में इस समय भी शेष है। इसमें उसने वंशी के राज महल से लाकर चौकठ लगवाई थी। उसके पौत्र राज शिव प्रसादसिंह ने (जो बड़ा धार्मिक था।) यहां सागर (बड़ा ताल) बनवाया। ताल के बीच में उसने एक मन्दिर बनवाया। यहां और भी कई मन्दिर हैं। शहर के बाहर सिविल लाइन की ओर हाई स्कूल, कचेहरी और अस्पताल है। १८६४ तक यहां छावनी थी। इसका एक भाग पोड मुहल्ला कहलाता। कचेहरी के दक्षिण में टेढ़ी नदी के पास जेल है। प्रधान सड़क के उत्तर में पुलिस लाइन सरकारी बगीचा और बंगले हैं। यहां के एक

कमिश्नर की स्मृति में बाजार पोर्मसगंज कहलाता है। गोंडा में पशुओं की बिक्री का बाजार है। हाई स्कूल के अतिरिक्त गोंडे में एक पाठशाला एक जूनियर हाई स्कूल और कई प्राइमरी स्कूल हैं। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और फौजी पड़ाव है।

इटाई रामपुर कुवाना नदी के उत्तरी किनारे पर बस्ती ज़िले की सीमा के पास स्थित है। यह उतरौला (तहसील) से नौ मील दक्षिण में है। यहां प्राइमरी स्कूल, डाकखाना और बाजार है। यह गेहूँ और दूसरे अनाज के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। कहते हैं यहां के मालिक (जमींदार) अरब से आये थे।

इटिया थोक इसुई नदी से आध मील उत्तर की ओर गोंडा से बलरामपुर को जाने वाली सड़क गोंडा से १३ मील उत्तर की ओर है। एक पक्की सड़क उत्तर-पश्चिम में खरगपुर को गई है। रेलवे लाइन सड़क के समानन्तर चलती है। स्टेशन गांव के पास ही है। यहां थाना, डकखाना, और स्कूल बाजार है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अनाज और बेंत (जो पास में बहुत उगते हैं) का व्यापार अधिक होता है। जानकी नगर गोंडा से बलरामपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहां कनलगंज और कंरिया स्टेशन से आने वाली सड़क मिलती है। यहां एक स्कूल है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अनाज की बिक्री अधिक होती है। फागुन के महीने में दुःख हरन नाथ महादेव के मन्दिर के पास मेला लगता है।

कटरा कस्बा कर्नलगंज से महाराजगंज को जाने वाली सड़क पर कर्नलगंज से ६ मील दूर है। यहां से एक सड़क बलपुर को जाती है जो गोंडा से बहरामघाट को जानेवाली सड़क पर स्थित है। कस्बा प्रधान सड़क और टेढ़ी नदी के बीच में बसा है। २ मील उत्तर पूर्व की ओर टेढ़ी नदी को पार करने के लिये घाट है। कटरा वास्तव में वीरपुर गांव का बाजार है। गांव की अधिकांश भूमि पर अयोध्या के महाराज का अधिकार है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बाजार में अनाज और कपड़ा बहुत बिकता है।

खरगापुर कौरिया स्टेशन को जाने वाली सड़क के पूर्व में स्थित है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। यहां मिट्टी और पीतल के बर्तन अच्छे बनते हैं। बाजार प्रतिदिन लगता है। यह अयोध्या-महाराज का गांव है। यहां अयोध्या के राजा सर मानसिंह ने उस स्थान पर एक सुन्दर महल बनवाया जहां एक प्राचीन लिंग पड़ा था। लिङ्ग के साथ ही एक सुन्दर अर्घ बना था। इसके पड़ोस में कई पुराने खेरे हैं।

खुरसा गांव गोंडा से फैजाबाद को जाने वाली पक्की सड़क गोंडा से ५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह गांव अयोध्या-महराज का है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। बाजार प्रति दिन लगता है। यहां गोंडा के राजाओं की राजधानी थी बाढ़ में समूचा नगर और उसके निवासी तथा राजा अचल नरायन सिंह डूब कर नष्ट हो गये। इसके नष्ट होने से कल्हन राजवंश का अन्त हो गया था। जो परगने पर बिसेन राजपूतों का अधिकार हो गया था। विद्रोह के अन्त में १८५८ में गोंडा ताल्लुक जब्त कर लिया गया।

मछली गांव अन्वरी थाने से २ मील पूर्व की ओर मनकापुर से सादुल्ला नगर को जानेवाली सड़क पर स्थित है। इसे प्रायः मछली गांव नन गी कहते हैं। यहां पीतल और फूल के बर्तन अच्छे बनते हैं। इनके अतिरिक्त यहां अनाज, कपड़ा और तम्बाकू का व्यापार होता है। इसके पड़ोस के खेड़े पर एक प्राचीन मन्दिर बना था। गदर में इसका लिङ्ग एक गुसाईं के पास मिला। खोदने पर एक पुराने कुएं और कई मूर्तियों का भी पता लगा। करोड़न नाथ महादेव का मन्दिर फिर से बना दिया गया। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। गदर के समय में यहां युद्ध हुआ था।

महाराजगंज बलरामपुर से ६ मील उत्तर की ओर कावापुर रेलवे स्टेशन से ४ मील दूर है। यहां से तुलसीपुर डस्का बाजार को लाइन गई है। यहां डकखाना, प्राइमरी स्कूल और बाजार है। बाजार प्रतिदिन लगता है। यहां तराई का धान बहुत आता है और रेल मार्ग से बाहर भेज दिया जाता है। इसे पहले हरिहरपुर कहते थे। बाजार बन जाने पर इसका नाम बदल कर महाराजगंज रख दिया गया। यह बलरामपुर महाराज का गांव है।

मिली। कुछ मिट्टी की मुहरें और दूसरे गढ़े हुये टुकड़े मिले।

तराबगंज इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान गोंडा से १५ मील दूर है। यहां कर्नलगंज से तराबगंज को जाने वाली सड़क गोंडा से बेगमगंज को जाने वाली सड़क से मिलती है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और बाजार है। १८७६ तक तहसील बेगमगंज में थी। उस वर्ष घाघरा की बाढ़ से वहां बड़ी हानि हुई। इसलिये टेढ़ी नदी के ऊंचे कुछ रेतीले और केन्द्रवती स्थान पर तहसील बनाई गई।

तुलसीपुर उतरौला के उत्तर और बलरामपुर के उत्तर-पूर्व में समान (१५ मील) दूरी पर नकटी नाला और बूढ़ी राप्ती के सङ्गम के पास स्थित है। यहां बलरामपुर को जाने वाली रेलवे का भी स्टेशन है। स्टेशन नगर के दक्षिण-पश्चिम में देवी पाटन के पास है। जहां प्रसिद्ध मेला लगता है। १ मील दक्षिण की ओर तुलसीपुर के राजाओं के किले के खंडहर हैं। कहते हैं इस गांव को २५० वर्ष पहले तुलसीदास नामी एक कुरमी ने बसाया था। फिर यहां डांग के पहाड़ी चौहान राजाओं का अधिकार हो गया। गदर के बाद चौहानों की जायदाद जब्त कर ली गई और बलरामपुर के राजा को भेंट कर दी गई। वही इस समय भी यहां के जमींदार हैं। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और स्कूल है। यहां से बाहर चावल बहुत भेजा जाता है। कपड़े, बर्तन आदि का व्यापार भी फेरी लगाने वाले नैपाली व्यापारी बहुत करते हैं। उतरौला राप्ती और सुवावां नदियों के बीच में सुवावां नदी से डेढ़ मील, बलरामपुर से २० मील दक्षिण पूर्व की ओर और गोंडा से ३२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां होकर बलरामपुर से (राप्तीपार) बिस्कोहर को सड़क जाती है। इसमें पश्चिम की ओर गोंडा से और दक्षिण की ओर मनकापुर और नवाबगंज से आने वाली पक्की सड़क मिलती है। उत्तर की ओर तुलसीपुर को सड़क गई है। कहते हैं उत्तर की ओर स्थित होने से इसका नाम उतरौला पड़ गया। कहते हैं हुमायूं के समय में उत्तर कुंअर नामी एक राजपूत ने इसे बसाया था। और पड़ोस में कई किले बनवाये। १५८२ में अली खां नामी पठान का यहां अधिकार हो गया। उसने यहां एक बड़ा ताल बनवाया। १८३० तक यहां पठान राजा का अधिकार रहा। १८३० में बलरामपुर के राजा ने उतरौला पर चढ़ाई की नगर को जला डाला और पठान राजा के कुरान को ले गया। इसके बाद पठान फिर यहां बसे लेकिन उतरौला का राजनैतिक महत्व जाता रहा। इसका व्यापार फिर भी कुछ बना रहा। पूर्व की ओर दुःखहरन नाथ महादेव के मन्दिर के पास बलरामपुर के गुसाईं का बनवाया हुआ ताल है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल हैं। पहले यहीं तराई का चावल इकट्ठा होता था। बलरामपुर तक रेल खुल जाने से यह व्यापार घट गया।

वजीरगंज फैजाबाद और नवाबगंज से गोंडा को जाने वाली सड़क पर गोंडा से १६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से दक्षिण पश्चिम में घाघरा के ढेमुआघाट को सड़क जाती है। पूर्व की ओर टीकरी रेलवे स्टेशन को सड़क जाती है। इसके पास ही महादेवा गांव है। कहते हैं अवध के नवाब आसफुद्दौला ने यह जमशेद बाग बनवाया। इसी से इस का नाम पड़ा। यहां थाना डाकखाना स्कूल पड़ाव और बाजार है।

बहरायच

बहरायच का जिला अवध की फैजाबाद कमिश्नरी का अङ्ग है। यह घाघरा के पार वाला जिला है। ८० मील तक इसकी उत्तरी सीमा नैपाल से बनी हुई है। यह २७°४ और २८°२४ उत्तरी अक्षांशों और ८१°३ और ८२°१३ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। बहरायच एक त्रिभुजाकार जिला है। इसका शीर्ष, उत्तर की ओर है। इसकी एक भुजा दक्षिण की ओर है। एक भुजा उत्तर-पूर्व और दूसरी भुजा दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई ६४ मील और चौड़ाई ६२ मील है। इसका क्षेत्रफल २६२७ वर्गमील है। बहरायच के उत्तर और उत्तर-पूर्व में नैपाल राज्य है। यह सीमा कृत्रिम है। सीमा के पास खाईं और नियत दूरी पर पत्थर के खम्भों की पंक्ति बना दी गई है। इनके दोनों ओर काफी चौड़ाई में जङ्गल साफ कर दिया गया है। तुलसीपुर परगने में खम्भों की पंक्ति हिमालय की बाहरी निचली पहाड़ियों की तलहटी के पास है। शेष भाग में यह सीमा कछारी जङ्गल में होकर जाती है। नानपारा और धर्मपुर की सीमा के पास मूर्तिहा से चितलहुआ तक सरयू नदी सीमा बनाती है। सरजू की गहरी धारा की सीमा मानी जाती है। दूसरे भागों में सीमा के दोनों ओर ३० फुट चौड़ी तटस्थ पेटी छोड़ दी गई है। अवध को अँग्रेजी राज्य में मिलाने के समय यह सीमा हिमालय के पास थी। लेकिन नैपाल राज्य ने गदर में अँग्रेजों की सहायता की उसके उपलक्ष में सारदा नदी और गोरखपुर जिलों के बीच का यह सारा निचला प्रदेश नैपाल राज्य को लौटा दिया गया जो सिगौली की संधि से १८१५ में नैपाल से ले लिया था। १८७५ में बबौरा ताल से आरा नदी तक निचली पहाड़ियां नैपाल को दे दी गईं। पुरानी सीमा इनकी चोटियों से बनती थी। नई सीमा इन पहाड़ियों की तलहटी से मानी जाने लगी। बहरायच के पश्चिम में कौरियाला नदी सीमा बनाती है। पहरवार (जो चौका नदी का अधिकांश जल अपने साथ लाती है) के संगम के बाद निचले मार्ग में यह घाघरा कहलाती है। नैपाल से पहरवार तक कौरियाला नदी खीरी और बहरायच के बीच में सीमा बनाती है। खीरी के दक्षिण में दक्षिणी सिरे तक सीतापुर का जिला बहरायच की पश्चिमी सीमा बनाता है। दक्षिण में बाराबंकी का जिला है। दक्षिण-पूर्व में गोंडा जिला है। १८६५ में सीमा को सीधा और ठीक रखने के लिये इस जिले के कुछ भाग गोंडा में मिला दिये गये। गोंडा जिले का तुलसीपुर परगना बहरायच में मिला दिया गया। बहरायच का भिटौली परगना बाराबंकी जिले में मिला दिया गया। यह परगना घाघरा के दक्षिण में स्थित है। बाराबंकी से इसका प्रबन्ध करना अधिक सुगम था।

बहरायच जिले में तीन प्राकृतिक विभाग हैं। उत्तर-पूर्व में राप्ती नदी का प्रवाह-प्रदेश है। पश्चिम में कौरियाला, और घाघरा का प्रवाह-प्रदेश है। दोनों के बीच में एक लम्बा तंग और कुछ ऊँचा मैदान है। यह दोनों ओर की निचली भूमि से औसत से ४० फुट ऊँचा है। और दोनों ओर की नदियों के बीच में जलविभाजक बनाता है। इस मैदान की चौड़ाई बारह-तेरह मील है। इसमें चरदा परगने का पश्चिमी आधा भाग, नानपारा का पूर्वी भाग और इकौना का दक्षिणी आधा भाग और समूचा बहरायच परगना शामिल है। राप्ती के प्रवाह-प्रदेश में चरदा का शेष आधा भाग, इकौना का उत्तरी भाग और भिनगा और तुलसीपुर के समूचे परगने शामिल हैं। घाघरा प्रदेश में उत्तरी सिरे पर धरमनपुर परगने का निचला वन प्रदेश, नानपारा का पश्चिमी भाग और फखरपुर और हिसामपुर के समूचे परगने शामिल हैं।

इनके अतिरिक्त यहां तराई का प्रदेश है। तराई का प्रदेश तुलसीपुर और भिनगा प्रदेश में स्थित है। नैपाल की सीमा के पास नानपारा के कुछ जिले भी तराई में शामिल हैं। तराई का प्रदेश बहुत नीचा है। वर्षा ऋतु में यह प्रायः सब का सब पानी में डूब जाता है। यहां चिकनी मिट्टी है। केवल कहीं कहीं दुमट हैं। तराई के इस भाग में धान बहुत होता है। धान को सींचने के लिये यहां

वर्षा प्रायः पर्याप्त हो जाती है। केवल कहीं कहीं छोटी छोटी पहाड़ी नदियां हैं जो ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती हैं।

मध्यवर्ती ऊंचा मैदान प्रायः समतल है। इसमें कहीं कहीं जङ्गल है। निचले भाग में चिकनी मिट्टी में धान की फसल अच्छी होती है। कहा जाता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक यहां सब कहीं जङ्गल था। अधिकतर भाग में हलकी दुमट मिट्टी है।

राप्ती की घाटी इस ऊँचे मैदान के उत्तर में स्थित है। यह घाटी ऊँचे किनारे के पास बहने वाली भकला या सिंधिया नदी से तराई तक चली गई है। इस प्रदेश में एक दो बड़ी झीलें और कुछ दलदल हैं। एक दो पानी के सोते हैं जहां पहले नदी का पुराना मार्ग था। यहां अधिकतर कछारी दुमट मिट्टी है। कुछ रेतीले स्थानों को छोड़कर इस प्रदेश की भूमि बड़ी उपजाऊ है। राप्ती नदी अपनी बाढ़ के साथ उपजाऊ कांप (मिट्टी) लाती हैं। जब राप्ती अपना मार्ग बदलती है तभी इससे हानि होती है। घाघरा की घाटी पश्चिमी ऊँचे किनारे से नदी की गहरी धारा तक फैली हुई है। उत्तर में इसकी चौड़ाई १० मील है। दक्षिण की ओर इसकी चौड़ाई २५ मील हो गई है। कहते हैं किसी समय घाघरा नदी के ऊँचे किनारे के पास बहती थी। इसके पश्चात् पश्चिम की ओर लगातार हटकर वर्तमान मार्ग में पहुँच गई। यह मैदान सब ओर छोटी छोटी असंख्य धाराओं से कटा फटा है। टेढ़ी होने पर भी यह धारायें वर्षा समाप्त होने पर सूख जाती हैं। पुराने मार्गों के रुँध (भर) जाने से यहां कई झीलें बन गई हैं। यहां की मिट्टी राप्ती घाटी के समान उपजाऊ है। लेकिन बाढ़ के बाद घाघरा अपने मार्ग में बालू छोड़ जाती है। जिले में भूड़ या बलुई भूमि अधिक नहीं है। लेकिन जो भूड़ इस जिले में पाई जाती है वह प्रायः घाघरा के समीप ही फैली हुई है। कौरियाला नदी शीशा पानी के पास भरथपुर से २४ मील उत्तर को ओर नैपाल के पहाड़ों से निकलती है। पहाड़ के आगे गहरी निर्मल और शान्त धारा में बहती है। पहाड़ी मार्ग में यह बड़े वेग से बहती है। यह अपने साथ बहुत से छोटे छोटे पत्थर बहा लाती है। नैपाल के भाबर और तराई के १८ मील में इसका मार्ग साल के जंगलों से घिरा है। इसकी तली पथरीली है। उत्तरी-पश्चिमी सिरे पर यह बहरायच जिले में प्रवेश करती है। यहां मोहन नदी इसमें मिलती है। चार मील आगे भरथापुर के नीचे गिरवा नदी इसमें मिलती है। इस संगम के आगे घाघरा की तली रेतीली हो जाती है। शिताबा घाट के ऊपर इसमें दाहिने किनारे पर खीरी सरजू मिलती है। अधिक आगे कटई घाट के पास दहवर नदी इसमें मिलती है। इसी में सारदा या चौका का पानी मिलता है। इसके पास ही सरजू नदी मिलती है। कटई घाट के नीचे इसे घाघरा नाम से पुकारते हैं। फखरपुर और हिसामपुर परगनों को पार करने के बाद धुर दक्षिणी सिरे पर घाघरा जिले के बाहर चली जाती है। गिरवा नदी नैपाल से निकलती है और हिमालय की बाहरी पर्वत श्रेणियों के पास कौरियाला में मिल जाती है। शीशापानी के पास यह एक नद कन्दरा बनाती है। उत्तरी-पूर्वी सिरे पर बाजपुरगांव के पास यह बहरायच जिले में प्रवेश करती है। इसमें कौरियाला से कम पानी नहीं रहता है। शीतकाल में यह बड़ी तेज बहती है। इसका मार्ग जिले के जंगली भाग में पड़ता है। बाजपुर, भरथापुर, दमदमा, कटेस इसके पड़ोस के गांव हैं।

सरजू या बबई नदी सालारपुर गांव के पास जिले में प्रवेश करती है। कुछ मील तक यह नैपाल की सीमा बनाती है। इसके आगे फिर जिले के भीतर घुसकर धरमनपुर और नानपारा परगनों के बीच में सीमा बनाती है। यह प्रायः दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। लेकिन इसका मार्ग बहुत टेढ़ा है। नानपारा के पास शाह सजन के मकबरे तक यह ऊँचे मैदान के किनारे को छूती हुई बहती है। इसके आगे यह दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ती है। पुरानी सरजू ऊँचे किनारे के पास बहती है। फिर यह घाघरा के निचले प्रदेश को पार करके गोंडा जिले में पस्का के पास घाघरा में मिल जाती है। नई सरजू की धारा बड़ी तेज है। मुलायम मिट्टी को काट कर यह अपना मार्ग प्रायः बदलती रहती है। लेकिन बाढ़ के बाद यह बड़ी

उपजाऊ मिट्टी छोड़ देती है। पुरानी सरजू की धारा बड़ी मन्द है।

टेढ़ी नदी बहरायच शहर से तीन मील की दूरी पर चित्तौर ताल के पास निकलती है और मैदान के ऊँचे किनारे से पास दक्षिण की ओर बहती है। कुछ दूर तक यह हिसामपुर परगने और गोंडा के बीच में सीमा बनाती है। इसके आगे पूर्व की ओर मुड़कर यह गोंडा जिले में प्रवेश करती है। यह मन्दवाहिनी छोटी नदी नाव चलाने योग्य नहीं है। इसकी धारा में अक्सर सिवार भरी रहती है। यह एक बड़ी नाली के समान मालूम होती है।

राप्ती नदी मध्यवर्ती मैदान के उत्तरी किनारे पर बहती है। नैपाल से आकर गुलरिहा गांव के पास राप्ती बहरायच जिले में प्रवेश करती है। इस जिले में राप्ती का मार्ग ८१ मील लम्बा है। यदि राप्ती सीधी रेखा में बहती तो इसकी लम्बाई इस जिले में ४० मील से अधिक न होती। लेकिन यह बड़ी टेढ़ी चाल से बहती है। थोड़ी थोड़ी दूर पर इसमें मोड़ हैं। बहरायच जिले में प्रवेश करने के बाद यह फिर नैपाल की सीमा की ओर मुड़ जाती है और भगरा गांव को अलग कर देती है। वहां (ककरदारी) से यह दक्षिण की ओर बहती है और कुछ मील तक भिनगा चरदा परगनों के बीच में सीमा बनाती है। नवादा भोजपुर के नीचे यह भिनगा परगने में प्रवेश करती है। लगातार मोड़ बनाती हुई यह भिनगा कस्बे के पास बहकर दक्षिण-पूर्व से पूर्व की ओर मुड़ती है। इकौना में यह फिर दक्षिण की ओर हो जाती है। नरायनजोत से आगे यह बहरायच और गोंडा जिलों के बीच में सीमा बनाती है। इकौना से पांच मील पूर्व डेंगरा जोत में यह बहरायच जिले को छोड़कर गोंडा में प्रवेश करती है। तुलसीपुर की तराई से आनेवाली कैन कई छोटी छोटी धाराओं का पानी लेकर भिनगा के नीचे लछमनपुर गुरुपुरवा के पास राप्ती में मिल जाती है। इसकी दूसरी सहायक भकला नदी नैपाल की तराई में निकलती है। बहुत दूर तक जिले में राप्ती से प्रायः चार मील पश्चिम की ओर समानान्तर बहती हुई यह चरदा के जंगल और इकौना परगने को पार करके गोंडा जिले की सीमा के पास (डेंगरा जोत गांव के पास) राप्ती में मिल जाती है निचले मार्ग में इसे सिंधिया कहते हैं। गरमी में इसमें पांज हो जाती है। पर अचानक वर्षा हो जाने पर इसमें २० घंटे में २० फुट ऊंची बाढ़ आ जाती है।

झीलें—ठीक ठीक पानी न बह सकने के कारण इस जिले में अनेक झीलें हैं। और ताल सिंचाई के लिए यह बड़ी उपयोगी हैं। इनमें कुछ अधिक बड़ा है। पयागपुर के पास बघेल ताल साढ़े चार मील लम्बा है। इसे पुराने समय में घाघरा नदी ने ही बनाया था। बहरायच शहर में चित्तौर ताल है जहां से टेढ़ी नदी निकलती है। गनौर और अनार कली झीलें भी काफी लम्बी हैं। निगरिया झील, मैला ताल, रेहवा और मायताल भी प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त यहां छोटी छोटी झीलें बहुत हैं।

नैपाल की सीमा के पास बहरायच जिले की ३३४ वर्ग मील भूमि वन से घिरी हुई है। यह तीन रेंज (श्रेणियों) में बटा है यह मोतीपुर, भिनगा, और चरदा या चकिया रेंज नाम से प्रसिद्ध हैं।

मोतीपुर रेंज सब से बड़ा (१८३ वर्गमील) है। इसमें उत्तरी और दक्षिणी भरथापुर का वन बरदिया, अम्बाटेढ़ी, चहलवा, धर्मनपुर, निशागरा, दोबा, और मोतीपुर के वन शामिल हैं। उत्तरी भरथापुर के उत्तर में नैपाल की सीमा है। यह सीमा कौरियाला और गिरवा गहरी धारा के मध्य से आरम्भ होती है। भरथापुर के दक्षिण का वन भरथापुर गांव से कौरियाला के किनारे किनारे कौरियाला और गिरवा के संङ्गम तक चला गया है। इस रक्षित वन का क्षेत्रफल ३५ वर्ग मील है। बरदिया के वन के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में गिरवा नदी बहती है। उत्तर पूर्व की सीमा में गिरवा नदी से ८१ नवम्बर के खम्भे तक चली गई है। दक्षिणी-पूर्वी सीमा नैपाल के पड़ोस से बरदिया गांव और रोरी नाले के पास तक चली गई है। दक्षिण-पश्चिम में यह वन फकीरपुरी गांव से गिरवा नदी तक फैला हुआ है।

अम्बाटेढ़ी वन पूर्व में अम्बा गांव और पश्चिम में भवानीपुर के बीच में स्थित है। चहलवा वन के उत्तर और पश्चिम में गिरवा नदी है। पूर्व में अम्बाटेढ़ी वन है।

सुहलवा के दक्षिण में धर्मनपुर का वन है। धर्मनपुर वन के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में कौरियाला नदी है। निशंगरा वन बहुत बड़ा है। यह धर्मनपुर वन के पूर्व और उत्तर-पूर्व में स्थित है। मोतीपुर का वन निशंगरा के दक्षिण में है।

दोवा वन धर्मनपुर परगने के दक्षिण-पश्चिम में है। यह वन बहुत अच्छा नहीं है। इस में प्रायः खैर के पेड़ और घास और झाऊ का जंगल है।

चरदा चकिया वन नानपारा और चरदा परगनों में स्थित है।

खरैंचा का वन छोटा है और चकिया वन के दक्षिणी सिरे के पास है।

बबई वन मोतीपुर के पास है। चरदा वन चरदा के पश्चिम में दूसरे वनों से दूर है। इसके उत्तर में नैपाल की सीमा है।

भिनगा रेंज में ४ वन शामिल हैं। यह भिनगा, ककरदारी, सोनापथरी और गब्बापुर के नाम से प्रसिद्ध है। इसका क्षेत्रफल १०६ वर्ग मील है। भिनगा को छोड़ कर इसका शेष भाग नैपाल की सीमा के पास तराई प्रदेश में स्थित है। उत्तरी सिरे पर ककरदारी वन है। दक्षिण पूर्व में इससे मिला हुआ भिगना का वन है। इसका क्षेत्रफल लगभग ४५ वर्ग मील है। गब्बापुर और सोनपथरी के वन तुलसीपुर परगने में स्थित हैं।

पहले वन प्रदेश की गणना ऊसर भूमि में होती थी। १८६१ में यह सरकारी वन घोषित किया गया। वन के कुछ भाग में जानवर चर सकते हैं। शेष भाग में जानवरों को चराने की आज्ञा नहीं है। ग्रीष्म ऋतु में वन की आग बुझाने का भी प्रबन्ध है। वन में साल बहुत है। लेकिन साल का पेड़ अकेला नहीं होता है। यह तून, महुआ, हल्दू, आस्ना, धाव, बरगद, तेंदू, वेल, असिध, कजरौटा, जिगना पैनार, कुम्भी अगै और दूसरे पेड़ों के साथ उगता है। इसके अतिरिक्त यहां दूधी आंवला आदि कई पेड़ और झाडियां होती हैं। चिकनी मिट्टी में साल के स्थान पर आस्ना उगता है। साल के वन में कहीं कहीं ऐसे स्थान भी मिलते हैं जहां कोई पेड़ नहीं उगता है। जहां साल नहीं होता है। वहां प्रायः शीशम के पेड़ बहुत होते हैं। खैर और सेमल के पेड़ प्रायः कछारी भूमि में बहुत होते हैं। साल और शीशम की बड़ी मांग है। इनके दाम भी अच्छे मिलते हैं। इनके बाद हल्दू और दूसरे पेड़ों की लकड़ी की खपत होती है। बैलगाड़ी बनाने के लिये धात्र की लकड़ी काम में आती है। पेड़ काटने के पहले नीलाम होता है। पहले लकड़ी, कोरियाला, सरजू और राप्ती के मार्ग से लाई जाती थी। अब रेल से यह लकड़ी शीघ्रता पूर्व भिन्न भिन्न बाजारों में पहुँचा दी जाती है। सरकारी वन के अतिरिक्त इस जिले में कुछ वन अलग अलग व्यक्तियों के अधिकार में है। इनमें सब से बड़ा (३३ वर्ग मील) इकौना का जंगल है जिस पर कपूर्थला-महाराज का अधिकार है। बघेल ताल के समीप का जंगल पयागपुर के राजा साहब के अधिकार में है। जंगल में चीता, तेंदुआ, जगली सुअर, चीतल, भेड़िया भालू, सांभर, नील गाय हिरण आदि जगली जानवर बहुत पाये जाते हैं। गोचर भूमि की अधिकता होने से इस जिले में गाय बैल घोड़ा आदि पालतू जानवर भी बहुत हैं। जिले की लगभग ३ फीसदी भूमि में बगीचे हैं। २१७ वर्गमील भूमि ऊसर है।

यह जिला बंगाल की खाड़ी की ओर से आने वाली मासूनी हवाओं के मार्ग में स्थित है। इसलिये गरमी की ऋतु में यहां अच्छी वर्षा होती है। पहाड़ों के समीप होने से शीतकाल में भी यहां कुछ न कुछ वर्षा हो जाती है। वनों से भी वर्षा की मात्रा में कुछ वृद्धि हुई है। औसत से वर्ष भर में ४७ इंच पानी बरसता है। किसी किसी वर्ष यहां केवल २४ इंच वर्षा हुई है। लेकिन कभी कभी ८७ इंच तक वर्षा हुई है। अधिक वर्षा, हवा में नमी जंगल होने के कारण यहां का तापक्रम अधिक ऊंचा नहीं होता है। लेकिन हवा में नमी होने के कारण यह गर्मी असह्य हो जाती है। इस प्रकार इस जिले की जलवायु कुछ कुछ बंगाल के समान है।

कृषि—इस जिले में २० फी सदी भूमि ऐसी है जो खेती के योग्य होते हुये भी खेती के काम नहीं आती है। फिर भी ५० फी सदी से ऊपर भूमि में तरह तरह की खेती होती है। खेती की भूमि कुछ दुरस (चिकनी मिट्टी और बालू का मिश्रण) या दुमट है। कुछ चिकनी मिट्टी या मटियार है। कुछ

भूड़ या बालू है। इस जिले के अधिकतर (आधे से अधिक) भाग में धान की खेती होती है। चावल इस जिले का प्रधान भोजन है। यह नानपारा और बहरायच तहसीलों में बहुत उगाया जाता है। भिनगा, तुलसीपुर और नानपारा की तराई की भूमि धान की खेती के लिये विशेष रूप से उपयोगी है। धान के पश्चात खरीफ की फसल में दूसरा स्थान मकई का है। यह राप्ती और घाघरा के निचले प्रदेश में बहुत होती है। ज्वार अरहर और कोदो खरीफ की दूसरी फसलें हैं। कुछ भूमि में ईख होती है। रबी की फ़सल में गेहूँ प्रायः ४४ फीसदी भूमि में होता है। कुछ गेहूँ, चना, जौ और मटर के साथ मिलाकर बोया जाता है। अकेला गेहूँ ३० फीसदी भूमि में बोया जाता है। चना, मटर, मसूर को प्रायः मिलाकर बोते हैं। निकृष्ट भूमि में जौ बोते हैं। रबी की फसल की १७ फी सदी भूमि में जौ बोया जाता है। कुछ भूमि इतनी अच्छी (दोफसली) है कि इसमें वर्ष में दो फसलें उगाई जाती हैं। इस जिले में नहरें नहीं हैं सिंचाई कुओं और तालाबों से होती है।

बहरायच में कलाकौशल की कमी है। कुछ गाँवों में जुलाहे मोटा गाढ़ा बुनते हैं। कुछ मुसलमान नमदा बनाते हैं। कम्बल भी बुने जाते हैं। कुछ स्थानों में पंजाबी कारीगरों के आ जाने से लकड़ी का सामान भी तैयार होने लगा है। वनों में खैर की लकड़ी के टुकड़ों को उबाल कर कत्था निकाला जाता है।

संक्षिप्त इतिहास

कहते हैं ब्रह्मा का विशेष रूप से यह प्रिय स्थान था। इसी से इसका नाम ब्रह्मर्षि से बिगड़ कर बहरायच पड़ा। भिनगा से १८ मील की दूरी पर हथियाकुंड के पास एक टीले पर प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं कहते हैं यहां महाभारत के राजा कर्ण का एक नगर था। यह जिला अयोध्या के उत्तर कौशल राज्य का अङ्ग था। यहां श्रीरामचन्द्रजी के पुत्र लव का राज्य था। यहां बौद्ध कालीन कई स्थान हैं। कहते हैं इकौना से ४ मील की दूरी पर ५०० अन्धों ने भगवान बुद्ध के आशीर्वाद से देखने की शक्ति फिर प्राप्त कर ली थी। उन्होंने अपने डंडे भूमि में गाड़े थे। वे हरे हो गये। इनसे वन का आरम्भ हुआ। इस वन का नाम आप्तक्षि वन पड़ गया। यहां भार लोगों के भी कई भग्नावशेष मिलते हैं। उनका एक नेता सोहेलदेव महमूद गजनवी के भतीजे सैयद सालार से लड़ा था। कहते हैं सैयद सालार मसूद १०१५ ईस्वी में अजमेर में पैदा हुआ था। उसने अपनी युवा अवस्था अपने पिता और अपने चाचा के साथ युद्ध में बिताई। वह मुल्तान, दिल्ली, मेरठ, कन्नौज और सत्रिख (बाराबंकी) के मार्ग से यहां आया। राजपूतों के संघ से मोरचा लेने के लिये १०३३ में सैयद सालार बहरायच में आया। नगर के समीप एक ताल था। इसके किनारे पर सूर्य की मूर्ति बनी थी। सैयद सालार ने सूर्य की उपासना का अन्त कर देने की घोषणा की। कौशल या कौरियाला नदी के किनारे पर घमासान युद्ध हुआ। पहले राजपूत हारते हुये दिखाई दिये। अन्त में १०३४ में सालार हारा और मारा गया। यहीं उसके अनुचरों ने उसे गाड़ दिया। घाघरा के इस पार अपना प्रभुत्व जमाने में मुसलमानों को अधिक समय लगा। १२२६ ई० में अल्तमश का बड़ा लड़का नसीरुद्दीन मुहम्मद अवध का सूबेदार हुआ। कहते हैं यहां के लोगों ने आत्म-समर्पण करने के पहले सवा लाख मुसलमान सिपाहियों को मार डाला था। इसी समय यहां जिले के दक्षिणी भाग में पहले पहल मुसलमानों की बस्ती बसाई गई। प्रथम निवासी अन्सारी थे। वे पचम्बा, हिसामपुर और तवक्कुलपुर में बस गये। तवक्कुलपुर में उन्होंने ५२ बुर्जों का एक विशाल किला बनवाया। हिसामपुर का पुराना नाम पुरैनी था। यहीं भार राजा की राजधानी थी। सैयद सालार के एक साथी ने इस राजा को हराया था। अवध के सूबेदार हिसामुद्दीन तुगलक की स्मृति में १२४० में इस नगर का नाम हिसामपुर रक्खा गया। अन्सारियों ने यहां ढाई सौ गांवों को बसाया और खेती आरम्भ कर दी। १२४६ ई० में यहां का एक सूबेदार दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। बादशाह होने पर उसने बहरायच के अपने कई साथियों को ऊँचे पदों पर नियुक्त किया। बहरायच अवध से अलग कर दिया गया। इसी समय दो गांव का पुराना नगर सरजू के पास

बसाया गया। १२३० से १३४० तक यहां कोई विशेष घटना नहीं हुई। दक्षिण में अन्सारी प्रबल हो रहे थे। लेकिन भार लोगों की शक्ति नष्ट नहीं हुई थी। १३४० में राजा छत्रसाल का जरौली किला मुसलमानों ने धोखा देकर ले लिया। इसी वर्ष मुहम्मद तुगलक बहरायच को आया। फीरोज-शाह के समय में यह जिला अधिक प्रसिद्ध हो गया। इसी समय गुजरात के जवार राजपूत अपने राजा सनसुखदेव के साथ यहां आकर बस गये। १३७४ में फीरोजशाह सैयद सालार के मकबरे का दर्शन करने आया। राजपूत सरदार बरियार शाह उसके साथ था। उसने यहां शान्ति स्थापित की। १४१४ में बरियार शाह इकौना में बस गया। उस समय इसका नाम कान्हपुर महादेव था। इसके ४० वर्ष बाद राइकवार राजपूत बाराबंकी के रामनगर में बस गये। आगे चलकर वे इस जिले के पश्चिमी भाग के स्वामी बन गये। इस प्रकार जिले के दक्षिणी भाग में मुसलमान, पश्चिमी भाग में राइकवार पूर्वी भाग में जवार और उत्तरी भाग में पर्वतीय लोग प्रबल थे। बहलोल लोदी ने अपने शासनकाल (१४५०-१४८८) में अपना प्रभुत्व हिमालय की तलहटी तक फैला लिया। उसका भतीजा काला पहाड़ कुशल सेना पति था। १४७८ में वह बहरायच का सूबेदार नियुक्त किया गया। फिर भी मुसलमानों का शासन यहां नाम मात्र का था। अकबर के समय में बहरायच की सरकार में बहराइच के अतिरिक्त गोंडा और खीरी के जिले भी शामिल थे। सरजू के किनारे बहरायच में पक्का किला बना था। बहरायच मुहाल की आमदनी से साढ़े चार हजार पैदल और ६०० घुड़ सवार रक्खे जाते थे। जिले में और भी कई मुहाल थे। अकबर के समय में हर-हरदेव ने नये हरहर राज्य की नींव डाली। उसका बेटा वहां पर राज्य करने लगा। १६०० ईसवी में बहनौटी राज्य दो भागों में बंट गया। इसी समय इकौना के जवार राजपूत तेजी के साथ अपना राज्य बढ़ा रहे थे। १६२७ में राइकवार राजा बीर नारायणसाह को इक चौधरी प्राप्त हुआ। इस वंश में महासिंह सब से अधिक प्रतापी हुआ। उसने अपने कुटुम्ब के लोगों को जिले के भिन्न भिन्न भागों में बसा दिया। जगन्नाथ सिंह चरदा को चला गया। महासिंह ने पश्चिम में गुजी गंज जागीर की नींव डालने के लिये अपने भाई को भेजा। उसी के एक वंशज ने भिनगा राज्य पर अधि-कार कर लिया। बहरायच के जंगल के कई गांव महासिंह ब्राह्मणों को दान कर दिये। महासिंह के बाद उसका बेटा मानसिंह और फिर मानसिंह का बेटा श्याम सिंह राजा हुआ। श्याम सिंह के दो रानियां और दो बेटे थे। बड़ा बेटा इकौना का मोहन सिंह था। छोटा बेटा प्रयाग साह था। मोहनसिंह के बाद उसका बेटा छत्रसाल सिंह इकौना का राजा हुआ। छत्रसाल के दो बेटे थे। चैनसिंह इकौना का राजा हुआ। भैया प्रतापसिंह ने गङ्गावाल राज्य की नींव डाली।

१६३७ में रसूल खाँ नाम का एक पठान सरदार बहरायच के किले का रक्षक नियुक्त हुआ। सेना के खर्च के लिये उसे ५ गांव दिये गये। उसका पौत्र मुहम्मद खां नानपारा में बस गया। मुहम्मद खां के बेटे करम खां ने नानपारा जागीर की नींव डाली। जब ७०. के बेटे मुस्तफा खां ने ५००० रु० अवध को लगान न दिया तो वह बन्दी बनाकर लखनऊ पहुँचाया गया। १७७७ ई० में वह वहीं मर गया।

इसी समय पयागपुर के जंवार राज्य की नींव पड़ी। प्रयाग साह ने दिल्ली सम्राट के आदेश से प्रयागपुर या पयागपुर गांव बसाया। यहीं इसके वंशज रहने लगे। १७८८ में आसफुद्दौला ने नान-पारा, चरदा, धर्मनपुर और तराई प्रदेश के १४८६ गांव प्रयाग साह के बेटे हिम्मत साह को पद पर दे दिये। मुजौली में अर्जुन सिंह नाम का एक बंजारा सरदार १७८८ में शासन करता था। १८०० ई० में धौरहरा (खीरी) के राजा ने भरथा पुर और अम्बाटेढ़ी पर अधिकार कर लिया। इस नगर पर उसके एक सम्बन्धी ने अधिकार कर लिया। मध्य-भाग में फिर भी बंजारे बने रहे।

१८०७ में गुर्जासिंह ने अवध के नवाब को रुष्ट कर दिया। उस पर चढ़ाई की गई और उसकी जागीर उसके विरोधियों को बांट दी गई। १८१४ ई० में अँग्रेजों ने नैपाल से युद्ध घोषित किया। १८१६ में

सिगौली की सन्धि के अनुसार सारदा और राप्ती के बीच में स्थित निचला प्रदेश अँग्रेजो को मिल गया। अँग्रेजों ने १८१५ में अवध की सरकार से एक करोड़ रुपया उधार लिया था। इस ऋण के बदले में अँग्रेजों ने यह प्रदेश अवध की सरकार को दे दिया। इस प्रदेश के अधिकतर गाँव तुलसीपुर के राजा को मिले। पश्चिमी भाग पदमपुर महलवारा के राजा के हाथ में बना रहा। इससे बंजारे दब गये।

७ फरवरी १८५६ में अवध अँग्रेजी राज्य में मिला लिय गया। बहरायच एक कमिश्नरी का केन्द्र स्थान बना। गदर में यहां के अधिकतर तालुकेदार विद्रोही हो गये। यहां का कमिश्नर (जो इस समय सिकरौरा या कर्नल गंज में था) बहरायच से गोंडा (बलरामपुर) को भाग गया। डिप्टी कमिश्नर और दूसरे अँग्रेज अफसरों ने नानपारा के मार्ग से भाग कर पहाड़ियों में शरण लेने का प्रयत्न किया। राजा के कारिन्दा ने उन्हें उधर जाने से रोका। इस पर वे हिन्दुस्तानी भेप बना कर लौटे। जब बहरामघाट में वे नाव पर सवार होकर चलने लगे तब विद्रोहियों ने उन्हें पहचान लिया। सभी अफसर मार डाले गये इस प्रकार गदर के आरम्भ से ही बहरायच का जिला विद्रोहियों के हाथ में चला गया। १८५८ के अन्त तक यह जिला विद्रोहियों के हाथ में ही रहा। बरगांदिया की लड़ाई में विद्रोही हार गये। दूसरे दिन मद्रासी, बलूची और सिक्ख सेना ने अँग्रेजों के साथ भसोदिया के मजबूत किले को ले लिया और नष्ट कर दिया। धर्मनपुर में हारने के बाद कुछ विद्रोही राप्ती को पार करके नैपाल को भाग गये। बौंदी का राजा अन्त तक लड़ता हुआ मारा गया। चरदा के राजा का पता न चला। शान्ति स्थापित होने पर बौंदी, चहलरी, भिटौली और धहरौरा की जागीरें (जिनमें ४४० गांव थे) एकदम जब्त कर ली गईं। इकौना (५०६ गांव) चरदा (४२८ गांव) और तुलसीपुर (३१३ गांव) के राज्य भी जब्त कर लिये गये। भिनगा के (१३८ गांव) आधे गांव, रेहवा के १४ गांव तिपरहा के १६ गांव जब्त कर लिये। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने इस जिले में सब मिला कर १८५८ गांव जब्त किये। इनमें ३१३ गांव नैपाल सरकार को दे दिये गये। इकौना के ४३७ गांव बौंदी के सब (३०५) गांव और बाराबंकी जिले में भिटौली के ७६ गांव कपूर्थला महाराज को दे दिये गये। बलरामपुर के महाराज को भिनगा राज्य के १०० गांव, इकौना के शेष (६६) गांव और चरदा के २५५ गांव मिले। चरदा के २५५ गांव नवाब नवाजिशअली खां को दे दिये गये। चरदा राज्य के शेष २६ गांव सरदार हीरासिंह को मिले। भिनगा राज्य का शेष भाग शेरसिंह इन्द्रजीतसिंह आदि सिक्ख सिपाहियों में बांट दिये गये। कुछ गांव लाहौर के राजवंश के सिक्ख सरदारों को दे दिये। रेहवा के गांव कालाकांकर के राजा हनवन्तसिंह सूबेदार मातादीन, सिंह दुलारसिंह अजातपुर के मुहम्मदशाह को बांट दिये गये। मुहम्मद शाह को तिपरहा के भी नौ गांव मिले। तिपरहा के शेप गांव रायकिशन सहाय, वेनीसिंह और मनसुखसाह को मिले। धहरौरा के राजा की भरथापुर और अम्बाटेढ़ी की जागीरें अँग्रेजी राज्य में मिला ली गईं। इन्हीं में रक्षित वन है। गदर के बाद बहरायच जिले में सदा शान्ति बनी रही।

बहरायच शहर २७·३४ उत्तरी अक्षांश और ८१·३६ पूर्वी देशान्तर में समुद्रतल से ४७० फुट की ऊँचाई पर बसा है। यह शहर जिले के प्रायः मध्य में स्थित है। यहां होकर बहरामघाट से नानपारा और नैपाल गंज को राजमार्ग गया है। बहरामघाट ३६ मील और नानपारा २० मील दूर है। गोंडा से नैपाल गंज और कतरनियां घाट को जाने वाली रेलवे लाइन का स्टेशन बहरायच शहर से पूर्व की ओर है। शहर ऊँचे किनारे पर बसा है। पुराने समय में घाघरा इसके पास से होकर बहती थी। बहरायच शहर से चारों ओर को लहरदार भूमि बड़ी सुहावनी लगती है। यहां से भिनगा, इकौना, ककरदरी घाट (नैपाल की सीमा पर) आदि कई स्थानों को कच्ची सड़कें गई हैं। बहरायच शहर के दक्षिण में सिविल लाइन है। यहां गोरों के बंगले, कचेहरी डाक बंगला और गिरजा है। यहां तहसील, थाना, डाक, तारघर अस्पताल और हाई स्कूल है। यहां संस्कृत पाठशाला, मदरसा इस्लामिया और जूनियर हाई स्कूल है। बहरायच में महमूद गजनवी के भतीजे सैयद सालार मसूद की दरगाह है। यहीं राजा-

सुहेलदेव की अध्यक्षता में हिन्दुओं ने उससे मोर्चा लिया था। सैयद सालार लड़ाई में मारा गया। उसका मकबरा शहर से डेढ़ मील की दूरी पर सिंहा परसी गांव में बना है। कहते हैं इसी स्थान पर पहले सूर्य मन्दिर बना था। दिल्ली सम्राट फीरोजशाह ने यहां घेरा और कई इमारतें बनवा दी। आगे चलकर यहां मीरमाह फकीर और दूसरे लोगों के भी मकबरे बन गये जेठ के महीने में यहां भारी (१ लाख से ऊपर यात्रियों का) मेला लगता है। इसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों रहते हैं। यहां तरह तरह का चढ़ावा चढ़ाया जाता है। कुछ यात्री अपने साथ तरह तरह के झन्डे लाते हैं। झन्डों के बांस बड़े लम्बे होते हैं। दरगाह की आमदनी से एक स्कूल और अस्पताल का खर्च चलता है।

रेलवे के खुल जाने से बहरायच एक व्यापार केन्द्र बन गया है। यहां नैपाल का बहुत सा सामान आता है। अनाज, शक्कर, लकड़ी और तम्बाकू का व्यापार अधिक होता है। फेल्ट बनाने और गाढ़ा बुनने के अतिरिक्त यहां और कोई कारबार नहीं है। कहते हैं ब्रह्मा जी ने यहां बहुत से ऋषियों को बसाया था। इसी से इसका नाम ब्रह्मैच से बिगड़कर बहरायच पड़ गया।

अम्बा गांव राप्ती के दक्षिणी किनारे पर भिनगा से ४ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इकौना से नानपारा को जानेवाली सड़क यहां से कुछ ही दूर है। थोड़ी दूर पर भिनगा से बहरायच को जाने वाली सड़क इसे पार करती है। यहां प्रतिदिन एक बड़ा बाजार लगता है। उत्तर की ओर मिले हुये पटना गांव में स्कूल है।

बाबागंज नानपारा से नैपाल गंज को जानेवाली सड़क पर नानपारा से ८ मील दूर है। अँग्रेजी राज्य में मिलने के पहले यहां लोहे की बड़ी मंडी थी। रेलवे स्टेशन के पास यहां कुछ दुकाने हैं। यहां डाकघर और स्कूल है।

बहानौटी गांव सिसैया से कुरसर को जाने वाली सड़क पर घाघरा नदी से दो मील पूर्व की ओर स्थित है। यह बौंदी से मिला हुआ है। गांव का एक भाग शंकरपुर और दूसरा भाग शहर गोलागंज कहलाता है। गोलागंज में सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। नदी के किनारे रामघाट में मेला लगता है। पारसनाथ महादेव का मेला शंकरपुर में भादों, अगहन, फागुन और बैसाख में लगता है। बहानौटी में ही राइकवार राजपूत पहले पहल आकर बस गये थे।

बौंदी गांव कुरसर से चहलरी घाट को जानेवाली सड़क से कुछ दूर पश्चिम की ओर है। यहां से एक सड़क बहरायच से बहरामघाट को जाने वाली सड़क से मिलती है। बौंदी एक बड़े राज्य की राजधानी है जो गदर के बाद कपूर्थला महाराज को मिल गया। यहां महाराज की ओर से तहसील और खजाना है। खजाने पर सशस्त्र सिपाहियों का पहरा रहता है। बौंदी में मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां डाकखाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। इसके उत्तर पश्चिममें बहानौटी गांव है। उत्तर की ओर रेहवा और पुराना किला है।

भंगहा बहरायच से २० मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह राप्ती और भकला नदियों के उपजाऊ द्वाब में भिनगा से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। राप्ती नदी यहां से १ मील दूर है। भिनगा से नानपारा को जानेवाली सड़क भी यहां से १ मील दूर है। पहले यह भिनगा राज्य का गांव था। गदर के बाद पुरस्कार के रूप में यह सिक्ख सरदार शेरसिंह को दे दिया गया। रेल खुलने से पहले यहां नैपाल के साथ व्यापार होता था। यहां डाकघर स्कूल और छोटा बाजार है।

भिनगा कस्बा राप्ती के बायें किनारे पर बहरायच से २५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। पिपराघाट में राप्ती को पार करके यहां से एक सड़क बहरायच को गई है। एक सड़क इकौना को गई है जो हरई के पास राप्ती नदी को पार करती है। बहरायच की सड़क से एक शाखा सड़क उत्तर-पश्चिम नानपारा और उत्तर-पूर्व में बलरामपुर को गई है। यह कस्बा रक्षित बन के पास है जो उत्तर की ओर तराई तक फैला हुआ है। यहां ताल्लुकेदार की कोठी है जो पुराने किले में बनी है। यहां अस्पताल, थाना, डाकखाना और स्कूल है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अनाज और लकड़ी का व्यापार होता है। लकड़ी

अधिकतर राप्ती के मार्ग से बाहर को भेजी जाती है। इस नगर को अब से प्रायः ४०० वर्ष पहले भिनगा के एक राजवंशज ने बसाया था।

बिचिया रेलवे स्टेशन कतरनियाघाट शाखा लाइन पर है। कतरनियाघाट यहां से ४ मील उत्तर की ओर है। यह बन के बीच में है। रेलवे स्टेशन के पास एक बाजार है। यहां नैपाल का अनाज बिकने के लिये आता है।

चरदा गांव बाबागंज से इकौना को जाने वाली सड़क पर बाबागंज से दो मील दूर है। यहां बलरामपुर महाराज का अधिकार है। यहां से महाराजगंज रेलवे स्टेशन तक जंगल में होकर सड़क बना दी गई है। यहां अस्पताल, स्कूल और छोटा बाजार है। गांव के पश्चिम में पुराने किले के खंडहर हैं। यह गढ़ उन श्रेणी में से एक है जो चौदहवीं सदी में पहाड़ी लोगों के आक्रमण से मैदान को बचाने के लिये बनाये गये थे।

चिलवरिया गांव बहरायच से गोंडा को जाने वाली सड़क पर बहरायच से ६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का एक स्टेशन है। रेलवे के खुल जाने से यहां अनाज का व्यापार बढ़ गया है। गुरुवार रविवार को नानकगंज में बाजार लगता है।

धर्मनपुर निशंगरा रेलवे स्टेशन से ३ मील पश्चिम की ओर है। यह उस झील के किनारे स्थित है जहां से चौका नदी निकलती है। इसके पास ही सेमरी घटई गांव में मंगलवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां होकर मोतीपुर से सुजौली को सड़क जाती है।

दो गांव एक प्राचीन गांव है। यहां तांबे के पुराने सिक्के मिले हैं। इन पर दोगाम नाम खुदा था। अकबर के समय में यहां तांबे के सिक्के ढालने के लिये टक्साल थी। यह नानपारा से ४ मील उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित है। इसके पश्चिम में सरजू है। यहां पुराने किले और पक्के कुयें के खंडहर मिलते हैं। रेलवे ने यहां की पुरानी ईंटों को ढोकर इनकी मिट्टी को लाइन पर बिछा दिया। यहां शाह-सज्जत नाम के एक फकीर का मकबरा था। सरजू ने इसे बहा दिया। लेकिन उसकी स्मृति में यहां एक मेला लगता है। कहते हैं सैयद सालार मसूद को हराने वाले सोहेल देव का यहां एक किला था।

फखरपुर बहरामघाट से बहरायच को जाने वाली सड़क पर बहरायच से ११ मील दूर है। गांव के चारों ओर सुन्दर बगीचे हैं लेकिन पानी अच्छा नहीं है। यहां थाना, डाकखाना, पड़ाव और सरकारी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार में पशुओं की बिक्री होती है। अकबर के समय में यहां तहसील और किला था। अकबर के समय में सड़क के पास एक बड़ा पाकर का पेड़ होने से यह पाकरपुर कहलाता था।

गायघाट सरजू के दाहिने किनारे पर नानपारा से १३ मील दूर मोतीपुर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। नदी को पार करने के लिये यहां सरकारी घाट है। यहां डाकघर और स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

गन्दरा गांव सरजू के पश्चिमी किनारे पर कैसरगंज से ४ मील पूर्व की ओर है। इसके पास ही सरजू में एक छोटी नदी मिलती है। यहां डाकखाना, स्कूल और सरजू को पार करने के लिये घाट है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है। गंगवल पयागपुर रेलवे स्टेशन से ५ मील दक्षिण की ओर है। यहां पुराने तालुकेदार की गढ़ी है। यहां एक छोटा स्कूल है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

इकौना कस्बा बहरायच से बलरामपुर को जाने वाली सड़क पर बहरायच से २२ मील पूर्व की ओर है। यहां से एक सड़क पयागपुर और भिनगा को गई है। यहां थाना, डाकघर, अस्पताल, मिडिल स्कूल सराय और डाक बंगला है। बाजार प्रतिदिन लगता है। यहां लकड़ी का सामान अच्छा बनता है। यहां जंवार राजपूतों की राजधानी थी। गदर के बाद यह कपूर्थला नरेश को दे दिया गया। पुराने किले में उसकी तहसील है। पास ही थाना है।

जरवल का पुराना गांव बहरामघाट से बहरायच को जाने वाली सड़क पर कैसरगंज से ६ मील और बहरायच से २९ मील दूर है। गांव कुछ नीची भूमि पर बना है। उत्तर की ओर आम के बाग हैं। ४ मील दक्षिण की ओर जरवल रोड रेलवे स्टेशन है।

यहां डाकघर और स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। अनाज, खाल, कपड़ा और पीतल के बर्तनों का व्यापार होता है। यहां फेल्ट (नमदा) आतिशबाजी, शोरा और रंग बनाने का काम होता है। इसका पुराना नाम जरौली था। मुसलमानों से पूर्व यहां भार लोगों का शासन था। कैसरगंज बहरायच से बहरामघाट को जाने वाली सड़क पर बहरायच से २२ मील दूर है। यहां तहसील मुन्सफी, रजिस्ट्री, थाना, डाकघर, डाक बंगला और मिडिल स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

कतरनियां घाट गिरवा के दक्षिणी किनारे पर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। दूसरी ओर नैपाल को मार्ग गया है। यहां वन-विभाग का बंगला और व्यापार की रजिस्ट्री का दफ्तर हैं। इस गांव में खेती नहीं होती है। दोनों ओर वन है। यहां कुछ अनाज के व्यापारी रहते हैं जो नैपाल का अनाज बाहर भेजते हैं। खैरी घाट को चेहरा भी कहते हैं। यह नानपारा से १२ मील दूर सरजू के बायें किनारे पर स्थित है। यहां से कुछ दूरी पर यह घाघरा से मिलती है। यहां थाना, डाकखाना, स्कूल और कपूर्थला नरेश की तहसील है। बाजार प्रतिदिन लगता है। बहुत सा अन्न घाघरा के मार्ग से बाहर जाता है। इसके पास वाले ढकिया गांव में नमदाशाह का मेला लगता है। कुरसर गांव बहरायच से बहरामघाट को जानेवाली सड़क पर स्थित है। अंग्रेजी राज्य में मिलने के समय से १८७६ तक यह एक तहसील का केन्द्र स्थान रहा। यहां एक स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। मल्हीपुर बाबागंज स्टेशन से भिनगा को आने वाली सड़क नानपारा से १५ मील पूर्व की ओर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। कटरा में प्रतिदिन बाजार लगता है।

मोतीपुर नानपारा से सुजौली को जानेवाली सड़क के पास स्थित है। रेलवे लाइन सड़क के समानान्तर चलती है। स्टेशन पास ही है। गांव के पूर्व में सरजू नदी बहती है। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां से अनाज बाहर जाता है।

नानपारा बहरायच से २२ मील उत्तर की ओर है। यहां से नैपालगंज को सड़क जाती है। गांव के पूर्व की ओर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की लाइन जाती है। स्टेशन पास ही है। नानपारा स्टेशन से एक शाखा लाइन नैपालगंज को जाती है। प्रधान लाइन गोंडा से कतरनियां घाट को जाती है। यहां से मोतीपुर, भिनगा, इकौना, खैरीघाट और कटई घाट (घाघरा के किनारे) को सड़कें गई है। नानपारा समुद्र-तल से ५२० फुट की उंचाई पर बसा है। सरजू और राप्ती के बीच में जल विभाजक बनाने वाला ऊँचा किनारा यहां से लगभग १ मील दूर है। यहां तहसील, थाना, अस्पताल, डाकघर, डाक बंगला और मिडिल स्कूल है। एक बाजार स्टेशन के पास और दूसरा कस्बे के भीतर है। यहां से अनाज बाहर को भेजा जाता है। भादों और फागुन के महीने में नदी के ऊंचे किनारे के पास जंगली नाथ का मेला लगता है। माघ में एक मेला तकिया मलंग शाह का होता है। यहां से पांच मील की दूरी पर शाह सजन की दरगाह है। यहां भी मेला होता है।

पयागपुर बहरायच से गोंडा को जानेवाली सड़क पर बहरायच से १७ मील दूर है। पश्चिम की ओर बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की शाखालाइन का स्टेशन है। इसके पास ही पक्का बाजार है। यहां से इकौना, कुरसर खीरी और सीतापुर को सड़कें गई हैं। यहां राजा साहब का महल, थाना, डाकखाना और स्कूल है। पश्चिम की ओर बघेल ताल है जो टेढ़ी नदी से मिला हुआ है। रेलवे स्टेशन के पास प्रतिदिन बाजार लगता है। एक छोटा (तालाब बघेल) बाजार रेलवे स्टेशन की दूसरी ओर लगता है। यहां अनाज का व्यापार बहुत होता है।

रूपी डीहा नैपाल की सीमा के पास स्थित है। यहां होकर नानपारा से बनटीया नैपालगंज को सड़क जाती है। रेलवे की शाखा लाइन भी नैपालगंज को जाती है। नैपाल के व्यापार का यह जिले भर में सब से बड़ा बाजार है। बाजार प्रतिदिन लगता है। अनाज, लोहे, कपड़े और मसाले का व्यापार होता

है। यहां व्यापार की रजिस्ट्री का दफ्तर, डाकघर और स्कूल है।

सिरसैया गांव घाघरा के किनारे पर स्थित है। यहां बहरायच, नानपारा, और कुरसर से आने वाली तीन सड़कें मिलती हैं। चहलरी घाट के उस पार सीतापुर को सड़क गई है। यहां थाना, डाकघर और बाजार है। बुधवार और रविवार को बाजार लगता है।

सुजौली कौरिया के किनारे पर नानपारा से ३६ मील दूर है। यहां थाना, डाकघर, वन विभाग का बङ्गला अस्पताल और स्कूल है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। अनाज और लकड़ी का व्यापार होता है।

टंडवा इकौना से बहरायच को जाने वाली सड़क पर इकौना से ४ मील और बहरायच से २० मील दूर है। कहते हैं यह वही नगर है जिसे चीनी यात्री फाहियान ने तोवई बतलाया है जो स्त्रावस्ती से उत्तर-पश्चिम में ६० ली (९ मील) दूर था। प्राचीन श्रावस्ती और वर्तमान सेहत मेहत यहां से इतना ही दूर है। इसके पड़ोस में प्राचीन भग्नावशेष हैं। एक ऊँचे टीले के आगे सीता दोहर ताल है। एक मन्दिर में सीता जी की मूर्ति है। यहां वर्ष में दो बार सीता दोहर का मेला लगता है।

बस्ती

बस्ती का जिला एक चौड़ा कछारी मैदान है। नदी के किनारे की मंझा जमीन में झाऊ बहुत होती है। कुआनो और राप्ती नदियों के बीच में कुछ ऊंची जमनी है। राप्ती की घाटी में कुछ अधिक वर्षा होने से चावल बहुत होता है। पहले यहां जंगल बहुत था। पर खेती के लिये साफ कर लिया गया है। केवल गनेशपुर के पास बेंत का जंगल है। कुआनो नदी के किनारे किनारे साल वन है। पर जिले भर में मऊआ के पेड़ २ लाख से कम नहीं हैं।

इस प्रकार इस जिले की गुजर खेती से ही होती है। दस्तकारियां बहुत कम हैं। कई गांवों में मुसलमान जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं। इसके लिये लगभग १५ हजार मन सूत बाहर से आता है। मभार, काजी पुर, मेंहदावाल, सिकन्दरपुर, बहादुरपुर और पुरनिया बुनाई के प्रधान केन्द्र हैं। बहादुरपुर में बुनाई के सिवा कपड़े की रंगाई और छपाई भी होती है। बहुली में शोरा बनाया जाता है और शोरतगंज में चूड़ियां बनने लगी हैं। बखिरा और बिस्कोहर में ठठेरे लोग पीतल के बर्तन बनाते हैं। बांसी में सुन्दर भाले तैयार किये जाते हैं। चमड़ा कमाने का काम जिले भर में होता है। चिल्हिया में चिकनी मिट्टी के बर्तन बनते हैं।

गोरखपुर कमिश्नरी में बस्ती एक बड़ा जिला है। यह संयुक्त प्रान्त के उत्तरी पूर्वी कोने में स्थित है। इसका आकार कुछ विषम है। उत्तर से दक्षिण तक इसकी लम्बाई कहीं ६८ मील और कहीं ५२ मील है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी चौड़ाई कहीं २८ मील और कहीं ५२ मील है। इसका क्षेत्रफल २७९६ वर्ग मील है। इस प्रकार यह संयुक्तप्रान्त के सब से बड़े जिलों में एक है। इसकी जन-संख्या २०,७८६२४ है। पहले यह गोरखपुर जिले में ही शामिल था। इस समय गोरखपुर जिला बस्ती के पूर्व है। बस्ती के पश्चिम में गोंडा जिला है। दक्षिण की ओर घाघरा नदी बस्ती को फैजाबाद जिले से अलग करती है। उत्तर में नैपाल राज्य है। यहां से हिमालय की बाहरी श्रेणियां केवल बीस या तीस मील दूर रह जाती हैं।

बस्ती जिले की अधिकतर भूमि प्रायः समतल है। इसी से नदियां अधिक तेज नहीं बहती हैं। नदियां प्रायः उत्तर पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। नदियों की घाटियां बहुत उथली हैं। समुद्र-तल से बस्ती जिले की औसत ऊंचाई लगभग ३०० फुट है। उत्तरी-पश्चिमी कोने पर मभरा स्थान ३२६ फुट ऊंचा है। पूर्व की ओर डस्का के पास पुरौना स्थान की ऊंचाई २७३ फुट है। दक्षिण की

ओर खलीलाबाद के पास वाली भूमि समुद्र-तल से केवल २६३ फुट ऊंची है।

बस्ती जिले की भूरचना बहुत कुछ गोंडा और बहरायच जिलों से मिलती जुलती है। प्रायः समतल भूमि होने पर भी बस्ती जिला कई भिन्न भिन्न प्रदेशों में बँटा है।

(१) दक्षिण की ओर घाघरा नदी की घाटी वाली निचली भूमि है। यह निचली भूमि घाघरा से लेकर इसकी सहायता कुवना (Kuwana) तक फैली हुई है।

(२) मध्यवर्ती उच्च प्रदेश कुवना नदी और राप्ती नदी के बीच में स्थित है।

(३) राप्ती और नैपाल की तराई के बीच में इस जिले की इतनी (सब से अधिक) नीची भूमि है कि वहां का बरसाती पानी ठीक ठीक नहीं बह पाता है।

दक्षिण में घाघरा की कछारी भूमि ऊपर से तो पतली मजबूत मिट्टी से ढकी है। लेकिन इसके नीचे एकदम बालू है। प्रबल बाढ़ में कमजोर किनारों को तोड़कर घाघरा नदी अक्सर अपना मार्ग बदल देती है। किनारों के काटने से बहुत सी मिट्टी भी बह जाती है। कभी एक किनारा ऊँचा होता है। कभी नदी का दूसरा किनारा ऊँचा हो जाता है। ऊँचे किनारे के पास कभी गहरा पानी रहता है। कभी ऊँचे किनारे और पानी के बीच में मंझा पड़ जाता है। मंझा की भूमि वर्षा ऋतु में पानी के नीचे डूब जाती है। शीतकाल में यहां काफी उपजाऊ ईख और अनाजों की फसलें उगाई जाती है। यहां तरी रहती है। इससे सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। जिन भागों में खेती नहीं होती है वहां ढोर चला करते हैं। बहुत से भागों में जङ्गली झाऊ उगती है जो जलाने और छप्पर छाने के काम आती है। नदी के किनारे, किनारे काफी दूर भीतर की ओर तरहार है। इसे खादर और कछार भी कहते हैं। यहां बाढ़ के साथ बहकर आई हुई नई उपजाऊ मिट्टी की तहें बिछी हुई है। कहीं कहीं इसके नीचे डूबी हुई नावें गड़ी मिलती हैं। कहीं कहीं भूड़, धुस या बलुआ टीले हैं। कहीं कहीं दलदल और ताल हैं जहां धान की खेती होती है। कुछ स्थान ऊसर या रेहर हैं यहां नमकीन रेह बिछा हुआ है। बांगर की ऊँची भूमि से वर्षा जल शीघ्र बह जाता है। यह भूमि बड़ी कड़ी और खुश्क होती है। यह भी उपजाऊ नहीं है।

घाघरा और कुवना के सङ्गम के समीप कई भागों (वशेष कर महुली परगना) में तरहार की भूमि भी बाढ़ से पानी में डूब जाती है। फिर भी बस्ती जिले में कछारी भाग बड़े उपजाऊ हैं। यहां सिंचाई की बड़ी सुविधा है। कुयें और तालाब बहुत हैं। जमीन के नीचे थोड़ा खोदने से कुओं में पानी निकल आता है। तालावों में वर्षा ऋतु में नदी की बाढ़ का पानी भर जाता है। खुश्क ऋतु में ये ताल सिंचाई के लिये बड़े उपयोगी होते हैं। यहां गेहूँ, गन्ना, आलू, सकरकन्द आदि कई फसलें बड़ी अच्छी होती है। वह उपजाऊ प्रदेश अधिकतर महुली परगने में निचली कुवना और मनवार नदियों के दक्षिण में स्थित है। कुछ भाग इनके उत्तर में है।

उपरहार सिरा—उत्तर की ओर घाघरा के ऊँचे किनारे के पास तरहार का अन्त हो जाता है। इसके आगे लहरदार ऊंची भूमि है। इसे उपरहार कहते हैं। उपरहार की जमीन अच्छी नहीं है। इसमें बालू बहुत है। यहां सिंचाई के लिये झीलें या तालाब भी नहीं है। कुओं के खोदने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। वे थोड़े ही दिन रहकर सूख जाते हैं। इस सिरे की चौड़ाई अधिक नहीं हैं। नगर (पश्चिमी) के पास यह कुछ अधिक चौड़ा है। पश्चिमी महुली में इसमें केवल एक एक गांव की इकहरी पंक्ति बसी है।

उपरहार जिले के मध्यवर्ती ऊँचे मैदान को घेरे हुये हैं। उत्तर की ओर यह राप्ती की पुरानी धारा तक चला गया है। इसमें बस्ती और खलीलाबाद तहसीलों के अधिकतर भाग शामिल हैं। इसकी मिट्टी अधिकतर दुमट है। इससे ऊँचे भागों की मिट्टी हलकी और बलुई है। इसके बीच वाले भागों में भारी चिकनी मिट्टी है। यहां धान बहुत होता है। इस ऊँचे भाग में कई छोटी छोटी धारायें हैं। इनकी जमीन में भी भेद है। कुवना के पश्चिम और हरैया तहसील में अच्छी समतल भूमि है। इसे रवई ने

काट दिया है। रवई के ऊपरी भाग में रेहर है। कुवना के दोनों ओर की भूमि कुछ अच्छी नहीं है। इसे नालों ने काट दिया है। कुवना के पूर्व में अच्छी मिट्टी है। इसके ऊपरी भाग में कड़ी भाघड़ मिट्टी है।

राप्ती घाटी—वस्ती जिले के उत्तरी भाग में कई प्रकार की मिट्टी है। उपरहार के उत्तरी सिरे और राप्ती नदी के बीच में भाट या भात मिट्टी है। यह बड़ी उपजाऊ है। इसमें नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। इसमें गन्ना और पोस्त भी बिना सिंचाई के उगता है। यहां जङ्गली भाग उगती है। नदी की बाढ़ के साथ बह कर आने से यह मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि इसमें अलग से खाद नहीं डालनी पड़ती है। इसकी चौड़ाई अधिक नहीं है। पश्चिम की ओर ऊंचे भूमि और भाट के बीच में रेह वाली निकम्मी भूमि है। बीच में यह कुछ ऊंची है आगे चलकर नीची हो गई है। यहीं पथरी ताल और दूसरी झीलें हैं।

राप्ती के उत्तर में धान का प्रदेश है। यह भाग ऊँचा है। लेकिन वर्षा अधिक होने और पानी ठीक ठीक न बहने से यह धान की खेती के लिये बहुत अनूकूल है। इस कछार का अधिकतर भाग राप्ती की पुरानी धारा और विलार के बीच में स्थित है। प्रबल वर्षा के बाद कुछ गांवों को छोड़ कर यह सब का सब बाढ़ से डूब जाता है। इसमें गेहूँ और जौ की फसलें भी होती हैं।

धुर उत्तर में नैपाल की सीमा के पास तराई है। इस ओर की भूमि बड़ी नम है। यहां छोटी छोटी बहुत नदियां हैं। इधर की अधिकतर जमीन गोरे जमींदारों के हाथ में हैं।

वस्ती जिले की १/१० भूमि ऊसर है। तीन फीसदी भूमि जङ्गल से ढकी है। पहले यहां साल और दूसरे पेड़ों का वन बहुत था। जन संख्या के बढ़ने से साफ कर लिया गया है। ऊसर भागों में प्रायः ढाक बहुत है। इस समय साल बूढ़ी राप्ती के किनारे मिलता है। कुछ भागों में महुआ, आम और दूसरे पेड़ हैं। धान, मसूर, गेहूँ, जौ, चना, मटर और गन्ना यहां की प्रधान फसलें हैं। वर्षा अधिक होने से सिंचाई की अधिक जरूरत नहीं पड़ती है। कुछ सिंचाई तालाबों और कुओं से होती है।

नगर—अमोढ़ा गांव रामरेखा नदी के दाहिने किनारे पर बस्ती से २८ मील की दूरी पर बसा है। पड़ोस में एक पुराने किले के खंडहर हैं।

बंसी कस्बा राप्ती नदी के किनारे बस्ती से ३२ मील दूर है। यहां तक पक्की सड़क आती है। कहते हैं राजा वंसदेव ने बंसी नगर बसाया था। पुराने किले के खंडहर दक्षिण-पूर्व की ओर एक ऊँचे टीले पर हैं। यहीं राजाओं ने १७६८ में तेगधर का मन्दिर बनवाया था। पहले बंसी अनाज के व्यापार के लिये एक बड़ी मंडी थी। १८५५ में राप्ती का मार्ग बदला और यह नावों के चलने योग्य न रही। तब से यहां व्यापार कम हो गया। यहां तहसील अस्पताल हाई स्कूल और अफीम के अफसर का बंगला है। बंसी में भाला बनाने का काम अच्छा होता है।

बस्ती शहर तीन भागों में बसा हुआ है। प्रान्तीय पक्की सडक और रेलवे के बीच में धान के खेतों से घिरी हुई कुछ ऊंची भूमि पर पुरानी बस्ती है। यहां अधिकतर कच्चे घर हैं। बस्ती के राजा के किले के आस पास यह बहुत बढ़ गया। किले की एक बगल आध मील लम्बी थी। इसके चारों ओर गहरी खाई थी। इस समय खाई और दीवार के कुछ भाग शेष बचे हैं। पश्चिम की ओर राजा का निवास स्थान है। चौक में व्यापार होता है। यहाँ शनिवार और मंगलवार को बाजार लगता है। दक्षिण की ओर अफीम की गोदाम है। एक मील और आगे नया या पक्का बाजार है। यहां वकीलों और सरकारी नौकरों के घर हैं। सड़क के दक्षिण में सराय और मिशन हाई स्कूल है। बाजार से आध मील पश्चिम की ओर सिविल लाइन है। उत्तरी सिरे पर कचहरी, तहसील और थाना है। मैदान के चारों ओर योरूपीय लोगों के बंगले हैं।

बेल्हार कलां बस्ती से उत्तर-पूर्व की ओर २१ मील दूर है। यहां दो मन्दिर और एक उजड़ा ठाकुरद्वारा है। रामलीला के अवसर पर मेला लगता है।

भारी बस्ती से ३० मील दूर है। यहां एक बड़ा तालाब है कहते हैं कि यह श्रीकृष्ण जी को बड़ा प्रिय

था। यहां कार्तिक पूर्णिमा को स्नान का मेला लगता है। पास ही मन्दिर है।

वर्डपुर बंसी तहसील के टप्पा गौस में एक बड़ी योरुपीय जागीर है। इसका क्षेत्रफल, २६३१६ एकड़ है। उरका से आनेवाली पक्की सड़क यहां समाप्त हो जाती है। यह स्थान नौगढ़ रेलवे स्टेशन से ७ मील और बस्ती से ५४ मील दूर है। गोरखपुर के कमिश्नर महाशय वर्ड की स्मृति में इसका नाम वर्डपुर पड़ा। १८३२ में यह भाग कलकत्ता के मेकलाचन नामी एक योरुपीय को ५० वर्ष के लिये दे दिया गया। फिर यह एक दूसरे योरुपीय को बेच दिया गया। यहां दलदल और जङ्गल था। यहां लोग कम रहते थे। नील उगाने के लिये आजमगढ़ और छोटा नागपुर से किसान बुलाये गये।

बिस्कोहर पश्चिमी सीमा पर बस्ती से ५० मील दूर है। पहले यह नैपाली व्यापार का केन्द्र था। धाना, गेहूँ भी नैपाल से आता था। सूती कपड़ा, बर्तन, शक्कर, तम्बाकू यहाँ से जाता। यहां बाजार, प्रति दिन लगता है।

डोमरियागंज राप्ती के दक्षिणी किनारे पर बस्ती से ३२ मील दूर हैं। गांव छोटा है। लेकिन यहां तहसील है। पहले यहां एक छोटा किला था। गांव में बाजार लगता है।

दुबौलिया घाघरा नदी से पांच मील और बस्ती से १६ मील दूर है। रेलवे के पहले यहां घाघरा द्वारा बड़ा व्यापार होता था। गदर में इस गांव का मालिक (देवी बक्स सिंह) विद्रोही हो गया। यह गांव जब्त कर लिया गया।

गायघाट बस्ती से १६ मील की दूरी पर घाघरा से ४ मील दूर बसा है। पहले यह घाघरा के एक दम किनारे था। नदी के हट जाने से इसका व्यापार घट गया है।

गणेशपुर बस्ती से तीन मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। इसके दक्षिण में रवई, पूर्व में कुवना और उत्तर में मझोरा नदियां हैं। यहां दो बाजार लगते हैं। यह पिंडारी जागीर का केन्द्र स्थान है। पहले यहां नागर गौतमों का अधिकार था। उन्होंने यहां किला और खाई बनाई थी। १८११ में यह उनसे ले लिया गया और एक योरुपीय महिला को दिया गया। वह इसका प्रबन्ध न कर सकी। ईस्ट इण्डिया कम्पिनी ने उससे मोल लेकर अमीर खां पिंडारी के एक साथी को भेंट में दे दिया।

हैंसर बस्ती से ३१ मील की दूरी पर घाघरा के व्यापार का एक केन्द्र है। गदर के समय में यह गांव जब्त कर लिया गया और एक राजभक्त जमींदार को दे दिया गया।

हटिया मनवर नदी बायें किनारे पर एक गांव है और इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह बस्ती से १७ मील पश्चिम की ओर है। बाजार सप्ताह में दो दिन लगता है।

हरिहरपुर कटनेहिया नदी के बायें किनारे पर एक बड़ा गांव है। यह बस्ती से २१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। पहले यहां व्यापार अधिक होता था। इस समय २ दिन बाजार लगता है। यहां एक जूनिअर हाई स्कूल है।

इटावा पश्चिमी सिरे पर बस्ती से ४२ मील दूर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। एक छोटा बाजार लगता है। ककराही घाट बूढी राप्ती और बानगङ्गा के संगम पर बस्ती से ३८ मील की दूरी पर बसा है। बंसी से नैपाल को जानेवाली सड़क यहीं पर नदी को पार करती है। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां संगम स्नान का मेला होता है।

फलवारी पहले घाघरा के किनारे पर स्थित था। यह बस्ती से टांडा को जानेवाली पक्की सड़क से कुछ दूर पश्चिम में है। यहां अधिकतर कलवार रहते हैं। मसाले और अनाज का व्यापार होता है।

खलीलाबाद बस्ती से २२ मील पूर्व में तहसील का केन्द्र स्थान हैं। फैजाबाद से गोरखपुर को पक्की सड़क यहां होकर जाती है। बंगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे सड़क के समानान्तर चलती है। स्टेशन खलीलाबाद कस्बे से १ मील दूर है। १६८० में काजी खलीलुर्रहमान ने इसे बसाया था। इसी से इसका यह नाम पड़ गया।

लालगंज कुवना नदी के बायें किनारे पर कुवना और मनवर के संगम के सामने बसा है। यहां होकर मुंडर्वा रेलवे स्टेशन से गयाघाट और टांडा को सड़क जाती है। यहां शक्कर बनाने

और सूती कपड़ा छपाने का काम होता है। बाजार में साधारण व्यापार होता है। चैत-पूर्णिमा को सङ्गमस्नान का मेला होता है।

लोटन गांव घूंघी के दाहिने किनारे पर गोरखपुर की सीमा के पास बस्ती से ४७ मील दूर बसा है। नैपाल-युद्ध के समय एक ब्रिटिश सेना यहीं एकत्रित हुई थी। मधार नगर गोरखपुर से फैजाबाद को जानेवाली सड़क के पास बस्ती से २७ मील दूर है। सड़क के दक्षिण में रेलवे लाइन है। बाजार सप्ताह में एक बार लगता है। कार्तिक में एक छोटा मेला होता है। यहां कबीर शाह की छतरी है। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही यहां दर्शन करने आते हैं। कहते हैं कबीर ने १४५० ई० में यहीं शरीर छोड़ा था।

महुली गांव बस्ती से २१ मील उत्तर-पूर्व की ओर कुटनेहिया नदी के पास बसा है। पुराने किले के चिन्ह एक दम नष्ट हो गये हैं। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है।

मेंहदावल कस्बा बस्ती से २८ मील दूर है। यहां से कमेंनी घाट (राप्ती) खलीलाबाद और बस्ती को सड़कें गई हैं। राप्ती यहां से ५ मील दूर है। यहां थाना, अस्पताल और जूनियर हाई स्कूल है। शिवरात्रि (फाल्गुन में) को मेला लगता है।

नगर बस्ती से पांच मील की दूरी पर एक पुराना नगर है। इसके पश्चिम में चन्दे ताल है। पहले कुछ लोगों का अनुभव था कि महात्मा गौतम बुद्ध यहीं पैदा हुये थे। यहां गौतम राजाओं के एक पुराने किले के खंडहर हैं।

नौगढ़ जमूवर के किनारे एक प्रसिद्ध बाजार है। पास ही रेलवे स्टेशन है। यह नैपाल के व्यापार की एक बड़ी मंडी है। योरुपीय जागीरदारों इसके बढ़ने में बड़ा प्रोत्साहन मिला।

शोहरत गंज नैपाल की सीमा से ५ मील दक्षिण की ओर एक प्रगतिशील बाजार है। इसे चांदपुर के बाबू शोहरत सिंह ने लगवाया था। धान कूटने तेल पेरने की मशीनों का प्रयोग आरम्भ किया था।

तामाक का छोटा गांव बस्ती से २५ मील दक्षिण की ओर है। शिवरात्रि के अवसर पर यहां बड़ा मेला लगता है।

उसका गांव धमेला नदी के पूर्वी किनारे पर बस्ती से ४६ मील की दूरी पर बसा है। बाजार नैपाल से गोरखपुर को जानेवाली सड़क पर लगता है। उसका बाजार में नैपाल की सरसों और दूसरा सामान बिकने आता है। पहले नैपाल के लिये यही स्टेशन सब से अधिक निकट था। रेलवे स्टेशन कस्बे से पश्चिम की ओर है।

गोरखपुर

गोरखपुर का जिला संयुक्त प्रान्त के धुर उत्तरी पूर्वी सिरे पर स्थित है। यह समूचा जिला घाघरा नदी के उत्तर में है। घाघरा नदी गोरखपुर को आजमगढ़ और वलिया जिलों से अलग करती है। इसके पश्चिम में बस्ती जिला है। प्रायः दो मील तक घाघरा के उस पार फैजाबाद का जिला है। पूर्व में विहार के सारन-चम्पारन जिले हैं। पूर्व की ओर कुछ दूर तक छोटी बड़ी गंडक प्राकृतिक सीमा बनाती है। शेष पूर्वी सीमा कृत्रिम है। उत्तर की ओर नैपाल का स्वाधीन राज्य है। इस ओर कुछ भूमि तटस्थ छोड़ दी गई है। इसी के बीच में सीमा निश्चित करने के लिये पक्के खम्भे बना दिये गये हैं। गोरखपुर का जिला २६°'५' और २७°'२९' उत्तरी अक्षांशों और ८३°'४' और ८४°'२६' पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। घाघरा नदी के इधर उधर हो जाने से गोरखपुर जिले का क्षेत्रफल घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल ४५१५ वर्गमील है। क्षेत्रफल में गोरखपुर संयुक्तप्रान्त का सब से अधिक बड़ा जिला है।

भूरचना—गोरखपुर जिले से हिमालय की बाहरी श्रेणियां अधिक दूर नहीं हैं। इस ओर हिमालय की २७००० फुट ऊँची धवलागिरि चोटी वर्षा ऋतु और शीतकाल में आकाश निर्मल रहने पर उत्तर में प्रायः गोरखपुर शहर तक दिखाई देती है। हिमालय की बाहरी श्रेणी के दक्षिण में भावर का शूखा प्रदेश है जहां वर्षा-जल भेद्य चट्टानों के नीचे छिप जाता है। यह भावर प्रदेश नैपाल राज्य में है। भावर के दक्षिण में तराई की दस मील चौड़ी पेटी है। यह बहुत नम है। लेकिन मलेरिया फैलने के कारण यहां खेती अधिक नहीं होती है। यह गोरखपुर जिले की महाराज गंज तहसील के उत्तरी सिरे पर पाई जाती है। तराई के दक्षिण में वन की पेटी है। वन के विखरे हुये प्रदेश जिले के प्रायः मध्य भाग तक पाये जाते हैं। वनों से यहां वर्षा अधिक होती है। सब कहीं हरा भरा रहता है। कुओं में पानी पास ही निकल आता है।

खुला हुआ मैदान प्रायः समतल है। इसका क्रमशः ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है। उत्तर-पश्चिम में समुद्र तल से भूमि की ऊँचाई २५० फुट है। दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर भूमि केवल २०५ फुट ऊँची रह गई है। कहीं कहीं रेतीले टीले हैं। रेतीले टीलों की एक श्रेणी महराज गंज तहसील के हाटा गांव के पास से आरम्भ होकर देवरिया तक चली गई है। सम्भव है यहां पुराने समय में गंडक या किसी दूसरी बड़ी नदी का मार्ग रहा हो। इसके पड़ोस में झीलों की एक पंक्ति फैली हुई है। कुआं खोदने पर निचले भाग में यहां छोटे छोटे कंकड़ों की तह मिलती है। इसी प्रकार के रेतीले टीलों की पंक्ति पडरौना और कसिया के बीच में मिलती है। यहीं जिले का सब से (३८६ फुट) ऊंचा भाग है। इनके अतिरिक्त नदियों के पड़ोस में जिले का नीचा कछारी मैदान है। कछार के ऊपर ऊँचा मैदान या बांगर है।

जिले के पूर्वी भाग में भाट प्रदेश है। यह बड़ी गंडक की लाई हुई कांप से बना है। इसमें चूना अधिक है। इस मिट्टी में अधिक समय तक नमी रहती है। इससे बिना सिंचाई के ही यहां फसल उग आती है। लेकिन इस मिट्टी से कच्ची दीवारें नहीं बनाई जा सकतीं इसी से इस ओर के गांवों के घर छप्परों से छाये जाते हैं इनकी दीवारें पतली लकड़ियों से बनाई जाती हैं। इस जिले में एक विशेषता यह है कि यहां ऊसर कहीं नहीं पाया जाता है।

नदियां—बड़ी गंडक जिले के उत्तरी-पूर्वी भाग की प्रसिद्ध नदी है। यह नैपाल में हिमालय की हिमाच्छादित श्रेणी से निकलती है। त्रिवेणी के पास (जो जिले की सीमा से १० मील दूर है) यह पहाड़ी नद कन्दराओं को छोड़कर मैदान में प्रवेश करती है। इसे नारायणी भी कहते हैं। नैपाल में इसे शालिग्रामी कहते हैं। यह दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है और कुछ दूर तक जिले की सीमा बनाती है और इस जिले को चम्पारन जिले से पृथक करती है। पडरौना तहसील के वन के कुछ गांव इसके

बायें किनारे पर स्थित हैं। इसके आगे यह विहार में प्रवेश करती है और पटना के पास गंगा में मिल जाती है। पहले कुछ दूर गोरखपुर जिले की सीमा बनाने के बाद यह सीमा से दूर हो जाती है। अन्त में यह फिर जिले की सीमा के पास आ जाती है। बीच वाले भाग में गंडक की सोता नाम की एक शाखा सीमा बनाती है। गंडक बड़ी नदी है। गरमी की ऋतु में भी इसमें अधिक जल रहता है। जिले के जिस स्थान को यह प्रथमवार छूती है वहां इसका जल बड़ा ठन्डा और निर्मल रहता है। यहां इसकी धारा भी बड़ी तेज है। इसके तली में छोटे छोटे पत्थर विछे हैं। पानी गहरा होने से गंडक में बड़ी बड़ी नावें चल सकती हैं। लेकिन इसके कुछ भागों में भंवर हैं जिससे नावें संकट में पड़ जाती हैं। छोटी नावें त्रिवेणी सिकन्दरा के समीप तक पहुँच जाती हैं। वर्षा ऋतु में गंडक में अचानक भयानक बाढ़ आ जाती है। इससे नैपाल का विशाल वन प्रदेश और गोरखपुर जिले की सीमा के पास का बहुत सा भाग जलमग्न हो जाता है। इसकी बाढ़ का पानी चन्दन और रोहिन नदियों में पहुँचता है। दोमाखंड के पास इसके बाढ़ का कुछ पानी छोटी गंडक में भी पहुँच जाता है। पहले बाढ़ का पानी वनरो नदी में आता है जो पडरौना के पास बन्सी नदी में मिल जाती है। बन्सी नदी बड़ी गंडक में मिलती है। इस प्रकार बड़ी गंडक की बाढ़ का पानी फिर उसी (बड़ी गंडक) में पहुँच जाता है। बाढ़ का कुछ पानी खनुआ नदी में पहुँचता है। जो राम-भार ताल में होती हुई पसिया के समीप वाले स्थानों को जलमग्न कर देती है। लेकिन बाढ़ कुछ ही समय तक रहती है। कभी कभी खरीफ की फसल कट जाने के बाद बाढ़ आती है। इससे इसकी बाढ़ से अधिक हानि नहीं होती है। बगहा के पास बड़ी गंडक के ऊपर रेल का पुल बना है। गोला, पिपरा घाट, साहबगंज आदि स्थान पर इसे पार करने के लिये नावें रहती हैं। गंडक में कई छोटी छोटी नदियां मिलती हैं। बन्सी नदी वास्तव में गंडक की छाड़ (छोड़ी हुई धारा) है। कुछ दूर तक यह जिले की सीमा बनाती है। साहबगंज के पास यह सोता में मिल जाती है। झरई इस समय घाघरा में मिलती है। पहले यह गंडक की ही छाड़ (छोड़ी हुई धारा) थी। झुरई गरमी की ऋतु में प्राय: सूख जाती थी। वर्षा ऋतु में यहां मलेरिया ज्वर बहुत फैलता है। १६०८ में इसकी तली गहरी कर दी गई।

छोटी गंडक भी बड़ी गंडक की पुरानी धारा है। यह नैपाल के बाघ वन के पास से आरम्भ होती है। सितलापुर के पास यह ब्रिटिश जिले में प्रवेश करती है। इसके एक मील आगे इसकी दो धारायें हो जाती हैं। एक धारा उत्तर-पश्चिम की ओर बहकर चन्दन में मिल जाती है। दूसरी धार छोटी गंडक नाम से दक्षिण की ओर बहती है। हेतिमपुर तक यह पडरौना की पश्चिमी सीमा बनाती है। शाह-जहांपुर और सलेमपुर परगनों में बहती हुई सिम-रिया के पास जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने पर यह घाघरा में मिल जाती है। वर्षा ऋतु को छोड़ कर शेष ऋतुओं में यह प्राय: सूखी पड़ी रहती है। खेकरा, हिरनी, घटनी, मौन आदि नाले इसमें मिलते हैं।

राप्ती गोरखपुर जिले की प्रधान नदी है। पहले इसे इरावती कहते थे। इससे बिगड़कर इसका नाम रावती पड़ा। रावती से बिगड़ कर इसका नाम राप्ती पड़ गया। यह नैपाल में हिमालय की बाहरी श्रेणी से निकलती है। बहरायच गोंडा और बस्ती जिलों में बहती हुई मगल्हा गांव के पास यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है। इसके आगे कुछ मील तक जिले की सीमा बनाने के बाद जिले के भीतर बहती है। यहां इसे धमेला करते हैं। राप्ती का मार्ग बड़ा टेढ़ा है। गोरखपुर शहर के पास होकर बहती हुई बरहज के समीप यह घाघरा में मिल जाती है। बाढ़ के बाद राप्ती उपजाऊ कांप छोड़ देती है। इसकी छोड़ी हुई बालू में भी कुछ वर्षों के बाद फसलें होने लगती हैं। पहले इसमें १०० टन बोझ वाली नवें चला करती थीं। इसके ऊपर वन और लकड़ी ढोने का काम बहुत होता था। रेलवे के खुल जाने से नदी का व्यापार नष्ट हो गया। राप्ती के ऊपर भाऊपार घाट और बर्ड घाट में पीपों का पुल बन जाता है। शेष स्थानों में राप्ती को पार करने के लिये नावें चला करती हैं। राप्ती में कई नदियां मिलती हैं। घूंघी बांये किनारे पर मिलती है। घूंघी

नदी नैपाल तराई की बाहरी पहाड़ियों से निकलती है। यह दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और कई मील तक नैपाल राज्य और गोरखपुर जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसी बीच में तराई की डंडा और जूड़ी दो छोटी नदियां इसमें मिलती हैं। इसके आगे यह दक्षिण की ओर मुड़ती है और कुछ दूर तक बस्ती जिले को गोरखपुर जिले से पृथक करती है। निगमलगंज इसी के किनारे स्थित है। आगे चलकर यह दो धाराओं में बट जाती है। यह दोनों धारायें रिगौली के पास घमेला में मिल जाती हैं। इस ओर और एक दो वन प्रदेश की बहुत छोटी नदियां मिल जाती हैं। नैपाल में इसे तिनान कहते हैं। वहां वर्षा के अन्त में इसके आर पार बांध बना लिया जाता है और इसका जल सिंचाई के काम आता है। इसकी तली गहरी और रेतीली है। इसका जल निर्मल है। वर्षा ऋतु में उमड़ कर यह बड़ी नदी हो जाती है। इसके अन्त में यह सिकुड़ जाती है और इसमें पांज हो जाती है। घमेला राप्ती की पुरानी धारा है। इसमें बस्ती जिले की तराई से आनेवाली कुहरा और दूसरी छोटी छोटी नदियां मिल जाती हैं। गोरखपुर जिले में १० मील बहने के बाद कमनी घाट के पास यह राप्ती में फिर मिल जाती है। इसके किनारे ऊंचे हैं। यह नाव चलाने के लिये बड़ी अच्छी है। वर्षा ऋतु में इसमें २० फुट ऊंची बाढ़ आती है। इस बाढ़ से इसके समीप की भूमि डूब जाती है। पहले इसके बायें किनारे से कुछ दूर बसे हुये उसका और धानी के बीच में इस नदी के ऊपर बहुत सा सामान ढोया जाता था। रेल के खुल जाने से अब अनाज बैल गाड़ियों पर लाद कर निजमन गंज स्टेशन को पहुँचा दिया जाता है।

राप्ती की दूसरी सहायक नदी रोहिन है जो नैपाल से आकर विनायकपुर परगने में प्रवेश करती है। हवेली परगने को पार करने के बाद यह गोरखपुर शहर के पास राप्ती में मिल जाती है। इसके किनारे आरम्भ में सपाट हैं। लेकिन जिले में अधिक आगे बढ़ने पर यह मैदान की दूसरी नदियों के समान हो जाती है। छोटे छोटे पत्थर पीछे छूट जाते हैं। डोमिनगढ़ के पास इस पर रेल का पुल बना है। महुई के पास रोहिन में नैपाल से आनेवाली बघेला नदी मिलती है। कुछ छोटे नालों का पानी लेकर पियास या झरई नदी भी रोहिन में मिलती है। झरलहिया के पास इस में बलिया नदी मिलती है। चिलुआ नदी चिलुआ ताल को पार करके मनीराम के पास रोहिन में मिलती है। दाहिने किनारे पर रोहिन में केवल कलन नदी मिलती है। रोहिन बघेला और पियास नदियां सिंचाई के काम आती हैं। सींचने के लिये नैपाल में इनमें बांध बना लिये जाते हैं। इस जिले में भी कहीं कहीं इनके पानी से सिंचाई होने लगी है।

तूरा एक छोटी नदी है। यह रामगढ़ वन में होती हुई दक्षिण की ओर बहती है। मंझा गांव के पास यह गरांया गौरा में मिल जाती है। गौरा में रामगढ़ और नरही ताल की बाढ़ का पानी आता है। कुछ दूर तक यह राप्ती की समानान्तर बहती है। सिमरौना नाला के मार्ग से राप्ती की बाढ़ का पानी गौरा में पहुँच जाता है। अधिक दक्षिण में गौरा में फरेंद नदी मिलती है। फरेंद के पड़ोस में जङ्गली जामुन बहुत हैं। इसी से इसका यह नाम पड़ा। इसका मार्ग बड़ा टेढ़ा है। समोगर के पास यह राप्ती में मिल जाती है। नचले मार्ग में इसे प्रायः पटना नाम से पुकारते हैं। मदनपुर के पास इनमें मझना नदी मिलती है। अमी और तरैना नदियां राप्ती के दाहिने किनारे पर मिलती हैं। अमी नदी बस्ती जिले के रसूलपुर, परगने से निकलती है। ४४ मील बहने के बाद रामपुर के पास यह गोरखपुर जिले में प्रवेश करती है। दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुई सोनगौरा के पास यह राप्ती में मिल जाती है। यह मन्द वाहिनी छोटी नदी है। केवल वर्षा ऋतु में यह उमड़कर अभियर ताल भर देती है। बाढ़ में बहुत सी भूमि डूब जाती है। बांगर के कुछ भाग द्वीप के रूप में बच जाते हैं। एक द्वीप कलेसर से नेवास तक और दूसरा हरदिया से मलौन तक आजमगढ़ सड़क के दोनों ओर बन जाता है। राप्ती का कछार बाढ़ में प्रतिवर्ष डूब जाता है। बांगर को बचाने के लिये बांध बना दिये गये हैं। प्रबल बाढ़ में बांध भी टूट जाते हैं। एक बांध

१६ मील लम्बा है और पीपों के पुल से कुइन बाजार तक राप्ती के पूर्वी किनारे पर चला गया है। यह बांध तीन फुट से १२ फुट तक ऊंचा और ५ फुट चौड़ा है। लहसारी नाले के पास यह ३० फुट ऊंचा है।

तरैना नदी उनौला परगने के दक्षिण में निकलती है और धुरिया पार होकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। भेड़ी ताल में पहुँच कर यह इसके पूर्वी सिरे से फिर निकलती है। पूर्व की ओर बहकर यह राप्ती में मिल जाती है। गरमी की ऋतु में इसमें बहुत कम पानी रह जाता है। वर्षा ऋतु में इसमें प्रबल बाढ़ आती है। १८७१ की बाढ़ में इसने आजमगढ़ को जानेवाली सड़क का पुल तोड़ दिया। इस नदी में नाव चलाने के लिये वर्ष भर पानी नहीं रहता है। लेकिन सिंचाई के लिये यह बड़ी उपयोगी है।

घाघरा को सरयू और देहवा भी कहते हैं। इसमें चौका या सारदा और कौरियाला का पानी आता है। दोनों नदियां बाराबंकी जिले के बहराम घाट के पास मिल जाती हैं। चौका और सारदा दोनों ही हिमालय के हिमागारों से निकलती हैं। सारदा अल्मोड़ा से और चौका नैपाल से आती है। घाघरा भारतवर्ष की विशाल नदियों में से एक है इसकी तली चौड़ी और रेतीली है। इस रेतीली पेटी में घाघरा अपना मार्ग बदलती रहती है घाघरा की गहरी धारा जिले की सीमा बनाती है। इसके दूसरी ओर आजमगढ़ और बलिया के जिले हैं। बलिया के सामने वाला किनारा तुरतीपुर के पड़ोस में कड़ा और कंकरीला है। लेकिन आजमगढ़ जिले के समीप रेतीली तली को काटकर घाघरा प्रायः प्रतिवर्ष अपना मार्ग बदल देती है। इससे गोरखपुर और आजमगढ़ जिलों के क्षेत्रफल में भी परिवर्तन होता रहता है। मझदीप के पास घाघरा गोरखपुर जिले को प्रथमबार छूती है। गोला, बढ़लगंज, राजपुर और भागलपुर के पास बहती हुई पूर्व में यह सारन जिले में पहुँचती है। रेलवे के खुल जाने से नावों का व्यापार नष्ट हो गया। इसी से नगरों का भी ह्रास हो गया। लेकिन इस नदी के समीप बसे हुये बरहज नगर में रेल के आ जाने से इसकी उत्तरोत्तर उन्नति होती हुई। घाघरा के किनारे ऊंचे और सपाट हैं। फिर भी भयानक बाढ़ में यह नदी उमड़कर अपने पड़ोस की भूमि को डुबा देती है। बाढ़ के बाद स्थान स्थान पर इसकी धारा के बीच में द्वीप निकल आते हैं। बायां किनारा रेतीला है। अतः इस ओर बाढ़ दूर तक पहुँचती है। भागलपुर के पास तूर्तीपुर में घाघरा के ऊपर रेल का पुल बना है। कई स्थानों पर घाघरा को पार करने के लिये (नाव के) घाट हैं। आजमगढ़ को जानेवली प्रान्तीय सड़क के मार्ग का घाट अधिक प्रसिद्ध है। यह गोरखपुर जिले में भागलपुर और आजमगढ़ जिले में दोहरी घाट है। राप्ती और छोटी गंडक के अतिरिक्त कुवना या कुआनों नदी इस जिले में घाघरा में मिलती है। कुवना बहराईच जिले से निकलकर गोंडा और बस्ती जिलों को पार करती हुई कुछ दूर तक बस्ती और गोरखपुर जिलों के बीच में सीमा बनाती है। धुरिया पार परगने को पार करके शाहपुर के पास वह घाघरा में मिल जाती है। यहां इसकी तली गहरी और रेतीली है। कभी कभी घाघरा की बाढ़ का पानी इसमें आ जाता है। गोरखपुर में ऐसी झीलों की संख्या बहुत है जिनमें साल भर पानी रहता है। अधिकतर झीलें नदियों के छोड़े हुये पुराने मार्ग में स्थित हैं। सिरों पर कांप के भर जाने से लम्बी अर्द्ध चन्द्राकार झीलें बन गई। इनके अतिरिक्त कुछ क्षणिक झील और दलदल हैं। जो वर्षा ऋतु में पानी से भर जाते हैं और शेष ऋतुओं में सूख जाते हैं। गोरखपुर शहर के पास कसिया को जानेवाली सड़क के दक्षिण में रामगढ़ ताल है। यह गोरों के कब्रिस्तान से लोहे के पुल तक चला गया है। पहले इसमें नर कुल बहुत होते थे। इनसे मलेरिया फैलता था। इसलिये म्यूनिसिपैलिटी ने कटवाकर एक मार्ग से ताल के पानी को राप्ती में पहुँचाने का प्रयत्न किया। पर इसका फल उल्टा हुआ। वर्षा ऋतु में राप्ती की प्रबल बाढ़ का जल ताल में आने लगा। अतः बांध बनाकर लहसारी के पास नाले का मुंह बन्द कर दिया गया रामगढ़ ताल

में मछलियां बहुत हैं। जिले के पास वाले मल्लाह पकड़ा करते हैं।

कुछ मील दक्षिण-पूर्व की ओर राप्ती के कछार में अधिक छोटा नरहे ताल है। गर्रा नदी इसे रामगढ़ ताल से मिलाती है। ग्रीष्म ऋतु में इसका अधिकतर भाग सूख जाता है। उस समय गाय भैंस इसकी घास चरा करती हैं।

डोमिनगढ़ और करमैनी झीलें गोरखपुर शहर के पश्चिम में स्थित हैं। राप्ती में मिलने से पूर्व रोहिन नदी ने अपनी बाढ़ से इन झीलों को बनाया है। इन दोनों के बीच में कुछ ऊंची भूमि है। लेकिन वर्षा की प्रबल बाढ़ में दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। रेलवे के बांध से उत्तर की ओर सात मील तक पानी फैल जाता है। वर्षा के अन्त में अधिकांश पानी राप्ती में बह जाता है और ताल छोटे रह जाते हैं।

इसी प्रकार की छोटी छोटी झीलें राप्ती के दाहिने किनारे पर हैं। गोरखपुर शहर से ६ मील दक्षिण की ओर आजमगढ़ को जाने वाली सड़क के पास ही नन्दौर ताल स्थित है। यह ढाई मील लम्बा और आध मील चौड़ा है। इसका जल बड़ा निर्मल है। इसमें मछलियां बहुत हैं। वर्षा ऋतु में इसका जल बहुत बढ़ जाता है। लेकिन इसमें वर्ष भर पानी बना रहता है। इससे कुछ मील दक्षिण की ओर अमियर ताल है। यह अमी नदी की बाढ़ के जल से बना है। यह कई मील लम्बी घाटी को घेरे हुये हैं। इसके पूर्व में बिजरा ताल है। वर्षा के अन्त में इसके किनारों पर सूखी भूमि निकल आती है। इसमें रबी की बढ़िया फसल होती है।

चिल्लू पार परगने में घाघरा और राप्ती नदियों के बीच में भेंड़ी ताल है। यह तरैना नदी की बाढ़ से बना है जो इस ताल में होकर जाती है। वर्षा ऋतु में यह पांच मील लम्बा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूख कर यह बहुत छोटा रह जाता है। कांप के भर जाने से इसका विस्तार लगातार कम होता जा रहा है। इसके पूर्वी सिरे से बचा हुआ पानी राप्ती नदी में पहुँचता है। कभी कभी प्रबल बाढ़ में यह अपने समीप के प्रदेश को घाघरा के किनारे तक डुबा देती है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसके घोंघे चूना बनाने के लिये इकट्ठे किये जाते हैं।

चिलुआ ताल हवेली परगने की चिलुआ नदी के फैलने से बना है। यह बहुत लम्बा और तंग है। मनोराम के पास यह सिकुड़ कर नदी का रूप धारण कर लेता है। इसका जल रोहिन में मिल जाता है। पहले इसके संकुचित भाग में पक्का पुल बना था। प्रबल बाढ ने पुल तोड़ डाला इन्हीं महरामों के ऊपर रेल का पुल बनाया गया।

पुल के पश्चिम में इसे महेश्वर ताल नाम से पुकारते हैं। इसके बीच में एक छोटा द्वीप है। कहते हैं पुराने समय में यहां एक राजा का महल बना हुआ था। यहां मछलियां बहुत हैं। इसके पड़ोस में मल्लाह बहुत रहते हैं। रोहिन के पश्चिम में रोहिन और राप्ती के द्वाब में कई छोटे छोटे ताल हैं।

पूर्वी भाग में रामाभर ताल प्रधान है। यह कसिया से देवरिया को जाने वाली पक्की सड़क के पश्चिम में स्थित है। वर्षा काल में यह एक मील लम्बा और चौथाई मील चौड़ा हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु में सूख कर यह आधा रह जाता है। इसमें मछलियां बहुत हैं। इसके पानी से सिंचाई भी होती है। इस भाग के दूसरे ताल अधिक छोटे हैं।

वन को छोड़कर गोरखपुर जिले की २५ फीसदी (एक चौथाई) भूमि जलमग्न उसर अथवा अन्य कारण से खेती के काम नहीं आती है। इसमें कुछ भूमि एक दम पानी से घिरी है। कुछ भूमि में रेल, सड़क और घर बने हैं। बहुत ही थोड़ी भूमि उजाड़ है जहां खेती नहीं हो सकती है। कुछ भूमि में बाग और चरागाह हैं। गोरखपुर जिले का वन बड़ा उपयोगी है। पहले वन अधिक भूमि घेरे हुये था। खेती के बढ़ने से वन का क्षेत्रफल घट गया है। १८३० ईस्वी से नाम मात्र का लगान लेकर वन का पट्टा दिया जाने लगा। इससे कुछ ही समय में बहुत सा बन साफ कर लिया गया। १८५० में यह प्रथा बन्द कर दी गई और बन सरकारी रक्षित वन घोषित कर दिया गया। जङ्गल की भूमि भी इसमें मिला दी गई। इसी से जिले में अलग अलग टुकड़ों में बिखरा हुआ बन प्रदेश पाया जाता है। इस जिले में समस्त वन १५३ वर्ग मील है।

यह १४ भागों के बंटा हुआ है। इस प्रदेश की भूमि बलुई दुमट है। इस पर सड़ी हुई वनस्पति की पतली तह बिछी हुई हैं। दलदलों में चिकनी मिट्टी है। कहीं कहीं कंकड़ है। कहीं एकदम बालू है। दोमाखंड वन का वर्षा जल बहकर बड़ी गंडक में जाता है। उत्तरी और मध्यवर्ती भाग के रोहिन और पियास का प्रवाह प्रदेश है। नदियों के पड़ोस में प्रायः दलदल है। वर्षा ऋतु में नदियों के पास वाले वन प्रदेश पानी में डूब जाते हैं। इनमें जङ्गली जामुन और घास है। वन का सबसे अधिक मूल्यवान पेड़ साल है। यह निचली भूमि से १० से लेकर ४० फुट की ऊंचाई तक उगता है। जिले के १०३ वर्गमील वन साल के वृक्षों से घिरा है। अधिक बड़े पेड़ कम हैं। जहां वर्षा जल ठीक ठीक नहीं बह पाता है वहां साल के पेड़ नहीं होते हैं। अधिक कड़ी चिकनी मिट्टी में भी साल नहीं होता है। घास वाले भागों में असेना के पेड़ होते हैं। नदियों के समीप जङ्गली जामुन के अतिरिक्त हल्दू और खैर के वृक्ष भी होते हैं। गंडक से दूसरे सिरे पर डोमाखंड में ६०० एकड़ भूमि में केवल खैर (कत्था) के ही पेड़ हैं। वन में महुआ शीशम सेमल और आंवला के भी पेड़ पाये जाते हैं। सरकारी वन के अतिरिक्त महाराजगंज और पडरौना तहसील में कुछ वन अलग अलग व्यक्तियों के हाथ में भी है। इसमें भी साल और दूसरे उपयोगी वृक्ष पाये जाते हैं। पहले वन में जङ्गली पशु बहुत थे। चीता गंडक के समीप वाले बन और डोमाखंड में पाया जाता है। कुछ भागों में तेंदुआ बहुत हैं। भेड़िया कम हैं। भालू भी मिलते हैं। घाघरा के पड़ोस वाले दियरा (जङ्गल) में जङ्गली सुअर, चीतल और नील गाय बहुत हैं। नदियों में घड़ियाल पाये जाते हैं।

जलवायु—पश्चिमी जिलों की अपेक्षा गोरखपुर जिले की जलवायु अधिक समशीतोष्ण है। वन और पर्वत पास होने से यहां ग्रीष्म ऋतु में गरमी अधिक विकराल नहीं होने पाती है। परन्तु तापक्रम छाया में १०५ अंश से अधिक ऊंचा नहीं होता है। ११० अंश तक कभी नहीं पहुँचा है। प्रायः १०० अंश रहता है। ग्रीष्म के आरम्भ में पर्वत की ओर से तूफान आ जाया करते हैं। यहां लू भी दो तीन सप्ताह से अधिक नहीं चलती है। धूल भरी आंधी भी बहुत कम आती है। हवायें प्रायः सभी ऋतुओं में पूर्व की ओर से आती हैं। शीतकाल बड़ा मनोहर होता है। लेकिन दिसम्बर या जनवरी का तापक्रम ५० अंश से कम नहीं होने पाता है। वर्षा ऋतु में तराई के पास वाली महाराजगंज और पडरौना तहसीलों में मलेरिया बहुत फैलता है।

गोरखपुर जिले में पर्वतीय प्रदेश को छोड़ कर मैदान के जिलों में सबसे अधिक वर्षा होती है। औसत से यहां ५२ इञ्च से अधिक वर्षा होती है। उत्तर के वन प्रदेश में सबसे अधिक वर्षा होती है। महाराजगंज में प्रायः ६० इञ्च वर्षा होती है। देवरिया में ४६ इञ्च वर्षा होती है। किसी किसी वर्ष (१८६६) में जिले में औसत से ७३ इञ्च वर्षा हुई है। उस वर्ष महाराजगंज में ८२ इञ्च वर्षा हुई। किसी वर्ष यहां ४० इञ्च से कम वर्षा नहीं हुई।

कृषि—खेती के लिये यहां प्रायः सभी प्राकृतिक सुविधायें हैं। फिर भी इस जिले में कृषि अधिक उन्नत दशा में नहीं है। यहां की भूमि बड़ी उपजाऊ है। ऊसर भूमि का प्रायः अभाव है। प्रचुर वर्षा होने से सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती है। पर सिंचाई की पूरी सुविधा है। कुओं में ५ गज की गहराई पर पानी निकल आता है। झीलों तालाबों और नदियों से भी सिंचाई होती है। फिर भी जिले के बड़े भाग (जैसे कछार) में केवल एक फसल उगाई जाती है। बाढ़ आने पर इस फसल का भी निश्चय नहीं रहता है। उत्तर और पूर्व में भी दूसरी फसल उगाने का विशेष प्रयत्न नहीं किया गया। केवल उपजाऊ भाग (पडरौना तहसील और देवरिया के कुछ भाग में भाट भूमि है) प्रदेश में दो फसलें होती है। दूसरी फसल रबी की होती है। वन को छोड़कर जिले की ७५ फीसदी भूमि में खेती होती होती है। नदियों के समीप नीचा कछार है। इनसे आगे ऊपर ऊंचा बांगर है। बांगर में बलुआ (भूड़) मिट्टी है। कहीं कहीं मटियार, चिकनी मिट्टी है। अधिकतर भाग में दोरस या दुमट मिट्टी पाई जाती है। नैपाल की सीमा के पास तराई है। यह बांगर का ही अङ्ग है। यहां

गुड़ और शक्कर बनाने का काम होता है। यहां से ६ लाख मन गुड़ और चीनी बाहर भेजी जाती है। गोरखपुर जिले में नैपाल से प्रतिवर्ष प्राय: २ लाख मन चावल आता है। तिलहन, घी और चमड़ा भी आता है। कुछ तांबा भी आ जाता है। यहां से विलायती कपड़ा, नमक, चीनी आदि नैपाल को जाता है।

जन संख्या—गोरखपुर जिले की जन-संख्या लगभग ३० लाख है। केवल पांच फीसदी मनुष्य कस्बों में रहते हैं। शेष छोटे छोटे गांवों में रहते हैं। जिन नगरों की जन-संख्या ५००० से अधिक है वे केवल बारह (गोरखपुर, बरहज, पडरौना, सलेमपुर-मझौली, बढ़लगंज, बांसगांव, पैना और बसगवां) हैं। इस जिले में प्राय: ९० फीसदी हिन्दू और १० फीसदी मुसलमान हैं। अन्य धर्मावलम्बियों की संख्या कुछ ही सौ है। हिन्दुओं में सब से अधिक संख्या चमारों की है। इनके पश्चात् अहीर ब्राह्मण, कुरमी कोरी, राजपूत, केवट (मल्लाह) कहार, बनिया, कुम्हार आदि हैं। कुछ मगहिया डोम लोगों में (सम्भवत: निर्धनता के कारण) अधिकतर चोरी करने का स्वभाव पड़ गया था।

थारू लोगों की संख्या प्राय: ३ हजार है। यह अधिकतर विनायकपुर और तिलपुर परगनों में रहते हैं। यह कमायूं की तराई में रहने वाले थारू लोगों के समान हैं। यहां बड़े नियम से रहते हैं। इन्हें मलेरिया के प्रदेश में भी ज्वर नहीं सताता है। यह तराई के प्रदेश में धान उगाते हैं और बड़े परिश्रम से खेती करते हैं। यह अधिकतर जङ्गल में रहते हैं और दूसरे लोगों से कम मिलते हैं। यह यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनते हैं और अपने को राजपूत बतलाते हैं। इनके अतिरिक्त यहां कुछ मूल निवासी रहते हैं।

मुसलमान पडरौना और महराजगंज तहसीलों में अधिक रहते हैं। अधिकतर जुलाहे हैं कुछ शेख और पठान हैं।

हाल में कुछ लोग ईसाई भी हो गये हैं।

संक्षिप्त इतिहास—गोरखपुर जिले में कसिया, सोहनाग आदि कई प्राचीन स्थान हैं। फिर भी इसके प्राचीन इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं चलता है। यह निस्सन्देह कौशल राज्य का अंग था। राप्ती और घाघरा के संगम के पास श्री रामचन्द्र जी ने विश्वामित्र जी से विद्या प्राप्त की थी। उसके वंशज कौशिकों को घाघरा के उत्तर की भूमि दान में दी थी। अयोध्य के नष्ट हो जाने पर वहां के राजा ने रुद्रपुर में राजधानी बसाने का प्रयत्न किया था। चेरू, भार और थारू लोगों ने उसे नष्ट कर दिया। चाहे कसिया प्राचीन कुशी नगर था अथवा वेथद्वीप था इस नगर का भगवान बुद्ध के जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध है। ईसा से पूर्व तीसरी शताब्दी में यहाँ अशोक का साम्राज्य था। मौर्य साम्राज्य के नष्ट हो जाने पर ईसा से १८४ वर्ष पूर्व सुंगा वंश राज्य करने लगा। इस वंश के नष्ट हो जाने पर सौ वर्ष तक यहां अराजकता छाई रही। लिच्छवी वंश के राजाओं ने गोरखपुर जिले में शासन किया। चौथी शताब्दी के आरम्भ में चन्द्रगुप्त ने इनसे छीन कर इसे गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। कहांव के शिलालेख से प्रगट होता है कि ४६० ईस्वी में यहां स्कन्द गुप्त का शासन था। चीनी यात्री फाहियान (५८५ ई० में) और ह्वानसांग (६३५ ई० में) कसिया में आये थे। इन दोनों के समय में जिले का बहुत सा भाग वन हो गया था। मठ और स्तूप खडहर बन गये थे। यहां कोई बड़े नगर न थे। भागलपुर दसवीं शताब्दी के स्तम्भ के शिलालेख में एक सूर्यवंशी राजा का उल्लेख है जो अयोध्या के राजवंश का ही था। मझौली ने विसेन राजपूत उत्तर प्रदेश भर के दूसरे राजपूतों के पास ग्यारहवीं शताब्दी का एक काला पत्थर मिला। इसमें संस्कृत में लिखा है कि कुलाचूड़ि वंश के राजा यहां आठ पीढ़ियों से शासन करते थे। यह मध्यप्रान्त के चेदि और रत्नपुर से आये थे। बलिया जिले में हल्दी के हयोवंशी राजा इन्हीं के वंशज हैं।

आरम्भ में मुसलमानों ने गोरखपुर जिले को विहार में सम्मिलित किया था अथवा अवध में मिला रक्खा था इसका ठीक ठीक पता नहीं चलता है। कुछ भी हो दिल्ली के सुल्तानों का राज्य यहां नाम मात्रा का था। घाघरा को पार करके गोरखपुर के दुर्गम वन में मुसलमानों की सेनायें बहुत कम आईं। ११९३ ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अवध और

विहार को जीत लिया तो इस जिले पर मुसलमानी विजय का बहुत कम प्रभाव पड़ा। १२०० में बख्तियार खिलजी ने विहार पर अधिकार कर लिया। १२२९ में अल्तमश ने विहार जीता। १२२६ में उसके बड़े बेटे नसीरुद्दीन ने अवध के भारों को
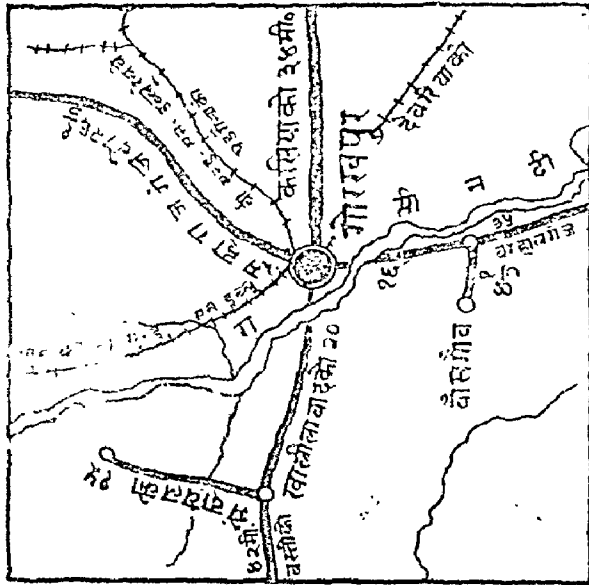
हराया। लेकिन इन घटनाओं का गोरखपुर जिले पर कोई विशेष प्रभाव न पड़ा। आक्रमणकारी सुगम मार्गों का अनुसरण करते थे। गङ्गा को पार करके बहुत दूर भीतर की ओर वे नहीं जाते थे। बङ्गाल में मुसलमानों का राज्य जम जाने पर भी गोरखपुर जिले में राजपूतों की शक्ति बढ़ती रही। जब दिल्ली के सुल्तान उत्तरी मार्ग से बङ्गाल को जाते थे तो वे अयोध्या से नाव पर पूर्व की ओर जाया करते थे। गयासुद्दीन तुगलक और फीरोज इसी मार्ग से गये थे। १३५३ ई० में फीरोज गोरखपुर के पास ठहरा था। उसने समीप के सरदारों को इकट्ठा करके दरबार किया था। उदयसिंह मुकद्दम ने फीरोज को दो हाथी भेंट किये गोरखपुर राय ने कई वर्षों का शेष लगान दिया। जौनपुर के शर्की सुलतान गोरखपुर पर अपना प्रभुत्व न जमा सके। उन्होंने राजपूतों से बराबरी का मित्र भाव दिखलाया। जौनपुर के पतन के बाद अफगानों का यहां कोई विशेष प्रभाव न रहा। शेरशाह ने केवल कभी कभी यहां के राजपूतों से कर वसूल किया।

बारहवीं सदी से अकबर के समय तक गोरखपुर जिले का इतिहास राजपूतों के भिन्न-भिन्न वंशों का इतिहास है। विसेन पुराने निवासी थे। राठोर राजपूत गोरखपुर के पार बस गये। कहते हैं मान सरोवर और कौलद ताल इन्हीं ने बनवाये थे। डोमकार लोगों ने डोम और भार वंशों का दमन किया। इनकी राजधानी डोमिनगढ़ थी। डोमिनगढ़ रोहिन नदी के बीच में एक द्वीप पर बसा था। इसी समय दक्षिण पूर्व की ओर से भुइंहार आये और हरपुर में बस गये। इनके बाद कौशिक और सरनेत आये। चौदहवीं शताब्दी में मुकुन्दसिंह नामी एक चौहान ने बुटवल राजवंश की नींव डाली। उन्होंने थारू लोगों की लड़कियों से ब्याह किया। वंसो के सरनेतों से उनकी बारबर लड़ाई होती रही। उनके और सतासी के बीच में वन की पेटी थी। सतासी राज्य को लाहोर से आये हुये चन्द्रसेन नाम के एक सरनेत राजपूत ने कुवना के किनारे बसाया था। पूर्व की ओर पड्रौना का राज्य था। पड्रौना का कुरमी राजवंश कड़ा (इलाहाबाद) से १६५० ई० में आये हुये भोपाल राय ने स्थापित किया था। उसने मझौली के राजा के यहाँ नौकरी कर ली थी। उसे वंसी चिरगोरा टप्पा में पांच गांव मिल गये थे। भोपालराय ने इन गांवों में खेती आरम्भ कर दी। उसके वंशजों ने जागीर बढ़ाने का कोई अवसर न छोड़ा। नाथूराय ने चन्देलों से कई गांव ले लिये। १६८१ में वह औरङ्गजेब के दरबार में उपस्थित हुआ। वहां उसे पडरौना तहसील में २३ गांव और दिये गये। मझौली के राजा ने इस राज्य को दृढ़ करने में सहायता दी। राय ईश्वरी प्रताप राय ने १,१५,००० रुपये में पडरौना तहसील में जङ्गल मोल लिया। इससे उसे इतना लाभ हुआ कि उसने अपना सब कर्ज चुका दिया। गदर में आधा राज्य जब्त कर लिया गया। शेष आधा राज्य किसी प्रकार बना रहा। इस समय इसे राज्य में ३६१ गांव हैं जिनकी मालगुजारी ८६३६५ रुपये हैं। इस राज्य के कुछ गांव बलिया आजमगढ़ और चम्पारन जिलों में स्थित हैं।)

अकबर के समय में (१५७६ में) मुगल सेनाओं

ने अवध और जौनपुर फिर से जीत लिया। अकबर ने राजपूत सरदारों को मिलाया और अफगानों को दबाया। टोडरमल और दूसरे मुगल सेनापति विद्रोह को दबाने के लिये यहां आये। पहले धुरिया पार के राजा ने मुगलों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। कुछ विरोध के बाद मझौली के राजा ने भी मुगलों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। सतासी का राजा लड़ा पर अन्त में राज्य छोड़कर उसे भागना पड़ा। गोरखपुर शहर में मुगल सेना रहने लगी। फिर भी राजपूतों और अफगानों का कुछ समय तक विद्रोह होता रहा। अकबर के समय में अवध प्रान्त के अन्तर्गत गोरखपुर में पांच सरकार शामिल थी। १६२५ में गोरखपुर के मुगल सेनापति ने कुछ अत्याचार किया। इसका फल यह हुआ कि सतासी और बंसी के राजाओं ने एक साथ गोरखपूर और मघार पर चढ़ाई की। उन्होंने मुगलों को गोरखपुर से भगा दिया। राजपूत फिर एक बार स्वाधीन हो गये उन्होंने दिल्ली को कर भेजना बन्द कर दिया। औरंगजेब के समय में १६०० ई० में राजपुतों के दबाने के लिये अयोध्या से एक बड़ी मुगल सेना भेजी गई। गोरखपुर के चकलेदार ने बंसी के राजा को मघार से भगा दिया। फिर मुगल सेना ने सतासी के राजा रुद्रसिंह को गोरखपुर से निकाल दिया। मुगल सूबेदार ने बसन्त सिंह के पुराने किले को फिर से बनवाया। उसने गोरखपुर से अयोध्या को सड़क निकाली और (बस्ती जिले में) राप्ती के दाहिने किनारे पर खलीलाबाद नगर बसाया। इसके बाद यहां मुसलमानों का राज्य काफी समय तक जम गया। बहादुर शाह गोरखपुर के जंगलों में शिकार के लिये आया था। उसने यहां जामा मस्जिद बनवाई। उसके सम्मानार्थ कुछ समय तक शहर का नाम मुअज्जामाबाद रख दिया गया। फिर भी वास्तविक शक्ति राजा के हाथ में बनी रही यहां के राजा भूमि और उपाधि वितरण करते थे। शाही स्वीकृति की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। १७२१ में बड़ा परिवर्तन हुआ। इस वर्ष अवध का सूबा सादात खां को मिल गया। अवध में ही गोरखपुर शामिल था। उसने यहां के राजाओं की शक्ति कम करने का पूरा प्रयत्न किया। दक्षिणी भाग में वह सफल हो गया। लेकिन जिले के उत्तरी भाग में उसका अधिकार नाम मात्र का था। १७२५ में बुटवल राजवंश के राजा तिलक सेन ने बंजारों की सहायता से तिलपुर परगने में विद्रोह का झंडा उठाया। राजा ने जिले का बड़ा भाग लूटा और उजाड़ा। फैजाबाद से यहां सेना भेजी गई। इसका कोई फल न हुआ। फौज के लौटते ही तिलक सेन ने फिर छापा मारना आरम्भ कर दिया। केवल मझौली के राजा के राज्य में शान्ति थी। जिले के शेष भागों में अराजकता छा गई। १७५० में एक बड़ी सेना फिर भेजी गई। सेना पति कासिम खां ने पहले विद्रोही मुसलमानों को दबाया। उसने मुसलमानों के उस किले को गिरवा दिया जो उन्होंने डोमिनगढ़ के स्थान पर हाल में बनवाया था। इसके बाद वह उत्तर की ओर बढ़ा। उसने तिलक सेन के बेटे को हराकर बुटवल पर चढ़ाई की। लड़ाई बीस वर्ष तक चली। इसके अन्त में समझौता हो गया। तिलक सेन ने जो भाग जीत लिये थे वे बुटवल राज्य में रहे। मुसलमान अफसर हटा लिये गये। नाम मात्र का लगान नियत किया गया। दक्षिणी भाग में भी सेना की सहायता से ही कर इकट्ठा किया जा सकता था। शुजाउद्दौला के समय तक यही हाल रहा। १७६४ में शुजाउद्दौला बक्सर की लड़ाई में हार गया। इसके बाद गोरखपुर जिले में कर वसूल करने और शान्ति रखने का काम नवाब की ओर से मेजर रहने को मिला। इसने बड़ा अत्याचार किया। किसानों से इतना अधिक कर वसूल किया गया कि असहाय और दीन किसान खेत छोड़कर इधर उधर भागने लगे। जहां हरे भरे खेत थे वहां जङ्गल हो गया। इससे जिले में असन्तोष और अराजकता भी बढ गई। इसी समय बंजारे भी लूट मार करने लगे। वे राजाओं को आपस में लड़ाने लगे जो राजा उन्हें अधिक धन देता उसी का वे पक्ष लेते थे। वे अपने आपको नवाब वजीर के गुमाश्ता बनाते थे और चकलादार, नाजिम, आमिल आदि की उपाधि धारण कर लेते थे। लेकिन उनका एक मात्र उद्देश्य यह था कि कम से कम समय में वे

अधिक से अधिक धन लूट सकें। अलग अलग एक एक राजा इनका सामना करने में असमर्थ था। यदि सब राजा मिल जाते तो वे बंजारों की शक्ति को निस्सन्देह नष्ट कर डालते। पर उनमें गृह कलह फैली हुई थी। १७८८ में सतासी के राजा ने बुटवल पर चढ़ाई की। लेकिन उसके वंश वालों ने १७६० में बंजारों को बस्ती जिले से निकाल दिया। हने साहब (मेजर हने) और बजारों के अत्याचार से धुरिया पार के कौशिकों का बुरा हाल हो गया था। केवल मझौली के राजा की दशा अच्छी थी। उसने सिधुआ जोहना बंजारों के लिये छोड़ दिया था। आगे चलकर पडरौना और तमखुई के राज्यों की स्थापना में सहायता दी थी। इस प्रकार पडरौना और देउरिया की दशा पश्चिमी भागों से अधिक अच्छी थी। यहां तालुकेदारों और राजाओं के मिल जाने से न बजारों की लूट मार थी और न अवध के नवाबी अफसरों का अत्याचार था। १८०१ की सन्धि में गोरखपुर और दूसरे पड़ोस के प्रदेश अवध के नवाब ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिये। कम्पनी के अफसरों ने धीरे धीरे राजाओं को दबा दिया। इसी समय नैपाल राज्य ने पहले तराई और फिर तिलपुर और बिनायकपुर के परगने मिला लिये। १८०५ में गुरखों ने लगान वसूल करने के लिये अपने अफसर बुटवल को भेजे। बुटवल का अभागा राजा कम्पनी का कर देने में असमर्थ था। वह कैद कर लिया। जब वह कैद से छूटा तो गुरखा लोग उसे पकड़ कर काठमांडू ले गये वहां वह मार डाला गया। कम्पनी ने उसके परिवार को पेन्शन देकर उसका राज्य मिला लिया। १८०६ में गुरखा लोग फिर लौटे। जिस प्रदेश के सम्बन्ध में झगड़ा चल रहा था उसका तिहाई भाग उन्होंने अपने राज्य में मिला लिया। इस वर्ष सर जार्ज बार्लो गुरखों को बस्ती के उत्तर में शिवराज का प्रदेश इस शर्त पर देने के लिये राजी हो गया कि बुटवल खाली कर दिया जावे। गुरखों ने बुटवल खाली न किया पर वे प्रथा बन्दोबस्त का लगान देने को राजी हो गये। इसके बाद लार्ड मिंटो आया। गुरखों ने बुटवल को पूरी तरह से नैपाल राज्य में मिला लिया। १८१० और १८११ में बुटवल की सीमा को पार करके गुरखा ने पाली के कुछ गांव ले लिये। १८१२ में लार्ड मिंटो ने अपना विरोध प्रगट किया। गुरखों ने इस प्रदेश पर अपना अधिकार सिद्ध किया। इस पर सीमा निर्धारित करने के लिये एक कमीशन नियुक्त किया गया। कम्पनी के प्रतिनिधि मेजर ब्रैडशा ने कहा कि गुरखों का शिवराज या बुटवल पर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। १८१४ में लार्ड मिंटो ने इसी भाग को दुहराया और सैनिक तैयारी की। गोरखपुर के कलक्टर को आज्ञा दी गई कि यदि २५ दिन के भीतर कोई उत्तर न मिले तो सेना भेज कर उक्त प्रदेश ले ले। कलक्टर ने बिना किसी विरोध के सेना भेजकर शिवराज और बुटवल पर अधिकार कर लिया और अप्रैल महीने में चितवा, बुसौरिया और सौरा में पुलिस चौकियां स्थापित कर दी। मई महीने में गुरखों ने पुलिस चौकियों पर आक्रमण किया और उन्हें छीन लिया। पुलिस के सिपाही भागकर बंसी में पहुँचे। छः महीने चुप रहने के बाद पहली नवम्बर को कम्पनी ने युद्ध घोषित किया। कमायूँ और बिहार की ओर से नैपाल में जो ३०१ सेना भेजी गई उसका इस जिले से सम्बन्ध नहीं है। चौथी सेना गोरखपुर से बढ़ी। इसमें १४ तोपें और ४००० सिपाही थे। इस सेना को लेकर जनरल वुड बिना किसी विरोध के १८१५ की तीसरी जनवरी को बुटवल पहुँच गया। बुटवल के पास वाले दर्रे में गुरखा सेनापति वजीर सिंह ने पहले ही किले बन्दी कर ली थी। बुटवल राजा के एक ब्राह्मण नौकर ने जंगल में अंग्रेजी सेना को मार्ग दिखलाया। समीप पहुँचने पर गुरखों ने गोली चलाना आरम्भ कर दिया। प्रधान सेना के आ जाने पर गुरखे पहरेदार पहाड़ियों में चले गये। अंग्रेजों के २४ सिपाही मारे गये। अंग्रेजी सेना ने आगे बढ़ने का साहस न किया और यहीं से पीछे लौट आई। नैपाल से गोरखपुर को आने वाले प्रधान मार्ग की देख भाल करने के लिये अंग्रेजी सेनापति ने लोटान में खाई खुदवा दी। सेनापति निचलौल को चला गया। उस ओर गुरखे लोग प्रतिदिन अंग्रेजी राज्य के गांवों को लूटते और

जलाते थे। जनवरी, फरवरी और मार्च में सहायता के लिये नई सेना लगातार आती रही। फिर भी सेनापति को नैपाल के पर्वतीय प्रदेश में घुसने का साहस न हुआ। जिन गांवों को गुरखों ने खाली कर दिया था उनको जलाकर ही उसने सन्तोष कर लिया। अंग्रेजी सेनापति गुरखों की सेना को अपनी सेना से अधिक प्रबल समझता था। अतः वह बचाव करता रहा और खुल्लम खुल्ला लड़ाई से बचता रहा। १८१५ के अप्रैल मास में लड़ने के लिये आज्ञा मिली। उसने कुछ बुटवल पर कुछ गोलाबारी की। फिर वह तराई को नष्ट करके गोरखपुर को लौट आया। इसी बीच में गढ़वालियों की सहायता से जनरल आक्टर-लोनी ने देहरादून और कमायूं को नैपालियों से जीत लिया। पर गुरखे अंग्रेजों की शर्तों को मानने और तराई छोड़ने के लिये तैयार न थे। कर्नल निकल्स बुटवल और पल्पा पर चढ़ाई करने के लिये गोरखपुर को भेजा गया। सन्धि की वार्ता अक्तूबर तक चलती रही। २८ नवम्बर को सिगौली में समझौता हुआ। १८१६ के फरवरी महीने में ऐसा जान पड़ा कि गुरखा लोग लड़ाई जारी रखना चाहते हैं। इस बार जनरल आक्टरलोनी ने विहार के मार्ग से नैपाल में प्रवेश किया। मार्च में सन्धि हो गई। बुटवल को छोड़कर सरजू और गंडक के बीच की तराई अंग्रेजों को मिल गई। पर सीमा सीधी रक्खी गई यह नैपाल की पहाड़ियों के समानान्तर चली थी। शिवाराज और पल्पा को छोड़कर यह नैपाल की पहाड़ियों से अलग थी। अतः कुछ तराई नैपाल राज्य को मिल गई। इस लड़ाई और अंग्रेजी सेनापतियों की शिथिलता से गोरखपुर जिले में अराजकता छा गई। नैपाल युद्ध के अन्त होने पर ही डाकुओं का दमन हो सका।

१८५७ के मई मास में गदर का समाचार पाते ही यहाँ के कलक्टर और जज ने तरह तरह की तैयारी की। जेल और पुलिस के लिये राजभक्त पहरेदार चुने गये। योरुपीय प्लांटरों और राजभक्त जमींदारों को भी उपयुक्त सूचनायें दी गईं। फालतू खजाना आजमगढ़ भेज दिया गया मई के अन्त में लूट मार बढ़ने लगी। पैना के जमींदार घाघरा में चलने वाली नावों को लूटने लगे। नरहरपुर के राज्य में बढ़लगंज की पुलिस को भगा दिया। उसने सड़क पर काम करने वाले ५० कैदियों को मुक्त कर दिया और घाट को छीन कर आजमगढ़ के मार्ग में बाधा डाल दी। पांच जून को आजमगढ़ के विद्रोह का समाचार आया। केप्टेन स्टील ने अपने सिपाहियों से परेड कराई और उनको व्याख्यान दिया। दूसरे दिन इन्हीं सिपाहियों ने आजमगढ़ जाने से इनकार कर दिया और खजाना लूटने की इच्छा प्रगट की। ७ जून को कुछ कैदियों ने भागने का प्रयत्न किया लेकिन स्वामिभक्त पहरेदारों ने उन्हें रोक दिया। ८ जून को खजाना लूटने वाले सिपाहियों को वेनाड महाशय ने रोक दिया। काठमांडू के रेजीडेंट मेजर रेम्से ने पल्पा से २०० सिपाही भेजे जिले में मार्शलला घोषित की गई। फिर भी उत्तरी और पश्चिमी भागों में अराजकता छा गई। सतासी और नरहरपुर के राजा दूसरे भागों के विद्रोहियों से मिलने का प्रयत्न कर रहे थे। १७ और १६ जून को गोंडा और दूसरे स्थानों से भागकर आये हुये योरुपीय गोरखपुर पहुँचे। वंसी के राजा ने इन गोरों और गोरखपुर की मेमों (गोरी स्त्रियों) को आजमगढ़ पहुँचा दिया। यहां से वे गाजीपुर चले गये। ३० जून को पल्पा से गुरखा सिपाही आ गये। जुलाई भर गोरखपुर में कुछ शान्ति रही। शहर के बाहर फिर भी अराजकता छाई हुई थी। २६ जुलाई को सिगौली के विद्रोह का समाचार आया। कर्नल राटन ३००० गुरखा सिपाही लेकर काठमांडू से आ रहा था। कुछ विद्रोही सिपाहियों से हथियार रख लिये गये। शेष सिगौली से दक्षिण की ओर सलेमपुर चले आये। यहां उन्होंने अफीम के एजेंट का बंगला नष्ट कर दिया लेकिन वे खजाना न पा सके। खजाना गोरखपुर पहुंचा दिया गया। गुरखा सिपाही आजमगढ़ और फिर वहां से इलाहाबाद भेज दिये गये। गोरखपुर में विद्रोही प्रबल हो गये। जिले का प्रबन्ध मझौल, सतासी, वंसी, गोपालपुर और तमखुई के राजाओं को सौंप दिया गया। १३ अगस्त को गोरे अफसर गोरखपुर खाली

कर के खजाना लेकर गुरखों के साथ चल दिये। घाघरा को पार करके २२ अगस्त को वे आजमगढ़ पहुँच गये। मुहम्मद हसन के नेतृत्व में विद्रोहियों ने इनका पीछा किया। आजमगढ़ की सड़क पर घाघरा से १० मील उत्तर की ओर गगहा में गुरखा सिपाहियों पर आक्रमण किया गया। इसमें २०० विद्रोही मारे गये। इस बीच में राजाओं की समिति का राज्य ढीला पड़ गया। मुहम्मद हसन ने लौट कर जेल के कैदी मुक्त कर दिये। बड महाशय को अपनी जान लेकर गोरखपुर से भागना पड़ा। अभी तक यह राजाओं के प्रबन्ध का निरीक्षण करते थे। गोपालपुर के राजा ने बचे हुये खजाने को अपने यहां रखने का वचन दिया था। लेकिन बड साहब ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। विद्रोहियों ने गोरखपुर की सिविल लाइन में गोरों के बंगले जला डाले। विद्रोहियों ने बड साहब को पकड़ने वालों के लिये पुरस्कार घोषित किया। लेकिन वह किसी प्रकार ८२ मील की यात्रा करके बेतिया पहुँच गया। विद्रोहियों ने इस प्रकार प्रबन्ध आरम्भ किया मानो उसका स्थायी अधिकार हो गया हो। सरकारी कागजात सुरक्षित रक्खे गये कुछ पुराने सरकारी नौकर भी रख लिये। बंसी और गोपालपुर के राजाओं ने विद्रोहियों का विरोध किया। तमकुही और मझौली के राजाओं ने भी सरकारी नौकरों की रक्षा की। पर विद्रोहियों का राज्य अधिक समय तक रहा। २२ दिसम्बर को जंगबहादुर की गुरखा सेना बेतिया पहुँची। २६ दिसम्बर को छोटी गंडक के किनारे सोमनपुर में पड़े हुये विद्रोहियों पर आक्रमण हुआ। वे हरा दिये गये। कई विद्रोही गांवों को भी दन्ड दिया गया। गोरखपुर शहर भी विद्रोहियों ने खाली कर दिया। कुछ विद्रोही भागते समय राप्ती में डूब गये। कुछ सेना घाघरा के मार्ग से नावों पर भेजी गई। कुछ ही समय में समस्त जिले में फिर अँग्रेजी राज्य हो गया। सतासी और बढ़ियापार के राज्य ज़ब्त कर लिये गये। बिल्लूपार के राजा की जायदाद भी जब्त कर ली गई। शाहपुर के मुसलमान राजा का धुरियापार परगने में यही हाल हुआ। तिघरा, पांडेपार, डुमरी के बाबुओं की जायदाद भी जब्त कर ली गई। निचलौल का राजा रन्दुल सेन बुटवल राजवंश का अन्तिम राजा था। उसकी पेन्शन छीन ली गई। गोपालपुर के राजा को शाहपुर जागीर कुछ भाग और दूसरी जायदाद पुरस्कार में मिली। गोरखपुर के मियां साहब ने गोरों की जान बचाई थी। उन्हें और दूसरे सहायकों को भी इनाम मिले। मझौली के राजा का कर्ज माफ कर दिया गया। तराई का प्रदेश नैपाल राज्य को लौटा दिया गया। १८६५ में बस्ती जिला अलग हो गया।

प्रसिद्ध नगर—बैकुंठपुर छोटी गंडक के दाहिने किनारे पर नुनखार रेलवे स्टेशन २ मील उत्तर की ओर देउरिया से ८ मील और गोरखपुर से ४० मील दूर है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। अगहन के महीने में यहां धनुष यज्ञ का मेला लगता है। यह जिले का सब से बड़ा मेला है। इसमें प्रायः ५०,००० दर्शक इकट्ठे होते हैं। कपड़े धातु के बतन आदि बहुत बिकते हैं।

बांस गांव—इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह गोरखपुर शहर से ६४ मील दक्षिण की ओर है। यह अमी नदी की घाटी के ऊपर ऊँची भूमि पर बसा है। पहले यहां चौहानों का राज्य था। फिर सरनेतों ने उन्हें भगा दिया। इस विजय के उपलक्ष में वे अब भी क्वार के महीने में देवी के पुराने मन्दिर में वे देवी को भेंट चढ़ाते हैं। इसमें मझगवां आदि कई छोटे छोटे गांव शामिल हैं। पुरानी तहसील की इमारतें बरावां में थी। वहां १६०७ से अस्पताल है। नई तहसील और मुन्सफी यहां से १०० गज़ दक्षिण की ओर है। पूर्व की ओर इन्सेक्शन बंगाल है। इनके अतिरिक्त यहां थाना डाकखाना और जिले भर में सबसे बड़ा जूनियर हाई स्कूल है। इसी से मिला हुआ ट्रेनिंग स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

बरहज का बड़ा और प्रसिद्ध नगर राप्ती नदी के बायें किनारे पर घाघरा के सङ्गम से कुछ ही दूर है। कहते हैं पहले सङ्गम बरहज से ४ मील पश्चिम की ओर था। १८७३ में वह बरहज से २ मील पश्चिम की ओर रह गया। यह गोरखपुर से ४१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कसिया और देउरिया से आने वाली पक्की सड़कें यहां समाप्त होती हैं।

सलेमपुर से आने वाली शाखा रेलवे लाइन का यह एक स्टेशन है। पहले यहां नावों के द्वारा बहुत व्यापार होता था। रेल के खुलने पर यह व्यापार कम हो गया। फिर भी यहां बहुत सी नावें लकड़ी अनाज आदि ढोने में लगी रहती हैं। इंडिया जनरल स्टीम नेवीगेशन कम्पिनी के स्टीमर यहां ठहरा करते हैं। कहते हैं बरहन या बरहजी नाम का एक ब्राह्मण मुसलमान हो गया था। उसी की स्मृति में इसका यह नाम पड़ा। उसकी कब्र का दर्शन करने के लिये बहुत लोग आते हैं। कुअंरधीर साही नाम के एक राजपूत ने यहां एक कोट (किला) बनवाया। तब से बरहज तेजी से बढ़ा। मुसलमानों ने इसे नष्ट कर डाला। पुराने कोट के चिन्ह इस समय भी मिलते हैं। आधुनिक बरहज को बसाने का श्रेय मझौली के राजा साहब को है। १८३० में यहां चीनी का कारखाना बना। इस समय बरहज और गौरा में चीनी के कई कारखाने हैं। चीनी के कारबार से बरहज की बड़ी उन्नति हुई। गौरा बरहज का ही भाग है। दोनों की जनसंख्या ११००० से अधिक है। पूर्वी भाग में प्रायः मल्लाह रहते हैं। बाजार प्रतिदिन लगता है। कार्तिक पूर्णिमा को मेला होता है। यहां थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और राष्ट्रीय पाठशाला है। यहीं मझौली के राजा साहब की कोठी है। यहां राजा का ही अधिकार है। बढ़लगंज घाघरा के किनारे दोहरी घाट के सामने गोरखपुर से आजमगढ़ को जानेवाली प्रान्तीय सड़क के दोनों ओर बसा है। यह गोरखपुर ३६ मील दूर है। यहां होकर सिक्रीगंज और गोरखपुर से बरहज, लार और छपरा को कच्ची सड़कें गई हैं। बढ़लगंज के पूर्वी भाग को चिल्लू पार कहते हैं। यह चिल्लू नाले के उस पार है इसी से इसका नाम चिल्लूपार पड़ा। बढ़लगंज में कस्बा बढ़ल, गोला या गल्ले का बाजार और लालगंज शामिल है। लाल साहिब चिल्लूपार या नरहरपुर के विद्रोही राजा के भाई थे।

नरहरपुर गांव यहां से १ मील पूर्व की ओर है। गदर के समय तक राजा का राज्य रहा। फिर यह राज्य जब्त कर लिया गया कुछ भाग गोपालपुर के राजभक्त राजा को पुरस्कार के रूप में दे दिया गया। शेष भाग सीधे अंग्रेजी शासन में आ गया। बुढ़लपुर घाघरा के ऊँचे कड़े कंकरीले किनारे पर स्थित है। इसलिये इसके कटने का डर नहीं है। ऊंचाई पर बसे होने के कारण नगर का वर्षा जल और नालियों का पानी तेजी से नदी में बह जाता है। प्रधान सड़क पर बाजार है जहां पक्की दुकानें बनी हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। यहां थाना, अस्पताल, अफीम का बङ्गला, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। उत्तर की ओर पड़ाव है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। जलेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर अधिक पुराना है। कार्तिक, चैत और असाढ़ में स्नान का मेला लगता है। जेठ में गाजी मियां का मेला लगता है। बढ़ी को छोटा गांव निचली भूमि पर राप्ती नदी के पास गोरखपुर से १३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। यहां राप्ती की बाढ़ प्रायः प्रतिवर्ष आ जाती है। बाढ़ ने गांव के उत्तर की ओर की सड़क को कुछ दूर तक काट दिया। इसी से थाना यहां से गौरी को चला गया यहां से २ मील उत्तर पूर्व की ओर गर्रा के बायें किनारे पर स्थित है। यहां समरौना नाला गर्रा को राप्ती से मिलाता है। बढ़ी में डाकखाना और स्कूल है। यहां बाजार भी लगता है। बढ़ी से २ मील पूर्व की ओर राजधानी, टोंग्री और उपधौली गांवों में एक प्राचीन नगर और कोट के भग्नावशेष हैं। कहते हैं यहां मौर्य राजवंश का निवास-स्थान था। यह नगर पूर्व-पश्चिम में राप्ती से फरेंद तक चार मील की लम्बाई और एक मील की चौड़ाई में बसा था। राप्ती के किनारे डीह घाट से गर्रा के किनारे तक कई टीले हैं जिन पर ईंटें बिखरी हुई हैं। गर्रा नदी के पूर्व में उपधौलिया डीह सब से बड़ा टीला है। यह १ मील लम्बा और १६०० फुट चौड़ा है। इसमें दो स्तूपों के भग्नावशेष हैं। एक बड़ा टीला राजधानी के पास है। कुछ और आगे फरेंद नदी के पास ईंटों का एक विशाल घेरा है। यह १६०० फुट लम्बा और १२०० फुट चौड़ा है। इस प्राचीन नगर का ठीक ठीक पता नहीं लगाया गया है। बेलघाट घाघरा के कुम्हरिया घाट के पास गोरखपुर से २६ मील और सिक्रीगंज से ६ मील

दूर है। पहले यहां घाघरा के किनारे पर घाट था। आजकल यह घाघरा से ३ मील दूर हो गया है। यहां थाना और प्राइमरी स्कूल है।

भागलपुर घाघरा के बायें किनारे पर गोरखपुर से ५२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। तुर्तीपुर रेलवे पुल से यह १ मील ऊपर की ओर है। तुर्तीपुर स्टेशन कुछ ही दूर है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। रेल के खुल जाने से नावों का व्यापार घट गया। इससे यहां का बाजार भी छोटा हो गया। यह एक पुराना नगर है। नदी के दोनों ओर प्राचीन भग्नावशेष मिलते हैं। गांव से आध मील पूर्व एक खुरदरा भूरा भुरा प्रस्तर-स्तम्भ है। इस पर दसवीं शताब्दी का लेख खुदा है। यह १७ फुट ऊंचा है। कहते हैं अयोध्या के एक सूर्य वंशी राजा ने इसे खड़ा करवाया था।

भाऊपार नन्दौर ताल के उत्तर में गोरखपुर से ५ मील दक्षिण की ओर राप्ती नदी और आजमगढ़ सड़क के बीच में स्थित है। राप्ती के ऊपर एक ऊंचे टीले पर पुराने किले के खंडहर हैं। गोरखपुर शहर के बसने के पहले सतासी के राजा यहीं रहते थे। पुराने समय में गांव और किले के चारों ओर घना जङ्गल था। १७६६ के दुर्भिक्ष में भूखे चीते यहां इतने हमले किये कि गांव के लोग डर कर भाग गये। औसत से चीते प्रति वर्ष २५० पशुओं और सात आठ मनुष्यों को मार डालते थे। यहां डाकघर, प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

बिजमनगंज को पहले साहबगंज कहते थे। यह नाम बिजमैन साहब की स्मृति में पड़ा जिन्हें लेहरा की जागीर मिली थी। यह गोरखपुर से ४० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहां होकर गोरखपुर से उस्का और लोटन को सड़क जाती है। बाजार के दक्षिण में रेलवे स्टेशन है। यहां डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाठशाला है।

केप्टेनगंज गोरखपुर से पडरौना को जाने वाली सड़क पर गोरखपुर २८ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। हाटा (तहसील) यहां से १२ मील दक्षिण की ओर है। यहां से एक सड़क पश्चिम की ओर राप्ती के कमैनी घाट को गई है। उत्तर की ओर एक सड़क सिस्वा और निचौले को गई है। एक सड़क उत्तर-पूर्व की ओर पडरौना तहसील के नौरंगिया गांव को गई है। अंग्रेजी राज्य के आरम्भ में यहां एक थाना स्थापित किया गया। इससे इस नगर का यह नाम पड़ गया। पूर्व की ओर छोटी गंडक बहती है। पहले नाव के मार्ग से कुछ व्यापार होता था। रेल के आ जाने से यह व्यापार और अधिक बढ़ गया। यहां डाकघर, प्राइमरी स्कूल और बाजार है। गदर में यहां के जमींदारों ने विद्रोह किया था। अतः उनकी जमीन जब्त कर ली गई।

चौरी चौरा गोरखपुर से देवरिया को जाने वाली सड़क पर गोरखपुर से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। अवध तिरहुत रेल की प्रधान लाइन का यह एक स्टेशन है। स्टेशन से एक सड़क उत्तर की ओर डुमरी और पिप्रैच को जाती है। स्टेशन के पास बाजार है। यहां चीनी बनाने और तेल पेरने की मिलें हैं। डुमरी के सिक्ख जमींदार यहां के भी जमींदार हैं। चौरी चौरा गोरखपुर जिले में व्यापार का केन्द्र है। यहां कानपुर और कलकत्ते से व्यापार का बहुत सा सामान आता है। चौरी चौरा से मिला हुआ उत्तर की ओर मुंडेरा का बाजार है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। पिछले असहयोग के अवसर पर जनता ने उत्तेजित होकर थाने को जला दिया। अहिंसा के सिद्धान्त पर आचरण न करने वाले यहां के लोगों से रुष्ट होकर महात्मा गांधी ने भारतवर्ष भर में असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया था।

देवरिया कस्बा कसिया से बरहज को जाने वाली पक्की सड़क पर गोरखपुर से छपरा को जाने वाली कच्ची सड़क पर गोरखपुर से ३३ मील दूर है। यहां प्रधान रेलवे लाइन का स्टेशन है। एक कच्ची सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर रुद्रपुर को और उत्तर की ओर हाटा को गई। देवरिया में कई गांव शामिल हैं। यहां रेलवे स्टेशन, तहसील, थाना, तार-डाकखाना, अस्पताल, हाई स्कूल, और जूनियर हाई स्कूल है। देवरिया कपड़े और रुई के व्यापार का केन्द्र है। देवरिया को पूर्वी भाग का एक पृथक जिला बनाने का कई बार प्रस्ताव हुआ। लेकिन यह नगर निचली भूमि पर बसा है। प्रबल वर्षा होने पर इसके समीप की भूमि बाढ़ के जल से डूब जाती है। भरौली

बाजार में धनी मारवाड़ियों के सुन्दर घर बने हैं। यहां एक धर्मशाला और सुन्दर तालाब है। पुराने बाजार की भीड़ को कम करने के लिये शाक भाजी की बिक्री के लिये एक नया बाजार बनाया गया। नगर के बाहर एक नई सड़क बनाई गई इसके पड़ोस में नये घर बन गये। उत्तर की ओर करना नदी के किनारे एक टीले पर शिव जी का एक पुराना मन्दिर है। देव स्थान होने से इसका नाम देवरिया पड़ा। उत्तर-पूर्व की ओर कसिया की सड़क पर बमनी गांव में पुराने भग्नावशेष हैं। इनमें कुछ पुराने मन्दिरों की नींवें हैं। पश्चिम की ओर ४० गज लम्बा चौड़ा एक पक्का ताल है। गोरखपुर की सड़क पर करना के आगे पुराने कच्चे किले के खंडहर हैं। टीले की चोटी पर एक शहीद का मकबरा है।

ढकवा बाजार कुवना के बायें या उत्तरी किनारे पर गोरखपुर से सिकरीगंज को जानेवाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर स्थित है। यह गोरखपुर से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। पहले यह अनाज की बड़ी मंडी थी। कुवना के मार्ग से आया हुआ अनाज इकट्ठा होता था। रेलवे के खुल जाने पर अनाज सहजनवा स्टेशन से बाहर जाने लगा। कुछ व्यापार इस समय भी होता है। रविवार और बुधवार को बाजार लगता है। यहां कपड़ा पीतल के बर्तन आदि बिकते हैं। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

धनी कस्बा रिगौली से ६ मील और गोरखपुर से ३३ मील दूर है। बाजार पास वाले कानापार गांव में स्थित है जो धमेला के किनारे पर है। पहले नैपाल समीपवर्ती भागों और पश्चिमी महाराजगंज का व्यापार यहीं इकट्ठा होता था। व्यापार का सामान नदी के मार्ग से जाता था। रेल के आजाने पर यह व्यापार ब्रिजमनगंज के हाथ में चला गया जो यहां से ६ मील दूर है। वर्षा ऋतु को छोड़ कर शेष ऋतुओं में फिर भी कुछ व्यापार होता है। वर्षा ऋतु में नदी में ३० फुट ऊंची बाढ़ आती है। बाजार सोमवार को लगता है। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

धुरिया पार कुवना नदी के बायें किनारे पर स्थित है। यहां होकर शाहपुर से डर्वा बाजार को सड़क जाती है। इसे प्रथम कौशिक राजा धुरचन्द ने बसाया था। धुरियापार चिरकाल तक कौशिक राजाओं की राजधानी रहा। उनके बनाये हुये कोट (किले) के खंडहर नदी के किनारे पर दिखाई देते हैं।

डुमरी गांव चौरा स्टेशन से पिप्रैच को जानेवाली सड़क के पूर्व में स्थित है। गोरखपुर से कसिया को जानेवाली सड़क यहां से दो मील दूर है। गोरखपुर से यह १५ मील पूर्व की ओर है। डुमरी राज्य में ५६ गांव शामिल हैं। यह राज्य गदर दबाने में सहारा देने वाले सरदार सूरतसिंह को पुरस्कार के रूप में दे दिया गया। यहां मिडिल स्कूल अस्पताल और बाजार है।

गजपुर राप्ती के दाहिने किनारे पर गोरखपुर से २१ मील और बांस गांव तहसील से १० मील दूर है। यहां से दो सड़कें गोरखपुर से आजमगढ़ को जानेवाली सड़क पर स्थित है कौरीराम और गगहा से आती है। एक सड़क नदी के घाट को गई है। यहां से कछार के पार एक मार्ग रुद्रपुर को गया है। पहले राप्ती में ऊपर और नीचे की ओर जानेवाली नावें यहां ठहरा करती थीं। नदी के व्यापार के नष्ट हो जाने से गजपुर का व्यापारिक महत्व जाता रहा। आरम्भ से यह स्थान सतासी राजवंश के अधिकार में रहा। नदी के पास अन्तिम राजा लाल साहब के दादी की बनवाई हुई कोठी हैं। यहां प्राइमरी स्कूल और बाजार है।

गोला को मदरिया और गोला गोपालपुर भी कहते हैं। यह घाघरा नदी के किनारे पर गोरखपुर से ३३ मील दक्षिण की ओर है। यहां से गोरखपुर को सड़क गई है। पहले गोला कुवना नदी के किनारे स्थित था। १८७२ में इस नदी का पानी घाघरा में चला गया। इससे गोला का व्यापार कम हो गया। आगे चलकर कुवना में जल घट गया और घाघरा अधिक उत्तर की ओर हटकर बहने लगी। शाहपुर के पास कुवना और घाघरा का संगम हो गया। नदी के इधर उधर हो जाने से तो गोला को धक्का पहुँचा ही था। लेकिन रेल के खुल जाने से गोला का व्यापारिक महत्व बहुत

कम हो गया। अधिकतर व्यापारी गोला को छोड़कर मुंडेर्वा और दूसरे स्थानों को चले गये। यहां थाना, डाकखाना, इन्स्पेक्शन बंगला और मिडिल स्कूल है। गोला को गोपालपुर के एक राजा ने बसाया था।

गोपालपुर गोला से ३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़लगंज से सिकरीगंज को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह गोरखपुर शहर से ३० मील दूर है। इसके पास ही गोरखपुर और रुद्रपुर से आने वाली सड़क मिलती है। यहां एक कौशिक राजवंश की राजधानी रही। कोठी के आगे कुछ ही दूरी पर एक बड़ा टीला है। यहां उनके पूर्वजों के बनवाये हुये किले के खंडहर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

गोरखपुर शहर इसी नाम की कमिश्नरी जिले और तहसील का केन्द्र स्थान है। यह २६°.४५' उत्तरी अक्षांश और ८३°.२२' पूर्वी देशान्तर पर समुद्रतल से ३३५ फुट की ऊंचाई पर कलकत्ते से ५०६ मील, इलाहाबाद से १६२ मील, बनारस से १३१ मील और फैजाबाद से ८५ मील दूर है। गोरखपुर शहर राप्ती नदी के किनारे स्थित है। इसके पास ही रोहिन नदी राप्ती में मिलती है। रेलवे के पुल के आगे इसे अजवनिया नाला कहते हैं। अजवनिया नाला शहर की पश्चिमी सीमा बनाता है। राप्ती नदी बड़ घाट के पास शहर के सिरे को छूकर दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। पूर्व की ओर रामगढ़ ताल पुरानी छावनी की सीमा बनाता है। उत्तर-पश्चिम की ओर समतल भूमि है। वर्षा ऋतु में डोमिनगढ़ और कर्मैनी तालों की बाढ़ का पानी दूर तक भूमि को डुबा देता है। अवध तिरहुत रेलवे की प्रधान लाइन शहर के उत्तरी आधे भाग में होकर जाती है। इसका प्रधान स्टेशन पूर्व की ओर है। दूसरा स्टेशन पश्चिम की ओर डोमिनगढ़ में है। बड़े स्टेशन से एक शाखा लाइन उत्तर की ओर उस्का और तुलसीपुर को जाती है। एक लाइन कैप्टेनगंज और बगहा को गई है। प्रान्तीय पक्की सड़क शहर के पश्चिमी सिरे से बड़ घाट के पास बस्ती और फैजाबाद को जाती है। बड घाट के पास वर्षा के अन्त में राप्ती नदी के ऊपर पीपों का पुल बन जाता है। एक पक्की सड़क दक्षिण की ओर आजमगढ़ को जाती है और भाऊ पार के पास राप्ती को पार करती है। गोरखपुर से और कई सड़कें भिन्न भिन्न दिशाओं को गई हैं।

गोरखपुर संयुक्त के बड़े शहरों में से एक है। घाघरा के उत्तर वाले प्रदेश में यह प्रान्त सब से बड़ा शहर है। यहां दो तिहाई हिन्दू और एक तिहाई मुसलमान बसे हैं। मुसलमानों का अनुपात दूसरे शहरों की अपेक्षा यहां अधिक इसलिये है कि अंग्रेजी राज्य के पूर्व यहां घाघरा के उत्तर में मुसलमानी सेना का अड्डा था। पहले राप्ती नदी अधिक उत्तर और पूर्व की ओर रामगढ़ ताल में होकर बहती थी। कुओं के खोदने पर नीचे प्रायः मान की लकड़ी मिलती है। अतः पुराना शहर वर्तमान शहर से अधिक उत्तर की ओर बसाया गया था। पुराने शहर के दो ओर राप्ती और रोहिन नदियों से रक्षा होती थी। पीछे की ओर उत्तर-पूर्व में घना जंगल था। कहते हैं राठौर राजपूत मानसेन ने दसवीं शताब्दी में गोरखपुर बसाया था। कुछ लोग उसे थारू बतलाते हैं। उसी ने मानसरोवर (ताल) बनवाया था। कौलादह उसकी स्त्री कलावती ने बनवाया था। डोमकटारों के आने के समय तक उसके वंशज राज्य करते रहे। इन नवान्तुओं ने रोहिन और राप्ती के संगम के समीप एक द्वीप पर एक कोट (किला) बनवाया। वर्षा में इसके चिन्ह कभी कभी दिखाई दे जाते हैं। सरनेत राजपूतों ने डोमिन कटारों की शक्ति नष्ट कर दी। गोरखपुर के समीप का प्रदेश सतासी राजाओं को मिला। प्रायः १४०० ईस्वी में इस राजवंश के सदस्यों में आपस में झगड़ा हुआ। कुछ सदस्यों ने रामगढ़ के तट पर बने हुये पुराने कोट को छोड़ दिया और गुरू गोरखनाथ (मछन्दर नाथ) की समाधि के समीप पुराने गोरखपुर में अपना निवास-स्थान बनाया। १६१० ईस्वी में राजा बसन्त सिंह के आधिपत्य में सारनेत राजपूतों ने मुसलमानी सेना को भगा दिया और बसन्तपुर मुहल्ले में नया गढ़ बनाया। यहाँ ७० वर्ष तक राजपूतों का प्रभुत्व रहा। १६८० में काजी खलीलुर्रहमान ने राजा रुद्रसिंह को यहां से निकाल दिया। उसने किले की मरम्मत करवाई और यहां मुसलमानी सेना का अड्डा बनाया। यह किला आयताकार था। इसके कोनों पर बुर्ज बने हुये थे। इसके कुछ ही समय

बाद युवराज मुअज्जम (जो आगे चलकर बहादुर शाह के नाम से विख्यात हुआ।) यहां शिकार करने के लिये आया। उसके सम्मानार्थ शहर का सरकारी नाम मुअज्जमाबाद रख दिया गया। १८०१ तक सरकारी नाम यही रहा। पहले यहां शाही सेना फिर अवध के नवाब की सेना रही। १८०१ में यहां ब्रिटिश अधिकार हो गया और शहर का सरकारी नाम भी गोरखपुर हो गया। कहते हैं जब प्रथम अँग्रेजों ने यहां डेरा डाला तो पड़ोस में इतने चीते थे कि उसे अपने डेरे के चारों ओर हाथी रखने पड़ते थे और आग जलती रखनी पड़ती थी। गोरखपुर की प्रथम सिविल लाइन कप्तान गंज मुहल्ले में थी। १८१० में गोरखपुर कैप्टेन गंज मुहल्ले में थी। गरमी की ऋतु में सभी अँग्रेज अफसर किले में चले आते थे। इसकी मोटी दीवारों के भीतर कम गरमी लगती थी। यहां छावनी बनाने में यह लाभ था कि नैपाल की सीमा की भली भांति रक्षा की जा सकती थी। नैपाली युद्ध में इसका महत्व और अधिक बढ़ गया। गदर में विद्रोहियों का अधिकार हो जाने पर भी शहर के कोई भारी स्थायी हानि नहीं उठानी पड़ी। १८८६ में छावनी तोड़ दी गई। १८६१ में यहां कमिश्नरी बनी। रेलवे के खुलने पर भी शहर की वृद्धि हुई। धीरे धीरे शहर उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता गया। वर्तमान शहर उत्तर से दक्षिण तक तीन मील के विस्तार में है। पूर्व से पश्चिम की ओर शहर और भी अधिक फैला हुआ है। शहर के बीच बीच में आम और दूसरे वृक्षों की अधिकता से प्रायः सब कहीं हरा भरा रहता है। बीच बीच में शाक भाजी के खेत हैं। फिर भी कुछ मुहल्ले अधिक घने हैं। शहर में कई मुहल्ले हैं। इनमें ३६ दक्षिणी भाग में हैं। २४ उत्तरी भाग में हैं। दोनों के बीच में एक बड़ा नाला है। रेलवे लाइन के उत्तर में माधोपुर, हुमायूंपुर और पुराना गोरखपुर के मुहल्ले अलग अलग बसे हैं। पुराने गोरखपुर मुहल्ले में मानसरोवर और कौलादह ताल हैं। यहीं गोरखनाथ का प्रसिद्ध मन्दिर है। यह प्राचीन मन्दिर मानसरोवर के उत्तर में है और आम के वृक्षों से घिरा है। यहां कनफटा जोगी रहते हैं। मन्दिर का दर्शन करने के लिये दूर दूर से यात्री आते हैं। मन्दिर में यात्री जो भेंट चढ़ाते हैं उसी से मन्दिर का खर्च चलता है। दक्षिणी भाग में अली नगर का मुहल्ला अधिक प्रसिद्ध है। इसी में धनी महाजनों के घर बने हैं। जतेईपुर मुहल्ले में कीर्ति चन्द धर्मशाला है जहां रेल से उतरने वाले यात्री ठहरते हैं। नगर के दक्षिण में मियां बाजार, उर्दू बाजार, साहब गंज और बसन्तपुर मुहल्ले हैं। बसन्तपुर मुहल्ला नदी के समीप दक्षिणी पश्चिमी सिरे पर है। यहीं पुरानी जेल उस स्थान पर बनाई गई जहां राजा बसन्त सिंह का किला बना था। दक्षिण की ओर पुरानी पक्की सराय उत्तर की ओर बगलादह ताल है। इसके किनारे पर म्यूनिसिपेलिटी का बगीचा है। इसके पूर्व में कब्बादह नाम का दूसरा ताल है। इन दोनों के बीच में होकर साहबगंज मुहल्ले की प्रधान सड़क जाती है। इसके उत्तर में जहां पुरानी पुलिस लाइन थी वहां सारवेशन आर्मी (मुल्क सेना) ने डोम बसा दिये। बसन्तपुर के पूर्व की ओर हल्सेगंज (बाजार) सब खपरैलों से छाया हुआ है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। इसके उत्तर-पूर्व में उर्दू बाजार है जो शहर का प्रधान व्यापारिक केन्द्र है। इसके पास ही जामा मस्जिद है जसे सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में शाहजादा मुअज्जम (बहादुरशाह) के सम्मानार्थ खलीलुरहमान ने बनवाया था। अधिक पूर्व में मियां बाजार है। यह नाम मियां साहब की स्मृति में रक्खा गया जिन्होंने रौशनअली के मकबरे के पास बड़ा बाजार बनवाया था। इसके पूर्व में डफरिन अस्पताल डाकखाना और कैम्पियर हाल है। यह हाल कैम्पियर साहब की स्मृति में बनाया गया जो इस जिले के उत्तरी भाग में बन के कई भागों के मालिक थे। इसका सब से बड़ा कमरा पडरौना कमरा कहलाता है जिसके बनाने के लिये पडरौना के राजा साहब ने १५,००० रुपया दिया था। कुछ चन्दा शहर के निवासियों ने दिया था। हाल के सामने महारानी विक्टोरिया की स्टेचू (मूर्ति) है। मियां बाजार के पश्चिम में नखास मुहल्ले में कोतवाली है। उत्तर-पश्चिम की ओर जुबली हाई स्कूल और गोरखपुर बैंक है। दक्षिण की ओर तारघर और

धर्मशाला है। कुछ ही दूर नार्मल स्कूल है। शहर के प्रायः मध्यवर्ती भाग में गीता प्रेस है जहां से गीता सम्बन्धी साहित्य और कल्याण का प्रकाशन होता है। म्यूनिसिपेलिटी के पूर्व में सिविल लाइन पुरानी छावनी और कई गांव हैं। कैम्पयर हाल के सामने खुली जगह में मजिस्ट्रेट का दफ्तर, पुलिस का दफ्तर और खजाना है। एक दम दक्षिण की ओर चर्च मिशनरी सोसाइटी का अंग्रेजी गिरजा घर है। यहीं ईसाई बस्ती है। अधिक पूर्व में कमिश्नरी की कचेहरी और दफ्तर है। इसके पास ही सेशन्स जज और मातहत जजों की कचहरियां और वकीलों की लाइब्रेरी है। इसके आगे परेड का मैदान है। उत्तर-पूर्व की ओर गुरखा धर्मशाला है। पूर्वी सिरे पर दौड़ का मैदान और पार्क है।

नोटीफाइड एरिया के उत्तर में रेलवे स्टेशन है। लाइन के दोनों ओर बहुत सी भूमि में रेलवे का ही कारबार है। यहां अवध तिरहुत रेलवे कम्पिनी के एजेंट का बंगला, रेलवे कर्मचारियों के रहने की जगह और इंजनों का बड़ा और मरम्मत करने का कारखाना है। रेलवे बस्ती के आगे डिस्ट्रिक्ट जेल है।

गोरखपुर शहर राप्ती नदी की ऊँची बाढ़ के तल से नीचा है। यदि पश्चिमी सीमा और इलाहीबाग के पास बांध न हो तो भारी बाढ़ में शहर का प्रायः समस्त दक्षिणी भाग डूब जावे। गोरखपुर कोई कारबारी नगर नहीं है। तम्बाकू और चमड़े पर गोटा लगाने का काम अच्छा होता है। कुछ बढ़ई भी होशियार है। रायगज मुहल्ले में पालकी बनाई जाती है। पर अधिकतर कारीगर रेलवे के कारखाने में चले गये।

गोरखपुर कमिश्नरी में शिक्षा का सब से बड़ा केन्द्र है। यहां का जिला हाई स्कूल (जिसे आज कल जुबली हाई स्कूल कहते हैं) १८७५ ई० में स्थापित हुआ। सेंट एंड्रूज कालेज का प्रबन्ध चर्च मिशनरी सोसाइटी के हाथ में है। इसी की ओर से यहां एक हाई स्कूल एक जूनियर हाई स्कूल और पांच प्राइमरी स्कूल हैं। इनके अतिरिक्त यहां इस्लामियां इन्टर कालेज और प्रताप हाई स्कूल है।

हाटा इसी नाम की तहसील के केन्द्र स्थान है। यह गोरखपुर से २३½ मील पूर्व की ओर कसिया को जाने वाली सड़क पर स्थित है। एक कच्ची सड़क उत्तर-पश्चिम में पिप्राइच और दक्षिण में देवरिया को गई है। १८७२ ई० में यहां तहसील की नई इमारत बनी। तहसीली के अतिरिक्त यहां रजिस्ट्री का दफ्तर थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। यहां एक धर्मशाला और ईदगाह भी है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहाओं जिले का एक प्राचीन स्थान है। यहां मुसेला से भागलपुर को जानेवाली सड़क को काटती है। यह सलेमपुर स्टेशन से ५ मील और गोरखपुर से ५३ मील दूर है। यह मझौली राज्य का एक गांव है। सथांव स्टेशन इसके समीप है। गांव १२०० फुट लम्बे और ४०० फुट चौड़े एक टीले पर बसा है। यहां पुराने समय की ईंटें बिखरी हुई हैं। यहां कुछ पुराने कुयें हैं जो पुराने समय की बड़ी बड़ी बड़ी ईंटों से बनाये गये हैं। यहां भूरे खुरदरे पत्थर का एक प्राचीन स्तम्भ है। यह २४½ फुट ऊंचा है। इसमें चारों ओर लोहे की एक छड़ लगी है। इससे सिद्ध होता है कि प्राचीन समय में इस पर सिंह की एक मूर्ति बनी थी। यह स्तभ आरम्भ में वर्गाकार बीच में षोडश भुजाकार और ऊपर गोल है। निचले भाग में जैन मूर्तियां बनी हैं। इसमें १४१ गुप्त सम्वत का एक लेख है। स्तम्भ के उत्तर में मन्दिर की एक दीवार के खंडहर हैं। इस मन्दिर में पांच मूर्तियां थीं जिनका इस स्तम्भ में उल्लेख है। पड़ोस में और कई मन्दिरों के खंडहर हैं। स्तम्भ के पास ही तीन प्राचीन ताल (पुरेना, कढ़ाही और भकराही) हैं। पुरेताताल के किनारे एक पुराने मन्दिर के खंडहर हैं। इसमें बुद्ध भगवान की भग्न मूर्ति है जो पहले ७ फुट ऊंची थी। गांव के पूर्व में आकाश कामिनी नाम का दूसरा ताल है। यही नाम इस मन्दिर का था। पहले यह स्थान ककुभ कहलाता था जैसा स्तम्भ के लेख में है। गांव का वर्तमान नाम ककुभ ग्राम या ककुभ वन का अपभ्रंश है।

कसिया गोरखपुर से ३४ मील पूर्व में देवरिया से २१ मील उत्तर-पूर्व में और पडरौना से १२ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। गोरखपुर से एक पक्की

सड़क कसिया होकर बभनौली और बिरा घाट को जाती है। एक सड़क दक्षिण-पूर्व की ओर काजीपुर और चवरा को जाती है। यहां ज्वाइंट मजिस्ट्रेट का बङ्गला, कचेहरी, थाना, डाक-तारघर इन्स्पेक्शन बङ्गला, अस्पताल, पड़ाव और जूनियर हाई स्कूल है। १६०६ में यहां की छोटी जेल तोड़ दी गई। १६०८ में पटवारी स्कूल तोड़ दिया गया। पटवारी स्कूल गोरखपुर चला गया। यहाँ सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

कसिया के पश्चिम में विशुनपुर गांव में गोरखपुर रोड (सड़क) और रामाभर ताल के बीच में जिले भर में सब से अधिक महत्वपूर्ण प्राचीन भग्नावशेष मिले हैं। यहां मिट्टी की पुरानी मुहरें मिलीं। इसका पुराना नाम विष्णु द्वीप था। यहां ईंटों का बना हुआ एक स्तूप निकला जो ५० फुट ऊंचा है। इसके ऊपर वृक्ष उग आये थे। दूसरा टीला कुछ छोटा है और अनुरुध्य गांव के उत्तर-पूर्व की ओर है। रामभर स्तूप से १ मील पश्चिम की ओर मठ कुंअर का कोट है। इसमें एक मन्दिर है। इसके भीतर मरणासन्न बुद्ध भगवान की लेटी हुई मूर्ति है। इसके पड़ोस में और कई मठ और भवन हैं। चौथा मठ कुंअर है। इसमें आसनबद्ध बुद्ध भगवान की विशालकाय मूर्ति है। यह गया के नीले धुंधले पत्थर की बनी है। बुद्ध भगवान बोधि वृक्ष के नीचे बैठे हैं। देवतागण उनकी सेवा कर रहे हैं। यह कोट से प्रायः ४०० गज दक्षिण-पश्चिम की ओर है। कोट के उत्तर और पूर्व में भीमावत है। इसमें दीवार का एक घेरा और कुछ छोटे छोटे टीले हैं। श्रद्धालु बौद्ध यात्रियों ने लेटी हुई मूर्ति पर सोने का पत्र चढ़वा दिया है। इन सब चिन्हों से सिद्ध होता है कि कसिया वह स्थान है जहां बुद्ध भगवान ने महानिर्वाण प्राप्त किया था।

खामपार भटपार स्टेशन से आनेवाली सड़क के पूर्व में मझौली से ८ मील और गोरखपुर से ६१ मील दूर है। यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

खुखुन्दू गांव गोरखपुर से, सलेमपुर और छपरा को जानेवाली सड़क से १ मील पूर्व की ओर नुनखार रेलवे स्टेशन से २ मील (दक्षिण-पश्चिम में) देवरिया से ८ मील और गोरखपुर ४४ मील दक्षिण पूर्व की ओर है। यहां थाना पड़ाव और प्राइमरी स्कूल है।

इसका पुराना नाम किष्किन्धापुर है। इसके पड़ोस में कई प्राचीन टीले और भग्नावशेष हैं। यहां नीले पत्थर की बनी हुई विष्णु, शिव, पार्वती और गणेश जी मूर्तियां मिली हैं। कुछ जैन मूर्तियां भी हैं। एक नये जैन मन्दिर में प्रथम तीर्थंकर विशम्भर नाथ मूर्ति है। यहां पटना और गोरखपुर के अग्रवाल सराउगी दर्शन करने आते हैं। कुछ लोग इसे पारसनाथ की मूर्ति बतलाते हैं। लार में गोरखपुर और देवरिया से छपरा को जानेवाली सड़क सिकरीगंज से आनेवाली सड़क से मिलती है। यह गोरखपुर से ५८ मील और देवरिया (तहसील) से २४ मील है। भटनी बनारस लाइन का लाररोड रेलवे स्टेशन यहां से ४ मील दूर है। यहां वशिष्ठ मुनि का बनवाया हुआ एक प्राचीन मन्दिर है। कहते हैं जब वशिष्ट जी की काम धेनु को चीता उठा ले गया तो मार्ग में गाय के मुंह से गिरी हुई लार को देख कर उसका पता लगाया था। इसी से इस नगर का यह नाम पड़ा। लार में मुसलमानों का एक बढ़िया इमामबाड़ा है। यहां साबुन बहुत बनाया जाता है और नैपाल को भेजा जाता है। यहां अनाज, सन, चीनी और चमड़े का व्यापार होता है। चमड़ा कानपुर को भेज दिया जाता है। यहां नैपाल से बहुत सा व्यापार का सामान आता है। यहां के व्यापारी कलकत्ते और पटने से व्यापार करते हैं। लार में थाना डाकखाना जूनियर हाई और ट्रेनिंग स्कूल है।

महराजगंज इसी नाम की उत्तरी तहसील का केन्द्र स्थान है और गोरखपुर शहर से ३६ मील उत्तर की की ओर बलिया नद के किनारे स्थित है। यहां से उत्तर-पूर्व की ओर निचलौल, पश्चिम की ओर फरेंदा रेलवे स्टेशन को सड़कें गई हैं। १८६० में यहां तहसील बनी। इसके अतिरिक्त यहां थाना, अस्पताल, डाकखाना, इन्स्पेक्शन बङ्गला धर्मशाला और जूनियर हाई स्कूल है। बन पास होने और हवा में अधिक नमी होने से वर्षा ऋतु में यहां की जलवायु बड़ी अस्वास्थ्यकर रहती है।

मन्सूरगंज हाटा तहसील की उत्तरी सीमा पर गोरखपुर से १८ मील उत्तर पूर्व की ओर है। यहां से एक सड़क दक्षिण की ओर पिप्रैच स्टेशन होती हुई गोरखपुर को जाती है। उत्तर की ओर यह सड़क पतवाल, हरपुर और निचलौल को गई है। १८४५ में यह तहसील का केन्द्र स्थान बना। १८६० में तहसील महाराजगंज को चली गई। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। प्रति सोमवार को बाजार लगता है।

निचलौल महाराजगंज (तहसील) से १६ मील और गोरखपुर से ४१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। दक्षिण की ओर पिप्रैच स्टेशन, दक्षिण-पश्चिम में बाणपार, ब्रिजमनगंज और गोरखपुर के दक्षिण में कोठीभार स्टेशन और केप्टेन गंज को सड़कें जाती हैं। उत्तर को ओर दो सड़कें नैपाल की सीमा के पास थूथीबारी और वहवर को गई हैं। पहले यह एक बड़ा व्यापार केन्द्र था। फिर रेल ने इसके व्यापार को छीन लिया। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। वृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यह प्राचीन स्थान है। यहीं पुराना तिलपुर था जो मुसलमानी आक्रमण में नष्ट हो गया। यहां तिलपुर के राजाओं की राजधानी थी। बुटवल के राजा भी यहाँ कुछ समय तक रहे। वे गदर में सम्मिलित हुये। अतः उनकी पेन्शन और राजा की उपाधि छीन ली गई।

पडरौना पांच गांवों के मिलने से बना है। यह इसी नाम की पूर्वी तहसील का केन्द्र स्थान है। यह क्रेप्टेगंज से बंसी घाट और बेतिया को जाने वाली सड़क पर कसिया से १२ मील और गोरखपुर से ४६ मील दूर है। पडरौना से उत्तर में नौरंगियां और सिसवा बाजार को दक्षिण पूर्व में तिवरी पट्टी और तमकुही को दक्षिण में समूर और छपरा को सड़कें गई हैं। पडरौना बनरी नदी के पास स्थित है। यह नदी वर्षा ऋतु में बहने लगती है। ऐसा जान पड़ता है कि जहां इस समय बनरी नदी बहती है वहीं पहले गंडक का पुराना मार्ग था। १८७८ में जब इधर एक बड़ा ताल खोदा गया तो तली में नीचे एक बड़ी नाव गड़ी मिली। पडरौना की जलवायु अच्छी नहीं है। पर यह स्थान बड़ा प्राचीन है। पुरातत्ववेत्ताओं की दृष्टि में यहीं बौद्ध कालीन पावा स्थित था। पडरौना के दक्षिण में एक बड़ा खेरा (टीला) है जो टूटी ईंटों से ढका है। यह २२० फुट लम्बा १२० फुट चौड़ा १४ फुट ऊँचा है। यहां एक प्राचीन बौद्ध विहार था। कहते हैं पावा में बुद्ध भगवान की शव की अस्थियों का आठवां भाग पावा को मिला था। इन्हीं के ऊपर एक विशाल स्तूप बनाया गया था। कहते हैं मुसलमानों ने इस स्थान को उजाड़ दिया था। यहां से ४ मील की दूरी पर सैयद सालार मसूद के एक साजी बुढ़ान शहीद का मकबरा बना हुआ है। पन्द्रहवी शताब्दी में पडरौना पर एक राजपूत सरदार मदन सिंह का अधिकार हो गया। उसने इसे अपने पुरोहित रासू को दे दिया। पर अब से सवा दो सौ वर्ष पहले यहां कुरमी आकर बस गये। जब से यहां कुरमी राज्य की स्थापना हुई तब से पडरौना की उन्नति हुई। ब्रिटिश राज्य के आरम्भ में पडरौना के रईसों की जायदाद कुछ कम हो गई। लेकिन जब सिंह साहब मर गये तो राय ईश्वरी प्रताप राय ने उनका जङ्गल लगभग सवा लाख रुपये में मोल ले ली। इनको राजा की उपाधि मिल गई। इस वंश के राजा की सुन्दर कोठी पडरौना के पास बनी हुई है। पडरौना के तीन भाग हैं। पडरौना प्रधान, साहबगंज जो उत्तर की ओर बंसी घाट के समीप है। छावनी कसिया सड़क के पास है। साहबगंज को फिंच नाम के एक निलहे गोरे ने बसाया था। प्रधान पडरौना साहब गंज से मिला हुआ है। यहीं बाजार है। यहां तांबे और फूल के बरतन बनाये जाते हैं। यहां तहसील, थाना डाक, तारघर, अस्पताल, हाई और जूनियर हाइ स्कूल है। उत्तर की ओर एक बड़ा ताल है। इसके किनारे श्यामधाम और रामधाम नाम के दो मन्दिर बने हुये हैं। पडरौना और छावनी के बीच में पड़ाव और जूनियर हाई स्कूल हैं। छावनी में ही तहसील है। किसी समय यहां अवध के नवाब वजीर के सिपाही रहते थे। इसलिये इसका नाम छावनी पड़ गया।

पैकुली गांव देउरिया से रुद्रपुर को जाने वाली सड़क से दो मील पूर्व की ओर देउरिया (तहसील) से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसके पास

वाजे सरौली कोट (किले) की रक्षा के लिये मझौली के राजा ने यहां सारन से आये हुये राजपूतों को वसा दिया था। यहां एक स्कूल है। प्रति सप्ताह बाजार लगता है। यहां एक बड़ा ठाकुर द्वारा वैरागियों का मठ और सरोवर है।

पैना का बड़ा गांव घाघरा के उत्तरी किनारे पर घाघरा और कच्ची सड़क के बीच में स्थित है जो बरहज को जाती है। पैना गांव बरहज से ४ मील और गोरखपुर से ४४ मील दूर है। पैना वैल हांकने की लकड़ी को कहते हैं। कहते हैं यहां एक साधू आया था। उसे एक पैने के बराबर ही जमीन मिली थी। उसके मरने पर उसकी समाधि यहां बनी। इसके चारों ओर जो गांव वसा उसका नाम भी पड़ गया। पहले यहां बिसेन जमीदार थे। गदर में इन्होंने सरकारी वैलगाड़ियों को जीत लिया। अत: गदर के बाद यह गांव जीत लिया और मझौली के राजा को दे दिया गया। कहते हैं बिसेन लोगों को दन्ड देने के लिये जो सेना आई वह इनकी कुछ स्त्रियों को भी ले गई। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

पनेरा गांव केप्टेन गंज से कैम्पियर गंज और कमैनी घाट को जाने वाली सड़क पर केप्टेन गंज से १६ मील और गोरखपुर २४ मील की दूरी पर वन के किनारे स्थित है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां प्रति सप्ताह एक छोटा बाजार लगता है।

पिप्रैंच गांव केप्टेन गंज को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से १३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से दक्षिण में बढ़ी, पूर्व में हाटा को, उत्तर में निचलौल को सड़क जाती है। रेलवे की शाखा लाइन पास ही है। यहां शक्कर बनाने का काम बहुत होता है। बाजार में अनाज, कपड़ा और धातु के बतनों का व्यापार होता है। पास वाले सिधुवा गांव में भी बाजार लगता है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। रामकोला बनरी के बांयें किनारे पर पडरौना से दस मील पश्चिम की ओर गोरखपुर से ३३ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। प्रति सप्ताह एक छोटा बाजार लगता है।

रामपुर लानपुर या रामपुर कारखाना देउरिया से कसिया को जाने वाली पक्की सड़क के पास देउरिया से ५ मील और गोरखपुर से ३८ मील दूर है। एक पक्की सड़क देउरिया रेलवे स्टेशन को जाती है। चीनी के कारवार का यह जिले में एक प्रधान केन्द्र है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

रिगौली कैम्पियर गंज रेलवे स्टेशन से ३ मील और गोरखपुर २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर धमेला के किनारे पर राप्ती संगम के समीप स्थित है। इसके सामने कमैनी घाट है जहां गोरखपुर, केप्टेनगंज और ब्रिजमन गंज से आनेवाली सड़कें मिलती हैं। यह राप्ती नदी का जिले भर में सबसे अधिक महत्वपूर्ण घाट है। यहां थाना, डाकखाना, और प्राइमरी स्कूल है। यहां के जुलाहे गाढ़ा बुनते हैं और मनिहार चूड़ियां बनाते हैं। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है।

रुद्रपुर गोरखपुर से बरहज को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से २७ मील दूर है। यहां उत्तर-पूर्व में देउरिया और उत्तर में हाटा से आने वाली सड़कें मिलती हैं। इसके पश्चिम की ओर मझनाया वघुआ नदी बहती है। कुछ ही दूर दक्षिण की ओर इसमें फरना नदी मिलती है। वर्षाऋतु में इसमें नावें चल सकती हैं। पर यहां कोई बड़ा व्यापार नहीं होता है। यहां थाना, डाकखाना अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। मझना के किनारे गोला में अनाज का व्यापार होता है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। कहते हैं रुद्रपुर ही प्राचीन हुन्स क्षेत्र है जिसका चीनी यात्रियों ने उल्लेख किया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अयोध्या से आकर वशिष्ट सिंह नामी एक राजपूत ने यहां नव काशी नाम का एक नगर बसाया। पहले इसे भारों ने छीन लिया। फिर यहां सतासी के सारनेत राजपूतों का अधिकार हो गया। वर्तमान नाम राजा रुद्रसिंह की स्मृति में पड़ा। उन्होंने यहां किला बनवाया था। उत्तर की ओर पौन मील की दूरी पर प्राचीन सहनकोट या नाथ नगर है। यह एक विषम चतुर्भुज घेरा है। इसकी चौड़ाई दो-ढाई हजार फुट है। इसके दक्षिण में दूसरा बाहरी और निचला घेरा है। इसकी लम्बाई ३५

और चौड़ाई २५०० फुट है। इसके कुछ भाग में खेती होती है। किले के चारों ओर १५ से २५ फुट तक ऊंची चारदीवारी है।

कुछ लोग यहां की ईंटे और पत्थर घर बनाने के लिये निकाल ले गये। कोट की चूनी दीवार के पास दूधनाथ का पुराना मन्दिर है। इसके चारों ओर आठ नये मन्दिर हैं। इसमें विष्णु की विशाल मूर्ति और जैनियों के अन्तिम तीर्थङ्कर की छोटी मूर्ति है। इसके पड़ोस में अनेक टीले और भग्नावशेष लम्बाई और चौड़ाई में दो दो मील तक बिखरे हुये हैं। निसन्देह यहां पहले कोई बड़ा नगर था। राजा रुद्र सिंह के समय से गदर तक यहां सतासी राजवंश की राजधानी रही। राजमहल सहनकोट से मिला हुआ था। इस समय यह जीर्ण है। राजा की जायदाद जब्त कर ली गई। सहजनवा का छोटा गांव गोरखपुर से १० मील पश्चिम की ओर है। यहां थाना पड़ाव और गोरखपुर से गोंडा और बस्ती को जानेवाली लाइन का स्टेशन है। वास्तव में स्टेशन लुजुई गांव में है जहां डाकखाना है। यहां सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। पड़ोस में गेहूँ बहुत होता है।

मझौली और सलेमपुर वास्तव में दो कस्बे हैं और पास स्थित है। मझौली छोटी गंडक के बायें किनारे पर और सलेमपुर दाहिने किनारे पर स्थित है यह गोरखपुर से ५२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर और देवरिया (तहसील) से १६ मील दूर है। मझौली से सलेमपुर १ मील पश्चिम की ओर गोरखपुर से छपरा को जानेवाली सड़क के पास है। दोनों एक पक्की सड़क से जुड़े हैं जो प्रधान लाइन के भाटपार स्टेशन को जाती है। दक्षिण की ओर यह सड़क सलेमपुर को गई है। सलेमपुर के पास ही भटनी से बनारस को जानेवाली लाइन का स्टेशन है। यहां से एक शाखा पश्चिम की ओर बरहज को जाती है।

कहते हैं बिसेन राजवन्श के पूर्वज मयूर ने मझौली को बसाया था। उनका प्रथम निवास स्थान २ मील दक्षिण-पूर्व की ओर कुन्दलपुर में था। उसके पश्चात मयूर के वन्शज मझौली में रहने लगे आजकल राजा साहब नदी के ऊंचे किनारे पर ईंटों के बने हुये पक्के किले में रहते थे। सलेमपुर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि अकबर के कर्मचारी फिदई खां ने फतेहपुर सीकरी के प्रसिद्ध फकीर शेख सलीम चिश्ती को यहां कुछ भूमि दान में दी थी। इस भूमि पर जो नगर बस गया उसका नाम फकीर के सम्मानार्थ सलेमपुर रक्खा गया। कुछ लोगों का अनुमान है कि राजा बोधमल ने अपना नाम बदलकर इस्लाम खां या सलीम खां रख लिया था और यहीं रहने लगे थे। इसलिये इसका यह नाम पड़ गया। नगर और नदी के बीच में उसका मकबरा बना है। आजकल मझौली और सलेमपुर वास्तव में एक कस्बा बन गये हैं। मझौली में हिन्दू और सलेमपुर में मुसलमान रहते हैं। सलेमपुर में थाना और डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। मझौली में हाई स्कूल, जूनियर हाई स्कूल डाक तारघर और लड़कियों का स्कूल है।

सेमरा गांव फरेंदा रेलवे स्टेशन से ६ मील उत्तर-पूर्व की ओर गोरखपुर से ३६ मील दूर है। निजमनगंज से निचलौल को जाने वाली सड़क इसके उत्तर में है। फरेन्दा से महराजगंज को जाने वाली सड़क इसके दक्षिण में है। यह वन के पास रोहिन के किनारे स्थित है। यहां थाना और डाकखाना है। इस छोटे गांव में अधिकतर अहीर रहते हैं।

सिस्वा बाजार कप्टेनगंज से निचलौल को जाने वाली सड़क पर महाराजगंज से ११ मील पश्चिम की ओर और गोरखपुर से ४३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। गांव के दक्षिण में गोरखपुर से बगहा को जाने वाली रेलवे लाइन सड़क को पार करती है। स्टेशन पूर्व की ओर है। पहले नेपाल का चावल सड़क पर निचलौल से गोरखपुर और चौरी चौरा को जाता था। अब यह सीधे सिस्वा रेलवे स्टेशन को आता है। रेल से सिस्वा का व्यापारिक महत्व बढ़ गया है। निचलौल से सिस्वा केवल १५ मील दूर है। मारवाड़ी और अनाज के दूसरे व्यापारी यहां आकर बस गये हैं।

सोहनाग का छोटा गांव प्राचीन भग्नावशेषों के लिये प्रसिद्ध है। यह सलेमपुर से ३ मील दक्षिण-

पश्चिम की ओर है। सलेमपुर से भागलपुर को जाने वाली सड़क से १ मील पश्चिम की ओर है। यहां का प्राचीन ताल १८ एकड़ है। यहां बौद्धकाल के कई भग्नावशेष फैले हुये हैं। ताल के पश्चिम में किनारे पर एक ५० फुट ऊंचा और १०० फुट चौडा टीला है। यह ऊंचा भाग में स्तूप और निचले भाग में विहार जान पड़ता है। इसकी चोटी पर परसराम का छोटा मन्दिर है। इसके बाहर महा रुद्रनाथ शिव का मन्दिर है। पड़ोस में और कई मन्दिर हैं। इनकी मूर्तियां बौद्धकालीन हैं। कहते हैं पहले यह नागपुर कहलाता था। यहां परसराम ने तपस्या की थी। मन्दिर बहुत पहले टूट फूट गया था। नैपाल नरेश सोहन ने उनका जीर्णोद्धार किया वह कुछ रोग की औषधि के लिये काशी जा रहे थे। लेकिन इस ताल में स्नान करने से उनका कोढ़ अच्छा हो गया। तभी से इसका नाम सोहनाग पड़ गया। कुछ लोगों का कहना है कि सोहन बिसेन राजपूत था। मझौली के बिसेन लोगों का इन मन्दिरों से घनिष्ट सम्बन्ध है। बैसाख मास में यहां बड़ा मेला लगता है। इसके पास ही रामानन्दियों का मठ है। यह मठ धर्मदास ने स्थापित किया था। प्रसिद्ध साधू जीवाराम जी कूंडी छोड़कर बाहर चले गये। जाते समय वह कह गये थे कि जिस दिन मैं मरूंगा उसी दिन यह कूंडी टूट जायगी। बारह वर्ष बाद कूंडी टूट गई। पर वे कहां मरे इसका पता न लग सका। जीवाराम जी की समाधि पर कूंडी का एक टुकड़ा रक्खा हुआ है। इसे यात्री लोग बड़ी श्रद्धा से देखते हैं।

तमकुही कसिया से छपरा को जानेवाली सड़क पर गोरखपुर से ५८ मील पूर्व की ओर है। यह पडरौना (तहसील) से २२ मील दूर है। एक सड़क पश्चिम की ओर काजीपुर को जाती है। यहां तार-डाकघर, प्राइमरी स्कूल और पड़ाव है। यहीं तमकुही के राजा की राजधानी और उनकी कोठी है। यहां से ३ मील उत्तर की ओर बभनौली में नील की बड़ी कोठी है।

तरिया सुजान का बड़ा गांव तमकुही से ६ मील दक्षिण-पूर्व में और बड़ी गंडक से पांच मील पश्चिम की ओर स्थित है। यह सड़क से कुछ दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

तरकुलवा देवरिया से कसिया को जाने वाली सड़क के पश्चिम में देवरिया से १२ मील और गोरखपुर से ४० मील पूर्व-दक्षिण की ओर है। छोटी गंडक यहां से १ मील दूर है। रेतीले टीले पर बसा होने के कारण यह पड़ोस के भाट प्रदेश से अधिक स्वास्थ्यकर है। यहां थाना, और डाकखाना है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है।

थूथीबारी जिले के धुर उत्तरी सिरे पर नैपाल की सीमा के पास पियास नदी के किनारे पर स्थित है। यह गोरखपुर से ६० मील और महाराजगंज (तहसील) से २५ मील दूर है। यहां के व्यापारी नैपाल से व्यापार करते हैं। प्रति सप्ताह बाजार लगता है। यहां थाना और डाकखाना है। इसके सामने नैपाल राज्य में इसी की टक्कर का अमिनीगंज गांव है। थूथीबारी में नैपाल के कैदी नैपाल को भेज दिये जाते हैं जो हिन्दुस्तानी कैदी नैपाल में होते हैं वे यहां भेज दिये जाते हैं। इस प्रकार यह नैपाल और हिन्दुस्तान के कैदियों का परिवर्तन स्थान है। उनौला या अनौला गोरखपुर और रुद्रपुर से सिकरीगंज को जाने वाली सड़क से कुछ दूर पश्चिम की ओर है। यह बांस गांव (तहसील) से ७ मील उत्तर-पश्चिम की ओर गोरखपुर से १३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। उनौला के राजा उनवल में रहते हैं।

आज़मगढ़

आज़मगढ़ गोरखपुर कमिश्नरी का सब से अधिक दक्षिणी जिला है। यह विषम आकार का जिला घाघरा के दक्षिण के २५°३८' और २६°२७' उत्तरी अक्षांशों और ८२°४० और ८३°५५ पूर्वी देशान्तों के बीच में स्थित है। इसके पूर्व में बलिया का जिला, दक्षिण में जौनपुर और गाजीपुर के जिले हैं। पश्चिम में जौनपुर और सुल्तानपुर के जिले हैं। इसके उत्तर में फैजाबाद और गोरखपुर के जिले हैं। गोरखपुर और आजमगढ़ के बीच में घाघरा नदी प्राकृतिक सीमा बनाती है। फैजाबाद की ओर सीमा कृत्रिम है। पश्चिम से पूर्व तक जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ६० मील है। उत्तर से दक्षिण तक जिले की चौड़ाई ५४ मील है। इसका क्षेत्रफल घाघरा के इधर उधर ही जाने से प्रति वर्ष घटता बढ़ता रहता है। इसका औसत क्षेत्रफल २२०७ वर्ग मील है। जिले के पश्चिमी परगनों में कई ऐसे गांव हैं जिनका सम्बन्ध फैजाबाद जिले से है। आजमगढ़ जिले का एक गांव फैजाबाद जिले के भीतर स्थित है।

आज़मगढ़ का जिला एक समतल मैदान है। इसमें पहाड़ियों और ऊंचे टीलों का अभाव है। इस जिले में बहने वाली छोटी छोटी नदियों ने भूमि को कुछ विषम बना दिया है। घाघरा के पड़ोस में कुछ दूर तक उत्तर की ओर ढाल है। अधिकांश जिले का ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर है। बीच बीच में कुछ ऐसे आखात (गढ़े) हैं जहां भीतरी भागों का वर्षा जल इकट्ठा हो जाता है और किसी नदी में नहीं पहुँचने पाता है। कुछ ऊँचे ऊसर भी हैं। ऊँचे ऊसरों और नीचे आखातों में पेड़ नहीं उगते हैं। इनका दृश्य बड़ा उजाड़ है। जिला दो प्राकृतिक भागों (ऊंचा प्रदेश और दक्षिणी नीचा प्रदेश) में बांटा जा सकता है। उत्तरी शाहगंज से आजमगढ़ शहर मऊ को जानेवाली पक्की सड़क जिले को इन दो भागों में बांटती है। दक्षिण प्रदेश में अधिकतर चिकनी मिट्टी है। इस निचले प्रदेश में दलदलों, झीलों और तालाबों की अधिकता है। गंगी, उदन्ती, बेसू, मंगई और भैंसाही नदियां इस प्रदेश का पानी बहा ले जाती हैं। यह नदियां दलदलों से निकलती हैं। गंगी, बेसू और मंगई नदियां पश्चिमी सीमा पर अथवा इसके आगे जौनपुर जिले से निकलती हैं। उदन्ती और भैंसाही नदियां इस जिले से ही निकलती हैं। यह सब नदियां पूर्व या दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं और अन्त में गंगा में मिल जाती हैं। गंगी और बेसू नदियां सीधे गंगा में मिलती हैं। उदन्ती नदी बेसू में मिल जाती है। मंगई और भैंसाही नदियां सरजू में मिलती हैं। ऊपरी मार्ग में इन नदियों की तली पड़ोस की भूमि से बहुत कम नीची है। इनमें सिंचाई के लिये बांध बना लिये जाते हैं। पूर्वी भाग में इनकी तली गहरी हो जाती है। शेष भाग में कहीं नीचे आखात और दलदल है। कहीं कुछ ऊंची भूमि है। इसी पर छोटे छोटे गांव बसे हैं। जहां ऊसर नहीं है वहां खेती होती है। इस दक्षिणी प्रदेश का क्षेत्रफल ६२८ वर्ग मील है।

उत्तरी प्रदेश दो भागों में बटा हुआ है। ऊँचा मैदान बांगर कहलाता है।

घाघरा के पड़ोस की निचली भूमि को कछार कहते हैं। आजमगढ़ जिले का बांगर अत्यन्त उपजाऊ है। इसके कुछ भाग को उत्तर-पूर्व में छोटी सरजू नदी ने काट दिया है। इस प्रदेश का कुछ वर्षाजल छोटी सरजू में बह जाता है कुछ छोटी छोटी नदियों के द्वारा घाघरा नदी में पहुँचता है। बांगर के अधिक बड़े भाग का वर्षा जल टोंस और उसकी सहायक नदियों में बह जाता है। टोंस नदी पश्चिम में अहरौला से पूर्व में मऊ तक जिले को पार करती है। मऊ के पास ही छोटी सरजू में मिल जाती है। टोंस और उसकी सहायक नदियों का मार्ग बहुत गहरा और टेढ़ा है। टोंस की घाटी बड़ी तंग है। इससे इसमें प्रायः प्रति वर्ष बाढ़ आती है। इससे पड़ोस की फसलों को हानि होती है। बांगर की भूमि कड़ी है। लेकिन नदियों के समीप बलुई हो गई है। तंग गढ़ों में चिकनी मिट्टी पाई जाती है। कहीं कहीं कुछ ऊसर भी है। इधर बाग और पेड़ बहुत हैं। इससे इस भाग की भूमि बड़ी

उपजाऊ है। आबादी घनी है। थोड़ी थोड़ी दूर पर छोटे छोटे गांव बसे हैं। उत्तरी भाग का कछार घाघरा के प्राचीन मार्ग में स्थित है। कुछ काछर घाघरा के वतमान मार्ग के समीप है। वतमान कछार की चौड़ाई प्रायः ६ मील है। पुराना कछार छोटी सरजू के समीप है। यह बांगर से भिन्न है। छोटी सरजू फैजाबाद जिले में निकलती है। अतरौलिया को पार कर के गोपालपुर परगने के उत्तर में यह कछारी प्रदेश में प्रवेश करती है। गोपाल परगने में ही छोटी सरजू की एक धारा ने अपना मार्ग पृथक बना लिया है। छोटी सराजू घाघरा के पुराने मार्ग में बहती हुई मऊ के पास टोंस में मिल जाती है। दोनों की सयुक्त धारा को सरजू नाम से पुकारते हैं। बलिया के पास सरजू गङ्गा में मिल जाती है। कछार की मिट्टी प्रायः बलुई है। निचले भाग में चिकनी मिट्टी है। बाढ़ के समय यह प्रदेश दूर तक पानी में डूब जाता है। बाढ़ के घटने पर लम्बे गढ़ों में पानी शेष रह जाता है। इससे सलोल, पकरी, पेवा, और नरजा आदि झीलें बन गई हैं।

नदियां—घाघरा जिले की सब से बड़ी नदी है। इसमें १००० मन बोझ लादने वाली नावें वर्ष भर चल सकती हैं। यह कमायूं और नैपाल के पहाड़ों से निकलती है और चौका कौरियाला राप्ती आदि नदियों के मिलने से बनती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। इससे प्रायः बड़ी हानि हो जाती है। बाढ़ के समय यह बडी वेगवती हो जाती है। दोहरी घाट के पास इसके किनारों पर कड़ा कंकड़ है। दूसरे स्थानों में इसके किनारे रेतीली हैं। इसकी घाटी की चौड़ाई घटती बढ़ती रहती है कभी कभी इसकी चौड़ाई १० मील तक हो जाती है। बाढ़ के बाद यह बलुई मिट्टी छोड़ देती है। कभी कभी यह उपजाऊ कांप भी छोड़ देती है। बाढ़ के बाद नदी प्रायः अचानक अपना मार्ग बदल देती है। नथूपुर के पास नदी के कटाव को रोकने के लिये सूरजपुर से डुबरी तक आठ मील लम्बा बांध बनाया गया। दोहरी घाट के पश्चिम में जौनपुर से गोरखपुर को जानेवाली पक्की सड़क को एक बार नदी ने तेजी के साथ काटना आरम्भ किया। इससे सड़क को नदी से दो मील दूर हटाना पड़ा। इसी कटाव के कारण १६०४ ईस्वी में गोरखपुर जिले की ६० वर्ग मील भूमि आजमगढ़ जिले में मिलानी पड़ी। आजमगढ़ जिले में घघरा की लम्बाई ४४ मील है। इस समस्त लम्बाई में घाघरा गोरखपुर और आजमगढ़ जिलों के बीच में सीमा बनाती है।

टोंस नदी फैजाबाद से आकर महुल से ६ मील उत्तर-पूर्व में आजमगढ़ जिले में प्रवेश करती है। कुछ दूर आगे मझुई नदी इसमें मिलती है। यहां से यह ३५ मील बहुत ही टेढ़ा मार्ग बनाती हुई आजमगढ़ शहर में पहुँचती है।

आजमगढ़ शहर के आगे यह ८ मील तक उत्तर-पूर्व की ओर सगरी के दक्षिण में बिरमन में पहुँचती है। इसके आगे मुहम्मदाबाद के पास होती हुई दक्षिण-पूर्व को बहती है और छोटी सरजू से मिल जाती है। दोनों नदियों की संयुक्त धारा मऊनाथ भजन परगने को पार करके कुछ दूर तक फिर मुहम्मदबाद के परगने को पार करती है अन्त में यह आजमगढ़ जिले को छोड़ कर गाजीपुर जिले में चली जाती है। घाघरा जिले की सबसे बड़ी नदी अवश्य है पर जिले का बहुत कम वर्षा जल घाघरा में जाता है। उत्तर में कछार के केवल कुछ नाले (बदरौवा, हाहा आदि) और जिले के बाहर भरई और बसनई धारायें घाघरा में मिलती है।

इस जिले में झीलें और ताल बहुत हैं। कुछ कुछ बहुत बड़े हैं। जिले की लगभग डेढ़ लाख एकड़ भूमि पानी से घिरी हुई है। इसमें नदियां भी शामिल हैं लेकिन नदियां बहुत थोड़ा भाग घेरती हैं। अधिकतर भाग झीलों और तालाबों से घिरा है। घोसी तहसील में सबसे अधिक झीलें हैं। इसके बाद सगरी देवगांव और अहरला में जल की अधिकता है। अधिकतर दलदल निचले आखातों में हैं: इनमें से कुछ दलदलों और झीलों का फालतू पानी नालों के द्वारा इधर उधर बह जाता है। कुछ झीलों का पानी कहीं नहीं बह पाता है। कछारी प्रदेश की लम्बी झीलें नदियों के पुराने मार्ग में स्थित हैं। और नदियों का प्रवाह मार्ग बदल जाने के कारण बनी हैं। जिन झीलों से नाले निकलते हैं वे गरमी की ऋतु में सूख जाती हैं। शेष कुछ में पानी बना रहता है। वर्षा ऋतु में सभी झीलें दूर तक फैल

जाती हैं। उत्तरी प्रदेश के दक्षिण प्रदेश की अपेक्षा ताल और दलदल कम हैं वे अधिक बड़े भी नहीं हैं। धाराओं से बीच वाले ऊंचे भाग में भी दलदलों और तालों का प्राय: अभाव हैं। सबसे बड़े ताल दक्षिणी भाग में देवगांव तहसील में कोटैल, जमुआवां और गुमाहित हैं। कुम्भताल परगना महुल और देव गांव की सीमा पर है। महुल में पुख में और मुहम्मदाबाद में असौना ताल भी बड़े हैं। निजामबाद परगने में गम्भीरबन ताल सबसे बड़ा है। जब तक इनमें पानी रहता है तब तक इनमें सिवार और मछलियां रहती हैं। इनसे सिंचाई भी होती है। उत्तरी प्रदेश में कोइला, कासला, घासला (महुल परगने में) केंती और दुहिया घिरवा (अतरौलिया परगने में) अरा, तेलहना, मंछिल कुछ उल्लेखनीय हैं। सगरी में सालोन ताल १२,००० फुट लम्बा और ६००० फुट चौड़ा और २० फुट गहरा है। घोसी में पकरी पेंवा ताल ६ मील लम्बा और दो मील चौड़ा और २५ फुट गहरा है। यह तीनों ताल कभी नहीं सूखते हैं।

सलोना ताल का अधिकतर भाग सूख जाता है। ताल के सूखे हुये भाग में गेहूँ उगाया जाता है। पकरी पेंवा ताल इन सबसे बड़ा है इसके ऊपर अधिक लद रहता है। कहते हैं इस लद के ऊपर से मनुष्य पैदल चल सकता है। रतोई ताल से हाहा नाला निकलता है।

आजमगढ़ जिले में अच्छी खेती होती है फिर भी यहां ऊसर और उजाड़ भूमि अधिक है। लगभग २० फसदी भूमि ऊसर और उजाड़ है। इसमें प्राय: डेढ़ लाख एकड़ भूमि पानी से घिरी है। कुछ पानी से घिरी है। कुछ भूमि में गांव बसे हैं। इस प्रकार डेढ़ लाख एकड़ से अधिक भूमि ऐसी है जिसमें खेती नहीं हो सकती है। देवगांव तहसील में सबसे अधिक भूमि वीरान है। इनमें ऊसर और रेह है। ऊसर भूमि कुछ ऊंची है। इनके पास वाली नीची उपजाऊ भूमि में धान की खेती होती है। खुश्क ऋतु में ऊसर के ऊपर सफेद रेह निकल आता है। कुछ ऊसरों में रेह ऊपर प्रगट नहीं होता है। लेकिन धरातल पर नमक होने के कारण उन में खेती नहीं हो पाती है। उत्तरी भाग में ऊसर पुराने ऊंचे बांगर में मिलते हैं। टोंस और दूसरी छोटी नदियों के गहरे नालों के समीप भी ऊसर भूमि मिलती है। कहीं कहीं नालों के समीप पेड़ हैं जिससे भूमि का कटना रुक गया है कहीं कहीं कहीं नालों के पड़ोस में मुलायम मिट्टी वह गई है। कड़ी कंकड़ीली भूमि शेष रह गई है। ऊसर के कुछ भागों में पर्याप्त पानी मिलने से धान की फसल हो जाती है। पानी के भरे रहने से नमक ऊपर नहीं प्रगट होता है। लेकिन सूखने पर नमक ऊपर आ जाता है और दूसरी फसल को जमने (बढ़ने) नहीं देता है। इस जिले में जङ्गल का अभाव है केवल घाघरा के समीप रेतीले भागों में झाऊ की अधिकता है। कछारी भाग में पेड़ों की कमी है। टोंस और दूसरी छोटी नदियों के समीप ढाक सिहोर अकोल और बबूल का जङ्गल है। जिले भर में प्राय: ५०,००० एकड़ भूमि जङ्गल से ढकी है। इस जिले में गोचर भूमि की कमी है। गांवों के पड़ोस में महुआ, आम आदि पेड़ों के बाग हैं। घाघरा के समीप झाऊ के जङ्गल में जङ्गली सुअर बहुत हैं। ढाक के जङ्गल में नील गाय, लोमड़ी और शृगाल हैं। सांप सब कहीं हैं। तालावों में मछलियों की अधिकता है। गोचर भूमि की कमी से घी दूध के जानवर भी अच्छे नहीं हैं।

अप्रैल, मई और जून आजमगढ़ जिले में अधिक गरमी के महीने हैं। इन महीनों में तापक्रम छाया में ७० अंश से ११० अंश फारेन हाइट तक हो जाता है। इन दिनों हवायें पश्चिम की ओर से चलती हैं। जून के अन्त में वर्षा लाने वाली पूर्वी हवा चलने लगती है। वर्षा होने पर तापक्रम कुछ कम हो जाता है। लेकिन हवा में नमी बढ़ जाने से कम गरमी भी असह्य हो जाती है। वर्षा अक्तूबर के आरम्भ तक होती है। लेकिन वर्षा लगातार नहीं होती है। औसत से यहां ४ इञ्च वर्षा होती है। कभी कभी वर्षा समाप्त होने पर तेज धूप हो जाती है और हवा में पश्चिम की ओर से चलने लगती है। कहते हैं वर्षा ऋतु में जितने दिन पश्चिम की ओर से हवा चलती है उतने ही दिन शीतकाल में पाला पड़ता है। रात को ओस गिरती है। जिले के भिन्न भिन्न भागों में वर्षा

में बहुत थोड़ा अन्तर पड़ता है। दक्षिणी भाग में कुछ कम वर्षा होती है। आजमगढ़ तहसील में लगभग ४२ इंच और देवगढ़ में ३८ इंच वर्षा होती है। सब वर्षों में समान वर्षा नहीं होती है। किसी किसी वर्ष यहां ७४ इञ्च तक वर्षा हुई है। कई बार ५० इञ्च से अधिक वर्षा हुई है। प्रवल वर्षा के वर्षों में बाढ भी अधिक आती है। इससे ईख और दूसरी फसलें नष्ट हो जाती हैं। किसी किसी वर्ष यहां बीस इञ्च से भी कम वर्षा हुई है। यदि वर्षा समय पर हो और अधिक न हो तो भी खेती की फसलें हो जाती है। आरम्भ (जुलाई) में अद्रा और अन्त (सितम्बर) में हस्त नक्षत्र में वर्षा हो जाने से अच्छी फसलें हो जाती हैं। "चढ़त बरसे अद्रा उतरत बरसे हस्त, कितनो राजा डांडेस सुखी रहे गृहस्थ" की कहावत यहां प्रसिद्ध है। इसका अर्थ यह है कि अगर आरम्भ में आद्रा और अस्त में हस्त नक्षत्र बरस जावें तो राजा (जमीदार) कितना ही डाड़ ले (फसल अच्छी होती है और) गृहस्थ सुखी रहता है। कार्तिक (अक्टूबर) से जाड़ा आरम्भ हो जाता है। शीतकाल में ४० अंश से ८० अंश तक ताप-क्रम रहता है। शीतकाल में कभी कभी पाला पड़ जाता है। इससे फसलों को हानि होती है। एक दो बार साधारण वर्षा भी हो जाती है। इस जिले का शीतकाल सुहावना रहता है। वर्षा ऋतु में मच्छड़ों के बढ़ जाने से प्रायः मलेरिया ज्वर फैलता है।

कृषि—जिले की लगभग ५६ फीसदी भूमि खेती के काम आती है। जिले के सब भाग समान रूप से खेती के लिये उपयोगी नहीं है। सगरी में सब से अधिक (५९ फीसदी) भूमि में खेती होती है। इसके बाद आजमगढ़ (५८ फीसदी) और घोसी (५७ फीसदी) का स्थान है। मुहम्मदाबाद (४७ फीसदी) और देवगांव में सब से कम (४७ फीसदी) खेती होती है। इस जिले में लगभग २,००,००० एक (२६ फीसदी) भूमि ऐसी उपजाऊ है कि इस में वर्ष में दो फसलें काटी जाती हैं। शेष में दो फसलें काटी जाती हैं। जिले की अधिकतर भूमि में खरीफ की फसल होती है। इसमें धान प्रधान है। ५२ फीसदी भूमि में धान होता है।

अहरौला तहसील की ६० फीसदी भूमि में धान होता है। घोसी तहसील में ४७ फीसदी और आजमगढ़ तहसील में ३६ फीसदी भूमि में धान होता है। इस जिले में कई प्रकार का धान होता है। ५८ फीसदी अगहनी और ४२ फीसदी भदई होता है। साठा, साठी, बगरी, ननिहान, सेल्हा देउला अधिक प्रसिद्ध हैं। यह मुलायम मिट्टी में बोये जाते हैं। कोरंगा, दूधा, सिंघावे कड़ी मिट्टी में बोये जाते हैं। भैंसलोट और मनसर गढ़ों की चिकनी मिट्टी में उगाये जाते हैं। एक एक एकड़ में लम्बा पतला धान १४ मन और मोटा धान २० मन होता है। बसुमती लोरा, तेजुर, मलदही रानी काजर, कोरंग, सिल्ही बढ़िया चावल गिने जाते हैं।

खरीफ की फसल की प्रायः १५ फीसदी भूमि में ईख उगाई जाती है। घोसी तहसील में १७ फीसदी और देव गांव में ८ फीसदी भूमि ईख से घिरी हुई है। गन्ना भी कई प्रकार का होता है। चिकनी करैल मिट्टी में बढ़िया गन्ना होता है। बांगर भूमि में गन्ने को बहुत सींचने की आवश्यकता होती है। बोने के लिये कुछ अच्छे गन्ने अलग रख दिये जाते हैं। बोने के एक दिन पहले गन्ने के पत्ते और सिरे अलग कर दिये जाते हैं। फिर गन्ने के छोटे छोटे टुकड़े (जिन्हें पैंड कहते हैं) कर लिये जाते हैं। प्रत्येक टुकड़ा प्रायः एक फुट लम्बा होता है। इसमें तीन् चार आंख (गांठ) होता है। एक एकड़ खेत में २१००० पैंड (टुकड़ों) की आवश्यकता होती है। बोने में तीन हल लगते हैं। बोने वाला दूसरे हल के पीछे पीछे एक एक फुट की दूरी पर पैंड गिराता जाता है। उसके पीछे वाला तीसरा हल इन्हें मिट्टी से ढकता जाता है। चार पांच दिन के बाद पांड बैठावन का काम होता है। जब पोई निकल आती है तब इनमें घड़े से हलका पानी देते हैं। इसके बाद खाद देने और गोड़ने का काम होता है। थोड़े थोड़े समय के बाद गोड़ने और सींचने का काम बराबर होता रहता है। जनवरी महीने में गन्ना पक जाता है। लेकिन काटने और पेरने का काम

इससे कुछ पहले ही आरम्भ हो जाता है। यहां मंडुआ और कोदो लगभग ७ फीसदी भूमि में होते हैं। कोदों की अपेक्षा मडुआ दुगुनी भूमि में बोया जाता है; आजमगढ़ तहसील में सबसे अधिक (७ फीसदी) मडुआ बोया जाता है। पश्चिमी भाग में मंडुआ को मकरा कहते हैं। कहीं ऊंची भूमि में होता है। खरीफ की लगभग २ फीसदी भूमि में नील बोया जाता है। अधिकतर नील आजमगढ़ तहसील में बोया जाता है। नील दो प्रकार से उगाया जाता है। सिंचाई करके जो नील बसन्त या ग्रीष्म ऋतु में बोया जाता है। उसे जमौवा कहते हैं। जो नील वर्षा के आरम्भ में बोया जाता है उसे असाढ़ या नौधा कहते हैं। जमौवा फसल अगस्त में तैयार हो जाती है। असाढ़ कुछ देर में तैयार होती है। फसल काटने के बाद पौधों की खूंटी खेत में ही छोड़ दी जाती है।

आजमगढ़ जिले मे ६ फीसदी (प्राय: ३०,००० एकड़) भूमि मकई बोने के काम आती है। देव गांव में सबसे अधिक (१२ फीसदी) और मुहम्मदाबाद में सबसे कम २ फीसदी मकई उगाई जाती है। एक एकड़ भूमि में तीन चार सेर बीज बोया जाता है। प्रति एकड़ में लगभग १२ मन मकई उगती है। जब नियमित रूप से मध्य वर्षा होती है तभी मकई की भी फसल अच्छी होती है। खरीफ की फसल में यहां उर्द, मूंग मोट और तिल भी बोते हैं। इन्हें प्राय: ज्वार बाजरा और अरहर के साथ मिलाकर बोते हैं। रस्सी बनाने के लिये ईख या दूसरे खेतों की मेंड के पास सन और पेटसन बो दिया जाता है।

रबी की फसल में जौ का स्थान प्रथम है। रबी की फसल की ३८ फीसदी (१७५००० एकड़) जौ उगाया जाता है। देव गांव में सबसे अधिक (५७ फीसदी) और घोसी में सबसे कम (२५ फीसदी) उगाया जाता है। आजमगढ़ तहसील में रबी की फसल को ५० फीसदी भूमि जौ घेरता है; सगरी और घोसी में जौ और चना मिलाकर बोते हैं। अकेला गेहूँ बहुत कम (४ फीसदी) उगाया जाता है। चना के साथ मिला हुआ गेहूँ १५ फीसदी भूमि में बोया जाता है। सगरी में २५ फीसदी और देवगांव में ६ फीसदी गेहूँ चना होता है। एक एकड़ में डेढ़ दो मन गेहूँ बोया जाता है। प्रति एकड़ में १५ मन गेहूँ पैदा होता है। जिले भर में जौ एक प्रकार का होता है। गेहूँ दो प्रकार सफेद या दूधी और लाल होता है। जायद फसल बहुत होती है।

जिले में नियमित रूप से वर्षा होती है। सिंचाई की भी सुविधा है। इससे इस जिले में दुर्भिक्ष का प्रकोप कम होता है। बांगर के कुओं में चार पांच गज की गहराई पर और कछार के कुओं में ३ गज की गहरराई पर पानी निकल आता है। लेकिन दक्षिणी भाग में छ: सात गज की गहराई पर पानी निकलता है। लगभग ५२ फीसदी खेत कुओं से और शेष ४८ फीसदी ताल आदि से सींचे जाते हैं।

कारबार— आजमगढ़ कोई बड़ा कारबारी जिला नहीं है। शक्कर कपड़ा और मिट्टी के बर्तन बनाने का काम कुछ स्थानों में होता है। पहले यहां नील बहुत तैयार किया जाता था। गुड़, राब और शक्कर कई स्थानों में बनाई जाती है। राब बनाने के लिये अधिक गहरे कढाई में रस औटा जाता है। दुल्ला की जड़ों के उबले हुये पानी से छींटे देकर कड़ाह के ऊपर आया हुआ राब का मैल साफ किया जाता है।

निजामाबाद के मिट्टी के बर्तन मशहूर हैं। गौरीपुर के ताल से चिकनी मिट्टी मिलती है। उसी से गुलदस्ते, तश्तरी आदि तरह तरह की चिकनी और चमकीली चीजें बनाती हैं।

मऊ, कोपागंज और मुबारकपुर बुनाई के केन्द्र हैं। मुबारकपुर में रेशमी या गल्ला और रेशमी सूती मिला हुआ संगी कपड़ा बुना जाता है। गाढ़ा, लुंगी, साड़ी, धोती, डोरिया आदि कपड़े मऊ और कोपागंज में बुने जाते हैं। सारे जिला में लगभग ७००० करघे चलते हैं और १२००० जुलाहे काम करते हैं। पर यहां रुई नहीं होती है इसलिये सूत कानपुर, अहमदाबाद और बम्बई से आता है। इस प्रकार लगभग ७५ लाख रुपये का सूत बाहर से आता है। ७ लाख रुपये का रेशम माल्दा से आता है। सूत और रेशम का मिला हुआ संगी कपड़ा इस सफाई से बुना जाता है कि सूत सीधी और नहीं दिखाई देता है। इसमें सब जगह लहरिया धारी रहती है। गल्ला सादा बुना जाता है और पीछे से

रङ्ग लिया जाता है। मऊ, कोपागंज और कुरथी में रङ्गरेज लोग रङ्गाई का काम करते हैं। मऊ कोपागंज और अदरी में बढ़ई करघे बनाते हैं। कई गांवों में कुरमी लोग सन से टाट पट्टी बुनते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

आजमगढ़ जिले में प्राचीन भग्नावशेषों का प्रायः अभाव है। केवल कहीं कहीं कुछ खेड़े, उजड़े हुये किले और ताल पाये जाते हैं। कहते हैं असिलदेव नाम का एक भार या राजा भार सरदार महुल परगने के दिहद्वार में रहता था। कहा जाता है। यहां के ताल उसी ने बनवाये थे यहां के खेड़ों के नीचे उसके भवनों के भग्नावशेष दबे पड़े हैं। आरा के बचगोती राजपूतों के अनुसार उन्हीं का पूर्वज यहां का राजा था। जहां इस समय निजामाबाद का प्रदेश है वहां राजा परीक्षित राज्य करता था। अयोध्या राय नाम का एक राजा भार अरांव जहां नियापुर के पुराने कोट (किले) में रहता था। राजा परीक्षित मुसलमानों से लड़ा था। भार राजाओं की राजधानी भरांव या भदांव में थी। सोयरी लोग गंगी नदी के दक्षिण में सेंगरिया प्रबल थे। चिड़िया कोट या चेरूकोट पर चेरू लोगों का अधिकार था। फिर जौनपुर के शर्की बादशाहों ने इस किले को छीन लिया। जिले का सब से बड़ा कोट (किला) घोसी में था इसे राजा घोष ने बनवाया था। कुछ लोगों का कहना है कि बसे दानवों ने बनवाया था। इन्होंने ही नरजा ताल से चौभईपुर या वृन्दावन तक एक लम्बी सुरङ्ग बनवाई थी। कहते हैं यह जिला अयोध्या के कौशल राज्य में शामिल था। कहते हैं देउलास गांव के पास एक ताल के किनारे जहां ऊंची भूमि है वहां अयोध्या का पूर्वी द्वार था। आगे चलकर इस जिले में मौर्य और फिर गुप्त वन्श का राज्य हुआ। गुप्त कालीन भग्नावशेष जिले के कई स्थानों में मिलते हैं। काशी से कुसन गोरा को जाते समय चीनी यात्री ६३७ इस्वी में सम्भवतः इस जिले में होकर गया था। देव गांव परगने के डमांव गांव में सम्वत १२०१ (११६४ ईस्वी) का एक पत्थर मिला है जिसमें कन्नौज के राजा गोविन्दचन्द का नाम खुदा था। इससे सिद्ध होता है कि इस समय यह जिला कन्नौज के राज्य में शामिल था। कन्नौज के राज्य का अन्त हो जाने पर यहां मुसलमानों का प्रभुत्व हुआ। इसी समय पश्चिमी भागों को छोड़कर राजपूत जिले में बसने लगे। राजपूतों के पीछे पीछे मुसलमान यहां आये और बस्तियां बसाने लगे। पर इस समय मुसलमानों का राज्य दृढ़ नहीं हो पाया था। जिले के कई स्थानों में मुसलमान सिपाही मार डाले गये वहां शहीदवाड़े बन गये। कहते हैं महमूद गजनवी का भतीजा सैयद सालार इस जिले के भगतपुर (परगना सगरी) में कुछ समय ठहरा था। यहां उसकी स्मृति में प्रतिवर्ष मेला लगता है। यह जिला मुसलमानों के मार्ग से अलग पड़ता था इसलिये यह अधिक समय तक स्वाधीन रहा। घोसी परगने के चकेसर गांव में एक पत्थर पर फारसी अक्षरों में फीरोजशाह का नाम और ७६० हिजरी (१३५६ ईस्वी) सन खुदा मिला। फीरोज ने इसी समय आजमगढ़ जिले में अपने राज्य की जड़ जमाई। जौनपुर के बहरोज सुल्तान ने आजमगढ़ जिले का बहरोजपुर कस्बा बसाया। १४७४ तक यहां जौनपुर के सुल्तानों (बादशाही) का राज्य रहा। १४७४ में बहलोल लोदी ने सुल्तान हुसेन को जौनपुर से भगा दिया। आजमगढ़ में लोदी वन्श का राज्य हो गया। लेकिन बचगोती राजपूतों ने १,००,००० सेना इकट्ठी करके १४९२ में जौनपुर पर चढ़ाई की और जौनपुर के लोदी सूबेदार को उतार दिया। पर रायबरेली जिले में विद्रोही सेना की हार हुई। लोदी शासन जिले में फिर जम गया। सिकन्दर लोदी ने सिकन्दरपुर कस्बा बसाया जो १८७९ तक आजमगढ़ जिले में शामिल रहा। १५२६ ई० बाबर ने इब्राहीम लोदी को हराया और मार डाला। पूर्व में शेर खां (शाह) प्रबल हो गया। १५२८ ई० में बाबर ने बिहार पर चढ़ाई की शेर खां ने सिकन्दर लोदी के बेटे महमूद लोदी का साथ दिया। घाघरा और गङ्गा के सङ्गम के पास अफगान हारे और लखनऊ की ओर भागे। बाबर ने इस जिले के सगरी परगने में घाघरा को पार किया और अफगानों का पीछा किया। बाबर के मरने पर अफगान फिर प्रबल हो गये। शेर खां नाम के लिये महमूद

लोदी के अधीन रहा पर वास्तव में वह स्वाधीन हो गया। पहले १५३२ में शेर खां ने हुमायूं से सन्धि कर ली। १५३४ में हुमायूं गुजरात की ओर गया। इसी समय शेर खां ने बिहार और जौनपुर पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने बंगाल को ले लिया। ५३८ में हुमायूं ने बंगाल की राजधानी गौड़ पर चढ़ाई की। लेकिन शेरशाह की बढ़ी हुई शक्ति के सामने हुमायूं को पीछे लौटना पड़ा। गङ्गा के किनारे चौसा में हुमायूं की हार हुई। १५४० में वह कन्नौज के पास फिर हारा। विवश होकर हुमायूं हिन्दुस्तान छोड़कर फारस को चला गया। शेर खां हिन्दुस्तान का बादशाह हुआ। शेरशाह के मरने परी सूरी वंश शिथिल हो गया। आजमगढ़ जिले पर १५५४ तक शेरशाह और उसके उत्तराधिकारी सूरी बादशाहों का राज्य रहा। आमजगढ़ कस्बे में कोल्हू में संस्कृत में १५५३ ई० का एक लेख खुदा है। १५५५ में हुमायूं फिर हिन्दुस्तान को लौटा। १५५६ में पानीपत की लड़ाई में अफगान हारे। १५५६ ई० में आजमगढ़ जिले पर मुगलों (अकबर) का शासन हुआ। विद्रोह दबाने के लिये सम्राट अकबर स्वयं इधर आया। निजामाबाद के पास मंजिल से वजन तुलादान का उत्सव हुआ। जन्म दिन को अकबर दो बार चन्द्र मास और सौर मास के अनुसार सोने चांदी आदि से तौला जाता था और यह धन निधनों को बांट दिया जाता था। अकबर के समय में आजमगढ़ का जिला इलाहाबाद सूबे की जौनपुर सरकार का अङ्ग बन गया। जहांगीर के समय में आजमगढ़ के राजा का विकास हुआ। निजामाबाद परगने के मेहनगर में गौतम राजपूत रहते थे। चन्द्रसेन गौतम के दो बेटे, (सागर और अभिमान) थे। अभिमान मुसलमान हो गया। उसका नाम दौलत रक्खा गया। १६१८ में वह जौनपुर का फौजदार बनाया गया। उसे एक बड़ी जागीर मिली। उसके कोई लड़का न था। उसके भाई सागर के पांच (हरवंश, दयाल, गोपाल, नारायण और खरक) बेटे थे। दौलत के मरने पर हरवंश को जागीर मिली। हरवंश भी मुसलमान हो गया। उसने मेहनगर में एक किला और मकबरा बनवाया। मेहनगर के दक्षिण में उसने हरिचन्द्र नाम का एक बड़ा बांध सिंचाई के लिये बनवाया। टौंस नदी के दक्षिण में हरबन्शपुर में उसने कच्चा किला सुधरवाया। उसकी रानी रतनजोत (रत्न ज्योति) ने एक बाजार लगवाया जो रानी की सराय के नाम से प्रसिद्ध है। दयाल ने दयालपुर, गोपाल ने गोपालपुर बसाया। हरबन्श का बेटा गम्भीर अपने पिता से अलग रहता था। उसने गम्भीरपुर का किला बनवाया। हरबन्श ने पहले पहल राजा की उपाधि धारण की थी। गम्भीर के कोई बेटा न था। उसके भाई धरणीधर के तीन बेटे (विक्रमाजीत, रुद्र और नारायण) थे। विक्रमाजीत मुसलमान हो गए। उसने मुसलमान स्त्री से ब्याह किया। उसी के बेटे (आजम और अजमत) थे। १६६५ में आजम ने आजमगढ़ शहर बसाया और किला बनवाया। अजमत ने अजमतगढ़ का किला लिया और बाजार बनवाया। आजम दिल्ली दरबार में गया। वहां से वह सेना के साथ दक्षिण को भेजा गया। पर किसी अपराध में वह कैद कर लिया गया और कन्नौज में रक्खा गया। वहीं उसकी मृत्यु हो गई। मरने पर उसकी लाश यहां लाई गई और आजमगढ़ के पास बाग लकरांव गांव में गाड़ी गई। अजमत ने शाही खजाने में कर भेजना बन्द कर दिया। १६८८ में शाही सेना का एक अफसर (छबीले राम) भेजा गया। अजमत ने पहले छबीले राम को हरबन्शपुर का किला ले लेने दिया। फिर उस किले में घेर लिया। यह समाचार पाते ही इलाहाबाद के सूबेदार हिम्मत खां ने जौनपुर से एक सेना लेकर चढ़ाई की। अजमत आजमगढ़ के उत्तर की ओर भागा। उसने गोरखपुर पहुँचने के लिये घाघरा को पार करने का प्रयत्न किया। यहीं वह डूब कर अथवा विरोधियों की गोली से मर गया। उसका बड़ा बेटा इकराम आजमगढ़ का राजा हुआ। उसके मरने पर उसके भाई मुहब्बत ने राज्य किया। उसने आजमगढ़ के चारों ओर सात आठ मील व्यास वाले बांध का घेरा बनवाया। कहीं कहीं इसके खंडहर इस समय भी दिखाई देते हैं। कई स्थानों में थाने बनाये गये। पलवारी राजपूतों को रोकने के लिये नौली से गोह-

नारपुर तक किलों की एक पंक्ति बनाई गई। इनका निरीक्षण नील उपाध्याय के हाथ में था। उसकी वीरता के गीत इस समय भी गाये जाते हैं। १७०३ में नील उपाध्याय ने तिलसरन के कोट के पास शाही सेना नष्ट कर दिया। औरंगजेब के मरने पर भोजपुर के राजपूतों ने पश्चिम की ओर सगी, घोसी और चकेसर तक अपना प्रभुत्व फैला लिया। उनके नेता कुँवर धीरसिंह ने लालघाट के पास एक पक्की बारादरी बनवाई। इसके खंडहर इस समय भी मिलते हैं। १७१५ में धीरसिंह पडरौना में मारा गया मुहब्बत खाँ फिर शासन करने लगा। १७३२ के बाद यह जिला अवध के सूबेदार के प्रभुत्व में आ गया। माल न देने के कारण मुहब्बत खां कैद कर लिया गया और गोरखपुर में रक्खा गया। वहीं वह मर गया। उसका बेटा इरादत अकबर शाह के नाम से राजा हुआ। इरादत के मरने पर उसके बेटों में झगड़ा हुआ। झगड़ा तय करने के लिये अवध के नवाब वजीर के मन्त्री बेनी बहादुर को यहां आना पड़ा। १७६१ में आजमगढ़ का जिला गाजीपुर के सूबेदार फजल अली को तीन वर्ष के लिये सौंप दिया गया। फजल अली ने बड़ा अत्याचार किया। १७६४ में बेनी बहादुर ने लौटकर फजल अली को आजमगढ़ से अलग कर दिया। इसी (१७६४) वर्ष अवध का नवाब बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजों से हार गया। इससे बनारस का प्रान्त अंग्रेजों को मिल गया। अवध के राज्य में गड़बड़ी मच गई। १८०१ तक आजमगढ़ अवध का एक चकला (जिला) बना रहा। १८०१ ई० में यह जिला ईस्ट इंडिया कम्पनी को सौंप दिया गया। सिपाही विद्रोह के समय तक यहां कोई विशेष घटना न हुई। विद्रोह के आरम्भ (१८५७) में यहां ५०० देशी सिपाही थे। इनकी राजधानी पर अंग्रेजों को सन्देह था। अतः कलक्टर की कचहरी में किलेबन्दी की गई। बरामदा बन्द कर दिये गये। शत्रु को देखने और गोली चलाने के लिये दीवारों में छोटे छोटे छेद कर लिये गये पर कोठों पर बालू के थैले रख दिये गये। प्रधान दरवाजे पर दो छोटी तोपें लगा दी गईं पहली जून को सिपाहियों ने सभा की। इसी समय गोरखपुर और आजमगढ़ से बनारस को खजाना भेजा जानेवाला था। तीसरी जून को पांच लाख रुपये का खजाना लेकर ८० सिपाही गोरखपुर से आजमगढ़ में आये। २ लाख रुपया आजमगढ़ से लेकर उसी रात को सिपाही आजमगढ़ को चल दिये। तीन घंटे बाद रात्रि में ही सिपाहियों ने विद्रोह का झंडा उठाया। उन्होंने क्वार्टर मास्टर सर्जेंट लूई को गोली से उड़ा दिया। मजिस्ट्रेट (होर्न) और ज्वाइंट मजिस्ट्रेट (सिम्पसन) सिविल लाइन में भाग आये। गोरे लोग कचहरी की छत पर चढ़ गये। विद्रोहियों ने कैदियों को छोड़ दिया। विद्रोहियों को गोरों के मारने की अधिक चिन्ता न थी। वे खजाने को छीनने के लिये बनारस की ओर बढ़े। गोरे लोग इस बीच में जान बचाकर गाजीपुर को भाग गये। विद्रोही सिपाही खजाना लेकर आजमगढ़ आये। फिर वे फैजाबाद को चले गये। १६ जून के बाद आजमगढ़ में गदर दबाने का प्रयत्न किया गया। छिपे हुये गोरे लोग इस काम में सहायता देने के लिये बाहर आये। पूर्वी परगनों में कोई कठिनाई नहीं हुई। पश्चिमी परगनों के पलवार राजपूतों को दबाना कठिन था। २६ जून को मुजफ्फर जहां ने अपने आप को महुल का राजा घोषित किया। लफ्टेनेंट हैवलाक ने गाजीपुर से आकर पलवारों पर चढ़ाई की। ३० जून को मेजर वेनेबिल्स ने मुहब्बतपुर गांव पर आक्रमण किया। यहां कोई विरोध न किया गया। कुछ लोग कैद करके कोतवाली में रख दिये गये। १२ जुलाई को ३०० सिपाही लेकर वेनेबिल्स ने कोयेलसा में पलवारों पर चढ़ाई की। लड़ाई में पलवारों की जीत हुई। अंग्रेजी सिपाही छिन्न भिन्न कर दिये गये और वेनेबिल्स को शीघ्र ही आजमगढ़ को लौटना पड़ा। १८ जून को पूरी तैयारी के साथ पलवारों पर फिर चढ़ाई की गई। इस बार पलवार फिर जीते। यदि वे कुछ ढीले न पड़ जाते तो आजमगढ़ शहर पर उनका अधिकार हो जाता फिर भी वे शहर में घुस आये। गलियों में घमासान लड़ाई हुई। कुछ समय बाद वे शहर के बाहर चले गये। शहर में भोजन की कमी थी। इसी समय सिगौली (चम्पारन) और दीनापुर से विद्रोह का समाचार आया। अतः

गोरों ने आजमगढ़ शहर फिर खाली कर दिया। जिले का प्रबन्ध आजमगढ़ के राजा को सौंप दिया। चिड़िया कोट में रात को विश्राम किया गया। शहर में बड़ी गड़बड़ी मच गई। पलवार नेता पृथिवीपाल सिंह एक सेना लेकर शहर पर चढ़ आया। २५ अगस्त तक उसी का अधिकार बना रहा। २६ अगस्त को गुरखों की सेना यहां आ गई। इसके बाद यहां फिर अंग्रेजी अधिकार हो गया। फिर भी जिले के उत्तरी और पश्चिमी भाग में विद्रोह की आग धधक रही थी। इसी बीच में गोरखपुर के विद्रोही घाघरा के किनारे बरहज में एकत्रित हो गये। वहां उन पर आक्रमण किया गया। दोहरी घाट की रक्षा का भार जमींदारों को सौंप दिया गया। इसके बाद जिले के कुछ विद्रोहियों को दंड दिया गया उनके गढ़ नष्ट कर दिये गये। कोयलसा में पलवार सरदारों की सभा की गई और उनसे मित्रता का व्यवहार किया गया। नवम्बर में बाहर के विद्रोहियों ने अतरौलिया के किले पर अधिकार कर लिया। पर शीघ्र ही जौनपुर से सहायता मिल गई। ६ नवम्बर को विद्रोहियों ने किला खाली कर दिया। किला नष्ट कर दिया गया। १८५८ के मार्च मास तक शान्ति रही। १८ मार्च को कुँअर सिंह ने अतरौला में विद्रोही सेना इकट्ठी की। मार्ग में अंग्रेजी सेना को हरा कर कुँअरसिंह ने आजमगढ़ शहर और जिले को घेर लिया। कुछ सहायता बनारस से भी आई थी पर कुँअरसिंह ने मिलोमैन की सेना को बुरी तरह से हराया। २७ मार्च को इलाहाबाद से शीघ्र सहायता मांगी गई। लार्ड कैनिंग इस समय इलाहाबाद में ही था। इलाहाबाद और लखनऊ से सहायता भेजी गई। १५ अप्रैल को टौंस के पास लड़ाई हुई। वेनेविल्स मारा गया। लेकिन कुँअर सिंह अपने सिपाहियों को लेकर पीछे हट रहा था। नगही, नगरा आदि स्थानों में मुठभेड़ हुई। घाघरा को पार करके कुँअरसिंह गाजीपुर जिले में चला आया। गंगा को पार करके वह अपने जगदीशपुर गांव में चला गया। गंगा पार करते समय मेग्ना नाम गनबोट से छोड़ी गई गोली उसके लग गई थी। इसी से वह मर गया। कुछ ही समय में आजमगढ़ जिले में शान्ति स्थापित हो गई। जिन लोगों ने अंग्रेजों की सहायता की थी उन्हें जब्त की हुई जमीन दी गई। नाजिर अली बख्श खां को ३५०० रु० की वार्षिक मालगुजारी वाली और सरिश्तेदार मुंशी सफदर हुसेन को २००० रु० वार्षिक की मालगुजारी वाली जमीन दी गई। और भी कई लोगों को तरह तरह के इनाम मिले।

अहरौला का छोटा गांव फैजाबाद जिले की सीमा के पास आजमगढ़ शहर से २१ मील दूर पर स्थित है। यह महुल या अहरौला तहसील का केन्द्र स्थान है। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। रामलीला का उत्सव होता है।

अतरौलिया जिले के उत्तरी-पश्चिमी कोने पर आजमगढ़ से फैजाबाद जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से २६ मील की दूरी पर स्थित है। गांव के उत्तर में गदर के पूर्व पलवार राजपूत की कच्ची गढ़ी बनी थी। इसके पास ही कुँवर सिंह ने कर्नल मिलमैन को हराया था। विद्रोह से बाद गढ़ी तोड़ दी गई और जायदाद जब्त कर ली गई। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। आजमगढ़ जिले का केन्द्र स्थान है। यह २६·५१ उत्तरी अक्षांश और ८३·१२ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। आजमगढ़ अवध तिरहुत (बंगाल नार्थ वेस्टर्न) रेलवे की शाखा लाइन का एक बड़ा स्टेशन है। इलाहाबाद से गोरखपुर को जानेवाली प्रान्तीय सड़क यहीं होकर जाती है। जौनपुर और दोहरी घाट इसी सड़क के मार्ग में हैं। आजमगढ़ से दक्षिण-पूर्व में गाजीपुर और मऊ को और पश्चिम की ओर शाहगंज को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें जिले के कई स्थानों को गई हैं। आजमगढ़ शहर के तीन ओर सांप की तरह टेढ़ी बहने वाली टौंस नदी है। एक किनारे से दूसरे किनारे तक नदी की औसत चौड़ाई २३० फुट है। इसके किनारे ऊंचे और सपाट हैं। लेकिन वर्षा ऋतु में भयानक बाढ़ प्रायः दूर तक पहुँच जाती है। शहर को हानि पहुँचाती है। शहर मरिया, ऐलवल, सिउली, अरजी, बघात, हीरा पट्टी और कोल्हार

अजमतपुर मौजों की भुमि में बसा है। इस शहर को १६६५ ईस्वी में में राजा आजम खां ने बसाया था। पहले यहां राजा की राजधानी रही कुछ समय तक यहां अवध के नवाब के एक चकले का यह केन्द्र स्थान रहा। गदर में यहां पहले पलवार राजपूतों से फिर कुअरसिंह से लड़ाइयां हुई। यह जिले का सब से बड़ा नगर है। गौरी शंकर का मन्दिर प्राय: २०० वर्ष का पुराना है। यहां अस्पताल, टाउन हाल, मिशन हाई स्कूल, कोतवाली कचहरी है। अनाज, गुड़, घी, पशु तेल, ईंधन, धातु और कपड़ा बाहर से आता है। शक्कर और कपड़ा बाहर को भेज जाता है।

अजमतगढ़ आजमगढ़ से दोहरी घाट को जानेवाली प्रान्तीय सड़क पर सिलौना ताल के पास स्थित है। कुछ समय तक यह सगरी तहसील का केन्द्र स्थान था। यह जिले का एक बड़ा कस्बा है। इसे आज़म के भाई अजमत ने बसाया था। पड़ोस में ही उसके बनवाये हुये किले के खंडहर हैं। यहां डाकखाना और अंग्रेजी स्कूल है। सोमवार और बृहस्पतिवार को बाजार लगता है। रामलीला का मेला लगता है। बांकट गांव आजमगढ़ से दोहरी घाट को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से ७ मील दूर है। यहां डाकघर और प्राइमरी स्कूल है। पश्चिमी भाग से जो कपास आती है वह यहीं से दूसरे भागों को भेजी जाती है। मङ्गल और शुक्रवार को बाजार लगता है। क्वार में रामलीला का उत्सव होता है। बड़ा गांव घोसी से डेढ़ मील उत्तर में गाजीपुर से दोहरी घाट को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। गांव से आध मील दक्षिण की ओर रेलवे स्टेशन है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

भगतपुर आजमगढ़ से ११ मील की दूरी पर बिलरिया गंज से आध मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। कहते हैं सैयद सालार मसूद गाजी ने यहां विश्राम किया था। बैशाख सुदी तीज को उसकी स्मृति में यहां मेला लगता है।

बिलरियागंज सगरी तहसील के प्राय: मध्य में आजमगढ़ से १० मील की दूरी पर समुद्र-तल से २६० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां शक्कर बनाने और कपड़ा बुनने का काम होता है।

केप्टेनगंज आजमगढ़ से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से ११ मील दूर है। यहां एक छोटा स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

चिड़िया कोट कस्बा गाजीपुर से आजमगढ़ को आनेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। कच्ची सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर बेल्हा और देवगांव को और उत्तर में मुहम्मदाबाद को गई हैं। यह एक प्राचीन स्थान है। गांव के बाहर हातम खां नामी एक शेख का मकबरा है जो अठारहवीं सदी में मुगल बादशाह का एक कर्मचारी था। यहां थाना डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। क्वार में रामलीला और जेठ में सैयद सालार मसूद का मेला लगता है। बढ़लगंज में मङ्गल और शनिवार को मेला लगता है। यहां कुछ शक्कर बनाने का काम होता है।

देवगांव आजमगढ़ से २८ मील की दूरी पर बनारस को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह स्थान पुराना है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, पड़ाव और जूनियर हाई स्कूल है। मंगलवार और शनिवार को छोटा बाजार लगता है। यहां से ४ मील की दूरी पर लालगंज में अधिक बड़ा बाजार लगता है।

दीदारगंज आजमगढ़ से २८ मील पश्चिम में जौनपुर जिले की सीमा के पास स्थित है। यहां कई सड़कें मिलती हैं। इसी से यहां थाना बनाया गया। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल भी है। दोहरी घाट घाघरा के किनारे पर उस स्थान पर बसा है जहां इलाहाबाद और गाजीपुर से आने वाली सड़कें मिलती हैं।

मऊ से आने वाली बङ्गाल नार्थ वेस्टर्न अवध तिरहुत रेलवे की शाखा लाइन का यह अन्तिम स्टेशन है। कहते हैं वर्तमान कस्बा आजमगढ़ के राजा जहानखां ने बसाया था। राजा ने इसके चारों ओर एक खाई बनाई थी आसफुद्दौला के समय में स्थानीय अफसरों से एक और (दोहरी) खाई बनवा दी इसी से इसका नाम दोहरी घाट पड़ा। कुछ लोगों

का कहना है कि यहां गाय दूही जाती थीं। इसका पुराना नाम दोहनी घाट था। इसी से बिगड़ कर दोहरी घाट नाम पड़ा। घाघरा का किनारा यहां कड़ा और कंकड़ीला है। यहां घाघरा की धारा भी तंग है। इससे यह लकड़ी, अनाज, नमक, तम्बाकू, गुड़, शक्कर और दूसरी वस्तुओं के व्यापार का केन्द्र बन गया। बाजार प्रतिदिन लगता है। नवाबी समय में १८२३ तक यहीं व्यापार की चुंगी एकत्रित की जाती थी। यहां के एक धनी जुलाहे ने बनारस से भागे हुये वजीर अली को शरण दी थी। इस अपराध में उसे भारी दंड मिला था। यहां थाना, तारडाक घर, पड़ाव और स्कूल है।

दुबरी घाघरा के पास आजमगढ़ से ३६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। यह गांव जिले के बड़े गांवों में से एक है। गदर में यह गांव जब्त कर लिया गया था और वेनेबिल्स साहब को दे दिया गया था। लेकिन यह साहब गदर में मारे गये। अतः यह उनके वारिसों को मिला। १८६५ ईस्वी तक यह उन्हीं के साथ में रहा। इस के बाद यह बेच दिया गया। गम्भीरपुर आजमगढ़ से जौनपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से साढ़े सोलह मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

घोसी गाजीपुर से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से २४ मील दूर है। मऊ-दोहरी घाट शाखा लाइन का रेलवे स्टेशन है। घोसी पुराना कस्बा है। इसके पास में एक पुराने कच्चे किले के खंडहर हैं। यहां तहसील, थाना, पड़ाव, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है क्वार में दशहरा का मेला लगता है।

इमला खास में गाजीपुर से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क से जगदीशपुर से आनेवाली कच्ची सड़क मिलती है। यहां शक्कर बनाई जाती है। बुद्धवार और शनिवार को बाजार लगता है। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। पास ही भूमिहार जमींदारों के पूर्वजों के बनवाये हुये कच्चे किले के खंडहर हैं।

जगदीशपुर आजमगढ़ से शाहगंज को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से २० मील दूर है। यहां के जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं। एक प्राइमरी स्कूल है।

जहानगंज आजमगढ़ से गाजीपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से ११½ मील दूर है। रेलवे स्टेशन उत्तर की ओर ५½ मील दूर है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। सोमवार और मङ्गलवार को बाजार लगता है।

जियानपुर आजमगढ़ से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से १२ मील दूर है। यह सगरी से २ मील दूर है और सगरी तहसील का केन्द्र स्थान है। एक सड़क पूर्व की ओर आजमतगढ़ को जाती है। यहां थाना, डाकखाना, जूनियर हाई स्कूल और पड़ाव है। रविवार और गुरुवार को बाजार लगता है।

कोयल्सा आजमगढ़ से फैजाबाद को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से १७ मील दूर है। गदर तक यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था गदर में यहां लड़ाई हुई थी। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। शक्कर बनाने का काम होता है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

कोपागंज गाजीपुर से दोहरी घाट को जानेवाली पक्की सड़क पर आजमगढ़ से २४ मील और मऊ से ६ मील दूर है। यहां अवध तिरहुत बङ्गाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे की शाखा लाइन का स्टेशन है। यह प्राचीन स्थान है। पुराना गांव कोवा कहलाता था।

एक मन्दिर के द्वार पर एक पत्थर पर १५२६ सम्वत (१४७२ ई०) खुदा हुआ है। वर्तमान कस्बे को आजमगढ़ के राजा इरादत खां ने १७४५ ई० में बनाया था। उसने इसका नाम इरादगंज रक्खा। लेकिन कोपागंज नाम ही प्रचलित रहा। यहां एक किला बनाया गया। नगर के चारों ओर एक ऊंचा बांध बनाया गया। यहां के जुलाहे बढ़िया कपड़ा बुनते हैं। शक्कर शोरा और अनाज का व्यापार होता है। यहां डाकखाना और स्कूल है।

लालगंज बनारस को जानेवाली पक्की सड़क पर स्थित है। इसे कटघर के मुसलमानों के एक बलोच रिश्तेदार लाल खां ने बसाया था। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। बुधवार और रविवार

को बाजार लगता है। अनाज और कपड़े का व्यापार होता है।

मधुवन आज़मगढ़ से २८ मील और घोसी (तहसील) से १०½ मील दूर है। यहां से सूरजपुर, नगरा आदि स्थानों को सड़कें गई हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल हैं। मङ्गल, बृहस्पति और शनिवार को बाजार लगता है।

महराजगंज आजमगढ़ से १४ मील और जौनपुर से १५ मील दूर छोटी सरजू के किनारे पर स्थित है। यहां दो सड़कें मिलती हैं। यहां भैरों का पुराना मन्दिर है। गांव का पुराना नाम विष्णु पर था। आजमगढ़ के राजाओं ने बदल कर इसका नाम महाराज गंज रख दिया। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। गुरुवार और रविवार को बाजार लगता है। यहां के जुलाहे अच्छा कपड़ा बुनते हैं। पूर्णमासी को भैरों के मन्दिर पर मेला लगता है।

महुल गांव के नाम से ही महुल परगने और तहसील का नाम पड़ा है। यह आजमगढ़ से मवई को जानेवाली सड़क पर स्थित है। अहरौला से दीदार गंज जानेवाली सड़क इस सड़क को महुल में पार करती है। महुल तहसील के केन्द्र स्थान अहरौला से ६ मील और आज़मगढ़ से २५ मील दूर है। महुल प्राचीन गांव है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

मऊनाथ भंजन टोंस नदी के दाहिने किनारे पर मुहम्मदाबाद तहसील) से १३ मील और आजमगढ़ शहर से २५ मील दूर है। यहां से दोनों को पक्की सड़क गई है। यह बनारस भटनी लाइन का एक स्टेशन है। शाखा लाइन आजमगढ़ होकर शाहगंज को गई है। मऊ आजमगढ़ से भी अधिक पुराना है। यहां मलिक ताहिर का मकबरा है। शाहजहां ने मऊ अपनी लड़की जहान आरा बेगम को जागीर में दे दिया था। उसने यहां एक कटरा (बाजार) बनवाया। पहले यहां कपड़ा बुनने का काम बहुत होता था। इस समय भी जुलाहे कुछ कपड़ा बुनते हैं। जुलाहे कुछ कट्टर हैं। इस से हिन्दू मुसलमानों में यहां कभी कभी बकरीद के अवसर पर खटपट हो जाती है। यहां थाना, अस्पताल, डाक-तार घर, मिशन स्कूल और लड़कियों के स्कूल हैं। यह एक प्रसिद्ध रेलवे जंकशन है। यहां इंजीनियर और डिस्ट्रिक्ट ट्राफिक सुपरिन्टेण्डेण्ट और लाकोमोटिव सुपरिन्टेण्डेण्ट का दफ्तर है।

मेहनगर मुहम्मदपुर या रामजीत पट्टी से बेल्हा को जानेवाली सड़क पर आजमगढ़ से २१ मील दूर है। यहां गौतम राजपूतों का प्रथम निवास था इन्हीं से आजमगढ के राजाओं की उत्पत्ति हुई। यहां उस गढ़ के खंडहर हैं जिसे इस राजवंश में संस्थापक राजा हरवंश ने १७ वीं शताब्दी में बनवाया था। प्रथम राजधानी यहीं थी। आजमगढ़ के बस जाने पर मेहनगर में राजधानी न रही। इसके पड़ोस का विशाल हर बांध भी सिंचाई करने के लिये राजा हरवंश ने बनवाया था। यहां एक बड़ा मकबरा है। इसके भीतर इस वंश के कई सदस्य गड़े हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। मङ्गलवार और शनिवार को बाजार लगता है।

मेहनाजपुर जिले के धुर दक्षिण में देवगांव (तहसील) से १० मील और आजमगढ़ से २८ मील दूर है। यहां ख्वाजा मेहनाज का मकबरा है जो बैस राजपूतों के पहले यहां अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुका था। यहां जूनियर स्कूल है।

मुबारकपुर आजमगढ़ से ८ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। कहते हैं कड़ा के राजा सूफी राजा मुबराक ने इसे बसाया था। यहां के जुलाहे गाढ़ा और दूसरा बढ़िया कपड़ा बुनते हैं। जुलाहे कुछ कट्टर हैं। इससे कभी कभी हिन्दुओं और मुसलमानों में झगड़ा हो जाता है। यहां थाना, डाक तार-घर और अपर प्राइमरी स्कूल हैं। रविवार और और गुरुवार को बाजार लगता है। बैसाख के प्रथम बृहस्पतिवार को सोहबत का मुसलमानी मेला लगता है।

महम्मदाबाद टोंस नदी के किनारे पर आजमगढ़ से १२ मील दूर है। यहां शहागंज मऊ लाइन का स्टेशन है। यहां होकर आजमगढ़ से मऊ को पक्की सड़क जाती है। कच्ची सड़कें मबारकपुर, जियानपुर, घोसी, कोपागंज और चिड़ियाकोट को

गई हैं। इसका पूरा नाम मुहम्मदाबाद गोहना है। कहते हैं पहले यहां सिंहल राजपूतों का अधिकार था। ठकराही नाम का ताल यहां एक ठकुराइन की आज्ञा से खोदा गया था। अलीकुली खां ने अकबर के प्रति विद्रोह करते समय इस पर अधिकार कर लिया था। यहां कपड़ा बुनने और शक्कर बनाने का काम होता है। यहां मुंसफी, तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। बुधवार और शनिवार को बाजार लगता है।

निजामाबाद टोंस नदी के किनारे आजमगढ से ८ मील पश्चिम की ओर है। यह एक पुराना स्थान है। मुसलमानों के आने से पूर्व यहां हिन्दुओं की बस्ती थी। यहां शेख निजामुद्दीन का मकबरा है। उसी की स्मृति में इस नगर का यह नाम पड़ा। कहते हैं अलीकुली खां को भगाने के बाद अकबर ने अपने जन्म दिन को यहां पड़ाव डाला था। १७६२ में नवाब वजीर के एक अफसर ने आजमगढ़ के राजा जहान खां को यहां मार डाला और उसके सिपाहियों ने नगर को लूट लिया। इसके बाद इस नगर की अवनति होती गई। यहां मिट्टी के बर्तन अच्छे बनते हैं। शक्कर भी बनाई जाती है। सोमवार और वृहस्पतिवार को बाजार लगता है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है।

पवई जिले के धुर पश्चिम में आजमगढ से ३० मील और अहरौला (तहसील) से ११ मील दूर राजभार यहां के मूल निवासी थे। उनके कच्चे गढ के खडहर इधर उधर फैले हुये हैं। सैयदों ने राज भारों को भगा दिया। यहां थाना, डाकखाना, और प्राइमरी स्कूल है। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है।

फूलपुर आजमगढ़ से २५ मील पश्चिम में अहरौला (तहसील) से ८ मील दक्षिण की ओर है। यहां अवध तिरहुत लाइन का स्टेशन है। पक्की सड़क यहां से शाहगंज को गई है। फूलपुर के पड़ोस में बढ़िया गन्ना होता है। इसलिये यहां शक्कर भी अच्छा बनती है। मङ्गलवार और शनीवार को बाजार लगता है। महुल के राजा ने १७३२ में पहले पहल बाजार लगवाया था। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

रौनापार जिले के उत्तरी सिरे पर घाघरा की एक शाखा नदी के किनारे आजमगढ़ से १८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

सगरी तहसील का केन्द्र स्थान जियानपुर है। यह पक्की सड़क पर स्थित है। यहां से सगरी गांव दो मील दूर है। जियानपुर से कच्ची सड़कें रौनापार घोसी इमला आदि स्थानों को गई हैं।

सराय मीर आजमगढ़ से शाहगंज को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यह अवध तिरहुत रेलवे की शाहगंज शाखा लाइन का एक स्टेशन है। इसका पुराना नाम खरवां था। पन्द्रहवीं सदी में यहां मुसलमानों का अधिकार हो गया था। यहां शाह सैयद अली का मकबरा वह है। वह शेरशाह का मित्र था। उसने शेरशाह के सम्बन्ध में पहले ही भविष्यवाणी की थी। मकबरे के पास साल में एक बार मेला होता है। दूसरा मकबार लालखां नाम के एक व्यक्ति का है। यहां डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

रानी की सराय आजमगढ़ से जौनपुर को जाने वाली सड़क पर आजमगढ़ से ६ मील दूर है। यहां का बाजार राजाहरबंस की रानी रानीरतनजोत (रत्नज्योति) ने बनवाया था। यहां डाकखाना स्कूल और पड़ाव है। बाजार के अतिरिक्त यहां दशहरा का मेला होता है।

सूरजपुर दोहरी घाट से सुल्तानपुर को जाने वाली सड़क पर घोसी (तहसील) से ६ मील और आजमगढ से ३२ मील दूर है। यहां डाकखाना और जूनियर हाई स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाजार लगता है। रामलीला का मेला लगता है।

तरवाह जिले के दक्षिणी सिरे पर आजमगढ से सीधी रेखा में २० मील और सड़क द्वारा २८ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

बलीदपुर भीरा टोंस नदी के किनारे पर आजमगढ़ से १२ मील और मुहम्मदाबाद (तहसील) से डेढ़ मील दूर है यहां से घोसी, कोपगंज, मुहम्मदाबाद और आजमगढ़ को सड़कें गई हैं। यहां के जुलाहे अच्छा गाढ़ा बुनते हैं। सोमवार और शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

उत्तर प्रदेश के देशी राज्य

बनारस या काशी

बनारस या काशी अत्यन्त पुराना प्राचीन हिन्दू राज्य है। इसका उल्लेख प्राचीन हिन्दू और बौद्ध ग्रन्थों में आता है १२ वीं सदी में शाहबुद्दीन गोरी ने इसे जीत कर एक अलग राज्य बना दिया था। मुगल राज्य के क्षीण होने और औरंगजेब के मरने पर राजा बलवन्त सिंह (इनके पिता बनारस जिले के गङ्गापुर नगर में रहते थे और बड़े जमीदार थे) ने फिर अपना राज्य जमा लिया। दिल्ली के बादशाह ने भी इन्हें राजा मान लिया। अगले ३० वर्षों में अवध के नवाब सफदर जङ्ग और उसके बाद शुजाउद्दौला ने इस राज्य को नष्ट करने की पूरी कोशिश की। लेकिन वे इसमें सफल न हुये। नवाबों के अचानक छापों से बचने के लिये काशी के दूसरी ओर गङ्गा तट पर रामनगर में किला बनवाया गया। १७७० ई० में राजा बलवन्त सिंह का स्वर्गवास हो गया और उनके बेटे राजा चेतसिंह काशी नरेश हुये। काशी राज्य नवाबी हमलों से भली-भांति सम्भल न पाया था कि इतने में वारेन हेस्टिंग्स की लूट खसोट आरम्भ हो गई। वारेन हेस्टिंग्स अत्याचारों से बचने के लिये राजा चेतसिंह को सदा के लिये अपना पैतृक राज्य छोड़ कर भागना पड़ा। चेतसिंह को चले जाने पर बलवन्तसिंह की लड़की का लड़का (महीप नारायण सिंह) गद्दी पर बिठाया गया। लेकिन वे पागल हो गये। राज्य का कुछ भाग ब्रिटिश राज्य में शामिल कर लिया गया। कुछ अलग बना रहा। १९११ ई० में पुराने राज्य का बड़ा भाग (जिसमें विद्रोही और चकिया के परगने शामिल हैं) फिर बनारस राज्य को मिल गया। १९१८ ई० रामनगर और पड़ोस के गांव ब्रिटिश सरकार ने काशी नरेश को दे दिये। राजा के अधिकार भी दे दिये। इस राज्य का क्षेत्रफल ८७५ वर्ग मील, जनसंख्या ४ लाख और आमदनी १८ लाख रुपया है। यहां के वर्तमान नरेश हिज हाईनेस महाराजा सर आदित्य नारायण सिंह बहादुर हैं। आप १९३१ में गद्दी पर बैठे। आप को १३ तोपों की सलामी दी जाती है।

रामपुर राज्य

रामपुर उत्तर प्रदेश का एक देशी राज्य है। इसके उत्तर में नैनीताल का जिला, पूर्व में बरैली का जिला, दक्षिण में बदायूं जिले की बिसौली तहसील और पश्चिम में मुरादाबाद जिला है। इस राज्य का क्षेत्रफल ८९९ वर्ग मील और जन-संख्या ४,६४,९१९ है। हिमालय की तराई में स्थिति होने के कारण यहां की जलवायु ठण्डी है। घाटियों में नमी होने के कारण जलवायु अच्छी नहीं रहती साल में ३८·१ इञ्च वर्षा होती है।

यहां की भूमि समतल और उपजाऊ है। भूमि का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। और उत्तर की ओर समुद्रतल से ६३० फुट तथा दक्षिण की ओर ५४६ फुट है। रामगङ्गा, कोसी, गांगन यहां की मुख्य नदियां हैं। इनके सिवा घूग, पिलखर, नहल, नह, सेंमी, भकर, घिमरी, कछिया, हाथीचिंघार आदि छोटी छोटी नदियां हैं। राज्य के भीतर तराई में जङ्गल हैं। तराई के सिवा दिनदिन, धनपुर, विजयपुर पिलखर, लालपुर, विक्रमपुर आदि के जङ्गल हैं। इन जङ्गलों में शिकार खेलने की आज्ञा नहीं है। तराई के जङ्गल घने हैं। तेंदुआ, साँभर, हिरण, सुअर, भेड़िया इत्यादि और भांति भांति के पक्षी पाये जाते हैं।

राज्य में ३,६०,१७५ एकड़ भूमि में खेती होती है। और १११५ एकड़ जमीन बेकार है। यहां रबी और खरीफ दो फसलें होती हैं जिसमें गेहूँ, जौ, चना, मक्का, धान, बाजरा, ज्वार, उर्द, कपास और

ईख की उपज होती है। सिंचाई के लिये राज्य में काफी संख्या में नहरें हैं। कोसी, वहिल्ला, घूग, राजपुरनी, भकरा केमरी और नहल आदि नहरें हैं। इनके अलावा कुवों और तालाबों से भी सिंचाई का काम होता है।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई राजपूत, जाट आदि जातियां राज्य में पाई जाती हैं। राज्य के ६२ फी० सदी लोग खेती का व्यवसाय करते हैं। ६८ प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो घरेलू रोजगार और धंधों में लगे हैं। बाकी लोग या तो मजदूर हैं। या राज्य के कर्मचारी हैं। राज्य की भाषा उर्दू है, स्वयं नवाब उर्दू के बड़े प्रमी हैं। दरबार और अदालतों का काम उर्दू में ही होता है। लोगों की दशा रुहेलखड के दूसरे जिलों के निवासियों की भाँति है। कुछ लोग अधिक गरीब हैं, जो केवल कमाते खाते हैं और साल में किसी न किसी समय उन्हें कर्ज लेकर अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। मुसलमानी राज्य होते हुये भी हिन्दुओं के धार्मिक कार्य्यों में बाधा नहीं डाली जाती। सभी को अपने मतानुसार अपने धर्म को मानने की स्वतंत्रता है।

सड़कों और रेलवे लाइनों के खुल जाने से राज्य का सम्बन्ध ब्रिटिश राज्य से और भी अधिक बढ़ गया है, राज्य को इससे व्यपार में बड़ी सुगमता मिली। गेहूँ, मक्का, चवल, गुड़, शक्कर, चमड़ा आदि वस्तुएं बाहर भेजी जाती हैं। चमड़ा कानपुर रवाना किया जाता है। ऊख का शिरा भी कानपुर जाता है। चावल का व्यापार बड़े जोरों पर होता है। टांडा, केमरी, बिलासपुर नगरिया आदिल आदि ऐसी जगहें हैं जहां चावल का बाजार बड़े जोरों पर हैं। राज्य में एक पोल्ट्री फार्म है। जहां से अण्डे और चिड़ियों के बच्चे एक अच्छी संख्या में बाहर भेजे जाते हैं। कपड़ा कानपुर से और बिसात खाने का सामान और नमक कलकत्ता से मंगाया जाता है। एक बड़ी संख्या में दिल्ली और पंजाब से बकरियां आती हैं। रामपुर नगर में यह मुख्य भोजन का काम देती है राज्य के अन्दर तलवार, छुरी, चाकू, और बत्तदार बन्दूकें बनाई जाती हैं। किन्तु ये वस्तुएं राज्य के बाहर नहीं जा सकतीं। केवल चाकू और सरौते बाहर जाते हैं। देहात के लोगों के सुभीते के लिये देहात में गांवों के बाजार लगा करते हैं जहां लोग बाजार के दिनों में जाकर आवश्यक सामान खरीद लेते हैं। इसके अलावा राज्य के भीतर बहुत से मेले भी लगते हैं जिनमें ईद और मोहर्रम के मेले मुसलमानों के प्रसिद्ध हैं और रतौध का मेला हिन्दुओं का प्रसिद्ध है। इस मेले में राज्य के बाहर के लोग भी आते हैं और बहुत बड़ी भीड़ लगती है।

इतिहास

रुहेलखण्ड का प्राचीन नाम कठेर था। यहाँ क्षत्रियों का राज्य था जिसमें मुरादाबाद, सम्भल, बदयूं, नैनीताल, बरेली आदि प्रदेश शामिल थे। १२५३ में यहां नासिर उद्दीन का आक्रमण हुआ फिर १२६६ में गयासउद्दीन ने फिर हमला किया थोड़े समय के बाद बदायूं, सम्भल, आउला में उपद्रव हो जाने के कारण जलालुउद्दीन फीरोज को १२९० में एक सेना भेजनी पड़ी किन्तु राजपूत क्षत्रियों ने फिर अपना अधिकार जमा लिया १,३७९ में उन्होंने बदायूं के गवर्नर की हत्या कर डाली। इस समय हरसिंह क्षत्रिय राजपूतों का सरदार था।

मुगल बादशाहों के समय में बदायूं से केन्द्र हटाकर बरेली कर दिया। औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद हिन्दू राजा स्वतंत्र हो गये। इनके सिवा अफगान सरदार भी एक बड़ी संख्या में जागीर दार बन बैठे थे। इन अफगानों को लोग रुहेलों के नाम से पुकारते थे। रुहेला का अर्थ है पहाड़ के ऊपर के निवासी मोहम्मद मोअज्जम शाह के समय में दाऊद खां अफगानिस्तान से भारत में आया और इस प्रान्त में आकर डेरा जमाया। दाऊद एक बड़ा सूरमा था। उसने शीघ्र बहुत से डाकू लोगों को अपना साथी बना लिया। इसी समय जब वह एक युद्ध में तो सैय्यद वंशी के एक ६ वर्षीय बालक को उसने एक गांव में पाया। इसी को दाउद ने अपना लड़का बनाया और इसका नाम अली मोहम्मद खां रक्खा।

अली मोहम्मद खां

थोड़े समय के पश्चात अलीमोहम्मद खां और कमायूं के राजा ने मिलकर दाऊद की हत्या कर

डाली। यद्यपि अली इस समय केवल चौदह साल का था किन्तु दैविक बुद्धि और वीरता के कारण वह काफी प्रसिद्ध हो गया और बहुत से अफगान सरदार उसके सच्चे सहायक बन गये। अली ने दाऊद की सारी जागीरों पर अधिकार जमा लिया और बरेली तथा मुरादाबाद के गवर्नरों से दोस्ती कर ली।

१७३९ में नादिर शाह का आक्रमण हुआ इस समय इसने रिछा पर अपना अधिकार जमाया। बरेली और मुरादाबाद के गवर्नरों ने नवाब को रोकना चाहा। इस पर युद्ध हुआ और दोनों गवर्नर मारे गये। इस प्रकार रुहेलखण्ड का अधिकांश भाग मोहम्मद खां के अधिकार में आ गया। उसके बाद नवाब ने पीलीभीत पर अधिकार जमा-लिया १७४३ में अली ने कमायूं पर हमला किया और जीतकर गढ़वाल के राजा को ठेके पर दे दिया। इस प्रकार नवाब की उन्नति देखकर सफदर जङ्ग वजीर अवध से चुपचाप न बैठा गया। उसने मोहम्मद शाह बादशाह लिखा कि वह रुहेलों के विरुद्ध चढ़ाई करे। अली एक बादशाह के साथ चला गया और बादशाह ने उसे सरहिन्द की गवर्नरी पर नियुक्त किया। किन्तु जब १७३८ में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया तो अमीर मोहम्मद फिर रुहेलखड लौट आया। इसके सभी पुराने साथियों ने साथ दिया। और इस प्रकार पुरानी जायदाद फिर मिल गई। १७४९में अली मोहम्मद की मृत्यु हुई।

सातुल्ला तीसरा पुत्र अली के कथनानुसार मसनद पर बैठा किन्तु रुहेला सरदारों में लड़ाई होने लगी। नवाब अवध ने आक्रमण किया किन्तु हफीज रहमत खां ने डटकर मुकाबिला किया और १७५० में वजीर अवध को हराया। किन्तु फिर सफदर जङ्ग ने मरहठों की सहायता से हमला किया। और रुहेलखण्ड को बर्बाद करता हुआ तराई तक खदेड़ ले गया किन्तु अहमदशाह के आक्रमण की बात सुनकर १५७२ में दोनों ओर से संधि हो गई जिसके अनुसार रुहेलों ने ४० लाख रुपया जुर्माना और ४ लाख रु० सालाना कर देने का वादा किया।

सेहमदशाह अब्दाली रास्ते ही से वापस चला गया किन्तु अली के पुत्रों अब्दुल्ला खां और फैजुल्ला खां को छोड़ता गया। रहमत खाँ और उसके साथी अपने अधिकार छोड़ना नहीं चाहते थे इसलिये उन्होंने इस प्रकार अली की जागीर पुत्रों के बीच बांटी जिससे आपस में झगड़ा हो जाय। कुछ दिनों की लड़ाई के पश्चात् फैजउल्ला खां नवाब बनाया गया। इसी समय से रामपुर का इतिहास आरम्भ होता है।

१७५८ में मरहठों ने पंजाब पर, फिर द्वाब पर और रुहेलखण्ड पर हमला किया। रुहेलों ने अवध के नवाब से मदद चाही और दोनों ने मरहठों को भगा दिया। कुछ ही समय बाद १७६१ में पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ जिसमें मरहठों की हार हुई जिसमें शिकोहाबाद फैजउल्ला की और जलेसर और फीरोजाबाद सादुल्ला को मिला। १७७१ में बिजनौर पर मरहठों का आक्रमण हुआ। इस समय रुहेलों की बड़ी बुरी दशा हुई। उन्होंने नवाब अवध से सहायता की अपील की पर उसने इन्कार कर दिया किन्तु ब्रिटिश लोगों के बीच में पड़ने के कारण नवाब अवध ने रुहेलों की सहायता करना मान लिया। रुहेलों ने ४० लाख रु० देने का वचन दिया। किन्तु दो में से किसी भी पार्टी ने वचन पूरा न किया। मरहठों ने रुहेलों की बुरी गत की।

कुछ समय पश्चात् नवाब अवध ने रहमत खां से ४० लाख रुपया मांगा। रुहेलों ने इन्कार किया इस पर अंग्रेजों ने भी सहायता दी और नवाबों ने रुहेलों पर हमला किया। रुहेलों की हार हुई। हफीज रहमत खां मारा गया और नवाब फैजउल्ला खां भाग कर बिजनौर के सरहद पर चला गया। किन्तु अंग्रेजों की सलाह से संधि हो गई। जिसके अनुसार नवाब फैजउल्ला खां को उसकी जायदाद वापस दे दी गई। १७७५ ई० में नवाब फैजउल्ला खां ने रामपुर नगर की नींव डाली और मुस्तफाबाद उर्फ रामपुर नाम रक्खा गया। लगभग २० साल राज्य करने बाद १७९३ में नवाब की मृत्यु हो गई।

नवाब मुहम्मद अली खां नवाब बनाया गया किन्तु रुहेल सरदार उसके खिलाफ उसके गुलाम मोहम्मद खां को नवाब बनाना चाहते थे। इसीलिये १४ अगस्त १९९३ को ५-० रुहेले राजमहल पर चढ़

गये और नवाब को पकड़ ले गये और अन्त में मार डाला। इस समय राज्य अंग्रेज अधिकारियों के हाथ में था। इसलिये एक सेना मोहम्मद अली खां के पुत्र (बालक) अहमद को गद्दी पर बैठाने को भेजी गई। रुहेलों ने न तो अंग्रेजों की बात मानी और न नवाब अवध की। इस पर बिठूर नामक स्थान पर युद्ध हुआ जिससे रुहेलों की हार हुई। अहमद अली खां नवाब बनाया गया। गुलाम मुहम्मद मक्का चला गया। वहां उसकी मृत्यु हो गई।

एक संधि हुई जिसके अनुसार १० लाख मुनाफे की जायदाद छोड़ कर बाकी नवाब अवध के हाथ चली गई। नवाब फैजउल्ला खां के खजाने का बाकी रुपया नवाब ने अंग्रेजों को देने का वचन दिया। नवाब अवध ने फैजउल्ला के घराने के लोगों को माफ कर दिया।

लगभग ४० साल राज्य करने के पश्चात् १८४० में नवाब अहमद अली खां की मृत्यु हो गई। नवाब अपने दया धर्म, बहादुरी और परोपकार के कारण अपने राज्य में बड़ा प्रसिद्ध था।

नवाब के कोई लड़का न था। इसलिये गुलाम मोहम्मद खां के बड़े पुत्र मोहम्मद सइयद खां का नाम मिस्टर राबिन्सन कमिश्नर रुहेलखण्ड ने पेश मोहम्मद सईद खां बदायूँ के डिप्टी कलक्टर थे। लार्ड बैंटिंग ने यह बात मान ली और २० अगस्त सन् १८४० को नवाब मोहम्मद सय्यद खां गद्दी पर बैठे। आपने मालगुजारी के कानून और अदालतों में सुधार किया तथा सेना का संगठन किया। किसानों की दशा काफी सुधर गई थी। नवाब स्वयं एक अच्छा सैनिक और विद्यार्थी था। पहली अप्रैल १८५५ को नवाब की अचानक मृत्यु हो गई।

नवाब मोहम्मद सईद खां को उसके जीवन में ही अपने पुत्र को अपने बाद नवाब बनाने का अधिकार प्राप्त हो चुका था। इसलिये ज्येष्ठ पुत्र नवाब ईसुफ मोहम्मद अली खां गद्दी पर बैठे। आप भी पिता की भांति एक अच्छे शासक साबित हुए किन्तु आप अपने पिता से भी राजनीति क्षेत्र में बढ़ चढ़ गये। १८५७ के विप्लव काल में आपने अपने राज्य का ही प्रबन्ध नहीं किया वरन् मुरादाबाद जिले का भी चार्ज ले लिया था।

१८५७ में सारे भारतवर्ष में बगावत फैल गई। रुहेलखण्ड में भी गड़बड़ी फैली। रामपुर के पठान अपने रिश्तेदारों से जो बिजनौर, बरैली और मुरादाबाद में थे। छिपे छिपे विद्रोह सम्बन्धी लिखा पढ़ी कर रहे थे। नवाब की दशा बड़ी शोचनीय थी किन्तु फिर भी नवाब ने मुस्तैदी से काम लिया और हर प्रकार से अंग्रेजों की सहायता करता रहा। नवाब ने बड़ी चतुरता से काम लिया। और अपने आदमियों को लखनऊ, दिल्ली और बरैली के बीच डाकियों के कार्य्य में लगा दिया जिससे बागियों के सारे हाल मालूम होते रहें और फिर सारे हाल बड़ी होशियारी से गुप्तचरों द्वारा अंग्रेजों को भी पहुँचाता रहा।

नवाब ने दारुल ईशा नामक एक दफ्तर खोला जहां पर सारा काम बगावत के समय का होता था। वहीं पर हर प्रकार की खबरें आती थीं और उनका प्रबन्ध भी किया जाता था। इसके प्रबन्धकर्ता मुन्शी सिलचन्द थे।

नवाब की सेनाओं की अंग्रेज अफसरों और कार्य्यकर्ताओं ने बड़ी तारीफ की जिसके बदले सरकार ने १,२८,५२७ रु० ४ आना सालाना की आमदनी का इलाका और २०,००० रु० की पोशाक नवाब को दिया। नवाब को फरजन्द दिलपजीर की पदवी भी मिली। १८६१ में नवाब नाइट कमान्डर और लार्ड एलगिन के कौंसिल के मेम्बर बनाये गये। २१ अप्रैल सन् १८६५ ई० को नवाब की मृत्यु हो गई।

उसके बाद नवाब कल्बि अली खां गद्दी पर बैठे। यह भी लार्ड लारेन्स की कौंसिल के मेम्बर बनाए गए। नवाब अर्बी और फार्सी के बड़े भारी विद्वान थे। १८७२ में नवाब मक्का गये उनकी गैरहाजिरी में उस्मान खां राज प्रबन्ध करते रहे। १८७५ में आगरा में नवाब ने अष्टम एडवर्ड से भेंट की। और नाइट ग्रैन्ड कमान्डर की उपाधि तथा १५ तोपों की सलामी का हुक्मनामा मिला। २३ मार्च १८८७ को नवाब की मृत्यु हुई और नवाब मुश्ताक अली खां गद्दी पर बैठे। इनका स्वास्थ्य अच्छा न

रहता था। जिसके कारण इनके समय में कोई विशेष बात नहीं हुई। १८८९ में इनकी मृत्यु हो गई और नवाब मोहम्मद हमीद अली खां बहादुर गद्दी पर बैठे। लड़कपन होने के कारण राज-प्रबन्ध एक कौंसिल के हाथ था।

१८९३ में नवाब अपनी शिक्षा पूर्ति के लिये दुनिया में भ्रमण को गये। इगलैंड में जाकर आपने महारानी विक्टोरिया से भेंट की। १८९४ में नवाब गद्दी पर एक शासक की हैसियत से बैठाये गये। एक कौंसिल राज्य शासन के लिये बनाई गई जिसके सभापति हिज हाईनेस हुये। वाइस प्रेसीडेन्ट साहेबजादा हमीदुज्जफर खा, मंत्री साहेबजादा अब्दुल मजीद खां, रेवन्यू मेम्बर सैय्यद अली खां, न्याय मेम्बर सैय्यद जैनुल आबदीन बनाये गये और साहब जादा अब्दुल समद खां हिज हाईनेस के प्राइवेट सिक्रेटरी हुये। १८९४ में हिज हाईनेस की शादी जओरा के नवाब हिज हाईनेस स्माइल खां बहादुर की पुत्री से हुई। १८९६ में सल्तनत की बागडोर नवाब के हाथों सौंप दी गई। कौंसिल तोड़ दी गई और मिनिस्टर की जगह बनाई गई। १९०२ में आप दिल्ली के दरबार में बुलाये गये। वहां कारोनेशन मेडिल आपको मिला। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार सभी मुख्य मुख्य अवसरों पर आपको बुलाती रही है। जून १९१० ई० में भारतीय सेना के आप कर्नल बनाये गये। १९१० में लार्ड मिंटो रामपुर आये और नवाब के शासन की बड़ी प्रशंसा की। भूतपूर्व नवाब साहब का पूरा नाम और उपाधि कर्नल हिज हाईनेस अलीशाह, फरजन्द दिलपजीर, दौलत-इगलीशिया मुखलिसुद्दौला, नसीरुलमुल्क, नवाब सर मोहम्मद हामिद अली खां बहादुर, मुस्तैद जंग, जी० सी० आई० ई० था।

हिज हाईनेस के पास ४६६ सवार और लगभग २००० पैदल सिपाही और २८ तोपें हैं। एक दस्ता नवाब के पास गोरखा सैनिकों का भी है।

राज्य की सालाना आय ३७,०८,२७५ रु० है। राज्य के अन्दर बहुत से हाई स्कूल और मिडिल स्कूल लड़कों की तालीम के लिये हैं। भूतपूर्व हिज हाईनेस स्वयं एक शायह थे। और बड़े योग्य व्यक्ति थे। आपकी उदारता के कारण राज्य में शिक्षा की अच्छी उन्नति हुई है। रामपुर के वर्तमान शासक कैप्टेन हिज हाईनेस नवाब सर सय्यद रजा अली खां बहादुर, के० सी० एस० आई०, डी० लिट, एल एल० डी० हैं। आप १९३० ई० में पिता की मृत पर गद्दी पर बैठे। आपको १५ तोपों की सलामी दी जाती है।
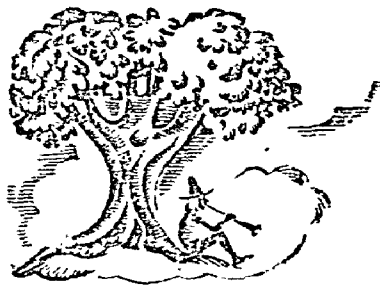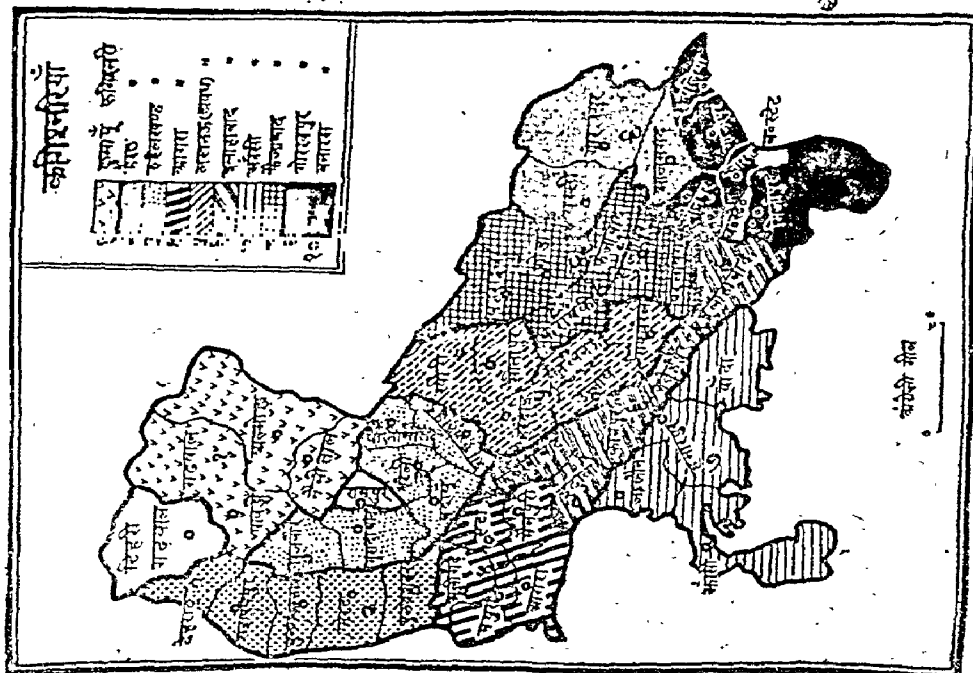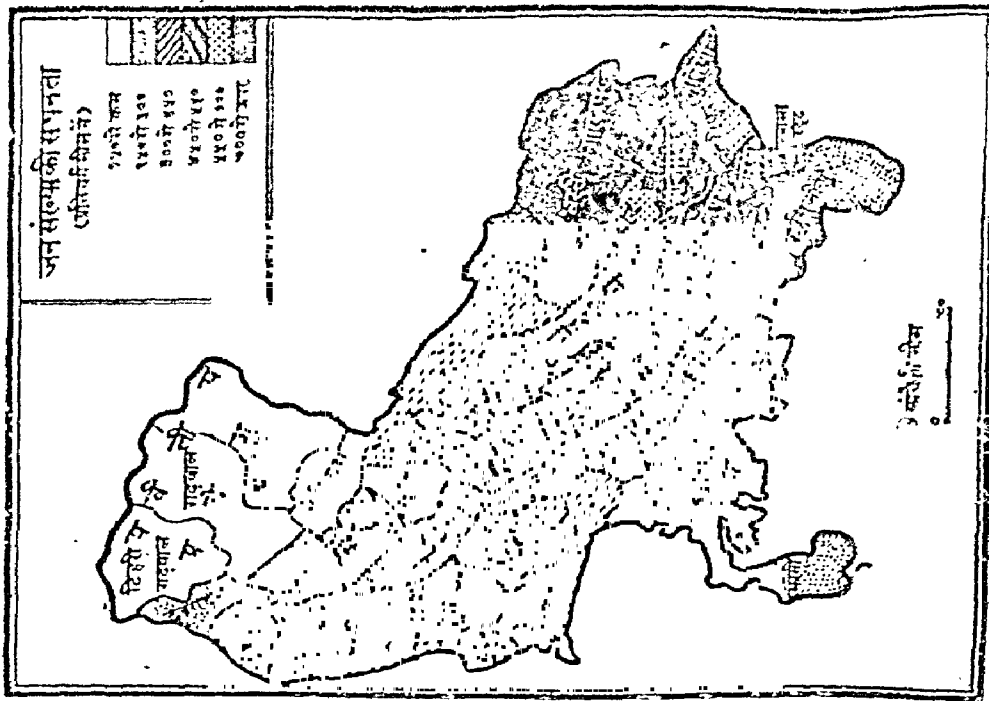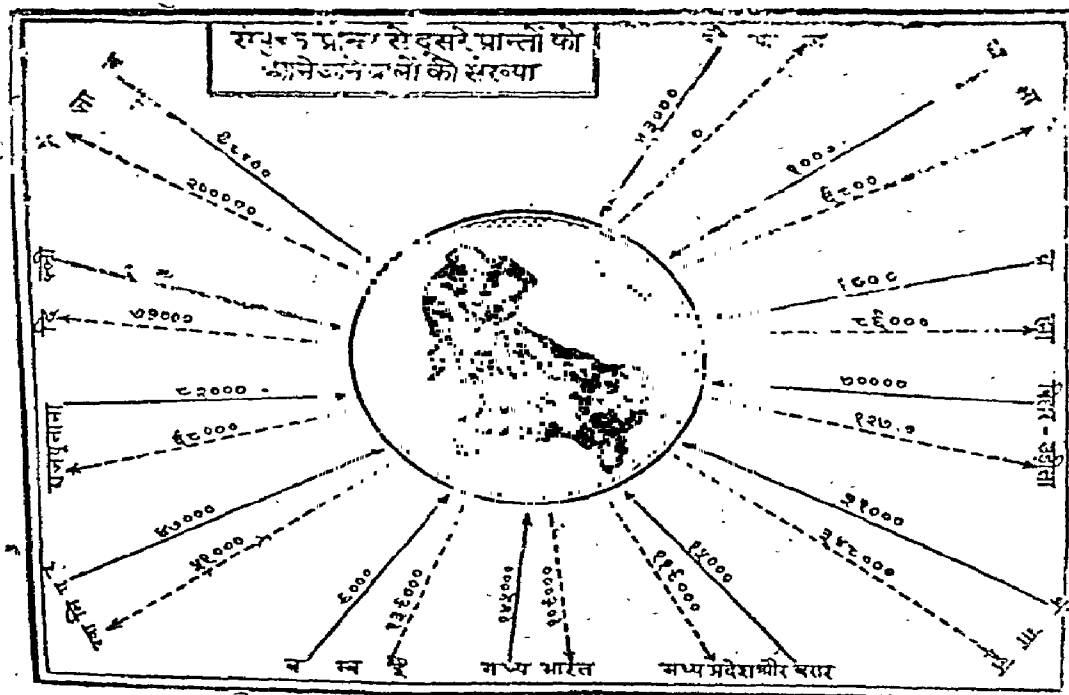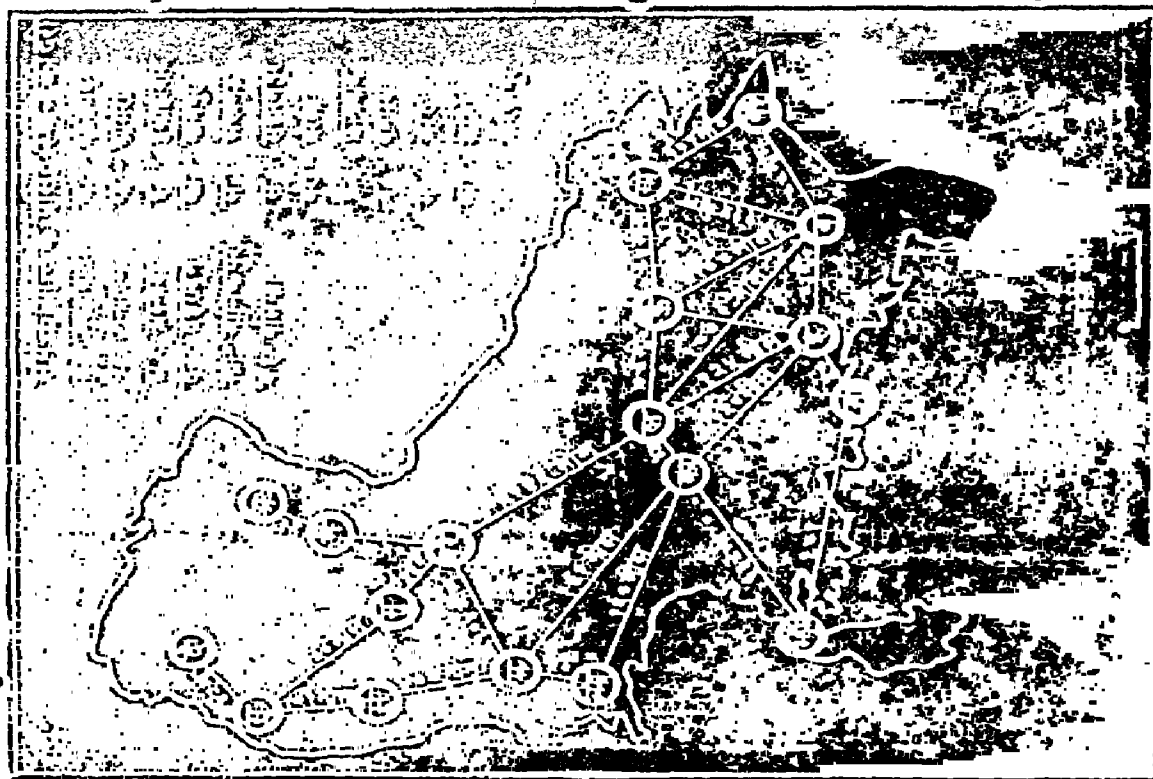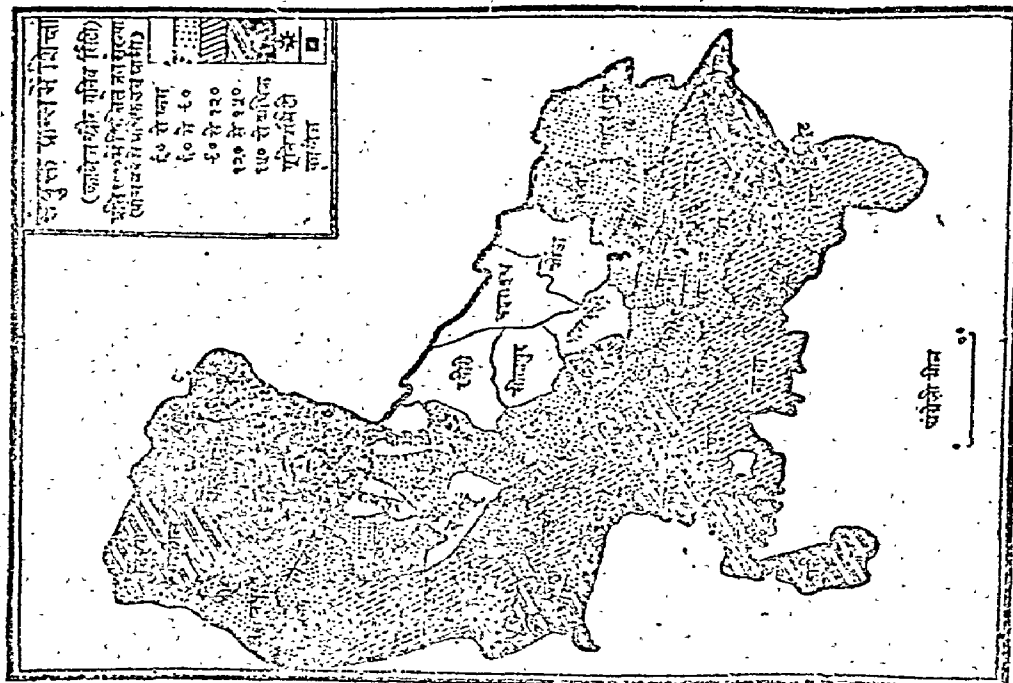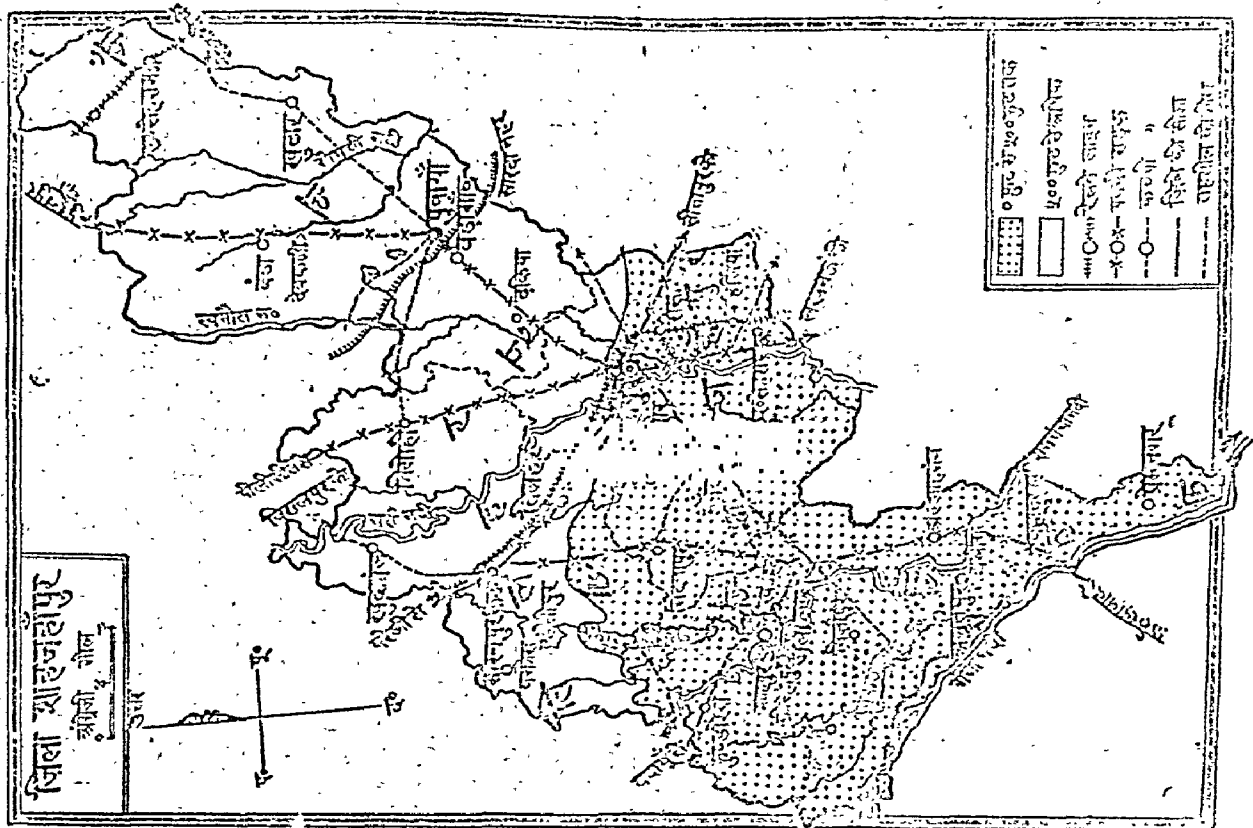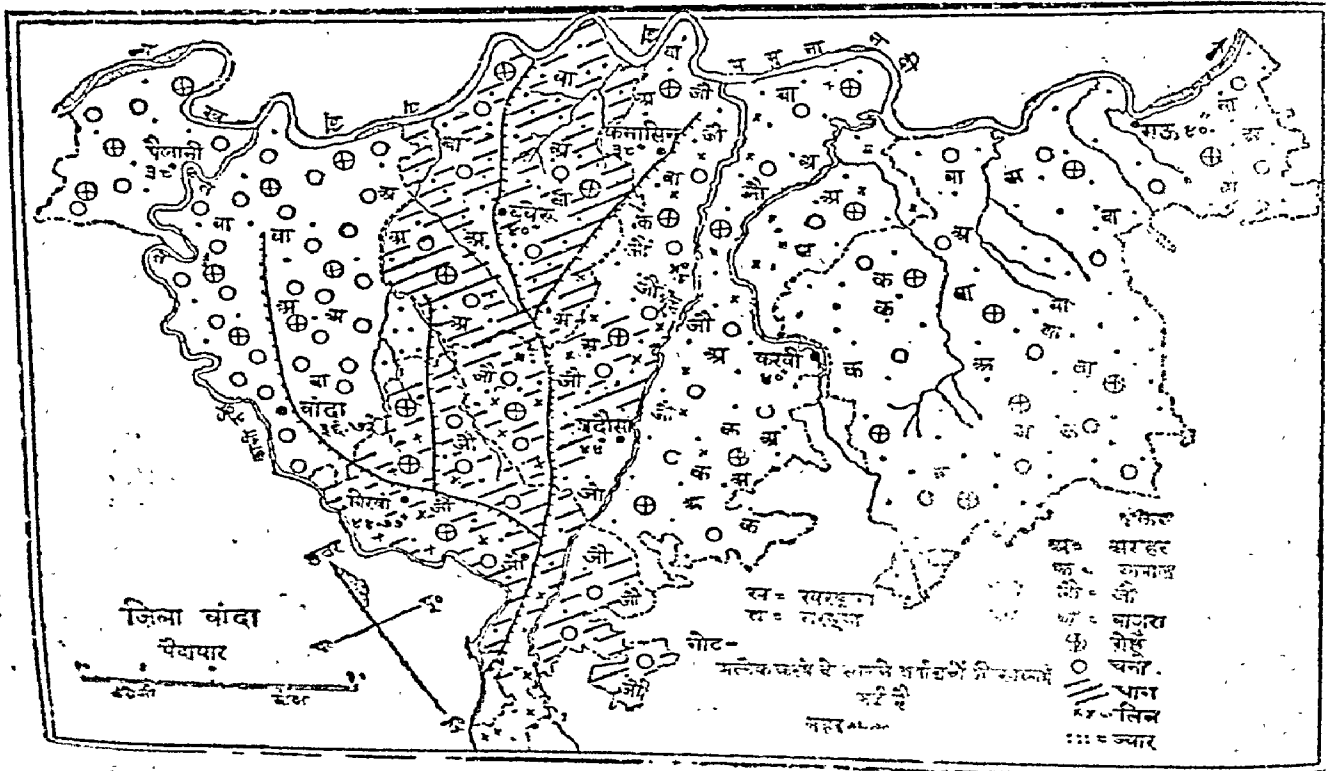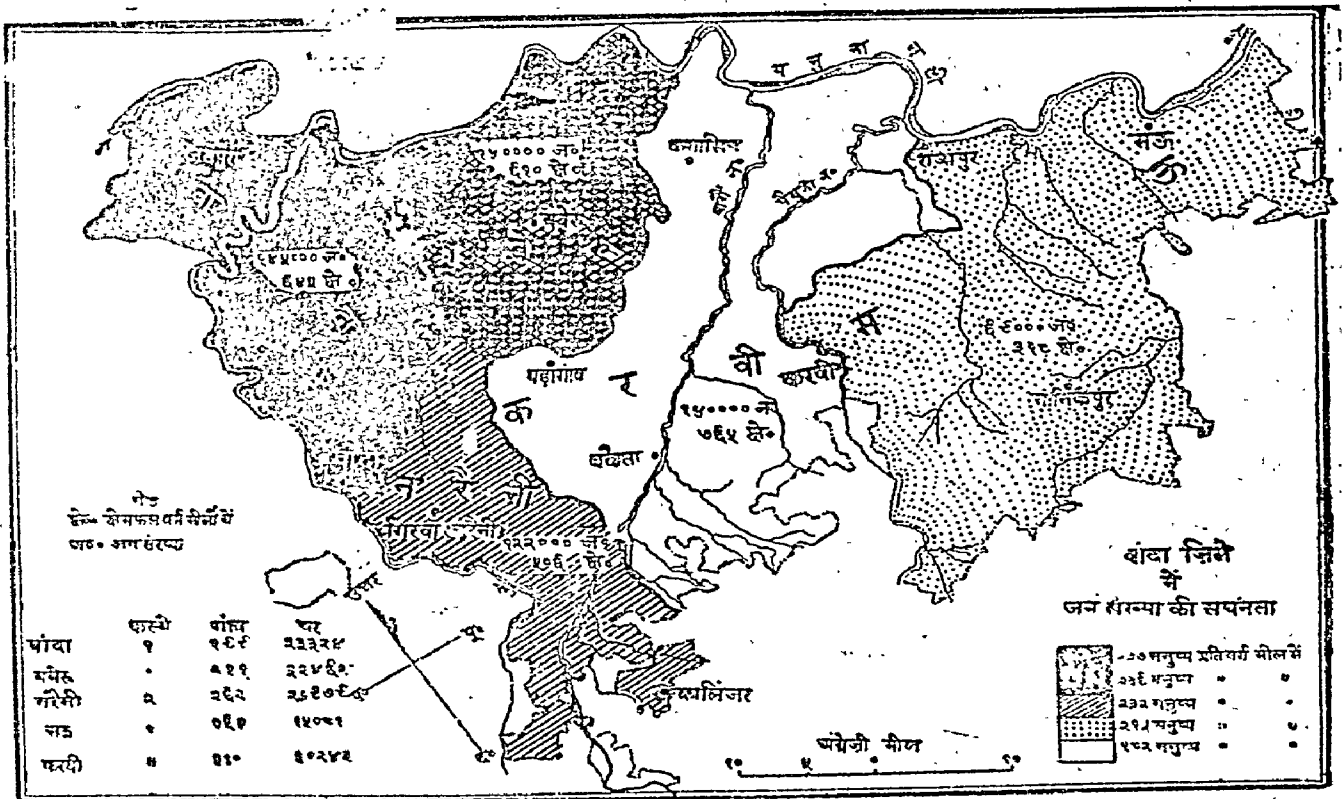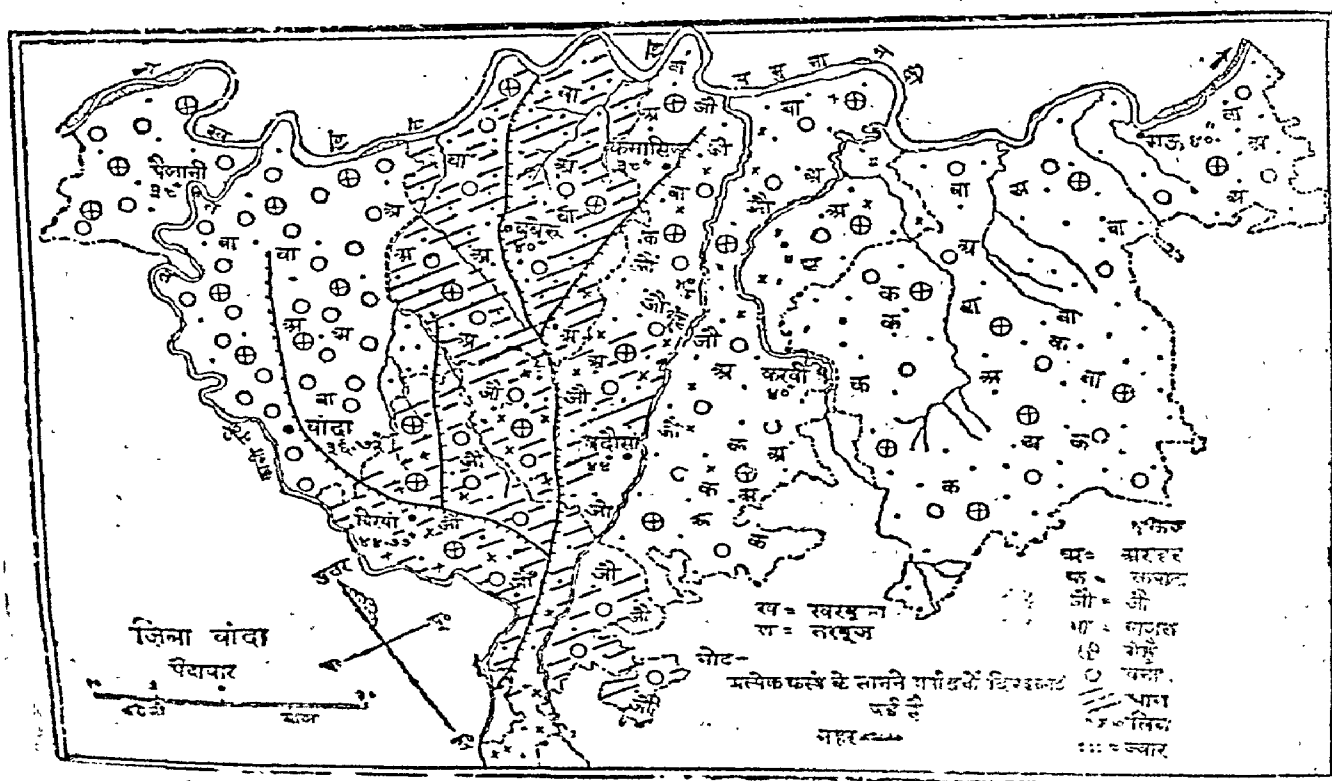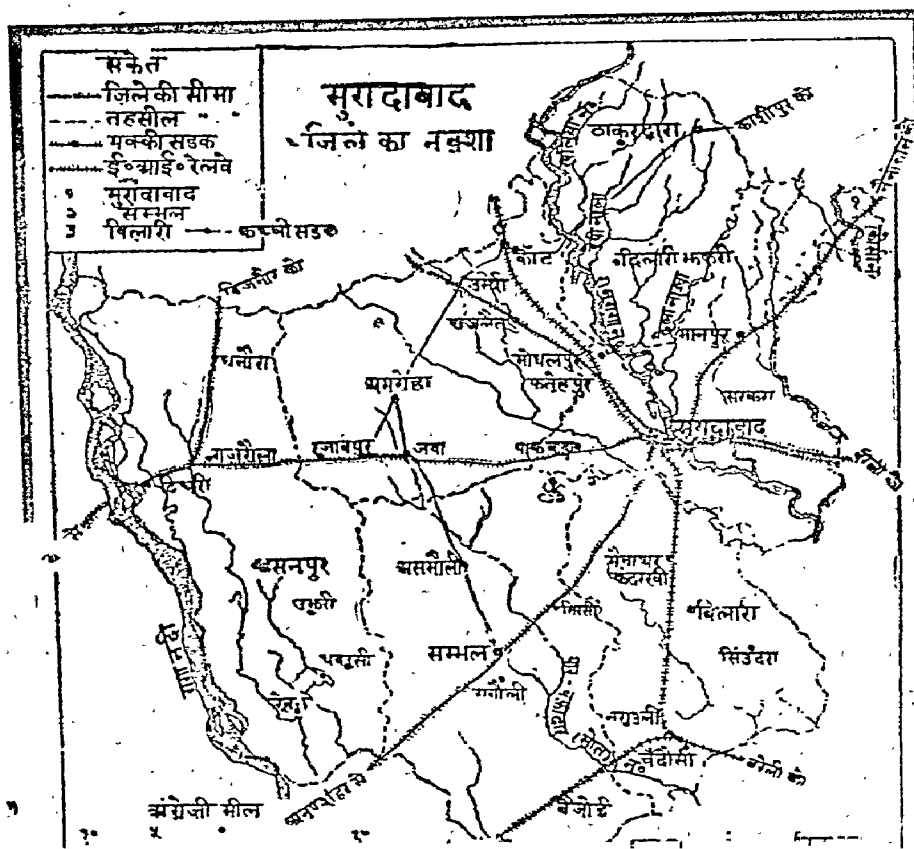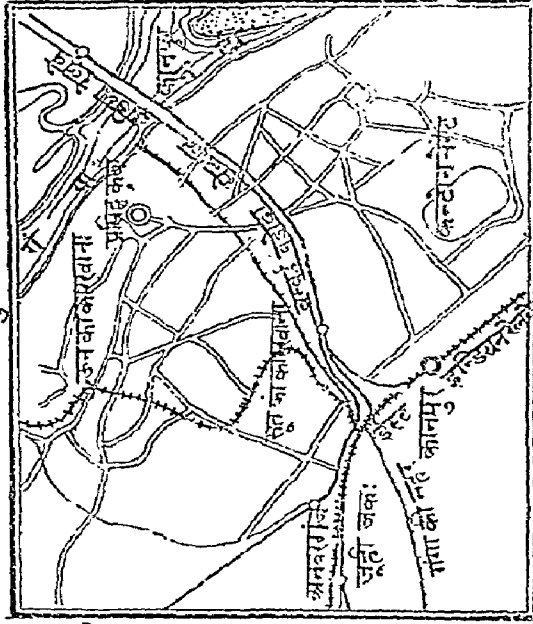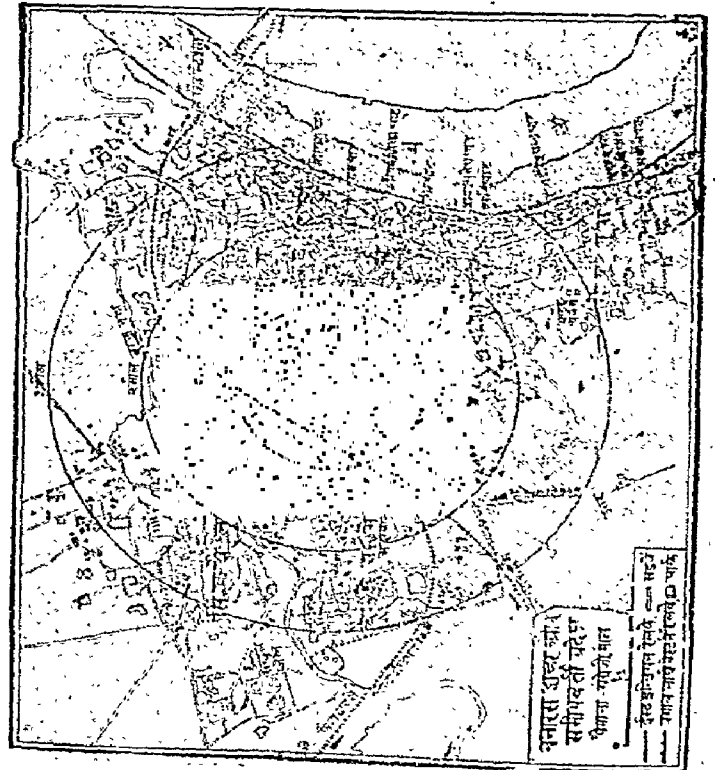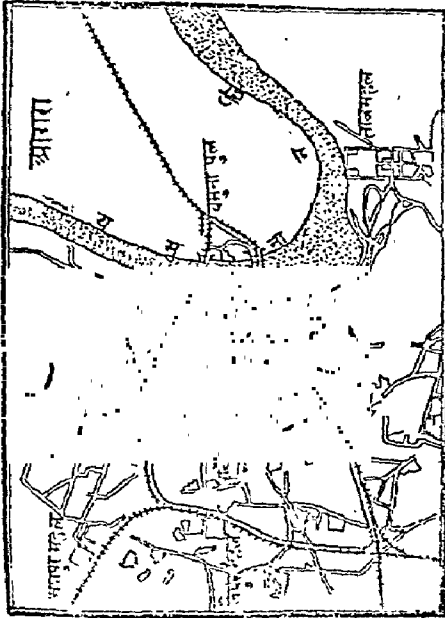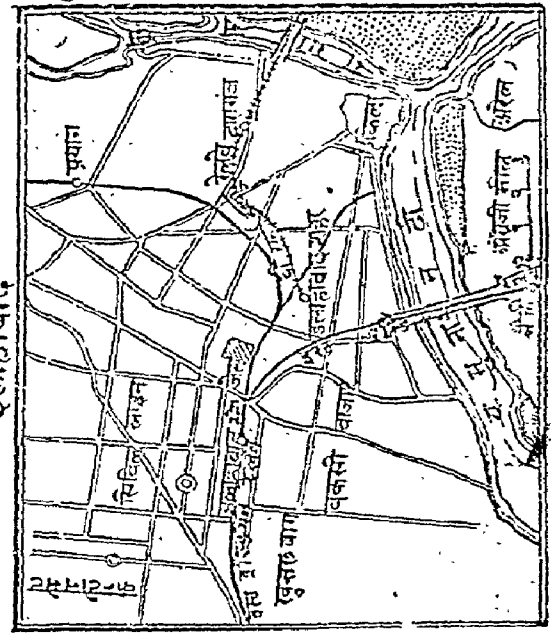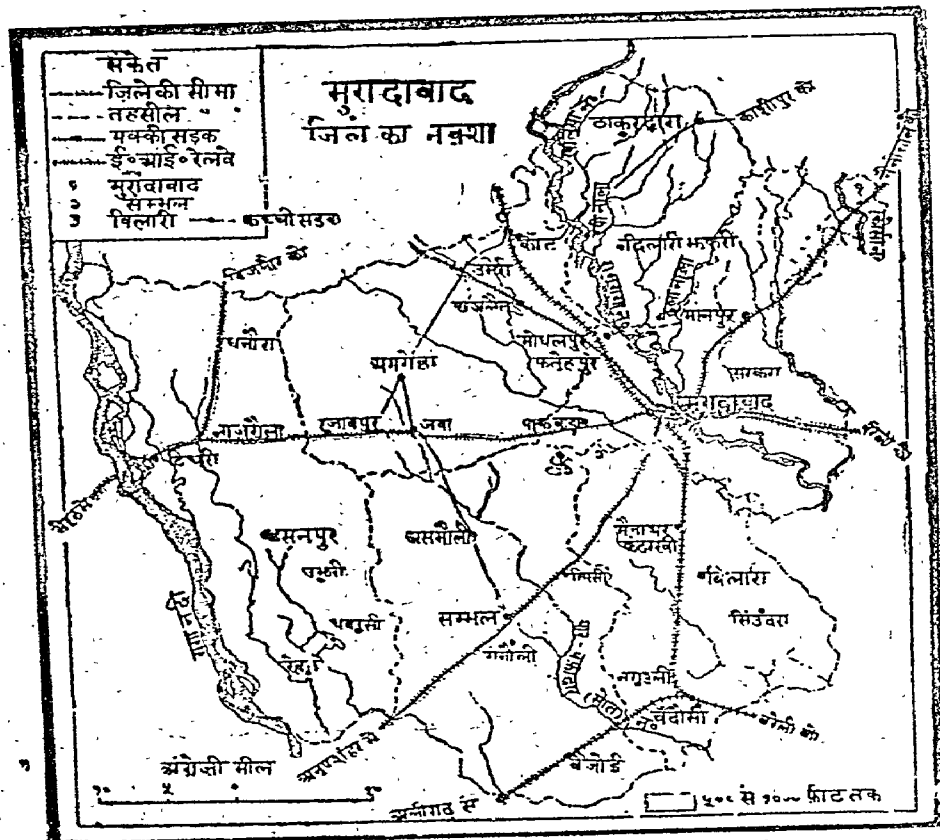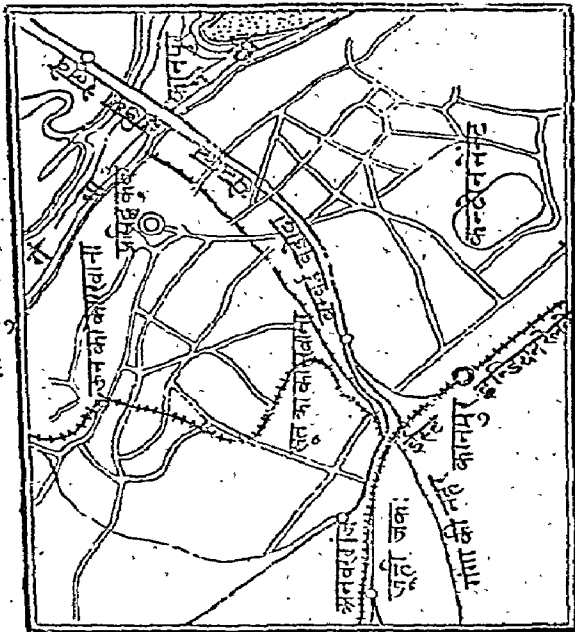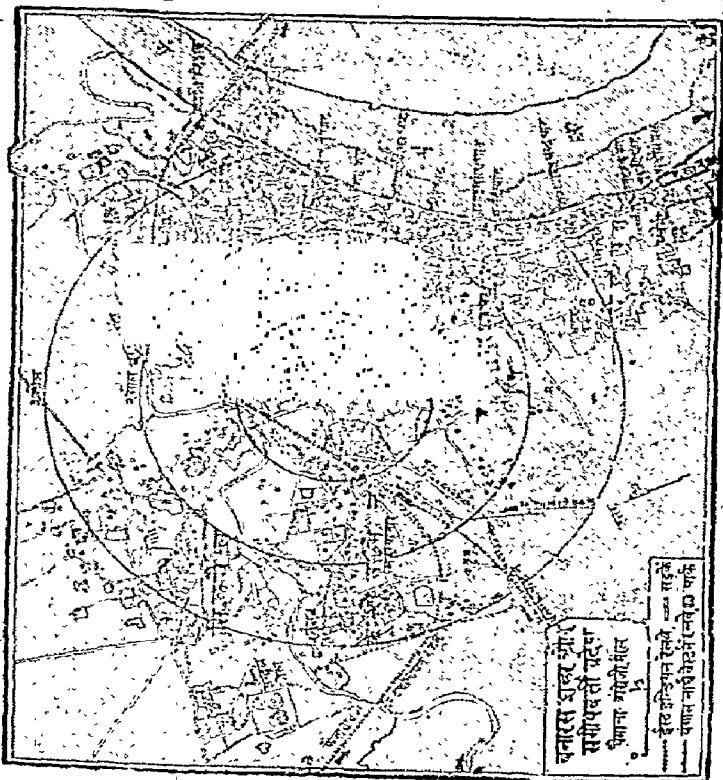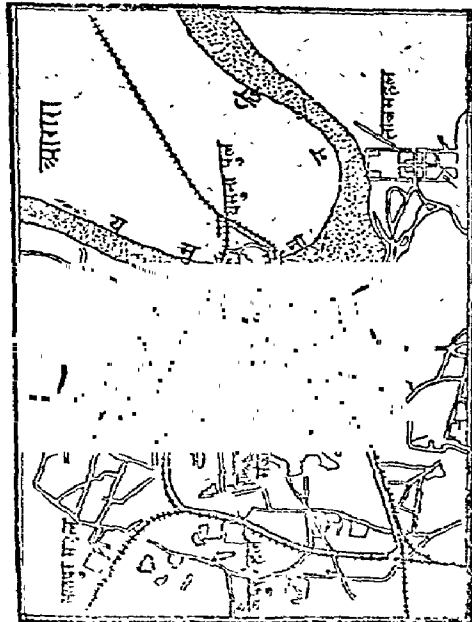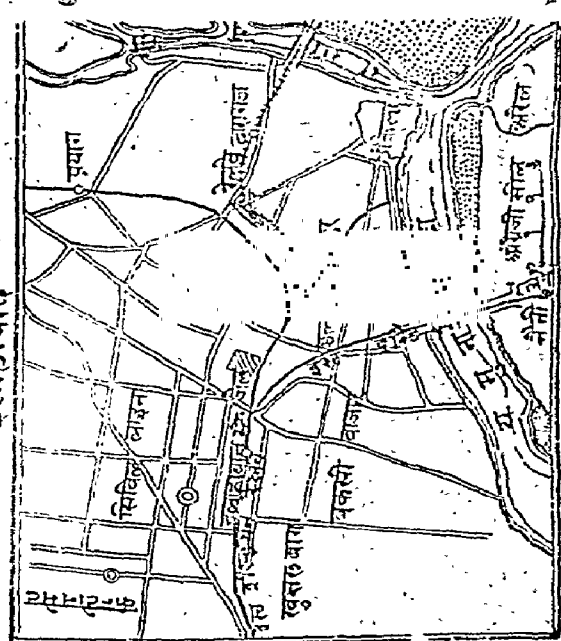
जन संख्या की सघनता

कमिश्नरियाँ

मध्य भारत
मध्य प्रदेश और बरार
राजपूताना
८२०००
१००००
७००००
२०००००

जिला शाहजहाँपुर

बाँदा जिले का नक़शा

अंग्रेज़ी मील

आगरा
यमुना पुल
ताजमहल

कानपुर
ऊन का कारखाना
प्रसिद्ध कुआँ
सूत का कारखाना
अनवरगंज
गंगा की नहर
कानपुर

बनारस शहर और समीपवर्ती प्रदेश

इलाहाबाद
प्रयाग
सिविल लाइन
खुसरो बाग
चकसी बाजार
अंग्रेजी किला
अरैल

उत्तर प्रदेश के विविध दृश्य

१—के निकास के पास केदारनाथ हिमागार (ग्लेशियर) का एक दृश्य।
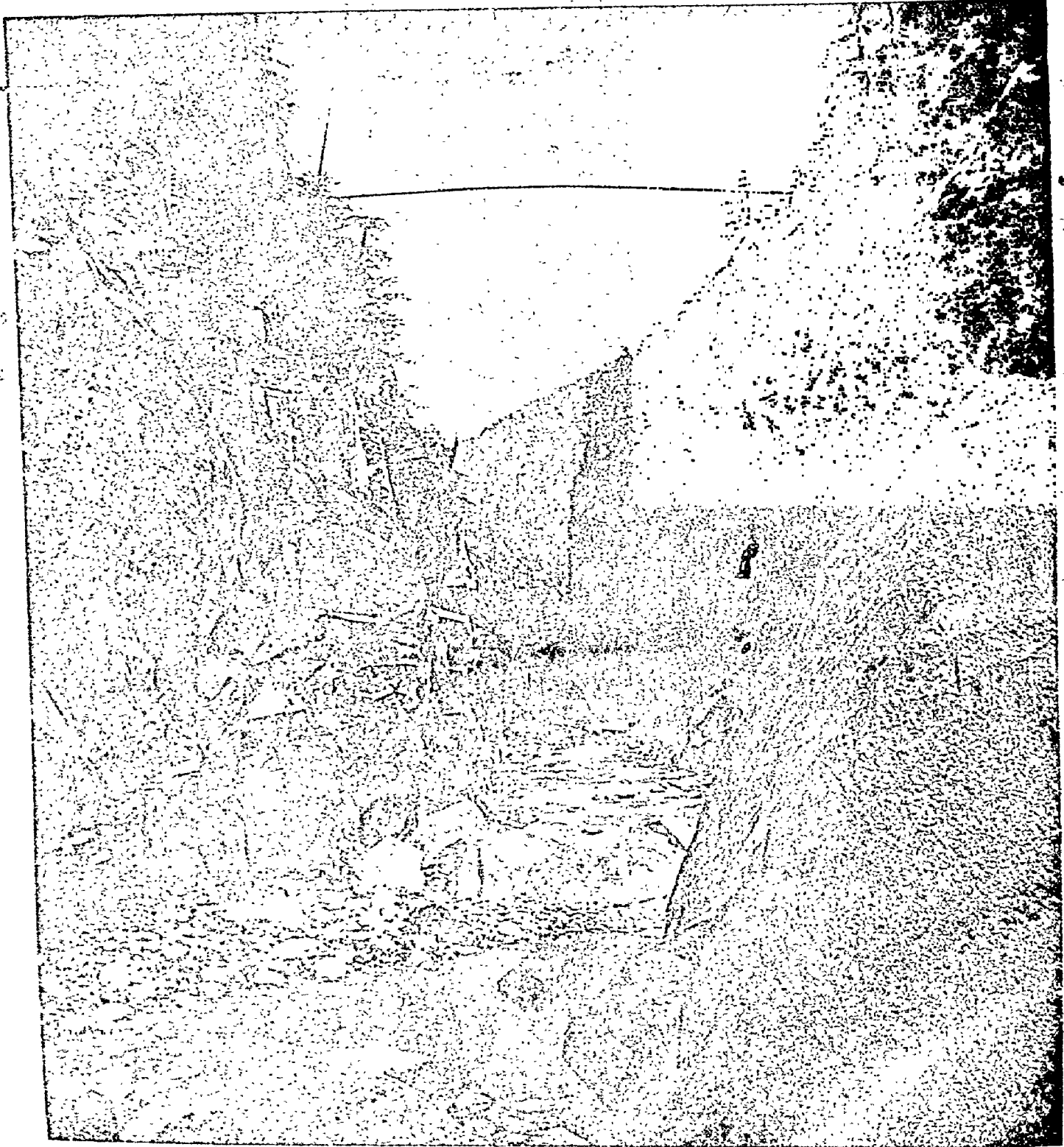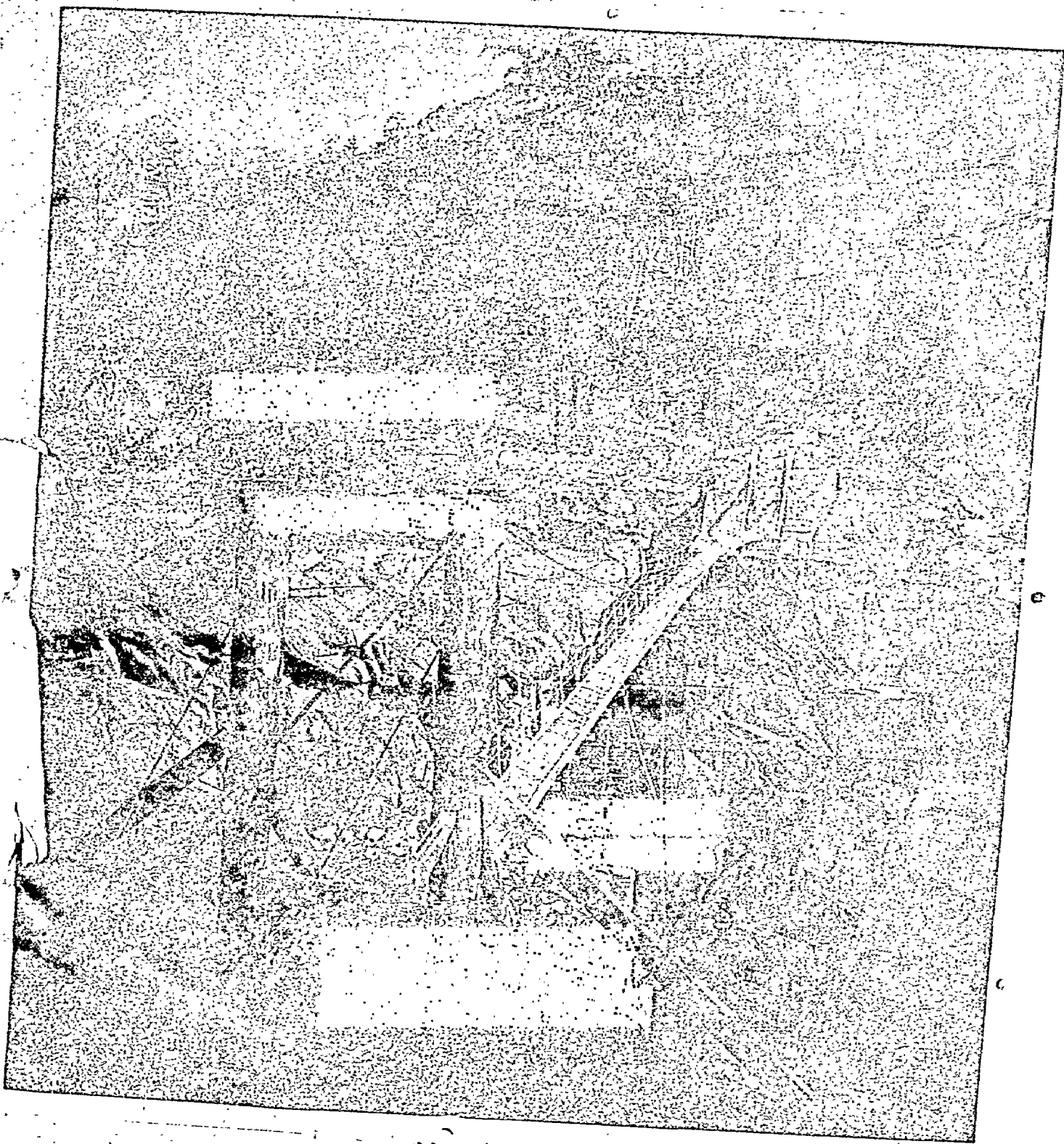
३—भैरों में गंगा का पुल।

५—नैनीताल की माल सड़क और झील
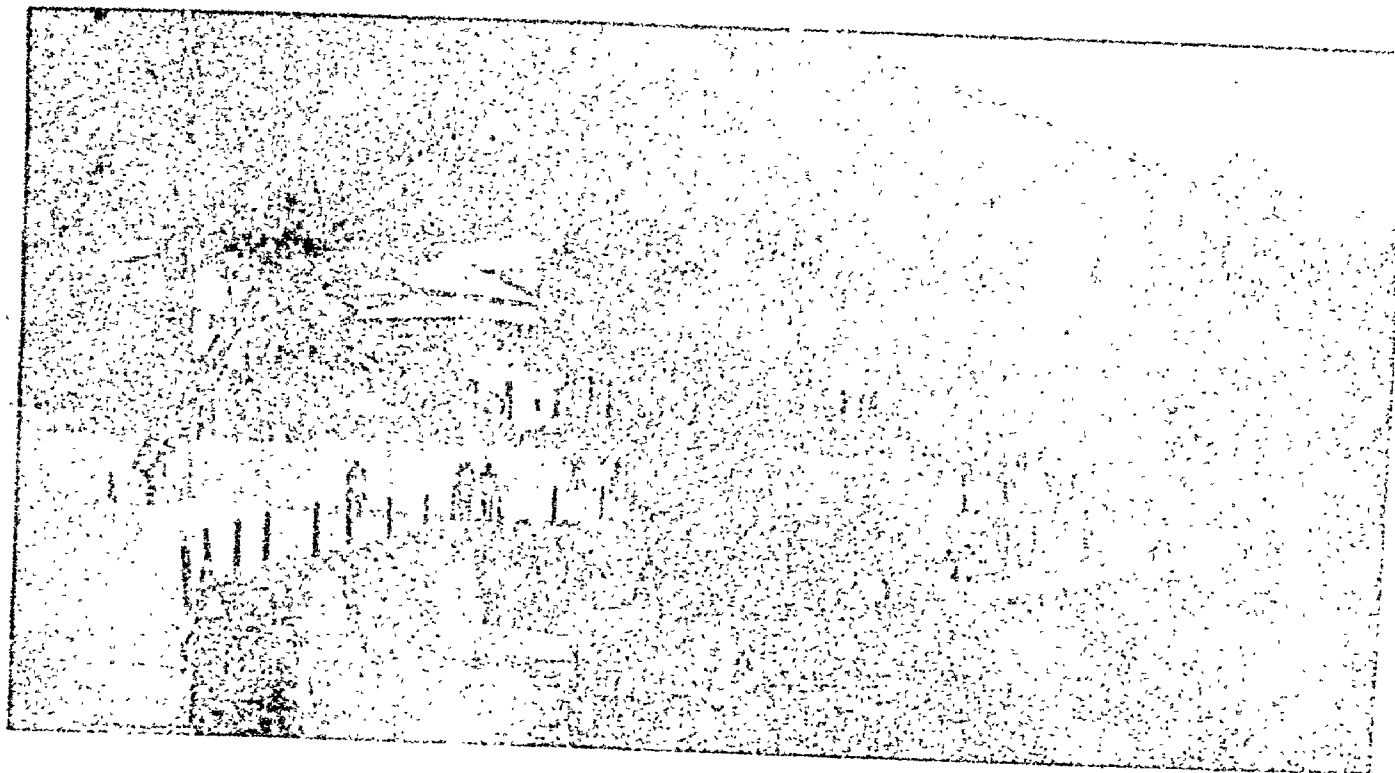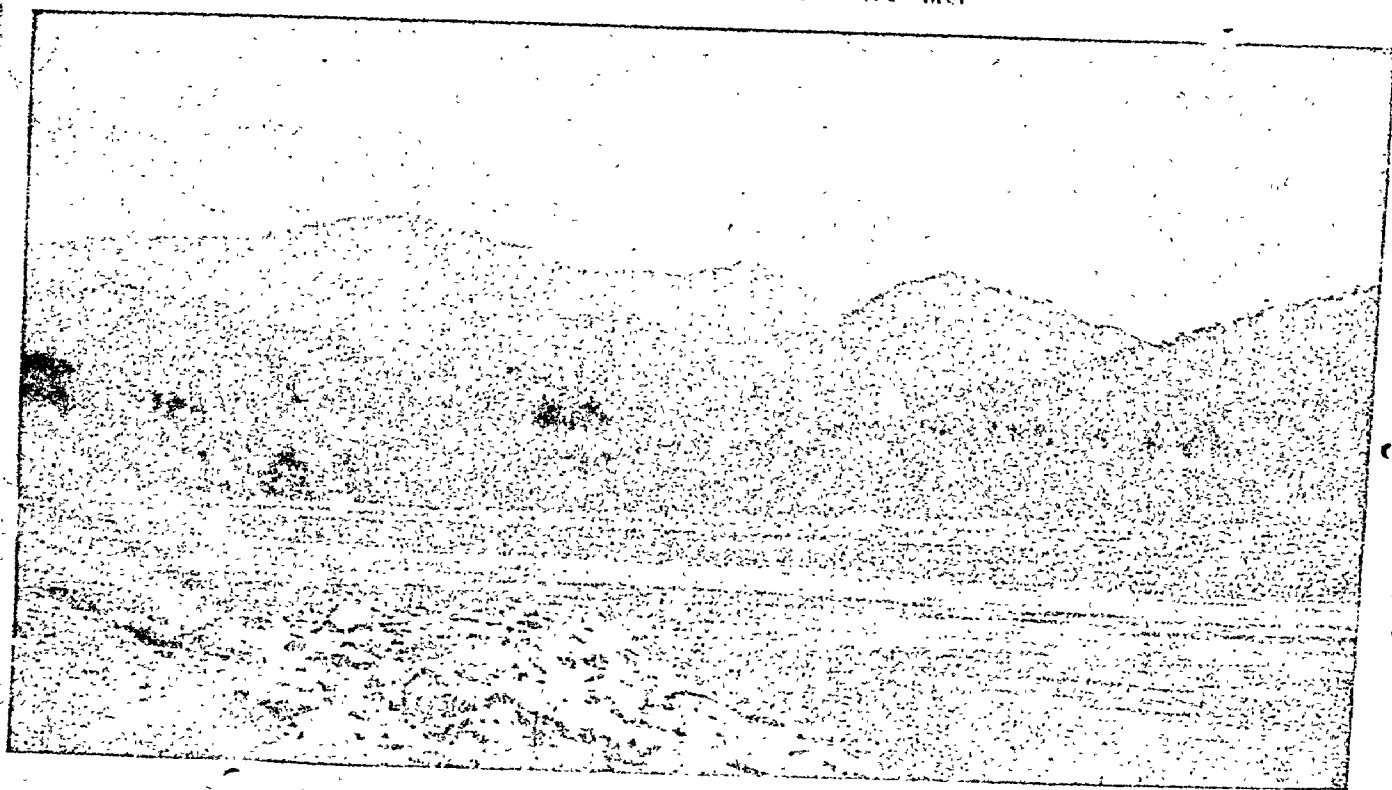
६—बरमदेव के ऊपर सारदा नदी का दृश्य ।

७—फतेपुर सीकरी की हिरण मीनार जिसे सम्राट अकबर ने बनवाया था ।
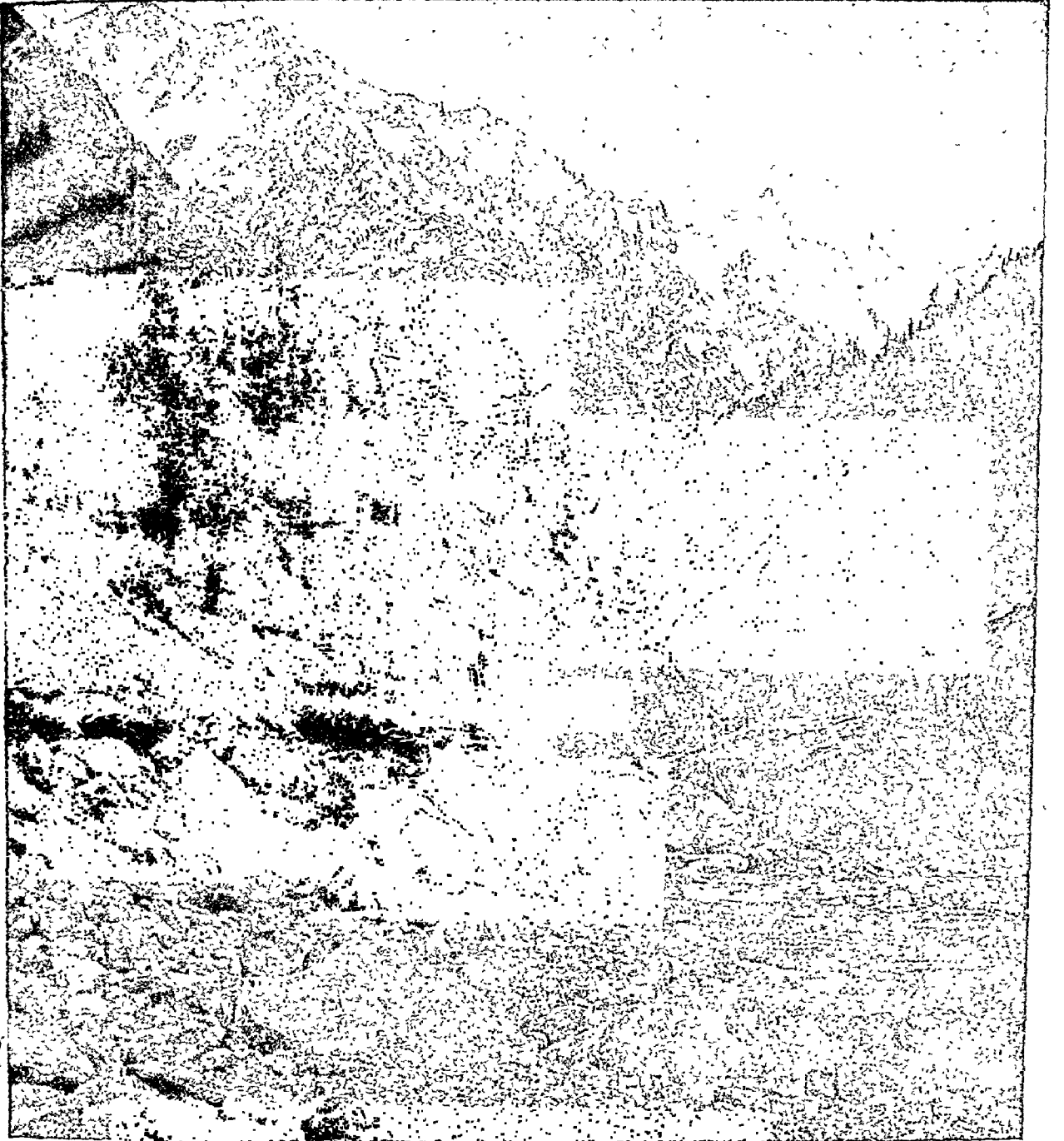
८—गंगोत्री एक हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणी।
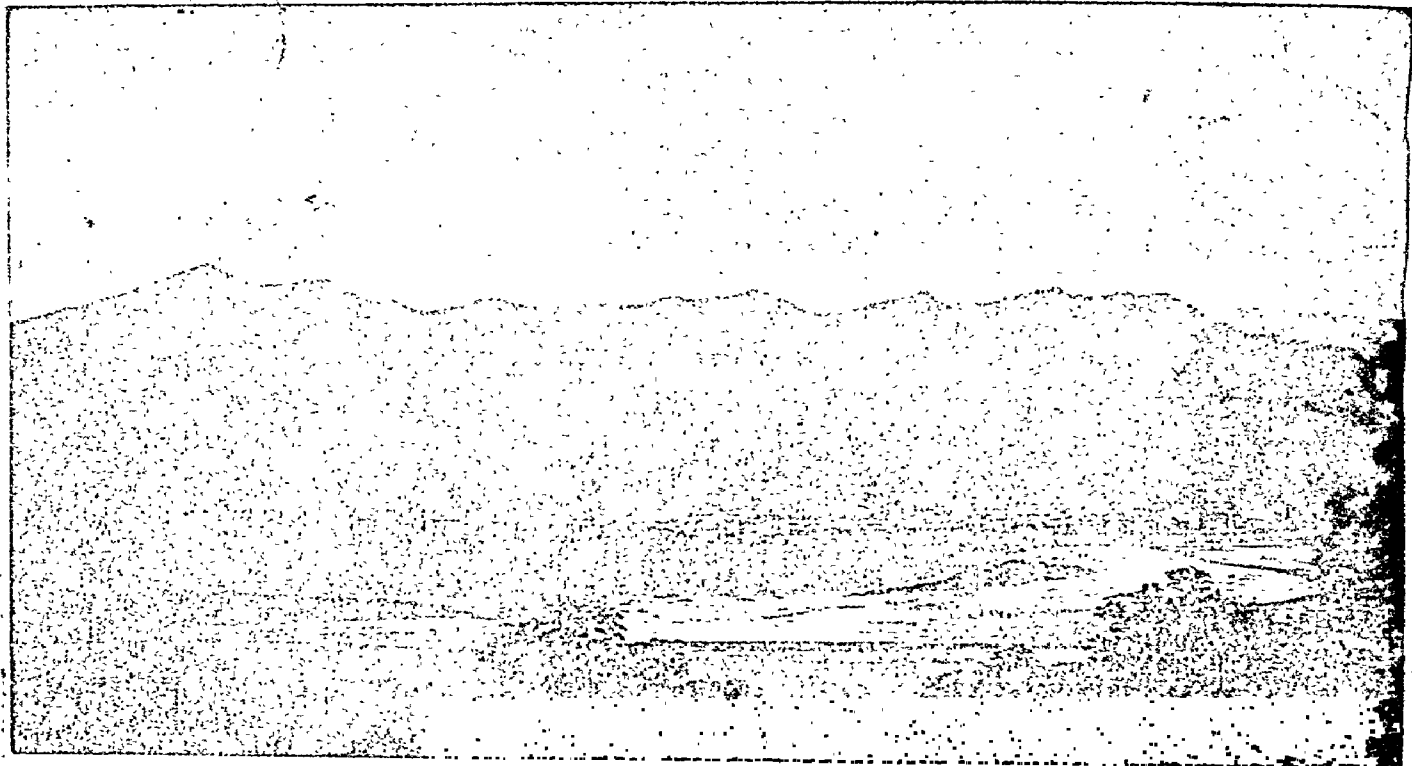
९—हरिद्वार का साधारण दृश्य ।
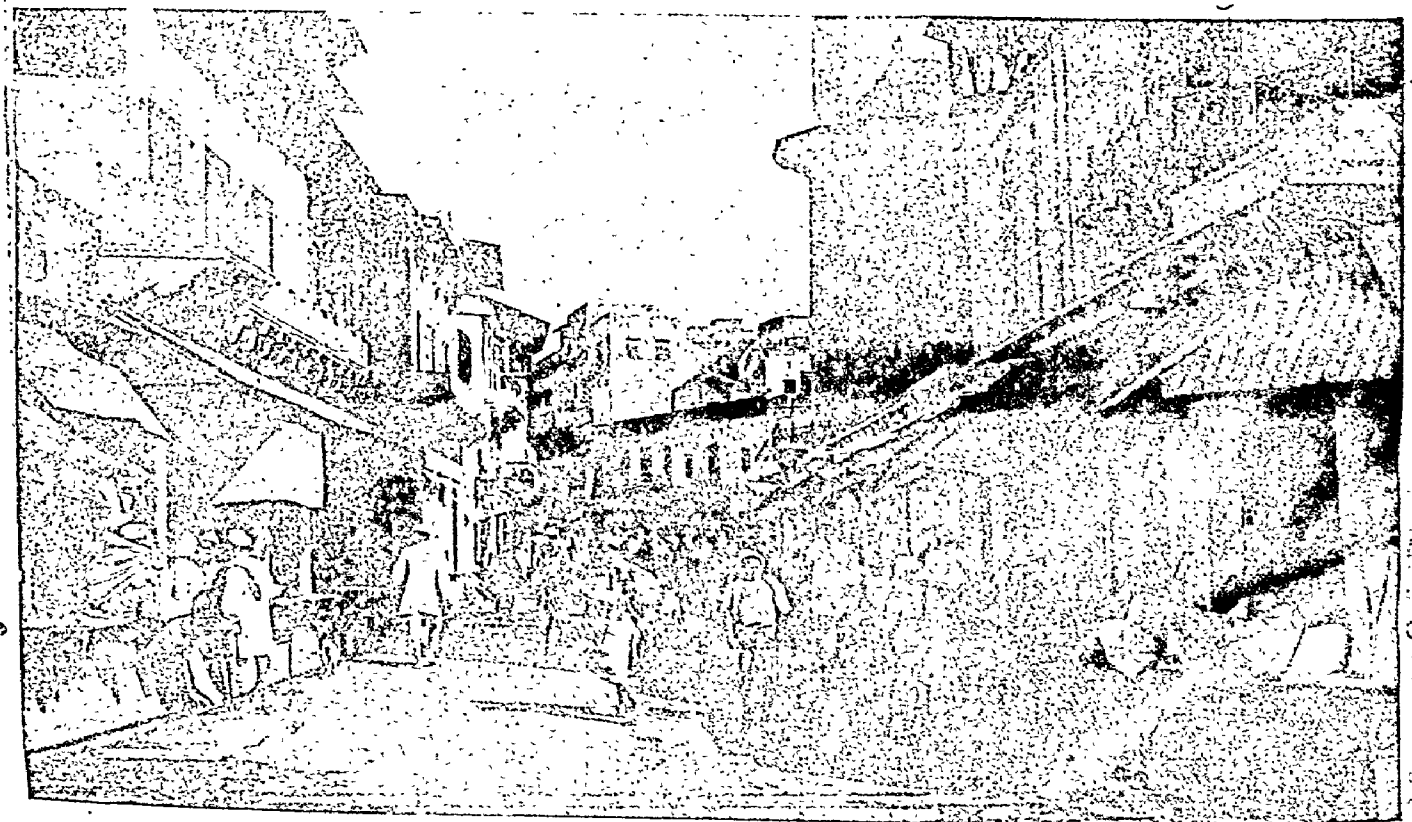
१०—मथुरा में कृष्ण भगवान की जन्म भूमि ।

देशदर्शन पुस्तक-माला

तिरंगा कवर, पृष्ट संख्या प्रायः ८० से अधिक।

इस पुस्तकमाला में ११६ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रायः प्रत्येक पुस्तक यात्रा के आधार पर लिखी गई है। इसके सम्पादक पं० रामनारायण मिश्र ने समस्त योरुप, पश्चिमी एशिया, भारतवर्ष लंका, बरमा, अफ्रीका आदि की यात्रा समाप्त करने पर ही इस पुस्तक-माला का आरम्भ किया। प्रत्येक पुस्तक आवश्यक नकशों और चित्रों से सुसज्जित है। १ प्रति का मूल्य ॥, ११६ पुस्तकों के सेट का मूल्य केवल ५८) रु०। यह पुस्तक माला आप के पुस्तकालय की शोभा बढ़ावेगी। इससे पाठकों के मनोरंजन के साथ संसार का ज्ञान प्राप्त करने में अपूर्व सुविधा होगी। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि देश-दर्शन अत्यन्त उपयोगी और सस्ती पुस्तक-माला है। इस पुस्तक माला की पुस्तकें यह हैं:—

१—लङ्का	२—ईराक	३—फिलिस्तीन	४—बरमा	५—पोलैंड
६—चेकोस्लोवेकिया	७—आस्ट्रिया	८—मिस्र भाग १	९—मिस्र भाग	१०—फिनलैंड
११—बेल्जियम	१२—रोमानिया	१३—प्राचीन जीवन	१४—यूगोस्लैविया	१५—नार्वे
१६—जावा	१७—यूनान	१८—डेन्मार्क	१९—हालैंड	२०—रूस
२१—थाई देश	२२बल्गेरिया	२३—अल्सेसलारेन	२४—काश्मीर	२५—जापान
२६—ग्वालियर	२७—स्वीडन	२८—मलय देश	२९—फिलीपाइन	३०—तीर्थ दर्शन
३१—हवाई द्वीप समूह	३२—न्यूजीलैंड	३३—न्यू गनी	३४—आस्ट्रेलिया	३५—मेडेगास्कर
३६—न्यूयार्क	३७—सिरिया	३८—फ्रांस	३९—अल्जीरिया	४०—मरक्को देश
४१—इटली	४२—ट्यूनिस	४३—आयरलैंड	४४—अन्वेषक-दर्शन i	४५—अन्वेषक ii
४६—अन्वेषक-दर्शन iii	४७—नैपाल	४८—स्विजरलैंड	४९—आगरा	
५०—अरब	५१—कनाडा	५२—मेवाड़	५३—मेक्सिको	५४—इङ्गलैंड
५५—विश्वाश्चर्य	५६—पनामा	५७—इन्दौर	५८—पेरेग्वे	५९—जबलपुर
६०—काकेशिया	६१—रीवाँ	६२—मालाबार	६३—बर्लिन	६४—भूपाल
६५—दक्षिणी अफ्रीका	६६—सूडान	६७—कोरिया	६८—मंचूरिया	६९—सिंक्यांग
७०—साइबेरिया	७१—जोधपुर	७२—अजमेर	७३—अर्जेण्टाइना	७४—पशुपरिचय
७५—नागरिक	७६—जैपुर	७७—बगदाद	७८—सिकन्दरिया	७९—दिल्ली
८०—नोआखाली	८१—हजारा	८२—कलकत्ता	८३—काहिरा	८४—दिल्ली प्रान्त
८५—देशनिर्माता	८६—लखनऊ	८७—गोरखपुर	८८—चिली	८९—आसाम
९०—कोलम्बो	९१—प्रयाग	९२—बनारस	९३—जौनपुर	९४—झांसी
९५—स्पेन	९६—ईरान	९७—खनिज	९८—गङ्गा	९९—सालिवन
१००—लैप लैण्ड	१०१—ब्राजील	१०२—बीजापुर	१०३—माया	१०४—कपूर्थला
१०५—ग्रेहमलैंड	१०६—स्काट लैंड,	१०७—रोमा	१०८—खैबर	१०९—अफ्रीकी जाति दर्शन
११०—एशियाई जाति दर्शन	१११—आस्ट्रेलियाई जाति दर्शन	११२—हैदराबाद	११३—पीरू	
११४—बोलिविया,	११५—पुर्तगाल,	११६—गोआ		

देश-दर्शन पुस्तक-माला की पहली पुस्तक लंका-दर्शन की विषय सूची इस प्रकार है:—

स्थिति, भूरचना, जलवायु, वन, हाथी, चाय के बगीचे, रबर, नारियल, लंका के मोती, रत्न, निवासी, उजड़े हुये नगर, कोलम्बो, अन्य नगर, लंका और भारतवर्ष से सम्बन्ध, मेरी लंका यात्रा। पृष्ठ संख्या १६२, चित्र संख्या ७०। मुख पृष्ठ पर तिरङ्गा चित्र, तिरङ्गा कवर मूल्य केवल देश दर्शन ॥) पुस्तक माला की ११६ पुस्तकों में प्राय प्रत्येक पुस्तक यात्रा के आधार पर रोचक, शिक्षाप्रद पाठ्य सामग्री और चित्रों से सुसज्जित है। विस्तार भय से प्रत्येक पुस्तक की विषय सूची और परिचय को हम अलग नहीं दे रहे हैं।

मुद्रक:—'भूगोल'-कार्यालय, कक्करहाघाट, इलाहाबाद।